राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी

सुमनेश जोशी : टीपू सुल्तान

●

प्रकाशक
ग्रं था गा र
नारनोली भवन, सागानेरी गेट
जयपुर–३

●

मुद्रक
भारत प्रिंटर्स
एम आई रोड, जयपुर

हेमा प्रिंटर्स
नाहर गढ रोड, जयपर

डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस
गोपालजी का रास्ता
जयपुर

●

आवरण— ऐल आर पैंढारकर।
ब्लोक्स— जुबली ब्लोक वर्क्स,
जयपुर।

मूल्य
साठ रुपए

प्रस्तावना

साम्राज्यवादी दासता से देश की मुक्ति के पश्चात् स्वतन्त्रता के इस रजत जयन्ती वर्ष मे देश का ध्यान एक बार फिर स्वतन्त्रता सग्राम के सेनानियो की ओर केन्द्रित हुआ है। देश की स्वाधीनता के सघर्ष मे जिन लोगो ने भाग लिया था उनके समक्ष उस समय सत्ता, सपन्नता, पद प्रतिष्ठा और अपने निहित् स्वार्थो की पूर्ति के कोई आकर्षण नही थे। वे अपनी जीविका और व्यवसाय का त्याग करके, पुलिस की लाठियो तथा गोलियो का प्रहार झेलने और शासको की जेलो को आबाद करने के लिए निकल पडे थे। उन्होने अपने आत्मबल और शौर्य के ज्वलत प्रदर्शनो से अग्रेजी सल्तनत और राजतन्त्रो के अत्याचार, शोषण और हिसा का मुकाबिला किया था उन्होने अपने त्याग और बलिदान से इतिहास मे शानदार पृष्ठ जोडे थे और उन्होने लोकमानस मे चेतना और जागरण की कभी न बुझने वाली अभीप्सा जगा दी थी। स्वतन्त्रता और केवल स्वतन्त्रता उनका लक्ष्य था और इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हर स्वतन्त्रता सैनिक अपनी हर सभव कुर्बानी के लिए तैयार था। उनमे मरने के लिए भी होड लगी हुई थी। कोई पीछे नही रहना चाहता था।

स्वतन्त्रता सग्राम के उन असख्य सैनिको ने देश की स्वाधीनता की एक परिकल्पना की थी। उनका सकल्प था कि स्वाधीनता के बाद उनका राष्ट्र एक स्वावलम्बी, सुदृढ और समृद्धिशाली राष्ट्र होगा। वे जनता को भूख और गरीबी से मुक्त करेंगे, लोगो को सामाजिक न्याय, आर्थिक स्वतत्रता और अवसरो की समानता उपलब्ध कराएगे और शोषण एव असमानता से मुक्त नये समाज की स्थापना करेंगे।

पर स्वातन्त्र्य सैनिको का यह सपना और यह सकल्प अभी पूरा नहीं हुआ। स्वतन्त्रता की रजत जयन्ती के इस अवसर पर स्वातन्त्र्य सैनिको के उसी सकल्प को आज फिर दोहराने की आवश्यकता आ खडी हुई है।

स्वाधीनता के विगत पच्चीस वर्षों मे स्वतन्त्रता सग्राम के सैनिको की ओर किसी का ध्यान नही गया। उनके उदात्त चरित्र और उनकी नि स्वार्थ कुर्बानियो का मूल्याकन नही किया जा सका। कालकी इस लम्बी यात्रा मे अनेको स्वातन्त्र्य सैनिक दिवगत हो गये। जो जीवित हैं वे भले ही साहित्य के क्षेत्र मे सक्रिय हो या शिक्षा के क्षेत्र मे, वे भले ही राजनीति मे सलग्न हो या समाज नीति मे, वे भले ही परिपक्व आयु के हो, वृद्ध हो अथवा स्वस्थ हो और वे भले ही। अस्वस्थ हो या निष्क्रिय परन्तु उनकी निस्वार्थ सेवा और बलिदानी परम्परा आज भी अक्षुण्ण है और राष्ट्रीय स्वाभिमान की गरिमा से उनका गौरवशाली मस्तक आज भी उन्नत है। स्वातन्त्र्य समर के उन तेजोदीप्त मरणधर्मा दिनो के रणोन्माद की स्मृतिया आजादी की भावना को एक बार पुन जागृत करती हैं और देश की वर्तमान क्रान्ति-अभिमुख स्थितियो को तीव्र वेग से गतिशील होने की प्रेरणा देती हैं। स्वातन्त्र्य

समर के योद्धाओ का जीवन भी इतना ही लोमहर्षक और प्रेरक रहा है। उनकी कट्टर सिद्धान्तवादिता, उनकी निस्वार्थ सेवा भावना, उनके उच्चतम त्याग की भूमिका, उनके नैतिक मूल्य और उनकी चारित्रिक विशेषताए ऐसी प्रेरक शक्तियें है जो आज की और आने वाली पीढियो को प्रेरित और स्पदित किए बिना नही रह सकती।

शायद इसीलिए अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी ने अपने 3 मई 72 के परिपत्र द्वारा देश की समस्त काग्रेस कमेटियो से आग्रह किया था कि वे अपने अपने क्षेत्र के स्वातन्त्र्य सैनिको का पता लगा कर उनके चित्र उपलब्ध करें और उनकी जीवनियो का सकलन, सम्पादन और उनका सचित्र प्रकाशन करें।

मुझे काग्रेस का यह निर्णय और कार्यक्रम अत्यन्त आकर्षक, उपयोगी और महत्वपूर्ण लगा और राजस्थान प्रान्त के समस्त स्वातन्त्र्य सैनिको के सचित्र परिचय ग्रथ को तैयार करने का सकल्प करके मैंने इस कार्य का समारम्भ कर दिया।

राजस्थान बन जाने बाद इन चौबीस वर्षों मे भी न अब तक राजस्थान के स्वाधीनता सग्राम का क्रमबद्ध इतिहास लिखा गया है और न राजस्थान का इतिहास। इतिहास के नाम पर मिलने वाली सामग्री केवल अतीत के राजघरानो की वशावलियो और उनके वश परम्परागत राजतन्त्रो की ख्याते हैं। राजशाही और सामती युग की समाप्ति के लिए किए गए लोकयुद्धो और जन-सघर्षो का उसमे कही ब्यौरा नही है। सामत युगीन इतिहासकारो के लिए तो इस तरह की घटनाए राजद्रोह की सज्ञा मे ही आती थी जिनकी उन्होने अपने ग्रन्थो मे जान बूझ कर उपेक्षा की है।

निश्चय ही कुछ समय पहले राजस्थान राज्य के पुरालेखागार मे ऐसे ग्रन्थ के प्रकाशित होने की सूचना थी लेकिन वह ग्रन्थ अभी प्रकाश मे नही आया है। इसी प्रकार स्वतन्त्रता की रजत जयन्ती के इसी वर्ष मे राजस्थान प्रदेश काग्रेस कमेटी ने भी राजपूताना के स्वाधीनता सग्राम का इतिहास तैयार करवाने की योजना हाथ मे ली थी। वह ग्रन्थ भी शायद तैयार हो रहा होगा। वहरहाल मुझे इस तरह के परिचय ग्रन्थ की तैयारी के लिए कही भी कोई सदर्भ ग्रन्थ का आधार प्राप्त नहीं हो सका।

अजमेर मेरवाडा और राजपूताने की अलग अलग रियासतो मे ब्रिटिश सल्तनत और राजशाही के विरुद्ध किये गये लोक सघर्षो की याद तो अभी ताजा ही है और क्योकि मैं स्वय स्वातन्त्र्य सेना का एक सैनिक रहा हू इसलिए अपना प्रान्त व्यापी जो भी सपर्क था उसके आधार पर मैंने ऐतिहासिक सदर्भों के इस वृहत् परिचय ग्रन्थ को तैयार करने का साहस भरा सकल्प कर ही लिया। अपने निरतर प्रयत्नो के बाद राजस्थान के कोने कोने मे मैं करीब 615 स्वातन्त्र्य सैनिकों का परिचय और उनके जीवनवृत्त से

सबंधित सामग्री और चित्रो का सकलन कर सका। जो कुछ सामग्री मैं संकलित कर सका हू उसका श्रेय उन सभी स्वतन्त्रता सैनिको को ही है जिन्होने मेरी इस योजना का प्रान्त व्यापी स्वागत किया और मेरे आह्वान पर पूरे विश्वास के साथ मुझे सहयोग दिया एव इस महत् कार्य को पूरा करने मे भागीदार बने। इस संदर्भ मे जयपुर के सर्व श्री बदरी नारायण खूटेटा, वैद्य विजयशंकर शास्त्री, सरदार हरलालसिंह, श्री ताडकेश्वर शर्मा, और मास्टर कन्हैयालाल, जोधपुर के सर्व श्री सीताराम सोलकी और बालकृष्ण मो० थानवी, बीकानेर के श्री गंगादास कौशिक, उदयपुर के सर्व श्री दयाशंकर श्रोत्रीय, नरेन्द्रपाल सिंह चौधरी, फतेहलाल बापू और रघुनाथ पालीवाल, भरतपुर के श्री जगन्नाथ कक्कड, डूंगरपुर के श्री भोगीलाल पड्या, करौली के कवि भवरलाल, झालावाड के श्री रतनलाल हिन्दुस्तानी और जैसलमेर के श्री सत्यदेव व्यास के अनवरत योगदान का ही यह परिणाम है कि राजपूताने की एक-एक भूतपूर्व रियासत के स्वातन्त्र्य सैनिको के संबंध मे मुझे तथ्यपूर्ण, अधिकृत और ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त हो सकी है।

मेरा यह दावा नही है कि अपने विषय मे यह ग्रथ सर्वथा पूर्ण है। मैं इस तथ्य को स्वीकार करता हू कि अभी राजपूताना के कई स्वातन्त्र्य सैनिको के इतिवृतो का इसमे समावेश नही हो सका है। इसका कारण स्वय कई साथियो की उदासीनता भी है, जिन्होने अपने जीवन के संबंध मे अधिकृत रूप मे कुछ भी बताने का कोई उत्साह नही दिखाया। कई साथियो ने इस तरह के प्रकाशन मे उन्हे सम्मिलित किए जाने की अपनी अनिच्छा प्रकट की। कई साथियो का परिचय यत्न करने पर भी हाथ नही आ सका। कुछ जीवन–वृत विलंब से प्राप्त होने के कारण इस ग्रथ मे उपयोग मे नही लिये जा सके और कई जीवनवृतो को ग्रथ मे स्थानाभाव के कारण बहुत कम स्थान दिया जा सका है। लेकिन यह तो इस दिशा में पहला प्रयास है। इस विशाल ग्रथ के वर्गीकृत आधार पर तो कई स्वतंत्र ग्रथ तैयार हो सकते हैं और यदि कोई समर्थ जीवनी लेखक अपनी बौद्धिक जागरूकता के साथ इस ग्रन्थ को देख पाया तो निश्चय ही राजस्थान के स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों के विस्तृत जीवन चरित्र प्रकाश मे आ सकेंगे। इस ग्रथ मे जिन स्वातन्त्र्य सैनिको का जीवनवृत्त और परिचय किन्ही विवशताओ से सम्मिलित नही हो सका है उन्हे अगले संस्करण मे सम्मिलित करने का प्रयत्न किया जाएगा कि जिससे अपने विषय पर यह ग्रथ पूर्ण और अधिकृत बन सके।

संकलित सामग्री का अपनी विवेक बुद्धि से वर्गीकरण करके मैने उसे तीन अलग अलग ग्रथो मे प्रकाशित करने की योजना बनायी थी। मैने अपनी यह योजना राजस्थान के प्राय सभी नये-पुराने नेताओ के पास उनके आशीर्वाद और समुचित मार्गदर्शन के लिए भेजी थी। सभी नेताओ ने मेरी योजना का स्वागत किया और सहयोग का आश्वासन दिया, परन्तु देशी राज्य लोक परिषद के नेता और राजस्थान के सर्व प्रथम मुख्यमंत्री पंडित हीरालाल शास्त्री ने मेरे वर्गीकरण को संतोषजनक नही माना। उन्होने इस सारी योजना मे पूरा रस लिया और इसमे मुझे आवश्यक संशोधन परिवर्द्धन करने का परामर्श दिया

जिसे मैंने यथाशक्य स्वीकार कर लिया। यदि समय पर पंडित हीरालाल शास्त्री का समुचित मार्ग दर्शन मुझे नही मिला होता तो संभव है कि प्रकाशित होने वाले ग्रंथो मे राजपूताना के ऐतिहासिक संदर्भो का वर्गीकरण सही रुप मे अंकित नही हो पाता।

अपनी संशोधित योजना मे यही निश्चय किया गया कि समग्र राजस्थान के स्वतन्त्रता सेनानियो का एक ही विशद् परिचय ग्रंथ तैयार किया जाए और वर्गीकरण के अनुसार उसे 5 खण्डो मे विभक्त कर दिया जाए। ये 5 खण्ड इस प्रकार हैं —

1—राजस्थान मे स्वतंत्रता संग्राम के जनक।

2—राजस्थान मे स्वतंत्रता संग्राम के अमर शहीद।

3—राजस्थान मे लोकजागरण के अग्रदूत।

4—राजस्थान मे स्वतन्त्रता संग्राम के सूत्रधार।

5—राजस्थान मे स्वतंत्रता संग्राम के संदेश वाहक,सत्याग्रही और स्वातंत्र्य सैनिक।

इन उपरोक्त 5 खण्डो वाले ग्रंथ मे 81 लोकनेताओ का विस्तृत जीवन चरित्र 176 लोक नेताओ का संक्षिप्त जीवनवृत्त और 358 स्वातंत्र्य सैनिकों का आवश्यक लघु परिचय प्रस्तुत किया गया है। यह सही है कि यह ग्रंथ स्वयं अपने मे इतिहास नहीं है परन्तु राजपूताने मे अंग्रेजो सल्तनत, सामंतवाद और राजशाही के विरुद्ध लडे गये स्वतन्त्र्यसमर के इतिहास की झलक इस ग्रन्थ के प्रत्येक पृष्ठ से प्रकट होती है और जीवन गाथा के इन चरित्रनायकों की कथा के माध्यम से तत्कालीन इतिहास को समझने मे आसानी होती है। राजस्थान मे स्वाधीनता संग्राम का इतिहास तो अभी तक लिखा जाना बाकी है और मुझे विश्वास है कि इस दिशा मे किये जाने वाले किसी भी प्रयास मे यह ग्रन्थ बहुत सहायक सिद्ध होगा।

अजमेर मेरवाडा और राजपूताना की सभी रियासतो के राजनैतिक संघर्षों के प्रसंग मे इतना विशद्, तथ्यपूर्ण और अधिकृत सूचनाओ वाला यह एक ऐसा प्रयास है जिसे निश्चय ही राजस्थान प्रदेश कांग्रेस और राजस्थान सरकार की सराहना और समर्थन प्राप्त होगा। इस ग्रन्थ के माध्यम से राजस्थान का संघर्षकालीन राजनैतिक अतीत प्रकाश मे आएगा और देश के भावी निर्माण मे स्वातन्त्र्य–सेनानियो के उदात्त चरित्रो से राजस्थान की जनता को नयी प्रेरणा मिलेगी। अत यह आवश्यक है कि ऐसा ग्रन्थ राजस्थान की प्रत्येक शिक्षण संस्था मे, प्रत्येक पुस्तकालय मे और प्रत्येक ग्राम पंचायत मे पहुंचे। मेरा विश्वास है कि राजस्थान की प्रदेश कांग्रेस और राजस्थान की सरकार इस ग्रंथ की महत्ता और उपयोगिता का सही मूल्यांकन करेंगे और अधिक से अधिक लोगों को इससे लाभान्वित होने का अवसर उपलब्ध करायेंगे।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन मे विलम्ब होता गया और प्रकाशन के लिए एक के बाद एक तारीखें बदलनी पडी । 15 अगस्त 72 को जिसके प्रकाशन की घोषणा की गयी थी उसका मई 73 के अन्त तक भी यदि प्रकाशन न हो तो उसके प्रकाशन के सम्बन्ध मे सदेह पैदा होना अस्वाभाविक नही है। स्थिति यह थी कि इस ग्रथ के लिए सामग्री के सकलन, चयन और सम्पादन मे ही मई से दिसम्बर 72 तक का समय लग गया था। ग्रन्थ की सामग्री के अनुपात मे ग्रन्थ का आकार बढता ही गया। जिसे 400 पृष्ठो मे पूरा करने की योजना थी उसके लिए आज 850 पृष्ठ भी कम पडने लग गये। फिर इसके मद्रण की समस्या सामने आयी। प्रेस की एक के बाद एक अडचने सामने आती गयी। कई प्रेस बदलने पडे और अब सब विघ्न बाधाओ को पार करके ग्रन्थ प्रकाश मे आया है। प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानियो को इस विलम्ब से जो निराशा और परेशानी हुई उसका मुझे हार्दिक दुख है।

इस ग्रन्थ के मुद्रण और प्रकाशन के लिये जितनी बडी धनराशि की आवश्यकता थी उसकी व्यवस्था कर पाना मेरे जैसे सीमित साधन वाले व्यक्ति के लिए एक अत्यन्त दुस्तर कार्य था। प्रदेश काग्रेस के नाम पर श्री रामकरण जोशी अवश्य ही मुझ से यह ग्रन्थ विशुद्ध व्यापारिक शर्तो पर खरीदने के लिए आये थे। काग्रेस के नाम पर इस तरह का सौदा अशोभनीय था और किसी स्वाभिमानी लेखक के लिए अस्वीकार्य।

मेरे एक श्रद्धास्पद बुजुर्ग गुरुजन ने इस ग्रन्थ के मुद्रण और प्रकाशन के सम्बन्ध मे मेरी कठिनाई और विवशता के सम्बन्ध मे सुना था। वे अपनी सहज स्वाभाविक सहृदयता से मेरी सहायता को आगे आये और इस ग्रन्थ के प्रकाशन के सम्बन्ध मे सभी चिंताओ मे मुझे पूर्णरुपेण मुक्त कर दिया। वे नही चाहते कि उनके नाम की चर्चा हो, लेकिन मै उनकी सवेदनशीलता, उनके आत्मीय व्यवहार और उनके ममत्व के प्रति हृदय से कृतज्ञ हू। उनके इस सदाशयता पूर्ण सहयोग के बिना इस ग्रन्थ का प्रकाशन एक तरह से असभव ही हो जाता।

इसी तरह से मेरे शुभचितक मित्र श्री नंदकिशोर कौशिक के प्रति भी मै अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करना आवश्यक समझता हू कि जिन्होने कागज, प्रेस और जिल्द सम्बन्धी सारे कामो की जिम्मेवारी अपने ऊपर लेकर मुझे निश्चित कर दिया। पुस्तक के मुद्रण और प्रकाशन की चिन्ता मुझसे अधिक मेरे मित्र श्री कौशिक को रही है और इसके मुद्रण और प्रकाशन के कार्य को कम से कम समय मे पूरा करवाने मे अपनी ओर मे उन्होने कोई कसर बाकी नही रखी।

यहा मैं मेरे आत्मीय बन्धु श्री प्रहलाद नारायण पुरोहित के सौहार्द्र पूर्ण योगदान को अत्यन्त स्नेह और आदर से याद करता हू कि जिन्होने इस ग्रन्थ से सम्बन्धित प्रत्येक कार्य मे सेतु की तरह अपने आपको लगाए रखा और जिन्होने अपनी अनवरत दौड भाग से मुझे यह महसूस नही होने दिया कि मेरे पाव निष्क्रिय हो गए हैं और मै चल फिर नही सकता। ग्रन्थ की सामग्री के सकलन से सम्पादन तक और मुद्रण से विमोचन तक उनके द्वारा मुझे समय-समय पर उचित सलाह, सुझाव और मार्ग दर्शन मिलता रहा है। अत उनका सान्निध्य इस ग्रन्थ की पूर्णता के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता बन गया था। वे मेरे इतने अधिक निकट हैं कि उनके सम्बन्ध मे और कुछ कहना आत्म-प्रशसा की श्रेणी मे ही आ सकता है।

यहा मै श्री जगदीश प्रसाद आगडा और श्री गगानन्द लूनिया के सहकार्य और सहयोग को भी अत्यन्त स्नेह से याद करता हू । सभी असुविधाओं को झेलते हुए करीब 6 महीने के लम्बे समय तक उन्होंने इस ग्रथ के कार्य को अपना कार्य समझ कर इसे पूरा करने मे मुझे सहायता दी । मैं नही समझता हू कि इन दोनो क्रियाशील और अनुशासित युवको के सहयोग के लिए मैं किसके प्रति अपना आभार प्रकट करू ?

यह ग्रथ मैंने पण्डित हीरालाल शास्त्री को भेट किया है। पण्डित हीरालाल शास्त्री देशी राज्य लोक परिषद के एक अग्रगण्य नेता रहे हैं । उन्होने इसी लोक परिषद के मच से राजपूताना की अधिकाश रियासतो के जन–आन्दोलनो को समुचित दिशा देकर बहुत बल पहुचाया था । राजपूताने मे हमारा सघर्ष राजाओ की छत्रछाया मे जिम्मेवार हुकूमत प्राप्त करने के लिए था परन्तु देश की स्वाधीनता के बाद घटनाए तेजी से बदलने लगी ।रियासतो के सघ राज्य बने । पण्डित हीरालाल शास्त्री के नेतृत्व मे जयपुर राज्य प्रजा-मण्डल ने अपने उद्देश्य मे से 'छत्रछाया' शब्द सबसे पहले निकाल दिया । महाराजाओ की छत्रछाया का लक्ष्य जमाने की हवा मे उड गया । राजशाही समाप्त होने लगी और मत्स्य सघ, फिर छोटा राजस्थान सघ, सयुक्त राजस्थान सघ और फिर विशाल राजस्थान सघ बना और इतिहास ने पण्डित हीरालाल शास्त्री के हाथो मे इन सभी रियासतो और राज्यो के एकीकरण की गुरुत्तर जिम्मेदारी सौंपी और शताब्दियों से चले आने वाले वश परम्परागत राजतन्त्रो की समाप्ति के लिए रक्तहीन राज्य क्रान्ति के लेख लिखना पण्डित हीरालाल शास्त्री के हिस्से मे आया । राजतन्त्रो की समाप्ति के तत्काल बाद पण्डित हीरालाल शास्त्री का प्रथम लोक शासक के रूप मे मनोनयन रियासती जनता मे लोक विजय का प्रतीक बन गया । रियासतो के लोक सघर्ष को जैसे एक लक्ष्य मिल गया । पण्डित हीरालाल शास्त्री का शासनकाल राजस्थान मे राजा-युग की समाप्ति और लोक-युग के समारम्भ का सक्रान्तिकाल था । राजतन्त्रो मे चले आने वाले उसी लोक सघर्ष, उत्पीड़न और लोक विजय की स्मृतियो के उपलक्ष्य मे मैंने इस ग्रन्थ का समर्पण स्वतन्त्रता सग्राम के सूत्रधार पण्डित हीरालाल शास्त्री को किया है ।

इस ग्रथ के सदर्भ मे राजस्थान के स्वतन्त्रता सेनानियो का चारो ओर से मुझे निश्छल स्नेह, सहयोग और प्रोत्साहन मिला है । उसी स्नेह के बल से मैं इस ग्रथ को पूरा कर सका हू । मेरा मानना है कि मेरे प्रति उनका स्नेह और विश्वास ऐसा ही बना रहेगा और उनके आशीर्वाद से मैं आगे भी और अधिक तत्परता से उनकी सेवा करने के अवसरो का उपयोग कर सकूगा ।

जयपुर,
अक्षय तृतीया,
५ मई सन् १९७३

अनुक्रमणिका

अनुक्रम

राजस्थान मे स्वतन्त्रता सग्राम के सूत्रधार ... . — 247–390

अजमेर मेरवाडा और अलग-अलग रियासते

परिशिष्ठ

स म र्प ण

राजपूताने में
शताब्दियों से चले आने वाले
वंश-परंपरागत
राजतंत्रों को समाप्त करने वाली
रक्तहीन-राज्य-क्रांति के सूत्रधार

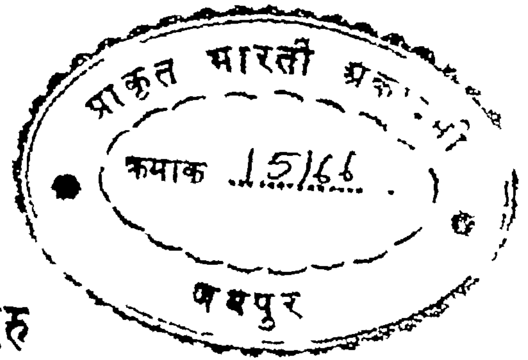
एवं

विशाल राजस्थान में
रियासतों का
प्रशासनिक एकीकरण करने वाले
नि स्पृ ह लो क से व क
पं० हीरालाल शास्त्री को



राजस्थान के

स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी



- श्री गोविन्द गुरु
- ,, अर्जुन लाल सेठी
- ,, केसरी सिंह बारहठ
- ,, विजय सिंह पथिक
- ,, दामोदर दास राठी
- ,, ठा. जोरावर सिंह बारहठ
- ,, राव गोपाल सिंह खरवा (परिशिष्ठ में)

गोविन्द गुरू और
संप सभा का अभियान

◆ जन्म : संवत् १९१५ मार्गशीर्ष शुक्ला पूर्णिमा
३० दिसम्बर सन् १८५८

◆ अवसान : संवत् १९७७, सन् १९२०

◆ मानागढ़ की पहाड़ी
का भीषण नर संहार : ७ दिसम्बर १९०८

गोविन्द गुरु का जन्म

गोविन्द गुरु डूंगरपुर राज्य के बांसीया ग्राम के मूल निवासी थे। बांसीया ग्राम डूंगरपुर से २३ मील की दूरी पर है। गोविन्द गुरु जाति के बणजारे थे। उनका जन्म संवत् १९१५ मार्गशीर्ष शुक्ला पूर्णिमा २० दिसम्बर १९५८ को हुआ था।

भीलो की सामाजिक स्थिति

डूंगरपुर, बांसवाडा, दक्षिणी मेवाड, सिरोही, ईडर तथा गुजरात और मालवा के बीच के तमाम पहाडी प्रदेशो मे मुख्यत: आबादी भील और मीणो की है। यही वर्ग समाज का सबसे पिछडा हुआ, सबसे निर्धन और सबसे अधिक शोषित वर्ग रहा है। भील और मीणे आदिवासी माने गये हैं। उनका वास पहाडो और जगलो मे ही रहा है। राजाओ के जमाने मे भील और मीणा जुरायम पेशा कौमें समझी जाती रही है। (चोर, डाकू और लूटेरो की हिंसक जाति) अत: उन्होने इन जातियो को अपने शासन के प्रभाव से अपने अधिकार मे दबाए हुए रखा। राजा लोग इन तथाकथित हिंसक जातियो मे

शिक्षा के प्रसार के कट्टर विरोधी थे। उन्होने इन जातिग्रो के पिछडेपन और इनकी निर्धनता को बनाए रखा कि जिससे ये हिंसक लोग राजाग्रो के विरुद्ध सर उठाने का साहस न कर सकें।

जनशक्ति को सगठित करने का सकल्प

राजपूताने की रियासत डूगरपुर के श्री गोविन्दगुरु ने इस पीडा जनक स्थिति को सबसे पहले अनुभव किया और उसने भील और मीणो की इस बिखरी हुई जनशक्ति को सगठित करने का निर्णय लिया।

गोविन्द गुरू की शिक्षा दीक्षा और बौद्धिक स्तर

श्री गोविन्दगुरु बहुत अधिक शिक्षित नही थे परन्तु उनका सहज ज्ञान अद्वितीय था। वे बहुश्रुत व्यक्ति थे। देश मे किस स्थान पर क्रान्ति की लपटें कैसी उठती हैं और आगे जाकर क्रान्ति की लपटें कहा कहा फैलने वाली हैं—यही मुख्यरूप से उनको चर्चा का विषय रहता था। उनका बौद्धिक विकास असाधारण था। देश के इतिहास और देश मे घटित होने वाली राजनीति का उन्हे पूरा ज्ञान था। वे दयानन्द सरस्वती के शिष्य थे और उन्ही से स्वदेशी के मत्र की दीक्षा ले चुके थे।

बचपन के सस्कार

गोविन्द गुरु का जन्म सवत्'१९१५ की मार्गशीर्ष शुक्ला पूर्णिमा। २० दिसम्बर १९५८ को मे डूगरपुर राज्य के गाव बासिया के एक सामान्य बणजारा परिवार मे हुआ था। गोविन्द गुरु ने अपने गाव के पुजारी की सहायता से स्वय अपने ही परिश्रम से लिखना पढना सीख लिया था। बणजारा परिवार मे भी उसका रहन सहन और व्यवहार सस्कारी ब्राह्मणो की तरह का था। वह बिना स्नान किए और बिना भगवान की आराधना किए भोजन नहीं करता था। जिस घर मे शराब, मास और मादक वस्तुओ का प्रयोग होता उनके घर मे वह कभी अन्न जल नही लेता। वह गले मे रुद्राक्ष की माला रखता। लोग इन्हें इसी कारण भगतजी और भगत गोविन्द गुरू के नाम से सम्बोधित करते।

स्वामी दयानन्द सरस्वती का प्रभाव

गोविन्द गुरु दयानन्द सरस्वती से बहुत अधिक प्रभावित थे। जब दयानन्द सरस्वती सन् १८८०–८१ मे राजस्थान के दौरे पर आए और अजमेर मेरवाडा होते हुए जब वे उदयपुर पहुचे तब इसी अवधि मे गोविन्द गुरु उनके प्रत्यक्ष सम्पर्क मे आए। हमे बताया गया है कि गोविन्द गुरू लम्बे समय तक दयानन्द सरस्वती के साथ रहे और उनके विचारो और उपदेशो से प्रेरित होकर ही उन्होने सप सभा नाम की सस्था की स्थापना की।

भावी जीवन की रूप रेखा और संकल्प

यह उन दिनो की बात है जबकि जनता मे राजनैतिक चेतना का प्रादुर्भाव ही नही हुआ था। राजा को ईश्वर का रूप माना जाता था। राजभक्ति जीवन का सबसे बडा धर्म था। उन दिनो किसी रियासत या राज्य मे किसी भी तरहका संगठन बनाना अपराध था। श्री गोविन्द गुरू ने जब दयानन्द सरस्वती से लोक सेवा की दीक्षा ली उस समय उनकी आयु २३ वर्ष की थी। वे दो वर्ष तक दयानन्द सरस्वती के इर्द गिर्द रहकर अपने भावी कार्यक्रम की रूपरेखा को पुष्ट करते रहे। उन्होने डूगरपुर, बासवाडा, दक्षिणी मेवाड, सिरोही, ईडर तथा गुजरात और मालवा के बीच के पहाडी प्रदेश मे रहने वाले भीलो को सगठित करने और उन्हे सस्कारी बनाने तथा ईश्वर एक है का व्रत देने के अपने सकल्प पर दयानन्द सरस्वती की स्वीकृति प्राप्त कर ली थी। कहते हैं कि राजस्थान के इस पहाडी भील प्रदेशो मे सन् (१८८३ से १६०८ तक) पूरे पच्चीस वर्ष तक गोविन्द गुरू भीलो के लिए नए जीवन का सन्देश लेकर निरन्तर उनके बीच कार्यरत रहे।

सप-सभा की स्थापना

उन्होने जिस सगठन को जन्म दिया था उसका नाम था सप-सभा। सप राजस्थानी भाषा का शब्द है। सप का अर्थ है सयुक्तता, प्रेम और बधुत्व। सप शब्द से वैभव और ऐश्वर्य का भी बोध होता है। सप सभा का अर्थ था पारस्परिक एक्यता सयुक्तता, बधुत्व और प्रेमभाव रखने वाला सगठन। लेकिन राजाओ ने इस सप सभा का अर्थ लिया था कि राजाओ को गद्दी से हटाने के लिए लोगो को सगठित करके विद्रोह करने वाले लोगो का समूह।

संप-सभा का सास्कृतिक अभियान

सप-सभा को किसी भी रूप मे राजनैतिक सस्था नही कहा जा सकता, न उसका उद्देश्य राजनैतिक था। और न गोविन्द गुरू का दृष्टिकोण राजनैतिक था। उस समय तक तो सामती प्रथा और राजतत्रो को समाप्त कर देने की राजनैतिक दृष्टि भी विकसित नही हुई थी। गोविन्द गुरू का यह सप सभा का अभियान एक सास्कृतिक अभियान था परन्तु आगे जाकर राजाओ द्वारा उसे राजनैतिक समझ लिया गया और सप-सभा के सास्कृतिक समारोहो को विद्रोहात्मक मान लिया गया।

सप-सभा के उद्देश्य और कार्यक्रम

श्री गोविन्द गुरू ने जिन उद्देश्यो, जिन आदर्शो और जिन महान् विचारो का भील जाति मे प्रचार किया वे निम्न थे:—

१—शराब मत पीओ और मास मत खाओ।

२—चोरी मत करो, डाका मत डालो, लूटमार मत करो।

३—मेहनत करो, खेती करो, मजदूरी करो और अपना तथा अपने परिवार का पोषण अपनी मेहनत से करो।

४—गाव गाव मे स्कूल खोलो, बच्चो को पढ़ाओ, बूढो को भी पढाओ और ज्ञान का प्रसार करो।

५—रोज स्नान करो, भगवान मे आस्था रखो। रोज हवन करो, नारियल की आहुति दो, यदि इतना नही कर सको तो अगारे पर घी की कुछ बून्दे डालकर ही हवन का नियम पालन करो।

६—अपने बच्चो को संस्कारी बनाओ, सस्कार देने वाले लोगो के गांव गाव मे कथा-वार्ता और व्याख्यान कराओ।

७—अपने परिवार और समाज की माली हालात आर्थिक स्थिति सुधारने के उपाय करो (परन्तु चोरी डकैती नही)।

८ अदालतो मे मत जाओ, अपनी पचायतें बनाओ। अपने तथा गाव के मामले मुकदमों का निपटारा पचायतो मे ही करो, पचायत के फैसलो को सर्वोपरि मानो।

९ राजा जागीरदार या सरकारी अफसर को बेगार मत दो, इनमे से किसी का भी अन्याय मत सहो, अन्याय का मुकाबिला बहादुरी से करो।

१० स्वदेशी का उपयोग करो, अपनी जरूरत के लिए देश के बाहर की बनी हुई किसी वस्तु को काम मे मत लो।

भक्त के रूप मे दीक्षा

गोविन्द गुरू ने इन उद्देश्यो को मानने और इन नियमो का पालन करने वाले लोगो को भक्त की सज्ञा देना शुरू कर दिया था। संप-सभा का यह अभियान भील क्षेत्रो मे आज भी भक्त आन्दोलन के रूप मे याद किया जाता है। गोविन्द गुरू ने इस तरह से भक्त बनने व लोगो के गले मे एक एक रुद्राक्ष का मनका पहनाना शुरू कर दिया था।

सप-सभा का प्रसार

इन उद्देश्यो का प्रचार करते करते श्री गोविन्द गुरू ने संप-सभा की स्थापना प्रारंभ मे सिरोही के भील क्षेत्रो मे की थी जो आगे जाकर फैलते फैलते राजपूताने के सपूर्ण दक्षिणी पूर्वी क्षेत्रो के भील इलाको मे फैल गयी थी। भीलो मे सपसभा के इस भक्त आन्दोलन ने बहुत जोर पकड़ लिया था गाव गाव के भील गोविन्द गुरू के हाथो से

रुद्राक्ष का मनका पहन कर भक्त बन गये थे। भीलो का सगठन जोर पकडता जा रहा था। उन्होने गाव गाव में अपनी सप-सभाए सगठित की थी। उन्होंने शराब और मास नहीं खाने तथा चोरी और डकैती नही करने की शपथ ले ली थी और सरकारी अधिकारियो, जागीरदारो को तथा राज्य को बैठ बेगार देने से इन्कार कर दिया था।

गोविन्द गरू का असाधारण प्रभाव

बासवाडा और डूंगरपुर के भीलो मे गोविन्द गुरू का प्रभाव असाधारण था। वह लाखों भीलो का एकमात्र नेता था। उसका सकेत मात्र भीलो के लिए आज्ञा थी उसके मुह से बोला हुआ हर शब्द भीलो के लिए अलिखित कानून था। गोविन्द गुरू का आज्ञा का पालन भील अपने सिर के सौदे पर भी हर समय करने को तैयार रहते थे। गोविम्द गुरु ने अपनी जन्म भूमि के पास छोणी नाम की पहाडी पर सबसे पहले घूणी जमाई और निशान चढाये। यहा जागीरदार, ब्राह्मण और महाजन भी इनके चेले हुए।

सकटो से मुक्ति के लिए घर घर मे धूणी

भीलो के प्रत्येक घर मे घूणी लगने लग गयी। धूणी का अर्थ है हवनकुड। भील लोग कोई तत्र मत्र नही जानते थे लेकिन गोविन्द गुरू के आदेशानुसार प्रतिदिन घूणी लगाकर उसमे घी और खोपरा होम दिया करते थे। उनकी यह निश्चित् मान्यता बनती जा रही थी कि उनके घूणी लगाने से (हवन करने से) उनके कुल देवता उन पर प्रसन्न रहेगे और उनके परिवारो पर राज्य का अथवा प्रकृत्ति का कोई सकट नही आ सकेगा इससे भीलो का मनोबल और आत्म विश्वास निरन्तर बढता गया।

इनका प्रभाव बढता देखकर गुजरात के भील गुरू गोविन्द को सथरामपुर राज्य के नटवा गाव मे ले गये।

मानागढ की पहाडी पर

सन् १९०३ की मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा के दिन गोविन्द गुरू मानागढ की पहाडी पर चले गये। उस दिन मानगढ की पहाडी पर गोविन्द गुरू ने बहुत बडी घूणी लगाई और सात निशान चढाये गुजरात, बासवाडा और डूगरपुर राज्य के हजारो भील दूर दूर से उस दिन उस पहाडी पर आए प्रत्येक भील एक एक नारियल और कटोरी मे घी लेकर आता और घूणी मे उसे होम देता मानागढ की पहाडी पर नारियलो का एक पहाड़ सा खडा हो गया।

सप सभा के वार्षिक अधिवेशन

सन् १९०३ के बाद प्रतिवर्ष मार्गशीर्ष पूर्णिमा की मानागढ की पहाडी पर विशाल मेला लगता।

मानागढ की पहाडी पर भीलो के इस मिलन पर्व को सप-सभा का वार्षिक अधिवेशन कहा जा सकता है प्रत्येक गाव की पचायत का सरपच अपने क्षेत्र की प्रगति का विवरण गोविन्द गुरू को सुनाता।

इस दिन डूगरपुर, वासवाडा और गुजरात के डेढ लाख से अधिक लोग मानागढ की पहाडी पर इकट्ठे होते तब इनके प्रमुख शिष्य, पूजा धीरा, कुरीया रोत आदि गोविंद गुरू से प्रार्थना करते कि आप इस जन समूह को उपदेश दें। उन्होने चोरी नही करना, झूठ नही बोलना, शराब नही पीना मास नही खाना सप रखने और सगठित रहने बुरे कामो को रोकने तथा साफ सुथरे रहकर भजन करने का उपदेश देते। इसका अच्छा प्रभाव हुआ और लोग इन उपदेशो का प्रचार करने लगे।

दमन, शोषण और अत्याचार का प्रतिरोध

गोविन्द गुरू के प्रयत्नो मे राजपूताने के दक्षिणी भाग के पहाडी इलाको के भील पूरी तरह से सगठित हो गये थे। उनमे जागरण की नयी लहर आ गयी थी. वे राज्य के दमन, शोषण और अत्याचार का मूकाविला करने को हर तरह से तैयार हो रहे थे। अन्याय का मुकाबिला करने को हर स्थान पर सप–सभा के भक्त भील तैयार रहते थे। सिरोही, वासवाडा, डूगरपुर और दक्षिणी मेवाड और गुजरात के राजघराने इससे चिन्तित हो उठे थे। उन्होने भीलो पर अत्याचार करने मे कोई कसर नही रखी परन्तु भीलो की जागृत जनशक्ति का मुकाबिला करने मे स्वय राजा भयभीत हो रहे थे, उन्होने भीलो के इस आन्दोलन को कुचलने और उनकी सगठित शक्ति को छिन्न भिन्न करने के अनेको षडयन्त्र किए परन्तु सप-सभा की शक्तियो को वे नही तोड सके।

राजाओ द्वारा ए० जी० जी० से हस्तक्षेप का अनुरोध

मानागढ की पहाडी पर मार्गशीर्ष शुक्ला पूर्णिमा को सप सभा का वार्षिक अधिवेशन १६०३ से १६०७ तक चलता रहा। अत मे डूगरपुर और वासवाडा और कुशलगढ के राजाओ ने ए० जी० जी० से प्रार्थना की कि इन क्षेत्रो के भील सगठित होकर वासवाडा और डूगरपुर मे भील राज्य कायम करना चाहते हैं गुजरात के सुथरामपुर राज्य के गठरा गाव के थानेदार को पूजा धीरा ने मार डाला तब सुथ रामपुर के राजा ने गोधरा और अहमदाबाद के कमीशनरो और वडोदा और देवागढ वारीया के राजाओ को तार किये कि डेढ लाख भील इकट्ठे होकर मेरा खजाना लुटना चाहते हैं तथा भील राज्य कायम करना चाहते हैं अत जल्दी से मशीनगन और फौज भेजें क्योकि ७ दिसम्बर १६०८ को (सवत् १६६५ की मिगसर शुक्ला पूर्णिमा) वे हजारो की तादाद मे हथियारो से लैस होकर इकट्ठे होगे और गोविन्द गुरू नाम के व्यक्ति के नेतृत्व मे वे लूटपाट और हिंसात्मक कार्यवाही करके भील राज्य स्थापित करने का प्रयत्न करेगें। उन्होने ए० जी० जी० से प्रार्थना की कि गोविन्द गुरू को गिरफ्तार किया जाए और भीलो के हिंसक सगठन को समाप्त किया जाय।

खैरवाडा की छावनी को आदेश

राजाओ की शिकायत पर ए० जी० जी० ने खैरवाडा स्थित छावनी के सेनाधिकारियो को आदेश दिया कि वे गोविन्द गुरू को गिरफ्तार करें और एकत्रित एव हथियार

सगठित भीलो को तितर बितर कर दें। इसी तरह वडोदा गोधरा और अहमदावाद से मशीनगन और फौज आ गई।

मानागढ को पहाडी पर लाशो के ढेर

७ दिसम्बर १९०८ सवत् १९६५ की मार्गशीर्ष शुक्ला पूर्णिमा को दूर दूर के इलाको के हजारो भील रग विरंगी पोशाको मे मानागढ की पहाडी पर बडे चबूतरे पर बनाई गयी धूणी मे अपने नारियल और घी होम रहे थे कि अकस्मात् इन फौजी पल्टनो ने मानागढ की पहाडी पर पहुँच कर अधाधु ध गोलियो की बौछार शुरू करदी। छावनी के सैनिको ने मानागढ की पहाडी को चारो ओर से घेर लिया और चारो ओर से गोलिया वरसायी जाने लगी। पहाडी पर धूणी के आस पास लाशो पर लाशें गिरने लगी चारो ओर से पहाडी घिरी हुयी थी जिधर भी लोगो ने मु ह किया वे गोलियो से भून दिए गए। उस दिन खैरवाडा छावनी के सिपाहियो ने और गुजरात की फौजो ने एक दिन मे मानागढ की पहाडी पर करीव १५०० लाशें विछा दी।

गोविन्द गुरू को गिरफ्तारी

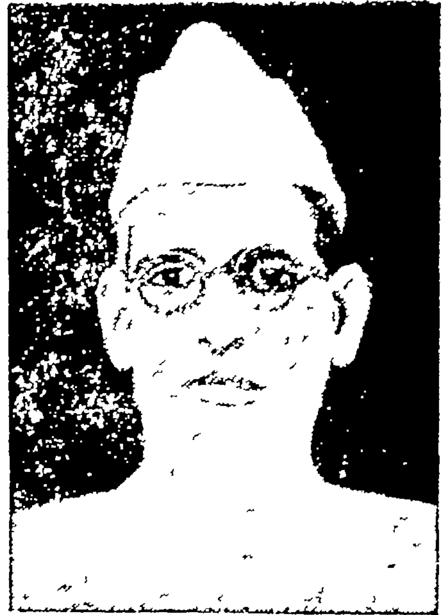
गोविन्द गुरू गिरफ्तार कर लिए गए उन्हे तथा उनकी पत्नी को अहमदाबाद सैंट्रल जेल मे भेज दिया गया। वहा ढाई माह रखने के बाद उन पर सु थरामपुर राज्य के गठरा गाव के थानेदार को मार डालने का अभियोग चलाया गया। उनके शिष्य पु जा धीरा के इस काम से गोविन्द गुरू बहुत दु खी हुए ही थे किन्तु उस शिष्य ने यह कहा कि गुरू गोविन्द ने उसको गाजा पिलाया था जिसके नशे मे उसने यह हत्या की थी। क्योकि यह सु थरामपुर रियासत का मामला था इसलिए सु थरामपुर के तालाब की पाल पर केस चला और गुरू गोविन्द को फासी की सजा हुई। सु थरामपुर की रानी ने फासी की सजा को २० वर्ष की सजा मे परिवर्तित कर दिया। इसकी अपील की गयी तो यह सजा १० वर्ष की रह गयी। इसके बाद अग्रेजो की जब जर्मन सरकार के साथ सन्धि हुई तो कैदियो को छूट मिली उस समय इनको भी जेल से छोड दिया गया किन्तु इनके साथ यह शर्त लगायी गयी थी कि गुजरात की सु थरामपुर और राजस्थान की डू गरपुर, बासवाडा व कुशलगढ रियासतो मे प्रवेश नही कर सकेंगे।

कम्बोई मे मृत्यु

इसके बाद वे ब्रिटिश इलाके में दाहोद के पास झालोद कस्बे मे एक झोपडी बनाकर वे रहने लगे तत्पचात् वे वहा से लीम्बडी के पास कम्बोई नामक ग्राम मे चले गये और वहा खेती के द्वारा अपना जीवन निर्वाह करने लगे व वही पर उनकी मृत्यु हो गयी जहा आज भी उनके नाम का चबूतरा (धूनी) बना हुआ है तथा प्रतिवर्ष वहा मेला लगता है।

मानागढ की पवित्र धूनी पर आज भी प्रतिवर्ष मार्गशीर्ष की पूर्णिमा के दिन एक विशाल मेला भरता है जहा भील तथा अन्य जातियों के लोग एकत्रित होते हैं और गुरू गोविन्द की धूनी मे हवन करते हैं और रातभर भजन-कीर्तन करते हैं।

श्री अर्जुन लाल सेठी



जन्म : ६ सितम्बर, १८८०

अवसान २३ दिसम्बर, १९४१

महाराष्ट्र धन्य हो गया !

मद्रास की वैल्लूर जेल से 7½ वर्ष के कारावास से मुक्ति के वाद पूना स्टेशन पर महान् देशभक्त श्री अर्जुनलाल सेठी का स्वागत करते हुए लोकमान्य वाल गंगाधर तिलक ने कहा था कि 'आज महाराष्ट्रवासी सेठीजी को अपने वीच मे देखकर फूले नहीं समाते, ऐसे महान् त्यागी, देश भक्त और कठोर तपस्वी का स्वागत करते हुए महाराष्ट्र अपने को धन्य समझता है। प्रसिद्ध लेखक श्री गोयलीय ने इस घटना का विवरण करते हुए लिखा है कि लोकमान्य तिलक सेठीजी से मिलकर इतने आनन्द विभोर हो गये कि उन्होने अपने गले का रेशमी दुपट्टा उतार कर सेठीजी के गले मे डाल दिया।

वग्घी के घोडो की जगह जुत गए

मद्रास की वैल्लूर जेल से मुक्त होने के वाद जव सेठीजी इन्दौर पहुँचे तो उस समय के उनके स्वागत का वर्णन श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने इन शब्दो मे किया है—"उन दिनो मैं इन्दौर मे था। वडे-देश भक्त नेता सेठजी वहा आये तो उनके स्वागत सम्मान मे छात्रो ने वग्घी के घोडे खोल दिए और खुद गाडी मे घोडो की जगह पर जुतकर वग्घी को खीचा. उन जोशीले नौजवानो मे मैं भी एक था हालाकि तव मैं कोई छात्र नहीं था। सरस्वती का सहायक सपादक रह चुका था।

सेठजी का जन्म और शिक्षा

श्री अर्जुनलाल सेठी का जन्म ६ सितम्बर, १८८० को जयपुर मे हुआ था। १९०२ मे उन्होने वी० ए० की परीक्षा जयपुर के महाराजा कॉलेज से पास कर ली थी।

उस समय बी० ए० पास करना बडे गौरव की बात मानी जाती थी। कॉलेज से निकलने के बाद वे मथुरा और सहारनपुर की जैन सस्थाओ मे अध्यापक रहे और १९०७ मे पुन जयपुर मे आकर वर्द्धमान विद्यालय की स्थापना की। इसी वर्ष वे सूरत की काग्रेस मे शामिल हुए और लोकमान्य तिलक के सम्पर्क मे आए।

असाधारण ज्ञान के अधिपति

श्री सेठीजी अग्रेजी, फारसी, सस्कृत, अरबी और पाली के विद्वान थे और जैन दर्शन के माने हुए पडित थे। सस्कृत उन्होने स्वय सीखी थी। जैन-दर्शन पर व्याख्यान देते तो बडे बडे दिग्गज पण्डित दातो तले अगुली दबा लेते उन्होने स्यादवाद की व्याख्या सर्व-धर्म-समभाव के रूप मे की और जैनियो को गीता पढने की सलाह दी वे जैन धर्म के उद्भट् विद्वान, हिन्दू धर्म विशेष कर गीता के अधिकारी विद्वान, इस्लाम धर्म के ऐसे जानकार कि मुसलमान उनके पास कुरान पढ़ने आते, राजनीति मे इतने पारगत कि अच्छे अच्छे राजनीतिज्ञ मत्रणा के लिए उनके पास आते। व्याख्यान शैली अत्यन्त प्रभावशाली, जनता घन्टो मन्त्र मुग्ध बनी सुनती रहती।

जयपुर की दीवानगिरी ठुकराई

श्री सेठीजी की तेजस्विता, विद्याव्यसन, ज्ञान, राजनैतिक सूझबूझ और चारित्रिक दृढता की यशोगाथाए इस समय तक चारो ओर फैलने लग गई थी। उसी से प्रभावित होकर जयपुर महाराजा की ओर से राज्य के प्रधानमत्री का ओहदा उन्हे पेश किया गया था परन्तु उन्होने महाराजा को धन्यवाद देते हुए कहला दिया कि श्रीमान्! "अर्जुनलाल नौकरी करेगा तो अँग्रेजो को भारत से कौन निकालेगा ?"

जयपुर का वर्द्धमान विद्यालय

सेठीजी तो भारत माता की सेवा का व्रत ले चुके थे, आगे उसी व्रत को पूरा करने मे उन्होने अपनी उम्र का सबसे अच्छा और बडा भाग लगा दिया था। उन्होने अपना यह महान् कार्य जयपुर के वर्द्धमान विद्यालय से ही प्रारम्भ किया। वर्द्धमान विद्यालय राष्ट्रीयता के वातावरण मे सचालित मात्र विद्यालय ही नही था अपितु देश भर के क्रान्तिकारियो को समुचित प्रशिक्षण देने का एक प्रभावशाली केन्द्र था महाराष्ट्र और कश्मीर जैसे सुदूर प्रान्तो से चुन चुन कर नौजवानो को यहा शिक्षण के लिए एकत्रित किया गया था।

क्रान्तिकारी शिक्षक और क्रान्तिकारी छात्र

सेठीजी के विद्यालय मे धार्मिक शिक्षा के साथ साथ विद्यार्थियो को देश सेवा और क्रान्ति के पाठ पढाए जाते थे। क्रान्तिकारी युवक माणकचन्द और मोतीचन्द इस विद्यालय मे शोलापुर से पढने आये थे उनके विद्यालय मे शिक्षक का कार्य भी देश के चुने हुए क्रान्ति-

कारियो को ही सौंपा गया था। वगाल की अनुशीलन समिति के सदस्य मिर्जापुर के श्री विष्णुदत्त भी वर्द्धमान विद्यालय मे शिक्षक थी।

राजस्थान मे सशस्त्र क्रान्ति के सगठन की ओर

कुछ समय के लिए सेठीजी त्रिलोकचन्द कल्याणमल जैन हाई स्कूल मे प्रधान अध्यापक होकर इन्दौर चले गये थे परन्तु इन्दौर से वे जल्दी ही जयपुर आ गए। इससे पहिले ही प्रसिद्ध क्रान्तिकारी रासविहारी बोस से उनका सम्पर्क हो चुका था. उन्हे राजस्थान मे सशस्त्र क्रान्ति का सगठन करने का भार सौंपा गया था।

जिला आरा, विहार का निमेज-हत्या-काड

क्रान्ति को सगठित करने के लिए वगाल के क्रान्तिकारियो ने डाके डालने शुरु किये थे और राजस्थान के क्रान्तिकारियो ने भी यही तरीका अपनाने का फैसला किया। सेठीजी के वर्द्धमान विद्यालय के शिक्षक विष्णुदत्त ने अपने चार विद्यार्थियो को तैयार किया. इनके नाम थे मोतीचन्द, माणकचन्द, जयचन्द और जोरावरसिह जोरावरसिह केसरीसिह वारहठ के छोटे भाई थे। इन पाचो ने विहार के आरा जिले मे नीमेज के जैन उपासरे पर डाका डाला। मुठभेड मे उपासरे का महन्त तो मारा गया परन्तु रुपया हाथ नहीं लगा प्रत्यक्ष रूप से सेठीजी का नीमेज काण्ड से कोई सम्वन्ध नही था परन्तु शिवनारायण नाम के एक व्यक्ति ने मुखवरी करके सेठीजी को नीमेज (जिला आरा, विहार) के महन्त की हत्या और दिल्ली षडयत्र केस मे फसा दिया।

१९१४ में नजरवन्दी

इस केस मे सेठीजी के शिष्य मोतीचन्द को फासी दे दी गई जिससे सेठीजी के हृदय को वहुत चोट पहुँची। सेठीजी के खिलाफ सवूत न मिलने के कारण उन्हे सजा तो नही दी जा सकी लेकिन उन्हे जयपुर मे नजरवन्द कर दिया गया। यहा उन्होने देव-प्रतिमा के दर्शन किए विना भोजन लेने से इन्कार कर दिया तो रियासत को उनकी माग पूरी करनी पडी। यह घटना सन् १९१३-१४ की है।

१९२० मे सात वर्ष वाद मुक्ति

सेठीजी की नजरवन्दी से सारे भारत मे तहलका मच गया और देश के सारे नेताओ ने तथा राष्ट्रीय समाचार पत्रो ने घोर विरोध किया। इस तहलके से घवरा कर सरकार ने सेठीजी को मद्रास प्रेसीडेन्सी के वैलूर जेल मे भेज दिया यहां भी उन्होने सरकार को चैन नही लेने दिया और राजनैतिक कैदियो के साथ किए जाने वाले दुर्व्यवहार के खिलाफ भूख हडताल कर दी जो ७० दिन तक चली। इस नजरवन्दी के विरुद्ध देश भर मे रोष की भावना के कारण आखिर सरकार ने सन् १९२० ई० मे सेठीजी को छोड दिया।

अजमेर – नया कार्यक्षेत्र

वैलूर जेल मे मुक्त होने के वाद सेठीजी ने अपना कार्य क्षेत्र अजमेर वनाया और यहा रहकर काग्रेसी तथा क्रान्तिकारी दोनो प्रवृत्तियो का सचालन करते रहे।

१९२१ के सविनय अवज्ञा आन्दोलन मे अजमेर मे हिन्दु-मुस्लिम एकता और शराब के ठेको की पीकेटिंग का जो अभूतपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया उसकी दाद गाधीजी को भी देनी पड़ी।

क्रान्तिकारियो को मार्ग दर्शन

प्रसिद्ध क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद और उनके दल के लोग मन्त्रणा के लिए अक्सर सेठीजी के पास अजमेर आया करते थे। मेरठ षडयन्त्र काड के अभियुक्त शौकत उस्मानी और काकोरी केस के फरार अभियुक्त अशफाकुल्ला को सेठीजी ने अपने पास छिपाए रखा था। अजमेर के क्रान्तिकारी युवको को सेठीजी से ही प्रेरणा और सहायता मिलती थी।

सेठीजी की लोकप्रियता — चरम सीमा पर

सेठीजी की शोहरत देश भर मे फैली हुई थी। वे वेलूर से मुक्त होकर आते ही युवको के दिल मे समा गए थे। उनके एक एक शब्द मे आजादी की भावना और अग्रेजी-राज के प्रति घृणा फूट पडती थी। वे साम्राज्यशाही की पीडा से पागल दिखाई पडते थे। उनके भाषण सुन सुनकर जनता जोश मे बावली हो जाती थी। वे हृदय से बोलते थे और सर्व साधारण को मुग्ध करना जानते थे।

१९२१ के बाद वे ही प्रान्त के प्रमुख राष्ट्रीय नेता थे और उनका प्रभाव इतना था कि एक समय उनकी खादी की टोपी ११००/–रु० मे नीलाम हुई। और एक बार जब मध्य भारत की सरकार के वारंट पर उन्हे गिरफ्तार कर सिवनी ले जाया जा रहा था तो जनता स्टेशन पर उमड पडी। हजारो लोग रेल की पटरियो पर लेट गए। अजमेर रेल्वे वर्क्स शोप के मजदूर और जनता के लोग अजमेर से आगे दो तीन स्टेशनो तक रेल की पटरियो पर घटो तक लेटे रहे। सभी सरकारी अधिकारी बडे असमजस मे पड गए अत मे सेठीजी के ही समझाने पर हिन्दु–मुस्लिम जनता का अपार समूह उस स्थान से हटा। मध्यप्रदेश मे आप 1½ वर्ष तक कठिन करावास मे रहे।

नेतृत्व मे परिवर्तन करने का गाधीवादी षडयन्त्र

सिवनी जेल से लौटकर आने के बाद अजमेर मे (१९२४ से २८ के बीच) नेतृत्व मे आमूल परिवर्तन करने की कार्यवाहिया जोर पकड रही थी। अजमेर मे गाधीवादी और चर्खा सघ के लोग जोर पकड रहे थे, उनका नेतृत्व श्री हरिभाऊ उपाध्याय कर रहे थे। राजस्थान मे क्रान्तिकारी और उग्र नेतृत्व को समाप्त करने के लिए तैयारिया जोरो से शुरू हो गई थी। काग्रेस कार्यकर्ताओ मे अलग अलग दल बन चुके थे। गाधीवादी ग्रुप सेठीजी के नेतृत्व को समाप्त करने के लिए कृत सकल्प था।

पटेल और नेहरू के अनुरोध पर

सेठीजी इस वातावरण से विक्षुब्ध हो गए थे और इस तरह के किसी दल दल मे फसने को तैयार नही थे परन्तु उनके मित्र श्री विट्ठल भाई पटेल और श्री मोतीलाल नेहरू

ने अजमेर आकर उन्हे काग्रेस की बागडोर अपने हाथो मे सम्हालने का अनुरोध किया. उन्होंने काग्रेस की बागडोर अपने हाथ मे ली और फूट का वातावरण ऊपरी तौर से शान्त हुआ परन्तु गाधीवादी ग्रुप को यह सह्य नही था।

गाधीवादी षडयन्त्रो से सेठीजी की पराजय

श्री हरिभाऊ उपाध्याय और सेठीजी मे चुनाव युद्ध लडा गया, बाबा नरसिंहदास और आर्यसमाज के नेता श्री हरिभाऊ उपाध्याय के साथ थे। चुनाव लडा गया, फर्जी मेम्बर बनाए गए, उनके लिए खादी के कपडे बनवाकर 'ग्रीन रूम' पद्धति का उपयोग किया गया। बनावटी गवाहिया और सबूत पेश किए गए। सस्थाओ का दुरुपयोग हुआ, चुनाव मे अनेको अवाछनीय कार्यवाहिया हुई। परिणामत सेठीजी परास्त हुए, उन्हे ऐसी चोट लगी कि वे फिर राजनीति के क्षेत्र मे पूजी, सस्था और साधनो से समर्थित गाधीवाद का मुकाबिला नही कर सके प्रान्तीय काग्रेस मे इस तरह से गाधीवादी दल की प्रधानता हो गई।

विरोधियो का विरोध

श्री सेठीजी के विरुद्ध प्रान्तीय कांग्रेस के नेताओ द्वारा इस तरह का प्रचार भी कराया गया कि वे मुसलमान हो गए। सेठीजी पर चारो ओर से विरोधात्मक प्रहार होते गए उन्होने जीवन मे कभी कोई व्यवसाय नही किया था न उन्होने अपने परिवार के भरण पोषण और अपने पुत्रो की शिक्षा दीक्षा की ओर ध्यान दिया था। राजनैतिक क्षेत्र मे वे विरोधियो से घिरे हुए थे और आर्थिक रूप से भी कही पनप न जाए इसके लिए भी उनके काग्रेसी विरोधियो ने अपने प्रयत्नो मे कोई कसर नही रखी।

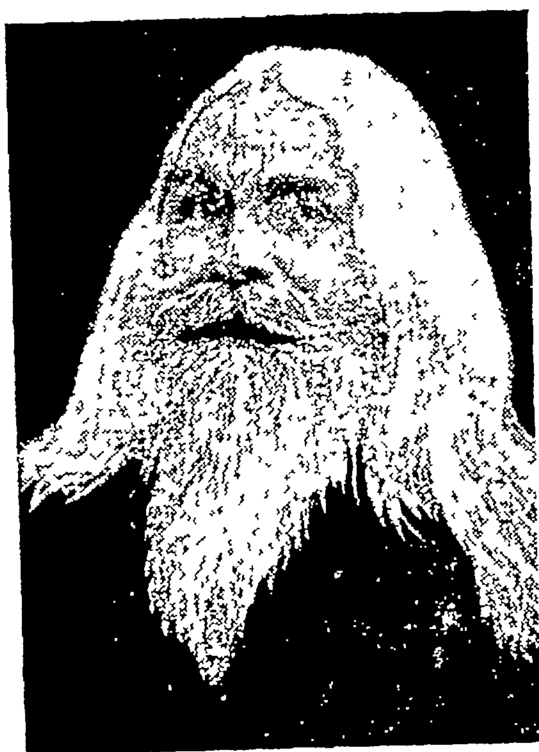
ईश्वर भक्ति और अन्तिम आकाक्षा

सेठीजी ने अन्त मे अपना घर बार भी छोड दिया, खुदापरस्ती—ईश्वर भक्ति मे अपने आपको लगा दिया। वे हिन्दु-मुस्लिम एकता के कट्टर हिमायती थे। अजमेर के मुस्लमानो की श्री सेठीजी पर अटूट श्रद्धा थी। साम्प्रदायिक दगो के समय अपनी जान को हथेली पर लेकर वे दगो के बीच में कूद पडे थे स्वय बुरी तरह घायल हो गए लेकिन उनके प्रयत्नो से मुसलमानो को बहुत बडी रक्षा मिलना सभव हो सका था। उनकी यही अतिम इच्छा थी कि मरने के बाद उन्हे जलाया नही जाए बल्कि कब्र मे दफनाया जाए और २३ दिसम्बर ४१ को उनकी इच्छानुसार उन्हें कब्र मे दफना दिया गया।

कब्र से देशभक्ति के दाने उगेंगे

महात्मा भगवानदीनजी ने उनकी मृत्यु पर कहा था कि एक शोर हैं कि सेठीजी दफनाए गए और यह भी शोर है कि उनके दफनाए जाने की जगह का ठीक पता नहीं है, अगर यह बात ठीक है तो बडे काम की बात है, क्योकि इस तरह मरने के बाद नाम न छोडकर दफनाए जाने से किसी दिन तो उन हड्डियो पर हल चलेगा और वही खेती होगी और उससे जो दाने उगेंगे उन्हे जो खायेगा उनमे देशभक्ति आये बगैर रह नही सकेगी।

महान् क्रान्तिकारी ठाकुर केसरीसिंह बारहठ



जन्म : २१ नवम्बर १८७२

अवसान : १४ अगस्त १९४१

प्रधान मानवीय सत्य
है स्वतन्त्रता अहा !
वरेण्य-धर्म, कर्म मर्म
मन्त्र ही यही रहा !
महान् प्रान, प्रान वारि के
तुम्हे ही खोजते !
नमामि विश्व वन्दनीय
अन्त माँ स्वतंत्रते !

—केशरीसिंह बारहठ

राजस्थान में सशस्त्र क्रान्ति के जनक

श्री केसरीसिंह बारहठ ने 1903 मे अपनी 31 वर्ष की अवस्था मे पहुचते पहुँचते अपने पिता से गृह-कार्य भार से मुक्त रह कर देश सेवा मे अपना सम्पूर्ण जीवन लगा देने की लिखित आज्ञा माँगी थी। उनके मन मे एक ही सपना था कि भारत को विदेशी दासता से मुक्त करवाया जाए। उनका मानना था कि देश व्यापी सशस्त्र क्रान्ति से ही अंग्रेजो को भारत से निकालना सभव हो सकता है। अतः उन्होने अभिनव भारत समिति

नामक क्रान्तिकारी सगठन से अपना सम्पर्क स्थापित किया और राजस्थान मे उसकी शाखा की स्थापना करवाई. अभिनव भारत समिति के अमीरचन्द और व्रजमोहन माथुर को शाखा का सचालक वनाया। श्री केसरीसिंह वारहठ इस क्रान्तिकारी सगठन के प्राण थे उनके साथ खरवा के राव गोपालसिंह, व्यावर के सेठ दामोदरदास राठी और जयपुर के अर्जुनलाल सेठी इस सस्था के द्वारा राजपूताने मे क्रान्ति की योजना को सफल करने के लिए प्राणपण से जुटे हुए थे।

राजपूतो और सामतो को-क्रान्ति की प्रेरणा

वारहठ केसरीसिंह का कार्यक्षेत्र राजपूताने के रईसो और जागीरदारो मे ब्रिटिश सल्तनत के विरुद्ध भावनाए जगाना और राष्ट्रव्यापी विप्लव मे उनका सक्रिय सहयोग प्राप्त करना था। उदयपुर, जोधपुर और बीकानेर के राजघरानो तथा जागीरदारो पर उनका वहुत गहरा प्रभाव था। चारण जाति मे भी उन्होंने कई क्रान्तिकारी तैयार कर दिए थे। कई अन्य रियासतो के राजा और उमराव भी ठाकुर केसरीसिंह वारहठ के तेजस्वी व्यक्तित्व और उनके मिशन की ओर आकर्षित हो रहे थे। ईडर और जोधपुर के कर्नल सर प्रतापसिंह, सीतापुरी के महाराजा रामसिंह, उदयपुर के महाराणा फतेहसिंह और कोटा के महाराव उम्मेदसिंह उनके क्रान्तिकारी मिशन के प्रवल समर्थक, सहयोगी और उनके प्रशसक थे।

जन्म, वाल्यकाल और विवाह

केसरीसिंह का जन्म चारण जाति मे वारहठ कृष्णसिंह के यहा शाहपुरा के निकट खेडा नामक ग्राम मे माघ कृष्ण 6 सोमवार सम्वत् 1929, 21 नवम्बर सन् 1872 ई० को हुआ था और स्वर्गारोहण कोटा मे भादवा वुदी 7 गुरुवार सवत् 1998 वि० 14 अगस्त सन् 1941 को उनके पिता उच्च कोटि के विद्वान् और इतिहासज्ञ थे जिन्होंने सूर्यमल मिश्रण की 'वश-भास्कर' की उदधिमथनी टीका और 'राजपूताने का अपूर्व इतिहास' नामक विशाल अप्रकाशित ग्रन्थ लिखे थे। कृष्णसिंह जी ने एक समय चित्तौड मे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती और एक मौलवी साहव के वीच हुए शास्त्रार्थ की मध्यस्थता की थी। सुविज्ञ पिता के अतिरिक्त वालक केशरीसिंह के सस्कारो पर महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदासजी उदयपुर का सवसे अधिक प्रभाव पडा। इनका विवाह महियारिया परिवार मे श्री देवीसिंह जी कविराजा की वहिन माणिक कँवर के साथ हुआ और वीर पत्नी ने वीर पति को पूर्णतया पहिचान कर अभिन्न साथी का काम किया। यही थी शहीद कुँवर प्रताप की माता। कुँवर प्रताप को तेईस वर्ष की उम्र मे व्रिटिश सरकार के कठोर कारावास मे ही अनेक पीडाओ को सहते हुए अपने जीवन का अन्त करना पडा। माँ से छिन कर जाने वाला पुत्र लौट कर माँ की गोद मे नही आ सका।

शिक्षा और स्वाध्याय

काशी के पण्डितो द्वारा केशरीसिंह की शिक्षा-दीक्षा यद्यपि सस्कृत मे सम्पन्न हुई

थी और वे सस्कृत, ज्योतिष, वेदान्त और राजनीति के उच्चकोटि के विद्वान् थे परन्तु उनकी चेतना केवल एकागी बनी रहने को सतुष्ट नही थी। उन्होने सस्कृत एव हिन्दी के अतिरिक्त प्राकृत, पाली, बगला, मराठी एव गुजराती का प्रचुर अध्ययन किया। वे साहित्य, इतिहास, राजनीति एव दर्शन शास्त्र के प्रकाण्ड पण्डित थे। युवक केशरीसिंह की मानसिक चेतना इटली के राष्ट्रपिता मौजनी के जीवन और कर्म से ओतप्रोत हो गई जिन्हे वे अपना आदर्श मानते थे।

युग धर्म का आह्वान

यो तो ठा० केसरीसिंह बारहठ शाहपुरा के एक बडे जागीरदार थे। उन दिनो मे उनके जागीर की आय लगभग बारह हजार रुपये वार्षिक थी। परन्तु उनका झुकाव प्रत्यक्ष रूप से राजनीति और क्रान्ति की ओर था। इसलिए सामती जीवन का वैभव और विलास उन्हे बाधकर नही रख सका। उन्होने अपने आपको नवीन युग के द्वार पर खडे पाया। युग-धर्म ने कवि का आह्वान किया और उसके देशभक्त हृदय ने कककटाकीर्ण पथ का अनुसरण किया। हालांकि वे महाराणा उदयपुर के सलाहकार थे और बाद मे कोटा के महाराव ने उनकी प्रशसा सुनकर उन्हे कोटा मे बुला लिया था। लेकिन उनका प्रयत्न इन राजाओ को क्रान्ति के मार्ग मे क्रियाशील बनाना ही था।

हार्दिक अभिलाषा की अभिव्यक्ति

उनका यह मानना था कि अग्रेजो द्वारा चलाए गए विश्वविद्यालय गुलामो को उत्पन्न करने वाले साचे है जहाँ भारत के युवको को गुलामी मे प्रसन्न रहने का ही पाठ पढाया जाता है इसलिए उन्होने अपने पुत्र प्रताप को प्रसिद्ध देशभक्त और क्रान्तिकारी अर्जुनलाल सेठी के जैन वर्धमान विद्यालय जयपुर मे शिक्षा प्राप्त करने भेजा. ठाकुर केसरीसिंह ने अपनी हार्दिक अभिलाषा अपने पुत्र प्रताप मे अभिव्यक्त की थी और उनकी प्रबल इच्छानुसार उन्ही के अनुरूप प्रताप के जीवन का वियोग हुआ और देश के लिए शहीद हो गया। प्रताप की मृत्यु का दुखद सवाद सुनकर ठाकुर केसरीसिंह के मुख से यही निकला कि उसे जिस दिशा के लिए तैयार किया था वह उसी मजिल पर पहुच गया।

साकेतिक भाषा के दो पत्र

ठाकुर केशरीसिंह बारहठ को जिस अभियोग मे बीस वर्ष की सजा हुई थी उस मुकदमे का विवरण देते हुए प्रसिद्ध इतिहासकार डाक्टर मथुरालाल शर्मा ने लिखा है कि सन् 1912 के लगभग अर्जुनलाल सेठी के मकान की तलाशी हुई जिसमें खुफिया पुलिस को दो पत्र ऐसे मिले जिनका अर्थ स्पष्ट नही था उनकी भाषा साकेतिक थी। इसकी टोह मे खुफिया पुलिस के एक अफसर श्री धर्मसिंह को लगाया गया। इस पत्र मे लिखा था कि पुराना आटा मछलियो को डाल दिया जाय। ठा० केसरीसिंह के एक मित्र श्री रामकरण थे

जो मारवाड मे कही के रहने वाले थे। इनकी वहन का नाम प्रभावती था। वह भी क्रान्तिकारी विचारो की थी। एक वार धर्मसिह ने रामकरण और प्रभावती को 2-3 अन्य लोगो का मण्डली मे वातें करते हुए देखा। धर्मसिह ने उस समय हिन्दू साधू का भेष वना रखा था। प्रभावती ने अपने भाई रामकरण से कहा कि मछलिया आटा खाकर मोटी हो गई होगी। इन शब्दो के आधार पर धर्मसिह को विश्वास हो गया कि उक्त पत्र का इस वाक्य से सम्वन्ध है और यह किसी षडयन्त्र को समझने की कुन्जी है।

प्यारेराम साधु की कत्ल का मुकदमा

रामकरण को गिरफ्तार कराया और फिर इस सिलसिले मे ठा० केसरीसिंह, रामकरण, लाहेरी, हीरालाल जालोरी, लक्ष्मीलाल भटनागर आदि कई व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया और पुलिस ने यह मुकद्मा वनाया कि एक धनवान साधू को, जसका नाम प्यारेराम था जोधपुर से इस वहाने लाया गया कि वद्रीनाथ की यात्रा की जाय और मार्ग मे कोटा के एक मकान मे ठहराया गया जिसकी कु जी ठा० केसरीसिंह के पास रहा करती थी। यह मकान उस समय एक राजपूत वोर्डिग हाउस था जिसकी कार्यकारिणी के अध्यक्ष स्व० मेजर जनरल सर ओकारसिंह थे। जव प्यारेराम साधु को लाया गया तो स्कूलो मे गर्मियो की छुट्टिया थी और राजपूत वोर्डिग हाऊस वन्द था। पुलिस ने यह आरोप लगाया कि प्यारेराम को वोर्डिग हाऊस में ठहरा कर कत्ल किया गया जिसमे ठा० केसरीसिंह, रामकरण, हीरालाल जालोरी, और लक्ष्मीलाल शामिल थे। इसी मामले मे डा० गुरुदत्त, प० कृष्णगोपाल और एक वल्लू मोची को भी उलझाया गया। मुकद्दमे की सुनवाई 8-10 महीनें तक हुई। उस समय कोटा खुफिया पुलिस के उच्च कर्मचारियो का केन्द्र सा वना और सारे नगर मे त्रास सा वना रहता था, कि क्या जाने किस की तलाशी हो जाय। खुफिया पुलिस के कई लोग साधु का भेष वना कर नगर मे घूमा करते थे। ये लोग ठा० केसरीसिंह और उनके साथियो की गतिविधियो को वडी सूक्ष्मता और सतर्कता से देखा करते थे।

वीस-वीस वर्ष की लम्वी सजा

पुलिस ने इस्तगासा मे सिद्ध किया कि धनवान साधु प्यारेराम को उपर्युक्त क्रान्तिकारी लोग कोटे तक लाये थे। परन्तु उसके वाद उसका कही पता नही लगा। इसके आधार पर अदालत ने यह मान लिया कि प्यारेराम का कोटे मे कत्ल हुआ और ठा० केसरीसिंह, लाहेरी, रामकरण और हीरालाल को कारावास का दड दिया गया। प्रथम तीन व्यक्तियो को 20, 20 वर्ष और हीरालाल जालोरी को 7 वर्ष की सजा दी गई। लक्ष्मीलाल को इसलिए क्षमा कर दिया गया कि वह सरकारी गवाह वन गया था। डा० गुरुदत्त, प० कृष्णगोपाल और वल्लू मोची को रिहा कर दिया गया उनको फँसाने के लिए पर्याप्त सामग्री नही थी और जो कुछ आरोप लगाये गए उनको अदालत मे पर्याप्त नही माना।

कोटा से हजारी बाग जेल मे

ठा० केसरीसिह, रमकरण और लाहेरी कोटा राज्य की सैण्ट्रल जेल मे रखे गए जहाँ ठा० केसरीसिह से मिलने के लिए कोटे के बडे से बडे लोगजाया करते थे इसकी सूचना पोलिटिकल डिपार्टमेट को मिलती ही रहती थी । इसलिए पोलिटिकल एजेन्ट ने कोटा नरेश पर यह दबाव डाला कि ठा० केसरीसिह को बाहर ब्रिटिश भारत की किसी जेल मे भेज दिया जाय और इसका खर्चा कोटा राज्य वहन करे । इसके अनुसार उनको हजारीबाग जेल मे रखा गया । वहा के अध्यक्ष ले० कर्नल मीक नामक एक अग्रेज सज्जन सैनिक थे जिनका पत्नी को सस्कृत मे रुचि थी । इनके साथ ठा० केसरीसिह का निकटतम परिचय हो गया । इससे पहले हजारी बाग जेल मे ठा० केसरीसिह को अनेक यातनाए भोगनी पडी । जेल मे एक दिन बहुत से कैदी मिसकर दाल की सफाई कर रहे थे । वहा सयोगवश कर्नल मीक ने देखा कि ठा० केसरीसिह ने दाल से भारत वर्ष का नक्शा बना रखा है और कैदियो को राजनीतिक भूगोल समझा रहे हैं । उन्होने यह भी देखा कि दाल के द्वारा वे अक्षर ज्ञान भी करवा रहे थे । इस क्षमता से प्रभावित होकर उन्होने ठा० केसरीसिह से बातचीत की तो उन्हे पता लगा कि वे सस्कृत के बडे पडित थे । उसी दिन से कर्नल मीक ठा० केसरीसिह के साथ भद्र व्यवहार करने लगे और जब ठा० केसरीसिह ने बिहार राज्य सरकार को अपने कारावास के विरुद्ध अपील की तो कर्नल मीक ने उन्हे सब प्रकार की उचित सहायता दी । जिसके फलस्वरूप और सन् 1919 के राजनीतिक सुधार की घोषणा के कारण ठा० केसरीसिह भारत सरकार की आज्ञा से हजारीबाग जेल से मुक्त कर दिये गए ।

पुत्र प्रताप की शहदत के समाचार

जिन दिनो ठा० केसरीसिह हजारीबाग जेल मे थे, उनके ज्येष्ठ पुत्र प्रतापसिह को बम निर्माण के अपराध मे पकड कर बरेली जेल मे रखा गया था और वही पर उनका देहान्त हुआ । जब ठा० केसरीसिह कारावास के मुक्त होकर स्वदेश लौट कर कोटा आए तब स्टेशन से अपने मकान के लिए रवाना होते समय डा० गुरुदत्त ने उनसे पूछा कि आपको प्रताप के देहावसान की सूचना कैसे मिली तो केसरीसिह जी ने अद्भुत धैर्य के साथ उत्तर दिया कि मुझे आपसे ही मिली है ।

अन्न त्याग का सकल्प

यो सम्पूर्ण बारहठ परिवार ही देश के स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर चढ गया । स्वाभिमान और निष्ठा मे जूझने वाले केसरीसिह को जब 20 वर्ष का कठोर कारावास हुआ और उन्हे हजारीबाग जेल भेजा गया तो उन्होने वहा अन्न त्याग दिया । ठा० केसरीसिह ने कहा "मैं लौट कर अपनी पत्नी के हाथ का ही भोजन करूगा ।" जेल कर्मचारियों ने नाना प्रकार के प्रयत्न किये किन्तु वे ठा० केसरीसिह को अपने सकल्प मे डिगाने मे असफल

रहे और हार कर इन्हे केवल दूध पर रखा गया। ईश्वरीय कृपा से यह पांच वर्ष मे छूट कर घर लौटे और इन्होने पांच वर्ष के वाद सर्वप्रथम अपनी पत्नी श्रीमती माणिक कुँवर के हाथ का वना भोजन ग्रहण किया. ठाकुर साहव अपने सकल्प के धनी थे।

जागीर, हवेली और सम्पत्ति जव्त

श्री केसरीसिंह वारहठ के सम्पूर्ण परिवार द्वारा क्रान्तिकारी प्रवृत्तियो मे लग जाने से भयभीत होकर शाहपुरा के आर्य नरेश ने ठा० केसरीसिंह की जागीर और उनकी हवेली जव्त करली थी और उनका वहुमूल्य पुस्तकालय भी उसी समय छिन्न भिन्न हो गया था। जेल से वापिस आने पर उनके लिए कोटा नरेश महाराव उम्मेदसिंह जी ने एक वडी अच्छी कोठी वनवा कर उन्हे भेंट करदी थी जिसमे वे आजीवन निवास करते रहे. उनका देहान्त भी उसी कोठी मे ही हुआ।

ठाकुर केसरीसिंह अग्रेजी तो नाम मात्र ही जानते थे। परन्तु आधुनिक राजनीति की प्रगतियो से वे पूर्णतया परिचित थे। उनकी वोलचाल की भाषा वडी परिमार्जित और सतुलित होती थी। उनके व्यवहार मे अपनेपन, धीरज और गभीरता का सामजस्य रहता था उनकी कोई चेष्टा शान के खिलाफ नही होती थी। वे देश के उत्कट प्रेमी और ब्रिटिश शासन के कट्टर शत्रु थे लेकिन वे मध्यकालीन राज्य व्यवस्था के राजाओ और सामतो की तत्कालीन सत्तासपन्न स्थिति का देश की क्रान्ति के लिए उपयोग और लाभ लेना चाहते थे।

रहन सहन – प्रकृति – स्वभाव

श्री केसरीसिंह वारहठ हिन्दी और डिंगल भाषा मे उच्च कोटि की काव्य रचना करते थे। हिन्दी मे वे गभीर लेखन शैली के प्रर्वतको मे माने जाते थे। वे सामान्य रूप से भाषण नही दिया करते थे। किसी भी विषय की गहनता मे प्रविष्ठ करने की उनकी अद्‌भुत क्षमता थी किसी भी स्थिति मे उनका सतुलन नही विगडता था. उनका रहन सहन अत्यन्त सादा और उनकी प्रकृत्ति तथा स्वभाव वडा स्नेह शील था। वे कीर्ति के कामो से दूर रहते थे। जव महात्मा गाँधी से मिलने के लिए वे वर्धा गए तो वर्धा मे उनका राजाओ जैसा स्वागत हुआ था।

क्रान्ति द्रष्टा, ही नही – क्रान्ति सृष्टा भी

श्री केसरीसिंह वारहठ के कवि रूप का परिचय देते हुए श्रीमती राजलक्ष्मी साधना ने लिखा है कि स्वर्गीय केसरीसिंह वारहठ न केवल क्रान्ति द्रष्टा ही थे अपितु वे सही अर्थो मे क्रान्ति सृष्टा भी थे जिन्होने भारतीय क्रान्ति मे अपने आपको सपरिवार आहूत कर दिया था। उनमे कवि और कर्मयोगी का अभूतपूर्व मिश्रण था और उनका मस्तिष्क नवीन एव पुरातन युगधाराओ का सन्धिस्थल था। सर्वोपरि वे एक देशभक्त थे।

नवयुग के प्रथम कवि

श्रीमती साधना ने आगे लिखा है कि केसरीसिंह जी राजस्थान मे नवयुग के प्रथम कवि थे। नव-जागरण की रश्मियो ने उनके हृदय खण्ड को सबसे पहले आलोकित और आलोडित किया था। उनके प्रत्येक शब्द मे देश–भक्ति का सम्पुट था, प्रत्येक चरण मे पूर्व–गौरव की स्तुति थी और प्रत्येक कविता अग्नि स्फुलिग होती थी। कवि के अतिरिक्त वे उच्च कोटि के गद्य–लेखक, पत्रकार एव समीक्षक थे। उन्होने युवावस्था मे वीर सावरकर द्वारा लिखित मैजिनी के जीवन चरित्र का मराठी से हिन्दी मे अनुवाद किया था जो जब्तशुदा एव राज्य द्रोहात्मक होने के कारण आग मे जला दिया गया, कल्हण की राजतरगिणी का प्रथम हिन्दी अनुवाद उन्होने प्रारम्भ किया था परन्तु जब उन्हे पता चला कि कोई दूसरा व्यक्ति भी इसका अनुवाद कर रहा है तो उन्होने अपना प्रयास छोड दिया। अपने जीवन के सध्या काल मे उन्होने अश्वघोष द्वारा लिखित "बुद्ध–चरित्र" का हिन्दी मे अनुवाद किया था जो अभी तक अप्रकाशित है।

ऐतिहासिक उद्‌बोधन

लार्ड कर्जन द्वारा किये गए सन् 1903 के दिल्ली दरबार मे जाते समय महाराणा फतेहसिह जी को कवि ने आत्म–गौरव की रक्षा के लिये स्वधर्म से ओतप्रोत तेरह सोरठे लिख कर भेजे थे जो चेतावनी के चूगट्ये के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन सोरठो की प्रबल प्रेरणा ने स्वाभिमानी महाराणा के प्रसुप्त आत्म-गौरव को जागृत कर दिया और वे कर्जन के दरबार मे सम्मिलित नही हुए। इन सोरठो का शाश्वत उद्‌बोधन हिन्दी साहित्य की अमर निधि हैं। इनमे से केवल तीन सोरठे ही नमूने के रूप में कहना पयर्प्त होगा —

पग पग भम्या पहाड, धरा छाडि राख्यो धरम।
ईशू महाराणा र मेवाड, हिरदै वसिया हिन्द रै।।

घण घलिया घमसाण, तोई राण सदा रहिया निडर।
तब पेखता फरमाण, हलचल किम फतमल हुवै ?

दे अजसदीह, मुलकैलो मन ही मना
दम्भी गड दिल्लीह, शीस नमन्ता शीषवद ।।

देशी नरेशो को मार्मिक चेतावनीये

इस शताब्दी के आरम्भ मे ही लिखे हुए केशरीसिंह जी के लेखो पत्रो व कविताओ द्वारा उनकी मानसिक परिपक्वता का पता चलता है। उन्होने स्पष्ट लिखा था कि अब जमाना यथा राजा तथा प्रजा का न होकर यथा प्रजा तथा राजा का है। वे निरकुश

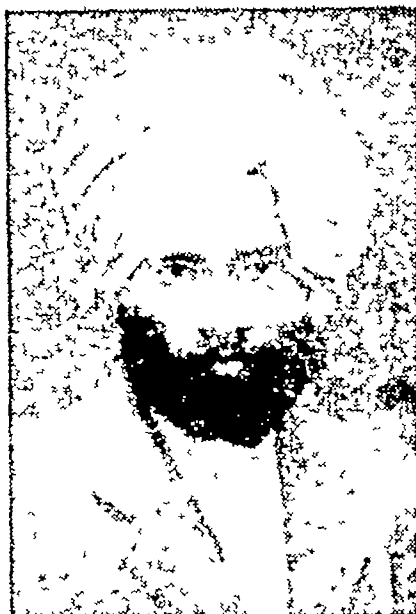
राजसत्ता के कटु आलोचक थे। उनकी पणिहारी नामक कविता मे राजतन्त्र और प्रजातन्त्र के सिद्धान्तो का अपूर्व निरुपण है। उन्होने देशी नरेशो को समय समय पर मार्मिक चेतावनिया देते हुए निराश होकर कहा था "रोके कौन खेंचि रह्यो विधि ; विपरीत हाथ" विधाता राजाओ को उल्टे रास्ते की ओर ले जा रहा है फिर भला उन्हे कौन रोक सकता है ? उनकी भविष्यवाणी किस नाटकीय ढग से सत्य निकली ?

ऊपर रै आधार,
पग समेट भूलै पड्या।
का जाणे करतार,
कद खसक पडे खति वापडा ?

इतिहास साक्षी है कि किस प्रकार जग लगी हुई अग्रेजी सत्ता खिसक पडी और असहाय राजाओ की कैसी दयनीय दशा हुई। स्वप्न द्रष्टा कवि ने बहुत पहले कहा था कि वे दिन अब निश्चय ही समीप आने वाले है जब कि महलो मे मजदूर बसेंगे।

नहचै नेहा आवणा
महल मजूरा वास।

श्री विजयसिंह पथिक



जन्म   होली के दूसरे दिन

अवसान : 28 मई, 1954

रियासती जनता के पहिले सिपहसालार

श्री विजय सिंह पथिक राजस्थान के वे सर्वप्रथम महाप्राण व्यक्ति थे जिन्होने राजपूताने की रियासतो मे सामन्ती ताकतो से टक्कर लेकर उन्हे पहली बार जनशक्ति का बोध कराया था, पथिक जी ने सबसे पहले राजपूताने की दबी हुई रियासती जनता मे न्याय के लिए राजा, जागीरदार और शासन के अत्याचारो के विरुद्ध साहस और निर्भीकता से लोहा लेने की भावनाए जागृत करके उन्हे आततायी और अत्याचार के विरुद्ध खडा कर दिया था। श्री विजय सिंह पथिक ने लोक धर्म और लोक सेवा के जो महान् आदर्श अपने त्याग, कुर्बानियो और अपने एतिहासिक कार्यों से स्थापित कर दिए थे उनका इतिहास मे कोई मुकाबिला नही है। राजपूताने की रियासतो मे सामन्ती ताकतो से लोहा लेते-लेते उन्होने अपनी हड्डिया गला दी थी। आज के लोकतन्त्री राजस्थान की नीव मे पथिक जी जैसे महान् त्यागी, देशभक्त और अजेय योद्धा की अजस्र साधना लगी हुई है।

महात्मा गांधी श्री विजयसिंह पथिक के कार्यों से बहुत प्रभावित थे। उन्होने देश बन्धु सी० एफ० एन्ड्रूज से कहा था कि पथिक काम करने वाला व्यक्ति है जब कि दूसरे सब लोग बातूनी है। पथिक-सैनिक बहादुर और जोशीला है परन्तु जिद्दी है।

वास्तविक नाम-जन्म-बचपन

पथिकजी का वास्तविक नाम भूपसिंह हैं। उनका जन्म उत्तरप्रदेश मे बुलन्द शहर जिले के गुढवाली ग्राम के एक गूजर परिवार मे हुआ था। उनका जन्म किस वर्ष

मे हुआ इसका कही उल्लेख नही मिलता है। पथिकजी ने अपने सस्मरणो मे एक स्थान पर लिखा है कि उनका जन्म होली के दूसरे दिन प्रात 4 और 5 बजे के बीच हुआ था।

पथिकजी के माता पिता का स्वर्गवास बचपन मे ही हो गया था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा पालगढ के प्राइमरी स्कूल मे हुई। इसके उपरान्त वे किसी स्कूल या कॉलेज मे नही पढ सके। माता पिता के स्वर्गवास के बाद वे अपनी बडी बहन के पास इन्दौर चले गए। वही उनके बहनोई राजकीय सेवा मे सलग्न थे।

क्रान्तिकारी जीवन की दीक्षा

इन्दौर मे श्री भूपसिह प्रसिद्ध क्रान्तिकारी शचीन्द्र सान्याल के सम्पर्क मे आए। सान्याल को यह समझते देर नही लगी कि भूपसिह उन सभी गुणो से सज्जित हैं जो एक क्रान्तिकारी मे होने चाहिए। क्रान्तिकारी सान्याल की पारखी आँखो ने भूपसिह मे छिपी हुई सत्यनिष्ठा और तेजस्विता को पहचान लिया और उन्हे क्रान्तिकारी जीवन के लिए दीक्षित कर लिया। सान्याल का विश्वास अर्जित करके युवा भूपसिह ने मातृभूमि के बन्धन काटने के लिए अपने प्राणो की बलि देने के लिए उद्यत दीवानो की टोली मे अपने आपको सम्मिलित कर लिया। शचीन्द्र सान्याल ने उस युग के सर्वोच्च क्रान्तिकारी नेता रास बिहारी बोस से भूपसिह को मिलाया और वही से भूपसिह क्रातिकारी दल के सक्रिय सदस्य बन गए।

शिक्षा दीक्षा और बौद्धिक विकास

बालक भूपसिह की विधिवत शिक्षा तो प्राइमरी स्कूल से आगे नही हो सकी थी। लेकिन उनकी आयु के साथ साथ उनका बौद्धिक विकास असाधारण रूप से प्रस्फुटित होने लगा और उनकी साहित्यिक प्रतिभा का स्वतः ही विकास होने लगा। उनका आगे का एतिहासिक जीवन यह प्रमाणित कर चुका है कि वे राजनीति और इतिहास के प्रकाड पडित थे। वे लेखनी के धनी, उग्र, क्रान्तिकारी और तेजस्वी पत्रकार थे। वे कई भाषाओ के ज्ञाता थे और उनका सहज ज्ञान अद्वितीय था। उनका यह प्रशिक्षण सभवत क्रातिकारी दल ही मे होता गया था।

राजस्थान मे क्रान्तिकारी सगठन का सूत्रपात

सन् 1911 मे शचीन्द्र सान्याल और रासबिहारी बोस अभिनव भारत समिति के द्वारा सारे देश मे सशस्त्र क्रान्ति की योजना तैयार करने मे लगे थे। उन्ही दिनो मे राजस्थान मे वीर भारत सभा नाम का गुप्त संगठन स्थापित हो चुका था। इसी बीच भारत की फौजो को पुलिस की पुरानी तोडेदार बन्दूको की जगह नई रायफलें दी गयी थी। रानी बदूकें सरकार ने राजस्थान के बाजारो मे बिकवाई क्योकि रियासतों मे हथियार रखने पर पाबन्दी नही थी एक तोडेदार बन्दूक के साथ सौ कारतूस दिये जाते थे। मगर कुछ दिन बाद कारतूस मिलने बद हो गये तो तोडेदार बन्दूकें बहुत सस्ती हो गई। इसका फायदा उठाने के लिए रासबिहारी बोस ने भूपसिह को अजमेर भेजा कि वह तोडेदार बदूकें इकट्ठी करें।

पुरानी तोडेदार-बदूको की मरम्मत करने और खाली कारतूसो को भरने का काम सीखने के लिए भूपसिंह ने अजमेर के रेल्वे वर्कशॉप मे नौकरी करली और वही के सुल्दीन मिस्त्री को विश्वास मे लेकर उसे अपने दल मे मिला लिया ।

राजस्थान मे क्राति की नयी योजना

हथियारो की खरीद और सग्रह के साथ साथ राजस्थान मे क्रातिकारी सगठन बनाने की योजना देकर रासबिहारी ने भूपसिंह और भाई बालमुकुन्द को राजपूताने में भेजा था । भाई बालमुकन्द जोधपुर के महाराज कुमार के शिक्षक और अभिभावक नियुक्त हो गये, भूपसिंह ने अजमेर के वर्कशॉप में नौकरी करके अस्त्र शस्त्रो को बनाना तथा उनकी मरम्मत करना सीखा और अपने प्रभाव से वर्कशॉप के कारीगरो को क्रान्तिकारी दल मे भर्ती करना शुरू किया । भूपसिंह राजस्थान मे अस्त्र शास्त्रो का एक कारखाना स्थापित करना चाहते थे ।

रासबिहारी बोस की योजना थी कि अग्रेज विरोधी राजाओ का भी क्रान्ति के लिए उपयोग करने का प्रयत्न किया जाए । भाई बालमुकन्द जोधपुर के राजघराने मे इस दृष्टि से क्रियाशील थे । रास्थान के प्रसिद्ध क्रातिकारी ठाकुर केसरीसिंह बारहठ और उनके पुत्र प्रतापसिंह बारहठ राजपूताने के कई राजाओं में देश प्रेम की भावनाए जागृत करने में लगे हुए थे । रासबिहारी बोस के आदेशानुसार भूपसिंह कई राजपूत राजाओ से मिले और जोधपुर तथा कई अन्य राजाओ से उन्होने अच्छे सम्बन्ध स्थापित कर लिए । वे खरवा नरेश ठाकुर गोपालसिंह के निजी सचिव बन गए और राजाओ को भावी विप्लव में सहायता देने के लिए प्रेरित करने लगे ।

क्राति की योजना विफल हो गयी

रासबिहारी बोस देश भर में सैनिक क्राति की तैयारी कर रहे थे । क्रातिकारियो से सैनिको का सम्बन्ध स्थापित हो चुका था । राजस्थान मे खरवा नरेश तथा देशभक्त व्यवसायी दामोदरदास राठी की सहायता से भूपसिंह को अजमेर, व्यावर व नसीराबाद पर अधिकार कर लेने का भार सौंपा गया था । भूपसिंह तेजी के साथ क्रातिकारी शक्तियो को संगठित करने में लग गये थे । योजना यह थी कि 21 जनवरी 1915 को पजाब, देहली, उत्तर भारत तथा राजस्थान में एक साथ सशस्त्र विद्रोह आरम्भ कर दिया जाए परन्तु दुर्भाग्य से 19 फरवरी को ही सरकार को इस षड़यन्त्र की सूचना मिल गयी और पजाब के क्रातिकारी पकड लिये गए । राजस्थान में भूपसिंह, खरवा नरेश गोपालसिंह, ठाकुर मोडसिंह तथा सवाईसिंह आदि 21 फरवरी, 1915 को खरवा स्टेशन से कुछ दूर जगल मे कई हजार सैनिक व क्रान्तिकारी दल लिये विप्लव आरम्भ करने का सकेत पाने की प्रतीक्षा कर रहे, थे । रात्रि को दस बजे के बाद अजमेर से अहमदाबाद जाने वाली गाडी से रास बिहारी का भेजा हुआ क्रान्तिकारी खरवा के स्टेशन से गाडी आगे निकलने पर बम का धडाका करता । यह अजमेर, व्यावर तथा नसीराबाद पर आक्रमण करने का सकेत था ।

किन्तु सकेत नही मिला । अगले दिन सदेश वाहक ने आकर लाहौर में घटी घटनाओ की उन्हे सूचना दी । तुरत ही भूपसिंह ने तीस हजार बन्दूको तथा अन्य अस्त्र शस्त्रो तथा गोला बारूद को गुप्त स्थानो में छिपा दिया और क्रान्तिकारी सैनिको को बिखर जाने का आदेश दिया ।

मोर्चाबन्दी और फिर नजरबन्दी

क्रान्ति की योजना की इस असफलता के बाद भोमसिंह अपने दिल्ली के एक साथी रलियाराम के साथ बडोदा तक जाकर सब साथियो को सावधान कर आये । अब यह निश्चित सा ही था कि वे किसी भी समय गिरफ्तार कर लिये जाएं । सात आठ दिन पुलिस ने खरवा पर छापा मार कर गोपालसिंह और भोपसिंह आदि को गिरफ्तार करने की तैयारी की जिसकी खबर क्रान्तिकारी कैदियो द्वारा उन्हे मिल गयी । भोमसिंह के कहने पर चुपचाप आत्म-समर्पण कर अग्रेजो की जेल में अनिश्चित काल तक सड़ने और साधारण चोर डाकुओ और खूनियो की तरह फांसी पर लटकाए जाने की अपेक्षा उन सबने लड़ कर मरने का निश्चय किया । अन्य साधारण सदस्यो का खरवा से हटा दिया गया । इसके बाद ठाकुर गोपालसिंह, उसके चाचा मोडसिंह, भोमसिंह, रलियाराम और सवाईसिंह नाम के 5 साथी बहुत सा शास्त्रास्त्र और खाने पीने का 10 के लायक काफी सामान लेकर खरवा के गढ से निकल कर रातो रात पास के जगल में बनी की ओहदी (शिकारी बुर्ज) में मोर्चाबन्दी कर जा डटे ।

शिकारी बुर्ज मे घेराबन्दी

अगले रोज अजमेर का अग्रेज कमिश्नर खुद 500 सैनिको की टुकडी लेकर उन्हे खोजता हुआ वही आ पहुँचा और उन्हे चारो ओर से घेर कर आत्मसमर्पण के लिए बाधित करने लगा किन्तु उन्हे मरने मारने के लिये आमादा देखकर उसे भय हुआ कि कही सचमुच ही उन्हे दो चार दिन उनसे लडना पडा तो चारो तरफ की जनता उनकी मदद के लिये उसके खिलाफ उलट पडे । फिर साथ की हिन्दुस्तानी फौजी टुकडी की राजभक्ति पर भी उसे भरोसा नहीं था । ऐसी दशा में यदि मुकाबला जम जाता तो सारे राजस्थान मे आग भडक उठना भी असम्भव नही था । अत जहाँ तक हो सके गोली चलने देने की नौबत न आने देने का आदेश उसे ऊपर से भी था ।

अंग्रेज कमिश्नर का समझौते का प्रयास

अंग्रेज कमिश्नर ने राव गोपालसिंह और भूपसिंह को कहलाया कि अभी तो उनके ऊपर कोई विशेष अभियोग या दोषारोपण भी नहीं है, सिर्फ सदेह में ही गिरफ्तार किया जा रहा है । यह भी सम्भव है कि उनमें से किसी पर कोई अपराध साबित ही न हो, ऐसी दशा में सरकार से ख्वामख्वाह मुकाबिला करके अपने ऊपर अपराध ओढने में कोई बुद्धिमानी नही है ।

नजरबंदी के लिए सम्माननीय शर्तें

बहुत सी वहस मुबाहिसे के बाद यह समझौता हुआ कि उन्हे किसी हवालात या जेल में बन्द न कर किसी ऐसी जगह नजरबन्द किया जाएगा जहाँ आस पास जगल में शिकार की पूरी सुविधा हो। शिकार के लिये बन्दूक तलवार आदि शस्त्र और सवारी के लिए घोडे सदा उन्हे मिलते रहेगे और उनके पास जहाँ तक दृष्टि पडे कोई फौज पुलिस आदि का पहरा उस रूप मे न रखा जाएगा जिसमें उन्हे अपने कैदी होने का भान हो।

टाडगढ के किले मे नजरवदी और फरारी

इस समझौते के अनुसार खरवा नरेश राव गोपालसिंह और भूपसिंह को मेवाड और मारवाड की सीमा पर स्थित टाडगढ के किले मे नजरवन्द किया गया जहाँ आस पास तीन मील तक जगल मे उन्हे शिकार आदि के लिए जाने की खुली छूट थी।

किन्तु इसके 15 दिन वाद ही सोमदत्त नामक एक व्यक्ति के मुखबिर हो जाने से लाहोर षडयन्त्र के मालले की जांच में भोपसिंह का नाम भी लिया गया जिससे उसे गिरफ्तार कर तुरन्त लाहोर भेजने का हुक्म टाडगढ पहुचा। लाहोर से गिरफ्तारी के इस वारट की सूचना मिलते ही भोपसिंह साधु का वेष वनाकर पहरेदारो की आंखो में धूल झोक कर टाडगढ किले से नीचे के सघन जगल में रम गए।

भूपसिह से विजयसिह पथिक

सशस्त्र क्रान्ति का यह महान स्वप्नदृष्टा टाडगढ के सघन जगलो में लक्ष्यहीन की तरह भटक रहा था। कहाँ जाना, किधर जाना, किसके यहाँ जाना, क्या करना यह कुछ भी स्पष्ट नही था। क्रान्ति को पुनः उसी स्तर पर सगठित करना अव सभव नही था। जिस स्थिति में यह पथिक (विजय के लिए सिंह की तरह) सघन वनो में भटक रहा था उसे ही लक्ष्य करके किसी शायर ने संम्भवतः लिखा हो कि

मझिले वे निशाँ नही मालूम,
जा रहा हू कहाँ नही मालूम,
कव गिरे विजलियाँ नही मालूम ?
कव जले आसियाँ नही मालूम
किसकी है महफिल और किसके है जलवे
आ गया हू कहाँ नही मालूम ?

नए मार्ग की खोज

सशय की इस स्थिति में भटकते हुए पथिक हाथो से क्रान्ति की क्या नवीन योजनाए अब क्रियान्वित होगी और जिस मिशन को लेकर वह राजस्थान में आये थे उसे कैसे पूरा किया जाएगा। इसकी अब कोई रचना उनके दिमाग में नही थी। श्री पथिक वियाबान जगल में भटकते चले जा रहे थे। उनके हाथो रियासतो के शोषित पीडित किसानो को सगठित, जागृत और सघर्षरत करने का महान् कार्य उनकी प्रतीक्षा कर रहा

था। स्वय उनके मन में अपने भावी कार्यक्रम की कोई रूप रेखा नहीं थी। वे नए मार्ग की खोज में थे।

क्रान्ति की असफलता के वाद

क्रान्ति की इस असफलता के वाद उनके सारे साथी बिखर चुके थे। बन्दूकों और हथियारो का सग्रह भी अस्त व्यस्त हो चुका था। इस समय तक अर्जुनलाल सेठी जयपुर जेल से मद्रास की वैलूर जेल में नजरबन्द थे और ठाकुर केसरीसिह वारहठ हजारीबाग जेल में अपनी लम्बी करावास की अवधि पूरी कर रहे थे। केसरीसिह वारहठ और राव गोपालसिंह का रासविहारी वोस जैसे क्रान्तिकारियों से स्पष्ट सम्वन्ध होने की सूचना मिलने से राजपूताने के राजाओ की गर्दन भीतर ही भीतर ऐसी दवी कि वे अव क्रान्तिकारियो की तरफ देखने तक का साहस नही कर सकते थे। अग्रेजो ने देशी राजाओ के उन सभी सैनिको और सेना अधिकारियो को जिनका क्रान्ति की योजना और क्रान्तिकारियो के साथ सम्वन्ध होने का जरा भी सन्देह हुआ, उन्हे रियासती सेनाओ से चुन चुन कर उत्तरी अफ्रिका में लडाई के मैदान पर भिजवा दिया था। किसी वहाने उन्हे अपदस्थ करके उन पर कडी नजर रखना आरम्भ कर दिया। दूसरे उन्होने भारत में गोरी सेनाओ की सख्या भी इसके वाद तुरन्त वढ़ादी और भारतीय सेनाओ को युद्ध के मोर्चों पर वाहर भेज दिया। ऐसी दशा में विदेशो से जाकर शस्त्रास्त्र भेजने का नया सिरे से प्रवन्ध करने के सिवाय भारत के क्रान्तिकारियो के लिए अव कोई चारा नही रहा। क्रान्ति की योजना की असफलता के वाद अप्रैल, 1915 में स्वय रासविहारी को भी भारत से वाहर जाना पडा।

टाडगढ के वियावान जगलो में

श्री विजयसिह पथिक के जीवनीकार श्री शकरदयाल सक्सेना ने टाडगढ के किले से विजयसिह पथिक के निकल भागने और विजोलियां के किसान आन्दोलन का नेतृत्व सभालने तक का विवरण इन शब्दो मे किया है।

सुनहरी चीते से मुकाविला

अव भूपसिह ने अपना नाम वदल कर पथिक रख लिया और दाढी बनाना छोड दिया। टाडगढ के सघन वन मे वे रास्ता भटक गये। दिन भर तेजी से चलते रहने के कारण वे वहुत थक गये थे और कुछ खाया पिया नही था। सघन वृक्षो से आच्छादित एक चट्टान पर विश्राम करने के लिए वैठ गये। थकान से शरीर चूर चूर हो रहा था और वे गहरी निन्द्रा की गोद मे विश्राम करने लगे। उस समय एक जगली जानवर, सभवत: सुनहरो चीते ने उनकी टाग पकडी और उनको घसीट कर ले चला। जव उनकी निन्द्रा टूटी तो देखा कि वे एक मनुष्य भक्षी जगली पशु के कब्जे मे हैं। परन्तु पथिक जी घवराये नहीं उन्होने धैर्य के साथ विना हिले डुले रिवाल्वर निकाला और जानवर को गोली मार दी। उनके प्राणों की रक्षा हो गयी किन्तु उनके पैर मे असहनीय पीडा हो रही थी। वन में सुरक्षित स्थान खोजकर उन्होने रात्रि काटी।

बुढ़िया माता की शरण में

प्रात पौं फटते ही वे वन से निकले। थोडा चलने पर कुछ दूर एक झोपडी के पास से निकले तो उसमे रहने वाली वृद्धा ने उन्हे रोका। वह अपनी सहज कुशाग्र बुद्धि से समझ गयी थी कि वह टाडगढ से भागा हुआ अग्रेजो का विद्रोही युवक है। बुढिया ने उन्हे समझाया कि आगे जाना इस समय खतरे से खाली नही है और तुम्हारा पैर घायल है। उसने पथिकजी को अपनी झौंपडी मे छिपा लिया, घावो की महरम पट्टी की, भोजन कराया और सुला दिया। सायकाल के समय वृद्धा ने अपने लडको को भेज कर एक घोडा मगवाया और कहा, बेटा अब तुम जाओ भगवान तुम्हारी रक्षा करेंगे। पथिकजी श्रद्धा से वृद्धा को नमस्कार कर चल पडे। खरवा नरेश के एक सम्बन्धी जागीरदार के यहाँ गये। परन्तु उन्होने सहायता करने से साफ इनकार कर दिया। उस समय पथिकजी का शरीर बहुत थक गया था, पैर मे वेहद पीडा थी, उन्हे विश्राम की आवश्यकता थी।

गुरला प्रवास और फिर साधु वेश मे

वे जगल जंगल भटकते हुए "गुरला" गाव में पहुचे। वह जागीर का गाँव था। उनके पास उस समय केवल सात आने शेष रह गये थे। गुरला के ठाकुर साहव ने उन्हे जनाने (रनिवास) मे छिपा दिया और उनकी चिकित्सा करायी। इससे ठाकुर साहव की देश भक्ति और क्षत्रियत्व का परिचय मिलता है। जब पथिकजी स्वस्थ हो गये तो उन्होने गुरला छोड दिया और साधु के वेश मे रहे। वहाँ उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर अधिक लोग आने जाने लगे और गुप्तचर भी चक्कर काटने लगे तो उन्होने वह स्थान छोड दिया और खारी तट मे छिपे हुए अस्त्र शस्त्र निकाल कर राजपूत का वेष धारण किया और उस कुटिया को छोड कर चल पडे। वहा से मेगटिया होते हुए काकरोली पहुचे। पथिकजी को काकरोली मे कुछ देशभक्त युवक मिले। उनका एक छोटा सा दल था। उस युवक दल ने राज समुद्र तालाव के "भाणा" नामक गाव मे पथिकजी के रहने का प्रबन्ध किया। पथिक जी ने उन युवको का मार्गदर्शन करना प्रारम्भ कर दिया और एक पाठशाला खोली जिसके द्वारा वे बालको मे भी देशभक्ति के भाव भरने लगे। काकरोली का युवक दल पथिकजी के मार्गदर्शन मे सक्रिय हो उठा तो पुलिस तथा गुप्तचर विभाग उस क्षेत्र मे अधिक सतर्क हो गया।

मोही मे पाठशाला की स्थापना

पथिकजी को यह सूचना मिली की गुप्तचर विभाग को उन पर सदेह हो गया है। उन्होने वह स्थान एकाएक छोड दिया वहाँ से हट कर वे मोही चले गए और अपने एक परिचित डूगरसिह भाटी के पास रहे। वहाँ भी उन्होने एक पाठशाला स्थापित की। वहां कुछ समय ठहर कर अधिक सुरक्षित स्थान की खोज मे जहाजपुर पहुचे। वहा भी उन्होने एक पाठशाला स्थापित की। जब उन्हे लगा कि जहाजपुर भी उनके लिए सुरक्षित स्थान

नही है तो वे चितौड चले गये । उनकी कल्पना थी की चितौड मे वे एक सवल क्रान्तिकारी सगठन खडा करेंगे ।

ओछडी का अज्ञात वास

चितौड से दो मील ओछडी गाँव मे वहाँ के जागीरदार ठाकुर भूपालसिंह के फुफेरे भाई कुँवर प्रताप सिंह राठौर ने जो राजस्थान क्रान्तिकारी दल के सक्रिय सदस्य थे, ठाकुर भूपालसिंह को पथिकजी का परिचय दिया और अज्ञातवास मे अपने यहा आश्रम देने के लिए कहा। पथिकजी को ठाकुर साहव चितौड से ओछडी ले आये। ओछडी के समीप ही स्थित पुठोली ठाकुर साहव से भी पथिकजी का घनिष्ठ परिचय हो गया था और वे कभी कभी पुठोली भी जाकर रहते थे।

विजौल्या मे किसान आन्दोलन का सूत्रपात

उसी समय बिजौलिया मे ठिकाने के भयकर अत्याचार से त्रस्त किसानो ने साधु सीताराम दास के नेतृत्व मे आन्दोलन किया था परन्तु सवल नेतृत्व न होने के कारण ठिकाने ने भयकर दमन करके उसको दवा दिया। बिजौलिया का ठिकाना उस समय कोर्ट आफ वार्ड्स के अधीन था। वहा के नायव मुसरिम मोही निवासी श्री डूगरसिंह भाटी ने साधु सीताराम दास को सलाह दी कि यदि वे पथिकजी को चितौड (ओछडी) से विजौलियाँ आने के लिए राजी करलें और वे आकर यहा का नेतृत्व करें तो सवल सगठन खडा किया जा सकता है। इस प्रकार पथिकजी विजौलियाँ पहुचे।

निर्जन स्थान के गुप्त अड्डे मे

थोडे ही दिनो मे ठिकाने के अधिकारियो ने उनके विरुद्ध राज्य को सूचित किया कि पथिकजी यहा के किसानो को भडका रहे हैं। राज्य ने उनकी गिरफ्तारी का वारट निकला दिया परन्तु पथिकजी को उसकी पूर्व सूचना मिल गयी। पथिकजी की कार्य पद्धति का एक प्रमुख अग यह था कि वे अपने शत्रु के खेमे मे भी अपना कोई गुप्तचर रखते थे। अस्तु पथिकजी ने रात्रि मे विजौलिया को छोड़ दिया और समीप के एक ग्राम उमाजी के खेडे मे एक निर्जन स्थान पर अपना गुप्त अड्डा वनाया और वहा से ही वे आन्दोलन का सचालन करने लगे।

पथिकजी का विजोल्या प्रवेश

टाडगढ के किले से भाग निकलने के वाद करीव 1½ वर्ष तक घूमते घूमते और गाँव गाँव मे क्रान्ति का सन्देश पहुचाते हुए 1917 मे पथिकजी विजौलियाँ पहुचे थे। वहाँ उन्होने विद्या प्रचारिणी सभा कायम करके उसकी तरफ से एक पुस्तकालय, एक पाठशाला और एक अखाडा चलाने लगे। ऊपरमाल के किसानो मे असतोष पुराना था। पीढियो से वे सख्त वेगार, पचासो अजीव लागतो, भारी लागतें और मनमाने राजनैतिक जुल्मो की चक्की मे पिसते आ रहे थे। एक दो वार सर उठाने की कोशिश पर कुचले जा चुके थे।

आग भीतर चली गयी लेकिन बुझी नही थी। उस साल लडाई के कर्ज के नाम पर ठिकाने ने कमर तोड वसूली की थी। किसानो को यह भार असह्य हो गया। पथिकजी की जन्मजात सहानुभूति उनके साथ थी। वे किसानो के नेता बन गए। उनकी कार्य प्रणाली मे क्रान्तिकारियो के साहस, लोकमान्य की कूटनीति और गांधीजी के सत्याग्रह का सामजस्य था।

ऊपरमाल किसान पचायत का सगठन

पथिकजी मे ग्रामीणो के साथ घुल मिल जाने की अद्भुत क्षमता थी और उन्होने शीघ्र ही किसानो का विश्वास प्राप्त कर लिया। उन्होने देख लिया कि जब तक किसान अन्याय और शोषण के विरुद्ध सगठित होकर आन्दोलन नही करेंगे तब तक उनको मुक्ति नही मिल सकती। उन्होने ऊपरमाल किसान पचायत का सगठन किया और सगठन समय के साथ अधिकाधिक सुदृढ और प्रभावशाली होता गया। पथिकजी के आदेशो ने इस क्षेत्र मे अलिखित कानून का रूप धारण कर लिया।

बिजौलियाँ का सत्याग्रह

किसानो ने अपने कष्टो के निवारण के लिए शुरू मे वैधानिक मार्ग अपनाया। महाराणा और उनकी सरकार की सेवा मे आवेदन पत्र भेजे। उनकी मुख्य माँग यह थी कि बैठ-बेगार और अनुसूचित लागें रद्द की जायें और जमीन का पक्का बन्दोबस्त कराया जाए। किन्तु लम्बी प्रतीक्षा करने के बाद भी जब किसानो को कोई राहत नही मिली तो उन्होने सत्याग्रह का मार्ग अपनाया। उन्होने राज्याधिकारियो से स्पष्ट कह दिया कि वे न तो कोई चीज मुफ्त देंगे और न कोई काम बेगार मे करेंगे। वे अपने झगडे पचायत की मारफत निपटाने लगे और राज्य की कचहरी का बहिष्कार कर दिया। उन्होने महाजनो (सूदखोर बनियो) का भी बहिष्कार किया और उनके साथ हर प्रकार का लेन-देन बन्द कर दिया। राज्य ने किसानो का मनोबल तोडने के लिए दमनचक्र चलाया। कार्यकर्ताओ और किसानो को पकड कर सैकडो की सख्या मे जेल मे डाला और उनके साथ अमानुषी व्यवहार किया गया। तरह तरह की यत्रणाएं दी गई। खोडे मे पाव दे दिये जाते। उसमे दोनो पाँव चौबीसो घण्टे चौडे रखने पडते जिससे पाँव दद से फटने लगते और औंधा लटका कर पीटा जाता। कम्बल ओढाकर मार पीट करना मालूमी बात थी। किसान स्त्रियो को भी इन अत्याचारो से अछूता नही रखा गया। गज्य कर्मचारी किसानो के घरो मे घुस कर उनकी सम्पत्ति छीन कर ले जाते। किन्तु इस सारे दमन और अत्याचारो के बावजूद किसानो ने अपना यह आग्रह नही छोडा कि वे बैठ-बेगार और लाग नही देंगे। जैसे दमनचक्र उग्र हुआ, किसानो ने भी सत्याग्रह तीव्र कर दिया। उन्होने कुछ वर्ष बिजौलियाँ क्षेत्र मे खेती नही की और भूमि को पडत रख दी। इसका नतीजा यह हुआ कि ठिकाने को लगान के रूप मे एक पैसा भी नही मिला और उसकी आर्थिक दशा अत्यन्त शोचनीय हो गयी।

स्वावलबन का पाठ

पथिकजी ने किसानो को सब कष्ट सहकर भी मार पीट न करने और अपनी

माँगो पर डटे रहने का पाठ पढाया। वे खुद मिलकर रहने लगे और ठिकाने के खिलाफ रियासत मे शिकायतो का और अखबारो मे प्रकाशन का दुवारा खाडा चलाने लगे। उन्होने पचायत का सगठन बहुत मजवूत बना लिया। उसकी एक केन्द्रीय कमेटी बनायी गयी और गावो मे इसकी शाखाए स्थापित हो गई। एक एक ग्रामवासी पचायत मे सम्मिलित हुआ। आन्दोलन के लिए बाहर से चन्दा नहीं उगाहना पडा। किसानो ने इसका कोप खुद ही इकट्ठा कर लिया। यह स्वावलबन आखिर तक रहा और इसी मे एक बडी हद तक बिजोलियां की सफलता का रहस्य था।

पथिकजी की तपस्या

श्री रामनारायण चौधरी ने अपने ग्रन्थ आधुनिक राजस्थान के उत्थान मे लिखा है कि इस महान् कार्य मे पथिकजी को वहुत कष्ट उठाने पडे। उन्हे गुप्त जीवन की सारी असुविधाए सहन करनी पडीं। रुखा सूखी और समय असमय खाकर सतोप करना पडा। कई वार फाकामस्ती मे गुजारनी पडी। मेह वरसते खेतो मे और भयकर पशुओ से भरे जगलो मे उन्हे अँधेरी रातें वितानी पडी और हरदम एक क्रूर शत्रु के घेरे मे दातो के वीच जीभ की तरह घूमना पडा। कोई आश्चर्य नही यदि किसानो ने उन्हे महात्मा की पदवी दी और उनके एक एक शब्द और सकेत को आज्ञा के रूप मे माना।

पथिकजी ने विजोलिया के किसानो की ओर से 'प्रताप' के यशस्वी सपादक गणेश शकर विद्यार्थी के पास राखी भेजी और प्रार्थना की कि विजोलिया के किसानो की 'प्रताप' सहायता करे। तभी से विद्यार्थीजी और 'प्रताप' विजोलिया के किसानो के प्रवल सहायक वन गये। पथिकजी ने लोकमान्य तिलक जी की भी सहानुभूति प्राप्त करली और 'मराठा' के द्वारा उन्होंने विजोलियां के किसानो का समर्थन किया। उस समय माणिक्यलाल वर्मा जो पहले ठिकाने के कर्मचारी थे ठिकाने की नौकरी छोडकर पथिकजी के साथ आ गये। पचायत ने लगान वन्दी का आन्दोलन खडा कर दिया। राज्य ने पथिकजी को गिरफ्तार करने की वहुत चेष्टा की किन्तु वह सफल नही हो सकी। उधर पथिकजी ने देश भर के समाचार पत्रो मे विजोलियाँ किसान आन्दोलन तथा ठिकाने के दमन की रोमाचकारी कथाए नियमित रूप से प्रकाशित करवाना आरम्भ कर दिया। समस्त देश का ध्यान विजोलियाँ की ओर आकर्षित हो गया। विवश होकर राज्य ने एक कमिशन विठाया और किसान कार्यकर्ताओ को छोड दिया। गाँधीजी भी विजोलिया के किसान आन्दोलन से वहुत प्रभावित हुए और उन्होने पथिकजी को वम्बई बुला भेजा। जब पथिकजी ने विजोलियाँ के किसानो की करुण कथा गाँधीजी को सुनायी तो महात्मा जी वहुत प्रभावित हुए और महादेव देसाई को वहाँ की जाँच के लिए भेजा।

वर्धा से "राजस्थान केसरी" का प्रकाशन

वम्बई मे ही यह निश्चय हुआ कि राजस्थान के जन जीवन को सतेज बनाने के लिए वर्धा से पत्र निकाला जावे। पथिकजी उसका सम्पादन करें और जमनालाल वजाज

उसका आर्थिक भार ले। पथिकजी बिजोलियाँ से वर्धा चले गये और वहाँ से 'राजस्थान केसरी' पत्र निकालने लगे। 'राजस्थान केसरी' शीघ्र ही राजस्थान तथा मध्य भारत के देशी राज्यो मे अत्यन्त लोकप्रिय हो उठा। उसका प्रभाव इतना बढा कि देशी नरेश भयभीत होने लगे। परन्तु पथिकजी की विचार धारा से सेठ जमनालाल बजाज की विचार धारा का मेल नही बैठा और उन्होने 'राजस्थान केसरी' को छोड दिया और अजमेर आकर राजस्थान सेवा संघ की स्थापना की। और 'नवीन राजस्थान' पत्र निकालना आरम्भ किया।

राजस्थान सेवा सघ का आदेश

राजस्थान सेवा सघ की स्थापना पथिकजी ने राजस्थान के देशी राज्यो की प्रजा की सेवा के लिए की थी। उसके सदस्य आजीवन सेवा करने का व्रत लेते थे। वे अपना जीवन देश सेवा के लिए अर्पित करते थे। पथिकजी की मान्यता थी कि फक्कड राजनीतिक सन्यासी देश सेवा का कार्य कर सकते हैं। इसलिए उन्होने राजस्थान सेवा सघ की सदस्यता का एक नियम यह बनाया कि सदस्य की व्यक्तिगत कोई जायदाद नही होगी। उसको सघ से केवल निर्वाह व्यय मिलेगा, जो उस समय एक व्यक्ति के लिए 15/- रू० मासिक और गृहस्थ के लिए 30 रु० मासिक नियत किया गया। पथिकजी स्वय 15/रु० मासिक लेते थे और बचता वह संघ को लौटा देते थे। उनका मासिक व्यय 8/ रु० से कम होता था। पथिकजी के अतिरिक्त रामनारायण चौधरी, हरिभाई किंकर, शोभालाल गुप्त, माणिक्य लालजी वर्मा, लादूराम जोशी, प्रेमचन्द भील, मोडसिंह, नयनूराम शर्मा सघ के सदस्य बन गये। सघ ने राजस्थान मे बेगार के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ किया। सिरोही, मेवाड, अलवर, बून्दी, इत्यादि राज्यो मे जो भी जन आन्दोलन हुए उनका नेतृत्व किया। राजस्थान सेवा सघ की देश भर मे धाक बैठ गयी। देशी नरेश उससे भयभीत रहने लगे, यहाँ तक कि इग्लैण्ड की पार्लियामेण्ट के कई सदस्य भी सघ के हितैषी बन गये।

ए. जी. जी के साथ समझौता वार्ता

बिजोलियाँ आन्दोलन का प्रभाव मेवाड के अन्य ठिकानो पर भी पडने लगा। राजस्थान सेवासघ के नेतृत्व मे मेवाड के किसान उठ खडे हुए तब ब्रिटिश सरकार चौंकी। मेवाड राज्य के द्वारा ब्रिटिश सरकार ने ठिकाने पर दबाव डाला कि किसान पचायत से सधि कर लें। स्वय ए० जी०, जी० इस मामले को तय कराने बिजोलियाँ पहुचा। पथिकजी पर मेवाड मे आने पर प्रतिबन्ध लगा हुआ था। जब ए० जी० जी० ने किसानो को बातचीत के लिए बुलवाया तो किसान पंचायत को उत्तर दिया कि राजस्थान सेवा सघ का प्रतिनिधि बुलाया जावे। पथिकजी ने रामनारायण चौधरी को भेजा और सधि हो गयी। बिजोलियाँ के किसानो की यह अभूत पूर्व विजय थी। इससे राजस्थान सेवासघ का राजस्थान मे प्रभाव बढ गया और सभी देशी राज्य उससे भयभीत हो उठे।

बेगूं का किसान आंदोलन

विजौलिया के उपरान्त बेगू आन्दोलन हुआ। पथिकजी ने उसका भी सचालन किया। पथिकजी को मेवाड मे आने की मनाही थी। बेगू आन्दोलन के समय वह छिप कर रहते थे। पथिकजी पकडे गये और उन पर साढे तीन साल तक मुकदमा चला। मेवाड सरकार ने त्रिभुवन नाथ सुपारी की अध्यक्षता मे पथिकजी के मुकदमे के लिए विशेष न्यायालय स्थापित किया। पथिकजी का बयान अपूर्व तथ्यपूर्ण था। पथिकजी पर राजद्रोह फैलाने का आरोप था। पथिकजी के बयान से प्रभावित होकर न्यायालय ने उनको छोड दिया परन्तु सरकार ने उन्हे नहीं छोडा। इस बार अर्द्ध शिक्षित दरबारियो का एक कमिशन बिठाया गया और उसने पथिकजी को पाच वर्ष के कारावास की आज्ञा दे दी। पथिकजी जेल मे बन्द कर दिये गये।

राजस्थान सेवासघ की समाप्ति

उसी समय एक अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटी। राजस्थान सेवासघ मे ही भयकर दरार पड गयी। पथिकजी, रामनारायण चौधरी तथा शोभालाल गुप्त मे गहरा मतभेद उठ खडा हुआ और राजस्थान सेवासघ समाप्त हो गया।

यायावरी और आगरा से नवसदेश का प्रकाशन

राजस्थान सेवासघ के समाप्त हो जाने के बाद पथिकजी एकाकी हो गए। रेल्वे मजदूरो मे काम करते रहे तथा देशी राज्यो की जनता की सेवा अपने ढग से करते रहे। 1930 ई० मे राजपूताना मध्य भारत प्रान्तीय कांग्रेस के अध्यक्ष बनाये गये और नमक सत्याग्रह के सिलसिले मे जेल गये। अन्त मे ब्रिटिश सरकार के गुप्तचरो से बचने के लिए अजमेर छोड दिया। पहले मध्य भारत मे और फिर उत्तरप्रदेश मे गये। आगरा से 'नव सदेश' निकाला। उनका यह पत्र बहुत लोकप्रिय हुआ, परन्तु 1942 ई० के भारत छोडो आन्दोलन मे सरकार ने उसे जब्त कर लिया।

जब देश आजाद हुआ और महात्मा गाँधी को कांग्रेस सरकार से निराशा होने लगी, उन्हीं दिनो पथिकजी देहली मे गाँधीजी से मिले। गाँधीजी ने उनसे आग्रह किया कि उन्हे राजस्थान मे ही जमकर विजौलियाँ की शैली पर काम करना चाहिए। अस्तु, पथिकजी राजस्थान आये और महात्मा गाँधी के आदेश के अनुसार अजमेर जमने की व्यवस्था कर रहे थे। वह 'राजस्थान सेवाश्रम' नामक सस्था स्थापित करना चाहते थे। उसी के लिए दौड-धूप कर रहे थे कि उन्हें लू लग गयी और 28 मई, 1954 ई० को दिन के 2 बजे यह महान् क्रान्तिकारी नेता चिर निद्रा मे सो गया।

सेठ दामोदर दास राठी



जन्म 8 फरवरी, 1884

अवसान 2 जनवरी, 1918

अग्रगण्य नेताओ की पहली पंक्ति मे

यह सही है कि श्री दामोदरदास राठी अ ग्रेजी सल्तनत या रियासती राजाओ के कोपभाजन बन कर कभी जेल नही गए न उन्हे उन यातनाओ के दौर मे से गुजरना पडा जो सामान्यत एक विद्रोही देश भक्त के जीवन मे उभर कर सामने आती हैं। श्री दामोदरदास राठी के सम्बन्ध मे यह भी सत्य है कि उन्होने अन्य लोक-नेताओ की तरह सार्वजनिक सभाओ मे सामान्य जन की भावनाओ को उद्वेलित करने वाले ओजस्वी भाषण भी नही दिए थे परन्तु इतना सब होने के बावजूद भी उनकी गणना राजस्थान मे स्वतत्रता सग्राम की प्रारभिक भूमिका तैयार करने वाले अ ग्रगण्य व्यक्तियो मे की जाती है।

असाधारण लोक सग्राहक

श्री दामोदरदास राठी एक कुशल व्यवसायी थे। राजस्थान उनका कार्यक्षेत्र था। उनकी यह निश्चित मान्यता थी कि देश के महान् क्रान्तिकारी, देश भक्त, राष्ट्रवादी, विचारक और विद्वान व्यक्तियो का लोक सग्रह यदि राजस्थान मे किया जा सका तो निश्चय ही इस प्रदेश मे देश भक्ति और क्रान्ति की चिनगारियाँ फैलते देर नही लगेगी। इसी दृष्टि से उन्होने अपने समय के उग्र क्रान्तिकारियो, श्रेष्ठ पुरुषो, अनन्य देश भक्तो और विचारको को अपने व्यवसाय के माध्यम से राजस्थान लाकर बसा दिया था। उनके बारे मे यह मान्यता रही है कि यदि वे जीवित रहे होते तो देश मे जो स्थान वर्धा और सेवाग्राम को मिला है वह राजस्थान और ब्यावर को प्राप्त होता। निश्चय ही वे महात्मा गांधी को साबरमती से ब्यावर लाकर ही रहते।

जन्म और शिक्षा

श्री दामोदरदास राठी का जन्म 8 फरवरी, 1884 को पोकरण (मारवाड) मे सेठ खीवराजजी राठी के घर हुआ। आपका प्रारभिक शिक्षण मास्टर प्रभुदयाल अग्रवाल

की सरक्षता मे हुआ । व्यावर के मिशन हाई स्कूल से आपने मैट्रिक की परीक्षा पास की थी। उनका विधिवत् शिक्षण लम्बा नही चल सका लेकिन जन्मजात प्रतिभा के कारण उन्होंने साहित्य, इतिहास, सस्कृति, धर्म और राजनीति जैसे विषयो मे अपने निरतर स्वाध्याय से अपने को निष्णात वना लिया था। अपने 15–16 वर्ष की आयु मे ही उनका झुकाव राष्ट्रीय प्रवृत्तियो की ओर होने लग गया था और लोकहित के कार्यों मे ही उनकी शक्तियो का निरन्तर उपयोग होता था। उनके 9 वें वर्ष मे अर्थात् सन् 1893 मे व्यावर मे उनके कृष्णा मिल की स्थापना हो गई थी।

श्री दामोदरदास राठी ने कृष्णा मिल का काम 16–17 वर्ष की आयु मे सम्हाल लिया था। अपनी मिल मे श्रीश्यामजी कृष्ण वर्मा जैसे क्रान्तिकारी नेता को मैनेजर वनाकर ले आए थे। श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा की प्रेरणा से ही राठीजी की प्रवृत्तियाँ क्रान्तिकारी आन्दोलन की ओर हुई। राजस्थान के क्रान्तिकारियो के लिए तथा राजस्थान की क्रान्तिकारी प्रवृत्तियो के लिए श्री राठीजी का कोष निरन्तर खुला हुआ था।

क्रांति की योजना मे राठीजी का योग

खरवा के राव गोपालसिह से राठीजी की अतरग मित्रता थी और उनके द्वारा राजस्थान मे सशस्त्र क्रान्ति की जो योजना चल रही थी उसकी सफलता के लिए पृष्ठभूमि मे सारा वल सेठ दामोदरदास राठी का ही था। प्रथम महायुद्ध के दौरान मे राम विहारी वसु और राजा महेन्द्र प्रताप ने सारे देश मे सशस्त्र क्रान्ति की योजना वनाई थी और 21 फरवरी, 1915 का दिन इसके लिए निश्चित था। राजस्थान मे अजमेर और नसीरावाद की छावनियो पर कब्जा करने की जिम्मेदारी खरवा के राव गोपालसिह और भोपसिह पर थी। राव गोपालसिह और भोपसिह ने इस योजना के लिए हजारो नौजवानो को क्रान्ति की दीक्षा देकर लम्बे समय तक उन्हे शस्त्र चलाने का प्रशिक्षण दिया था और हजारो टोपीदार वन्दूके, कारतूस और अन्य तरह के हथियारो का सग्रह किया गया था। दामोदरदास राठी की अर्थ व्यवस्था इस क्रान्ति वाहिनी को सगठित करने मे सबसे अधिक सहायक था।

देश के महान् नेताओ के सपर्क में

श्री दामोदरदास राठी का लोकमान्य वाल गगाधर तिलक और अरविन्द घोष से अत्यन्तता निकटता का वैचारिक सम्वन्ध था। आप इन महारथियो को व्यावर भी एक वार ले गये थे। दादाभाई नौरोजी, महामना मदन मोहन मालवीय, अमृत वाजार पत्रिका के मोतीलाल घोष, वगाल के वूढे शेर वावू सुरेन्द्रनाथ वनर्जी और पजाव केसरी लाला-लाजपतराय से आपका अत्यन्त निकटता का सम्वन्ध था। राष्ट्र के ये सभी महान् पुरुष श्री राठीजी की राष्ट्रीयता, स्वदेशी प्रेम और देशभक्ति तथा दानवीरता से अत्यधिक प्रभावित थे।

शिक्षा के विकास के लिए

श्री राठीजी ने राजस्थान मे तथा देश मे सशस्त्र क्रान्ति को सगठित करने मे तो खासकर अपना आर्थिक योग दिया ही था लेकिन इसके अतिरिक्त उन्होने शिक्षा और सस्कारो के प्रचार प्रसार के लिए बहुत बडा कार्य किया। आपने राजस्थान मे तथा देश मे जहाँ-जहाँ वे गए, वहाँ वाचनालय, पुस्तकालय, पाठशाला, विद्यार्थीगृह तथा शिक्षा-मडल स्थापित किए और हिन्दू विश्वविद्यालय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, गुरुकुल तथा अन्य अनेको शिक्षण सस्थाओ को निरन्तर आर्थिक योग देते रहे। आप द्वारा सस्थापित ब्यावर के सनातन धर्म स्कूल और कॉलेज, मारवाडी शिक्षा मडल वर्धा का नवभारत विद्यालय आज भी शिक्षा के क्षेत्र मे पूर्ण रूप से सक्रिय और गतिशील है।

राष्ट्र भाषा हिन्दी के लिए

अपने सन् 1914 मे श्री गिरिजाकुमार घोष के अनुरोध पर मिल का तथा अपना सभी कार्य हिन्दी मे ही करने का संकल्प ले लिया था। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री अमृतलाल चक्रवर्ती की प्रेरणा से अपने ब्यावर मे नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना की और अजमेर मेरवाड की अदालतो मे नागरी लिपि और हिन्दी भाषा को प्रयुक्त करने का आन्दोलन चलाया। अजमेर के अग्रेज कमिश्नर ने आपके सुझावो को मान्यता देकर राजकीय कार्य नागरी लिपि और हिन्दी भाषा मे करना स्वीकार कर लिया था। श्री राठीजी काशी नागरी प्रचारिणी सभा की कार्यकारिणी के उत्साही सदस्य थे और काशी नागरी प्रचारिणी सभा के मिशन को निरन्तर आगे बढाते रहे थे।

स्वदेशी के माध्यम से देशभक्ति का प्रचार

श्री दामोदरदास राठी स्वदेशी के अनन्य भक्त थे। उनका निरन्तर प्रयत्न यही रहा कि देश स्वावलम्बी बने और अपने आवश्यकता की प्रत्येक वस्तु का उत्पादन देश मे ही हो। उन्होने स्वदेशी वस्त्र और स्वदेश मे निर्मित प्रत्येक वस्तु के ही उपयोग पर निरन्तर जोर दिया। देश के किसी भी कोने मे कही भी वे जाते वहाँ स्वदेशी का प्रचार प्रसार निरन्तर उनके साथ चलता रहता। उन्होने प्रत्यक्ष रूप मे स्वदेशी वस्त्र और स्वदेशी वस्तुओ के उपयोग की प्रेरणा के द्वारा लोगो मे राष्ट्र-प्रेम, देश-भक्ति और अ ग्रे ज-विरोधी-भावनाए जगाई। स्वय उनका पहिनावा बहुत साधारण, स्वदेशी और राजस्थानी ही रहा।

अकाल, बाढ़ और भूकम्प के समय

देश मे कही भी अकाल, बाढ या भूकम्प आ जाता तो श्री राठीजी अपनी समस्त शक्तियो के साथ देश के उस कोने मे पीडित मानवता की सेवा के लिए सबसे पहले जा पहुचते और मुक्त हस्त से राहत कार्यो मे अर्थ का अर्पण करते।

राजस्थान के श्रीमंतों को प्रेरणा

श्री राठीजी का निरन्तर और जीवन पर्यन्त यह प्रयत्न रहा कि राजस्थान का

निवामी देश के किसी भी कोने मे प्रवास करता हो परन्तु वहाँ भी वह अपनी सांस्कृतिक गरिमा को लेकर ही रहे । उन्होंने देश के कोने-कोने मे फैले हुए प्रवासी राजस्थानियो से सम्पर्क कर उन्हें देश-सेवा की ओर प्रवृत किया । उन्ही के प्रयत्नो का यह फल है कि भारत के अनेको प्रान्तो मे प्रवासी राजस्थानियो ने शिक्षण-सस्थाए, औषवालय, वाचनालय-पुस्तकालय, छात्रावास, कन्या-शिक्षण-सस्थाए एव बडे-बडे चिकित्सालय स्थापित करके राजस्थान की गौरव वृद्धि की है। उन्होंने राजस्थान के प्रवामियो को राजस्थान के सास्कृतिक मूल्यो को सुरक्षित रखने के लिए निरन्तर सजग और सचेष्ट वनाया ।

क्रान्तिस्रष्टा और आस्तिक भक्त

राजस्थान मे प्रत्यक्षत तो राठीजी एक उद्योगपति थे परन्तु उनका राजनैतिक कार्य श्री अर्जुनलाल सेठी, श्री केसरीसिह वाहरठ, श्री गोपालसिह खरवा और श्री भूपसिह (वाद मे विजयसिह पथिक) के ही साथ था । क्रान्ति के मार्ग पर ये पाँचो महारथी तीव्र गति से दौडे जा रहे थे । पाँचो कई अशो मे एक दूसरे के पूरक थे ।

इम तरह से राठीजी की गणना भी राजस्थान के क्रान्ति-स्रष्टाओ मे की जाती है । क्रान्तिकारी कार्य और क्रान्तिकारी विचार धारा के होते हुए भी वे पूर्ण आस्तिक और भगवान पुरुषोत्तम के अनन्य उपासक थे । उनकी उपासना और आराधना पुरुष को पुरुष से पुरुषोत्तम वनाने के लिए ही थी ।

गुप्त सहायता की परम्परा

हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक श्री भगवानदास केला ने श्री राठीजी के सम्बन्ध मे देशी राज्यों की जन जागृति नामक ग्रथ मे लिखा है कि राठीजी धनवान थे। क्रान्तिकारी आन्दोलन में इनका मुख्य कार्य रुपये पैसे की मदद करना था। इन्हे विशेष प्रेरणा हिन्दी के प्रसिद्ध पत्रकार श्री अमृतलाल चक्रवर्ती से मिली जो लवे समय तक इनके साथ इनकी कृष्णा मिल मे रहे थे । श्री गिरिजाकुमार घोष को भी ये अपने पास व्यावर ले आए थे । श्री राठीजी देश भक्त, विद्वान और क्रान्तकारी विचार के लोगो को अपने यहाँ किसी न किमी काम पर ले आते थे । देश के राजनैतिक कैदियो के परिवारो और राष्ट्रीय पत्रकारो को गुप्त रूप से सदा सर्वदा आर्थिक सहायता करते रहते थे ।

अन्तिम पत्र

उनके 34 वें वर्ष मे 2 जनवरी 1918 को उनका देहावसान हो गया ।

अपनी मृत्यु से कुछ दिन पूर्व 27 दिसम्बर, 1917 को उन्होने श्री भगवानदास केला को लिखा था कि—

"काम करने का समय आ गया है । देश और जाति पर प्राण न्यौछावर करने वालों की आज सवसे वडी आवश्यकता है। देश को आज उन नौजवानो की आवश्यकता है जो अपने विश्वासो पर दृढ रहे । मनुष्य वडे-वडे पद भले ही पा लेता है परन्तु उसे वडे से वडे काम और देश के लिए वडी से वडी कुर्वानी करने का हौसला अपने मे पैदा करना चाहिए ।"

साहसी योद्धा
ठाकुर जोरावर सिंह बारहठ

देहावसान 1939



चांदनी चौक में लार्ड हार्डिंग्ज पर बम

देशभक्त लाला लाजपतराय ने अपनी आत्मकथा मे लिखा है जिस आदमी ने 12 दिसम्बर, 1911 को दिल्ली दरबार के मौके पर लार्ड हार्डिंग्ज पर बम फैंका उसने एक स्मरणीय, याद रखने लायक कार्य किया। इस आदमी की दिलेरी व बहादुरी अपना सानी नही रखती। इससे भी अधिक हौसला दिलाने वाली बात यह है कि एक शक्तिशाली शानदार साम्राज्य के सब साधन व शक्ति उस वीर का पता लगाने मे आज तक असमर्थ साबित हुई। वह व्यक्ति और कोई नही शाहपुरा के ठाकुर जोरावरसिंह बारहठ ही थे।

रासबिहारी बोस नही–ठाकुर जोरावरसिंह

ठा० जोरावरसिंह बारहठ राजस्थान केसरी ठा० केसरीसिंह बारहठ के छोटे भाई व अमर शहीद कुंवर प्रतापसिंह के चाचा थे। जब 12 दिसम्बर, 1911 को दिल्ली दरबार के अवसर पर लार्ड हार्डिंग्ज पर बम फैंका गया तो सामान्यत यह समझा जाता रहा कि बम फैंकने वाले प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री रासबिहारी बोस थे। किन्तु वास्तव में लार्ड हार्डिंग्ज पर बम फैंकने वाले वीर ठा० जोरावरसिंह थे, जो अपने परिवार के सस्कारो के अनुसार देश सेवा मे रत हो गये थे।

बुर्के मे से लाट पर बम फैंका

आपका बाल्यकाल शाहपुरा, उदयपुर और जोधपुर के जागीरी घरानो के साथ बीता। पिता के स्वर्गवास के बाद ये जोधपुर के राजघराने मे कुछ दिन काम करते रहे। किन्तु इनके मन मे तो देशभक्ति की प्रचण्ड अग्नि जल रही थी। ठा० जोरावरसिंह के बारे मे बताया गया है कि, जब दिल्ली के चाँदनी चौक मे वाइसराय का जुलूस बडी

शान शौकत से निकल रहा था, गौराशाही के गुर्गों का जवरदस्त पहरा था उस वक्त इस रणवाँके वीर ने जिस कमाल के साथ वुर्के मे लाट साहव के ऊपर वम का निशाना मारा वह ससार के इतिहास मे एक स्मरणीय घटना रहेगी। वम फैंक कर जिस वहादुरी और हिम्मत के साथ ब्रिटिश शासन की आँखो मे धूल झोंक कर ऐसे लापता हुए कि आजन्म सरकार उनका पता नही लगा सकी।

लेडी हार्डिंग्ज का ऐतिहासिक पत्र

हम यहाँ लेडी हार्डिंग्ज के शब्दो मे उस घटना का वर्णन करेंगे जो उस जुलूस मे अपने पति के साथ थी। उन्होंने उस घटना के सम्बन्ध मे लिखा है कि वह इनके लिए एक अत्यन्त भयानक अनुभव था। उन्होंने वायसराय के समीप जो भी अग-रक्षक थे उनसे हिज ऐक्सीलेंसी को ऐसे स्थान पर ले चलने के लिए कहा कि जहाँ सहायता तुरन्त मिल सके। उन्होंने वम विस्फोट का वर्णन नीचे लिखे अनुसार किया है।

"जव हम चाँदनी चौक से निकल रहे थे जहाँ चारो ओर जय-जयकार और तालियो की ध्वनि सुनाई दे रही थी, मुझे एक साथ भयकर धक्का लगा और मैं आगे की ओर गिर गयी। जव मैं उठकर अपनी जगह वैठ गयी तो मेरी आँखो के सामने अंधेरा सा प्रतीत हुआ और सिर मे भीषण झनझनाहट के कारण मेरी श्रवण-शक्ति जाती रही। वायसराय मेरी ओर मुड कर वोले, "मुझे भय है कि वह एक वम था।"

"हाथी रुक गया था। इस पर वायसराय ने चिल्लाकर कहा आगे चलो और जलूस फिर आगे वढा। उस समय भीड मे निस्तब्ध शान्ति थी परन्तु जव हम पुन आगे वढे तो लोग चिल्लाने लगे थे और मैंने सुना कि कुछ आवाजे कह रही थी "शावाश वहादुर।"

अव मैं उस दुर्घटना के सम्बन्ध मे घटित हुई वातो को अधिक विस्तार से देखने लगी। मुझे दिखलाई दिया कि हौदे की पीठ उड गयी है और वायसराय का मुख पीला पड गया है। मैंने उनसे पूछा "क्या आपको निश्चयपूर्वक विश्वास है कि आपको चोट नही लगी।"

उन्होंने उत्तर दिया—"मैं निश्चयपूर्वक नही कह सकता। मुझे गहरा आघात लगा है परन्तु मेरे विचार से मैं जलूस मे चल सकता हू।"

"कतिपय सैकिडो के पश्चात् मैंने पीछे की ओर अपने शरीर को झुकाया और मुझे वायसराय के दाहिने कधे के समीप उनकी वर्दी मे (जो कधा मुझ से दूर था) एक फटे हुए स्थान से रुधिर-युक्त लाल मांस दिखलाई पडा।

"तव मैंने सोचा कि यदि मैं उनसे कहूँ कि आप घायल हो गये हैं तो वे यकायक इस समाचार को सुनकर भयभीत हो सकते हैं। क्या यह कहना ठीक होगा? अथवा हाथी के चलने से जो धक्के शरीर को लगेंगे उससे होने वाली हानि के खतरे को उठाना उचित होगा। तव पुन. मैंने अपने चारो ओर देखा तो मुझे दिखाई दिया कि एक पुरुष की टाँगे अटकी हुई हैं, और उसका धड पीछे की ओर लटक रहा है वह मर चुका था।"

"तब मैंने धीरे से वायसराय से कहा मुझे जलूस को रोकने दीजिए। मुझे भय है कि जो मनुष्य हमारे पीछे छत्र लगाये हुए था मर गया है। (हम 150 गज आगे बढे थे)।"

वायसराय ने उत्तर दिया "अवश्य ही ऐसी स्थिति मे हम आगे नही जा सकते।"

मैंने हाथी को रोक दिया और सामने वाले हाथी पर भी कर्नल मैक्सवैल को सकेत किया। वे दौडकर मेरे पास आए और वायसराय ने उनसे कहा "क्या तुम पीछे उस बेचारे छत्रधारी के लिए कुछ कर सकते हो ?"

तब मैंने कहा "क्या आप कर्नल रावट्स को बुलाना पसन्द करेंगे ? मेरे विचार से वायसराय का कन्धा जख्मी हो गया है।"

"उसी समय वायसराय के शरीर मे झुरझुराहट सी उत्पन्न हुई और वे तेजी से चेतना शून्य होते गये। कुछ समय उपरान्त जब उनकी चेतना वापस लौटी तो उन्होंने समारोह के सम्बन्ध मे पूरी तरह आदेश प्रदान कर उसे सम्पन्न करने की आज्ञा दी।"

इसके उपरान्त कुछ भी कहने को शेष नही रह जाता। केवल उनको हौदे से उतारने और उनके वस्त्रो को उतारने मे जो घोर कठिनाई हुई उसकी कहानी शेष रहती है।" उनके 6 घावो से बहुत अधिक रुधिर बह रहा था। वायसराय-भवन मे कोई व्यक्ति उस समय नही था। परन्तु वायसराय के निजी स्टाफ के लोगो ने सारा कार्य किया और उनकी बहुत सुन्दरतापूर्वक सम्हाल की।"

उपरोक्त विवरण लेडी हार्डिग्ज के पत्र से लिया गया है जो कि आठ जनवरी, 1913 को बम्बई के टाऊन-हाल मे एक सभा मे पढा गया।

बम फैकने वाले का पता नहीं लगा

बम विस्फोट के बाद पुलिस और सेना ने तुरन्त सभी मकानो को घेर लिया सभी मकानो की तलाशी ली गयी परन्तु किसी को पकडा नही जा सका। भारत सरकार द्वारा अपराधी को पकडवाने वाले को एक लाख रुपये का पुरस्कार घोषित किया गया। देशी रियासतो ने अपनी राजभक्ति प्रदर्शित करने के लिए प्रत्येक महाराजा ने पारितोषिक की घोषणा की। सभी पारितोषिको की राशि कई करोड रुपये की हो गयी परन्तु भारत की पुलिस तथा स्काटलैंड यार्ड के गुप्तचर बम फैंकने वाले का पता नही लगा सके।

क्रांतिकारियो की गुप्त विज्ञप्ति

क्रान्तिकारियो ने इस काण्ड की प्रशसा करते हुए एक विज्ञप्ति गुप्त रूप से वितरित की। उसमे लिखा था.—"गीता, वेद, कुरान सब हमे आदेश देते हैं कि मातृभूमि के शत्रु को फिर वह चाहे किसी जाति, सम्प्रदाय, रग और धर्म का क्यो न हो मारना हमारा धर्म है। अन्य बडे और छोटे क्रान्तिकारी कार्यों की हम बात नही करते परन्तु गत दिसम्बर मास मे देहली मे जो दैवी शक्ति प्रकट हुई वह इस बात का निस्सदेह प्रमाण है कि भारत के भाग्य को स्वय भगवान बदल रहे है।"

ठाकुर जोरावरसिंह के एक और साक्षी

वीरवर जोरावरसिंह ने लार्ड हार्डिंग्ज पर बम फैंका उसके एक साक्षी और हैं— वे है श्री मणिराजसिंह जगावत । जब श्री जोरावरसिंह बम फैंक फर दिल्ली से निकले और फरार हो गये तब उनको पकडने के सरकार ने सारे प्रयत्न कर लिये परन्तु वे पकडे नही जा सके । 27 वर्ष लगातार वे राजस्थान, मध्य भारत के जगलो और पहाडो मे फिरते रहे । उन्होने अपना नाम अमरदास वैरागी रख लिया था और साधु वेश मे रहते थे । जीवन के अन्तिम दिनो मे वे सीतामऊ राज्य मे अधिकतर रहे और श्री मणिराजसिंह जगावत उनके निकट सम्पर्क मे आये । श्री जगावत ने बताया है कि श्री जोरावरसिंह ने उन्हे कहा था कि "लार्ड हार्डिंग्ज जब हौदे पर बैठकर निकले तो स्वय मैंने एक ऊँचे मकान से उन पर गोला फैंका । गोला फैंक कर हम दिल्ली से निकले तो एक दिन मे हम लगभग चालीस मील चले । एक गुप्तचर हमारे पीछे हो गया । वह हमारा पीछा कर रहा था । कुछ दिनो के उपरान्त जब हम बांसवाडा की सीमा से निकल रहे थे तो गुप्तचर ने नाकेदार को पुकार कर कहा कि इस व्यक्ति को पकड लो । जोरावरसिंह ने तुरन्त उस नाकेदार को धराशायी कर दिया और दोनो वहा से निकल भागे ।

राजलक्ष्मी देवी की साक्षी

ठाकुर जोरावरसिंह ने अपने बडे भाई केशरीसिंह बारहठ की पौत्री श्रीमती राजलक्ष्मी देवी को दिल्ली के चांदनी चौक मे वह स्थान दिखलाया था जहाँ से उन्होंने बम फैंका था । ठाकुर साहब फरार होकर अज्ञातवास मे चले गये और भारत मां को स्वतन्त्र कराने के प्रयत्नो मे अपने को न्योछावर कर दिया । श्री फतहसिंह मानव के उनके बारे मे लिखा है बग-भग से लेकर सन् 1942 के अन्तिम क्रान्ति तक जितने भी बलिदान पराधीन भारत मे हुए उनमे यदि अतुलित त्याग, अद्वितीय धैर्य और अपरिमित कष्ट सहिष्णुता की तुलना मे उन पुरुष पु गवो को रखा जाय तो जोरावरसिंह का स्थान सर्वोत्तम शहीदो मे होगा । समाज की बलिवेदी पर सर्वस्व स्वाहा करने वाले ठाकुर जोरावरसिंह जैसे उद्भट क्रान्तिकारी सदा अमर रहेंगे ।

भूमिगत की स्थिति में देहावसान

ठा० जोरावरसिंह को पकड़ने के लिए कोटा सरकार तथा बिहार सरकार ने भारी इनामो की घोषणाए की किन्तु उस वीर क्रान्तिकारी ने अपनी वेशभूषा और बोलचाल को बदल कर ऐसा रूप धारण किया कि सत्ता का सी० आई० डी० विभाग उनका पता लगाने मे सफल न हो सका । बिहार के आरा षडयन्त्र केस मे ठा० जोरावरसिंह को प्राणदण्ड की सजा दी गई थी परन्तु वह तो पकड मे ही नही आये थे । लार्ड हार्डिंग्ज पर बम फैंकने के बाद पूरे 27 वर्ष तक भूमिगत रहते हुए अपने आपको भारत माता की बलिवेदी पर समर्पित कर दिया । उनकी मृत्यु सन् 1939 मे हुई ।

राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के अमर शहीद

- श्री प्रतापसिंह बारहठ
- श्री सागरमल गोपा
- श्री रूपाजी और किरपाजी धाकड़
- श्री नानक भील
- श्री बालमुकुन्द बिस्सा
- श्री बीरबलसिंह
- श्री रमेश स्वामी
- श्री चुन्नीलाल शर्मा
- श्री आनन्दी और शांति
- श्री कालाबाई
- श्री नानाभाई खांट

: ? :

अमर शहीद

प्रतापसिंह बारहठ



जन्म सवत् 1950 ज्येष्ठ शुक्ला 9

अवसान .

यह उन दिनो की वात है जव भारतवासी दासता की पीडा से कराह रहे थे, परन्तु कतिपय साहसी भारतीय युवक अग्रेजो की दासता के जुए को उतार फैंकने का प्रयत्न कर रहे थे। वे गुप्त क्रान्तिकारी सगठन स्थापित करते, और देश के लिए मरने की शपथ लेते। वम वनाते, वन्दूके और गोली वनाने के कारखाने खडे करते, विदेशो से छिपकर 'अस्त्र-शस्त्र' मगवाते, सैनिक छावनियो मे जाते और भारतीय सैनिको को देश आजाद करने के लिए अग्रेजो के विरुद्ध उठ खडे होने, विप्लव करने के लिए उकसाते। छिपे-छिपे विद्रोह और क्रान्ति का सदेश छिपाकर सैनिक छावनियो मे और स्कूलो तथा कॉलेजो मे वाटते, और देश-भक्त युवको को अपने दल का सदस्य बनाते। उनकी योजना थी कि जब क्रान्ति की तैयारी पूरी हो जाय तो सब छावनियो के सैनिक एक साथ विद्रोह कर दें। अग्रेजो को कैद कर लिया जाये और स्वतत्रता का युद्ध छेड दिया जाये। उनका मानना था कि यदि सैनिको ने विद्रोह कर दिया तो समस्त भारत मे क्रान्ति भडक उठेगी। उस समय प्रथम महायुद्ध के कारण भारत मे अग्रेजी सेनाए तो थी ही नही, भारतीय सेनाए भी वहुत कम थी। वे यूरोप के रणक्षेत्र मे लड रही थी।

विश्वासपात्र

इस क्रान्तिकारी दल के नेता वीर रासविहारी वोस थे। उन्होंने समस्त उत्तर भारत मे वगाल, विहार, उडीसा, उत्तरप्रदेश, पजाब, राजस्थान, मध्यप्रदेश मे अपने दल को सगठित किया था। सन् 1911 मे जव कि रासविहारी वोस राजस्थान मे क्रान्तिकारी दल का कार्य करने के लिए किसी साहसी और वीर युवक की खोज मे थे, उनके अभिन्न मित्र तथा साथी दल के वरिष्ठ और मान्य सदस्य मास्टर अमीरचन्द दिल्ली मे एक युवक को

उनके पास लाये और रामविहारी वोस से कहा कि वह युवक और कोई नही प्रतापसिंह वारहठ है। रासविहारी वोस से उन्होंने कहा कि प्रतापसिंह वारहठ पर पूरा भरोसा किया जा मकता है। वे योग्य, साहसी और वीर हैं। रासविहारी वोस ने प्रतापसिंह को दल का सदस्य वना लिया। कुछ दिनो मे ही प्रतापसिंह वारहठ ने रासविहारी वोम का पूरा विश्वास प्राप्त कर लिया और वे उनके दाहिने हाथ वन गये।

क्रान्तिकारी वीर प्रतापसिंह का जन्म प्रसिद्ध वारहठ परिवार मे हुआ था। उनके पितामह, कृष्णसिंह वारहठ प्रकाण्ड विद्वान और देशभक्त थे। राजपूताने और मध्य भारत के राज-दरवारो मे उनका वहुत मान था। कई नरेशो ने उन्हे जागीर देकर सम्मानित किया था। उदयपुर के महाराणा के वे परामर्शदाता थे। उन्ही के परामर्श पर प्रसिद्ध क्रान्तिकारी देशभक्त श्यमाजी कृष्ण वर्मा को महाराणा ने मेवाड राज्य का प्रधामन्त्री नियुक्त किया था। वारहठ परिवार चारण जाति मे योग्यता और देशभक्ति के लिए प्रमिद्ध था। अपनी आन को वे प्राण देकर भी रखना जानते थे। प्रतापसिंह के पिता ठाकुर केशरीसिंह वारहठ का उदयपुर और कोटा राज दरवारो मे वहुत मान था। यद्यपि वे देशी राज्यो मे ऊँचे पद पर थे परन्तु छिपे-छिपे उनका मम्वन्ध क्रान्तिकारी दल मे था। उन्होने अपने छोटे भाई ठाकुर जोरावरसिंह वारहठ, अपने जामात ईश्वर दान आसिया और पुत्र प्रतापसिंह वारहठ को मास्टर अमीरचन्द के पास भेज दिया था।

क्रान्ति के लिए प्रशिक्षण

मास्टर अमीरचन्द ने उनको क्रान्तिकारी कार्य करने का प्रशिक्षण दिया था। भेप वदल कर राजकीय कार्यालयो से गुप्त समाचार प्राप्त करना, वम वनाना, सैनिको तथा युवको से किम प्रकार सम्पर्क स्थापित करना इत्यादि सभी प्रकार का प्रशिक्षण मास्टर अमीरचन्द ने ही उन्हे दिया था। ईश्वर दान आसिया ने इस लेखक को वताया कि एक वार उन्होंने मास्टर अमीरचन्द को भी छका दिया। जव भेप वदल कर वे उनके पास गये, उनसे वातचीत की तो मास्टर अमीरचन्द भी उनको पहचान नही सके। वहुत देर तक वात कर चुकने के उपरान्त उन्होने मास्टर अमीरचन्द को वतलाया कि वे कौन है, तो मास्टर अमीरचन्द उनसे वहुत प्रमन्न हुए और उन्हे वहुत शावासी दी।

मास्टर अमीरचन्द प्रतापसिंह वारहठ से वहुत अधिक प्रभावित थे। यही कारण था कि उन्होंने रासविहारी वोस से प्रताप सिंह वारहठ को राजस्थान मे क्रान्तिकारी दल का दायित्व देने की सिफारिश की थी। जव मास्टर अमीरचन्द ने प्रतापसिंह वारहठ, ठाकुर जोरावरसिंह वाहरठ तथा ईश्वर दान आसिया को रास विहारी वोस से मिलाया तो विप्लवी महानायक रासविहारी वोस वहुत प्रसन्न हुए और वोले-' ठाकुर केसरीसिंह वारहठ एक मात्र ऐसे व्यक्ति है जिन्होंने स्वय अपने को, भाई, पुत्र और जामाता को मातृ-भूमि की दासता की शृ खलाओ को काटने के लिए वलिदान कर देने का पावन सकल्प लिया है।"

गुलामी के साँचे

वीर प्रतापसिंह का जन्म सम्वत् 1950 को जेष्ठ शुक्ला नवमी को उदयपुर मे

हुआ था। उस समय उनके पिता ठाकुर केशरीसिंह बारहठ महाराणा उदयपुर के सलाहकार थे। बाद मे कोटा के महाराव उम्मेदसिंह ने उनकी प्रशसा सुनकर उन्हे कोटा मे बुला लिया। अतएव उनका बाल्यकाल कोटा मे व्यतीत हुआ। वही उनकी शिक्षा-दीक्षा आरम्भ हुई। कुछ समय के उपरान्त वे डी० ए० वी० स्कूल अजमेर मे विध्याध्ययन के लिए प्रविष्ट हुए। उनके पिता ठाकुर केशरीसिंह कहा करते थे कि अग्रेजो द्वारा चलाये गये विश्व-विद्यालय गुलामो को उत्पन्न करने वाले साँचे है जहाँ भारत के युवको को गुलामी मे ही प्रसन्न रहने का पाठ पढाया जाता है। इसलिए प्रतापसिह ने मैट्रिक की परीक्षा देने की आवश्यकता नही समझी। उसी समय प्रसिद्ध देश भक्त और क्रान्तिकारी अर्जुनलाल सेठी ने "जैन वर्द्धमान विद्यालय' की जयपुर मे स्थापना की थी। क्योकि वह एक शैक्षणिक सस्था थी, परन्तु वास्तव मे वह देशभक्त क्रान्तिकारी युवको को तैयार करने का साधन था, प्रतापसिह भी अर्जुनलाल सेठी के पास चले आये। वहाँ रह कर प्रतापसिह मे देश की स्वतन्त्रता के लिए काम करने की भावना और भी दृढ हो गई। जब सेठीजी अपने विद्यालय को जयपुर से हटाकर इन्दौर ले गए तब उनके पिता ठाकुर केसरीसिंह बारहठ ने दिल्ली के प्रसिद्ध देशभक्त और क्रान्तिकारी मास्टर अमीरचन्द के पास उन्हे भेज दिया।

प्रतापसिह उस समय केवल बीस वर्ष के थे। इतनी कम उम्र मे वे क्रान्तिकारियो के सर्वमान्य नेता बन गये। घूम-घूम कर आजादी की लडाई के लिए राजपूताने के सैनिको तथा युवको को तैयार करने लगे। उनके नेतृत्व मे राजपूताने मे क्रान्तिकारी सगठन बहुत शक्ति शाली बन गया।

अवसर की ताक

रासविहारी बोस चाहते थे कि कोई ऐसा कार्य किया जावे जिससे कि अग्रेजी सरकार की धाक खत्म हो जावे, उनकी प्रतिष्ठा को गहरा धक्का लगे और उनका आतक समाप्त हो। भारतीयो मे यह विश्वास उत्पन्न हो जाये कि अग्रेजो के विरुद्ध उठ खडे होने का साहस किया जा सकता है। उन्हे शीघ्र ही ऐसा अवसर मिल गया। अग्रेजो ने कलकत्ते को खतरनाक समझ कर दिल्ली को भारत की राजधानी बनाया था। वायसराय ने बडी धूम-धाम और शान-शौकत का आयोजन किया था। वह भारतीयो के हृदय पर यह अकित कर देना चाहते थे कि ब्रिटिश सत्ता के अधीन रहने और ब्रिटिश सम्राट के प्रतिनिधि वायसराय को अपना प्रभु और सर्वोच्च मानने मे ही भारत का भला है। यही कारण था कि देशी राज्यो के सभी नरेशो, उनसे सामन्तो, ब्रिटिश प्रान्तो के जमीदारो तथा ताल्लुकेदारो, व्यापारियो, उद्योगपतियो, धर्माचार्यो, सैनिक अधिकारियो तथा सभी महत्वपूर्ण व्यक्तियो को आमन्त्रित किया गया था। सम्पूर्ण देश का ध्यान उस भव्य समारोह की ओर आकर्षित हो गया था।

उधर विप्लवी महानायक रास बिहारी बोस लार्ड हार्डिग्ज पर बम चलाने की योजना तैयार कर रहे थे। सरकार ने जैसा भव्य आयोजन किया था, उसी के अनुरूप क्रान्तिकारियो ने भी लार्ड हार्डिग्ज पर बम चलाने की योजना तैयार की थी। रासबिहारी

बोस, सचीन्द्र सान्याल, अमीरचन्द, वालमुकुन्द, अवध विहारी, वसन्त विश्वास तो दिल्ली में थे ही। उन्होने प्रतापसिंह वारहठ तथा उनके चाचा जोरावरसिंह को और बुला भेजा। इनके अतिरिक्त और भी क्रान्तिकारी इस योजना मे सम्मिलित थे।

भयंकर धड़ाका

दिल्ली के स्टेशन को उस दिन खूब सजाया गया था। जैसे ही लार्ड हार्डिग्ज की स्पेशल ट्रेन प्लेट फार्म पर आकर रुकी, लाल किले से तोपो की गडगडाहट के साथ उनकी सलामी की घोषणा की गई। सभी राज्यो के नरेशो और अधिकारियो ने उनकी अगवानी की। फिर वायसराय को एक बहुत ऊँचे हाथी पर जिस पर सोने व चाँदी का हौदा रखा गया था और वहुमूल्य कारचोवी के फूलो से सुसज्जित था, विठाया गया। सेना की टुकडियाँ कूच कर रही थी और सैनिक वैंड मोहफथ्वीन वजा रहे थे। पीछे देशी राज्यो के नरेश अपने सम्पूर्ण राजसी ठाठ से चल रहे थे। इस प्रकार वह शानदार जुलूस दिल्ली की ओर चला। सारा शहर उस जुलूस को देखने के लिए उमड आया था।

जव वह जुलूस चाँदनी चौक पहुँचा और पजाव नेशनल वैंक की इमारत के सामने आया तो एक भयकर धडाका हुआ। एक वम लार्ड हार्डिग्ज के हौदे की पीठ पर लगा। वलरामपुर राज्य का जमीदार महावीरसिंह जो लार्ड हार्डिग्ज पर छत्र लगाये हुए था, मर कर हौदे मे लटक गया। वायसराय की पीठ, दाहिने कन्धे, गर्दन और दाहिने कूल्हे पर गहरी चोट आई और वे वेहोश होकर हौदे मे लुडक गए। भीड मे से आवाज आई "शावाश"।

असख्य जासूसो, पुलिस और सेना की चौकसी के रहते हुए लाखो की भीड मे सभी की आँखो मे धूल झोक कर वन्दूक से नही, हाथ से वम फेंक कर चलते हुए हाथी पर निशाना लगाना वडे जोखिम, साहस और धैर्य का काम था। सारे जुलूस मे मानो भूचाल आ गया। पुलिस और सेना ने सारी भीड को घेर लिया। सव सडके रोक ली गई। सव इमारतो को घेर लिया गया। पुलिस और सेना ने कोना-कोना छान डाला किन्तु वम फेकने वाला ऐसा गायव हुआ कि पुलिस कोई पता नही लगा सकी। ससार के प्रत्येक देश के समाचार पत्रो मे यह समाचार छपा। इस काड की पृथ्वी के देश मे लम्वे समय तक चर्चा होती रही। स्काटलैण्ड यार्ड के समार प्रसिद्ध जासूस वुलाये गये। सरकार ने एक लाख रुपये के इनाम की घोषणा की। देशी राज्यो के नरेशो ने अपनी राज्यभक्ति प्रदर्शित करने के लिए लाखो रुपये के पारितोषिक घोषित किये, परन्तु सव व्यर्थ। वम फेकने वाले का कोई पता नही लगा।

आज तक यह रहस्य

आज तक यह रहस्य ही वना हुआ है कि वम किसने फेका। लेखक की मान्यता है कि वम प्रतापसिंह के चाचा जोरावरसिंह और वसन्त विश्वास ने फेके परन्तु सारी योजना के सूत्रधार रासविहारीवोस थे और इसको कार्यरूप मे परिणित करने मे रासविहारी

वोस, जोरावरसिंह, वसन्त विश्वास मास्टर अमीरचन्द, वाल मुकुन्द और अवध बिहारी का सक्रिय सहयोग था। उनके सम्मिलित प्रयत्नो से ही यह कार्य सिद्ध हुआ था। प्रतापसिंह और जोरावरसिंह वचकर निकले और यमुना के किनारे आये। नदी मे वाढ थी। सात घण्टे तक प्रतापसिंह कभी तैरते, कभी गोता लगाते और कभी पुल की जजीर को पकड कर लटकते रहे। जब अन्धेरा हुआ तो उन्होने तैर कर नदी पार की। प्रतापसिंह वहुत थक गए थे, किनारे पर पहुँचे तो दो पुलिस कांस्टेविलो को उन पर सन्देह हो गया। जोरावरसिंह ने दोनो को तलवार से धराशायी कर दिया और प्रतापसिंह को पीठ पर उठाकर ले गए।

प्रतापसिंह अब छिपे-छिपे राजपूत सैनिको मे विप्लव के लिए कार्य करने लगे। वे कभी राजपूताने मे, कभी पजाव मे और कभी हैदरावाद दक्षिण जाते और क्रान्ति के कार्य को आगे वढाते। रासविहारी वोस के पीछे पुलिस हाथ धो कर पडी हुई थी। प्रतापसिंह और उनके वहनोई ईश्वरदान आसिया को दिल्ली षडयन्त्र मे पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था, परन्तु कोई प्रमाण न मिलने के करण छोडना पडा। उधर आरा षडयन्त्र काड मे उनके पिता केशरीसिंह वारहठ पर मुकदमा चला और उन्हे आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया। आरा षडयन्त्र मे जोरावरसिंह को प्राण दण्ड की सजा हुई परन्तु वह फरार हो चुके थे। केशरीसिंह वारहठ तथा जोरावरसिंह की लाखो की सपत्ति जब्त कर ली गई। वे क्रान्ति का सगठन करने के लिए वरावर घूमते थे। पुलिस उनकी परछाई भी नही छू पाती थी।

विद्रोह की योजना

रासविहारी वोस वम काण्ड के उपरान्त दिल्ली से काशी और वहा से नवद्वीप चले गये थे। वहाँ से छिप कर वे विद्रोह की योजना को सफलतापूर्वक कार्यान्वित करने का प्रयत्न कर रहे थे। अपने नेता से क्रान्ति के काम को आगे वढाने के लिए परामर्श और आदेश लेने के लिए प्रतापसिंह छिपकर नवद्वीप पहुँचे। यह भयकर खतरे का काम था परन्तु प्रतापसिंह मानो सकट से खेलने के लिए ही पैदा हुए थे। अपने नेता से परामर्श और आदेश लेकर वे नवद्वीप (वगाल) से राजस्थान चले आये और उनके आदेश के अनुसार काम करने लगे।

उस समय तक प्रतापसिंह के नाम गिरफ्तारी का पुन. वारन्ट निकल गया था। पुलिस उनके पीछे पडी थी, परन्तु वे गुप्त रूप से क्रान्ति का काम कर रहे थे। पिता केसरीसिंह वारहठ को आजन्म कारावास होने पर प्रतापसिंह ने जेल मे उन्हे सन्देश भेजा कि आप तनिक भी चिन्ता न करें। प्रतापसिंह अभी जिन्दा है। प्रतापसिंह पुलिस की आँख वचाकर राजस्थान मे घूम-घूम कर क्रान्तिकारी सगठन को दृढ करने मे लगे हुये थे।

इसी दौड धूप मे जब प्रतापसिंह हैदरावाद से बीकानेर जा रहे थे, जोधपुर के पास आशानाडा स्टेशन पर स्टेशन मास्टर से मिलने के लिए उतरे। स्टेशन मास्टर ने धोखा देकर उन्हे पकडवा दिया।

बरेली जेल में

प्रतापसिंह को बरेली जेल मे रखा गया। भारत सरकार का गुप्तचर विभाग बहुत प्रसन्न हुआ। वह जानता था कि प्रतापसिंह विप्लवी नायक रासबिहारी बोस तथा क्रान्ति दल के प्रमुख नेता शचीन्द्र का अनन्य विश्वासपात्र है। उन्हे क्रान्तिकारी दल मे कौन कौन से व्यक्ति हैं, वे कहाँ हैं, लार्ड हार्डिंग्ज पर बम किसने फैंका और क्रान्तिकारी दल का भावी कार्यक्रम क्या है, सभी कुछ ज्ञात है। वे उस समय केवल 22 वर्ष के युवक थे। गुप्तचर विभाग की मान्यता थी कि उनसे सारा भेद जान लेना कठिन नही होगा।

प्रतापसिंह के बरेली जेल मे पहुँचते ही चार्ल्स क्लीवलैंड भारत सरकार के गुप्तचर विभाग के निर्देशक बरेली आये और प्रतापसिंह को भाँति-भाँति के प्रलोभन दिये जाने लगे। "तुम्हे बहुत ऊँचा पद मिलेगा, लाखो रुपयो का पारितोपिक दिया जावेगा। तुम्हारे पिता को जो आजन्म कारावास का दण्ड भुगते रहे है, छोड दिया जावेगा। तुम्हारे चाचा जोरावरसिंह के प्राण दण्ड की आज्ञा वापस ले ली जावेगी। वायसराय से अभयदान दिलवाया जायगा। तुम्हारे पिता-चाचा की लाखो रुपये की जो सम्पत्ति जब्त करली है, वह तुम्हे वापस दिला दी जायगी।" परन्तु चार्ल्स क्लीवलैंड को यह ज्ञात नही था कि प्रतापसिंह उस परिवार का रत्न है जो प्राण देकर भी विश्वासघात नही करते। प्रतापसिंह टस से मस नही हुए। जब प्रतापसिंह से चार्ल्स क्लीवलैंड पराजित हो गये तो उन्होने उनकी कोमल भावनाओ को छुआ। उन्होने प्रतापसिंह से कहा "माँ तुम्हारे लिए निरन्तर रोती रहती है। वह अत्यन्त दुःखी है। यदि तुमने सरकार की सहायता नही कि और तुम्हे दण्ड मिला तो वे तुम्हारे वियोग मे प्राण त्याग देगी। वीरवर प्रतापसिंह ने चार्ल्स क्लीवलैंड को जो उत्तर दिया वह भारतीय क्रान्तिकारी इतिहास मे प्रसिद्ध है। उन्होने कहा "तुम कहते हो कि मेरी माँ मेरे लिए दिन-रात रोती है और बहुत दुःखी है। मेरी माँ को रोने दो। मैंने अच्छी तरह से सोचकर देख लिया हैं मैं अपनी माँ को हँसाने के लिए हजारो माताओ को रुलाना नही चाहता। अगर मैं अपने साथी क्रान्तिकारियो की माताओ का रुलाने का कारण बना तो वह मेरी मृत्यु होगी और मेरी माँ के लिए घोर कलक होगा।"

सता सता कर मार डाला !

जब प्रतापसिंह ने किसी का नाम या भेद नही बताता तो उन्हे तरह-तरह की भीषण यातनाए दी जाने लगी। परन्तु वह वीर तनिक भी विचलित नही हुआ। निर्दयी अंग्रेजी सरकार ने उन्हें सता सता कर मार डाला परन्तु क्रान्तिकारियो के सम्बन्ध मे किंचित भेद भी न जान सकी।

---

*श्री शकर सहाय सक्सेना का यह लेख राजस्थान पत्रिका के 15 अगस्त, 72 के अक से उद्धृत किया गया है।

जैसलमेर के अमर शहीद श्री सागरमल गोपा



जन्म 3 नवम्बर 1900

अवसान 4 अप्रैल 1946

मेरे जीवन का ध्येय जैसलमेर की प्रजा को जीवित, जागृत और स्वतंत्र बनाना है। आज वहा एक व्यक्ति की जो निरकुश सत्ता कायम है और उसकी दमन नीति से प्रजा स्वाभिमान हीन होकर दुर्दशा का जीवन बिता रही है, उसके ऊपर अनेक तरह के अत्याचार होते हैं लेकिन वह उफ तक नही कर सकती। इस दुर्दशा का स्मरण करके मैं कांप उठता हू। मै इस दुर्दशा का अत करने के लिए अपने प्राणो की बाजी लगाना चाहता हू।

—सागरमल गोपा

4 अप्रैल 1946 को दिन मे दस बजे जैसलमेर अस्पताल की एक खाट पर पुलिस के पहरे मे श्री सागरमल गोपा शहीद हो गए। श्री सागरमल गोपा मई 1941 मे गिरफ्तार किए गए थे और दफा 104 के तहत अपराधी ठहराए गए थे। अन्तिम समय तक भी यह किसी को मालूम नही हो सका कि उन्हे कितने वर्ष की सजा दी गई थी। उन्हे एक साल तक काल कोठरी मे रखा गया। दूसरे वर्ष उनसे भगी का काम करवाया गया। उन्हे जेल मे जो वीभत्स यातनाएँ दी गई उनको सुनकर रोगटे खडे हो जाते हैं।

श्री सागरमल गोपा को जेल मे दी जाने वाली नारकीय यातनाओ के सम्बन्ध मे श्री जयनारायण व्यास ने 8 मार्च 46 को एक पत्र द्वारा पोलिटिकल एजेन्ट से अनुरोध किया था कि वे स्वय जैसलमेर जाकर वस्तु स्थिति का अध्ययन करें। पोलिटिकल एजेन्ट ने जल्दी ही मामले की जाँच करने का आश्वासन दिया था। 6 अप्रैल 46 को पोलिटिकल एजेन्ट रेजीडेन्ट का जैसलमेर पहुँचने का कार्यक्रम अन्तिम रूप से बन गया था। जैसलमेर के शासक यह नही चाहते थे कि रेजिडेन्ट किसी हालत मे जैसलमेर पहुचे और उनकी खुराफातो का भण्डा फोड हो।

3 अप्रेल 46 की बात है, उस रोज एक पुलिस अधिकारी ने गोपाजी को जेल मे धमकाते हुए कहा कि तुम रेजिडेन्ट को पत्र लिख लिखकर यहाँ बुला रहे हो अब देखना आज तुम्हे कैसा मजा चखाया जाता है। और उसी 3 अप्रेल 46 को दोपहर के 3 बजे अचानक जैसलमेर नगर मे यह सूचना फैलादी गई कि सागरमल गोपा ने अपने शरीर मे आग लगादी है। इस कुतुहल भरे समाचार ने प्रायः सभी को चकित कर दिया और नगरवासियो का तांता जेल की ओर लग गया। सरकारी अधिकारियो ने किसी भी व्यक्ति को अथवा गोपाजी के परिवार वालो को जेल मे जाकर सागरमलजी से मिलने की इजाजत नही दी। उनके परिवार वालो को गोपाजी से मिलने देने की बात तो दूर रही, स्वय गोपाजी को उपचार के लिए अस्पताल नही पहुँचाया गया।

श्री सागरमलजी गोपा दिन भर तडफते रहे। शाम को अन्धेरा होने के बाद गोपाजी को चुपके से एक खाट पर सुलाकर कैदियो के कधो पर अस्पताल पहुँचाया गया। तब तक गोपाजी के पैरो की बेडियाँ नही निकाली गई थी। गोपाजी रात भर अस्पताल मे पडे रहे, उनका कोई इलाज नही हुआ।

दूसरे दिन जैसलमेर के एक कर्मठ और प्रसिद्ध राजनैतिक कार्यकर्त्ता श्री सत्यदेव व्यास जवाहर चिकित्सालय मे गोपाजी की स्थिति देखने, अन्य रोगी से मिलने के बहाने पहुँचे। वहाँ उन्होने देखा कि श्री गोपाजी का सारा शरीर बुरी तरह से जला हुआ था। शरीर पर सब जगह फफोले पडे हुए थे। देखते ही चित्त उद्विग्न हो गया। उनका मुह एकदम जल गया था। और एक आँख पूरी जल चुकी थी लेकिन सिर का एक बाल भी जला हुआ नही था। वे बुरी तरह कराह रहे थे। उनकी चिल्लाहट से यह बिल्कुल स्पष्ट था कि अस्पताल मे पहुँचाने पर उनका सतोषप्रद इलाज नही किया गया है।

3 अप्रेल की रात को 9 बजे वही पर अस्पताल मे जैसलमेर के जज ने आकर उनके अन्तिम बयान लेने का सरकारी नाटक खेला। उनके बयानो के समय उनकी पत्नी व भाई मे से किसी को भी उपस्थित नही रहने दिया गया और न ही उक्त बयानो पर उनके हस्ताक्षर करवाए गए। जब वे मर्दाना वार्ड मे रखे गए थे तब भी उनके उपचार की समुचित व्यवस्था नही की गई। वे रात भर कराहते रहे। डाक्टर–डाक्टर चिल्लाते रहे। मगर उनका निरन्तर चिल्लाना अरण्य रोदन की तरह व्यर्थ गया। न कोई डाक्टर आया न उपचार हुआ। वही पर उनकी खाट पर पुलिस का पहरा था। रात को, जलने के आठ घण्टे बाद, उनके पैरो की डडे बेडिये निकाली गई थी।

दूसरे रोज प्रात 4 अप्रेल को उनकी अत्यन्त चिताजनक हालत देखकर उनकी पत्नी श्रीमती हीरादेवी जैसलमेर के बडे डाक्टर श्री दवे के पास गई। तब करीब 9 बजे वह अस्पताल में आए और कराहते हुए गोपाजी को एक इजेक्शन दिया। इजेक्शन देते ही उनका कराहना शान्त हो गया और वही अस्पताल की खाट पर उनका देहान्त हो गया।

गोपाजी के इस रहस्य मय अन्त के बाद उनका शव उनके परिवार के लोगो को सौंप दिया गया। गोपाजी की अत्येष्टी शीघ्रता से करदी गई लेकिन दाह क्रिया से

लौटते ही अमर शहीद सागरमल गोपा की जय, पुलिस अफसर गुमानसिंह मुर्दाबाद व इन्कलाव जिन्दावाद आदि के नारो से सारा नगर गूँज उठा। इसका नेतृत्व श्री ताराचन्द जगाणी कर रहे थे। सारे शहर मे तहलका मच गया। महारावल के पैरो के नीचे से धरती। खिसकने लग गई। गोपाजी की शहादत ने सुसुप्त जैसाणा की ज्वाला को भडका दिया। स्थान स्थान पर गोपाजी की रहस्यमय मृत्यु को खून की सज्ञा दी गई और 'खून का वदला खून' के नारे दीवारो पर लिख दिए गए।

27 अप्रैल 1946 को पडित जवाहरलाल नेहरू ने श्री सागरमल गोपा की हत्या पर एक विस्तृत और अधिकृत वयान देते हुए लिखा था कि —

"जैसलमेर के मशहूर राजनैतिक कार्यकर्त्ता श्री सागरमल गोपा की वहा की जेल मे मृत्यु के सम्वन्ध मे समाचार मिले है उनके वारे मे वताया गया था कि उन्होने अपने कपडो पर मिट्टी का तेल छिडक कर आग लगाकर आत्म हत्या करली थी। जेल मे वद एक कैदी के वारे मे यह एक असाधारण बयान है। हमने इस मामले की जाच की है और श्री जयनारायण व्यास की रिपोर्ट भी मेरे सामने है मैंने श्री सागरमल गोपा के भाई से भी इस सम्वन्ध मे मुलाकात की है इस जाँच से जो वातें प्रकट हुई है— वे दर्दनाक हैं यह स्पष्ट है कि 3 अप्रेल को श्री सागरमल गोपा को जिंदा जलाया गया था। इसे आत्म हत्या कहना एकदम शरारत है और यदि ऐसा मान भी लिया जाए तव भी यह कहना इस वात की ओर इशारा करती है कि उन्हे जो यातनाये दी गई थी उनसे वचने के लिए उनके पास कोई चारा नही रह गया था।

"श्री सागरमल गोपा का निधन हो गया या यूँ कहिए कि ज्यादा मुमकिन यही है कि श्री सागरमल गोपा को वेरहमी से मार डाला गया ताकि पोलिटिकल एजेंट और अन्य लोगो को वे आप वीती यातनाओ की दास्तान न सुना सकें। आग से जल जाने के वाद भी करीव दस घन्टे तक उन्हे अस्पताल नही पहुँचाया गया उस मरणासन्न अवस्था मे भी जजीरे नही हटाई गई और मौत की हालत मे भी उनकी पत्नी को उनसे मिलने नही दिया गया। कुछ सम्वन्धी उन्हे देखने अवश्य जा सके लेकिन उन्हे वातचीत करने की आज्ञा नही दी गई।

"इस दुखात के बारे मे यह कुछ वाते है, किसी भी व्यक्ति के साथ और विशेष कर राजनैतिक कार्यकर्ता के साथ ऐसा व्यवहार करना विभत्स और गुंडागर्दी वाली वात है जैसलमेर के राजकीय अधिकारियो ने तो इस सम्वन्ध मे जाँच तक करने की समझदारी नही दिखाई है। अनुमान स्पष्ट है कि यह एक ऐसी वात है जिस पर न सिर्फ जैसलमेर के अधिकारियो के लिए वल्कि दूसरे राजाओ के लिए भी जो अच्छे नाम की कद्र करते है जिन राजाओ ने हाल ही मे नागरिक स्वाधीनता की वात की है, शर्म की वात है।"

अमर शहीद सागरमल गोपा का जन्म जैसलमेर मे (सवत् 1957 के कार्तिक शुक्ला 11) 3 नवम्वर 1900 ईसवी को एक सपन्न ब्राह्मण परिवार मे हुआ था। उनका वचपन जैसलमेर मे ही वीता। उनकी शिक्षा-दीक्षा भी वही हुई। श्री सागरमल गोपा के

पिता का नाम श्री अखेराज था । गोपाजी राजकीय सेवामे अच्छे पद पर थे । लेकिन उस अच्छे पद की सुकुमार स्थिति मे बालक गोपा के व्यवहार के कारण राजकीय दरारें पडने लग गई थी । सागरमल के पिता अखेराज जी जैसलमेर मे महारावल के साथ दिल्ली दरबार भी गये थे । वे उनके साथ आबू मे भी रहे । अखेराजजी एक जनपरायण व्यक्ति थे, उनमे नि स्वार्थता कूट कूट कर भरी थी ।

जैसलमेर के महारावल जवाहरसिंह युग की नाडी को नही पहचान सके । वह अपनी प्रजा के प्रति रुढ और दकियानूस बने रहे जैसे कि राजा शताब्दियो से बने चले आ रहे थे । इसका नतीजा यह हुआ कि कई जागरुक परिवार जैसलमेर छोड कर चले गए सागरमल गोपा के पिता अखेराजजी का तो यहाँ तक कहना था कि तुम (अपने लडको का) यदि राय मानो तो जैसलमेर स्टेट की नौकरी कभी मत करना । अतएव सागरमल जी अपने बाल बच्चो सहित जैसलमेर छोड कर नागपुर जाकर बस गए वे वहाँ नए जीवन यापन के साधन ढूढने लगे ।

गोपा परिवार नागपुर गया पर वे जैसलमेर को नही भुला सके । वे जैसलमेर के राजनैतिक आन्दोलन का साथ नही छोड सके । जैसलमेर के महारावल जवाहरसिंह ने अपने चारो ओर चापलूस और खुद गर्ज लोगो की एक फौज इकट्ठी करली थी । सागरमल गोपा ने राज्य की इन स्थितियो का वर्णन करते हुए जैसलमेर राज्य का गुडा शासन नामक एक पुस्तक लिखी जिसमे जैसलमेर की तानाशाही पर खुलकर प्रकाश डाला ।

अमर शहीद सागरमल गोपा के राजनैतिक क्षेत्र मे आने से पहले कई राजनैतिक नेता जैसलमेर के राजनीति क्षेत्र को प्रशस्त कर चुके थे । श्री रघुनाथसिंह मेहता उन नवयुवकों मे से एक रहे हैं जिन्होंने श्री गोपाजी को राजनैतिक सघर्ष की प्रेरणा दी । श्री रघुनाथसिंह के पहले उनका मार्ग श्री सुजानसिंह तथा श्री करणसिंह मेहता प्रशस्त कर चुके थे । उन्होंने जैसलमेर के पिछडे प्रदेश मे एक कन्या विद्यालय की स्थापना की थी इसलिए इन नए विचारो के लोगो की उस समय के सामन्तवाद और अंग्रेजी हुकूमत के पिट्ठुओ से नही बन सकी थी ।

16 नवम्बर 1930 को श्री रघुनाथसिंह, श्री आईदानसिंह और अमर शहीद श्री सागरमल गोपा के हस्ताक्षरो से एक सूचना प्रकाशित की गई थी । उस सूचना मे जवाहरलाल नेहरू के आरोग्य लाभ के लिए की गई ईश्वर प्रार्थना के कार्यक्रम को सरकार बरदाश्त नही कर सकी । यह एक हास्यास्पद बात थी । राज्य की ओर से इन व्यक्तियो पर मुकदमा चलाया गया । उन पर चार इल्जाम लगाए गये ।

1. यात्रियो का झगडा ।
2 दर्जी सत्याग्रह को चलाना ।
3 माहेश्वरी युवक मडल की स्थापना ।
4 छोगालाल का दत्तक विधान ।

सागरमलजी गोपा ने 1921 के असहयोग आन्दोलनो मे भाग लिया था। तब से वे देशी राज्यो के सम्बन्ध मे खास दिलचस्पी लेते रहे। इनके राजनैतिक–कार्यो के कारण जैसलमेर मे ही नही वरन् हैदराबाद मे भी उनके प्रवेश पर प्रतिबंध लग गया था। लेकिन इन प्रतिबन्धो से वे जरा भी विचलित नही हुए और लगातार अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद के अधिवेशनो मे भाग लेते रहे।

भारत वर्ष मे चल रहे अखिल भारतीय स्वतत्रता सग्राम मे भाग लेने के साथ साथ सागरमलजी के जैसलमेर पर अन्य फुटकर लेखो के अलावा उन्होने कई महत्त्वपूर्ण पुस्तकें भी लिखी। वे हैं—"जैसलमेर का गु डा राज्य" और "रघुनाथसिंह का मुकदमा"। उन्होंने इन पुस्तको को त्रिवेन्द्रम मे छपवाया था। आकोला भी उनका राजनैतिक कार्य क्षेत्र रहा।

उन दिनो सागरमल गोपा जैसलमेर मे नही थे। 1939 मे सागरमल गोपा के पिता का देहान्त हो गया था। अक्तूबर का महीना था। जैसलमेर उनके लिए खतरे से खाली नही था। इसलिए इच्छा होते हुए भी वे जैसलमेर नही आ सके। पिता के निधन के बाद उनकी उत्कट इच्छा थी कि वे जैसलमेर आते और घरेलू समस्याओ पर ध्यान देते। उनके शुभचिंतको ने उन्हें राय दी कि वे जैसलमेर नही जावे। जैसलमेर का महारावल वहाँ उन्हें स्वतन्त्र नही रहने देगा। जैसलमेर उनके लिए खतरे से खाली नही है।

मित्रो के इस आग्रह के बावजूद जैसलमेर नही जाना उन्हें अपनी कायरता लगी। मित्रो के बहुत आग्रह के बावजूद वे रेजिडेट से मिले उन दिनो जोधपुर, जैसलमेर और अजमेर एक रेजिडेन्ट के आधीन थे। उन दिनो रेजिडेन्ट का मुकाम जोधपुर था। रेजिडेन्ट से सागरमल गोपा ने चाहा कि जैसलमेर मे उनके साथ किसी प्रकार का दुर्व्यवहार न हो रेजिडेन्ट ने दीवान से पत्र व्यवहार किया उसने पत्र व्यवहार के बाद सागरमल गोपा को पहले जबानी और फिर लिखित आदेश देकर कहा कि उनके साथ जैसलमेर जाने पर किसी प्रकार का अभद्र व्यवहार नही होगा।

रेजिडेट ए० एस० एलिंगटन ने गोपाजी को 22 मार्च को लिखा "दीवान ने मुझे सूचना दी है कि तुम्हारे खिलाफ कोई मामला नही और अगर तुम जैसलमेर जाओ तो तुम्हे दरबार की तरफ से किसी प्रकार के दुर्व्यवहार की आशका नही करनी चाहिए। मैंने यह बात तुम्हें जबानी भी कह दी थी।"

सागरमल गोपा रेजिडेट के इस आश्वासन पर जैसलमेर आ गए परन्तु उन्हे और उनके मित्रो को क्या मालूम था कि रेजिडेंट का यह आश्वासन निरा धोखाधडी है। महज चालाकी है, यह आश्वासन केवल उनको फँसाने का आश्वासन था।

25 मई 41 को वे जैसलमेर छोडने वाले थे। लेकिन उसी रोज उनकी गिरफ्तारी करली गई। सागरमल गोपा को पुलिस ने निर्दयता के साथ गिरफ्तार किया उसका वर्णन उन्होंने अपनी जेल मे लिखी डायरी मे इन शब्दो मे किया है "गिरफ्तारी के समय मैं कु ड

पाडे मे पेशाव कर रहा था पीछे से लाठी मार कर टागा टोलो कर गिरफ्तार किया गया, वारट जेल मे दिखाया।"

जैसलमेर राज्य सरकार द्वारा दफा 124 के अन्तर्गत गोपाजी पर चार आरोप लगाए गए।

1. जैसलमेर के दीवान को लिखा हुआ उनका पत्र जो 12 जनवरी 41 को लिखा गया था।
2. एक क्रान्तिकारी कविता लिखकर प्रकाशित करवाई और बाद मे उसे तकसीम की व रियासत जैसलमेर मे वजरिया नुख्तलक असखास भेजी।
3 22 मई 1941 को जैसलमेर पहुँचने पर बस से उतरते ही शहर मडी मे एक हजूम के सामने वहाँ के शासक एव सरकार के खिलाफ हिकारत पैदा करने वाले नारे लगाए व फिराजात बातें कही।
4 उन्होने जैसलमेर की स्वामि-भक्त जनता को जैसलमेर राज्य के खिलाफ भडकाने का प्रयास किया है।

पहले जुर्म पर श्री गोपाजी को वरी कर दिया गया। लेकिन पिछले दो जुर्मों पर उन्हें तीन तीन साल की सख्त कैद की सजा दी व ढाईसौ-ढाई सौ रुपए जुर्माना किया। यदि यह जुर्माने का रुपया नही दिया गया तो वे सूरत अदम अदायगी खर जुर्माना की जुर्माना पर छ छ माह की सख्त कैद सजा में भुगतानी पडेगी।

25 मई 1941 को अमर शहीद सागरमल गोपा की गिरफ्तारी हुई और 3 अप्रेल 46 को उन्हें मिट्टी का तेल डाल कर जला दिया गया। इस अवधि मे जो शारीरिक यातनाए उन्हे दी गई थी वे नारकीय थी और दिल को कपा देने वाली थी। वे यातनाए भारतवर्ष के राजनैतिक इतिहास मे बेमिसाल हैं।



नोट—उपरोक्त लेख श्री रामचन्द्र बोडा द्वारा लिखित पुस्तिका 'अमर शहीद सागरमल गोपा' के आधार पर तैयार किया गया है।

जोधपुर के अमर शहीद बाल मुकुँद बिस्सा



जन्म सन् 1908

शहादत का दिन . 19 जून 1942

वाल मुकुन्द विस्सा का निधन 1942 की 19 जून को पुलिस के पहरे मे जोधपुर के विडम अस्पताल मे नजरवद राजनैतिक कैदी की स्थिति मे हुआ था। जोधपुर राज्य मे लोक नायक श्री जयनारायण व्यास के नेतृत्व मे उत्तरदायी शासन के लिए जो लोक आन्दोलन पिछले महीने भर से चल रहा था उसी आन्दोलन के सिलसिले मे राज्य भर मे दमन और गिरफ्तारियो का ताता लगा हुआ था। श्री वालमुकुन्द विस्सा भी उसी आन्दोलन के सिलसिले मे भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत 9 जून 42 को जोधपुर मे गिरफ्तार कर लिए गए थे।

जोधपुर मे भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत सैण्ट्रल जेल जोधपुर मे नजरबन्दी मे जाते ही श्री वालमुकुन्द विस्सा ने राजवदियो के प्रति राज्य के दुर्व्यवहार के विरोध मे अनेक अन्य साथियो के साथ भूख हडताल शुरू करदी थी। नजरवद राजवदियो की यह हडताल सभवत 15 जून तक चली थी। भूख हडताल मे वालमुकुन्द विस्सा बहुत कमजोर हो गए थे उनका रक्तचाप गिर गया था और उनकी नाडी की गति भी धीमी पड गई थी। भूख हडताल तोडने के तत्काल वाद उनके शरीर पर प्रकृति का दूसरा आघात हुआ वे सन् स्ट्रोक से आहत हो गए।

रोग के इस नए आक्रमण की ओर जेल अधिकारियो ने ध्यान नही दिया। चिकित्सा के लिए वार–वार अनुरोव करने पर भी चिकित्सा की कोई व्यवस्था जेल के नजरवदी वार्ड मे नही हो सकी।

19 जून को वालमुकुन्द विस्सा की हालत अत्यन्त शोचनीय हो गई तव उन्हे नजरवदी वार्ड से जेल अस्पताल पहुचाया गया। जेल के डाक्टर ने उनकी हालत गभीर देखकर राज्य के वडे विढम अस्पताल मे चिकित्सा के लिए भिजवा दिया।

विंढम अस्पताल मे पहुचते ही 19 जून को पुलिस के पहरे मे वालमुकुन्द विस्सा ने अपना दम तोड दिया । जेल अधिकारियो ने उनकी विगडती हुई स्थिति मे चिकित्सा की कोई व्यवस्था नही की । भूखहड़ताल तोडने के वाद 4 दिन तक वालमुकुन्द विस्सा अपने साथी राजवदियो की गोदी मे तडफते रहे यदि इन चार दिनो मे उनकी ओर जेल अधिकारियो ने ध्यान दिया होता तो यह स्थिति नही आती । वडे अस्पताल मे भी उनके शरीर पर किसी तरह की चिकित्सा नही हो सकी ।

सारे शहर मे वालमुकुन्द विस्सा के मृत्यु का समाचार विजली की तरह फैल गया । उनके शव के अन्तिम दर्शन करने के लिए सारा शहर उमड पड़ा । अस्पताल के वाहर करीव 50–60 हजार लोग एकत्रित हो गए । वालमुकुन्द विस्सा का शव उनके रिश्तेदारो को दे दिया गया । उपस्थित जनता ने यह निश्चय किया कि वालमुकुन्द विस्सा की शव यात्रा शहर के वाजारो मे से निकाली जाय । जोधपुर राज्य की परम्परा थी कि शहर के वाहर से कोई शव शहर मे नही जा सकता था विंढम अस्पताल शहरपनाह के दरवाजो के वाहर पडता है अत राज्याधिकारियो ने यह निषेधाज्ञा प्रसारित कर दी कि वालमुकुन्द विस्सा की शव यात्रा शहर मे होकर श्मशान नही जा सकती ।

इस निषेधाज्ञा से शव–यात्रा मे शामिल होने के लिए शहर भर के हजारो नर नारी, स्त्री पुरुष इकट्ठे हो गए । राज्याधिकारियो ने शहर का जालौरी दरवाजा वद करवा दिया । शहर मे प्रविष्ठ होने के सभी मार्गों पर पुलिस और सेना तैनात करदी गई ।

मानव मेदिनी वालमुकुन्द विस्सा का शव उठाए हुए सोजती दरवाजे पर पहुची । शव यात्रा के पहुँचने के पहले–पहले वह दरवाजा भी वन्द कर दिया गया । सोजती दरवाजे के वाहर करीव 1 लाख स्त्री पुरुष एकत्रित हो गए । भीड आगे पास नही हो रही थी । पुलिस ने भीड को तीतर-वीतर करने के लिए सगीन लाठी चार्ज किया और जनता पर घोडे दौडाए । लाठी चार्ज से और घोडो की चपेट से सैकडो लोग घायल हो गए । सोजती गेट के वाहर युद्ध के मैदान जैसा दृश्य उपस्थित हो गया ।

शहर मे प्रविष्ठ होने के सभी रास्ते राज्य सरकार ने वन्द कर दिए अन्त मे विवश होकर जनता को शहर से वाहर 5 मील लम्वे पहाडी इलाको को पार करके श्मशान पहुँचना पडा ।

जोधपुर या राजस्थान के इतिहास मे यह एक ऐसी ऐतिहासिक शव यात्रा थी जिसका कोई दूसरा उदाहरण नही मिलता । वालमुकुन्द विस्सा का दाह सस्कार भले राजकीय सम्मान के साथ नही किया गया हो परन्तु जोधपुर की जनता ने जो प्यार और सम्मान उन्हे दिया वह किसी परम भाग्यशाली व्यक्ति को ही प्राप्त हो सकता है ।

वालमुकुन्द विस्सा इस तरह मे शहीद हो गए । शहादत के समय उनकी आयु केवल 34 वर्ष की थी उनका जन्म सन् 1908 मे जोधपुर राज्य की डीडवाना तहसील के पीलवा ग्राम मे एक सामान्य पुष्करणा ब्राह्मण परिवार मे हुआ था । उनके पिता का व्यवसाय कलकत्ते मे था और वालक वालमुकुन्द को प्रारम्भिक शिक्षा कलकत्ते मे ही प्राप्त

हुई । बगाल के क्रान्तिकारी और स्वतत्र वातावरण मे उन्होने राष्ट्रीयता के सस्कार प्राप्त किए वही से उन्होने खद्दर पहनना शुरू कर दिया था ।

जोधपुर में आकर उन्होंने कपडे की एक दुकान शुरू कर दी थी । 26 वर्ष की अवस्था मे 1934 मे उन्होने राजस्थान चर्खा एजेन्सी लेकर खद्दर भडार की स्थापना जोधपुर मे की और उनके व्यवस्थापक के रूप मे कार्य करने लगे । वे चर्खा सघ के खादी भडार मे 34 से 40 तक व्यवस्थापक रहे और मौन साधक के रूप मे खादी चर्खा और कताई बुनाई के रचनात्मक कार्य मे सलग्न रहे ।

जोधपुर के 1940 के आन्दोलन मे बालमुकुन्द बिस्सा पर जेल से बाहर रहकर आन्दोलन के सचालन की सारी व्यवस्था करने की जिम्मेदारी सौपी गई थी ।

40 के आन्दोलन की समाप्ति के बाद उन्होने जवाहर खादी भँडार नाम की खादी की दूसरी दूकान शुरू करदी थी । उनकी दुकान सभी राजनैतिक प्रवृत्तियो का केन्द्र और सभी राजनैतिक कार्यकर्त्ताओ का मिलन-स्थान बन गया था ।

श्री बालमुकुन्द बिस्सा एक मौन साधक और सेवाभावी रचनात्मक कार्यकर्त्ता थे । वे भाषण देने के लिए मच पर कभी भी नही जाते थे परन्तु किसी मीटिंग, समारोह या सम्मेलन की व्यवस्था सदा उन्ही के लिए रहती थी । उन्हे अपने दायित्वो का पूरा बोध था और उन्होंने अपनी प्रत्येक जिम्मेवारी को शान से पूरा किया । राजनीति से उनका सम्बन्ध खादी और रचनात्मक कार्य के द्वारा ही था परन्तु जोधपुर के बच्चे-बच्चे मे उनके प्रति अपार श्रद्धा और उनकी सेवा भावना के प्रति आदर की भावना थी ।

जोधपुर के जालौरी दरवाजे के बाहर नगरपालिका ने उनके नाम का बिस्सा पार्क बनाया है जहाँ बालमुकुन्द बिस्सा की सगमरमर की मूर्ति स्थापित की गई है । 19 जून को प्रति वर्ष हजारो लोग बालमुकुन्द बिस्सा को अपनी श्रद्धाजलि भेंट करते है ।



डाबड़ा के अमर शहीद चुन्नीलाल शर्मा

जन्म : सन् 1911

शहादत : 13 मार्च 1947

13 मार्च, 1947 जोधपुर राज्य के इतिहास में सामती नृशसताओ का काला दिवस, जबकि जागीरदारो और उनके भाडेतो की अमानवीय क्रूरताओ से डाबडा की रेतीली धरती खून से लाल हो गई।

भारतीय स्वतन्त्रता हर दिन निकट आ रही थी, राजाओ के और जागीरदारो के सिहासन डोल रहे थे, उनका अस्तित्व खतरे मे था। किसानो को वे कृषि भूमि मे बेदखल कर रहे थे। आए दिन जागीरी क्षेत्रो मे एक दो किसानो की हत्या हो जाती थी। किसान भी सगठित हो रहे थे। जोधपुर राज्य की लोक परिषद् भी जगह-जगह किसान सम्मेलन आयोजित करके किसानो को सगठित होने और दृढता से जागीरी अत्याचारो का मुकाबिला करने को प्रेरित कर रही थी। जागीरदारो मे भी बुझते हुए दिए की अतिम लौ की तरह हिसा भडक उठी थी। और वे लोक परिषद के हर राजनैतिक कार्यकर्त्ता और हर किसान नेता को मौत के घाट उतारने पर तुले हुए थे।

इस पृष्ठ भूमि मे डाबडा मे किसान सम्मेलन का आयोजन किया गया। किसान सम्मेलन की घोषणा के साथ ही साथ डाबडा के जागीरदार ने आस पास के जागीरदारो तथा उनके सैकडो हथियार-बद भाडेतो को गढ मे इकट्ठा करना शुरू कर दिया था। जागीरदारो की ओर से हत्याकाड की पूरी योजना बनाली गई थी। वे उस दिन किसान सम्मेलन मे आने वाले एक-एक नेता और कार्यकर्ता को जान से मार देने पर तुले हुए थे।

आतक पैदा करने वाले ये समाचार जोधपुर भी पहुँच चुके थे। कई शुभचिंतको ने सलाह दी थी कि डाबडा का किसान सम्मेलन स्थगित कर दिया जाए। लोग जानते थे कि जागीरदार अब खून की होली खेलने पर तुले हुए हैं।

लेकिन नहीं, जोधपुर से जीपो मे भर कर सर्व श्री नरसिह कछवाहा, मथुरादास माथुर, द्वारकादास पुरोहित, हरिन्द्रकुमार चौधरी, राधाकृष्ण तात्, बशीधर पुरोहित ज्वाला, किशनलाल शाह और छगनराज चौपासनीवाला डाबडा पहुँच ही गए।

उनकी तरह गाँव-गाँव से किसानो का समूह भी डावडा मे इकट्ठा होने लगा। लाडनूं तहसील के नीवी जोधो गाँव से अन्य कई लोगो के साथ चुन्नीलाल शर्मा भी डावडा पहुँच गए।

सम्मेलन के स्थान पर किसानो और नेताओ के पहुँचते ही सशस्त्र जागीरदारो ने चारो ओर से अकस्मात् हमला वोल दिया। नगी तलवारो, कुल्हाडो फरसो और लाठियो से इन सभी नेताओ पर वार किए गए। जोधपुर से जाने वाले सारे नेता लहू लुहान हो गए। किसी के सर फट गए, तो किसी का हाथ पैर और हड्डियाँ टूट गई। सारे नेता मरणासन्न स्थिति मे पहुँच गए।

किसानो के समूह पर गोलियाँ चलाई गई। श्री चुन्नीलाल शर्मा के पैर मे और सीने मे जागीरदार की 3 गोलियो लगी और वे वही धराशायी हो गए। गोलियो की मार से लाडनूं के रामाराव और रुघाराम के भी वही प्राणात हो गए। चुन्नीलाल शर्मा के साथ डावडा मे 5 किसान शहीद हो गए थे।

चुन्नीलाल शर्मा लाडनूं तहसील के नीवी जोधो गाँव के निवासी थे। नागौर जिले मे लोक परिषद् के वे प्रमुख कार्यकर्ता थे। 1942 के उत्तरदायी शासन आन्दोलन मे उन्होने भाग लिया था और लवे समय तक जोधपुर की सेण्ट्रल जेल मे सजा काटी थी।

उनका जन्म नीवी जोधो मे एक सामान्य ब्राह्मण परिवार मे हुआ था। उनके पिता का नाम प० उमारामजी और माता का नाम सुगना देवी था। चुन्नीलाल शर्मा एक प्रवुद्ध व्यक्ति थे। वे उच्च शिक्षा प्राप्त नही कर सके थे परन्तु उनका बौद्धिक विकास वहुत था। गाँव मे रह कर किसानो की दुर्दशा, सामती जुल्म और शोषण को उन्होने अपनी खुली आँखो से देखा था और इसिलिए उन्होने अपनी सारी शक्ति अपने क्षेत्र के किसानो को जागीरी जुल्मो के विरुद्ध सगठित करने मे लगा दी थी। वे लोक परिषद् के लाडनूं अधिवेशन मे सम्मिलित हुए थे और सामती ताकतो से लोहा लेने वाले वहादुर सिपाही की तरह आगे आए थे।

लाडनूं—डीडवाना क्षेत्र के जागीरदारो की आँख मे वे काँटे की तरह खटकते थे और इसीलिए लोक परिषद् के ऊपर बताए हुए आठ नेताओ पर कातिलाना हमला करने के साथ-साथ जागीरदारो ने चुन्नीलाल शर्मा को अपनी गोलियो का शिकार वनाया।

गाँव वालो ने नीबी जोवो मे एक ऊँचे चवूतरे पर अमर शहीद चुन्नीलाल शर्मा की मूर्ति स्थापित की है और हर 13 मार्च, को जनता अपनी श्रद्धाजलि उन्हे अर्पित करती है। डावडा मे भी एक शहीद स्मारक वनाया गया है। जहाँ प्रति 13 मार्च, को शहीदो की स्मृति मे मेला भरता है।

भरतपुर के अमर शहीद रमेश स्वामी



शहादत 5 फरवरी 1947

जन्म : सन् 1904

भरतपुर के प्रसिद्ध शहीद श्री रमेश स्वामी का जन्म सम्वत् 1861 मे भुसावर के एक साधारण परिवार मे हुआ था। आपका जन्म का नाम कुन्दन था। आपके पिता प० जुगलकिशोर पाँच भाई थे। वही सबसे बडे थे और महकमा सायर मे वटवाल थे।

प० जुगलकिशोरजी ने अपने प्रिय रमेश उर्फ कुन्दन की शिक्षा भुसावर मे ही सम्पन्न कराई थी। वही से रमेश स्वामी ने वर्नाक्यूलर मिडिल पास कर लिया और तत्पश्चात् सरकारी स्कूल मे अध्यापक हो गए थे। रमेश स्वामी के अध्यापक हो जाने के बाद उनके पिता प० जुगलकिशोरजी ने कस्वा वैर के एक ब्राह्मण परिवार की सुशील कन्या देखकर आपका विवाह भी कर दिया था।

रमेश स्वामी अपने विद्यार्थी जीवन से ही आर्य समाज मे जाया करते थे। अतएव उनकी रुचि वैदिक धर्म की ओर हो गई। इसी सदर्भ मे आप अध्यापन का कार्य छोड कर वैदिक धर्म का विस्तृत ज्ञान प्राप्त करने के लिए भरतपुर को भी छोड गए। और विभिन्न स्थानो के आर्य समाज मन्दिरो मे होने वाले सत्सगो का लाभ उठाते हुए लाहौर जा पहुँचे।

लाहौर मे रमेश स्वामी का साक्षात्कार प्रसिद्ध आर्य विद्वान श्री प० विश्वबन्धु शास्त्री से हुआ। वे उनकी विद्वता से बहुत प्रभावित हुए और उनके चरणो मे बैठकर वैदिक साहित्य का अध्ययन करने लगे।

श्री प० विश्वबन्धु शास्त्री भी अपने शिष्य रमेश स्वामी से बहुत प्रभावित हुए और उनकी योग्यता व लगन देखकर शास्त्रीजी ने सार्वदेशिक सभा से रमेश स्वामी को वैदिक व हिन्दी का प्रचार करने हेतु श्याम, जावा, मलाया आदि की तरफ भेजने की सिफारिश की अत सार्वदेशिक सभा की ओर से वह सन् 1935 मे पासपोर्ट की व्यवस्था

हो जाने पर विदेश भ्रमण के लिए चले गए और लगभग 1–1½ साल बिता कर भारत वापिस आए। भारत मे इधर-उधर घूमने के बाद सन् 1937 के अन्त मे अपनी जन्म भूमि कस्बा भुसावर पहुँचे। रमेश स्वामी को भुसावर मे रहते हुए कुछ महीने ही बीते होंगे कि उन्हें यह पता लगा कि आगरा प्रवासी ठा० देशराज, बाबा दूधा धारी, प० रेवतीशरण, प० हुक्मचन्द्र, मा० फकीरचन्द्र, गणेशीलाल ठेकेदार, जगन्नाथ कक्कड आदि ने मिलकर भरतपुर राज्य प्रजामण्डल का गठन कर लिया है।

यह ज्ञात होते ही रमेश स्वामी ने ठा० देशराज व किशनलाल जोशी मे सम्पर्क स्थापित किया और तत्पश्चात् ग्राम-ग्राम मे पैदल ही घूमकर प्रजा मण्डल का प्रचार करने मे लग गए इससे पूर्व उनका विचार था कि वे पुन विदेश भ्रमण को जायें। किन्तु जब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि भरतपुर राज्य प्रजा मण्डल भरतपुरी जनता को दुहरी दासता से छुडाने के लिए सत्याग्रह करने का सकल्प कर चुका है तब रमेश स्वामी ने पुन' विदेश भ्रमण का विचार त्याग कर जी जान से अपने को प्रजा मण्डल के साथ मिला दिया और भूख प्यास दु ख सुख की चिन्ता न करके गाँव-गाँव घूम कर प्रजा मण्डल का सन्देश पहुचाने मे लग गए।

मई, 1939 मे सत्याग्रह आरम्भ हो जाने के बाद रमेश स्वामी भी गिरफ्तार हो गए और उन्हे डेढ साल की सजा सुनायी गई। तत्पश्चात् सर्व श्री प० रेवतीशरण, युगलकिशोर चतुर्वेदी तथा राव गोपीलाल यादव और भरतपुर के अग्रेज दीवान सर रिचार्ड टाटन हम मे एक गुप्त समझौता हो जाने के बाद रमेश स्वामी को भी 24 दिसम्बर, 1939 को अन्य लोगो के साथ रिहा कर दिया गया।

सन् 1942 मे देश व्यापी गिरफ्तारियाँ होने पर भरतपुर मे अन्य दूसरे लोगो के साथ रमेश स्वामी को भी भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत गिरफ्तार करके पुरानी जेल मे नजर बन्द कर दिया गया। किन्तु उन्ही दिनो अगस्त, 1942 मे सेवर का बन्ध टूट जाने के बाद स्टेट कौन्सिल के मिनिस्टर कु० हीरासिह के प्रयास से अन्य लोगो के साथ रमेश स्वामी को भी रिहा कर दिया गया।

सन् 1947 मे लाल झण्डा किसान सभा, मुस्लिम कान्फ्रेन्स तथा प्रजा परिषद् द्वारा बेगार आन्दोलन आरम्भ कर दिये जाने पर रमेश स्वामी आन्दोलन को सफल बनाने मे जी जान से जुट गए। सब पार्टियो ने यह निश्चय किया था कि 5 फरवरी को समस्त राज्य मे बेगार विरोधी दिवस मनाया जाय। अत इसी सदर्भ मे रमेश स्वामी के प्रयास से कस्बा भुसावर मे पूर्ण हडताल रही और आस-पास के ग्रामो से बेगार विरोधी दिवस मनाने के लिए ग्रामीण जनता कस्बा भुसावर मे इकट्ठी होने लगी।

इतना कार्य सम्पन्न कराने के बाद रमेश स्वामी अपने घर पहुचे और स्नान आदि से निवृत्त होकर भोजन करने बैठ गए। इसी समय कुछ साथियो ने यह सूचना दी कि कस्बा वैर मे पुलिस वहा की जनता को बुरी तरह आतकित कर रही है। कुछ स्वय सेवक हडताल करने का सन्देश सुनाते हुए गिरफ्तार भी कर लिए गए है।

यह सूचना मिलते ही रमेश स्वामी आधा पेट भोजन करके ही उठ गए और अपने कुछ साथियो को साथ लेकर वस स्टैन्ड पहुँच गए और वैर जाने वाली वस मे वैठ गए। किन्तु भुसावर थाने के सब इन्सपेक्टर सुरेन्द्रपालसिह के कहने से वस के मालिक भगवानसिह ने उनको उतार दिया और कह दिया कि वस मे जगह नही है।

वस मालिक भगवानसिह पहले से ही प्रतिक्रियावादी तत्वो मे शामिल था और पुलिस के सब इन्सपेक्टर सुरेन्द्रपालसिह की हिमायत मे था। इसलिए वह रमेश स्वामी और उनके साथियो से वदतमीजी से पेश आया। और रमेश स्वामी द्वारा वस मे पुन चढने का प्रयत्न करने पर हाथ पकड कर खींच लिया।

यह स्थिति देखकर रमेश स्वामी ने कहा कि वस जनता को सेवा के लिए है और वस मे काफी जगह खाली पडी हुई है। इस पर भी अगर आप मुझे वस मे नही वैठने दोगे तो मैं अपने साथियो के साथ वस के सामने लेट कर सत्याग्रह करूँगा। उस हालत मे वस हमारे ऊपर होकर ही जा सकेगी। वैसे नही जाने दी जायेगी। यह कहते हुए रमेश स्वामी और उनके साथी सीताराम, यादराम आदि वस के सामने लेट गए। जिस समय रमेश स्वामी और वस मालिक भगवानसिह मे यह वाद विवाद हो रहा था, पुलिस सव इन्सपेक्टर सुरेन्द्रपालसिह सामने ही था। उसके अलावा जन सेवी माने जाने वाले केशरीसिह पान्डे भी पास ही थे। रमेश स्वामी व सीताराम आदि को वस के सामने लेटता देख कर सव इन्सपेक्टर सुरेन्द्रपालसिह ने भगवानसिह को सम्वोधित करते हुए कहा—कि यह नही मानते हैं तो वस को इनके ऊपर होकर निकाल ले जाओ न मालूम ऐसे रोजाना कितने कुत्ते मरते हैं।

सव इन्सपेक्टर सुरेन्द्रपालसिह यह सकेत सुन कर वस मालिक भगवानसिह ने वस ड्राईवर चन्दनसिह को आदेश दिया कि गाडी को आगे वढा दो। वस ड्राईवर ने गाडी वढाने से इन्कार कर दिया और वस से नीचे उतर आया। यह देखकर वस मालिक भगवानसिह चक्के पर जा वैठा और मोटर स्टार्ट कर दी। सुरेन्द्रपालसिह ने उसे पुन शह दी अत भगवानसिह ने गति वढाने को क्लच दबा कर स्पीड वढा दी। वस कुछ पीछे हटी और एकदम आगे वढी वस का एक पहिया रमेश स्वामी की पीठ पर होकर गुजरा और पिछला पहिया कनपटी पर होकर गुजर गया। उनकी आँखे और जीभ वाहर निकल पडी जन-समूह के मुँह से एकदम हाहाकार निकली। सव देखने को दौड़ पडे लेकिन रमेश स्वामी निर्भीकता व साहस के साथ अपने कर्तव्य का पालन करते हुए उपस्थित जन समूह को रोता विलखता छोडकर ससार से विदा हो चुके थे। वे 1942 मे नजर वन्द हुए और 1945 मे भी जेल गए थे।

शहादत के समय रमेश स्वामी की आयु 42 वर्ष की थी। वह अपने पीछे अपनी विधवा पत्नी पीतम कौर, 8 वर्षीय पुत्र चन्द्रप्रकाश व पाच वर्षीय पुत्री गायत्री व 2 वर्षीय पुत्री सावित्री छोड गये थे।

रार्यासह नगर का अमर शहीद बीरबर्लासह

शहादत : 1 जुलाई, 1946



अमर शहीद श्री वीरवर्लासह गगानगर जिले के रामसिंह नगर के निवासी थे। उनका जन्म अनुसूचित जाति के जीनगर समाज मे हुआ था। रार्यासह नगर मे रूई की आडत का उनका व्यवसाय था। शरीर से वे हृष्ट पुष्ट और पहलवानो जैसे थे। उनके विचार राष्ट्रीय थे। वे बीकानेर प्रजा परिषद् के सदस्य थे और सामती अत्याचारो का विरोध करने मे तथा नागरिक अधिकारो की प्राप्ति के हर आन्दोलन मे आगे रहते थे। श्री वीरवर्लासह की शिक्षा सामान्य ही थी लेकिन देश मे होने वाली उथल-पुथल राजनैतिक जागरण से वे पूरी तरह परिचित थे। उनका यह विश्वास था कि जनता के सगठन से ही राज्य की दमनकारी और शोषण करने वाली शक्तियो का मुकाबिला किया जा सकता है। वे अपनी चारित्रिक दृढता और अपनी लगनशील कर्मण्यता से प्रजा परिषद् के एक कर्मठ कार्यकर्त्ता बन गए थे। जुलाई को तिरगा झडा थामे हुए वे फौज के जवानो की गोली के शिकार बन कर शहीद हुए।

30 जून, और 1 जुलाई 1946 को रार्यासहनगर मे बीकानेर प्रजा परिषद् का प्रथम राजनैतिक सम्मेलन आयोजित किया गया था। बीकानेर षडयन्त्र केस के प्रमुख सेनानी श्री सत्यनारायण सर्राफ इस अधिवेशन के अध्यक्ष थे। गगानगर तथा अन्य मडियो से सैकडो–हजारो लोग हाथो मे तिरगा झडा लेकर रार्यासहनगर के सम्मेलन मे पहुँच रहे थे। जनता मे जोश का दरिया उमड पड़ा था। हर व्यक्ति के हाथ मे चारो ओर तिरगो झडे ही तिरगे झडे लहरा रहे थे। सम्मेलन मे भाग लेने के लिए लोक सेवक मडल के उपप्रधान श्री अचितराय, पजाब प्रातीय कांग्रेस की कार्य समिति के सदस्य श्री रामदयाल वैद्य और पजाबी रियासतो के उत्साही कार्यकर्ता श्री फकीरचन्द, रामसिंह नगर पहुँच चुके थे।

गाँव-गाँव से जब तिरगे झडे लिए जनता सम्मेलन मे भाग लेने आ रही थी तब रास्ते मे पुलिस ने लोगो से तिरगा झडा छीनने की दो बार कोशिश की लेकिन जनता के

उमडते हुए जोश के आगे पुलिस को मुँह की खानी पडी । उमडते हुए उत्साह मे जनता ने सम्मेलन के पडाल मे पहुँचकर पडाल मे झडा फहरा दिया ।

राज्य की ओर से प्रजा परिषद् का अधिवेशन करने पर कोई प्रतिवन्ध नही था । परन्तु सम्मेलन के पडाल मे तिरगा झडा फहराने पर प्रतिवध था। प्रजा परिषद् के कार्यकर्ता राज्य से उस समय कोई सघर्ष मोल नही लेना चाहते थे। अत. 30 जून को विना जुलूस निकाले और झडाभिवादन किए सम्मेलन का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया था। 30 जून की शाम को वीकानेर राज्य के गृहमत्री का आदेश मिला कि विना तिरगा झडा लिए जुलूस निकाला जा सकता है। सम्मेलन मे आए हुए लोग तिरगे झडे पर लगे हुए इस प्रतिवध से वौखला उठे और उन्होने निश्चय किया कि प्रात काल तिरगे झडे के साथ जुलूस निकाला जाए ।

प्रात काल रायसिह नगर के वाजारो मे प्रजा परिषद् का जुलूस निकाला गया । सैकडो लोगो ने अपने हाथो मे तिरगे झडे थाम रखे थे। जुलूस था कि मानो जनगगा राष्ट्रीय जोश मे उमडी चली जा रही थी। लौटते समय कुछ नौजवानो ने तिरगे झडे जुलूस मे फहरा ही दिए। पुलिस के 50 सिपाहियो ने कार्यकर्ताओ से झण्डे छीनने की चेष्टा की परन्तु जनता के भारी जोश के सामने वे सफल नही हुए ।

प्रात जुलूस के वाद अधिवेशन की कार्यवाही प्रारम्भ हो गई थी। इसी समय रायसिहनगर स्टेशन पर हाथो मे तिरगा झडा लेकर गाडी से उतर कर आने वाले कई व्यक्तियो को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया और इन्हे रायसिह नगर के रेस्ट हाऊस मे पकड कर ले गई। सम्मेलन मे यह समाचार पहुँचते ही खलबली मच गई और लोग अधिवेशन से उठ कर रेस्ट हाऊस की तरफ रवाना हो गए। रास्ते मे पुलिस ने भीड पर लाठी चार्ज किया और जिनके हाथो मे तिरगा झण्डा था उन्हें बुरी तरह मारा और जमीन पर पटक कर उनकी छाती पर चढ कर उन्हें पाँवो के नीचे रौंदा। बेहोश और घायल युवको को घसीटते हुए पुलिस रेस्ट हाऊस की ओर ले गई। पुलिस के घातक अवरोध के वावजूद भी जनता अपने साथियो और कार्यकर्ताओ को छुडाने के लिए रेस्ट हाऊस की ओर नारे लगाती हुई वढने लगी।

रेस्ट हाऊस मे वैठे हुए सरकारी अधिकारी जनता के उमडते हुए जोश और रेस्ट हाउस की ओर वढती हुई जनता के वेग को देख कर घवरा गए। नौजवान बीरबलसिह अपनी मूच्छो पर ताव दिए हुए जुलूस का नेतृत्व कर रहे थे और हाथो मे तिरगा थामे हुए रेस्ट हाऊस की ओर वढ रहे थे। सरकारी अधिकारियो ने घवराकर पास के फौजी कैम्प से छः सशस्त्र सैनिक रेस्ट हाऊस मे वुला लिए और उन्होने विना चेतावनी दिए हुए अधाधु ध गोलिया चलाना शुरू कर दिया। वीरवलसिह गोलियो की परवाह किए विना भारत माता की जय और इन्कलाब जिदावाद के नारे लगाते हुए रेस्ट हाउस की ओर वढते गए। दृश्य देखने जैसा था। एक ओर आजादी के निहत्थे वीर थे। दूसरी ओर सैनिक इन वीरो को गोलियो से छलनी वनाने के लिए मोर्चा वन्दी करने लगे। गोलिया छूटी और वन्दूके धु आ

उगलने लगी। एक सिक्ख नौजवान और दो 13-14 वर्ष के बालक घायल होकर धराशायी हो गये। 5-6 व्यक्ति एक-एक कर गोलियो की मार से गिरते गए। तीन गोलिया बीरबलसिंह की जाघ मे लगी। फिर भी वह वीर रुका नही, आगे बढता रहा। उनके कण्ठो से वन्दे मातरम्, झण्डा ऊँचा रहे हमारा और कांग्रेस जिन्दावाद के जयघोष गूँज रहे थे। बीरबलसिंह के गिरते ही लोगो ने उनके रक्त स्नात शरीर को कधो पर उठाया और पडाल मे जा पहुँचे। जनता और उपस्थित मानव मेदिनी इस वीर पुरुष के रक्त स्नात शरीर को देखने के लिए व्याकुल हो उठी। पण्डाल मे जयघोष गूज रहा था। "बीरबलसिंह जिन्दाबाद, बीरबलसिंह अमर हो।"

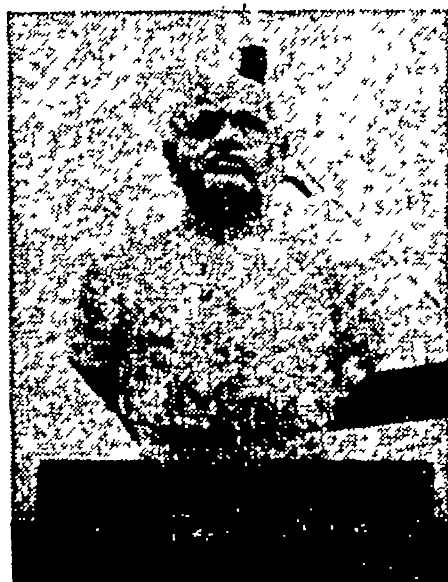
रक्त स्नात देह को पडाल मे एक चारपाई लाकर लिटा दिया गया। कुछ लोगो ने उन्हे अस्पताल भेजने की व्यवस्था करनी चाही पर, पुलिस और सेना ने पडाल को चारो और से घेर रखा था। पडाल पर बीरबललिह को 4 घटे तक लिटाए रखा गया। चारपाई के नीचे एक तसला रख दिया गया और उसमें इस नरपुगव का रक्त टपक टपक कर झरने लगा। धीरे धीरे बीरबलसिंह की देह शिथिल होने लगी। चेहरे पर सफेदी उभरने लगी परतु मुख मडल पर अभी भी तेजस्वी आभा थी। रह रह कर कठ से बोल फूटते—झडा ऊँचा रहे हमारा।

चार घटे तक पुलिस व सेना पण्डाल को घेरे रही। मच पर नारे लग रहे थे। बीरबलसिंह जिन्दाबाद। जिन्दाबाद। पुलिस और सेना के घेरे मे तनिक सी ढील होते ही कार्यकर्ता गण घेरा तोड कर बीरबलसिंह की चारपाई कन्धे पर उठा कर अस्पताल की ओर लपके। डाक्टर ने जब देखा तो आश्चर्यचकित रह गया। बीरबलसिंह के बदन मे रक्त शेष नही रहा था। दृढ निश्चयी इस नरपुगव ने अपनी मुठ्ठी मे अभी भी तिरगा झंडा पकड रखा था। शिथिल परन्तु दृढ निश्चयी शब्दो मे बीरबलसिंह ने अतिम वार कहा कि इस झण्डे की लाज अब मैं तुम्हें सौंपे जा रहा हूँ। इतना कह कर बीरबलसिंह ने सदा के लिए आखे मूद ली।

1 जुलाई, 46 को श्री बीरबलसिंह के शव का जुलूस निकाला गया। आजाद हिन्द फौज के कर्नल अमरसिंह तिरगा झडा लिए हुए जुलूस के आगे आगे चल रहे थे। रायसिंह नगर के प्रतिष्ठित नागरिक और सम्मेलन मे गाँव गाँव से आए हुए लोग शव यात्रा मे साथ थे। हजारो लोगो ने अमर शहीद बीरबलसिंह की अर्थी पर फूल चढाए। सभी जाति के प्रमुख लोगो ने अर्थी को कधा दिया। धनीमानी लोगो ने अर्थी पर पैसो की न्यौछावर की। कहा जाता है कि ऐसा जुलूस रायसिंह नगर तो क्या कभी बीकानेर मे भी नही निकला। शव यात्रा का दृश्य अपूर्व था। दाह सस्कार हुआ। शहीद का नश्वर शरीर तो पंचभूतो मे मिल गया परन्तु उसकी यशकाया सदैव के लिए अमर हो गई।

रायसिंह के रेस्ट हाउस के पास जहाँ अमर शहीद बीरबलसिंह के गोली लगी थी उसी पावन स्थल पर जनता ने उनकी सगमरमर की मूर्ति स्थापित की है गहा प्रतिवर्ष 30 जून और 1 जुलाई को शहीद मेला भरता है और दूर दूर के लोग अमर शहीद को अपनी श्रद्धाजली भेंट करने आते हैं।

डूंगरपुर के अमर शहीद नानाभाई खांट और कालीबाई



शहादत का दिन : 19 जून, 1947

यह घटना 19 जून, 1947 की है जबकि डूंगरपुर राज्य के रास्तापाल गाँव मे एक साथ भील नेता नानाभाई खाट और भील बालिका कालीबाई शहीद हुए ।

नानाभाई खाट श्री भोगीलाल पड्या के नेतृत्व मे कार्य करने वाले एक सत्यनिष्ठ भील नेता थे और राजस्थान सेवा सघ द्वारा गाव-गाँव मे शिक्षा का प्रचार प्रसार करने और पाठशालाए खुलवाने तथा भील बालको को पढने-पढाने की ओर प्रेरित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे थे । उनका कोई कार्य न राजद्रोहात्मक था और न राज्य विरोधी ।

परन्तु डूंगरपुर के महारावल लक्ष्मणसिंह नही चाहते थे कि राज्य मे शिक्षा का प्रसार हो । उनका मानना था कि भील या अन्य किसान जनता यदि शिक्षित हो गई तो नागरिक अधिकारो की माँग करेगी और किसी भी समय उनकी राजसत्ता को उखाड फैंकेगी । राज्य सरकार ने पच्चीस वर्षो से चलने वाले वागड सार्वजनिक छात्रावास से सब भील और पटेल छात्रो को निकाल दिया । ये छात्र कही सेवा सघ द्वारा राज्य के बाहर पढने के लिए नही भेज दिए जाए इसके लिए पुलिस को सूचित कर दिया । सेवा सघ की पाठशालाए और छात्रावास बन्द करने के लिए राज्य द्वारा भयकर दमन किया गया । और भील जनता को भयभीत ।

राज्य की धमकियो का जब भीलो पर विशेष असर नही हुआ तब राज्याधिकारियो ने मिलकर सेवा सघ की स्कूलो पर धावा बोलना शुरू कर दिया । उन्होने एक तरह मे यह अभियान बना लिया था कि स्कूल मे पढने वाले छात्रो और पढाने वाले अध्यापको को पीटा जाय और उनकी हिमायत करने वालो के साथ भी यही व्यवहार करने का निर्णय लिया ।

इस दमन से जब राज्य सरकार की वदनामी होने लगी तो राज्य ने खानगी पाठशाला सचालन नियम और कवायद छात्रावास सन् 1943 जैसे प्रतिगामी एव शिक्षा प्रचार पर कुठाराघात करने वाले कानूनो का निर्माण कर डूंगरपुर के इतिहास मे एक अरुचिकर अध्याय और जोडा जिससे दिवस रात्रि और प्रौढशालाओ की स्वीकृति मिलनी बन्द हो गई और बागड सार्वजनिक छात्रावास पर राज्य सरकार ने कब्जा कर लिया। जिन भील छात्रो को हाईस्कूल और छात्रावास से निकाल दिया उनमे से पचास होनहार छात्रों को विद्या भवन उदयपुर की बुनियादी पाठशाला, हरिजन उद्योगशाला किंग्स वे दिल्ली, वनवासी सेवा सघ और खादी विकास मण्डल, गोविन्दगढ मे भर्ती करवाया गया।

सेवा सघ की चालू पाठशालाओं को वद करवाने के लिए महारावल साहब और उनके हजुरात के लोगो ने साम, दाम, भय, भेद द्वारा बन्द करवाने के प्रयत्न किए किन्तु सफलता नही मिलने पर जो कार्यवाही हुई इनमे से दो पाठशालाए पूनावाडा और रास्तापाल बन्द करवाने के लिए जो षडयन्त्र किये उनका यह दर्द भरा हाल है।

30 मई, 1947 को पूनावाडा की पाठशाला को बन्द कराने के लिए पाठशाला के अध्यापक श्री शिवराम पर हमला किया गया और उसे डूंगरपुर के जगल मे छिपा दिया गया। पाठशाला के मकान मालिक की स्त्रियो पर घृणित अत्याचार किए गए। घर के लोगो को अमानुषिक ढग से पीटा गया। अध्यापक शिवराम को ढूंढने के लिए निकलने पर श्री भोगीलाल पड्या, गौरीशकर उपाध्याय, शिवलाल कोटडिया, मनसुखराम भूरजी और अन्य 40 व्यक्तियो को गिरफ्तार कर लिया तथा उन सब पर भयकर त्रासदायी अत्याचार किए गए और उन्हें तरह-तरह की शारीरिक यातनाए दी गई। श्री भोगीलाल पड्या और उनके 43 साथियो को धम्बोला थाने मे गिरफ्तार रखा गया। उनके तथा गोरीशकर उपाध्याय के घरो मे आग लगाई गई।

इसी अभियान मे डूंगरपुर के मजिस्ट्रेट और सुपरिन्टेंडेंट पुलिस एव फौजी सैनिको के साथ रास्तापाल की पाठशाला वद करवाने के लिए 19 जून, 47 को रास्तापाल पहुँचे। उनकी जीप की आवाज सुनते ही चारो ओर से भीड इकट्ठी हो गई। रास्तापाल मे सेवा सघ की यह स्कूल नानाभाई खाट के मकान मे चलती थी। मजिस्ट्रेट, पुलिस के एस० पी० और सिपाही स्कूल मे घुस गए। स्कूल मे उस समय छात्र पढने नही आए थे। नानाभाई खाट स्कूल के अध्यापक सेगाभाई से बातचीत कर रहे थे।

कमरे मे प्रवेश करते ही मजिस्ट्रेट ने नानाभाई को आज्ञा दी कि वह इसी समय स्कुल बन्द करदे और चावी उन्हे सौप दें। नानाभाई खाट ने उत्तर दिया कि भोगीलाल पड्या के आदेश से ही स्कूल वन्द किया जा सकता है। मजिस्ट्रेट ने कहा कि मै महारावल साहव का हुकम लाया हूँ। नानाभाई खाट ने महारावल के उस आदेश का पालन करने से इन्कार कर दिया। मजिस्ट्रेट के आदेश से पुलिस के एस० पी० और फौजी सिपाहियो ने दोनो को स्कूल के कमरे मे ही मारना शुरू कर दिया। लाठी, घूंसो, थप्पडो, डडो और बन्दूक के कुदो से दोनो की बुरी तरह पिटाई की गई। उन्हे बार-बार पूछा गया कि क्या

वे स्कूल वद करने को तैयार है ? उत्तर मे ना करने पर उन्हे वंदूक के कुदो से बुरी तरह घायल कर दिया गया । दोनो को वे अपने कैंप पर ले जाने लगे ।

इनके साथ के एक व्यक्ति के हाथ से वदूक का कुदा नानाभाई खाट के किसी मर्मस्थल पर लगा । वे मार्ग मे एक खेत मे गिर गए और उनका वही प्राणान्त हो गया । सामती अत्याचारो से जूझते हुए नानाभाई खाट ने इस तरह से अपने आपको बलिवेदी पर चढा दिया । उनका मृत शरीर वही खेत मे पडा रहा और अधिकारी सेंगा भाई को लेकर आगे आ गए ।

रास्तापाल के स्कूल के शिक्षक सेगाभाई वेहोश होने की स्थिति मे आ गए थे । तव उनके कमरे मे रस्सा बाँधकर वह रस्सा ट्रक गाडी के पीछे बाँध दिया गया । अधिकारी गाडी मे बैठ गए और गाडी चलादी । लोगो की एकत्रित भीड मे से उन्हे आतकित करने के लिए गाडी उनके बीच मे चलाई गई । गाडी धीमे-धीमे चल रही थी । किसी का साहस नहीं हुआ कि कोई आगे आकर उसका प्रतिरोध करे ।

कि इतने मे एक विजली सी कौंध उठी, बारह वर्ष की नन्ही सी बालिका जो घास काट कर आई थी भीड को चीरती हुई जीप के पीछे दौड पडी । उसके हाथ मे घास काटने की दात्तली थी । उसने चिल्लाकर कहा कि मेरे मास्टर को क्यो घसीट रहे हो ? मेरे मास्टर को क्यो मार रहे हो ? मेरे मास्टर को कहाँ ले जा रहे हो ? काली बाई ट्रक के पीछे दौडती चली गई । वह अपने शिक्षक सेगाभाई को मुक्त कराना चाहती थी, लोगो ने उसके साहस को देखकर उसका जय-जयकार किया । गाडी रुकी और अधिकारी भी कालीवाई के साहस को देखकर स्तभित हो गए । उन्होने उसके सामने बन्दूके तानकर कहा कि लडकी हट जाओ नही तो गोलियो से भुन दी जाओगी । कालीवाई ने जैसे कुछ सुना ही नही । उसने ट्रक को रुकते हुए देखकर अपनी दात्तली की तेज धार से सेंगाभाई के कमर से बंधी हुई जीप वाली रस्सी काट दी । उसने चिल्लाकर कहा कि पानी लाओ, कोई पानी लाओ ! सेंगाभाई के लिए उसका इतना कहना ही था कि दन-दन करती हुई फौजी सैनिको की गोलियाँ कालीवाई के शरीर मे लगी और खून से लथपथ वह वीरबाला धराशायी हो गई ।

कालीवाई के गिरते ही भीलो ने मारु ढोल बजा दिए । यह खतरे का भयकर वाद्य अरावली की पहाडियो मे गूंज उठा । डूंगरपुर राज्याधिकारी भीलो के इस सकेत को समझते थे । वे जीप और ट्रक मे सवार होकर अपने प्राण लेकर भागे और गुजरात की सीमा मे प्रविष्ठ होकर चैन की सास ली ।

मारू ढोल की आवाज को सुनते ही हथियारो से लैस होकर हजारो भील एकत्रित हो गए । नानाभाई खाट की लाश और कालीवाई के रक्तस्तान जख्मी शरीर को खाटो पर उठाकर भीलो का काफिला 30 मील की यात्रा करते हुए डूंगरपुर की ओर चल पडा । गाँव-गाँव से हजारो लोग जुलूस के साथ हो गए नानाभाई खाट की यह शव यात्रा रास्तापाल से डूंगरपुर और डूंगरपुर कस्वे मे उसी शान के साथ हुई ।

अमर शहीद



कालीबाई

कालीबाई का घायल शरीर अस्पताल ले जाया गया। वह घायल होने के बाद बराबर 40 घंटे तक बेहोश रही और उसी बेहोशी की अवस्था मे उसके प्राण पखेरु उड गए तथा इनके साथ लाई गई बन्दूक की गोलियो और छर्रों से घायल भील महिलाए श्रीमती नवलाबाई, मोगीबाई, होमलीबाई, लालीबाई और नानी बाई आदि को अस्पताल मे भरती करवाया गया।

मौत के मुंह मे गए हुए सेंगाभाई तो बच गए। आज वे भीलो के एक तेजस्वी और कर्मठ नेता है। नानाभाई खाट और कालीबाई के शव का डूंगरपुर मे हजारो अश्रु पूरित नेत्रो ने विदाई दी।

डूंगरपुर शहर मे नानाभाई खाट तथा कालीबाई के नाम के पार्क बनाए गए हैं जहां उनकी मूर्तियाँ लगाई गई हैं।

बरड (बून्दी) के अमर शहीद श्री नानक भील

विजोलियाँ के किसान आन्दोलय की सफलता के साथ साथ बेगूं और बून्दी मे भी किसानो मे जागृति आ गई थी और वे भी अपने अधिकारो की रक्षा के लिए सामंती ताकतो से डट कर लोहा लेने के लिए उठ खडे हुए थे ।

बून्दी के किसान आन्दोलन की विशेषता यह थी कि किसान स्त्रियो ने भी मर्दों का साथ देकर बेगार, लागवाग और लगान की ज्यादती का विरोध किया था । रिश्वत बून्दी का सबसे बडा अभिशाप था । ऊपर से नीचे तक प्रायः सभी राजकर्मचारी जनता को खुले हाथो लूटते थे ।

विजोलियाँ की सीमा से लगे हुए बून्दी के बरड क्षेत्र के किसानो ने इन सबकी खुली मुखालफत की थी । जगह जगह सम्मेलन आयोजित किए जाने लगे और किसान स्त्री और पुरुष सत्याग्रह के लिए आगे आते ।

इन सम्मेलनो की असफल करने किसान आन्दोलन को दबाने और लोगो मे आतंक पैदा करने के लिए बून्दी की सेना ने किसानो और उनकी स्त्रियो पर हमले कर दिए थे । राज्य की घुडसवार सेना ने सत्याग्रही स्त्रियो पर घोडे दौडाकर और भाले चलाकर पाशविक हमले किए थे । सेना ने जगह जगह गोलियाँ भी चलाई थी । कई घायल हो गए थे किसी की आँख पर चोट आई थी, किसी का हाथ तोड दिया गया था तो किसी का सिर फोड दिया गया था ।

इन सारी स्थितियो का विरोध करने के लिए डाबी नामक ग्राम मे किसान सम्मेलन किया गया था । हाडोती के जननायक पंडित नयनूराम शर्मा सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे थे । आस पास के इलाके के हजारो किसान स्त्री पुरुष और बच्चे बूढे सम्मेलन मे भाग लेने के लिए एकत्रित हुए थे ।

सम्मेलन के पंडाल के बाहर की ओर पुलिस के एस० पी० इकराम हुसैन सिपाहियों की लंबी कतार लिए खड़े थे ।पुलिस ने पंडाल को चारो ओर से घेर लिया था ।

सम्मेलन की कार्यवाही शुरू हुई और सबसे पहले नानक भील नाम का एक युवक झडा-गीत गाने के लिए मच पर आया। नानक भील एक निर्भीक, साहसी और सत्यनिष्ठ किसान कार्यकर्त्ता था। उसकी वाणी मे ओज था। वह हाडोती के गाँव गाँव मे घूमकर किसान आन्दोलन को सगठित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य करता था। हाडोती के जननायक प० नयनूराम शर्मा का वह अत्यन्त विश्वासपात्र कार्यकर्त्ता था। उसको लोक गीत गाने का बहुत अच्छा अभ्यास था। किसानो के जागरण के लिए रचे गए लोक गीतो को गा गाकर उसने हाडोती मे एक नई चेतना जगादी थी। नानक भील हाडोती के किसानो मे अत्यन्त लोकप्रिय थे।

श्री नानक भील ने झडा गीत प्रारभ किया। उनके मुँह से निकला था कि—

'प्राण मित्रो भले ही गवाना
पर न झडा यह नीचे झुकाना'

कि पीछे से पुलिस ने बदूको से फाईरिंग शुरू कर दिया। श्री नानक भील के पीठ मे गोली लगी। उसके पीठ मे तीन गोलियाँ लगी। वे एकदम जमीन पर गिर गए। खून से लथपथ नानक भील साहस करके एक बार पुन. खडे हुए और उपस्थित जनसमूह को अतिम बार हाथ जोडकर वन्देमातरम् के उच्चारण के साथ सदा के लिए सो गए।

श्री नानक भील के सम्बन्ध मे हाडोती के गीतकारो ने अनेको लोक गीतो की रचनाए की। वे गीत आज भी लोगो के कण्ठो मे ध्वनित होते रहते हैं। एक गीत की कुछ पक्तियां यहाँ दी जा रही है।

लेता जाज्योजी नानकजी भील अर्जी पचो की
लेता जाज्यो जी।

दीजो म्होकी अर्जी जाकर परम पिता के हाथ,
बून्दी की दुखिया परजा की कीज्यो सारी बात। लेता जाज्योजी ।।
लेता जाज्योजी नानकजी भील अर्जी पचो की।

कह दीजो के ज्यांतक म्होकी होगी नई सुणवाई,
मरवा खातरा उबा छाँ सब बालक, लोग लुगाई,
लेता जाज्योजी नानकजी भील अर्जी पचो की।

तन ढकवा सारु न छीतरा, नान्याँ डोले नागी,
फिर भी पापी थाँ के ऊपर गोल्यो भर भर दागी
लेता जाज्यो जी नानकजी भील अर्जी पचो की
लेता जाज्योजी ।।

उदयपुर के शहीद छात्र शान्ति और आनन्दी

शहादत · 5 अप्रैल, 1948

5 अप्रैल, 1948 को दिल्ली दरवाजे के बाहर उदयपुर के दो छात्र शाति और आनदी पुलिस की गोलियो से भून दिए गए। उदयपुर मे दिल्ली दरवाजे के बाहर एक छोटे से पार्क मे शान्ति और आनदी की सगमरमर की दो मूर्त्तिया लगी हुई है और 5 अप्रैल के दिन प्रतिवर्ष उदयपुर की जनता इन शहीदो को अपनी श्रद्धाजलि भेट करने के लिए उस स्थान पर एकत्रित होती है।

यह सही है कि शान्ति व आनदी पुलिस की गोलियो से धराशायी हो गए थे और गोली लगते ही सध्या के समय उदयपुर के बाजार मे घटाघर के नीचे ही दोनो का प्राणान्त हो गया था लेकिन यह भी सही है कि प्रजा मडल द्वारा चलाए गए उत्तरदायी शासन के आन्दोलन से इन दोनो विद्यार्थियो का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कोई सम्बन्ध नही था। ये दोनो विद्यार्थी अपने स्कूल से घर जा रहे थे। रास्ते मे जुलूस को चीर कर जल्दी से आगे निकल जाना चाहते थे। किसी को पता नही था कि पुलिस फायरिंग शुरू कर देगी। शान्ति और आनदी जुलूस की नारे लगाती हुई भीड को पार करके जुलूस के आगे आ गए थे। उनका आगे आना था कि पुलिस ने फायरिंग शुरू कर दी और पुलिस की गोलियो के सबसे पहले शिकार अकस्मात् विद्यार्थी शान्ति और आनदी हो गए। यो इस गोलीकांड मे श्री परसराम त्रिवेदी के पाव मे भी गोली आर-पार निकल गई थी और श्री गुलाबसिंह सक्तावत का पाँव भी इसी गोली काड मे बेकार हो गया था।

5 अप्रैल, 1948 के इस गोलीकाड मे इन दोनो छात्रो के शव को लेकर जुलूस निकाला गया। शव यात्रा के जुलूस मे उदयपुर की जनता उमड पडी थी। हजारो की तादाद मे स्त्री-पुरुष जुलूस के साथ थे। उदयपुर के महाराणा का सिंहासन इन हत्याओ से डोल गया था। श्री शान्ति और आनदी को उदयपुर की जनता ने मरने के बाद शहीदो जैसा सम्मान दिया।

इन दोनो छात्रो की शहादत का धर्म-भीरु महाराणा पर गहरा प्रभाव पडा। प्रजा मडल के आन्दोलन के प्रति जनता का विश्वास हजार गुना अधिक बढ गया। उदयपुर का सामान्य नागरिक महाराणा और उसकी सरकार को गली-गली मे कोसने लगा। महाराणा जनता की इस रोषपूर्ण प्रतिक्रिया से पूर्णतया परिचित थे। कहते हैं कि इससे प्रभावित होकर 13 दिन बाद 18 अप्रेल, 48 को महाराणा भोपालसिंह ने सयुक्त राजस्थान मे उदयपुर का विलय स्वीकार कर लिया था।

इस प्रकार सयुक्त राजस्थान के निर्माण और उसमे उदयपुर के विलय के साथ छात्र शान्ति और आनदी का नाम स्वत ही जुड गया है।



बेगू के अमर शहीद रुपाजी धाकड़ और किरपाजी धाकड़

शहादत का दिन जून 1920

रूपाजी धाकड और किरपाजी धाकड मेवाड की बेगू तहसील के गोविन्दपुरा गाँव मे सन् 1920 के जून महीने मे शहीद हो गए थे।

बिजोलिया के किसान सत्याग्रह की सफलता के साथ-साथ आसपास के इलाको मे किसान सगठित होने लग गए थे। बिजोलिया के पास बेगू नाम का एक बडा ठिकाना है। दूसरे ठिकानों की तरह इस ठिकाने मे भी बेगार और अनुचित लागतें प्रचलित थी। यहाँ किसान जगल से घास और लकडी लाने और मवेशी चराने तक से रोके गए थे। किसान जागीरदारो के इन अत्याचारो से त्राण पाना चाहते थे। उन्होने ठिकाने से इस सम्बन्ध मे बहुत प्रार्थना की परन्तु ठिकाने ने उनकी एक भी माँग मानने से इन्कार कर दिया। बदले मे ठिकाना दमन पर उतर गया। रावडदा के ठाकुर ने एक धाकड को वृक्ष से बाँधकर लटका दिया था। मडावरी मे शान्ति से बैठे लोगो पर गोलियें चलादी थी।

मेवाड सरकार ने मिस्टर ट्रैंच को वेगू के किसानो के मामले पर विचार करने के लिए नियुक्त किया था। मिस्टर ट्रैंच मेवाड के रेवेन्यु कमिश्नर थे। जव मिस्टर ट्रैंच वेगू आए थे तो मेवाड की फौजी टुकडी भी उनके साथ आई थी। फौज का डेरा चेची ग्राम मे था।

ट्रैंच से मिलने के लिए 500 किसान गाँव गोविन्दपुरा मे इकट्ठे हुए थे। रूपाजी धाकड और किरपाजी धाकड उन किसानो का नेतृत्व कर रहे थे। लोग ट्रैंच से मिल ही नही सके। ट्रैंच के आदेश से गाँव को जलाने के लिए 4 पीपे घासलेट के तेल के लेकर फौज ने गोविन्दपुरा पर चढाई कर दी। सारा गाँव घेर लिया गया ट्रैंच फौज के आगे-आगे चल रहा था। फौज की इस चढाई के समाचार सुनकर रूपाजी धाकड और किरपाजी धाकड स्थिति को समझने के लिए घरो से बाहर आए। बाहर आते ही फौज ने उन पर गोलिये चलानी शुरू करदी। दोनो का शरीर वही छलनी हो कर धराशायी हो गया। दोनो किसान नेता वही शहीद हो गए।

रूपाजी और किरपाजी दोनो जाति से धाकड थे। रूपाजी वेगू तहसील के गाँव जवनगर के निवासी थे और किरपाजी वेगू तहसील के गाँव अमरपुरा के रहने वाले थे।

दोनो किसान नेता सामती अत्याचारो का विरोध करते-करते शहीद हो गए। उनकी स्मृति मे जून के महीने मे वेगू की पचायत समिति हर साल मेला लगाती है।



राजस्थान में लोक जागरण के अग्रदूत

1. श्री आनंदराज सुराणा
2 श्री इन्द्रसिंह आजाद
3 श्री ओंकारसिंह
4. श्री ऋषिदत्त मेहता
5. स्वामी कुमारानन्द
6 श्री कुंज बिहारी लाल मोदी
7. श्री खूबराम सर्राफ
8. स्वामी गोपालदास
9 श्री गोकुलजी वर्मा
10. श्री गोपाललाल कोटिया
11. कामरेड घासीराम
12 श्री चन्द्रभान शर्मा
13 श्री चंदन मल बहड़
14. श्री जगन्नाथ अधिकारी
15. श्री ताड़केश्वर शर्मा
16 ठाकुर देशराज
17. श्री नरसिंह दास बाबाजी
18. श्री नत्थू राम मोदी
19. पं० नयनू राम शर्मा
20. श्री नित्यानंद नागर
21. श्री नेतरामसिंह गौरीर
22. श्री निरंजन शर्मा अजीत
23. श्री पूरणसिंह करौली
24. श्री पूर्णसिंह भरतपुर
25. श्री बलवंत सांवलराम देशपांडे
26. श्री भँवरलाल सर्राफ
27. श्री मोतीलाल तेजावत
28. श्री मदनसिंह करौली
29. बाबू मुक्ताप्रसाद वकील
30. श्री राम नारायण चौधरी
31. श्री रामसिंह
32. श्री रेवतीशरण
33. श्री लक्ष्मण स्वरूप त्रिपाठी
34. श्री लादूराम जोशी
35. साधु सीताराम दास
36. श्री सत्य नारायण सर्राफ
37. श्री शौकत उस्मानी
38. श्री सच्चिदानंद महाराज
39. श्री सांवल प्रसाद चतुर्वेदी
40. श्री सत्यभक्त
41. सरदार हरलालसिंह
42. श्री हरिभाई किंकर
43. श्री हरिनारायण शर्मा
44. श्री हुकमी चन्द शर्मा

श्री आनंद राज सुराणा, जोधपुर



जन्म : 28 सितम्बर 1891

पता 41 सुन्दरनगर, नई दिल्ली

देशभक्त पिता के देशभक्त पुत्र

श्री आनदराज सुराणा का जन्म 28 सितम्बर, 1891 को जोधपुर के एक मध्यमवर्गीय जैन परिवार में हुआ था। आपके पिता श्री चाँदमल सुराणा जोधपुर राज्य मे राजनीतिक चेतना लाने वाले पहले और अग्रगण्य पुरुष थे। उन्होने जोधपुर राज्य की शोषित और पीडित जनता के उद्धार के लिए मारवाड हितकारिणी सभा की स्थापना की थी। श्री चाँदमलजी सुराणा के नेतृत्व मे मारवाड हितकारिणी सभा ने नसीरावाद आदि स्थानो मे कत्ल के लिए भेजी जाने वाली गायो की निकासी को रुकवाने के लिए सामूहिक धरने का एक आन्दोलन चलाया था।

रेल्वे की नौकरी से राष्ट्रीय आन्दोलन तक

श्री आनदराज सुराणा का लालन-पालन भी लोकसेवा और राज्य विरोधी वातावरण मे ही हुआ था और उनमे राष्ट्रीयता के सस्कार स्वत: ही अकुरित हो रहे थे, लेकिन अपनी शिक्षा समाप्त करने के वाद आनदराज सुराणा बीकानेर राज्य की रेल्वे मे 12/– रुपए प्रतिमाह पर सिगनेलर हो गए थे। रेल्वे की नौकरी मे तरक्की करते-करते उन्हे मासिक 75/– रुपए मिलने लग गए थे, लेकिन बीकानेर के महाराजा गगासिह को इस वात का पता लगते देर नही लगी कि आनदराज सुराणा राष्ट्रीय विचारो के व्यक्ति हैं और जयनारायण व्यास जैसे बीकानेर के वाहर वाले कॉंग्रेसी लोगो से उनका सम्पर्क हैं– अत. वे बीकानेर राज्य की नौकरी से अलग कर दिये गये और उन्हे अविलब बीकानेर छोडने के आदेश दे दिए गए।

बीकानेर से निर्वासन और राजनैतिक प्रवृत्तियें

बीकानेर से निर्वासित होने के बाद आनदराज सुराणा ने जोधपुर आकर अपने पिता के साथ मारवाड हितकारिणी सभा का कार्य करने का निश्चय किया । श्री चाँदमलजी सुराणा उस समय जोधपुर के महाराजा के विरुद्ध जन आन्दोलन सगठित कर रहे थे । आन्दोलन पूरी तरह सगठित नही हो पाया था । जिसके पहले ही जोधपुर महाराजा ने चाँदमलजी सुराणा को उनके दो सहयोगियो के साथ जोधपुर से निर्वासित कर दिया । आनदराज सुराणा और उनके सहयोगियो को (जिनमे जयनारायण व्यास भी शामिल थे) दस नम्बरिया घोषित कर दिया जिसके परिणाम स्वरूप रात मे उन्हे पुलिस थाने मे जाकर सोना पडता था और दिन मे किसी भी अपराध के सिलसिले मे उन्हे घर से पुलिस थाने मे बुलाया जा सकता था । यह क्रम पूरे 14 महीने तक चलता रहा ।

व्यवसाय का सूत्रपात

इस राजनैतिक उथल-पुथल के बीच भीनासर के श्री कनीराम बाठिया ने श्री आनदराज सुराणा की व्यावसायिक योग्यता से प्रभावित होकर उन्हे 3 लाख रुपए व्यवसाय शुरू करने के लिए । दिए उन्होने इस धनराशि से बम्बई मे इन्डो यूरोपा मशीनरी मार्ट की स्थापना की । 1926 मे उन्होने इन्डो यूरोपा ट्रेडिंग कम्पनी की स्थापना की । यह व्यवसायिक सस्थान देश मे मुद्रण की मशीनरी और मुद्रण सम्बन्धी सामान की सबसे बडी कम्पनी सिद्ध हुई । इस सस्था की बम्बई, कलकत्ता और मद्रास मे शाखाए स्थापित की गई । इस प्रतिष्ठान की शाखाए लदन एव हैम्बर्ग मे भी खोली गई ।

राजद्रोह का मुकद्दमा और लंबी-लंबी सजाएं

श्री आनदराज सुराणा का प्रिंटिग मशीनरी का यह व्यापार सारे देश मे तीव्रता मे विकसित हो रहा था । परन्तु उसके साथ-साथ वे जोधपुर की राजनैतिक प्रवृत्तियो के साथ भी पूरी तरह सलग्न थे । श्री जयनारायण व्यास इन दिनो ब्यावर मे तरुण राजस्थान के प्रधान सपादक का कार्य कर रहे थे और अपनी उग्र लेखनी से उन्होने राजपूताने की राजशाही शक्तियो को हिला दिया था । श्री जयनारायण व्यास, अपने सहयोगी श्री आनदराज सुराणा और भँवरलाल सर्राफ के सहयोग से एक राजनैतिक सम्मेलन बुलाने का आयोजन कर रहे थे । राज्य के शासन को यह स्वीकार नही था और जोधपुर के शासन ने सम्मेलन की घोषित तिथियो के पहले ही सर्वश्री जयनारायण व्यास, आनन्दराज सुराणा और भँवरलाल सर्राफ को बिना वारट गिरफ्तार करके उन्हें बाडमेर, सिवाना और नागौर के किलो मे बद कर दिया । अत मे नागौर के किले मे उन तीनो पर एक स्पेशल अदालत द्वारा 124 ए राजद्रोह के अपराध मे मुकदमा चलाया गया और तीनो को 5-5 वर्ष की सख्त सजा दी गई । जेल मे उनसे सामान्य कैदियो की तरह व्यवहार किया गया । कई महीनो तक उन्हे काल कोठरियो मे भी रखा गया । अत मे 1931 मे गाँधी-इर्विन समझौते के अन्तर्गत वे भी अपनी सजा पूरी करने के पहिले ही जोधपुर केन्द्रीय कारागृह से छोड दिए गए ।

देशी राज्य प्रजा परिषद् और कांग्रेस की प्रवृत्तियें

जेल से मुक्त होने के बाद श्री आनदराज सुराणा को जोधपुर से निर्वासित कर दिया गया। वे 1931 के बाद स्थायी रूप से दिल्ली मे बस गए। वहाँ उन्होंने देशी राज्य प्रजा-परिषद् और कांग्रेस की प्रवृत्तियो मे निरन्तर भाग लेना शुरू कर दिया। दिल्ली के चांदनी चौक मे उनका इन्डो यूरोपा ट्रेडिंग कम्पनी का कार्यालय देशी राज्य प्रजा-परिषद् का कार्यालय और देशी रियासतो के कार्यकर्त्ताओ का आश्रय स्थल बन गया।

अगस्त क्रांति का अभूतपूर्व केन्द्रस्थल

1942 की अगस्त क्राति मे नेताओ की सामूहिक गिरफ्तारी के बाद आनदराज सुराणा की कोठी से ही श्रीमती अरुणा आसफअली और श्री जुगलकिशोर खन्ना ने भूमिगत रहकर अगस्त क्राति का सचालन किया था। अगस्त क्राति के समय श्री सुराणा की कोठी भूमिगत रहकर कार्य करने वाले क्रातिकारी नेताओ और कार्यकर्त्ताओ का प्रमुख केन्द्र था। पुलिस ने श्री सुराणा की कोठी और उनके आफिस पर तलाशी के लिए धावा बोलकर क्राति का सुराग पाने का यत्न किया।

तलाशी, गिरफ्तारियें और फरारी

श्री सुराणा के साला और साली गिरफ्तार कर लिए गए और उन्हे लाहौर जेल मे नजरबद कर दिया गया। श्री सुराणा पुलिस की गिरफ्तारी से बचकर निकल गए। उन्हे भारत की देशी रियासतो मे भारत के किसी भी कोने मे गिरफ्तार करने के वारट निकाले गए, लेकिन श्री सुराणा क्राति की मशाल को जलाए रखने के लिए पुलिस के चगुल से निरन्तर बचते रहे। वे गुप्तरूप से गाजियाबाद, मेरठ, हावडा, अजमेर, उदयपुर और विशेष रूप से जयपुर मे छिपकर अपना फरारी का समय बिताते रहे।

दिल्ली विधान सभा के सदस्य

1945 मे उनका वारट रद्द हो जाने के बाद वे पुन दिल्ली लौट आए और कांग्रेस की प्रवृत्तियो मे भाग लेने लग गए। 1952 में उन्होने दिल्ली राज्य की विधान सभा के लिए काग्रेस टिकट पर दिल्ली से चुनाव लडा और भारी बहुमत से विजयी हुए। वे 1957 तक दिल्ली विधानसभा के सदस्य रहे।

सक्रिय राजनीति से अवकाश

सन् 1960 मे श्री आनदराज सुराणा ने सक्रिय राजनीति से अवकाश ले लिया। वे उस समय तक सत्तर वर्ष की आयु के भी हो चुके थे। उन्हे इस बात का गहरा दु ख रहा है कि इन दिनो राजनीति सत्ता हथियाने का एक व्यवसाय बन गया है और राजनीति ऐसे लोगो के हाथो मे आ रही है जिनके जीवन मे आदर्श और सिद्धान्तो का कही नामो निशान नही है तथा राष्ट्रीय हितो की अवहेलना करके जो व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति मे सलग्न हैं।

अहिंसा और विश्वशांति के प्रचारक

श्री आनदराज सुराणा ने अब अपने आपको सम्पूर्ण रूप से अहिंसा, विश्वशांति और निरामिषवादिता के प्रचार प्रसार के लिए समर्पित कर दिया है। वे अपने आध्यात्मिक गुरु मुनि सुशीलकुमारजी के नियत्रण मे अब इन आध्यात्मिक प्रवृत्तियो मे तीव्रगति से क्रियाशील हैं। उन्होने अपने प्रयत्नो से दो वार 1920 मे तथा 1965 विश्व धर्म सम्मेलन के आयोजन को सफल बनाया। उन्होने सारे देश से भ्रमण करके अपने इन आध्यात्मिक उद्देश्यो के लिए करीव सात लाख रुपए का सग्रह किया और नई दिल्ली मे लेडी हॉर्डिग्ज रोड पर जैन भवन के नाम से एक विशाल भवन की स्थापना की। उन्होने 1966-67 मे गौरक्षा अभियान मे भी वहुत वडा योग दिया। वे अखिल भारतीय गोसेवक समाज के कोषाध्यक्ष थे।

पीड़ित मानवता की सेवा के लिए

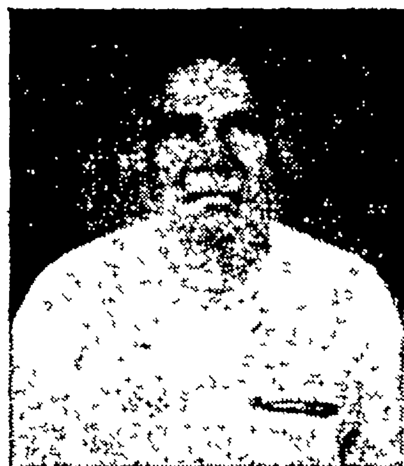
स्वाधीनता का यह सेनानी अव पीडित मानवता के उद्धार के लिए निरन्तर सघष कर रहा है। उन्होने "सुराणा विश्व-वधुत्व ट्रस्ट" के नाम से एक ट्रस्ट की स्थापना की है जो निर्धन और आवश्यकता वाले मानवमात्र को विना किसी भेदभाव के हर सभव सहयोग प्रदान करता है। ट्रस्ट द्वारा छात्रवृत्तियाँ, वस्त्रदान, चिकित्सा और निराश्रित विधवाओ की सहायता के अतिरिक्त अहिंसा के सिद्धान्तो एव शाकाहार और निरामिषता के प्रचार के लिए भी वहुत कार्य होता है।

श्री आनंदराज सुराणा ने देश की अनेको सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक सस्थाओ को लाखो रुपए का दान किया है।

जैन सिद्धान्त और जैन आदर्शों की अनुपालना

इन दिनो श्री आनदराज सुराणा अपनी समस्त शक्ति अहिंसा अनुसधान केन्द्र, अहिंसा पुस्तकालय और अहिंसा विश्वविद्यालय की स्थापना मे लगा रहे हैं। उनका रहन सहन अत्यन्त सादगीपूर्ण है। वे पिछले 50 वर्षों से नियमित खादी की पोशाक ही पहनते हैं। धोती, कुर्ता और सफेद टोपी ही सदा से उनकी पोशाक हैं। वे शुरू से ही जीवन व्यवहार मे जैन सिद्धान्तो और जैन आदर्शों का पूरी तरह पालन करते हैं। उनका प्राण आज भी सवेदनाओ से पूरी तरह भरा हुआ है और वे किसी भी पीडित व्यक्ति को देखकर द्रवित हो जाते हैं और अपनी ओर से उसकी हर सभव सहायता करते हैं।

श्री इन्द्रसिंह आजाद, अलवर



जन्म : 5 जून 1914

अवसान 19 अगस्त 1969

राजद्रोह और गिरफ्तारियों की शृंखला

श्री इन्द्रसिंह आजाद का जन्म अलवर के एक सामान्य भार्गव परिवार मे 5 जून, 1914 को हुआ। उन्होने अलवर से ही मैट्रिक पास किया था। अलवर मे राजनैतिक चेतना लाने वाले अग्रगण्य व्यक्तियो मे श्री इन्द्रसिंह आजाद का भी प्रमुख स्थान है। अलवर मे प्रजामडल की स्थापना से लगा कर 1946 तक जितने भी आन्दोलन हुए उन सब मे श्री इन्द्रसिंह आजाद ने प्रमुख रूप से भाग लिया था। उनकी पहली गिरफ्तारी राजद्रोह के अभियोग मे 1938 मे हुई थी और उन्हे दो वर्ष की सजा दी गई थी। उनकी गिरफ्तारियो का यह क्रम देश की आजादी तक बराबर चलता ही रहा।

दिल्ली मे नेताओं द्वारा राष्ट्रीयता की दीक्षा

श्री इन्द्रसिंह आजाद 1934–35 मे अपने बहनोई श्री दीनानाथ दिनेश के मानव प्रेस मे काम करते थे और उनके पास रहते थे। उस समय उनकी उम्र 19 वर्ष की थी। यहां पर वे, श्री आसफ अली और लाला शकरलाल जो कि कांग्रेस के बडे नेता थे, सम्पर्क के कारण राजनैतिक रूप से प्रभावित हुए।

प्रजामंडल की स्थापना और अलवर में कार्य

सन् 1936 मे श्री इन्द्रसिंह आजाद, प० हरनारायण के आग्रह एव परामर्श पर अलवर आ गए और प० हरनारायण को 'अलवर राज्य प्रजामडल' स्थापित कराने मे अपना पूर्ण सहयोग और योगदान देकर सन् 1937 से 'अलवर राज्य प्रजामडल' की गतिविधियो मे भाग लेने लगे। सन् 1938 मे पहली बार प० हरनारायण एव साथियो के साथ उत्तरदायी शासन की मांग पर बेडी-हथकडी पहन कर जेल गए जिसमे इनको एक वर्ष की सख्त कैद की सजा हुई। श्री इन्द्रसिंह आजाद लगातार प्रजामडल की गतिविधियो मे भाग लेते रहे। सन् 1946 मे प्रजामडल की ओर से मिनिस्ट्रो कुर्सी छोडो

सत्याग्रह हुआ। उसमे भी आपको गिरफ्तार किया गया। आपने पं० हरनारायण द्वारा स्थापित अस्पृश्यता निवारण सघ का भी सचालन किया। हरिजन बालको को स्वय शिक्षा देने का कार्य भी अपने हाथ मे लिया। इसके अतिरिक्त प० हरनारायणजी को खादी और राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार मे भी पर्याप्त सहयोग और अपना योगदान देते रहे देश मे आजादी आने तक आप कांग्रेस मे रह कर स्वाधीनता सग्राम मे शामिल रहे।

आजादी आने के बाद इन्होने समाजवादी पार्टी की सदस्यता ग्रहण करली और तब मे अपने जीवन के अन्त तक समाजवादी विचारो के लिए सघर्ष करते करते 19 अगस्त, 1969 को 55 वर्ष की अवस्था मे आपने प्राण त्याग दिये। आपने आजादी के बाद भी समाजवादी उद्देश्यो की प्राप्ति के सघर्ष मे अनेक बार जेल यात्राए की थी।

श्री ठाकुर औंकारसिंह जी करौली

खादी के अनन्य प्रचारक

कर्मवीर श्री औंकारसिंहजी की तपस्या निर्मल चाँदनी के समान रही है। इन्होने आजन्म खादी प्रचार किया। करौली नगर की जनता मे जागरण और निर्भयता उत्पन्न करने का श्रेय आपको ही है। आपका भाषण बडा ही ओजस्वी होता था जो मुर्दा व्यक्तियो मे भी प्राण फूंक देता था। आप देश सेवार्थ अनेको बार जेल भी गये थे। कांग्रेस मे सक्रिय कार्य करते हुए आपने बडे ही कष्ट सहन किये। आप एक बार कांग्रेस की ओर से नगरपालिका के प्रेसीडेण्ट रहे थे।

आजन्म देश सेवक और राजनैतिक संत

जीवन के शेष काल मे आपने कृषि कार्य बडी ही उत्तमता के साथ किया। आपका व्यवहार साधुओ के समान था। आपके हृदय मे बडी ही उदारता थी। आप धर्मपरायण व्यक्ति थे। भगवद् गीता पर आपकी बडी ही श्रद्धा थी। आप वृद्धावस्था मे भी नवयुवको के समान कार्यशील एव उत्साही थे। आपने आजन्म देश सेवा का कार्य करते हुए सन् 1969 मे अपनी जीवन लीला समाप्त कर दी।

स्वर्गीय श्री ऋषिदत्त मेहता, बूंदी



अवसान 6 जनवरी 73

राजसी खानदान में जन्मा हुआ विद्रोही

हाडौती और वून्दी के प्रसिद्ध राजसी, सम्पन्न और सम्मानित वश के सुप्रसिद्ध, यशस्वी और लोकप्रिय वून्दी के प्रधानमत्री (महारल मुहान) श्री बोहरा मेघवाहनजी के पौत्र रूप मे जन्म लेकर श्री ऋषिदत्त मेहता का बाल्यकाल राजकुमारो मे भी ईर्ष्या पैदा करने वाला बीता। किन्तु तरुणावस्था मे प्रवेश करते ही ज्योही वश परपरानुसार आपको वून्दी राज्य की राज सेवा करने का अवसर मिला, ठीक उसी काल मे उस समय की राजनीति, सत्ता द्वारा गरीबो का शोषण, दमन, और उन पर अनाचार होते हुए अत्याचारो को देखकर, श्री मेहताजी का हृदय और मस्तिष्क राज्य सेवा की वंशपरपरागत प्रणाली से विद्रोह कर बैठा। सयोग भी कुछ ऐसा ही बना। सन् 1918 मे जब कुछ दिनो के लिए विश्ववध महात्मा गांधी का वम्बई मे निवास रहा, आपको उनकी सेवा मे रहने का जीवन का सर्वोत्तम स्वर्ण अवसर मिल गया। परिणामतः आप अपने सब राजसी ठाठ-बाट को, ठोकर मार कर खादी मय फकीरी वेष मे जन सेवक के रूप मे आ उपस्थित हुए। उसी समय के ऐतिहासिक असहयोग आन्दोलन मे आपने अपने कॉलेज अध्ययन को भी तिलाजलि दे दी। इस प्रकार सन् 1918-19 से श्री ऋषिदत्त मेहता का राष्ट्र सेवक के रूप मे जीवन प्रारम्भ हुआ।

देशभक्त पिता और देशभक्त पूर्वजो के संस्कार

श्री मेहताजी के इस परिवर्तन मे आप के पूज्य पिता और पूज्य प्रपिता के भी स्वाभिमानी स्वभाव और स्वतत्र विचार का बहुत प्रभाव और असर था। क्योकि आपके बाल्यकाल मे ही जहां आपके पूज्य प्रपिता वून्दी के सुविख्यात प्रधानमत्री श्री बोहरा मेघवाहनजी साहब को उस समय के कुख्यात तानाशाह गवर्नर जनरल लार्ड कर्जन की

नीति से सीधा मोर्चा लेने के कारण पद त्याग और निर्वासन भोगना पड़ा था, वहाँ आपके पूज्य पिता श्री नित्यानन्दजी नागर को भी उस समय की कुचक्री और निरकुश राज्य नीति से टक्कर लेने के कारण बूंदी के प्रधान सेनापतित्व पद को ठोकर मारनी पडी और उसके पश्चात् नजरबन्दी और निर्वासन भोगना पडा ।

विद्रोही पत्रकार के रूप में उदय की पहली किरण

इस प्रकार सन् 1919 मे राष्ट्र सेवा मे उतर कर श्री मेहताजी कांग्रेस के सदस्य और प्रतिनिधि तथा स्वय-सेवक के रूप मे देश के रचनात्मक कार्यों मे भाग लेते रहे और पत्र सम्वाददाता के रूप मे उस समय के देशी राज्यो के प्रमुख पत्र "तरुण-राजस्थान" और "प्रताप" मे बूंदी की जनता के आर्त्तनादो को प्रकाश मे लाते रहे ।

राज्य द्वारा लाखों की सम्पत्ति जब्त

इसी बीच राजपूताना के राजनैतिक जीवन, जागृति और सघर्ष के प्रणेता श्री विजयसिंह पथिक के नेतृत्व मे सन् 1925 के लगभग लड़ा गया ऐतिहासिक बरड और खेराड आन्दोलन मे आप और आपके पूज्य पिता श्री नित्यानन्दजी नागर का सक्रिय हाथ होने से, आपके पूज्य पिता श्री नित्यानन्दजी नागर को फिर दुबारा अनिश्चितकाल के लिए राज्य से निर्वासित कर दिया गया और करीब 3 लाख की चल और अचल सम्पत्ति राज्य द्वारा जब्त करली गई ।

बंबई से ब्यावर और तरुण राजस्थान की जिम्मेदारी

सन 1928 मे महात्मा गांधी के कमाऊ पूत और सरदार पटेल के दाये हाथ राजस्थान के जीवन मे जागृति के प्रणेता भिक्षुराज श्री मणिलालजी कोठारी ने अपने दत्तक पुत्र रूप मे श्री नित्यानन्दजी से आपको छीनकर अपनी सस्था, राजस्थान सेवा संघ और तरुण राजस्थान की सम्पूर्ण व्यवस्था आपके हाथ मे सौंप कर आपको बम्बई से ब्यावर ला बिठाया । राजस्थान के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री जयनारायण व्यास पत्र का सम्पादन करते थे और व्यवस्था श्री मेहताजी । सन् 1929 मे श्री व्यासजी को जोधपुर राज्य द्वारा 6 वर्ष का कारावास हो जाने से आप पर पत्र का सम्पूर्ण भार आ पड़ा और आप सम्पादक का भी कार्य करने लगे ।

नमक सत्याग्रह और पहली गिरफ्तारी

सन् 1930 मे स्वातन्त्र्य आंदोलन का शंखनाद हुआ । नमक कानून सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ । आपके पूज्य पिता श्री नित्यानन्दजी नागर राजस्थान के प्रथम सत्याग्रही चुने गये । परिणामतः श्री नागरजी ने अपने दल सहित निश्चित तिथि को नमक कानून तोडा । और आपको 1 वर्ष का कारावास हुआ । एक सप्ताह पश्चात् ही ब्यावर के दूसरे डिक्टेटर के रूप मे श्री ऋषिदत्त मेहता गिरफ्तार कर लिए गये और एक वर्ष का आपको भी कारावास दण्ड दे दिया गया । जेल मे पहुँचते ही जेल के अन्दर भी सघर्ष का सामना करना पडा और दूसरे ही दिन से आपको अन्य साथियो सहित भूख-हडताल पर बैठ जाना पड़ा ।

19 दिन तक भूख हड़ताल करने पर सरकार झुकी और आप लोगो की सब मांगें स्वीकार करली। जेल मुक्ति के पश्चात् आप फिर कांग्रेस के कार्य मे जुट पडे।

पूरा परिवार राष्ट्र की बलिवेदी पर

सन् 1932 मे फिर सत्याग्रह छिड़ गया। आपके पूज्य पिता श्री नित्यानन्दजी नागर को प्रथम दिन ही गैर कानूनी जुलूस का नेतृत्व करने के अपराध मे गिरफ्तार किया जाकर 2 वर्ष का कठोर कारावास दे दिया गया और आपको ठीक सातवें दिन इसी अपराध मे गिरफ्तार किया जाकर 2 वर्ष का कारावास और जुर्माने की सजा दी गई। चूंकि कांग्रेस की नीति जुर्माना अदा करने की नही थी अत आपकी वीर धर्म-पत्नि सौ० सत्यभामा देवी ने जुर्माना अदा करने से इन्कार कर दिया। परिणामत जुर्माने मे आपके बगले का सब सामान कुर्क कर कौडियो मे नीलाम कर दिया गया। आपके पश्चात् ब्यावर-अजमेर के आन्दोलन का सब भार आपकी धर्म पत्नि पर आ पडा। कुछ ही दिनो पश्चात् श्रीमती सत्यभामा देवी को भी गिरफ्तार कर 6 मास कठोर कारावास की सजा देकर जेल भेज दिया। यह समय ऐसा था जब इस कुटुम्ब का बच्चा बच्चा जेल के सीखचो मे बन्द था अर्थात् सन् 32 मे अजमेर सैण्ट्रल जेल मे श्री नित्यानन्दजी नागर (पिता) श्री ऋषिदत्त मेहता (पुत्र) श्री सत्यभामा देवी (पुत्र वधू) चि० स्वतन्त्र मेहता और चि० स्वाधीन मेहता जो दूध मुंहे (पौत्र) थे और मकान भगवान और सरकार के भरोसे।

राजस्थान साप्ताहिक का प्रकाशन

जेल से मुक्ति के पश्चात् श्री कोठारीजी की आज्ञानुसार फिर 'राजस्थान' प्रारम्भ किया गया और सम्पादक बने राजस्थान के सर्वमान्य नेता श्री हरिभाऊ उपाध्याय और श्री ऋषिदत्त मेहता तथा प्रकाशक राजस्थान के भूतपूर्व मुख्यमत्री श्री जयनारायण व्यास। किन्तु एक वर्ष बाद तीनो ही की शक्तियाँ केवल एक काम मे व्यर्थ खर्च होती हुई देखकर 'राजस्थान' का सम्पूर्ण भार श्री ऋषिदत्तजी पर ही डाल दिया गया। तब से श्री मेहताजी ही पत्र के सम्पादक रहे और श्री कोठारीजी के अवसान के पश्चात् सचालक के रूप मे पत्र का सचालन भी करते रहे।

व्यक्तिगत सत्याग्रह और सत्याग्रही

बापू ने सत्याग्रह का रूप बदल दिया। देश के गिने चुने व्यक्तियो को ही व्यक्तिगत-सत्याग्रही के रूप मे स्वय बापू ने चुना। प्रथम सत्याग्रही सत विनोबा चुने गये और ब्यावर से सर्व श्री मुकुटविहारीलाल भार्गव और श्री नित्यानन्दजी नागर। दोनो ने ही पैदल यात्रा कर जेल का आलिंगन किया।

बूंदी में गिरफ्तारी, लंबी नजरबंदी और निर्वासन

सन् 1942 आया। "भारत छोडो" और "करो-मरो" का भयकर और अन्तिम युद्ध का बापू ने शखनाद कर दिया और सैण्ट्रल तथा रियासती सरकार के वारन्ट पर

श्री नित्यानन्दजी नागर और श्री ऋषिदत्तजी मेहता को वूंदी मे गिरफ्तार कर नजर वद्ध कर दिया गया। श्री नित्यानन्दजी नागर ने तो वूदी मे एक जुलूस का नेतृत्व भी किया था जिस पर आपको गिरफ्तार करने के पश्चात् निर्दयतापूर्वक लाठी चार्ज भी किया गया। सन् 1944 के अन्त तक दोनो ही, नित्यानदजी वूदी के प्रसिद्ध किले मे और श्री ऋषिदत्त मेहता अजमेर की सैण्ट्रल जेल मे नजरवद रहे। नजरवदी से छूटने के पश्चात् श्री मेहताजी का अजमेर-मेरवाडा की सरकार ने अजमेर-मेरवाडा मे और वूदी सरकार ने वूदी राज्य मे प्रवेश निषेधकर दिया। परिणामत 2, 3 महीने की लिखा पढी और अन्त मे सत्याग्रह की चुनौती देने पर वूदी सरकार ने प्रवेश-वदी आज्ञा वापिस ली और श्री मेहताजी वूदी जा सके। सन् 42 मे ही श्री नागरजी ने अपनी पैतृक जागीरी होलासपुरा के हिस्सा को असामयिक समझ कर सरकार को लौटा दिया और अपने पर से जागीरदारी का कलक भी दूर कर दिया।

उत्तरदायी शासन के लिए लोक परिषद् की स्थापना

वूदी आ कर श्री मेहताजी ने वून्दी राज्य लोक परिषद् को जन्म दिया। किन्तु तत्कालीन दीवान श्री रोवसन, श्री मेहताजी के इस कदम को गवारा नही कर सका और उन्होने अनेक शर्तें और प्रतिवन्ध उपस्थित किये। इस पर सत्याग्रह और कानून भग की अन्तिम चुनौती दिये जाने पर उस समय का सोसाइटी एक्ट नामक काला कानून हटा लिया गया और श्री मेहताजी के नेतृत्व मे लोक परिषद् वूदी मे उत्तरदायी पूर्ण शासन के आन्दोलन मे उतर पडी। वूदी नरेश श्री वहादुरसिह ने माँगो को स्वीकार कर सम्पूर्ण उत्तरदायी शासन की घोषणा की और विधान कमेटी का निर्माण किया जिसमे श्री ऋषिदत्त मेहता, श्री वृजसुन्दर शर्मा, श्री मोतीलाल आदि 7 लोकपरिषदी सदस्यो का बहुमत था जिसने एक मत से सम्पूर्ण उत्तरदायी शासन का विधान तैयार कर महाराजा की स्वीकृति के लिए रखा। किन्तु इसके प्रथम कि वून्दी मे उत्तरदायी पूर्ण शासन कायम हो, वून्दी का राजस्थान मे विलय हो गया।

त्याग, तपस्या और सेवा का प्रतीक

इस प्रकार श्री मेहताजी का और उनके कुटुम्ब के वालक वालक का जीवन देशभक्ति, त्याग, तपस्या और सेवा की एक जीवत और प्रेरक कहानी है।

स्वामी कुमारानंद, ब्यावर



जन्म · 15 अप्रैल, 1889

अवसान · 29 दिसम्बर 1971

जन्म और परिवार

वयोवृद्ध क्रांतिकारी एव श्रमिक नेता स्वामी कुमारानन्द, जिनका वास्तविक नाम द्विजेन्द्र कुमार नाग था, का जन्म वर्मा मे रगून के समीप इनसिन मे 80 वर्ष पूर्व सन् 1889 मे अप्रैल मास की अक्षय तृतीया के दिन एक अभिजात परिवार मे हुआ था। इनके पिता रगून के कमिश्नर थे। उनका नाम श्री एन० के० नाग (नवकुमार नाग) था। नाग परिवार का श्री रविन्द्रनाथ टैगोर एव प्रसिद्ध इतिहासकार रमेशचन्द्र दत्त के परिवार से घनिष्ट सम्बन्ध था। प्रख्यात वैज्ञानिक जगदीशचन्द्र वसु स्वामीजी के मामा लगते थे।

प्रारंभिक शिक्षा

"स्वामीजी की प्रारभिक शिक्षा वर्मा मे हुई और वाद मे ढाका एव कलकत्ता मे अपने उच्च शिक्षा प्राप्त की। नेशनल कॉलेज से वी० ए० करने के वाद स्वामीजी के कार्य से भयभीत होकर ढाका के तात्कालीन अग्रेज मजिस्ट्रेट एलन (ALLEN), जिन पर सन् 1907 के अगस्त महिने मे किसी क्रांतिकारी ने गवालन्द स्टेशन पर गोली चलाई थी, सन् 1907 के मार्च मे स्वामीजी के घर आये और स्वामीजी के कार्यकलाप के बारे मे उनके पिताजी से कहा और स्वामीजी को इस कार्य से रोकने के लिए सरकारी खर्च से आई० सी० एस० पढने के लिये प्रस्ताव रखा। एलन के चले जाने पर स्वामीजी के पिताजी ने स्वामीजी के सामने उक्त प्रस्ताव रखा। स्वामीजी ने कहा कि "आपने तो सारे जीवन भर गुलामी कर ली; हमे गुलामी नही करनी। हमारा देश हमारा नही है, इस पर अग्रेज हुकूमत करते हैं। मैं प्रतिज्ञा कर चुका हूँ कि इन अग्रेजो को भारत से निकाल कर ही दम लूँगा।" स्वामीजी के पिताजी जो रविन्द्रनाथ टैगोर आदि के सम्पर्क मे थे और राष्ट्रीय विचार रखते थे यह उत्तर सुनकर बहुत ही प्रसन्न हुए।

स्वदेशी आन्दोलन और क्रांतिकारी पार्टी

सन् 1905 मे लार्ड कर्जन के बग विभाजन के खिलाफ वगाल मे तथा सारे भारत मे लाल, बाल और पाल ने अग्रेजो के खिलाफ विदेशी माल के वायकाट का आन्दोलन शुरू किया, जिसको वगाल मे स्वदेशी आन्दोलन के नाम से कहा जाता था। उन्ही दिनो क्रातिकारी पार्टी जनता के सामने आई। सन् 1896 मे क्रातिकारी पार्टी का महाराष्ट्र और वगाल मे जन्म हो गया था। चापेकर ब्रदर्स इसी पार्टी से सम्वन्धित थे। वगाल मे क्रातिकारी पार्टी के तीन दल थे। अनुशीलन समिति, सुहृद समिति और जुगातर पार्टी। इसमे प्रथम अनुशीलन समिति और सुहृद समिति मुसलमानो को भर्ती नही करती थी। वाद मे मुसलमानो को भी भर्ती करना शुरू कर दिया था। जुगातर पार्टी मे मुसलमानों को लेते थे। इसके मौलाना अबुल कलाम आजाद भी मेम्वर थे। मौलाना अबुल कलाम आजाद ने कलकत्ता मे रहते हुए भारत की आजादी के लिए मुसलमानो का क्रातिकारी सगठन वनाया था जिसका नाम जमायते हज़्वी उल्ला था। इसमे हिन्दुओ को भी भर्ती होने के लिए अपील की थी। सन् 1893 मे स्वामी विवेकानन्द ने भी नौजवानो मे हलचल पैदा कर दी थी, जिसका प्रभाव स्वामीजी पर भी पडा। स्वामीजी जव अपने पिता के साथ सन् 1905 के मार्च मे पुरी गये थे और समुद्र के किनारे रहते थे उसी समय स्वामी सत्यानन्द जी नाम के सन्यासी से भेंट हुई। यह स्वामीजी के क्रातिकारी जीवन के प्रथम गुरु थे। सत्यानन्द जी वर्षो योरोप मे रह चुके थे और अरविन्द घोष से भी परिचित थे।

चीन की यात्रा और नौ वर्ष की जेल

सन् 1910 के नवम्वर महिने मे स्वामीजी चीन गये थे और चीन के महान् नेता डॉ० सनयात सेन से मिले थे। क्राति के दौरान वे चीन मे ही रहे थे। चीन से भारत वापिस आने के वाद वे कलकत्ते मे गिरफ्तार कर लिये गये और उन्हे जेल भेज दिया गया जहाँ से वे नौ साल वाद छूटे।

सन्यासी के वेष में

जेल से छूटने के वाद ढाका के मोहल्ला नारनिदा मे चार नौजवान गिरफ्तार हुए थे। उसी मोहल्ले के एक पुराने मकान मे पिस्तौल, कारतूस, डाइनामाइट और वम वनाने का कुछ सामान मिला था। पुलिस स्वामीजी को इस सिलसिले मे फसाना चाहती थी। स्वामीजी के रिश्तेदारो ने जो पुलिस के उच्च अधिकारियो मे से थे, स्वामीजी को ढाका छोड देने की सलाह दी। स्वामीजी ढाका छोडकर कलकत्ता चले आये और वहाँ सी० आर० दास तथा अन्य नेताओ से मिले। जव कलकत्ता मे भी स्वामीजी का पीछा पुलिस ने नहीं छोडा तो स्वामीजी सन्यासी के भेष मे स्वामी कुमारानन्द के नाम से पैदल ही कन्याकुमारी और कामेश्वर तक घूमते रहे। इसी दौरान उन्होने गाँव-गाँव घूम कर भारत के गांवो की दुर्दशा को देखा। गांवो की दुर्दशा देखकर स्वामीजी के आंसू आ गये। उन्होने और भी दृढता से आजादी के लिये काम करने का निश्चय किया।

नागपुर कांग्रेस का निमंत्रण

इसी प्रकार स्वामीजी भूखे प्यासे रह कर घूमते-घूमते कई महीनो मे कन्याकुमारी पहुँचे थे। वहाँ से पत्र द्वारा सी० आर० दास से सम्पर्क स्थापित किया। सन् 1920 के दिसम्बर महिने मे कांग्रेस अधिवेशन होने वाला था। सी० आर० दास ने 300/– रु० का मनीआर्डर भेजा और स्वामीजी को नागपुर पहुँचने के लिये लिखा। नागपुर आते समय स्वामीजी की अरविन्द से भेंट हुई और उन्होने उनसे कहा कि वे देश का नेतृत्व करे। परन्तु अरविन्द ने राजनीति मे पडना स्वीकार नहीं किया।

स्वामीजी सी० आर० दास की सलाह पर नागपुर पहुँचे और वहाँ उन्होने कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की। तब से सन् 1945 तक वे आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे। इस समय वे मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू, मौलाना हजरत मोहानी, अलीबन्धु, मौलाना मोहम्मद अली, शौकत अली, मोहम्मदअली जिन्ना और लाला लाजपत राय आदि के सम्पर्क मे आये।

नागपुर कांग्रेस मे ही स्वामीजी पूर्ण स्वाधीनता के लक्ष्य का प्रस्ताव रखना चाहते थे, पर सी० आर० दास और मोहम्मद अली, शौकत अली के कहने से उन्होने अपना प्रस्ताव वापिस ले लिया।

गांधीजी से मतभेद

नागपुर मे कांग्रेस अधिवेशन के पण्डाल के बाहर एक विशाल सभा हुई जिसमे 15–20 हजार आदमी इकट्ठे थे। डॉ० मुजे उसके अध्यक्ष थे। महात्मा गांधी, शौकत अली, मोहम्मद अली और सत्यमूर्ति के भाषण के बाद स्वामीजी को भी बोलने के लिए डॉ० मुजे ने आमन्त्रित किया। सत्यदेव परिव्राजक भी इनसे पहले बोल चुके थे। स्वामीजी ने खडे होते ही कहा, "मैं एक बौलशेविक हूँ और वर्ग सघर्ष मे विश्वास करता हूँ"। गांधीजी उन दिनो देश के एक छत्र नेता थे। महात्मा गांधी ने कहा "तब हमारा और तुम्हारा रास्ता जुदा है। कांग्रेस आपके विचारो को नही स्वीकार कर सकती हैं। आप चाहे तो अलग सगठन बना सकते हैं। आपको कोई नही रोकेगा।"

मध्यप्रदेश से निर्वासन

नागपुर मे डॉ० मुजे के आग्रह से पूरे जनवरी महिने स्वामीजी सी० पी० मे रहे, पर कुछ ही दिनो मे स्वामीजी को मध्यप्रदेश से भी निर्वासित होना पडा। सरकारी आदेश था।

गुजरात में

सन् 1921 के मई महिने के प्रथम सप्ताह मे गुजरात का प्रांतीय राजनैतिक सम्मेलन हुआ जिसमे महात्मा गांधी, शौकत अली, मोहम्मद अली, सरोजिनी नायडू शामिल हुए थे। महात्माजी ने स्वामीजी को भी इसमे सम्मिलित होने के लिये कहा था। स्वामीजी वहाँ गये। यह कान्फ्रेन्स भडौंच मे हुई थी। यही इन्दुलाल याज्ञिक से इनका परिचय हुआ।

तव मे अ त तक ये घनिष्ठ मित्र बने रहे। वहाँ से गाँधीजी के साथ सावरमती आश्रम आये और फिर व्यावर लौट गए।

ब्यावर आगमन

सन् 1921 के सितम्वर महिने मे स्वामीजी व्यावर आये और वहाँ उन्होने एक किसानो का विशाल सम्मेलन किया। इस सम्मेलन मे जो झण्डा फहराया गया था वह लाल झण्डे मे हसिया और हथोडे से चिह्नित (लाल झण्डा) था। इस किसान सम्मेलन मे वहुत से लोगो ने हिस्सा लिया। इसकी अध्यक्षता प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता कुँवर चान्द करण शारदा ने की।

पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव

दिसम्वर सन् 1921 मे अहमदावाद मे कॉंग्रेस का अधिवेशन हुआ। इसकी अध्यक्षता सी० आर० दास करने वाले थे लेकिन वे तव जेल मे थे। इसलिये हकीम अजमलखाँ को सभापति वनाया गया। इस अधिवेशन मे स्वामीजी का भारत की पूर्ण स्वतत्रता प्राप्त करने तथा समाजवाद के लक्ष्य से सम्वन्वित प्रस्ताव था। प्रस्ताव का मजमून इस प्रकार था:—

"व्रिटिश साम्राज्यवाद की निश्चित नीति यह है कि वह एशियाटिक जातियो को हमेशा के लिये गुलाम वनाये रक्खे और उनका शोषण करे। इसलिये वह असभव है कि हिन्दुस्तान व्रिटिश कोमनवेल्थ मे रहे। अत पूर्ण स्वतत्रता प्राप्त किये विना इस महान् भारतीय जाति का विकास और उसकी तरक्की नही हो सकती। इसलिये इण्डियन नेशनल कॉंग्रेस का यह ध्येय है कि पूर्ण स्वतत्र और समाजवादी राज्य की स्थापना हो, जो किसी भी विदेशी हस्तक्षेप से मुक्त हो।"

4 वर्ष की सजा

जव महात्मा गाँवी को मालूम हुआ तो उन्होने स्वामीजी को बुलाया। एक घण्टे तक वाद-विवाद होता रहा और प्रस्ताव को न रखने के लिये सलाह दी। स्वामीजी नही माने। परन्तु हकीम अजमलखाँ ने इस प्रस्ताव को कॉंग्रेज की नीति के विरुद्ध वताकर नही रखने दिया। तव स्वामीजी ने मौलाना हसरत मोहानी के प्रस्ताव का समर्थन किया, जिसका गाँवीजी और मालवीयजी ने विरोव किया। वाद मे ऐसे विचारो के कारण मौलाना हसरत मोहानी को छ साल की और स्वामीजी को 4 साल की सजा हुई। स्वामीजी को पहले आगरे जेल मे भेजा फिर वरेली सेण्ट्रल जेल मे भेज दिया गया।

राजस्थान की उपयोगिता

नागपुर कॉंग्रेस अधिवेशन के समय ही भारत के पुराने क्रांतिकारी काफी तादाद मे एकत्रित हुए थे। क्रांतिकारी लोग चाहते थे कि उनको एक ऐसा स्थान मिले जहाँ वे छिप सकें और सगठन भी कर सकें। काफी वाद-विवाद के वाद राजस्थान ही एक ऐसा

स्थान उपयुक्त साबित हुआ। कारण यह था कि उस समय राजस्थान रियासतो मे बटा हुआ था। सिर्फ अजमेर मेरवाडा मे अंग्रेजो की हूकूमत थी। पडित अर्जुनलाल सेठी, विख्यात क्रातिकारी केसरीसिह बारहठ, उनके सुपुत्र प्रतापसिंह और उसके भाई जोरावरसिंह और विजयसिंह पथिक के कार्यो से राजस्थान आकर्षण का केन्द्र बन चुका था। मोतीलाल तेजावत का नाम तो बगाल के घर-घर मे लिया जाता था।

छुपने का स्थान

क्रातिकारियो ने सोचा कि वहाँ छिपने का केन्द्र हो तो मदद भी मिल सकेगी। इसलिये क्रातिकारियो ने सलाह दी कि स्वामीजी ब्यावर मे रहे। बाहर मे कांग्रेसी बने रहें और भीतर से क्रातिकारियो की मदद करें।

राजस्थान से पहला परिचय

यहाँ पर यह बता देना अनुचित नही होगा कि स्वामीजी का परिचय व सम्पर्क कलकत्ते मे मार्च, 1907 मे ही राजस्थान की पुरानी कृष्णा मिल के सचालक सेठ दामोदर दास राठी एव देशभक्त राव गोपालसिह खरवा से हो चुका था। यह दोनो सज्जन प्रसिद्ध क्रातिकारी अरविन्द घोष से साक्षात्कार करने के लिए सन् 1906 मे ही कलकत्ता आए थे। बडे बाजार मे ठहरे थे। स्वामी विवेकानन्द के अनुज डॉ० भूपेन्द्रनाथ दत्त ने स्वामी कुमारानन्दजी को सूचित किया कि राजस्थान से मेहमान आये हैं। स्वामीजी तुरन्त आकर उनसे मिलें। डॉ० भूपेन्द्र दत्त के निर्देश पर उन्होंने मेहमानो को सिस्टर निवेदिता और रविन्द्रनाथ टैगोर से मिलाया। यह राजस्थान से उनका पहला सम्पर्क था। इसी समय सेठ दामोदर दास ने स्वामीजी को एक सोने की पॉकेट वाच भेंट की। बाद मे जब अक्तूबर मे स्वामीजी ब्यावर पहुँचे तो राठीजी के मकान पर ठहरे थे। सन् 1909 मे खरवा राव साहब के मकान पर भूमिगत जीवन बिताया। मालूम पडने पर राव गोपालसिहजी को कमिश्नर ने बुलाया तब स्वामीजी को कोटा नरेश के पास भेज दिया गया। वहाँ से फिर करौली नरेश के यहाँ आये और केलादेवी मे उनके ठहरने की व्यवस्था की गई।

अजमेर से भी निर्वासन

चार साल सजा काटने के बाद स्वामीजी बरेली जेल से अजमेर आये। यहाँ उनका भारी स्वागत हुआ। परन्तु सरकार ने स्वामीजी को वहाँ नही ठहरने दिया और एक साल के लिए निर्वासित कर दिया। तब स्वामीजी कानपुर आए और वहाँ स्वर्गीय गणेश शकर विद्यार्थी के प्रताप कार्यालय मे ठहरे। यही पर स्वामीजी की बटुकेश्वरदत्त, भगतसिह व चन्द्रशेखर आजाद से भेंट हुई।

कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना

स्वामीजी के पीछे इन दिनो चौबीसो घण्टो सी० आई० डी० वाले रहा करते

थे। परन्तु स्वामीजी ने अपने कार्य को नहीं छोड़ा। वे बराबर सब कार्यों में सक्रिय भाग लेते रहे। इन्हीं दिनों नागपुर में भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी के संगठन की तैयारियां श्री सत्यभक्त कर रहे थे। स्वामीजी भी उनके सहयोगी थे। स्वामीजी ने बताया कि साल भर पहले उनके पास सत्यभक्तजी का पत्र आया था। इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए ब्रिटेन के दो मजदूर नेता भी आये थे। वे संभवत सी० आई० डी० के लोग थे। मद्रास के श्री शृंगार वेल्यू इस सम्मेलन के अध्यक्ष थे। सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष मौलाना हसरत मोहानी थे। उक्त अंग्रेजों के कहने पर श्री सत्यभक्त ने इस संगठन का नाम इण्डियन नेशनल कम्यूनिष्ट पार्टी रखने का प्रस्ताव किया। लेकिन दूसरे लोग इससे सहमत नहीं हुए। फिर भी अखबारों में सत्यभक्त ने इण्डियन नेशनल कम्युनिष्ट पार्टी का नाम दे दिया जिससे आपस में झगड़ा हो गया और वे इससे अलग हो गए। इस सम्मेलन में का० घाटे, का० मुज्जफर अहमद, का० जानकी प्रसाद बगरहट्टा सम्मिलित हुए थे। का० डांगे और शौकत उस्मानी उस समय जेल में थे।

कलकत्ता कांग्रेस के समय

कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन के समय सन् 1928 में आल इंडिया पीजेन्ट्स एण्ड वर्कर्स कान्फ्रेंस कलकत्ता में हुई। इसकी अध्यक्षता कामरेड सोहनसिंह जोश ने की। इसी समय कामरेड जोगलेकर ने कम्युनिस्टों को कांग्रेस से अलग होने के लिए प्रस्ताव रखा कि कांग्रेस पूंजीपतियों की पार्टी है। उससे अलग हो जाना चाहिए। का० मुजफ्फर अहमद ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया। लेकिन स्वामी कुमारानन्द जी ने इसका विरोध किया और कहा कि अभी कांग्रेस छोड़ने के लिए उचित अवसर नहीं है। भारत सरकार ने इसका पूरा विवरण उस समय की एसेम्बली की कार्यवाही में छापा था।

बटुकेश्वरदत्त के साथ

इस समय बटुकेश्वरदत्त हावड़ा में 19, सूरत रोड पर ठहरे हुए थे। स्वामीजी भी उन्हीं के साथ ठहरे हुए थे। स्वामीजी ने जब उनसे कहा कि सरकार कम्युनिस्टों पर हाथ डाल सकती है तो उन्होंने गुस्से में मुट्ठी बांध कर कहा कि यदि ब्रिटिश सरकार ने कम्युनिस्टों के खिलाफ कोई कार्यवाही की तो हमें भी कुछ करना ही पड़ेगा। उस समय तो स्वामीजी इसका अर्थ नहीं समझ पाये लेकिन बाद में जब एसेम्बली में बम फैंका गया और अदालत में भगतसिंह का बयान हुआ तो स्वामीजी को बटुकेश्वरदत्त के उस कथन का अर्थ समझ में आया।

पुलिस को चकमा

काकोरी षडयंत्र केस के सिलसिले में जब अंग्रेज सुपरिन्टेडेन्ट पचास जवानों को लेकर बटुकेश्वरदत्त को पकड़ने आये तो वे उस समय कानपुर में मेस्टन रोड पर विशुद्ध भारत भोजन भण्डार में ठहरे हुए थे। पुलिस जवानों के आते ही स्वामीजी आगे बढ़ गये

और दरवाजे पर ही अंग्रेज सुपरिन्टेडेन्ट को रोक लिया तथा बटुकेश्वर दत्त को भागने का इशारा किया। स्वामीजी पुलिस सुपरिन्टेडेन्ट से उलझ रहे थे तब तक बटुकेश्वरदत्त पीछे के दरवाजे से नौ दो ग्यारह हो गए। स्वामीजी उसी रात दत्त को लेकर झाँसी, भोपाल, ग्वालियर होते हुए दिल्ली पहुँचे और हार्डिग्ज बमकेस के अभियुक्त लाला हनुमानसहाय के यहाँ ठहरे। बाद मे बटुकेश्वरदत्त को कानपुर भेज दिया। स्वामीजी प्यार से दत्त को खोखा कहते थे। (खोखा बगाल मे बच्चे को कहते हैं)

स्वामीजी और सुभाष बाबू

स्वामीजी और सुभाषचन्द्र बोस मे गहरे सम्बन्ध थे। सन् 1939 मे त्रिपुरी कांग्रेस मे जब पट्टाभि सीतारामैया के मुकाबले मे अध्यक्ष पद पर सुभाष बाबू विजयी हुए तो उन्हे बडी प्रसन्नता हुई। सुभाष बाबू को उन दिनो तीव्र ज्वर था। 105 डिग्री बुखार की हालत मे स्ट्रेचर पर अधिवेशन मे आते थे। डा० पट्टाभि और डा० गिल्डर ने स्वामी जी का हाथ पकड कर कहा अब सुभाष का जीना मुश्किल है। कांग्रेस मे सुभाष ने समानान्तर सरकार के बारे मे कहा था। बाद मे स्वामी जी बम्बई मे सुभाष बोस से मिलने गये। सुभाष उन दिनो सेंडहर्स्ट रोड पर पारीख बिल्डिंग मे ठहरे हुए थे। स्वामी जी ने सुभाष बाबू से त्रिपुरी कांग्रेस मे समानान्तर सरकार की जो बात कही थी उसके बारे मे जानकारी चाहा, तो उन्होने बताया कि मैं जब योरोप गया था तब वहाँ के विशिष्ट राजनीतिज्ञो से मिला था। मुझे पता चला कि युद्ध छिडने वाला है, हमे दुश्मन के खतरे मे होने के समय का उपयोग करना चाहिये। सुभाष का स्पष्ट मत था कि अगर समझौते से स्वराज्य लिया तो देश सौ साल पीछे पड जायेगा। हमे स्वतत्रता क्रान्ति से ही प्राप्त करनी चाहिये। समझौते से तो देश के टुकडे हो जायेंगे, यह कहते हुए उनकी आँखो से आँसू आ गये।

अलविदा कांग्रेस, अलविदा !

सन् 1939 के अक्टूबर महीने मे वर्धा मे ए० आई० सी० सी० की मीटिंग हुई। वर्धा की ए० आई० सी० सी० की मीटिंग मे स्वामीजी ने कहा कि अब मेरे लिए कांग्रेस मे रहना मुश्किल होगा। मैं आँखो से देख रहा हूँ कि आजादी आ रही है लेकिन उस आजादी मे मेरे जैसे लोगो को जेल के सीखचो मे बद रहना पडेगा। मैं आँखो से देख चुका हूँ कि सुभाष के साथ इन नेताओ ने कैसा व्यवहार किया है। नेता लोग देश को पीछे ले जा रहे हैं। शायद यह उनके कांग्रेस मे बोलने का समय आखिरी था।

6 वर्ष की जेल

वर्धा से वापिस ब्यावर आते ही सन् 1939 के नवम्बर महिने मे ही स्वामी जी को गिरफ्तार कर लिया और सन् 1945 के मई महिने मे जेल से रिहा किया गया।

राजस्थान से स्वामी जी का रियासतो मे प्रवेश करना मना था। परन्तु विभिन्न भेष धारण करके वे रियासतो मे जाया करते और लोगो से सम्पर्क रखते थे।

ट्रेड यूनियन के नेता

स्वामी जी मजदूरो के सगठन के लिए सन् 1920 से ही दिलचस्पी रखते थे। मजदूरो का सगठन करने व आन्दोलन का नेतृत्व करने की वजह से कई बार निर्वासित किये गये। स्वामी जी लगातार सात साल तक राजपूताना मध्य भारत ट्रेड यूनियन कांग्रेस के सभापति रहे थे। सन् 1945 के अक्टूबर महीने मे स्वामी जी ने राजपूताना मध्य भारत-ट्रेड यूनियन काग्रेस का एक विशाल सम्मेलन बुलाया। सम्मेलन की सफलता के लिये पडित जवाहरलाल नेहरू ने भी सदेश भेजा।

आजादी के बाद भी

स्वामी जी को आजादी मिलने के बाद भी मजदूर और किसानो के आन्दोलनो का नेतृत्व करने के कारण कई बार जेल और निर्वासन भोगना पडा। सन् 1948 मे अखिल भारतीय मजदूर नेताओ की गिरफ्तारी के समय स्वामी जी को भी अजमेर जेल मे नजरबन्द रखा गया। बाद मे रिहा होने के बाद हर वक्त निर्वासन का आज्ञा पत्र निर्वासन की अवधि खत्म होने पर कांग्रेस सरकार दे दिया करती थी।

उसी प्रकार स्वामी जी को बाद मे भी कई बार कई आन्दोलनो का नेतृत्व करने की वजह से सजाएं भुगतनी पडी।

स्वामी जी ने त्याग, तपस्या और आजादी के आन्दोलनो मे जो भयकर यातनायें सही है उनका आदर हर विचार के आम नागरिक व नेता लोग करते रहे है और सदा उनके आगे नतमस्तक होते रहे है।

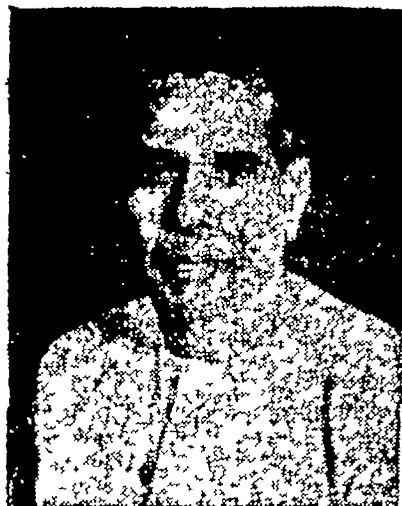
स्वामी जी नही रहे

और 29 दिसम्बर, 1971 का दिन। इसी दिन समाचार थे कि स्वामी कुमारानद नही रहे। इस क्रान्तिकारी का निधन नई दिल्ली के विलिंडगन अस्पताल मे पेट की बीमारी से हो गया। उनकी अन्त्येष्टि के अवसर पर उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए पडित सुन्दरलाल ने कहा कि कुमारानन्द भारत के स्वाधीनता आन्दोलन के एक महान एव अत्यन्त मूल्यवान योद्धा थे।

प्रेरणा के स्रोत

इस 85 वर्षीय वयोवृद्ध क्रांतिकारी, अजेय स्वातत्र्य योद्धा और अडिग कम्युनिस्ट नेता का जीवन स्वय मे एक आदर्श प्रेरणा स्रोत है।

श्री कुंज बिहारी लाल मोदी, अलवर



जन्म : सन् 1901

अवसान : 4 दिसम्बर 53

जन्म और बचपन

स्वर्गीय श्री कुंजबिहारीलाल मोदी राजस्थान के प्रवेश द्वारा अलवर रियासत मे स्वतत्रता सग्राम के अग्रिम सूत्रधारो मे थे। आपका जन्म 1901 मे रियासत के ग्राम कठूमर मे हुआ। आपके पिताजी श्री जुगलकिशोर जी मुशी राजस्व विभाग मे पदाधिकारी थे और स्व० मोदी जी उनके द्वितीय पुत्र थे। 13 वर्ष की उम्र मे मोदी जी का विवाह हो गया और उसी वर्ष उनके पिताजी का देहान्त हो गया।

कानूनगो के पद पर नियुक्ति

16 वर्ष तक की उम्र मे वे अध्यवसाय मे लगे रहे तथा लगनशील होने के कारण वे इसी उम्र मे हिन्दी, उर्दू और फारसी भाषा मे पारगत हो गये। उनकी विशेष योग्यताओ को देखते हुए रियासत के राजस्व विभाग मे ही कानूनगो के पद पर उन्हे नौकरी पर ले लिया गया।

राष्ट्रीय चेतना का उदय

सरकारी नौकरी मे ही मोदी जी का सम्पर्क आर्यसमाज आन्दोलन से हुआ और उनकी गोष्ठियो मे ही वे समाज सुधार पर अपने लेख और कविता पढने लगे। उनकी राष्ट्रीय चेतना मे 1919 के रौलट एक्ट ने आघात पहुँचाया और 13 अप्रेल, 1919 मे जब जलियावाला बाग हत्याकाण्ड घटित हुआ तो उनके दिल और दिमाग पर मर्मान्तिक प्रभाव घटित हुआ तथा वे अपने साथियो के बीच राष्ट्रीयता की भावना फैलाने लगे।

बड़े हौसले का काम

राजस्थान की देशी रियासतो मे सामन्तो तथा जागीरदारो का उन्मुक्त जुल्म था। अग्रेजो के अधीन तो फिर भी अदालती कार्यवाहियाँ सक्षम थी, किन्तु ऐसा न्याय रियासतो

मे दुर्लभ था। अतः गुलामी के खिलाफ और वह भी सरकारी नौकरी मे रहते हुए, स्वाधीनता और राष्ट्रभक्ति की चर्चा करना वडे हौसले का काम था।

राजकीय सेवा का त्याग

जब रियासत के पुण्य विभाग मे आप कामदार थे तो मोदीजी की गतिविधियो पर अंकुश रखा जाने लगा। उनकी स्वच्छन्दता और राष्ट्रीय भक्ति को देखकर रियासत के अधिकारी उन्हे अनेक प्रकार के कार्यालय सम्बन्धी त्रास देने लगे। तब मोदीजी ने उचित समय को देखकर 1930 मे रियासत की नौकरी छोड दी।

खादी के वस्त्र और गांधी टोपी

सरकारी नौकरी से मुक्त होते ही स्व० मोदी जी ने जोर शोर से राष्ट्रीय स्वाधीनता का कार्य प्रारभ कर दिया और वे अलवर रियासत मे पहले व्यक्ति थे जिन्होने खादी के वस्त्र और गाँधी टोपी पहनना प्रारभ किया। उस वक्त की घटना उनके 'अलवर पत्रिका' मे छपे लेख मे उनकी मुँह जवानी उद्धृत है।

सफेद टोपी का राजघरानो मे आतंक

1931 मे हमने रियासतो की गुलामी की प्रतीक उम रग विरगी पगडी को भी छोड दिया जो सरकारी आज्ञा से हर नागरिक को पहननी पडती थी और अपने साथी गुरु वृजनारायण व अलवर के राष्ट्रीय कवि प० हरनारायण शर्मा किंकर के साथ खादी के वस्त्र तथा गाँधी टोपी पहनने लगे। एक दिन जब तत्कालीन महाराजा जयसिह ने हमे इस पोशाक मे देखा तो नाजिम के जरिये हमे वुलाने के आदेश दिये गये।

मि० अलखधारी उस वक्त रियामत के एक मिनिस्टर थे। उनके सामने हमे पेश किया गया। गुरु वृजनारायणाचार्य के साले श्री लक्ष्मीकान्त को गुरुजी के एवज मे बुलाया गया था जो सरकारी वर्दी मे थे और मैं खादी पहिने हुए था, हाँ टोपी के वजाय खादी का साफा था।

श्री अलखधारी ने हम दोनो से हाथ मिलाया और मुझ से पूछा कि "देखो हमें मालूम हुआ है कि तुम लोग वहुत सारी सफेद टोपियाँ पहनकर वाजार मे घूमते हो?" मैने कहा कि जनाव मैं तो अकेला हूँ, वहुत सारी टोपियाँ कैसे पहन सकता हू?" मि० अलखधारी हंस पडे और कहा कि, "नही मेरा मतलव है कि आप और आपके दोस्त सफेद टोपी पहनते हैं और आप जानतें हैं कि सफेद टोपी शोक सूचक है, क्योकि अपने यहाँ कोई मर जाता हैं तव सफेद वस्त्र पहनते हैं।"

मैंने उनमे कहा कि "जनाव! अपने यहाँ तो मूँछे मुँडवाना भी शोक प्रदर्शन होता है और इधर मैं और उधर आप भी मूँछे मुँडवाते हैं तो फिर सफेद टोपी ने क्या विगाडा?

सफेद टोपी को सरकार की चुनौती

इस पर अलखधारी जवरदस्त नाराज होकर शासन के स्वर मे वोले कि हम कुछ नहीं सुनना चाहते। अगर आप लोग सफेद टोपी पहनोगे तो गभीर परिणाम भुगतने

होगे ।" आतक का ऐसा वातावरण भी मोदी जी को विचलित नही कर सका । उन्होने पूरे उत्साह से शहर के नागरिको को सफेद टोपिये पहनने के लिए प्रेरित किया और राष्ट्रीय नेताओ के आह्वान पर 26 जनवरी को राष्ट्रीय दिवस धूमधाम से मनाया और तभी से अलवर मे जगह-जगह तिरगा झडा फहराने लगे ।

राष्ट्रीय कार्यकर्त्ताओ का संगठन

1933 मे अलवर रियासत के महाराजा श्री जयसिह अपनी निर्भीकता से अ ग्रेजो के कोप के भाजन हो गये और उन्हे देश निकाला दे दिया गया । अ ग्रेज रेजीडेंट के प्रतिनिधि रियासत के काम देखने लगे । मोदी जी के साथ तब तक अनेक राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता आ जुडे और उनका एक छोटा सा सगठन बन गया जो रियासत मे निर्भीकता से राष्ट्रीय विचारो और स्वाधीनता तथा प्रगति का सदेश लेकर गाँव-गाँव मे घूमने लगा जिनमे स्व० मोदी जी के अलावा सर्वश्री प० सालगराम, प० हरनारायण शर्मा, मोदी नत्थूराम, इन्द्रसिह आजाद, लक्ष्मणस्वरूप त्रिपाठी, डा० मुहम्मद अली व श्री राधाकृष्ण, अब्दुल शकूर जमाली व लच्छीराम सौदागर थे ।

जेल में ठूंसने के अवसर की खोज

अ ग्रेज रेजीडेन्ट के प्रतिनिधि की नजर राष्ट्रीयता के इन दीवानो पर कडी से कडी होती गई और उन्हे जेल मे ठू सने के अवसर खोजे जाने लगे । वह अवसर भी शीघ्र आ गया ।

पहलीबार तिरंगे झंडे के नीचे अंग्रेज विरोधी प्रदर्शन

1937 मे जब अलवर के महाराजा जयसिह का देहान्त लन्दन मे अनिश्चित स्थिति मे होने के समाचार आये तो आजादी के इन परवानो ने इस अवसर को उपयुक्त समझ कर अ ग्रेजो के खिलाफ रियासत की जनता को जगह-जगह भडकाना प्रारम्भ किया और पहली बार अलवर शहर मे एक आमसभा का आयोजन किया गया जिसमे तिरगे झडे के नीचे अ ग्रेजो के विरुद्ध स्व० मोदीजी ने और उनके साथियो ने व्याख्यान दिये ।

गिरफ्तारियें और दमन चक्र

रेजीडेन्ट के प्रतिनिधि ने तत्काल दमन की कार्यवाही प्रारम्भ करदी और स्व० मोदीजी सहित उनके साथियो को रात मे ही छापे मार कर गिरफ्तार कर लिया । शहर में सनसनी फैल गई थी । लोगो की उत्तेजना से बचने के लिए व दमनचक्र कडा करने के लिए गोपनीय ढग से प्रारम्भिक अदालती कार्यवाही प्रारम्भ की गई और बहुत जल्दी उसे समाप्त कर स्व० मोदीजी और प० सालगराम, डॉ० मुहम्मदअली व श्री जमाली को 2-2 वर्ष का कठिन सश्रम कारावास दिया गया ।

हाईकोर्ट का फैसला

अलवर रियासत की जनता मे इसकी तीव्र प्रतिक्रिया हुई और कुछ साहसी वकीलो ने अलवर रियासत की हाईकोर्ट मे निचली अदालत के फैसले के खिलाफ अपील

की, हाई कोर्ट ने भी राष्ट्रीय चेतना फैलाने और राजद्रोह के अपराध मे सबकी 2 साल की कडी सश्रम की कैद की सजा बहाल रखी।

जेल जीवन की सुर्खियें

जेल मे जालिम के हाथो से इन चारो परवानो पर कडा जुल्म ढाया जाने लगा कि जिसमे भविष्य मे लोग आजादी की बात करना भूल जाए। 5-10 सेर रोज अनाज चक्कियो से पिसवाया जाता था और दरी निवार भी इनसे बुनवाई जाती थी। दुर्दान्त अपराधियो की तरह इनके पैरो मे बेडी और हाथो मे हथकडी डालकर चौबीस घटे रखा जाने लगा।

जेल में भी अन्याय के विरुद्ध संघर्ष

स्व० मोदीजी ने इन यातनाओ के खिलाफ जेल मे ही संघर्ष छेड दिया और आमरण अनशन प्रारम्भ किया जिसके फलस्वरूप अधिकारियो ने यातनाओ को तो कम किया किन्तु मोदीजी के कारावास की अवधि एक महीने और बढा दी। अक्टूबर, 1939 मे पूरे 24 महिनो बाद इन्हे जेल से रिहा किया गया।

अलवर मे प्रजामंडल की स्थापना

जेल से आने के बाद स्व० मोदीजी के प्रयत्नो से सभी कार्यकर्त्ताओ ने अलवर राज्य प्रजामडल की स्थापना की तथा उत्तरदायी शासन की आवाज बुलन्द होने लगी। 1939 मे प्रजामडल के प्रयत्न से रियासती सरकार ने अलवर शहर मे निर्वाचित नगरपालिका का गठन किया और 1940 मे प्रजामडल का भी रियासत की सस्थाओ मे पजीकरण किया गया। 1941 मे स्व० मोदीजी अलवर राज्य प्रजामडल के प्रधानमत्री निर्वाचित किये गये।

अगस्त क्रांति में नजरबंदी

1942 के भारत छोडो आन्दोलन की राष्ट्रीय जागृति मे स्व० मोदीजी को नजरबद किया गया। अलवर प्रजामडल के कार्य मे तेजी थी तथा श्री शोभाराम की अध्यक्षता तथा श्री भोलानाथ के प्रधान मन्त्रित्व मे नये कार्यकर्त्ता प्रजामडल की तरफ आकर्षित होने लगे।

अलवर पत्रिका का प्रकाशन

7 जनवरी, 1944 को स्व० मोदीजी ने राष्ट्रीय जागृति मे एक और मजबूत कड़ी जोड़ते हुए "अलवर पत्रिका" साप्ताहिक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया जिसका उद्घाटन पत्रकार श्री सत्यदेव विद्यालकार ने अलवर पधार कर किया। अलवर पत्रिका थोडे ही समय मे अलवर के घर-घर मे राष्ट्रीय प्रचार का सबल माध्यम बन गई।

राजपूताना रियासती कार्यकर्त्ता संघ

3 दिसम्बर, 1944 को अलवर मे राजपूताना रियासती कार्यकर्त्ता सघ का प्रथम अधिवेशन सम्पन्न हुआ, जिसके स्वागताध्यक्ष स्व० मोदीजी थे। इस अधिवेशन मे राजस्थान

के प्रमुख राजनैतिक नेता स्व० जयनारायण व्यास, माणिक्य लाल वर्मा, हीरालाल शास्त्री, बाबू राजबहादुर, मा० आदित्येन्द्र, कवि सुमनेश जोशी तथा मध्य भारत के प्रसिद्ध नेता गोपीकृष्ण विजयवर्गीय व सरदार हरलालसिंह, रामकरण जोशी पधारे थे ।

गिरफ्तारियें और रिहाई

अलवर राज्य प्रजामडल की तब तक गतिविधियाँ इस जिले मे चारो तरफ प्रारम्भ हो गई थी । रियासती सरकार ने तब प्रजामडल के नेताओ को 2 फरवरी, 1946 मे डिटेन्शन एण्ड रेस्ट्रीक्शन ऑरडिनेन्स के तहत गिरफ्तार कर लिया, जिनमे सर्व श्री मा० भोलानाथ, शोभाराम, काशीराम व मोदीजी थे । प्रबल जनमत के आगे सरकार को इन्हे शीघ्र छोडना पडा ।

अलवर पत्रिका से जमानत

जेल से रिहा होने के बाद मोदीजी ने अलवर पत्रिका के द्वारा राष्ट्रीय गतिविधियो को तीव्रगामी विस्तार देना प्रारम्भ किया जिससे घबराकर 15 अगस्त, 1946 को अलवर स्टेट प्रेस (इमरजेन्सी पावर) के तहत इनसे 2500 रुपये की नकद जमानत माँगी गई ।

उत्तरदायी शासन की माँग

अ ग्रे जो के जाने की तब पृष्ठभूमि तैयार हो चुकी थी, अत रियासतो की जनता मे उत्तरदायी शासन के लिये निर्भीकता आ चुकी थी । अत अगस्त, 1946 मे अलवर का जन आन्दोलन तेज हुआ और फिर उसमे भाग लेते हुए स्व० मोदीजी को 28 अगस्त, 1946 को गिरफ्तार कर लिया गया ।

सितम्बर, 1946 मे भारत मे स्व० प० जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में अन्तरिम राष्ट्रीय सरकार बनी और 15 अगस्त, 1947 में देश अ ग्रे जो से आजाद हो गया ।

कॅसर का प्राणघातक रोग और अवसान

मोदीजी ने स्वतन्त्रता के बाद पूरी तरह अपना जीवन अखबार में लगा दिया और 21 सितम्बर, 1949 को पत्रकार सम्मेलन का आयोजन अलवर में किया । प्रथम कारावास की यातनाओ से ही मोदीजी पर कैन्सर के आघात हो चुके थे, अत अनेक आपरेशनो के बाद भी 4 दिसम्बर, 1953 को सवाई मानसिंह अस्पताल मे स्वतत्रता सग्राम का यह निर्भीक योद्धा अपने अन्तिम ऑपरेशन में बचाया न जा सका और एक आजाद देश के नीले आकाश के नीचे महान् भारतीय जनता के सुख स्वप्न की आशा लिए वे सदा-सदा के लिये चिर निद्रा में सो गये ।

लाला खूबराम सर्राफ, भादरा-बीकानेर



जन्म सम्वत् 1945 वैशाख शुक्ला 3, [सन् 1888]

अवसान सन् 1943

पीड़ित मानवता की सेवा से भी भय

लाला खूबराम सर्राफ का जन्म बीकानेर रियासत के भादरा ग्राम मे सम्वत् 1945 की वैशाख शुक्ला 3 को भादरा के एक सम्पन्न अग्रवाल परिवार मे हुआ था। आपके पिता लाला राम नारायण भादरा मे अपना व्यवसाय करते थे। लाला खूबराम सर्राफ की शिक्षा-दीक्षा भादरा और बीकानेर मे हुई थी। बचपन से ही इनका ध्यान लोक सेवा की ओर प्रवृत्त हो गया था और समाज के पिछड़े वर्ग तथा अभावग्रस्त लोगो की सेवा मे इन्होने अपने आपको खपा दिया था। इनकी सेवा का प्रमुख कार्यक्षेत्र गगानगर जिला और भादरा तहसील ही था। अकाल, अनावृष्टि और महामारी आदि के समय पीडित मानवता की सेवा के इनके शुद्ध सात्विक कार्यों पर भी महाराजा गगासिह और उनकी सरकार की कोप-दृष्टि रहती थी। उसमे भी उन्हे हर समय राजनैतिक षडयन्त्र का भय बना रहता था।

बीकानेर षड़यंत्र केस के अभियुक्त

लाला खूबराम सर्राफ भारत प्रसिद्ध बीकानेर षडयन्त्र केस मे एक प्रमुख अभियुक्त बनाए गए थे। 1932 मे चलाया गया राजद्रोह का यह मुकदमा अपने ढग का एक ही था। बीकानेर के दमन का यह एक नमूना था। जहाँ भी कहीं वाचनालय, पुस्तकालय, सेवा-समिति अथवा ऐसी किसी निर्दोष सस्था के रूप मे कुछ थोडी सी भी हलचल दिख पड़ती थी वही से बीकानेर राज्य का शासन, वहाँ के किसी प्रमुख व्यक्ति के विरुद्ध, राजद्रोह एव षडयन्त्र का कोई सगीन मुकदमा बना दिया करता था।

बीकानेर के प्रतिगामी महाराजा और उनका शासन

बीकानेर महाराजा गगासिह की शासन नीति दकियानूसी और प्रतिगामी थी। उनका शासन मध्यकाल के शासन का एक नमूना था। दमन, उत्पीडन, निर्वासन और

शोषण उनकी शासन नीति के मूलमत्र थे। 1932 का राजद्रोह और षडयत्र का मुकदमा इसी दुर्नीति का नमूना था। उसका एकमात्र उद्देश्य सारे राज्य मे आतक पैदा कर लोगो को भयभीत करना था। सेवा-समितियो, वाचनालयो, पुस्तकालयो और शिक्षा-सस्थाओ के रूप मे जो भी थोडी सी हलचल राज्य मे जहाँ कही दीख पडती वहाँ किसी बहाने से उस सस्था का गला घोटना राज्य शासन का लक्ष्य बन गया था। खादी भण्डार भी महाराजा ने अपने राज्य मे खुलने नही दिया।

इसी पृष्ठभूमि मे लाला खूबराम को बीकानेर षड्यत्र केस का अभियुक्त बनाया गया। उन पर ताज़िरात बीकानेर की 67 दफा 7 (ग), 124 (क) और 120 (ख) के सगीन आरोप लगाए गए थे। 377 (ग) धारा के अनुसार राजघराने के किसी भी व्यक्ति के विरुद्ध किसी भी प्रकार से घृणा, द्वेष या तिरस्कार फैलाना अपराध ठहराया गया था जिसके लिए आजन्म कैद और जुर्माने की सजा दी जा सकती थी। धारा 124 (क) मे बीकानेर के महाराजा और उसकी सरकार के ही नही, बल्कि किसी राजा और उसकी सरकार के भी विरुद्ध घृणा पैदा करना अपराध ठहराया गया था। इसके लिये आजन्म या कम कैद की सजा के साथ जुर्माना भी किया जा सकता था। 120 (ख) मे षडयंत्र के लिए इसी सजा का विधान किया गया था।

राजद्रोह और षड़यंत्र का संगीन मुकदमा

सर मनुभाई मेहता तब बीकानेर के दीवान थे और उनके हुक्म से राजद्रोह एव षडयन्त्र का यह सगीन मुकदमा चलाया गया था। जनवरी, फरवरी और मार्च 1932 मे अभियुक्त गिरफ्तार किये गये थे। बिना मुकदमा चलाये उनको तीन मास तक हवालात मे बन्द रखा गया। डिप्टी इन्सपेक्टर जनरल पुलिस कुँवर सबलसिह को 12 अप्रेल, 1932 को दीवान ने मुकदमा दायर करने का अधिकार दिया और 13 अप्रेल को जिला जज बाबू बृजकिशोर चतुर्वेदी की अदालत मे मुकदमा शुरू हुआ।

महाराजा के विरुद्ध घृणा और द्वेष फैलाने का आरोप

पुलिस की ओर से पेश किये गये इस्तगासे मे कहा गया था कि मार्च, 1931 से वे सब अभियुक्त बीकानेर महाराजा और उनकी सरकार के विरुद्ध घृणा-द्वेष फैलाने के लिये षडयन्त्र करने मे लगे हुए थे। इन्होने दिल्ली के "प्रिसली इण्डिया", अजमेर के "त्याग-भूमि" और दिल्ली के "रियासत" आदि के सम्पादको के साथ मिलकर राजद्रोह फैलाने के लिये षडयन्त्र रचा था। इन पत्रो के कुछ लेख इसके समर्थन मे बतौर प्रमाण के पेश किये गये थे। आगरा की 'कष्ट निवारक समिति' के मन्त्री श्री रामस्वरूप की ओर से प्रकाशित किए गए एक पर्चे को राजद्रोही ठहरा कर उसके प्रकाशित करने के लिये किये गए षडयन्त्र का आरोप भी अभियुक्तो पर लगाया गया था। सघ-शासन मे बीकानेर को शामिल करने के सम्बन्ध मे कांग्रेस को भेजे जाने वाले मेमोरेंडम को तैयार करने और उस पर लोगो के हस्ताक्षर लेना भी एक षडयन्त्र माना गया था जिसके लिये अभियुक्त अपराधी थे।

और कहा गया था कि उन्होंने इण्डियन स्टेट्स पीपल्स फेडरेशन के साथ मिलकर भी राजद्रोही प्रवृत्तियो मे भाग लिया था। राजद्रोह के फैलाने के लिए इस्तगासे मे कहा गया था कि अभियुक्तो ने 'त्याग भूमि' के सम्पादक श्री हरिभाऊ उपाध्याय और बाबा नृसिंहदास के लिये चदा इकट्ठा किया था। चुरू मे हुई सभा मे दिए गए स्वामी गोपालदासजी के भाषण को राजद्रोही बताकर उस सभा की रिपोर्ट 'प्रिसली इण्डिया' मे छपने के लिये भेजने का आरोप श्री सोहनलाल और श्री प्यारेलाल पर लगाया गया था।

राजद्रोह का मुकदमा और न्याय का नाटक

श्री खूबराम सर्राफ ने अन्य मित्रो के साथ राज्य शासन को लिखा था कि हमारा विश्वास बीकानेर सरकार के न्याय पर से उठ गया है, इसलिए हमने अदालत की कार्यवाही मे भाग न लेने का निश्चय किया है।

फिर भी न्याय का यह नाटक होता रहा और अभियुक्तो को निम्न प्रकार सजायें सुना दी गई —

श्री सत्यनारायण सर्राफ	7 वर्ष
श्री खूबराम सर्राफ	5 वर्ष
स्वामी गोपालदास	4 वर्ष
श्री चन्दनमल बहड	3 वर्ष
श्री बद्री प्रसाद सरावगी	2 वर्ष
श्री प्यारेलाल सारस्वत	6 मास
श्री सोहनलाल शर्मा	3 मास

स्वामी गोपालदास ने शुरू से ही मुकदमे मे कोई भाग नही लिया। समाचार पत्रो मे इस मुकदमे की विशेष चर्चा होना स्वाभाविक ही थी।

अकाल पीड़ितों की और गोवंश की सेवा

अपने कारावास की लबी अवधि पूरी करने के बाद लाला खूबराम सर्राफ 1939 से 41 तक अकाल सेवा के कार्य मे तन, मन और धन से जुट गए। उन्होने अकाल पीडित लोगो के लिए गाँव-गाँव घूम कर वस्त्र, कम्बल और अनाज एकत्रित किया और अकाल ग्रस्त एव अभाव ग्रस्त लोगो मे उनके वितरण मे दिन-रात लगे रहे। इसके साथ चारे व घास के अभाव मे मरणासन्न गोवश की रक्षा के लिए भी उन्होने जी तोड कोशिश की। उन्होने स्थान-स्थान पर गौ-सेवा-सघ, गौ-रक्षा संस्थान, पिंजरापोल-सस्थान आदि स्थापित किए और अकाल की विभीषिका से जनशक्ति और पशु-शक्ति को बचाने का प्रशसनीय कार्य किया।

जनता की अपार श्रद्धा और अपार विश्वास

लाला खूबराम सर्राफ की इन सेवाओ से जनता को असाधारण राहत मिली। जहाँ पीडित जनता का उन पर अगाढ विश्वास था वहाँ दूसरी ओर लाला खूबराम सर्राफ के इन कार्यों से बीकानेर के महाराजा की कोप-दृष्टि इन पर निरन्तर बढती जा रही थी।

महाराजा और उनके शासन ने जगह-जगह पर उन अनेको अकाल पीडित लोगो को डरा धमका कर वितरित किए गए कपडे, कम्बल आदि राहत वस्तुए लाला खूबराम सर्राफ को वापिस लौटा दी। इसके अतिरिक्त महाराजा के शासन ने उन कई गौ-शालाओ को बन्द करवा दिया जो लाला खूबराम सर्राफ द्वारा खोली गई थी। यहाँ तक ही नही हजारो नागरिको के सामने पुलिस अधिकारियो के द्वारा लाला खूबराम सर्राफ को अनेको बार बुरी तरह अपमानित किया गया। उनके सेवा कार्यों की खिल्ली उडाते हुए उन्हे कहा जाता कि "राज्य मे एक तू ही धर्मात्मा का बच्चा शेष रहा है, बदमाश की सारी बदमाशी निकाल दी जाएगी।"

अगस्त क्रांति में नजर बंदी

लाला खूबराम सर्राफ 1942 मे अगस्त मे होने वाली कांग्रेस महासमिति की बैठक मे शामिल होने बबई गए थे और बबई से लौट कर आते ही 14 अगस्त को उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया और डिफेन्स ऑफ इण्डिया रुल्स मे उन्हे अनिश्चित काल के लिये नजर बद करके बीकानेर की जेल मे रख दिया गया। वे 1943 मे रिहा किए गए।

सन् 1943 में अवसान

रिहा होने के बाद अधिक समय तक लाला खूबराम जीवित नही रह सके। 1943 के अत मे 55 वर्ष की अवस्था मे उनका स्वर्गवास हो गया।

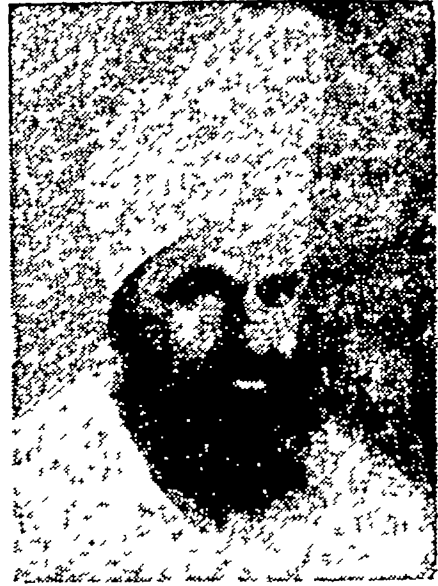
अंतिम श्रद्धांजली

राजस्थान के प्रसिद्ध लोक सेवक श्री रामनारायण चौधरी ने उनके सबध मे अपने ग्र थ मे लिखा है कि—

"श्री खूबराम सर्राफ राजस्थान के एक पुराने मूक सेवक थे। इन्होने जो कमाया उसको जनसेवा मे खर्च किया। उनका हाथ जितना उदार था, हृदय भी उतना ही निर्मल था। इनके दान मे अहता नही विनम्रता रहती थी।"



स्वामी गोपाल दासजी
चूरू-बीकानेर



जन्म सन् 1882

अवसान सवत् 1995 माघ कृष्ण 4

[सन् 1936]

कठिन और कष्टपूर्ण संघर्ष की भूमि

आजादी के सघर्ष मे देश के सभी भागो और वर्गों का योगदान रहा है । यद्यपि तत्कालीन ब्रिटिश भारत की अपेक्षा रियासती भू भागो मे सघर्ष अधिक कठिन व कष्टपूर्ण था, क्योकि ब्रिटिश प्रदेश की अपेक्षा देशी राज्यो मे अशिक्षा, गरीबी, उत्पीडन व शोपण अधिक था । यहाँ की जनता दुहरी गुलामी तथा रूढियो, कुप्रथाओ और अन्धविश्वासो की शृखलाओ मे जकडी हुई थी और तिलक या गाँधी जैसे नेताओ का सीधा नेतृत्व इसे प्राप्त नही था । किन्तु फिर भी यहाँ के सपूतो ने अनेक कष्ट व दमन सहते हुए सहर्ष आजादी की नीव को अपने खून व पसीने से सीच कर अपने कर्त्तव्य का यथोचित पालन किया ।

नव चेतना के जनक

वर्तमान युग मे, स्वामी गोपालदासजी ने, बीकानेर क्षेत्र मे आजादी की इस निशस्त्र लडाई का अनेक मोर्चो पर नेतृत्व किया । न केवल चूरू बल्कि समूचे बीकानेर राज्य और इसके पडोसी क्षेत्रो मे भी जन-जागृति और नवचेतना लाने का श्रेय स्वामी गोपालदासजी को है । स्वामीजी ने जन-जागृति लाने और जनता को अपने अधिकार और कर्त्तव्य का बोध कराकर उनके लिए सघर्ष करने हेतु जनसेवा और ठोस रचनात्मक कार्यो के मार्ग का अनुगमन किया और राह मे आने वाली बाधाओ की जरा भी परवाह नही की । स्वामीजी ने इस क्षेत्र की जनता की अनुपम सेवा की और इसके सर्वांगीण विकास के लिए उन्होने अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया ।

जन्म : साधु-समर्पण और शिक्षा

स्वामी का जन्म चूरू तहसील के एक गाँव भैरूसर मे (जो कि चूरू से 7 कोस उत्तर की ओर है) सन् 1882 के लगभग चौधरी बीजाराम के घर हुआ था। अल्पावस्था मे ही उनके सिर से पिता का साया उठ गया तो उनकी माँ नौजी देवी बालक गोपालदास को साथ लेकर चूरू चली आई और मेहनत मजदूरी करके उनका पालन पोषण करने लगी। नौजीदेवी ने बालक गोपालदास को छोटे मन्दिर के महत मुकन्ददासजी को सौंप दिया। बालक को होनहार देखकर महत जी ने उसे अपने पास बडे स्नेह से रख लिया और शिक्षा प्राप्त कराने हेतु उसे चूरू के सुप्रसिद्ध विद्वान प्रात. स्मरणीय प० कन्हैयालालजी ढूँढ की पाठशाला मे भेज दिया जहाँ कुशाग्र बुद्धि बालक गोपालदास ने विधिवत् शिक्षा प्राप्त की। आयुर्वेदीय चिकित्सा का ज्ञान भी उन्होंने यही प्राप्त किया।

गद्दी के उत्तराधिकारी

बालक गोपालदास को सब प्रकार से योग्य समझ कर महत मुकन्ददासजी ने उन्हे अपना पट-शिष्य बनाया और वि० स० 1951 मे उनका नाम बही-भाटो की वही मे लिखा दिया। स० 1958 वि० मे मुकन्ददासजी का स्वर्गवास होने पर गोपालदासजी ने जेठ बुदी 4 स० 1958 को उनका मेला किया और वे इस मन्दिर के महत बने।

माता और गुरु की असाधारण भक्ति

बालक गोपाल दासजी की प्रवृत्ति शुरू से ही सार्वजनिक कार्यों की ओर बहुत अधिक थी। 12-13 साल की अवस्था मे ही वृक्ष लगाने और उनकी रक्षा करने मे उनकी विशेष रुचि हो गई थी। ऐसा उनके लिखे हुए सन् 1895 के एक पत्र से प्रकट होता है। बीज रूप मे उनके मन की यह भावना आगे चलकर वटवृक्ष के रूप मे पल्लवित हुई। वास्तव मे वे प्रकृति के लाडले पुत्र थे और हरी भरी भूमि व प्राकृतिक दृश्यो को देखकर गद्गद् हो जाते थे। बालक गोपालदास अपनी माता को बहुत अधिक प्यार करते थे। स्वावलम्बन का पाठ भी उन्होने बचपन मे उन्ही से सीखा था क्योकि अत्यन्त कष्ट और अभाव के क्षणो मे भी उन्होंने किसी के आगे हाथ नही फैलाया था और मेहनत मजदूरी करके आत्मनिर्भरता के मार्ग का ही अनुगमन किया था। सादगी का पाठ स्वामीजी ने अपने शिक्षा-गुरु प० कन्हैया लालजी ढूँढ के जीवन से सीखा था। गुरुजी के प्रति उनके मन मे बडी श्रद्धा थी और हर गुरु पूर्णिमा को स्वामीजी उनके चरण स्पर्श करने के लिए जाते थे।

लोक कल्याणकारी प्रवृत्तियों का समारम्भ

समाज मे फैली हुई अशिक्षा और कुरीतियो के प्रति उनके मन मे बहुत क्षोभ था और वे समाज से इन बुराइयो का उन्मूलन करना चाहते थे। इसके लिए उन्होने अपने कतिपय उत्साही साथियो के सहयोग से वि० स० 1964 मे सर्व-हितकारिणी-सभा की स्थापना चूरू मे की जो आगे चलकर अपने कार्यों की विशिष्टता के कारण चूरू की कांग्रेस कहलाई। इसी सभा के माध्यम से स्वामीजी ने अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये।

पानी का अभाव और पानी का महत्व

एक वार जब स्वामीजी वीकानेर जा रहे थे तो राजलदेसर और डूंगरगढ़ के बीच प्यास के मारे व्याकुल हो गये। ग्रीष्म ऋतु थी और मीलो तक कही पानी का नामो निशान नही था। स्वामीजी ने सोचा कि आज निश्चय ही प्राणमुक्त होगे। लेकिन देवयोग से एक चरवाहा उधर से आ निकला और उसने स्वामीजी को अपनी लोटडी मे से पानी पिलाकर उनके प्राण बचाये। उसी दिन स्वामीजी ने इस मरु-भूमि मे पानी के अभाव को सर्वाधिक अनुभव किया और इसके निवारणार्थ वे कृत-सकल्प हो गये। उस स्थान पर तो सेठ कन्हैया लाल वागला द्वारा स्वामीजी ने एक कुंआ वनवाया ही है किन्तु आगे चलकर उन्होने सैकडो गांवो मे कुंए और कुण्ड वनवाये, तालाव खुदवाए और टूटे-फूटे जलाशयो का जीर्णोद्धार करवाया।

सर्व-हितकारिणी-सभा का व्यापक-दृष्टिकोण

सर्व-हितकारिणी-सभा की स्थापना के समय भी ऐसे नियम वनाये गये थे कि हिन्दु, मुसलमान, ईसाई, जैन और वौद्ध सभी-सभा-के सदस्य वन सकते थे। सर्व-हितकारिणी-सभा के प्रयत्न से वनाये गये धर्म-स्तूप पर स्थापित भगवान श्रीकृष्ण, महावीर और बुद्ध आदि की मूर्तियां आज भी सर्व धर्मों के प्रति स्वामीजी की समादर की भावना को व्यक्त कर रही हैं। लेकिन वे धर्म के नाम पर समाज मे प्रचलित ढोगो के सर्वथा विरुद्ध थे और इसी से सकीर्ण विचारधारा वाले कुछ लोग स्वामीजी व उनकी सस्थाओ के विरुद्ध प्रचार करने मे सलग्न रहते थे। लेकिन यो दाल गलती न देखकर वे लोग गुप्त रूप से इस प्रकार की शिकायतें वीकानेर सरकार को पहुँचाने लगे कि स्वामी गोपाल दास राज्य-विरोधी-कार्यवाहियां करता है, इत्यादि। इसके फलस्वरूप सरकार की आँख स्वामीजी व सर्व-हितकारिणी-सभा पर लगी रही और अनेक वार सभा को सकट की घड़ियाँ से गुजरना पडा।

पुत्री पाठशालाओ का अभिनव प्रयोग

सर्वप्रथम जवचूरू मे सर्व-हितकारिणी-पुत्री-पाठशाला की स्थापना हुई तो वहुत से लोगो ने इसे एक धर्म विरुद्ध कार्य वतलाया और विरोधस्वरूप शाला मे पत्थर वरसाये। लेकिन स्वामीजी समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए नारी-शिक्षा को वहुत आवश्यक समझते थे अत उन्होने इस विरोध की जरा भी परवाह नही की और पुत्री-पाठशाला का सचालन वडे सुन्दर ढग से होता रहा। पाठशाला का पाठ्यक्रम भी सभा की ओर से ही तय होता था और वालिकाओ को पुस्तकें व पढाई का सारा सामान मुफ्त दिया जाता था। वालिकाओ को सीने-पिरोने आदि की भी शिक्षा दी जाती थी और उनमे राष्ट्रीय भावनाए भी भरी जाती थी। चरखे के गीत भी उन्हे गवाये जाते थे। विधवा स्त्रियो को मासिक छात्रवृत्ति देकर शिक्षा दी जाती थी। स्वामीजी के प्रयत्न से शाला का निजी मकान भी वन गया जिसमे उन्होने शिल्प भवन की स्थापना भी करवाई, वोडिंग हाऊस भी खोला

गया तथा बालिकाओ के लिए खेल-कूद व मनोरजन के साधन भी जुटाये गये । नारी शिक्षा के लिए न केवल चूरू में बल्कि अन्य बहुत से नगरो मे भी उन्होने पुत्री-पाठशालाए खुलवाई, रिणी (अब तारानगर) की पुत्री पाठशाला का सचालन तो बहुत वर्षों तक सभा द्वारा ही होता रहा ।

कबीर-पाठशालाए और हरिजन सेवा

अछूतो को शिक्षा देकर उन्हें स्वावलम्बी बनाने के अभिप्राय से स्वामीजी ने उनके लिए "कबीर पाठशाला" की स्थापना की । अछूतो (हरिजन शब्द तब तक इस रूप मे प्रचलित नही हुआ था) के लिए राजस्थान मे पाठशाला खोलना उन दिनो एक आश्चर्यजनक बात ही समझी गई क्योकि अछूतोद्धार आन्दोलन के प्रवर्तक महात्मा गाँधी का अवतरण भी तब तक राजनीति मे नही हुआ था । लेकिन स्वामीजी ने इस बात की आवश्यकता को बहुत पहले ही अनुभव कर लिया था और न केवल चूरू मे बल्कि अन्य अनेक स्थानो मे भी उन्होने प्रयत्नपूर्वक हरिजन पाठशालाए खुलवाई और उनको सहायता दिलवाई । बीकानेर राज्य मे अनिवार्य-शिक्षा की मांग भी सर्वप्रथम यही से की गई जिसके फलस्वरूप राज्य भर मे अनेक प्राथमिक स्कूलें खोली गई ।

लोकसेवी संस्थाओ की शृंखला

इस प्रकार सभा के अन्तर्गत पुस्तकालय, वाचनालय, पुत्री पाठशाला, कबीर पाठशाला, उद्योग-वर्द्धिनी सभा, आतुरायल तथा महिलाश्रम आदि स्थापित किये गये और सभा की शाखाए बीकानेर और जयपुर राज्य के अनेक गाँवो और कस्बो मे स्थापित की गई जिनके द्वारा जनसेवा और जन-जागृति का बहुत कुछ कार्य हुआ ।

संकल्प के धनी और संकल्प-सिद्ध-मनीषी

स्वामीजी अत्यन्त दृढ निश्चय वाले व्यक्ति थे और एक बार निर्णय कर लेने पर विघ्न-बाधाओ और विपदाओ के डर से अपने निश्चय को कभी बदलते नही थे । सर्व-हितकारिणी-सभा की स्थापना यद्यपि वि० स० 1964 मे वे कर चुके थे लेकिन सभा का निजी मकान नही बन पाया था । इसलिए राज्य की अप्रसन्नता और कुछ नासमझ लोगो के विरोध के कारण सभा को बार-बार स्थान बदलना पडता था । इससे क्षुब्ध होकर स्वामीजी ने प्रतिज्ञा की कि जब तक सभा का अपना मकान नही बन जाएगा तब तक अन्न ग्रहण नही करूंगा, और जब तक सभा का निजी मकान नही बन गया तब तक वे फलाहार ही करते रहे और अन्त मे उन्होने किले के ठीक सामने सभा का सत-मजिला-मकान बनवा कर ही अन्न ग्रहण किया । इतनी थोडी सी जगह मे ऐसी भव्य इमारत बना देना स्वामीजी की विचित्र सूझ बूझ और उनके स्थापत्य-कला के ज्ञान का परिचायक है ।

मानवीय सेवा के जीवंत प्रतीक

स्वामीजी का जीवन तो मानो जन सेवा के लिए ही हुआ था । सन् 1917-18

की महामारियो, शीत-ज्वर, प्लेग और इन्फ्लुएजा के समय अपने प्राणों को हथेली पर रखकर निष्काम भाव से उन्होने जो सेवा की उसकी मिसाल मिलना दुर्लभ है। इसी प्रकार अकाल व प्रकृति-जन्य-प्रकोपो के समय वे तन मन से जनता जनार्दन की सेवा करते रहे।

रेगिस्तान की रोकथाम और गोवंश की वृद्धि

स्वामीजी गोवश को भारत के लिए वहुत आवश्यक मानते थे और गोवश की वृद्धि, सुधार व रक्षा के लिए वे आजीवन प्रयत्नशील रहे। रुपये होते हुए भी अर्थ-कष्ट के कारण वन्द होती हुई चूरू की गोशाला को उन्होने नव-जीवन प्रदान किया। यद्यपि इसके लिए उन्हें सम्वन्धित कुछ व्यक्तियो की नाराजी भी सहनी पडी। अकाल के समय वे सव कुछ भुला कर गायो की रक्षा के लिए तत्परता से जुट पडते थे। गायो के हित-साधन और नगर की ओर वढते आ रहे टीलो की रोक थाम के लिए उन्होने वर्षों तक अपना खून पसीना वहा कर हजारो वीघा गोचर भूमि तैयार की, जिससे प्रेरणा पाकर आस-पास के अनेक नगरो मे भी गोचर भूमियाँ तैयार करवाई गई। कहना न होगा कि इन सव को तैयार कराने मे स्वामीजी का पूर्ण योग रहा।

आयुर्वेद द्वारा चिकित्सा की सुविधाएं

आयुर्वेद के प्रति स्वामीजी की वडी आस्था थी। वे स्वय अच्छे चिकित्सक थे और वहुत से उलझे हुए रोगियो का उन्होने सफलतापूर्वक इलाज किया था। उनका निदान वहुत सही होता था। आयुर्वेद को अधिक लोकप्रिय वनाने के लिए उन्होने आयुर्वेद विद्यापीठ आदि के परीक्षा केन्द्र भी चुरू मे चालू करवाये थे। लेकिन अपने लिए ये जितने कठोर थे उतने ही दूसरो के लिए कोमल भी थे, अत रोगी किस प्रकार आरोग्य लाभ करे इस चिन्ता मे वे स्वय घुलने लगते थे।

समस्त शक्तियों का समर्पण राष्ट्र सेवा में

इसी प्रकार राजस्थान भर के कार्यकर्ताओ, प्रचारको, उपदेशको और नेताओ से स्वामीजी के प्रगाढ सम्वन्व थे। राजस्थान के तत्कालीन वरिष्ठ नेताओ की स्वामीजी के वारे मे वहुत ऊँची राय थी। तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओ से भी स्वामीजी सम्वन्वित थे और अनेको पत्रो मे उनके लेख वरावर निकलते थे। योगी, सन्यासी और महात्माओ से भी स्वामीजी का वहुत सपर्क रहता था। वडे-वडे करोडपतियो से भी स्वामीजी का घनिष्ठ सपर्क था और वे उनका पूर्ण विश्वास और सम्मान करते थे। स्वामीजी भी उनके धन का सदुपयोग सार्वजनिक और राष्ट्र हित के कार्यो मे प्रकट या अप्रकट रूप से करवाते ही रहते थे।

राजपूताना प्रान्त की गौरव वृद्धि

वे जनता मे चेतना और जागृति के लिए वडे-वडे नेताओ और व्याख्यान-दाताओ को चूरू मे वुलवाकर उनके भाषण करवाते थे। सभा का वार्षिक उत्सव हर साल वडी

धूमधाम से मनाया जाता था, जिस पर राजस्थान के बाहर से भी विशिष्ठ व्यक्तियो को निमन्त्रित किया जाता था । स्वामीजी स्वय तो खद्दर पहनते ही थे लेकिन खद्दर, चरखें व स्वदेशी वस्तुओ के प्रचार के लिए वे निरन्तर प्रयत्नशील रहे । यद्यपि तत्कालीन बीकानेर राज्य की स्थिति इतनी दमघोट्टू थी कि सभा मे तिलक महाराज आदि नेताओ के चित्र लगा देने मात्र से ही एक तूफान खडा हो गया था और भविष्य मे ऐसा कभी न करने के लिए स्वामीजी को कडी चेतावनी दी गई थी, लेकिन स्वीमीजी ने कभी रत्ती भर भी इन बातो की परवाह नही की और वे आजीवन राष्ट्र-हित और देश-जागृति के कार्यो मे भाग लेते रहे । प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के वे सदस्य थे और प्रान्त की ओर से नेशनल कांग्रेस के लिए अनेक बार डेलीगेट निर्वाचित हुए थे । दिनाक 2 12 24 को प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के प्रधानमन्त्री श्री अर्जुनलालजी सेठी ने स्वामीजी को लिखा था "आप डेलीगेट होकर बेलगांव पधारेंगे तो प्रान्त का गौरव बढेगा ।" कांग्रेस का यह 39वाँ महत्त्वपूर्ण अधिवेशन था जो महात्मा गांधीजी के सभापतित्व मे हुआ था लेकिन स्वीमीजी को तो बस काम करने की ही धुन लगी रहती थी । पद-लिप्सा और प्रदर्शन की भावना से कोई काम नही करते थे ।

बीकानेर षड़यंत्र केस में

सन् 32 मे बीकानेर राज्य मे जब अन्न पर बहुत अधिक जकात लगाई गई तो स्वामीजी ने इसका सार्वजनिक रूप से तीव्र विरोध किया था । उन्होने बीकानेर राज्य के विरुद्ध कोई षडयन्त्र नही किया था । फिर भी जब कतिपय राज्याधिकारियो की साजिश के कारण उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया तो उन्होने मुकदमे की कार्यवाही मे कोई भाग नही लिया, क्योकि वे जानते थे कि बन्दियो के साथ न्याय नही, केवल न्याय का प्रदर्शन हो रहा है ।

आदर्श-बंदी का तीन वर्ष का जेल जीवन

स्वामीजी लगभग 3 वर्ष तक करावास मे रहे, लेकिन वहाँ रहते हुए भी उन्होंने एक आदर्श-बन्दी का जीवन बिताया । दो साल बाद उन्हे पत्र लिखने व पुस्तकें पढने की सुविधा मिल गई तो वे अपना अधिकाश समय अध्ययन मे ही बिताते थे । यो उनकी प्रकृति गभीर थी, लेकिन कभी-कभी बहुत मीठी चुटकिया भी लेते थे । उनका यह विनोदी स्वभाव जेल मे भी बना रहा जो उनके पत्रो से ज्ञात होता है । बीकानेर सेंट्रल जेल को वे एक बढा परिवार मानते थे और बन्दी-गृह के सभी बन्दियो के साथ भाईचारे का सम्बन्ध रखते थे ।

प्रभावशाली-व्यक्तित्व, निस्पृह-वृति और भविष्य-द्रष्टा

स्वामीजी का कद लम्बा, रग गेहूँआ और ललाट प्रशस्त था । सफेद खद्दर की धोती, कुर्ता और साफा, यही उनकी पोशाक थी । उनकी वाणी मे अपूर्व गभीरता थी । जेल-जीवन मे उन्होने दाढी और जूडा रख लिया था, उनके चेहरे पर घनी दाढी खूब फबती थी । स्वामीजी का व्यक्तित्व बडा आकर्षक था और उनके त्याग व बलिदान ने उनके व्यक्तित्व

को और भी अधिक निखार दिया था। अत्यन्त अभावग्रस्त घर मे जन्म लेकर भी वे इतने प्रभावशाली हुए कि बडे-बडे करोडपति उनके चरणो मे झुकते थे। इसका कारण यह नहीं था कि उन्होने कोई मत्र-सिद्ध किया हो, वल्कि यह सब उनकी निस्पृहता का फल था। यदि वे चाहते तो एक बहुत वडी धन-राशि इकट्ठी कर सकते थे। लेकिन ऐसी बात तो कभी उनके मन मे भी नही आई। उनकी ईमानदारी असदिग्ध थी और यही कारण था कि मृत्यु के बाद उनके बटुए मे से सिर्फ डेढ आने की पूँजी निकली थी। भविष्य-दृष्टा वे अवश्य थे। भविष्य मे घटने वाली कई घटनाओ का आभास उन्हे पहले ही मिल जाता था और समय आने पर वे ज्यो की त्यो घटित होती थी। ऐसी अनेक बाते उनके अनन्य साथी महत गणपतिदासजी और वैद्य शान्त शर्माजी ने बतलाई है।

जीवन-मुक्त-व्यक्ति

स्वामीजी को देश भर मे लोगो ने एक राजनैतिक कार्यकर्ता के ही रूप मे ही देखा, पर वे दृष्टि से जीवन-मुक्त थे। उसका प्रभाव कई लोगो पर पडा जिससे वे लोग जीवन मुक्त बनने लग गए थे। स्वामीजी सस्कारो के परिष्कार और आत्म-नियत्रण की साधना से मनुष्य को पूर्णता की ओर ले जाने का प्रयत्न करते थे।

अंतिम कामना की संपूर्ति

स्वामीजी एक कर्मठ राष्ट्र-कर्मी और निष्ठावान जन-सेवी थे। जन-सेवा की यह भावना उनके मन मे महा-प्रयाण तक वैसी ही बनी रही जो उनके अन्तिम पत्र (पौष सुदि 5–1995 वि०) मे भी झलक रही है। पत्र के अन्त मे उन्होने लिखा है—मेरा चित्त इस समय तक बहुत प्रसन्न है और मन मे किसी प्रकार का सकल्प-विकल्प नही है। गगातट पर शरीर छोडने की मेरी बहुत इच्छा थी, वह पूरी हो जावेगी। आप लोग सब आनद-मगल मे रहें और फलते-फूलते रहे।

महा-प्रयाण और अमरत्व

जिन सिद्धान्तो और आदर्शो पर यह तपस्वी जीवन भर चलता रहा और उन्ही के लिए निर्वाण-पद को भी प्राप्त हुआ। माघ कृष्ण 3 वि स 1995 को केवल 57 वर्ष की आयु मे यह कर्मठ मनस्वी महा-प्रयाण कर अमरत्व को प्राप्त हो गया जिसके स्थान की पूर्ति आज तक नही हो सकी है।



श्री गोकुलजी वर्मा
भरतपुर



जन्म : सन् 1882

विदेशी दासता से मुक्त होने की कामना

गत 19 वी शताब्दी के आरम्भ मे ही अ ग्रेजो के सर्वोच्च सेनापति लार्ड लेक को पूर्ण पराजित करके उसके भीषण आक्रमण को सर्वथा विफल करने से भरतपुर राज्य की जनता ने विदेशी शासन विरोधी जिस उत्कट भावना का परिचय उस काल मे दिया था, वह अभी तक यथावत अक्षुण बनी हुई है ।

सन् 1857 मे स्वतत्रता के प्रथम महायुद्ध के दौरान यद्यपि यहाँ के तत्कालीन शासक ने तो अ ग्रेजो का विशेष विरोध नही किया था, परन्तु इस राज्य के सैनिको तथा जनता ने उस युग के स्वतन्त्रता सग्राम के अमर सेनानी तात्या टोपे आदि को पूर्ण सहयोग देकर पहले की तरह पुरानी भावना को पुन प्रदर्शित किया था ।

कालान्तर मे अखिल भारतीय राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस की स्थापना तथा उसके द्वारा देश की स्वतत्रता के लिये किये गये प्रयासो मे भी इस शताब्दी के द्वितीय दशक मे यहाँ के कतिपय उत्साही नवयुवको ने विदेशी दासता से मुक्त होने की तीव्र लालसा से प्रेरित होकर राज्य के बाहर ब्रिटिश भारत के भिन्न-भिन्न स्थानो पर जाकर स्वतत्रता सग्राम मे सक्रिय भाग लिया था ।

राज्य के अंदर रहकर राज्य से बगावत

परन्तु राज्य के अन्दर रहते हुए रियासती शासन तथा ब्रिटिश साम्राज्य शाही से जिन विशिष्ठ विभूतियो ने दीर्घकाल तक डटकर लोहा लिया था, उनमे स्वर्गीय गोकुलजी वर्मा का नाम सर्वप्रथम तथा सर्वोपरि आता है । वे लगभग 30 वर्ष तक राज्य की शोषित, पीडित तथा त्रस्त प्रजा के कष्ट निवारणार्थ निरन्तर जूझते रहे थे ।

जन्म, शिक्षा और स्वतंत्र प्रकृति

श्री गोकुलजी वर्मा का जन्म लगभग 90 वर्ष पूर्व भरतपुर नगर के एक साधारण परिवार मे हुआ था। घर पर ही सामान्य शिक्षा प्राप्त करने के अनन्तर आपने कुछ दिन सार्वजनिक निर्माण विभाग मे राजकीय सेवा तथा ठेकेदारी भी की थी, परन्तु अपनी स्वतन्त्र प्रकृति और फक्कड स्वभाव के कारण आप वहाँ अधिक दिनो तक नही निभ पाये तथा भरी जवानी मे ही सरकारी सेवा के बन्धन तोडकर आपने अपने आपको राष्ट्र की सेवा मे सर्वभावेन समर्पित कर दिया था।

साबरमती आश्रम और भरतपुर का बागी पत्रकार

आरम्भ मे आप कुछ दिन महात्मा गाँधी के साबरमती आश्रम मे सपरिवार रहे थे, जहाँ गाँधीजी आपको 'भरतपुर वाला' कहकर सम्बोधित किया करते थे। वहाँ से पुनः भरतपुर वापिस आकर आपने स्थानीय जनता के कष्ट निवारणार्थ तत्कालीन राज्य सरकार से सीधे सघर्ष मे आना आरम्भ कर दिया। उन दिनो दिल्ली से प्रकाशित "वैभव" आगरा के "सैनिक" तथा कानपुर के 'प्रताप' आदि पत्रो मे भरतपुर शासन के विरुद्ध जो समाचार प्रकाशित होते थे उनको भेजने वाला आप ही को मानकर पुलिस आपको परेशान ही नही करती अपितु आपके विरुद्ध झूठे आरोप लगाकर आपको गिरफ्तार करके जेल भी भेजती रहती थी, जहाँ आपको अनेक असहनीय यातनाए झेलनी पडती थी।

साहसी स्वभाव और स्वाभिमानी प्रकृति

आरम्भ से ही आप निडर और साहसी इतने थे कि एक वार किसी सार्वजनिक हित के प्रश्न को लेकर आपको तत्कालीन नरेश स्व० महाराज कृष्णसिह से भेंट करने की आवश्यकता पड गई, परन्तु उनसे मिलने के मार्ग मे अनेक अडचनो का सामना करना पडा था। अपने स्वभावानुसार आप उन सम्पूर्ण अडचनो की अवहेलना करके उक्त नरेश के इजलास खास मे सीधे मिलने जा पहुँचे। परन्तु वहाँ दरवाजे पर सशस्त्र सतरी का पहरा लगा हुआ मिला। पहले तो आपने उससे अन्दर जाने की अनुमति चाही परन्तु जब उसमे सफलता नही मिली तो आप उसकी अनसुनी करके स्वय सीधे महाराजा से जा भिड़े।

प्रजा प्रतिनिधि को राजा से मिलने का अधिकार

उस युग के एक सम्पूर्ण सत्ता सम्पन्न शासक से विना पूर्व स्वीकृति प्राप्त किये एक अजनवी व्यक्ति को अपने सामने पाकर महाराज को अत्यन्त आश्चर्य और कुतूहल हुआ। उन्होने आवेश के साथ आप से पूछा "पहले से विना मजूरी लिए आप यहाँ कैसे आ गये ?" इस अवसर पर और कोई साधारण व्यक्ति होता तो न मालूम कितना भयभीत और आतकित हो जाता परन्तु अपने निर्भीक और साहसी स्वभाव के अनुसार आपने उस भवन के द्वार पर अकित इस आदर्श वाक्य की ओर इगित करके कि "प्रजाबल राज्य बल प्रशस्यते" एकदम कडककर कहा राजन्! आपने यहाँ यह आदर्श वाक्य क्यो लगाया है ? क्या आपकी प्रजा का प्रतिनिधि आपसे सीधा मिलने का अधिकार नही रखता ?

श्री वर्माजी की निर्भीकता और स्पष्टवादिता से महाराजा अत्यत प्रभावित हुए । उन्होने वर्माजी से विस्तार से बात की और उस समय जनता की जो समस्याए थी उनका समाधान हुआ ।

लाश पर दीवार चुनी जायगी

आपकी निर्भयता के और भी अनेक उदाहरण मिलते हैं। एक बार उन्ही महाराजा के एक साथी सामन्त ने आपके मकान की भूमि के कुछ भाग पर अनधिकृत रूप से कब्जा करके वहाँ अपने मकान की नीव खुदवाना आरम्भ कर दिया। आपने पहले तो उसको समझाना चाहा, परन्तु जब वह नही माना, तो सच्चे सत्याग्रही की भाँति आप तत्काल उस नीव मे लेट गये और उस व्यक्ति को ललकारते हुए कहा कि "मेरी लाश के ऊपर ही दीवार चुनी जायेगी, मैं वैसे नही चुनने दूँगा ।" इससे सामन्त का साहस टूट गया, दीवार उस स्थान पर नही बनी और आपकी विजय हुई ।

राज बंदियों को जेल में सुविधाएं

इसी प्रकार सन् 1939 के आन्दोलन मे जब आप भरतपुर की जेल मे बन्द थे, तो राज्य के तत्कालीन दीवान और प्रशासक सर रिचार्ड टॉटन हॉम जेल मे राजनीतिक कैदियो की स्थिति देखने गये । जब आपसे उनके सम्बन्ध मे जानकारी चाही तो आपने बडी निर्भीकता के साथ उनकी कतिपय माँगे उनके सामने रखी, जिनको पहले तो उसने टालना चाहा, परन्तु आपके कठोर रुख को देखकर अन्त मे स्वीकार कर लिया और उक्त बन्दियो को सभी उचित सुविधाए प्रदान कर दी गई ।

मेरे छोटे शरारती दोस्त

सर रिचार्ड आपके लडाकू स्वभाव से इतने परिचित हो गये थे कि जब सन् 1940 मे आप भरतपुर से वापिस जाने लगे, तो रेल्वे स्टेशन पर उनको विदा करने वाले लोगो मे वर्माजी को देखकर उन्होने आपको अग्रेजी मे "माई नॉटी लिटिल फ्रेण्ड" अर्थात् "मेरे छोटे शरारती दोस्त" कह कर सम्बोधित किया था ।

जनता के अधिकारो के लिए जूझने वाला अकेला योद्धा

वर्तमान शताब्दी के दूसरे और तीसरे दशक मे जिस समय भरतपुर राज्य मे सार्वजनिक जीवन बहुत कम पनप पाया था, और राजनीतिक क्षेत्र मे काम करने वाले लोगो की बहुत ही कमी थी, तब स्व० गोकुलजी वर्मा अकेले ही जनता के अधिकारो के लिए आन्दोलन करते रहे थे । साथ ही हरिजन सेवा आदि रचनात्मक प्रवृत्तियो का सचालन भी आप ही किया करते थे । उन दिनो के राजस्थान के अन्य नेता श्री विजयसिंह पथिक और रामनारायण चौधरी आदि भरतपुर जाकर आप ही के पास ठहरा करते थे । इसी प्रकार जब सन् 1939 मे भरतपुर राज्य प्रजा मण्डल की ओर से सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ हुआ था तब भी आपका मकान आन्दोलनकारियो का केन्द्र बना हुआ था । फलतः राज्य

सरकार की ओर विशेषत: वहाँ की पुलिस के खुफिया विभाग की कोप-दृष्टि सदैव आपके ही ऊपर रहती तथा राज-द्रोह के अपराध मे समय-समय पर आपको तग किया जाता ।

सामाजिक प्रगति के अग्रदूत

राजनीतिक क्षेत्र मे ही नही, आपने समाज-सुधार के क्षेत्र मे भी काफी कार्य किया था । आप आर्य समाजी विचार धारा के थे तथा अपनी दोनो पुत्रियो का विवाह जातीय बन्धनो को तोड कर किया था । साथ ही हरिजनो के उत्थान मे भी आपने सराहनीय योग दिया था । आप "राजस्थान सेवा सघ" के भी सदस्य रहे थे ।

श्री रामनारायण चौधरी की श्रद्धांजली

आपके सम्बन्ध मे राजस्थान के प्रसिद्ध गाँधीवादी विचारक श्री रामनारायण चौधरी ने अपनी "वर्तमान राजस्थान" नामक पुस्तक मे ये पक्तियाँ लिखी है :—

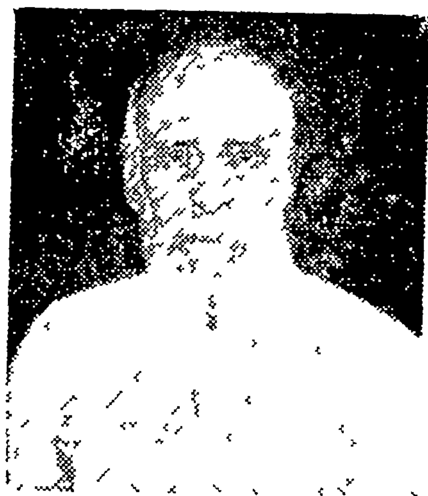
भरतपुर के सम्बन्ध मे कुछ भी लिखते समय श्री गोकुलजी वर्मा का उल्लेख करना अनिवार्य है । सेवा-सघ के प्रारम्भ से ही वे हम लोगो के साथी और सहायक रहे । कुशासन के खिलाफ आन्दोलन हुआ तो वे प्रजा के अगुआ थे । "हरिजन सेवा सघ" का भार उठाने का मौका आया, तो उन्होने अपने कन्धे आगे कर दिये थे । प्रजा मडल का युग आया तो बीच खेत मौजूद थे । सार यह कि इस संस्कार वाले बूढे शेर ने भरतपुर के आधुनिक इतिहास मे अचल होकर शुरू से आखिर तक प्रजापक्ष का नेतृत्व किया । इस कठिन कार्य मे उन्हे जेल की यातनायें भुगतनी पड़ी, आर्थिक कष्ट उठाने पडे और अनेक बार अकेले दम लडना पडा । इनका हृदय स्फटिक की भाँति स्वच्छ था । वे जितने उत्कट देश भक्त थे उतने ही सुधारक भी ।

भरतपुर के भीष्म-पितामह

लगभग 90 वर्ष की आयु तक जनता जनार्दन की सेवा करने के बाद अभी दो तीन वर्ष पूर्व ही भरतपुर के भीष्म-पितामह, स्वतन्त्रता-सग्राम के इस वयोवृद्ध सेनानी का देहावसान हुआ है ।



श्री गोपाल लाल कोटिया, कोटा



जन्म सवत् 1940 पौष शुक्ला 15

पता जैन प्रेस के ऊपर, सदर बाजार, कोटा

स्वतन्त्रता आन्दोलन के साथ जुड़ा हुआ व्यक्तित्व

इस समय हाडौती क्षेत्र मे केवल श्री गोपाल लाल कोटिया ही ऐसे व्यक्ति है जिनके जीवन के साथ इस क्षेत्र के स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास जुडा हुआ है। इनके व्यक्तित्व मे भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के सभी पहलुओ का समावेश हुआ है। आज 89 वर्ष की अवस्था मे भी उनके हृदय मे वही ज्वाला है, विचारो मे वही क्रान्ति है। उनकी कथनी और करनी मे कोई अन्तर नही है। कोटिया जी आध्यात्मिक साम्यवादी हैं। वे फिलासफर हैं और उनका रहन-सहन भी दार्शनिको जैसा ही हैं। लेकिन इस जमाने मे जबकि बुलबुलो को उल्लू न होने का गम है, श्री कोटिया जैसे व्यक्ति आप से आप विस्मृति के गर्भ मे छिपते चले जा रहे हैं। हाडौती नागरिक मोर्चे से इस बार ता० 15 अगस्त, 1972 के स्वतन्त्रता दिवस पर श्री कोटिया जी का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया और कोटिया जी द्वारा नयापुरा स्थित शहीद स्मारक पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया।

प्रभावशाली वक्ता, लेखक एवं पत्रकार

श्री कोटिया जी का जीवन प्रारम्भ से ही प्रेरणात्मक रहा है। उनका जन्म बूदी (राजस्थान) मे पौष शुक्ला पूर्णिमा विक्रम सम्बत् 1940 को हुआ था। पिता का नाम श्री केसरीलालजी कोटिया था। परिवार मे चारो ओर वैभव बिखरा हुआ पडा था लेकिन वे कभी उसमे लिप्त नही हुए। 5 सेर दूध सुबह व 5 सेर दूध शाम को पीकर कसरत करते और जन-जागृति की योजनाए बनाया करते थे। हिन्दी मे एम० ए० तुल्य कोटियाजी गभीर विचारक, प्रभावशाली वक्ता व लेखक एव पत्रकार हैं। 15 वर्ष की आयु मे ही आपने एक पुस्तकालय खोला जिसमे हजारो पुस्तको का भण्डार एकत्रित किया और लोगो को घर घर जाकर नि.शुल्क पढने की प्रेरणाए देते रहे। इसके साथ ही घरेलू दवाइयें इकट्ठी करके गरीबो को मुफ्त बांटना शुरू किया और गरीबो की आर्थिक सहायता भी करते थे।

विदेशी वस्त्रो की होली

अपने पुस्तकालय मे आपने उस समय भारत मे प्रकाशित होने वाले समस्त हिन्दी समाचार पत्र मँगाने शुरू किये, उनको पढकर राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय समस्याओ मे रुचि लेनी आरम्भ की। इसी दौरान मे वग-भग के विरोध मे आन्दोलन शुरू हुआ। उसके प्रभाव मे आकर सन् 1907 मे आपने अपने सब विदेशी वस्त्र आग मे जला दिये और स्वदेशी ढग के कपडे धारण किये लेकिन इतने से ही उन्हे सतोष नही हुआ। राष्ट्रीय आन्दोलन मे व्यापक रूप से भाग लेने की इच्छा जोर पकडती गई। इसी भावना के फलस्वरूप कुछ समय पश्चात् आप वम्बई को चल पडे। वहाँ कुछ समय रहकर पूना पहुँचे। पूना मे श्री माधव राव सप्रे से मुलाकात की और उन्ही के पास रहे और नि स्वार्थ भावना से देश भक्ति का प्रण लिया।

राजनीति में सक्रिय जीवन का प्रारम्भ

यही से श्री कोटिया जी का सक्रिय जीवन प्रारम्भ होता है। सप्रेजी के पास ही आप राजनैतिक एव क्रान्तिकारी कार्यो मे दीक्षित हुए। सप्रेजी का नाम आप अब भी बडी श्रद्धा से लेते हैं। सप्रेजी ने आपका सम्पर्क लोकमान्य तिलक, वीर सावरकर, ठाकुर केसरीसिंह जी बारहठ, श्री अर्जुनलाल जी सेठी, श्री विजयसिंहजी पथिक एव अन्य क्रान्तिकारियो से स्थापित कराया। एक प्रकार से क्रान्तिकारियो के कार्यों में सहयोग देने तथा उन्हे आर्थिक सहायता व हथियार आदि देने का काम हाथ मे लिया। बूदी में एक बोर्डिग खोला और उसमें आकर रहने वाले लड़को को क्रान्ति की शिक्षा देना शुरू कर दिया।

सत्य और अहिंसा के गांधीवाद आन्दोलन में

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में जब महात्मा गाँधी की सत्य-अहिंसात्मक आन्दोलन की आँधी चली उस समय तक बहुत से क्रान्तिकारी फाँसी के तख्तो पर झूल चुके थे। बहुत से क्रान्तिकारी जेलो में बन्द थे और बहुत से क्रान्तिकारी भारत छोडकर विदेश चले गये थे। तब से क्रान्तिकारी जो देश मे जेलो से बाहर छिपे हुए थे वे सब प्रकट होकर शस्त्रोका परित्याग कर सत्य व अहिंसा की नीति पर महात्मा गाँधी के आन्दोलन में सम्मिलित हो गए। इसी प्रकार कोटियाजी भी काँग्रेस को अपनाकर और खादी पहनकर गाँधीवादी आन्दोलनो मे भाग लेने लगे। लेकिन विचारधारा उग्र ही रही।

नर-नाहर का आथित्य

सन् 1920 मे नर केसरी श्री विजयसिंह पथिक बूँदी मे इनके घर पर ठहरे। पथिकजी द्वारा आपने बूँदी मे एक सार्वजनिक पुस्तकालय एव प्राजमण्डल का उद्घाटन करवाया और उसका अध्यक्ष कोटियाजी को चुना गया।

बूँदी के कैदखानों में लम्बी सजाए और संपत्ति की जब्ती

पथिकजी ने बूँदी राज्य के बरड इलाके तथा मेवाड के बिजलियाँ इलाके मे किसानो के आन्दोलनो का सूत्रपात किया। आन्दोलन मे प० नयनूरामजी और कोटियाजी को

बूंदी राज्य ने बूंदी के कैदखाने मे कैद कर दिया और इन दोनो को कड़ी यातनायें दी गई। इन्हे कजरो के पिंजरो मे डण्डेदार दस-दस सेर की लोहे की बेडियाँ पैरो मे डाल कर सडे हुए जौ की सडी रोटियाँ खाने को दी गई। इस प्रकार लगातार 3 वर्ष तक बिना कोई मुकद्दमा चलाये इनको नजरबन्द रखा गया और कोटिया जी की सारी सम्पत्ति जब्त करके इनको व साथ ही प० नयनूरामजी को भी कैद कर दिया गया। तथा सारी सम्पत्ति जब्त कर उनसे जबरदस्ती यह लिखवा लिया गया कि यह सम्पत्ति सरकारी कर्जे मे जप्त की जाती है। लेकिन सरकारी कर्जा कुछ भी नही था। श्री कोटियाजी से भी यह लिखवाना चाहा परन्तु श्री कोटियाजी झुके नही।

मातृभूमि से सदा के लिए निर्वासन

जेल से छूटने के बाद उन्हे बूंदी से निर्वासित कर दिया गया। फिर भी कोटियाजी चुपके-चोरी बूंदी जाते रहे और कार्य करते रहे। जब कभी पकडे जाते तो फिर इन्हें बूंदी की सीमा से बाहर कर दिया जाता। इस प्रकार फिर सन् 1942 के आन्दोलन मे कानून तोड कर बूंदी जाने पर जेल मे नजरबन्द कर दिया गया और एक वर्ष कैद मे रखने के बाद बूंदी से निर्वासित कर दिया गया।

हाड़ौती मे कॉंग्रेस प्रजामण्डल के जन्मदाता

कोटियाजी ने सन् 1940 मे कोटा मे लडको का बोर्डिंग खोला और उसमे क्रान्ति की शिक्षा देना शुरू कर दिया। इसी प्रकार सन् 1944 मे दफा 144 तोडने के अपराध मे कोटा मे एक वक्त **सात दिन कैद** मे रहे दूसरी **वक्त एक माह व तीसरी वक्त एक वर्ष तक कैद मे** रहे। आपने ही कोटा व बूंदी मे प्रजामण्डल व कांग्रेस को स्थापित किया और आप कोटा, बूंदी एव हाडौती प्रजामण्डल के अध्यक्ष भी रहे।

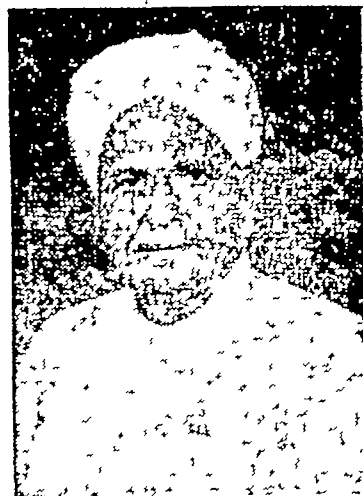
सक्रिय राजनीति से सन्यास

महात्मा गाँधी के बलिदान के बाद कांग्रेस मे विकसित होने वाली अवसरवादिता को देखकर श्री कोटियाजी ने कांग्रेस एव सक्रिय राजनीति से सन्यास ले लिया। विचारो से कोटियाजी अब भी सक्रिय और जागृत हैं। प्रगतिशील क्षेत्रो को उनसे अब भी प्रेरणा मिलती है। इनकी विचारधारा आज भी वैसी ही उग्र तेजस्वी और प्रेरणादायी है।

दधिची ऋषि की अंतिम आकाँक्षा

इस समय भी कोटियाजी देशभक्ति मे सर्वस्व अर्पण करने को उद्यत है। धन तो उसके पास है नही परन्तु देश की रक्षार्थ दधिची ऋषि की तरह भक्ति पूर्वक अपनी अस्थियाँ देने का उपयोग वे देश की सभ्यता और अखडता की रक्षा के लिए करना चाहते हैं, यह उनकी हार्दिक कामना है।

कॉमरेड घासीराम चौधरी



जन्म   सवत् 1960, वैशाख शुक्ला 3

पता · घासीराम का वास, जिला झुंझनु (राज०)

किसान जागरण के अग्रगण्य नेता

चौधरी घासीराम भी शेखावटी के किसान जागरण के अग्रगण्य नेता रहे हैं। सामती अत्याचारो, जागीरदारो की अमानुषिकता और ठिकानेदारो की क्रूरताओ से मुकाबिला करने मे चौधरी घासीराम ने जिस दृढता, साहस और शौर्य का परिचय दिया वह बेमिसाल है। सरदार हरलालसिंह, नेतरामसिंह और प० ताडकेश्वर शर्मा के साथ मिलकर चौधरी घासीराम ने शेखावाटी के किसानो को जागृत, सगठित और सघर्षरत करने मे एतिहासिक महत्व का कार्य किया था और निरन्तर गिरफ्तारियो के बावजूद उन्होने सामती अत्याचारो का डटकर मुकाबिला किया था।

जागीरी विरोध की जन्मघुटी

चौधरी घासीराम का जन्म सवत् 1960 की वैशाख शुक्ला तीज (अक्षय तृतीया) को नवलगढ ठिकाने के गाँव बासडी मे हुआ था। उनके पिता का नाम चौधरी चेतराम था। चौधरी चेतराम एक तेजस्वी और प्रभावशाली व्यक्ति थे और क्षेत्र के लोगो का उन पर अगाध विश्वास था। वे नवलगढ के जागीरदार के अत्याचारो का, बेगार का और किसानो के शोषण का निरन्तर डटकर विरोध करते थे। नवलगढ के जागीरदार चौधरी चेतराम और उनके परिवार को तबाह करने पर तुले हुए थे। उन्होने अवसर देखकर चौधरी चेतराम के खेत और हवेली पर अधिकार करके उन्हे गाँव से बाहर निकाल दिया था। कॉमरेड घासीराम को तो जागीरी विरोध जैसे जन्मघुटी मे ही मिला था।

निर्वासन और जागीरी प्रथा को समाप्त करने की प्रतिज्ञा

11 वर्ष की उम्र मे बालक घासीराम अपने पिता के साथ गाँव बसेडी से असहाय अवस्था मे निर्वासित कर दिए गए। उनके पिता ने ही घासीराम का बास नामक ग्राम की स्थापना की थी। घासीराम के पिता तथा चाचा ने यह सकल्प कर लिया था कि जीवन पर्यंत जागीरदारो से भले ही सघर्ष करना पडे परन्तु जागीरी प्रथा को समाप्त

करके ही दम लेंगे। घासीराम के पिता की दो वर्ष बाद मृत्यु हो गई और पिता की इस प्रतिज्ञा को पूरा करने की जिम्मेदारी वालक घासीराम ने अपने ऊपर ली, जिसे उन्होने जीवन पर्यन्त सघर्ष करके पूरी तरह निभाया।

पहला सत्याग्रह और पुलिस की पिटाई

सन् 1919 मे 16 वर्ष के नौजवान घासीराम ने गाँधीजी के सत्याग्रह के समाचार सुने और वे उसमे शामिल होने के लिए हिसार की ओर चल पडे। चौधरी घासीराम ने हिसार मे जाकर अपना नाम सत्याग्रहियो मे लिखा दिया। उनको और उनके चार साथियो को पुलिस ने बुरी तरह पीटा और पकड-पकड कर जगल मे जाकर छोड दिया, इस तरह कई दिनो तक होता रहा। घासीराम इस तरह से उस सत्याग्रह मे चार बार गिरफ्तार हुए बुरी तरह पीटे गए और दो-दो दिन तक हिरासत मे रखने के बाद छोड दिए गए।

भावी संघर्ष के लिए जनमत का परीक्षरण

चौधरी घासीराम कॉंग्रेस की मीटिंगो मे जाने लगे। उन्होने नेताओ के भाषरण सुने। उन्हे लगा कि उनके क्षेत्र को जागीरी अत्याचारो से मुक्ति दिलाने मे इस सत्याग्रह से सहायता नही मिल सकती। चौधरी घासीराम आर्य समाज की ओर आकर्षित हुए और आर्य समाज की भजनोपदेशक प्रणाली को ग्रहरण करके वे अपने क्षेत्र के गाँव-गांव मे जागरण, सगठन, और राष्ट्रीयता का प्रचार करने लगे 1919 से 1931 तक गाँव-गाँव मे घूम-घूम कर पूरे 12 वर्ष मे उन्होने अपने क्षेत्र की किसान आत्माओ को भावी सघर्षों के लिए पूरी तरह तैयार कर दिया था।

जागीरी विरोध के लिए जाट सभायें

1931 मे झुझुनू मे जाट महासभा का अधिवेशन होने की तैयारियाँ हो रही थी इसी प्रसग मे चौधरी घासीराम का सपर्क पन्नेसिंह देवरोड, रामसिंह बखतावरपुरा, चिमनाराम सागानी, देवसिंह बोचल्या तथा पडित ताडकेश्वर शर्मा और पडित दत्तूराम पारीक एव हरलालसिंह दूलड से हुआ। जाट महासभा के मच से ये सभी नेता जागीरदारो के अत्याचारो का मुकाबिला करने के लिए जाट जाति (किसानो) को जागृत और सगठित कर रहे थे। चौधरी घासीराम को इन्ही के साथ अपने सपने पूरे होने की सभावनाए दिखाई दी। वे इसी आन्दोलन के साथ लग गए। किसानो मे शिक्षा का प्रसार करने के लिए झुझुनू मे एक जाट छात्रावास की स्थापना की गई और चौधरी घासीराम ने उस छात्रावास के कार्य का 2–2½ वर्ष तक सचालन किया।

किसानो के संगठन का अभिनव प्रयोग-प्रजापति यज्ञ

शेखावाटी के किसान, ठिकानेदारो के अत्याचारो को समाप्त करने के लिए नए से नए मोर्चे बनाने की योजनाए बना रहे थे। भरतपुर के ठाकुर देशराज के प्रयत्नो से सीकर मे प्रजापति महायज्ञ करने की योजना बनाई गई। चौधरी घासीराम अपनी सारी शक्ति के साथ इस यज्ञ को सफल करने मे पूरी शक्ति से लग गए और एक-एक गाँव मे जाकर उन्होने किसानो को इस यज्ञ मे सम्मिलित होने के लिए तैयार किया था। यज्ञ के नाम पर जागीरी विरोध के लिए किसानो की बिखरी हुई शक्तियो को सगठित करने का

यह एक बहुत बडा आयोजन था। किसानो (जाटो) के दल के दल गाँव-गाँव से सीकर मे इकट्ठे होने लगे और ठिकानेदार इस सगठन को सहन नहीं कर सके। दमन शुरू हो गया और जाट एजिटेशन या दूसरे शब्दो मे किसान आन्दोलन जोर पकड़ता गया। शेखावाटी के एक-एक गाँव और एक-एक ढाणी के लोग आन्दोलन मे शरीक हो गए। लगान बदी कर दी गई जिसके परिणामस्वरूप लगान मे 25 प्रतिशत छूट की गई और भूमि का माप और बन्दोबस्त शुरू हुआ।

1934 मे किसानो के एक छात्र नेता श्री पन्नेसिंह देवरोड का देहान्त हो गया और आन्दोलन की बागडोर हरलालसिंह दूलड और नेतराम सिंह ने सभाली।

भूमि का बंदोबस्त-लगान की दरें

चौधरी घासीराम ने एक-एक खेत की भूमि का माप करवा कर लगान निश्चित करवाने मे दिन रात एक कर दिया। लगान की दरें निश्चित की गई चौधरी घासीराम अपनी इन्ही निस्वार्थ किसान सेवाओ से जागीरदारो की आँखो मे काटे की तरह खटकने लगे।

भारत सुरक्षा कानून मे गिरफ्तारी

अत मे डिफेन्स ऑफ इडिया रूल्स के मातहत चौधरी घासीराम, प० ताडकेश्वर शर्मा, ताराचद धारोड, इन्द्राजजी और लादुराम रायपुर को गिरफ्तार कर लिया गया। इस किसान आन्दोलन मे श्री जमनालाल बजाज की मध्यस्थता से समझौता हो गया था परन्तु उसके बाद भी जागीरदारो का कोप चौधरी घासीराम पर बना ही हुआ था। वे फिर गिरफ्तार कर लिए गए।

भूमिगत कार्य और गिरफ्तारियें

जेल से रिहा होने के बाद लबे समय तक चौधरी घासीराम को भूमिगत होकर कार्य करना पडा। और फिर 10 महीने भूमिगत (अडर ग्राउन्ड) रहने के बाद 1940 मे फिर उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया। 6 महीने अडर ट्रायल रहने के बाद उन्हे 27 महीने के लिए जेल भेज दिया गया।

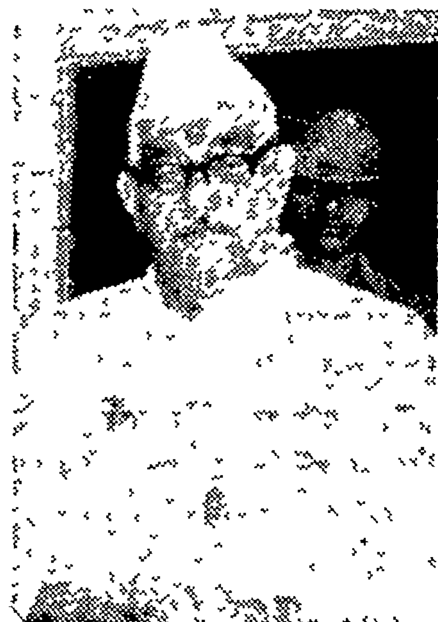
अंधेर गर्दी का विरोध और फिर वारंट

1942 मे जब चौधरी घासीराम जेल से मुक्त हुए उस समय किसानो मे बन्दोबस्त के पर्चे बट रहे थे। जिस तरह की अधेर गर्दी हो रही थी उसका विरोध करने के फलस्वरूप चौधरी घासीराम के विरुद्ध फिर गिरफ्तारी का वारट जारी हो गया। श्री हीरालाल शास्त्री के हस्तक्षेप से यह वारट रद्द किया गया।

सतत् संघर्ष का जीवन

इस तरह से चौधरी घासीराम का जीवन एक सतत् सघर्ष का जीवन है। वह जातिवाद की सीमाओ से आगे निकल कर शुद्ध रूप से किसानो के जीवन अधिकारो के लिए सघर्ष करते रहे हैं। उनकी दृष्टि मे जातिये केवल दो ही है। एक अमीर की जाति और एक गरीब की जाति। वे सम्पन्नता और विपन्नता के इस सघर्ष मे आज भी अभावग्रस्त के अधिकारो के लिए सघर्परत् हैं।

श्री चन्द्रभान शर्मा, जयपुर



जन्म · सन् 1903

पता घीया भवन घीया मार्ग, बनी पार्क जयपुर

जन्म, बाल्यकाल और पारिवारिक जीवन

श्री चन्द्रभान शर्मा का जन्म सामोद (जयपुर) मे सन् 1903 मे हुआ। उनके पिता प्रसिद्ध ज्योतिषी पण्डित भूरामल शर्मा थे। उनकी माता का नाम श्रीमती गुलाबदेवी था, जिनके पिता घर बार छोड़कर दण्डी स्वामी हो गये थे। श्री शर्मा की प्रारम्भिक शिक्षा पितामह श्री जीवनराम के सान्निध्य मे और वडे भाई श्री लक्ष्मीसहाय की देखरेख मे हुई। हाईस्कूल तक की शिक्षा जयपुर मे हुई जहाँ पर ख्यातानामा मास्टर रामकुमार घीया के व्यक्तित्व का विद्यार्थी शर्मा पर गहरा प्रभाव पडा। श्री शर्मा का विवाह श्रीमती दुर्गादेवी के साथ 1919 में हुआ। दुर्गादेवी ने शर्माजी के सार्वजनिक जीवन में खूब साथ दिया और उन्होने दो बार तीन-तीन मास तक की जेल यात्रा भी की।

साधक आश्रम और खादी कार्य

श्री शर्मा ने 1920 में वम्बई के कॉमर्स कॉलेज मे प्रवेश लिया। 1921 के प्रारम्भ मे शर्माजी महात्मा गाँधी के सम्पर्क मे आये। गाँधीजी की प्रेरणा से शर्माजी ने कॉलेज छोड दिया। कॉलेज छोडने पर शर्माजी को अन्धेरी (वम्वई) के "साधक आश्रम" में रखा गया। आश्रम के आचार्य श्री के० जी० देशपाण्डे से शर्माजी अत्यन्त प्रभावित हुए। चौरी-चौरा काण्ड के फलस्वरूप सत्याग्रह स्थगित कर दिया गया और शर्माजी को उस समय सत्याग्रह मे भाग लेने का अवसर नही मिला। "साधक आश्रम" के दिनो में शर्माजी श्री जमनालाल बजाज आदि कई लोगो के सम्पर्क मे आये। श्री शकरलाल बैंकर ने खादी

खरीद कर लाने के लिए शर्माजी को जयपुर भेज दिया। वाद मे श्री लक्ष्मीदास मगलदास श्रीकान्त ने वडी मात्रा मे खादी लाने का काम शर्माजी के सुपुर्द किया। 1930 तक शर्माजी खादी का काम करते रहे।

राजपूताने में राजनैतिक प्रवृत्तियें और जेल यात्राएं

खादी के काम के साथ-साथ शर्माजी राजपूताना के राजनीतिक जीवन मे भी भाग लेने लगे थे। नमक सत्याग्रह के जमाने मे महात्मा गाँवी का आदेश हुआ कि शर्माजी नमक वनाने का काम अजमेर-मेरवाडा मे ही करे। इस सिलसिले मे श्री शर्माजी को श्री हरिभाऊ उपाध्याय आदि की भाँति दो साल की सजा हुई। कुछ ही समय वाद शर्माजी को दो वार 6-6 महीने की सजा हुई। श्री शर्माजी हटूण्डी के "गावी आश्रम" के व्यवस्थापक वने और परिवार सहित वही रहने लगे। शर्माजी पण्डित अर्जुनलाल सेठी, श्री वावा नृसिंहदास, श्री विजयसिंह पथिक, श्री रामनारायण चौधरी आदि के सम्पर्क मे आ चुके थे। उन्होने अजमेर काँग्रेस के कार्य मे आगे वढकर हिस्सा लिया, यहाँ तक कि वे काँग्रेस महासमिति के सदस्य भी वन गये। 1931 से 1934 तक शर्माजी राजपूताना हरिजन सेवक सघ के मन्त्री रहे। उन्ही दिनो "राजस्थान सेवक मण्डल" वना जिसके सदस्य शर्माजी भी वने।

व्यासजी के साथ बम्बई से अखण्ड भारत का प्रकाशन

1934 में वम्वई पहुँच कर शर्माजी श्री जयनारायण व्यास के सहयोगी वने। और वम्वई से "अखण्ड भारत" नाम का दैनिक पत्र निकाला गया। उन दिनो का जीवन व्यासजी, शर्माजी आदि के लिए आर्थिक दृष्टि से वडा कष्टदायक था। "अखण्ड भारत" वहुत समय तक नही चल सका, पर पत्र को चलाने के मोह में व्यासजी ने किसी पूजीपति का सहयोग स्वीकार नही किया। "अखण्ड भारत" वन्द होने के वाद शर्माजी अजमेर की राजनीति में फिर सक्रिय होकर आ गये।

फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना

श्री वावा नृसिंहदास आदि से मिलकर उन्होने श्री सुभाषचन्द्र वोस का साथ दिया और वे फॉरवर्ड ब्लॉक के सदस्य वन गये। शर्माजी को साधुओ में राजनीतिक काम करने के लिए वनारस भेजा गया। 1942 के आन्दोलन के समय शर्माजी वनारस में ही थे। एक साधु श्री जयेन्द्रपुरी की युक्ति ने शर्माजी को गिरफ्तार होने से वचा लिया। जिससे वे भूमिगत रहते हुए आन्दोलन का काम करते रहे।

जयपुर से निर्वासन : रेजी संघ :

"नवज्योति" में शर्माजी का एक लेख छपा जिसके कारण जयपुर राज्य से वे निर्वासित कर दिये गये। वाद में शर्माजी के खिलाफ निकाला हुआ वारण्ट वापस ले लिया

श्री चन्द्रभान शर्मा की धर्मपत्नि



श्रीमती दुर्गा देवी

गया। फिर शर्माजी ने खादी के काम के लिए "रेजी सघ" की स्थापना की। 1947 में शर्माजी वम्वई रहने के लिए चले गये। 1948 की जनवरी मे शर्माजी ने दिल्ली में गाँधीजी से मुलाकात की जिसमें महात्माजी ने "लोकसेवा सघ" की चर्चा की, जिसका परिणाम यह हुआ कि शर्माजी ने भविष्य में विधायक कामो मे ही अपना समय लगाने का निश्चय किया।

भारत सेवक समाज में

1954 से 1962 तक शर्माजी ने भारत सेवक समाज का काम किया। 1962 से 1966 तक वम्बई में शर्माजी जीवन की पाँच मूलभूत आवश्यकताओ की पूर्ति के कार्यक्रम में भाग लेते रहे।

नवजीवन संघ और साधना काल

1967 से शर्माजी श्री गुलजारीलाल नन्दा की अध्यक्षता मे वने "नवजीवन सघ" के महामन्त्री नियुक्त हो गये। वर्तमान में शर्माजी सार्वजनिक तथा गृहस्थ की सभी जिम्मेदारियो से अलग होकर एक विशेष प्रकार की आध्यात्मिक साधना में लगे हुए हैं और उसी साधना के माध्यम से लोकसेवा करना चाहते हैं।

पंडित चंदन मल बहड़, चूरू



जन्म : 20 मार्च 1905

पता : चूरू, जिला चूरू

बीकानेर षड़यंत्र केस के अभियुक्त

चुरू निवासी पडित चदनमल वहड भारत प्रसिद्ध वीकानेर षडयन्त्र के अभियुक्त थे। इस केस मे अपने अन्य साथियो के साथ आपको 1932 से 1936 तक पूरे चार वर्ष वीकानेर की कारावास मे रहना पडा। वीकानेर राज्य के लोक जागरण मे आपका प्रमुख स्थान रहा है। इस ममय आपकी आयु 67 वर्ष की है परन्तु आज भी आपकी वाणी मे वही ओज, विचारो मे वही उग्रता और कर्म मे वही निष्ठा है जो कि आज से 40 वर्ष पहले थी।

जन्म, बाल्यकाल और शिक्षा

श्री चदनमल वहड का जन्म बीकानेर राज्य के कस्वे चुरू मे 20 मार्च सन् 1905 ई० को हुआ था। आपके पिता प० वशीधर सस्कृतज्ञ और सगीत प्रेमी थे। उन्होने श्री चन्दनमल की शिक्षा-दीक्षा का भार तत्कालीन सुप्रसिद्ध विद्वान् महर्षिकल्प प० कन्हैयालाल ढण्ढ को सौंपा जो स्वय साहित्य, दर्शन व्याकरण और आयुर्वेद के महामनीषी तो थे ही, मानवता की एक ऐसी उज्जवल मूर्ति भी थे जो देवत्व के वहुत अधिक निकट थी। उनके सान्निध्य मे श्री वहड ने सस्कृत साहित्य एव व्याकरण, दर्शन, व आयुर्वेद आदि का सम्यक् अध्ययन किया। पडितजी के सान्निध्य मे आप मे अध्ययन के प्रति एक ऐसी अभिरुचि उत्पन्न हुई जिसके कारण स्वाध्याय के वल पर आपने अ ग्रेजी, उर्दू, वगला, गुजराती व मराठी आदि भाषाओ का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। सहिष्णुता, लोकोपकारी, मनोवृत्ति, सहज स्वभाव आदि चारित्रिक गुण आपके व्यक्तित्व मे छात्र जीवन से ही विकसित होने लग गए थे।

सार्वजनिक जीवन में प्रवेश

अपने गुरु प० कन्हैयालाल ढण्ढ द्वारा सस्थापित समाज सेवा और जन जागृति की प्रमुख सस्था सर्व हितकारिणी सभा के माध्यम से आपने सार्वजनिक जीवन मे प्रवेश किया। महिलाओ मे शिक्षा प्रसार, हरिजनो के जीवनस्तर को ऊँचा उठाना, प्राकृतिक और दैवी सकटो के समय सेवा कार्य आदि रचनात्मक कार्यों मे आप अपनी मित्र मण्डली सहित जुट गए।

जब सन् 1919 मे महात्मा गाँधी ने रोलट एक्ट के विरोध मे देश भर मे उपवास रखे जाने की अपील की तभी आप सक्रिय राजनीति मे उतर आये। रियासतो मे उस समय न तो भाषण और लेखन की स्वतन्त्रता ही थी और न कोई राजनीतिक सगठन ही बनाया जा सकता था। ऐसी गतिविधियो से सम्बन्धित व्यक्ति को भयकर अपराधी माना जाता था। रियासतो की जनता अशिक्षा, सामाजिक कुरीतियो, आतक और अन्ध-विश्वासो की शिकार थी। इन सबके विरुद्ध आपको जबरदस्त सघर्ष करना था।

नगरपालिका के सदस्य

बीकानेर राज्य की जनता को किसी प्रकार के शासनाधिकार नही थे। दिखावटी तौर पर विधानसभा व नगरपालिकाओ की स्थापना कर दी गई थी किन्तु इनमे राजकीय अधिकारियों व नामजद सदस्यो की ही अधिकता थी। नगरपालिकाओ का सारा प्रशासन तहसीलदारो के हाथ मे होता था। चुनावो की मात्र खानापूर्त्ति की जाती थी। श्री बहड ने जनबल को ऊँचा उठाने के दृष्टिकोण से नगरपालिका के मत्र का उपयोग करना उचित समझा और "हितकारी दल" नामक सगठन की स्थापना कर सन् 1929 ईस्वी मे चूरू नगरपालिका के चुनाव करवाये और अपने साथियो सहित चुने गये। सदस्यता के दौरान आपने पालिका सदस्यो को अधिक अधिकार दिये जाने पर जोर दिया और तत्कालीन अधिकारियो की मनमानी नीति और आतक के विरुद्ध सघर्ष किया। इससे शासक और अधिकारी और भी कुढने लगे। राज्य मे अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था के लिये आपके आन्दोलन किया। तब कही जाकर बीकानेर राज्य अनिवार्य शिक्षा अधिनियम बना और आपके प्रयत्नो से चूरु नगर मे चार अनिवार्य शिक्षा शालायें खुली जिनके प्रबन्ध के लिये आपने अवैतनिक अधिशाषी अधिकारी का पद सभाला।

राष्ट्रीय झण्डा फहराने का सत्साहस

सन् 1930 ई० की 26 जनवरी सारे भारत मे स्वाधीनता दिवस के रूप मे मनाया गया। भारतीय जनता के इस ऐतिहासिक कार्य का रियासती जनता पर प्रभाव कैसे नही पडता! लेकिन बीकानेर के तत्कालीन महाराजा श्री गगासिंह बडे चतुर और कड़े शासक थे। उनके राज्य मे स्वराज्य का नाम लेना अपराध था। खद्दर पहनना बैठे बिठाये आफत मोल लेना था। गाँधी का नाम लेने पर रियासती जुल्म की आँधी चल पडती थी। 'तिरगे की चर्चा करने पर ही लोगो को 'चौरगा" कर देने (हाथ पाँव तोड डालने) की

धमकियाँ दी जाती थी। किन्तु राष्ट्र सेवा व्रती श्री चन्दनमल तो 26 जनवरी के इस प्रथम पुनीत पर्व पर चुरू शहर के सर्वाधिक ऊँचे स्थान पर राष्ट्र ध्वज लहराने के लिये बेचैन हो रहे थे। आपने अपने अग्रणी साथी स्वामी गोपालदास, महन्त गणपतिदास, शान्ति शर्मा एव मालचन्द्र शर्मा के साथ चूरू के सर्वोच्च शिखर धर्म स्तूप पर तिरगा झण्डा फहरा ही दिया। यह बड़े दुस्साहस का कदम समझा गया। बीकानेर राज्य का सामन्ती प्रशासन तिलमिला उठा। आपको अपने साथी प० शान्ति सहित चूरू नगरपालिका की सदस्यता से पृथक कर दिया गया। राज्य के प्राइम मिनिस्टर उन दिनो सुप्रसिद्ध श्री मन्नू भाई नन्द शकर मेहता थे। महामना मदनमोहन मालवीय के हस्तक्षेप पर इन लोगो को पुन बहाल किया गया। राष्ट्रीय झण्डा फहराने की बीकानेर राज्य मे यह अभूतपूर्व घटना थी।

बीकानेर के निरंकुश शासन के विरुद्ध संघर्ष

जब महाराजा ने अनाज पर टैक्स लगाया तो प० चन्दनमल बहड और उनके साथियो ने महाराजा गगासिंह को टेक्स सिंह कह कर सम्बोधित किया और इसके विरोध मे सगठित अभियान आरभ कर दिये। प्रशासन द्वारा जनता पर अनेको जुलम किये जाने लगे। प० चन्दनमलजी ने उनका कच्चा चिट्ठा लन्दन के गोल मेज सम्मेलन तक पहुँचाया और अखिल भारीतय देशी राज्य लोक परिषद् के श्री अमृतलाल सेठ (सम्पादक जन्मभूमि) और श्री पी० एल० चुडगर का सहयोग प्राप्त कर राज्य के आतक और जुल्म के खिलाफ पैम्फलेट प्रकाशित किये व हजारो प्रजाजनो के हस्ताक्षरो से सयुक्त स्मरण पत्र गोलमेज सम्मेलन को भिजवाए।

महाराजा गगासिंह स्वय गोलमेज सम्मेलन मे भारतीय नरेशो के प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुए थे और जब जोर-शोर से अपने राज्य की विधानसभा व सुशासन की शेखी बघार रहे थे तभी आपके स्मरण पत्र रूपी "एटम बम" का विस्फोट हुआ। महाराजा गगासिंह गुस्से से कांपने लगे। उनके रियासत मे लौटने पर प० चन्दनमल बहड को स्वामी गोपालदास और भादरा के श्री सत्यनारायण सर्राफ आदि के साथ गिरफ्तार कर लिया।

अमानुषिक यातनायें, मुकद्दमा और जेल यात्रा

श्री बहड 13 जनवरी सन् 1932 को बीकानेर षडयन्त्र केस के अन्तर्गत गिरफ्तार किए गये थे। 3 माह तक पुलिस की हिरासत मे एकान्त काल कोठरी मे रखे गये। इस अवधि मे रियासती पुलिस ने गगासिंह के प्रसिद्ध डडे का हर तरह आपके विरुद्ध इस्तेमाल किया। इस अमानुषिक व नृशस अत्याचार की देशी राज्य लोक परिषद् के नेता व महामत्री स्व० श्री जयनारायण व्यास ने कडी आलोचना की थी और बीकानेर षडयन्त्र केस का पर्दाफाश किया था। सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री के० एम० नेरीमैन की प्रेरणा से इनकी रक्षा के लिये डिफेन्स कमेटी भी बनाई गई थी। हर तरह का अत्याचार जब आपको व आपके साथियो को अपने नैतिक साहस व स्वदेश निष्ठा से नही डिगा सका तो आपको महाराजा व वरिष्ठ अफसरो द्वारा भारी प्रलोभन भी दिये गये लेकिन आप टस से मस भी नही हुए।

बीकानेर षडयन्त्र केस का यह भारत प्रसिद्ध मुकदमा 3–3–32 से 15–1–34 तक चला। आप कुल चार साल जेल मे रहे और पूरी सजा काट कर सन् 1939 मे रिहा हुए।

जयपुर सत्याग्रह

रिहाई के वाद आपने मेठ जमनालाल वजाज के अनुरोध पर जयपुर सत्याग्रह के लिये वगाल, विहार व उडीसा का दौरा किया और वहां से सत्याग्रही स्वय सेवक तथा आन्दोलन को सहायतार्थ धनराशि भेजी।

रचनात्मक कार्यो की लगन

चुरू की प्रसिद्ध सस्था सर्व हितकारिणी सभा, जिसकी स्थापना सन् 1907 मे हुई थी, अपने स्थापना काल से ही जन जागृति के कार्यक्रमो के कारण बीकानेर राज्य के अधिकारियो की निगाह मे खटकती रही थी। श्री बहड सन् 1942 से 1952 तक सभा के महामत्री रहे। इन दस वर्षो के अर्से मे आपने सभा की स्थायी प्रवृत्तियाँ पुस्तकालय, वाचनालय, पुत्री पाठशाला व कबीर पाठशाला की स्थिति सुदृढ करने के साथ साथ जन सेवा के अनेक महत्वपूर्ण कार्य एव योजनाए भी सम्पन्न की।

रात्रि कॉलेज

चूरू मे उस समय राजकीय बागला हाई स्कूल ही था। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के अभिलाषी युवको को बीकानेर जाकर पढना होता था। आपने सभा के तत्वावधान मे रात्रि कॉलेज की स्थापना की व स्व० सेठ कन्हैयालालजी लोहिया को नगर की इस महती आवश्यकता की पूर्ति के लिये कॉलेज भवन बनवाने की प्रेरणा दी। जब सन् 1944 मे लोहिया कॉलेज खुला तो आपके स्वप्नो की पूर्त्ति हुई। उक्त लोहिया कालेज भवन 10 लाख की लागत से सेठ लोहियाजी ने बनवाया जिसमे विज्ञान, कला एव वाणिज्य की स्नातक स्तर तक शिक्षा की व्यवस्था है।

राहत कार्य

अकाल, आगजनी, तूफान, अतिवृष्टि आदि दैवी सकट उपस्थित होने पर आपने बडी तत्परता से कार्य किया। प्रभावित क्षेत्रो जैसे खीवासर, रामसरा, सिरसला, देपालसर आदि चूरू तहसील के अनेको गाँवो मे खाद्यान्न, जल वस्त्र, दवाए, पशुओ के लिए चारा और भवन निर्माण के लिए सामान व उपकरण नि शुल्क वितरित करवाए।

हरिजनोत्थान

आपने चूरू जिले के सुदूर अचलो मे फैले चमार जाति के हरिजनो की एक ऐतिहासिक कान्फ्रेंस की अध्यक्षता की जिसमे हजारो चमारो ने शराव, मास व अन्य सामाजिक कुप्रथाओ के परित्याग की प्रतिज्ञा की। हरिजन बस्ती मे जल कष्ट निवारणार्थ आपके प्रयत्नो से कुआ भी बना।

साम्प्रदायिक सौहार्द्र

भारत विभाजन के समय आपने राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सौहार्द्र बनाये रखने के लिए अथक प्रयत्न किये। शान्ति सभायें आयोजित की और अल्पसख्यक वर्ग मे विश्वास उत्पन्न कर उन्हे आश्वस्त किया।

चूरू फतेहपुर रेल लाइन

रेगिस्तान के शेखावाटी इलाके मे चूरू फतेहपुर रेल लाइन की आवश्यकता बहुत दिनो से महसूस की जा रही थी। आपने 8 वर्षों की अनवरत चेष्टा के बाद अपने ब्लू प्रिन्टो व नक्शो के आधार पर उक्त लाइन को स्वीकृत करवाने मे सफलता प्राप्त की।

एक प्रेरक शक्ति

श्री बहड आज अपनी इस ढलती उम्र मे चूरू जिले के विकास के लिए निरन्तर प्रयत्नशील हैं। वे युवक कल्याण के कार्यो मे पूरा रस लेते हैं और भावी पीढी को सब तरह से सक्षम और समर्थ बनाने के लिए निरतर प्रयास करते रहते हैं। श्री बहड ग्राम स्वावलबन और ग्राम स्वराज्य के कट्टर हिमायती हैं। वे आज भी घूम घूम कर गांवो की पचायतो को इस दिशा मे प्रेरित करते रहते हैं। श्री बहड चूरू जिले की अत्यन्त तेजस्वी प्रेरक शक्ति हैं।



श्री जगन्नाथ दास अधिकारी



जन्म : संवत् 1948 श्रवरण कृष्ण 30

अवसान संवत् 1990 कार्तिक शुक्ला 15

भरतपुर में जन जागृति का प्रारम्भ

भरतपुर मे जन-जागृति का आरम्भ सन् 1910-12 से ही विशेष रूप से दिखलाई पडने लगा था और सबसे पहले यह हिन्दी प्रचार और साहित्य-प्रेम के रूप मे प्रकट हुई थी। उस समय तक वहाँ के साधारण पढे-लिखे व्यक्ति, दूकानदार आदि सगीत, नौटकी, पूरनमल, आल्हा की किताबे या बाजारु किस्से-कहानी पढा करते थे। समाचारपत्रो का नाम मात्र के लिए ही प्रचार था। राज्य के सभी कार्यो मे उर्दू भाषा का प्रचार था और अच्छे पढे लिखे लोगो मे भी उसे ही अधिक सम्मान दिया जाता। ऐसे समय मे कुछ लोगो का ध्यान मातृभाषा की निर्बल अवस्था की ओर गया और यह भाव उत्पन्न होने लगा कि इसकी दशा को सुधारने के लिए कुछ प्रयत्न किया जाए। फलस्वरूप श्री जगन्नाथ अधिकारी जैसे प्रभावशाली लोगो द्वारा हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना की गई जिसने जनता मे एक नवीन साहित्यिक अभिरुचि पैदा करके जागृति का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना

यह सच है कि हिन्दी साहित्य समिति का उद्देश्य राजनीतिक नही था और उसके सचालक और कार्यकर्त्ता अधिकाँश मे सरकारी कर्मचारी ही थे। वे राजनीति के नाम से डरते थे। पर इसमे भी सदेह नही कि भरतपुर निवासियो मे जन आन्दोलन की भावना और प्रवृत्ति को जन्म देने का श्रेय बहुत कुछ इसी सस्था को है। आरभ से ही यह सार्वजनिक विषयो पर विचार विनिमय और बातचीत करने का केन्द्र बन गई थी। इस सस्था मे लोग देश के समाचारपत्र और नवीन पुस्तकें पढने के साथ-साथ तत्कालीन अवस्था और देश के आन्दोलनो पर विचार-विमर्श करते रहते थे। इससे धीरे-धीरे सार्वजनिक कार्यों मे भाग लेने की प्रवृत्ति उत्पन्न होती गई और अनेक नवीन कार्यकर्त्ता उत्पन्न हो गए। इस दृष्टि से भरतपुर की "हिन्दी साहित्य समिति" को वहाँ की जन चेतना की प्रेरक सस्था कहा जा सकता है। अधिकारी जगन्नाथदासजी ही इस सस्था के जन्मदाता अग्रणी और सर्वेसर्वा थे।

पुजारी से साहित्य सेवी

अविकारीजी का जन्म श्रावण कृष्ण 30 सवत् 1948 को भरतपुर के विल्कुल निकट गोलपुरा नामक गाँव मे हुआ था। वहुत छोटी अवस्था मे ही उनको भरतपुर नगर के विरक्त मन्दिर के महत श्री लक्ष्मणदासजी का चेला वनाकर उन्ही के सुपुर्द कर दिया गया। वाल्यावस्था मे ही उनकी वुद्धि काफी तीव्र थी और उन्होने सस्कृत की आरम्भिक परीक्षा शीघ्र ही पास करली। इसके वाद पढने के लिए लाहौर गए जहाँ उन्होने विशारद परीक्षा पास की और शास्त्री की परीक्षा की तैयारी करने लगे। पर अविक परिश्रम और परदेश मे खान-पान की अवस्था से उनका स्वास्थ्य खराव हो गया इससे पढना छोड देना पडा और वे भरतपुर वापस आ गए। यहाँ वह काफी वीमार हो गए और डाक्टर वैद्यो ने उन्हें यक्ष्मा वतलाया। तव इदौर जाकर वहाँ के प्रसिद्ध चिकित्सक डाक्टर सरयूप्रसाद जी को दिखलाया। उन्होने भी वही वात कही और यह भी कह दिया कि इसकी अवधि तीन वर्ष की होती है, अर्थात् रोगी प्रायः तीन वर्ष के भीतर मर जाता है।

मासिक साधु का संपादन

यह लगभग सन् 1909 की वात है। इस पर इनको देशाटन की सूझी और दक्षिण भारत की यात्रा करके वडौदा पहुँच गए। यहाँ साधु सभा का कार्य करने लगे और 'साधु' मासिक पत्र के सपादन में योग देने लगे। कुछ समय वाद बड़ौदा मे ही साधु सम्मेलन का अविवेशन हुआ, जिसमें इनके भाषण पर प्रसन्न होकर इन्हे विद्यारत्न की उपाधि दी गई। इसी सम्मेलन मे दमोह (म०प्र०) के महात्मा अजवदासजी से इनकी भेट हुई। उन्होने इनकी वीमारी का हाल सुनकर कहा "आप हमारे स्थान पर आइए। वहाँ का जलवायु वहुत उत्तम है, आप शीघ्र ही निरोग हो जाएगे।" कुछ समय वाद यह दमोह गए और थोडे दिन तक वहाँ ठहरे। महात्मा अजवदास जी के आशीर्वाद और सुश्रुषा से इनकी वीमारी अच्छी हुई और यह फिर वडौदा आकर साधु मासिक पत्र का कार्य करने लग गए। कुछ महीने वाद इसके गुरु महन्त लक्ष्मणदासजी ने आग्रहपूर्वक, इनको वुलाकर मन्दिर के अविकारी पद पर नियुक्त कर दिया।

राजस्थान का दर्शनीय पुस्तकालय भवन

वाहर घूमने-फिरने और सार्वजनिक कार्यों में योग देने से इनको सस्थाए वनाने और लेख लिखने आदि का चस्का लग गया था। अत भरतपुर आकर भी यह वैसा ही प्रयत्न करने लगे और श्री गगाप्रसाद शास्त्री के सहयोग से 12 सितम्वर 1912 को "हिन्दी साहित्य समिति" की स्थापना कर दी। भरतपुर के सभी हिन्दी प्रेमियो ने इस आयोजन में योग दिया और श्री ओकारसिह प्रभार (सिविल सर्जन), पं० नारायणदास (नृप० इजीनियर) पं० गुलावजी मिश्र (पुस्तकालयाध्यक्ष) के प्रयत्नो से शीघ्र ही इसकी सन्तोषजनक उन्नति होने लग गई। तीन-चार वर्ष मे ही इसका एक सुन्दर भवन वनवा दिया गया जिसकी नीव अविकारीजी के हाथो से रखी गई थी। और आज कहा जा सकता है कि वैसा दर्शनीय हिन्दी पुस्तकालय भवन राजस्थान मे ही नही दूर-दूर के प्रदेशो मे भी वहुत कम मिल सकेगा।

(वैष्णव) और (वैभव) मासिक पत्रो का संपादन कार्य

हिन्दी प्रचार के साथ-साथ अधिकारी जी का दूसरा कार्यक्रम वैष्णव सम्प्रदाय का सगठन था। सन् 1913 मे वह अखिल भारतवर्षीय श्री वैष्णव महासभा के प्रधानमन्त्री बनाए गए, जिस पद पर पहले हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक प० द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी कार्य कर रहे थे। इसके साथ ही वह महासभा के मुखपत्र 'वैदिक सर्वस्व' के सपादक भी नियुक्त किए गए। कुछ समय वाद 'चतु सम्प्रदाय वैष्णव महासभा' के भी प्रधानमन्त्री वना दिए गए, जो उस समय तक महाराज रीवा द्वारा सचालित की जा रही थी। इसी समय उन्होने 'श्री वैष्णव' नामक मासिक पत्र भी प्रकाशित किया।

अव अधिकारी जी सार्वजनिक क्षेत्र मे काफी प्रसिद्ध हो चुके थे और सन् 1920-21 मे उन्होने दिल्ली जाकर "वैभव" नामक समाचारपत्र प्रकाशित किया जो शीघ्र ही साप्ताहिक से दैनिक हो गया।

जमानतें, गिरफ्तारियें और राज सम्मान

अधिकारी जी के भरतपुर से सम्वन्धित होने के कारण "वैभव" मे भरतपुर के समाचार और शिकायती पत्र प्राय प्रकाशित हुआ करते थे। इससे भरतपुर महाराज किशनसिंह उनसे असतुष्ट हो गए। इधर ब्रिटिश गवर्नमेन्ट द्वारा राज्यद्रोही लेखो का आरोप लगाकर दो वार वैभव से जमानतें माँगी गई। अतः 'वैभव" वन्द कर देना पडा। उधर महाराज किशनसिंह ने मौका पाकर अधिकारी जी को गिरफ्तार कराके जेल मे डाल दिया। इस पर कानपुर के 'प्रताप' और अजमेर के 'राजस्थान केसरी ने बडा आन्दोलन उठाया और महाराज को अपनी भूल मालूम हो गई। उन्होने अधिकारी जी को जेल से मुक्त ही नही कर दिया, वरन् सम्मान सहित राजवश के पूजनीय लक्ष्मणजी के बडे मदिर का महन्त नियुक्त कर दिया।

भरतपुर मे रवीन्द्रनाथ ठाकुर और मालवीय जी

इसके वाद तो महाराज उनके वडे भक्त वन गए और अधिकारीजी ने भी उनके द्वारा मातृभाषा-सेवा के अनेक कार्य कराए। इनमे सबसे मुख्य "अखिल भारतवर्षीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन" का सत्रहवा अधिवेशन था, जो अजमेर के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ श्री गौरीशकर हीराचन्द्र ओझा के सभापतित्व मे बडी धूमधाम से सपन्न हुआ। इसी मे भरतपुर-वासियो को महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर और मालवीय जी जैसी विभूतियो के दर्शनो का सौभाग्य प्राप्त हुआ। महात्मा गाँधी का आना भी निश्चित हो गया था, पर उसी अवसर पर बीमारी का आक्रमण हो जाने से वह उसमे भाग न ले सके।

भरतपुर से निर्वासन

सन् 1928 मे जब भरतपुर राज्य की शासन-व्यवस्था अनेक कारणो से विगड गई और ब्रिटिश सरकार ने महाराजा को राज्यच्युत करके वाहर भेज दिया तो उनके एक सहयोगी के नाते अधिकारी जी को भी भरतपुर छोड देने की आज्ञा दी गई। उस समय

अंग्रेज सरकार द्वारा नियुक्त नए दीवान श्री मैकेजी की अप्रसन्नता की भी परवा न करके हजारो की सख्या मे जनता ने एकत्रित होकर अधिकारी जी का धूमधाम से जुलूस निकाला और सम्मान सहित उनको विदाई दी। भरतपुर से चलकर अधिकारीजी कानपुर, उज्जैन, नासिक आदि स्थानो पर कई-कई महीनें रहे और अत मे बम्बई जाकर ठहर गए। उनका स्वास्थ्य तो सदा से कमजोर था। अब जगह-जगह बिना उचित व्यवस्था के घूमते रहने से वह और भी खराब हो गया और सवत् 1990 (सन् 1933) की कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को बम्बई के निकट जोगेश्वरी गुफा मे उनका देहान्त हो गया।

क्रान्तिकारी समाज सुधारक

जब ब्रिटिश हुकुमत ने महाराजा किशनसिंह को राज्यच्युत कर दिया और उन्होने सरकार का विरोध करके अपनी टेक पर प्राण तक दे दिए तब फिर उनके तथा उनके सहयोगियो के प्रति जनता की भावनाए बहुत कुछ बदल गई। एक बात यह भी है कि अधिकारी जी कोई राजनीतिक कार्यकर्त्ता न थे। वैसे एक मन्दिर के महत होते हुए भी उन्होने अछूतो के मदिर-प्रवेश तथा कुँओ से जल भरने का जोरो से समर्थन किया था, विधवा विवाह को भी सर्वथा उचित बतलाया, तो भी उनका मुख्य कार्य-मातृभाषा की सेवा ही था और उसी के द्वारा उन्होने राष्ट्रीय चेतना का प्रसार किया था।

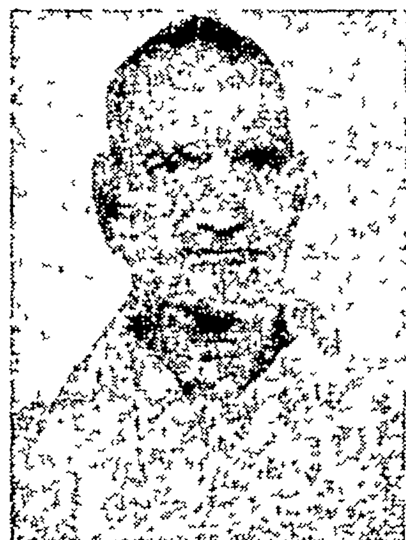
हिन्दी के निष्ठावान सन्देशवाहक

महाराजा के सहयोगी बन जाने के बाद भी वह हिन्दी प्रचार के कार्य मे राज्य किसी न किसी रूप मे सहायता कराते रहे। हिन्दी साहित्य समिति की स्थिति को सुदृढ कराने मे भी सदैव वह योग देते रहे। इसमे सदेह नही कि भरतपुर मे 'हिन्दी साहित्य समिति' का जो विकसित रूप हम आज देख रहे है उसका बीजारोपण करके उसे पुष्ट बनाने का श्रेय अधिकारीजी को ही है।

राष्ट्रीय चेतना के जनक

मातृभाषा के प्रचार के माध्यम से उन्होने भरतपुर की जनता मे सबसे पहले राष्ट्रीय चेतना का प्रसार किया था। उन्होंने अपनी सूझ-बूझ से भरतपुर की जनता को यह समझाने की चेष्टा की थी कि दूसरे प्रान्तो और राज्यो की जनता अपने सगठित बल से किस तरह अपने अधिकार प्राप्त कर रही हैं। उन्होने भरतपुर मे राष्ट्रीय विचारधारा के नौजवानो का दल सगठित करके उनके समक्ष राष्ट्रीय कार्यक्रम रख दिए थे। उन्होने भरतपुर के लोगो को स्वदेशी का व्रत दिलवाया, उन्होने देश की भाषा, देश की संस्कृति और देश के साहित्य द्वारा भरतपुरवासियो मे देश प्रेम की भावना सबसे पहले जगाई थी। सच्चे अर्थो मे श्री जगन्नाथ-दास अधिकारी भरतपुर में राष्ट्रीय चेतना के जनक कहे जा सकते हैं।

पंडित ताड़केश्वर शर्मा
पचेरी बड़ी (झुंझुनू)



जन्म : संवत् 1969

पता : पचेरी बड़ी; जिला झुंझुनू

शेखावाटी किसान आन्दोलन के ब्रेन ट्रस्ट

पडित ताडकेश्वर शर्मा को शेखावाटी के किसान आन्दोलन का ब्रेन ट्रस्ट कहा जाता है। अपनी विद्वता, बौद्धिक सामर्थ्य और लेखन शक्ति के द्वारा उन्होने शेखावाटी के किसान आन्दोलन को जैसे मुखर कर दिया था। शेखावाटी मे जाट आन्दोलन और जाट पचायत के रूप मे विकसित होने वाले लोक-आन्दोलन मे सम्मिलित होकर उन्होने आन्दोलन को सकीर्ण जातीयता की मनोभूमि से ऊपर उठाकर समग्र किसान जाति का आन्दोलन बनाने मे अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। श्री ताडकेश्वर शर्मा जैसे सुलझे हुए, तेजस्वी और कलम के धनी कार्यकर्त्ता को प्राप्त करके शेखावाटी की जाट किसान पचायत की आवाज को देश के कोने-कोने मे पहुँचाने का बहुत बडा कार्य सरल हो गया। श्री ताडकेश्वर ने जागीरी अत्याचारो से पीडित किसानो को गाँव गाँव मे घूम-घूम कर जिस तरह से अन्याय और भ्रष्टाचार से मुकाबिला करने के लिए जागृत और सगठित किया था उसी दृढता और बुलदी के साथ उन्होने समाचार पत्रो मे जागीरी अत्याचारो का भण्डाफोड करने और अपनी लेखनी एव पत्रकारिता के द्वारा लोगो मे चेतना, साहस और निर्भीकता का शख फूकने मे महत्वपूर्ण कार्य किया था।

जाट सभा से किसान सभा

श्री ताडकेश्वर शर्मा मूलरूप से तत्कालीन जयपुर राज्य के पचेरी बडी झुझनू जिले के जागीरी गाँव के निवासी हैं। उन्होने खुली आँखो से जागीरदारो के अत्याचारो को निकटता से देखा और अनुभव किया था और अपनी भरी जवानी मे वे जागीरी शोषण से किसानो के मुक्ति-आन्दोलन मे सम्मिलित हो गए थे। उनका स्वय का परिवार

एक किसान परिवार था और उन्होने यह घोषणा की कि शेखावाटी की जाट पचायत केवल जाटो के जातीय हितो की रक्षा के लिए सघर्ष करने वाली सस्था नही है अपितु उसका उद्देश्य जातीय भेदभाव से ऊपर उठकर खेती करने वाले समग्र किसान वर्ग के हितो की रक्षा करने का है और इसीलिए ठाकुर देशराज द्वारा आयोजित जाट प्रजापति महायज्ञ प० ताडकेश्वर शर्मा जैसे तेजस्वी ब्राह्मण के आचार्यत्व मे ही सफल हो सका।

क्रांतिकारी वातावरण में जन्म और विकास

श्री ताडकेश्वर शर्मा का जन्म सवत् 1969 मे शेखावाटी मे भोमियो एव जागीरदारो के गढ ग्राम पचेरी बडी मे हुआ था। उनके पिता प० लेखराम शर्मा अपने समय के उग्र क्रान्तिकारी व्यक्ति थे। लोकमान्य तिलक और लाल-बाल-पाल की त्रिमूर्त्ति उनका आदर्श था। वे अपने पुत्र ताडकेश्वर शर्मा मे इन्ही नेताओ के क्रान्तिकारी चिंतन को भर देना चाहते थे। इसलिए उन्होंने ताडकेश्वर को निरन्तर क्रान्तिकारी साहित्य के अध्ययन की ओर लगाए रखा और परिणामस्वरूप युवावस्था को प्राप्त करते-करते ताडकेश्वर शर्मा जागीरी अत्याचारो के विरुद्ध क्रान्ति का झडा लेकर लोक-आन्दोलन की अग्रिम पक्ति मे खडे दिखाई दिए।

विद्या अध्ययन और पत्रकारिता का प्रशिक्षण

प० ताडकेश्वर की शिक्षा दीक्षा इनके गाँव मे और फिर बनारस मे हुई थी। उन्होंने 1921 से स्वदेशी का व्रत धारण कर लिया था। उन्हे हिन्दी, अग्रेजी, उर्दू और सस्कृत चारो भाषाओ का शिक्षण दिलवाया गया। इसके साथ-साथ उन्हे लेखक और पत्रकार बनने के लिए भी समुचित प्रशिक्षण दिया गया। उन्होने 1929 मे 'ग्राम समाचार' नामक हस्तलिखित पत्र प्रकाशित करके गाँवो मे जागीरी अत्याचारो के विरुद्ध विचार-क्रांति का सूत्रपात किया था।

नमक-सत्याग्रह के सत्याग्रही जत्थे में

लाहौर काग्रेस के निर्णय के अनुसार श्री ताडकेश्वर शर्मा ने देश की सम्पूर्ण स्वाधीनता की प्रतिज्ञा को अपने हृदय से स्वीकार किया और 1930 मे नमक सत्याग्रह के समय अजमेर के सबसे पहले सत्याग्रही जत्थे मे सम्मिलित होने के समय उन्होने सत्याग्रह-पत्र पर रक्त से हस्ताक्षर करके अपनी बलिदानी परम्परा की युवकोचित उद्घोषणा की थी।

जागीरी शोषण से मुक्ति के लिए

सन् 1932 के बाद शेखावाटी मे जागीरदारो के विरुद्ध किसान आन्दोलनो को उन्होने सगठित किया और इस उग्र और व्यापक किसान आन्दोलन को अपने साथी हरलालसिह, घासीराम और नेतराम के साथ सफल नेतृत्व देकर शोषित किसानो को जागीरी शोषण से मुक्त करवाने का बहुत बडा कार्य प्रारम्भ किया। प० ताडकेश्वर शर्मा

ने सीकर के प्रजापति महायज्ञ, झुंझुनूं के ऐतिहासिक सम्मेलन और जाट इतिहास के लेखन मे बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिकाए अदा की।

आगरा से साप्ताहिक गणेश का प्रकाशन

ठाकुर देशराज के सहयोग से पडित ताडकेश्वर शर्मा ने 1934 मे आगरा जाकर वहाँ से गणेश नाम के एक उग्र साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किया। गणेश ने राजपूताने की रियासतो के जागीरी अत्याचारो का बडी ही बुलन्दी से भडाफोड करना शुरू किया। देखते ही देखते गणेश राजपूताना और मध्यभारत की रियासती जनता की वाणी बन गया। रियासतो की सरकारें प० ताडकेश्वर शर्मा की तेजस्वी कलम के निर्भीक प्रहारो से तिलमिला उठी। इसलिए गणेश का प्रवेश एक साथ कोटा, बूंदी, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, रतलाम, लोहारू आदि राज्यो मे निषिद्ध कर दिया गया। उस मिशनरी पत्रकारिता के युग मे श्री ताडकेश्वर शर्मा पर मानहानि के कई मुकद्दमे चलाए गए परंतु ताडकेश्वर शर्मा निरंतर अपनी कलम से राजशाही व जागीरी जुल्मो का कड़ा विरोध व रियासती किसानो की आवाज को बुलद करते रहे।

रचनात्मक प्रवृत्तियें

श्री ताड़केश्वर शर्मा ने इन आन्दोलनात्मक प्रवृत्तियो के साथ साथ रचनात्मक प्रवृत्तियो की ओर भी पूरा-पूरा ध्यान दिया और उन्होने जगह जगह खादी-उद्योग, हरिजन-शिक्षा, मद्यनिषेध, अस्पृश्यता-निवारण आदि कार्यक्रमो को गतिशील बनाने के लिए अलग-अलग सगठन बनाकर लोगों को इस दिशा मे प्रवृत किया।

जयपुर सत्याग्रह में सत्याग्रही दम्पत्ति

जयपुर सत्याग्रह के समय श्री ताडकेश्वर शर्मा ने झुंझुनू क्षेत्र के किसानो को सत्याग्रह मे सम्मिलित होने का आह्वान दिया। उनकी पत्नी श्रीमती दुर्गावती देवी के नेतृत्व मे महिला सत्याग्रहियो का पहला जत्था जयपुर पहुचा। इस सत्याग्रह के समय ताडकेश्वर शर्मा का पूरा परिवार जैसे आन्दोलन मे कूद पडा था। उनके माता, पिता, भाई, भौजाई और बच्चे सभी इस सत्याग्रह के महायज्ञ मे अपनी क्षमता के अनुसार अपनी आहुतियाँ भेट कर रहे थे।

जेल यात्राओ की श्रृंखला

श्री ताडकेश्वर शर्मा की बहु-विध प्रवृत्तियो से और उनके बौद्धिक नेतृत्व से ठिकानो के जागीरदार पूरी तरह बौखला उठे थे। अत झुंझुनू मे 1937 मे वे गिरफ्तार कर लिए गए। राजनैतिक कैदियो के प्रति जेल अधिकारियो के अभद्र व्यवहार और जेलो की असतोषजनक अवस्थाओ के विरोध मे श्री ताडकेश्वर शर्मा ने जेल मे अनशन किया। परिणामत जेल की व्यवस्था मे कई सशोधन परिवर्तन सरकार को करने पडे। जेल से

मुक्त होने के बाद दुबारा सत्याग्रह के समय पुन. उनके नाम का वारट निकाल दिया गया। उन्होंने कई महिनो तक अपने साथी कॉमरेड घासीराम के साथ अडर-ग्राउन्ड रह कर कार्य किया। श्री जमनालाल बजाज की मध्यस्थता से इस बार आपके केस उठा लिए गए परन्तु 1939 के लगते लगते एक साथ तीन मुकद्दमे लगाकर इडिया डिफेंस एक्ट मे श्री ताडकेश्वर शर्मा को पुनः गिरफ्तार कर लिया गया। लगानबदी और युद्ध-विरोधी अपराधो मे सवा दो वर्ष के कठोर कारावास की सजा इन्हें दी गई, जिसमे से पूरे 1 वर्ष तक इन्हें काल कोठरी मे रखा गया।

जयपुर राज्य की विधान सभा में

जब जाट किसान पचायत का विलय जयपुर राज्य प्रजामडल मे हो गया तब श्री ताडकेश्वर शर्मा ने जयपुर के शासन-सुधार काल मे एसेम्बली के चुनाव मे विजयी होकर विधानसभा मे प्रजामडल पार्टी के डिप्टी लीडर का दायित्व सभाला। 1944 में एक बार पुन किसानो मे विद्रोह फैलाने और लगानबदी के अपराध मे ताडकेश्वर शर्मा को 3 महीने की सजा दी गई, जबकि वे एसेम्बली के सदस्य भी थे और किसान आन्दोलनो का सचालन भी करते थे।

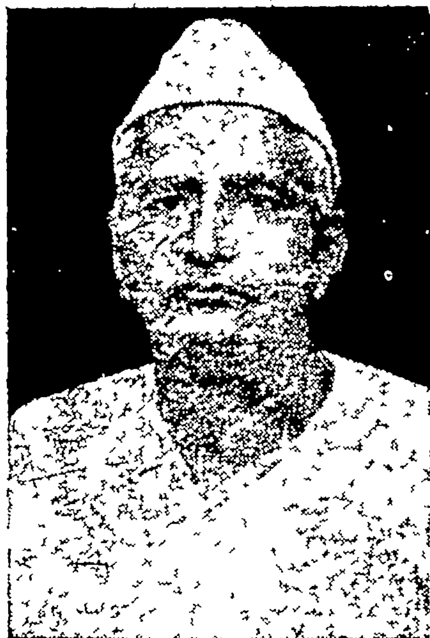
परिवार की 100 बीघा जमीन जब्त

श्री ताडकेश्वर शर्मा ने प्रजामडल मे रहते हुए भी किसान सभाओ का सगठन किया और किसानो के हितो की रक्षा के लिए निरन्तर प्रयत्न करते रहे। उन्होंने जागीरी अत्याचारो का निरन्तर विरोध किया और किसानो को जागीरी शोषण से मुक्त करवाने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहे। जागीरदारो द्वारा चलाए गए कई मुकदमो मे वे उलझे हुए हैं और आज भी सभी प्रतिकूलताओ का डट कर मुकाबिला कर रहे है। उनके परिवार की 100 बीघा जमीन भी जब्त कर ली गई।

शोषण-विहीन-समाज की स्थापना के लिए

श्री ताडकेश्वर शर्मा एक सफल किसान नेता, सगठक, आन्दोलनकारी, सत्याग्रही पत्रकार और राजनैतिक कार्यकर्त्ता रहे हैं। अपनी लेखनी की ताकत से उन्होने किसानो मे असाधारण चेतना जगाई है। वे एक मजे हुए कवि भी हैं और आज भी उनकी काव्य साधना अविरल गति से गतिशील है। आज भी उनकी प्रवृत्तियें-शोषण-विहीन-समाज की स्थापना के लिए समर्पित है। आज भी स्थान-स्थान पर वे चर्चा, परिचर्चा और गोष्ठियो के द्वारा विचार-क्रान्ति के अपने मिशन को लेकर कार्यरत् हैं।

ठाकुर देशराज जघीना



जन्म · सवत् 1852, श्रावण शुक्ला, 11

अवसान

घासीराम से देश राज

ठा० देशराज का जन्म भरतपुर राज्य के ग्राम जघीना मे श्रावण शुक्ला, 11, गुरुवार, सम्वत् 1852 मे एक साधारण जाट परिवार मे हुआ था। आपने वर्नाक्यूलर मिडिल तक की शिक्षा प्राप्त की थी। शिक्षाकाल मे आपका नाम घासीराम था। कालान्तर मे ठा० देशराज ने हिन्दी विश्वविद्यालय प्रयाग की विशारद की परीक्षा भी पासकी।

राजनीतिज्ञों से संपर्क

ठा० देशराज विद्यार्थी काल से ही वैदिक धर्म के प्रेमी वन गए और इसी सदर्भ मे आप वहुत ही उत्साह के साथ भरतपुर के आर्य-समाज मन्दिर के सतसगो मे भाग लेने लगे। आर्य समाज मन्दिर मे ही वह सर्व श्री साँवलसिहजी दफेदार घुड-चढा-रिसाला-वाले, गया प्रसादजी चतुर्वेदी सव इन्सपेक्टर पुलिस, राजवैध दयाल चन्द्रजी आदि के सम्पर्क मे आए। भरतपुर मे राजनीति के जनक स्व० श्री जगन्नाथदासजी अधिकारी से साक्षात्कार हुआ और वे उनके भक्त वन गए।

साहित्य और राजनीति के दोनो दलों में

सन् 1920–21 का खिलाफत आन्दोलन समाप्त हो जाने के बाद मुसलमानों मे तवलीग की तहरीक उठी। उसका उत्तर स्वामी श्रद्धानन्दजी ने शुद्धि आन्दोलन चला

कर दिया। इसकी प्रतिक्रिया भरतपुर मे भी हुई। आर्य-समाज-मन्दिर के सदस्यो मे स्पष्टतया दो दल वन गए थे। एक दल शुद्धि-आन्दोलन व दलितोद्धार का पक्ष खुले रूप मे लेने लगा और आर्य समाज के नेतृत्व मे ही अपना कार्य करने लगा। दूसरा दल विशुद्ध राजनीति का पक्ष लेने लगा। इस दल ने प्रजा परिपद की स्थापना करके उसका कार्यालय श्री हिन्दी साहित्य समिति भवन के वरावर वाले कमरे मे खोल दिया। किन्तु कमरे मे स्थान की कमी के कारण श्री हिन्दी साहित्य समिति भवन मे भी प्रजा परिषद् के सदस्यो की गोष्ठियाँ हुआ करती थी। ठा० देशराज दोनो दलो मे ही रुचि लेते थे।

महाराजा कृष्णसिह और शुद्धि आन्दोलन

भरतपुर के महाराजा स्व० कृष्णसिह स्व० श्री जगन्नाथदासजी से प्रभावित होकर स्वय समाज सुधार तथा राजनीति मे रुचि लेने लगे थे। वह शुद्धि आन्दोलन के पक्ष मे थे और नौ-मुस्लिमो के वीच मे स्वय जाकर उनको सम्बोधित करते हुए उन्होने यह कहा था कि मैं आप मे से हूँ और आप सव भी हममे से हैं। अव वक्त आ गया है कि हम और आप एक हो जाए। और हममे और आप मे खान-पान, रोटी-वेटी का किसी भी तरह का भेद नही रहना चाहिए। आप सव यह अच्छी तरह जानते है कि मैं हुक्का नही पिया करता हूँ, मैं सिगार पिया करता हू। लेकिन यह वतलाने के लिए कि मैं आपके हुक्के को अपना ही मानता हू, आपके हुक्के को सवके सामने पीकर हमारे और आपके वीच के भेद को खत्म करता हूँ। यह कहते हुए महाराजा कृष्णसिह ने नौ-मुस्लिमो की पचायत के वीच मे रखे हुए हुक्के की नाल को मुँह मे लगा कर 2-3 कश खीचे।

मेवात इलाके में शुद्धि के मार्ग पर

यह देखकर उस पंचायत मे यह आवाज उठी कि शुद्धि-कार्य के लिए कुछ विद्वान हमारे ग्रामो मे भेजे जाने चाहिए। तत्पश्चात् ही महाराजा कृष्णसिह की प्रेरणा पाकर ठा० देशराज श्री सावलप्रसाद चतुर्वेदी को साथ लेकर मेवात इलाके मे शुद्धि का कार्य करने चले गए।

यथा राजा तथा प्रजा

इन्ही दिनो सन् 1930 मे श्री हिन्दी साहित्य समिति मे प्रजा परिषद् के कार्यालय के सामने भरतपुर राज्य के सस्थापक महाराजा सूरजमल की जयन्ती मनाने का आयोजन हुआ था। इस आयोजन मे वाद-विवाद प्रतियोगिता भी थी। विपय था, यथा राजा तथा प्रजा। इस वाद विवाद मे मुख्य रूप से राव गोपीलाल यादव तथा ठा० देशराज ने भाग लिया।

राज्य का नया विधान और चुनाव की तैयारियाँ

इन्ही दिनो महाराजा कृष्णसिह ने जनता को शासन मे भागीदार वनाने के

लिए भरतपुर मे शासन समिति स्थापित करदी और उसका विधान भी विद्वानो की समिति से बनवा लिया था । इस विधान के अन्तर्गत चुनाव की तैयारिया की जाने लगी ।

महाराजा कृष्णसिंह का निर्वासन और अंग्रेजी शासन प्रबन्ध

परन्तु भारत की अंग्रेज सरकार ने महाराजा कृष्णसिंह को भरतपुर से निर्वासित करके भरतपुर का शासन प्रबन्ध करने के लिए डकन मैकेन्जी नाम के अंग्रेज को एडमिनिस्ट्रेटर तथा खान बहादुर नफी मोहम्मद खाँ को पुलिस का सुपरिन्टेन्डेन्ट और रायबहादुर शम्भुनाथ को स्टेट कौन्सिल का ज्युडिशियल मिनिस्टर बना कर भेज दिया ।

मैकेंजी का तानाशाही शासन

अंग्रेज एडमिनिस्ट्रेटर डकन मैकेन्जी ने भरतपुर का शासन सूत्र अपने हाथ मे लेते ही सर्व प्रथम शासन-समिति के होने वाले चुनावो पर रोक लगादी । तत्पश्चात् भारतीय दड विधान की धारा 124 अ के अन्तर्गत राव गोपीलाल यादव और ठा० देशराज की गिरफ्तारी के वारन्ट जारी करवाए । राव गोपीलाल यादव एम० ए० प्रीवियस की परीक्षा देने आगरा गए थे अत वही उनको वारन्ट की सूचना पहुँचा दी गई थी । इसलिए वह भरतपुर वापिस आकर सीधे रेवाडी चले गए और वहाँ जाकर अहीर हाईस्कूल के प्रधानाध्यापक हो गए ।

ठाकुर देशराज की गिरफ्तारी

लेकिन ठा० देशराज कस्बा जुरहरा मे गिरफ्तार कर लिए गए और पैदल ही डीग लाए जाकर सब-जेल मे बद कर दिए गए । सेशन जज जवानसिंह के सामने उनका मुकद्दमा पेश किया गया । ठा० देशराज ने अपने मुकदमे की पैरवी स्वय की थी और उन्होंने पुलिस के गवाह से केवल यही एक प्रश्न किया था कि मैंने अपने भाषण मे सुराज्य, स्वराज्य, शिवराज मे से कौन सा शब्द कहा था ? गवाह शब्दो के इस भेद को समझने की शक्ति रखते ही नही थे इसलिए 108 दिन बाद सेशन जज ने अपनी अदालत से ठा० देशराज को रिहा कर दिया ।

राजस्थान के राजनेताओं के संपर्क में

ठा० देशराज भरतपुर से रिहा होकर भरतपुर के राजनैतिक तथा सामाजिक कार्यकर्ताओ के उस आश्रय स्थान मे जा पहुँचे, जो आगरा की राजा मन्डी मोहल्ले मे शुद्धि सभा के नाम से विख्यात था । शुद्धि सभा मे ठा० देशराज, ठा० मगलसिह के सम्पर्क मे आए । उन्होने देशराजजी को शुद्धि सभा मे एक साधारण कार्य बता दिया । इस कार्य को करने के साथ ही ठा० देशराज विभिन्न विषयो की पुस्तको का अध्ययन भी करते रहे । तत्पश्चात् आगरा से अजमेर चले गए और वहाँ सर्व श्री पथिक रामनारायण चौधरी, हरिभाऊ उपाध्याय व बाबा नृसिंहदास के सम्पर्क मे आए ।

राष्ट्रीय कार्यो के प्रेरणा श्रोत

ठा० देशराज अजमेर से राजस्थान केशरी, तरुण राजस्थान आदि जो पत्र प्रकाशित होते रहे उनके सम्पादन मे भाग लेते रहे। सन् 1931 मे किशनलाल जोशी, प० हुकमचन्द,महेशचन्द, वीरेन्द्र दत्त, नत्थाराम, इन्द्र भीम आदि जो युवक नमक सत्याग्रह मे भाग लेने के लिए अजमेर पहुँचे थे उनमे ठा० देशराज की ही प्रेरणा और प्रोत्साहन काम करता था। भरतपुर के एडमिनिस्ट्रेटर मैकेन्जी की विदाई के समय प० हरिश्चन्द्र शर्मा पँघोर वालो ने म्यू० वोर्ड के प्रागण मे पहुँच कर (मि० मैकेन्जी को विदाई) शीर्षक का जो पर्चा मैकेन्जी के हाथ मे दिया तथा उपस्थित लोगो मे बाटा था उसमे भी ठा० देशराज की ही प्रेरणा थी।

शेखावाटी में किसानों का संगठन और जयपुर से निर्वासन

देशराज जाट (किसान) सगठन को शक्तिशाली बनाने के लिए प्रयत्नशील रहते थे। आपने देखा कि जयपुर के शेखावाटी इलाके मे वहाँ के राजपूत, जाटो (किसानो) के साथ अमानवीय व्यवहार करते हैं। यह देखकर आप अजमेर छोडकर शेखावाटी पहुच गए। वहाँ जाकर आपने जाट जाति को सगठित करने के लिए जो कुछ भी किया उसको उस इलाके के जाट अब तक स्मरण करते है। इसके लिए जयपुर गवर्नमेन्ट ने ठा० देशराज को जयपुर राज्य से निर्वासित कर दिया।

आगरा में कांग्रेस की प्रवृत्तियो के साथ

जयपुर से निर्वासित होकर ठा० देशराज पुन आगरा आ गए और कॉंग्रेस का कार्य करने लगे। रायभा स्टेशन के पास कठवारी ग्राम मे आपने अपने रहने को एक घर भी बनवा लिया था जहाँ खेतीबारी किया करते थे और वही से आगरा चले जाया करते थे। आगरा शुद्धि सभा के दफ्तर मे एक कमरे मे आपने अपना कार्यालय खोल रखा था।

आपने आगरा से गणेश नाम का एक साप्ताहिक पत्र निकाला; उसके सम्पादक मण्डल मे झुझुनू के ताडकेश्वर शर्मा, कोटा के अभिन्न हरि और भरतपुर के किशनलाल जोशी शामिल किए गए। गणेश ने राजपूताने की देशी रियासतो के राजाओ और जागीरदारो की अमानवीय क्रूरताओ का खुलकर विरोध किया। रियासतो के लोक-आन्दोलन को गणेश से बहुत बल मिला।

प्रजामंडल के कोषाध्यक्ष

सन् 1938 मे जब किशनलाल जोशी ने बाबा दूबाधारी व हुकमचन्द, गणेशी लाल ठेकेदार मा० फकीरचन्द तथा जगन्नाथ कक्काड को साथ लेकर भरतपुर राज्य प्रजामण्डल की स्थापना की तब ठा० देशराज को कार्यकारिणी मे कोषाध्यक्ष बनाया गया।

श्रीमती देशराज के हाथों भरतपुर राज्य को अल्टीमेटम

प्रजामण्डल की ओर से मडल को मान्यता देने तथा मान्यता न देने की स्थिति मे

मण्डल द्वारा सत्याग्रह करने का जो अल्टीमेटम भरतपुर गवर्नमेन्ट को दिया गया था उसको पहुँचाने का भार ठा० देशराज की धर्मपत्नी श्रीमती त्रिवेणी देवी पर ही डाला गया था। और उसके साथ अपने पुत्र शेरसिंह को भी भेजा। श्रीमती त्रिवेणी देवी के साथ सरक्षक के रूप मे जिनको भेजा गया था उनमे ठा० परमानन्द, प० दौलतराम, गोकुलजी वर्मा व जगन्नाथ कक्कड थे।

प्रजामंडल की मान्यता के लिए सत्याग्रह

अल्टीमेटम का समय निकल जाने के बाद अप्रेल 1939 मे प्रजामडल की मान्यता के लिए सत्याग्रह शुरू हुआ। बाबा दूधाधारी के नेतृत्व मे प्रथम जत्थे ने सत्याग्रह किया। दूसरे जत्थे का नेतृत्व ठाकुर देशराज ने किया और 11 मई, 1939 को गिरफ्तार कर लिए गए।

प्रजामंडल के अध्यक्ष की हैसियत से गिरफ्तारी

यद्यपि प्रजामण्डल का अध्यक्ष राव गोपीलाल को बनाया गया था किन्तु प्रारभ मे उन्होने कोई खास दिलचस्पी नही ली इसलिए यूहाना (पजाब) कस्बे मे होने वाली प्रजामण्डल की मीटिंग मे मण्डल की अध्यक्षता ठा० देशराज के कन्धो पर रख दी गयी थी और वह अध्यक्ष की हैसियत से गिरफ्तार हुए।

सरकार से समझौता और शर्तें

आगे जाकर सरकार के साथ समझौता हुआ और तिरगा झडा नही फहराने की शर्त्त स्वीकार की गई तथा प्रजामडल के स्थान पर प्रजापरिषद् नाम स्वीकार किया गया। सर्व श्री प० रेवतीशरण, युगलकिशोर चतुर्वेदी आदि ने अग्रेज दीवान से जो उपरोक्त समझौता किया था उस पर ठा० देशराज के भी हस्ताक्षर थे। ठा० देशराज का मत था कि तिरगे झण्डे के नीचे हमने पूर्ण स्वतत्रता प्राप्त करने की प्रतिज्ञा की है जबकि प्रजामण्डल के झण्डे के नीचे केवल उत्तरदायी शासन की माँग है। ऐसी स्थिति मे यदि हम उत्तरदायी शासन के स्थान पर पूर्ण स्वतत्रता की प्रतिज्ञा कर लेते हैं तब तो तिरगे झण्डे का फहराना उचित है अन्यथा वर्त्तमान स्थिति मे उसका फहराना झडे का ही अपमान करना है।

प्रजा परिषद् की स्थापना के बाद ठा० देशराज ने भरतपुर मे जाट सगठन को मजबूत करने की ओर ध्यान दिया और उसी सदर्भ मे रेलवे स्टेशन मार्ग के बीच मे शालिगराम की बगीची मे राजा अमोलसिंह के सभापतित्व से जाट सभा का अधिवेशन बुलाया जिसमे सर छोटूराम के अतिरिक्त झुझनू के सरदार हरलाल सिंह भी थे।

जमींदार किसान सभा का नेतृत्व

इसके बाद ठा० देशराज ने फकीरचन्द्र कपूर द्वारा स्थापित जमीदार किसान

सभा का कार्य अपने हाथ मे लिया। कालान्तर मे जाकर यह इतनी शक्तिशाली सिद्ध हुई कि उसकी शक्ति को देखकर शकरराव देव को अपनी रिपोर्ट मे यह सिफारिश करनी पड गई कि भरतपुर को यू० पी० मे न मिलाया जाकर राजस्थान मे मिला दिया जाय। श्री शकरराव देव की इस सिफारिश ने यह स्पष्ट कर दिया था कि जमींदार-किसान-सभा की शक्ति के मुकाविले मे प्रजा परिषद् की शक्ति कमजोर ही है। लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल ने भी श्री शकरराव देव की इस सिफारश को ज्यो का त्यो मान लिया था।

बृज जया प्रतिनिधि सभा और मत्रि-मंडल म

राज्य ने जो बृज-जया-प्रतिनिधि-सभा का गठन किया था उसमे जमींदार-किसान-सभा तथा प्रजा परिषद्, दोनो के ही सदस्य थे। उपाध्यक्ष जमीदार किसान सभा की ओर से ठा० देशराज ही चुने गए थे। कालान्तर मे स्टेट कौन्सिल मे चार पोपुलर मिनिस्टरो के रखने का सुझाव सामने आया। दोनो सस्थाओ से अपनी-अपनी पसन्द के उम्मीदवारो के नाम माँगे गए। इन नामो मे से महाराजा ने जमीदार-किसान-सभा की ओर से ठा० देशराज व बा० हरिदत्त का तथा प्रजा-परिषद् की ओर से राव गोपीलाल यादव व मा० आदित्येन्द्र का नाम चुन लिया। उसमे ठा० देशराज रेवेन्यू मिनिस्टर वनाए गए।

इस पोपूलर मिनिस्ट्री मे चार्ज लेने के वाद जेल मे बन्द सर्व श्री किशनलाल जोशी, सैय्यद अली अजहर, पुष्करसिंह व शकात अहमद को रिहा करने के हुक्म जारी कर दिए।

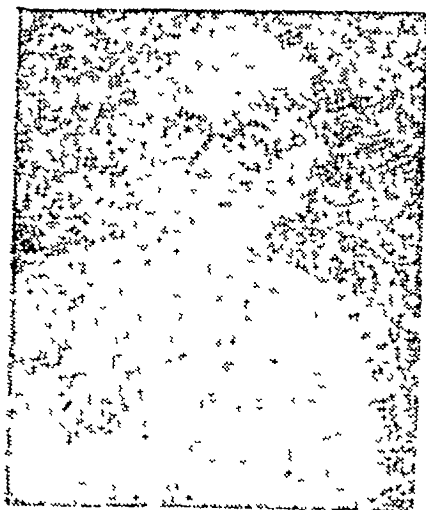
मत्स्य प्रदेश के पहले गिरफ्तारी

इन्ही दिनो दिल्ली मे पूज्य वापू की हत्या हो गई। उस हत्या के सम्वन्ध मे भरतपुर मे भी जाँच पडताल के लिए केन्द्रीय गृहमन्त्री सरदार पटेल ने प्रबन्धक तथा पुलिस अधिकारी भरतपुर मे भेजे। इन्ही दिनो भरतपुर, धौलपुर, करौली व अलवर को मिलाकर मत्स्य प्रदेश वनाने की चर्चा चली। पौपूलर रेवेन्यू मिनिस्टर ठा० देशराज को रेवेन्यू मिनिस्टर की हैसियत मे ही गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया।

मत्स्य प्रदेश का उद्घाटन

मत्स्य प्रदेश वन गया। उसके उद्घाटन के लिए श्री गाडगिल को चुना गया। उद्घाटन के लिए भरतपुर को ही उपयुक्त स्थान समझा गया। किन्तु राजा मानसिंह के नेतृत्व मे किले के दरवाजे पर जनता इकट्ठी हो गई, जिससे उद्घाटन मे वाधा पडी। जाटो के साथ अन्य लोगो का भी समुदाय था जो हटने का नाम ही नही लेता था। यह देखकर ठा० देशराज को जेल मे लाया गया। ठा० देशराज ने भीड को सम्वोधित करते हुए उनमे तितर-वितर हो जाने की अपील की। भीड तितर-वितर हो गई। तव कही गाडगिल को निश्चित स्थान पर जाकर उद्घाटन भाषण करने का अवसर मिला।

श्री नरसिंह दास बाबाजी



सेठ नरसिंहदास—बाबाजी हो गए

नागौर के सेठ नरसिंहदास अग्रवाल एक दिन अपनी लाखो की सपत्ति भारत-माता के चरणो मे भेट करके सचमुच ही बावाजी हो गए। बाद मे वे बाबाजी के नाम से ही पहिचाने जाने लगे।

लोकजागरण में बाबाजी की भूमिका

राजस्थान के लोकजागरण मे इस त्यागवीर की बहुत बडी भूमिका रही है। उन्होने गांधीवादी सस्थाओ के साथ रहकर रचनात्मक कार्यो मे अपना समय लगाया, उन्होने राजस्थान मे क्रान्तिकारी और आतकवादी प्रवृत्तियो को बल पहुँचाया और क्रान्तिकारी नौजवानो का मार्ग दर्शन किया। उन्होने किसान पचायतो को सगठित करके किसान आन्दोलन को आगे बढाने का कार्य किया। उन्होंने जागीरी अत्याचारो के विरुद्ध लोकमत बनाया। और अत मे उन्होने साप्ताहिक पत्र निकाले और लोगो मे विचार-क्रान्ति लाने की चेष्टा की।

मद्रास के प्रतिष्ठित व्यापारी

बावाजी का व्यापार मद्रास मे था। वे मद्रास मे केमिकल, सर्जिकल, ड्रग्ज एवं पैटेंट औषधियो का लाखो का व्यापार (इम्पोर्ट) करते थे। मद्रास में उनका बहुत बडा मेडिकल हॉल था और मद्रास के सपन्न व्यापारी समाज मे उनका बहुत सम्मान था। उन्होंने अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से व्यापार को बहुत फैला दिया था और जिधर भी उनका हाथ पडा उधर उन्हे बराबर सफलता और सपन्नता मिलती गई। उन्होने कभी सोचा भी नहीं होगा कि किसी दैवी चमत्कार से उन्हे अपना व्यापार एक क्षण मे बंद कर देना पडेगा।

तीन मित्रों की टोली और भारत तिलक का प्रकाशन

मद्रास मे उनके अति निकट के दो मित्र थे। एक थे उदयपुर के वैद्य लक्ष्मी नारायण जो मद्रास के मारवाडी समाज मे चिकित्सा कार्य करते थे। दूसरे थे श्री क्षेमानन्द राहत जो दक्षिण भारत मे हिन्दी का प्रचार करने मे लगे हुए थे। इन तीनो मित्रो का झुकाव राष्ट्रीयता की ओर था और देश मे घटने वाली कोई घटना उनकी भावनाओ को झकझोर डालती थी। प० लक्ष्मीनारायण सस्कृत के विद्वान थे और क्षेमानन्द राहत हिन्दी साहित्य के मर्मज्ञ थे। परन्तु बाबाजी का शैक्षणिक ज्ञान इनकी तुलना मे अत्यन्त सामान्य था पर उनके विचार अत्यन्त उग्र थे। अग्रेजी राज के विरुद्ध होने वाले प्रत्येक कार्य मे वे जी खोलकर सहायता करते थे। हालांकि उन दिनो वे अपने भावो को शुद्ध हिन्दी भाषा मे व्यक्त नही कर सकते थे परन्तु उन्होने इन दोनो मित्रो को आर्थिक सहयोग देकर मद्रास से सबसे पहला हिन्दी पत्र 'भारत तिलक' निकलवाया और मद्रास मे रहने वाले हिन्दी भाषी लोगो मे राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय आन्दोलन और अग्रेज विरोधी लोकमत बनाने लगे।

देश के लिए सर्वस्व त्याग की आकांक्षा

बाबाजी महात्मा गाँधी की विचार-क्रान्ति से निरन्तर प्रभावित हो रहे थे। वे महात्मा गाधी द्वारा सपादित नवजीवन का निरन्तर अध्ययन करते थे। उन्होने उन दिनो सेठ जमनालाल बजाज के त्याग की कई कहानियाँ सुनी थी और वे इसी चिन्ता मे थे कि देश के लिए उन्हे भी अपना सर्वस्व त्याग कर देना चाहिए।

सारी संपत्ति राष्ट्र देवता के चरणों में

1921–22 मे महात्मा गाँधी की मद्रास यात्रा के समय वे राष्ट्रपिता के निकट सम्पर्क मे आए। उन्होने बापू की जीवन चर्या देखी, उनके मर्मस्पर्शी भाषण सुने और एक दिन अपने दोनो मित्रो के साथ बापू के पास जाकर उनसे प्रार्थना की कि हमे देश सेवा का कोई कार्य बताए। महात्मा ने कहा कि देश सेवा के लिए तो पहले त्याग करना पडता है। बाबाजी ने अपनी जेब से अपनी दुकानो और गोदामो की चाबियाँ बापू के चरणो मे रखदी और कहा कि मेरी दुकान और गोदामो मे रखा हुआ लाखो रुपये का माल राष्ट्र के चरणो मे अर्पित है। आप चाबियाँ सम्हाले और उनका जो चाहे उपयोग करें। गाँधीजी ने वे चाबियाँ ले ली और उनकी दुकानो और गोदामो का सामान बेच कर जो धन आया वह स्वराज्य कोष मे जमा कर दिया। बाबाजी से तथा उन अन्य दोनो मित्रो से कहा कि तुम राजस्थान के हो—राजस्थान मे जाओ और वहाँ कार्य करो।

कार्यक्षेत्र–राजस्थान में

बाबाजी मद्रास मे अपनी पत्नी 'लक्ष्मी देवी के साथ जमनालालजी बजाज के पास वर्धा गए और वहाँ कुछ समय कार्य करने के बाद वे सीकर के खादी उत्पादन कार्य मे सहयोग देने के लिए सीकर (राजस्थान) आ गए। राजस्थान मे चर्खा-सघ की स्थापना होने

पर श्री हरिभाऊ उपाध्याय 1926 मे राजस्थान आए थे और श्री जमनालालजी बजाज ने बाबाजी को हरिभाऊ उपाध्याय को सहयोग देने के लिए अजमेर भेज दिया। कुछ वर्षों तक बाबाजी और हरिभाऊ उपाध्याय ने साथ-साथ मिलकर कार्य किया। हटूंडी का गाँधी आश्रम, सस्ता साहित्य मडल आदि की स्थापना मे बाबाजी की बलवती प्रेरणा और लगन ही कार्य कर रही थी।

राजस्थान में गाँधीवाद की संस्थापना

अजमेर मे श्री हरिभाऊ उपाध्याय के नेतृत्व और नियत्रण मे सेठ जमनालाल बजाज के धन द्वारा खादी और राष्ट्रीयता का प्रचार करने वाली सस्थाओ का जाल सा बिछ रहा था। सस्थाओ मे वेतन भोगी कर्मचारी नियुक्त हो रहे थे। प्रारभ मे इन सस्थाओ का प्रान्त की राजनीति से प्रत्यक्षत कोई सम्बन्ध नही था। रचनात्मक प्रवृत्तियो मे ही वे लोग अपने को लगा रहे थे। परन्तु 1928 मे एकाएक यह निश्चित हुआ कि श्री अर्जुनलाल सेठी को नेतृत्व से अपदस्थ करने के लिए हरिभाऊ उपाध्याय आगे आए। बाबाजी उन दिनो हरिभाऊ उपाध्याय के साथ थे और साधन, सस्था और पूंजी के जोर से उन्होने अर्जुनलाल सेठी को परास्त कर दिया। राजस्थान मे गाँधीवाद की जो नीव यहाँ पडी उसमे प्रारभिक रूप से बाबाजी का बहुत बडा हाथ था।

हटूंडी का दो मंझिला ब्लॉक

बाबाजी की पत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी का अजमेर मे ही निधन हो गया था। अब उनके पूरी तरह बाबाजी बन जाने मे कोई बाधा नही थी। श्री लक्ष्मीदेवी के जेवर बेचकर जो धन प्राप्त हुआ उससे उन्होने हटूडी के गांधी आश्रम मे एक दो मजिला ब्लॉक बनवा दिया। और जमनालाल बजाज के बहुत जोर देने पर वे अपनी जीविका के लिए गाँधी-सेवा-सघ से 40/—मासिक का जीवन-निर्वाह भत्ता लेने को राजी हुए। परन्तु यह सब भी लबे समय तक नही चल सका।

बाबाजी की आदर्शवादिता और राजनीति

बाबाजी एक सत्यान्वेषक थे। वे भावनाशील व्यक्ति थे। उनकी देशभक्ति निस्सीम थी। उनका कोई निहित् स्वार्थ नही था। वे प्रतिष्ठा, नेतृत्व या भक्तो के लिए इस मार्ग पर नही आए थे। वे तो देश सेवा की विचित्र भावनाओ मे ओतप्रोत थे। वे किसी भी राष्ट्रीय कार्य मे या रचनात्मक कार्यो की सस्थाओ मे पक्षपात या आदर्शहीनता सहन नही कर सकते थे। उन्होने वर्षों तक इन सस्थाओ का राजस्थान मे दृढता, निर्भयता और पक्ष रहित होकर निःस्वार्थभाव से नेतृत्व किया परन्तु जब से इन सस्थाओ का राजनीति से सपर्क हुआ तब से इन सस्थाओ के स्तर मे, कार्यकर्त्ताओ के चरित्र मे और साथियो के विशुद्ध राष्ट्रीय चिंतन मे अतर आने लग गया। यही से बाबाजी का विरोध शुरू हो गया।

गांधीवादी खेमे में बगावत

बावाजी ने भावना से ऊपर उठकर जब वस्तु-जगत को खुली आँखो से देखा तो उन्हे लगा कि राजस्थान-सेवा-सघ जैसे एतिहासिक, उपयोगी और महत्वपूर्ण सस्थान को भग करवाने मे भी विशिष्ठ गाँधीवादी सस्था का हाथ रहा है और अर्जुनलाल सेठी तथा क्षेमानद राहत जैसे कट्टर देशभक्तो को अत्यन्त दुखद स्थिति मे पहुँचाने का कार्य भी सरकार की अपेक्षा कुछ गांधीवादी व्यक्तियो ने ही विशेष रूप से योजनाबद्ध तरीके से किया है। उन्होंने इस सत्य को समझने पर 1932 के बाद खुले रूप मे गाँधीवादी खेमे से बगावत करदी और प्रत्येक अनुचित बात की अति स्पष्ट और कटु आलोचना करने लगे।

पश्चात्ताप के आँसू

उन्हे इस बात का सबसे बडा दुख था कि राजनीति की दलबदियो मे भागीदार होकर उन्होने राष्ट्र के महान् देशभक्त अर्जुनलाल सेठो को अपदस्थ करवाने के षडयन्त्रो मे योग दिया था। उन्होने 'राजस्थान की पुकार' नामक अपना ग्रंथ श्री अर्जुनलाल सेठी को समर्पित किया है और उसमे सेठीजी को सबोधन करके लिखा है कि—

> पिछली भूलो और अपराधो के लिए क्या मैं आपसे क्षमा माँगू ?
> आपसे क्षमा माँगने से कही अधिक सतोप, मुझे आपके जीवन से जो शिक्षा मिली है उससे होता है। उन्ही परिस्थितियो ने मुझे यह पुस्तक लिखने को
> विवश किया है।
> आप अपने हृदय को उदार कर मेरी यह तुच्छ भेट
> स्वीकार करें और अपने हृदय के अतस्तल
> के कपाट मेरे लिए खोल दे, ताकि मैं
> उसमे प्रवेश कर सकूँ।

बाहरी शक्तियों का विरोध

बावाजी वर्धा से जमनालाल बजाज के प्रतिनिधि बनकर ही राजस्थान मे आए थे। खादी मडल नामक सस्था के माध्यम से वे राजस्थान मे जमनालाल बजाज की योजना और नीति को यहाँ क्रियान्वित करने वाले मुख्य व्यक्ति थे। राजस्थान मे सर्वप्रथम खादी मडल कायम हुआ। चर्खा सघ जिसका रूपातर हैं, बाद मे जमनालाल बजाज और घनश्यामदास बिडला के धन के सहयोग से यहाँ हरिभाऊ उपाध्याय के साथ बावाजी ने सस्ता साहित्य मडल, हटूडी का गाँधी-आश्रम और गांधी-सेवा-सघ की स्थापना की। इन सब सस्थाओ को सचालन के लिए धन राजस्थान के बाहर से मिलता था और धन देने वाले उपरोक्त नेता हर कदम पर अपनी नीति और अपनी योजनाओ का मायाजाल फैला रहे थे। बावाजी ने वर्षों तक बाहर के धन से चलने वाली इन प्रवृत्तियो की प्रगति का सचालन किया। लेकिन उन्होने जब इन सस्थाओ के सचालको की सकीर्णवृत्ति और निहित्

स्वार्थों के लिए राष्ट्रीय सस्थाओ का दुरुपयोग होते देखा तो उनकी आत्मा कराह उठी। उन्होंने कहा कि मुझे जितनी घृणा अग्रेजो की गुलामी से है उससे कही अधिक अनुभव-जन्य-घृणा लेकर मैं इन सस्थाओ से अलग हो रहा हूँ। 'राजस्थान की पुकार' मे बाबाजी ने चेतावनी देते हुए लिखा है कि—

ये सस्थाए और उनके सचालक तथा सेवक जनता के हितैषी नही हैं बल्कि सच तो यह है कि ये कुछ धनपतियो के एजेन्ट हैं जो उनसे धन लेकर अग्रेजी शैली से अपना जीवन बिताना चाहते हैं। पुराने विद्वानो की भाँति धन के हाथो अपने को बेचकर वे अपने मस्तिष्क का उपयोग बडे-बडे कल्पित सिद्धान्तो और समाज की उन्नति मे बाधक निष्प्राण योजनाओ की रचना मे करते हैं।

जनता की गोद मे

बाबाजी ने आगे लिखा कि "मेरे लिए भी अनिवार्य हो गया था कि मैं धनदाताओ द्वारा सचालित होने के बजाय जनता द्वारा और जनता के हितैषियो द्वारा सचालित होऊ। मेरे विरुद्ध आवाज बुलद की जाने लगी है कि मैं हिंसात्मक आन्दोलन मे विश्वास करता हू। मैं नीति-भ्रष्ट हो गया हूँ। मैंने उनकी दी हुई सत्ता का भार अपने सर से उतार फैंका है और गरीब साथियो तथा जनता की गोद मे आ बैठा हू। इस प्रकार शक्तिशालियो से पराजित होकर और साधन-रहित होते हुए भी मेरा अतकरण आशा और उत्साह से परिपूर्ण होकर लहलहा रहा है। इन शक्तिशाली धनवानो की जोरदार चोटें भले ही मेरा पीछा करती रहें—मैं इन भयावनी मारो को सहता हुआ अपना शेष जीवन पीडितो की सेवामे समर्पित कर दूँगा।"

धनवान नेताओं को सलाह

बाबाजी एक बागी थे। उन्होंने ही यह नारा दिया कि राजस्थान मे राजस्थान का नेतृत्व विकसित होने दो। बाहरी धन के सहारे थोपे जाने वाले नेतृत्व के विरोध मे वे एकाकी और साधन हीन बन गए। उन्होंने उन नेताओ को समझाया था कि आप धन के बल से राजस्थान मे जो कार्य करना चाहते हैं उससे हमारा आत्मविश्वास नष्ट हुआ है, स्वावलबन के विश्वास मे शिथिलता आई है, हमारे परम मित्रो और विश्वासी साथियो मे आपस मे तीव्र मतभेद पैदा हुए हैं और हमारी सारी मित्रता और सहयोग शत्रुता और असहयोग मे परिणित हो रहे हैं, सारा सार्वजनिक जीवन कलुषित और चौपट हो रहा है।

धनपति नेताओ की नीति का परिणाम

बाबाजी ने राजस्थान की पुकार मे लिखा कि सेठीजी की पराजय के बाद राजस्थान की राजनीति पर जिन बाहरी धनपति नेताओ का वर्चस्व था उनके कार्य सचालन की नीति से निम्न परिणाम राजस्थान मे प्रकट हुए हैं :—

(1) यहां के युवको मे दूसरे प्रातो की तरह निस्वार्थ देश सेवा और कुर्बानी

की जो भावना जागृत होने लगी थी वह उठते ही नष्ट हो गई। और अब (1932 मे) कोई युवक भरपेट वेतन लिए बिना देश सेवा को तैयार नही होता।

(2) अपने स्वतत्र विचार रखने और उनके अनुसार सेवा करने के बजाय प्रांत के युवको मे अपनी आत्मा के हनन करने और वेतनदाता के ईशारे पर प्रान्त के हितो के विरुद्ध तक काम करने की भावना बढ रही है।

(3) देश-सेवा वैतनिक रोजगार बनता जा रहा है जिससे अनेक नकली देशभक्त मैदान मे आ रहे है और वैतनिक देशभक्ति के लिए आपस मे लड़कर प्रान्त के वायुमण्डल को भ्रष्ट कर रहे है।

(4) प्रात के युवको को सेवा का श्रेय न मिलने से उन्हे सेवा और बलिदान के लिए प्रोत्साहन नही मिलता।

(5) वाहर से वेतन और सहायता मिलने से कार्यकर्त्ताओ को यहाँ की जनता की भावनाओ और आकाक्षाओ की परवाह नही रहती।

गलत परंपराओं का कड़ा विरोध

इस प्रकार राष्ट्रीय आन्दोलन के समय राजनैतिक चेतना के केन्द्र अजमेर मे जो गलत परम्पराए विकसित हो रही थी उनका वावाजी ने कडा विरोध किया। अजमेर की राजनीति मे वे वागी घोषित कर दिए गए। लेकिन वे जनता के हर सुख-दु ख मे जनता के माथ रहे और जनता के जीवन अधिकारो के लिए जनता द्वारा लडी गई हर लडाई मे वे अग्रिम पक्ति मे खडे रहे।

दो मोर्चो पर लड़ाई

इस तरह से वावाजी एक तरफ अग्रेज विरोधी लडाई के अग्रगण्य थे तो दूसरी ओर राष्ट्रीय जीवन मे धनपतियो द्वारा पैदा की जाने वाली चारित्रिक निष्क्रियता और विपमता के माथ जीवन पर्यंत लडाई लडते रहे। धन द्वारा पोषित व्यक्तियो और सस्थाओ की सगठित-शक्ति को न वावाजी परास्त कर सके और न उनका शुद्धिकरण परन्तु उनकी स्पष्टवादिता ने राजस्थान की जनता के मनोवल को ऊँचा उठाने मे परोक्ष रूप से बहुत वडा सहयोग दिया और जिन रियासतो मे वनपतियो के वाहरी प्रभाव के विना जन आन्दोलन सगठित और सचालित होते रहे थे उन्होने वावाजी को कधो पर उठा लिया।

वावाजी व्यक्ति नही, स्वयं में एक जीवंत संस्था थे

वावाजी व्यक्ति नही, वे एक जीवित मस्था थे। एक क्षरण के लिए भी वे निष्क्रिय नहीं रह सकते थे और विशुद्ध लोक सेवा और देशहित के अतिरिक्त उनका कोई निहित् स्वार्थ नहीं था। वे कितनी वार किस-किस राज्य मे कितने-कितने समय के लिए जेल गए इमका भी वहुत लवा हिसाव लगाना पडेगा। वे जल्दी से जल्दी देश से अग्रेजो को भगा देने के लिए उतावले वावले थे। इसी भावना ने उन्हे आतकवादी और क्रान्तिकारियो की

ओर प्रवृत्त किया । राजस्थान के आतंकवादी क्रान्तिकारियो के लिए वे एक वरदान बन गए । लेकिन गाँधीजी के प्रयत्नो से आतंकवाद का मार्ग स्वय क्रान्तिकारियो ने छोड दिया ।

ग्रामीण नेतृत्व के विकास के लिए

बावाजी ने किसानो के बीच भी वर्षो तक अपने तरीके से कार्य किया । उन्होंने ग्राम स्वावलवन के लिए कई प्रयोग किए और गाँवो मे ग्रामीण नेतृत्व के विकास के लिए अथक परिश्रम किया । राजस्थान के सैकडो केन्द्रो मे जो स्थानीय नेतृत्व विकसित हुआ है उसमे बाबाजी का बहुत वडा योग रहा है ।

एक संपूर्ण राजनैतिक परिव्राजक

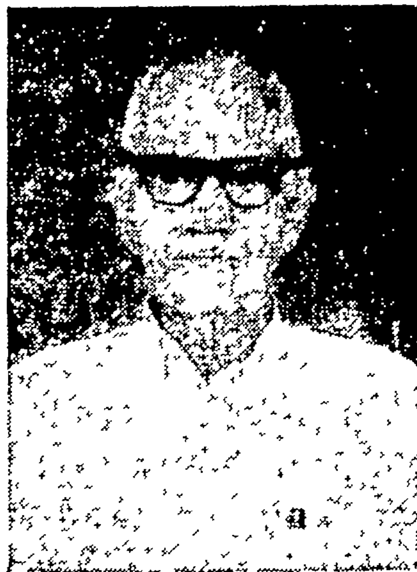
बावाजी ने राजस्थान मे, अजमेर मे या किसी रियासत मे न अपना कोई नया दल बनाया और न कोई अलग सस्था खडी की, न उनके रहने का अपना मकान था और न उनके पास उनका किसी भी प्रकार का सचय या सग्रह था । वे पूर्णरूप से राजनैतिक परिव्राजक थे । वे जनता के थे, जनता के लिए थे और एक दिन जनता द्वारा श्मशान मे चिता के भेंट कर दिए गए । उनका न कही स्मारक है और न कोई उनका स्मृति दिवस ।

प्रेरणा के अजस्र श्रोत

राष्ट्र देवता के चरणो मे अपनी समस्त सपत्ति को विसर्जित करके एक दिन इस तरह सेठ नरसिंहदास अग्रवाल मद्रास मे बाबाजी हो गए थे और जीवन के अतिम क्षण तक वे बावाजी ही रहे । उनकी सत्यनिष्ठा, उनका उदात्त चरित्र और उनकी निस्वार्थ देशसेवा की लगन-प्रेरणा का अजस्र श्रोत है । वे सच्चे अर्थो मे स्वाधीनता के मिशनरी थे । वे निश्चय ही राजस्थान मे राजनैतिक चेतना और लोकजागरण के अग्रदूत हैं ।



श्री नत्थूराम मोदी, अलवर



जन्म : 10 अक्टूबर 1902

पता · पुराना कटला, सुभाष चौक, अलवर

श्री नत्थूराम मोदी का जन्म अलवर के एक वैश्य परिवार मे 10 अक्टूबर 1902 को हुआ। इनके पिता का नाम श्री गगासहाय मोदी था। इनकी उम्र इस समय 71 वर्ष की है। श्री नत्थूराम मोदी का वर्तमान निवास पुराना कटला, सुभाष चौक, अलवर है।

सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भ

श्री नत्थूराम मोदी का सार्वजनिक जीवन 1923 से ही प्रारम्भ हो जाता है। स्वदेशी के कट्टर समर्थक श्री नत्थूराम मोदी ने प्रजामडल की स्थापना के पहले अपना अधिक से अधिक समय अस्पृश्यता निवारण की प्रवृत्तियो मे लगाया। प० हरिनारायण शर्मा के साथ मिलकर कई हरिजन पाठशालाओ का सचालन किया। उस समय सर्वश्री गणेशीलाल, हरिनारायण शर्मा, गुलजारीलाल, मास्टर रामावतार और इन्द्रसिह आजाद उनके सहयोगी और सहकर्मी थे। प्रारम्भ मे श्री नत्थूराम मोदी पर आर्य समाज का गहरा प्रभाव था।

खादी और राष्ट्रभाषा के प्रचार में

1932 मे अलवर मे हिन्दू-मुसलमान दगो को रोकने के लिए आपने प० हरिनारायण शर्मा के साथ कधे से कधा मिलाकर काम किया। आपने अलवर मे सर्वप्रथम अपनी दुकान मे खादी भण्डार खोलकर खादी के प्रसार को बढावा दिया। इसी प्रकार राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार के लिए भी आपने अपने साथियो के साथ बहुत काम किया।

हरिजन सुधार और किसान आन्दोलन

सन् 1936 से आपने राष्ट्रीय कार्य को अपना जीवन का लक्ष्य बनाया और एक

खादी भण्डार खोला जो वर्षों तक चला। आपने हरिजनो के उत्थान के कार्य मे भी बडी लगन से कार्य किया और उनके लिए पाठशालाए भी खोली। जागीरी जुल्मो का भी आपने डट कर मुकाबला किया और किसानो के आन्दोलनो मे भाग लेकर सदा सहायता पहुँचाई, इसलिए आप सदा राज्य के कोप भाजन रहे। सर्वप्रथम जब चुनी हुई म्युनिसिपेलिटी अलवर मे कायम हुई तब काँग्रेस के उम्मीदवार की हैसियत से म्युनिसिपल कौंसिलर का चुनाव आपने लडा और उसमे सफलता प्राप्त की।

अलवर में कांग्रेस कमेटी और प्रजामंडल

अलवर राज्य प्रजा मण्डल कायम होने से पहले अलवर मे दिल्ली प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के अधीन अलवर जिला काँग्रेस कमेटी काम कर रही थी। तब आप उसके सक्रिय कार्यकर्त्ता थे। आप जिला कांग्रेस कमेटी के वर्षों कोषाध्यक्ष व मन्त्री रहे। अलवर राज्य प्रजा-मण्डल कायम होने पर आपने प्रजा-मण्डल को भी जिला कांग्रेस कमेटी की तरह सक्रिय सहयोग दिया। आप उसके आदि सस्थापको मे थे। राज्य के डर से उन दिनो मे प्रजा-मण्डल को लोग दफ्तर खोलने के लिए मकान नही देते थे, तब प्रजा-मण्डल का दफ्तर खोलने के लिए आपने अपना कमरा दिया। आप प्रजा मण्डल के अध्यक्ष भी रहे।

फीस विरोधी आन्दोलन और गिरफ्तारी

सन् 1938 मे प्रजा-मण्डल की स्थापना हुई। उन्ही दिनो मे राज्य ने स्कूलो मे फीस लगाने का निश्चय किया, तो प्रजा-मण्डल ने उसका विरोध किया। इस प्रजा-मण्डल के आन्दोलन मे श्री मोदी नत्थूरामजी ने सक्रिय भाग लिया। तव राज्य ने आप पर राज्यद्रोह का मुकदमा चलाया और जेल भेज दिया और **एक साल की सख्त सजा हुई बाद मे वह सजा चार महीने की करदी गई।** जेल मे आपको काल-कोठरी मे रखा गया और डडा-वेडी डाल कर भयकर यातनाए दी गई। जेल से आने के वाद आप अपने घर मे नजर बन्द रहे।

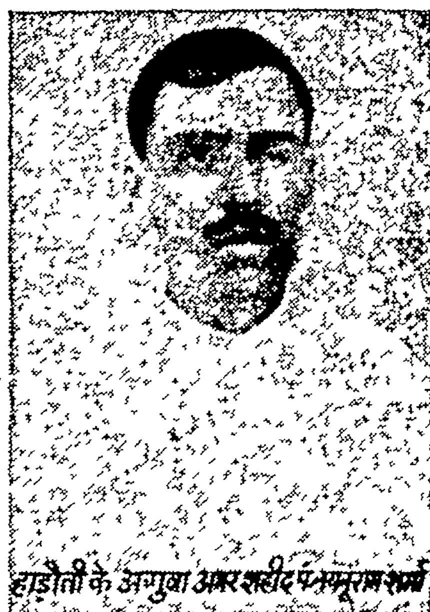
समाजवाद की स्थापना के स्वप्न-द्रष्टा

आप सदा ही प्रगतिशील विचारो के समर्थक रहे हैं और समाजवाद के हामी है। साम्प्रदायिक भावना रखने वाले तत्वो के आप सदा विरोधी रहे हैं। आप इस समय इकहत्तर वर्ष के हैं और यथा शक्ति सार्वजनिक कार्य करते रहते हैं।



पं० नयनूराम शर्मा
कोटा

अवसान 14 अक्टूबर 1941


हाड़ौती के अगुवा और शहीद पं० नयनूराम शर्मा

हाड़ौती में राजनैतिक चेतना के जनक

प० नयनूराम शर्मा हाडौती क्षेत्र मे राजनैतिक चेतना और लोक जागरण के अग्रदूत जनसेवक थे। वे त्याग और सेवा की जैसे जीवत मूर्ति थे। वर्षों तक उन्होने कोटा राज्य मे पुलिस थानेदार के पद पर कार्य किया था। परन्तु उनका सत्यनिष्ठ और दीनबधु मन उस पद पर उन्हे टिकाए नही रख सका। राजकीय सेवाकाल मे उन्होने हाडौती की ग्रामीण जनता की जो दर्दनाक तस्वीर देखी थी उससे उनका कलेजा काँप उठा। एक दिन अकस्मात् उन्होने राजकीय सेवा को तिलाजलि दे दी और कठोर सेवा का व्रत लेकर लोक धर्म के पालन के लिए हाडौती की जनता के दरबार मे पहुच गए।

राजस्थान-सेवा-संघ को समर्पित जीवन

प० नयनूराम शर्मा ने राजकीय सेवा से मुक्त होते ही अपने आपको विजयसिंह पथिक द्वारा सस्थापित राजस्थान-सेवा-सघ के समर्पित कर दिया। सघ में सम्मिलित होने के नियम अत्यन्त कठोर थे। सघ का सदस्य राजनैतिक सन्यासी या मिशनरी होगा, वह अपनी किसी भी तरह की व्यक्तिगत सपत्ति नही बनाएगा। अपनी आजीविका के लिए कोई दूसरा धधा या व्यवसाय नहीं करेगा। धार्मिक झगडो से मुक्त रहेगा और अपना सारा समय केवल देश का कार्य करने की ओर लगाने का सकल्प लेगा। सघ का प्रत्येक सदस्य अपने और अपने परिवार के आश्रितो के लिए रु० 15/– प्रतिमास फी आदमी से अधिक नहीं लेगा और इसमे भी जो बचत होगी वह सघ को लौटा देगा। सघ निर्माण के बाद सेवा का कठोर व्रत लेकर इन नियमो को मानने वाले प्रारम्भ मे केवल तीन सदस्य बने। 1. श्री विजयसिंह पथिक, 2 श्री रामनारायण चौधरी 3 श्री हरिभाई किंकर। इन तीनो के बाद कोटा के प० नयनूराम शर्मा राजस्थान सेवा सघ के चौथे सदस्य बने।

रूप रंग और आकार-प्रकार

प० नयनूराम शर्मा का रग सावला, शरीर हृष्ट पुष्ट, सर नगा, मोटे खद्दर का

कुर्ता, ऊँची धोती, हाथ मे एक लठ और चेहरे पर मुक्त हास्य, उनका यह स्वरूप यह बताने के लिए पर्याप्त था कि वे एक फक्कड, निर्भीक और देहाती जीवन के अभ्यस्त व्यक्ति थे।

राज्य में बैठकर राज्य से बग़ावत

पं० नयनूराम शर्मा राजपूताने की रियासतो मे पहले व्यक्ति थे जिन्होने सिंह की दाढी उसकी गुफा मे पकडी थी। उन्होने रियासत के भीतर बैठकर उससे खुली लडाई ली और जब तक जिये अखबारो मे अपने नाम से राज्य और अधिकारियो की कडी आलोचना करने से नही चूके।

बेगार विरोधी आन्दोलन

सरकारी नौकरी छोडकर राजनैतिक मैदान मे आते ही उन्होने सबसे पहले कोटा राज्य मे बेगार निवारण का कार्य हाथ मे लिया। थोडे ही समय मे उन्होंने हाडौती के सभी अचलो मे तूफानी दौरे करके एक ऐसा बेगार विरोधी वातावरण खडा कर दिया कि कोटा के महाराज को प० नयनूराम शर्मा की माँगें स्वीकार करनी पडी। प० नयनूराम शर्मा के द्वारा हाडौती के आँचल मे जनता की यह पहली विजय थी। बेगार पूर्ण रूप से तो सभवत समाप्त नही हो सकी लेकिन अधिक अशो मे उनके प्रयत्नो से बेगार की सख्तियें समाप्त कर दी गई।

हाड़ौती शिक्षा मंडल और सामाजिक कार्य

प० नयनूराम शर्मा की रचनात्मक प्रतिभा भी असाधारण थी। उन्होने हाडौती शिक्षा मडल की स्थापना करके कोटा राज्य मे बरसो तक दर्जनो ग्रामीण पाठशालाओ का सचालन किया था। इस सस्था के द्वारा उन्होने देहाती जनता मे शिक्षा का प्रचार, हरिजन सेवा और समाज सुधार के काफी काम किए थे।

हाड़ौती के प्रथम और एक छत्र नेता

प० नयनूराम शर्मा हाडौती के प्रथम और एक छत्र नेता थे। हाडौती के इस क्रांतिकारी नेता ने जीवन भर दरिद्र नारायण की सेवा के लिए अनुत्तरदायी सरकार, सामतशाही और नौकरशाही से डटकर लोहा लिया। इसीलिए शासन की आँखो मे निरन्तर खटकते रहे।

षड़यन्त्र से घातक आक्रमण और मृत्यु

14 अक्टूबर 1941 को रामगज मडी से अपने गाँव निमाणा जाते हुए रात्रि को अचानक रास्ते मे छिपे हुए एक गिरोह ने उनकी बडी निर्दयता, नृशसता एव नीचता पूर्ण ढग से हत्या कर दी। हत्यारे पकडे गए पर तत्कालीन सरकार ने यह कहकर उन्हे छोड दिया कि इसका कोई प्रमाण नही है।

प० नयनूराम शर्मा की मृत्यु बहुत ही दु खद परिस्थितियो मे हुई। उनके हत्यारो को न रियासती सरकार पकड सकी न सजा दे सकी।

स्वर्गीय
श्री नित्यानंद नागर,
बूंदी.

देशी राजाओ के अधिकार !

देशी रियासतें अपनी निरकुशता और स्वेच्छाचारिता के लिए प्रसिद्ध थी। यदि राजा किसी पर खुश होता तो उसे आसमान पर चढा देता और सब तरह से निहाल कर देता। किन्तु जितना जल्दी वह खुश होता था, उतना ही जल्दी नाराज भी हो सकता था और एक वार नाराज होने पर उसकी चल-अचल सम्पत्ति छीन ली जाती, उसे पकड कर जेल मे डाल दिया जाता या रियासत से निर्वासित कर दिया जाता। राजा तो फिर सुनवाई करने ही क्यो लगा, और ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि रियासतो के भीतरी मामलो मे हस्तक्षेप न करने की अपनी नीति का वहाना बना कर चुप रहते। किन्तु अगर ब्रिटिश सरकार किसी राजा को स्वतन्त्र प्रकृति का समझती तो कुशासन के नाम पर उसकी गर्दन पर सवार हो जाती और उसके सारे अधिकार छीन लेती।

बूंदी के दीवान और प्रधान सेनापति

श्री नित्यानन्द नागर और उनके परिवार की कहानी तत्कालीन रियासती शासन की निरकुशता और स्वेच्छाचारिता पर अच्छा प्रकाश डालती है। उनके पिता श्री मेघवाहन वून्दी राज्य के 20 वर्ष दीवान रहे। उनको जागीर दी गई, और वे खासी चल-अचल सम्पत्ति के स्वामी वन सके। स्वय श्री नित्यानन्द को राज्य का प्रधान सेनापति नियुक्त किया गया। किन्तु मेघवाहन जी किसी कारण अ ग्रेज अधिकारियो के कोप भाजन वने और उन्हे अपने पद से त्याग पत्र देना पडा। उन्हे राज्य से निर्वासित कर दिया गया। नित्यानन्दजी ने भी अपने पद से त्यागपत्र दे दिया।

राज्य से निर्वासन और सम्पत्ति जब्त

नित्यानन्दजी को राष्ट्रीयता की हवा लगी। वरड के इलाके मे रियासती जुल्मो और शोषण के खिलाफ किसानो का आन्दोलन हुआ तो उसके साथ सहानुभूति दिखाई। सन् 1921 मे अहमदावाद कांग्रेस के अधिवेशन मे प्रतिनिधि के रूप मे शामिल हुए। नित्यानन्दजी की राष्ट्रीय गतिविधियाँ रियासती हुकूमत की आँखो मे वुरी तरह खटकी। उन्हे 6 जुलाई, 1927 को विना कोई कारण वताये वून्दी रियासत से निर्वासित कर दिया गया। उनकी लाख-पौने लाख की सम्पत्ति भी उनसे छीन ली गई। श्री नागर ने रियासत

की इस नादिरशाही के विरुद्ध अंग्रेज अधिकारियो के दरवाजे खटखटाये, किन्तु उन्हे कोई न्याय नही मिला। गांधीजी की यह राय थी कि रियासतो के भीतर अंग्रेजों के हस्तक्षेप की मांग न की जाय और राजाओ से ही बातचीत के द्वारा या लड-झगड कर न्याय प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाय। गांधीजी की इस नीति के अनुसार नित्यानन्दजी ने अंग्रेजो के द्वारा खटखटाना बन्द कर दिया। गांधीजी के विश्वस्त साथी श्री मणिलाल कोठारी ने रियासत के दीवान के साथ इस विषय मे बातचीत की।

राज्य की प्रतिष्ठा का प्रश्न

दीवान ने स्वीकार किया कि नित्यानन्दजी के साथ अन्याय हुआ है, किन्तु अब यह मामला राज्य की प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया है और इसलिए सीधे कुछ नही किया जा सकता। दीवान ने निर्वासन आज्ञा ढीली करके उनकी सम्पत्ति की वापसी के लिए कानूनी कार्यवाही करने की सुविधा नित्यानदजी को प्रदान की। अत मे वह बूंदी रियासत की प्रीवी कौंसिल से अपने हक मे फैसला कराने मे सफल हुए और 25 वर्ष बाद उनकी छीनी हुई कोठी सन् 1945 मे उन्हे वापस लौटा दी गई।

नमक कानून तोड़ने वाले प्रथम सत्याग्रही

नित्यानदजी 26 वर्ष तक बून्दी रियासत से निर्वासित रहे। उन्होने गाँधीजी के नेतृत्व मे लडे गए स्वतत्रता सग्राम मे आगे बढकर हिस्सा लिया। सन् 1930 मे उन्होने राजपूताना और मध्य भारत के प्रथम सत्याग्रही के रूप मे नमक कानून तोडा, उन्हे एक वर्ष के कारावास का दण्ड मिला। सन् 1932 के आदोलन मे वह दो वर्ष के लिए और सन् 1940 के व्यक्तिगत सत्याग्रह मे एक वर्ष के लिए जेल गये। सन् 1942 मे 'भारत छोडो' आदोलन शुरु हुआ तो उन्हें चार वर्ष तक बूंदी के किले मे नजरबद रखा गया।

समूचा परिवार देश की सेवा में

नित्यानदजी के सुपुत्र श्री ऋषिदत्त मेहता और उनकी पुत्रवधू सौ० सत्यभामा ने भी स्वतत्रता-सग्राम मे हिस्सा लिया और कष्ट सहन किये। श्री ऋषिदत्त सन् 1930 और सन् 1932 मे दो बार अजमेर मे जेल गये। वे ब्यावर और अजमेर से 'राजस्थान' नामक हिन्दी का साप्ताहिक पत्र निकालते थे। सौ० सत्यभामा भी अपने दो दूध-पीते बच्चो को लेकर जेल गईं।

खानाबदोश की जिन्दगी

अजमेर सरकार ने श्री ऋषिदत्त को अजमेर से निर्वासित कर दिया था। अत सन् 1944 मे वह कोटा जाकर रहने लगे। उधर बून्दी रियासत ने भी उनके रियासत के भीतर दाखिल होने पर रोक लगा दी। बून्दी मे उनका घर था और अजमेर तथा बून्दी की सरकारो ने उन्हे खाना-बदोश बना दिया था।

निषेधाज्ञा भंग की जाए

इस सम्बन्ध मे श्री ऋषिदत्त ने गांधीजी के साथ पत्र-व्यवहार किया और उनसे मार्ग दर्शन माँगा। गाँधीजी न उन्हे सलाह दी कि बून्दी रियासत की निर्वासित आज्ञा की अवहेलना करना उनका नैतिक धर्म हो जाता है और वह राज्य को पूर्व नोटिस देकर उसकी अवहेलना कर सकते हैं। यह सन् 1946 की बात है। गाँधीजी की सलाह के अनुसार श्री ऋषिदत्त ने बून्दी रियासत को लिखा कि यदि अन्यायपूर्ण निर्वासन-आज्ञा वापस नहीं ली गई तो वह उसका उल्लघन करेंगे। सद्भाग्य से बून्दी सरकार मे सुबुद्धि का उदय हुआ तो निश्चित अवधि के पहले ही ऋषिदत्तजी के विरुद्ध निर्वासन आज्ञा रद् कर दी गई।

सामाजिक क्रांति और जाति द्वारा बहिष्कार

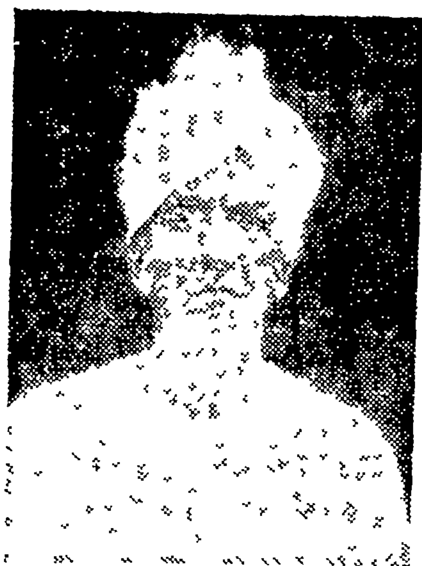
बून्दी के नागर समाज मे काफी कट्टरता थी। श्री नित्यानन्द और उनके परिवार के लोगो ने छुआछूत के परम्परागत विचारो का परित्याग कर दिया था। वह हरिजनो के साथ खान-पान और रहन-सहन मे समानता का व्यवहार करते थे। नागर समाज को यह सब सहन नही हुआ। उसने श्री नित्यानन्द के परिवार का सामाजिक बहिष्कार कर दिया। जब यह तथ्य गाँधीजी की दृष्टि मे लाया गया तो उन्होने कहा कि इसकी क्यो चिन्ता करते हो। मैं स्वय भी तो जाति बहिष्कृत हूँ। गाँधीजी चाहते थे कि लोगो को समाज सुधार की खातिर ऐसी कठिनाइयो को खुशी-खुशी बरदाश्त करना चाहिये और दृढ़ता के साथ समाज के विचारो को बदलने की कोशिश करनी चाहिए। उनका सोचना सही था और आज हम देख सकते हैं कि समाज के विचारो मे कितना परिवर्त्तन आ गया है और छुआछूत इतिहास की बात बन गई है।

इतिहास साक्षी है

श्री नित्यानन्द नागर आज इस लोक मे नही हैं, किन्तु उन्होने और उनके सारे परिवार ने देश की स्वतत्रता और समाज सुधार के लिए जो त्याग किया और कष्ट सहन किये, उन्हे कभी भुलाया नही जा सकता। इस परिवार पर गाँधीजी के विचारो और व्यक्तित्व का भारी प्रभाव पडा था।



श्री नेतराम सिंह गौरीर



जन्म : संवत् 1949, भाद्रपद शुक्ला 2

पता : मु. पोस्ट गौरीर जिला, झुंझुनु.

जन्म, बचपन और परिवार

श्री नेतराम सिंह का जन्म जयपुर राज्य के शेखावाटी क्षेत्र के ग्राम गौरीर (जिला झुंझुनू) मे सम्वत् 1949 को भाद्रपद शुक्ला द्वितीया को एक समर्थ और सम्पन्न किसान परिवार मे हुआ था। उनके सात भाई व तीन बहनें थी उनका लालन-पालन सपन्नता के वातावरण मे हुआ था। श्री नेतरामसिंह के माता-पिता ने सभी बालको की समुचित शिक्षा की व्यवस्था की थी। श्री नेतराम सिंह के पिता का लाखो रुपये के लेन-देन का व्यवसाय चलता था। उनकी कई स्थानो पर दुकानें चलती थी।

बम विस्फोट और स्कूल से छुट्टी

पहले विश्व युद्ध के समय 1914 मे श्री नेतराम सिंह पटियाला के भूमिन्द्रा हाईस्कूल के विद्यार्थी थे। उन्ही दिनो नारनोल मे एक बम विस्फोट हुआ। बम विस्फोट करने वालो मे उनका नाम लिया गया। स्कूल मे भी उनकी शिकायत की गई जिसके परिणामस्वरूप उन्हे स्कूल से निकाल दिया गया।

जागीरदारों के आतंकपूर्ण कार्य

सन् 1914 से 1933 तक श्री नेतरामसिंह के सार्वजनिक जीवन का निर्माण हुआ। वे आर्य समाज की ओर आकर्षित हुए और उसके प्रेरणादायक व्याख्यानो ने उनमे राष्ट्रीयता की तथा स्वदेशी की भावना जगाई। इन 19 वर्षों मे श्री नेतराम सिंह ने सीकर और शेखावाटी के गाँव-गाँव का दौरा किया व देखा कि जागीरदार और सामत किसानो का बुरी तरह शोषण कर रहे हैं। इन जागीरी क्षेत्रो का किसान लाटा, लाग बागें, और

वेगार देता-देता टूट चुका है। ठिकानेदारो का भयकर दमन चक्र चल रहा था। खेत की सारी उपज ठिकानेदार उठाकर ले जाते। विरोध करने वाले कई किसानो को गोलियो से भून दिया जाता, कई किसान गांव से बाहर निकाल दिए जाते।

किसानों के उद्धार के लिए जीवन का समर्पण

किसानो पर ठिकानेदारो, जागीरदारो और सामतो के इन अत्याचारो को देख कर युवक नेतरामसिह का हृदय काँप उठा। सन् 1933 मे देवरोड़ के श्री पन्नेसिह की मृत्यु पर ठाकुर देशराज की प्रेरणा से युवक नेतरामसिह ने अपना समस्त जीवन किसानो को शोषणमुक्त करने और सामती ताकतो के अत्याचारो के विरुद्ध किसानो को सगठित करने मे लगाने का सकल्प किया। इन्ही दिनो मे युवक नेतरामसिह ने अपने साथी हरलालसिह, घासीराम, ताडकेश्वर और रामसिह आदि के साथ मिलकर शेखावाटी किसान सभा के नाम से एक सस्था की स्थापना की और इस सभा के तत्वावधान मे सभाओ तथा समाचार पत्रो के द्वारा ठिकानेदारो के अत्याचारो का विरोध करना शुरू किया।

जागीरदार और महाराजा जयपुर का दमन

किसान सभा की इन वढती हुई प्रवृत्तियो से जागीरदार काँप उठे। उन्होंने किसानो की वढती हुई ताकत को दवाने के लिए महाराजा जयपुर की मदद माँगी। जयपुर राज्य की पुलिस ने ठिकानेदारो के दमन चक्र को अपनी ताकत से कई गुना वढा दिया। किसानो की अधाधु ध गिरफ्तारियें होने लगी, सरे आम किसानो को पीटा जाने लगा। खलिहान जलाए जाने लगे, इन आन्दोलनो मे भाग लेने वालो के गाँवो को उजाड दिया जाता। उनके घर जला दिए जाते पुलिस वाले किसानो पर आँख मीच कर डडे वरसाते, मीटिंगो और जुलूसो पर घोडे दौडाए जाते। जयपुर मे उन दिनो प्रजामडल की स्थापना नही हुई थी, कांग्रेस का किसानो को किसी तरह का सहारा नही था। अधेर नगरी अन्यायी राजा वाला हाल था।

गिरफ्तारियें और गिरफ्तारियें

किसानो का आन्दोलन जोर पकडता गया। जयपुर महाराजा ने लगानवदी का नोटिफिकेशन निकाल कर नेतरामसिह तथा उसके साथियो को गिरफ्तार कर लिया और छ-छ महीने की सजा दे दी। सजा से छूट करकर आते ही फिर गिरफ्तारी और फिर छूटकर आते ही फिर गिरफ्तारी इस तरह से तीन वार छ-छ महीने के लिए नेतरामसिह को जेल की यात्रा करनी पडी। 1939 मे जव नेतरामसिह तीसरी वार जेल से मुक्त होकर आए थे कि उन्हे डिफेन्स ऑफ इण्डिया रुल्स मे 1940 मे दो वर्ष की सख्त सजा देकर जयपुर की सैंट्रल भेज दिया नेतरामसिह की अनुपस्थिति मे पुलिस ने उनके घर पर छापा मारा और उनके पिता के समय के लेन-देन और वोहरगत के सारे कागज और वही खाते उठाकर ले गई। जमीन वगैरहा जिनकी थी उसे दे दी गई।

विश्वयुद्ध की विजय के लिए प्रार्थना से इंकार

इन दिनो दूसरा विश्व युद्ध चल रहा था। जेल मे कैदियो से अग्रेज सल्तनत की विजय के लिए प्रार्थना करवाई जाती थी। श्री नेतरामसिंह तथा उनके साथियो ने अन्य कैदियो के साथ इस तरह की प्रार्थना करने से इकार कर दिया। उन्होने कहा कि हम तो ब्रिटिश सल्तनत का नाश चाहते हैं, हम उनकी विजय की प्रार्थना नही कर सकते जिसके परिणामस्वरूप उन्हे खडी-हथकडी और डडा-बेडी लगाकर काल कोठरियो मे डाल दिया गया।

महाराजा को सलामी दो !

जयपुर मे उन दिनो यह कायदा बना दिया गया था कि जेल से छूटने वाले कैदियो को ट्रक मे बिठाकर चद्रमहल मे महाराजा के समक्ष प्रस्तुत करते और महाराजा को सलामी देने के बाद कैदियो को छोड दिया जाता। नेतरामसिंह की जेल से मुक्ति के बाद उनके साथ भी यही व्यवहार किया गया। नेतरामसिंह, लादूराम जोशी और हरलालसिंह जेल से अपनी-अपनी सजा पूरी करके एक साथ ही मुक्त हुए थे पुलिस अधिकारियो ने इन तीनो के साथ भी यह कायदा बरतना चाहा इन तीनो को जबरदस्ती पकड कर ट्रक मे डाल दिया गया पुलिस वाले इन्हे ट्रक मे दबोचकर बैठ गए, महाराजा के समक्ष इन कैदियो को प्रस्तुत करने के लिए ट्रक चन्द्रमहल की ओर चल पडा शहर मे इन तीनो की रिहाई के समाचार बिजली की तरह फैल गए थे। हजारो की तादाद मे लोग देखते ही देखते चद्रमहल पर इकट्ठे हो गए, मानव मेदिनी उमड पडी, नारे लगाए सामतवाद का नाश हो, जनता मे भी जोश उमड पडा जनता ने भी गगनभेदी नारो से आकाश को गुजा दिया—पुलिस ने लाठी चार्ज शुरु कर दिया जनता ने पुलिस की बरसती लाठियो मे भी अपने नेताओ को चारो ओर से घेर लिया तब पुलिस को आर्म्ड फॉर्स को बुलाकर नेतरामसिंह, लादूराम जोशी और हरलालसिंह को पीछे की मोरी से चन्द्रमहल से बाहर निकाला सारी भीड जुलूस मे बदल गई और इन तीनो नेताओ का शानदार जुलूस शहर मे होता हुआ हीरालाल शास्त्री के मकान पर पहुँच गया।

माता और पिता की मृत्यु के दुखद समाचार

जेल से मुक्त होने के बाद नेतरामसिंह को सबसे पहला दुखद समाचार यह सुनने को मिला कि जब वे जेल मे थे उनके माताजी का देहान्त हो गया। जयपुर से नेतरामसिंह और सरदार हरलालसिंह झुझुनू पहुँचे इन नेताओ के स्वागत मे जैसे सारा झुझुनू नगर सजाया गया था जनता ने नेतरामसिंह का भव्य स्वागत किया नेतरामसिंह ने अपने जेल जीवन के अनुभव सुनाए और भारत से ब्रिटिश सल्तनत को तथा सामती शक्तियो को उखाड फैंकने के लिए जनता का आह्वान किया झुझुनू क्षेत्र मे दौरा करके जब नेतरामसिंह लौटकर जयपुर आए तभी उनके पिताजी का भी स्वर्गवास हो गया।

शिक्षा प्रसार का क्रांतिकारी कार्य

नेतरामसिंह ने राजनीति के साथ-साथ सामाजिक और शिक्षा के क्षेत्र मे कार्य किया था। समाज सुधार के लिए और गाँव-गाँव मे शिक्षा प्रसार, पाठशालाओ तथा छात्रावासो की स्थापनाए तो आपने करवाई थी लेकिन आज से चालीस वर्ष पूर्व पिछडे देहाती इलाको मे इन्होने अपनी कन्याओ को शिक्षण के लिए आगे करके सारे समाज का विरोध मोल लिया था।

कमला वेनीवाल की शिक्षा-दीक्षा

उन दिनो गाँवो मे कोई स्कूल नही था गाँव मे पत्र पढने वाला भी किसी एकाध ब्राह्मण को छोडकर दूसरा कोई व्यक्ति नही मिलता था। गौरीर ग्राम मे उन दिनो बिडलाओ ने एक प्राथमिक पाठशाला की स्थापना की थी और उसमे नेतरामसिंह ने अपनी पुत्री कमला को लडको के साथ पढने भेजना शुरू कर दिया था। उस समय उस पिछडे क्षेत्र मे यह एक ऐसा क्रान्तिकारी कदम था जिसका कि सारे समाज मे विरोध होने लगा। जाति के लोगो ने कई तरह के लाछन लगाए परन्तु नेतरामसिह अपने दृढ सकल्प से नही डिगे। उन्होने 3 वर्ष तक कमला को ग्राम गौरीर की पाठशाला मे पढाने के वाद उसे वनस्थली भेज दिया प्रतिभाशाली वालिका ने वनस्थली मे वी० ए० की परीक्षा पास की उसने जयपुर से एम० ए० किया और फिर जयपुर मे ही अध्यापन का कार्य शुरू कर दिया। उन्ही दिनो श्री रामचन्द्र वेनीवाल के साथ आपकी सुपुत्री कमला का विवाह हुआ।

सन् 1952 श्रीमती कमला वेनीवाल ने फुलेरा निर्वाचन क्षेत्र से राज्य विधान सभा का चुनाव लडा वह चुनाव जीत गई और राजस्थान मे पहली महिला उप मत्री बनाई गई। श्रीमती कमला वेनीवाल 1952 से 1966 तक राजस्थान मत्रिमडल मे डिप्टी मिनिस्टर की तरह काम करती रही सन् 1972 के चुनाव मे दूदू निर्वाचन क्षेत्र से फिर विधान सभा के लिए चुनाव जीतने के वाद इन दिनो वह राजस्थान की गृह राज्यमत्री है।

जनता की श्रद्धा और अगाध विश्वास

श्री नेतरामसिह लवे समय तक जयपुर राज्य प्रजामडल की कार्यकारिणी के सदस्य रहे। वे झु झुनू जिला कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे तथा देश की स्वाधीनता की घडी तक वे निरन्तर किसानो का सगठन और किसान आन्दोलनो का नेतृत्व करते रहे। सन् 1949 के वाद वे कांग्रेस के साधारण सदस्य रहे हैं। इस समय उनकी आयु 80 वर्ष की है लेकिन आज भी किसानो से घिरे रहते हैं और अपने लवे अनुभव से किसानो का मार्गदर्शन करके उनको लाभान्वित करते हैं। शेखावाटी के किसानो का आज भी अपने इस वयोवृद्ध नेता पर अगाध विश्वास है।

स्वर्गीय
श्री निरंजन शर्मा 'अजीत',
भरतपुर

जन्म सन् 1886

अवसान सन् 1970

भरतपुर से बाहर–भरतपुर के लिए

श्री निरजन शर्मा 'अजीत' मूल रूप से भरतपुर के निवासी थे। भारतीय स्वाधीनता सग्राम मे उनका योगदान महत्वपूर्ण रहा है। परन्तु उनकी सभी राजनैतिक प्रवृत्तियो का कार्यक्षेत्र राजस्थान से बाहर ही रहा।

अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजापरिषद के साथ वे अपने जीवनकाल मे निरन्तर सम्बन्धित रहे और भरतपुर जैसी एक रियासत के निवासी होने के नाते वे भरतपुर और राजपूताने की अन्य रियासतो के प्रश्नो को लेकर निरन्तर आन्दोलन करते रहे।

जन्म, बाल्य काल, शिक्षा-दीक्षा

उनका जन्म भरतपुर के एक शाकलद्वीपी सूर्य द्विज ब्राह्मण परिवार मे सन् 1886 मे हुआ था उन्होने 18 वर्ष की आयु मे भरतपुर हाईस्कूल की परीक्षाए पास करली थी। उनकी शिक्षा का माध्यम उर्दू था और पजाब के उर्दू के राजनैतिक समाचार पत्रो को पढकर उनमे राष्ट्रीयता की भावना जागृत हो गई थी वे स्वदेशी आन्दोलन के समर्थक बन गए थे। उस समय स्वदेशी वस्त्रधारण करना और छोटी-मोटी स्वदेशी वस्तुओ को प्रयोग मे लाना ही देशभक्त होने का प्रमाण माना जाता था और अग्रेज सरकार ऐसे लोगो को सदेह की नजर से देखती थी भरतपुर मे रहते समय भी पुलिस की निरजन शर्मा 'अजीत' पर कोपदृष्टि रहती थी।

'वैभव' का संपादन और भरतपुर राज्य का कोप

निरजनलाल को स्कूल मे पढते एकाध वर्ष ही हुआ होगा कि उनके पिता का देहान्त हो गया और भाइयो ने बटवारा करके उनको अलग कर दिया। उनका विवाह

इससे पहले ही हो चुका था और घर मे कुछ जमा पूँजी न होने के कारण वे इस आकस्मिक परिवर्त्तन से बडे चक्कर मे पड गये। उन्होने पढाई बन्द करके कोई छोटी-मोटी नौकरी ढूंढी और किसी प्रकार गृहस्थी का सचालन करने लगे। पर राजनीति का चस्का उनको तब भी लगा रहा और सन् 1920 के आस-पास जब अधिकारी जगन्नाथदासजी ने दिल्ली से "वैभव" नामक दैनिक पत्र निकाला तो वे उसमे काम करने लग गये। भरतपुर से सम्बन्ध होने के कारण उसमे वहाँ के सरकारी अधिकारियो की शिकायतें छपा करती थी इससे रियासत वाले अधिकारीजी के साथ-साथ अजितजी से भी असन्तुष्ट हो गये। भरतपुर मे इनका आना जाना खतरनाक हो गया। इधर अ ग्रेजी सरकार भी इनके गर्म राजनैतिक लेखो से नाराज हुई और उसने "वैभव" से दो बार जमानत माँग ली, जिससे वह बन्द हो गया। इसके पश्चात् दिल्ली मे ही "हिन्दी समाचार" मे काम करने लग गये। पर उस समय की अस्थिर देश-दशा तथा समाचार पत्रो की आर्थिक स्थिति दुर्बल होने के कारण वहाँ से भी हट कर किसी अन्य स्थान पर काम करने लगे। दो एक वर्ष बाद ही वे बम्बई के 'वेंकटेश्वर-समाचार' मे पहुँच गये और वहाँ कई वर्ष तक जम कर काम करते रहे।

'वेंकटेश्वर समाचार' का संपादन और रियासती आन्दोलन

बम्बई का 'वेंकटेश्वर समाचार' साप्ताहिक, यो तो सामान्य स्तर का सामाजिक और सास्कृतिक पत्र था परन्तु निरजन शर्मा 'अजीत' ने अपने सपादन काल मे उसे भारत के देशी राज्यो की जनता की आकाक्षाओ की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बना दिया श्री निरजन शर्मा 'अजीत' ने 'वेंकटेश्वर समाचार' मे अपनी लेखनी से राजपूताने की रियासतो के जन आन्दोलन को बहुत बल दिया उन्होंने राजाओ के पिछडेपन, इनके शोषण, अत्याचार और जनशक्तियो के दम-घोटू काले कानूनो की कडे शब्दो मे निरन्तर भर्त्सना की और रियासती जनता के लोक आन्दोलनो का निरन्तर प्रचार किया, राजाओ तथा राजतत्रो के विरुद्ध उनके कडे रुख के कारण उन्हे अनेको बार विकट परिस्थितियो का सामना करना पडा परन्तु उनकी लेखनी तो निरन्तर जन-बल के पक्ष मे उसी तरह से आग उगलती रही।

बम्बई मे रहने से उनका परिचय कुछ सिनेमा व्यवसाइयो से हो गया और वे कभी-कभी उनके लिए सवाद लिखने लगे। फिर सम्बन्ध बढ जाने पर उन्होंने एक दो धार्मिक कथानक भी सिनेमा के लिये लिखे और एकाध बार स्वय अभिनय मे भी भाग लिया। इससे उनकी आर्थिक स्थिति कुछ सुधर तो गई, पर जहाँ तक हमको ज्ञात है वे कभी धनी नही बन सके। इधर कई वर्षो से उनका स्वास्थ्य खराब रहने लगा था और लगभग दो वर्ष पूर्व सन् 1970 मे उनका देहान्त हो गया।

श्री निरजन शर्मा अजीत अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजापरिषद् और कांग्रेस के कर्मठ सेनानी थे और अपनी पत्रकारिता के द्वारा उन्होने देश मे राजनैतिक चेतना का प्रसार करने मे बहुत ही महत्वपूर्ण भाग अदा किया।

ठाकुर पूरणसिंह, भरतपुर

भरतपुर में कृषि कार्य से प्रारंभ

ठा० पूरणसिह हरियाणा राज्य के रोहतक जिले के निवासी थे। किन्तु स्वय महाराजा श्री कृष्णसिहजी के शासनकाल मे ही भरतपुर तहसील के चित्तौखडी ग्राम के पास नगलाभाट नाम के एक मजरे मे आकर स्थायी रूप से आबाद हो गए थे और पट्टे पर कुछ जमीन लेकर कृषि व पशुपालन का धन्धा आरम्भ कर दिया।

आर्य समाज के भजनोपदेशक

वैदिक धर्म की ओर आपकी रुचि पहले से ही थी। अत भरतपुर आर्य समाज के सदस्य हो गए और एक भजनोपदेशक व प्रचारक बन कर समाज सुधार का कार्य करने मे लीन हो गए और इस प्रकार सार्वजनिक क्षेत्र मे पदार्पण किया। जहाँ कही भी कोई अधिवेशन होता था वही आप खडताल लेकर पहुँच जाते थे और ओजस्वी भजन गाकर जनता को मुग्ध कर देते थे। समाज सुधार के भजनो के अलावा राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत भजनो द्वारा राष्ट्रीयता का प्रचार करने मे भी आप सदैव अग्रसर रहे।

नमक सत्याग्रह के लिए जत्थे

सन् 1930 से पूर्व जिस प्रजा-परिषद् का गठन हुआ था उसके भी आप सदस्य थे। देशसेवा के प्रति आपकी कितनी लगन थी इसका उदाहरण अनुमान केवल इसी बात से लगाया जा सकता है कि 1930 मे नमक सत्याग्रह के राष्ट्रीय आन्दोलन मे भाग लेने के लिए सर्व श्री किशनलाल जोशी, वीरेन्द्रदत्त, महेशचन्द्र, नत्थराम, इन्द्रभान का एक जत्था अजमेर भेजा जा चुका था। ठा० देशराज आदि ने एक जत्था और भेजने की आवश्यकता अनुभव की।

नवीन जत्थे के नेतृत्व के लिए

इस नवीन जत्थे का नेतृत्व करने के लिए ठा० पूरणसिह जी पर ही सबकी दृष्टि गई और सावलप्रसादजी चतुर्वेदी को उनके गाँव भेजा गया। जिस समय चतुर्वेदीजी उनके

गाँव पहुँचे ठा० पूरणसिंहजी खेतो मे हल चला रहे थे। उन्होने चतुर्वेदीजी को अपनी ओर आते देखकर हल चलाने का कार्य छोड कर उनके पास पहुँचे और छाछ-मेहरी से, जो उनके कलेवे के लिए आई थी, स्वागत किया।

कलेवा आदि कर लेने के वाद ठा० पूरणसिंहजी ने चतुर्वेदीजी से उनके आने का कारण पूछा। तव चतुर्वेदीजी ने कहा कि सत्याग्रह मे भाग लेने के लिए भरतपुर का दूसरा जत्था अवश्य जाना है। उस जत्थे के नेतृत्व के लिए आपके अतिरिक्त अन्य कोई नही दिखाई देता।

चतुर्वेदीजी की यह वात सुनकर ठा० पूरणसिंहजी कहने लगे कि इस वक्त जुताई वुवाई का काम चल रहा हैं साल भर की रोजी का सवाल है। अगर अव पिछड गए तव घर का क्या वनेगा। आप खुद ही सोच लीजिये।

ठा० पूर्णसिंह की यह वात सुनकर चतुर्वेदीजी ने कहा कि यह सवाल सवके ही सामने है अगर सव ही ऐसी वातें करने लगेंगे तो हमारी देशभक्ति के कोई अर्थ नही रह जाते। आपकी घरवाली है। वच्चे हैं, कुछ न कुछ कर तो ही सकते है।

खेत से सीधे सत्याग्रह के मार्ग पर

चतुर्वेदीजी की यह वात सुनकर ठा० पूरणसिंह तैश मे आ गए और एकदम खडे होकर खेत मे वैलो के पास जा पहुँचे। वैलो को खोलकर घर की तरफ हाँक दिया। हल कन्धे पर रख कर एक झाडी मे डाल आए। वही लोटा-झोला आदि मँगवाया और दोनो पैदल ही नदवई स्टेशन की तरफ चल दिए। स्टेशन पर ठा० देशराजजी अजमेर की तरफ से आते हुए मिल गए। उन्होने इन्हे देखा और प्लेटफार्म पर उतर कर कहा कि सत्याग्रह स्थगित हो चुका है इसलिए अव जत्था भेजने की आवश्यकता नही रही।

ठा० देशराजजी की यह वात सुनकर ठा० पूरणसिंह एकदम सुस्त हो गए। चतुर्वेदीजी कहने लगे कि सुस्त होने की कोई वात नही इस समय आप अपने गाँव जाकर हल-वैल सम्हालें। आवश्यकता पडने पर सवसे पहले आपको ही स्मरण किया जाएगा, यह थी ठा० पूरणसिंहजी की कर्त्तव्य-परायणता।

प्रजामंडल के मंच से लोक जागरण

सन् 1938 मे जैसे ही आपको यह मालूम हुआ कि आगरा मे ठा० देशराज, किशनलाल जोशी, जगन्नाथ कक्कड आदि के प्रयास से भरतपुर राज्य प्रजामण्डल का गठन हो चुका है तो ठा० पूरणसिंहजी ने तुरन्त सम्पर्क स्थापित किया और प्रजामण्डल के प्रयास से फतहपुर सीकरी, ओल, सौख, पून्हाना आदि स्थानो मे होने वाली प्रत्येक मीटिंग मे करताल सम्हालकर जा पहुँचते और अपने जोशीले भजनो के द्वारा जनता मे एक जागृति उत्पन्न करते। और 11 मई 1939 को प्रथम जत्थे मे गिरफ्तार हो गए।

अनासक्त भाव से देशसेवा

ठा० पूर्णसिहजी अपने कर्त्तव्य के आगे यह भी नही देखते थे कि उनके घर मे उनके परिवार का कोई सदस्य रोगी अवस्था मे भी पडा हुआ है। सन् 1939 मे सत्याग्रह आरम्भ होने के समय रोहतक मे आपके बहनोई सख्त बीमार थे। इसलिए उन्होने वहाँ जाने की तैयारी करली थी। किन्तु सत्याग्रह का शख बज जाने पर आपने अपना रोहतक जाना स्थगित कर दिया। इस सत्याग्रह में आपको 18 महीने की सजा हुई थी। और इस सजा के दौर मे ही आपके बहनोई का निधन हुआ था किन्तु आपने इसकी तनिक भी चिन्ता नही की और निश्चिन्तता के साथ जेल-जीवन व्यतीत करते रहे।

साधारण कैदियों की तरह

अग्रेज दीवान सर रिचार्ड टॉटनहम ने प्रजामण्डल के आन्दोलन मे फूट डालने के लिए यह आदेश निकाल दिया था कि भविष्य मे, गिरफ्तार होने वाले आन्दोलनकारियो को स्पेशल क्लास वाली जेल मे न भेजा जाकर, सैण्ट्रल जेल मे ही रखकर, उनके साथ साधारण वन्दियो का सा व्यवहार किया जाए। जगन्नाथ कक्कड ने इस आदेश के विरोध मे अग्रेज दीवान को लिखा कि वह स्पेशल क्लास वाली विशेष सुविधाओ को त्यागना चाहते हैं इसलिए उसे सैण्ट्रल जेल मे ही भेजकर उसके साथ भी साधारण बन्दियो का सा ही व्यवहार किया जाय। जैसे ही इस बात का पता ठा० पूर्णसिह व उनके साथियो मे से सर्व श्री प० हुकमचन्द, किसनदास, रघुवीर पान्डे भुसावर को लगा उन्होने भी जगन्नाथ कक्कड का अनुकरण किया और वह भी कुछ दिनो बाद ही उन साथियो के साथ आ मिले। जिनको साधारण बन्दी बनाकर रखा गया था। और कथित समझौते के अन्तर्गत अन्य आन्दोलन-कारियो के साथ 1939 की 24 दिसम्बर को रिहा कर दिए गए किन्तु अन्त तक ठा० पूर्णसिहजी को उस समझौते का दु ख ही रहा था जिसके अन्तर्गत उनको रिहा कर दिया गया था।

राजनैतिक प्रचार का प्रभावशाली ढंग

ठा० पूर्णसिह के प्रचार का ढग इतना निराला होता था कि जनता मे एकदम जोश की लहर फैल जाती थी और वह अपने अधिकारो की रक्षा के लिए एक जुट होकर हुकूमत का मुकाबिला करने लगती थी। सन् 1942 मे देश व्यापी गिरफ्तारियाँ होने पर ठा० पूर्णसिह को भी भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत नजरबन्द कर लिया गया।

परेशानियों पर परेशानियाँ

जिन दिनो आप नजरबन्द थे उन्ही दिनो आपके घर मे चोरी करवा दी गई। दुधारू गायो व बैलो को भी चोरी करवा दिया गया। जिससे आपकी खेती चौपट हो गई। किन्तु ठा० पूर्णसिह इससे तनिक भी हताश नही हुए। और सब कुछ धैर्यपूर्वक सहन करते रहे। कुछ ही दिन बाद आपकी वीरागंना पत्नी को भी जहरीले साँप ने काट लिया जिससे उसका

स्वर्गवास भी हो गया उस अवसर पर भी आपकी सास ही आपकी व आपके परिवार की सेवा करती रही थी ।

पटवारी की रिपोर्ट पर पुनः गिरफ्तारी

सन् 1945 मे ग्रामो मे प्रचार करते हुए पटवारी की रिपोर्ट के आधार पर ठा० पूर्णसिंह को पुन गिरफ्तार करके जेल में बन्द कर दिया गया था। भरतपुर रेल्वे स्टेशन पर बीकानेर के महाराजा शार्दुलसिंह को जब काले झण्डे दिखाए गए थे तब ठा० जीवाराम के साथ ठा० पूर्णसिंह भी थे। उस अवसर पर आपने भी बिना वर्दी की पुलिस की लाठियो की मार बर्दाश्त की थी। उस काल मे भी आपको जेल मे बन्द कर दिया गया जहाँ आपका स्वास्थ्य बहुत ही खराब हो गया इसलिए उन्हें शीघ्र ही मुक्त भी कर दिया गया।

राजनीति ने अर्थ और शरीर-दोनों को तोड़ दिया

जेल से बाहर होकर भी आप स्वस्थ नही हो सके और उचित उपचार के अभाव मे शीघ्र ही उनका स्वर्गवास हो गया। ठा० पूरणसिंह ने मरने से पूर्व अपने अनुभवो के आधार पर भरतपुर के स्वतत्रता संग्राम का इतिहास भी लिखा था जिसे ठा० देशराजजी ने संशोधित भी किया था और उसके प्रकाशन का भार मा० आदित्येन्द्रजी ने अपने ऊपर लिया था किन्तु वह अभी तक प्रकाशित नही हो सका।



श्री ठाकुर पूर्णसिंहजी, करौली

ब्रिटिश शासन के विद्रोही बन गए

करौली जन जागृति के प्राण श्री ठाकुर साहिब यू० पी० के रहने वाले थे। करौली मे जेलर के पद पर कार्य करते थे । आपका स्वभाव नवनीत के समान कोमल था। परन्तु जहाँ सिद्धान्त का प्रश्न आता था वहाँ आप हिमालय के सामन दृढ बन जाते थे। आप हिन्दी साहित्य और देवनागरी भाषा के अन्य उपासक थे। ठाकुर साहिब राज्य पद पर रहते हुए भी समाज-सुधार के कार्यो मे खुल कर भाग लेते थे। जब देश मे रौलेट-एक्ट तथा जलियान वाले बाग मे अ ग्रेजो ने नृशसता का ताण्डव नृत्य रचा तो उनका हृदय ब्रिटिश शासन का विद्रोही बन गया, और वे राजनैतिक कार्यों को खुल कर करने लग गये। परिणामस्वरूप इनको राज्य पद से हटा दिया।

करौली के पहले राजनैतिक गुरु

इन्होंने करौली राज्य मे रह कर वहाँ की जनता की जो सेवा की है उसके लिये वहाँ की जनता सदैव ऋणी रहेगी। इन्होने अपने जीवन का अधिकाश समय बडे ही कष्टो मे व्यतीत किया। करौली की जनता को राजनैतिक शिक्षा देने मे वे सफल रहे। हमारे स्वराज्य के निर्माण मे ऐसी महान् विभूति सुदृढ नीव का कार्य कर रही थी।



श्री बलवंत सांवलराम देशपांडे, जयपुर.



जन्म : दिसम्बर, 1897

राजस्थान में चर्खा-संघ की प्रवृत्तियो के संचालक

श्री वलवत सावलराम देशपाडे राजस्थान मे आकर पूरी तरह राजस्थानी हो गए। वे इस जन जीवन के साथ एकाकार हो गए। 1931 मे कॉलेज की प्रोफेसरी छोडकर वे असहयोग-आन्दोलन मे शामिल हो गए थे। पाँच वर्ष तक उन्होने महात्मा गाँधी के सान्निध्य मे अपने आपको देश सेवा के लिए प्रशिक्षित किया। गाँधीजी ने उनके हाथो मे फिजिक्स और पदार्थ विज्ञान शास्त्र के ग्रथो के स्थान पर चर्खा और खादी-उत्पादन का कार्य सौंप दिया। 1926 मे श्री जमनालाल वजाज ने राजस्थान मे खादी-उत्पादन का कार्य शुरू किया, तव वे देशपाडे जी को अपने साथ राजस्थान ले आए। उन्होने करीव 16 वर्ष तक (1942 तक) राजस्थान मे खर्चा सघ की प्रगति और प्रवृत्तियो का नेतृत्व और सचालन किया।

जन्म, शिक्षा और सेवा

श्री वलवत सांवलराम देशपाडे का जन्म महाराष्ट्र मे पूना जिले के पुरदर तालुका के मूल गाँव वाल्हे मे दिसम्बर 1897 मे हुआ। प्रारभिक शिक्षा उन्हे अपने गाँव मे ही प्राप्त हुई। उसके वाद वे अपने पिताजी के साथ अहमदावाद आ गए और मैट्रिक से वी० एससी० तक की शिक्षा उन्होने अहमदावाद मे ही प्राप्त की। पदार्थ विज्ञानशास्त्र (फिजिक्स) मे उन्होने वी० एससी० मे सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया था और उसी के परिणामस्वरूप वे अहमदावाद के कॉलेज मे फिजिक्स के प्रोफेसर नियुक्त हो गए।

गांधीजी के आह्वान पर असहयोग-आन्दोलन में

लेकिन युवक बलवत सावलराम देशपांडे का जन्म स्कूल की अध्यापकी या कॉलेज की प्रोफेसरी करने को नही हुआ था। यह 1921 का तूफानी वर्ष था, असहयोग-आन्दोलन शुरू हो चुका था। गाँधीजी ने विदेशी भाषा के कॉलेजो का बहिष्कार करने की अपील की थी और युवक प्रोफेसर देशपाडे 7 महीने तक कॉलेज मे अध्यापन कार्य करने के बाद त्याग-पत्र देकर जनवरी 1921 में असहयोग-आन्दोलन मे शामिल हो गए। यही से उनके देश-सेवा और जेल जाने का सिलसिला शुरू हुआ।

खादी का कार्य और राजनैतिक मिशन

1926 में खादी-मडल और चर्खा-सघ का मिशन लेकर देशपाडेजी राजस्थान मे आए थे। खादी उत्पादन का कार्य उस समय व्यवसाय नही था। वह राष्ट्र सेवा का विशुद्ध रचनात्मक स्वरूप था। उसी देश-सेवा की भावना से ओतप्रोत होकर उन्होने राजस्थान के गाँव-गाँव में पिंदाई, कताई, बुनाई, उत्पादन और खादी के विक्रय और वितरण का कार्य शुरू किया। खादी के रचनात्मक कार्य मे सलग्न लोग सामान्यत सक्रिय राजनीति से दूर रहते थे परतु देशपाडेजी के लिए यह सभव नही था। वे बुनियादी रूप से एक देशभक्त थे और राजनैतिक आदोलन मे सक्रिय रूप से सम्मिलित हुए थे। अत चर्खा सघ के मत्री का कार्य करते हुए भी वे प्रत्येक राष्ट्रीय आदोलन में अग्रगण्य रूप से सम्मिलित हुए थे। राजस्थान मे खादी के व्यापक प्रचार का तो उन्हे श्रेय है ही लेकिन उन्होने खादी उत्पादन मे लगे हुए सभी कार्यकर्त्ताओ को भी पूरी तरह से देश भक्ति की भावना से भर दिया था। रचनात्मक कार्यक्रम मे लगे हुए प्रशिक्षित देशभक्त कार्यकर्ताओ की एक पूरी फौज देशपाडे के साथ थी जो राष्ट्रीय आन्दोलन के समय रचनात्मक कामो से त्यागपत्र देकर आन्दोलन मे सम्मिलित हो जाती थी।

खादी देश की स्वतंत्रता प्राप्ति का एक साधन मात्र

देशपाडे जी ने खादी के उत्पादन और विक्रय को ही कभी अपना ध्येय नही माना खादी कार्य उनके लिए तो देश की स्वतत्रता प्राप्ति का एक साधन मात्र था। साध्य तो उनका देश की स्वाधीनता ही था। इस सिद्धान्त पर कई बार महात्मा गाँधी से भी उनका मतभेद हुआ था परन्तु सत्याग्रह का आदेश आते ही वे जेल जाने वालो की अग्रिम पक्ति मे आ खडे होते।

चर्खा संघ और खादी ग्रामोद्योग बोर्ड में

श्री देशपांडेजी राजस्थान चर्खा सघ के 16 वर्ष तक मत्री रहे। राजस्थान के कोने-कोने में उन्होंने खादी उत्पादन के लिए समुचित प्रशिक्षण देकर खादी उत्पादन का कार्य शुरू करवाया। राजस्थान के प्रत्येक नगर और कस्बो के कार्यकर्त्ताओ से उनका निकटता का पारिवारिक सम्बन्ध था। वे राजनेताओ मे और रचनात्मक कार्यकर्ताओ मे

समान रूप से सम्माननीय थे। इसी लोकप्रियता के कारण वे वर्षों तक राजस्थान खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के उपाध्यक्ष पद पर आसीन रहे।

सत्याग्रही और सत्याग्रह के संचालक भी

किसी सत्याग्रह मे सम्मिलित होकर जेल जाने से अधिक महत्व का कार्य सत्याग्रह के सचालन का रहता है। और हर बार अजमेर मे तथा जयपुर मे सभी नेताओ की यही कामना रहती थी कि देशपाडेजी बाहर रहकर सत्याग्रह का सचालन करें। उन्हे राजस्थान के प्रत्येक कार्यकर्त्ता की स्थिति, अवस्था, स्तर और क्षमता की पूरी-पूरी जानकारी थी और किस समय किन लोगो को सत्याग्रह के मैदान मे उतारना यह वे अच्छी तरह से जानते थे। अतः उन्हे समय-समय पर सत्याग्रह के सचालन का महत्वपूर्ण कार्य सम्हालना पडता।

1932 मे जब अजमेर मे सत्याग्रह प्रारभ हुआ तब अजमेर-मेरवाडा से, राजपूताने की रियासतो से तथा पूरे मध्यप्रदेश से सत्याग्रहियो का ताता लग गया तथा अनेक स्थानो से सबसे अधिक महिलाओ ने उस सत्याग्रह मे भाग लिया। उस समय देशपाडेजी ही उस सत्याग्रह के सचालक थे।

जयपुर प्रजामंडल सत्याग्रह की व्यवस्था का संचालन

जब 1939 मे जयपुर राज्य प्रजामडल ने नागरिक अधिकारो की प्राप्ति के लिए रियासत मे सत्याग्रह आन्दोलन शुरू किया था तब भी श्री देशपाडेजी को ही सत्याग्रह के सचालन और व्यवस्था का कार्यभार सौपा गया था। उनकी पत्नी श्रीमती रमाबाई देशपाडे जयपुर सत्याग्रह मे सत्याग्रही महिलाओ के जत्थे का नेतृत्व करते हुए गिरफ्तार हुई।

अगस्त क्रांति में नजरबंदी

अगस्त काति के बाद 1942 मे जब प्रजामडल के कुछ सदस्यों ने आजाद मोर्चे की स्थापना करके अगस्त काति का अभियान जयपुर में शुरू किया, उस समय श्री देशपाडेजी राजस्थान चर्खा सघ के मन्त्री थे। वे चर्खा संघ से त्यागपत्र देकर आजाद मोर्चे द्वारा सचालित अंग्रेजी सल्तनत विरोधी अभियान मे सम्मिलित हो गए उन्हे इस बार नजरबन्द कर लिया गया और वे करीब पौने दो वर्ष तक नजरबंद रखे गए।

गौ-सेवा संघ का कार्य

सन् 1944 मे जेल से मुक्त होने के बाद वे गौ-सवर्धन के काम मे लग गए और कई दिन तो ठेबरभाई की राजस्थान कृषि-गौ समिति के साथ काम करते रहे। 1946 मे वे समिति की ओर से राजस्थान मे भेजे गए। उन्होने 1960 तक पूरे 14 वर्ष के लिए राजस्थान मे गौ-सेवा का कार्य बहुत कुशलता से किया। वे गौ सेवा संघ वर्धा के भी मत्री थे।

खादी ऊन का कार्य

राजस्थान एक रेगिस्तानी प्रान्त है यहाँ की भेडो की ऊन अत्यन्त उपयोगी, महत्वपूर्ण और राष्ट्रीय व्यवसाय के लिए आधारभूत है। खादी उत्पादन में लगे हुए लोगो ने अब तक इधर ध्यान नही दिया। परन्तु 1962 में श्री देशपाँडेजी ने खादी ऊन के उत्पादन का कार्य हाथ मे लिया। उनका केन्द्रस्थल बीकानेर बन गया। वहाँ उन्होने बीकानेर की उच्चकोटि की ऊन की उचित धुलाई, सप्लाई और वर्गीकरण करके उससे उच्चकोटि के ऊनी वस्त्रो का उत्पादन शुरू करवा दिया। आज बीकानेर की खादी ऊन के उत्पादनो की विविधता अत्यन्त लोकप्रिय हो रही है। बीकानेरी कम्बल, बीकानेरी लोई, बीकानेरी पट्टू और बीकानेरी नमदो की आज बाजार मे चारो ओर माँग बढ रही है। बीकानेरी ऊन को इस स्तर पर पहुँचाने में श्री देशपाडेजी की सूझ-बूझ ने ही मुख्य रूप से कार्य किया है। 1967 तक खादी ऊन के कार्य का व्यापक रूप से प्रचार, प्रशिक्षिण, विक्रय और वितरण की व्यवस्था को सगठित करके श्री देशपाडेजी ने 60 वर्ष की अवस्था में सार्वजनिक जीवन से अवकाश ले लिया है।

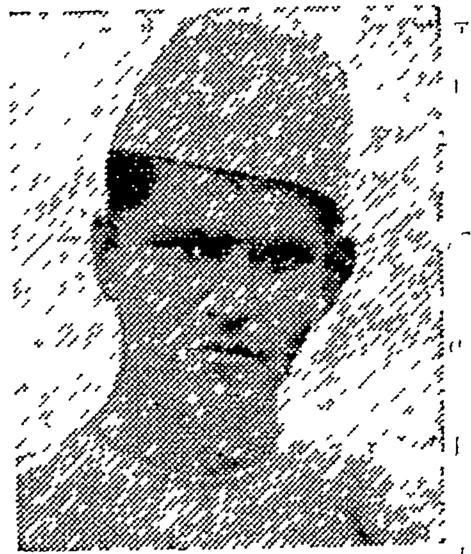
लकवे के रोग से पीड़ित

पिछले कई वर्षों से वे बीकानेर मे है। वही दो वर्ष पहले उन पर लकवे का घातक हमला हो गया था। इस समय वे उसी रोग से पीडित है। उनका चलना फिरना बद हो गया है और जुबान से बोल भी नहीं सकते हैं।

उनके परिवार में 5 लडके और 1 लडकी है। उनके बड़े पुत्र श्री मुकुद देशपाडे जयपुर में ही खादी-कार्य में सलग्न हैं।



स्व० भँवरलाल सर्राफ, जोधपुर.



जन्म : 18 नवम्बर 1899

अवसान . 20 नवम्बर 1971

जन्म, परिवार और संस्कार

जोधपुर के वयोवृद्ध कांग्रेसी नेता श्री भवरलाल सर्राफ का देहावसान उनकी 62 वर्ष की आयु मे 20 नवम्बर 1971 को जोधपुर के महात्मा गाँधी अस्पताल मे हो गया। उनका जन्म जोधपुर के अग्रवाल वैश्य परिवार मे 18 नवम्बर 1899 को हुआ था उनका पारिवारिक व्यवसाय सोना-चाँदी के सर्राफे का था, उस व्यवसाय मे लगे हुए एक मध्यमवर्गी परिवार के बालक के सम्बन्ध मे यह कभी कल्पना भी नही की जा सकती थी कि यह बडा होकर जोधपुर की राज्य सत्ता को चुनौती देगा और राजतत्रों की समाप्ति के लिए आन्दोलन करेगा।

ज्ञान की भूख और बौद्धिक विकास

श्री भँवरलाल सर्राफ की शिक्षा दीक्षा उस समय के अनुसार अत्यन्त सामान्य ही हुई थी परन्तु उनका बौद्धिक स्तर पूर्व जन्म के सस्कारो के कारण असाधारण रूप से विकसित था। देश मे घटने वाली घटनाओं के प्रति उनके मन मे एक अजीब आकर्षण रहता था और अंग्रेजी सल्तनत के विरुद्ध किस स्थान पर क्या हो रहा है इसकी जानकारी प्राप्त करने के लिए वे निरन्तर प्रयत्नशील रहते, इस तरह की जानकारी का सग्रह करके वे अपने मित्रो, परिचितो, परिवार के लोगो और व्यवसाइयो मे अंग्रेज विरोधी वातावरण बनाने का यत्न करते।

क्रांतिकारी साहित्य का वितरण

श्री भँवरलाल सर्राफ ने अपनी छोटी उम्र मे ही बाहर के नेताओ के साथ सम्पर्क साधना शुरू कर दिया था और जोधपुर राज्य के बाहर से अग्रेज विरोधी पर्चे, पैम्फलेट, पोस्टर, गीत और क्रान्तिकारी साहित्य मगाते और अपने झोले मे डाले-डाले उसे

घर-घर जाकर लोगो को बाँटते और लोगो में नई प्रेरणाए जगाते। झोले मे साहित्य डालकर घर-घर मे लोगो तक पहुँचाने की उनकी पुरानी आदत जन्म भर उनके साथ रही और अपनी मृत्यु के कुछ दिन पहले तक भी उनका यही क्रम रहा था।

राजनैतिक विचारो का प्रचार

श्री भँवरलाल सर्राफ दुनिया को दिखाने के लिए और अपने परिवार वालो को सतुष्ट करने के लिए सर्राफि की दुकान पर बैठते परन्तु दुकान पर बैठ कर उनका मुख्य कार्य राजनैतिक चर्चाए करना और क्रान्तिकारी विचार और साहित्य का प्रचार करना होता था। अपनी 18 वर्ष की उम्र मे 1917 मे उन्होने 'मारवाड-सेवा-सघ' की स्थापना की। इस सस्था का राजनैतिक दृष्टिकोण स्पष्ट नही हो सका था परन्तु श्री भवरलाल सर्राफ ने इस सस्था के मच पर जोधपुर के युवा नौजवानो को एकत्रित करके शासन तत्रो को चुनौतिया देने के लिए दीक्षित करना शुरू कर दिया था।

मारवाड़ हितकारिणी सभा के आन्दोलन

कुछ वर्ष बाद श्री चाँदमल सुराणा, किसनलाल बाफना और दुर्गाशकर श्रीमाली जैसे वय प्राप्त लोगो ने मारवाड हितकारिणी सभा की स्थापना की तो श्री भँवरलाल सर्राफ अपने दल-बल सहित उसमे सम्मिलित हो गए, इस समय तक श्री जयनारायण व्यास और आनदराज सुराणा भी पूरी शक्ति से मारवाड हितकारिणी सभा की प्रवृत्तियो मे लग चुके थे। मारवाड हितकारिणी सभा ने मादी जानवरो की निकासी का विरोध करने वाला आन्दोलन चलाया। महाराजा का बगला घेर लिया, हजारो लोग उनके बगले पर धरना देकर बैठ गए, तीन दिन मे ही मादी जानवरो की निकासी का सरकारी आदेश राज्य ने वापस ले लिया। इसी प्रकार मारवाड हितकारिणी सभा ने तोल के लिए भी आन्दोलन किया और पूरा तोल जारी करवाया।

निर्वासन, पुलिस की हाजरी और दस नम्बरी

जोधपुर के तत्कालीन दीवान सर सुखदेव प्रसाद जन-बल की बढती हुई लोकप्रियता से बौखला गए। उन्होंने सर्व श्री चाँदमल सुराणा, प्रतापचन्द सोनी और शिवकरण जोशी-को राज्य से निर्वासित कर दिया और अन्य कार्यकर्ताओ को जिनमे भँवरलाल सर्राफ भी एक थे दस नम्बरीया (आवारा-गुडा) घोषित करके उन पर पाबदी लगा दी गई कि वे दिन मे दो बार सिटी पुलिस मे हाजिरी दें और रात को पुलिस थाने मे आकर सोएँ।

राजद्रोह के अपराध के अपराधी

मारवाड हितकारिणी सभा की लोकप्रियता निरन्तर बढ रही थी। इस समय श्री जयनारायण व्यास ब्यावर के 'तरुण राजस्थान' के सपादक होकर सामतशाही और राजतत्रो के विरुद्ध आन्दोलन को तीव्र कर रहे थे, आनन्दराज सुराणा दिल्ली मे व्यवसाय मे लगे हुए थे फिर भी उनका सम्बन्ध मारवाड हितकारिणी सभा से बना हुआ था। भँवरलाल सर्राफ ही उन दिनो मे ऐसे व्यक्ति थे जो श्री चाँदमल सुराणा के साथ सक्रिय

थे। मारवाड हितकारिणी सभा ने जोधपुर में एक राजनैतिक सम्मेलन बुलाने की योजना बनाई। सम्मेलन की घोषित तिथियो के पहले ही सम्मेलन पर प्रतिबंध लगा दिया गया और सर्व श्री जयनारायण व्यास, आनदराज सुराणा और भँवरलाल सर्राफ को गिरफ्तार करके अलग-अलग किलो मे बंद कर दिया गया बाद मे नागौर के किले मे एक विशेष अदालत द्वारा उन पर 124 ए राजद्रोह के अपराध मे मुकद्दमा चलाया गया इस मुकदमे की पैरवी के लिए सरकार द्वारा मारवाड़ के बाहर से किसी वकील को नही बुलाने दिया गया इस मुकदमे मे कहते हैं कि उस समय सरकार के करीब तीन लाख रुपए खर्च हुए क्योकि पुलिस अधिकारियो को भारी सख्या मे झूठी गवाहिया बनानी पडी थी।

5 वर्ष की सख्त सजा

इस मुकद्दमे मे श्री जयनारायण व्यास को 6 वर्ष और आनंदराज सुराणा और भँवरलाल सर्राफ को 5–5 वर्ष की सख्त सजा दी गई। गांधी-इर्विन समझौते के परिणाम-स्वरूप 1931 मे तीनो अभियुक्त सजा पूरी करने के पहले ही छोड दिए गए।

चर्खा-संघ की शाखा की स्थापना

कारावास से लौटने के बाद श्री भँवरलाल सर्राफ ने राजस्थान चर्खा-सघ से अपना सम्बन्ध स्थापित किया और जोधपुर मे सबसे पहला खादी भडार खोला। श्री सर्राफ ने मानमल जैन, अचलेश्वर प्रसाद शर्मा, अभयमल जैन, छगनराज चौपासनी वाला के साथ खादी की फेरियें लगाकर खादी को घर-घर मे पहुँचाने की कोशिश की उस समय उनकी दुकान केवल खादी भडार या सर्राफ की ही दुकान नही थी वरन् वह राजनैतिक हलचलो का केन्द्र भी बन गई थी।

दुर्गादास जयंती का माध्यम

श्री भँवरलाल सर्राफ ने राष्ट्रीय चेतना के प्रसार के लिए दुर्गादास जयती मनाने की भी परम्परा शुरु की। राज्य की अनेक रुकावटो के बावजूद भी यह समारोह एक राष्ट्रीय त्यौहार के रूप मे जोधपुर मे मनाया जाने लगा।

अन्याय के विरुद्ध बगावत

1932 से 1940 तक श्री भँवरलाल सर्राफ का मुख्य कार्य हर स्थान पर अन्याय के विरुद्ध बगावत करने के लिए खडा होना था, उन दिनो की प्रत्येक राष्ट्रीय प्रवृत्ति मे श्री सर्राफ अग्रगण्य रूप मे भाग लेते रहे। इनकी पुलिस अधिकारियो से हमेशा टक्कर होती रहती थी।

जिम्मेवार हुकूमत आन्दोलन में लंबी सजा

1939–40 और 1942 मे लोक परिषद् ने श्री जयनारायण व्यास के नेतृत्व में जिम्मेवार हुकूमत के आन्दोलन शुरू कर दिए थे। 11 जून 1942, को श्री भँवरलाल सर्राफ गिरफ्तार कर लिए गए और 1944 मे लोकपरिषद् का सरकार के साथ समझौता होने पर रिहा हुए।

अन्याय और अत्याचार का मुकाबिला

श्री भँवरलाल सर्राफ सम्पूर्ण रूप से देश के लिए समर्पित एक निराले व्यक्ति थे। उनका न कोई व्यक्तिगत हित था और न ही कोई निहित् स्वार्थ। वे राजा, जागीरदार और सरकारी अधिकारियो के अमानवीय अत्याचारो और अन्यायो का डट कर मुकाबला करने के हामी थे उन्होने अपने जीवनकाल मे यही किया।

राष्ट्रीय कार्यकर्त्ताओ की चरित्रहीनता का क्षोभ

देश की स्वाधीनता के बाद जिस तरह की अवसरवादिता और स्वार्थपरक नीतियो का प्रसार होने लगा उससे श्री भँवरलाल सर्राफ की आत्मा को गहरा आघात लगा। राष्ट्रीय नेताओ और कार्यकर्त्ताओ के गिरते हुए चरित्र और उनकी स्वार्थ-मूलक प्रवृत्तियो से वे निरन्तर विक्षुब्ध रहे, कांग्रेस मे रह कर भी उन्होने इस तरह के व्यक्तियो और उनकी प्रवृत्तियो का निरन्तर विरोध किया। वे अपनी पुरानी आदत के अनुसार भ्रष्ट लोगो के विरुद्ध साहित्य छपवाकर जगह-जगह वितरित करते और लोगो को सत्य कहने और सत्य की स्थापना के लिए उत्प्रेरित करते रहते।

मातृ भूमि की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व स्वाहा

श्री भँवरलाल सर्राफ ने देश की स्वाधीनता के 30 वर्ष पहले राजनैतिक चेतना के प्रसार का महान् कार्य अपने हाथ मे लिया था और देश की स्वाधीनता के बाद वे 24 वर्ष तक जीवित रहे राजनैतिक जीवन के अपने 54 वर्षो मे उन्होने अपने घर परिवार या व्यवसाय को बनाने की कभी कोई चिंता नही की इसके परिणाम स्वरूप उनका व्यवसाय चौपट हो गया, वे अपने बच्चो को समुचित शिक्षा नही दे सके और जीवन के अंतिम समय तक अर्थाभाव से ग्रसित रहे। परन्तु उनके स्वाभिमान ने कभी किसी से समझौता नही किया वे धनाभाव के कारण सम्पन्नता से निर्धन की स्थिति मे भले ही आ गए थे परन्तु उनमे क्षण भर के लिए भी दैन्य नही आया था।

प्रान्त का अत्यन्त लोकप्रिय व्यक्तित्व

स्वाधीनता के बाद विकसित होने वाली सत्ता और पद की राजनीति में वे सफल नही हो सके। वे जोड-तोड बिठा कर न कभी सगठन के किसी पद पर रहे और न विधान-सभा मे पहुँच सके, परन्तु वे व्यक्ति नहीं, स्वय अपने मे एक सस्था थे, उनके एक-एक शब्द से बगावत के शोले बरसते थे और कांग्रेसी शासन में बैठे हुए भ्रष्ट लोगो के विरुद्ध जन चेतना जागृत करने मे उन्होने कोई कसर बाकी नही रखी थी। वे निश्चय ही प्रान्तीय स्तर के नेता नही बन सके, परन्तु सारे राजस्थान के राष्ट्रीय कार्यकर्त्ताओ में उनका सम्मान था और वे राज्य के किसी भी भाग मे आयोजित किसी सत्यनिष्ठ अनुष्ठान मे सम्मिलित होकर अपना सहयोग और आशीर्वाद देने में कभी पीछे नही रहते थे।

सत्ता, प्रभुता और पद के बिना जितनी लोकप्रियता और जितनी लोकमान्यता श्री भँवरलाल सर्राफ को मिली वह कम लोगो को नसीब होती है।

स्व० मोतीलाल तेजावत, उदयपुर.



जन्म · संवत् 1944, ज्येष्ठ शुक्ला 1 (सन् 1886)

अवसान 5 दिसम्बर 1963

जन्म, परिवार और शिक्षा

देशभक्त भील नेता श्री मोतीलाल तेजावत का जन्म ईस्वी सन् 1886 एव विक्रम सवत् 1944 की ज्येष्ठ शुक्ला 1, को कोलियारी तहसील फलासिया जिला उदयपुर मे ओसवाल कुल मे हुआ। हिन्दी, उर्दू, एव गुजराती तीनो भाषाओ का उन्हे ज्ञान था। विवाह के पूर्व ही ठिकाना झाडोल मे आकर स्थानीय जागीरदार के यहाँ कामदार का कार्य करने लगे।

जागीरी कामदार के रूप में बेगार की अनुभूति

इस कारण उन्हें झाडोल राजा साहव के साथ मेवाड महाराणा श्री फतहसिंहजी के दौरे मे जहाजपुर, नहारभगरा, जयसमुन्द्र, आदि स्थानो पर जाने का मौका मिला। इस भ्रमण मे इन्होने देखा कि बुलेटिया (बेगारी), जहाँ महाराणा का मुकाम होता था वहाँ कई माईल चल कर उनके लिये भरण-पोषण का मामान घोडो, ऊँटो, बैलो पर लाद कर लेकर आते थे। किन्तु उस सामान की कीमत मे रुपये के चार आने भी नही चुकाये जाते थे।

अत्याचारों से उद्विग्न होकर राजकीय सेवा से अवकाश

इसी प्रकार भील, गरासिये एव अन्य काश्तकार लोगो को कई दिन पहले पकडा जाता, उन से बेगार मे काम लिया जाता था किन्तु मजदूरी के नाम पर पाई भी नही चुकाई जाकर, कार्य मे कुछ कमी रह जाने पर जूतो से पीटा जाता खोडे में रखा जाता था। इस प्रकार का जुलम उनसे नही देखा गया अतः झाडोल आकर ठिकाने की नौकरी छोड़ दी। कुछ दिन सोच विचार के पश्चात् सम्वत् 1977 की वैसाख शुक्ला 15, को मात्रीकुण्डिया जिला चित्तौडगढ मे जाकर सर्व प्रथम मेवाड राज्य के जुलमों के खिलाफ "एकी" नामक आन्दोलन का श्रीगणेश किया।

एकी आन्दोलन का सूत्रपात और पहली विजय

यही पर श्री तेजावत ने इस किसान मेले मे हजारो किसान भाइयो का राज्य के जुल्म के खिलाफ खडे होने के लिये आह्वान किया। और हजारो की तादाद मे किसान काश्तकारो के साथ उदयपुर आकर महाराणा श्री फतहसिंह को एक ज्ञापन दिया जिसमे मेवाड की जनता पर लगान बेगार की 21 कलमे पेश कर यह निवेदन किया कि ये कलमे माफ होनी चाहिये। दरबार ने उनमे से 18 कलमे माफ कर दी, तीन कलमे जिनमे जंगलात, सूअर, बैठ बेगार थी माफ नही की, इन्होने उदयपुर के जगदीश मन्दिर की सीढियो पर खडे हो कर यह एलान कर दिया कि 18 शर्तें महाराणा साहब ने छोड दी है, और 3 मेवाड के पंचो ने इस प्रकार अपनी शर्तें मन्जूर हो चुकी हैं।

जागीरी षड़यंत्रो के बीच में

इसके पश्चात् उदयपुर से रवाना होकर नाई कोटडा, बागपुरा, मादडो, झाडोल, आदि स्थानो से भ्रमण करते हुए सैंकडो भीलो के साथ आकड गांव मे पहुँचे। वहाँ पर झारडोल राज सा० कुवेरसिंह व कोलियारी का कमालखाँ सिपाही उन्हे मारने हेतु आये, वहाँ थोर की बाड मे इन से उनका मुकाबला भी हुआ। वे गोली चलाने ही वाले थे कि एकदम हल्ला हो जाने से वे भाग गये। इस प्रकार वे शहीद होते-होते बचे। इस आन्दोलन की जानकारी हर गाँव आस पास की रियासतो मे तेजी के साथ फैल गई। भील तेजावत जी के साथ सैंकडो की तादाद मे इकट्ठे होकर आते जाते रहते थे।

भील आन्दोलन का व्यापक प्रचार

धीरे-धीरे यह आन्दोलन सिरोही, दाता, पालनपुर, ईडर, विजयनगर, आदि रियासतो की जनता में भी फैल गया। इस प्रकार इन आदिवासी जनता के साथ भील नेता विजयनगर रियासत के नीमडा गाँव के पास हजारो व्यक्तियो के साथ पहुँच गये। वहाँ मेवाड रियासत की मिलेट्री व अन्य रियासतो की पुलिस अपने-अपने अधिकारियो के साथ मौजूद थी। वहाँ अन्य रियासतो की सरकारो व जनता के बीच लगान व बेगार को लेकर सुलह की बात चल रही थी। इस कारण जनता शान्त थी।

1200 लाशों का ढेर लग गया

अचानक मिलेट्री ने निहत्थी जनता पर मशीनगनो से फायरिंग प्रारम्भ कर दी। वही पर लगभग एक हजार दो सौ व्यक्ति के लगभग शहीद हो गये। श्री तेजावत के भी पाँव मे गोली व छर्रे लगे थे। भील उसी समय उन्हे उठा कर भूमिगत (गुप्त) हो गये जो 1929 तक याने 8 वर्ष तक गुप्त रहे। वो जगह जहाँ हत्याकाड हुआ था वे दरख्त आज भी उन गोलीयो की गवाही दे रहे हैं।

सरकारी आतंक के नए-नए तरीके

इस बीच सरकार ने किसी व्यक्ति का सिर काट कर जनता मे यह भ्रम फैला दिया कि मोती लाल को मार दिया है। और यह उसका सिर है। इसके पश्चात् भी इन

रियासती सरकारो को कहीं से यह जानकारी मिली की सिरोही रियासत के भूला और वालोरिया गाँव मे मोतीलाल को छुपा रखा है। रात्रि के समय अचानक आग लगवा दी जिससे उन गरीबो का हजारो रुपयो का नुकसान तो हुआ ही साथ ही कई जानवर भी जल कर भस्म हो गये। इन दोनो गाँवो मे अडतालीस मकान थे।

दूसरी रियासतो में तेजावत की खोज

इस हत्याकाड के दो तीन वर्ष पश्चात् मेवाड़ सरकार को कही से सुराग मिला मोतीलाल सिरोही रियासत मे छुपा हुआ है। अत. गिरफ्तार कर यहाँ भिजवाने हेतु सिरोही रियासत को लिखा गया। वहाँ से यह लिखा आया कि हमारी रियासत मे कोई मोतीलाल नही है। इस पर भी अगर आपकी रियासत को शक हो तो आपकी मिलेट्री यहाँ आकर गिरफ्तार कर सकती है। इस पर मेवाड सरकार की मिलेट्री (भील फोर्स खेरवाडा) वहाँ गई और लगभग 6 माह तक यहाँ तलाश करती रही किन्तु कहीं पता नहीं चलने के कारण ज्यो कि त्यो वापस उदयपुर आ गई।

गांधीजी के आदेश से आत्म समर्पण

इस आन्दोलन का पूरा पता पूज्य बापू को श्री मणीलाल कोठारी अहमदाबाद वालो के जरिये समय-समय पर मिलता रहता था। अत पूज्य बापू के आदेशानुसार 1929 मे ईडर रियासत के खेड ब्रह्मा गाँव मे स्वय अपने आपको गिरफ्तार करवाया। वहाँ से उन्हे ईडर भिजवाया गया। ईडर रियासत ने आबू ए० जी० जी० को यह सूचना देते हुए लिखा कि हमारी रियासत इसे नही रखना चाहती है, अतः आप उचित समझे वहाँ भिजवा दे। इस प्रकार दूसरी रियासतो ने भी उन्हे रखने से साफ इन्कार कर दिया।

सात वर्ष तक मेवाड़ की जेल में

मेवाड़ रियासत ने यह लिखा कि यह हमारी रियासत का व्यक्ति है अत हमे सौपा जाय। यहाँ जुल्म, ज्यादा होने से श्री तेजावतजी यहाँ नही आना चाहते थे, अत आबू ए० जी० जी० के यह आश्वासन दिलाने पर कि आपके साथ मे कोई ज्यादती नही की जायेगी व एक राजनैतिक बन्दी की तरह रखे जायेगे। इस आश्वासन के पश्चात् उदयपुर लाकर सैंट्रल जेल में रखे गये जो 6 अगस्त 1929 से 23 अप्रैल 1936 तक याने 7 वर्ष तक लगातार जेल में रहे जेल से रिहा होने के पश्चात् भी राज्य सरकार ने उदयपुर शहर मे नजर बन्द रखा जहाँ पुलिस का सिपाही हर समय उनके साथ रहता था। इस कारण वे उदयपुर शहर की चार-दीवारी के बाहर नही जा सकते थे।

अगस्त क्रांति में उदयपुर जेल के तीन वर्ष

वे 1938 के प्रजा मण्डल के आन्दोलन मे पुन गिरफ्तार कर, छोडे गये। राज्य सरकार को सूचित कर 1939–40 में आर्य सत्याग्रह मे भाग लेने हैदराबाद जाने हेतु इन्दौर गये। वहाँ से आने पर उन्हे यह पता चला कि दुष्काल के कारण भोमट के भील जानवरों को मार कर खाने लग गये हैं अतः भोमट मे जाने हेतु राज्य सरकार को निवेदन

किया । उत्तर प्राप्त नही होने पर उदयपुर से रवाना होकर चले गये । किन्तु पुलिस ने गिरफ्तार कर उदयपुर लाकर छोड दिया और पुलिस का कडा पहरा मकान पर बैठा दिया जो 22 अगस्त 1942 को स्वतन्त्रता आन्दोलन मे गिरफ्तार होने तक बरावर चलता रहा । इस बीच उदयपुर सैण्ट्रल जेल मे वहाँ से इसवाल कैंप जेल मे उसके पश्चात् पुन उदयपुर सैण्ट्रल जेल मे रखे जाकर 1945 तक नजर बन्द रहे । इस प्रकार उन्हे तीसरी दफा लगभग 3 वर्ष तक जेल मे रख कर राज्य सरकार ने बिना शर्त रिहा किया । जेल से रिहा होने के पश्चात् भी वे 1947 तक बराबर उदयपुर शहर मे नजर बन्द रहे पुलिस साथ रहती थी, इस कारण वे न तो कही जा सकते थे और न अपने परिवार के भरण-पोषण के लिये ही कुछ कर सकते थे ।

पं० नेहरू के अनुरोध पर चुनाव से हटे

राज्य सरकार ने उन्हे 1936 मे जेल से रिहा किया उस समय वह केवल 30) रुपया माहवार उन के निर्वाह के लिये देती थी (परिवार के लिये) । 1940 मे श्री सेठ जमनालालजी बजाज के कहे अनुसार राज्य सरकार बजाय 30/- रु० के 40/- रु० प्रति माह देने लग गई थी । जो जुलाई 1942 तक मिलते रहे । सन् 1951–52 मे साहडा निर्वाचन क्षेत्र से विधान सभा के लिये वहाँ की जनता के आग्रह पर चुनाव मे खडे हुए थे, किन्तु उस समय वर्त्तमान प्रधान मत्री पडित नेहरू के समझाने पर कि आप वृद्ध हैं और एक कर्मठ कांग्रेस सिपाही के नाते आप अपना नाम कांग्रेस के उम्मीदवार के पक्ष मे उठा लीजिये । पडित नेहरू की बात को स्वतन्त्रता सग्राम के इस बहादुर सिपाही ने तुरन्त मान ली और चुनाव मैदान से रिटायर हो गये । यह है उनकी जिन्दगी का सक्षिप्त चमकता हुआ इतिहास ।

मातृभूमि की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व स्वाहा

श्री मोतीलाल तेजावत देश के उन मुठ्ठी भर आजादी के दीवानो मे से थे जिन्होने मातृ भूमि की वलिवेदी पर अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया । सामन्ती अत्याचारो और जुल्मो के खिलाफ आजादी के इस कर्मठ देश भक्त ने मौत की भी परवाह न कर, लोहा लिया । श्री तेजावत के दिल मे शोपित पीडित और बुभुक्षित आदिवासी जनता के लिये एक भारी दर्द था । इस कर्मठ भील नेता ने अपने जीवन का एक-एक कण आदिवासी जाति की सेवा मे अर्पित कर दिया ।

मजलूमों के मसीहा का स्वर्गारोहण

इस प्रकार दिनाक 5 दिसम्बर 1963 को यह आदिवासी जाति का मसीहा, अपना समूचा जीवन त्याग और तपस्या के साथ इस जाति के लिये अर्पित करता हुआ इस ससार से चल बसा ।

ये आजादी के नीव के वे पत्थर है जिन पर आज हमारी मातृभूमि की स्वतत्रता की मजिले खडी है ।"

कुंवर मदनसिंह, करौली

अवसान : 24 अगस्त, 1927



ऐश्वर्य के पालने में पले हुए कुंवर

कुवर मदनसिंह का जन्म ऐसे घराने मे हुआ जहाँ ऐश्वर्य की मुक्त हस्त से वर्षा हो रही थी। आपके पिता जीवित तिलक के राजा कहलाते थे। लक्ष्मी घर मे अड़ कर जम रही थी। आपका बाल्यकाल राजकुमारो के समान व्यतीत हुआ। करौली राज्य मे कुवर मदनसिंह के विवाहोत्सव को लोग अभी तक नही भूले है, बुजुर्ग लोग अभी तक बडे गर्व के साथ उस विवाह की प्रशसा करते हैं।

पिता का करौली से निष्कासन

समय की गति बडी ही विचित्र होती है। आपके पिता श्री चिमनसिंह, करौली राज्य के सर्वसत्ता-सम्पन्न-दीवान थे। उनके अत्याचारो से जनता घबडा गई, और सगठित होकर ब्रिटिश सरकार को शिकायत लिखी। परिणामस्वरूप श्री चिमनसिंह का राज्य से निष्कासन हो गया। श्री कुवर साहिब को इस घटना से बड़ा ही वैराग्य सा हो गया और विलासिता तथा ऐश्वर्य से घृणा हो गई।

करौली राज्य को चुनौती और भीष्म प्रतिज्ञा

सौभाग्यवश उन्ही दिनो उनका ससर्ग श्री ठाकुर पूर्णसिहजी से हो गया फिर क्या था, दो दीवाने मिल कर एक हो गये। श्री कुंवर साहिब ने करौली राज्य से तीन बातो की माँग की (1) खेती की रक्षा के लिये सूअर मारने की आजादी (2) राज्य-भाषा हिन्दी हो और अदालत-कचहरियो मे उर्दू के बजाय इसका प्रचलन हो। (3) बेगार प्रथा को बद किया जाय। कुवर साहिब ने प्रतिज्ञा करली कि जब तक ये तीनो माँगे स्वीकार

न हो, तब तक मैं करौली राज्य मे अन्न भक्षण नही करूँगा, पैरो मे जूती नही पहिनूँगा तथा खाट पर नही सोऊँगा । यह प्रतिज्ञा उन्होने आजीवन निभाई । कुवर साहिब के तपस्वी जीवन का जनता पर बडा ही प्रभाव पडा ।

पति-पत्नी की सार्वजनिक भूख हड़ताल

जब राज्य से उनका सघर्ष पराकाष्ठा पर पहुँच गया तब उन्होने इसके विरुद्ध भूख हडताल करने का सत्याग्रह कर दिया । वे श्री गोपालसिहजी की छतरी पर जाकर जम गये । साथ ही उनका अनुकरण करने के लिये उनकी धर्म पत्नी भी इस सत्याग्रह मे सम्मिलित हो गई । समस्त जनता मे तहलका मच गया हजारो मनुष्य उनके दर्शनो को आने लगे गोपालसिह की छतरी पर एक विशाल मेला सा लग गया । समस्त जनता विक्षुब्ध होकर नारे लगाने लगी और स्थिति कावू से बाहर हो गई ।

लोक-विजय का हर्ष

नगर के भद्र नागरिको का डेपुटेशन दीवान साहिब से मिला । दीवान साहिब ने नागरिको का आग्रह मानकर कुंवर मदनसिंह की उन सभी शर्त्तों को स्वीकार कर लिया जिसके लिए उन्होने भूख हडताल की थी । इस आदेश के बाद नगर मे खुशी मनाई जाने लगी । मदनसिंहजी और उनकी पत्नी का जुलूस निकाला गया । कुवर साहिब का त्याग और तप आदर्श और सराहनीय था । उन्होने लाखो रुपयो को देश सेवा मे लगा दिया । अपना सर्वस्व लुटा कर सत-वृत्ति धारण करली और परमार्थ मे समस्त जीवन व्यतीत कर दिया ।

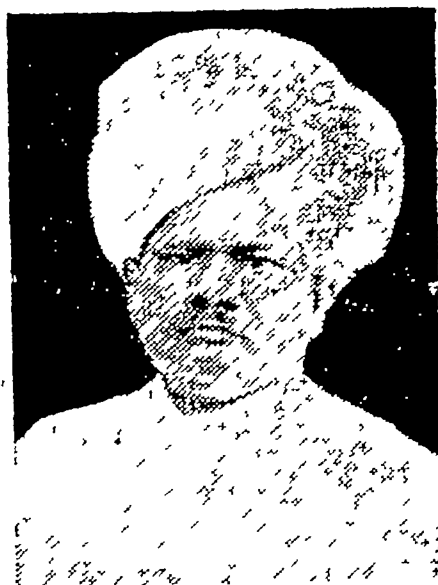
खादी-प्रचार, हिन्दी-प्रचार और गौ-सेवा कार्य

करौली मे खादी-प्रचार, हिन्दी-प्रचार और गौ-सेवा के कार्य को जन्म देने का श्रेय आपको ही है । यह राजस्थान के ही रत्न नही अपितु समस्त भारत के रत्न थे । मातृभूमि का ऐसे सुपुत्रो पर सदैव गर्व रहेगा ।

हैजा, हरिजन सेवा और अवसान

करौली नगर मे हैजा के भयकर प्रकोप से जनता मे हाहाकार मच गया । वैद्य और डाक्टर अपने प्राणो को बचाने के कारण उपचार करने से विमुख हो गये । उस समय आप रात्रि और दिन की परवाह न करके हरिजनो की सेवा में लग गये । उनके शुभ-चिंतक मित्रो ने उन्हे बहुत रोका परन्तु वह नही माने । अत मे 24 अगस्त, 1927 को बारह बजे उनकी जीवन लीला समाप्त हो गई । उनका चरित्र खरे स्वर्ण के समान उज्जवल पुनीत और आदर्श था ।

बाबू मुक्ताप्रसाद वकील, बीकानेर.



बीकानेर में जन जागृति के जनक

बीकानेर मे राष्ट्रीय चेतना के विकास एव जन जागृति के क्षेत्र मे बाबू मुक्ताप्रमाद जी का महान् योगदान रहा है। उनके प्रयत्नो से ही नगर मे आजादी के दीवानो की एक पौध तैयार हुई है जिसे उन्होने अपने त्याग एव बलिदान से सिंचित किया है।

समाज-सेवा के माध्मम से लोकजागरण का सूत्रपात

बाबू मुक्ताप्रसाद मूल रूप से अलीगढ के निवासी थे और वर्षों से बीकानेर मे वकालत करते थे। उन्होने समाज-सेवा के माध्यम से जनता मे जागरण का सूत्रपात किया। दलितो एव हरिजनो के उद्धार के कई कार्य उनकी देख-रेख मे चलते थे। धनाभाव से पीडित लोगो के न्यायसगत मुकद्दमो की नि शुल्क पैरवी करते थे।

बीकानेर-षड़यंत्र केस के एक मात्र साहसी वकील

बीकानेर-षडयत्र केस के ऐतिहासिक मामले मे उन्होने ही पैरवी करके अपने अद्वितीय साहस का परिचय दिया था। समाज-सेवा एव राष्ट्रीय विचारधारा के कारण उनकी बढती हुई लोकप्रियता से बीकानेर की नौकरशाही विचलित हो उठी और उन्हे किसी तरह से राजकीय जाल मे फँसा लेने की योजनाए बनाई जाने लगी।

उत्तरदायी शासन के लिए प्रजामंडल की स्थापना और निर्वासन

बीकानेर मे सर्वप्रथम उन्हीं के प्रयत्नो से प्रजामडल का गठन हुआ जिसका उद्देश्य शान्त एव वैध उपायो से उत्तरदायी शासन की स्थापना करना था। प्रजामडल ने जब उदरायसर गाँव मे किसानो पर होने वाले अत्याचारो के विरुद्ध आवाज उठाई

तब कई व्यक्तियो को गिरफ्तार किया गया। इसी प्रसग मे बाबू मुक्ताप्रसाद को बीकानेर छोडने का आदेश दिया गया। बीकानेर से निर्वासित होने पर बीकानेर से उन्हे शानदार विदाई दी गई। निर्वासन के आदेश के बाद वे अलीगढ चले गए।

निर्वासन की निरस्ती और महाप्रयाण

महाराजा गगासिह की मृत्यु के बाद बीकानेर के नए महाराजा शार्दूलसिंह ने उनके निर्वासन की आज्ञा रद्द कर दी और अलीगढ मे इसकी सूचना उस समय पहुँची जब उनकी शव-यात्रा की तैयारी हो रही थी।

अन्तिम श्रद्धांजलि

प्रसिद्ध पत्रकार श्री सत्यदेव विद्यालकार ने बाबू मुक्ताप्रसादजी के सम्बन्ध मे लिखा है कि—

श्री मुक्ताप्रसादजी बीकानेर की जनता के सच्चे सेवक और महान् त्यागी पुरुष थे। गरीब आदमियो की सेवा करना, हरिजनो के उद्धार के लिए सब तरह का प्रयत्न करना तथा मित्रता निबाहना उन्होने अपने जीवन के कर्त्तव्य मान रखे थे। उनके रहन-सहन और खान-पान का ढग बहुत ही सादा था। जमीन पर चटाई बिछा कर सोना तो उनका दैनिक नियम ही था। बीकानेर की जनता उन्हे बहुत चाहती थी। आपको सब लोग भाईसाहब के नाम से पुकारते थे। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि शायद ही ऐसा कोई बीकानेर निवासी हो जो उनकी सेवाओ से उनका भक्त न हो गया हो।

राजद्रोह के समर्थन में साहसिक कदम

जब बीकानेर राज्य के राजनीतिक क्षेत्र मे काम करना तो दूर रहा, इस क्षेत्र के कार्यकर्त्ताओ के प्रति सहानुभूति रखना तक एक महान् अपराध था। उस समय सर्व श्री सत्यनारायणजी सर्राफ भादरा, श्री खूबरामजी सर्राफ भादरा, श्री गोपालदासजी स्वामि, श्री चदनमलजी बहड चुरू और सोहनलालजी शर्मा आदि पर चलने वाले प्रथम राजनीतिक मुकद्दमे मे, अन्य दो वकीलो के साथ प्रमुख रूप से पैरवी करके, आपने महान साहस का कार्य किया था। इस मुकद्दमे के कारण ही बीकानेर की नौकरशाही उनके खिलाफ हो गयी, पर बीकानेर के उच्चाधिकारी और धनी-मानी व्यक्ति भी वकील साहब के मित्र और भक्त थे। ऐसे जन-सेवक के पीछे भी राज्य की पुलिस पड गयी। गुप्तचर विभाग के व्यक्ति बडे अफसरो को उनकी झूठी-झूठी खबरें भेजकर कान भरा करते थे। इस सब चक्र का ज्ञान होते हुए भी 'भाई-साहब' अपने सेवा कार्य से विमुख न हुए।

श्री रामनारायण चौधरी
अजमेर



जन्म संवत् 1952, 1 अगस्त, सन् 1896.

पता पाल बीचला, अजमेर

आजन्म देश सेवा की दीक्षा

श्री रामनारायण चौधरी राजस्थान के सबसे पुराने जीवित लोक सेवक हैं। उनकी आयु इस समय 77 वर्ष की है। राजनैतिक प्रवृत्तियो मे उनका लगाव 1914 से हो गया। 1908 से 1915 तक चौधरीजी जयपुर महाराजा हाई स्कूल और महाराजा कॉलेज मे मिडिल से इटर तक पढे थे। 1912 मे उनका सपर्क पडित अर्जुनलाल सेठी से हुआ। उस समय सेठीजी जयपुर मे वर्द्धमान-विद्यालय नाम की सस्था का सचालन कर रहे थे। सेठीजी की उत्कट देशभक्ति, उनके सादा जीवन, उनकी राष्ट्रीय-शिक्षा-प्रणाली और उनके क्रान्तिकारी विचारो का चौधरीजी पर गहरा प्रभाव पडा। पहली ही भेंट मे श्री रामनारायण चौधरी सेठीजी से आजन्म देश सेवा की दीक्षा लेकर लौटे।

सेठी, बारहठ और पथिक के बाद चौथा व्यक्तित्व

राजनैतिक क्षेत्र मे अथवा क्रान्तिकारी कार्यों मे श्री रामनारायण चौधरी को अधिक समय तक श्री अर्जुनलाल सेठी और ठाकुर केसरीसिंह बारहठ के साथ काम करने का अवसर नही मिला। राजपूताने की राजनीति मे उनका सपर्क और सहयोग प्रत्यक्ष रूप से और लबे समय तक तो विजयसिंह पथिक के साथ ही रहा था। फिर भी यह निश्चित है कि राजस्थान मे राजनैतिक चेतना लाने वाले सर्वश्री अर्जुनलाल सेठी, ठाकुर केसरीसिंह बारहठ और विजयसिंह पथिक के बाद चौथा नाम श्री रामनारायण चौधरी ही का आता है। इस दृष्टि से श्री चौधरीजी राजपूताना मे राजनैतिक चेतना लाने वाले आदि पुरुषो मे से एक है।

विविध रंगों वाली लंबी जीवन-यात्रा

श्री रामनारायण चौधरी अनेक भाषाओं के जानकार, विद्वान, विचारक और लेखक हैं। कई पत्र पत्रिकाओं का उन्होंने समय-समय पर सपादन किया है। उन्होंने ऐतिहासिक सदर्भों की कई पुस्तकें भी लिखी हैं। उनके विचारपूर्ण लेख आज भी समाचार-पत्रो मे निकलते रहते हैं। उनका सार्वजनिक जीवन भी विविध रगो से अलकृत रहा है। एक नजर मे उनकी लबी और घटनापूर्ण जीवन यात्रा को इस तरह से देखा जा सकता है कि 1914 से 16 तक वे क्रान्तिकारी थे। 16 से 20 तक वे वर्धा मे शिक्षक और समाज सुधारक थे। 20 से 28 तक वे राजस्थान सेवा सघ मे देशी रियासतो की जनता के लिए कार्य करने वाले त्याग-वीर और कर्मनिष्ठ व्यक्ति थे। 30 मे वे सत्याग्रही। सन् 1932 मे वे हरिजन सेवा के लिए समर्पित व्यक्ति थे। 39 से 42 तक वे सेवा-ग्राम-आश्रम के साधक थे। 42 से 45 तक भारत-छोडो आन्दोलन के राजबदी थे। 54 से 59 तक वे भारत सेवक समाज के साथ सलग्न थे और 59 से 65 तक ग्राम सहयोग समाज के प्रवर्त्तक सस्थापक थे।

गांधी और नेहरू का सान्निध्य

अपनी इन बहुविध प्रवृत्तियो मे उन्हें महात्मा गांधी के सान्निध्य में रहने का भी सौभाग्य मिला था तो वे नेहरूजी का स्नेह भी अर्जित कर सके थे। अपने समय मे राजस्थान के वे अकेले व्यक्ति थे जो देश मे राजनीति और राजनीति से इतर विषयो मे देश की पहली पक्ति मे थे। लेकिन समय समय पर उनकी प्रवृत्तिये और दिशाए इस तीव्रता से बदलती गई कि जिससे उनकी शक्ति, सामर्थ्य और प्रतिभा की स्थायी और ठोस उपलब्धि जनता को नही हो सकी।

जन्म और शिक्षा

आपका जन्म । अगहन, 1952 विक्रमी अर्थात् नवम्बर 1896 ईसवी मे जयपुर राज्य के नीमका थाना कस्बे मे हुआ। इनके पिता श्री मुरलीधरजी जिले के प्रमुख वकील थे। चौधरीजी की प्रारभिक शिक्षा शुरू मे एक मकतब मे उर्दू भाषा के द्वारा, बीच मे कुछ समय एक पाठशाला मे हिन्दी द्वारा नीम के थाने में ही हुई। अग्रेजी शिक्षा प्रारभिक रूप मे उन्होंने जोबनेर के आर्य हाई स्कूल मे प्राप्त की। चौधरीजी जयपुर मे महाराजा हाई स्कूल और कॉलेज के विद्यार्थी रहे हैं। वे सदा अपनी कक्षा मे प्रथम या दूसरे नम्बर पर रहे और शुरू से आखिर तक छात्रवृत्तियां पाते रहे। कॉलेज मे पहुँचते-पहुँचते स्वामी रामतीर्थ और विवेकानन्द के सारे अग्रेजी ग्रथ पढ डाले। अग्रेजी भाषा का इनका अध्ययन प्रारम्भ से ही अच्छा रहा है।

क्रान्तिकारी दल मे शामिल

1911 मे सेठीजी के शिष्य और चौधरीजी के सहपाठी छोटेलालजी जैन हार्डिग्ज बम केस से छूट कर दिल्ली से जयपुर लौटे। उनके सम्पर्क से चौधरीजी क्रान्तिकारी

दल मे शरीक हो गये और अपने साथ रहने वाले चार पाँच विद्यार्थियो की टोली बनाली। इस मडली ने रियासत के अ ग्रेज भक्त दीवान नवाब फयाजुद्दौला के खिलाफ एक पर्चा बाँटा जिसे चौधरीजी ने लिखा। इससे राजधानी मे सनसनी फैली।

क्रांतिकारी दल का कार्य

1915 मे ठा० केसरीसिंह जयपुर आये। वे भारतीय क्रान्तिकारी दल के सर्वोच्च नेता बाबू रासबिहारी बोस के विश्वासपात्र और श्री शचीन्द्र सान्याल के प्रमुख साथी थे। उन्होने विश्वयुद्ध के समय अ ग्रेज सरकार की भारतीय सेना मे विद्रोह कराने की योजना बनाई थी। फरवरी की कोई तारीख श्रीगणेश करने के लिये तय हुई थी। इसके लिये भारत सरकार के गृह सचिव श्री रेजीनाल्ड केडक की हत्या को सकेत बनाया गया था और इस कृत्य को करने के लिये सेठीजी के एक शिष्य जयचद चुने गये थे। उन्हे हरिद्वार से लाने का काम चौधरीजी को सौंपा गया। परन्तु वे खाली हाथ लौट आये। लेकिन उनकी कार-गुजारी के लिये बोस बाबू से उन्हे दुशाला और घडी इनाम मे मिले।

अमर शहीद प्रताप का वारंट और गिरफ्तारी

इसी वर्ष बनारस का मशहूर षडयत्र केस आरम्भ हुआ। प्रतापजी के नाम वारट निकला तो वे हैदराबाद (सिन्ध) मे जा छुपे। पुलिस उनके पीछे पडी हुई थी, परन्तु वह भुलावे मे आकर हैदराबाद (दक्षिण) पहुँच गई। प्रतापजी को किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचा देने का भार चौधरीजी पर डाला गया। वे हैदराबाद (सिंध) गये और वहाँ से दोनो बीकानेर के लिये चल पडे। रास्ते मे प्रतापजी दल के एक सदस्य आशानाडा के स्टेशन मास्टर से मिलने को ठहर गए, मगर रेल से उतरते ही गिरफ्तार हो गये, क्योकि इस बीच स्टेशन मास्टर सी० आई० डी० का मुखबिर बन चुका था। चौधरीजी बीकानेर मे रेवेन्यू सेक्रेटरी शिव गुलामजी कोटपूतली वाले के यहाँ ठहरे। वे रिश्ते मे चौधरीजी के चाचा होते थे। चार पाच दिन बाद प्रतापजी के बजाय इन्सपेक्टर मगनराज व्यास आ पहुँचे। आये तो थे चौधरीजी को पकड कर ले जाने के लिये, लेकिन कुछ तो उनके चाचा का लिहाज हुआ और कुछ चौधरीजी के बयान का असर हुआ होगा कि वे चले गये। लेकिन कुछ ही दिन बाद वे फिर नीम का थाना और जयपुर मे चौधरीजी से मिले। मगर इन्हे निर्दोष पाकर पीछा छोड दिया।

रामगढ़ से वर्धा

1916 के शुरू मे चौधरीजी कॉलेज छोडकर रामगढ (शेखावाटी) मे अध्यापक बनकर चले गये। वहाँ विद्यार्थियो और युवको मे क्रान्तिवाद का प्रचार करने लगे। परन्तु स्कूल के मालिक सेठजी के एक पुत्र के व्यवहार से स्वाभिमान को चोट पहुँचने पर चौधरीजी एक साल के भीतर ही वहाँ से छोड कर सेठ जमनालालजी बजाज के निमत्रण पर वर्धा चले गए। सेठजी यह निमत्रण रामगढ आये तब दे गये थे। इसी दरम्यान छोटेलालजी भी महात्मा गाँधी के अनुयायी बन गये और चम्पारण मे उनके साथ काम करने लग गए।

वर्धा प्रवास और समाज सेवा कार्य

वर्धा मे चौधरीजी काम तो मारवाडी विद्यालय मे करते थे, परन्तु साथ-साथ समाज सेवा के काम मे भी भाग लेते थे और जब वहाँ इन्फलुऐंजा फैला तो हरिजन मुहल्लो मे काफी सेवा कार्य किया। यही पर चौधरीजी का लोकमान्य तिलक से परिचय हुआ। उससे प्रेरित होकर उन्होंने सेठ जमनालालजी की सहायता से स्वदेशी भडार चलाना शुरू कर दिया। परन्तु 1 अगस्त, 1920 को जब लोकमान्य का देहान्त हुआ तो उन्होंने पूरा समय देश सेवा मे लगाने का सकल्प कर लिया।

राजस्थान सेवा-संघ के साथ

अक्तूबर, 1920 मे जब प० अर्जुनलाल सेठी, ठा० केसरीसिंह बारहठ और श्री विजयसिंह पथिक वर्धा आये और उन्होने राजस्थान-सेवा-सघ की स्थापना की तथा 'राजस्थान केसरी' साप्ताहिक निकाला तो चौधरी जी सघ के मत्री और पत्र के प्रकाशक व सहकारी सम्पादक के रूप मे इस योजना मे जुट गये। उन्हे शीघ्र ही पुलिस की मानहानि के अभियोग मे तीन मास के कारावास की सजा मिली।

गरीब बनकर ही गरीब की सेवा

उसी वर्ष दिसम्बर मे नागपुर कॉंग्रेस हुई। उसमे जाते हुए महात्मा गाँधी वर्धा ठहरे। चौधरीजी अजना देवी सहित उनसे मिले और दोनो ने गरीबो की सेवा करने की इच्छा प्रगट की। बापू ने कहा कि ऐसी सेवा तो गरीब बन कर ही हो सकती है और सलाह दी कि अजनादेवी जेवर और चौधरीजी पैतृक सम्पत्ति छोड दें। दूसरे ही दिन इस आज्ञा का पालन कर दिया गया।

बिजोलियाँ के लोक जागरण की झाँकी

पथिकजी मेवाड की बिजोलिया जागीर मे पहले से ही किसानो का सत्याग्रह आन्दोलन चला रहे थे। अब वह राजस्थान-सेवा-सघ के नियन्त्रण मे आ गया था। उसकी स्थिति गभीर होने के समाचार आने पर 1921 के आरम्भ मे पथिकजी चौधरीजी को साथ लेकर महात्माजी से मार्गदर्शन लेने दिल्ली गये। वहाँ चौधरीजी को बिजोलीयाँ भेजने का निश्चय हुआ। तदनुसार वे जब क्षेत्र मे पहुचे तो सर्वत्र 'वन्दे मातरम्' की गूँज थी, सत्याग्रह उग्र रूप मे चल रहा था, लगानबदी जारी थी, जागीर की अदालत और शराब खाने का बहिष्कार हो रहा था, जागीरदार के पिट्ठू और सूदखोर बोहरो से लेन देन बद था, विवाह और मौसर स्थगित थे, जागीरदार द्वारा फसल जला देने की घटनाओ के कारण जमीन पडत रखी हुई थी और किसानो ने पडौसी राज्यो मे गुजारे लायक काश्त करली थी। जागीरदार दमन करके थक चुका था। चौधरीजी स्थिति का अवलोकन करके और अनोखी स्फूर्तियाँ लेकर लौटे। हिंसा-मार्ग को उन्होंने अतिम प्रणाम कर लिया।

राजस्थान-सेवा-संघ अजमेर में

असहयोग आन्दोलन द्रुतवेग से देश मे फैलने लगा था। राजस्थान मे भी उसकी लहर पहुँची। उसमे प्रभावित होकर पथिकजी राजस्थान-सेवा-सघ और साथियो को लेकर अजमेर आ गये। वहाँ खवर आई कि विजोलियाँ के पडौसी जागीरी इलाके वेंगू इलाके के किसान भी उठ खडे हुए हैं। चौधरीजी वहा भेजे गये। उन्होने किसान नेताओ को सलाह-मशिवरा दिया, एक वडी सभा को सम्बोधित किया और कुशलता पूर्वक किसानो और जागीरी पुलिस का सघर्ष टाल कर लौट आये।

बिजोलियाँ समझौता और चौधरीजी

इस कार्यक्रम की समाप्ति पर विजोलियाँ का युग प्रवर्तक समझौता हुआ। उसमे चौधरीजी की राजनयिक प्रतिभा के जौहर सामने आये। एक और राजपूताने के ए जी जी. हालैण्ड और रियासत के दीवान चटर्जी अपने वरिष्ठ अधिकारियो सहित थे। दूसरी और चौधरीजी के नेतृत्व मे किसानो का प्रतिनिधि मडल था। सात दिन की वार्त्ताओ के वाद वेगार, लाग-वाग, रसद, लगान और सूदखोरी सम्वन्धी किसानो की प्रायः सभी माँगे मजूर हुई। सत्याग्रह विजयी होकर समाप्त हुआ।

सिरोही का भील हत्याकांड

इसी वीच सिरोही राज्य मे भील हत्याकाण्ड हुआ तो सघ की ओर से उसकी जाँच का काम भी चौधरीजी के सुपुर्द हुआ। वे अग्रेजी और रियासती नाकावदी को चीर कर घटनास्थल पर पहुचे जहा पचासो नरनारी मशीनगन से भून दिये गये थे और सैकडो घर अन्न भडरो महित जला दिये गये थे। उनकी रिपोर्ट भारतीय पत्रो मे छपी और ब्रिटिश समद मे भी उसकी गूँज हुई तो अत्याचारियो के हौसले कुछ पस्त हुए और पीडितो को आश्वासन मिला।

वरड़ परगने के किसानों के बीच

इसके आस पास ही वू दी के वरड परगने मे राज्य की सेना ने किसानो और उनकी स्त्रियो तक पर हमला कर दिया। नानक नामक भील गोली का शिकार हुआ और अनेक स्त्रिया घायल हुई। यहाँ चौधरीजी और अजनादेवी दोनो गये, किसानो की सभा की निषेधाज्ञा के वावजूद दोनो ने लोगो को सम्वोधित किया और उन्हे आश्वासन देकर लौट आये। चौधरीजी की रिपोर्ट प्रकाशित होने पर जनता की कुछ शिकायतें कम हुईं। पति-पत्नी दोनो वून्दी राज्य से निर्वासित कर दिये गये।

1922 की वर्षा ऋतु मे किमानो से मलाह-मश्विरा करते हुए चौधरीजी और उनके माथी सीताराम दास जी साधु और प्रेमचन्दजी भील अचानक घुडसवारो द्वारा बिना वारट गिरफ्तार कर लिये गये। यह वागएमउओराव का जागीरी इलाका था। वहाँ से

तीनो को मुश्के बाँध कर बरसते पानी मे पैदल तीन मील ले जाया गया और बेडियाँ डाल कर रख दिया गया। दूसरे दिन उन्हे जहाजपुर ले जाकर वहाँ के पहाड़ी किले मे बन्द कर दिया गया। वहाँ से तीन सप्ताह बाद तीनो उदयपुर भेज दिये गये। वहाँ सिटी मजिस्ट्रेट की अदालत मे राजद्रोह का मुकदमा चला। वहाँ से और राज्य के सर्वोच्च न्यायालय से वे बरी हुए। बीच मे चौधरीजी को तीन दिन दोनो दीवानो के पास ले जाया गया और राजस्थान-सेवा-सघ तथा राज्य के बीच समझौता लगभग होने ही वाला था कि ए जी जी के सकेत पर बातचीत बद कर दी गई। पद्रह महीने के कारावास के बाद तीनो जब घर जाने लगे तब मुम्ताज नामक वारागना ने उनके स्थान पर आकर मुजरा किया जो उस वातावरण मे असाधारण देश प्रेम का साहसिक परिचय था।

पथिकजी के मुकदमे का प्रचार

पथिकजी पर मेवाड मे राजद्रोह का जो लम्बा मुकदमा चला उसके सम्बन्ध मे कानूनी सहायता और अखबारी प्रकाशन का सारा प्रबन्ध करने का भार चौधरीजी पर ही था। उनके प्रचार कार्य की क्षमता देखकर महामना मालवीयजी चकित हुए थे और महान् प्रचारक बनारसी दास जी चतुर्वेदी ने भी ईर्ष्या प्रगट की थी।

राजस्थान के बाकायदा संपादक

1924 मे सघ के मुखपत्र 'तरुण-राजस्थान' पर अजमेर सरकार ने राजद्रोह का मुकदमा चलाया। सम्पादक शोभालालजी गुप्त थे, परन्तु चौधरीजी को असली सम्पादक बता कर अभियुक्त बनाया गया। वे अदालत से रिहा तो हुए मगर कई महीने जेल मे रहना पडा क्योकि उन्होने जमानत नही दी थी। इसके बाद चौधरीजी, तरुण-राजस्थान के बाकायदा सम्पादक हुए।

जन्म-भूमि से निर्वासन

1925 मे सीकर के जाटो मे असतोष पैदा हुआ। चौधरीजी को समझौता कराने किसानो और जागीर के प्रबन्धक खाँ साहब दोनो का निमत्रण मिला। जब बात बनने ही वाली थी तो आकस्मात जयपुर की गोरी रीजेंसी कौसिल के इशारे पर वार्त्तालाप बन्द करके खाँ साहब ने दण्ड और भेद नीति अपनाई। किसान दबा दिये गये। चौधरीजी को अनिश्चितकाल के लिये अपनी जन्म भूमि से निर्वासित कर दिया गया और उनके पिताजी की वकालत छीन ली गई। यह जलावतनी रियासतो मे सबसे लम्बी थी। इस अन्यायपूर्ण आज्ञा को भग करने पर चौधरीजी जयपुर जेल मे पाँच मास रहे।

निमूचाणा हत्याकाड की जाँच

अलवर राज्य के नीमूचाणा गाँव के राजपूत किसानो ने राज्य से कष्ट निवारण की माँग की तो इसे बगावत समझ कर महाप्रभु महाराजा जैसिह ने राजपूताना एजेसी के

समर्थन से सेना भेज कर सैकडो किसानो को मौत के घाट उतरवा दिया, बहुत से मकान जला दिये गये और तरह-तरह के अमानुषिक अत्याचार किये गये। पीडितों ने राजस्थान-सेवा-सघ से पुकार की। चौधरीजी ही उस समय सघ के संचालक थे। उन्होने तुरन्त, कार्यकर्ता गुप्त रूप मे घटनास्थल पर भेज कर जाँच कराई। उसकी रिपोर्ट प्रकाशित होने पर देश मे तहलका मच गया। महात्मा गाँधी ने 'यग इण्डिया' मे वडी टिप्पणी लिखी। यह काण्ड देशी राज्यो का जलियावाला काण्ड था।

राजस्थान-सेवा संघ के वाद बापू के चरणो में

इसके वाद 1928 मे ही आपसी मतभेदो के कारण राजस्थान सेवा सघ की अद्वितीय सस्था टूट गई। 1929 के आरम्भ मे चौधरीजी स्थायी रूप से वापू के चरणो मे पहुँच गये। वहाँ वापू ने राजा-प्रजा सेवा-समिति नामक सस्था का विधान तैयार किया। उनका विचार था कि चौधरीजी को उसका मन्त्री वनाया जाय। 'यग राजस्थान' को हिन्दी अंग्रेजी साप्ताहिक के रूप मे निकाला जाय और चौधरीजी उसके सपादक हो। परन्तु सेठ जमनालाल वजाज और मणिलाल भाई कोठारी मे पदो के वारे मे मतभेद होने के कारण यह योजना कागजो पर ही धरी रह गई।

अजमेर में गिरफ्तारी

1930 मे नमक सत्याग्रह शुरू होने पर चौधरीजी अजमेर लौट आये और प्रातीय डिक्टेटर के रूप मे गिरफ्तार होकर जेल मे पहुँच गये। उन्हे एक वर्ष की कडी कैद की सजा राजद्रोह के अपराध मे मिली। जेल मे वे "Man" नामक हस्तलिखित अंग्रेजी साप्ताहिक निकालते रहे। गाधी-इरविन समझौते के अधीन नवम्बर 1930 मे वे रिहा हो गये।

हरिजन-सेवक-संघ की राजपूताना शाखा

1932 मे हरिजन-सेवक सघ स्थापित हुआ तो राजपूताना शाखा का भार चौधरीजी के कधो पर आ पडा। इस कार्य की खातिर उन्होने कांग्रेस महासमिति के महामत्री पद का प्रस्ताव भी अस्वीकार कर दिया। इस कार्य मे चौधरीजी की सगठन व्यवस्था और प्रचार की विविध शक्ति का खूब उपयोग हुआ। परिणामस्वरूप राजपूताना हरिजन-सेवक सघ देश की प्रातीय शाखाओ मे एक प्रमुख शाखा माना गया। 1934 की वापू की दक्षिण-भारतीय हरिजन-यात्रा मे चौधरीजी उनके हिन्दी सचिव के रूप मे साथ रहे।

राजस्थान-सेवक-मंडल

हरिजन कार्य के दौरान प्रमुख साथियो ने रियासतो मे राजनैतिक कार्य भी करने का आग्रह किया और राजस्थान-सेवक-मडल वना, तव चौधरीजी ही उसके अध्यक्ष चुने गये। इस हैसियत से चौधरीजी लगभग एक वर्ष तक डूंगरपुर राज्य के भील क्षेत्र मे सेवा-रत रहे।

1939 से 42 तक सेवाग्राम में

1939 मे चौधरीजी सेवाग्राम आश्रम मे चले गये और 1942 तक सपरिवार वही रहे। इस बीच वापू ने गो-सेवा-सघ की स्थापना की। जमनालालजी उसके अध्यक्ष

हुए। उनके निधन के बाद बापू ने चौधरीजी को सघ का मत्री बनाना चाहा परन्तु उन्होंने घनश्यामदासजी विडला जैसे पू जीपति की मातहती स्वीकार नही की।

भारत-छोड़ो आन्दोलन के राजबंदी

'भारत-छोडो' आन्दोलन छिडने पर चौधरीजी अजमेर चले आये और रेल्वे स्टेशन से सीधे ही जेल पहुँचा दिये गये। वहाँ पौने तीन साल राजबन्दी रह कर सबसे अन्त मे रिहा हुए। इस नजरबन्दी मे चौधरीजी ने राजस्थान के स्वतत्रता सग्राम का एक सस्मरणात्मक इतिहास लिखा जो इस विषय का अभी तक प्रामाणिक ग्रथ माना जाता है।

दैनिक 'नया राजस्थान' का प्रकाशन

जेल से छूट कर कुछ समय सेवाग्राम रहने के बाद चौधरीजी ने 'नया राजस्थान' नामक हिन्दी दैनिक, अजमेर से निकाला। वह शीघ्र ही काफी लोकप्रिय हो गया। परन्तु एक निरकुश चीफ कमिश्नर को पत्र की स्वतत्र नीति सहन न होने से उसने हिन्दू-मुस्लिम एकता के कट्टर हामी चौधरीजी पर साम्प्रदायिकता का झूठा आरोप लगा कर अखबार पर सेंसर लगा दिया। चौधरीजी इस ज़लालत को सहन नही कर सके और दिल्ली जाकर श्री रफी-अहमद किदवई से चीफ कमिश्नर को आदेश भिजवा दिया। सेंसर उठ गया।

भारत सेवक समाज के सूचनामंत्री

1954 मे नेहरूजी अजमेर आये तो उनकी इच्छा पर चौधरीजी उनसे मिले और वे दिल्ली आने का बुलावा दे गये। दिल्ली में नेहरूजी ने उन्हे भारत सेवक समाज का सूचनामत्री बना दिया। उन्होने सस्था मे पहुँचते ही छोटे कर्मचारियो के वेतन बढा दिये, अग्रेजी की जगह हिन्दी को प्रधानता दी और डेढ सौ कार्यकर्त्ता नियुक्त किये। इन्हे प्रशिक्षण देकर मणिपुर, त्रिपुरा, मद्रास, केरल, कच्छ, कश्मीर और लेह तक फैला दिया। इन्हे केवल निर्वाह भत्ता दिया जाता था, खादी पहनना और निर्व्यसन रहना उनके लिने अनिवार्य था। चौधरीजी ने भी देश के दूर-दराज कोनो तक के दौरे लगाये। इनके कार्य से सस्था मे जान आ गई।

राजनैतिक आकाक्षा

चौधरीजी के काम से खुश होकर नेहरूजी ने चौधरीजी को बुला कर उनकी राजनैतिक आकाक्षा पूछी। चौधरीजी ने अपनी महत्वाकाक्षा यह बताई कि प्रधानमत्री से विना appointment के किसी भी समय मिल सकें। उनके और देश के भले के लिये उन्हे कुछ भी लिख सकें और कह सके और मेल मिलाप का काम कर सकें। नेहरूजी ने वह सब मजूर किया।

नेहरूजी की दृष्टि मे

नेहरूजी पर जो असर हुआ वह चौधरीजी को पजाब के राज्यपाल श्री पी एन सिन्हा और मुख्यमत्री कैरो साहबने पडितजी के शब्दो मे यू बताया 'राम नारायण चौधरी गांधीजी के पुराने साथी है। आजादी की सभी लडाइयो मे वे शानदार भाग लेते रहे है।

भारत सेवक समाज मे वहुत अच्छा काम कर रहे हैं। अपने लिए वे कभी कुछ नही मांगते। किसी की वुराई नही करते। कभी चुनाव नही लडे। थोडे मे अदव से अपनी वात कहते है। जिस चीज के लिए दूसरे जमीन-आसमान एक कर देते हैं उसे लेने से वे इन्कार करते हैं। ऐसे लोगो की वात पर भी हम ध्यान न दें तो कोई हमे नेक सलाह क्यो देगा ?'' यही राय उन्होने अपने साथी मत्रियो और वडे अविकारियो को वताई। उनकी यह भी हिदायत थी कि दिल्ली मे या वाहर जहाँ भी वे हो उन तक अविलव चौधरीजी के पत्र पहुँचा दिये जाए। नतीजा यह हुआ कि दिल्ली मे आम चर्चा फैल गई कि नेहरूजी चौधरीजी को वहुत मानते हैं।

ग्राम-सहयोग-समाज

नदाजी से मतभेद होने पर चौवरीजी ने 1959 मे भारत-सेवक-समाज छोड दिया। ग्राम-सहयोग-समाज नामक अपनी स्वतत्र सस्था वना ली। इसकी शीघ्र ही 11 राज्यो मे प्रदेश शाखाए खुल गई, इसकी कार्य पद्धति आन्दोलन के वजाए सहयोग से जनता के कष्ट निवारण की थी। फरीदावाद के पास एक गाँव मे इसका मुख्यालय रहा। वहाँ पजाव ने कोई 5000 पच-सरपच और राज्य-कर्मचारी चौधरीजी के पास अच्छे आचार विचार की शिक्षा के लिए भेजे गये। इस सस्था ने अग्रेजी और हिन्दी मे ग्राम सहयोगी नामक साप्ताहिक पत्र भी निकाला। 1964 मे नेहरूजी के निधन के वाद चौधरीजी का जी उचट गया और वे अपनी सस्था सहित अजमेर लौट आये।

अनेक भाषाओ के विद्वान, लेखक और संपादक

श्री रामनारायण चौधरी हिन्दी, उर्दू, अग्रेजी, मराठी, गुजराती और फारसी भाषाए जानते हैं। उन्होने अनेक हिन्दी, उर्दू और अग्रेजी पत्र पत्रिकाओ का सपादन किया है। वे प्रभावशाली वक्ता और मौलिक लेखक है। उन्होने चार पाच पुस्तके भी लिखी है। साहित्य के क्षेत्र मे उनका सवसे वडा काम यह हुआ है कि उन्होने गाँधी वाङ्मय के लगभग 5000 पृष्ठो का अग्रेजी और गुजराती से हिन्दी अनुवाद किया है।

त्रिमूर्ति-स्मारक-कोष का संकल्प !

इस अनुवाद के पारिश्रमिक से वचा हुआ रुपया जो उनकी समस्त पूँजी थी और जिसकी मात्रा लगभग 43000/– रुपया है राजस्थान त्रिमूर्ति अर्थात् प० अर्जुनलाल सेठी, ठाकुर केसरीसिंह वारहठ और श्री विजयसिंह पथिक के स्मारक कोष के लिए वसीयत कर दिया है।

आजकल वे अजमेर मे रहते हैं। 77 वर्ष की आयु मे भी नियमित आहार-विहार से अच्छा स्वास्थ्य वनाये हुए हैं और अपने वगीचे मे लगभग दो घटे रोज शरीर-श्रम करते हैं। उनका पता है—पाल वीचला, अजमेर।

स्वर्गीय ठाकुर रामसिह, करौली.

अवसान · सन् 1969

खादी के द्वारा राष्ट्रीयता का प्रसार

करौली मे खादी के द्वारा राष्ट्रीयता और लोक-जागरण का प्रसार करने वाले व्यक्तियो मे ठाकुर रामसिह का नाम सर्वोपरि आएगा । वे वर्षों तक करौली के ग्राम-सेवा-मडल के मत्रिपद पर रहे और खादी उत्पादन के कार्य को उन्होंने कुशलतापूर्वक राज्य भर मे फैलाया । मदन-खादी-कुटीर के द्वारा ठाकुर रामसिह ने करौली मे बनी हुई खादी का घर-घर मे प्रचार करवाया और खादी को अति अधिक लोकप्रिय बना दिया । मदन-खादी कुटीर की कार्य कुशलता और उसके व्यापक सगठन का श्रेय ठाकुर रामसिह को ही है ।

बचपन, आर्थिक कठिनाइयें और शिक्षा

ठाकुर रामसिह का जन्म करौली के एक सामान्य राजपूत परिवार मे हुआ था । बचपन मे ही उनके सेवा भावी सस्कारो का निरतर विकास होता गया था । वे दृढव्रती, सकल्पशील और उदात्त चरित्र के व्यक्ति थे । उनके परिवार की आर्थिक स्थिति अत्यन्त साधारण थी परतु उनके मन मे पढने की उत्कट लालसा थी और इसीलिए घोर आर्थिक कठिनाइयो मे भी उन्होने अपनी लगन से विद्या प्राप्त की ।

देश भक्त कुँवर मदनसिह के संपर्क में

उनके युवावस्था मे प्रवेश करते-करते देशभक्त कुँवर मदनसिहजी आपकी और आकर्षित हुए और अपने सान्निध्य मे रख कर लोक-सेवा और सार्वजनिक कार्यों का व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया । कुँवर मदनसिहजी ने प्रेमाश्रम और ब्रह्मचर्याश्रम नाम की जो सस्थाए बनाई थी उन दोनो सस्थाओ के सचालन का भार ठाकुर रामसिह पर ही था । इन सस्थाओ के द्वारा वे करौली के युवको मे सगठन, एक्यता, सेवा और चरित्र निर्माण के सस्कार जगाते थे ।

राजद्रोह के अपराध में राज्य द्वारा आर्थिक दण्ड

राजनैतिक और राष्ट्रीय प्रवृत्तियो मे भी ठाकुर रामसिह बराबर लगे रहते थे जिसके परिणामस्वरूप उन्हे राजद्रोह के अपराध मे राज्य द्वारा बहुत बडा आर्थिक दण्ड सहन करना पडा ।

रचनात्मक कार्यकर्ता और लोक सेवी व्यक्ति

सार्वजनिक सेवा मे लगे रह कर भी वे सदा नाम और यश से दूर रहते थे। उन्होने कभी किसी सस्था मे कोई पद नही सभाला । स्वार्थ और पदलिप्सा की छाया भी उन पर नही पडी थी । वे एक मौन साधक, एक रचनात्मक कार्यकर्त्ता और लोकसेवी व्यक्ति थे। उन्होने अन्याय और अत्याचार का डट कर मुकाबिला किया था । वे बहुत कम बोलते थे लेकिन उनका एक-एक शब्द नपा-तुला होता । वे खादी को राष्ट्रीय चेतना और देशभक्ति का प्रतीक मानते थे और खादी के कार्य के द्वारा ही उन्होने घर-घर मे देशभक्ति और राष्ट्रीयता का सदेश पहुँचाया ।

सन् 1969 में अवसान

ठाकुर रामसिह अपने शरीर और स्वास्थ्य की परवाह किए बिना दिन-रात काम मे लगे रहते । परिणामस्वरूप वे बीमार हो गए । दो वर्ष तक उनका इलाज होता रहा परन्तु अत मे 1969 मे उनका देहावसान हो गया और करौली से खादी और राष्ट्रीयता का एक कर्मठ सदेशवाहक सदा के लिए करौली वालो से बिछुड गया ।



वीतराग
पण्डित रेवतीशरण,
भरतपुर.

राजनीति के कुशल खिलाड़ी

प० रेवतीशरणजी का जन्म राजामण्डी आगरा मे हुआ था। आप तहसील बयाना, ग्राम नाबली के रहने वाले थे। आप जाति-सुधार, समाज-सुधार के प्रबल समर्थक वैदिक-धर्म-अनुयायी, वीतराग योगी थे। देश की स्वतत्रता के लिये आपने लाखो रुपये की, सम्पत्ति पर ठोकर मार दी। आप जहाँ कांग्रेस के सत्य, अहिंसा (गांधीवाद) के प्रबल समर्थक थे वहाँ आपका क्रान्तिकारी पार्टी से भी सम्बन्ध रहा है। सरदार भगतसिंह और सुखदेव जैसे महान् क्रान्तिकारी आपके ही घर ठहरा करते थे। आप राजनीति के कुशल खिलाडी थे। यदि आपको चाणक्य कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। आपको काम ज्यादा पसन्द था दिखावा कम।

स्वतंत्रता संग्राम मे पहली पंक्ति के नेता

आपने सन् 1917 से ही कांग्रेस का नियमित कार्य प्रारम्भ कर दिया था। आपने सन् 1920–21 मे असहयोग आन्दोलन मे भारी सहयोग दिया। आप नमक सत्याग्रह विदेशी वस्तु का बहिष्कार और व्यक्तिगत सत्याग्रह मे 3 बार आगरा जेल मे रहे थे। आपने 20 हजार की डिग्री छोड़ दी क्योकि आपने अग्रेजी अदालत का बहिष्कार कर रखा था। आप स्वतत्रता सग्राम के प्रथम पक्ति के नेता थे।

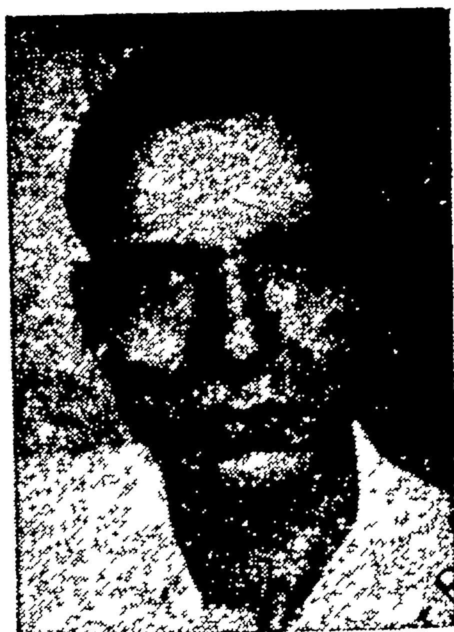
भरतपुर प्रजा मंडल की बागडोर

सन् 1939 मे आपने भरतपुर प्रजामडल की बागडोर सभाली। आप सन् 1942 मे भारत-छोडो आन्दोलन मे जेल गये तथा सन् 1947 मे भी गये। आपका सारा जीवन काफी सघर्षमय निकला। परन्तु आपकी प्रतिभा बहुमुखी थी। और सार्वजनिक जीवन के जिस क्षेत्र मे उन्होंने कदम बढाया उसे ही कार्यकुशलता, नैतिकता और दृढता से भर दिया। भरतपुर प्रजामडल मे रहकर उन्होने लोक सघर्ष को आगे बढाया। परन्तु कभी भी उन्होने किसी पद, प्रतिष्ठा या कुर्सी की कामना नही की।

भरतपुर के अतिरिक्त आगरा और अजमेर में

राजनीति मे भरतपुर के अतिरिक्त आगरा और अजमेर उनके कार्य क्षेत्र थे। भरतपुर रियासत मे उन्होने जिम्मेवार हुकूमत के लिए सघर्ष किया और अजमेर एव आगरा मे जाकर उन्होने अग्रेजी सल्तनत विरोधी स्वतत्रता के सघर्ष मे अपना योगदान दिया।

श्री लक्ष्मणस्वरूप त्रिपाठी, अलवर.



जन्म : सन् 1913

पता : 105 फर्स्ट पोलो ग्राउन्ड, पावटा, जोधपुर

जन्म, परिवार और शिक्षा

श्री लक्ष्मणस्वरूप त्रिपाठी का जन्म मध्यभारत के प्रकृति-रम्य वन पर्वत उपत्यका नर्मदा के तीर पर बसे खालघाट नामक कस्बे मे सन् 1913 ई० मे हुआ था जहाँ कि उनके पिताजी पडित रामस्वरूपजी त्रिपाठी इस्पेक्टर ऑफ स्कूल्स थे। प्रारभिक शिक्षा दीक्षा मध्य भारत तथा राजस्थान के अनेक रियासतो की हाई स्कूलो मे हुई। उच्च शिक्षा मेरठ कॉलिज मे पाई। उन्होंने सत्याग्रह एव असहयोग आन्दोलन के समय अपनी स्नातकीय शिक्षा को अधूरी ही छोड़कर क्रान्तिकारी सगठनो तथा राष्ट्रीय आन्दोलन मे कूद पड़ने का निश्चय किया। हिन्दी एव अग्रेजी साहित्य मे स्नातकोत्तर (एम० ए०) परीक्षाएं उन्होंने बाद मे उत्तीर्ण की। सस्कृत साहित्य का भी उन्होंने गहन अध्ययन किया। उन्होंने अपने कारावास-काल तथा नजरबन्दी के सुदीर्घ वर्षों का समय गभीर अध्ययन एव लेखन कार्य मे लगाया और इस भाँति उनकी समग्र जीवन-गाथा राजनीति एव साहित्य साधना के ताने-बाने से समन्वित रही है।

राजनैतिक जीवन का प्रारम्भ

श्री त्रिपाठीजी के राजनैतिक जीवन का श्रीगणेश सन् 1929 ई० के अन्त मे होने वाली लाहौर कांग्रेस से माना जा सकता है। वे इस ऐतिहासिक अधिवेशन मे मेरठ जिले से सबसे कम आयु वाले निर्वाचित प्रतिनिधि के रूप मे सम्मिलित हुए थे। लाहौर-प्रवास मे ही उनका 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' (हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातन्त्र सेना) तथा भारत नौजवान सभा के वरिष्ठ कार्यकर्ताओ के साथ घनिष्ठ एव

व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित हुआ । मेरठ लौट कर उन्होंने 'भारत नौजवान सभा' की शाखा स्थापित की तथा गुप्त क्रान्तिकारी गतिविधियो का भी सूत्रपात कर दिया । ब्रिटिश सरकार की गुप्तचर पुलिस उनका दिन-रात पीछा करने लगी । उनके घर की मजिलवार तलाशी ली गई और तभी से उनका क्रान्तिकारी-काण्डो मे भाग लेने के जुर्म मे वारम्बार पुलिस की हिरासत एव नजरबन्दी का सिलसिला प्रारम्भ हो गया ।

क्रान्तिकारी अभियुक्तों की पहली सूची में

सन् 1930 ई० के मार्च मास मे प्रसिद्ध नौचन्दी मेले के अवसर पर मेरठ मे वह ऐतिहासिक मजदूर और किसान कान्फ्रेंस हुई जिसके आधार पर मेरठ मे प्रख्यात अतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट केस चलाया गया। इस कान्फ्रेंस मे श्री त्रिपाठीजी ने श्री शौकत उस्मानी द्वारा प्रस्तावित युद्ध विरोधी प्रस्ताव के समर्थन मे भाषण दिया था । इसी के आधार पर उन्हे भी इस षडयत्र केस के अभियुक्तो के प्रारभिक सूची मे शामिल कर लिया गया तथा उनके नाम के भी वारट निकल गए । मेरठ कॉलेज के सुप्रसिद्ध (भारतीय स्वाधीनता के समर्थक) आयरिश प्रिंसिपल कर्नल ओडोनेल के व्यक्तिगत हस्तक्षेप के कारण उनके नाम का वारन्ट रद्द किया गया क्योंकि उस समय तक श्री त्रिपाठीजी कानूनी दृष्टि से 'बालिग' नही हुए थे ।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस के सान्निध्य मे

उसी वर्ष मेरठ षडयत्र केस के बगाली अभियुक्तो की पैरवी के लिए व्यवस्था के सम्बन्ध मे नेताजी श्री सुभाषचन्द्र बोस मेरठ आए । श्री त्रिपाठीजी ने उनसे दृढतापूर्वक आग्रह किया कि वे मेरठ कॉलिज मे आकर छात्रो के समक्ष भी भाषण दे । उनके हठी आग्रह को स्वीकार करके सुभाष बाबू मेरठ कॉलेज मे भाषण देने आए । श्री त्रिपाठीजी उनके भाषण एव व्यक्तित्व से इतने अभिभूत हुए कि अवविष्ट समय उन्ही के साथ हो लिए और लगभग दो महीने वे श्री सुभाष बोस के साथ उत्तरप्रदेश के दौरे मे निरन्तर साथ रहे । इस तरह वे नेताजी सुभाष के निजी एव प्रिय शिष्य एव अनुयायी वर्ग मे दीक्षित हुए ।

दक्षिण भारत मे हिन्दी प्रचारक के रूप मे

उस समय तक श्री त्रिपाठीजी स्वेच्छापूर्वक जेल-यात्रा वाले सत्याग्रही सिद्धान्त को मानने वाले नही थे । वे जेल मे बन्द होकर निष्क्रिय बैठने को व्यर्थ मानते थे अत जब उत्तरप्रदेश की पुलिस ने उनको किसी न किसी बहाने से जेल मे बन्द कर देने की ठान ली तो श्री त्रिपाठीजी ने श्री जमनालाल बजाज के मार्फत चक्रवर्ती राजगोपालाचारी से कराची कांग्रेस (1931 ई०) मे भेंट की । श्री राजाजी ने उन्हे सहर्ष दक्षिण भारत मे आकर हिन्दी-प्रचार के कार्य करने को बुला लिया और वे मद्रास पहुँच कर हिन्दी-प्रचार आन्दोलन के मुख पत्र "हिन्दी प्रचारक" का सम्पादन करने लगे । धीरे-धीरे उनका सम्पर्क दक्षिण भारत के युवा-क्रान्तिकारियो से बढता गया । क्रान्तिकारी आन्दोलन के लिए अस्त्र-शस्त्र

मद्रास बन्दरगाह होकर आते थे। धीरे-धीरे पुलिस को श्री त्रिपाठीजी के भी इस कार्य मे भागीदार होने का सन्देह हुआ और खुफिया पुलिस फिर छाया कि तरह उनका रात-दिन पीछा करने लगी। अन्त मे श्री राजाजी ने उन्हे दिल्ली जाकर कार्य करने की सलाह दी और अनेक पत्रो के सचालको के नाम उन्होने उन्हे व्यक्तिगत परिचय-पत्र भी लिख कर दिये। इस भाँति श्री त्रिपाठीजी सशस्त्र पुलिस के एक दस्ते की निगरानी मे मद्रास से दिल्ली आये जो लगभग 4 वर्ष तक उनकी गतिविधियो का केन्द्र रहा।

दिल्ली मे पत्रकार जीवन का प्रारंभ और विकास

प्रारभ मे श्री त्रिपाठीजी ने क्रमश "रग भूमि" एव "प्रजा-मित्र" नामक साप्ताहिको का संपादन किया। और बाद मे वे दैनिक "अर्जुन" मे आ गए। वहाँ उनकी प्रधान सपादक श्री सत्यकाम विद्यालकार से घनिष्ट मैत्री हो गयी। जब वे "अर्जुन" छोड कर दैनिक "नवयुग" निकालने लगे तो श्री त्रिपाठीजी उनके साथ "नवयुग" मे ही चले आए। "नवयुग" कार्यालय मे ही रात्रिकालीन सपादन कार्य करते समय जाडो की ठिठुरती रात मे अचानक एक ऐसी घटना घटी जिसके कारण श्री त्रिपाठीजी ने (तत्कालीन) ब्रिटिश भारत छोड कर "भारतीय भारत" या देशी राज्यो मे आकर ही कार्य करने का सकल्प किया। श्री त्रिपाठीजी ने इस घटना का सजीव एव मार्मिक विवरण अपने आत्मकथात्मक उपन्यास "बारक छाया" मे किया है जो पहले-पहल मुरादाबाद से निकलने वाले प्रसिद्ध राजनैतिक मासिक "प्रदीप" के अगस्त 1939 ई० के अक मे (धारावाहिक रूप से) पृष्ठ 65–66 पर यो छपा था।

"बारक-छाया" का एक प्रेरणाप्रद पृष्ठ !

"जाडे की सर्द रात मे, मैं हिन्दुस्तान की ऐतिहासिक राजधानी के एक दैनिक अखबार के दफ्तर मे, प्रेस टेलिग्राम्स के अनुवाद मे मगन था कि मोटा झोटा ओवर कोट पहने हुए, एक दुबले दीवाने से युवक ने मुझे अभिवादन किया। उसकी आँखो मे एक तरह की चमक थी। जिसके पीछे तूफान खेलता सा जान पडता था। होठो पर विश्वास और दृढता की झलक, और हाथ मे, एक रियासती षडयन्त्र केस के सजायाफ्ता अभियुक्तो के परिचय मे एक लेख।

किसी को भी यह जानकर ताज्जुब होता हो कि दिखावे के इस युग मे, हिन्दुस्तान भर की रियासती प्रजा के सबसे बडे सगठन का सबसे जिम्मेदार पदाधिकारी लेख भी खुद ही लिखे, और उन्हें अन्धेरी सर्द रात मे, अखबारो के दफ्तरो मे भी खुद ही पहुँचाने जाए। मूक प्रजा की सेवा मे आत्मोत्सर्ग के अकपट उदाहरण ने अन्त स्थल के गहरे से गहरे भावो को जगा डाला। उन्होने मेरी रियासत की बात पूछी। मेरे पास जबाब में बताने को कुछ नही था। पर मैंने कार्यालय में उत्तर देने की सोची। मुझे कलम का मोह छोड कर, कर्त्तव्य की दुनिया में जाना ही होगा।"

लोकनायक जयनारायण व्यास का पहला संपर्क

उपर्युक्त पक्तियो मे जिस दुबले दीवाने से युवक का उल्लेख किया गया है वे थे लोक नायक स्वर्गीय जयनारायण व्यास। जिस षडयन्त्र के अभियुक्तो का वे परिचय प्रकाशनार्थ लाए थे, वह था बीकानेर षडयन्त्र केस। रियासती जुल्म का सामना करते हुए जिस भीषण कार्य यातना का श्री त्रिपाठीजी और उनके वीर सहयोगियो का सामना करना पडा उसका लोमहर्षक वृतान्त उनकी "बारक छाया" मे पढने को मिलता है। किन्तु इससे पहले और बाद की गतिविधियो का उल्लेख भी बडा रोचक है। धीरे-धीरे श्री जयनारायण व्यास से त्रिपाठीजी की मैत्री घनिष्ठतर होती गयी। वे चुपचाप अपनी रियासत मे आये और अपने पुराने सहयोगी प्रोफेसर गौरीसहाय जैमन के साथ रहने लगे।

अलवर में राजनैतिक कार्य की शुरूआत

बिना व्यवसाय के रियासत में रहना पुलिस और अधिकारियो के मन में शका उत्पन्न कर देगा यह जानकर श्री त्रिपाठीजी ने अलवर की एक राजकीय शिक्षण सस्था में अध्यापन कार्य प्रारभ कर दिया। वहाँ वे शीघ्र ही अपने छात्र वर्ग में सर्व प्रिय हो गए और उनके अनेक सहयोगी अध्यापक धीरे-धीरे उनके विश्वस्त साथी बन गए। उन्ही मे अलवर काँग्रेस के वर्तमान अध्यक्ष मास्टर भोलानाथजी और उनके अभिन्न साथी मास्टर रेवडमलजी भी थे। इसी समय अलवर राज्य प्रजामण्डल की स्थापना हुई जिसके सस्थापको मे स्वर्गीय हरिनारायण शर्मा व मोदी कुंजविहारीलाल भी थे। कुछ ही समय पश्चात् अलवर जिला काँग्रेस कमेटी की स्थापना भी हुई जो दिल्ली प्रान्तीय काँग्रेस की एक शाखा के रूप में कार्य कर रही थी। तभी अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी ने (नेताजी) श्री सुभाषचन्द्र बोस को अपना अध्यक्ष चुना। उन्ही की प्रेरणा से श्री त्रिपाठीजी ने अलवर राज्य में भी सविनय–व्यवहार–भग एव सत्याग्रह आन्दोलन का सूत्रपात किया।

राजद्रोही सभा कानून और दो वर्ष की सजा

उस समय अलवर राज्य में सिडीशस मीटिंग्स एक्ट (राजद्रोही सभा कानून) नामक एक अत्यन्त ही उपहास्यस्पद कानून प्रचलित था जिसके अनुसार किसी निजी स्थान मे भी (सार्वजनिक स्थान मे नही) केवल पाँच या उससे अधिक व्यक्तियो के जमा होने को एक राजद्रोहात्मक सभा घोषित किया जा सकता था। इसी कानून को तोड कर अनेकानेक सार्वजनिक सभाए की गई। तथा प्रजातात्रिक सरकार की स्थापना के लिए आन्दोलन किया गया। श्री त्रिपाठीजी के नाम वारन्ट निकले किन्तु वे पर्याप्त समय तक पुलिस के साथ आँख मिचौनी खेलते रहे। अन्त में वे उत्तरप्रदेश एव दिल्ली का दौरा करके तथा रियासती आन्दोलन के लिए सहानुभूति एव सहयोग का आश्वासन लेकर अलवर लौटे। उन पर जेल मे ही मुकदमा चलाया गया और उन्हें दो वर्ष के सपरिश्रम कारावास का दण्ड सुनाया गया। उनकी काराकथा "बारक छाया" इसी सघर्ष की एक मर्मस्पर्शी गाथा है।

अलवर से उत्तर प्रदेश में

जेल से लौटते ही श्री त्रिपाठीजी ने मुरादाबाद (उत्तरप्रदेश) से अपना प्रसिद्ध राजनैतिक मासिक "प्रदीप" निकाला जिसे ब्रिटिश सरकार का कोपभाजन होने के कारण असमय मे ही वन्द कर देना पडा । अलवर लौट कर श्री त्रिपाठीजी ने साहित्यिक सांस्कृतिक नवजागरण की मासिक पत्रिका 'अरावली' निकाली । वे अलवर म्युनिसिपल्टी के सर्वप्रथम निर्वाचित अध्यक्ष के रूप मे भी नागरिको की सेवा करते रहे । स्वाधीनता–प्राप्ति के कुछ ही समय पहले श्री त्रिपाठीजी अलवर छोड कर उत्तरप्रदेश चले गए । उन्होंने 1947 के प्रारभ में सहारनपुर से 'नया जीवन' नामक मासिक पत्र निकाला । स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् श्री त्रिपाठीजी ने अपना सारा समय साहित्य साधना, हिन्दी प्रचार एव शिक्षण कार्य में लगाया है । उत्तरप्रदेश के अतिरिक्त स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् 25 वर्षों में वे मध्य-प्रदेश और महाराष्ट्र में भी पर्याप्त समय तक साहित्य-शिक्षण में रत रहे हैं । आजकल जोधपुर में रह कर साहित्य साधना में रत हैं ।

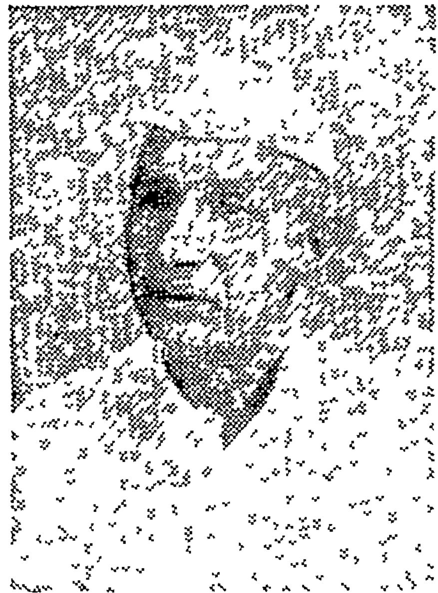
इस भाँति श्री त्रिपाठीजी की समस्त जीवन गाथा एक नि.स्वार्थ, त्याग तपस्या-पूर्ण-जन-सेवा की प्रेरणादायक कहानी है । आजकल श्री त्रिपाठीजी अपनी अधूरी साहित्यिक कृतियो को पूरा करने के प्रयत्नो में लगे हुए हैं ।

श्री त्रिपाठीजी का साहित्यिक कृतित्व और पत्रकारिता

सन् 1930 ई० में महाकवि 'निराला' के तत्वावधान में 'सुधा' (मासिक साहित्यिक पत्रिका) कार्यालय मे सम्पादक कला का प्रथम व्यावहारिक शिक्षण पाया । 'निराला' जी को त्रिपाठीजी अपना सपादक गुरु मानते है । श्री त्रिपाठी ने मद्रास, दिल्ली, उत्तरप्रदेश और राजस्थान में समय-समय पर करीब 10 पत्रो का सपादन किया है । उन्होने साहित्य की समस्त विधाओ में साहित्य का सृजन किया है । काव्य, यात्रा-विवरण, उपन्यास, कहानी, जीवनी और आत्मकथात्मक उपन्यास एव आलोचना के उनके 11 ग्र थ प्रकाशित हो चुके हैं । उन्होंने दो सस्कृत ग्र थो की टीकाए भी की हैं तथा वच्चो के लिए भी साहित्य का सृजन किया है । श्री त्रिपाठीजी आजकल 105, फ़र्स्ट पोलो ग्राउड पावटा जोधपुर में रहते हैं ।



श्री लादूराम जोशी (सीकर) जयपुर



जन्म सवत् 1952

सन् 1895

गांधीवादी पीढ़ी के तपोनिष्ठ और वयोवृद्ध नेता

श्री लादूराम जोशी, राजस्थान की गाधीवादी पीढी के तपोनिष्ठ वयोवृद्ध नेता हैं। उनकी आयु इस समय 77 वर्ष की है परन्तु आज भी उनकी समस्त चेतना, शक्ति और प्रतिभा गाधी-मार्ग की लोकसेवी और रचनात्मक प्रवृत्तियो मे लगी हुई है। उनकी कार्यक्षमता असाधारण है और उनके सधे हुए जीवन की नियमितता श्लाघनीय है। वे प्रकृति से अत्यन्त सरल, सत्यनिष्ठ, कट्टर सिद्धान्तवादी और दृढ सकल्प के व्यक्ति हैं। वे सस्कृत के विद्वान हैं परन्तु उनके विचार अत्यन्त उग्र और प्रगतिशील हैं। एक कट्टर ब्राह्मण परिवार मे जन्म लेकर भी उन्होने ही वर्धा मे भगवान के मदिर मे सबसे पहले हरिजनो को प्रवेश करने की अनुमति दी थी और सनातन धर्मावलवियो के घोर विरोध के वीच, वे निर्भीकता के साथ हरिजनो के लिए मदिर प्रवेश की सुविधा देते रहे थे। उनके छोटे भाई श्री घासीराम जोशी को भी उन्ही से राष्ट्रीय कार्य मे प्रवृत्त होने की प्रेरणा मिली थी। श्री जोशी ने स्वय अपनी जाति मे विधवा-विवाह करके सामाजिक क्रान्ति का एक साहसिक कदम उठाया था।

जन्म और परिवार

श्री जोशीजी का जन्म सीकर के पास मू डवाडा ग्राम मे सवत् 1952 (सन् 1895) मे हुआ था, उनके पिता श्री गोविन्दराम जोशी को ग्राम की सम्पूर्ण आवादी मे पडित विद्वान होने का गौरव प्राप्त था। यह जोशी परिवार जागीरी क्षेत्र की प्रजा थे और यह उनके लिए सबसे वडा अभिशाप था। श्री लादूराम जोशी का बचपन जागीरी गाँव के सामती वातावरण मे वीता। वे प्रारभ से ही शहरी सभ्यता से दूर रहे हैं। उनकी प्रकृति में आज भी देहातियो की सी सहज स्वाभाविक, सरलता और सौम्यता विद्यमान है।

प्रारंभिक शिक्षा और संस्कृत का अध्ययन

श्री जोशीजी की प्रारभिक शिक्षा शेखावाटी के प्रमुख विद्यानगर सेठो के रामगढ मे हुई वहाँ उन्होने हरमुखराम गोपीराम रुइया द्वारा स्थापित सस्कृत विद्यालय मे दो वर्ष तक शिक्षा प्राप्त की। रामगढ के प्रसिद्ध पडित वालचन्द्र शास्त्री उस रूढिवादी युग मे भी प्राचीन और अर्वाचीन के समन्वय की भूमिका निभा रहे थे। उनकी विद्वता और प्रगतिशील विचारधारा से जोशीजी का अतर्मन अतिशय प्रभावित हुआ। नवीन और पुरातन का सुखद सगम जोशीजी के छात्र जीवन की एक सस्मरणीय घटना थी। दो वर्ष तक निरन्तर रामगढ मे सस्कृत का अध्ययन करने के वाद जोशीजी ने विद्या केन्द्र का परिवर्तन किया। डूँडलोद के प्रख्यात वैयाकरणी विद्वान प० रामधारी शास्त्री के विद्यालय मे 6 वर्ष तक सस्कृत का गहन अध्ययन किया। डूँडलोद का यह विद्यालय वाराणसीय राजकीय सस्कृत सस्थान द्वारा मान्यता प्राप्त था। जोशीजी ने सस्कृत, व्याकरण और साहित्य की परीक्षाओ की पृष्ठभूमि मे ज्ञानार्जन और श्रमनिष्ठा की आधार-शिला पर भावी जीवन की सरचना के स्वप्न सजोये। इस प्रकार लगभग 10–12 वर्ष तक शेखावाटी के जनपदो मे विभिन्न विद्वानो के मार्गदर्शन मे भारतीय ज्ञान-विज्ञान के भण्डार सस्कृत वाग्मय का उनका गहन अध्ययन प्रथम विश्व युद्ध छिडने तक चलता रहा।

स्वराज्य के लिए समर्पित होने की बलवती आकांक्षा

प्रथम विश्व-युद्ध के दौरान विचार-क्रान्ति के जनक लोकमान्य तिलक ने राष्ट्र को 'स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है' का मत्र देकर राष्ट्र की सोई हुई आत्मा और राष्ट्र के सुपुप्त स्वाभिमान को झकझोर कर जगा दिया था। सस्कृत शिक्षा से अभिशिक्त श्री लादूराम जोशी की आत्मा भी 'स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है' के निनाद से झकृत हो उठी थी। वे भी स्वराज्य के लिए, अपनेआपको समर्पित कर देने के लिए उतावले-वावले हो रहे थे।

गाँधीजी का पंचसूत्री कार्यक्रम

इन्ही वर्षो मे भारतीय राजनीतिक क्षितिज पर गाधी के रूप मे एक अप्रतिभ अहिंसक महासेनानी का अवतरण हुआ। गाधीजी द्वारा उद्घोपित पचसूत्रीय कार्यक्रम मे—

(1) विदेशी कपडो का वहिष्कार,
(2) सरकारी सेवाओ से मुक्ति,
(3) मादक वस्तुओ का परित्याग,
(4) विदेशी शिक्षा का वहिष्कार और,
(5) न्यायालयो तथा विधान सभाओ का वहिष्कार,

इस महाभियान को असहयोग आन्दोलन की सज्ञा दी गई थी।

कलकत्ते के राष्ट्रीय प्रदर्शनों में

लोकमान्य तिलक के असामयिक निधन पर कलकत्ता के मुख्य बाजारो मे देशबन्धु चित रजनदास के नेतृत्व मे एक विराट् प्रदर्शन हुआ जिसमे राष्ट्र नेता व्योमकेश चक्रवर्ती, भोलानाथ वर्मन, पद्मराज जैन और मूलचन्द अग्रवाल आदि नेताओ के साथ श्री लादूराम जोशी भी सम्मिलित हुए। रोलट-एक्ट के विरोध मे इसी अवसर पर भारत व्यापी हडताल और प्रदर्शन हुए और श्री लादूराम जोशी ने इन प्रदर्शनो मे भाग लेकर अपने आपको पूर्णत राष्ट्र की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। रोलट–एक्ट के विरोध में भारत व्यापी हडताल इसी अवसर पर हुई। इस प्रदर्शन व हडताल मे जोशीजी ने सक्रिय भाग लिया और मुक्ति-सघर्ष-सैनिक के रूप मे उन्होने अनेक नेताओ से सम्पर्क स्थापित किया।

कलकत्ता प्रवास की फलश्रुति

कलकत्ता महानगर का अल्पकालीन प्रवास जोशीजी के जीवन मे महत्वपूर्ण और निर्णायिक सिद्ध हुआ। राष्ट्रीयता और जागृत जनजीवन की तीव्र चेतना लेकर विचार वैभव से समृद्ध और देशभक्ति के नवीन आन्दोलन से परिचय प्राप्त कर जोशीजी सन् 1921 मे राजस्थान लौट आये। किन्तु इस वज्र सकल्प के साथ कि, नवजागरण की विद्युत-तरगो का प्रवाह केवल ब्रिटिश भारत तक ही परिसीमित न हो जाय। देशी राज्यो की नादिरशाही से प्रजाजनो को आतकपूर्ण जीवन व्यतीत करना पड रहा था।

उदयपुरवाटी में अध्यापन कार्य

इस ध्येय की ओर अग्रसर होकर जोशीजी ने अध्यापक का पद सम्हाला और सन् 1920–21 मे शेखावाटी के भौमियो के 'गढ चिराणा उदयपुरवाटी' की एक छोटी-सी पाठशाला मे पढाने लगे। उपार्जन और वृत्ति तो स्वल्प ही थी किन्तु लक्ष्य सिद्धि के लिए वातावरण अनुकूल था। पर्व के अवसर पर आयोजित होने वाले मेलो मे सेवा-समिति जैसी सगठित सस्थाओ की आवश्यकता दिन-प्रतिदिन बढती जा रही थी। राष्ट्रीय प्रवृत्तियो की ओर अभिरुचि जागृत करना तथा विचारो का आदान-प्रदान ही इन समितियो का अन्तरगर्भित उद्देश्य था। देखने मे तो ये समितियाँ लोहार्गल तीर्थ थे। मेलो का आयोजन और नियमन समितियाँ करती थी और यात्रियो की सुख-सुविधा, सफाई की व्यवस्था व औषधि वितरण तो केवल इन समितियो का बाह्य कार्यकलाप था।

सेवा समितियो से जागीरदार चौंक उठे

इन सेवा समितियो की तुलना कुछ अश तक बगाल की अनुशीलन समितियो से की जा सकती है। इन समितियो को सगठित करने और रचनाओ मे जोशीजी का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा और यदि इन समितियो को सार्वजनिक सेवा का प्रथम द्वार कहा जाय तो सर्वथा उपयुक्त होगा। इस महाद्वार के प्रहरी जागीरदारो का समुदाय जोशीजी की सक्रियता से, चौंक पड़ा। सामन्ती क्षेत्रो मे इसकी तीव्र प्रतिक्रिया हुई जिसके

फलस्वरूप विसाऊ ठिकाने के जागीरदार ठाकुर विशनसिंह ने इन समितियो द्वारा सचालित सेवा कार्य को राजनीतिक कुचक्र की सज्ञा देकर इसे गम्भीर षडयन्त्र कहा । अपने जागीरी क्षेत्र से समिति के सदस्यो को वलपूर्वक निष्कासित करने वाले ठाकुर साहव ने जोशीजी को इस कुचक्र का अगुआ वताया और इस तानाशाही और निष्कासन आदेश के विरोध मे जोशीजी के नेतृत्व मे विसाऊ नगर के क्षेत्र मे सत्याग्रह आन्दोलन छेड दिया गया । यह घटना 1922–23 की है जव राजस्थान तो क्या, ब्रिटिश भारत मे भी सत्याग्रह के स्वरूप का एक विचार कल्पना मात्र थी । देशी रियासतो के शासको से इन जागीरदारो का आतक और प्रभाव किसी तरह कम नही था ।

जागीरदारी शासन व्यवस्था की एक झलक

उन दिनो सारा शेखावाटी क्षेत्र छोटे मोटे जागीरदारो के आधिपत्य मे था । ठिकानेदारो और जागीरदारो की निरकुश सत्ता का चक्र सम्पूर्ण दमन शक्ति के साथ सारे शेखावाटी क्षेत्र मे घूम रहा था । नग्न निरकुशता के उस युग मे जागीर के अधिपति क्षेत्रीय सत्ता के सर्वोच्च प्रतिनिधि थे । सामान्य जनजीवन, सामन्त और उनके प्रभावशाली गढ की कृपा पर ही आश्रित था । विशुद्ध प्रशासन अथवा कानून का राज्य जैसी परिस्थिति की कल्पना भी नही की जा सकती थी । उस शताब्दी की इजारेदारी प्रथा, सामन्ती शासन की स्वार्थपरता, देशी रियासतो की छत्र-छाया मे लालित-पालित छुट-भैय्यो की तानाशाही, न्यायालय-व्यवस्था और सार्वजनिक जीवन का सर्वथा अभाव, राजस्व वसूली और पुलिस-थानो का नीलाम यह था, नागरिक जीवन का भयावह और आतकपूर्ण चित्र । ऐसी स्थिति मे शासन और सत्ता का निर्लज्ज क्रय-विक्रय किसी भी स्वाभिमानी नागरिक की अन्तरात्मा मे विद्रोह की आग भडकाने के लिए काफी था ।

विद्रोह के पथ पर

सामाजिक जीवन की शून्यता किशोर जोशी की आत्मा को कचोटने लगी और उसे विद्रोह के पथ पर अग्रसर करने मे पारिवारिक सस्कारो ने भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निवाही । जोशीजी की विप्लवी वृत्ति ने इस आतकपूर्ण वातावरण से समझौता करना अस्वीकार कर दिया । प्रकृति से स्वाभिमानी किशोर का आक्रोश और विद्रोह अकुरित हो चला । राष्ट्रव्यापी राजनैतिक धाराओ के परावर्तन मे जोशीजी का मानस इस महादेश मे वैचारिक क्रान्ति और मनोवैज्ञानिक विस्फोट की ओर केन्द्रित हो गया । अराजकता और अव्यवस्था के अजेय दुर्ग, तत्कालीन देशी राज्य के शासको के लिए विधि और विधान की कोई मर्यादा नही थी । उनका आदेश ही दैवी विधान के समकक्ष था ।

राजस्थान सेवा संघ के आजीवन सदस्य

श्री लादूराम जोशी की आत्मा जागीरी अत्याचारो से अत्यन्त उद्विग्न हो गई थी । उसी समय अजमेर मे श्री विजयसिंह पथिक ने राजस्थान सेवा संघ की स्थापना कर

राजस्थान के नि स्वार्थी और निष्काम भाव से राष्ट्र की सेवा करने वाले नौजवानो का आह्वान किया। श्री लादूराम जोशी ने इस आह्वान को तत्काल अगीकार कर लिया और अजमेर जाकर राजस्थान सेवा सघ के आजीवन सदस्य बन गए। सेवा सघ के द्वारा उन्होंने बिजौलिया, बेगू, सिरोही और बून्दी आदि क्षेत्रो मे लोक-जागरण का ऐतिहासिक कार्य किया था। राजस्थान सेवा-सघ भग हो जाने के बाद श्री जोशी अजमेर काँग्रेस में सम्मिलित हो गए और नमक सत्याग्रह से लगाकर 1942 की अगस्त क्रान्ति के आन्दोलन मे सक्रिय भाग लेते रहे। इन आन्दोलनो मे श्री जोशी को अनेको बार जेल की यातनाए सहनी पडी।

जागीरदारी विरोधी जन-आन्दोलन के साथ

राजस्थान सेवा सघ के साथ कार्य करते समय उन्होने जागीरी अत्याचारो के विरुद्ध जन-चेतना को जागृत करने का बहुत बडा कार्य किया। उन दिनो उन्होंने शेखावाटी के गाँव-गाँव मे घूमकर जागीरी अत्याचारो के विरुद्ध किसानो को जागृत करने का महत्व-पूर्ण कार्य किया। उन दिनो किसानो मे 'जाट किसान पचायत' महत्वपूर्ण कार्य कर रही थी। सीकर मे इसी पचायत ने 'प्रजापति' यज्ञ के द्वारा किसानो को सगठित करने का महान् कार्य किया था। श्री लादूराम जोशी शेखावाटी के इस जागीरदारी विरोधी जन-आन्दोलन मे सम्मिलित हो गए। सीकर आन्दोलन मे भी उन्हे लम्बे समय तक जयपुर की जेल मे रहना पडा।

जयपुर मे प्रजामंडल की स्थापना

जयपुर मे प्रजामडल की स्थापना हो जाने के बाद श्री लादूराम जोशी एक वर्ष तक प्रजामडल के अध्यक्ष भी रहे थे। वर्षों तक प्रदेश काग्रेस कमेटी के सदस्य रहे हैं।

उनके जीवन, कर्म और चिंतन पर प्रत्यक्ष रूप से महात्मा गाधी के दर्शन का पूरा-पूरा प्रभाव है। उन्होने गाधीजी के साथ अपने सपर्कों के सम्बन्ध मे कई सस्मरण लिखे हैं। उन सस्मरणों के कुछ अश उन्ही के शब्दो मे नीचे दिए जा रहे हैं—

श्री लादूराम जोशी के अपने संस्मरण

'जलियावाला बाग हत्याकाड के बाद देश मे गहरा असतोष पैदा हो गया था और काँग्रेस की बागडोर गाँधीजी ने अपने हाथो मे सम्हाल ली। उन्होने देश के सामने काँग्रेस के द्वारा असहयोग का कार्यक्रम पेश किया। इसमे सरकारी शिक्षण-सस्थाओ, कौंसिलो, अदालतो, नशीले पदार्थों और विदेशी वस्त्रो के पच-विध बहिष्कार की बात कही गयी थी। गाँधीजी इसी असहयोग आन्दोलन के सिलसिले मे कलकत्ता आये तो उनको सुनने के लिए एक विशाल सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया। इस सभा की अध्यक्षता स्वतन्त्र' के सम्पादक श्री अम्बिकाप्रसाद बाजपेयी ने की थी। मैं उन दिनो कलकत्ता मे ही रहता था। मैं उस सभा मे शामिल हुआ और पहली बार यही गाँधीजी के दर्शन किये। गाँधीजी के विचारो और विदेशी वस्त्रो के परित्याग और सरकारी शिक्षण-सस्थाओ मे नही पढने का सकल्प लिया। यह सन् 1920 की बात है।

जीवन की दिशा ही बदल गई

मेरे जीवन पर गांधीजी का कुछ ऐसा प्रभाव पडा कि मेरे जीवन की दिशा ही बदल गई। मैंने विदेशी और मिल-वस्त्रो की होली जलादी और खादी के वस्त्र धारण कर लिए। मैं उस समय विशुद्धानन्द विद्यालय मे 'काव्य-तीर्थ' परीक्षा की तैयारी कर रहा था मेरे जीवन मे जो परिवर्तन आया, उसे मेरे कई साथियो और अध्यापको ने मेरा पागलपन बताया, किन्तु मेरे मन पर महात्माजी का इतना गहरा प्रभाव था कि मैंने सब आलोचनाओ को सुना–अनसुना कर दिया। उनका साहित्य और साप्ताहिक हिन्दी 'नव-जीवन' नियमित रूप से पढने लगा। उस समय मेरी उम्र पच्चीस वर्ष की रही होगी। मन मे देश भक्ति के जो धुधले विचार थे, वे परिपक्व होने लगे थे।

राष्ट्रीय आन्दोलन में भाई भी साथ हो गया

मेरे साथ मेरे भाई घासीराम भी थे। हम दोनो भाइयो पर महात्माजी के विचारो का असर पडा था। दोनो ही महात्माजी के आन्दोलन मे सक्रिय रूप से भाग लेने लगे थे। विदेशी वस्त्रो की दुकानो पर धरना देते तथा मजदूरो मे प्रचार कार्य करते। दु:सयोग से मैं बीमार पड गया और विवश होकर कलकत्ता से शेखावाटी आ जाना पडा। मेरे भाई घासीराम को असहयोग आन्दोलन मे दो-तीन बार कलकत्ता मे जेल-यात्रा करनी पडी। उस समय के मेरे एक साथी जगदम्बा प्रसाद 'हितैषी' थे, जो एक अच्छे कवि थे और एक हिन्दी मासिक पत्र के सम्पादक भी थे। उन्हें राजद्रोहात्मक भाषण के सिलसिले मे एक वर्ष का कठोर कारावास मिला था।

सामाजिक क्रांति से हरिजनो के लिए खोले गए मंदिर की पूजा

महात्माजी के प्रभाव से जब सेठ जमनालालजी ने वर्धा का प्रसिद्ध लक्ष्मीनारायण मन्दिर हरिजनो के लिए खोल दिया तो उन्हे कोई उपयुक्त पुजारी नही मिला। पुराने पुजारी ने बिरादरी और समाज के डर से पूजा छोड दी। मेरा सेठजी से परिचय हो गया था। मैं उनके जन्मस्थान काशी–का बास के पडौसी गाँव मे रहता था। मेरे सामाजिक विचारो का उन पर असर पडा। मेरे प्रति उनका अत्यधिक स्नेह हो गया था। मैं ने विधवा-विवाह किया था। उस समय रुढि-ग्रस्त समाज मे यह बडे साहस का काम था। सेठजी को इससे बडी खुशी हुई थी। मुझे सेठजी ने लक्ष्मीनारायण मन्दिर की पूजा के लिए बुलाया था, परन्तु मैं अपना समय राजस्थान के सार्वजनिक कार्यों मे लगाने लगा था। मैंने अपने भाई घासीराम को इस कार्य के लिए वर्धा भेजा। परन्तु सेठजी के आग्रह पर उसे वहाँ जमाने के लिए एक माह तक मुझे वर्धा जाकर रहने का अवसर मिला।

बिना रचनात्मक कार्य–राजनैतिक कार्य अधूरा

इसके बाद सन् 1934 मे पूज्य बापूजी से प्रत्यक्ष परिचय और साक्षात्कार का अवसर आया। सेठ जमनालालजी ने जब बापूजी से मेरा परिचय कराया और मेरी प्रशसा

मे कुछ कहा तो मुझे बहुत ही सकोच का अनुभव हुआ। बापूजी ने मुझे समय दिया और मैं सेठजी के बगले से मगनवाडी गया। किन्तु उस दिन उन्होने श्री बालुजकर को भी समय दे रखा था और उन्हे किसी जरूरी कार्य से अन्यत्र जाना था, अतः बापूजी ने मेरी सहमति से मेरे लिए अगले दिन का समय नियत कर दिया। उस समय सडक पर एक मरा हुआ साँप पडा था। बापूजी ने बालुजकरजी को आदेश दिया कि मरे हुए साँप को ले जाये और उसकी चमडी उतार कर पकाये तथा शेष का खाद के लिए उपयोग करें। मैंने देखा, कि बापू किसी भी वस्तु को बेकार नही जाने देते थे। दूसरे दिन यथा-समय बापू के पास पहुँचा। मगनवाडी की छत पर टहलते हुए हम बात करते रहे। बापूजी ने मुझे बताया कि बिना रचनात्मक कार्य के राजनीतिक काम अधूरा है। रचनात्मक कार्य ही राष्ट्र निर्माण की रीढ की हड्डी है। बापू का कहना था कि सरकार से सीधी लडाई हमेशा नही चलती और राष्ट्रीय कार्यकर्त्ताओ को शांति के समय अपनी शक्ति रचनात्मक कार्य मे लगानी चाहिए। मैं उस समय चर्खा-सघ मे काम करने लगा था और गाँधी सेवा-सघ का सदस्य बन चुका था। गाँधीजी की बात मेरे गले मे उतरती जाती थी और मैं अपने को बहुत ही सतुष्ट अनुभव कर रहा था।

अजमेर मे जिला कांग्रेस कमेटी के मंत्री

बापूजी हरिजन आदोलन के दिनो मे अपने देश-व्यापी दौरे के सिलसिले में अजमेर आये। उस समय मैं जिला काँग्रेस कमेटी का मन्त्री था। उस समय स्वामी लालनाथ विरोधी–प्रदर्शन करने के लिए आये थे। उन्हे किसी स्वय सेवक द्वारा चोट पहुँचाने की घटना से गाँधीजी की आत्मा को बडी ठेस लगी थी। विरोधी के प्रति बापू के कोमल और सहानुभूति के भाव देखकर उनकी उदारता और महानता का अनुभव हुआ। अपने अजमेर प्रवास मे बापू श्री अर्जुनलाल सेठी से भी मिलने गये। सेठीजी बापू के कट्टर आलोचक थे। बापूजी को देखकर सेठीजी का सारा विरोध काफूर हो गया। सेठीजी और बापू की इस भेट का स्मरण करके आज भी मन आत्म विभोर हो जाता है।

स्वतत्रता संग्राम का एक अडिग योद्धा

मैं सन् 1920 से 1947 तक गाँधीजी के नेतृत्व मे लडे देश के स्वतन्त्रता सग्राम मे जुटा रहा। उसके दौरान अनेक बार जेल जाना पडा और तरह-तरह की मुसीबतें उठानी पडी। किन्तु गाँधीजी के प्रति आस्था ने मन को कभी विचलित न होने दिया। उन्होने गरीबो की सेवा का मन्त्र दिया था, वह जीवन का अभिन्न अग बन गया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद मे सत्ता की छीना-झपटी का दौर आया, किन्तु बापू की प्रेरणा ने मुझे उससे निर्लिप्त रहने की शक्ति दी और जीवन के शेष क्षण निष्काम सेवा मे व्यतीत हो रहे है। बापू का जीवन मेरे लिए ध्रुव तारा बन गया।'

साधु सीताराम दास, बिजोलियाँ.



जन्म सवत् 1941

सन् 1884

राजस्थान के सबसे पुराने जीवित लोक सेवक

साधु सीतारम दास राजस्थान के सबसे पुराने जीवित जन सेवक है । इस समय उनकी उम्र 88 वर्ष की है । उन्होंने प्रारम से ही अपना कार्य क्षेत्र मेवाड राज्य के आतरी ऊपर माल प्रदेश (भीलवाडा जिले का पहाडी क्षेत्र)को बना रखा है । वे मुक्ति आन्दोलन मे पिछले 60 वर्षों से निरन्तर कर्मरत हैं । भले ही उन्हे प्रातीय स्तर का नेता होने की प्रतिष्ठा प्राप्त नही हुई है फिर भी यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि बिजोलियाँ के देश प्रसिद्ध सत्याग्रह के जन्मदाता वे ही थे । उन्होंने ही सबसे पहले जागीरी अत्याचारो से त्रस्त, पीडित और शोषित किसानो को सामती ताकतो के विरुद्ध मोर्चाबदी करने के लिए सगठित किया था । साधु सीताराम दास ही वह व्यक्ति हैं जिन्होने श्री विजयसिंह पथिक को फरारी की अवस्था मे चित्तौड ओछडी से बिजोलियाँ लाकर उनके हाथो मे किसानो के इतिहास प्रसिद्ध अहिंसक सत्याग्रह की बागडोर सौंपी थी । मेवाड के लोक नेता स्व० माणिक्य लाल वर्मा का राजनीति मे प्रारभिक व्यवहारिक प्रशिक्षण साधु सीताराम दास के पास ही हुआ था ।

जन्म और शिक्षा

साधु सीतारामदास का जन्म सन् 1884 (सवत् 1941) मे बिजोलियाँ मे हुआ था । उनका प्रारभिक शिक्षण मेवाड मे ही हुआ था । उन्हे सस्कृत की शिक्षा दी गई थी वे सस्कृत मे शास्त्री और आयुर्वेद मे आचार्य तक की शिक्षा विधिवत् प्राप्त किए हुए हैं ।

राष्ट्र की सेवा का व्रत

अपने शिक्षाकाल मे ही उन्होने बग-भग और स्वदेशी आन्दोलन के समय राष्ट्र की सेवा करने का व्रत ले लिया था लोकमान्य तिलक उनकी प्रेरणा के स्रोत थे । गुरु से

ही उनके विचार उग्र व क्रान्तिकारी थे किसानो के बीच रह कर उन्होने सामती शोषण और किसानो की दयनीय दशा को अपनी आँखो से देखा था उन्होने अपने क्षेत्र मे घूम-घूम कर किसानो को सगठित होने और जागीरी अत्याचारो का दृढता से मुकाबिला करने की प्रेरणा किसानो को दी थी ।

साधु सीतारामदास ने अपने क्षेत्र मे विद्या प्रचारिणी सभा की स्थापना की और उसके अतर्गत गाँवो मे पाठशालाए, पुस्तकालय तथा वाचनालय स्थापित करके, लोगो मे राष्ट्रीयता, साहस, निर्भीकता और अन्याय एव अत्याचार का मुकाबिला करने की भावना जगायी ।

जागीरदारों की लाग-लागतें और बेशुमार टैक्स

जागीरदारो को उन दिनो मे अपने राज्य के राजाओ को अलग-अलग तरह के कई टैक्स देने पडते थे । उदयपुर के महाराणा को, तालाबदी के टैक्स के रूप मे एक लाख रुपए का टैक्स बिजोलियाँ के जागीरदार को देना था । बिजोलिया के राव ने ये रुपए बिजोलियाँ के किसानो से उगाहने का प्रयत्न शुरू किया इसका विरोध करने के लिए साधु सीतारामदास, फतहकरण चारण और ब्रह्मदेव के नेतृत्व मे बिजोलियाँ के किसान पहली वार सगठित होकर उठ खडे हुए । 1913 मे साधु सीतारामदास के नेतृत्व मे करीब एक हजार किसान इसी टैक्स वसूली का विरोध करने के लिए रावजी के महल मे गए । मगर रावजी किसानो के इस शिष्ट मडल से नही मिले । अतः साधु सीतारामदास के नेतृत्व मे किसानो ने पहली बार वही पर यह निश्चय किया कि अगले वर्ष बिजोलियाँ की जमीन पर कोई किसान खेती नही करे और अपने खाने के लिए समीपवर्ती ग्वालियर और मेवाड की भूमि मे खेती करने का प्रयास करे ।

सारा ऊपरी माल क्षेत्र बिना जुता हुआ पड़ा रहा

इसका परिणाम यह हुआ कि सारा ऊपरी माल क्षेत्र बिना जुता पडत पडा रहा । साधु सीतारामदास के नेतृत्व मे 15 हजार किसानो ने भूमि को पडत रखा एक इच भूमि भी जोती नही गई इससे ठिकाने को लगान मिलना बद हो गया तथा अन्न की कमी से प्रदेश में भुखमरी का दृश्य उपस्थित हो गया ।

किसानो पर महाराणा का भीषण दमन

अन्त मे ठिकाने के जागीरदारो के अनुरोध पर उदयपुर के महाराणा ने किसानो पर भीषण दमन शुरू कर दिया, राज्य के भीषण दमन से कुछ लोग दब गए 84 लागतो मे से 6 लागें छोडी गई आन्दोलनकर्ताओ मे से फतहकरण चारण और ब्रह्मदेव दाधीच को देश निकाला दे दिया, दूसरे प्रमुख कार्यकर्त्ताओ को जेलो मे बद कर दिया गया । कुछ कार्य-कर्त्ताओ को कठोर यातनाए देकर दबा दिया गया इससे बिजोलियाँ का किसान आन्दोलन दब तो गया पर अदर ही अदर प्रतिशोध की ज्वाला जलती रही किसानो के मन मे ठिकाने के प्रति घृणा और रोष पैदा हो गया ।

चित्तौड मे विद्या प्रचारिणी सभा के वार्षिक अधिवेशन मे साधु सीतारामदास की विजयसिह पथिक से पहली मुलाकात हुई, साधु सीतारामदास ने विजयसिह पथिक से कहा कि ब्रिटिश सरकार ने आपकी गिरफ्तारी के लिए 15 हजार रुपए का इनाम घोषित किया है, ऐसी अवस्था मे रेल के किनारे आपका रहना खतरे से खाली नही है। आप हमारे यहाँ विजोलियाँ चलिए। वहाँ की प्रजा सु-सगठित है। और सब तरह का बलिदान करने को तैयार है आप यदि किसानो का नेतृत्व सभाल लें तो सामती ताकतो को शिकस्त दी जा सकती है साधु सीतारामदास ने कहा कि विजोलियाँ मेवाड का अडमान है वहाँ किसी प्रकार के आवागमन की सुविधा नही है, आप वहाँ हर तरह से सुरक्षित और स्वतत्र रहेगे।

साधु सीताराम दास और पथिकजी का मिलन

पथिकजी ने कहा कि तुम्हारे कथनानुसार वहाँ पढे-लिखे लोगो का अभाव है। मैं अकेला वहाँ चल कर क्या करूँगा ? साधुजी ने कहा कि मैं आपको मेरे विद्यार्थियो मे से दस चरित्रवान् और कर्त्तव्यनिष्ठ कार्यकर्त्ता भेंट कर दूँगा इतने अनुरोध पर पथिकजी ने विजोलियाँ जाना स्वीकार किया और एक दिन अकस्मात् पथिकजी विजोलियाँ पहुँच गए।

आंतरी ऊपरमाल के किसानों के एकछत्र नेता

विजोलियाँ के किसान सत्याग्रह की बागडोर पथिकजी के हाथो मे सौपने के पहले साधु सीतारामदास के हाथो से ग्वालियर के जीरण जागीर के किसानो का मामला भी सुलझाया जा चुका था। पथिकजी के विजोलियाँ जाने के पहले साधु सीतारामदास ही आतरी ऊपरमाल के किसानो के एक छत्र नेता थे।

खादी का रचनात्मक कार्य

विजोलियाँ का आन्दोलन लबे समय तक चलने के बाद किसानो की माँगे स्वीकार हुई और देश मे पहली बार किसानो का अहिसक सत्याग्रह सफल हुआ। इस किसान आन्दोलन के सिलसिले मे साधु सीतारामदास का गाँधीजी से सम्पर्क हुआ और आन्दोलन की समाप्ति के बाद गाँधीजी की प्रेरणा के अनुसार उन्होने आतरी ऊपरमाल क्षेत्र मे खादी का रचनात्मक कार्य शुरू कर दिया और सारे ऊपरीमाल को खादी मय करके सम्पूर्ण देश के सामने एक क्षेत्र विशेष को स्वावलबी बनाने का आदर्श प्रस्तुत किया।

मधुबनी और नर्वदा के किनारे सात वर्ष तक खादी उत्पादन कार्य

आतरी ऊपरमाल मे खादी के सफल रचनात्मक प्रयोग के बाद साधु सीतारामदास ने सात वर्ष तक नर्वदा के किनारे सागर जिले मे खादी-उत्पादन के कार्य का सचालन किया। महात्मा गाँधी साधु सीतारामदास की एकनिष्ठ सेवा–साधना और रचनात्मक प्रवृत्तियो की ओर उनके झुकाव से अत्यधिक प्रभावित थे। उन्होने साधु सीतारामदास को मधुबनी (बिहार) मे शिक्षक बना कर भेजा जहाँ उन्होंने वहाँ के कार्यकर्त्ताओ को खादी उत्पादन का प्रशिक्षण दिया।

गांधीजी के साथ हरिजन-यात्रा में

महात्मा गाँधी ने हरिजनोद्धार के लिए जो देश व्यापी यात्रा की थी उसमे साधु सीताराम दास बराबर उनके साथ रहे थे ।

ईश्वरीय वरदान के रूप में

आज आपकी की आयु 88 वर्ष की हो चुकी है लेकिन आज भी उनमे वही दम-खम है, आज वे आतरी ऊपरमाल विद्यापीठ के अध्यक्ष है और उन्ही की देखरेख मे लोक जागरण और शिक्षा प्रचार की कई प्रवृत्तियें चलती है आज भी वे उस क्षेत्र के किसानो के लिए ईश्वरीय वरदान के रूप मे है । गाँव-गाँव के लोग अपनी समस्याए लेकर आज भी उनके पास समाधान के लिए आते हैं और उनके अनुभव-जनित परामर्श से लाभान्वित होते हैं ।

सामंती ताकतो से लोहा लेने वाली सेना का पहला लोकनायक

साधुजी ने कभी कोई चुनाव नही लडा, उनके हाथ मे सघर्षो के अतिरिक्त कभी कोई सत्ता नही रही । साधुजी अपनी 88 वर्ष की आयु मे 10 बार जेल काट चुके हैं। बिजोलियाँ के किसानो को सगठित करने और सामती ताकतो से लोहा लेने वाले राजस्थान लोक सेना के वे पहले लोकनायक हैं । आज भी अपने क्षेत्र मे जितनी श्रद्धा, विश्वास और लोक मान्यता साधु सीतारामदास की मिली है उतनी बडे-बडे नेताओ को भी उपलब्ध नही हो सकती । साधु सीतारामदास का जीवन एक तपोनिष्ठ ऋषि का जीवन है । जिसके जीवन का प्रत्येक क्षण लोक सेवा और लोक हित के लिए समर्पित है । साधु सीतारामदास राजस्थान की लोक सेवा के वरेण्य नेता है । उनका जीवन और उनका चरित्र नि स्वार्थ और तपोनिष्ठ साधना की ज्वलत कहानी है वे नि:सदेह सैकडो हजारो लोगो के प्रेरणा स्रोत है ।



श्री सत्यनारायण सर्राफ, भादरा.



जन्म 27 अगस्त, 1904

जन्म और शिक्षा

लाला सत्यनारायणजी का जन्म मिति भादवा वदी 14, संवत् 1961 तद्नुसार दिनाक 27 अगस्त, 1904 को भादरा के सर्राफ परिवार मे हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा भादरा मे सम्पन्न हुई। तत्पश्चात् छठी कक्षा से प्रवेशिका तक लाहौर डी० ए० वी० स्कूल मे शिक्षा प्राप्त की। इसके वाद डी० ए० वी० कॉलेज लाहौर में एल० एल० वी० तक अध्ययन किया। महात्मा हसराज जी जो डी० ए० वी० होस्टल के सुपरिन्टेन्डेन्ट थे, अपने युग के सुविख्यात राष्ट्र भक्तो मे से एक थे। इनका श्री सत्यनारायण जी पर अत्यन्त स्नेह था।

प्रेरणा के श्रोत

सर्राफ परिवार मे लाला लाजपत राय जी के घनिष्ठ सम्बन्ध थे। इसी वजह से श्री सत्यनारायणजी उनके सम्पर्क मे आये। पजाव केसरी, उच्च कोटि के देशभक्त लाला लाजपत राय के त्यागमय जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर सत्यनारायणजी स्वतत्रता सग्राम मे कूदे। छात्र जीवन मे श्री सत्यनारायणजी अत्यन्त प्रतिभाशाली थे। और विभिन्न अवसरो पर इन्हे कॉलेज के अधिकारियो द्वारा पुरस्कृत किया गया था।

हिसार में वकालत और बीकानेर का बुलावा

सन् 1927 मे लॉ करने के वाद आपने हिसार डिस्ट्रिक्ट कोर्ट मे अपनी वकालत शुरू कर दी। तीन साल तक हिसार मे वकालत करते रहे। स्थानीय वीकानेर स्टेट के प्रतिष्ठित लोगो ने उनसे हिसार जाकर अनुरोध किया कि आप वीकानेर स्टेट पधारे तथा सामन्तशाही से पीडित जनता को राहत दिलावें। महानुभावो के इस अनुरोध पर वे हिसार मे राजगढ आकर वकालत शुरू करने लग गये। यहाँ की जनता का उत्पीडन उनको सहन नही हुआ और वे तत्कालीन राजशाही शक्तियो से जूझ पडे।

राजशाही से सीधे संघर्ष की शुरुआत

तत्कालीन रेवेन्यू मिनिस्टर तथा महाराजा गगासिंह के दाहिने हाथ, मानधातासिंह को रियासत के भिन्न-भिन्न क्षेत्रो मे नियुक्त अधिकारियो की मनमानी और जनता पर ढाये जाने वाले अत्याचारो के बारे मे उन्होने लम्बे पत्र व्यवहार द्वारा असलियत से अवगत कराने का क्रम शुरू कर दिया। इतना होने के बावजूद भी रेवेन्यू मिनिस्टर के कानो पर जूँ तक नही रेंगी। तब लालाजी ने स्टेट के तत्कालीन प्राईम मिनिस्टर सर मनुभाई मेहता से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित किया और उन्हे रियासत की जनता पर होने वाले अत्याचारो की जानकारी दी। प्राइम मिनिस्टर महोदय ने उनकी बातो को बडे ध्यान से सुना लेकिन परिस्थिति मे परिवर्त्तन करने मे अपनी असमर्थता प्रगट की। इसके बाद उनके सामने इस अभियान को चालू रखने का एक ही साधन था कि समाचार पत्रो के माध्यम से इसे चालू रखा जाये। उन्होने दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, अजमेर और लाहौर के पत्रो मे बीकानेर शासन के अत्याचारो के सम्बन्ध मे उग्र लेख लिखने व प्रकाशित कराने शुरू कर दिए।

सी० आई० डी० की निगरानी में

इन उपरोक्त समाचार पत्रो मे आपने प्रभावशाली लेख प्रकाशित करा कर जन-जागरण के इस अभियान को तीव्रतम कर दिया। विभिन्न प्रकार के स्टेट विरोधी लेखो के प्रकाशित होने से तत्कालीन बीकानेर राज्य सरकार बौखला उठी और उसका लाला सत्यनारायणजी पर कुपित होना तो स्वाभाविक था। राज्य सरकार की सी० आई० डी० की कडी निगरानी उन पर रहने लगी।

लंदन की गोलमेज के अवसर पर वितरित किया गया मेमोरेंडम

जन-जागरण के इस अभियान से और लाला सत्यनारायणजी के प्रभावशाली लेखो से राज्य सरकार व उनके अधिकारियो के हृदय मे लालाजी के प्रति प्रतिशोध की चिनगारियां सुलग ही रही थी कि, रही सही कमी दिसम्बर 1931 मे लदन मे होने वाली गोलमेज कान्फ्रेन्स मे वितरित किये गये उस मेमोरेंडम ने पूरी कर दी, जिसमे बीकानेर स्टेट के तत्कालीन महाराजा श्री गगासिंहजी व उनके निरकुश शासन के स्वेच्छाचारी अधिकारियो के अत्याचारो का कच्चा चिट्ठा खोला गया था। इस गोलमेज कान्फ्रेन्स से लौटते ही महाराजा साहब ने पूरे जोर-शोर से प्रजा-परिषद के कार्यकर्त्ताओ पर अपना दमन-चक्र चालू कर दिया। इस दमन-चक्र के शिकार होने वालो मे अग्रिम श्री सत्यनारायणजी सर्राफ।

आधी रात को गिरफ्तारी

महाराजा ने लन्दन से आते ही सत्यनारायणजी को 13 जनवरी 1931, की आधी रात को रतनगढ मे गिरफ्तार कर जेल मे ठूँस दिया और उनकी राष्ट्रीय भावनाओ को दबाने के लिए उन्हे घोर यातनायें दी। लेकिन लालाजी के साहस व सहनशीलता और

उनकी कष्ट सहन शक्ति के समक्ष राज्य सरकार के अधिकारियो को हार माननी पडी। हर प्रकार के आतक व प्रलोभन के सामने लाला सत्यनारायण अडिग एव अटल चट्टान की तरह अडे रहे। सरकार का कोई भी प्रलोभन उन्हे अपने निश्चित लक्ष्य से डिगा नही सका और न्याय का लंबा नाटक करके उन्हे 5 वर्ष के कठोर कारावास की सजा दे दी गयी।

बीकानेर का जेल जीवन

बाजरे के आटे के साथ मिली हुई बीकानेर की बजरी और ककडो से भरी हुई दालो का मिश्रण, बस यही उस वक्त के राजनैतिक कैदियो को भोजन सम्बन्धी सुविधायें प्राप्त थी। लाला सत्यनारायणजी इस भोजन को पानी से भरे हुए कटोरे मे डाल देते थे और उसे पानी मे मथ लेते थे। कुछ देर बाद बजरी ककड नीचे बैठ जाते तब वे उस अनाज के पानी को पी जाते। वे इसलिए जिन्दा रहना चाहते थे कि एक न एक दिन हम महाराजा के जुल्मो के पहाडो को उखाडकर फैक देगे। यही एक दृढ सकल्प था। इसी लक्ष्य को सामने रखकर वे महाराजा के अथक जुल्म सहकर भी जेल जीवन मे जिन्दा रह सके। अन्ततोगत्वा उनका स्वप्न साकार हुआ।

राज्य से अनिश्चित काल के लिए निर्वासन

लाला सत्यनारायणजी, 3 जुलाई 1936 से 5 वर्ष की सजा काट कर जेल से बाहर आये। जेल से बाहर आने के बाद उन्होने प्रजापरिषद् की विभिन्न गतिविधियो को अपने प्रभावी लेखो व भाषणो द्वारा प्रचारित करना शुरू कर दिया। देश के विभिन्न स्थानो मे प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रो मे फिर लेख भेजने शुरू कर दिये। राज्य सरकार उनकी गतिविधियो से पहले ही चिडी हुई थी। इन विशेष लेखो ने जलती हुई अग्नि मे आहूति का काम किया। इस पर कुपित होकर महाराजा ने उन्हे राज्य से अनिश्चित काल के लिए निर्वासित कर दिया। 17 मार्च, 1937 की अर्ध-रात्रि मे पुलिस की कडी निगरानी मे उन्हे राज्य की सीमाओ से बाहर ढकेल दिया गया।

निर्वासन के बाद पुनः हिसार में

राज्य से निर्वासित होकर लालाजी पुन. अपने पूर्व परिचित स्थान हिसार चले गये। सरकार के इस दमनकारी कदम के विरुद्ध, स्वर्गीय प्रधानमत्री व देश के तत्कालीन सर्वोच्च नेता पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने आवाज बुलन्द की। उन्होने इस सम्बन्ध मे महाराजा से वस्तुस्थिति जानने के लिए पत्र व्यवहार किया। लेकिन जब महाराजा अपने इस दमनकारी कार्यवाही का कोई सतोषजनक उत्तर नही दे सके तब उन्होंने महाराजा के इस कदम की 26 जून, 1937 को खुले वक्तव्य द्वारा भरपूर निन्दा की। देश के समस्त समाचार पत्रो ने दिवगत श्री नेहरूजी के वक्तव्य को विस्तार से प्रकाशित किया।

बीकानेर शासन के सम्बन्ध मे पडित नेहरू

इसके बाद स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू ने अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद् के उदयपुर मे होने वाले अन्तिम खुले अधिवेशन मे बीकानेर स्टेट मे उन दिनो जो जुल्म

शाही चल रही थी उस सम्बन्ध मे जो कुछ विचार व्यक्त किये निम्नलिखित उद्धरण से उन परिस्थितियो पर काफी प्रकाश पडता है .—

मैं "जब से जेल से छूट कर आया हूँ बीकानेर के बारे मे मेरे पास सबसे ज्यादा शिकायते आ रही है। बीकानेर सरकार की तरफ से घटनाओ को गलत ढग से छिपाने की कोशिश की जा रही है। मुझे इतमीनान है कि बीकानेर सरकार बिल्कुल गलत रास्ते पर है। मैंने रियासत के प्राईम मिनिस्टर को एक पत्र लिखा था। जिसका जवाब मिला। मैंने दूसरा पत्र लिखा जिसका आज तक कोई जवाब नही मिला। जहाँ शादी की कुमकुम पत्री तक राज्य से सैन्सर करानी पडती हो, जहाँ पर्दे की ओट मे जनता पर भीषण अत्याचार किये जाते हो और उनके प्रतिवाद मे मनगढत दलीले दी जाती हैं, उस राज्य के शासक इन्सान नही हैवान है।" (बीकानेर के राजनैतिक विकास से)

भारत-छोड़ो आन्दोलन मे पजाब की जेलों में

निर्वासित जीवन मे भी लाला सत्यनारायण निरन्तर स्वतत्रता युद्ध के सेनानी के रूप मे विदेशी सत्ता और स्वेच्छाचारी निरकु श रियासती शासको के विरुद्ध सघर्षरत् रहे। अपनी कर्मठता के कारण उन्हे आल इण्डिया स्टेट्स पिपुल्स कान्फ्रेन्स की स्टेन्ड्ंिग कमेटी के सदस्य के रूप मे स्वीकार किया गया। जिसके प्रधान स्वर्गीय प्रधानमत्री जवाहरलाल नेहरू थे। उनकी इन गतिविधियो के फलस्वरूप पजाब सरकार ने सन् 1942 के सुप्रसिद्ध "भारत-छोडो आन्दोलन" मे पहले दिन ही गिरफ्तार कर अनिश्चित काल के लिए उन्हे जेल भेज दिया। लगभग तीन साल की कठोर कारावासी यन्त्रणाओ को भुगत कर पुन जनता के बीच मे आकर स्वतत्रता के उस सग्राम को और अधिक तेज किया। स्थान-स्थान पर भ्रमण करके भिन्न-भिन्न स्थानो पर अपने ओजस्वी भाषणो द्वारा जनता को जागरुक किया। और अनेक पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशन और राज्यसत्ता के शासको से पत्र व्यवहार द्वारा जनता पर होने वाले अत्याचारो के निराकरण मे ही लगे रहे।

समाज मे फैलती हुई बुराइयो का विरोध

निरन्तर उनकी यह भावना रहती थी कि आजादी के सघर्ष मे साथ-साथ काम करने वाले अपने उन साथियो को, जो आज अपनी होशियारी से और छल-छद्म से येन केन प्रकारेण सत्ता की कुर्सी पर जा बैठे हैं मार्ग-दर्शन करते रहे। और अपने कर्त्तव्य के प्रति उनको जागरुक बनाये रखे। इसी उद्देश्य से उन्होने "पटका-पछाड" और "लाश की चीरफाड" नामक पुस्तको का प्रकाशन करके अपने भावो को अपने साथियो और जनता तक पहुँचाया। ताकि जनता के वे तथा-कथित प्रतिनिधि वस्तुस्थिति से परिचित रह सके और समाज मे फैलती जा रही बुराइयो को, भ्रष्टाचार को, रिश्वतखोरी को रोका जा सके। उन्हे जब भी ऐसा मौका मिला अपनी बात को सीधे और दो टूक शब्दो मे उच्च स्तर के नेताओ के सामने निर्भीकता से रखा। केन्द्रीय मन्त्री डा० राम सुभगसिह एक बार जब भादरा पधारे तो जहाँ चाटुकार लोगो ने अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए उनसे

सम्पर्क स्थापित किया और उनके स्वागत समारोह के आयोजन किये, वहाँ लालाजी सरीखे क्रान्तिकारी ने उनके समक्ष भी प्रादेशिक स्तर पर चलने वाली अराजकता और अव्यवस्था को ही स्पष्ट शब्दो मे प्रस्तुत किया ।

लालाजी के एक ज्ञापन का नमूना

दिनाक 1–8–64 के अपने उस ज्ञापन मे लालाजी लिखते हैं "गगानगर जिले मे राजस्थान सरकार के पास लाखो एकड जमीन है । जो अफसरान रेवेन्यू व कोलॉनाईजेसन, भूमिहीनो को एक-एक साल के लिए ही भूमि अलाट करते है, इसलिए कि आये साल नई अलाटमेन्ट पर लाखो रुपयो की रिश्वत ली जा सके । कोलॉनाईजेसन महकमे मे लूट व रिश्वत के हृदय विदारक आकडे भरे पडे है । राजस्थान नहर का काम चालू है । इन्जिनियरो ने तथा उनके मातहतो ने करोडो रुपयो का सरकारी सीमेन्ट, लोहा, कोयला, पाईप, मशीनरी व स्पेयर पार्ट का गबन किया है और ठेकेदारो से भी इन अफसरो ने रुपये ऐंठे है । यदि हमारे देश को उन्नति के पद-पद आगे बढना है तो, मन्त्रियो को राजनैतिक स्तर पर व प्रशासनिक स्तर पर इस भ्रष्टाचार को मिटाना होगा और उसकी जिम्मेवारी हमारे शासको के कन्धो पर है ।"

अंतिम अभिलाषा

लालाजी की अन्तिम अभिलाषा केवल यही थी कि आजादी का लाभ देश की कोटि-कोटि जनता को समान रूप से प्राप्त हो । उनका हृदय यह देखकर दु खी हो जाता था कि आजादी की लड़ाई मे जिन लाखो लोगो ने अपनी कुर्बानियाँ दी अपना तन, मन, धन अर्पित किया त्याग और बलिदान किये, उन्हे भुलाकर आज सत्ता की कुर्सी के चारो ओर ऐसे स्वार्थी लोगो का जमघट होता जा रहा है जो कभी ब्रिटिश शासको के ऐजेन्ट् रहे थे या जो कभी रियासती शासको के टुकडो पर अपना पेट पालते थे । और, वे लोग जनता जनार्दन के जीवन से खुल कर खून की होली खेला करते थे ।



स्वामी सच्चिदानंद महाराज, भरतपुर.



जन्म . सन् 1860

अवसान . सन् 1965

जन्म और काशी प्रस्थान

स्वामी सच्चिदानदजी महाराज का जन्म सन् 1860 मे पैंघोर मे हुआ था। जब वह 15-16 वर्ष के थे तभी उनके माता-पिता उनकी शादी करना चाहते थे। लेकिन उन्होने शादी नही की और वहाँ से काशी चले गये।

पैंघोर मे गोपालजी का मदिर

काशी से सस्कृत के महान् विद्वान होकर स्वामीजी भरतपुर आये। वहाँ उनका परिचय महाराजा भरतपुर की माईजी से हुआ। महन्तजी की विद्वता से प्रभावित होकर उन्होने पैंघोर मे सन् 1902 मे गोपालजी का मदिर बनवाकर स्वामीजी को उसका महन्त बनाया और चामुन्डादेवीजी का मदिर भी स्वामिजी के सुपुर्द कर दिया। मदिर के लिये 30/–रु० माहवार देवस्थान से चालू कर दिया। 100/–मासिक देवीजी के चढावे का प्राप्त होता था। और इस प्रकार कुल 130/–रु० माहवार की आमदनी होती थी। उन्होने अपने परिश्रम से मदिर पर एक सस्कृत पाठशाला और एक सरकारी प्राथमिक स्कूल की स्थापना करायी। विधवाओ और अनाथो को स्वामिजी मदिर से सहायता देते रहते थे।

बाढ-पीड़ितो की सेवा और महामान्य का अलकरण

सन् 1924 मे भरतपुर मे विनाशकारी बाढ आयी। उस समय स्वामिजी ने पैंघोर, आसपास के गाँवो व भरतपुर शहर मे बाढ पीडितो की अन्न-वस्त्र आदि से हर प्रकार की सहायता की जिसमे उनके साथी पैंघोर निवासी प० भँवरसिंहजी सहायक के रूप

मे रहे । इसके उपलक्ष्य मे स्व० भरतपुर महाराजा किशनसिंहजी ने स्वामीजी को स्वर्णपदक व महामान्य की पदवी से अलंकृत किया । तथा उनके सहायक प० भँवरसिंहजी को राज्य-सेवक, प्रजाभक्त की उपाधि दी ।

स्वराज्य आन्दोलन में योगदान

सन् 1921 मे महात्मा गाँधी ने स्वराज्य आदोलन छेडा था । जिसमे स्वामीजी ने भी अपनी पार्टी वनाकर काफी योगदान किया था । इसमे स्वामिजी के अनेक कार्यकर्ताओं ने भी सराहनीय कार्य किया था । इस आदोलन मे पँघोर निवासी प० हरवल्लभ व उनके तीनो पुत्र हरिश्चन्द्र, केशवदेव, दौलतराम तथा अन्य पँघोर निवासी कमलसिंह व प० भगवतप्रसाद आदि अनेक प्रमुख कार्यकर्ता थे । राष्ट्रीय कार्य मे, महाराजा भरतपुर का भी वहुत सहयोग रहता था ।

स्वामीजी के उत्तराधिकारी हरिश्चन्द्र शर्मा की गिरफ्तारी

स्वामीजी हरवल्लभ परिवार से इतना प्रभावित हुए कि उन्होने हरिश्चन्द्र, केशवदेव, दौलतराम को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया । श्री हरिश्चन्द्र के राष्ट्रीय कार्यों मे अडचन पडने से वह ठाकुर देशराज के साथ आगरा शुद्धि-सभा मे चले गये । सन् 1930 मे जव मेकेन्जी विदा हो रहे थे तो उनके अत्याचारो का चिट्ठा नगरपालिका के जलसे मे प० हरिश्चन्द्र ने आगरा से आकर उनको दिया और शहर मे वितरित किया (ठाकुर देशराज पहले ही गिरफ्तार हो चुके थे) और हरिश्चन्द्रजी को गिरफ्तार कर एक साल का कठोर कारावास दिया गया । तथा हरिश्चन्द्रजी के लघुभ्राता दौलतराम को परचे वाटते हुये गिरफ्तार करके हवालात भेज दिया मुकदमे मे न्यायाधीश ने दौलतराम को बालक समझ कर छोड दिया ।

स्वामीजी का भरतपुर से निर्वासन

जव अंग्रेज दीवान को पुलिस ने शिकायत की कि यहाँ राज्य मे स्वामी सच्चिदानन्द के शिष्य ही राष्ट्रीय कार्य कर रहे है तो उन्होने स्वामीजी की सारी सम्पत्ति जब्त कर उन्हे निर्वासित कर दिया । एक भी पैसा साथ मे नही ले जाने दिया । मदिर का सारा सामान भी जब्त कर लिया । इसी प्रकार स्वामीजी के साथी भी देश-व-दर कर दिये गये ।

रोहतक गुरुकुल झंझर में

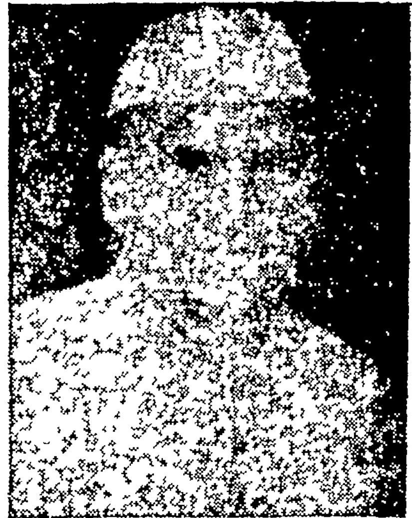
स्वामीजी का स्वर्णपदक व महामान्य की पदवी का प्रमाण पत्र रोहतक गुरुकुल, झझर मे सुरक्षित है । उसकी नकल प० हरिश्चन्द्र के पास अव भी है ।

अवसान

सन् 1965 मे स्वामीजी का स्वर्गवास हो गया। आर्य समाज ने वैदिक धर्म से स्वामीजी का अतिम संस्कार किया ।

\

स्व० सांवल प्रसाद चतुर्वेदी, भरतपुर.



जन्म · संवत् 1960, आषाढ़ शुक्ला 5

अवसान . 26 दिसम्बर 1971

जन्म और बचपन

श्री सावलप्रसाद चतुर्वेदी का जन्म भरतपुर जिले की कुम्हेर तहसील के ग्राम अभोरा मे आषाढ सुदी 5, सम्वत् 1960 को प० अजयरामजी के घर पर हुआ था। जब आप 7 वर्ष के थे दुर्भाग्य से आपके पिता, बाबा और दादी प्लेग की महामारी मे मर गये। गाँव वालो ने उनके श्राद्ध मे घर की सब जमा पूँजी खर्च करादी। परिवार मे आपकी माँ के अलावा कोइ सरक्षक नही रहा। आपके ताऊजी का व्यवहार आपके और आपकी माँ के प्रति अच्छा नही रहा।

शिक्षा और विवाह

आपकी शिक्षा-दीक्षा छठी कक्षा तक गुनसारे मिडिल स्कूल में हुई उसके पश्चात् आपने 15 वर्ष की अवस्था मे बेसवा (अलीगढ) स्थित स्वामी हरिदानन्द सन्यासी के यहाँ शिक्षा प्राप्त की। आपका प्रथम विवाह 8 साल की आयु मे ही हो गया था। आपकी प्रथम पत्नी का 20 साल की आयु मे स्वर्गवास हो गया। आपका दूसरा विवाह 2 मई 1929, को प्रतापगढ के मा० श्रीरामजी चतुर्वेदी की पुत्री यमुना देवी के साथ हुआ।

रामलीला मंडली में

श्री चतुर्वेदी जी 16 वर्ष की अवस्था मे ही रामलीला मण्डली मे काम करने लग गये। आपने रामलीला मण्डली मे ही लाठी, तलवार, बल्लम आदि चलाना सीखा परन्तु यह नाटक मडली अधिक दिन तक नही चली।

आर्य-समाज, शुद्धि-सभा और क्रांतिकारी पार्टी से संपर्क

श्री चतुर्वेदी जी आर्य समाज की सुधारवादी विचार धारा से प्रभावित थे इसलिये शुद्धि-सभा मे सक्रिय भाग लेने लगे। यही तक नही, आप आगरा मे स्व० श्रद्धानन्दजी के सम्पर्क मे आये और आर्य-समाज के कार्यो मे काफी सहयोग दिया। शुद्धि-सभा मे कार्य करते समय ही आप प० रेवतीशरण तथा मुखराज ढढ्डा के सपर्क मे आये। मुखराज ने ही आपको क्रान्तिकारी पार्टी का सदस्य बनाया। आप सन् 1932 तक क्रान्तिकारी पार्टी के सदस्य रहे।

सरदार भगतसिह और गांधीजी के सम्पर्क में

आप मुरैना षडयन्त्र मे गिरफ्तार किये गए परन्तु देशभक्त मजिस्ट्रेट श्री नौरोजी की कृपा से मुक्त कर दिये गये। आप आगरा मे प० रेवतीशरण के साथ-साथ क्रान्तिकारी सरदार भगतसिह और सुखदेव के सम्पर्क मे आये। इसके पश्चात् आप कुछ दिन गाँधीजी के आश्रम मे भी रहे। और, गाँधीजी से प्रभावित होकर अहिसक आन्दोलन मे लग गये।

राजपूताने की राजनीति में प्रवेश और वारंट

आपने राजस्थान के नेता श्री विजयसिह पथिक के साथ उनके पत्र 'राजस्थान सन्देश' मे भी कार्य किया। पुष्कर अधिवेशन मे एक ओजस्वी एव देश-प्रेम से भरी कविता सुनाने के कारण आपका वारन्ट निकाल दिया गया। उससे बचने के लिये आप इन्दौर चले गये और हिन्दू-धर्म-रक्षिणी मे कार्य करना आरम्भ कर दिया तथा 'मध्य भारत साप्ताहिक' का सम्पादन भी किया। इसी बीच आपकी गति-विधियाँ बढ जाने के कारण सरकार ने धारा 124 ए के अन्तर्गत दो मुकदमे चलाये।

भरतपुर के सत्याग्रह में गिरफ्तार

सन् 1939 मे भरतपुर मे प्रजामण्डल द्वारा सत्याग्रह छिडने पर आप भरतपुर आ गये और सत्याग्रह मे जुट गये। दिनाक 11, 3, 39 को 50 सत्याग्रहियो के साथ गिरफ्तार कर जेल भेज दिये गये। 25, 12, 1939 को समझौता होने पर जेल से रिहा किये गये।

राष्ट्रीय भावनाएं जगाने वाले प्रभावशाली वक्ता

आप निर्भीक सैनिक, स्पष्टवक्ता, प्रभावशाली कथावाचक एव भजनोपदेशक थे। आपकी कथायें बडी ही रोचक हुआ करती थी। आपकी कथाओ की मुख्य विशेषता यह होती थी कि, आप आजादी के सघर्ष के लिए लोगो मे राष्ट्रीय भावना जागृत करते थे। सन् 1942 के आन्दोलन मे आपने खूब काम किया परन्तु सन् 1945 मे गिरफ्तार कर लिये गये और दि० 11, 8, 45 को बिना शर्त्त रिहा कर दिये गए।

आजाद हिन्द दल के प्रधान सेना नायक

5 फरवरी, 1945 मे भरतपुर मे आपने प्रजा परिषद के अन्तर्गत आजाद हिन्द दल का गठन किया जिसके आप प्रधान सेना नायक थे।

बल्लम और भालो के मुकाबिले में

4 जनवरी 1947, को बेगार विरोधी आन्दोलन मे आपने तथा आपके आजाद हिन्द दल ने भारी काम किया। 15 जनवरी 1947, को किले पर धावा बोलते समय श्री गिर्राजशरण सिंह के नेतृत्व मे घुडसवारो तथा सैनिको ने लाठी तथा बल्लमो से जनता पर प्रहार किया तो चतुर्वेदी जी एव इनकी पत्नी यमुनादेवी को भारी चोटें आई। रीढ की हड्डी मे बल्लम लगे और 12 टाके आये।

'नवयुग सन्देश' और 'कर्म भूमि' के सम्पादक

आप कलम के धनी थे। आपने सन् 1948 मे 'नवयुग सन्देश' का सम्पादन किया तत्पश्चात् सन् 1950 से 54 तक 'कर्म-भूमि' साप्ताहिक का सम्पादन और प्रकाशन किया।

सोशलिस्ट पार्टी में

आप वर्त्तमान राजनीति मे नही खप पाए और सत्तारुढ दल के विरोधी रहे। जिसके लिये उन्होने सयुक्त सोशलिस्ट पार्टी मे रहकर सत्तारुढ सरकार का जमकर विरोध किया।

अवसान

अन्त तक श्री चतुर्वेदीजी मृत्यु से भी सघर्ष करते रहे और काफी लम्बी बीमारी के बाद 26 दिसम्बर 1971 को उनका स्वर्गवास हो गया।



श्री सत्य भक्त, भरतपुर.



जन्म : सन् 1896

पता · गायत्री तपोवन, मथुरा

उग्र क्रांतिकारी विचारों के नौजवान

श्री सत्यभक्तजी का बचपन का नाम चक्खनलाल है । उनका जन्म भरतपुर मे सन् 1896 मे हुआ था । सन् 1908 मे जब देश मे स्वदेशी का प्रचण्ड आन्दोलन भडका और जब अनेको देशभक्त देश की स्वाधीनता के लिए पिस्तोल और बम लेकर खडे हो गए थे, उसी समय से उनका आकर्षण राजनीति की ओर हो गया था । भरतपुर मे सर्वप्रथम जो चार पाँच व्यक्ति क्रान्ति के मार्ग पर आगे बढे उनमे श्री सत्यभक्त (उस समय के चक्खनलाल) अग्रणी थे । श्री सत्यभक्त उन सब मे उग्र क्रान्तिकारी विचारो के नौजवान माने जाते थे । 1913 मे जब वे भरतपुर मे विस्फोटक पदार्थो का परीक्षण कर रहे थे उसमे उनकी एक अगुली उड गई थी । तब से ही उनका नाम पुलिस के रजिस्टर मे दर्ज हो गया ।

प्रेरणा के श्रोत

यह क्रम भरतपुर मे सन् 1912 से 1918 तक चलता रहा । उस बीच वहाँ के सार्वजनिक जीवन का मुख्य केन्द्र स्थल हिन्दी साहित्य समिति ही रही, और वही से समाचारपत्रो तथा पुस्तको से प्रेरणा लेकर, कुछ लोगो मे देशभक्ति के भाव पैदा होते और बढते रहे । हिन्दी साहित्य समिति के मन्त्री तथा प्रमुख सचालक, अधिकारी जगन्नाथदासजी यद्यपि एक मदिर के महन्त थे और इस सस्थान की स्थापना हिन्दी प्रचार की भावना से ही की गई थी, पर आगे चलकर वे राजनीति के क्षेत्र में भी आ गये । श्री नत्थालाल शर्मा भी उनके साथ आरम्भ से ही एक सहकारी के रूप मे काम करने लगे थे और आज तक वे उसी प्रकार भरतपुर के सार्वजनिक जीवन में सहायक बने हुये हैं । श्री गयाप्रसाद चौबे, यद्यपि सरकारी कर्मचारी होने के कारण केवल निजी तौर पर ही इन लोगो से मिलते-जुलते थे, पर आगे चलकर वे सार्वजनिक आन्दोलन मे खुलकर भाग लेने लगे और इसके फलस्वरूप

भरतपुर से निकाल दिये गये । आगामी वर्षों मे तो अनेक कर्मठ देशभक्तो ने राजनीतिक क्षेत्र मे प्रशसनीय काम किया ।

भरतपुर में कार्य काल

श्री सत्यभक्त का भरतपुर मे कार्यकाल मुख्यरूप से 1912 से 1919 तक रहा। 1919 के बाद वे इलाहाबाद चले गए और पत्रकार के रूप मे भारतीय पत्रो के साथ सबद्ध हो गए ।

क्रान्तिकारी और श्रमजीवी आन्दोलन का समन्वय

श्री सत्यभक्त ने भारत मे 1924 मे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की थी। उन्होने क्रान्तिकारी आन्दोलन के साथ श्रमजीवी (ट्रेड-यूनियन) आन्दोलन का भी समन्वय कर दिया था। उनके यहाँ एक तरफ तो भारतीय क्रान्तिकारी दल के नेता श्री शचिन्द्रनाथ सान्याल और सरदार भगतसिह का आना जाना था, तो दूसरी ओर जर्मनी से कम्युनिस्ट नेता श्री एम एन राय ने उनसे सम्पर्क करने के लिए अपने दूत भेज रखे थे। श्री सत्यभक्त की प्रकाशित पुस्तको से और उनकी क्रान्तिकारी प्रवृत्तियो से काफी सरगर्मी पैदा हो गई थी। एक तरफ पुलिस उनके पीछे पडी हुई थी और दूसरी और सरकारी फाइलो मे उनके विरुद्ध पन्ने पर पन्ने भरे जा रहे थे। श्री सत्यभक्त से सबधित सारे कागज आज दिल्ली के राष्ट्रीय अभिलेखागार मे सुरक्षित है ।

प्रारभिक क्रांतिकारी कार्यों की विवेचना

क्योकि श्री सत्यभक्त ने सबसे पहले भारत मे कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की थी अत रूसी दूतावास के विशिष्ठ अधिकारियो ने इस सत्य का पता लगाकर उनसे अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने की चेष्टाए की हैं। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से पार्टी का विशद् इतिहास प्रकाशित हो रहा है। उसके प्रथम खण्ड मे श्री सत्यभक्त द्वारा किए हुए प्रारभिक क्रान्तिकारी कार्यों की विशद् विवेचना की गई है ।

राजस्थान-सेवा-संघ में

सन् 1922 मे श्री सत्यभक्तजी ने जब इलाहाबाद मे सुना कि राजपूताने मे विजयसिह पथिक ने राजस्थान-सेवा-सघ की स्थापना करके देशी रियासतो मे काम करना शुरू कर दिया है, तो उस समय वे इलाहाबाद से अपनी पत्रकारिता और लेखन की प्रवृत्तियो से अवकाश लेकर अजमेर आ गए। वे पथिकजी के साथ राजस्थान-सेवा-सघ के सदस्य बन गए और राजस्थान मे सबसे पहले, सिरोही गोलीकाड की जाँच करने के लिए वे, सघ के मन्त्री श्री रामनारायण चौधरी के साथ, सिरोही गए। सिरोही मे भीलों की उठती हुई लोक चेतना को दबाने के लिए राज्य की पुलिस ने गोलियें चलाई थी। श्री सत्यभक्तजी की रिपोर्ट हिन्दी व अग्रेजी मे प्रकाशित हुई। वे जब दुबारा सिरोही राज्य मे साहित्य लेकर गए तो उन्हे सिरोही की पुलिस ने ट्रेन से उतार कर हवालात मे बद कर दिया था ।

सिरोही के बाद श्री सत्यभक्तजी बूदी और बरड के गोलीकाड की भी जाँच करने गए थे। राजस्थान-सेवा-सघ के साथ करीब एक वर्ष तक उन्होंने कार्य किया ।

सत्यभक्तजी के अपने संस्मरण

श्री सत्यभक्तजी ने अपने कई सस्मरण अलग-अलग पत्रो मे लिखे हैं। उनमे से कुछ सस्मरणो का सकलन 'ज्ञान' नामक मासिक पत्र से किया गया है। वे सस्मरण उन्ही की भाषा मे नीचे दिए जा रहे हैं—

राधामोहन गोकुलजी के साथ

"श्री राधामोहन गोकुलजी हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक तथा राजनैतिक नेता दोनो ही थे। और उनसे मेरा परिचय थोडे ही समय मे अत्यन्त घनिष्ठ हो गया। उनको नागपुर से प्रकाशित होने वाले 'प्रणवीर' (अर्द्ध साप्ताहिक) का सम्पादक नियत किया गया, पर वे राजनैतिक आन्दोलन के कार्य से वरावर दौरा करते रहे और 'प्रणवीर' के एक भी अक का कार्य अपने हाथ से न कर सके, अन्य लोग ही कार्य करते रहे। जव वे आगरे मे गिरफ्तार कर लिये गये तो मुझे पत्र का कार्य करने वुलाया और मैं अप्रैल सन् 1923 से अक्टूवर के महीने तक उस कार्य को नागपुर मे रह कर करता रहा। इसके वाद मजदूर आन्दोलन मे भाग लेने की आकांक्षा से मै कानपुर चला आया और कुछ समय वाद राधामोहनजी को भी वही वुला लिया। इसके वाद जव मैं इलाहावाद में 'चाँद' और 'भविष्य' में काम करता था, तो सन 1930 में राधामोहनजी को वहाँ वुलाया। राधामोहनजी षडयत्रकारी कार्यों मे सक्रिय भाग लिया करते थे और ऐसे कार्यों के लिये रुपया और हथियार इकट्ठा करने का प्रयत्न किया करते थे। एक बार राजा महेन्द्रप्रताप से गुप्त रूप से भेट करने नेपाल भी गये थे, पर सभवतः यह भेट न हो सकी।

कम्युनिस्ट कांसप्रेसी केस और इंडियन कम्युनिस्ट पार्टी

जव मैं कानपुर के मजदूर आन्दोलन में भाग ले रहा था उसी समय यहाँ कम्युनिस्ट कासप्रेसी केस चला जिसमें शौकत उस्मानी, डांगे, मुजफ्फर अहमद, आदि अभियुक्त थे। मैं भी वरावर इसे देखने जाता था और मुजफ्फर अहमद की पैरवी के लिये जो युवक कलकत्ते से आया था वह मेरे घर में वहुत समय तक ठहरा भी रहा। इस मुकद्दमे के फैसले में जज ने कहा था कि हम इन लोगो को षडयत्रकारी कामो के लिये सजा देते हैं। कम्यूनिज्म को हम गैरकानूनी नही मानते। इस पर मैंने 'इडियन कम्युनिस्ट पार्टी' स्थापित करने की घोषणा कर दी और लगभग एक वर्ष तक इसका कार्य वडी धूमधाम से चला और लगभग डेढ सौ व्यक्तियो ने सदस्य श्रेणी में नाम लिखा लिया। यह सन् 1924-25 की वात है। इस वीच में मेरी दो वार तलाशी हुई, पुलिस की निगरानी हद दर्जे तक वढ गई और मेरी एक पुस्तक 'अगले सात साल' जब्त करली गई। सन् 1925 के अन्त में कानपुर में कांग्रेस अधिवेशन के साथ मैंने भी इण्डियन कम्युनिस्ट कान्फ्रेस का आयोजन किया, जिसमे सफलता तो साधारण ही प्राप्त हुई पर कांग्रेस से मतभेद और सघर्ष हो जाने के कारण जिसका विज्ञापन देश भर में खूव हो गया।

'प्रणवीर', 'चाँद' और 'सत्युग' का संपादन

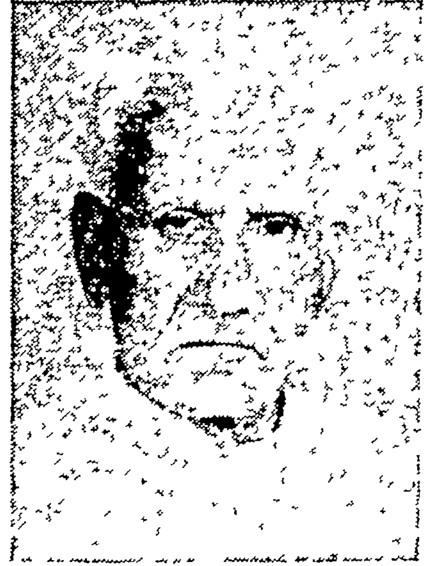
सन् 1926 के अत में मेरे आर्थिक साधन प्राय. समाप्त हो गये तो मुझे

मजदूर आन्दोलन का कार्य वन्द करके जीवन निर्वाहार्थ कोई कार्य ढूढने के लिये बाहर जाना पडा। सन् 1928 में मैं 'प्रणवीर' के सम्पादन कार्य के लिये बम्वई गया और वहाँ लगभग 8 महीने रहा। पर इस समय उसके सचालक श्री सतीदास मूँधडा की आर्थिक स्थिति खराव हो गई थी इससे कार्य जम कर न चल सका और मुझे वापस आ जाना पडा। वैसे श्री सतीदास मूँधडा ने अपनी लाखो की पारिवारिक सम्पत्ति बढिया अखबार निकालने के शौक मे स्वाहा करदी, पर साथ ही उनमे फिजूल-खर्ची का मर्ज था जिससे वे अकाल में ही अस्त हो गये। मई, 1929 से मैं इलाहाबाद के 'चाँद' मे कार्य करने लगा और यह कार्य अनेक लौट-फेर होते हुए भी 1947 तक जारी रहा केवल सन् 1937-38 में आठ महीने तक मुझे इण्डियन प्रेस (प्रयाग) से प्रकाशित 'देश-दूत' (साप्ताहिक) का काम करना पडा। सन् 1939 के सितम्बर से 'चाँद' का सम्पादन करने के साथ-साथ मैंने अपना 'सत्युग' मासिक पत्र भी प्रकाशित कर दिया जो भली प्रकार तो डेढ-दो वर्ष ही चला, पर वैसे लगभग सन् 1950 तक प्रकाशित होता रहा।

साहित्य-सेवा

मेरी पुस्तको मे जिसे मैं उल्लेखनीय समझता हूँ वह 'कार्ल मार्क्स' का जीवन चरित्र है जो सन् 1930 मे छपा था। इसके साथ ही मैंने लेनिन का जीवन चरित्र भी लिखा था। जो सयोगवश अभी तक अप्रकाशित ही रह गया। 'साम्यवाद का सदेश' और 'साम्यवाद के सिद्धान्त' भी 1932–33 के लगभग छप गये थे। सब से सफल पुस्तक 'सवत 2000' थी। जिसके डेढ रुपये मूल्य के चार सस्करण बहुत शीघ्र बिक गये। 1925 मे मैंने आयरलैण्ड के क्रान्तिकारियो के कारनामो पर 'आयरलैण्ड के गदर की कहानियाँ' नामक पुस्तक लिखी, पर जब्ती के डर से इसे बहुत खुलकर न वेच सका। इससे कुछ ही महीने पहिले मेरी 'अगले सात साल' नामक पुस्तक सरकार ने जब्त करली थी, क्योंकि उससे साधारण जनता मे यह भाव फैलता था कि अग्रेजी राज्य अब शीघ्र ही खत्म हो जायगा। सन् 47 मे इसमे कुछ नई घटनाये मिलाकर 'गोरिल्ला' के नाम से प्रकाशित किया। साम्यवाद के प्रसिद्ध लेखक प्रिन्स क्रोपाटकिन की 'नवयुवको से अपील' नामक पुस्तिका का अनुवाद करके मैंने 'विशाल भारत' मे छपाया था, जिसे उसके सम्पादक श्री बनारसी दास जी चतुर्वेदी ने विशेष रूप से पसन्द करके एक ही अक मे 18 पृष्ठो मे प्रकाशित कर दिया। यह पुस्तिका मेरी 'साम्यवाद के सन्देश' पुस्तक मे तो शामिल है ही, साथ ही कुछ वर्ष पूर्व 'नवजीवन ट्रैक्ट माला' (गोरखपुर) द्वारा हजारो की सख्या मे छापी गई थी और आज कल 'सस्ता साहित्य मण्डल' नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित करके वेची जा रही है। यद्यपि सयोगवश उस पर मेरा या 'विशाल भारत' का उल्लेख कही नही किया गया है। मेरी अन्य अनुवादित पुस्तको मे सब से बडी 'देवताओ के गुलाम' है जो भारतवर्ष मे कुप्रसिद्ध अमरीकन लेखिका मिस मेयो की 'स्लेव्स ऑफ दी गॉड' का अनुवाद है।"

सरदार हरलाल सिंह, झुंझुनू (जयपुर).



जन्म संवत् 1958 (सन् 1901)

पता : अस्पताल रोड़, जयपुर.

जन्म, वचपन और उत्तरदायित्व

श्री हरलालसिंह का जन्म सवत् 1958 (सन् 1901) मे झुझुनू जिले के ग्राम हनुमानपुरा मे हुआ था। साधनो के अभाव मे वचपन मे वे शिक्षा से वचित रहे। सवत् 1971 (सन् 1914) मे जव वे 13 वर्ष पार कर रहे थे उनके पिता श्री डालूराम का एक दुर्घटना मे देहान्त हो गया। परिवार मे सवसे वडा लडका होने के कारण सारे परिवार का उत्तरदायित्व उनके कधो पर आ पडा। उन दिनो गाँव के लोग चूने की रोडी खोद कर निकालते थे और अपने ऊँटो पर लाद कर पास पड़ोस के कस्बो मे वेच आते थे। छोटी उम्र मे श्री हरलालसिह भी परिवार के भरण-पोषण के लिए अपने ऊँट पर रोडी पत्थर कस्वो मे ले जाकर वेचते थे।

अक्षर ज्ञान और स्वाध्याय

छोटे से गाँव हनुमानपुरा के लोगो पर मजवूती और निडरता की अच्छी छाप है। जिससे श्री हरलालसिह को भी वही सस्कार मिले। गाँव मे रामायण, महाभारत-सार, रुकमणी-मगल और नरमीजी का माहेरा गाँव के एक दो मामूली पढे-लिखे व्यक्ति पढ कर सुनाया करते थे। श्री हरलालसिह उन्हे ध्यान से सुनते थे और उनके मन मे इन पुस्तको को स्वयं पढ़ने की हूक सी उठती थी। उन्होंने जल्दी ही गाँव के श्री रामनाथ पुजारी से अक्षर ज्ञान प्राप्त कर लिया। कुछ समय वाद वे रामायण, रुकमणी-मगल और महाभारत-सार आदि पुस्तकें शुद्ध-अशुद्ध पढने लगे। महाभारत-सार नामक पुस्तक का उन पर काफी प्रभाव पडा।

माता और पत्नी से निरंतर संघर्षरत रहने की प्रेरणा

अठारह वर्ष की अवस्था मे सीकर के सावलोदा ग्राम के निवासी चौधरी पेमाराम की सुपुत्री किशोरी देवी के साथ श्री हरलालसिंह का विवाह हुआ। उनकी धर्म-पत्नी ने उनके जनजागरण के कार्य मे सदैव उनका साथ दिया। राजनैतिक सघर्ष के दौरान जब वे कई बार 6–6–8–8 महीनो तक फरारी की अवस्था मे घर से अलग रह कर लौटते तो उनकी पत्नी ने अपनी तकलीफो की कभी कोई शिकायत नही की। जब श्री हरलालसिंह जेल गये, गिरफ्तार हुए अथवा अन्य सकट मे घिरे तो घर आने पर उन्हे सघर्ष के लिए नया उत्साह मिलता रहा। उनकी माता श्रीमती राजादेवी एक बहादुर महिला थी। माता सघर्ष के समय कभी नही घबरायी। उनको माता से निरन्तर कार्यरत रहने की प्रेरणा मिलती रहती थी।

जागीरी जुल्मों को समाप्त करने का संकल्प और नेताओ से सपर्क

प्रथम महायुद्ध की समाप्ति के बाद घर लौटने वाले सैनिको से युद्ध का वृतान्त सुन-सुनकर श्री हरलालसिंह के मन पर अच्छा असर हुआ। जागीरदारी इलाको की जनता तिहरी गुलामी मे थी। जागीरदारो के जुल्मो को देख कर श्री हरलालसिंह की आत्मा छटपटाने लगी और उनको उखाड फैंकने की बात उनके मन मे दृढता से जम गयी। उन्ही दिनो कँवरपुरा के श्री रामसिंह, श्री हरलालसिंह के पितामह श्री गोविन्दराम, सागासी के श्री भूदाराम, चिमनाराम व खेतराम आदि उत्साही व्यक्तियो ने समाज सुधार एव जागीरदारो के खिलाफ वातावरण बनाने का काम शुरू किया तब श्री हरलालसिंह उनके सम्पर्क मे आये। वे लोग क्रमश जागीरी जुल्मो के बीच मजबूती से कार्य करने लगे। किसानो का उस समय कोई मजबूत सगठन नही था।

आर्य समाज के द्वारा सामाजिक उत्थान और किसान आन्दोलन

सयोग से उस समय तक आर्य समाज का शेखावाटी मे काफी प्रचार बढ चुका था। मडावा के श्री देवीबक्स सर्राफ ने मडावा मे आर्य समाज की स्थापना की थी और शेखावाटी मे उनके नेतृत्व मे आर्य समाज का प्रचार कार्य तेजी से हो रहा था। आर्य समाज के जरिये सामाजिक उत्थान कार्य हुआ और किसान आन्दोलन का व्यापक प्रचार हुआ। जागृति की एक नयी लहर फैल गयी। उन्ही दिनो गाँवो मे कांग्रेस की हलचल भी सुनायी देने लगी थी। महात्मा गाँधी सन् 1921 मे भिवानी आये। वहाँ शेखावाटी के किसानो की टोली भी पहुँची। गाँधीजी के भाषण और व्यक्तित्व का श्री हरलालसिंह पर गहरा प्रभाव पडा। चिडावा क्षेत्र के डॉ० गुलजारीलाल उत्तरप्रदेश से आये हुए एक क्रान्तिकारी थे। उन्होंने श्री हरलालसिंह आदि को बम बनाना सिखाया। उन्ही दिनो श्री हरलालसिंह ने खरवा जाकर श्री विजयसिंह पथिक से सम्पर्क किया। श्री पथिक और बाबा नरसिंह दास के क्रान्तिकारी विचारो का श्री हरलालसिंह पर गहरा प्रभाव पडा।

किसान पचायत के अध्यक्ष के रूप में

इन नए विचारो से प्रेरित होकर श्री हरलालसिंह ने किसानो को सगठित और जागृत करने का कार्य प्रारभ किया। उनके नये-नये विचारो को सुन कर किसान जागृत हो

रहे थे । आर्य समाज का व्यापक समाज सुधार कार्यक्रम और प्रचार, किसानो को रुढिवादिता के ज्वर से मुक्त करने मे सजीवनी का काम कर रहा था । ऐसे समय मे जागीरदारी जुल्मो के खिलाफ किसान पचायत नाम से किसानो के एक सुदृढ सगठन की स्थापना हुई । किसान पचायत का श्री हरलालसिह को अध्यक्ष बनाया गया । उनके बाद श्री नेतरामसिह गौरीर किसान पचायत के अध्यक्ष बने ।

महाराजा किशनसिह के भाषण का प्रभाव

पुष्कर मे आल इण्डिया जाट महासभा का अधिवेशन हुआ जिसके अध्यक्ष भरतपुर महाराजा श्री किशनसिह थे । उनके ओजस्वी भाषण की प्रमुख दो बातो ने श्री हरलालसिह को बहुत प्रभावित किया । एक तो यह कि राजा की कोई जाति नही होती है । दूसरी यह कि भारत जागृत हो रहा है और जागृत भारत मे विदेशी शासन बहुत समय तक नही चल सकेगा । उसी मे महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय पधारे थे । अपने भाषण मे उन्होने युवको से अपील की, कि वे शिक्षा का प्रचार करें ।

अपने ही गाँव से शिक्षा प्रचार की शुरुआत

श्री हरलालसिह ने उनकी अपील से प्रभावित होकर सन् 1925 मे अपने गाँव मे स्कूल खोलने का उसी समय दृढ संकल्प कर लिया और हनुमानपुरा पहुँचते ही एक मास्टर बुलवाकर प्राथमिक पाठशाला शुरू कर दी । किसान सगठन के राजनैतिक स्वरूप के साथ ही साथ शिक्षा प्रचार एक रचनात्मक कार्यक्रम बन गया था । उस समय की एकमात्र ग्रामीण पाठशाला मे लडकों के साथ-साथ लडकियो की शिक्षा की भी व्यवस्था थी । समय पाकर शेखावाटी की सर्व श्री सुमित्रा किसारी, कमला गौरीर, नारायणी देवी, सुधीरा, पार्वती और सुवीरा माडासी आदि कई एक लडकियो ने वनस्थली विद्यापीठ मे उच्च शिक्षा प्राप्त की ।

झुंझुनू का विद्यार्थी भवन

श्री हरलालसिह की प्रेरणा से झुंझुनू मे एक बोर्डिंग हाऊस की स्थापना, बच्चो की शिक्षा व गाँव के लोगो से सम्पर्क की दृष्टि से सन् 1933 मे हुई थी । यही बोर्डिंग हाऊस बाद मे विद्यार्थी भवन के नाम से मुख्यत राजनैतिक कार्यकर्ताओ का परमाश्रय और जागृति का स्तम्भ भी बन गया ।

जयपुर से निर्वासन और आगरा से 'गणेश' का प्रकाशन

सीकर के राजनैतिक यज्ञ मे श्री हरलालसिह के प्रभाव और लोकप्रियता को देख कर जयपुर रियासत ने उन्हे राज्य से निर्वासित कर दिया । तब उन्होने ठाकुर देशराज और ताडकेश्वर शर्मा के सहयोग से सामतशाही का डट कर विरोध करने के लिए आगरा से 'गणेश' नाम के एक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किया ।

झुंझुनू का ऐतिहासिक किसान सम्मेलन

सन् 1930 मे जो किसान सगठन बनाया गया था उसकी शक्ति का प्रदर्शन 1932 मे झुंझुनू मे हुए किसान सम्मेलन मे हुआ जिसमे 60–70 हजार किसान उपस्थित हुए

तथा इसके दो वर्ष बाद ही सीकर मे जो राजनैतिक-यज्ञ हुआ उसमे एक लाख से भी अधिक व्यक्ति एकत्रित हुए ।

शेखावाटी में जागीर विरोधी आन्दोलन के उत्साही कार्यकर्ता

आगे जिनके नाम दिए जा रहे हैं उन उत्साही कार्यकर्ताओ ने शेखावाटी के जागीरदारो और सीकर रावराजा की ज्यादतियो के खिलाफ पूरे समय कार्य करके किसान सगठन के द्वारा राजस्थान में जागीरी प्रथा विरोधी आन्दोलन को आगे बढाया ।

पन्नेसिंह देवरोड, हवलदार खेताराम नसड, हरदेवसिंह पातुसरी, हरलालसिंह माडासी, प० ताडकेश्वर पचेरी वडी, भैरुसिंह तोगडा, त्रेगराजसिंह माडासी, स्वामी मिश्रानद विगोदना, चौधरी घासीराम खारिया, हवलदार टीकूराम पाटोदा, विदुसिंह अलीपुर, हरिसिंह अलीपुर, महालसिंह अलीपुर, वू टीराम किशोरपुर, रेखसिंह हनुमानपुरा, ताराचद भागेडा, पहलवान करडाराम, चौवरी लादूराम किसारी, तन्नेसिंह हनुमानपुरा, नेतरामसिंह गौरीर, नारायणसिंह, ख्यालीराम मोहनपुरा भानरवासी, चौधरी थानाराम और लादूराम भोजासर, दलेलसिंह चौधरी, नरमाराम, मेघाराम, बीजाराम हनुमानपुरा, रामसिंह वडवासी, सन्त-कुमार एडवोकेट, इन्द्राजसिह घरडाणा, लादूराम रामपुर, छत्तूसिंह टाड, सूरजमल आर्य लूणिया गणेरुडा, जालूसिह हनुमानपुरा, स्योचद भडोनपुरा, मनसाराम फतेहपुर, लेखराम कसवाली, चदरसिंह बीबीपुर, तेजाराम तेतरा, मास्टर लक्ष्मीचद नाथासर, चौधरी लक्ष्मण-सिंह नाथासर, केसरदेव ढांचोल्या नवलगढ, बृजलाल गोयनका नवलगढ, मघराज पाटोदिया नवलगढ, रामेश्वर रामगढिया मडावा, सावलराम मिमर मडावा, सूरजमल हनुमानपुरा ।

पूर्णकालिक किसान सगठन का कार्य

उन दिनो शेखावाटी का पूरा क्षेत्र झु झुनू निजामत के नीचे था जिसमे खेतडी और सीकर जैसे बाअख्तियार ठिकानो के अतिरिक्त खाचरियावास, दातारामगढ, खूड, खण्डेला, बिसाऊ, डू डलोद, नवलगढ, मडावा, हीरवा, अलमीसर-मलसीमर आदि जागीरी ठिकाने मुख्य थे । उन्ही दिनो जागीरी अत्याचारो का विरोध करने के लिए शेखावाटी मे किसानो का एक व्यापक एव प्रभावकारी सगठन बन गया था जिसमे हर गाँव के कार्यकर्त्ता सम्मिलित हो गये थे तव तक श्री हरलालसिह भी घर का काम-काज छोडकर पूर्णरूप से सगठन कार्य मे लग गये थे । शेखावाटी के सभी ठिकानेदार हर प्रकार से सगठन मे फूट डालने की कोशिश करते रहे पर उन्हे इसमे सफलता नही मिली और किसान सगठन एक मजबूत सगठन प्रमाणित हुआ । उन दिनो किसान सगठन मे रहकर जागीरी अत्याचारों का विरोध करने मे श्री हरलालसिह का साथ, सर्व श्री किसनसिंह बाटड, लादूराम जोशी, चौधरी हरिसिंह पलथाना, ईश्वरसिंह भैरूपुरा, गौरूसिंह कठराथल, गोपालराम जमादार रसीदपुरा, पृथीसिंह गगासिह गोठडा, चौधरी लादूराम गोवर्धनपुरा, व्यंकटेश पारीक लक्ष्मणगढ और गणेशाराम कूदन, आदि ने प्रमुख रूप से दिया था ।

किसानों की तरफ से जयपुर के प्राइम मिनिस्टर को मेमोरेंडम

इस प्रकार जयपुर की रियासती सरकार से भी एक बडी टक्कर लेने का समय आ गया। अत किसान सभा की तरफ से किसानो की सभी समस्याओ के सम्बन्ध मे एक मेमोरेण्डम जयपुर के प्राइम मिनिस्टर सर बीचम को प्रस्तुत किया गया जिसमे काश्तकारो को सब हकूक एव सहूलियत देने, बेगार समाप्त करने, जागीरी जुल्म समाप्त करने एव गाँवो मे समुचित शिक्षा व्यवस्था करने तथा अन्य समस्याओ के विषय मे एक कमीशन बैठाने की भी माँग की गयी। जागीरदारो के जो जुल्म किसानो पर हो रहे थे, उक्त मेमोरेण्डम दिये जाने के बाद उनमे और भी कठोरता आ गयी। श्री हरलालसिंह का कहना है कि रावराजा सीकर व बाद मे जयपुर महाराजा की तरफ से ठिकाना सीकर मे नियुक्त किये गये प्रशासक केप्टिन वेब ने किसान आन्दोलन को जिस बेरहमी से कुचलने की चेष्ठा की उसको याद करके आज भी रोंगटे खडे हो जाते हैं। उन्होने कई किसानों को अपने दमन-चक्र के दौरान मौत के घाट उतार दिया, स्त्रियो को नगा करके उन्हे बेदर्दी से पिटवाया और हर प्रकार के जुल्म किये पर किसान आन्दोलन और भी तीव्र गति से आगे बढा।

जागीरी दमन के पाँच–छ वर्ष

किसानो को बे-दखल करने की घटनाए उदयपुर तहसील मे अधिक हुईं। 5-6 वर्ष तक कठोर दमन-चक्र चला पर जागीरदार किसानो को बे-दखल नही कर पाये। आम लगान बन्दी को किसान सभा की माँगो के साथ जोड दिया गया तब जागीरदार बौखला उठे। निरपराध किसानो पर लाठियाँ चलाना, स्त्रियो की बेइज्जती करना लाठियो से व बन्दूको से मनुष्यो की हत्या कर डालना आदि किसी भी प्रकार के नृशस काम करने मे उनको कोई झिझक नही होती थी। जागीरी अत्याचारो के विरोध मे उन दिनो शेखावाटी की महिलाओ ने भी असाधारण उत्साह से भागलिया। श्री श्रीनिवास बगडका की धर्मपत्नी रामकौरी देवी और सुश्री अनुसूया बहन, श्रीमती विमला, श्रीकृष्ण शर्मा चिडावा माडासी की श्रीमती फूला-देवी, दुर्गावती देवी, ताडकेश्वर शर्मा हनुमानपुरा की श्रीमती किशोरीदेवी और श्रीमती रामप्यारी देवी ने जागीरी विरोधी सत्याग्रह मे प्रमुख रूप से भाग लेकर जन आन्दोलन के इतिहास मे एक नया पृष्ठ जोडा।

संगठित किसानो की विजय

ठिकानेदारो के जुल्मो के दौरान किसान सभा द्वारा लगान बन्दी कर दिये जाने के कारण जयपुर रियासत की हुकूमत ने लगान वसूली का एक कडा आर्डिनेंस निकाला। परन्तु उससे किसान दबे नही। सगठित रूप से उन्होने उसे अपने विरोध से प्रभावहीन कर दिया। अन्त मे जयपुर रियासत को बन्दोबस्त करना पडा और किसानो की प्रायः सभी मांगें मजूर करली गयी।

किसान सभा और प्रजामडल काल मे नई पीढ़ी के नए कार्यकर्त्ता

इसके बाद पहले पुनर्गठित प्रजामण्डल मे किसान सभा विलीन हो चुकी थी। इस सफलता मे किसानो की मजबूती के अलावा जयपुर राज्य प्रजामण्डल का मार्गदर्शन

श्रौर सक्रिय सहयोग भी एक खास कारण हुश्रा । शेखावाटी मे किसान सभा श्रौर फिर प्रजामण्डल द्वारा श्रायोजित सघर्ष के दूसरे श्रौर तीसरे दौर मे पुरानी श्रौर नई पीढी के जो कार्यकर्त्ता श्रागे श्राए उनमे से कुछ उल्लेखनीय व्यक्तियो के नाम नीचे दिए जा रहे हैं—

श्री नाहरसिंह शेखावत, केशरदेव मित्र, पूर्णसिंह विरोल, रामेश्वरलाल वाय, विद्याधर सागासी, भोगसिंह माडासी, शिवनार्थासिह (वर्तमान एम० पी०), भागीरथ स्वामी, नारायणसिंह माडासी, करणीराम भोजासर, मास्टर रामदेवसिंह घमोरा, वकील चन्द्रसिंह वाहिदपुरा, रूडमलसिंह कटराथल सूरजमल गोठडा, रामचन्द्रसिंह कूदन, गोपालसिंह कोटडी, हनुमानसिह, श्री वृजमोहन लोयलका पिलानी श्रौर श्री भीवराज तुलस्यान भुभुनू, दुर्गादत्त कइया, साँवरमल मिश्र मण्डावा, सत्यनारायण मलसीसर, श्री कृष्ण शर्मा चिडावा, मदनलाल जाजोदिया, व्यँकटेश पारीक, सोहनसिंह दूलर, पचेरी के मूलचन्द महाजन, शैतानसिंह, नारायणसिंह व श्रलवादसिंह वगैरह, दुर्गादत्त हारित विसाऊ, नरोत्तम जोशी भुभुनू सागरमल मिश्र विसाऊ, हनुमानसिंह वाजीरसर (शहीद गइसीराम के पुत्र) लादूराम हरिपुरा, घोकलसिंह जगन्नार्थासिंह भोजासर, सोहनसिंह नवरग हरिजन मुकुन्दगढ, चेतराम मोजास, श्री रामेश्वर गाडिया श्रौर रगलाल गाडिया भुभुनू ।

जयपुर राज्य प्रजामंडल के श्रध्यक्ष

जयपुर मे जयपुर राज्य प्रजामण्डल की विधिवत् स्थापना हो चुकी थी । शुरू मे श्री चिरजीवलाल मिश्र प्रजामडल के श्रध्यक्ष बने । 1938 मे प्रजामडल के प्रथम वृहत् श्रधिवेशन के सभापति सेठ जमनालाल वजाज बने । 1939 मे प्रजामडल की श्रोर से जयपुर सत्याग्रह हुश्रा जिसमे कई एक किसानो के श्रलावा श्री हरलालसिंह ने भी प्रमुख रूप से भाग लिया । सन् 1948 मे श्री हरलालसिंह प्रजामडल के सभापति बने ।

करणीराम श्रौर रामदेव की शहादत

श्राजादी के वाद भी उदयपुरवाटी के भोमिये सगठित होकर जन-जागृति को कुचलने मे लगे रहे । श्रमर शहीद श्री करणीराम व रामदेव की 13 मई 1952, मे हुई चँवरा गाँव की शहादत इसकी श्रन्तिम कडी कही जा सकती है । इस लोमहर्षक हत्याकाण्ड के वाद जागीरी जुल्मो का पुन कडा विरोध हुश्रा ।

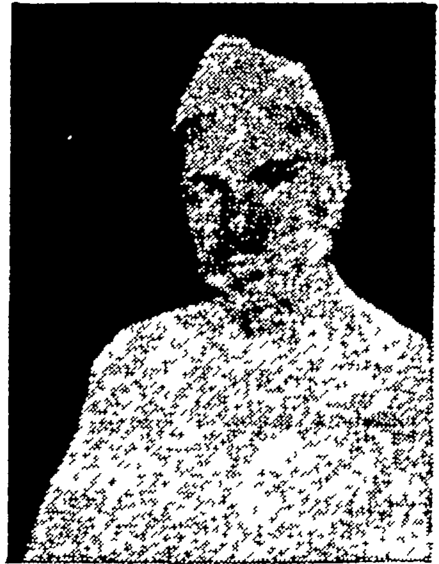
गिरफ्तारियो का तांता

श्री हरलालसिंह को तीन वार गिरफ्तार किया गया । पहली वार भुभुनू मे सन् 1938 मे, दूसरी वार चनाणा गोलीकाण्ड के सिलसिले मे श्री हरलालसिंह को श्री नेतरामसिंह गौरीर के साथ गिरफ्तार किया गया । तीसरी वार श्री हरलालसिंह को सत्याग्रह के सिलसिले मे गिरफ्तार किया । इस वार 5-6 माह जेल मे रहने के वाद सब सत्याग्रहियो के रिहा होने पर श्री हरलालसिंह भी छोड दिये गये ।

प्रदेश कांग्रेस के श्रध्यक्ष श्रौर राज्य विधान सभा के सदस्य

सन् 1957 मे श्री हरलालसिंह राजस्थान प्रदेश काग्रेस कमेटी के श्रध्यक्ष वने । श्रौर वे चिडावा क्षेत्र से कांग्रेस टिकट पर विधानसभा का चुनाव लडकर विजयी हुए ।

श्री हरि भाई किंकर



ब्रह्मचारी हरि से हरिभाई किंकर

श्री हरिभाई किंकर वर्षो तक तो अजमेर और राजपूताने की रियासतो मे ब्रह्मचारी हरि के नाम से ही पहिचाने जाते थे। 1930 के नमक सत्याग्रह के बाद जब उनका विवाह श्रीमती महिमादेवी किरण से हुआ तब वे ब्रह्मचारी हरि से हरिभाई किंकर हो गए।

स्वाभिमानी समाज सेवक और ज्ञान के प्रचारक

श्री हरिभाई का सारा जीवन सार्वजनिक सेवा मे ही व्यतीत हुआ। यो राजस्थान की प्रत्येक राजनैतिक गतिविधि मे वे आगे रहे और प्रत्येक राजनैतिक आन्दोलन मे जेल गए परन्तु मूलरूप से वे राजनीतिज्ञ नही थे और उनका जन्म राजनीति के लिए नही हुआ था। वे एक स्वाभिमानी समाज सेवक, ज्ञान के प्रचारक और नवीन सस्कारो के सदेशवाहक थे। सार्वजनिक जीवन मे उन्होने स्वावलबन और मितव्ययता का पाठ राष्ट्रपिता-महात्मा गाँधी से पढा था। उनकी वाणी, विचार और व्यवहार मे गाँधी दर्शन और गाँधी-युग का प्रभाव पूरी तरह छाया हुआ था।

चित्तौड़ की विद्या प्रचारिणी सभा मे

श्री हरिभाई किंकर ने 1916-17 मे चित्तौड की विद्या प्रचारिणी सभा की प्रवृत्तियो के साथ अपना सार्वजनिक जीवन शुरू किया था। उन दिनो चित्तौड़, मेवाड राज्य का एक भाग था और एकतत्री राजाओ के राज्य मे शिक्षा का प्रसार नही के बराबर था। राजा लोग नही चाहते थे कि उनकी जनता शिक्षित हो ऐसी स्थिति मे चित्तौड के कुछ स्वयसेवी लोगो ने मिलकर विद्या प्रचारिणी सभा की स्थापना की थी और इस सभा की ओर से गाँव-गाँव मे पाठशालाए खोलकर शिक्षा का प्रसार किया जाने लगा। श्री हरिभाई किंकर ने देशसेवा के नाम पर अपने आपको इस सस्था के सुपुर्द कर दिया।

मुट्ठी फंड से गाँव की शिक्षा

श्री हरिभाई किंकर ने उन दिनो चित्तौड के क्षेत्र के अनेको गाँवो मे स्कूले स्थापित की और उन्हे स्वावलबी बनाकर छोडा। उन्होने प्रत्येक गांव मे मुट्ठी फड शुरू कर दिया। मुट्ठी फड का अर्थ है कि घर की महिलाए गाँव मे शिक्षा के लिए प्रतिदिन एक मुट्ठी आटा या धान अलग निकाल दे। प्रत्येक सप्ताह वह आटा या धान स्वयमेवको द्वारा घर-घर से इकट्ठा कर लिया जाता और उसे बाजार भाव से बेच दिया जाता। उससे प्राप्त धन-राशि द्वारा उस गाँव की शिक्षा का व्यय निकाला जाता।

लोकजागरण के लिए लोक गीत

हरिभाई किंकर ने यह महसूस किया कि देहातो मे सभा करने और लबे-लबे भाषण देने की तुलना मे लोक-भाषा मे लोक गीतो की धुनो पर बनाए राष्ट्रीय गीत लोक जागरण और राजनैतिक चेतना के प्रसार मे बहुत ही सहायक हो सकते हैं। इसलिए उन्होंने लोक भाषा मे जनता की ज्वलत समस्याओ के सम्बन्ध मे लोकगीतो की रचना प्रारभ की और गाँव-गाँव मे उन गीतो के द्वारा चेतना का शख फूँकने लगे। श्री हरिभाई किंकर ने जनता की सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक स्थिति पर तथा शासक और सामतो के अत्याचारो के विरुद्ध 500 से अधिक गीतो की रचना की।

गीतों का गश्ती पुस्तकालय

श्री हरिभाई किंकर ने अपनी छोटी सी प्रकाशन सस्था का नाम गश्ती पुस्तकालय रखा था। वे गीतो की छोटी-छोटी और कम से कम कीमत की पुस्तकें प्रकाशित करते और गांव-गाँव मे घूमकर उन गीतो के द्वारा समाज-सुधार, राष्ट्रीयता और राजनैतिक चेतना का प्रचार करते। उन्होने इन गीतो की छोटी-छोटी पुस्तको द्वारा ही अपने-आपको जीवन भर स्वावलबी रखने का प्रयत्न किया।

श्री हरिभाई किंकर सब से पहले 1919 मे अमृतसर मे होने वाले कांग्रेस अधिवेशन मे एक स्वयसेवक के रूप मे सम्मिलित हुए थे। प्रवासी भारतीयो के नेता भवानी दयाल सन्यासी की विशेष माँग पर हरिभाई किंकर का एक लोक गीत

भारत रा भायो! जागो जागो, आलस त्यागो रे,
नवो युग आयो रे आँख्यो खोल दो।

उन्होने कांग्रेस के मच से गाकर सुनाया था।

राजस्थान सेवा संघ में

सन् 1920 के बाद श्री विजयसिंह पथिक के दिमाग मे एक ऐसी सस्था बनाने का विचार चल रहा था कि जिसमे युवक लोग राजस्थान की जन्म भर सेवा का व्रत लेकर शरीक हो सके। पथिकजी की मान्यता थी कि सार्वजनिक क्षेत्र मे सेवा का कार्य करने के

लिए आने वाले को यह प्रतिज्ञा करनी पडेगी कि वह अपनी कोई व्यक्तिगत सपत्ति नहीं वनाएगा और वह राजनैतिक सन्यासी या मिशनरी की तरह ही काम करेगा। वह व्यक्ति अपनी जीविका के लिए पन्द्रह रुपए प्रति माह से अधिक नही लेगा। राजस्थान सेवा सघ के लिए यह तथा ऐसी ही अनेको शर्तें थी जिन्हे स्वीकार करना सामान्य लोगो के लिए कठिन था। लेकिन हरिभाई किंकर पहले व्यक्ति थे जिन्होने अपने-आपको राजस्थान सेवा सघ के लिए समर्पित किया और इस तरह से विजयसिंह पथिक, रामनारायण चौधरी और हरिभाई किंकर जैसे केवल तीन व्यक्तियो से ही राजस्थान सेवा सघ की नीव रखी गई। श्री हरिभाई किंकर ने पूरे 10 वर्ष तक राजस्थान सेवा सघ के साथ एक अनुशासित व्यक्ति की तरह कार्य किया।

नमक सत्याग्रह के बाद जयपुर में विवाह

राजस्थान सेवा संघ नेताओ के आपसी सैद्धान्तिक मतभेदो के कारण भग हो गया था। उसके बाद नमक सत्याग्रह का नया युग आ गया। नमक सत्याग्रह के बाद के समय मे श्री हरिभाई किंकर के मित्रो ने उन्हे विवाह करने की सलाह दी और जयपुर मे उनका आर्य समाज पद्धति से कुमारी महिमा देवी किरण के साथ विवाह हो गया।

विवाह के तत्काल बाद गिरफ्तारी

विवाह के तत्काल वाद 1932 का देश व्यापी सत्याग्रह चारो ओर फैल गया। श्री हरिभाई किंकर और उनकी धर्म पत्नी महिमादेवी किरण दोनो ने 1932 मे सत्याग्रह मे भाग लिया और दोनो अजमेर मे गिरफ्तार करके जेल भेज दिए गए।

जेल से मुक्त होते ही साबरमती आश्रम मे

जेल से मुक्त होने मे वाद यह राष्ट्रीय दम्पत्ति कुछ दिन तक हरिजन सेवा मे लग गए। इसके वाद यह दम्पत्ति राष्ट्र सेवा का व्यावहारिक प्रशिक्षण लेने के लिए साबरमती आश्रम चले गए। वहाँ अढाई वर्ष तक रहने का कार्यक्रम था परन्तु गांधीजी ने बीच मे ही आश्रम तोड दिया और दोनो को वापिस राजस्थान आ जाना पडा। राजस्थान आकर इस दम्पत्ति ने अपना आवास व्यावर मे रखा और वही से वे अपने गश्ती पुस्तकालय की गीतो की पुस्तको के साथ गाँव-गाँव घूमते रहे।

राजनीति में आकांक्षा रहित व्यक्तित्व

श्री हरिभाई किंकर का सार्वजनिक जीवन राजस्थान की राजनीति से ही प्रारभ हुआ था। परन्तु वे राजनीतिज्ञ नही थे। अत. राजनीति मे उनकी कोई आकांक्षा नही थी। वे मूलरूप से एक समाज-सुधारक और राष्ट्रीयता के सन्देश वाहक थे। उनका कार्यक्षेत्र केवल राजस्थान ही नही था। देश के कोने-कोने से उनके पास निमत्रणो का ढेर लगा रहता था और वे सारे देश का दौरा भी करते रहते थे। उन्होने सेवा का लक्ष्य ही अपने सामने रखा, इसलिए वे समाज की सेवा तो निरन्तर करते गए परन्तु न उन्हे राजनैतिक सस्था मे कभी कोई पद मिला न कभी उनकी आर्थिक स्थिति ही ऐसी रही जिससे कि वे सुख की सास ले सकें।

मृत्यु पूर्व के कुछ संस्मरण

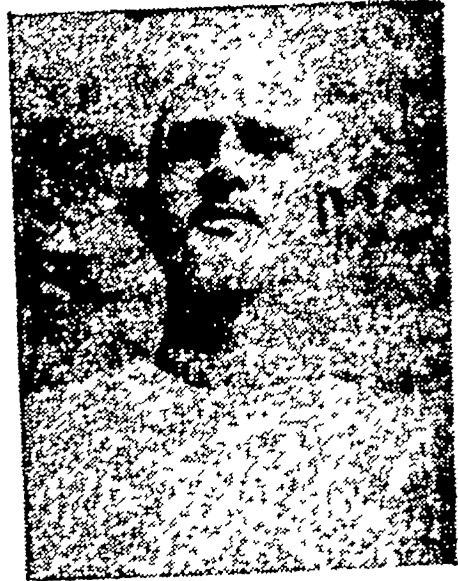
अपनी मृत्यु के कुछ समय पहले अपने सस्मरणो मे उन्होने एक स्थान पर लिखा था कि सार्वजनिक जीवन मे मैने अनेक उतार-चढाव देखे हैं। जेल के कष्टो के अलावा आर्थिक कठिनाइयो का भी सामना किया है। यह शरीर अब थक गया है किन्तु लोकसग्रह और लोक सेवा की निष्ठा ज्यो की त्यो वनी हुई है। गाँधीजी ने सार्वजनिक सेवको को स्वैच्छिक गरीबी और अनासक्ति का पाठ पढाया था जो विपरीत परिस्थितियो मे भी वडा सहारा देता रहा है। गाँधीजी से जो सीखने को मिला वह कभी भुलाया नही जा सकता। अव तो यही इच्छा है कि सेवा करते-करते यह जीवन खप जाए।

राज्य की उपेक्षा और आत्मदाह !

राजस्थान बन जाने के वाद शास्त्री से सुखाडिया के शासनकाल तक किसी ने भी राजस्थान के ऐसे तपोनिष्ठ मूकसेवको की कभी परवाह नही की और अत मे एक दिन अर्थाभाव से दु.खी होकर हरिभाई किंकर को, सोजत के अपने किराये के मकान मे आत्मदाह करके अपनी प्राण लीला समाप्त करनी पडी।



पं० हरिनारायण शर्मा



जन्म : 1 अक्टूबर, 1900

अवसान . 21 सितम्बर, 1947

जन्म, परिवार और बचपन

प० हरिनारायण शर्मा का जन्म 1 अक्टूबर 1900, को एक साधारण ब्राह्मण परिवार मे अलवर नगर मे हुआ था। 5 वर्ष की आयु मे ही आपके पिता प० रामचन्द्रजी का देहान्त हो गया था। आपकी माताजी 24 वर्ष की अल्प-आयु मे ही विधवा हो गई थी। आपकी माता ने आपका तथा आपसे 2 वर्ष छोटे भाई का पालन-पोषण घोर परिश्रम के साथ किया था। आपने हिन्दी सस्कृत की शिक्षा परंपरागत पाठशालाओ मे ग्रहण की थी। 18 वर्ष की आयु मे ही आप रियासत की राजकीय सेवा मे लग गए थे। आपने अपना सार्वजनिक जीवन भी 18 वर्ष की आयु से ही आरम्भ किया था।

अलवर की राजनैतिक चेतना के जनक

प० हरिनारायण शर्मा को अलवर मे राजनैतिक चेतना का जनक कहा जा सकता है। उन्होंने अपनी अन्य रचनात्मक प्रवृत्तियो के साथ-साथ अलवर मे कांग्रेस की स्थापना की थी और अलवर मे प्रजा मडल के सस्थापको मे भी आप ही मुख्य व्यक्ति थे। लोगो मे राजनैतिक चेतना फैलाने और उन्हे अपने अधिकारो की प्राप्ति के लिए सगठित होकर कार्य करने की प्रेरणा देने के लिए, आपको अपने जीवन मे 6 वार जेल यात्राए करनी पड़ी।

जेल यात्राओं का सिलसिला

पहली वार वे 1937 मे गिरफ्तार हुए थे और राजद्रोह के अपराध मे उन्हे एक वर्ष की सजा दी गई थी। दूसरी वार वे 1938 मे इसी राजद्रोह के अपराध मे गिरफ्तार हुए और इस वार उन्हे 2 वर्ष के सख्त कारावास की सजा दी गई। इसके अतिरिक्त 1946 तक वे 4 वार अलग-अलग समय मे गिरफ्तार करके जेल भेजे गए थे। सन् 1937 से 46 की अवधि में कई वार विना मुकदमा चलाए ही जेल मे नजर वद के रूप मे रखे

गए थे । उनके पत्र व्यवहार पर सरकार का कडा सेंसर लगा हुआ था । प० हरिनारायण शर्मा ने 1938 से 1946 तक प्रजा मडल द्वारा आयोजित सभी आन्दोलनो मे अग्रणी के रूप मे भाग लिया । उन्होने आन्दोलनो का कुशलतापूर्वक सचालन किया । अलवर की जनता की आप पर असीम श्रद्धा और अटूट विश्वास था ।

साम्प्रदायिक तनाव की घड़ी में संतुलन और मार्ग दर्शन

अग्रेज अपनी फूट डालो और राज्य करो वाली नीति का उपयोग अलवर राज्य मे भी कर रहे थे । रियासत मे 1932 मे साम्प्रदायिक तनाव का वातावरण बना हुआ था । इस तनाव को दूर करने के लिए आपने नागरिक समितियो के माध्यम से हिन्दू मुस्लिम एकता का सद्भावनापूर्ण वातावरण बनाया । किन्तु तनाव का वातावरण दूर हुआ ही था कि मुस्लिम लीगियो ने त्रिपोलिया बाजार स्थित शिव मदिर से दर्शन करके आते समय रास्ते मे एक हिन्दू भक्त की दिन-दहाडे सरे आम-खुले बाजार मे छुरा घोप कर हत्या कर दी । उत्तेजना की इस नाजुक घडी मे प० हरिनारायण ने अपने प्रभाव का बहुत कुशलता से उपयोग किया और बिगडी हुई स्थिति को शान्त करने के लिए मृतक हिन्दू भक्त की लाश को अपने कधो पर रख कर अकेले ही शफाखाने ले गये और हत्या करने वालो के के विरुद्ध पुलिस मे केस दर्ज करवाया । उत्तेजित हिन्दूओ को उन्होने यकीन दिलाया था कि वे उत्तेजित न हो, अपराधियो को कानून से सजा दिलाई जायेगी ।

समाज विरोधी तत्वो की धमकियें और मुकाबिले

इस हत्याकाण्ड के अपराधियो ने आपको धमकी दी थी कि यदि पुलिस को उक्त हत्या के केस मे मौके की शहादत व सबूत इक्ट्ठा करने मे मदद दी तो उनकी भी छुरा घोप कर हत्या कर दी जायेगी । किन्तु पडितजी ऐसी धमकियो से कब डरने वाले थे । ऐसे समाज विरोधी तत्वो तथा साम्प्रदायिक गुण्डो का आपने हर स्तर पर डट कर मुकाबिला किया और अपराधियो का अदालत मे चालान करा कर उनके अपराधो की उन्हे सजा दिलाई गई । उसी समय से आपने सदैव अपने साथ लट्ठ रखना शुरू कर दिया । आत्म रक्षा में अनेको बार लट्ठ का सफल प्रयोग भी उन्हे करना पडा । इसी कारण आप लट्ठमार के नाम से बडे विख्यात थे । स्वतत्रता आंदोलनो के दौरान चलाये गये अभियोगो तक में भी आपके नाम के साथ लट्ठमार शब्द का ही प्रयोग किया गया था ।

हिन्दु मुस्लिम एक्यता और धार्मिक सहिष्णुता

आप पर हिन्दू एव मुसलमान दोनो का समान विश्वास था । यही कारण है कि 1937 में आजादी की लडाई में प्रथम वार जेल यात्रा में डॉ० मोहम्मद अली खाँ तथा अब्दुल गफूर जमाली भी आपके साथ जेल गये थे । आपने सदैव हिन्दू-मुस्लिम एकता तथा धार्मिक सहिष्णुता पर जोर दिया था । इसी उद्देश्य के लिए कार्य व प्रचार किया था । सन् 1947 के अगस्त में जब शफाखाने में इलाज के लिए भरती थे तो उस समय भी साम्प्रदायिक दगे चरम सीमा पर थे और दगा पीडित व्यक्तियो को शफाखाने में देख कर उनकी आत्मा कराह उठी थी ।

हरिजनों और आदिवासियों के लिए कल्याण-कार्य

राजपूताने की अन्य रियासतो के समान ही अलवर रियासत में भी हरिजनो व आदिवासियो की वडी दुर्दशा थी। पडित हरिनारायण शर्मा ने अस्पृश्यता निवारण सघ, वाल्मीकि सभा और आदिवासी सघ जैसी स्वय सेवी सस्थाओ की स्थापना की थी और इन सस्थाओ के माध्यम से हरिजनो और आदिवासियो से वेगार न लेने, उनके आवास, चिकित्सा, सार्वजनिक कुंओ पर पानी भरने और उनके वच्चो की पढाई के लिये कार्य किये। इन कार्यो के लिए आपने स्वय सेवी सस्थाओ एव राज्य सरकार से भी पूर्ण सहयोग प्राप्त किया था।

हरिजनों का मंदिर प्रवेश और जाति-बहिष्कार

सन् 1923 में ही आपने सर्व प्रथम अपना दाऊजी महाराज का मदिर हरिजनो के प्रवेश के लिए खोल दिया था। जिसके फलस्वरूप कुछ कट्टरपथी ब्राह्मणो ने आपका जाति से वहिष्कार तक भी कर दिया था। किन्तु आप ऐसे व्यक्तियो की कव परवाह करने वाले थे। इस घटना के बाद से आपने इन उद्देश्यो की प्राप्ति के लिए और भी तेजी से कार्य जारी रखा।

अलवर राज्य की तहसील थानागाजी, राजगढ़ और लक्ष्मणगढ में मीणे आदिवामी लोगो की काफी सख्या है। इनमें कुछ चौकीदार मीणा कहलाते थे। जिनको राज्य सरकार ने 'जरापमपेशा' कौम करार दिया हुआ था। ये अपराध वृत्ति वाली जातियें मानी जाती थी। आपने इन लोगो की अपराध मनोवृत्ति छुडवा कर खेती वाडी का धधा अपनाने की ओर प्रेरित किया। आज वे आदिवासी अच्छे नागरिको की तरह खेती वाडी का कार्य पूर्ण सतोष से करते हैं।

राष्ट्र भाषा के प्रचार का महान् कार्य

आपने अलवर रियासत में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए वहुत कार्य किया था। तहसील स्तर तक हिन्दी परिषदें गठित कराई गई थी। इस कार्य के लिए प० मदनमोहन मालवीयजी का वरद हस्त आपके ऊपर था। आपके प्रयास से देशी रियासतो में वडौदा राज्य को छोड कर अलवर ही एक मात्र ऐमी रियासत थी जिसका शत-प्रतिशत सारा राज कार्य देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी भाषा में ही चलता था।

खादी उत्पादन और स्वदेशी का प्रसार

आपने रियामत में खादी के उत्पादन और उपयोग को वहुत आगे वढाया। इस कार्य में आपके सवसे वडे सहयोगी मोदी नत्थूराम व इन्दरसिंह आजाद थे। रियासत मे मिलो का विलायती कपडा वाहर से आने के कारण रियासत के वुनकरो की हालत अत्यन्त खराव हो चुकी थी, जिनकी रियासत में एक वडी सख्या थी। प० हरिनारायण ने उनको फिर मे खादी उत्पादन के लिए प्रोत्साहित किया। गरीव औरतो को सूत कातने के लिए विकसित चरखे उपलव्ध कराये गये। इस काम के लिए खादी भण्डार खुलवाये गये। जिमके परिणामस्वरूप खादी व हाथ कर्घो के वस्त्रो का निर्माण कार्य तेजी से हुआ। आज भी सारे गुजरात, महाराष्ट्र राज्यो को अलवर में वनी पगडियो की सप्लाई हो रही हैं जो वहां अत्यन्त लोकप्रिय है।

मदिरा-पान एवं मृत्यु भोज रोकने के लिये कार्य

पडित हरिनारायण शर्मा ने सामाजिक कुरीतियाँ शराब-खोरी और मृत्युभोज बन्द कराने का जोर-शोर से प्रचार किया। इस कार्य के लिए आपने अनेक प्रकार के चार्ट और चित्र तैयार करा कर प्रदर्शनियां आयोजित की। और समाज को नए सस्कार देने वाले कार्यक्रमो से सामाजिक क्षेत्र मे नई चेतना पैदा की।

महाराजा जयसिह के प्रेरणा श्रोत

अलवर के महाराजा जयसिह के मन मे प० हरिनारायणजी के प्रति बडी श्रद्धा व आदर भाव था। महाराजा आपको राज्य एव राज्य की प्रजा का बडा शुभचिन्तक मानते थे। पडितजी ने ही महाराजा जयसिह का सम्पर्क पडित मदनमोहन मालवीय जी से कराया था। महाराजा ने हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए मुक्त-हस्त से धन दिया था और नरेन्द्र मडल के अध्यक्ष होने के नाते भी महाराजा ने अपने अन्य देशी राजाओ को भी हिन्दू विश्वविद्यलाय की स्थापना मे योगदान देने के लिए अपने प्रभाव का पूर्ण उपयोग किया था।

औपचारिक राजा बने रहने की महाराजा अलवर की कामना

महाराजा जयसिह ने पण्डित हरिनारायण शर्मा एव उनके अन्य साथियो के परामर्श से राज्य के शासन मे अनेक सुधार व सार्वजनिक निर्माण के कार्य किये थे। पडित हरिनारायण शर्मा से महाराजा राजनैतिक विषयो पर खुलकर मित्रो की तरह बात करते थे और उनसे परस्पर विचार-विमर्श के बाद ही महाराजा जयसिह ने ब्रिटिश सरकार को अपनी यह इच्छा प्रकट कर दी थी कि वह केवल मात्र ब्रिटेन के बादशाह की तरह औपचारिक राजा रहना चाहते हैं और रियासत की जनता को उत्तरदायी शासन देना चाहते हैं। ब्रिटिश सरकार महाराजा जयसिह के उक्त इरादो को कब सहन करने वाली थी। परिणामस्वरूप ब्रिटिश सरकार ने महाराजा जयसिह के विरुद्ध अनेको झूँठे मन गढन्त आरोप लगा कर उनको अलवर राज्य के सिहासन से पदच्युत कर रियासत से निर्वासित कर दिया था। निर्वासन के दौरान 1937 मे महाराजा की मृत्यु फ्रांस की राजधानी पेरिस मे हुई थी।

अलवर की गद्दी के अनाधिकारी व्यक्ति का विरोध

महाराजा जयसिह की मृत्यु पर उनके द्वारा नियुक्त उनके उत्तराधिकारी श्री कल्याणसिह बीजवाड को राजसिहासन पर न वैठा कर राज्य की परम्परा एव नीतियो के विपरीत एक अग्रेज-भक्त सामन्त श्री गगासिह के पुत्र तेजसिह को राज्य सिहासन पर ब्रिटिश सरकार ने विठा दिया था। प० हरिनारायणजी ने अनधिकारी व्यक्ति को अलवर राज्य के सिहासन पर विठाने की ब्रिटिश सरकार की कार्यवाही का घोर विरोध व तीव्र आन्दोलन किया। जिसके परिणामस्वरूप पडितजी को उनके साथियो सहित वेडी डाल कर जेल भेजा गया था।

राज्य के प्रलोभन और आदर्शवादी चारित्रिक दृढ़ता

6 माह के कठिन कारावास की यातनाए भुगतने के तुरन्त बाद पडित हरिनारायण शर्मा को राज्य शासन की ओर से बडे-बडे प्रलोभन देकर यह आग्रह किया गया कि वे अग्रेजो का विरोध करना सदा के लिए बद करदें और अलवर के मौजूदा महाराजा का समर्थन करें। उन्हे कहा गया कि अपने तथा अपने परिवार के कष्टो से छुटकारा पाने के लिए उन्हे राज्य की उक्त पेशकश अवश्य कबूल करनी चाहिए। किन्तु पडितजी ने उक्त पेशकश व प्रलोभन को ठुकराते हुए राज्य शासन को साफ तौर पर बता दिया था कि वह तथा उनका परिवार किसी भी प्रलोभन के वशीभूत होकर अपने उद्देश्यो व लक्ष्य को त्यागने के बजाय भूखो मर जाना ज्यादा अच्छा समझता है। पडितजी के इस उत्तर से अलवर के महाराजा को बड़ी निराशा हुई थी। इसलिए राज्य सरकार ने पडितजी को उनके उद्देश्य और लक्ष्य प्राप्ति के रास्ते से पीछे हटाने के लिए बड़ी कठोर यातनाए दी थी। किन्तु पडितजी अपने लक्ष्य उत्तरदायी शासन की प्राप्ति के लिए मरते दम तक सघर्ष करते रहे।

प्रभावशाली व्यक्तित्व और कर्मठ साथियों का विश्वास

आप साढे छ फुट लम्बे, चौडे विशाल वक्षस्थल के व्यक्ति थे। आपका चेहरा रौबीला एव अत्यन्त प्रभावशाली था। आप स्थिर बुद्धि और स्वाभिमानी व्यक्ति थे। मित्र बनाने और उनके हृदय जीतने की आप मे अद्भुत क्षमता थी। आप अपने मित्रो व साथियो के दुःख व सब प्रकार के कष्टो के निवारण के लिए सदा यत्नशील रहते थे। राजनैतिक क्षेत्र मे और प्रजामडल के कार्य मे आपने सर्व श्री लक्ष्मणस्वरूप त्रिपाठी, नत्थूराम मोदी, इन्द्रसिंह आजाद, लाला काशीराम, रामजीलाल अग्रवाल, मास्टर भोलानाथ एव बाबू शोभाराम जैसे कर्मठ एव त्यागी कार्यकर्ताओ की एक सगठित टोली बनाली थी। इन सभी कार्यकर्ताओ ने अपने जीवन मे प्रजामडल के कार्य को ही प्रधानता दी और पडित हरिनारायण शर्मा के नेतृत्व के प्रति सदा निष्ठा और विश्वास रखकर कार्य किया।

लबी बीमारी और अवसान

आपके अ तिम दिनो मे लम्बी बीमारी के दौरान आपके सभी साथियो ने आपकी चिकित्सा एव देखभाल मे गहरी दिलचस्पी ली। किन्तु मास्टर भोलानाथ एव बाबू शोभाराम ने विशेष रूप से दो माह तक दिन रात लगातार पास रह कर सेवा सुश्रुषा की थी। दिनाक 21–9–1947 की मध्य रात्रि को प० हरिनारायण शर्मा ने बाबू शोभाराम की गोद मे अ तिम सास लेकर अपने पार्थिव शरीर का त्याग किया था।

राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के सूत्रधार

1. श्री हरिभाऊ उपाध्याय	अजमेर
2. श्री जय नारायण व्यास	जोधपुर
3. श्री माणिक्य लाल वर्मा	उदयपुर
4. पंडित हीरालाल शास्त्री	जयपुर
5. श्री गोकुल भाई भट्ट	सिरोही
6. मास्टर आदित्येन्द्र	भरतपुर
7. श्री भोलानाथ मास्टर	अलवर
8. श्री रघुवर दयाल गोयल	बीकानेर
9. प्रोफेसर गोकुल लाल आसावा	शाहपुरा
10. श्री भोगीलाल पंड्या	डूंगरपुर
11. श्री भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी	बांसवाड़ा
12. श्री अमृतलाल पायक	प्रतापगढ़
13. श्री पन्नालाल गोरीशंकर त्रिवेदी	कुशलगढ़
14. श्री ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु	धौलपुर
15 श्री कांतिचंद्र चौथाणी (पुरोहित)	किशनगढ
16. श्री रामचंद्र नरहरि बापट	अजमेर
17. श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा	अजमेर

स्व० हरिभाऊ उपाध्याय, 'दा साब' अजमेर.



जन्म : 9 मार्च, 1893

अवसान . 25 अगस्त, 1972

जन्म, परिवार और बचपन

राजस्थान मे गाँधीयुग का सूत्रपात करने वाले श्री हरिभाऊ उपाध्याय का जन्म तत्कालीन ग्वालियर राज्य के भौरासा ग्राम मे 9 मार्च सन् 1893 को हुआ था। उनकी प्रारभिक शिक्षा-दीक्षा भौंरासा मे ही हुई थी। उनके पिता श्री सिद्धनाथ उपाध्याय ग्वालियर राज्य मे पटवारी थे और उनके चाचा बैजनाथ उपाध्याय बरमडल मे तहसीलदार थे। 12 वर्ष की उम्र मे श्री हरिभाऊ उपाध्याय अपने चाचा के पास चले गए वही उनके भावी जीवन की बुनियाद पड़ी।

भावी जीवन की भूमिका

उनके चाचा के यहाँ उग्र मतवादी चार मराठी अखबार आते थे—लोकमान्य तिलक का 'केसरी' शिवराम महादेव पाजपे का 'काक' भोपटकर का 'भारत' और फड़के का 'हिन्दू मित्र' इनके अतिरिक्त हिन्दी की 'सरस्वती' मासिक पत्रिका भी उनके यहाँ आती थी। इन समाचार-पत्रो के निरन्तर स्वाध्याय से उनमे राष्ट्रीय भावना का उदय और विकास हुआ। बरमडल मे अपने चाचा के पास रहकर उनके नियन्त्रण और निर्देशन मे ही बालक हरिभाऊ उपाध्याय के भावी जीवन की भूमिका तैयार हुई।

'औदुम्बर' का संपादन

बरमडल के बाद श्री हरिभाऊ उपाध्याय आगे की शिक्षा के लिए वाराणसी भेज दिए गए। वहाँ उन्होंने कामच्छा स्थित हिन्दू कॉलेज मे प्रवेश लिया। उन दिनो यह कॉलेज थियोसोफिकल सोसाइटी और श्रीमती एनी बेसेंट के निदेशन मे चल रहा था। 1911-12

मे उनके चाचा प० वैजनाथ उपाध्याय ने 'औदुम्बर' नामक एक मासिक पत्र काशी से निकालने की योजना वनाई और उसके प्रकाशन तथा सपादन का सारा कार्यभार हरिभाऊ उपाध्याय को सौंप दिया। 'औदुम्बर' यद्यपि एक जातीय पत्र था फिर भी उसने साहित्यिक जगत मे अच्छी ख्याति प्राप्त करली थी।

'सरस्वती' तक पहुंचने का सेतु

श्री हरिभाऊ उपाध्याय का 'औदुम्बर' के सपादन के द्वारा, वाराणसी और हिन्दी के सभी उच्चकोटि के लेखको से सम्पर्क स्थापित हो गया हालाकि 'औदुम्वर' केवल तीन वर्ष तक ही चल सका था. लेकिन इसी 'औदुम्बर' ने हरिभाऊ उपाध्याय को 'सरस्वती' जैसे मासिक पत्र मे सपादन के लिए पहुचा दिया।

महावीर प्रसाद द्विवेदी का निमंत्रण

हरिभाऊ उपाध्याय का विचार पूना जाकर पूना मे 3 वर्ष मे वी ए. करके तिलक महाराज के 'केसरी' मे वर्तमान पत्र का अनुभव प्राप्त करके हिन्दी मे वैसा ही प्रभावशाली पत्र निकालने का था किन्तु बीच मे ही सरस्वती के स्वनामधन्य श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी का निमत्रण पाकर उनके सहायक के रूप मे काम करने 'सरस्वती' मे चले गए। इस समय तक वे मैट्रिक पास कर चुके थे। 1916 से 1919 तक श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने सरस्वती मे श्री महावीर प्रसाद के साथ सपादन का कार्य किया और फिर 1919 मे इन्दौर आ गए।

इन्दौर के हिन्दी विद्यालय में

1919 मे इन्दौर से श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने 'मालव मयूर' नामक मासिक पत्र निकालने की चेष्टा की लेकिन वहाँ के दीवान ने आज्ञा निकाल कर पत्र का प्रकाशन रोक दिया। एकाव वर्ष के लिए हरिभाऊ उपाध्याय गणेशशकर विद्यार्थी के 'प्रताप' तथा 'प्रभा' मे साथ-साथ सपादन का कार्य करने लग गए। इन्ही दिनो उनका सम्पर्क श्री माखनलाल चतुर्वेदी से हुआ। कानपुर से इन्दौर चले आने पर श्री हरिभाऊ उपाध्याय इन्दौर के हिन्दी विद्यालय मे असिस्टेन्ट हैडमास्टर के पद पर काम करने लगे, इस अवसर पर उनकी पहली पत्नी श्रीमती द्रौपदी और उनके पुत्र का देहान्त हो गया।

अहमदावाद में हिन्दी 'नवजीवन' के संपादक

सन् 1920 से 25 तक श्री हरिभाऊ उपाध्याय महात्मा गाँधी के सान्निध्य मे रहे। वैजनाथ महोदय, शिखरे साहू तथा शकरराव दुवे ने मत्रणा करके गाँधीजी को हरिभाऊ उपाध्याय के सम्बन्ध मे पत्र लिखा। श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भी जमनालालजी वजाज को पत्र लिखा और उस मत्रके परिणामस्वरूप वे महात्मा गाँधी की सेवा मे पहुँच गए। गाँधीजी साप्ताहिक पत्र 'यग इडिया' के हिन्दी प्रकाशन की सोच रहे

थे। यह भार जमनालालजी बजाज पर था। जमनालालजी चाहते थे कि यह पत्र वर्धा से निकाला जाए परन्तु अत मे हिन्दी 'नवजीवन' का प्रकाशन अहमदाबाद से हुआ। प्रारम्भ मे हिन्दी 'नवजीवन' पर सपादक का नाम गाँधीजी का ही जाता था परन्तु जब गाँधीजी की गिरफ्तारी साबरमती आश्रम मे हो गई और उन्हें छ वर्ष की सजा सुनाई गई तब 'नवजीवन' का सारा भार हरिभाऊ उपाध्याय पर ही आ पडा और सम्पादक के स्थान पर भी उन्ही का नाम जाने लगा।

देश के बड़े-बड़े नेताओ का सहज सपर्क

साबरमती रहते हुए देश के बडे-बडे नेताओ का सहज ही सम्पर्क और समागम होता रहा। नवजीवन और मयूर के कारण इधर-उधर देश मे हरिभाऊ उपाध्याय के नाम से विद्वान और राष्ट्रीय कार्यकर्ता परिचित होते रहे। यहाँ रहते हुए श्री हरिभाऊ उपाध्याय का परिचय राजस्थान के विजयसिंह पथिक, रामनारायण चौधरी, शकरलाल वर्मा, क्षेमानद राहत और नरसिंहदास बाबाजी से भी हुआ।

नेहरूजी से परिचय

साबरमती आश्रम के राष्ट्रीय विद्यापीठ मे जवाहरलाल नेहरू से उनकी पहली बार भेंट हुई थी जब उनका परिचय कराया गया तो नेहरूजी ने अत्यन्त स्नेह और उत्साह से हरिभाऊ उपाध्याय को अपनी बाहो मे भर लिया।

महात्मा गांधी के सचिव

1923 मे महात्मा गाँधी के सचिव की हैसियत से हरिभाऊ उपाध्याय ने मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, पजाब आदि प्रातो की यात्रा की थी।

माताजी का हृदय परिवर्तन

इस समय तक श्री हरिभाऊ उपाध्याय का दूसरा विवाह श्रीमती भागीरथी देवी के साथ हो चुका था। शुरू मे तो हरिभाऊ उपाध्याय अकेले ही आश्रम मे रहते थे परन्तु बाद मे सपरिवार साबरमती मे रहने लग गए। उनकी माताजी बहुत ही पुराने विचारो की स्त्री थी। विदेशी वस्त्र तथा तमाम जेवरात पहने और घूघट निकाले आश्रम मे रहने लगी। यो तो भागीरथी देवी भी उन्ही का अनुकरण करने पर विवश थी, परन्तु पर्दे के बारे मे पहले से ही छूट ले ली गई थी। तीन चार दिन के बाद उनके माताजी ने जेवर पहनना बद कर दिया, घूघट भी छोड दिया और खादी की साडी की फरमाइश की। हरिभाऊ उपाध्याय को यह आकस्मिक परिवर्तन अच्छा लगा परन्तु उन्होने यो ही अपनी माताजी से पूछा कि यह सब क्यो किया? उनका उत्तर बडा ही सहज, स्वाभाविक और सही था कि यहाँ तो जवान बहू बेटियाँ भी जिन्हे इस उम्र मे गहने और रगीन कपडे पहिनने चाहिए वे सब सफेद खादी की साडी पहनती हैं और गहने-वहने कुछ नही पहनती। यहाँ सभी स्त्रियें खुले मुँह निकलती है तो मुझ बुढिया को यह सब शौक करते हुए शर्म आती है।

राजस्थान भेजे जाने की चर्चाएं

इसी अवसर पर हरिभाऊजी की राजस्थान आने की चर्चाए चली अत मे काका कालेलकर, मगनभाई गाँधी तथा महादेव देसाई तीनो की एक राय से उनका राजस्थान जाना तय हुआ, पर इस शर्त पर कि हिन्दी 'नवजीवन' के सपादन का भार उन्ही पर रहेगा। वापू को उसकी चिंता नही करनी पडेगी।

सस्ता साहित्य मंडल स्थापित करने की प्रेरणा

भिक्षु अखण्डानंदजी का 'सस्ता साहित्यवर्द्धक कार्यालय' अहमदावाद मे देखकर जमनालाल वजाज तथा हरिभाऊ उपाध्याय को प्रेरणा मिली कि हिन्दी मे भी इस तरह की एक प्रकाशन सस्था खोली जाए जिसमे गाँधीजी के मिशन की पूर्त्ति का अच्छा साहित्य प्रकाशित किया जाए। अत मे अजमेर मे सस्ता साहित्य मडल की स्थापना का निश्चय हुआ। जीतमल लूणिया उसके मत्री वनाए गए।

कर्मभूमि राजस्थान मे आगमन

1926 मे श्री हरिभाऊ उपाध्याय राजस्थान आ गए और पूरे 45 वर्ष तक राजस्थान के होकर रहे तथा राजस्थान के राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक क्षेत्रो मे योगदान और नेतृत्व करते रहे।

राजस्थान में विविध प्रवृत्तियो का प्रारंभ

उनके राजस्थान आते ही सस्ता साहित्य मंडल की देखभाल के अलावा खादी ग्रामोद्योग, हरिजन सेवा, मजदूर आन्दोलन और राष्ट्रीय शिक्षा मे उनकी सच्ची लगन लगने लगी। इन्दौर के मजदूरो की हडताल, नीमच के हरिजनो के वहिष्कार का मामला, राजस्थान हरिजन सेवक सघ की अध्यक्षता, खादी फेरी प्रदर्शनी, दाणी राष्ट्रीय विद्यालय की अध्यक्षता और सन् 1927 मे गाँधी आश्रम हटूंडी की स्थापना आदि के कार्य किए।

बिजोलियाँ के दूसरे किसान सत्याग्रह का नेतृत्व

बिजोलियाँ का प्रथम सत्याग्रह एक अश में विफल हो जाने के वाद हरिभाऊ उपाध्याय के निदेशन मे और माणिकलाल वर्मा के नेतृत्व मे दूसरे सत्याग्रह की तैयारी हुई। ऊपरमाल पचायत के सलाहकार पथिकजी के त्यागपत्र देने के वाद हरिभाऊ उपाध्याय सर्व सम्मति से उसके सलाहकार नियुक्त हुए। अत मे महात्मा गाँधी और जमनालाल वजाज के वीच वचाव से सत्याग्रह सफल हुआ और किसानो को जमीने वापिस दिलवाने की वात तय हुई।

गांधी आश्रम, हटूंडी और गांधी सेवा संघ

1 अगस्त 1927 को गांधी आश्रम हटूंडी की स्थापना हुई, गांधी सेवा सघ की राजस्थान शाखा वनी। हरिभाऊ उपाध्याय उसके सचालक वनाए गए, वावा नरसिंहदास

और बैजनाथ महोदय आदि उनके प्रथम सदस्य बने। शुरू मे मडल तथा खादी के कार्यकर्ता अजमेर मे रहते थे। हटूंडी मे आश्रम बन जाने के बाद प्राय सभी लोग वही हटूंडी मे रहने लगे। सत्याग्रह आश्रम साबरमती के आदर्श पर ही वहाँ की दिनचर्या रखी गई। कोई नौकर नही रहा। पाखाना, रास्ता, घर, कुँए की सफाई से लेकर सारा काम आश्रमवासी स्वय ही करते थे।

अर्जुनलाल सेठी की उग्र राजनैतिक विचार धारा

एक बार अर्जुलाल सेठी हरिभाऊ उपाध्याय से मिलने हटूंडी गए और उनसे कहा कि अजमेर कांग्रेस कमेटी के प्रधान बन जाइए। हरिभाऊ उपाध्याय ने तब तो उन्हे यह जवाब दिया था कि कांग्रेस के दो काम है—एक राजनैतिक और दूसरा रचनात्मक। राजनीतिक आप कर रहे हैं, मुझे रचनात्मक काम मे ही लगा रहने दीजीएगा। आपके काम मे जितना सहयोग मुझ से चाहिए ले लीजिए। हम गाँधी के मार्ग के अधिक हैं इस सीमा मे ही हम कांग्रेस की सेवा कर सकते हैं। लेकिन कुछ वर्षो बाद ही कांग्रेस सगठन को अपने अधिकार मे लेने के लिए हरिभाऊ उपाध्याय और अर्जुनलाल सेठी मे भयकर सघर्ष हुआ। अर्जुनलाल सेठी की उग्र विचार धारा कांग्रेस को एव गांधीजी को स्वीकार नही थी और अर्जुनलाल सेठी के रहते हुए अजमेर और अजमेर द्वारा राजस्थान मे कांग्रेस का स्वरूप गांधीवादी नही बन सकता था। अत सस्थाओ, साधनो और व्यक्तियो ने सम्मिलित प्रयत्न करके अर्जुनलाल सेठी को कांग्रेस से अपदस्थ करने का कार्य किया।

अजमेर से त्याग भूमि का प्रकाशन

सस्ता साहित्य मडल का प्रकाशन कार्य प्रारभ हो गया था। मालव मयूर साबरमती से सपादित होकर काशी से प्रकाशित हो रहा था। अब जीतमल लूणिया के अजमेर आ जाने के बाद उसका प्रकाशन अजमेर से होने लग गया और आगे चलकर वही पत्र घनश्यामदास बिडला के सरक्षण मे 'त्यागभूमि' के नाम से विकसित रूप मे निकलने लगा। उस समय त्यागभूमि मे क्षेमानद राहत, रामनाथ सुमन, मुकुटबिहारी वर्मा, कृष्णचद्र विद्यालकार और चद्रगुप्त वार्ष्णेय सहायक के रूप मे कार्य करते थे।

नमक सत्याग्रह के प्रथम डिक्टेटर

लाहौर कांग्रेस मे स्वतत्रता की घोषणा होने के बाद ही सत्याग्रह की तैयारियां होने लगी हरिभाऊ उपाध्याय राजस्थान के प्रथम डिक्टेटर बनाए गए 20 अप्रैल 30, को पूरी तैयारी करने के बाद राजस्थान मे सत्याग्रह शुरू कर दिया गया। इसी दिन अजमेर मे हरिभाऊ उपाध्याय के नेतृत्व मे और ब्यावर मे नित्यानद नागर के नेतृत्व मे नमक कानून तोडा गया।

जेल जीवन में ग्रंथों का लेखन कार्य

हरिभाऊ उपाध्याय को दो वर्ष की सजा दी गई। उन्हे जेल के सीखचो मे बद कर दिया गया जिसमे बदमाशो को ही रखा जाता था। 1930 के जेल जीवन मे हरिभाऊ

उपाध्याय ने हिन्दी गीता तैयार की। गीता का समश्लोकी अनुवाद किया था। जेल से बाहर आने के बाद वह अनुवाद कही खो गया था। तो फिर भारत छोडो आन्दोलन मे दुबारा वह अनुवाद किया गया जो बाद मे प्रकाशित हुआ। हिन्दी मे सम्भवत. यह पहला ही समश्लोकी अनुवाद था। जेल जीवन मे ही उन्होने 'भागवत धर्म या कृतार्थ जीवन' नामक महत्वपूर्ण पुस्तक के 23 अध्याय लिखे थे, जिसमे 18 अध्याय तक का पहला भाग प्रकाशित हो चुका है उस पर उत्तरप्रदेश सरकार ने रु० 800/– का पुरस्कार भी हरिभाऊ उपाध्याय को दिया। 1930 की जेल यात्रा मे हरिभाऊजी ने एक ओर पुस्तक लिखने की शुरूआत की थी जो बाद मे पूरी होकर 'स्वतत्रता की ओर' नाम से सस्ता साहित्य मडल से प्रकाशित हुई।

1932 के सत्याग्रह में महिलाओं का महत्वपूर्ण योग

नमक सत्याग्रह के सिलसिले मे गाँधी-ईर्विन सधि (अस्थाई) हुई थी, उसके पश्चात् गोलमेज कान्फ्रेंस के बाद दुबारा सत्याग्रह करना पडा जिसमे महिलाओ ने भी बहुत अधिक भाग लिया। हरिभाऊ उपाध्याय ने इस सत्याग्रह के सम्बन्ध मे राजस्थान और मध्य-भारत का व्यापक दौरा किया, जिसके फलस्वरूप इन्दौर, उज्जैन, नीमच, अजमेर से काफी सख्या मे महिलाए सत्याग्रह मे सम्मिलित होकर जेल गई। इसमे पहला नम्बर सारे भारत मे सत्याग्रह आश्रम साबरमती का और दूसरा नम्बर अजमेर का था। इनमे कई महिलाओ के साथ हरिभाऊ उपाध्याय की पत्नी भागीरथीदेवी ने भी उत्साह से भाग लिया। उन्हें छ. महीने की सजा हुई और उन्हे उत्तरप्रदेश की फतहगढ जेल मे रखा गया।

हम लौटकर भी आयेंगे या नहीं ?

भारत छोडो आन्दोलन के समय जब हरिभाऊ उपाध्याय कार्यसमिति की मीटिंग के लिए बम्बई गए तो हरमाडा मे अपनी पत्नी से कह गए कि अब स्वाधीनता के इस अतिम सग्राम मे हम गोलियो से भी उडाए जा सकते है। पता नही लौटकर भी आयेंगे या नही। अत आज से तुम अपने माथे का सिंदूर पोछ डालो। यदि लौटकर आ गए तो फिर तिलक लगा लेना।

अजमेर नगरपालिका और विधान सभा में कांग्रेस का बहुमत

अजमेर-मेरवाडा की सलाहकार समिति मे गतिरोध उत्पन्न हो गया था। बाद मे अजमेर मे 'सी' स्टेट की स्थापना हुई। विधानसभा के चुनाव की ध्वनिया निकलने लगी। उसके पहले अजमेर का म्युनिसिपल चुनाव होने वाला था। उसकी सफलता के लिए आम राय थी कि प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष पद हरिभाऊ जी सम्हालें। बालकृष्ण गर्ग ने इस्तीफा दिया और हरिभाऊजी की अध्यक्षता मे म्यु० चुनाव तथा विधानसभा के चुनाव बडी सफलता से लडे गये। दोनो मे कांग्रेस का बहुमत आया।

अजमेर स्टेट में 4 वर्ष तक कांग्रेस का शासन

हरिभाऊजी के नेतृत्व में 4 साल तक अजमेर-राज्य का शासन चला। प्रारम्भ मे विकास कार्यों मे अजमेर का नम्बर 24 वा था। पाँच साल के शासन मे 6 ठा नम्बर हो गया। कुछ विषयो मे तो दूसरा नम्बर रहा।

जनता के लिए कल्याणकारी कार्य

गाँवो की उन्नति की ओर सर्वाधिक ध्यान दिया गया। सडकें, सिचाई के साधन, तथा शिक्षा प्रचार पर अधिक जोर दिया गया। 750 गाँवो मे से लगभग 400 गाँवो मे प्राथमिक पाठशालाए खुली। जहाँ भी अनुकूलता पाई गई वहाँ कुँए खोदने या पानी रोकने के काम किये गये।

भारत सेवक समाज का कार्य

हरिभाऊजी के सहयोग से भारत-सेवक समाज के द्वारा इतना अच्छा काम हुआ था कि खुद नन्दाजी ने प० जवाहरलालजी से उनकी प्रशसा की थी। बालकृष्ण गर्ग ने प्रान्तीय काँग्रेस कमेटी की अध्यक्षता से त्याग-पत्र देकर भारत-सेवक-समाज का सयोजक पद स्वीकार किया था। प्रशासन मे मुख्य मत्री रहते हुए अजमेर के प्रशासन में कई अवसर ऐसे आये जिनमें हरिभाऊजी को सत्याग्रह का अवलम्बन लेना पडा। एक अवसर तबादले के सिलसिले में, दूसरा अकाल--कैम्प खुलवाने के एक गाँव वालो के विरोध प्रदर्शन करने पर, एक और मार्ग के सिलसिले में आदि।

पंडितजी ने इस्तीफा फाड फैंका

अजमेर भी अविश्वास-प्रस्ताव की चर्चा से बचा न रहा। जब यह चर्चा चली तो हरिभाऊजी ने प० जवाहर लालजी के हाथ में अपना इस्तीफा रख दिया और कहा कि मैं मन्त्रिपद का शौकीन नही हू। थोडे भी साथी नही चाहते हो तो मुझे इस पद पर नही रहना है। पडित जी ने इस्तीफा फाड फैंका और कहा अपना काम करते रहो।

दृढ़ता और कुशलता से जटिल समस्याओ का समाधान

कई जटिल समस्याओ को अपनी दृढता और कुशलता से उन्होने बडी आसानी से हल किया। इसमें अजमेर की रामलीला, वीर के तालाब के पानी का प्रश्न, विधान सभाइयो के सरकारी अधिकारियो से काम निकलवाने की प्रवृत्ति, मत्रि मडल मे विभागो का बटवारा, तीनो स्वतत्र प्रकृति के मत्रियो को स्वतत्रता देने का अवसर, विधायको पर अनुशासन, राज्य सेवाधिकारियो से काम लेने आदि की समस्यायें प्रमुख थी।

अजमेर का राजस्थान में विलय

अजमेर के राजस्थान में विलय तथा राजस्थान की राजधानी क्या, हो इस विषय मे हरिभाऊजी ने अजमेर के पक्ष में कोई बात न उठा रखी। यद्यपि सरदार पटेल ने जयपुर

को राजधानी वना डाला था फिर भी हरिभाऊजी के प्रयत्न से पंतजी को एक कमेटी विठानी पडी । यह दूसरी वात है कि उसमें अजमेर के पक्ष में फैसला नही हुआ ।

साहब नहीं दा–साहब

जैसे ही हरिभाऊजी अजमेर राज्य के मुख्य मत्री वने, रिवाज के मुताबिक चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी उन्हे साहव कहने लगे, तो हरिभाऊजी ने कहा कि मेरा नाम क्यो विगाडते हो ? मैं साहव नही दा–साहव हूँ । हरिभाऊजी का दूसरा नाम ही दा-साहव पड गया जैसा कि कालेलकरजी का नाम काका साहव ।

प्रभु कृपा और चमत्कार जैसी घटनाएं

प्रशासन काल मे भी प्रभु-कृपा या चमत्कार जैसी कई घटनाएं हरिभाऊजी के जीवन में हुई है जिनका वर्णन उन्होने भिन्न-भिन्न अवसरो पर किया है । वे महात्मा गाँधी के इस विश्वास को सही मानते थे कि अभी चमत्कारो का युग गया नही है ।

राजस्थान के मंत्री मंडल में अजमेर का प्रतिनिधित्व

सन् 1956 में अजमेर राज्य का विलय राजस्थान मे हुआ और तव अजमेर-मेरवाडा राजस्थान राज्य का ही अग वन गया । अव तक अजमेर "सी" श्रेणी का राज्य था और राजस्थान "वी" श्रेणी का, लेकिन इस नई व्यवस्था के द्वारा यह श्रेणी विभाजन वहुत अशो तक समाप्त कर दिया गया और देशी रियासतो से बने हुए राज्यो को भी वगाल, विहार, उडीसा आदि राज्यो के समान "ए" श्रेणी के राज्यो का दर्जा दे दिया गया । विलय के पूर्व यह तय कर लिया गया था कि अजमेर राज्य के मन्त्रियो मे से किसी एक को मुख्य मत्री की सलाह से राजस्थान के मन्त्रि मण्डल मे ले लिया जायगा । अनेक स्थानो पर मुख्य मत्री को ही लिया गया था । किन्तु जैसे ही यह प्रश्न सामने आया हरि॰भाऊजी ने अपनी अनिच्छा प्रकट की । जैसे-तैसे सत्ता से चिपके रहने मे उनकी कोई दिलचस्पी नही थी । अत उन्होने राजस्थान के मुख्य मत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया से सिफारिश की कि उनके मन्त्रि मण्डल के एक साथी श्री वृजमोहन शर्मा को वे राजस्थान के मन्त्रि-मण्डल मे अजमेर राज्य के प्रतिनिधि के रूप मे ले लें । श्री सुखाडिया ने इस सिफारिश को मान लिया ।

नेता पद के लिए चुनाव लड़ने का सुझाव

लेकिन इसके कुछ ही समय वाद राजनीति मे दिलचस्पी रखने वाले कुछ मित्र एकाएक श्री हरिभाऊजी से मिलने के लिए हटूण्डी (अजमेर) आये । उनकी यात्रा कांग्रेस पक्ष के नेता पद के लिये हरिभाऊजी को तैयार करने के उद्देश्य से हुई थी । उन्होने बताया कि अजमेर राज्य के विलय से राजस्थान मे कांग्रेस पक्ष के नेता का चुनाव होगा । अत इस पद के लिए उन्हे खड़ा होना चाहिये । उनका कहना था कि हरिभाऊजी स्वभाव से

एकता प्रेमी हैं, पुराने सेवक हैं और राजस्थान के कार्यकर्ताओ से सुपरिचित हैं। यदि वे नेता पद के लिए खडे होते हैं और चुन लिये जाते हैं तो उससे दलबन्दी या फूट समाप्त हो जायेगी और सब लोग मिल जुलकर काम कर सकेंगे।

नेता पद के चुनाव की तैयारियें

इन मित्रो की बातचीत ने इस सभावना को बढा दिया। वे नेता पद का चुनाव लडने के लिये सोचने लगे। उन्हे लगा कि ऐसा करने मे कोई बुराई नही है। नेता बनकर वे सबको सहज ही निकट ला सकेंगे। किन्तु चुनाव लडने का निश्चय करने के पूर्व, उन्होने राजस्थान प्रदेश काँग्रेस के अध्यक्ष जय नारायणजी व्यास से सलाह लेना उचित समझा। वे व्यासजी से मिले। व्यासजी ने कहा आप सुखाडियाजी मे वरिष्ठ हैं अत यदि आप खडे होते हैं तो मेरा समर्थन आपको मिलेगा। अब उन्होने मोहनलालजी सुखाडिया और माणिक्यलालजी वर्मा से बात करने का भी इरादा किया। लेकिन दैवयोग कुछ ऐसा हुआ कि इन दोनो से बात नही हो सकी। हरिभाऊजी को यह खटका तो सही लेकिन क्या करते ? चुनाव लडने की घोषणा हो चुकी थी। दोनो ओर से प्रचार प्रारम्भ हो गया।

चुनाव का स्तर

चुनाव के दो-चार दिन पूर्व वे जयपुर पहुँचे। उनकी तीव्र इच्छा थी कि चुनाव सद्भावना के वातावरण मे हो। यदि चुनाव कटुता पैदा करें तो वे उससे हट जाना पसन्द करेंगे। हरिभाऊजी ने कहा कि हमे अपनी राजनीतिक रीति-नीति का स्तर ऊँचा उठाना है। परस्पर दुश्मनी नही फैलानी है। मित्रता और सद्भाव बढाना है। यदि हम इसका ध्यान नही रखते तो हमारी जीती हुई लडाई भी बेकार हो जायेगी।

चुनाव का संघर्ष टला

चुनाव के वातावरण मे जो गर्मी आ गई थी वह भी अपना काम करती ही रही। न चाहते हुए भी गलत फहमियाँ बढने लगी, दलबन्दी मजबूत होने लगी, फूट फैलने लगी, और ऐसा वातावरण बन गया कि जिस शुभ उद्देश्य को सामने रख कर चुनाव लडने का निश्चय किया गया था उसका श्रीगणेश ही गलत होता हुआ दिखाई देने लगा। कई मित्र और साथी धर्म सकट मे पड गये। उनके सामने प्रश्न आया कि वे सुखाडियाजी का समर्थन करें या उपाध्यायजी का। ऐसी स्थिति मे सघर्ष को टालना ही हितकर प्रतीत होने लगा। फलत दोनो मुख्य मत्री और दोनो प्रदेशाध्यक्षो, इन चार व्यक्तियो की एक बैठक हुई। बैठक मे सभी ने एक स्वर से यह कहा कि चुनाव के सघर्ष को टाला जाना चाहिये। लेकिन प्रश्न यह उठा कि सघर्ष को टाला कैसे जाय ? सघर्ष तो तभी टल सकता था जबकि दोनो उम्मीदवारो मे से कोई अपना नाम वापिस ले ले। अत. किससे कहा जाय कि वह अपना नाम वापिस ले लें। एक मत यह था कि सुखाडियाजी बैठ जाय लेकिन उनके मित्रो ने इसे प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया था। दूसरा मत यह था कि उपाध्यायजी ही

बैठ जाय । उपाध्यायजी ने आगे बढ कर अपना नाम वापिस लेने का निश्चय घोषित कर दिया । इस घोषणा से इस मौके पर सघर्ष टल गया और सुखाडियाजी राजस्थान विधानसभा दल के नेता घोषित कर दिये गये ।

राजस्थान के व्यापक हित में पीछे हट गए

यह सब बहुत सद्भावना के वातावरण मे हुआ । उपाध्यायजी इसमे जितने उत्साह से आगे बढे थे उतनी ही प्रसन्नता से पीछे हट गये । वे राजस्थान के व्यापक हित को सामने रख कर नेता पद के लिये खडे हुए और अब उसी की रक्षा के लिये बैठ भी गये । इसका परिणाम भी अच्छा ही निकला । उनके खडे होने से उन सब कार्यवाहियो की तरफ सबका ध्यान खिच गया जो ठीक नही हो रही थी । उनके हट जाने से ऐसा सद्भावना का वातावरण बना जिससे आगे का काम सरल हो गया ।

राजस्थान मंत्रिमडल में सम्मिलित

इस प्रकार राजस्थान मे दुबारा सुखाडिया मत्रिमडल बना और हरिभाऊ उपाध्याय भी पारस्परिक समझौते के अनुसार सुखाडिया मत्रिमडल मे सम्मिलित हुए । मन्त्रीपद का कार्य प्रारम्भ करने के पूर्व उन्होने यह ठीक समझा कि इस नई परिस्थिति और नये वातावरण के अनुरूप उन्हे अपने व्यवहार के नियम भी बदलने चाहिये । अजमेर राज्य और राजस्थान की परिस्थितियो मे बहुत अन्तर है । उसके मन मे ढेवरभाई के ये शब्द भी गूँज रहे थे—"यहाँ आपका दूसरा नम्बर है । यहाँ आप अपने मत का आग्रह न रखें ।" अजमेर मे वे मुख्यमत्री थे । उन्हे वहाँ अपने कनिष्ठ साथियो से काम लेना था । यहाँ उन्हे अपने कनिष्ठ साथियो और नेताओ के साथ काम करना था । एक बार दल के नेता-पद के लिये खडे होने के कारण बहुत से लोग उन्हे शका की दृष्टि से तो देखते ही थे, यह भी सभव था कि कुछ उन्हे अपनी महत्वाकाक्षाओ के मार्ग मे बाधक भी मानते । अत: विधानसभा दल के नेता श्री मोहनलाल सुखाडिया, प्रशासन और स्वय अपने हित मे यह ठीक समझा कि वे अपने लिये कुछ नियम बनाले और मन्त्रीत्व काल मे उनका पूरा-पूरा ध्यान रखें । वे नियम इस प्रकार थे—

मंत्रीत्व काल में पालन करने के लिए कुछ विशेष नियम

1 अवस्था में, सार्वजनिक जीवन मे अपने से छोटे और कम उम्र होते हुए भी मुख्यमत्री के नाते घर मे तथा बाहर सब जगह उनके सम्मान मे अपनी ओर से कोई कसर न रहने देंगे । किसी को यह आशका भी न हो कि वे अपनी वरिष्ठता के जोश मे अपने नेता के महत्व की उपेक्षा करते है अथवा अपने साथी मन्त्रियो का कम सम्मान करते है ।

2 वे किसी भी साथी अथवा नेता के स्वार्थ, हित या महत्वाकाक्षा मे अनजाने मे भी बाधक नही बनेंगे । किसी को भी यह आशका न होने देंगे कि उनके राजस्थान मे और विशेषत. मन्त्रिमण्डल मे आने से उनकी महत्वाकाक्षा को ठेस लगी है ।

3. अपना रहन-सहन पूर्ववत् सादा रखेंगे। सबके साथ अपना व्यवहार ऐसा रखेंगे कि किसी को उनसे ईर्ष्या-द्वेष न हो।

4 व्यास-दल के प्रति सहानुभूति अवश्य रखेंगे लेकिन इस बात का भी ध्यान रखेंगे कि कही सुखाडियाजी और उनके साथी इस कारण सकट मे न पड जाए। न ही व्यास-दल के लोगो को यह शिकायत हो कि मन्त्रिमण्डल मे जाकर दा साहब बदल गये हैं। लेकिन वे अपने मन्त्रिमण्डल के साथियो को भी यह अनुभव न होने देंगे कि वे उनके साथ नही है।

5 जब तक वे मन्त्रिमण्डल मे रहेगे, कांग्रेस सगठन सम्बन्धी मामलो मे नही उलझेंगे। उनका पहला काम है प्रशासन मे सहयोग देना। उसे धक्का न पहुँचाते हुए कांग्रेस सगठन मे जो कुछ दिलचस्पी ले सकेंगे, लेंगे। क्योकि सगठन मे दिलचस्पी लेने से ऐसी स्थिति पैदा हो सकती है कि उनके और सुखाडियाजी के बीच मतभेद हो जाय। अत इस स्थिति को जहाँ तक हो सके टालना ही हितकर होगा।

6. वे मन्त्रिमण्डल मे तथा पत्रावलियो मे अपनी राय अवश्य प्रकट करेंगे। किन्तु अन्तिम रूप मे मुख्यमन्त्रीजी की राय को ही स्वीकार करके उसका पालन करेंगे। किसी बडी बात के आ पडने पर विरोध भी करेंगे और त्यागपत्र तक देने के लिए तैयार रहेगे लेकिन मन्त्रिमण्डल मे सकट नही पैदा करेंगे।

7 एक मन्त्री की हैसियत से उन्हे जो उचित शिष्टाचार और सम्मान मिलना चाहिये उससे अधिक की अपेक्षा किसी से नही रखेंगे। वे किसी को यह महसूस भी नही होने देंगे कि उनको वरिष्ठता का ख्याल है।

8 दिल्ली मे उनका जो प्रभाव है, मित्रता और स्नेह है उससे अपने किसी साथी को आतकित न होने देंगे। इसके लिए आवश्यक हुआ तो वहाँ आना-जाना और उनसे मिलना-जुलना कम कर देंगे। वे सरकारी काम-काज से ही दिल्ली जायेंगे। यदि मुख्यमत्रीजी ने कोई काम बताया तो दिल्ली जाकर उसे करवा देंगे और कही किसी से मिलना जुलना हुआ तो उसका हल मुख्यमत्री अथवा सबधित मत्री को बता देंगे।

9 किसी को यह अनुभव नही होने देगे कि वे अपना एक अलग दल सगठित कर रहे हैं।

10 सुखाडियाजी के प्रति अत्यन्त आदर और स्नेह रखते हुए भी उनके वहाँ बिना काम नही जायेंगे ताकि किसी को ख्याल न हो कि वे उनकी निकटता का आश्रय लेकर अपना प्रभाव बढाना चाहते हैं।

11 यदि कही सुखाडियाजी और उनके साथियो के विरुद्ध असतोष हुआ, गलत फहमी हुई तो उसे दूर करने का प्रयत्न करेंगे। जो व्यक्ति उनसे दूर है उन्हे उनके निकट लाने का प्रयत्न करेंगे।

12 अजमेर राज्य की पुरानी नई सभी समस्याओ को मुख्यमत्रीजी पर छोड देंगे। क्योकि ऐसा न करना सकीर्णता होगी। अब यह उत्तरदायित्व सारे मन्त्रिमण्डल का है। यदि मन्त्रिमण्डल ने उसकी उपेक्षा की तो अवश्य ध्यान देंगे।

हरिभाऊजी ने इन नियमो को भरसक निभाने का प्रयत्न किया । मूलत' सद्भावना बढाने और प्रशासन को अच्छी तरह चलने मे इससे मदद मिली ।

राजस्थान के राज्य मंत्रिमंडल में 10 वर्ष तक

राजस्थान मत्रिमडल मे हरिभाऊ उपाध्याय करीब 10 वर्ष तक मत्री रहे । उन्होने शिक्षा, वित्त, योजना, ममाजकल्याण और खादी ग्रामोद्योग जैसे विभागो को सम्हाला था और अपने मत्रीत्वकाल मे गांधी दर्शन के अनुमार गांधी मार्ग पर निरन्तर लोगो को आगे बढाने का प्रयास किया था ।

पद, अलंकरण और अभिनन्दन

वे कुछ समय तक राजस्थान खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष रहे थे और करीब 5 वर्ष तक राजस्थान साहित्य अकादमी के भी अध्यक्ष रहे । वे प्रान्त मे कई सस्थाओ के द्वारा सम्मानित किए जा चुके थे । राजस्थान साहित्य अकादमी ने उन्हे 'मनीषी' के अलकरण से सुशोभित किया था । वे राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर के पिछले पांच वर्षों से कुलपति थे । राजस्थान सस्कृत ससद जयपुर की ओर से आयोजित नागरिक अभिनदन मे उन्हे एक विशाल अभिनदन ग्रंथ भेंट किया गया था ।

भारत सरकार ने उन्हे पद्म विभूषण से अलकृत किया था ।

25 अगस्त 72 को अवसान

श्री हरिभाऊ उपाध्याय 25 का अगस्त 72 रात्रि के एक बजे हृदय रोग से निधन हो गया वे दो वर्ष से अस्वस्थ चल रहे थे ।

अस्सी वर्षीय उपाध्यायजी के निधन का समाचार सुनते ही राज्य भर मे शोक छा गया, सभी स्कूल, कालेज तथा सरकारी कार्यालय उनके सम्मान मे बद कर दिये गए ।

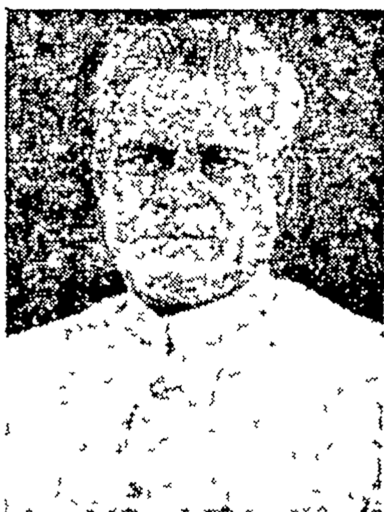
उनके निधन का समाचार मिलते ही अजमेर की जनता अपने प्रिय नेता के दर्शन के लिए उमड पडी और उनके निवास स्थान पर भारी भीड जमा हो गयी, जिसे बडी मुश्किल से नियत्रित किया जा सका ।

शव यात्रा मे हजारो की सख्या मे लोग शरीक हुए और उन्होंने शव पर पुष्प मालाए चढ़ायी । निधन का समाचार पाते ही जयपुर से मुख्यमत्री श्री बरकतुल्लाखां तथा मत्रिमडल के अन्य सदस्य, विधायक तथा उपाध्यायजी के प्रशसक अजमेर पहुँच गये पूरी श्रद्धा, स्नेह और सम्मान के साथ राजस्थान के लोगो ने हरिभाऊ उपाध्याय को अतिम विदाई दी ।

गीता और रामायण

उपाध्यायजी अपने जीवन के अतिम क्षणो तक वैदिक साहित्य तथा धर्म-ग्रथो का अध्ययन करते रहे । गीता उनकी पथ प्रदर्शक थी और रामायण कर्तव्य-दर्शक । वे दोनो ही ग्रंथ उनके साथ अतिम क्षणो तक रहे ।

लोकनायक स्व० जयनारायणव्यास, जोधपुर.



जन्म . 18 फरवरी, 1899

अवसान 14 मार्च, 1963

संयुक्त राजस्थान संघ के स्वप्नद्रष्टा और निर्माता

राजस्थान के लोक नेताओ मे श्री जयनारायण व्याम ही वे पहले दूरदर्शी व्यक्ति थे जिन्होने राजपूताने की समस्त रियासतो का विलीनीकरण करके एक सघ राज्य बनाने का नारा दिया था। उनका यह दृष्टिकोण 1927–28 मे विकसित होने लग गया था और जब तक राजपूताने की सभी रियासतो के विलय के बाद एक सयुक्त राजस्थान नही बन गया तब तक पूरे बीस वर्ष तक वे राजस्थान के सघ राज्य की स्थापना के लिए निरन्तर प्रयत्न करते रहे। वे राजपूताने की रियासतो के सयुक्त सघ के सबसे पहले और सबसे बडे स्वप्न-द्रष्टा थे। देश की स्वाधीनता के बाद सरदार पटेल के प्रयत्नो से उनका यह महान स्वप्न पूरा हुआ। वे इस दृष्टि से रियासतो के सयुक्त राजस्थान के आदि-निर्माताओ मे से है।

प्रान्तीय स्तर

जिस तरह से उन्होने आज से 45 वर्ष पूर्व रियासतो के सघ राज्य की आवश्यकता महसूस की थी उसी तरह से उन्होने सबसे पहले, उसी समय यह भी अनुभव किया कि राजपूताने की सभी रियासतो के राजनैतिक कार्यकर्ताओ को एक विधान वाली एक सस्था के रूप मे सगठित होकर प्रत्येक रियासत मे अपने अधिकारो की सुरक्षा के लिए एक सा कार्यक्रम बनाकर उसे एक साथ क्रियान्वित करना चाहिए। उन्होने राजनैतिक कान्फ्रेंस की, कार्यकर्ता सम्मेलन किए और फिर देशी राज्य प्रजापरिषद की रीजनल कौसिल की स्थापना हुई और इस तरह से उन्होने सबसे पहले सभी रियासतो के कार्यकर्ताओ को बने हुए प्रादेशिक सगठन की नीव डाली।

राजतंत्रों और सामंतों का समय समाप्त हो चुका है।

व्यासजी के पहले, महान् क्रान्तिकारी ठाकुर केसरीसिंह बारहठ की पीढी, राजाओ को उनके अतीत का गौरव याद दिलाकर उनकी सत्ता और सपन्नता को देश की सशस्त्र क्रान्ति के लिये उपयोग करने सोच रही थी। विजयसिंह पथिक ने राजा और जागीरदार के अत्याचारो के विरुद्ध सत्याग्रह का सूत्रपात किया और लोक शक्ति को अत्याचार और शोषण का मुकाबला करने के लिए खडा किया। परन्तु जयनारायण व्यास ही राजस्थान मे पहले व्यक्ति थे जिन्होने इतिहास के गतिशील सदर्भों के प्रकाश मे सबसे पहले यह उद्घोषणा की कि राजतत्रो का और सामतो का समय समाप्त हो चुका है। या तो वे लोकहित मे राज्यसत्ता जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियो के हाथो मे सौंप दें, अन्यथा रूस मे जार के साथ जो कुछ घटनाए घटी है उनकी पुनरावृत्ति राजपूताने की हर रियासत मे होगी। श्री जयनारायण व्यास ने ही सबसे पहले जागीरी प्रथा की समाप्ति और रियासतो मे उत्तरदायी शासन की स्थापना का नारा लगाया था जिसके लिए बाद मे देश की सभी रियासतो के लोक आन्दोलन इसी दिशा मे आगे बढे।

राजस्थान की राजनीति मे एक उग्र पत्रकार के रूप में उदय

राजस्थान के राजनैतिक के क्षितिज पर श्री जय नारायण व्यास का उदय एक उग्र और तेजस्वी पत्रकार के रूप मे हुआ जबकि 1927 मे अपनी 28 वर्ष की आयु मे वे तरुण राजस्थान के प्रधान सपादक के रूप मे राजपूताने की समस्त रियासती सत्ताओ और कार्यकर्ताओ के समक्ष प्रकट हुए। तरुण राजस्थान पहले राजस्थान-सेवा-सघ का पत्र था और विजयसिंह पथिक उसके सपादक थे। पथिक ने अपने सपादन-काल मे पत्र के द्वारा राजपूताने की रियासती जनता मे अत्याचार और अन्याय का विरोध करने का साहस जगा दिया था। परन्तु जयनारायण व्यास के सपादन मे तरुण राजस्थान ने एक ओर राजतत्रो की समाप्ति और जिम्मेवार हुकूमत की स्थापना का नारा दिया तो दूसरी ओर उन्होंने जागीरी प्रथा की समाप्ति और उसके लिए लोक-आदोलन को सगठित करने का आह्वान किया।

तरुण राजस्थान की लोकप्रियता और बढ़ता हुआ प्रभाव

थोडे ही समय मे तरुण राजस्थान की लोकप्रियता राजपूताने की हर रियासत मे तेजी से बढने लगी। रियासतो की राजभक्त-प्रजा जयनारायण व्यास की इस उद्घोषणा पर विश्वास करने को तैयार नही थी कि राजतत्र और राजशाही समाप्त हो जाएगी। लेकिन रियासतो मे ऐसे अनेको प्रबुद्ध और प्रज्ञाशील लोग थे जिन्हे जयनारायण व्यास की उदघोषणाओ मे भविष्य बोलता हुआ लगता था। तरुण राजस्थान का प्रत्येक लेख जहाँ जनता मे, सरकारी कर्मचारियो मे, व्यापारियो मे चाव से पढा जाता था वहाँ रियासतो की सरकारो के मन मे निरन्तर आतक पैदा कर रहा था। राज्य सरकारे बौखला रही थी और परिणामस्वरूप एक-एक कर अनेको रियासतो ने अपने राज्य में जयनारायण व्यास के तरुण–राजस्थान का प्रवेश, पढना या अपने पास रखना कानूनन् निषिद्ध कर दिया था।

अनजाने में उभरता हुआ प्रांतीय नेतृत्व

जबकि राजपूताने की अन्य रियासतो के कार्यकर्ता और नेता अपने-अपने राज्य और अपनी-अपनी सीमाओ मे अपनी स्थानीय समस्याओ को सुलझाने मे सलग्न थे उस समय राजपूताने मे अनजाने ही जयनारायण व्यास का प्रातीय नेतृत्व उभर कर विकसित होने लगा और तरुण राजस्थान के माध्यम से उनका सीधा सम्बन्ध राजपूताने की प्रत्येक रियासत, रियासत की ज्वलत समस्याओ, रियासत की जनता और रियासत के कार्यकर्ताओ से हो रहा था। जयनारायण व्यास का अपने पत्र के सवाददाताओ और रियासती कार्य-कर्ताओ के साथ कभी किसी तरह का कोई औपचारिक सम्बन्ध नही रहा। उन्होने तरुण राजस्थान से सम्बन्धित प्रत्येक व्यक्ति पर अपने परिजन की तरह अपनी आत्मीयता और अपने स्नेह का वरदहस्त रखा।

पत्रकारिता द्वारा समाज को चारित्रिक नेतृत्व

तरुण राजस्थान के सम्पादन द्वारा जयनारायण व्यास ने यह सिद्ध कर दिया था कि मिशनरी पत्रकार ही समाज को चारित्रिक नेतृत्व देने मे सक्षम है, उन्होने अपने सपादन काल मे कई रियासतो के राजाओ और जागीरदारो द्वारा आए हुए बडे बडे प्रलोभनो को करारी ठोकर लगाकर पत्रकार के चरित्र की उदात्तता को सिद्ध कर दिया था। कोइ पूँजीपति, धनपति, राजा, जागीरदार और सत्ताधीश जयनारायण व्यास की लोह लेखनी को किसी भी कीमत पर नही खरीद सका।

जीवन मे अंतिम क्षण तक एक सत्यनिष्ठ पत्रकार

तरुण राजस्थान के द्वारा जयनारायण व्यास ने एक निर्भीक, सत्यनिष्ठ और लोकनीति की निर्देशक पत्रकारिता को जन्म दिया था। इन्ही परम्पराओ को उन्होने 1936 मे बम्बई से रियासती जनता के लिए हिन्दी मे अखड भारत नामक दैनिक पत्र का प्रकाशन करके आगे बढाया। बाद मे राजस्थानी भाषा मे आगीवाण नाम का जो पाक्षिक पत्र उन्होने निकाला था उसका भी यही स्तर था और अपने अतिम समय तक वे 'पीप' नाम के अग्रेजी साप्ताहिक के द्वारा अपने स्वतन्त्र चिंतन और अपने परिपक्व विचारो की साहसिक अभिव्यक्ति से देश का मार्ग-दर्शन करते रहे।

साध्य था स्वाधीनता, पत्रकारिता तो मात्र साधन था

लेकिन ऐसा नही मान लिया जाय कि जयनारायण व्यास मात्र एक पत्रकार ही थे। पत्रकारिता तो उनका एक साधन था। साध्य थी क्रान्ति, साध्य थी राजतत्रो की और जागीरी प्रथा की समाप्ति, साध्य थी देश की स्वाधीनता और साध्य था जनता का जीवन स्तर ऊँचा उठाकर एक लोकतत्री शासन की स्थापना। इन साध्यो को प्राप्त करने के लिए जयनारायण व्यास ने पत्रकारिता का भी एक साधन के रूप मे उपयोग किया। उनका कर्मक्षेत्र तो जनता के बीच था जनता को जागृत, सगठित और अपने स्वत्व और अधिकारो के लिए सघर्परत करना उनका मिशन था।

देशी राज्य प्रजा परिषद और प्रांतीय संगठन का प्रश्न

जिन दिनो जयनारायण व्यास तरुण राजस्थान के सपादक की हैसियत से राजपूताने की रियासती जनता मे राजनैतिक चेतना का सचार कर रहे थे उन्ही दिनों बवई मे डाक्टर अभ्यकर, वेरिस्टर चुढगर और अमृतलाल सेठ जैसे लोगो ने अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिपद की स्थापना कर दी थी। जयनारारण व्यास अपने अन्य साथियो के साथ राजपूताने की रियासतो के प्रतिनिधियो के रूप मे सम्मिलित हुए थे। उन्होने तभी यह तय कर लिया था कि राजपूताने मे भी देशी रियासतो के कार्यकर्ताओ का एक प्रातीय सगठन वनाया जाए।

राजनैतिक सम्मेलन का आयोजन और गिरफ्तारी

ववई से आते ही उन्होने राजपूताने की सभी रियासती के कार्यकर्त्ताओ का जोधपुर मे एक राजनैतिक सम्मेलन बुलाने की घोपणा की। उनकी योजना थी कि देशी राज्य प्रजा परिषद के सभी अखिल भारतीय नेता जोधपुर आए और वे राजपूताने के रियासती कार्यकर्ताओ को उद्‌बोधन, मार्गदर्शन और कार्य की नई दिशा दे। जयनारायण व्यास और उनके साथियो ने इसकी जोरो से तैयारिया शुरू कर दी थी। लेकिन जोधपुर की राजसत्ता नही चाहती थी कि ऐसी कोई प्रवृत्ति जोधपुर मे हो। अत. सम्मेलन की उद्‌घोपित तिथियो के पहिले ही उन्होने सम्मेलन पर प्रतिवध लगा दिया और जयनारायण व्यास को उनके साथी आनदराज सुराणा और भँवरलाल सर्राफ के साथ गिरफ्तार करके रियासत के अलग अलग किलो मे वद कर दिया।

मारवाड़ हितकारिणी सभा और दमन का पहला दौर

जोधपुर मे दमन का यह चक्र इससे पहले भी चल चुका था। जोधपुर मे 1921 के वाद मारवाड हितकारिणी सभा की स्थापना श्री चाँदमल सुराणा, किशनलाल वाफना और दुर्गाशकर श्रीमाली ने मिलकर कर की थी और इस सस्था के द्वारा मादीन जानवरो की निकामी तथा धान की निकासी के विरोध मे वहुत सगठित आन्दोलन चलाये गए थे। जिसके परिणामस्वरूप चाँदमल सुराणा, प्रतापचद सोनी और शिवकरण जोशी को जोधपुर रियासत से निर्वासित कर दिया गया था और जयनारायण व्यास, आनदराज सुराणा, कस्तूर करण जोशी, वच्छराज और कोजूराम कलाधारी आवारा लोगो की श्रेणी के दस नम्बरीये घोपित कर दिए गए थे। इसके परिणामस्वरूप उन्हे दिन मे तीन वार पुलिस थाने मे अपनी हाजिरी देनी पडती और रात को पुलिस थाने मे जाकर सोना पडता।

गिरफ्तारी के विरुद्ध जुलूस, लाठी-चार्ज और गिरफ्तारियाँ

जोधपुर मे दमन का दूसरा दौर आकस्मिक था। जयनारायण व्यास 1928 मे ही लोकप्रियता के शिखर पर पहुँच चुके थे। उनकी तथा उनके दो अन्य साथियो की गिरफ्तारी की खबर सारे शहर मे विजली की तरह फैल गई। हजारो लोग जुलूस वनाकर

उन्हे मुक्त करवाने के इरादे से महाराजा के पास गए परन्तु उस जुलूस पर लाठी-चार्ज किया गया और उस जुलूस के 12 नेताओ को भी गिरफ्तार कर लिया गया।

राजद्रोह के मामले में सात-सात वर्ष की सजा

जयनारायण व्यास और उनके साथियो पर नागौर के किले मे विशेष अदालत लगाकर मुकद्दमा चलाया गया और उन्हें राजद्रोह के अपराध मे 7–7 वर्ष की सजाए दी गई। लेकिन 1931 मे गाँधी-इरविन पैक्ट के अतर्गत उन्हे जेल से रिहा कर दिया गया।

पुष्कर मे मारवाड़ प्रजा परिषद् का सम्मेलन

जेल से रिहा होते ही जयनारायण व्यास ने 1932 मे पुष्कर मे मारवाड प्रजा-परिषद् का एक राजनैतिक सम्मेलन किया और रियासत भर के कार्यकर्ताओ को अपने-अपने क्षेत्र मे कार्य करने के लिए दिशा-सकेत दिए। 1932 मे व्यासजी पुन नमक सत्याग्रह मे अजमेर मे गिरफ्तार हो गए।

जन्म, परिवार और शिक्षा

यो तो, जयनारायण व्यास मूलरूप से जोधपुर के ही निवासी हैं। उनका जन्म जोधपुर के एक सामान्य पुष्करणा ब्राह्मण परिवार मे, 18 फरवरी 1899 को जोधपुर मे ही हुआ था। उनके पिता श्री सेवाराम व्यास, जोधपुर रेलवे के कार्यालय मे काम करते थे। जयनारायण व्यास अपने पिता की इकलौती सतान थे। उनके माता पिता और परिवार पूर्ण रूप से प्राचीन परपराओ को कट्टरता से मानने वाला परिवार था। परन्तु उनकी गोदी मे, पता नही कैसे, जयनारायण व्यास मे क्रान्ति के बीज विकसित होते गए। उनकी शिक्षा दीक्षा जोधपुर मे ही हुई। विद्यार्थी काल से ही वे उग्र, राष्ट्रवादी और क्रान्तिकारी विचारो के नौजवान थे।

सामाजिक क्षेत्रो मे क्रांति की पहली दृष्टि

उनकी जो सत्यनिष्ठ और क्रान्तिकारी दृष्टि आगे जाकर देश के राजनैतिक क्षितिज पर प्रकट हुई, उसका प्रारभिक उदय और विकास जातीय और सामाजिक क्षेत्रो मे होने लग गया था। उन्होने समाज की रूढ मान्यताओ के विरुद्ध बगावत के झडे खडे कर दिए और जगह-जगह नवयुवक मडल, वाचनालय, विचार सभाए आदि स्थापित करके विचार क्रान्ति का प्रसार शुरू कर दिया। उन्होने प्रारभ मे जातीय महासभा के मच से अपने क्रान्तिकारी विचारो को अभिव्यक्तियें देनी शुरू की। और उन्होने, जातीय पत्रो का सपादन भी किया।

भविष्य के लिए तैयारी

1919 से '26 तक के समय मे उन्होने मारवाड हितकारिणी सभा के आन्दोलन, सामाजिक क्रान्ति के प्रारभिक कार्य, स्कूल की अध्यापकी, रेलवे और पी० डब्ल्यू० डी० की

क्लर्की, बीकानेर के चाँदमल ढढ्ढा जैसे सेठो का सचिवत्व कार्य और बगड़ी के गुरुकुल आश्रम का आचार्यत्व आदि सभी कार्य कर लिये थे । सन् 1920 से 26 तक के समय मे कई कार्य करते हुए जयनारायण व्यास अपने आपको भविष्य के लिए तैयार करते रहे । सन् 1927 तक उनके चिंतन मे प्रौढता और विचारो मे परिपक्वता आ चुकी थी और उनके कार्य करने की सही दिशा 'तरुण राजस्थान' के द्वारा तीव्र वेग से प्रस्फुटित होने लग गई थी ।

राजपूताना प्रांतीय देशी राज्य प्रजा परिषद्

सन् '33 के अत मे अजमेर जेल से रिहा होते ही जयनारायण व्यास ने अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद् से पुन अपना सम्बन्ध स्थापित किया और 1934 मे उन्होने ब्यावर मे राजपूताना प्रांतीय देशी राज्य प्रजा परिषद् की स्थापना की और राजपूताने की रियासतो का एक विशाल राजनैतिक सम्मेलन आयोजित किया । यही से जयनारायण व्यास ने पहली बार राजपूताने की रियासतो के कार्यकर्ताओ को एक सस्था मे सूत्रबद्ध करने की शुरुआत की । उनका यह मानना था कि रियासतो की ऐतिहासिक और भौगोलिक ईकाइये भले ही अलग-अलग हो परन्तु जनता के अभाव–अभियोग और जनता की समस्याए एक सी ही है और उनका समाधान भी हमे एक से कार्यक्रम से ही खोज निकालना है ।

राजतंत्रों से खुला संघर्ष

उनका कार्यक्रम था लोकराज की स्थापना के लिए राजतत्रो से खुला सघर्ष । इसी के लिए वे हर रियासत की जन-शक्ति को जागृत और सगठित करने मे लगे हुए थे । देशी राज्य प्रजा परिषद् के सभी अखिल भारतीय स्तर के नेता इस सम्मेलन मे ब्यावर आए थे और राजपूताने के राजनैतिक कार्यकर्ताओ को पहली बार देश के बडे-बडे नेताओ के सम्पर्क मे आने और उनके विचार सुनने का अवसर मिला था । ब्यावर के इस सम्मेलन से राजपूताने की रियासतो के राजनैतिक कार्यकर्ताओ को नया दृष्टि कोण, नया सकल्प और कार्य करने की नई दिशा प्राप्त हुई ।

राजपूताना पंजाब और उत्तर प्रदेश के संगठन

जयनारायण व्यास की कार्य तत्परता और लगन को देखकर अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजापरिषद् ने उन्हे राजपूताने के साथ-साथ पजाब और उत्तरप्रदेश की रियासती जनता को सगठित करने का कार्य भी सौपा । उन्होने 1935 मे दिल्ली मे देशी राज्य प्रजा परिषद् का एक विशेष अधिवेशन बुलाया, जहाँ प्रिंसेज प्रोटेक्शन बिल का घोर विरोध किया गया । यही से उन्होंने उत्तरप्रदेश और पजाब के रियासती कार्यकर्ताओ को सगठित किया और उन्हे उत्तरदायी शासन के लिए कार्य करने की प्रेरणा दी ।

देश भर की रियासतो मे तूफानी दौरे और संगठन

जयनारायण व्यास ने सारे देश की देशी रियासतो का दौरा शुरू किया और जगह-जगह हर रियासत मे राजनैतिक चैतन्य नौजवानो को सगठित करके राजतत्रो के

विरुद्ध मोर्चा ब्दी शुरू करवाने की योजनाए क्रियान्वित कराने मे लग गए । ऐसा लगता था कि जयनारायण व्यास की आत्मा भारत के देशी राज्यो के शोषित और पीडित प्रजाजनो की विवशताओ से अत्यन्त उद्विग्न हो रही थी और जैसे कि वे सारे देश मे राजतत्रो की समाप्ति के लिए एक सगठित अभियान शुरू करने मे लगे हुए थे ।

बंबई से दैनिक 'अखड भारत' का प्रकाशन

इसी संदर्भ मे उन्होंने 1936 मे अपने कुछ उत्साही मित्रो के सहयोग से अखड भारत नाम का एक वडा हिन्दी दैनिक पत्र शुरू किया । अखड भारत सपूर्ण रूप से देशी रियासतो की समस्याओ को समर्पित था । अखड भारत के द्वारा जयनारायण व्यास ने देश की 500 से अधिक देशी रियासतो के कार्यकर्ताओ को सगठित करने का वीडा उठाया । अपने पत्र मे उन्होने अलग-अलग रियासतो के राजाओ और जागीरदारो के क्रूर अमानवीय कृत्यो को वेनकाब करना शुरू किया । अखण्ड भारत, राजाओ, सामतो और राजतत्रो के विरुद्ध आग उगलने लगा । एक ही महीने मे, पत्र की पचीस हजार से अधिक प्रतियें नित्य प्रति निकलने लग गई । जन आकांक्षाओ की अभिव्यक्ति से रियासती जन आन्दोलनो को और रियासती कार्यक्र्ताओ को वडा बल मिला, लेकिन, देश भर की रियासती सरकारे अखड भारत की इस लोकप्रियता और उसके वढते हुए लोक प्रभाव को सह नही सकी और भारत की अधिकाश रियासती सरकारो ने अखड भारत को अपने राज्य मे आने देना, अपने पास रखना या पढना कानूनन वद कर दिया ।

घोर प्रतिकूलताओ मे भी हिमालय की तरह अडिग

देश की रियासती सत्ताओ के इस वार से पत्र की लोकप्रियता और राष्ट्रीय महत्ता तो वहुत बढ गई, परन्तु आर्थिक रूप से अखण्ड भारत की स्थिति क्षयग्रस्त होती गई । जयनारायण व्यास के पास उन दिनो अनेको राज्यो से सहयोग के अत्यन्त आकर्षक प्रलोभन और प्रस्ताव आए थे परन्तु कट्टर सिद्धान्तवादी इस तेजस्वी लोकसेवक की सत्यनिष्ठा और लगन को कोई नही डिगा सका । व्यक्तिगत स्वार्थो के लिए या अखड भारत के लिए भी किसी राजा या उसके प्रतिनिधि या धनपति से सहयोग लेकर सपन्नता से जीवित रहने की तुलना मे जयनारायण व्यास ने, अभावो मे तिल-तिल कर जलना ही श्रेयस्कर समझा और इसीलिए घोर सकट, विषम परिस्थिति और चारो ओर से आई प्रतिकूलताओ के वीच भी इस व्यक्ति ने सिद्धान्तो के नाम पर कभी किसी राजा या राजतत्र से समझौता नही किया, वे सिद्धान्तो के शिखर पर खडे होकर सदा हिमालय की तरह अडिग ही रहे ।

बीकानेर के महाराजा गंगासिंह का ऐतिहासिक-पत्र

जयनारायण व्यास के उदात्त चरित्र की इन असाधारण विशेपताओ ने देशी रियासतो के कई राजाओ के मन मे अनन्य श्रद्धा की भावना जागृत कर दी थी । वे यह समझने लग गए थे कि देश की स्वाधीनता के वाद यदि शासन सत्ता जयनारायण व्यास

जैसे लोगो के हाथो मे रहेगी तो निश्चय ही देश का कायाकल्प हो जाएगा। इसी सदर्भ मे भारतीय नरेन्द्र मण्डल के अध्यक्ष और बीकानेर के कूटनीतिज्ञ महाराजा गगासिंह के उस पत्र का हवाला यहाँ देना अनुपयुक्त नही होगा जो उन्होने 21 फरवरी 1937 को जयनारायण व्यास के सम्बन्ध मे जोधपुर के तत्कालीन अग्रेज प्राइम मिनिस्टर सर डोनाल्ड फील्ड को लिखा था। बीकानेर के महाराजा ने लिखा था कि—

राजाशाही के निर्दय आलोचक

"निस्सन्देह व्यास जयनारायणजी राजाशाही की निर्दयतापूर्वक आलोचना करने मे सबसे तीखे रहे हैं, लेकिन वह पक्के ईमानदार है। उनको कोई भ्रष्ट नही कर सकता। वह अपनी राजनैतिक मान्यताओ और आत्मा के प्रति सत्यनिष्ठ हैं।

राजाओं के प्रति जन्मजात घृणा और दुर्भावना के बावजूद भी ईमानदार

हजारो धोखेबाज, चरित्रहीन और बेईमान किराये के टट्टूओ के होते हुए, जो कि अपने आपको भले ही राजनीति विशारद कहते हो, और देशी रजवाडो की भोली जनता को बहकाते रहते हो, आप मुश्किल से ही किसी को व्यासजी जैसा पवित्र पायेंगे जो राजाओ के प्रति जन्मजात घृणा और दुर्भावना रखते हुए भी ईमानदार हो और रियासतो का शासन ठीक तरह चलाकर भलाई करने की क्षमता रखता हो। मैं आशा करता हूँ कि आप मुझ से सहमत होगे कि, ये हुकूमते, जिनकी आज निगरानी हम करते हैं, अतत हमारे इन्ही दुश्मनो के जाकर रुकेगी। ऐसी स्थिति मे हमारा यह कर्तव्य है कि यह हम ध्यान रखें कि विरोधी खेमो से भले आदमी आगे आवे और जब हम हटें तो शासन की बागडोर सभाल लें।

अनीति से आर्थिक लाभ नहीं उठा सकते !

श्री जयनारायण व्यास, जैसा कि आप भी जानते होगे, एक गरीब घर मे पैदा हुए है और इसलिए हमेशा आर्थिक सकटो मे से गुजरते रहते हैं। अपने कई दूसरे साथियो और हमराहियो की तरह वह ब्लैक-मेलिग अथवा अनीति से आर्थिक लाभ उठाने मे विश्वास नही करते। उनका दुर्भाग्य है कि उनके मित्र भी, जिनका वह पूर्ण विश्वास कर लेते हैं, अक्सर उनके साथ धोखा कर जाते हैं और वह इतने सीधे है कि इन धोखो को भी अवश्यम्भावी मान लेते हैं।

हमारे हटने के बाद रिक्त स्थान की पूर्त्ति के लिए सबसे अधिक उपयुक्त व्यक्ति

मैं जब सोचता हूँ कि जयनारायण व्यास राजनीति छोड कर सिनेमा मे जाना चाहते हैं, तो मेरा हृदय खून के आँसू रोता है। वह मेरे बडे दुश्मन रहे हैं, फिर भी मेरी मान्यता है कि वह पवित्र व्यक्ति हैं, और उनके अथक परिश्रम से किसी न किसी दिन राजपूताना के इन रेगिस्तानी इलाको मे शान्ति और खुशहाली आवेगी। आज उनके पतन

पर सभवत' हम खुश हो लें, लेकिन वह दिन दूर नहीं है, जब हम महसूस करेंगे कि हमारे हट जाने से रिक्त हुए स्थान की पूर्त्ति के लिए वह ही सबसे अधिक उपयुक्त व्यक्ति हैं।

काश, कि रेगिस्तान के उड़ते टीलों पर हम साथ बैठ कर बात करते

मेरी साध रही है कि मैं व्यासजी को साथ लेता और सिर्फ हम दोनो राजस्थान के उडते हुए वालू रेत के टीलो पर बैठ जाते। उन्होने जो मुझे अक्सर प्रेस और प्लेटफार्म के जरिये बुरी-बुरी गालिया दी हैं, उन पर, उनसे वहाँ दिल खोल कर बात करता। हम असहमति के लिए असहमत होते, परन्तु जुदा होने वाली और विरोधी दिशा मे बहने वाली दो लहरो पर खडे होकर भी हम हमारे मस्तिष्क के भ्रम और गलतियो के वावजूद लाखो लोगो की भलाई व समाज की तरक्की के बारे मे अपने दृष्टिकोण से ही सही, समान भाव का अनुभव अवश्य करते।"

बीकानेर के महाराजा गगासिह के इस पत्र पर किसी तरह की टिप्पणी अथवा इसका भाष्य करने की आवश्यकता नही है।

अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद के महामंत्री

अखड भारत के प्रकाशन के दिनो मे ही जयनारायण व्यास अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद के महामत्री चुन लिए गए थे। करीब 14 वर्ष तक इस पद पर कार्य करके उन्होने देश भर के रियासती आन्दोलनो को गतिशील वनाने मे वहुत वडा भाग अदा किया। देशी राज्य प्रजापरिषद के अध्यक्ष पद पर डाक्टर पट्टाभि सीतारम्मैया, शेख मोहम्मद अब्दुल्ला और लबे समय तक पडित जवाहरलाल नेहरू रह चुके थे। उनकी उत्कट देश भक्ति, चारित्रिक दृढता और राजनैतिक सूझबूझ ने उन्हे राष्ट्र के प्रथम पक्ति के नेताओ की श्रेणी मे ला बिठाया था। लालवहादुर शास्त्री और रफी अहमद किदवई के साथ उनकी अतरग मित्रता थी और पडित जवाहरलाल नेहरू का उन पर अटूट विश्वास था। देशी रियासतो के मामलो मे जयनारायण व्यास पडित नेहरू के सलाहकार माने जाते थे।

जोधपुर से निर्वासन

'अखड भारत' युग मे जब श्री जयनारायण व्यास 1937 मे जोधपुर आए, तो वे जोधपुर मे अपने घर पर कुछ दिन रहना चाहते थे। परन्तु राज्य सरकार ने उनके लिए निर्वासन की आज्ञाए प्रसारित करदी और कुछ घटो मे ही उन्हे जोधपुर की सीमा से बाहर ले जाकर जगल मे छोड दिया।

जोधपुर मे जयनारायण व्यास की प्रेरणा कार्य करती रही

जोधपुर रियासत मे 1930 से 1939 तक श्री जयनारायण व्यास की प्रेरणा, सलाह और मार्ग दर्शन मे सर्व श्री अचलेश्वरप्रसाद शर्मा, छगनराज चौपासनी वाला, मानमल जैन, अभयमल जैन, भँवरलाल सर्राफ, पुरुषोत्तमप्रसाद नैयर, रणछोडदास गट्टानी

श्रौर गणेशीलाल उस्ताद श्रादि सक्रिय रूप से कार्यरत थे । इन नेताश्रो ने स्थानीय समस्याश्रो को लेकर समय-समय पर श्रान्दोलन किए, गिरफ्तारियें हुई । सरकार ने उन्हें समय-समय पर गिरफ्तार किया, नजरबद रखा, सजाए दी । उन्होने सगठित होने के लिए सस्थाए वनाई श्रौर सरकार सस्थाश्रो को गैर कानूनी घोपित करती गई । प्रजामडल, यूथ लीग, सिविल लिवर्टी यूनियन श्रौर वाल भारत सभा नाम से कई संस्थाएं उन दिनो मे वनी श्रौर गैर कानूनी घोपित हुई । श्रत मे मारवाड लोकंपरिषद के नाम से राजनैतिक सस्था कार्य कर सकी ।

निषेधाज्ञा के वाद जोधपुर प्रवेश

श्री जयनारायण व्यास श्रपने पिता की वीमारी के समय 1939 मे राज्य की निषेधाज्ञा तोड कर जोधपुर श्राने को उद्यत हुए । उन्होने श्रपने सकल्प की सूचना राज्य सरकार को दी । सरकार ने निषेधाज्ञा हटा ली । जोधपुर श्राने के कुछ ही दिन वाद व्यासजी के पिता का देहावसान हो गया । स्थानीय मित्रो ने उन्हे वही रहने का श्रौर नेतृत्व सम्हालने का श्रनुरोध किया ।

राज्य की सलाहकार एसेम्बली की सदस्यता

राज्य सरकार ने भी इस समय तक जयनारायण व्यास की महत्ता श्रौर उपयोगिता को समझ कर उनसे सहयोग करने का विचार प्रकट किया । जोधपुर राज्य मे सरकार ने नामजद लोगो की एक एडवाइजरी एसेम्वली स्थापित की थी श्रौर श्री जयनारायण व्यास को उसका सदस्य नामजद किया । सरकार के इस श्रनुकूल वातावरण मे श्री-जयनारायण व्यास ने लोक-परिषद के सगठन को राज्य के गाँव-गाँव मे फैला दिया श्रौर रियासत भर मे राजनैतिक कार्यकर्ताश्रो की एक फौज सी तैयार हो गई ।

खोखली योजना श्रौर जनता को गुमराह करने का साधन

व्यासजी राज्य द्वारा स्थापित एडवाइजरी एसेम्वली के सदस्य तो हो गए थे लेकिन भीतर जाकर उन्होने श्रनुभव किया कि सरकार की यह योजना खोखली है श्रौर जनता को मात्र गुमराह करने का एक साधन है । इस तथ्य की श्रनुभूति के साथ ही उन्होने एडवाइजरी एसेम्वली मे श्रपना त्यागपत्र दे दिया श्रौर जनता को जिम्मेवार हुकूमत के लिए तैयार करने के श्रपने मिशन मे जुट गए ।

उत्तरदायी शासन श्रौर जागीरी उन्मूलन के श्रान्दोलन

जोधपुर की 80 प्रतिशत भूमि जागीरदारो के श्रधीन थी श्रौर जागीरदार गाँव-गाँव मे किसानो का बुरी तरह शोपण करते थे । सीमाहीन गैर कानूनी लाग-वाग श्रौर वेगार मे वे बुरी तरह त्रस्त श्रौर पीडित थे श्रौर फिर किसानो की खेतो से वेदखलियें एक श्राम वात हो गई थी । श्री जयनारायण व्यास ने श्रपने साथियो के साथ एक तरफ उत्तरदायी शासन के लिए कार्य शुरु किया, तो दूसरी श्रोर जागीरी प्रथा के उन्मूलन का

आन्दोलन शुरू कर दिया। परिणामत उन्हें उनके अन्य 5 साथियो के साथ गिरफ्तार करके अलग-अलग किलो मे बन्द कर दिया गया। जनता मे इसकी प्रतिकूल प्रतिक्रिया हुई। आन्दोलन छिड गया और गिरफ्तारियो का ताता लग गया। लेकिन यह आन्दोलन लबा नही चला। सरकार ने व्यासजी के साथ समझौता कर लिया।

नगरपालिका के प्रथम निर्वाचित अध्यक्ष

इन्ही आन्दोलनो के परिणालस्वरूप जोधपुर मे वालिग मताधिकार के आधार पर नगरपालिका के चुनाव पहली बार कराए गए और 32 मे से 28 सीटो पर लोक-परिषद की विजय हुई। व्यासजी जोधपुर नगरपालिका के अध्यक्ष बनाए गए। उन्होंने निरन्तर यत्न किया कि वे सरकार को लोकतत्री तरीके से काम करने की दिशा मे प्रेरित करे और लोकतत्र के मार्ग पर आगे बढाए परन्तु राजशाही इसके लिए तैयार नही थी। सरकार के साथ हर कदम पर सघर्ष की स्थिति पैदा हो रही थी। लोकतत्र की कल्याण-कारी प्रवृत्तियो के साथ राजतत्री शासन का समन्वय नही हो सकता था और अत मे व्यासजी को नगरपालिका से भी अपने पूरे दल के साथ त्याग-पत्र देकर पूर्ण उत्तरदायी शासन के लिए लोक-सघर्ष शुरू करना पडा।

पूर्ण उत्तरदायी शासन के लिए लोक-संघर्ष

1942 की मई मे पूर्ण उत्तरदायी शासन के लिए सघर्ष शुरू हो गया। व्यासजी गिरफ्तार कर लिए गए। जोधपुर रियासत की प्रत्येक तहसील से सत्याग्रहियो के जत्थे आने लगे। करीब 400 से अधिक सत्याग्रही गिरफ्तार हुए। सत्याग्रह तहसीलो और कस्बो मे फैलने लग गया। करीब सवा दो वर्ष के बाद लोक-परिषद और सरकार का समझौता हुआ और 1944 मे सभी वदी रिहा किए गए।

देशी राज्य प्रजा परिषद की राजपूताना रीजनल कौंसिल

1946 मे उदयपुर मे अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद का अधिवेशन पडित नेहरू की अध्यक्षता मे हुआ। व्यासजी तो देशी राज्य प्रजा परिषद के महामत्री थे ही। देशी राज्य प्रजा परिषद की राजपूताना रीजनल कौसिल की विधिवत् स्थापना उदयपुर मे की गई। और श्री गोकुलभाई भट्ट उसके पहले अध्यक्ष और पडित हीरालाल शास्त्री उसके पहले महामत्री बनाए गए।

कांग्रेस और राज्य के उच्चतम पदों पर

1948 मे जोधपुर मे लोकप्रिय मत्रिमडल का गठन हुआ। व्यासजी राज्य के प्रधानमत्री बनाए गए। वे भारत की विधान निर्मातृ-सभा (कास्टिटुयेंट एसेम्बली) के सदस्य भी बने। 1949 मे राजपूताने की सभी रियासतो के विलीनीकरण से राजस्थान सघ का निर्माण हुआ। 1949 से 52 तक राजपूताना प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष

रहे और 56–57 मे प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष, 1951 से 1954 तक राजस्थान के मुख्य मंत्री रहे और वाद मे राज्य सभा के सदस्य ।

निहित् स्वार्थो के महत्वाकांक्षी विधायक साथियों का विश्वासघात

स्वाधीनता के वाद जिस तरह की अवसरवादी राजनीति विकसित हो रही थी उससे व्यासजी का आदर्शवाद समन्वय नही कर सका । वे अपने मत्रिमडल के किसी सदस्य या विधायक मे चारित्रिक ह्रास सहन नही कर सकते थे । वे अपने प्रति जितने निर्मम और कठोर थे, वही निर्ममता वे सवके साथ वरतते थे । सत्ता उनके लिए कांग्रेस के महान् आदर्शों को पूरा करने का एक साधन मात्र थी । सत्ता को उन्होने कभी साध्य नही माना । उन्होने सचेष्ट रह कर यह प्रयत्न किया कि कोई व्यक्ति सत्ता के प्रभाव से अपने व्यक्तिगत हितो का साधन न करे । व्यासजी की इस सैद्धान्तिक कट्टरता से जिन महत्वाकाक्षी राजनीतिज्ञो और निहित् स्वार्थ वाले विधायको के हितो को चोट लगी—वे वौखला गए और उनके विश्वासघात से व्यासजी को राजसत्ता छोड़नी पडी ।

कांग्रेस के शुद्धिकरण और भ्रष्टाचार की समाप्ति के लिए

सत्ता से अलग होने के वाद भी कांग्रेस के शुद्धिकरण और भ्रष्टाचार की समाप्ति और स्वराज्य के स्थान पर सुराज्य की स्थापना के लिए उन्होने चर्तुमुखी यत्न शुरू कर दिए । उन्होने सार्वजनिक जीवन मे नैतिक मूल्यो की स्थापना के लिए अथक परिश्रम किया । उनकी यह मान्यता थी कि राज्य की लोक कल्याण कारी नीतियो का क्रियान्वन सही रूप मे तव तक नही हो सकता जव तक कि प्रशासन मे नैतिक और चारित्रिक मूल्यो को महत्त्व नही दिया जाएगा । वे यह मानकर चलते थे सामाजिक परिवर्तन और आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है कि यथापरिस्थिति के सिद्धांत को समूल समाप्त कर दिया जाए । मौजूदा प्रशासन को वे गैर प्रजातांत्रिक भावनाहीन, रूढिवद्ध, प्रतिष्ठा ग्रस्त और सवेदन रहित प्रशासन मानते थे । वे समूचे प्रशानिक ढाँचे का मौलिक रूप मे पुनरुद्धार करना चाहते थे । उनकी यह दृढ मान्यता थी कि यदि ऐसा नही हुआ तो नीतियो के क्रियान्वन और परिणामो के वीच भारी अन्तर वना रहेगा ।

कांग्रेस कार्य कर्त्ताओ के आधार वाली संस्था बने

व्यासजी दो वार मे कुल मिलाकर 5 से अधिक वर्षो तक प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे । उनका निरन्तर यह यत्न रहा था कि कांग्रेस कार्यकर्त्ताओ पर आधारित एक-जनता का दल वने । हर जिले मे ऐसे कार्याकर्त्ता तैयार हो जो केवल कांग्रेस के नियम और सिद्धान्तो मे ही प्रशिक्षित नही हो, वलिक कल्याणकारी राज्य की नीतियो के क्रियान्वन के तरीको मे लोगो को शामिल करने की पद्धति मे भी प्रशिक्षित हो और आदर्श-लगन और आस्था से परिपूर्ण हो ।

सत्ता, प्रशासन और दल की क्षय ग्रस्तता पर करारी चोट

लोकजीवन मे नैतिक मूल्यो की स्थापना और वढते हुए निहित् स्वार्थों के

अवसरवाद को रोकने के लिए उन्होने देश मे और राजस्थान मे तीव्र रूप से जनमत बनाने का यत्न किया। इसी प्रसग मे उन्हे कई तथाकथित कांग्रेसजनो का भी खुलकर विरोध करना पडा। व्यासजी की उग्र और क्रान्तिकारी विचार धारा से सारे देश मे तहलका मच गया। पण्डित जवाहरलाल नेहरू से भी इन्ही मसलो को लेकर उनमें कई मुद्दो पर विचार भिन्नता पैदा हो गई। ऐसी भी स्थिति आ गई कि अपने मार्ग पर वे अकेले ही रह गए परन्तु उस सत्यनिष्ठ ने अपनी टेक नही छोडी और सत्ता, शासन और दल मे जहाँ शिथिलता और क्षय ग्रस्तता देखी वही उन्होंने करारी चोट की

काँग्रेस से निष्काषित करने की तजबीज

उनकी चोटो से तिलमिलाकर उनके कई बडे-बडे साथियो ने उन्हे कांग्रेस का बागी मानकर कांग्रेस से निष्कासित करने-करवाने की तजवीजें की। व्यासजी ने भ्रष्टाचारियो के खिलाफ कदम उठाने मे सगठन और उसके अनुशासन की कभी परवाह नही की। उन्होने 1961–62 के चुनावो मे जब कई भ्रष्ट कांग्रेसी उम्मीदवारो का विरोध किया तो उन पर अनुशासन की कार्यवाही करने की बात चली।

व्यासजी के बाद राजस्थान काँग्रेस मे रह ही क्या जाएगा ?

लेकिन छोटे-बडे कांग्रेसियो ने और यहां तक कि कांग्रेस उच्च सत्ता के सदस्यो ने व्यासजी के इस साहसिक कार्य की प्रशसा ही की। पण्डित नेहरू ने कहा कि व्यासजी को कांग्रेस से निकाल देने के बाद राजस्थान की काँग्रेस मे रह ही क्या जाएगा ?

ज्ञान के विविध रूपो से विभूषित श्रेष्टतम मनुष्य

श्री जयनारायण व्यास केवल मात्र राजनीति के ही नही थे। वे राजनीति के आवरण मे जीए परन्तु उनके भीतर साहित्य सगीत कला कविता, दर्शन, सस्कृति और आध्यात्म हर समय पूर्ण वेग से गतिशील रहते और जहाँ भी वे अपना डेरा लगाते वही उनके साथ ही एक-एक कर ये सभी विषय जुड जाते। कृषि और अर्थशास्त्र के आंकडो की भाषा से वे सगीत की मालकौंस, भीमपलाशी और विहाग तक एक क्षण मे पहुच जाते और ताण्डव नृत्य की धमक से प्रशासन के नवीनीकरण और भ्रष्टाचार के उन्मूलन तक आते उन्हें एक क्षण की भी देरी नही लगती। लोगो ने उनके लोकसेवक के आदर्श रूप को भी देखा, प्रशासक के निर्भीक रूप को भी देखा और विचारक लेखक और वक्ता के रूप मे उनके उग्र क्रान्तिकारी रूप को भी देखा लेकिन वे सब कुछ होने के पहले एक श्रेष्ठतम मनुष्य थे, जो निरन्तर स्वय की पूर्णता के लिए यत्नशील थे और अपने साथियो को पूर्णता की ओर ले जाने मे गतिशील।

निश्छल हृदय, पारदर्शी मन और आत्मीयता भरी वाणी

उनका हृदय शुद्ध, उनका मन पारदर्शी और उनकी वाणी आत्मीयता से भरी हुई

थी । मिथ्या, निराधार और द्वेषपूर्ण जोड-तोड उनके पास कुछ नही था । परस्पर विरोधी और निम्न स्तर की राजनीति से उन्हे घृणा थी । अपनी नीति के क्रियान्वन और अपने आदर्श और उद्देश्यो की पूर्ति के लिए उन्होंने कभी किसी गलत साधन, माध्यम या परपरा को अगीकार नही किया ।

सत्ता से अलग होने पर भी उतने ही प्रभावशाली और लोकप्रिय

श्री जयनारायण व्याम जीवन के अन्तिम क्षण तक राजनीति मे सक्रिय रहे । देश के राजनैतिक जीवन मे उनका महत्व प्रशासन या सगठन के पदो के द्वारा ही नही था । वे राज्य के मुख्यमन्त्री बनने के पहले जितने लोकप्रिय और प्रभावशाली थे उतने ही लोकप्रिय और प्रभावशाली सत्ता से अलग होने के बाद भी रहे । किसी पद या सत्ता ने उनकी लोकमान्यता और सामाजिक प्रतिष्ठा मे वृद्धि नही की अपितु उनकी सत्यनिष्ठा, उनकी चारित्रिक दृढता और उनकी व्यापक नैतिक दृष्टि ने उस सस्था, प्रशामन और पद को ही गौरवशाली बनाया जहाँ उन्हे अपने कर्त्तव्य पालन का अवसर मिला ।

भविष्य के मैदानों मे बोये हुए बीज

1960 के बाद कांग्रेस के शुद्धिकरण और भ्रष्टाचार की व्यापकता को समाप्त करने के लिए जो सघर्ष श्री जयनारायण व्यास ने देश मे शुरू किया था, उस समय भले ही उसका चतुर्दिक स्वागत नही हुआ परन्तु आज उसका परिणाम स्पष्ट रूप से नजर आ रहा है । उन्होंने निष्ठावान कांग्रेसजनो की प्रवुद्धता को झकझोर कर रख दिया था । उन्होंने अपने सघर्ष के दौर मे उन बीजो को राजनीति के खुले मैदानो मे बो दिया था जिसके परिणाम अब प्रकट हो रहे हैं । उन्होंने जिस वैचारिक-क्रान्ति का सूत्रपात किया था वह आज अकुरित और पल्लवित हो रही हैं । आज देश करवट ले रहा है और अपेक्षित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए समुचित नीतियो का निर्धारण हो रहा है और सही रूप मे उनके क्रियान्वन के बारे मे सोचा जा रहा है ।

जीवन के अन्तिम क्षण तक जूझने वाला जूझार

अपने जीवन के अन्तिम वर्षों मे श्री जयनारायण व्यास अपनी एकाकी, सत्यनिष्ट और लोकसेवा की आदर्शवादिता के सहारे समाज मे चारो ओर फैले हुए निहित् स्वार्थों से जूझते रहे । जनता ने उन्हें लोकनायक के सम्मान से सम्बोधित किया और इस लोकनायक ने अपने उदात्त चरित्र से लोकधर्म की आचार सहिताएँ लिखते हुए, 14 मार्च 1963 को सपूर्ण राजकीय और लोक सम्मान के साथ हम सब से विदा ली ।

श्री माणिक्यलाल वर्मा, उदयपुर.



जन्म . संवत् 1954 माघ शुक्ला 11

अवसान 24 जनवरी, 1969

श्री माणिक्यलाल वर्मा के निधन से स्वातंत्र्य पूर्व-युग के त्याग, कष्ट सहन, स्पष्टवादिता, निर्भीकता, एकमात्र जनसेवा का आदर्श सामने रखने वाली पीढी का एक बलशाली स्वप्न और जीता जागता नमूना आँखो से ओझल हो गया। यदि श्री जयनारायण व्यास के निधन से उस युग की बांह टूट गई थी तो वर्माजी उसकी कमर तोड़ गए।

—हरिभाऊ उपाध्याय

जन्म और प्रारम्भिक जीवन

श्री माणिक्यलाल वर्मा का जन्म बिजोलियाँ (मेवाड) ठिकाने के एक सामान्य कायस्थ परिवार मे सवत् 1954 की माघ शुक्ला 11 (सन् 1897) को हुआ था। श्री वर्मा ने 18 वर्ष की आयु मे (सन् 1915 मे) श्यामपुरा मे एक ग्राम पाठशाला की स्थापना करके अपना सार्वजनिक जीवन प्रारभ किया था। यह वह समय था जब साधु सीतारामदास के निमत्रण पर विजयसिह पथिक बिजोलियाँ आ चुके थे और साधुजी के साथ उन्होने लोक-मानस के प्रशिक्षण के लिए विद्या प्रचारिणी सभा की स्थापना करदी थी। श्यामपुरा के अध्यापक माणिक्यलाल वर्मा भी पतगो की तरह साधु और पथिक के साथ आ मिले और वे विद्या-प्रचारिणी-सभा के मत्री बना दिए गए। विद्या-प्रचारिणी-सभा के साप्ताहिक अधिवेशन होते। वन्दे मातरम् का अभिवादन प्रचलित हुआ। मेवाड के पिछडे हुए इलाके ने जाना कि लोकमान्य तिलक ने भारतीय जनता को स्वराज्य का मत्र दिया है और डा० एनी बेसेंट होम-रुल आन्दोलन चला रही है।

राजनीति और लोक-सेवा की दीक्षा

श्री माणिक्यलाल वर्मा को राजनीति और लोक-सेवा की दीक्षा साधु सीतारामदास की देख-रेख मे पथिकजी द्वारा दी गई थी। आगे जाकर वर्माजी बिजोलियाँ किसान सत्याग्रह के नेता बन गए थे और जब देश के किसान सत्याग्रहो का सही मूल्यांकन होगा तब श्री वर्माजी की प्रारंभिक सेवाओ और यातनाओ का सही मूल्य आँका जा सकेगा।

सत्ता में लीन नहीं हो सके

श्री माणिक्यलाल वर्मा अपने जीवन मे जन नेता रहे, जनता के प्रतिनिधि के रूप मे ससद सदस्य रहे, तथा जनता के सबसे बडे सगठन कांग्रेस की कार्यकारिणी के सदस्य रहे, राजस्थान प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष रहे और राजस्थान के पहले प्रधानमत्री भी रहे। परन्तु वे कही भी सत्ता मे लीन नही हो सके। निश्चय ही राज्य सत्ता ने इस क्रान्तिपुत्र का आलिंगन करने की चेष्टा की मगर वे वहाँ भी छटपटाने लग गए और बृहत् राजस्थान के निर्माण के साथ पुन जनता के बीच रहने लगे। जनता के बीच रहने व उसके साथ एक-रस होकर घुलमिल जाने तथा उसकी ही भाषा बोलने मे उन्हे जितना आनन्द आता था, उतना बडे से बडे पद पर आसीन होकर भी नही आता था।

गाड़िया लुहारों को बसाने के लिए चित्तौड़ दुर्ग पर आयोजन

दिल्ली के ससदीय कार्यों मे भी उनकी विशेष दिलचस्पी नही थी, उन्होने पिछडी जातियो, कजर, साँसी जैसी अपराधी जातियो, गाडिया लुहारो आदि को ऊँचा उठाने का बीडा उठा लिया। उनके लिए वह राजस्थान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक दौडते रहे। गाडिया लुहारों को फिर से बसाने के लिए उन्होने चित्तौड दुर्ग पर एक बडा आयोजन किया और नेहरूजी के हाथो दुर्ग पर तिरगा फहरा कर गाडिया लुहारो की प्रतिज्ञा पूरी की।

पिछड़ी हुई जातियो की सेवा का व्रत

पद पर न रहकर जनसेवा के कार्य मे वे ऐसे जुटे कि उनका व्यक्तित्व जनसेवा के साथ एकाकार हो गया। वे धरती के पुत्र थे, अतएव जो धरती के पिछडे हुए जन थे उनकी सेवा का मानो उन्होने व्रत ही ले लिया था। भील, मीणा, गाडिया लुहार, कत्था बनाने वाले कथोडिये, बजारे, कालबेलिए, सीमा प्रदेश मे रहने वाले और अन्य ऐसी ही जातियो और वर्गों के सेवा कार्य मे उन्होने अपने आपको झोक दिया।

निस्सहायो के लिए आश्रय स्थान

एक साधारण परिवार मे जन्म लेकर, साधारण स्थिति मे मेवाड के ठिकानो मे रहकर जहाँ आधुनिक नागरिक सुविधाओ का अभाव था और शिक्षा प्राप्त करने के साधन और सुविधा नही थी, वर्माजी उसी प्रकार निस्सहायो और पीड़ितो के लिए आश्रय स्थान बन गए जिस प्रकार एक विशाल वट वृक्ष बिना माली की देखभाल के जगल मे

स्वय उत्पन्न होता है और असख्य थके हुए पथिको की, अपनी छाया से थकान मिटाता है। पीडितो के प्रति ममता और क्रान्ति की भावना उनमे जन्मजात थी। वे जन्मजात विद्रोही थे, तभी तो बिजोलिया ठिकाने की सेवा को तिलाजलि देकर वे किसानो के साथ ठिकाने और मेवाड राज्य के विरोध मे खडे हो गए।

जीवन व्यवहार के मूल्य और मान्यताएं

श्री माणिक्यलाल वर्मा ने अपने जीवन के कुछ ऐसे मूल्य निश्चित कर लिए थे कि जो अ त तक उनके साथ रहे। अन्याय के विरुद्ध आवाज बुलद करना, अत्याचारो से किसी प्रकार समझौता नही करना, जुल्म और शोषण से पीडित वर्गों का पक्ष मजबूत करना तथा उन्हें समाज मे समानता का दर्जा दिलाना और लोगो की गरीबी को दूर करने के लिए उन्हे सभी सुख-सुविधाए दिलाना आदि ऐसी दृढ मान्यताए थी जो उनके जीवन व व्यवहार मे सदा दृष्टिगोचर होती थी।

भूमिहीन को जमीन, जमीन को पानी और पानी के साथ बिजली

इनके अतिरिक्त भूमिहीन को जमीन, जमीन पर पानी और पानी के साथ बिजली ये तीन नारे वर्माजी ने बडी बुलद आवाज से गुंजाए। वे जानते थे कि जब तक इस त्रिसूत्री कार्यक्रम को हाथ मे नही लिया जाएगा तब तक पिछडे हुए लोगो की उन्नति का स्वप्न अधूरा रह जाएगा।

बिजोलियाँ के किसान सत्याग्रह की उपलब्धि

भारत के प्रथम किसान-सत्याग्रह का गौरवमय इतिहास अभी अन्धेरे मे है। उसमे प्रकट हुई लोक-चेतना की जानकारी जब वास्तविक रूप मे सामने आयेगी तब उसका महत्व समझ मे आ सकेगा। इस ज्योति को जगाने वाले बिजोलियाँ आदोलन के सूत्रधार स्व० पथिकजी की यह करामात ही समझनी चाहिए कि उन्होने ऊपरमाल जैसे अत्यन्त पिछडे हुए और एकान्त कोने मे पडे हुए क्षेत्र को सत्याग्रह के प्रयोग हेतु चुना, जिसमे श्री माणिक्यलालजी वर्मा जैसे प्रखर नेतृत्व करने वाले की उपलब्धि हुई। यहाँ का सगठन ऊपरमाल किसान पचायत के नाम से प्रसिद्ध हुआ, जो कुछ ही समय मे इतना ठोस बन गया कि साम्राज्यशाही तक को चुनौती देन की स्थिति मे आ गया। यह बात वर्माजी के स्वय रचित एक लोक गीत मे बहुत अच्छी तरह ध्वनित और उद्घोषित हुई है—

सुण ऊँचा कर कान, रे ! रगरसिया राजा !

'थे और अब थाका धणी,
थोडा दिन महमान।
'माणक' जनता जागगी,
सुण ऊँचा कर कान।
रे ! रगरसिया, राजा,
कई तो सूतो रे, गाढी नीद मे।

देश का पहला किसान सत्याग्रह

विजोलियाँ के किसान सामन्ती शोषण और उत्पीडन के शिकार थे। भू-राजस्व के अलावा वीस कम एक सौ प्रकार की अजीवोगरीब लागतें उनसे वसूल की जाती थी। वेगार सभी जातियो से ली जाती थी और वह भी जूते और डण्डे के जोर से। किसान इस सामन्ती शोषण के विरुद्ध पहले भी सिर उठा चुके थे, किन्तु उन्हे दवा दिया गया था। पथिकजी ने किसानो से सम्पर्क स्थापित किया। इस काम मे साधु सीताराम दासजी और श्री माणिक्यलाल वर्मा, पथिक जी के निकट सहयोगी वने। माणिक्यलालजी ने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और मैदान मे कूद पडे। किसानो के वीच जाकर वैठ गये और लडको को पढाना शुरू किया। किसानो की शिकायतो की अर्जियाँ लिखी जाने लगी, किन्तु कोई सुनने वाला नही था। किसानो का सगठन खडा किया गया और सामूहिक आदोलन का शख फूंक दिया गया। पथिकजी की देख रेख मे साधु सीताराम दासजी और श्री माणिक्यलाल वर्मा किसानो का पथ-प्रदर्शन करने लगे। विजोलियाँ देश मे सबसे पहले सत्याग्रह की कर्मस्थली वनी। राज्य को अल्टीमेटम दे दिया गया कि किसान अनुचित लाग-वेगार नही देंगे। यही नही अपनी माँगे पूरी न होने तक किसानो ने भूराजस्व भी देना वद कर दिया। जमीन पडत रख दी। ठिकाने का खजाना खाली हो गया। राज्य ने किसानो पर दमन चक्र चलाया। पकड-वकड शुरू की। मारपीट और यत्रणाओ का वाजार गर्म हुआ। श्री माणिक्यलालजी वर्मा को भी पकड कर जेल मे डाल दिया गया। उस समय कम्वल ओढाकर पिटाई की जाती थी। भाई माणिक्यलालजी ने यह सव सहन किया। किसान भी अडिग रहे विजोलियाँ का किसान आदोलन देश के समाचार पत्रो मे चमका। मेवाड राज्य के आस-पास के इलाको मे भी सामन्ती शोषण के विरुद्ध विद्रोह की आग फैल गई। आखिर अग्रेज सरकार का ध्यान भी मेवाड की इस अशाति की ओर गया। उसने रियासत को समझौते के लिए प्रेरित किया। उस समय राजस्थान सेवा सघ वन चुका था। रियासती अधिकारियो के साथ समझौता वार्त्ता चली। इस वार्त्ता मे किसान पचो के साथ श्री माणिक्यलाल वर्मा ने भाग लिया। राजस्थान सेवा सघ की ओर से राम नारायणजी चौधरी भी वातचीत मे शरीक हुए। किसानो की अधिकाश माँगे मजूर कर ली गई और चार-पाँच साल के कडे सघर्ष के वाद किसान विजयी हुए। भाई माणिक्यलालजी किसानो के अप्रतिम विश्वास भाजन वन गये, उन्हे किसानो ने अपना पथ प्रदर्शक और सहायक स्वीकार किया।

मेवाड़ प्रजामंडल का संगठन

विजोलियाँ-आन्दोलन के कारण महात्मा गाँधी और राजस्थान के तत्कालीन प्रमुख कार्यकर्ताओ मे जो सम्पर्क स्थापित हुआ, वही आगे चलकर मेवाड प्रजामण्डल की स्थापना और उसका अ० भा० देशी राज्य लोक परिषद् के साथ गाढा सम्बन्ध वनाने मे फलीभूत हुआ। यो तो देश भर की रियासतो मे प्रजामण्डल, लोक परिषद् आदि के नाम से सगठन वने और उत्तरदायी शासन की माँग को लेकर लडाइयाँ लडी गईं, किन्तु मेवाड

प्रजामडल के जन्म के साथ ही उस पर लगे हुए प्रतिबन्ध और उनको तोडकर प्रजामण्डल को सगठित करने मे स्व० वर्मा जी ने जो अथक परिश्रम किया, चुन-चुन कर कार्यकर्ताओ को एकत्र किया और गाँव-गाँव मे जागृति का शख फूँका उसकी मिसाल ढूँढने से भी मिलना कठिन है ।

आजीवन सेवा का व्रत

श्री माणिक्यलाल वर्मा ने आजीवन राजस्थान की सेवा का व्रत ले लिया । वह राजस्थान सेवा सघ के आजीवन सदस्य बन गये । सघ देश भक्तो का एक कुटुम्ब था । श्री माणिक्यलाल वर्मा के साथ देश सेवा की राह मे जो भी जनसेवक मिले उनका उनके साथ कौटुम्बिक सम्बन्ध कायम हुआ, वह आखिर तक कायम रहा ।

बिजोलियां की नयी गुत्थी

बिजोलिया मे एक नई समस्या उठ खडी हुई । समझौते के अनुसार वहाँ जमीन का नया बदोवस्त हुआ और किसानो ने महसूस किया कि उसके फलस्वरूप लगान काफी बढ गया है । किसानो ने उसे कम कराने की कोशिश की, किन्तु जब इसमे सफलता नही मिली तो उन्होंने विरोध स्वरूप अपनी जमीनो का इस्तीफा दे दिया । जागीर ने वह जमीन दूसरो को सौंप दी । श्री माणिक्यलाल वर्मा को फिर किसानो की मदद के लिए आगे आना पडा । उन्होने सेठ जमनालाल जी बजाज की सहायता ली और वैधानिक तरीको से कोशिश करते रहे कि किसानो को उनकी जमीनें वापिस मिल जाय । किन्तु जब इसमे सफलता नही मिली, तो उन्होंने सत्याग्रह का शख बजा दिया ।

फिर सत्याग्रह, फिर दमन और नजरबन्दी

उनकी सलाह पर किसानो ने अपनी जमीन पर हल चलाये और ठिकाने ने उग्र दमन का आश्रय लिया । श्री माणिक्यलाल वर्मा को अन्य किसान सत्याग्रहियो के साथ जेल मे बद कर दिया गया । उस समय राज्य ने आदोलन को दबाने के लिए जिस बर्बरता का परिचय दिया उसकी दूसरी मिसाल नही मिल सकती । कुछ समय बाद सत्याग्रह तो स्थगित हुआ, किन्तु समस्या हल नही हुई । बिजोलियां मे श्री माणिक्यलाल वर्मा की उपस्थिति राज्य की आँखो मे काँटे की तरह खटकती थी । श्री माणिक्यलाल वर्मा बिजोलियाँ के मामले मे बातचीत करने उदयपुर गये थे । वही से उन्हे सीधे मेवाड के काले पानी कुम्भलगढ नामक स्थान मे ले जाकर नजरबद कर दिया गया ।

गंभीर बीमारी और रिहाई

कुम्भलगढ की नजरबदी मे श्री माणिक्यलाल वर्मा गभीर रूप से बीमार पडे । जमनालालजी बजाज को उनकी बीमारी का समाचार मिलने पर उन्होंने मेवाड के मुसाहिब आला सर सुखदेव को लिखा । अन्त मे श्री माणिक्यलाल वर्मा नजरबदी से रिहां कर दिये गये ।

राजस्थान सेवक मंडल में

इस अर्से मे राजस्थान सेवा सघ टूट चुका था। राजस्थान की सेवा से लिए उसी से मिलती-जुलती कार्यकर्त्ताओ की दूसरी सस्था वनाने की वात सोची जा रही थी। कुछ लोगो ने राजस्थान सेवक मण्डल का गठन किया और श्री माणिक्यलाल वर्मा भी आजीवन सदस्य के रूप मे शामिल हो गए। उस सयय गाँधीजी ने हरिजन-आन्दोलन शुरू कर दिया था। अजमेर के निकट नारेली नामक गाँव मे एक आश्रम स्थापित किया गया। श्री माणिक्यलाल वर्मा मे ग्रामीणो के साथ सम्पर्क स्थापित करने की अद्‌भुत क्षमता थी। वह उनका सहज ही विश्वास प्राप्त कर लेते थे, उन्होने आस-पास के क्षेत्र मे आश्रम के सेवा कार्य के लिए अनुकूल वातावरण वनाया।

डूँगरपुर के भील क्षेत्र में सेवा-कार्य

राजस्थान सेवक मण्डल ने रियासतो मे काम करने के लिए गाँधीजी की वताई हुई रीति-नीति अपनाई। राजाओ के सहयोग से वह रियासतो मे रचनात्मक कार्य करना चाहता था। इसके लिए डूँगरपुर रियासत मे अनुकूलता उपलब्ध हुई। श्री शोभालाल गुप्त के वाद श्री माणिक्यलाल वर्मा भी वहाँ पहुँच गए। भीलो मे काम शुरू किया गया। भीलो को दरिद्र-नारायण की सक्षिप्त मूर्त्ति कहना चाहिए। श्री माणिक्यलाल वर्मा ने भीलो की वस्तियो मे घूमना शुरू किया जो डूँगरपुर रियासत के वन प्रदेश मे चारो ओर फैली हुई थी। उन्होंने खगलाई मे एक पहाडी की टेकरी पर अपना डेरा डाला। भीलो ने देखते देखते स्कूल के लिए और उनके रहने के लिए कच्ची झोपडी खडी कर दी। पहाडी की तलहटी मे नाला वहता था और उसमे पानी पीने के लिए कभी-कभी शेर भी आ जाया करता था।

शिक्षा के साथ-साथ समाज सुधार का कार्य

श्री माणिक्यलाल वर्मा निर्भय होकर अपनी झोपडी मे रहते थे। उन्होंने भीलो मे समाज सुधार का काम शुरू किया। दापे की प्रथा वद कराई जिसके अनुसार विवाह के लिए वरपक्ष को अमुक राशि देनी पडती थी। भील स्त्रियाँ घुटनों तक पीतल की पैंजनियाँ पहनती थी। इस रिवाज को भी उन्होंने खतम कराया। मृत्यु भोज की प्रथा को भी उठाने की कोशिश की। भील वालक-वालिकाओ की शिक्षा के लिए स्कूल खोले गए और रोगियो के लिए दवा-दारू का भी प्रवन्ध किया। चरखे और खादी के द्वारा वस्त्र स्वावलम्वन की शुरुआत की गई। भीलो मे कार्यकर्त्ताओ का प्रभाव वढते देखकर डूँगरपुर महाराजा सशक हो उठे और उन्होंने यह माँग की कि श्री माणिक्यलाल वर्मा डूँगरपुर के कार्य-क्षेत्र से हट जाये। राजस्थान सेवक मण्डल रियासत से सघर्ष मे नही आना चाहता था और इसलिए महाराजा के अनुरोध को स्वीकार कर लिया गया। फिर श्री माणिक्यलाल वर्मा अजमेर लौट आये। डूँगरपुर मे कार्यकर्त्ताओ को वडी विषम स्थिति मे काम करना पड़ रहा था। अर्थाभाव के कारण श्री माणिक्यलाल वर्मा के एक वच्चे की समुचित चिकित्सा न हो सकी

श्रौर वह असमय ही चल बसा। किन्तु उनकी पेशानी पर बल भी नही आया। लोक सेवा की धुन मे व्यक्तिगत सुख–दुख के लिए अवकाश ही कहाँ था।

मेवाड़ प्रजामण्डल का आन्दोलन

श्री माणिक्यलाल वर्मा ने अब मेवाड मे राजनैतिक काम शुरू करने का निश्चय किया। उन्होने उदयपुर मे प्रजामण्डल की स्थापना की, जिसका उद्देश्य महाराणा की छत्र-छाया मे उत्तरदायी शासन प्राप्त करना था। उस समय रियासत किसी भी राजनैतिक सगठन को काम करने की स्वतत्रता देने के लिए तैयार नही थी। उसने प्रजामण्डल पर रोक लगा दी और श्री माणिक्यलाल वर्मा को रियासत से निर्वासित कर दिया। वह चुप रहने वाले न थे। उन्होने सत्याग्रह का शख फूँक दिया सत्याग्रही टोलियाँ रियासत के कानून को तोडकर 'प्रजामण्डल जिन्दाबाद' के नारे लगाने लगी। जेलें सत्याग्रहियो से भरने लगी।

अमानवीय तरीके से गिरफ्तारी

रियासत, श्री माणिक्यलाल वर्मा को पकड कर जेल मे बद करने की घात मे थी। देवली के निकट अंग्रेजी इलाके मे उसकी पुलिस ने एक दिन छापा मार कर श्री माणिक्यलाल वर्मा को पकड लिया और घसीटते हुए मेवाड के इलाके मे ले आई और वहाँ उनको नगा करके खूब पीटा गया। अपने जीवन के आखिरी दिनो मे वह कहते थे कि इस मार-पीट के फलस्वरूप उनकी हड्डी मे दर्द होता है, प्रजामण्डल के सिलसिले मे सैकडो स्त्री पुरुष गिरफ्तार हुए। श्री माणिक्यलाल जी को जिस तरह गिरफ्तार किया उसकी गाँधीजी ने भी 'हरिजन' मे निन्दा की। आखिर मे रियासत की नीति मे परिवर्त्तन हुआ और प्रजा–मण्डल को मान्यता दे दी गई। श्री माणिक्यलाल वर्मा ने बिना किसी आर्थिक साधन के प्रजामण्डल का एक बडा आन्दोलन चलाया और उसमे सफलता प्राप्त की।

महाराणा को अल्टीमेटम

जब ब्रिटिश भारत मे 'अंग्रेजो भारत छोडो' आन्दोलन शुरू हुआ तो मेवाड प्रजामण्डल भी पीछे न रहा। उसने श्री माणिक्यलाल वर्मा के नेतृत्व मे महाराणा को अल्टीमेटम दिया कि उन्हे अंग्रेजी ताज से अपना सम्वन्ध विच्छेद कर लेना चाहिए। इस पर वह और प्रजामण्डल के दूसरे नेता जेल मे डाल दिये गये किन्तु देशी राजनैतिक स्थिति मे तेजी से परिवर्तन हो रहा था। ब्रिटिश सरकार ने भारतीय नेताओ के साथ सत्ता हस्तान्तर करने का वार्त्तालाप शुरू कर दिया था। मेवाड मे भी राजवदी रिहा कर दिये गये।

उदयपुर मे देशी राज्य प्रजा परिषद् का अधिवेशन

सन् 1946 मे उदयपुर में अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद् का अधिवेशन पडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता मे बडी धूम-धाम से हुआ। स्वागत समिति के अध्यक्ष श्री माणिक्यलाल वर्मा थे। इस अधिवेशन के सफल आयोजन पर जब वर्माजी को

चारो ओर से बवाइयें दी जाने लगी तो श्री माणिक्यलाल वर्मा ने कहा अखिल भारतीय देशी राज लोक परिषद् के अधिवेशन की सफलता के लिए जो शब्द कहे गए हैं, वे मुझे प्रोत्साहन देने के लिए ही कहे गए है किन्तु मैं अभी अपने आपको बधाई का पात्र नही मानता ।

पहले राजस्थान संघ के प्रधानमन्त्री

आखिर, अगस्त 1947 मे देश आजाद हुआ । उसके बाद राजस्थान की रियासतो का एक सघ बना और उदयपुर को उसकी राजधानी बनाया गया । श्री माणिक्य लाल वर्मा इस सघ के प्रधानमन्त्री नियुक्त किये गये । जिस पुलिस अधिकारी के निर्देश पर उनको देवली के निकट घसीटा और मारा गया, उसे उन्होने बुलाया । यह धडकते दिल से उनके पास पहुँचा, श्री माणिक्यलाल वर्मा ने उसे आश्वस्त किया और उसको पदोन्नति भी की । उससे वचन लिया कि वह नई लोकप्रिय सरकार के प्रति भी पुरानी सरकार जितना ही वफादार रहेगा ।

11 महीने का मन्त्रिमण्डल

उनके मुख्यमन्त्रीत्व काल मे जो कुछ 11 महिनो मे हुआ वह अन्य मत्रिमण्डल वर्षों मे भी नही कर सके । जागीरदारी उन्मूलन, पूर्व राजस्थान मे राजस्थान राज्य कर्मचारियो की सेवाओ की वरिष्ठता का निर्धारण आदि कुछ ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्य थे, जो 11 महिने के उनके मंत्रीत्वकाल मे हुए थे ।

राजकीय पद से जनसेवा का विरोध

भारत मे स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त पदलोलुपता का जैसा घृणित दृश्य अपने को राष्ट्र-कर्मी कहने वालो ने उपस्थित किया, वर्माजी उससे बहुत दूर थे । वास्तव मे वर्माजी के अन्तर मे पद के प्रति घोर उदासीनता थी । यदि यह कहा जावे कि वे पद को सन्देह की दृष्टि से देखते थे तो अतिशयोक्ति नही होगी । उन्हे ऐसा लगता था कि पद और जन सेवा का जैसे विरोध है । जब वे पहले वाले राजस्थान के मुख्यमत्री बने तो केवल इसलिए कि साथियो ने उन पर दबाव डाला । अन्य राज्य मेवाड के साथ मिल रहे थे । वर्माजी के अतिरिक्त और कोई ऐसा वरिष्ठ व्यक्ति नही था, जिसका नेतृत्व सभी राज्यो के कार्यकर्त्ताओ को स्वीकार होता ।

साथियो को आगे बढ़ाया

जब तक मेवाड मे उत्तरदायी शासन मे मत्रिमडल बनाने की बात थी, उन्होने कभी मत्रिपद स्वीकार करने का सोचा भी नही । श्री सुखाडियाजी, श्री हीरालाल कोठारी, श्री प्रेम नारायण माथुर को ही आगे लाए । बाद मे भी उन्होंने कभी मत्रिमडल मे जाने की बात नही सोची । यहाँ तक कि चौथे आम चुनाव मे उन्होने लोक सभा मे जाना स्वीकार नहीं किया और श्री ओंकार लाल बोहरा का समर्थन किया ।

अनासक्त कर्मयोगी

यद्यपि उन्होने पिछडी जातियो की सेवा करने के लिए अनेक सस्थाओ को जन्म दिया और उनके द्वारा सेवा कार्य का व्यापक क्षेत्र तैयार किया, परन्तु उन्होने कभी भी उन सस्थाओ को अपनी जागीर नही बनाया। आज सार्वजनिक सस्थाए उनके सचालको की जागीरें बन गई हैं और वे उनसे उचित और अनुचित लाभ उठाते हैं। परन्तु वर्माजी किसी सस्था को जन्म देते और अपने किसी सहकर्मी साथी को उसका कार्यभार सौंप कर अन्यत्र सेवा कार्य से जुट जाते। बहुत सी सस्थाओ मे, जिन्हे उन्होने ही जन्म दिया था, वे कुछ नही थे।

कार्यकर्त्ताओ के साथ पारिवारिक आत्मीयता

जो भी व्यक्ति उनके साथ कार्य करते, उनके साथ उनकी इतनी आत्मीयता हो जाती थी कि वे उसके सुख-दु ख को अपना दु ख-सुख मानते थे। उनकी कठिनाइयो मे उनकी सम्हाल करना और उनकी सहायता करना उनका एक गुण था, जिसके कारण साथी कार्यकर्ताओ का उन्हे अटूट विश्वास प्राप्त था। यहाँ तक कि वे लोग भी जो आज कांग्रेस से नीतिगत मतभेदो के कारण दूर हट गये, परन्तु प्रजामडल मे उनके साथी रहे थे, इसलिए उनके प्रति आदर भाव रखते थे और वर्माजी भी उनके प्रति अपनापन बरतते थे।

बाडमेर, बीकानेर व जैसलमेर के सीमा क्षेत्र में

इस प्रकार के क्रान्तिकारी जीवन की भूमिका के बनी स्व० श्री माणिक्यलाल वर्मा ने 1962 मे चीन-भारत सघर्ष के सदर्भ मे बाडमेर-बीकानेर व जैसलमेर की सीमा पर घूमने का सतत् कार्यक्रम बनाया। तब लोगो को आश्चर्य होना स्वाभाविक था। कई लोगो ने तो यहाँ तक सोचा कि अब मेवाड में वर्माजी की नही चलती है। सुखाडियाजी ने अपना नेतृत्व कायम कर लिया है, इसलिए वर्माजी ने इस सीमा क्षेत्र मे, अपना राजनैतिक लाभ उठाने के इरादे से प्रवेश किया है। 1962 मे 1967 तक निरन्तर सीमा पर घूमने एव 67 के आम चुनावो मे उस क्षेत्र से बिल्कुल दूर रहने से लोगो की भ्रांति बिल्कुल दूर हो गई और तब से उम क्षेत्र के सभी वर्गो ने स्व० वर्मा साहब को अपने नि स्वार्थ हितैषी व सेवक के रूप मे देखना प्रारम्भ किया।

सीमावासियो की दयनीय स्थिति

सीमावासियो की दयनीय स्थिति ने, जिसका एक मूल कारण राज्य व केन्द्र सरकार की उपेक्षा थी, वर्माजी को प्रभावित किया और उन्होंने अनुभव किया कि "व्यासजी के बाद यह बाडमेर, जैसलमेर का क्षेत्र नेतृत्व विहीन है इसलिए इसे सभालना अत्यन्त आवश्यक है।" यदि वे उस समय इस क्षेत्र को न सभालते तो सरकार का ध्यान अभी वर्षों तक उस ओर नही जाता और जो प्रगति हुई थी वह भी नही हो पाती। स्व० वर्माजी ने इस सीमा क्षेत्र को देखकर भी अत्यत आश्चर्य किया था। जब उन्हे यह ज्ञान हुआ कि बाडमेर

जिले का सबसे बडा गाँव सुन्दरा, जिसका क्षेत्रफल 532 वर्गमील है, वहाँ स्वतंत्रता के 18 वर्षो मे कोई भी सरकारी अफसर या नेता नही पहुँचा है। सीमा के कई ग्रामवासियो को महात्मा गाँधी की मृत्यु तक का पता नही था तथा कई लोगो ने तो तिरंगे झण्डे तक के दर्शन नही किये थे। एक वार किसी गाँव मे उन्होने लोगो से कांग्रेस के बारे मे पूछा तो ग्रामवासियो ने वताया कि कांग्रेस का नाम तो सुना है वह फिरती है, मगर देखा नही है। एक वार दो-तीन खादीधारी किसी गाँव मे पहुँच गये तो लोगो ने कहा तीन कांग्रेसें आई है। जन-गण-मन की धुन तो शायद ही किसी ने सुनी होगी। इस प्रकार के अन्धकारमय लोगो को प्रकाश देने तथा उनको सीमा के सवल व सजग प्रहरी वनाने के लिए पूज्य वर्मा साहब ने सात वर्षों का सारा जीवन खपा दिया था।

647 मील चौड़ी पट्टी की सीमा का कार्य क्षेत्र

पाकिस्तान से लगती हुई राजस्थान की 647 मील लम्वी सीमा है। उसमे वीकानेर, जैसलमेर, वाडमेर व गगानगर के जिले लगते है। स्व० वर्माजी ने पचास मील लम्वी व 647 मील चौडी सीमा पट्टी को अपना कार्य क्षेत्र वनाया था। इस सीमा पट्टी मे मुख्य रूप से राजपूत, मुसलमान, जाट, विश्नोई तथा मेघवाल व भील जाति के लोग रहते है। मुसलमान, मेघवाल व भील लोग इतने कमजोर दवे हुए थे कि उनका वडा ही शोपण होता था। सीमा के मुसलमान पशु-पालन कार्य करते थे तथा भारत आजाद होने के वाद भी उन लोगो मे शिक्षा का कोई प्रसार नही हो पाया था।

पाकिस्तान में पनाह पाने वाले डाकुओं का आतंक

जिस समय वर्मा साहव ने सीमा पर आना प्रारम्भ किया था उन दिनो पाकिस्तान मे पनाह पाने वाले डाकुओ ने भारतीय सीमा मे वडा आतक मचा रखा था। तस्करी द्वारा वे भारत का कीमती माल चुरा कर पाकिस्तान ले जाते तथा कभी-कभी यहाँ के आदमियो तक को पैसा ऐंठने के लिए उठा ले जाते। अनूपगढ़ मे कुछ मेघवालो के यहाँ पाकिस्तानी घुसपैठिये वडा अत्याचार करते थे। जैसलमेर के नेडाई ग्राम से दो महाजन वच्चो का अपहरण भी उन्ही दिनो हुआ था। कुछ राजनैतिक नेता लोग ऐसे डाकुओ के मददगार भी रहे वताये गये तथा पुलिस वाले भी वडी आँख मिचौली किया करते थे। डाकू जगमाल सिंह, भँवरसिंह व तेजपालसिंह आदि वडे सक्रिय दलो मे घूम रहे थे। ऐसी अराजकतापूर्ण स्थिति से सीमावासी ऐसे भयभीत थे कि राज्य के अस्तित्व को मानने के लिए तैयार नही थे। स्व० वर्मा साहव ने इन दर्दनाक परिस्थितियो का दिग्दर्शन राज्य सरकार व भारत सरकार के गृह मत्रालय को कराया और सीमा सुरक्षा का समुचित प्रवध करने का आग्रह किया।

सीमा क्षेत्रो मे पुनर्वास का कार्य

स्व० वर्माजी सीमा की सुरक्षा की दृष्टि से सीमा पर लडाकू कौमो को प्रथम पक्ति में और वाद मे दूसरे लोगो को वसाने के हामी थे। राजपूत और भील जाति हमेशा

लडाकू जातियाँ (Martial Races) रही हैं। मेघवाल को वे बहुत ही कमजोर जाति मानते थे, जाट, विश्नोई भी राजपूतो के मुकाबले की जातियाँ, लडने वाली नही हैं। इन लोगो के पुनर्वास के लिए सर्वप्रथम वर्मा साहब ने पूरा सर्वेक्षण करवा कर भूमिहीन व्यक्तियो को सीमा पर जमीन दिलाने का काम हाथ मे लिया और उसे पूरा किया। जमीन दिलाने के साथ उन्होने भारत सरकार से निवेदन किया कि राजस्थान नहर का कार्य शीघ्र सम्पूर्ण किया जाय तथा जहाँ नहर न पहुँचे वहाँ अधिक से अधिक नलकूप खोद कर जमीन की सिचाई के लिए पानी मुहैय्या कराया जाय। उनकी मान्यता थी कि जब तक सीमावासियो को पर्याप्त रोजगार देकर स्वावलम्बी नही बनायेंगे तब तक उनमे हौंसला व वफादारी उत्पन्न होना कठिन है। वे सीमा पर रहने वाले लोगो की पचमार्गी हरकतो से भी अनभिज्ञ रहे हो, ऐसी बात नही है।

सीमा प्रदेश में सीमावर्त्ती छात्रावास

एक बार सम ग्राम मे एकत्रित समुदाय मे उन्होने साफ कहा था कि जो लोग दो घोडो की सवारी करना चाहते हैं उनके लिए भारतवर्ष मे कोई स्थान नही। वे पाकिस्तान चले जाय तो हमे कोई दुःख नही होगा। एक बार हमारी पाठशालाओ मे पाकिस्तानी पुस्तकें पढाये जाने की उन्हे खबर लगी तो बहुत ही तिलमिलाये थे। मुसलमानो को सरकारी पाठशालाओ मे बच्चो को भेजने के लिए उन्होने बडा प्रयत्न किया था। सर्वप्रथम हरिजनो व आदिवासियो के लिए उन्होने स्थान-स्थान पर छात्रावास खुलवाये और बाद मे उन जातियों के अतिरिक्त सवर्ण लोगो के गरीब छात्रो के लिए भी उन्होने सीमावर्त्ती सार्वजनिक छात्रावास, बीकानेर, जैसलमेर व बाडमेर मे स्थापित किये।

पश्चिमी राजस्थान सीमा विकास समिति

सीमोन्नति के कार्य को आगे बढाने की दृष्टि से उन्होंने व्यक्तिगत स्तर से उठ कर सस्थागत तौर पर "पश्चिमी राजस्थान सीमा विकास समिति" नामक स्वयं सेवी सस्था की स्थापना की और स्वय उसके प्रथम अध्यक्ष भी बने। इस सस्था के द्वारा आज इन तीनो सीमावर्त्ती छात्रावासो का सचालन होता है तथा सीमा पर लोगो के पुनर्वास सम्बन्धी त्रिसूत्री कार्यक्रमो को लागू करवाने के लिए वर्मा साहब के नेतृत्व मे यह सस्था भारत सरकार व राजस्थान सरकार से निरन्तर लिखा पढी करती रही है। भूमिहीन को जमीन, जमीन पर पानी और पानी के साथ बिजली, ये तीन नारे स्व० वर्मा साहब ने बडी बुलद आवाज से गुजाये।

दो दर्जन सांसदो के साथ सीमा क्षेत्र मे

वे एक बार भारत सरकार के अर्थ मत्री श्री टी० टी० कृष्णामाचारी को तथा ससद् के 28 सदस्यो तक को विशाल, निर्जन व निर्जल रेगिस्तानी सीमा क्षेत्र को दिखाने भी लाये थे ताकि सीमा क्षेत्र के बारे मे एक फिजा बन सके। स्व० वर्मा साहब के प्रयत्नो से

भारत-पाक युद्ध के समय भी काफी मुस्तैदी से प्रवन्ध किया गया था। उस समय की सूचना व प्रसारण मन्त्री एव आज की प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी को वाडमेर, जैसलमेर क्षेत्र मे ले जाने मे भी उनकी वह दृष्टि साफ थी कि केन्द्रीय सरकार इन क्षेत्रो की ओर विशेष ध्यान दे। अव जैसलमेर मे रेल आ गई है और उसका सवसे वडा लाभ इस वर्ष उस क्षेत्र के अकाल पीडित पशु-धन को चारा उपलव्ध कराने मे हुआ है।

राज्य व जनता को सतर्क रखने के लिए

वे सीमा पर निरन्तर घूमते रहे इसलिए कि लोग उनकी वातो को भूल न जाए और इसलिए भी कि राजकीय तत्र ढीला न पड जाय। उनके निरन्तर घूमते रहने से सरकारी तत्र भी जरा सतर्क रहता था और जनता की समस्याओ को शीघ्र हल करने मे सावधानी रखता था। जनता की सार्वजनिक समस्याओ के वारे मे चाहे वे छोटी हो या वडी वे निजी तौर पर सरकारी अधिकारियो से मिल कर उनका समुचित ढग से हल करवाते थे।

उनकी तमन्ना थी

वे युद्ध व अकाल की भीषण लपटो मे भी सीमा पर जाना नही भूले। एक वार तो उन्हे गोलियो की वौछार मे से गुजरना पडा। वे सीमा पर घूमते थे तव वडे प्रसन्न रहते थे। उनका स्वास्थ्य भी सीमा पर जाने से ठीक हो जाता था और उनकी वडी तमन्ना थी कि "मैं सीमा पर ही काम करते-करते मर जाऊं और मेरी लाश ही उदयपुर जावे।"

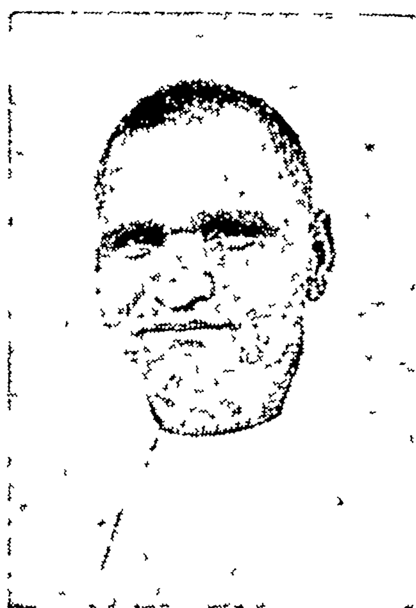
सीमावर्त्ती छात्रावासों की पृष्ठभूमि

उन्होंने जो सीमावर्त्ती छात्रावास प्रारम्भ किये थे उसके पीछे भी उनकी यह दृढ मान्यता थी, कि आने वाली पीढी शिक्षित हो, जागरूक हो और गुलामी के सस्कारो से दूर हट कर विशुद्ध लोकतत्र की हिमायती हो। ताकि हम पूज्य महात्मा गाँधी के सपनो का अहिंसक समाज स्थापित कर सकें जिसमे सभी वर्ग समानता के साथ अपना विकास कर सकें और इन छात्रावासो मे रहने वाले युवक राज्याश्रित न होकर देश के विकास व सुरक्षा के काम नये तरीको से करने लगे। वास्तव मे ये छात्रावास स्व० वर्मा साहव की सीमा क्षेत्र को वडी देन है और आने वाली पीढियाँ उन्हे सदियो तक याद करती रहेगी।

सेवा करते हुए ही शरीर त्याग

एक वीर योद्धा की भाँति—जिसकी केवल यही महत्वाकाक्षा रहती है कि वह रण-भूमि मे वीरता के साथ लडता हुआ मरे—वर्माजी की भी यही हार्दिक इच्छा थी कि वे सेवा कार्य करते हुए ही महा-प्रयाण करें। उनकी इच्छा पूरी हुई। सेवा कार्य करते हुए ही उन्होने 14 जनवरी 69 को अपने शरीर का त्याग किया।

ण्डित हीरालाल शास्त्री, जयपुर.



24 नवम्बर, 1899

जीवन कुटीर, वनस्थली विद्यापीठ

एकीकरण जैसे कठिन कार्य की बागडोर

राजपूताना की रियासती जनता मे आजादी के प्राणसचार करने वाले पडित अर्जुनलाल सेठी, ठाकुर केसरीसिह बारहठ और श्री विजयसिह पथिक की त्रिमूर्ति के बाद अपनी रियासती सीमाओ से बाहर राजपूताना की प्रत्येक रियासत के नेताओ और कार्यकर्ताओ को लोक जागरण मे जिनसे निरन्तर प्रेरणा मिलती रही और जो जन आन्दोलनो का एव जनता का पथ-प्रदर्शन और दिशा-नियन्त्रण करते रहे उनमे सर्व श्री मणिक्यलाल वर्मा, जयनारायण व्यास, गोकुलभाई भट्ट और हीरालाल शास्त्री अग्रगण्य रहे हैं। और ये ही राजस्थान के "चार बडे" कहलाये। राजस्थान के इन "चार बडो" मे से ही श्री माणिक्यलाल वर्मा श्री जयनारायण व्यास और श्री गोकुलभाई भट्ट ने सरदार पटेल को राजस्थान के एकीकरण जैसे कठिन और दुरूह कार्य की बागडोर पण्डित हीरालाल शास्त्री को सभलाने के लिए प्रेरित किया। इन सब की राय से राजस्थान की रियासतो के एकीकरण की जिम्मेदारी शास्त्रीजी ने मजूर की थी।

जन्म, बाल्यकाल और शिक्षा

शास्त्रीजी का जन्म जयपुर के जोवनेर कस्बे के पारीक पुरोहित वश मे 24 नवम्बर 1899, को हुआ। जन्म के केवल सोलह मास बाद ही इनकी माँ श्रीमती ममता जोशी का स्वर्गवास हो गया। इनके पिता श्री श्रीनारायण जोशी ने अपने पुत्र के भविष्य को ध्यान मे रखकर 25 वर्ष की युवावस्था होते हुए भी दुबारा विवाह न करने का सकल्प कर लिया। शास्त्रीजी की शुरु की शिक्षा अपने जन्म स्थान पर ही हुई और 16 वर्ष की उम्र मे इन्होने जोवनेर हाई स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की, जिसमे इन्हे प्रथम

स्थान मिला। वाद मे वे जयपुर पढने के लिए चले आये जहाँ से ये 1920 मे साहित्य शास्त्री की और 1921 मे बी० ए० की परीक्षा मे बैठे और इन परीक्षाओ मे उन्हे क्रमशः द्वितीय और प्रथम स्थान मिला। इसके वाद मुख्यतया असहयोग आन्दोलन के कारण उन्होने आगे पढने का विचार छोड दिया।

प्रशासनिक अनुभव

शिक्षा समाप्त करने पर पडित हीरालाल शास्त्री ने अपने पिता की इच्छानुसार और जयपुर राज्य के तत्कालीन गृह और परराष्ट्र मन्त्री सर पुरोहित गोपीनाथ के आग्रह से राज्य सेवा मे प्रवेश करके मेयो कालेज मे जयपुर राज मोतमिद, असिस्टेंट अकाउन्टेन्ट जनरल, गृह व परराष्ट्र सचिव आदि के पदो पर लगभग 6 वर्षों तक कार्य किया। शास्त्रीजी अपने सत्यनिष्ठ, न्यायसगत और स्वतत्र विचार रखते हुए उस जमाने मे भी मेयो कालेज के अग्रेजियत के वातावरण तक मैं अपने सीधे-सादे देशी लिवास मे निर्भय रहते थे और महकमा-खास मे सचिव की हैसियत से फाइलो मे जोरदार नोट लिख लिखकर रियासत के अग्रेज उच्चाधिकारियो की अनुचित वातो का साहसपूर्वक विरोध किया करते थे।

सार्वजनिक सेवा और ग्राम समाज की रचना करने का संकल्प

पण्डित हीरालाल शास्त्री राजकीय सेवा के दिनो मे भी प्रयास परिषद् और राजस्थान छात्रालय के अतिरिक्त छात्रमडल आदि के माध्यम से समाज सेवा का कार्य भी करते रहे। वे महकमा खास (सचिवालय) के काम से निवृत्त होकर छात्रो से सम्पर्क रखने की दृष्टि से एक स्थानीय हाई स्कूल में पढाने के लिए भी प्रतिदिन जाते थे। शास्त्रीजी ने विद्यार्थी काल से ही नये ग्राम ममाज की रचना करने का सकल्प कर रखा था। इसलिए इन कामो से उनकी तृप्ति नही हो सकती थी और वे राजकीय सेवा छोडने के लिए हर घडी व्याकुल रहते थे। इसी वीच शास्त्रीजी की भेंट जयपुर के अद्वितीय सपूत प्रसिद्ध समाजसेवी और क्रान्तिकारी नेता पण्डित अर्जुनलाल सेठी से हुई। सेठीजी ने शास्त्रीजी से कहा कि तुम आँख बन्द करके समुद्र मे कूदना चाहो तो कूद जाओ—तुम तिर जाओगे।

राजकीय सेवा का त्याग और रचनात्मक सेवा की तैयारी

पडित अर्जुनलाल सेठी की वात शास्त्रीजी पर जादू का असर कर गई। जाहिर है कि इतना वडा पद त्यागना कोई आसान कार्य नही था। पर अन्ततोगत्वा 7 दिसम्बर, 1927, को शास्त्रीजी ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया और प्रतिज्ञा की कि मैं भविष्य मे कमाई का काम नहीं करूँगा और अपने काम की एवज मे कही से भी वेतन आदि स्वीकार नही करूँगा। तदनुसार अपने मुख्यमत्री पद के वेतन को भी शास्त्रीजी ने अपने काम मे नही लिया।

सेवा योजना को क्रियान्वित करने की तैयारी

1928 का पूरा वर्ष और 1929 के कुछ महीनो के समय मे शास्त्रीजी ने देश के

अनेक स्थानो पर घूमकर लोक-सेवी सस्थाओ के कार्यों की प्रक्रिया का अवलोकन किया और अपनी आकाक्षाओ के अनुसार अपनी सेवा योजना को क्रियान्वित करने की तैयारी पूरी की। उन्होने अपना सकल्प और योजना गाँधीजी के समक्ष रखी और क्रान्तिमूलक रचनात्मक सेवा के लिए गांधीजी का आशीर्वाद प्राप्त कर लिया।

जीवन-कुटीर की स्थापना, उद्देश्य, कार्यक्रम और सिद्धान्त

12 मई 1929, को जयपुर राज्य की निवाई तहसील के वनस्थली नामक ग्राम मे पण्डित हीरालाल शास्त्री ने जीवन कुटीर नामक की सस्था की स्थापना की। यो तो इस सस्था का आधारभूत कार्य वस्त्र-स्वावलम्बन आदि था। पर उनके इस नये प्रयोग से आकर्षित होकर धीरे-धीरे शास्त्रीजी के पास आदर्शोन्मुख, नि स्वार्थ और सत्यनिष्ठ कार्यकर्त्ताओ की अच्छी मण्डली तैयार हो गई। शास्त्रीजी ने इन साथियो के द्वारा वनस्थली के 6 के मील दायरे मे पडने वाले पचासेक गाँवो मे वस्त्र-स्वावलम्बन के साथ-साथ खेती-सुधार, बैलो की नस्ल-सुधार, सहकार-सभा, रोगी-परिचर्या, औषध-वितरण, रात्रि-पाठशालाओ और स्वरचित लोकगीतो के माध्यम से लोक शिक्षण के काम को चारो ओर फैलाया।

नये ग्राम-समाज की रचना का समारम्भ

जीवन कुटीर का उद्देश्य था—नये ग्राम समाज की रचना करना और उसके लिए उसका सिद्धान्त था राज्य की उपेक्षा करना, अर्थात् न उससे कुछ चाहना और न उससे चलाकर झगडा मोल लेना। शास्त्रीजी राज्य की सहायता के विना और राज्य द्वारा हो सकने वाले विरोध और दमन की परवाह न करते हुए नये ग्राम-समाज की रचना करना चाहते थे। जीवन-कुटीर का यह प्रयोग प्रत्यक्ष सेवा कार्य के द्वारा अपने आपको तथा साथियो को प्रशिक्षित करने का प्रयोग भी था। जीवन-कुटीर का रहन-सहन अत्यन्त कठोर, अनुशासनबद्ध और नियमबद्ध था। जो कार्यकर्त्ता जीवन कुटीर मे जमे रहे उन्होने, प्रत्यक्ष कार्य करते हुए लोक-सेवा के क्षेत्र मे असाधारण शिक्षण प्राप्त किया। इन कार्यकर्त्ताओ ने अथक परिश्रम करके तथा अपने आपको उस अभियान मे झोक कर स्वय को गढा, वनाया और तैयार किया। स्पष्ट है कि जीवन-कुटीर का कार्यक्रम मूलत एक क्रान्तिकारी अभियान के रूप मे था।

क्रान्ति के दूसरे मार्ग की खोज

जीवन-कुटीर के उपर्युक्त कार्य के साथ-साथ पण्डित हीरालाल शास्त्री का चिन्तन क्रान्ति के किसी दूसरे मार्ग की खोज मे भी चलने लगा था। वे देख रहे थे कि उनके काम की जडें गहरी नही जा रही हैं। इस मार्ग से आखिर क्रान्ति कैसे होगी और नये समाज की रचना का काम कैसे साकार होगा? विचार मन्थन चलता रहता था कि राज्यतत्र मे परिवर्तन हुए विना क्रान्ति का रथ आगे नही बढेगा और क्रान्ति के लिए कोई दूसरा

मार्ग खोजना ही पडेगा । 7½ वर्षो की रचनात्मक कार्यो की कठोर साधना के बाद जीवन कुटीर की साधना-भूमि मे ही शास्त्रीजी का विचार बना कि जन-सामान्य को आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक न्याय दिलाने के लिए उन्हे प्रचलित राज्य सत्ता से सघर्ष करना ही पडेगा । उन्होने उस समय क्रान्ति का जो स्वप्न देखा था उसकी एक झलक इस प्रकार की थी —

सपनो आयो एक घणो जबरो रे, सपनो आयो ।
टण्का छा सो निमला हो गया, निमला राज घणो जबरो रै, सपनो आयो ।।
म्हैला की नो टपरी बण गयी, टपरी म्हैल घणो जबरो रै, सपनो आयो ।।

जयपुर राज्य प्रजमण्डल का पुनर्गठन

1931 मे जयपुर मे प्रजामण्डल के काम की कुछ शुरूआत हो गयी थी, पर उसकी विशेष प्रगति नही हो सकी थी । 1936-37 मे पण्डित हीरालाल शास्त्री को जयपुर राज्य प्रजामण्डल के पुनर्गठन के लिए बुलावा आ गया और उन्होने प्रजामण्डल का प्रधान बनना मजूर कर लिया । जयपुर के उस समय के प्रतिष्ठित वकील श्री चिरजीवलाल मिश्र प्रजामण्डल के अध्यक्ष बनाये गये और श्री कर्पूरचन्द्र पाटनी सयुक्त मत्री । जीवन कुटीर के प्राय सभी कार्यकर्त्ता (यथा सर्वश्री चन्द्रशेखर भट्ट, कल्याण शर्मा, वीरेन्द्रसिह चौहान, वीरेन्द्रसिह भदौरिया, रामभजनदास, बदरीनारायण खूटेटा, हनुमान शर्मा, बदरीनारायण व्होरा, श्मामसुन्दर माथुर, किशनसिह बाटड, वैंकटेश पारीक) प्रजामण्डल के कार्य मे अपनी पूरी शक्ति से जुट गये । प्रजामण्डल का काम तेजी से आगे बढा और जयपुर शहर तथा राज्य की सभी निजामतो मे मण्डल की कमेटियो का सगठन कर दिया गया । प्रजामण्डल के काम मे सर्वश्री लादूराम जोशी, टीकाराम पालीवाल, पूर्णचन्द्र जैन, रामकरण जोशी आदि ने एव कई एक किसान कार्यकर्त्ताओ ने भी अपना पूरा समय देकर हिस्सा लिया ।

प्रजामण्डल का उद्देश्य–उत्तरदायी शासन

प्रजामण्डल के तेजी से बढते हुए प्रभाव को देखकर सरकार की ओर से प्रजामण्डल के काम मे शुरू से ही बाधाओ का आना शुरू हो गया । प्रजामण्डल की ओर से राज्याधिकारियो को बता दिया गया कि मण्डल का विचार महाराजा को हटाने का नही है, बल्कि महाराजा की छत्रछाया मे उत्तरदायी शासन की स्थापना करवाना है । इस सदर्भ मे स्मरणीय है कि जयपुर राज्य प्रजामण्डल ने ही समय आने पर अपने उद्देश्य मे से "महाराजा की छत्रछाया मे" शब्द निकालने की पहल की थी ।

प्रजामण्डल का अधिवेशन

1938 के शुरू मे प्रजामण्डल ने गांधीजी का आशीर्वाद लेकर सेठ जमनालाल बजाज को अगले वर्ष के लिए अध्यक्ष बनाया और जयपुर शहर मे प्रजामण्डल का प्रथम

अधिवेशन करना तय किया । जयपुर सरकार की ओर से उपस्थित किए जाने वाले अनेको अडगो के बावजूद अध्यक्ष का बडा भारी शानदार जुलूस निकाला गया और प्रजामण्डल का अधिवेशन भी अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न हुआ जिससे राज्य भर मे प्रजामण्डल का दबदबा हो गया ।

शेखावाटी मे जकात आन्दोलन

प्राय उन्ही दिनो मुख्यतया श्री मातादीन भगेरिया के नेतृत्व मे शेखावाटी जकात आन्दोलन हुआ जिसमे प्रजामण्डल की ओर से पण्डित हीरालाल शास्त्री ने पूर्ण सहयोग दिया । जकात आन्दोलन सफल हुआ, जिससे प्रजामण्डल का प्रभाव बढने मे मदद मिली ।

प्रजामण्डल की विविध जिम्मेवारियें

शास्त्रीजी शुरू से लेकर 1940 तक के सालो मे और बाद मे फिर 1944 मे प्रजामण्डल के प्रधान मत्री तथा 1941 और 1942 मे सभापति, बाकी सालो मे कार्यकारणी कमेटी के सदस्य रहे । प्रजामण्डल मे शास्त्रीजी का पद कुछ भी रहा हो, आर्थिक आदि तमाम भार बराबर शास्त्रीजी पर ही रहा । अलबत्ता सत्याग्रह के समय की आर्थिक जिम्मेदारी शास्त्रीजी पर नही थी ।

किसान सभा का प्रजामडल मे विलय

प्रजामडल के पुनर्गठन के पहले से ही जयपुर राज्यान्तर्गत सीकर और झुझुनू के इलाको के किसानो मे काफी जागृति आ गयी थी । वहाँ ठिकानेदारो की जुल्म ज्यादती से किसान वर्ग अत्यधिक त्रस्त हो रहा था । ऐसे समय मे मुख्यतया आर्य समाज के प्रभाव से और जयपुर राज्य के बाहर से आये हुए और जयपुर राज्य के निवासी-प्रवासी कई एक कार्यकर्त्ताओ द्वारा किये गये सामाजिक सुधार, शिक्षा प्रसार आदि सेवा कार्यों को लेकर किसान समुदाय का जीवन चेतनामय हो गया था । साथ ही किसानो की लगान व लाग-बाग आदि से सम्बन्धित माँगो का रूप भी स्पष्ट हो गया था । किसान पचायत अथवा किसान सभा के नाम से किसानो का एक अच्छा सा सगठन भी हो गया था । किसान सभा के 1937–38 के काल के कार्यकर्त्ताओ मे सर्वश्री हरलालसिंह, नेतरामसिंह, घासीराम, ताडकेश्वर शर्मा, हरलालसिंह माँडासी, ख्यालीराम और ताराचन्द झारोडा के नाम उल्लेखनीय हैं । जिन दिनो प्रजामडल का पुनर्गठन होने जा रहा था प्रायः उन्ही दिनो मे श्री हरलालसिंह पडित हीरालाल शास्त्री से मिले । इस मुलाकात का एक परिणाम तो यह हुआ कि कई किसान लडकियाँ वनस्थली विद्यापीठ मे शिक्षा के लिए पहुँच गयी । दूसरा परिणाम यह हुआ कि किसान कार्यकर्त्ता क्रमश प्रजामडल के नजदीक आते गये और किसी एक शुभ घडी मे किसान सभा का प्रजामडल मे विलय हो गया । तभी से किसानो की समस्या प्रजामडल की समस्या हो गयी । प्रजा मडल के किसान और गैर-किसान कार्यकर्त्ताओ ने

शेखावाटी का दौरा किया। वाद मे समय आने पर जयपुर राज्य के उच्चाधिकारियो के साथ प्रजामडल के माध्यम से लवी वातचीत चली और किसानो को काफी राहत मिली और ठिकानेदारो की ओर से होने वाली जुल्म ज्यादती भी ठडी पड गयी।

नागरिक अधिकारों के लिए सत्याग्रह का फैसला

1939 मे प्रजामडल ने जयपुर राज्य के अकालपीडित क्षेत्रो मे राहत कार्य करने का काम हाथ मे लिया और सेठ जमनलाल वजाज ने उस काम के लिए जयपुर आना चाहा। पर जयपुर सरकार ने जमनालालजी के प्रवेश पर रोक लगादी और इस पर सरकार से प्रजामडल का झगडा शुरू हो गया। पडित हीरालाल शास्त्री आदि गाँधीजी का आशीर्वाद पाने के लिए उनके पास वारडोली पहुँचे। गाँधीजी ने शास्त्रीजी को देखते ही कहा "यह आ गया लडवैया"। जयपुर राज्य प्रजामण्डल की ओर से जयपुर कौंसिल के प्रेसिडेन्ट को भेजे जाने वाले पत्र का मस्विदा गाधीजी ने अपने हाथ से तैयार किया जिसमे केवल वोलने, लिखने और सगठन करने के नागरिक अधिकारो की माँग की गयी थी। पर जयपुर सरकार ने प्रजामण्डल की इतनी सी वात भी नही मानी। तव प्रजामण्डल ने जनता के मूलभूत नागरिक अधिकारो के लिए सत्याग्रह करने का फैसला कर लिया।

जयपुर में सत्याग्रह की शुरूआत और गिरफ्तारियां

प्रजामडल ने तय किया कि सेठ जमनालाल वजाज निषेधाज्ञा भग करके जयपुर प्रवेश करें। जयपुर मे खेजडे के रास्ते वाले शास्त्री सदन मे रात्रि के समय, प्रजामडल की कार्यसमिति के कुछ सदस्य सलाह-मशविरा कर रहे थे। उसी समय और वही सर्व श्री हरिश्चन्द्र शर्मा, कर्पूरचन्द्र पाटणी, चिरजीलाल अग्रवाल, हस० डी० राय और हीरालाल शास्त्री को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हे मोहनपुरा कैम्प मे ले जाकर वन्द कर दिया गया। दूसरे दिन श्री चिरजीवलाल मिश्र को भी गिरफ्तार कर वही पहुँचा दिया गया। सेठ जमनालाल वजाज को जयपुर राज्य मे प्रवेश करते समय पकड़ कर भोरासागर मे नजरवन्द कर दिया गया।

छः छः महीने की सजा

मोहनपुरा कैम्प मे कोर्ट लगा और पडित हीरालाल शास्त्री तथा उनके अन्य पाँच साथियो को तीन काउन्टो पर एक साथ चलने वाली छ छ मास की सजा सुना दी गयी। फिर वहाँ से उन्हे तथा सर्व श्री छगनलाल चौधरी, केवलचन्द मेहता, सरदारमल गोलेछा और रूपचन्द सोगानी को लाम्वा किले मे भेज दिया गया। किले मे अपनी आवश्यक सुविधाओ के लिए सत्याग्रहियो को भूख हड़ताल करनी पडी। सुविधाए दे दी गयी और भूख हडताल समाप्त हुई। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि स्वय शास्त्रीजी ने अपना भोजनादि सैण्ट्रल जेल मे रखे गये अन्य सत्याग्रहियो का सा ही रखा, यथा, विना चुपडी जौ की रोटी एक तरकारी और भूँगडे-धाणी का नाश्ता, मीठा, फल, दूध आदि सव कुछ वर्जित।

गांधीजी के आदेश से सत्याग्रह स्थगित और राज्य से समझौता

जब जयपुर सत्याग्रह आन्दोलन जोरो पर था, ठीक उसी समय गांधीजी ने सत्याग्रह स्थगित करने का हुक्म दे दिया। गाँधीजी का सत्याग्रह का तौर तरीका विलक्षण था। सत्याग्रह के स्थगित होने के कुछ महीनो बाद एक दिन पडित हीरालाल शास्त्री और अन्य सत्याग्रहियो को और कुछ दिन बाद सेठ जमनालाल बजाज को भी छोड दिया गया। सत्याग्रह के फलस्वरूप राज्य सरकार को प्रजामडल से समझौता करना पडा और जयपुर की जनता को नागरिक स्वतत्रता के अधिकार मिल गये। प्रजामडल और सरकार मे समझौते की जो बातचीत चली उसमे प्रजामडल की ओर से सर्व श्री जमनालाल बजाज, कर्पूरचन्द्र पाटणी और पडित हीरालाल शास्त्री प्रतिनिधि थे।

उक्त समझौते के बाद सुदृढ काम के आधार पर प्रजामडल की शक्ति निरतर बढती ही चली गयी।

भारत छोड़ो आन्दोलन

अगस्त 1942 मे कांग्रेस ने बबई मे गाँधीजी के नेतृत्व मे 'अग्रेजो भारत छोडो' आन्दोलन शुरू करने का फैसला कर लिया। उस सिलसिले मे जयपुर राज्य प्रजामडल की कार्य समिति और साधारण सभा की बैठकें हुई जिनमे हिन्दुस्तान की आजादी की माँग का पूरा समर्थन किया गया और हिन्दुस्तान के प्रति ब्रिटिश सरकार का जो रुख था उसकी तथा नेताओ की गिरफ्तारी की निन्दा की गयी। महाराजा से जल्दी से जल्दी उत्तरदायी शासन स्थापित करने को कहा गया।

जयपुर राज्य प्रजा मंडल और सरकार में समझौता

इस प्रकार जयपुर राज्य प्रजामडल और जयपुर सरकार के बीच इन शर्तों पर समझौता हुआ (1) जयपुर राज्य मे ब्रिटिश-विरोधी और युद्ध-विरोधी प्रचार के लिए राष्ट्रीय झडे के साथ प्रभात फेरी व जुलूस निकाले जाएगे तो राज्य सरकार की ओर से कोई बाधा नही पहुँचायी जाएगी। (2) युद्ध के लिए अग्रेजो को जयपुर राज्य की ओर से आगे धन-जन की नई सहायता नही दी जाएगी। (3) ब्रिटिश भारत मे चल रहे आन्दोलन मे सक्रिय भाग लेने वाले कोई भी जयपुर राज्य मे आयेंगे तो उन्हे प्रजामडल की ओर से सब तरह की सहायता दी जाएगी और राज्य सरकार उनमे से किसी को भी गिरफ्तार नही करेगी। (4) जयपुर महाराजा की ओर से जनता को उत्तरदायी शासन देने की दृष्टि से कार्यवाही जल्दी से जल्दी शुरू की जाएगी। (5) महाराजा की ओर से यह सब कुछ होगा तो जयपुर प्रजामडल की ओर से महाराजा के खिलाफ सीधी कार्यवाही नही की जाएगी। प्रजामडल के कुछ साथियो को यह समझौता पसन्द नही आया और उन्होने महाराजा के खिलाफ सीधी कार्यवाही करने के लिए एक आज़ाद मोर्चा बना लिया। जाहिर है कि जयपुर राज्य प्रजामडल और जयपुर सरकार के बीच राजनैतिक और नैतिक आधार वाला

यह समझौता अपने ढग का निराला था । इस समझौते के अन्तर्गत जयपुर राज्य मे ब्रिटिश विरोधी और युद्ध विरोधी सारा (प्रभात फेरी, जुलूस, सभा, बुलेटिन आदि-आदि) कार्यक्रम जोर-शोर और सफलता के साथ चला । जयपुर राज्य कई प्रकार से स्वाधीनता के युद्ध के 'बेस' जैसा बन गया था, जहाँ से ब्रिटिश भारत मे चलने वाले कामो को हर तरह की मदद पहुँचायी जाती थी । 1942 की क्रान्ति के सम्बन्ध मे ब्रिटिश-विरोधी और युद्ध-विरोधी खुला और पोशीदा, जितना और जैसा, काम प्रजामडल की तरफ से जयपुर राज्य मे हुआ उतना और वैसा काम शायद ही किसी देशी राज्य मे हुआ हो। जयपुर महाराजा और जयपुर राज्य प्रजामण्डल 1942 की क्रान्ति मे ब्रिटिश सरकार के मुकाबले मे तत्वतः बहुत कुछ एक हो गये थे जो अपने आप मे एक विचित्र और महत्वपूर्ण योग था ।

गाँधीजी और जवाहरलालजी का समर्थन

20 जनवरी 1945, को शास्त्रीजी ने जयपुर मे अगस्त 1942 से लेकर बाद तक जो कुछ हुआ सो गाँधीजी को बता कर उनसे पूछा कि जयपुर प्रजामडल ने जो कुछ किया उसमे कुछ अनुचित था क्या ? गाँधीजी ने उत्तर दिया कि मेरा अब कुछ भी कहना व्यर्थ है, पर फिर भी इतना कह सकता हूँ कि जो कुछ आपने किया उसमे मैं कुछ अनुचित नही पाता । बाद मे 22 जनवरी 1945, की मुलाकात मे शास्त्रीजी और गाँधीजी के बीच नीचे लिखे अनुसार सवाल-जवाब हुए:—

सवाल—आपने परसो यह तो बता दिया था कि अगस्त आन्दोलन के सिलसिले मे जयपुर प्रजामडल ने जो कुछ किया उसमे कुछ अनुचित नही था । पर आपने बम्बई मे यह भी तो कहा था कि कहीं का प्रजामडल रियासत से न लडने का निश्चय करे तो उस हालत मे वहाँ के कोई लोग आन्दोलन मे भाग लेना चाहे तो उन्हे रियासत से बाहर जाकर भाग लेना चाहिए और प्रजामडल को परेशानी मे नही डालना चाहिए ?

जवाब—जरूर कहा था ।

सवाल—तब तो मेरे जिन साथियो ने प्रजामडल से बगावत करके झगडा फैलाया उन्होंने ठीक नही किया ?

जवाब.—इसमे क्या शक है ? उन्होने ठीक नही किया और बातचीत के द्वारा राज्य से जितना तुमने पा लिया वह तो काफी था । ज्यादा तुम करने वाले भी क्या थे ?

जब पडित जवाहरलाल नेहरू जयपुर आये तो उनका समर्थन भी प्रजामडल को

उपरोक्त नीति के पक्ष मे मिला और फलस्वरूप उसी समय आजाद मोर्चे के साथियो ने मोर्चे को समाप्त कर दिया ।

देशी राज्य प्रजा परिषद की राजपूताना रीजनल कौंसिल

1942 के आन्दोलन का वेग कम होने पर समस्त राजपूताना के कार्यकर्त्ताओ का सगठन बनाया गया । उसके बाद अखिल भारत देशी-राज्य लोक परिषद की रीजनल कौसिल श्री गोकुलभाई भट्ट की अध्यक्षता मे बनी तो राजपूताना के प्रजामडल लोक परिषद के अग बन गये । पडित हीरालाल शास्त्री ने रीजनल कौंसिल के प्रधानमत्री की हैसियत से कभी अध्यक्ष श्री गोकुलभाई के साथ और ज्यादातर अकेले राजपूताना की छोटी बडी सभी रियासतो का दौरा किया और उनके अनेक झगडो और समस्याओ को सुलझाया और क्रिप्स मिशन के भारत आगमन पर शास्त्रीजी ने राजपूताना की रियासती जनता का दृष्टिकोण उसके सामने प्रस्तुत किया ।

अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद के प्रधान मंत्री

बाद मे शास्त्रीजी श्री जयनारायण व्यास के साथ अखिल भारत देशी राज्य लोक परिषद के प्रधानमत्री बने । उस समय उन्होने समस्त भारत के देशी राज्यो के कार्य-कर्ताओ से सम्पर्क करके छोटी-बडी रियासतो की समस्याओ को हल कराने के काम मे बडा योगदान दिया ।

जैसे प्रजामण्डल और रीजनल कौंसिल के समय, वैसे ही, अ० भा० देशी राज्य लोक परिषद के प्रधानमन्त्रीत्व के समय मे भी आर्थिक आदि सारा भार शास्त्रीजी पर ही रहा ।

जयपुर मे उत्तरदायी शासन की शुरूआत

जयपुर मे जब रिफोर्म्स् कमेटी बनी तो उसमे प्रजामडल के प्रतिनिधि भी शामिल हुए । रिप्रेजेण्टेटिव असेम्बली और लेजिस्लेटिव कौसिल बनायी गयी । प्रजामडल की ओर से पहले श्री देवीशकर तिवाडी और बाद मे श्री दौलतमल भण्डारी मन्त्रिमडल मे शामिल हुए ।

जब देश का सविधान बनाने के लिए कास्टीट्यूएट असेम्बली बनी तो जयपुर के तीन प्रतिनिधियो मे पडित हीरालाल शास्त्री भी एक थे । बाद मे जब जयपुर राज्य का पूरा लोकप्रिय मन्त्रिमडल बनाया गया तो पडित हीरालाल शास्त्री को मुख्यमत्री का भार सौंपा गया । शास्त्रीजी के साथ प्रजामडल की ओर से श्री देवीशकर तिवाडी और श्री दौलतमल भंडारी के अलावा श्री टीकाराम पालीवाल को तीसरा मत्री लिया गया । जागीरदारो के दो प्रतिनिधियो को भी मन्त्रिमडल मे शामिल किया गया । सर वी० टी० कृष्णमाचारी दीवान के पद पर रखे गये ।

जयपुर में काँग्रेस अधिवेशन

अखिल भारत देशी राज्य लोक परिषद का कांग्रेस मे विलय होने पर राजपूताना की रीजनल कौंसिल ने प्रदेश कांग्रेस कमेटी का रूप ले लिया। प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने कांग्रेस का अधिवेशन राजस्थान मे करने का निश्चय किया। प्रदेश कांग्रेस कमेटी का शिष्ट-मण्डल सरदार पटेल के पास पहुँचा। सरदार ने शास्त्रीजी ने सीधा सवाल करके जयपुर शहर मे कांग्रेस अधिवेशन करने का फैसला कर दिया। कांग्रेस का जयपुर अधिवेशन आजादी के बाद का किसी भी देशी राज्य मे होने वाला पहला अधिवेशन था। यह अधिवेशन बडा विशाल और शानदार हुआ। अधिवेशन के लिए आर्थिक आदि व्यवस्था करने का और बाद मे होने वाले लाखो के घाटे को पूरा करने का जिम्मा शास्त्रीजी को उठाना पड़ा।

विशाल राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री

जयपुर राज्य के मन्त्रिमडल को एक साल भी नही हुआ था कि विशाल सयुक्त राजस्थान बनने की बात सामने आ गयी। पहले मत्स्य राज्य बना, फिर छोटा राजस्थान बना, बाद मे सयुक्त राजस्थान और अन्त मे जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर आदि के मिलने पर बडा राजस्थान बना। इस बडे राजस्थान के लिए महाराणा उदयपुर को महाराजप्रमुख, जयपुर महाराजा को राजप्रमुख और पडित हीरालाल शास्त्री को मुख्यमत्री बनाया गया और 30 मार्च 1949, को सरदार पटेल के हाथ मे नये राज्य का उद्घाटन हुआ। बाद मे जयपुर को नये राज्य की राजधानी बनाया गया।

विशाल राजस्थान के प्रथम मन्त्रिमडल मे मुख्यमत्री के अलावा आखिर तक 9 मन्त्री रहे—(1) श्री प्रेमनारायण माथुर (उदयपुर) (2) श्री सिद्धराज ढढ्ढा (जयपुर) (3) श्री भूरेलाल बया (उदयपुर) (4) श्री रघुवरदयाल गोयल (बीकानेर) (5) श्री शोभाराम (अलवर) (6) श्री वेदपाल त्यागी (कोटा) (7) श्री फूलचन्द बाफणा (जोधपुर) (8) श्री नरसिंह कछवाहा (किसान, जोधपुर) (9) श्री हणूतसिंह (जागीरदार, जोधपुर)। अपने मन्त्रिमडल के सदस्यो के बारे मे शास्त्रीजी का कहना है कि किसी एक की भी, कोई एक भी भ्रष्टाचार जैसी शिकायत आज भी मेरे सामने ले आयी जाए और उसके सही होने के बारे मे मेरा समाधान हो जाए तो मैं अपना सिर काट कर रखदूँ।

वनस्थली विद्यापीठ के संस्थापक

पडित हीरालाल शास्त्री राजनेता के अलावा ठोस रचनात्मक काम की दृष्टि से देश के गिने-चुने व्यक्तियो मे माने जाते हैं। अपनी एकमात्र पुत्री शान्ताबाई के अप्रैल, 1935 मे आकस्मिक और असामयिक निधन से रिक्त हुए स्थान की पूर्ति की भावना से प्रेरित होकर पडित हीरालाल शास्त्री और श्रीमती रतन शास्त्री ने वनस्थली ग्राम मे अक्टूबर 1935, मे वनस्थली विद्यापीठ के बीज रूप श्री शान्ताबाई शिक्षा कुटीर की स्थापना कर दी जो आज भारत मे राष्ट्रीय महत्व का शिक्षा-सस्थान बन गया है। देश की

जनता के सभी अगो ने वनस्थली विद्यापीठ को सुदृढ बनाने मे अपना पूर्ण योगदान दिया। वनस्थली विद्यापीठ का हजारो रुपये का प्रतिदिन का खर्चा है। देश के कोने-कोने से आयी हुई हजारो छात्राए वनस्थली मे शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। राजस्थान सहित 17 राज्यो, 10 केन्द्र प्रशासित प्रदेशो से, भारत सरकार से, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से और नेपाल सरकार से वनस्थली को सहायता मिलती है। पडित जवाहरलाल नेहरू जब पहले पहल वनस्थली आये तब वे अपने भाषण मे कह उठे "काश! मैं लडकी होता तो अपनी तालीम के लिए वनस्थली आता।" बाद मे पडितजी ने लिखा कि "वनस्थली राष्ट्रीय एकता का यत्न करने वाली अद्वितीय संस्था है।" महात्मा गाँधी ने लिखा था "वनस्थली मेरे दिल मे बसी है।"

शास्त्रीजी ने राजनीति को स्वधर्म नहीं माना

शास्त्रीजी को भले ही समय के प्रभाव से राजनीति मे जाना पडा पर उन्होने राजनीति को अपना स्वधर्म नही माना। वे अपनी प्रकृति से सदा ही वनस्थली के कार्यों मे ही लगे रहे। इसलिए लोग वनस्थली को शास्त्रीजी की साधना भूमि मानते हैं और बताते हैं। स्वय शास्त्रीजी ने भी अपने फक्कडपन की तरग मे कहा है —

चिन्ता नही की, कुछ साधनो की,
सहायको की, नही राह देखी।
वनस्थली मे चिमटा अकेले
रोपा, उसी की करतूत देखी॥

अब भी कुछ कर गुजरने की चाह

पडित हीरालाल शास्त्री ने अपने आपको वनस्थली के काम मे इतना लीन कर दिया है कि देश की राजनीति के घटनाचक्र से उनका सीधा सम्पर्क बहुत कम रह गया है। फिर भी मौजूदा स्वार्थपरक, सत्तापरक, भ्रष्टाचार परक और अनुशासनहीन स्थिति से आज भी उनका मानस आडोलित है और इसी कारण अपनी 70 से ऊपर की अवस्था मे भी एक बार फिर नयी चेतना को जगाने के लिए पूरी शक्ति से कुछ कर गुजरने की चाह रखते हैं। उनमे नवयुवको जैसी शक्ति और उत्साह देखने को मिलता है।

असंभव को संभव करने की उत्कट अभीप्सा

दो वर्ष पहले 1970 मे स्वाधीन ग्राम नगर सगठन का श्रीगणेश करते हुए उन्होने अपने सकल्प को इन शब्दो मे व्यक्त किया था 'जो हो, यह है वह स्थिति जिसमे मुझे जैसे अल्पप्राण का कुछ कर गुजरने का विचार है। मेरा खुद का इरादा सीधे पहाड पर बिना रास्ते के चढने का है, घने बीहड जगल मे विचरने का है नदी के प्रवाह के मुकाबले मे चलने का है, समुद्र मे कूद पडने का है, जलती हुई आग मे अपने आपको झोक

देने का है। मेरे पास अपनी सेवा के अलावा किसी को देने के लिए कुछ नही है, पर मुझे हर सूरत मे यह काम करना है।'

पार्टी, पद, पावर, पैसा प्रसिद्धि नहीं चाहिए

उसी प्रसग मे पडित हीरालाल शास्त्री ने व्यक्त किया था "मैं अपने आपको सर्वोदय की विचारधारा के नजदीक पाता हू, परन्तु मैं किसी वाद से बँधा हुआ नही हूं। मुझे किसी पार्टी का सदस्य नही रहना है। मुझे किसी भी हालत मे किसी चुनाव मे खडा नही होना है। मुझे पार्टी, पद, पॉवर, पैसा, प्रसिद्धि कुछ नही चाहिए"। शास्त्रीजी का कहना है कि पार्टी की खातिर और अपने पद को कायम रखने की खातिर मनुष्य उचितानुचित कुछ भी कर सकता है, पावर और पैसा तो मनुष्य को विगाडने वाले हैं ही है। प्रसिद्धि की लालसा अच्छे से अच्छे मनुष्य के लिए भी अतिम कमजोरी के रूप मे मशहूर है। शास्त्रीजी को उस अखवारी प्रकाशन से चिढ है जो वहुधा तथ्यो पर आधारित नही होता और जिसके कारण सम्वन्वित व्यक्तियो का अवास्तविक चित्र जनता के सामने आ जाता है।

थोथे नारो का माया-जाल और स्वार्थ-साधन का चक्रव्यूह

आजादी के वाद भी यह प्रश्न लम्बे समय से उन्हे व्याकुल करता रहा है कि सर्व सावारण जनता को राजतत्र की जकडवन्दी से और राजनैतिक दुरुपयोग से मुक्ति कैसे दिलायी जाए ? जो लोग जिन राज चलाने वालो की निन्दा करते नही थकते थे उनको उन्हीं के पीछे दौडना पडता है, मामूली वोलचाल मे उनको उन्ही की 'चिलम भरनी' पडती है। इस वेढव स्थिति मे रास्ता कैसे निकले ? एक ओर थोथे नारो का माया जाल और दूसरी ओर नाना प्रकार के स्वार्थ-साधन का चक्रव्यूह।

स्वाधीन ग्राम-नगर संगठन

पडित हीरालाल शास्त्री ने इसलिए लोकशिक्षण के द्वारा वर्तमान सत्तातत्र को उलटने की दृष्टि मे स्वराज्य की वीज योजना के रूप मे स्वाधीन ग्राम नगर सगठन का अभियान चालू किया है। इस योजना का समारम्भ करते हुए उन्होने वताया था "इस स्वाधीन ग्राम नगर सगठन के अगो को लोकशिक्षण का काम अपने हाथ मे लेना होगा। शिक्षित हुए विना जनता जागृत नही हो सकती, जागृत हुए विना वह सगठित नही हो सकती, सगठन के विना जरूरत पडने पर सघर्ष की स्थिति नही वन सकती और सघर्ष के विना सच्ची लोक सत्ता जनता के हाथो मे नही आ सकती और सच्ची लोक सत्ता के विना स्वराज्य का कोई अर्थ नही हो सकता।"

चोटी पर चारित्र्य का सर्वथा लोप और जड़ से क्रान्ति

आज देश जव स्वाधीनता की रजत जयन्ती मना रहा है उस अवसर पर पण्डित

हीरालाल शास्त्री को यह सोचने और कहने के लिए विवश होना पड रहा है कि "चोटी पर तो चारित्र्य का सर्वथा लोप हो गया मालूम होता है। ईमान अभी भी कही वाकी है तो वह सर्व साधारण जन-समुदाय मे बाकी है। पर उसे अपनी ताकत का अहसास नही है, उसे अपने खुद पर भरोसा नही है, कि उसके किये कुछ हो जाएगा। तो फिर, जो अनैतिकता इतनी व्यापक हो गयी है उसी को क्या हमारे राष्ट्रीय जीवन का नियम मान लिया जाएगा ? क्या असत्य ही सत्य का स्थान ले लेगा और क्या सिद्धान्तहीनता ही हमारे लिए सिद्धान्त हो जाएगी ? वर्त्तमान स्थिति मे टहनी और पत्तो की ओर से सुधार हो सकेगा मुझे ऐसा नही लगता। सुधार यदि होगा तो जड की ओर से ही होगा और वह क्रान्ति तक जाकर रहेगा।"

शास्त्रीजी का अदम्य साहस

पडित हीरालाल शास्त्री का साहस अदम्य है जो उनके इस छन्द से प्रकट होता है—

मुश्किलो की क्या कहे हर रोज वे आती रहे,
सामना उनका करे हर रोज वे जाती रहे।
टक्कर हमारी हो रही है जोर की चट्टान से,
चट्टान चकनाचूर होगी कह दिया भगवान से ॥

शास्त्रीजी का भय रहित खरा व्यवहार—कुछ प्रत्यक्ष घटनाएं

राजाओ, जागीरदारो, सेठो, छोटे से छोटे और बडे से बडे सरकारी कर्मचारियो आदि से सार्वजनिक हित के लिए शास्त्रीजी नि शक मिलते रहे है और ग्रामवासी-नगरवासी सर्वसाधारण जनता के साथ घुल-मिल जाने की तो उनकी आदत ही रही है। पर उन्होने उनमे से किसी से खुद की कोई गर्ज कभी नही रखी। (1) जनता की तरफ की कोई भूल शास्त्रीजी को दिखायी देती तो वे जन-समुदाय को लिहाज-मुलाहिजे के बिना खरी-खरी सुना दिया करते थे। (2) अलवर रियासत के जावली ठाकुर ने शास्त्रीजी को एक विशाल सभा मे एक खुला पत्र दिया—शास्त्रीजी ने तालियो की गडगडाहट मे कहा "ठाकुर साहब, आपकी जावली तो जावैली।" (3) जैसलमेर की विराट आम सभा मे शास्त्रीजी ने कहा—लोग कहते हैं सागरमल गोपा मर गया, पर मैं कहता हूँ सागरमलजी अमर हो गये और मर गया है जैसलमेर का राजा जवाहरसिंह। (4) एक वहुत बडे सेठ ने शास्त्रीजी से कहा कि मैं आपको पैसा नही दूंगा। शास्त्रीजी ने हाजिर जवावी के लहजे मे कह दिया आपके पास कोई पैसा मांगने आए तो आप इन्कार कर देना। उसके वाद शास्त्रीजी उन सेठ साहब के पास पैसा लेने को कभी नही गये। (5) अपने मुख्यमत्री काल मे शास्त्रीजी को पता चला कि अमुक उच्च अधिकारी से एक वहुत अनुचित काम करने में आ गया है। मुख्यमत्री ने उस अविकारी को उसी समय वुला कर उससे त्यागपत्र ले लिया। (5) राजाओ आदि पर शास्त्रीजी का प्रभाव वहुत था। एक बार टौंक मे

देने का है। मेरे पास अपनी सेवा के अलावा किसी को देने के लिए कुछ नही है, पर मुझे हर सूरत मे यह काम करना है।'

पार्टी, पद, पावर, पैसा प्रसिद्धि नही चाहिए

उसी प्रसग मे पडित हीरालाल शास्त्री ने व्यक्त किया था "मैं अपने आपको सर्वोदय की विचारधारा के नजदीक पाता हू, परन्तु मैं किसी वाद से बँधा हुआ नही हूँ। मुझे किसी पार्टी का सदस्य नही रहना है। मुझे किसी भी हालत मे किसी चुनाव मे खडा नहीं होना है। मुझे पार्टी, पद, पॉवर, पैसा, प्रसिद्धि कुछ नही चाहिए"। शास्त्रीजी का कहना है कि पार्टी की खातिर और अपने पद को कायम रखने की खातिर मनुष्य उचितानुचित कुछ भी कर सकता है, पावर और पैसा तो मनुष्य को बिगाडने वाले हैं ही हैं। प्रसिद्धि की लालसा अच्छे से अच्छे मनुष्य के लिए भी अतिम कमजोरी के रूप मे मशहूर है। शास्त्रीजी को उस अखबारी प्रकाशन से चिढ है जो बहुधा तथ्यो पर आधारित नही होता और जिसके कारण सम्बन्धित व्यक्तियो का अवास्तविक चित्र जनता के सामने आ जाता है।

थोथे नारो का माया-जाल और स्वार्थ-साधन का चक्रव्यूह

आजादी के बाद भी यह प्रश्न लम्बे समय से उन्हे व्याकुल करता रहा है कि सर्व साधारण जनता को राजतत्र की जकडबन्दी से और राजनैतिक दुरुपयोग से मुक्ति कैसे दिलायी जाए? जो लोग जिन राज चलाने वालो की निन्दा करते नही थकते थे उनको उन्ही के पीछे दौडना पडता है, मामूली बोलचाल मे उनको उन्ही की 'चिलम भरनी' पडती है। इस बेढब स्थिति मे रास्ता कैसे निकले? एक और थोथे नारो का माया जाल और दूसरी और नाना प्रकार के स्वार्थ-साधन का चक्रव्यूह।

स्वाधीन ग्राम-नगर संगठन

पडित हीरालाल शास्त्री ने इसलिए लोकशिक्षण के द्वारा वर्तमान सत्तातत्र को उलटने की दृष्टि से स्वराज्य की बीज योजना के रूप मे स्वाधीन ग्राम नगर सगठन का अभियान चालू किया है। इस योजना का समारम्भ करते हुए उन्होने बताया था "इस स्वाधीन ग्राम नगर सगठन के अ गो को लोकशिक्षण का काम अपने हाथ मे लेना होगा। शिक्षित हुए बिना जनता जागृत नही हो सकती, जागृत हुए बिना वह सगठित नही हो सकती, सगठन के बिना जरूरत पडने पर सघर्ष की स्थिति नही बन सकती और सघर्ष के बिना सच्ची लोक सत्ता जनता के हाथो मे नही आ सकती और सच्ची लोक सत्ता के बिना स्वराज्य का कोई अर्थ नही हो सकता।"

चोटी पर चारित्र्य का सर्वथा लोप और जड़ से क्रान्ति

आज देश जब स्वाधीनता की रजत जयन्ती मना रहा है उस अवसर पर पण्डित

हीरालाल शास्त्री को यह सोचने और कहने के लिए विवश होना पड रहा है कि "चोटी पर तो चारित्र्य का सर्वथा लोप हो गया मालूम होता है। ईमान अभी भी कही वाकी है तो वह सर्व साधारण जन-समुदाय मे बाकी है। पर उसे अपनी ताकत का अहसास नहीं है, उसे अपने खुद पर भरोसा नही है, कि उसके किये कुछ हो जाएगा। तो फिर, जो अनैतिकता इतनी व्यापक हो गयी है उसी को क्या हमारे राष्ट्रीय जीवन का नियम मान लिया जाएगा ? क्या असत्य ही सत्य का स्थान ले लेगा और क्या सिद्धान्तहीनता ही हमारे लिए सिद्धान्त हो जाएगी ? वर्त्तमान स्थिति मे टहनी और पत्तो की ओर से सुधार हो सकेगा मुझे ऐसा नही लगता। सुधार यदि होगा तो जड की ओर से ही होगा और वह क्रान्ति तक जाकर रहेगा।"

शास्त्रीजी का अदम्य साहस

पडित हीरालाल शास्त्री का साहस अदम्य है जो उनके इस छन्द से प्रकट होता है —

मुश्किलो की क्या कहे हर रोज वे आती रहें,
सामना उनका करे हर रोज वे जाती रहें।
टक्कर हमारी हो रही है जोर की चट्टान से,
चट्टान चकनाचूर होगी कह दिया भगवान से ।।

शास्त्रीजी का भय रहित खरा व्यवहार—कुछ प्रत्यक्ष घटनाएं

राजाओ, जागीरदारो, सेठो, छोटे से छोटे और बड़े से बड़े सरकारी कर्मचारियो आदि से सार्वजनिक हित के लिए शास्त्रीजी नि शक मिलते रहे है और ग्रामवासी-नगरवासी सर्वसाधारण जनता के साथ घुल-मिल जाने की तो उनकी आदत ही रही है। पर उन्होंने उनमे से किसी से खुद की कोई गर्ज कभी नही रखी। (1) जनता की तरफ की कोई भूल शास्त्रीजी को दिखायी देती तो वे जन-समुदाय को लिहाज-मुलाहिजे के विना खरी-खरी सुना दिया करते थे। (2) अलवर रियासत के जावली ठाकुर ने शास्त्रीजी को एक विशाल सभा मे एक खुला पत्र दिया—शास्त्रीजी ने तालियो की गडगडाहट मे कहा "ठाकुर साहव, आपकी जावली तो जावैली।" (3) जैसलमेर की विराट ग्राम सभा मे शास्त्रीजी ने कहा—लोग कहते है सागरमल गोपा मर गया, पर मैं कहता हूँ सागरमलजी अमर हो गये और मर गया है जैसलमेर का राजा जवाहरसिंह। (4) एक वहुत वडे सेठ ने शास्त्रीजी से कहा कि मैं आपको पैसा नही दूँगा। शास्त्रीजी ने हाजिर जवावी के लहजे मे कह दिया आपके पास कोई पैसा मांगने आए तो आप इन्कार कर देना। उसके वाद शास्त्रीजी उन सेठ साहव के पास पैसा लेने को कभी नही गये। (5) अपने मुख्यमत्री काल मे शास्त्रीजी को पता चला कि अमुक उच्च अधिकारी से एक वहुत अनुचित काम करने मे आ गया है। मुख्यमत्री ने उस अधिकारी को उसी समय वुला कर उससे त्यागपत्र ले लिया। (5) राजाओ आदि पर शास्त्रीजी का प्रभाव वहुत था। एक वार टौंक मे

शास्त्रीजी ग्राम सभा मे भाषण देकर रात को देर से अपने साथियो सहित किसी स्थानीय साथी के यहाँ भोजन करने जा रहे थे। किन्ही लडको ने पीछे से पत्थर फैके। शास्त्रीजी टौंक के प्राइम मिनिस्टर को यह कह कर वनस्थली चले आये कि नवाव साहव को आप कह देना "यह अच्छा नही हुआ।" दूसरे दिन सूर्योदय से वहुत पहले ही टौंक नवाव ने वनस्थली पहुँच कर शास्त्रीजी की कुटिया का दरवाजा आ खटखटाया और उन्हें वडे सम्मान के साथ दुवारा टौंक ले गये। (7) रावराजा सीकर, राजा खेतडी और रावराजा उनियारा से उनके विशेषाधिकार छोडने के कागज पर शास्त्रीजी ने एक घटे के भीतर हस्ताक्षर करा लिये।

चारित्रिक दृढ़ता और आंतरिक कोमलता

ऐसे अनेक उदाहरणो से मालूम होता है कि शास्त्रीजी का व्यवहार कितना खरा था। शास्त्रीजी जैसा ठीक समझते हैं वैसा करने वाले अपनी धुन के पक्के आदमी हैं। कोई क्या कहता है कोई मान देता है या अपमान करता है, कोई कीर्त्ति गाता है या वदनामी करता है, इसकी चिन्ता वे विल्कुल नही करते। लोग शास्त्रीजी को राजस्थान का लौह पुरुष भी कहने लगे थे। मजवूती के साथ-साथ शास्त्रीजी के दिल मे कोमलता भी विलक्षण है जिसके कारण वे दूसरो की स्वत. मदद करने को हर घडी तैयार रहते है। इसी कोमल भाव के कारण शास्त्रीजी ने असख्य कार्यकर्त्ता साथियो की मदद की, सो भी किसी साथी से किसी प्रकार की आशा–अपेक्षा रखे विना। वनस्थली विद्यापीठ का उदय इसी कोमल भाव मे से हुआ है। शास्त्रीजी के निम्न छन्दो से इस परिचय को समाप्त करना उपर्युक्त होगा —

(1)

नाराज–राजी कुछ भी हुआ करो,
बुरा कि अच्छा कुछ भी कहा करो।
न मान दो तो अपमान ही करो,
वखान जो हो करना किया करो ॥

(2)

चाहें नही नाम, न मान चाहे,
ऐसे जनो का अपमान क्या हो।
सर्वस्व की आहुति दे चुके हो,
ऐसेन की शौकत शान क्या हो ॥

(3)

एक म्हाको फूल प्यारो,
अधखिल्यो कुमला गयो।
सोग वीत्यो हरख छायो,
फूल वाग लगा गयो ॥

(1—फूल अर्थात् शान्तावाई, 2—वाग अर्थात् वनस्थली विद्यापीठ)

श्री गोकुलभाई भट्ट, सिरोही.



जन्म 25 फरवरी, 1899.

वर्त्तमान पता—राजस्थान समग्र सेवा सघ,
किशोर निवास,
त्रिपोलिया बाजार, जयपुर

गांधी-दर्शन के एक जीवंत प्रतीक

श्री गोकुलभाई भट्ट राजस्थान मे गाँधी दर्शन के जीवत प्रतीक है। आज की छद्म राजनीति के स्वार्थ परक युग मे वे एक निस्पृह तपोनिष्ठ ऋषि की तरह हैं। उनके व्यवहार मे अहिंसा, वाणी मे सत्य और कर्म मे सिद्धान्त और आदर्श का वर्चस्व हर कदम पर प्रकट होता है। गोकुलभाई शिक्षित हैं और बुद्धिवादी हैं, परन्तु वे अन्य राज्य-नेताओ की तरह बुद्धि के व्यापारी नही हैं। उनमे समाज की प्रज्ञा के नियामक होने का सामर्थ्य है। उनके कोई निहित् स्वार्थ नही हैं और वे अपने किसी व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए बुद्धि का खेल नहीं खेलते। अपने प्रति पूर्ण निर्ममता का व्यवहार करके ही वे समाज के सामने अपने उज्जवल और आदर्श चरित्र को लेकर खडे होते हैं। उनके जीवन का सतत् प्रवाह सर्वजन के हित के लिए है और इसी मार्ग पर अपनी तरह का यह अकेला गाँधीवादी तपस्वी आज अपनी इस ढलनी उम्र मे भी, सर्वोदय का सदेश लिए राजस्थान के गाँव-गाँव मे अलख जगा रहा है।

सत्ता से अनासक्त अभिमान शून्य महाव्रती

गोकुलभाई भी राजसत्ता मे रहे हैं। वे सिरोही राज्य के प्रधानमत्री रहे है। वे राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रह चुके हैं। वे भारतीय ससद के सदस्य भी रहे है और वे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की कार्य समिति के सदस्य भी रह चुके हैं। वे आज भी राजस्थान मे गाँधी स्मारक निधि के अध्यक्ष हैं, ग्रामराज के प्रधान सपादक हैं, सर्वोदय के क्षेत्र मे राजस्थान के एक छत्र नेता है और रचनात्मक प्रवृत्ति की बीसियो सस्थाओ के साथ प्रमुख रूप से सबद्ध हैं परन्तु किसी भी सत्ता, पद और प्रतिष्ठा ने उनमे प्रभुता,

ग्रहम् और अभिमान नहीं जगने दिया है। उनकी प्रकृति सौम्यता, शालीनता और सहिष्णुता से भरी हुई है और राष्ट्र-पिता महात्मा गाँधी के चरणो मे बैठ कर अहिंसा, अपरिग्रह और अस्वाद आदि महाव्रतो की उनकी प्रतिज्ञाए आज भी उनके जीवन के हर खुले पृष्ठ पर किसी भी दिन पढी जा सकती हैं।

जन्म और बचपन

गोकुलभाई का जन्म 25 फरवरी 1899, को सिरोही राज्य के हाथल ग्राम मे, एक सामान्य ब्राह्मण परिवार मे हुआ था। उनके पिता बवई मे सेठ मूलजी जेठा के यहाँ नौकरी करते थे और इसी कारण गोकुलभाई का बचपन बवई मे ही बीता। उनकी शिक्षा-दीक्षा भी बम्बई मे ही हुई। बवई जाने के पहले उनका प्रारभिक शिक्षण हाथल ग्राम की पाठशाला मे ही हुआ था। उन दिनो के सम्बन्ध मे गोकुलभाई ने बताया कि वे बचपन मे गायें भैंसे चराने जाया करते थे। गायें भैंसे चरा करती और वे जगल के कदमूल खाते और पेडो के नीचे बैठे-बैठे अपनी किताबे पढते रहते।

कट्टर सनातनी परिवार मे लालन-पालन

श्री गोकुलभाई के पिता उन दिनो भूलेश्वर मे रहते थे। उनका परिवार कट्टर सनातनी परिवार था। गोकुलभाई का लालन-पालन भी सनातन धर्म की कट्टर रुढ मान्यताओ के वातावरण मे हुआ। अपनी उम्र के 20 वर्ष तक गोकुलभाई ने घर के बाहर का पानी भी नही पीया, उन्होने उस समय तक न बाजार की कोई चीज खाई, न बाजार का दूध काम में लिया और न दही। बचपन मे गोकुलभाई भूलेश्वर के अखाडे मे खेलने और व्यायाम करने नियमित रूप मे जाते थे।

कृषि विशेषज्ञ बनने के लिए अमेरीका जाने की तैयारी

जब गोकुलभाई ने अपनी मेधावी बुद्धि से एक के बाद एक अग्रेजी की परीक्षाए पास करनी शुरू कर दी तो उनके माता-पिता चाहने लगे कि गोकुलभाई बेरिस्टर बन जाए और खूब धन कमाना शुरू कर दें। बाद मे उनका मन बदल गया और वे चाहने लगे कि खेती-बाडी के सम्बन्ध मे ऊँचे से ऊँचा प्रशिक्षण प्राप्त किया जाए। गोकुलभाई ने भी कृषि विशेषज्ञ बनने के लिए अमेरिका जाने की तैयारी करली थी। उन्होने आई० एस० सी० की परीक्षा पास करके अमेरिका मे कृषि-विज्ञान के अध्ययन के लिए जाने के वास्ते अपना पासपोर्ट भी बनवा लिया था। लेकिन गाँधी की आँधी ने इनको लपेट मे ले लिया। अमेरिका का पासपोर्ट धरा रह गया। जीवन का मार्ग ही बदल गया। वे देश की आजादी के आकर्षण को नही रोक सके।

राष्ट्रीय प्रवृत्तियो का कार्य क्षेत्र विले पार्ले

बम्बई मे विले पार्ले का क्षेत्र गोकुलभाई की राष्ट्रीय प्रवृत्तियो का केन्द्र बन गया। उन्होंने वहां के नौजवानो को सगठित किया और उन्हें गांधी मार्ग पर चलने की प्रेरणा

देते रहे । उन्होने विले पार्ले के क्षेत्र मे कॉंग्रेस को सगठित किया और शक्तिशाली वनाया । असहयोग के दिनो मे उन्होने गाँधीजी के आह्वान पर सेट जेवियर्स कॉलेज का शिक्षण कार्य छोड दिया और असहयोग की लहर मे बहे तो फिर बहते ही गए । बम्बई की ऐसी कोई सार्वजनिक प्रवृत्ति नही थी जिसमे गोकुलभाई कही न कही पाए नही जाते । असहयोग आन्दोलन से लगा कर 1939 तक विले पार्ले मे रहे । उन्होने विले पार्ले क्षेत्र मे ही विदेशी वस्त्रो की होली जलाने से लगाकर नमक सत्याग्रह और शराबवदी तथा धरना सत्याग्रह तक का सचालन किया । विले पार्ले मे उनका गाँधी आश्रम इन सभी राजनैतिक प्रवृत्तियो का केन्द्र था । और देश के हर आन्दोलन मे गोकुलभाई स्वातत्र्य सेना की अगली पक्ति मे खडे रहे और प्रत्येक आन्दोलन मे उन्होने जेल की लबी-लबी सजाए भी भोगी ।

विले पार्ले का गांधी आश्रम

विले पार्ले का गाँधी आश्रम, गाँधी दर्शन, सत्य, अहिंसा, सप्तमहाव्रत और रचनात्मक कार्यक्रमो का प्रशिक्षण देने वाला एक राष्ट्रीय सस्थान था । गोकुलभाई ने एक राष्ट्रीय कार्यकर्ता, और अहिंसक सत्याग्रही से भी बढ कर एक राष्ट्रीय शिक्षक के रूप मे ख्याति अर्जित करली थी । गोकुलभाई सस्कृत, हिन्दी, अग्रेजी, उर्दू, गुजराती, मराठी और भिल्ली मिश्रित राजस्थानी भाषाए जानते हैं । प्रत्येक भाषा के साहित्य का उन्होने गहरा अध्ययन किया ।

बम्बई की उपनगरी विले पार्ले की नगरपालिका के वे उत्साही सदस्य थे और उसकी मैनेजिंग कमेटी के सयोजक के रूप मे उन्होने नगर विकास के कई महत्त्वपूर्ण कार्य किए और सेवा की उच्च परपराए डाली । उन्होने निष्ठावान कार्यकर्ताओ की एक पूरी जमात का निर्माण किया ।

महात्मा गांधी और पटेल बंधुओ का सान्निध्य

गोकुलभाई के जीवनीकार श्री छीतरमल गोयल ने लिखा है कि विले पार्ले के तत्कालीन कार्यकर्ताओ मे कुछ काम कर गुजरने की कितनी प्रवल, उत्कट भावना थी— यह इस बात से स्पष्ट है कि बम्बई प्रातीय कॉंग्रेस कमेटी के आपसी झगडो से ऊब कर स्वतत्र रूप से गोकुलभाई तथा उनके साथियो ने महाराष्ट्र कॉंग्रेस कमेटी, विले पार्ले मे वनाई थी जिसके प्रमुख सरदार विट्ठलभाई पटेल थे । श्री गोकुलभाई का राजनीति मे प्रवेश इसी कमेटी की सदस्यता से हुआ । उन्होने प्रारभ से ही सरदार विट्ठलभाई और सरदार वल्लभभाई पटेल के साथ काम किया । वही से उन्होने आजादी के आन्दोलनो मे जेल–यात्राए की । उन्हें गुजरात विद्यापीठ के ट्रस्टी मडल मे शामिल होने के कारण प्राय प्रतिमास साबरमती आश्रम मे गाँधीजी के मार्ग दर्शन मे होने वाली ट्रस्टी मडल की सभाओ मे जाना पडता था । वे आज भी उसके ट्रस्टी मडल के सदस्य है । विले पार्ले की पुरानी रचनात्मक सस्थाओ के साथ उनका सबध अब भी जुडा हुआ है ।

हरिपुरा कांग्रेस और देशी रियासतों के प्रति कांग्रेस की नीति

कॉंग्रेस का कार्यक्षेत्र मुख्य रूप से ब्रिटिश भारत था। उसका मुख्य काम अंग्रेजी राज से मुक्ति पाना था। देशी रियासतो के मामलो मे सीधा हस्तक्षेप नही करना, कॉंग्रेस की नीति थी। लेकिन हरिपुरा कॉंग्रेस के बाद उसने यह निर्णय लिया कि देशी रियासतो के कार्यकर्ता अपना सगठन बनाकर रियासतो मे कार्य करें और कॉंग्रेस रियासती सगठनो को प्रोत्साहन दे। अत रियासतो के इन अनुभवी राष्ट्रीय कार्यकर्ताओ के लिए; जो ब्रिटिश भारत मे कार्य करते थे, आवश्यक हो गया कि वे अपनी-अपनी रियासतो मे जाकर जनता के सगठन बनाए और जन आकाक्षाओ को पूरा करने का कार्य करें।

जन्मभूमि सिरोही मे प्रवेश और प्रजामंडल का संगठन

कॉंग्रेस के इस निर्णय से प्रेरित होकर ही श्री गोकुलभाई भट्ट ने विले पार्ले का अपना यशस्वी कार्यक्षेत्र छोडा और अपनी रियासत सिरोही मे प्रवेश किया। गोकुलभाई ने सिरोही पहुँच कर सिरोही राज्य प्रजामडल की स्थापना की, सिरोही के राष्ट्रीय कार्यकर्ताओ को सगठित किया, रियासत की प्रत्येक तहसील मे सभा और जलसे करके राज्य मे उत्तरदायी शासन की स्थापना का सदेश गाँव-गाँव में पहुँचाया। अन्य राज्यो की तरह सिरोही राज्य ने भी दमन का चक्र चलाया। 8 सितम्बर, 1939, को गोकुलभाई की एक ऐसी ही सभा पर लाठियें बरसाई जाने लगी और झडे फाड दिए गए। इस सम्बन्ध मे गोकुलभाई ने जो पत्र गांधीजी को लिखा उसके कुछ अश नीचे दिए जा रहे हैं —

सिरोही राज्य का दमन और पुलिस की ज्यादतियें

"8 सितम्बर की घटनाओ ने इस दिन को सिरोही की प्रजा के लिए स्मरणीय बना दिया है। एक सार्वजनिक सभा पर पुलिस यकायक चढ आई। उसने प्रजामण्डल के झण्डे को खीचना शुरू किया और लाठियाँ चलाई। जो झण्डा खीचा गया, वह राष्ट्रीय नही था। गत फरवरी मे जब रेजीडेन्ट मि० लोथियन सिरोही आये थे, तो उन्होने सुझाया था कि अपने दफ्तर, जुलूसो और सभाओ मे प्रजामण्डल के झण्डे का उपयोग कर सकते है। इसके अनुसार ही हम कर रहे थे। 3 सितम्बर को दीवान साहब ने जुलूसो मे इसके इस्तेमाल की मनाही कर दी। उस हुक्म की अवज्ञा से बचने की खातिर हमने जुलूस का विचार ही छोड दिया। लेकिन सभाओ मे उसके इस्तेमाल की कोई मनाही नही थी, इसलिए हमने अपनी सभा मे उसे रखा। अचानक पुलिस बडे रौबदाब के साथ वहाँ आ धमकी और बिना किसी चेतावनी या बिना किसी हुक्म के उसने झण्डे को खीचना शुरू कर दिया। कुछ कार्यकर्ता उसे थामे रहे। लेकिन पुलिस की बडी ताकत के सामने वे उसे ज्यादा देर तक थामे नही रह सके। उन्हे उससे अलग कर दिया गया। मैं उसे किसी तरह पकडे रहा, इसलिए पुलिस वालो ने झण्डे के साथ मुझे घसीटा मेरी गरदन पकड कर मुझे मारा। इसके बाद लोगो पर अन्धाधुध लाठी-चार्ज शुरू कर दिया। लाठीचार्ज सात मिनट के करीब जरूर हुआ होगा। सभा अन्त तक जारी रही। इस घटना से लोगो का

उत्साह नष्ट नही, बल्कि और बढ गया है । स्त्रिया भी इस आन्दोलन मे वीरतापूर्वक भाग ले रही हैं ।"

महात्मा गांधी का आशीर्वाद

गांधीजी ने इस विवरण को 'हरिजन सेवक' मे प्रकाशित किया और इस पर टिप्पणी भी की । उन्होने गोकुलभाई का परिचय देते हुए लिखा "वह सिरोही के रहने वाले हैं और एक सुयोग्य अध्यापक और वफादार कांग्रेस कार्यकर्ता के रूप मे उन्होने प्रसिद्धि पाई है । वह अहिंसा की भावना से ओतप्रोत हैं और हाल ही मे सिरोही गये है और प्रजा के लिए प्राथमिक अधिकार प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं ।" आगे गांधीजी ने लिखा—"गोकुलभाई को वह स्वय जानते हैं और उन्होने जो विवरण भेजा है उस पर विश्वास न करने की कोई वजह नही है । सिरोही अधिकारियो के लिए यह कोई श्रेय की बात नही है । सिरोही की प्रजा की शिकायतो की एक लम्बी सूची मेरे पास मौजूद है । अपनी कठिनाइयो से छुटकारा पाने के लिए वह बिल्कुल वैधानिक रूप से कोशिश कर रही है । मगर अधिकारी उन्हें दूर करने के बजाय स्पष्टतया लोगो की भावना को ही कुचलने का प्रयत्न कर रहे हैं । लेकिन यदि लोगो ने अहिंसात्मक प्रतिरोध की भावना ठीक तरह से हृदयगम कर ली है तो लाठी चार्ज के बावजूद अन्त मे सफलता निश्चित है ।"

हरिजन सेवक मे गाँधीजी की टिप्पणी

गाँधीजी ने अपनी इस टिप्पणी द्वारा सिरोही प्रजामण्डल के आन्दोलन को बल पहुँचाया । रियासत की हुकूमत ने प्रजामण्डल के नेताओ और कार्यकर्ताओ को गिरफ्तार कर लिया, किन्तु प्रजा ने हिम्मत नही छोडी और अपना आन्दोलन चलाती रही । गांधीजी ने 30 जनवरी, 1940, को सिरोही की स्थिति पर एक टिप्पणी फिर लिखी । उन्होने लिखा —

"सिरोही से यह अच्छी खबर आई है कि पिछले वर्ष हुई प्रजामण्डल के नेताओ की गिरफ्तारी से प्रजा की हिम्मत नही टूटी है । वह हर महीने की 22 तारीख को पूरी धर्म-भावना से गिरफ्तारी का दिन मना रही है । सभायें, प्रभात फेरियाँ, कताई और खादी-बिक्री आदि होती है । यह शुभचिन्ह है कि जहाँ हो सकता है वहाँ रियासती कार्यकर्ता मजबूती और शान के साथ अपना सगठन करते जा रहे हैं । अगर एक तरफ़ मे कठोर से कठोर कष्टो का मुकाबला करने की और दूसरी तरफ अहिंसात्मक लडाई के लिए नियम-सीमा मे पूरी तरह रहने की कला सीख लेंगे, तो सब अच्छा ही होगा । सभी तरह के रचनात्मक प्रयत्नो का नतीजा यही होता है कि प्रजा को सच्ची शिक्षा मिलती है और उसका सगठन होता है ।"

सिरोही राज्य का प्रजामडल से समझौता

अन्त मे गाँधीजी की आशा पूरी हुई । प्रजामण्डल के नेताओ और राज्य के

वीच समझौता हो गया। गाँधीजी ने 4 जून 1940 को सिरोही के समझौते पर इन शब्दो मे अपना सतोप व्यक्त किया—

"कुछ दिन पहले मैंने दु ख पूर्वक सिरोही की घटनाओ की टीका की थी। इसलिए यह लिखते हुए मुझे खुशी होती है कि अब राज्य और प्रजा के वीच सुलह हो गई है। राज्य और सत्याग्रहियो, दोनो को समान रूप से इसका श्रेय दिया जा सकता है। आचार्य गोकुलभाई ने, जिनकी सत्याग्रह के सिद्धान्तो मे पूरी आस्था है, योग्यतापूर्वक सत्याग्रहियो का नेतृत्व किया। मुझे आशा है कि राज्य और प्रजा के वीच का सम्वन्ध दिन पर दिन अधिक प्रेम पूर्ण होता जाएगा और कभी झगडे का कोई कारण नही खडा होगा।"

टोपी पर तिरंगा झंडा

सिरोही मे प्रजामडल के आन्दोलन के पहले, लवे समय तक लोगो ने देखा कि गोकुलभाई अपनी गाँवी टोपी पर एक छोटा सा तिरगा झडा सिलाए हुए रखते थे। उन दिनो मे उनकी झडे वाली टोपी अच्छी खामी चर्चा का विषय वन जाती थी। लेकिन इसका भेद वहुत वाद मे मालूम हुआ कि वे ऐसा क्यो करते थे। वात यह थी कि सिरोही की सरकार ने, सिरोही राज्य मे, तिरगा झडा फहराने के लिए प्रजामडल पर प्रतिवध लगा दिया था। इससे जनता मे निराशा सी आने लग गई थी। ऐसे समय मे राज्य शासन के उम आदेश को चुनौती देने की गरज से, गोकुलभाई ने अपनी टोपी पर झडा सिलवा लिया था। उसमे सामान्य लोगों मे उत्साह वढने लगा और लोग झडे को छाती पर लगाकर घूमने लगे। और जव समय आया, तो, गोकुलभाई की एक ललकार पर, सैकडो स्त्रियें झडा लेकर मैदान मे खडी हो गई थी।

सत्यनिष्ठा का आतंक

गोकुलभाई सिरोही राज्य के रीजेन्सी वोर्ड के सदस्य वनाए गए। क्रान्तिकारी गोकुलभाई के तपोनिष्ठ प्रभाव और प्रेरणा से प्रेरित होकर राजमाता कृष्णकुँवर वा पर्दा हटाकर जनता के समक्ष उसकी सेवा के लिए आ खडी हुई। गोकुलभाई ने रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार के विरुद्ध अहिंमक गर्जनाए की और परिणाम यह हुआ कि राज्य के अधिकारियो ने जनता से जो रिश्वत की रकम ली थी, वह वापिस की जाने लगी। गोकुलभाई की सत्यनिष्ठा का आतक राज्य भर मे छा गया और उस समय ऐसा लगने लगा कि सिरोही रियासत से जैसे रिश्वत और भ्रष्टाचार समाप्त होने लग गए है।

राज्य के प्रधान मंत्री का निवास-स्थान या कांग्रेस का दफ्तर

गोकुलभाई जव सिरोही राज्य के प्रधानमत्री थे, तव वे किमी वगले या कोठी मे नही रहे। वे तव भी कांग्रेस के दफ्तर मे आकर अपनी एक कम्वल पर ही सोते थे।

सरकारी गाडी मे कभी उनका परिवार नही घूमा, कभी सरकारी सम्पत्ति का निजी कार्य के लिए उपयोग नही किया ।

वेतन और भत्ता सार्वजनिक सेवा को भेंट

गोकुलभाई को सिरोही राज्य के प्रधानमत्री होने के नाते और भारतीय सविधान निर्मातृ सभा के सदस्य होने के नाते जो भी वेतन और भत्ता मिला, उसमे से एक पाई भी उन्होने अपने घर परिवार पर खर्च नही की । या तो वेतन और भत्ते की सारी की सारी राशि छात्रो को पुस्तकें दिलवाने या उनकी आवश्यकताए पूरी करने मे खर्च हो जाती या मुसीवत मे फँसे परिवारो की मदद करने मे । पूरी की पूरी रकम सार्वजनिक सेवा के भेंट हो जाती । कई बार तो ऐसा होता कि अपना और अपने परिवार का काम चलाने के लिए अपने घनिष्ठ मित्रो या परिवार से रकम मँगानी पडती ।

गाँधीवाद के परिव्राजक सन्यासी

गोकुलभाई गाधीवाद के एक परिव्राजक सन्यासी है । वे अपने मिशन को लेकर निरतर गाँव-गाँव का दौरा करते रहते है । अपने परिवार के साथ दो तीन महीने मे एकाव रात रहने का उन्हे अवसर मिलता है । सव से वडी मजे की वात यह है कि किसी को यह पता नही है कि कव, किस तरह से और कितनी सीमा तक परिवार के काम आते हैं, इसका किसी को आज तक पता नही पड सका । अपनी योग्यता, प्रतिभा या अपने ज्ञान का अथवा अपने सम्बन्ध मे पूरी जानकारी गोकुलभाई कभी किसी को नही देते । जो व्यक्ति जिन-जिन विषयो को लेकर गोकुलभाई के सम्पर्क मे जितने-जितने आते हैं—उतनी-उतनी उनको गोकुलभाई की जानकारी मिलती रहती है । एक निष्ठा से प्रजामडल और प्रातीय प्रजापरिषद और प्रदेश काँग्रेस की सेवा मे लगे रहने से लवे समय तक वडे-वडे और गोकुलभाई के निकट के लोगो को भी यह जानकारी नही थी कि, गोकुलभाई विवाहित है और उनके भी वच्चे हैं, पोते हैं और परिवार है ।

महीने मे बीस दिन मोटर और रेलगाड़ी मे

गोकुलभाई गृहस्थ हैं, घरवार वाले हैं, फिर भी अनिकेत है । महीने मे वीस दिन उनका घर रेलगाडी और मोटर गाडी मे रहता है और महीने मे उनतीस दिन उनका निवास अपने मित्रो और प्रेमियो के यहाँ रहता है । एक महीने मे एक दिन का औसत उनके अपने घर मे, घर वालो के साथ रहने का आता होगा ।

राजपूताना प्रांतीय देशी राज्य प्रजा परिषद के पहले अध्यक्ष

उदयपुर मे जव 1946 मे पडित नेहरू की अध्यक्षता मे अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजापरिषद का अधिवेशन हुआ और उसके परिणाम स्वरूप जव राजपूताना प्रातीय देशी राज्य प्रजापरिषद का पहली वार विधिवत गठन हुआ, तो गोकुलभाई उसके पहले

अध्यक्ष चुने गए। और उसके वाद ही वे राजपूताने की सभी रियासतो के कार्यकर्ताओ के सम्पर्क मे आए और रियासतो की अलग-अलग समस्याओ और उलझनो को सुलझाने मे अपने आपको लगाया।

जयपुर के कांग्रेस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष

देश की स्वाधीनता के वाद जव कॉग्रेस का अधिवेशन 1948 मे जयपु मे हुआ तो गोकुलभाई उसके स्वागताध्यक्ष थे। उन्होने अपने स्वागत भाषण मे कहा था कि समय आ गया है, जवकि हमे राष्ट्र के निर्माण का वास्तविक कार्य जोरो से शुरू करना पडेगा। हममे से जो सत्ता स्थान पर हैं, उन्हे और अन्य सवको मिल कर रचनात्मक कार्य विशेष रूप से करने पडेंगे। रचनात्मक कार्य ही हमारी पक्की नीव है। उसके विना हमारे स्वराज्य की इमारत पूरी नही वन सकती।

गोकुलभाई ने कहा कि हमारे रचनात्मक कार्य ही हमारी प्रगति के केन्द्र विंदु है। हमारी दृष्टि गाँव की तरफ ही दौडनी चाहिए। हमारे हर एक काम से गाँव सुखी, समृद्ध और सस्कारी वनने चाहिए। हमारे उत्थान का यही माप दण्ड होना चाहिए।

आवू को राजस्थान में मिलाने का आन्दोलन

आवू को सरदार पटेल ने गुजरात मे मिला दिया था। राजस्थान मे इसके विरोध मे आन्दोलन उठ खडा हुआ। राजस्थान के लोगों की माँग थी कि, आवू राजस्थान का भाग है और वह राजस्थान मे ही रहना चाहिए। गोकुलभाई भट्ट के लिए यह एक परीक्षा की घडी थी। सिरोही की जनता भी आवू के लिए आन्दोलन मे उठ खडी हुई थी और अत मे आवू, सिरोही और राजस्थान के जिन लोगो ने आवू को राजस्थान मे मिलाने का आन्दोलन किया था—तव उन आन्दोलनकारियो के अग्रणी के रूप मे गोकुलभाई एक वार फिर पहली पक्ति मे खडे थे। गोकुलभाई ने आवू के लिए सरदार पटेल से भी टक्कर ली थी।

विद्या व्यसन और अनवरत स्वाध्याय

गोकुलभाई वहुत विद्या व्यसनी हैं। वे मूलत. एक शिक्षक है और उनके पास शिक्षक के अनुकूल ही हृदय और स्वभाव है। रात दिन सार्वजनिक सेवा मे लगे रहते हुए भी वे कई पुस्तकें पढ लेते हैं और इस वात की खोज-खवर रखते हैं कि कौनसी पुस्तक नई प्रकाशित हुई है और कहाँ से प्राप्त हो सकती है। पत्र-पत्रिकाओ को वरावर पढते हैं और जिन विचारो के वारे मे उन्हें सकेत करना होता है उसके सम्वन्ध मे सवधित लेखक को दिशा-सूचना देते हैं।

विभिन्न प्रान्तो के साहित्य और भाषाओ का ज्ञान

गोकुलभाई गुजराती के साहित्यकार हैं, साहित्यिक हैं, कवि हैं और साहित्यकारो

के निकट सपर्क मे रहे हैं। सरदार पटेल ने तो एक बार सविधान सभा मे कह भी दिया कि गोकुलभाई गुजराती हैं। केवल गुजराती का ही नहीं, राजस्थानी साहित्य का उनका ज्ञान और अध्ययन भी बहुत व्यापक है। अग्रेजी साहित्य का उन्होने बडे चाव से अध्ययन किया है। मराठी पर उनका अधिकार ठेठ महाराष्ट्र वालो जैसा है। हिन्दी मे कविता लिखते हैं, भाषण देते हैं और पत्रो का सपादन करते हैं। अब भी उनके अध्ययन का क्रम बराबर चलता रहता है। कभी इस पुस्तकालय को और कभी उस पुस्तकालय को उनकी माँगें जाती ही रहती हैं।

सर्वोदय कार्य का राजस्थान मे व्यापक विकास

राजस्थान के सार्वजनिक जीवन मे गोकुलभाई का अपना अलग ही महत्व है। सर्वोदय के काम मे जिस प्रकार से गोकुलभाई ने पिछले वर्षो मे अपने आपको लगा रखा है वह किसी भी व्यक्ति के लिए अपने आदर्श के प्रति एक निष्ठा का भाव पैदा करने वाला, प्रेरणा देने वाला होगा। गोकुलभाई अपनी पूरी शक्ति भूदान-सर्वोदय मे लगा रहे हैं। उनके सुयोग्य नेतृत्व ने सर्वोदय कार्य को राजस्थान मे काफी विकसित किया है। गोकुलभाई की निष्ठा विलक्षण है और बिना किसी बाहरी दिखावे के वे अपने अगीकृत कार्य मे सतत् सलग्न रहते हैं।

सर्वोदय की दिशा पकड कर गोकुलभाई राजनीति से धीरे-धीरे दूर पडते गए हैं और सर्वोदय के अधिक निकट। सर्वोदय मे भी राजनीति बहिष्कृत तो नही है परन्तु गोकुलभाई की प्रवृत्ति खादी, भूदान, पदयात्रा, शराब बदी आदि की ओर ही बढती रही है।

स्वराज्य के पहले अन्न-विहीन प्रसाद

जब तक स्वराज्य नही आया था, तब तक गोकुलभाई ने अन्न-ग्रहण करना छोड दिया था। उस समय गोकुलभाई अन्न से भिन्न जो जो लेते थे उसमे उनके सभी साथ रहने वाले साथियो को दिलचस्पी रहती और गोकुलभाई अपना अन्न विहीन प्रसाद सभी भक्तो मे बाटकर ही भोग लगा सकते थे। यह क्रम भी वर्षों तक चला।

गीता और गांधी प्रेरणा के स्रोत

गोकुलभाई के प्रेरणा का स्रोत गीता और गांधी हैं। गीता के स्थितप्रज्ञ के लक्षणो को गोकुलभाई यत्नपूर्वक आत्मसात् करते रहे हैं और वह उनके विचार, वाणी, व्यवहार और आचरण मे उत्तरोत्तर व्यक्त होता जा रहा है। गांधी तो गोकुलभाई के जीवन मे सर्वत्र ही हैं। उन्होने जीवन मे एक क्षण को भी गांधी को छोडा नही, आज भी वे उसे छोडने वाले नही है। गोकुलभाई ने सत्ता छोड दी, सत्ता की होड छोड दी, चुनाव छोड दिए, चुनाव निर्णायकत्व छोड दिया लेकिन गोकुलभाई का गांधीवादी दिल कांग्रेस छोडने को तैयार नही हुआ, और वह आज भी तैयार नही है।

जीवन-यात्रा का संक्षिप्त निरुपण

गोकुलभाई की जीवन यात्रा का निरुपण सक्षेप मे इन शब्दो मे ही किया जा सकता है कि वे सिरोही राज्य के हाथल ग्राम मे आज से 73 वर्ष पहले जन्मे, वम्बई मे शिक्षा प्राप्त की, ववई के उपनगर विले पारले को अपनी राष्ट्रीय प्रवृत्तियो का पहला कार्यक्षेत्र वनाया, आजादी की लडाई मे अग्रगण्य योद्धा रहे, राजस्थान निर्माण मे उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही, आवू की समस्या के वनने मे और सुलझने मे उनका वहुत उल्लेखनीय हाथ रहा, वे सिरोही राज्य प्रजामडल के अध्यक्ष रहे, सिरोही की रिजैंसी कौंसिल के सदस्य रहे, सिरोही राज्य के प्रधानमत्री रहे, सविधान सभा के सदस्य रहे, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की कार्यसमिति के सदस्य रहे, वे राजपूताना प्रातीय देशी राज्य प्रजा परिषद् और फिर राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे, राजस्थान के चार वडो मे से वे एक है। वे कांग्रेस मे है, भूदान मे है, सर्वोदय है, जनता मे हैं।

असाधारण मान्यताओं वाला असाधारण व्यक्तित्व

इतना सम्मान और प्रतिष्ठा पाने के वाद भी किसी तरह का अहम् या अहकार उन्हे छू तक नही गया है। वे आज भी पैवद लगे कपडे गौरव से पहन लेते हैं, वस मे निस्सकोच यात्रा कर लेते हैं। वे सदा तीसरे दर्जे मे ही सफर करते हैं और तीसरे दर्जे की भीड मे मुक्त कण्ठ से हसते रहते हैं। आज भी साइकिल पर चढकर कही भी आ-जा सकते है। चने और गुड पर कई दिन निकाल सकते हैं। वे कही भी उठ वैठ सकते हैं, खाप्पी सकते हैं। चल फिर सकते हैं, लिख वोल सकते हैं। कोई 'काम्पलैक्स' उनमे नही है। वे नित्य नियम से आज भी चर्खा कातते हैं, दिन रात अविश्रान्त काम करते हैं, कभी अपने सुख दु ख के वारे मे किसी से कुछ नही कहते, कभी-कभी लोग उनका मजाक भी उडाते हैं, तो उसे भी शान्ति के साथ सहन कर लेते हैं, कभी दुर्भावना मन मे नही आने देते।

समाज की नवरचना और नैतिक मूल्य

राजस्थान मे ही क्या गोकुलभाई जैसे गांधीजी के कोई दूसरे तपस्वी अनुयायी भारत मे भी कम ही मिलेंगे। यह गोकुलभाई जैसे व्यक्तियो के लिए ही सभव हो सकता है कि राजनीति मे भी वे गांधीजी की तरह निष्काम वृत्ति से काम करते रहे। उन्होने अपने जीवन और कर्म से यह सिद्ध कर दिया कि केवल राजनीति ही सपूर्ण जीवन नही है, वलिक मनुष्य अपने चरित्र वल को ऊँचा उठाकर तथा अपने दिव्य गुणो की धारणा करके वह मनुष्य जाति के लिए अधिक उपयोगी और अधिक कल्याणकारी हो सकता है। उनका मानना है कि राष्ट्रीय उत्थान के लिए सवसे पहली आवश्यकता है राष्ट्रीय चरित्र को ऊँचा उठाने की। समाज की नव रचना मे नैतिक मूल्यो की स्थापना को गोकुलभाई ने सदा सर्वदा सवसे अधिक महत्व दिया है।

मास्टर आदित्येन्द्र,
भरतपुर.

जन्म · 24 जून, 1907

वर्त्तमान पता आर 12, अशोकनगर, जयपुर.

जन्म और परिवार परिचय

मास्टर आदित्येन्द्र का जन्म जिला भरततुर की नगर तहसील के अन्तर्गत थून नामक एक गाँव मे ज्येष्ठ शुक्ला 13, सवत् 1964 विक्रमी, सोमवार, तदनुसार 24 जून सन् 1907 मे एक भरे-पूरे तथा वभवशाली वैश्य परिवार मे हुआ था। आपके पितामह ला० फकीरचन्दजी आरम्भ मे पटवारी रहे थे। साथ ही आप औसत दर्जे के भूमिधर तथा व्यापारी भी थे। उन दिनो इस क्षेत्र मे आर्यसमाज का प्रवल प्रचार होता रहता था, जिससे प्रभावित होकर आप और आपका पूरा परिवार उसी समय-आर्य समाजी हो चुका था।

आपके पिता ला० शकरलालजी, जिनका निधन आपकी 11 वर्ष की अवस्था मे ही हो चुका था, वहुत ही निष्ठावान आर्य समाजी थे, जो उसके नियमो व सिद्धान्तो का स्वय ही पालन नही करते थे-अपितु उनका प्रचार भी किया करते थे, फलत' आपकी जीवनचर्या मे भी उसका प्रभाव पडना स्वाभाविक था। यही कारण है कि उन्होने अपने ज्येष्ठ पुत्र को जन्म के नाम, 'रामस्वरूप' के स्थान पर 'आदित्येद्र' की वर्तमान वैदिक सज्ञा से सबोधित करना समीचीन समझा था।

आर्य समाज के ही प्रभाव से आपके परिवार मे उन दिनो सध्या, हवन तथा वैदिक सस्कारो का पूर्ण प्रचलन रहा था तथा कन्याओं को उच्च शिक्षा देना भी उस क्षेत्र मे सर्वप्रथम आपके कुटुम्बी जनो मे ही प्रारम्भ हुआ था।

बाल्यकाल तथा प्रारम्भिक शिक्षा

प्रारम्भिक शिक्षा आपने अपने गाँव की शाला मे ही प्राप्त करली तथा मिडिल, नगर के मिडिल स्कूल से किया था। तदुपरान्त आपने डीग मे स्पेशल क्लास के छात्र की हैसियत से अग्रेजी मिडिल परीक्षा दी थी। वाद मे भरतपुर के सदर हाइ स्कूल से मैट्रिक परीक्षा पास की।

सरलता और संकोच वृत्ति

जिस समय आप हाई स्कूल के छात्र की हैसियत से भरतपुर आये थे, आपकी आयु लगभग 15 वर्ष की थी, परन्तु आप तव भी वच्चो की भांति झेपू और सकोची स्वाभाव के थे। अपने दो तीन साथियो के अतिरिक्त आप अन्य लोगो से वहुत कम वोलते थे तथा पहनने ओढने मे भी सरलता तथा सादगी का परिचय देते थे।

प्रतिभा तथा आवरण

अध्ययन मे आप अन्य विपयो मे सामान्य ही थे, परन्तु गणित मे आपकी वुद्धि वहुत तीव्र थी। अक गणित तो आपकी उगलियो पर रहती थी, वीज गणित व रेखा गणित मे भी आप अन्य छात्रो से अधिक अग्रणी थे।

हाई स्कूल मे 9 वी कक्षा मे पढते हुए ही अल्पायु मे आपका विवाह भी हो गया था। उस सम्वन्ध की भी एक रोचक घटना उस समय घटी थी, जिस समय आपने अपने विवाह के लिए छुट्टी मांगने का आवेदन पत्र हैडमास्टर वावू ज्वालाप्रसाद के समक्ष प्रस्तुत किया तो उन्होने उस छोटी अवस्था मे विवाह किये जाने पर अप्रसन्नता प्रकट करते हुए उस आवेदन पत्र को अग्रेजी मे यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया। Look here a boy husband is going to marry a girl wife अत मे वहुत कुछ अनुनय विनय से आपकी छुट्टी मजूर की गई थी।

कालेज शिक्षा का पृथक क्षेत्र

सन् 1923 के पूर्वार्द्ध मे मैट्रिक परीक्षा पास करने के वाद कॉलिज की शिक्षा के लिये आप सैन्ट जोन्स कॉलिज आगरा मे प्रविष्ट हुए। इस आगरा जैसे उच्च स्तरीय तथा फैशनपरस्त स्थान पर भी आपके स्वभाव, रहन-सहन तथा व्यवहार मे काई अन्तर नही आया। वहाँ भी अपने नये-नये साथियो मे आप वैसे ही झेंपू, सकोची तथा अल्प-भाषी ही वने रहे, जैसे स्कूल के दिनो मे थे।

राजकीय सेवा मे प्रवेश

सन् 1928 मे आगरा मे वी०एस सी० की परीक्षा पास करके आप भरतपुर आ गये और कुछ दिनो के अनन्तर आप स्थानीय उसी हाई स्कूल मे गणित और विज्ञान के अध्यापक हो गये, जिसमे 5 वर्ष पूर्व आप छात्र रह चुके थे। अध्यापक की हैमियत से आप छात्रो मे अतीव लोकप्रिय तथा श्रद्धा और प्रेम के भाजन तो कुछ ही दिनो मे वन गये थे, कालान्तर मे आपने-अपने अध्येताओ मे राष्ट्रीय भावना और राजनीतिक विचार भरना भी आरम्भ कर दिया था, जो उस समय सन् 1930 के मविनय अवज्ञा तथा नमक मत्याग्रह आन्दोलन के प्रभाव से और भी उग्र हो गये थे।

आपकी इन नई गतिविधियो पर आरम्भ से ही राज्य मरकार की दृष्टि नही पडी हो, ऐमा सम्भव नही था, परन्तु माधारण स्थिति मे वह आपके विरुद्ध कुछ कडा कदम

उठाना उचित नही समझती थी, ताकि विशेष उत्तेजना उत्पन्न न हो। परन्तु जिस समय आपने स्वय खादी के वस्त्र धारण करके छात्रो को भी वैसा करने के लिए प्रेरित करना आरम्भ किया तथा छात्र भी अपने राजनीतिक विचारो को मूर्त्त रूप देने के लिये आपके परामर्श से अजमेर आदि ब्रिटिश भारत के नगरो मे कानून तोडने और गिरफ्तार होने को जाने लगे तो आपके विरुद्ध कदम उठाना आवश्यक हो गया।

तलाशी और त्यागपत्र

तदनुसार सितम्बर सन् 32 मे राजद्रोहात्मक साहित्य की तलाशी लेने के लिये आपके तथा दो अन्य सदिग्ध व्यक्तियो के निवास स्थान पर छापा मारा गया और कुछ देर तक छानबीन करके कुछ पत्रादि हस्तगत किये, परन्तु आपके विरुद्ध कोई अरोप नही लगा सके जब कि अन्य दो व्यक्तियो को जेल भेज कर उनको दण्ड भी दिया गया था। फिर भी आपकी सदेहास्पद गतिविधियो से रुष्ट और असतुष्ट होकर आप से स्वेच्छापूर्वक अपने पद से त्याग पत्र देने का अनुरोध और आग्रह किया जाने लगा, जिसके लिये सरकार की ओर से साम, दाम, दण्ड, भेद सभी नीतियो का खुलकर प्रयोग किया गया।

इससे यह स्थिति पैदा हो गई कि एक ओर आप कहते थे कि यदि उनके विरुद्ध कोई आरोप है तो उसको सिद्ध करके उनको सेवा से पृथक किया जाये, दूसरी ओर राज्य सरकार ऐसे किसी झझट मे न पड कर उनसे त्याग-पत्र ही लेना चाहती थी। अन्त मे आपने राज्य सेवा का परित्याग करके खुलकर राजनीति मे आने का सकल्प कर लिया और वैसा ही किया भी।

सेवा से निवृत होकर आपने जीविकोपार्जनार्थ भरतपुर मे ही श्री गौरीशकर मित्तल के साथ 'आर्य बुक डिपो' के नाम से पुस्तको की एक दुकान खोली, जिसके साथ अनेक समाचार पत्रो की एजेंसी भी ली गई थी। परन्तु व्यापार मे आपकी अधिक रुचि न होने के कारण आप उससे कोई लाभ नही उठा सके, अत आपने उस ओर से हाथ खीच लिया। साथ ही उन दिनो वहाँ राज्य के अन्दर और उसके बाहर राजनीतिक आन्दोलनो के शिथिल पड जाने पर आपने अपना कार्य क्षेत्र बदलने का भी विचार किया।

रेवाडी प्रवास

रेवाडी मे श्री गोपीलाल यादव, अहीर हाईस्कूल के प्रिंसीपल के पद पर कार्य कर रहे थे। और सन् 1935 मे आदित्येन्द्रजी भी उसी स्कूल मे गणित के अध्यापक होकर जा पहुँचे।

देवता स्वरूप भाई आदित्येन्द्रजी

रेवाडी रहते हुए भी आपकी सरलता, विनम्रता, सेवा भाव और उदारता आदि सद्गुणो मे कोई कमी नही आई। यहाँ भी आपके साथी सहयोगी अध्यापक तथा छात्रो मे अत्यल्पकाल मे ही आप अत्यन्त लोकप्रिय हो गये थे। आपकी सादगी, मिलनसारी तथा

सात्विकता आदि से प्रभावित होकर उक्त हाई स्कूल के सस्कृत शिक्षक श्री रामस्वरूपजी शास्त्री आपको पजाव के क्रान्तिकारी देशभक्त देवता स्वरूप भाई परमानन्द की भाँति आपको देवता स्वरूप भाई आदित्येन्द्र जी कहा करते थे। अन्य अध्यापक भी आपके प्रति श्रद्धा और सम्मान के भाव रखते थे।

सेवा और सहायता

यहाँ आपकी उदारता और दीन दुखियो की सहायता करने की वृत्ति और भी अधिक उभर कर सामने आ गई थी। उस समय आपको 60/– रु० मात्र मासिक वेतन मिलता था। उसमे से लगभग एक तिहाई भाग आप प्रति मास निर्धन, विशेपत हरिजन छात्रो की फीस चुकाने तथा अन्य प्रकार की सहायता मे खर्च कर देते थे। कुछ और सार्वजनिक कार्यकर्ता भी आप से कुछ न कुछ लेते ही रहते थे। साथ ही आप गणित अथवा अन्य किसी भी विषय मे कमजोर छात्रो को नि शुल्क पढाते थे।

आतिथ्य सत्कार

आपका आतिथ्य सत्कार भी कभी-कभी अति पर पहुँच जाता था। दो तीन वाहरी व्यक्ति, कार्यकर्ता आदि तो प्राय नित्य प्रति ही आपके घर पर भोजन करते थे। कभी-कभी उनकी सख्या सात आठ तक भी पहुँच जाती थी, जिनमे कुछ स्थानीय व्यक्ति भी होते थे। इन सभी को अच्छे से अच्छा भोजन कराना भी आप आवश्यक समझते थे।

आपके परिवार के अन्य सदस्य आपकी इस उदारता की वृत्ति से रुष्ट भी रहते थे, परन्तु आपको इससे सतोप होता था।

सार्वजनिक कार्यों में भाग

यहाँ रेवाडी रहते हुए भी चुनाव आदि अथवा कांग्रेस की अन्य प्रवृत्तियो मे श्री आदित्येन्द्र पूरा सहयोग देते तथा उनकी सभा सम्मेलनो मे भी भाग लेते थे। उनकी इस प्रवृत्ति का स्कूल के कुछ अध्यापको द्वारा विरोध भी किया जाता था।

भरतपुर राज्य प्रजा मण्डल स्थापना की योजना

सन् 1937-38 मे वहुधा सभी देशी राज्यो मे जन जागृति की मात्रा बढती जा रही थी, वहाँ की सरकारो ने जाब्ता फौजदारी कानून सशोधन अधिनियम जारी करके राजनैतिक सगठनो की स्थापना तथा उनकी ओर से आन्दोलन करने के ऊपर कठोर प्रतिबन्ध लगा दिया था। तदनुसार भरतपुर राज्य मे भी उक्त काला कानून कार्य रूप मे आ गया था, जिससे वहाँ राज्य के अन्दर रह कर कोई राजनैतिक कार्य करना कानूनी जुर्म माना जाने लगा। फलत स्वर्गीय प० रेवती शरणजी, ठा० देशराज तथा श्री कृष्णलाल जोशी आदि कुछ कार्यकर्ता जो उस समय राज्य की जनता को सगठित करने के कार्य मे सलग्न थे, उन्होंने भरतपुर से रेवाडी जाकर मास्टर आदित्येन्द्र, जुगलकिशोर चतुर्वेदी एव गोपीलाल यादव से मन्त्रणा की तथा वही से तत्सम्बन्धी कार्यवाहियो का सचालन करने लगे,

यहाँ तक कि "भरतपुर राज्य प्रजा मण्डल" की स्थापना तथा उसके पदाधिकारियों के नामो की घोषणा भी वहाँ से ही की गई थी, तदनुसार श्री गोपीलालजी यादव अध्यक्ष, ठा० देशराज तथा प० रेवतीशरणजी उपाध्यक्ष, श्री कृष्णलाल जोशी मन्त्री, श्री जुगलकिशोर चतुर्वेदी उपमन्त्री तथा श्री आदित्येन्द्र कोषाध्यक्ष मनोनीत हुए थे। इसकी सूचना दिल्ली से प्रकाशित समाचार-पत्रो मे प्रकाशित हुई थी, जिससे भरतपुर राज्य के अधिकारी भी अवगत हुए तथा उसकी ओर से सजग और सावधान हो गये। उन दिनो यहाँ सर रिचर्ड टाटहम नामक एक वरिष्ठ अग्रेज अधिकारी दीवान के पद पर कार्य कर रहे थे। वह अत्यन्त अनुभवी एव दवग शासक माना जाता था। अब उसी के साथ सारा पत्र-व्यवहार आरम्भ हुआ, जिसके माध्यम से "प्रजा मण्डल" का कार्यालय भरतपुर राज्य के अन्दर स्थापित करने का अनुरोध करते रहे थे तथा उसको नियमानुसार पंजीकृत कराके मान्यता प्राप्त करने पर जोर देते रहे थे, परन्तु तत्सम्बन्धी नियम ऐसे बनाये गये थे, जो नीतिगत सिद्धान्तो व विचारो के प्रतिकूल पडने के कारण आर्यकर्ताओ मान्य नही हो सकते थे, फलत सीधे सघर्ष के लिये तैयारी करना अनिवार्य हो गया।

पुनः भरतपुर मे

जैसा कि पहले वतलाय जा चुका है, सर्वश्री प० रेवतीशरणजी ठा० देशराज और श्री कृष्णलाल जोशी तथा उनके अन्य साथी तो भरतपुर रहते हुए कार्य कर ही रहे थे, सन् 1938 मे आदित्येन्द्रजी भी रेवाडी के स्कूल से त्यागपत्र देकर भरतपुर ही पहुँच गये और जनता मे राजनीतिक चेतना उत्पन्न करके उसको एक वडे सघर्ष के लिये तैयार करने लगे।

भरतपुर मे सामूहिक गिरफ्तारी
आदित्येन्द्रजी तथा तीन अन्य साथियो का पलायन

कालान्तर मे 'प्रजामण्डल' को मान्यता प्रदान करने तथा उत्तरदायी शासन की स्थापना की माँग को लेकर राज्य के अन्दर सभा–सम्मेलन करने, जुलूस निकालने तथा प्रदर्शन करने के सिलसिले मे 13 मई सन् 1939 को खास भरतपुर मे स्थानीय श्री लक्ष्मणजी के मन्दिर के सामने एक विशाल सभा का आयोजन किया गया। जिसमे उस समय राज्य के अन्दर उपस्थित प्राय· सभी प्रमुख कार्यकर्ता सम्मिलित हुए थे। अधिकारियो ने भी उस अवसर को सामूहिक गिरफ्तारी के लिये उपयुक्त समझ कर सभा-स्थल पर वहुत वडी सख्या मे पुलिस तैनात करदी, ताकि सभा की समाप्ति पर सभी कार्यकर्ताओ को एक साथ गिरफ्तार करके आन्दोलन को सदैव के लिये समाप्त कर दिया जाये। लेकिन मास्टर आदित्येन्द्र तथा कई अन्य कार्यकर्ताओ को चुपके से भरतपुर से वाहर भिजवाने की व्यवस्था की गई, कि जिससे रियासत के वाहर रह कर आन्दोलन का सचालन किया जा सके। अछनेरा प्रजामंडल का शिविर स्थापित किया गया।

मथुरा मे शिविर स्थानान्तरण

लगभग 15 दिन तक शिविर का सचालन करते रहने के पश्चात् उनको सुविधा

की दृष्टि से मथुरा स्थानान्तरित कर दिया गया तथा वहाँ स्थानीय चौकी वाग-बहादुर के समीप दिल्ली-आगरा मार्ग स्थित पुराना वर्फखाना नामक स्थान पर उसको चालू कर दिया गया। मथुरा प्रधान शिविर की एक शाखा भरतपुर राज्य सीमा से सटे हुए सोख कस्बे मे स्थापित की गई जिसका सचालन स्वर्गीय प० सावलप्रसाद चतुर्वेदी कर रहे थे।

समझौता वार्ता मे प्रमुख माँग

लगभग 8 महीने तक आन्दोलन चलता रहा उसके वाद राज्य सरकार ने समझौता करके आन्दोलन को समाप्त करने का प्रयत्न किया तो प्रजामण्डल की ओर से समझौता करने वाले सदस्यो मे मा० आदित्येन्द्र, स्वर्गीय प० रेवतीशरण शर्मा, गोकुलजी वर्मा, ठा० देशराज और गोपीलाल यादव थे।

25 दिसम्बर सन् 39 को राज्य सरकार और प्रजामण्डल के बीच समझौता हुआ, जिसमे कि प्रजामण्डल के स्थान पर प्रजा परिषद् नाम को मान्यता दी गई।

तदनन्तर जनवरी सन् '40 से वही भरतपुर शहर मे प्रजा परिषद का केन्द्रीय कार्यालय स्थापित किया गया तथा उसका पुनर्गठन होकर राज्य मे जन-जागरण तथा सदस्य भर्ती करने का कार्य चालू हो गया।

प्रथम राजनैतिक सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष

दिसम्बर सन् 40 मे जव भरतपुर मे प्रजा परिषद का प्रथम राजनीतिक सम्मेलन स्व जयनारायणजी व्यास की अध्यक्षता मे हुआ था मास्टर आदित्येन्द्र उमके स्वागताध्यक्ष थे। अगस्त सन् 42 मे जिस समय "भारत छोडो" आन्दोलन के सिलसिले मे 9 अगस्त को वम्वई तथा कतिपय अन्य स्थानो पर कांग्रेस नेताओ की सामूहिक धर-पकड की गई थी, तो 11 अगस्त को मास्टर आदित्येन्द्रको भी गिरफ्तार किया गया।

कुछ दिनो तक शान्त रहने के वाद आन्दोलन ने फिर जोर पकडा और राज्य मे स्थान-स्थान पर गिरफ्तारियो का ताँता लग गया। इसी प्रकार डाकखाने तथा रेलवे स्टेशन पर गडवडी तथा छात्रो मे विद्रोह उत्पन्न करने के अपराव मे भी रोशनलाल आर्य और कु० गिरिवर सिह नामक दो युवक हाईस्कूल के छात्रावास मे से गिरफ्तार किये गये थे।

सन् '42 के आन्दोलन काल मे जिस समय जेलें धडाधड राजवन्दियो से भरी जा रही थी, तभी राज्य मे एक वडी प्रलयकारी वाढ आई, जिससे जन-धन की अपार हानि हुई थी। ऐसी स्थिति मे प्रजा परिषद ने आन्दोलन को स्थगित करके वाहर रहे कार्यकर्त्ताओ को वाढ पीडितो लोगो की सेवा व सहायता मे लगाने का निर्णय लिया। तत्कालीन दीवान श्री के पी एम मेनन से ममझौता वार्ता शुरू हुई और उन्होने प्रजापरिषद की प्राय सभी शर्तों को सहर्ष स्वीकार करके लगभग 3 महीने के अनन्तर ही समझौता कर लिया और तमाम राजवन्दी विना शर्त रिहा कर दिये गये। यह कहना अप्रासगिक नही होगा, कि इस सद्भावना की स्थिति को उत्पन्न कराने मे मा० आदित्येन्द्रजी का ही प्रमुख हाथ था।

धारा सभा की स्थापना

राज्य सरकार द्वारा समझौते की जो शर्तें स्वीकार की गई थी, उनमे राज्य के अन्दर तत्काल चुने हुए सदस्यो के बहुमत वाली धारा सभा की स्थापना की गई। तदनुसार "व्रज जया प्रतिनिधि समिति" नामक एक व्यवस्थापिका सभा अस्तित्व मे आई। सन् 1943 मे निर्वाचित पंचो द्वारा परोक्ष रूप से चुनाव कराया गया था, जिसमे 37 निर्वाचित सदस्यो मे से 22 पर प्रजापरिषद ने कब्जा कर लिया था, अत सदन मे उसी का बहुमत माना जाना चाहिए था, परन्तु 6 सरकारी और 7 गैर सरकारी मनोनीत सदस्यो के सहयोग से विरोधी दल ने अपना बहुमत करके उपाध्यक्ष के पद को जीत लिया था।

धारा सभा मे प्रजा परिषद पार्टी के पदाधिकारियो मे जुगलकिशोर चतुर्वेदी दल के नेता चुने गये, मा० आदित्येन्द्र उप नेता तथा श्री राजबहादुर उसके सचिव चुने गये थे लगभग 2–2½ वर्ष तक तो उक्त धारा सभा का जैसे-तैसे कार्य चलता रहा, जिसमे प्रजापरिषद की ओर से बेगार विरोधी, महिला अधिकार आदि से सम्बन्धित विधेयक प्रस्तुत तथा समर्पित किये गये थे, परन्तु सरकार और उसके द्वारा समर्पित दल की प्रतिगामी नीतियो को थोपने और जनहित के सुझावो को भी अमल मे न लाने से रुष्ट और असतुष्ट होकर परिषद ने धारा सभा का बहिष्कार कर दिया, अत थोडे ही समय मे उसका अन्त हो गया।

फिर से संघर्ष

सन् '45 और '46 मे भी सरकार के साथ सघर्ष चलता रहा, जिसमे जुगल-किशोर चतुर्वेदी, श्री राजबहादुरजी तथा कतिपय अन्य कार्यकर्त्ता गिरफ्तार करके जेलो मे डाले गये। उन पर मुकदमे चले, सजायें सुनादी गई, परन्तु कुछ समय के बाद ही सरकार ने उनको रिहा करना उचित समझा। इन रिहाइयो मे मा० आदित्येन्द्र का विशेष योगदान रहा था।

सन् '47 का बेगार विरोधी आन्दोलन

सन् '47 के आरम्भ मे ही भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड वैवल तथा बीकानेर नरेश महाराज शार्दूलसिंह भरतपुर की विश्वविख्यात जलमुर्गियो के शिकार के लिये आये थे, जिसके लिये पहले की ही भाँति राज्य भर से कोली, जाटव आदि जबरन बेगार मे लाये जा रहे थे। प्रजा परिषद ने इस अमानवीय व्यवहार का विरोध करने का आयोजन किया। इसके लिए बडे-बडे जुलूस निकाले गये, प्रदर्शन किये गये तथा बेगार मे लाये जाने वाले लोगो को वापिस लौट जाने के लिये प्रेरित किया गया। पुलिस ने इस पर लाठी प्रहार, अश्रु गैस तथा बन्दूको का भी प्रयोग किया, परन्तु फिर भी स्थान-स्थान पर आन्दोलन जोर पकडता चला गया, जिसको दबाने के लिये सरकार ने कुम्हेर तथा उच्चैन कस्बो को दिन-दहाडे गुण्डो से लुटवाया और जनता को हर प्रकार से आतंकित और भयभीत करने की चेष्टा की, परन्तु आन्दोलन की उग्रता मे कोई अन्तर नही आया।

सरकारी कामकाज ठप्प

अन्त मे आन्दोलनकारियो ने सरकारी कामकाज को ठप्प करने के इरादे से स्थानीय किले के अन्दर स्थित समस्त कार्यालयो और न्यायालयो मे राज्य अधिकारियो तथा जन साधारण को न पहुँचने देने के लिये किले के दोनो दरवाजो पर धरना देना आरम्भ कर दिया, जो दो दिन तक तो शान्तिपूर्ण ढग से चलता रहा, हा एक दिन पुलिस की भरी हुई गाडी सत्याग्रही श्री मुकुट विहारीलाल गोयल के ऊपर से निकालने से उनकी पसली को काफी चोट पहुँची थी ऐसी कुछ छुट पुट घटनायें और भी घटती रही थी।

15 जनवरी को लहू की होली खेली गई

परन्तु 15 जनवरी के दिन प्रात 11 बजे के लगभग किले के पूर्वी अष्टधाती दरवाजे की ओर सैनिको व सत्याग्रहियो मे सघर्ष हो गया, जिसके दौरान सैनिको द्वारा निहत्थे सत्याग्रहियो पर बल्लम, भाले और लाठियो से प्रहार हुए, जिससे सर्वश्री साँवलप्रसाद चतुर्वेदी उनकी पत्नी, राज बहादुर, मु० आले मुहम्मद तथा अन्य अनेक पुरुष और महिलाए भी बुरी तरह आहत हो गये और उनको तत्काल अस्पताल मे भेजा गया।

स्थिति गभीर रूप धारण करती गई सरकार की ओर से दफा 144 तथा करफ्यू आदेश लागू कर दिए गए पुलिस ने, उसी रात्रि को, प्रजा परिषद् के अनेक कार्यकर्त्ताओ को गिरफ्तार करके जेल भिजवा दिया। उधर शहर मे उसी दिन से दमन के विरोध मे पूर्ण हडताल कर दी, जो पूरे 22 दिन तक चलती रही।

नेहरूजी के विशेष प्रतिनिधि का आगमन

अगले दिन प० जवाहरलालजी नेहरू के विशेष प्रतिनिधि स्वर्गीय द्वारकानाथ काचरू भरतपुर पहुँचे तथा वहाँ स्थिति का अध्ययन एव राज्याधिकारियो और प्रजापरिषद् के नेताओ से भेंट कर, अपनी विस्तृत रिपोर्ट श्री नेहरूजी को जाकर दी तथा उसको समाचार-पत्रो मे भी प्रकाशित कराया।

मास्टरजी द्वारा आन्दोलन का संचालन

इस भयावह स्थिति मे मा० आदित्येन्द्र भूमिगत होकर वही से आन्दोलन को चलाते रहे। इन दिनो आपको कई कई दिन जगलो मे छिपकर रहना पडा, कभी कभी आप सडक का मार्ग छोडकर पहाडो के ऊपर होकर एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाते थे। पुलिस ने आपको पकडने की भरपूर कोशिश की, परन्तु वह सफल न हो सकी।

अन्तिम बार जेल यात्रा

कुछ दिन तक तो आप बाहर रहते हुए ही आन्दोलन का सचालन करते रहे, परन्तु जब जेल के राजबन्दियो के सम्बन्ध मे कुछ ऐसे समाचार मिले, जिनके कारण आपको जेल जाना अनिवार्य प्रतीत हुआ, तो स्व० गोपीलाल यादव के साथ आप भी गिरफ्तार हो गये।

लोकप्रिय मन्त्रिमण्डल में

कालान्तर मे देश की स्थिति ने पलटा खाया और प्राय. सभी राज्यो मे लोकप्रिय मन्त्रिमण्डल बनाए जाने की प्रक्रिया आरम्भ हुई, जिसमे राज्य के सभी राजनैतिक दलो के

सदस्यो को सम्मिलित करने की नीति अपनाई गई थी, भरतपुर मे भी वैसा ही करने का अवसर उपस्थित हुआ। अतः यहाँ से प्रजापरिषद् की ओर से किनको भेजा जाए, इस प्रश्न पर विचार होने लगा।

सभवत दिसम्बर 1947 मे यह लोकप्रिय मन्त्रिमण्डल अस्तित्व मे आया और तीन माह तक इसने कार्य किया, पुन फरवरी के अन्त और मार्च के आरम्भ मे इस राज्य के विलीनीकरण का अवसर आ गया, अत उक्त लोकप्रिय मन्त्रिमण्डल की शीघ्र ही समाप्ति हो गई।

संयुक्त मत्स्य राज्य तथा राजस्थान प्रदेश कॉंग्रेस कमेटी के अध्यक्ष

इसी दौरान तत्कालीन रियासती विभाग के अध्यक्ष सरदार पटेल ने विभिन्न राज्यो के एकीकरण अथवा विलीनीकरण का कार्य आरम्भ कर दिया था, फलत थोडे ही समय मे अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली के राज्यो को मिलाकर "सयुक्त मत्स्य राज्य" का गठन किया, इसमे आप विस्थापितो के बसाने वाली कमेटी के अध्यक्ष बनाए गए तथा मत्स्य राज्य कॉंग्रेस के भी अध्यक्ष चुने गये। अपने इन दोनो पदो को भी आपने सफलता पूर्वक निभाया था।

इसके पश्चात् जब मार्च सन् 1949 मे राजस्थान राज्य के निर्माण होने पर सयुक्त मत्स्य राज्य का उसमे विलीनीकरण हो गया तो आप उसमे भी सगठन के तथा विभिन्न रचनात्मक कार्यों को सभालते रहे। इस दौरान आप दो–तीन बार राजस्थान प्रदेश कॉंग्रेस कमेटी के अध्यक्ष, अ० भा० कॉं० कमेटी तथा उसकी कार्य समिति के सदस्य बने। इसके साथ साथ सन् 1954 से 60 तक आप राज्य सभा के भी सदस्य रहे।

कॉंग्रेस का परित्याग

लगभग इन्ही दिनो मे राजस्थान तथा भरतपुर मे भी कांग्रेस मे दलबन्दी ने जोर पकडा। पदो के लिए छीना-झपटी का दौर चालू हुआ तथा एक दूसरे को गिराने की प्रवृत्ति प्रारम्भ हुई और जब कॉंग्रेस उच्च सत्ता ने न्यायोचित निर्णय न करके पक्षपातपूर्ण रवैये का परिचय दिया, तो सन् 1961 के अन्त मे आप तथा आपने लगभग सैकडो छोटे-बडे कार्यकर्त्ताओ के साथ कॉंग्रेस से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। उस हैसियत से आपने सन् 62 मे लोकसभा का चुनाव भी सयुक्त मोर्चा बनाकर लडा, परन्तु उसमे आप असफल हो गये।

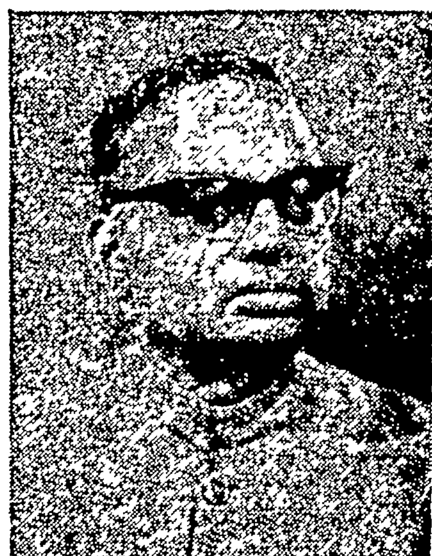
ससोपा के अध्यक्ष तथा राजस्थान विधानसभा के सदस्य

कालान्तर मे आप सयुक्त समाजवादी पार्टी मे सम्मिलित होकर लगभग 5 वर्ष तक उसकी राजस्थान प्रादेशिक शाखा के अध्यक्ष भी रहे। इस दौरान मे 1967 के आम चुनाव मे स० सो० पा० के टिकिट पर डीग निर्वाचन क्षेत्र से राजस्थान विधानसभा के सदस्य भी चुने गए। 5 वर्ष पूर्व तक इस पद पर कार्य करने के अनन्तर आप गत सन् 72 के चुनाव मे खडे नही हुए।

राजस्थान प्रदेश कॉंग्रेस (संगठन) के अध्यक्ष

गत सन् 69 मे जिस समय कॉंग्रेस का विभाजन होकर पुरानी अथवा सगठन कॉंग्रेस अस्तित्व मे आई तो आप राजस्थान मे उसके अध्यक्ष बने और अभी तक उसी पद पर आसीन हैं।

श्री भोलानाथ मास्टर,
अलवर.



जन्म : सन् 1912

वर्त्तमान पता . महावीर मार्ग, अलवर,

जन्म, शिक्षा और राजकीय सेवा में राजनैतिक कार्य

श्री भोलानाथ मास्टर का जन्म अलवर मे सन् 1912 मे हुआ। बी० ए० तक की शिक्षा प्राप्त करके वे अलवर मे अध्यापन का कार्य करने लग गए। राजकीय विद्यालय मे शिक्षक का कार्य करते हुए भी सन् 1936 से उन्होंने राजनैतिक गतिविधियो मे भाग लेना शुरू कर दिया था। उनका सम्बन्ध उस समय भी सर्वश्री कुंजविहारी मोदी, लक्ष्मण-स्वरूप त्रिपाठी, नत्थूराम मोदी और इन्द्रसिंह आजाद जैसे प्रमुख राष्ट्रीय कार्यकर्त्ताओ और आन्दोलनकारियो से हो गया था। वे गुप्तरूप से पूरे तीन वर्ष इन सभी साथियो के साथ हर तरह का सहयोग करते रहे लेकिन अत मे 1938 मे उन्हे अपनी राजकीय सेवा से अवकाश लेना पडा। वीकानेर राज्य के आई० जी० पी० ने अपनी रिपोर्ट मे एक जगह लिखा था कि भोलानाथ मास्टर को उनकी राजद्रोहात्मक प्रवृत्तियो के कारण नौकरी से निकाला गया।

अलवर राज्य प्रजामण्डल के लिए अनिवार्य व्यक्ति

सन् 1939 से भोलानाथ मास्टर प्रत्यक्ष रूप से अलवर की राजनीति मे सक्रिय हो गए और जिस निष्ठा, लगन और तत्परता से उन्होने राज्य मे कांग्रेस और प्रजामडल का कार्य किया, उससे उनकी राजनैतिक स्थिति दृढ़ से दृढतर होती गई और उन्होने अपने आपको अलवर राज्य प्रजामडल के लिए आवश्यक वना दिया।

अलवर में गिरफ्तारियो का पहला दौर

यो तो अलवर के राजनैतिक क्षितिज पर मास्टर भोलानाथ के उदय होने के पहले 1937 और 1938 मे अलवर मे दो वार गिरफ्तारियाँ हो चुकी थी। पहली वार

कुछ नौजवानो ने पुरजन विहार मे 1937 मे तिरगा फहरा दिया था, जिस पर गिरफ्तारियाँ हुईं। उनमे स्व० प० हरिनारायण शर्मा, स्व० कुजबिहारी मोदी, स्वर्गीय प० शालिगराम, स्व० श्री अब्दुल गफूर जमाली, स्व० डाक्टर मुहम्मदअली और स्व० श्री लच्छीराम सौदागर आदि प्रमुख थे।

फीस विरोधी आन्दोलन मे दूसरी बार गिरफ्तारियाँ

1938 मे अलवर राज्य मे प्रजामडल की स्थापना हुई, पर्चे बाँटे गए और विधिवत् फीस विरोधी आन्दोलन शुरू हुआ जिसमे स्व० प० हरिनारायण शर्मा, श्री लक्ष्मण-स्वरूप त्रिपाठी, स्व० श्री इन्द्रसिंह आजाद, श्री नत्थूराम मोदी और श्री राधाचरण गिरफ्तार किए गए तथा उन्हे लम्बी-लम्बी सजाए हुईं।

कॉग्रेस कार्यालय पर कब्जा, झडाभिवादन और गिरफ्तारियाँ

इसके बाद अलवर प्रजामडल मे श्री भोलानाथ मास्टर का युग प्रारम्भ हुआ। वे इसी वर्ष राजकीय सेवा से अवकाश लेकर राजनीति मे आए थे और उस समय अजीब घटना यह हुई कि कांग्रेस के दफ्तर पर खुफिया पुलिस ने कब्जा कर लिया और झण्डा उतार कर तथा बोर्ड आदि हटा कर दफ्तर के अन्दर बन्द कर दिए। मकान मालिक से किरायानामा भी सी० आई० डी० के लोगो ने अपने नाम लिखवा लिया। जब दफ्तर पर पुन कब्जा किया गया और झण्डा फहराया गया, तो उस समय के साथियो को एक साथ पकड कर कोतवाली मे बन्द कर दिया गया और दूसरे दिन हथकडियाँ डाल कर अदालत मे ले जाया गया। उन पर ताला तोडने आदि का मुकदमा लगाया गया। इस मुकदमे मे श्री भोलानाथ मास्टर और स्व० द्वारिकाप्रसाद गुप्ता को सजाए हुईं।

भारत रक्षा कानून मे गिरफ्तारी

इसके बाद तो अलवर मे जन आन्दोलनो का क्रम शुरू हो गया। दूसरे विश्वयुद्ध के समय राज्य की ओर से अलवर मे जबरदस्ती से वार-फंड अर्थात् युद्ध के लिए चदा वसूल किया जाता था। स्वर्गीय प० हरिनारायण शर्मा और श्री भोलानाथ मास्टर ने राज्य मे घूम-घूम कर इसका विरोध करना शुरू किया। परिणामस्वरूप दोनो नेताओ को भारत रक्षा कानून (डी० आई० आर०) के मातहत 13 नवम्बर '40 को गिरफ्तार कर लिया गया।

खादी प्रदर्शनी के माध्यम से

श्री भोलानाथ मास्टर और उनके साथियो ने खादी प्रदर्शनी के माध्यम से जनचेतना फैलाने का कार्य हाथ मे लिया। उन्होने सन् '40 मे पुरजन विहार मे एक विशाल प्रदर्शनी का आयोजन किया। महात्मा गाँधी के निजी सचिव श्री महादेव देसाई ने खादी प्रदर्शनी का उद्घाटन किया था। इस प्रदर्शनी मे बराबर एक सप्ताह तक सार्वजनिक सभाए हुई और कई बडे-बडे नेताओ के भाषण अलवर मे पहली बार हुए। इसी

प्रदर्शनी मे राजस्थान के क्रान्तिकारी कवि श्री सुमनेश जोशी की अध्यक्षता मे विराट कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया, जिसमे सागर निजामी जैसे राष्ट्रीय कवियो ने भाग लिया। भोलानाथ मास्टर और उनके साथियो का यह एक राजनैतिक प्रयोग था। प्रयोग पूर्णतया सफल रहा और जनता का आकर्षण खादी एव प्रजामडल की ओर होने लगा।

अलवर की खादी प्रदर्शनी

यह प्रदर्शनी ता० 1 अक्टूबर से 5 अक्टूबर 1941 तक हुई। अखिल भारतीय चर्खा सघ की राजस्थान शाखा के सहयोग से इसका आयोजन किया गया था। इसका उद्घाटन करने पू० महात्माजी ने अपने निजी सचिव श्री महादेव भाई को भेजा था, जिसमे समस्त राजस्थान मे इस प्रदर्शनी का महत्व वढ गया। प्रदर्शनी के अतिरिक्त आम सभाओ मे नेताओ के भाषण हुए और महिला सम्मेलन, कवि सम्मेलन के आयोजन भी किए गए। वनस्थली विद्यापीठ की छात्राए श्री हीरालाल शास्त्री के साथ प्रथम वार अलवर आईं। इन लडकियो द्वारा व्यायाम का सार्वजनिक प्रदर्शन अलवर के लिए अद्भुत चीज थी।

महादेव भाई का जुलूस और उद्घाटन भाषण

महादेव भाई के उद्घाटन भाषण ने तो अलवर मे क्रान्ति की लहर ही फूँक दी। उनका एक विशाल जुलूस एक देशी रथ मे निकाला गया जो यहाँ पर आमतौर से दशहरे के अवसर पर रामचन्द्रजी की सवारी निकालने के लिए काम मे आता था। महादेव भाई को इस रथ मे वैठाया गया तो उन्होंने वडा सकोच प्रकट किया जिसका जिक्र उन्होने आम सभा के अपने भाषण मे भी किया। महादेव भाई ने गुरुदेव श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की निम्न पक्तियाँ पढी, जिन्हे सुनकर जनता विह्वल हो गई।

रथ भावे आमी देव, पथ भावी आमी
मूर्त्ति भावे आमी देव, हाँसी अन्तरयामी।

उक्त पक्तियो को वोलते हुए महादेव भाई का भव्य व्यक्तित्व प्रकाशित हो रहा था। उन्होने कहा कि एक देवता के रथ मे मेरा जुलूस निकाला गया है, वह मेरे जैसे छोटे व्यक्ति का जुलूस नही है, वह उस महान् आत्मा की करामात है जो सेवाग्राम मे वैठे हैं और जिनका सन्देश लेकर मैं अलवर आया हूँ।

विशाल प्रदर्शनी मे राष्ट्रीय झडे का अभाव

परन्तु महादेवभाई ने इस आम सभा मे इस वात पर खेद प्रकट किया कि इस विशाल प्रदर्शन मे राष्ट्रीय झण्डा नही था। उन्होने जोश मे यहाँ तक कह दिया कि यदि मुझे जुलूस प्रारम्भ होने से पहले पता लग जाता कि इस प्रदर्शन मे राष्ट्रीय झडा नही होगा तो मैं जुलूस मे ही शामिल नही होता।

प्रजामंडल पर लगी हुई पाबंदिएं

यहाँ यह स्मरण रहे कि इस प्रदर्शनी का आयोजन चर्खा-संघ के सहयोग से अलवर राज्य प्रजा मण्डल ने अपनी रचनात्मक प्रवृत्तियो को आगे बढाने के लिए किया था। प्रजा मण्डल पर उसके रजिस्ट्री के समय ता० 1 अगस्त 1940 को ही यह पाबन्दी लगा दी गई थी कि वह अपना कोई झडा काम मे नही लेगा। उसके 13 महीने बाद ही इस प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। अलवर म्युनिसिपल बोर्ड ही राजस्थान मे पहला बोर्ड था जिसमे प्रजामण्डल का बहुमत था, इसलिए उसने 500/– रु० की सहायता इस प्रदर्शनी को दी जो तब तक ऐसी प्रदर्शनी को किसी राज्य मे नही मिली थी। महाराजा तेजसिंह ने भी अपनी शुभ कामनाए भेजी थी।

अलवर में महात्मा गाँधी की दिलचस्पी

श्री भोलानाथ मास्टर ही इस प्रदर्शनी के संयोजक थे। वे अलवर राज्य प्रजा मण्डल के मन्त्री भी थे। प्रजा मण्डल के मन्त्री की हैसियत से दो बार भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत जेल भी हो आए थे। प्रदर्शनी के सम्बन्ध मे मास्टर भोलानाथ ने राजस्थान और देश के अनेक नेताओ से पत्र-व्यवहार किया। राजेन्द्र बाबू, सेठ जमनालालजी बजाज ने स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण आने मे असमर्थता प्रकट की। श्री किशोरलाल भाई ने महात्माजी की ओर से सूचित किया कि महादेव भाई बीमारी से उठे है अत उन पर ज्यादा बोझ न डाला जाय और उनके स्वास्थ्य का ख्याल रखा जाए। दिल्ली के अनेक नेता इस अवसर पर अलवर आए और आम सभाओ मे उनके प्रभावशाली भाषण हुए। महात्माजी की अलवर पर यह बडी कृपा हुई कि उन्होने महादेव भाई को अलवर भेजा। उनकी दिलचस्पी इसलिए भी रही कि खादी का काम उन्हे बहुत प्रिय था। अलवर के लोग महात्माजी की दिलचस्पी की बात को आज भी स्मरण करते हैं।

गाँधीजी का आशीर्वाद

इस प्रकार अलवर के राजनैतिक जीवन को सक्रिय बनाने मे पू० महात्माजी का मास्टर भोलानाथ को निरन्तर सहयोग व आशीर्वाद प्राप्त होता रहा। सन् 1942 के अगस्त मे भारत छोडो आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। अलवर से भी इस क्रान्ति मे भाग लेने के लिए कार्यकर्त्ता तैयार हो गए। कई वकीलो ने अपनी वकालत छोड दी। हडताल और गिरफ्तारियो का तांता लग गया। फरवरी सन् 1943 मे पू० महात्माजी ने आगाखाँ महल मे अनशन किया तो अलवर मे भी उनकी सहानुभूमि मे श्री शोभाराम ने 13 दिन का उपवास किया था।

सेवाग्राम का समग्र ग्राम-सेवा-शिविर

सन् 1944 मे महात्माजी जेल से छूट कर आए। उन्होने कांग्रेस को सक्रिय रखने के लिए नया नारा दिया। सेवाग्राम मे एक समग्र-ग्राम-सेवा-शिविर एक मास के

लिए चलाया गया। इस शिविर मे सम्मिलित होने के लिए मास्टर भोलानाथ भी अलवर से सेवाग्राम गए और एक मास तक वहाँ रहे। एक मास तक वहा बराबर रहने के कारण नित्य पू० महात्माजी के भाषण सुनने का अवसर मिला। उस समय वह मौन-व्रत धारण किए हुए थे। केवल प्रार्थना सभा मे बोलते थे।

खेड़ा मंगलसिंह में जागीर विरोधी आन्दोलन

उसके बाद 1942 मे डाकखाना जलाने की घटना को लेकर विद्यार्थियो की गिरफ्तारिए हुई, तिजारा मे म्युनिसिपल टैक्सो का विरोध करने के सम्बन्ध मे गिरफ्तारिये हुई और फिर 1946 मे खेडा मगलसिंह नामक एक जागीरी गाँव मे एक सम्मेलन का आयोजन करते समय मास्टर भोलानाथ और अन्य सभी कार्यकर्त्ता वहाँ गिरफ्तार कर लिए गए। यह वह समय था जबकि देशी राज्यो की प्रजा ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन शुरू कर दिया था। खेडा मगलसिंह मे हुई गिरफ्तारियो के कारण अलवर मे कई दिन तक मुकम्मिल हडताल रही। इन गिरफ्तारियो का प्रबल विरोध किया गया। सरकार को झुकना पडा और 20-21 दिन के बाद सभी नेता छोड दिए गए।

गैर जिम्मेदार मंत्रियो! कुर्सी छोड़ो

मास्टर भोलानाथ ने अब अंतिम बार जिम्मेवार हुकुमत की स्थापना के लिए जन आन्दोलन सगठित करने की घोषणा की। अगस्त, 46, के तीसरे सप्ताह मे (12 अगस्त '46) अलवर मे सत्याग्रह आन्दोलन शुरू कर दिया गया। आन्दोलन तेजी से शुरू हुआ और एक सप्ताह मे सैकडो आदमी जेल मे चले गए। इस बार पूरे एक हफ्ते तक अलवर का बाजार बराबर बद रहा। जनता ने पूर्ण सहयोग दिया। अत मे पडित जवाहरलाल नेहरू के आदेशानुसार यह आन्दोलन 2 सितम्बर '46 को समाप्त कर दिया गया क्योकि इनके कुछ दिन बाद ही दिल्ली मे प० नेहरू प्रधानमत्री का कार्यभार सभालने वाले थे।

उभरता हुआ प्रांतीय नेतृत्व

मास्टर भोलानाथ यो तो अलवर के ही नेता माने जाते हैं परन्तु वे राजपूताने की प्रत्येक रियासत के जन आन्दोलन मे सहयोग और मार्गदर्शन देने के लिए दीवानो की तरह इधर से उधर दौडते रहे हैं, भले ही वह राज्य बीकानेर हो, बूँदी हो, जयपुर हो, जोधपुर हो अथवा उदयपुर हो। हर रियायत की पुलिस तूफान की तरह भागने वाले इस नौजवान से अत्यधिक आतकित रहती थी। श्री भोलानाथ मास्टर की पत्नी का देहान्त हो गया था। उनकी एक कन्या वनस्थली विद्यापीठ मे पढती थी। वे अपनी सम्पूर्ण शक्ति से रियासती जनता की आकाक्षाओ को पूरा करने मे राजपूताने के हर कोने मे पहुच जाते हो। ऐसे कम ही नेता थे जो अपने राज्यो से बाहर जाकर दूसरी रियासतो मे भी काम करते थे। परन्तु इस दिशा मे मास्टर भोलानाथ का कोई मुकाबिला नही था। कई रियासतो मे उनका

प्रवेश निषिध था । कई स्थानो में उन्हें जाँच या पूछताछ तक नही करने दी जाती । कई स्थानो पर उन्हे स्टेशन से ही पुलिस विदा कर देती । परन्तु इनका यह क्रम निरन्तर चलता रहा । इस तरह से मास्टर भोलानाथ मे प्रातीय नेतृत्व उभरता गया ।

रियासतों का प्रांतीय संगठन बनाने की तडप

श्री भोलानाथ के दिमाग मे एक ही बात थी कि राजपूताने की रियासती जनता की समस्याए समान हैं, उद्देश्य और आकाक्षाए समान हैं, अत सभी रियासतो का एक सगठन बनाया जाना चाहिए । वे इस सम्बन्ध मे सभी रियासतो के नेताओ मे निरन्तर पत्र व्यवहार भी करते रहते ।

राजपूताना कार्यकर्त्ता सम्मेलन और रीजनल कौंसिल

मास्टर भोलानाथ ने अलवर मे कार्यकर्त्ताओ का एक सम्मेलन बुलाया था और उसमें यह निश्चय किया गया था कि अलवर में एक दूसरा सम्मेलन राजपूताना और मध्य भारत की रियासतो के कार्यकर्त्ताओ को बुलाया जाय । अलवर के गिरधर आश्रम में इस निश्चय के अनुसार एक बडा सम्मेलन बुलाया गया जिसमें राजपूताना की सभी प्रमुख रियासतो के प्रमुख नेताओ के अतिरिक्त मध्यभारत के नेता भी शामिल हुए और निश्चय किया गया कि सन् '42 के आन्दोलन को बल देने के लिए किस प्रकार जेल से छूटे हुए नेता काम करें । इस पर निश्चय करने के लिए एक दूसरा सम्मेलन उदयपुर मे बुलाया जाय । उदयपुर मे एक बडा सम्मेलन हुआ । इसमें भी राजपूताना, मध्यभारत की रियासतो के कार्यकर्त्ता इकट्ठे हुए । इस प्रकार देशी राज्य, राजपूताना और मध्यभारत के लोग, रियासती प्रजा के सगठन के नाम से एक प्लेट फार्म पर, एक साथ आए । परन्तु उदयपुर में यह महसूस किया गया कि राजपूताना प्रान्तो की रियासतो का एक सगठन बनाया जाए, जिसका नाम राजपूताना कार्यकर्त्ता सम्मेलन रखा गया, जिसके बाकायदा सभापति, मन्त्री तथा कार्यकारिणी बनी । यह कार्यकर्त्ता सम्मेलन उदयपुर में होने वाले देशी राज्य लोक परिषद् के अधिवेशन के समय तक काम करता रहा जो, प० जवाहरलालजी नेहरू के नेतृत्व मे हुआ । अधिवेशन के समय इस सम्मेलन को देशी राज्य लोक परिषद् के विधान के अनुसार रीजनल कौंसिल का रूप दे दिया गया ।

अलवर का शासन भारत ने संभाला

30 जनवरी 1948 को पू० महात्मा गाँधी की हत्या हुई । अलवर के शासको पर भी यह शुबहा किया गया कि वे भी हत्यारे को शरण देने वाले थे । उस समय के चीफ मिनिस्टर डॉ० खरे तथा उनके मन्त्रिमण्डल को हटाया गया और सरदार पटेल के आदेशानुसार अलवर के महाराजा श्री तेजसिंह को कुछ दिनो के लिए दिल्ली में रोके रखा गया । अलवर राज्य का शासन-भार गृहमन्त्री श्री सरदार पटेल के आदेशानुसार एक एडमिनिस्ट्रेटर ने सभाल लिया । प्रथम बार अलवर मे एडमिनिस्ट्रेटर के साथ टैंक आए

ग्रौर हवाई जहाज से वे ग्रलवर पहुँचे । रात को करफ्यू लगाया गया ग्रौर रेडियो से एलान कराया गया कि ग्रलवर का शासन-भार भारत सरकार के रियासती विभाग ने सभाल लिया है । यह एक ऐतिहासिक घटना थी । इसका ग्रसर भरतपुर पर भी पडा ग्रौर कुछ ही दिन वाद भरतपुर का भी शासन ग्रलवर की ही भाँति एक एडमिनिस्ट्रेटर ने सभाल लिया । ये सव वातें सन् '48 की फरवरी में हुई । स्वय सरदार पटेल ग्रलवर पधारे ग्रौर उन्होंने यहाँ तक ग्राम सभा मे भाषरण दिया, जिसमें उनकी ये पंक्तियाँ "एक राजपूत की तलवार ग्रव मगी के झाड़ू से ग्रधिक कोई महत्व नही रखती" लोगो में एक विजली का सा काम कर गई ।

मत्स्य संघ ग्रौर राजस्थान संघ का निर्माण

16 मार्च, 1948 को एक नए राज्य का निर्माण किया गया, जिसका नाम मत्स्य राज्य रखा गया । इसमे पूर्वी राजपूताने की चार रियासतें ग्रलवर, भरतपुर, करौली ग्रौर धौलपुर शामिल कर दी गई । एक लोकप्रिय मन्त्रिमडल वनाया गया । राजपूताना मे देशी राज्यो की यूनियन का यह पहला लोकप्रिय मन्त्रिमडल था । इससे पहले उड़ीसा ग्रौर वुन्देलखण्ड मे भी कुछ रियासतो के यूनियन वनाए गए थे । राजपूताना देशी राज्यो का गढ समझा जाता था, परन्तु इस मत्स्य राज्य के निर्माण ने एक नई दिशा दी । इसके कुछ ही दिनो वाद कोटा मे एक यूनियन वनाई गई । जिसमे उदयपुर को छोड़कर दक्षिण राजस्थान की सभी रियासतें शामिल हुईं ग्रौर कोटा को राजधानी वनाया गया । इस यूनियन ने ग्रपना काम शुरू भी नही किया था कि महाराणा उदयपुर ने यूनियन मे शामिल होने की घोषणा कर दी । परिणामस्वरूप राजस्थान सघ वना, जिसमे उदयपुर, कोटा, झालावाड, टौंक, वून्दी, डूँगरपुर, वाँसवाडा, प्रतापगढ के राज्य शामिल हुए, लेकिन जयपुर, जोधपुर, वीकानेर जैसे राज्य ग्रलग रहे ।

जयपुर मे कांग्रेस ग्रधिवेशन

सन् 1948 के ग्राखिर मे ग्रखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का वार्षिक ग्रधिवेशन वहुत वडे पैमाने पर जयपुर मे हुग्रा । ग्रपनी तरह का यह पहला ग्रधिवेशन था, जो राजपूताना कांग्रेस ने ग्रामन्त्रित किया था ।

देशीराज्य प्रजा परिषद् से राजपूताना कांग्रेस कमेटी

भारत के विभाजन के वाद ब्रिटिश राज्य ग्रौर देशी राज्यो का भेद खत्म हो गया था । 15 ग्रगस्त 1947 को देश स्वतत्र घोषित कर दिया गया । इसलिए देशी राज्य लोक परिषद् का विलीनीकरण ग्रखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी मे हो गया ग्रौर राजपूताना रीजनल कमेटी, राजपूताना कांग्रेस कमेटी के नाम मे वदल दी गई ।

राजपूताने को एक राज्य बनाने का प्रस्ताव

ग्रखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का जयपुर ग्रधिवेशन सवसे वडा ग्रधिवेशन था, जिसमे सवसे ग्रधिक उपस्थिति हुई । क्योकि यह ग्राजादी के वाद राजपूताने मे पहला ग्रधिवेशन था इसलिए राजपूताना की रियासतो ने, जिनमे दोनो सघ-राजस्थान व मत्स्य भी शामिल थे, इस ग्रधिवेशन को सफल वनाने मे पूरा-पूरा योग दिया । इस ग्रवसर पर

राजस्थान के नेता सरदार पटेल से मिले और राजपूताना को एक राज्य बनाने का निवेदन किया, जिसके परिणामस्वरूप 30 मार्च, 1949, को वर्तमान राजस्थान बना। अजमेर तथा सिरोही का कुछ भाग फिर भी इसमे अलग रह ही गया।

नया राज्य, नए जिले और कांग्रेस का प्रांतीय स्वरूप

राजस्थान राज्य के साथ, राजस्थान कांग्रेस कमेटी भी अलग काम करने लगी। नए जिले बने और इन्ही के अनुसार प्रातीय कांग्रेस कमेटी के विधान मे सशोधन हुआ और नई जिला कांग्रेस कमेटियाँ बनाई गई। पुरानी रियासतो का स्वरूप बदल गया और कई एक रियासतो के भाग एक दूसरे से मिलकर अलग जिलो मे बट गए। वही स्वरूप प्रांतीय कांग्रेस कमेटी का अभी तक चला आ रहा है। इसमे इतना सा परिवर्तन हुआ है कि सन् '56 मे इसमे अजमेर व सिरोही का भाग भी सम्मिलित हो गया।

शासन और संसदीय संस्थाओ में

श्री भोलानाथ मास्टर मत्स्य सघ मे सिंचाई, निर्माण और पुनर्वास मन्त्री की तरह कार्य कर चुके थे। राजस्थान बन जाने के बाद व्यास मत्रिमडल मे वे पुन मन्त्री बनाए गए और उस समय भी उनके पास निर्माण, विद्युत, यातायात, पुनर्वास और शिक्षा जैसे महत्त्वपूर्ण विभाग थे।

वे 10 वर्ष तक 1952 से 62 तक राजस्थान विधानसभा के सदस्य रहे और पूरे 5 वर्ष तक लोकसभा के भी सदस्य रहे।

प्रजामंडल और कांग्रेस के दायित्वपूर्ण पदो पर

श्री भोलानाथ मास्टर राजस्थान मे बनी हुई सर्वप्रथम प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामत्री 1952 मे बनाए गए थे। वे अलवर मे प्रजामडल के जन्मदाताओ मे से हैं। अलवर राज्य प्रजामडल के वे कई वर्ष तक अध्यक्ष और महामत्री भी रहे। वे अलवर मे आयोजित खादी प्रदर्शनी के सयोजक थे और जागीरी माफी प्रजा कान्फ्रेंस के जनरल सेक्रेटरी थे।

मास्टर भोलानाथ तीन बार प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामत्री रह चुके हैं। वे 1952–57 मे प्रदेश मे होने वाले महा निर्वाचन मे कांग्रेस चुनाव अभियान के इन्चार्ज थे।

सार्वजनिक क्षेत्र मे

वे भारत सेवक समाज के भी अध्यक्ष थे और अलवर के सेंट्रल को-ऑपरेटिव बैंक के अध्यक्ष भी रह चुके है। सामाजिक क्षेत्र मे तथा सहकारिता के क्षेत्र मे उनकी सेवाओ की एक लबी फहरिश्त बन सकती है।

अलवर मे स्थायी निवास

इन दिनो मास्टर भोलानाथ अलवर मे ही रहते है। उनकी आयु इस समय 60 वर्ष की हो गई है। फिर भी वे कांग्रेस की प्रवृत्तियो मे निरन्तर भाग ले रहे हैं।

श्री रघुवरदयाल गोयल,
बीकानेर.



जन्म 21 मार्च, 1998

वर्त्तमान पता . चौतीणा कुआ, बीकानेर.

जन्म और परिवार

श्री रघुवरदयाल गोयल का जन्म बीकानेर मे विक्रम सवत् 1964 को चैत्र कृष्णा 3, तद्नुसार दिनाक 21 मार्च 1908, को एक सम्पन्न अग्रवाल परिवार मे हुआ। आपके पिता श्री झमनलालजी गोयल भी बीकानेर के माने हुए प्रथम श्रेणी के वकील थे। उन्हे विशेष राज्य सम्मान प्राप्त था। वे तत्कालीन बीकानेर राज्य की एसेम्बली के सदस्य भी थे। श्री रघुवरदयाल गोयल भी बीकानेर के प्रथम श्रेणी के एडवोकेट है। आपका वर्तमान पता चौतीणा कुआ, बीकानेर, है।

शिक्षा और विद्यार्थी जीवन

श्री रघुवरदयाल गोयल ने राजकीय डूगर कॉलेज मे शिक्षा ग्रहण की। विद्यार्थी जीवन मे ही आपके विचार राष्ट्रीयता के रग मे पूरी तरह रग गए थे। बीकानेर मे प्रिन्स ऑफ वैल्स आये तब उक्त कालेज के आगे राज-पथ पर छात्रो की एक कतार खडी करके शो प्रदर्शित किया गया। उस कतार मे श्री रघुवरदयाल को खडा नही किया गया चूकि आप राष्ट्रीय विचार के थे और खादी की सफेद टोपी लगाया करते थे।

बीकानेर का प्रतिगामी शासन !

राजपूताने मे जनजागरण के इतिहास के साथ बीकानेर सरकार के प्रतिगामी प्रयत्न सदा से ही होड लेते रहे हैं। जनजागरण के समस्त रास्तो को अवरुद्ध कर, जनता को जमाने की हवा न लगने देने मे ही बीकानेर के महाराजा गगासिह अपनी समस्त शक्ति खर्च करते रहे थे। स्व० महाराजा श्री गगासिह ने यह नीति निर्धारित की थी और अपने कार्यकाल मे उन्होंने इसे सफलतापूर्वक कार्य रूप भी दिया। जनसाधारण को उन्होंने कभी

यह सोचने की सुविधा नही लेने दी कि खाने, पीने व पहिनने के अलावा भी मनुष्य की कुछ जरूरतें होती हैं। जन-जागरण और जन-सगठन के वे पक्के विरोधी थे। अपनी प्रजा पर राष्ट्रीय जीवन का प्रभाव न पडने देने के लिये और प्रजा मे भूले भटके किसी के सिर उठाने पर उसे दवाने के लिए हर सभव तरीको से उन्होने काम लिया। उनके समय मे बीकानेर एक वन्द बक्स था। नागरिको को लिखने और बोलने की स्वतत्रता प्राप्त नही थी। उनके निरकुश राज्य मे गाँधी टोपी पहिनना राज द्रोह माना जाता था। महात्मा गाँधी की जय बोलना दण्डनीय था।

बीकानेर षड़यन्त्र केस मे अभियुक्तों की पैरवी का साहसिक कार्य

सन् 1932 ई० मे रियासत के चूरू वाले महन्त श्री गोपालदास, मास्टर श्री सोहनलाल, भादरा के सेठ श्री खूबराम सर्राफ, श्री सत्यनारायण सर्राफ वकील, श्री वद्रीप्रसाद सरावगी राजगढिया, श्री प्यारेलाल तथा चूरू के श्री चदनमल वहड, जैसे सुयोग्य व्यक्तियो को पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया। इनके विरुद्ध राजद्रोह का आरोप लगा कर दो वर्ष तक उन्हे हवालात मे रखा गया। जेल की चहारदीवारी के भीतर न्यायालय लगाया गया। न्याय का पूरा नाटक खेला गया। उसमे बीकानेर के वकील समुदाय मे से किसी भी वकील ने राज्य के विरुद्ध मुकद्दमा लडने का साहस नही दिखलाया। अभियुक्तो को अपने बचाव के लिए बाहर से वकील लाने की इजाजत नही दी गई। तब श्री रघुवरदयाल गोयल व श्री मुक्ताप्रसाद अभियुक्तो की ओर से पैरवी करने को खडे हुए। उसी दिन से उक्त दोनो वकीलो के प्रति नौकरशाही का रुख कडा हो गया। परन्तु यह दोनो घबराये नही। निडर, निर्भय होकर मुकद्दमो की पैरवी की। बीकानेर षडयत्र केस मे राजद्रोह के अभियुक्तो की पैरवी करना बीकानेर मे अत्यत साहसिक कार्य था।

प्रजा-परिषद की स्थापना और दमन का श्री गणेश

सन् 1942 मे वनस्थली (जयपुर) से एक महीने का राजनैतिक प्रशिक्षण लेकर आने-वाले श्री दाऊदयाल आचार्य और श्री गगादास कौशिक बीकानेर मे जुलाई के प्रथम सप्ताह मे आये। तद्नन्तर ता० 22 जुलाई '42 ई० के दिन श्री रघुवरदयाल गोयल की अध्यक्षता मे श्री रावतमल पारीक के मकान पर कुछ राजनैतिक कार्यकर्ताओ की एक मीटिंग हुई, जिसमे सर्व सम्मति से बीकानेर राज्य प्रजापरिषद नामक एक राजनैतिक सस्था स्थापित की गई। इसकी विधिवत् सूचना राज्य के प्राइम मिनिस्टर को लिखित रूप मे भेज दी गई। नौकरशाही के कान इससे खडे हो गये। और प्रजापरिषद की भ्रूण-हत्या करने पर महाराजा उतर पडे। वे ऐसी राजनैतिक सस्था को पनपने नही देना चाहते थे। प्रजा परिषद का उद्देश्य था कि महाराजा की छत्र छाया मे उत्तरदायी शासन प्राप्त करना, जिसे भी महाराजा पसन्द नही करते थे। उन्होने बीकानेर मे दमन का श्री गणेश कर दिया।

बीकानेर से निर्वासन

उत्तरदायी शासन की माँग के साथ-साथ प्रजापरिषद की स्थापना के तुरन्त वाद

बीकानेर के निरकुश शासन मे दमन-चक्र जोर पकडने लगा । 29 जुलाई सन् 1942 ई० को बीकानेर के काले कानून (पब्लिक सेफ्टी एक्ट 1932) के अतर्गत रघुवरदयाल गोयल को गिरफ्तार करके रियासत से निर्वासित कर दिया गया । रेलवे-स्टेशन पर सैकडो व्यक्ति हाथो मे फूल मालाये लिये हुए आपको विदाई देने को पहुँचे । भीड से भयभीत होकर पुलिस डी० आई० जी० श्री गोवर्धन पाण्डे गोयलजी को बीकानेर से कार द्वारा 10 मील दूर रेलवे स्टेशन पलाना पर ले गए और वहाँ से उन्हे रेल मे बिठाया । दो महीने तक उन्होने जयपुर मे रह कर निर्वासन आज्ञा के विषय मे अ० भा० देशी राज्य लोकपरिषद के प्रमुख नेताओ के साथ सम्पर्क स्थापित किया । जयपुर से बम्बई जाकर दैनिक "जन्म भूमि" के सम्पादक श्री अमृतलाल सेठ के साथ भविष्य के कार्यक्रम पर बातचीत की और राज्य की निरकुशता की सही स्थिति समाचार पत्रो के द्वारा देश के सामने रखी ।

निषेध आज्ञा भंग और गिरफ्तारी

श्री रघुवरदयाल गोयल ने अपने पर लगाई हुई रियासत की निषेध आज्ञा को भग करके बीकानेर मे प्रवेश करने की सूचना प्रधान मत्री को दी और तारीख 29 सितम्बर, 1942, को प्रात काल वे जयपुर से बीकानेर की ओर चले आए । पूर्व सूचना के अनुसार डी० आई० जी० पुलिस प० गोवर्धन ने पाण्डे नोखा रेलवे स्टेशन और चीलो रेलवे स्टेशन के बीच जगल मे ट्रेन को रुकवा कर श्री गोयल को गिरफ्तार कर लिया । एक मोटरकार मे उन्हे बीकानेर लाया गया । उन्हे रात के 12 बजे सदर जेल मे प्रवेश कराया गया । 41 मील के रास्ते को पार करने मे 18 घटे लगा दिये गये ।

न्याय का नाटक, जेल की सजा और रिहाई

निषेध आज्ञा भग करने का आरोप लगा कर सरकार ने श्री गोयल पर मुकद्दमा चलाया । जेल की चहारदीवारी के अन्दर न्याय का नाटक खेला गया । डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट द्वारा उन्हे पब्लिक सेफ्टी एक्ट (बीकानेर का काला कानून) सन् 1932 ई० के तहत एक वर्ष के कठोर कारावास और एक हजार रुपये के जुर्माने की सजा दी गई । तारीख 31 जनवरी 1943 ई० को महाराजा श्री गगासिह का देहान्त हो जाने पर उनके पुत्र श्री शार्दूलसिह राज्य गद्दी पर आसीन हुए । इस उपलक्ष्य मे ता० 16–2–43 ई० को आपको तथा आपके साथी श्री गगादास कौशिक और श्री दाऊदयाल आचार्य को एक साथ जेल से रिहा कर दिया गया ।

लूणकरणसर मे नजरबंदी

सन् '43 ई० से लगा कर सन् '44 ई० तक प्रजापरिषद को मान्यता देने के सम्बन्ध मे राज्य से समझौता वार्त्ता चलती रही । ता० 26 अगस्त सन् 1944 ई० को राज-महल मे बीकानेर के नये महाराजा श्री शार्दूलसिह द्वारा राजनैतिक गतिरोध को सुधारने के लिए परस्पर वार्त्तालाप करने के लिये श्री गोयल को आमन्त्रित किया गया । नीति और सिद्धान्तो के मामले मे श्री गोयल और महाराजा एकमत नही हो सके । वार्त्ता

असफल हो गई । आप वापस वहाँ से घर को लौट पडे । आप लालगढ से अपने निवास स्थान भी नही पहुँचे थे कि मार्ग मे ही डी० आई० जी० पुलिस प० गोवर्धन पाण्डे ने आपको होम मिनिस्टर का एक आर्डर दिया और पब्लिक सेफ्टी एक्ट (वीकानेर का काला कानून) सन् 1932 ई० के अन्तर्गत आपको पुन रास्ते मे ही गिरफ्तार कर लिया और लाईन पुलिस पहुँचा दिया जहाँ से रात के समय एक वन्द मोटर मे आपको तथा आपके साथी सर्वश्री दाऊदयाल आचार्य, और गगादास कौशिक को विठाकर गुप्त रूप से वीकानेर से 10 मील दूर रेलवे स्टेशन कानासर ले गये । वहाँ से रात को 12 वजे रेल मे बिठाकर श्री गोयल को लूणकरणसर गाँव मे उतार दिया और आपके दोनो साथियो को अनूपगढ रखा गया । श्री गोयल पर वीकानेर पब्लिक सेफ्टी एक्ट के तहत लूणकरणसर गाँव को छोड कर कही भी अन्यत्र जाने की पावन्दी लगा दी गई । वहाँ नजरवदी के काल मे अपने भोजन की व्यवस्था भी श्री गोयल को अपने पैसो मे ही करनी पडती थी ।

रियासत से पुनः निर्वासन

श्री गोयल ने इस अन्याय के विरोध मे बीकानेर के उच्च न्यायालय मे एक आवेदन-पत्र प्रस्तुत किया । उच्च न्यायालय मे पेशी की जो तारीख पडी थी उसी दिन पेशी की तारीख से पूर्व ही 11–6–45 ई० को आपको पुन रियासत से निर्वासित कर दिया गया । लूणकरणसर से भटिण्डा होकर आप सीधे देहली गये । वहाँ झुझुनू, चौमू, दौसा, जयपुर तथा नागौर मे गाडिया लुहारो की भाँति फिरते रहे ।

उदयपुर मे पडित नेहरू को बीकानेर दमन की जानकारी

सन् 1945–46 ई० मे उदयपुर मे अ० भा० देशी राज्य लोकपरिषद का वार्षिक अधिवेशन प० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता मे हुआ । उस अवसर पर आप वहाँ गये, वीकानेर से श्री गगादास कौशिक, वैद्य मघाराम आदि कार्यकर्त्ता भी वहाँ सम्मिलित हुए । वीकानेर की परिस्थिति से प० नेहरू को अवगत कराया गया ।

जयपुर रियासत से भी निर्वासन

वीकानेर की सरकार अपने यहाँ से तो श्री गोयल को निर्वासित कर ही चुकी थी, परन्तु उसने जयपुर रियासत से भी उन्हे निर्वासित करने का आदेश दिला दिया । जब आप उदयपुर से सीधे जयपुर आकर कुछ दिन ठहरे ही होगे कि ता० 7–1–46 को प्रात काल 6 वजे पुलिस इन्सपेक्टर श्री वनर्जी वारट लेकर आपके निवास-स्थान पर पहुँचे और वारट दिखला कर आपको सूचना दी कि वे 2 घटे के भीतर-भीतर जयपुर छोड दें । वे रेल द्वारा अलवर चले गये । अलवर मे एक मकान किराये लेकर श्री गोयल ने वीकानेर राज्य प्रजापरिषद का कार्यालय स्थापित किया और वही से सारा कामकाज करने लगे ।

अलवर मे प्रजापरिषद कार्यालय

अलवर मे बीकानेर राज्य प्रजापरिषद का कार्यालय स्थापित करके प्रचार,

सगठन और सदस्य बनाने का सारा कार्य वही बैठे-बैठे वे खूब तेजी के साथ करने लगे। श्री गोयल के साथ अलवर मे श्री गगादास कौशिक के अलावा विद्यार्थी दामोदर प्रसाद सिंहल, श्री चपालाल राका देशनोक, श्री प्रभुदयाल माथुर, श्री राव माधोसिंह, श्री भगवत्-शरण, मालचन्द हिसारिया आदि सहयोग देते रहे। यहाँ पर आपके पास चौ० हसराज पटवारी, चौ० कु भाराम, स्वामी कर्मानन्द आदि आते थे।

कलकत्ते की यात्रा और बीकानेर समाचार का प्रकाशन

प्रचार कार्य करने मे काफी व्यय होता था। आर्थिक सकट का सामना सदैव करना पडता था। अर्थ-सग्रह के लिए श्री गोयल तथा श्री गगादास कौशिक द्वारा कलकत्ता मे प्रजा परिषद की शाखा भी स्थापित की गई। वहाँ से "आज का बीकानेर" नामक एक साप्ताहिक समाचार पत्र भी प्रजापरिषद के प्रचारार्थ निकाला गया। वहाँ से लौट कर आप अलवर आ गये।

पुनः निर्वासन आज्ञा तोड़ कर बीकानेर मे प्रवेश और गिरफ्तारी

श्री गोयल ने बीकानेर के प्राइम मिनिस्टर श्री के० एम० पन्नीकर को नियमानुसार एक माह पूर्व सूचना द्वारा निर्वासन आज्ञा तोड कर बीकानेर प्रवेश की सूचना दी। 25-6-46 को पजाब के ऐलनाबाद रेल्वे स्टेशन से आपको हजारो किसानो द्वारा फूल मालाए पहिना कर विदाई दी गई। ऐलनाबाद-पजाब से रवाना होकर अगला ही स्टेशन भूकरका बीकानेर रियासत का आता था। जैसे ही गाडी बीकानेर की सीमा मे पहुँची, कि बीकानेर के सब इन्सपेक्टर ने वारट दिखला कर श्री गोयल को गिरफ्तार कर लिया। उनके साथ दूधवाखारा आन्दोलन के किसान नेता श्री गणपतराम भी थे। उन्हे भी रियासत से निर्वासित कर दिया गया था। उन्होंने भी निषेध आज्ञा भग करके रियासत मे प्रवेश किया। यह गिरफ्तारियाँ पब्लिक सेफ्टी एक्ट 1932 के तहत की गई। उन दोनो को भूकरका से एक बन्द छोटी बस मे लेकर पुलिस ता० 25-6-46 से चलते-चलते 30-6-46 ई० की रात को 12 बजे बीकानेर पहुँची। उन्हे बीकानेर जेल मे बन्द कर दिया गया। इसके पूर्व चौ० कुम्भाराम को भी बीकानेर जेल मे बन्द कर दिया गया था।

बदलती परिस्थितियों मे रिहाई

देश की स्वाधीनता के बाद कॉंग्रेस तथा अ० भा० देशी राज्य लोकपरिषद के नेताओ की राजाओ के साथ रियासती प्रजा के हकूको के सम्बन्ध मे वार्त्ता चल रही थी। देश मे स्वाधीनता के सूर्य का उदय हो रहा था। इन तथ्यो को समझ कर बीकानेर के महाराजा ने ता० 28–7–46 की रात के 12 बजे श्री रघुवरदयाल गोयल को रिहा कर दिया। उनके साथ चौ० कु भाराम को भी रिहा कर दिया गया।

प्रजा परिषद कार्यालय की स्थापना

जेल से ता० 28-7-46 ई० को रिहा होने के उपरान्त बीकानेर रेलवे स्टेशन के

सामने प० केदारनाथ भोजक म्यू० कमिश्नर के मकान मे प्रजापरिषद का कार्यालय पुन. प्रारम्भ कर दिया गया। हजारो की सख्या मे प्रजापरिषद के सदस्य वनने लगे। पुन सारा कार्य सोत्साह चलने लगा।

अन्तरिम मन्त्रिमण्डल और प्रजापरिषद

इसी समय बीकानेर के महाराजा ने बीकानेर मे एक मिला-जुला अतरिम लोकप्रिय मत्रिमडल वनाने की घोषणा की। उन्होने इसके लिए प्रजापरिषद को अपने प्रतिनिधि भेजने के लिए आमत्रित नही किया।

परन्तु प्रजापरिषद के कुछ व्यक्तियो को उन्होने व्यक्तिगत रूप से मत्रिमडल मे सम्मिलित होने के लिये आमत्रित कर लिया जिन्हे न तो प्रजापरिषद का ही विश्वास प्राप्त था और न प्रजापरिषद की ओर से वे मत्रिमडल मे भेजे गए थे। न ही उन्होने मत्रिमडल मे जाने के पहले प्रजापरिषद से विधिवत अनुमति ही प्राप्त की थी। इस पर बीकानेर राज्य प्रजापरिषद तथा राजस्थान प्रान्तीय रीजनल कौंसिल के नेताओ ने अलग-अलग इसका विरोध किया। प्रस्ताव पास करके अन्तरिम मत्रिमडल से त्याग पत्र देकर प्रजापरिषद के सदस्यो को वापिस आ जाने का आदेश दिया गया। इस मत्रिमडल मे चौ० कुम्भाराम, चौधरी हरदत्तसिह, सरदार मस्तानासिह, श्री गौरीशकर आचार्य (भादरा), श्री अहमद वक्स सिंधी सम्मिलित हुए थे, जिन्हे अन्त मे मजबूर होकर अन्तरिम मन्त्रिमडल से त्याग पत्र देकर आना पडा।

15 अगस्त को स्वाधीन भारत का राष्ट्रीय ध्वज फहराया

15 अगस्त सन् 1947, भारतवर्ष के लिये महान खुशी का दिन था। उस दिन भारत अग्रेजो की गुलामी से छुटकारा पाकर स्वाधीन हुआ। भारत के कोने-कोने मे तिरगा राष्ट्रीय झण्डा फहराने लगा। बीकानेर मे भी प्रजापरिषद के तत्वावधान मे ईदगावारी के विशाल मैदान मे एक वृहत् समारोह का आयोजन किया गया। विजली की रोशनी से मैदान जगमगा उठा। तिरगे झण्डो से पडाल सजाया गया, हजारो नर-नारियो की एकत्रित भीड के बीच रात के 12 वजे राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। भारत आजाद हो गया। भारत माता की जय घोष के नारो से आकाश गूंज उठा। इतनी अधिक भीड अब तक किसी भी समारोह, सभा, धार्मिक पर्व आदि मे कही पर भी नही देखी गई।

बीकानेर ध्वज और राष्ट्रीय ध्वज

उक्त अवसर पर एक वहुत लवे और ऊंचे लट्ठे पर तिरगा झडा लगाने का निश्चय किया गया था। महाराजा ने कहलाया कि, तिरगा झडा इतना ऊंचा न लगाया जाए। महाराजा का दूसरा प्रस्ताव था कि लवे ऊंचे लट्ठे पर बीकानेर का झडा लगा कर उसके नीचे तिरगा झडा लगा दिया जाए। इस पर श्री गोयल जी ने स्पष्ट कह दिया कि यहां पर तो सिर्फ भारत का राष्ट्रीय तिरगा झण्डा ही इस स्वतत्रता दिवस के पुनीत

अवसर पर फहराया जायेगा । आप इसमे कोई हस्तक्षेप न करे । आपको यदि कुछ भी करना हो तो मेरे खिलाफ कानूनी कार्यवाही कर सकते हैं ।

वृहत् राजस्थान का प्रथम मन्त्रिमंडल

लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल ने अपने राजनैतिक बुद्धि-कौशल से देश की सभी रियासतो के राजाओ को भारत-सघ मे विलय के लिए प्रेरित किया । उन्होने राजपूताने की रियासतो के अलग-अलग सघ बनाए और सन् 1949 की 7 अप्रेल को सभी सघो के विलय मे वृहत् राजस्थान राज्य की स्थापना की गई और श्री हीरालाल शास्त्री वृहत् राजस्थान के पहले मुख्यमत्री बनाए गए । राजस्थान के उस प्रथम मन्त्रिमडल मे श्री-रघुवरदयाल गोयल शामिल किए गए । उन्होने फूड, एग्रीकल्चर, सप्लाई, फोरेस्ट आदि विभागो के मन्त्री पद पर एक वर्ष नौ महिने तक कार्य किया । ता० 5-1-51 को शास्त्री मत्रिमडल भग होने पर आप मत्रिमडल से अलग हुए ।

कांग्रेस से त्याग पत्र

कांग्रेस मे समाज के अवांछनीय तत्व सदस्य बन रहे थे । उनके द्वारा जाली सदस्यो की सख्या बढाई जाने लगी । काग्रेस मे नाना प्रकार का भ्रष्टाचार फैलने लगा । ऐसी स्थिति मे (1) श्री वेदपाल त्यागी (कोटा) (2) श्री पूर्णचन्द जैन और (3) श्री रघुवरदयाल गोयल के नेतृत्व मे एक डेपुटेशन काग्रेस अध्यक्ष श्री टडनजी से मिला और उन्हे ज्ञापन प्रस्तुत करके काग्रेस से भ्रष्टाचार मिटाने की ओर ध्यान आकर्षित किया । कांग्रेस अध्यक्ष ने डेपुटेशन के प्रति अपनी सद्भावना प्रगट करते हुए भ्रष्टाचार को रोकने मे अपनी असमर्थता प्रगट की । जिस पर श्री गोयल व उनके कई साथियो ने कांग्रेस की साधारण सदस्यता से त्याग पत्र दे दिया ।

रचनात्मक कार्यों की ओर

श्री गोयल अपने वकालात के धन्धे के साथ-साथ रचनात्मक प्रवृत्तियो की ओर मुड गये । खादी प्रचार, शराबबन्दी, शिक्षा प्रचार, हरिजन सेवा आदि सार्वजनिक सेवा कार्यों मे अपना समय लगाने लगे । अपने साथियो के सहयोग से खादी ग्रामोद्योग की 'खादी मन्दिर' नामक जिस सस्था की सन् 1942 ई० स्थापना की गई थी उस ओर विशेष ध्यान देने लगे । बाद मे सन् 1957 ई० मे श्री गगादास कौशिक को सस्था का व्यवस्थापक नियुक्त किया गया । तब से आज खादी का उत्पादन तीस लाख के लगभग किया जाने लगा है । इसके अन्तर्गत गांधी शान्ति प्रतिष्ठान, वाचनालय, पुस्तकालय हरिजन मोहल्लो मे शिक्षालय, ग्रामो मे कुँए, कुण्ड व पीने के पानी का प्रबन्ध, मरम्मत का कार्य, औषधि वितरण, किसानो मे खेती के लिए बीज का वितरण आदि कार्य किए जा रहे हैं ।

प्रो० गोकुल लाल आसावा, शाहपुरा.



जन्म : 2 अक्टूबर, 1901

शाहपुरा मे जिम्मेवार हुकूमत की घोषणा

देश की स्वाधीनता के बाद 1947 के अतिम दिनो मे एक और उत्साहवर्धक और आल्हादकारी समाचार मिला। राजपूताना एजेंसी की शाहपुरा रियासत मे जिम्मेवार हुकूमत की स्थापना की घोषणा। भारत की 514 रियासतो मे यह पहली रियासत थी जहाँ कि सर्वसत्ता सपन्न जिम्मेवार हुकुमत की स्थापना की ऐतिहासिक उद्घोषणा की गई थी।

सर्वसत्ता संपन्न अतरिम सरकार

देश का सारा ध्यान शाहपुरा की ओर आकर्षित हो गया। समाचारपत्रो की सुर्खियो मे शाहपुरा आ गया और इसका कारण मात्र यही था कि रियासतो मे लोकप्रिय सरकारो की स्थापना के दौर मे प्रोफेसर गोकुललाल आसावा शाहपुरा के प्रधानमत्री बनाए गए थे। प्रोफेसर आसावा ने सभवत सितम्बर 1947 मे राज्य के प्रधानमत्री का दायित्व सम्हाला था और सत्ता मे आने से पहले ही उन्होंने जिम्मेवार हुकूमत का सम्पूर्ण विधान लागू करने पर शाहपुरा के महाराजा की स्वीकृति प्राप्त करली थी। इस प्रकार शाहपुरा मे पूर्ण जिम्मेवार हुकूमत के अधिकारो वाली देश की यह प्रथम मनोनीत अतरिम सरकार थी।

सघ सरचना और शाहपुरा का विलय

राजपूताने की रियासतो मे सन् '48 के प्रारभ से ही समय का चक्र तेजी से घूमने लगा और प्रोफेसर आसावा के नेतृत्व मे जिम्मेवार हुकूमत के 6 महीने बाद ही, अप्रेल 1948 मे कई राज्यो को मिलाकर एक सयुक्त राजस्थान सघ बनाया गया। शाहपुरा का भी उसी सघ मे विलय हो गया और प्रोफेसर गोकुल लाल आसावा को कोटा राजधानी वाले

पहले राजस्थान सघ के प्रधानमत्री का गुरुतर दायित्व अपने कधो पर लेना पडा और उसके दूसरे महीने ही उदयपुर के महाराणा ने इस सघ मे अपना विलय स्वीकार कर लिया। मई '48 मे द्वितीय सयुक्त राजस्थान का उद्घाटन उदयपुर मे पडित नेहरू ने किया। नए सयुक्त राजस्थान की राजधानी उदयपुर रखी गई। श्री माणिक्यलाल वर्मा इस सघ के प्रधानमत्री बनाए गये और प्रोफेसर आसावा को उप प्रधानमत्री बनाकर योजना तथा राजस्व विभागो के दायित्व सौपे गए।

विधान निर्मातृ परिषद् में

इसी वर्ष नवम्बर 1948 से श्री प्रोफेसर गोकुललाल आसावा विधान निर्मातृ परिषद् तथा अस्थायी समद के सदस्य मनोनीत किए गए, जहाँ मार्च 52, तक आपने राष्ट्र का सविधान बनाने मे अपनी सवैधानिक योग्यताओ का सदन को पूरा-पूरा लाभ दिया।

जन्म, शिक्षा और परिवार

श्री गोकुललाल आसावा का जन्म 2 अक्टूबर 1901, को देवली कैन्टोनमेट के एक सामान्य माहेश्वरी परिवार मे हुआ। आपके पिता का नाम श्री हजारी लाल जी आसावा था। परिवार की आर्थिक स्थिति अत्यन्त सामान्य थी, परन्तु मेधावी और होनहार बालक आसावा की आकाक्षाएं बहुत ऊँची थी। वह अधिक से अधिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए कृत सकल्प थे।

शाहपुरा से हिन्दू विश्वविद्यालय में

मिडिल तक उनका प्रारभिक अध्ययन शाहपुरा की मिडिल स्कूल मे हुआ। डी ए वी हाई स्कूल अजमेर से उन्होने मैट्रिक किया, गवर्नमेन्ट कॉलेज अजमेर से इटरमिडिएट हुए, और बी ए तथा एम ए हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस से। हिन्दू विश्वविद्यालय मे उन्होने अपना अध्ययन जारी रखना चाहा। परिवार की स्थिति उन्हे आगे पढाने की नही थी। पिता चाहते कि गोकुललाल अब कही काम करे और कमाए परन्तु गोकुललाल ने अपनी हठ नही छोडी और अ त मे अजमेर के तत्कालीन नेता श्री चादकरण शारदा की सिफारिश पर श्री आसावा को बिडला समूह से स्कालरशिप स्वीकृत हुई और उन्होंने सन् 1926 मे हिन्दू विश्वविद्यालय से बी० ए० और 1928 दर्शन शास्त्र मे एम० ए० कर ही लिया।

अध्यापक और प्राध्यापक

श्री गोकुललाल आसावा सन् 1928-29 मे एक वर्ष के लिए डी ए वी हाई स्कूल मे अध्यापक रहे और अगले वर्ष कोटा के हर्बर्ड कॉलेज मे तर्कशास्त्र के प्रोफेसर नियुक्त हो गए।

कोटा के हर्बर्ड कॉलेज मे

हर्बर्ड कॉलेज मे पहले दिन से ही श्री आसावा की प्रिंसिपल से खटपट हो गई। प्रिंसिपल यह सहन करने को तैयार नही था कि कोई प्राध्यापक कॉलेज मे धोती पहन कर

आए। प्रोफेसर आसावा ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के विज्ञान के प्रोफेसर का उदाहरण देकर बताया कि धोती हमारी राष्ट्रीय पोशाक है और उस पर आपत्ति करना उचित नही है। परन्तु प्रिंसिपल के गले उनकी एक भी बात नही उतरती थी। प्रोफेसर गोकुललाल आसावा छात्रो मे एक नई चेतना के प्रतीक बन गए थे। उनकी प्रेरणा और सहयोग से छात्रो ने 26 जनवरी को झडाभिवादन किया, रावी के तट पर की गई प्रतिज्ञाओ को दोहराया और कॉलेज के जीवन मे राष्ट्रीय चेतना की एक नई लहर पैदा हो गई। कॉलेज मे अध्यापकी करते हुए श्री आसावा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य भी थे। सभवत यह सब तथ्य कॉलेज के अधिकारियों के ध्यान मे थे। कॉलेज मे नए रूप से छात्रो मे विकसित होने वाली राष्ट्रीय भावना के लिए कॉलेज के प्रिंसिपल, प्रोफेसर आसावा को ही दोषी मानते थे। इन प्रतिकूल परिस्थितियो मे भी प्रोफेसर आसावा ने प्राध्यापकी का एक वर्ष पूरा किया और जब आगे के लिए उनके कन्फरमेशन (पुष्टि) का प्रश्न सामने आया तो शिक्षा विभाग के निदेशक ने उनकी राष्ट्रीय विचारधारा के सदर्भ मे लिखा कि उनकी प्रवृत्तिया अवाछनीय रही हैं। ऐसे अवांछनीय तत्वों की कॉलेज को आवश्यकता नहीं है। अत उन्हे प्राध्यापकी से अलग किया जाता है।

नमक सत्याग्रह और अजमेर मे गिरफ्तारी

ऐसा लगता है कि प्रोफेसर आसावा का जन्म राष्ट्रीय चेतना का प्रसार करने और राष्ट्रीय आन्दोलनो मे भाग लेने के लिए ही हुआ था। नौकरी करने, कमाने और भौतिक सुख सुविधाओं का उपभोग करना शायद इस जीवन मे उनके भाग्य मे ही नही बदा है। कोटा कॉलेज की राजकीय सेवा से उन्हे मुक्ति उसी समय मिली जबकि देश मे गांधीजी ने डाँडी कूच कर दिया था और देशभर मे नमक सत्याग्रह शुरू हो गया था। अजमेर भी इस आन्दोलन के प्रवाह मे पूर्ण वेग पर था और कोटा से अजमेर आते ही प्रोफेसर आसावा कांग्रेस के इस सत्याग्रह अभियान मे शामिल हो गए। शामिल हुए तो फिर ऐसे हुए कि देश की स्वाधीनता के अतिरिक्त किसी विचार और कर्म से उनका वास्ता ही नही रहा।

सिद्धान्तवादी, अनुशासनबद्ध निर्मम व्यक्तित्व

1930 से 1947 तक के राष्ट्रीय सघर्षों की अवधि मे प्रोफेसर आसावा मे एक असाधारण सत्यनिष्ठ, सिद्धान्तवादी, आदर्शवादी और त्यागमय जीवन जीने वाले नि स्वार्थ लोक-सेवक के व्यक्तित्व का उदय और विकास हुआ। छलकपट और छीना-झपटी की राजनीति मे श्री आसावा का अस्तित्व कीचड मे कमल की तरह ही माना गया है। जीवन मे कोई प्रलोभन जिन्हें छू तक नही गया, व्यक्तिगत सुख सुविधा की जिसने कभी कोई कामना नही की और नि स्वार्थभाव से राष्ट्रदेवता के चरणो पर जो सदा अपनी शक्ति, सामर्थ्य, क्षमता और सभावनाओ की भेंट निर्विकार भाव से चढाता रहा, उसकी महत्ता और उसके अस्तित्व की उपयोगिता से कभी कोई इन्कार नही कर सकता था। श्री आसावा सदा अपने प्रति निर्मम होकर रहे हैं। अपने प्रति निर्मम रहे इसीलिए वे औरो के प्रति भी उतने

ही सख्त, कठोर और निर्मम वन सके है। अनुशासन को उन्होंने सर्वोपरि स्थान जीवन मे दिया है और अपनी इकहत्तर वर्ष की उम्र मे भी उन्होने आज तक अपने सिद्धान्तो की कीमत पर किसी से समझौता नही किया है।

सात्विक आतंक के प्रतीक

कांग्रेस के क्षेत्रो मे वडे से वडे व्यक्ति प्रो० आसावा की उपस्थिति मे असाधारण रूप से सतर्क रहा करते थे। लोग जानते थे कि आसावा किसी को वख्शने वाले नही है। किसी की भी भूल, सिद्धान्तहीनता या अनुशासनहीनता उनके लिए असह्य होती थी और उनकी उपस्थिति मात्र कांग्रेस की वैठको मे उनका एक सात्विक आतक जगा देती थी।

एक सी कथनी और करनी के स्वामी

यह मही है कि प्रोफेसर आसावा सत्य की तरह कठोर और न्याय की तरह रु-रियायत से दूर है। उनकी वाणी मे तीखापन है, उनकी जुवान की सख्ती लोगो को अपने कर्त्तव्य के लिए सदा सतर्क और जागरुक रखती है। परन्तु सत्य को सहन करने, सत्य को सुनने और सत्य को धारण करने का साहस लोग दिन-प्रति-दिन खोते जा रहे हैं, और प्रोफेसर आसावा का तीखा सत्य लोगो को ग्राह्य नहीं हो सका है। वह अप्रिय होता गया है। फिर भी प्रोफेसर आसावा अपनी प्रकृति मे परिवर्त्तन नही ला पाए। वे इतने अधिक निर्मम और सत्यनिष्ठ हैं कि लोगो के क्षुद्र स्वार्थ उनके आगे थरथराने लग जाते हैं। लेकिन प्रोफेसर ने यदि किमी अपराधी या दोषी को क्षमा नही किया है तो किसी को भुलावे मे भी नही डाला है और जीवन की समस्त प्रतिकूलताओ को स्वीकार करके भी वे अपने कथन और सिद्धान्त से पीछे नही हटे हैं। प्रोफेसर गोकुललाल आसावा की कथनी और करनी मे तिलमात्र भी फर्क नही है।

गिरफ्तारियों का तांता और जेल जीवन

1930 के नमक सत्याग्रह मे शामिल होकर प्रोफेसर गोकुललाल आसावा के जेल जाने का सिलसिला शुरू हो गया। 1930 से 32 के सत्याग्रही जीवन मे श्री आसावा अजमेर मे 4 वार जेल गए। एक वार 3 महीने के लिए, एक वार एक वर्ष के लिए, 2 वार छ छ महीनो के लिए और इस तरह से जीवन के उषाकाल मे ही उन्हे 2 वर्ष 3 महीने जेल मे निकाले।

गिरफ्तारियो का यह सिलसिला 1932 से 1942 तक निरन्तर चलता रहा। 1940 के व्यक्तिगत सत्याग्रह मे श्री आसावा सभवतः एक वर्ष के लिए जेल मे रहे और 1942 के आन्दोलन मे एक वर्ष दस महीने के लिए नजरवद रहे।

इस तरह नजरवदी से छूटने के वाद वदिशे तोडने के अपराध मे भी उन्हे दो वार 3–3 महीने के कारावास का दड मिला और नजरवदी के दौरान मे अँगूठे के निशान न देने पर भी दो वार दण्डित किए गए।

सम्मान के ऊँचे से ऊँचे पदो पर

प्रोफेसर गोकुललाल आसावा का अधिक से अधिक समय अजमेर मे ही व्यतीत हुआ है और अजमेर की कांग्रेस के माध्यम से उन्होंने अपने आपको देश को अर्पित किया है। यदि उनके कांग्रेस जीवन का लेखा जोखा लिया जाए तो उन्हे वह सम्मान भी प्राप्त हो चुका है जो राजस्थानमे सभवत. उनके अतिरिक्त 3–4 व्यक्तियो को ही प्राप्त हुआ है। श्री आसावा राजस्थान से कांग्रेस हाईकमान के 1950-51 मे सदस्य लिए गए थे, वे 1937 मे अजमेर-मेरवाडा प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष और 1938 मे अजमेर-मेरवाडा प्रातीय कांग्रेस कमेटी के मन्त्री थे। श्री आसावा सन् 1934–35 मे अजमेर-मेरवाडा प्रातीय समाजवादी पार्टी के मन्त्री भी रहे थे। श्री आसावा 31–35,37,39 और 1952 मे ए० आई० सी० सी० के सदस्य रहे तथा सन् 30 से 46 तक निरन्तर 16 वर्षों तक वे अजमेर मेरवाडा प्रांतीय कांग्रेस कमेटी की व्यवस्थापिका सभा के सदस्य रहे। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के निर्माण के वाद श्री आसावा 1951 तक उसकी कार्यकारिणी के सदस्य रहे।

श्रेय की अधिकारिणी-श्रीमती आसावा !

देश की स्वाधीनता की धुन मे प्रोफेसर गोकुललाल आसावा अपने परिवार के सचालन की ओर क्षण भर के लिए भी ध्यान नही दे सके। उन्होने कभी यह सोचा ही नहीं कि उन्हे गृहस्थी की गाडी को भी विधिवत् चलाना है। यह तो उनकी पत्नी श्रीमती कमलादेवी के साहस, सूझबूझ और कार्य कुशलता का ही परिणाम था कि उनकी देश-सेवा के साथ-साथ उनकी गृहस्थी की गाडी भी वरावर चलती रही। प्रोफेसर आसावा को देश के लिए पूर्णतया समर्पित होने देने मे उनकी पत्नी की निष्ठा, कष्ट-सहिष्णुता और उनके त्याग को भुलाया नही जा सकता। यदि उनका समर्पित सहयोग प्रोफेसर आसावा को नही मिला होता तो वे सपूर्ण समय के लिए कांग्रेस का मिशन लेकर खडे नही हो सकते थे। उनकी पत्नी ने अपने पति के साथ 1932 के सत्याग्रह मे भी भाग लिया था और उन्हें 3 महीने की सजा भी हुई थी।

सार्वजनिक जीवन की राजनीति से सन्यास

सन् 1952 के वाद प्रो० गोकुललाल आसावा ने अपने आपको एक तरह से सार्वजनिक जीवन की राजनीति से अलग कर लिया है। पिछले 20 वर्षो मे दो मौको को छोडकर एक दिन भी उन्हे कभी किसी सभा, सोसायटी, मच या सार्वजनिक रूप से अग्रगण्य स्थान पर नही देखा गया।

इस सत्यनिष्ठ तपोपूत ऋषि का यह परिवर्त्तन आसानी से समझा जा सकता है। राजनीति मे जिस तरह का स्तरहीन, आदर्शहीन और सिद्धान्तहीन माहौल रहा है उमे वे किसी भी रूप मे अगीकार नही कर सकते। न वे अपना समन्वय उन लोगो के साथ विठा

सके जो क्षुद्र स्वार्थों की छिछली राजनीति के महानायक रहे हैं। अनेको बडे से बडे सिद्धान्तवादियो को श्री आसावा ने व्यक्तिगत हितो और स्वार्थों के प्रवाह मे पथभ्रष्ट होते देखा है। वे उनके साथ नही हो सके। विरोध करने का अकेले का बल नाराजगी ही था और इसलिए उनकी कॉंग्रेस निष्ठा ने उन्हे सक्रिय उदासीनता की ओर धकेल दिया है।

श्री हरिभाऊ उपाध्याय द्वारा पुण्य-स्मरण

प्रोफेसर आसावा के इस तरह के परिवर्त्तन मे व्यथित होकर श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने 'राजस्थान—स्वाधीनता के पहले और बाद' के पुण्य स्मरण मे लिखा है कि—

"श्री गोकुललाल आसावा उन पुराने देशभक्तो, कॉंग्रेस भक्तो मे से है जो आज जीते जी कब्र मे गड गए हैं। काशी विश्वविद्यालय से एम० ए० करने के बाद कोटा कॉलेज मे दर्शन के प्राध्यापक हुए थे कि असहयोग और सत्याग्रह की गाँधीजी की पुकार आई और गोकुललालजी इस कटीले रास्ते पर बेतहाशा दौड भागे। जेल मे तो बार-बार रहना ही था परन्तु कॉंग्रेस सगठन मे भी पूरा-पूरा योग दिया। जब राजस्थान मे स्वतत्रता का दौर आया तो शाहपुरा (मेवाड) के प्रथम मुख्यमत्री बने और उसके बाद ही जो एक छोटा राजस्थान श्री वर्माजी के मुख्यमत्रीत्व मे बना उसमे उप मुख्यमत्री बनाए गए।

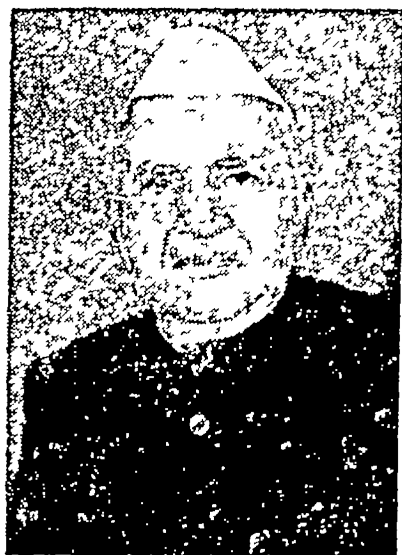
वे अखिल भारतीय कॉंग्रेस कार्यसमिति के भी सदस्य रहे। बाद मे राजनीति ने ऐसा पलटा खाया कि अब गोकुलजी को पहिचानने वाले और याद रखने वाले भी मुश्किल से मिलेंगे।

एक नम्बर के सच्चे-ईमानदार, देश और सगठन के प्रति वफादार, राजनीति के क्षेत्र मे कम मिलेंगे। खुद को खतरे मे डालकर भी अपने साथियो को सजग रखने वाले दुनियाँ मे बिरले ही मिलतें हैं। आसावाजी उन बिरलो मे से ही है। उन पर काम सौंपकर आपको सजग रहने की आवश्यकता नही है। स्वर्गीय व्यासजी ने उनका नाम गुरु रख दिया था। अब भी हम लोग उन्हे गुरु ही कहते हैं तो वे प्रसन्न होते हैं।

व्यासजी ने उन पर 'गोद के गुरु' नामक एक लेख भी लिखा था। वे कहा करते थे कि अक्सर गुरु, शिष्य को गोद लेते है लेकिन मैंने तो गुरु को गोद लिया है।

दर्शन, तत्र, वेदात के गभीर विद्वान चिंतक, जीवन मे सीधे सादे, आज भी वैसे ही देश और कॉंग्रेस के भक्त हैं जैसे पहले थे। कॉंग्रेस की वर्त्तमान छिन्न-भिन्नता पर दु खी रहते हैं, परन्तु अपने लिए कभी कभार ही शिकायत करते है। वे आज किसी भी विश्व-विद्यालय की शोभा बढा सकते हैं।"

श्री भोगीलाल पंड्या, डूंगरपुर.



जन्म 15 मार्च, 1904

अजूबे राजतंत्र के विरुद्ध संघर्ष की कहानी

श्री भोगीलाल पड्या का जीवन एक ऐसे राजा और उसके अजूबे राजतत्र के विरुद्ध निरन्तर सघर्ष की कहानी है कि जिसने अपने डूंगरपुर राज्य मे शिक्षा के प्रसार जैसे पावन, निर्दोष और लोक कल्याण कारी कार्य को भी कानून से बद कर रखा था और अशिक्षित ग्रामीण जनता मे शिक्षा का प्रचार करने वाले कार्यकर्त्ताओ को राजद्रोह के अपराध मे गिरफ्तारियाँ, मारपीट और जुर्माने की सजाए दी जाती थी।

तत्कालीन डूंगरपुर के शासन की एक झलक

तत्कालीन डूंगरपुर रियासत मे 61 प्रतिशत आदिवासी और 5 प्रतिशत अनुसूचित जाति के लोग रहते थे। इनके अतिरिक्त 34 प्रतिशत शेप ग्रामीण जनता थी। रियासत की समस्त प्रजा अशिक्षित थी। राज्य पहाडियो व घने जगलो से घिरा हुआ था। रियासत की जनता आवागमन के साधनो से हीन, अशिक्षा, और दरिद्रता से दबी हुई थी। रियासत के एकतत्री शासन ने जनता को मृत प्राय कर दिया था। रियासत मे वैधानिक शासन की बात दूर तो रही, सामान्य नागरिक अधिकार भी जनता को प्राप्त नही थे। जिस रियासत मे महाराजा का सगा भाई दीवान हो, अन्य भाई भतीजे पुलिस के सुपरिन्टेन्डेन्ट और थानेदार हो वहाँ शासन की क्या दुर्दशा होगी, इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है। रियासती शासन ने पाठशाला सचालन एव कवायद छात्रावास जैसे प्रतिगामी कानून बनाकर स्वय-सेवी-सस्थाओ द्वारा नई पाठशालाए स्थापित करने और नए छात्रावास खोलने पर भी प्रतिबध लगा दिए थे। राज्य मे बेगार हद दर्जे तक फैली हुई थी प्रत्येक जाति के लोगों को बेगार देनी पडती थी और रिश्वत को चन्दे की तरह वसूल किया जाता था।

स्त्री-पुरुषों को गिरवी रखने की राज्य मान्य परंपरा

डूँगरपुर रियासत मे स्त्री और पुरुषो को गिरवी रखने की परम्परा चल रही थी और रकम की वसूली के लिए उन्हे किसी दूसरे के पास रुपयो के लिए गिरवी रखा जा सकता था तथा राज्य मे कानूनन उसकी रजिस्ट्री कराई जाती थी।

प्रतिकूल पृष्ठभूमि मे सेवा कार्य का प्रारंभ

इस पृष्ठभूमि मे भोगीलाल पड्या ने सन् 1919 मे अपने पन्द्रह वर्ष की अवस्था मे एक छात्रालय की स्थापना डूँगरपुर मे की। यही एक माध्यम था जिसके द्वारा वे जनता मे चेतना व जागृति फैला सकते थे। उन्होने इसी क्रम मे शनै -शनै वच्चो व प्रौढो के लिए पाठशालाओ की शृ खला स्थापित करनी शुरू की ताकि राज्य के गरीव आदिवासी, हरिजन एव अन्य लोगो मे शैक्षणिक, सामाजिक, आर्थिक एव राजनैतिक चेतना का प्रादुर्भाव हो। अनेक प्रकार के राजनैतिक अवरोधो के वावजूद भी कार्यकर्त्ताओ के कठोर और नि स्वार्थ परिश्रम से कई पाठशालाओ ने अपनी जडें बहुत गहरी जमा ली थी।

राज्य द्वारा लोक चेतना को दवाने के प्रयत्न

जनता मे चेतना और जागृति के लक्षण दृष्टिगोचर हुए तो रियासत ने समझा कि भोगीलाल पड्या द्वारा शिक्षा के क्षेत्र मे उठाये गये कदम गभीर आन्दोलन का रूप धारण कर लेंगे। इसलिए रियासत भयभीत हो उठी और प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से रियासत ने शिक्षा के आन्दोलन द्वारा होने वाली चेतना को दवाने का निर्दयता से प्रयत्न शुरू कर दिया। यह विचार होने लगा कि भोगीलाल पड्या को किस प्रकार इस क्षेत्र से विलग किया जाय।

वागड़ सेवा मदिर और सेवा संघ की स्थापनाएं

श्री भोगीलाल पड्या ने इसी वीच वागड-सेवा-मदिर नाम से एक सस्था की स्थापना कर दी थी। शिक्षा का कार्य करने वाले सभी कार्यकर्ता इसमे शामिल हो गए। भोगीलाल पड्या वागड-सेवा-मन्दिर के मन्त्री वनाए गए। इस संस्था के कार्य-सचालन को देखकर राज्य सरकार आतकित हो उठी कि यह सस्था एक न एक दिन रियासत को अवश्य ही राजनैतिक चुनौती देगी। अत वागड-सेवा-मदिर को रियासत ने वन्द करवा दिया। इसके वन्द हो जाने पर भोगीलाल पड्या ने सेवा-सघ डूगरपुर, नामक सस्था को गठित कर उसका सचालन प्रारभ किया। महारावल रियासत के अधिकारी एव महारावल के निजी स्टाफ के व्यक्ति निरन्तर इस प्रयत्न मे लगे रहे कि सेवा सघ को कैसे वन्द किया जाए। सघ की सगठित शक्ति एव रियासत मे जनजागरण के लिए तैयार किये हुए कार्यकर्त्ताओ की टोलियो को देख कर रियासत ने दमन प्रारम्भ किया। नई पाठशाला या छात्रावास नही खोलने देने की इच्छा से पाठशाला सचालन एवं कवायद छात्रावास जैसे प्रतिगामी कानून डूगरपुर रियासत ने वनाए। राज्य द्वारा नई पाठशाला, रात्रि पाठशाला और प्रौढ शाला खोलने की

स्वीकृति नही मिलती और चालू पाठशालाओ को महारावल व उनके हुजूरात वालो (निजी स्टाफ) ने वन्द कराने की घृणित, शर्मनाक एव हल्के दर्जे की कार्यवाहियाँ जारी रखी। श्री भोगीलाल पड्या व उनके साथियो ने इसका कडा विरोध ही नही किया वरन् सरकार द्वारा रोक लगाने पर भी सेवा सघ की पाठशालाओ का सचालन पूर्ववत् चलाने की घोषणा की। सरकार इन पाठशालाओ के अध्यापको व ग्रामवासियो को निरन्तर डरा रही थी, तथा अमानुषिक तरीको से कार्यकर्ताओ को आतकित कर उन्हे चुनौती दी जाती रही कि पाठशालाए वन्द हो। परन्तु भोगीलाल पड्या ने शिक्षा विरोधी कानून का डट कर मुकाविला किया।

वेगार कानून और रिश्वत

सन् 1939 मे रोक व इन्तजाम वेगार एक्ट डूँगरपुर रियासत ने लागू किया। डूँगरपुर राज्य मे ब्राह्मण, राजपूत, महाजन व छोटी से छोटी समझी जाने वाली प्रत्येक हिन्दू जाति से वेगार ली जाती थी। सरकारी कामो मे वेगार तो ली ही जाती थी पर राज्य द्वारा किये जाने वाले व्यापार मे भी वेगार को मान्यता दी गई। इस प्रकार सत्तावाद व पूजीवाद रियासत मे साथ-साथ चला। इन्होने रिश्वत को जन्म दिया जो चन्दे की तरह वसूल होती थी। पीडित जनता वेगार का इतना बोझ ढोने लगी कि उसकी कमर टूट गयी।

शिक्षण संस्थाए शराब की दुकानें और नागरिक अधिकार

उस समय डूँगरपुर राज्य मे एक हाईस्कूल, एक छठी कक्षा तक की पढाई वाला अपर प्राईमरी स्कूल, 14 प्राईमरी स्कूल एव दो कन्या पाठशालाए थी और 140 शराव की दुकानें थी। यह थी डूँगरपुर की प्रजा के कल्याण की सरकारी नीति। नागरिक अधिकारो का सव तरह से हनन किया गया। लेखन व भाषण पर प्रतिवन्ध लगा दिए गए। शांति और व्यवस्था के नाम पर सर्वाधिकार का चलन प्रारम्भ हुआ। राज्य मे सफेद टोपी लगाना, बच्चो को पढाना, अमानुषिक अत्याचार के खिलाफ किसी शब्द को काम मे लाना राजद्रोह की सज्ञा मे आने लगा। इतना ही नही वेगार और गुलामी के अलावा आदमी और स्त्रियो को भी इस राज्य मे गिरवी रख कर काम करवाया जाता था और राज्य का ऐसे अमानुषिक कार्यो को प्रश्रय पोषण होता था। पुरुष व स्त्री कुछ रुपयो के लिए गिरवी रखे जाते थे और उसकी राज्य द्वारा रजिस्ट्री होती थी।

विद्यार्थियो का निर्वासन और सरकारी नीति का मुकाविला

राज्य द्वारा सचालित हाई स्कूल ने उन छात्रो को राजकीय हाईस्कूल मे भर्ती करने से इन्कार कर दिया जो वागड-सेवा-मदिर या सेवा-सघ डूगरपुर द्वारा सचालित छात्रावासो मे रहते थे। इस तरह के जो छात्र राजकीय स्कूल मे पढते थे उन्हे स्कूल से निकाल दिया गया तथा पुलिस के द्वारा उन्हे अपने घरो पर पहुँचा दिया गया। श्री भोगी-लाल पडया ने, इस तरह के समाचार मिलने पर उन लडको को विद्या भवन उदयपुर, हरि-

जन उद्योगशाला दिल्ली, तथा गोविन्दगढ एव चौमू की सस्थाओ मे भर्ती करवाकर उनकी शैक्षणिक व आर्थिक व्यवस्था का भार उठाया। शिक्षा के प्रसार के विरोध मे राज्य ने सारी रियासत मे दमन की भीषण विभीषिका फैला रखी थी। और भोगीलाल पड्या के नेतृत्व मे सेवा सघ डूगरपुर शिक्षा का विरोध करने वाली सरकारी नीति का डट कर मुकाबला कर रहा था।

कार्यकर्त्ताओं द्वारा गुप्त संगठन

सन् 1939 मे स्वाधीनता सग्राम के कार्यकत्ताओ के सगठन को गुप्त रूप से जन्म दिया जिसका विकास सन् 1944 मे हुआ। जबकि सगठन के सदस्यो की सख्या बढाई गई और कार्यकर्त्ता तैयार किये गए। 2 अक्टूबर, 1939 को गाँधी जयन्ती पर ग्रामसभा का आयोजन किया गया एव जन शिक्षण, अछूतोद्वार के अभियान तीव्रता से प्रारम्भ किए गए।

सन् 1939 से लेकर 1941 तक उपरोक्त कार्यक्रम के अलावा उदयपुर के प्रजामण्डल एव अजमेर के राजनैतिक कार्यकर्ताओ का डूगरपुर आना जाना बना रहा। उन्हे डूगरपुर राज्य की प्रजा विरोधी नीतियो एव सेवा सघ डूगरपुर द्वारा किए गए शिक्षा आन्दोलन से परिचित कराया गया। सन् 1942 मे राज्य ने कानून और व्यवस्था की आड मे इन पाठशालाओ को गैर कानूनी ढग से अपने अधिकार मे ले लिया। फिर भी श्री भोगीलाल पड्या ने राज्य के दमन के विरोध के बावजूद भी पाठशालाओ का सचालन किया और राज्य की शिक्षा विरोधी नीति का सभाओ द्वारा राज्य भर मे विरोध किया।

अप्रत्यक्ष रूप से राजनैतिक प्रवृत्तियो का प्रारंभ

जब देश मे भारत छोडो आन्दोलन का शखनाद 1942 मे हुआ तब भोगीलाल पड्या ने रियासत के कोने-कोने मे इसका प्रचार किया कि राजकीय सेवाओ मे कोई न जाए और सकल्प लिया कि अब स्पष्ट रूप से राजनैतिक काम किया जाए। दिनाक 5 दिसम्बर, 1942, को एक विशाल सार्वजनिक सभा आयोजित कर तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमत्री चर्चिल के इस कथन का खण्डन किया कि कांग्रेस की ओर से की गयी आजादी की माँग के साथ रियासती जनता नही है तथा 6 दिसम्बर, 1942, को भोगीलाल पड्या के नेतृत्व मे एक विशाल जुलूस निकाला गया। इस जुलूस मे तथा सार्वजनिक सभा मे हजारो लोगो ने भाग लिया। स्कूलो तथा बाजारो मे पूर्ण हडताल रही। रियासत ने भाषण-लेखन आदि पर प्रतिबन्ध लगाकर आन्दोलन को दबाने का प्रयत्न किया।

राजनैतिक आंदोलन का सूत्रपात

देश मे घट रही घटनाओ से सेवा सघ अछूता नही रहा। दिनाक 17 एव 27 अगस्त, 1942 को सघ की साधारण बैठकें हुई। सर्वसम्मति से भोगीलाल पड्या को सेवा सघ के सचालक होने के नाते यह जिम्मेदारी सौपी गयी कि डूगरपुर नरेश एव दीवान से मिलें और कहे कि राज्य शिक्षा विरोधी नीति को छोडे। सरकार से लगातार तीन दिन तक

वार्त्ता करते रहने पर भी कोई हल नहीं निकला और इसके विपरीत राज्य ने यह शर्तें रखी कि शिक्षण-सस्था चलाने वाला कोई व्यक्ति यदि कोई जनजागरण के कार्य मे व राजनीति मे भाग लेगा अथवा किसी भी तरह के राजनैतिक कार्य मे सम्मिलित होगा तो सारी रचनात्मक प्रवृत्तियाँ सरकार द्वारा बन्द कर दी जायेगी। इस प्रकार की चेतावनी मिलने पर सेवा सघ को राजनैतिक आन्दोलनो का सूत्रपात करना पडा।

प्रयाण सभाओं का आयोजन और भीषण पिटाई

सन् 1944 मे रियासत के शासन के विरुद्ध उठ खडे होने के लिए 'प्रयाण सभाओ' का आयोजन किया गया तथा लोकमानस को प्रशिक्षित करने के लिए राष्ट्रीय टोलियो का निर्माण करके कार्यकर्त्ताओ को प्रशिक्षित और सक्षम बनाने का कार्य हाथ मे लिया गया। इन प्रयाण सभाओ मे भाग लेते और रियासत के विरुद्ध उठ खडे होने के लिए आह्वान करने पर राज्य सरकार को यह हौसला नही हुआ कि वह भोगीलाल पड्या और उनके कार्यकर्ताओ को गिरफ्तार करे क्योंकि ऐसा करना उसकी निगाह मे एक भीषण परिस्थिति को आमन्त्रित करना था। उसी समय टोलियो का सचालन करते हुए कार्यकर्त्ताओ की तथा भोगीलाल पड्या की ग्राम घनोरा, सासरपुर व काञ्जा आदि क्षेत्रो मे भीषण पिटाई की गयी। इन घटनाओ ने कार्य करने की शक्ति व क्षमता और बढा दी। कार्यकर्ताओ के खेत व जमीन जब्त कर लिए गए। सीमलवाडा मे भोगीलाल पड्या के तथा अन्य कार्यकर्ताओ के परिवारो को अनेक प्रकार की यातनाए दी जाने लगी और उन्हे भयभीत किया गया।

प्रजामण्डल का विधिवत् उद्घाटन और जनता की मागें

26 जनवरी, 1944, को डूगरपुर राज्य प्रजामण्डल का गठन किया गया और उसका विधिवत् उद्घाटन 26 जनवरी, 1945, मे किया। जिसकी अध्यक्षता करते हुए आपने जनता की ओर से यह माँग रखी कि शिक्षा विरोधी प्राइवेट पाठशाला सचालन एव कवायद छात्रालय काले कानून को रियासत वापिस लेवे, राज्य मे नि शुल्क शिक्षा दी जाय, रियासत मे न्याय व प्रशासन को अलग-अलग किया जाय, जनता को राज्य के प्राथमिक अधिकार दिए जाये। बेगार कानून को हटाया जाय, जगलात के जन विरोधी कानूनो को बन्द किया जाए, जमीन के लगान का मापदण्ड स्थिर किया जाय, मजदूरो को भर पेट मजदूरी मिलें, जनता को राज्य का दीवान नियुक्त करने का अधिकार दिया जाय।

राज्य का मुकाबिला करने के लिए जनता का आह्वान

दिनाक 28 मई, 1945, को भोगीलाल पड्या की अध्यक्षता मे प्रजामण्डल कार्यकर्त्ताओ की सभा का डूगरपुर मे आयोजन किया गया। इस सभा मे राज्य के आतकवादी व एकतत्रीय शासन का कडा विरोध करते हुए आह्वान किया गया कि जनता निडर होकर ऐसे राज्य का मुकाबला करे।

सत्याग्रह प्रारंभ करने की घोषणा

नवम्बर 1945, को डूगरपुर मे निरन्तर सभाओ का आयोजन किया गया जिनमे राजकीय शिक्षा तथा वन विभाग की नीतियो की तीव्र आलोचना की गई और यह घोषणा की गई कि यदि रियासत ने इन कठिनाइयो की ओर ध्यान नही दिया तो तुरन्त ही एक सत्याग्रह प्रारम्भ किया जायेगा। दिसम्वर 1945, मे रियासत के कोने-कोने मे पहुँच कर सभाओ का आयोजन किया गया। तथा राज्य की वन-नीति की भर्त्सना करते हुए कहा गया कि यदि समय रहते हुए उसमे सुधार नही किया गया तो सत्याग्रह किया जायेगा। रियासत वाहर से उच्च पदाधिकारियो को दमन के लिए नियुक्त करती है, ऐसा करना स्थानीय व्यक्तियो के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। इनके विरोध मे रियासत भर मे लोकमत जागृत हो गया था।

दो हजार प्रतिनिधियों के साथ

श्री भोगीलाल पड्या दिसम्वर 1945, के अन्तिम सप्ताह मे दो हजार व्यक्तियो के साथ डूगरपुर राज्य प्रजामण्डल के प्रतिनिधि की हैसियत से उदयपुर मे हुए देशी राज्य लोक परिषद मे सम्मिलित हुए। उन्होंने राजपूताने की वाँसवाडा, डूगरपुर, शाहपुरा, प्रतापगढ और कुशलगढ रियासतो की ओर से राजपुताना रीजनल कौन्सिल मे प्रतिनिधित्व किया।

प्रजामण्डल का अधिवेशन

दिनाक 30 जून से 5 जुलाई 1946, को डूगरपुर प्रजामण्डल का अधिवेशन आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री भोगीलाल पड्या ने की। राज्य के कडे विरोध के वाद भी तीस हजार से अधिक जनता एकत्र हुई। इसी अधिवेशन मे राजस्थान से सर्व श्री भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी, चिमनलाल, माणिक्यलाल वर्मा, हीरालाल शास्त्री तथा मोहनलाल सुखाडिया आदि ने भाग लिया। अधिवेशन मे जुलूस निकाला गया। महकमाखास के पास जुलूस मे भाग लेने वालो व पुलिस मे भिडन्त हो गयी। दिनाक 4-7-46 को अधिवेशन मे वेगार हटाने व जन प्रतिनिधियो के साथ उत्तरदायी सरकार वनाने सम्वन्धी प्रस्ताव पास हुए। अधिवेशन मे 7 अन्य प्रस्ताव भी पास हुए।

झंडे का अपमान–झंडे को सलामी

दिनाक 5-4-46 को श्री वाकरअली वोहरा ने जो कि राज्य घराने से निकट सपर्क मे थे, तिरगे झण्डे का अपमान किया। फलस्वरूप दूसरे दिन शाति पूर्ण आन्दोलन प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया। दिनाक 6-4-46 को रियासत ने दमन करने के लिए सशस्त्र पुलिस मिलिट्री का प्रवन्ध किया। तव 10,000 व्यक्तियो का जन समूह उमड कर जुलूस मे शरीक हुआ। जुलूस श्री वाकरअली वोहरा के घर पहुँचा, जहाँ श्री वाकरअली वोहरा ने तिरगे झण्डे का अपमान करने के लिए- माफी माँगी व झण्डे को नमस्कार कर हार पहनाया।

आन्दोलन, गिरफ्तारियें, मारपीट और देश निकाले

श्री पड्या को इस समय कई अप्रत्याशित राजनैतिक समस्याओ का सामना करना पडा । कई प्रकार के असत्य आरोप लगा कर रियासत की एकतत्रीय हुकूमत ने उन्हे तथा उनके कार्यकर्त्ताओ की मारपीट शुरू कर दी । धारा 124 ए० आई० पी० सी० के अतर्गत अप्रैल 1946 मे रियासत द्वारा भोगीलाल पड्या को गिरफ्तार कर लिया गया और देवल के किले मे 27 दिन तक रखा । उनके साथ 28 सत्याग्रही और गिरफ्तार किये गए । इसी समय उन्होने कटारा आदोलन का नेतृत्व किया । रियासत ने श्री हरिदेव जोशी व श्री गौरीशकर उपाध्याय को देश निकाला दिया । पड्या व उनके साथियो की क्रूरतापूर्वक पिटाई की गई । पुलिस की मार से पड्याजी का उठना बैठना मुश्किल हो गया था । डूगरपुर, गलियाकोट तथा सागवाडा मे धारा 144 (3) लागू कर दी गयी । रियासत भर मे इस काण्ड पर हडताल हुई । लाठी चार्ज हुए और सैकडो आदमी जख्मी हुए जिन्हे सरकारी अस्पताल मे इलाज के लिए भर्ती करने से मना कर दिया गया । जेल मे भोगीलाल पड्या द्वारा आमरण अनशन करने पर 5 दिन वाद राज्य सरकार को इस वात पर झुकना पडा कि सत्याग्रह मे गिरफ्तार किए गए व्यक्तियो को राजनैतिक कैदी माना जाए । परिणामस्वरूप आपने अनशन तोडा । चारो ओर घोर आन्दोलन छिड जाने मे मई माम के मध्य मे जेल से फिर भोगीलाल पड्या को रिहा किया गया और श्री हरिदेव जोशी और श्री गौरीशकर उपाध्याय के देश निकाले के आदेश पुन सरकार द्वारा निरस्त किये गये व 144 (3) की धारा उठा ली गयी । रिहा होने पर श्री गोकुलभाई की अध्यक्षता मे एक राजनैनिक सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमे सर्वश्री हीरालाल शास्त्री, मास्टर भोलानाथ, माणिक्यलाल वर्मा, रमेशचन्द्र व्यास तथा अचलेश्वर प्रसाद शर्मा सम्मिलित हुए ।

पूनावाड़ा में राज्य का नया षड्यन्त्र

दिनाक 1-6-1947 को सघ की पूनावाडा की पाठशालाओ को वन्द कराने के लिए पाठशाला के अध्यापक श्री शिवराम पर हमला किया गया और उसे डूंगरपुर के जगल मे छिपा दिया गया । पाठशाला के मकान मालिक की स्त्रियो पर घृणित अत्याचार किए गए । घर के अन्य लोगो को अमानुषिक ढग से पीटा गया । एक महिला तो मूर्छ गयी थी । श्री शिवराम के गाँव झोथरी से तीन सौ भील पूनावाडा पहुँच गये । इसकी सूचना डूंगरपुर पहुचने पर भोगीलाल पड्या अपने साथियों के साथ पैदल पूनावाडा पहुँचे । वहाँ देखा कि सरकारी कर्मचारियो द्वारा कस्टम का नाका जलाया जा रहा था और चिल्ला रहे थे नाका जलाकर रेकार्ड जलाये जा रहे हैं । तिजोरी से पैसे चुरा लिए हैं । ये भील वहाँ आग वुझाने जाने लगे तव उन्हें समझा कर रात में ही भोगीलाल पड्या ने वापिस होने के लिए कहा व आश्वासन दिया कि श्री शिवराम को वे जिन्दा या उसकी लाश, जैसी भी स्थिति मे हो लेकर आयेंगे 40 भील नही गये और कहा कि पहले भी जेल मे आपको आश्वासन दिए थे उसका पालन नहीं हुआ । हम तो आपके साथ लडेंगे और मरेंगे । ये 40 भील और अन्य 4 साथी पड्याजी के साथ झूँथा गांव मे आये ।

झूँथा में दनदनाती गोलियों के बीच में

वहाँ देखा कि पुलिस, फौज और हजारो लोग झूँथा मे एकत्रित हो रहे हैं। श्री पड्याजी ने साथियो की वारी वाँध दी कि एक के वाद एक मरने जावे सव एक साथ नही जावे। सवको पहाडी पर विठाया और वे झूँथा गाँव की ओर वढे। गाँव से थोडी दूर मे ही उन पर बन्दूक की गोली चलायी गई। वे आगे वढते गए और चार गोलियाँ और चली। लेकिन निशाना नही लगने पर भोगीलाल पड्या ने कपडे उतार दिए और पुलिस की बदूको के सामने सीना तानकर खडे हो गए उनके इस साहसिक हौसले से पुलिस अधिकारी स्तम्भित रह गए। तव पुलिस के हवलदार ने कहा कि शिवराम जिन्दा है उसको उसके घर पहुँचा दिया है। पड्याजी उनके साथी दो दिन की क्षुधा के वाद खाना खाने वैठे ही थे कि इतने मे फौज, पुलिस और जागीरदार आ गये। उन्होने लाठियाँ वरसानी शुरू की कईयो के सर फूट गए पाठशाला का आगन खून से रग गया। मकान मालिक का सर्वस्व लूट लिया गया। सभी 45 व्यक्तियो को हथकडियाँ लगा दी गई तथा रस्सो से वाँध दिए गए। कस्टम के नाके पर लोगो के वयान लिए और उन सवको एक ट्रक मे डाल कर घायल अवस्था मे धम्वोला के थाने मे रात के समय ले गये। वहाँ जनता को आतकित करने के लिए वन्दूक के कुन्दो और लाठियो से सव की बुरी तरह पिटाई होने लगी। इस वार अकेले पड्याजी के 104 वन्दूक के कुन्दे (वट्स) लगाये गये। लाठी और अन्य मार का ठिकाना ही नही रहा।

खाने मे जहर और पीने के पानी में पेशाब

उन्हे मालूम हुआ कि खाने के साथ विष देंगे अत. दिन मे एक वार खाना एक परिचित रिश्तेदार के वहाँ से मगवाकर खाते थे। गिरफ्तारी के दूसरे दिन पानी के साथ आदमियो का पेशाव मिलाकर दिया गया थोडा पानी पीने के वाद उन्हे स्वाद का मालूम हो गया तव एक परिचित भाई के द्वारा पानी मँगवाया। गर्मी के दिनो मे नहाने के लिए 21 दिन तक पानी नहीं दिया गया। एक धोती के सिवाय वाकी कपडे भी छीन लिए गए। श्री जवाहरलाल चौवीसा, मजिस्ट्रेट द्वारा धम्वोला की पाठशाला मे केस चलाया गया। पिटाई करते हुए स्कूल ले गए। मजिस्ट्रेट के सामने वयान के समय भी हथकडी नही निकाली गयी और गले, पेट और दोनो भुजाओ पर रस्सियाँ वाँधी गयी तथा कोर्ट मे वरावर मजिस्ट्रेट के सामने डडे, थप्पड और घूँसे लगते रहे। मजिस्ट्रेट ने कहा कि गवाहो के वयान हो रहे है जो कुछ कहना हो कह सकते हो। श्री पड्याजी ने कहा कि कभी मजिस्ट्रेट के सामने पिटाई और वन्धन रहा करते हैं तव मजिस्ट्रेट ने कहा कि यह मामला दूसरा है। श्रीमान जी हुजूर सा० वहादुर के राज्य, जीवन और सत्ता के खिलाफ षडयन्त्र है इसलिए ऐसा ही होगा। पड्याजी और उनके 44 साथियो ने कहा कि आपको जो कोई सजा देनी हो दे दीजिये हमे मजूर हैं।

वलात्कार, लूटमार, आगजनी और शराव पीने के झूँठे इलजाम

तव वलात्कार, कस्टम जलाना, लूटना, शराव वालो की शराव पी जाने, वकरा

मारकर खा जाने के इल्जाम लगाये । इसी दिन पड्याजी को शाम के समय बन्दूक के कुन्दो तथा लाठी से इतना पीटा गया कि वे बेहोश हो गए । उनके तथा श्री गौरीशकर उपाध्याय के मकानो मे आग लगा दी गई ।

नानाभाई खांट और कालीबाई की शहादत

इसी दिन ग्राम रास्तापाल की पाठशाला बन्द करवाने के लिए मजिस्ट्रेट, सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस और फौज पुलिस के साथ रास्तापाल गये । पाठशाला का अध्यापक व श्री नानाभाई खाट वहाँ थे । दोनो को पकड कर बेरहमी से पीटते हुए पाठशाला मे लाया जा रहा था कि नानाभाई खाट को बन्दूक का कून्दा गलत जगह लगने से मार्ग मे ही मृत्यु हो गयी । अध्यापक को मोटर से बाँध दिया तो वहाँ की भील स्त्रियो ने अधिकारियो की मोटर पर पत्थर चलाये । अध्यापक की रस्सी काली बाई नामक एक बारह वर्षीय भील छात्रा द्वारा काट दी गयी । इस पर गोलियाँ चलाई गयी तो काली बाई को कई गोलियाँ लगी और वह डूंगरपुर जाकर शहीद हो गयी । सात अन्य भील स्त्रियो को भी गोलियाँ और चोटे लगी । इन गोलियो के घायलो को डूंगरपुर पहुँचाने की व्यवस्था प्रजामण्डल द्वारा की गयी ।

मारु ढोल बज उठे

गोलियाँ चलाने पर भीलो के मारु ढोल बज उठे । जहाँ देखो वहाँ हथियारो के साथ भील लोग आ गये । राज्याधिकारी गुजरात की सीमा मे भाग गये और दूसरे दिन डूंगरपुर पहुँचे । राज्य कर्मचारियो तथा जागीरदारो का मार्गो पर चलना मुश्किल हो गया । पड्याजी और उनके साथियो का मामला भी नही चल सका और घायल अवस्था मे उन्हे भी गुजरात से होकर डूंगरपुर ले जाया गया । 144 की धारा और कर्फ्यू को भी लोगो ने नही माना । दिए गए नोटिस के अनुसार हजारो नि शस्त्र भील रात के बारह बजे डूंगरपुर मे इकट्ठे हो गए ।

भले ही सौ मरें परन्तु सौ को पालने वाला जीवित रहे

पड्याजी और उनके सभी साथी छोड दिए गए । केस उठा लिए गए । केवल 21 दिन मे अनेको अत्याचार के कार्य पहले की तरह हुए । अब पड्याजी अस्पताल घायलो को देखने के लिए गये तो वे गद्गद हो गये । उन्होने कहा कि मुझे दु:ख है कि आप सबको भीषण मार पडी और गोलियाँ लगी तब सबने कहा हम इसलिए नही रोते हैं कि हमको मार पडी, गोलियाँ लगी या हमारे लोग शहीद हुए, ये प्रेम के आँसू है । हम तो यही चाहते है कि भले ही सौ मरें लेकिन सौ को पालने वाला नही मरे । आपको जिन्दा देखकर खुशी हुई है ये खुशी के आँसू हैं ।

डूंगरपुर मे अंतरिम सरकार

दिनाक 10 नवम्बर 1947, को डूंगरपुर राज्य मे दिनांक 1 दिसम्बर 47, को

वनने वाली अतरकालीन सरकार के लिए प्रजामण्डल से भेजे जाने वाले दो व्यक्तियो को नामजद करने के लिए गठित समिति मे श्री भोगीलाल पड्या सदस्य मनोनीत किए गए उन्होने गौरीशकर उपाध्याय और भीखाभाई को मत्रिमडल मे भेजने का निर्णय लिया ।

स्वाधीनता संग्राम के अडिग सेनानी

सन् 1946-47 मे सघ के कार्यकर्ताओ पर झूठे आरोप लगाकर उनके प्रभाव को कम करने की कोशिश की गयी । राजतत्र अपने अन्तिम दिनो मे दीपक की अन्तिम लौ की तरह दमन और स्वेच्छाचारिता की ज्वालाओ के रूप मे भभक उठे राज्य द्वारा कार्यकर्ताओ का अपहरण, स्त्रियो के साथ वलात्कार, गाँव-गाँव मे लूटमार और आगजनी की घटनाएं प्रतिदिन दोहराई जाने लगी । प्रजामडल के मुकाविले मे साम्प्रदायिक तथा प्रतिक्रियावादी तत्वो को प्रोत्साहन दिया जाने लगा अपनी राज्यमत्ता को कायम रखने के नाम पर शासन ने देश भक्त जनसेवको को मार्ग से विचलित करने के लिए अनेको षड्यन्त्र रचे परन्तु इन प्रतिकूल परिस्थितियो मे और दमघोटू वातावरण मे भोगीलाल पड्या के निष्ठावान नेतृत्व मे सत्यनिष्ठ लोकसेवको का दल रियासत मे लोकतत्री परम्पराओ की स्थापना के लिए अनवरत सघर्ष करता रहा ।

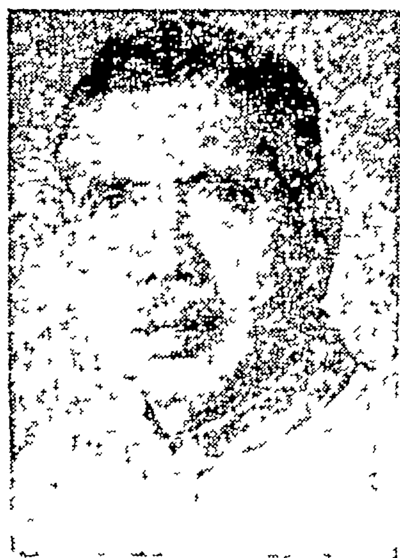
सत्ता और प्रभुता के बीच एक अनासक्त योगी

1948 के वाद राजस्थान सघ के निर्माण के वाद डूंगरपुर रियासत का भी राजस्थान सघ मे विलय हो गया और भोगीलाल पड्या राजस्थान सघ मे मत्री वनाए गए । वृहत् राजस्थान वनने के वाद वे जयनारायण व्यास के मत्रिमडल मे भी मन्त्री थे और वाद मे दो वार मुखाडिया मत्रिमडल मे भी मत्री रहे वे आजकल राजस्थान खादी ग्रामोद्योग वोर्ड के अध्यक्ष है । वे सत्ता और प्रभुता मे रहकर भी एक अनासक्त योगी की तरह ही रहे । सत्ता का पद और अभिमान आज भी उनके पास तक नही फटका है आज भी उनका एक-एक क्षण दरिद्रनारायण की सेवा के लिए सर्मापित है और वे खादी ग्रामोद्योग के द्वारा गरीवी हटाओ के कार्यक्रम को पूरा करने के लिए सर्मापित है ।

वे एक सत्यनिष्ठ, निष्ठावान और लोकसेवा के लिए पूर्णत सर्मापित गाँधी युग के एक जीवत प्रतीक हैं । उन्होने शिक्षा के माध्यम से राजनैतिक चेतना के प्रसार का जो महानतम कार्य किया है वह प्रशसनीय है ।



श्री भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी, बांसवाड़ा.



जन्म : 27, नवम्बर, 1908

जन्म और परिवार

श्री भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी के पिता श्री राम शकरजी त्रिवेदी गाँव तलवाड़ा जिला-वासवाडा (तत्कालीन रियासत) राजस्थान के रहने वाले थे। भूपेन्द्रनाथ का जन्म, उनके नाना रामलालजी भट्ट निवासी थान्दला जिला झाबुवा (तत्कालीन रियासत) मध्यप्रदेश के घर, तारीख 27 नवम्बर, 1908, को हुआ था। उनका लालन-पालन शिक्षा आदि उनके नानाजी ने ही की थी।

राजनैतिक प्रवृत्तियो की ओर झुकाव

मैट्रिक के पश्चात् भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी ने झाबुवा राज्य के ज्युडिशियल विभाग मे नौकरी कर ली। यह समय 1927 के आस पास का था। उन दिनो देश मे सरदार भगतसिंह के मुकद्दमे की जोरदार चर्चा चल रही थी। सरदार भगतसिंह पर एसेम्बली मे वम फेंकने का मुकद्दमा चल रहा था। भूपेन्द्रनाथ नित्य प्रति भगतसिंह के मामले के समाचार अखबारो मे पढने के लिये श्री कन्हैयालालजी वैद्य के पास जाया करता था। श्री वैद्यजी भी ज्यूडिशियल विभाग की उसी शाखा मे काम करते थे। राष्ट्रीय विचारो से ओत-प्रोत थे। उनके यहाँ वीर अर्जुन नामक पत्र आया करता था। भूपेन्द्रनाथ उसे भी पढता था। उसकी दिलचस्पी श्री भगतसिंह के मुकद्दमे के समाचार पढने की रहती थी। उन दिनो अखवार पढना भी राजद्रोह समझा जाता था। इस कारण अन्य राज्य कर्मचारी भूपेन्द्रनाथ की इस प्रवृत्ति को अच्छा नही समझते थे। वे भय खाते और उससे दूर रहा करते थे। श्री कन्हैयालालजी वैद्य के साथ भूपेन्द्र की घनिष्ठ मैत्री थी। इन दोनो की मैत्री मे लोग शकित रहते और राजा को इनके अखवार पढने की प्रवृत्ति की शिकायत की गई। राजा धीरे-धीरे दोनो पर नाराज हो गये और इन पर पैनी दृष्टि रखने लगे।

राजा दुराचारी एव जुल्मी प्रकृति के थे, उन्होने जनता से पैसा ऐंठने के लिए कई लोगो को पकड-पकड कर जेलो मे वन्द करवा दिया था। इसकी शिकायत पोलिटिकल एजेन्ट को भी की गई थी और जाँच के वाद राजा को पदच्युत कर राज्य का शासन तीन सदस्यो की एक कौन्सिल को सौप दिया गया था।

राजकीय सेवा से मुक्ति

राज्य का कार्य संभालने के तुरन्त वाद कौन्सिल ने रुई की निकासी पर लट्ठा नामक टैक्स लगा दिया। इस टैक्स का किसान, जनता व व्यापारी वर्ग सवने सयुक्त रूप से तीव्र विरोध किया। उन दिनो श्री वालेश्वर दयाल, थान्दला के धर्मदास जैन विद्यालय के प्रधानाध्यापक थे। राष्ट्रीय विचारो के होने के कारण जनता उनके पास सलाह-मशविरे के लिये जाया करती थी। भूपेन्द्रनाथ ने भी उनसे छिपा सम्पर्क वना लिया था। कौन्सिल के मुखियाओ तक इनकी शिकायत पहुँची और उन्हे तत्काल यह आज्ञा देकर राज्य सेवा से मुक्त कर दिया गया कि 'तुम्हारे राज्य की सेवा मे रहने से राज्य की जड़ें कमजोर होती है।'

खुले रूप से राजनैतिक क्षेत्र मे

राज्य सेवा से मुक्त होने पर भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी जन आन्दोलन मे शरीक हो गये और खुले रूप से काम करने लगे। दिन पर दिन आन्दोलन वहुत ही उग्र होता गया। राज्य ने आन्दोलन कर्त्ताओ पर मुकद्दमे चलाना तय किया। भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी पर दफा 109 का मुकद्दमा चलाया गया जिसका आशय था कि वह राज्य-द्रोही प्रवृत्तियो का प्रचार करते हैं। उनके साथ मुकद्दमे मे श्री वालेश्वरदयाल एव तीन अन्य व्यक्ति भी थे। श्री कन्हैयालालजी वैद्य पर राज्य द्रोह का दूसरा मुकदमा चलाया गया उनके साथ सर्वश्री सेठ विरधीचन्द्र सौभागमल पोरवाल, केसरीमल भण्डारी एव उदयलाल पटेल भी मुलजिम थे। आन्दोलन ने वहुत हो उग्र रूप पकडा। श्री वैद्यजी एव उनके साथियो के जेल मे आ जाने के वाद कोई आन्दोलन को देखने वाला वाहर नही वचा था। अत जेल मे वन्द इन सभी मित्रो ने तय किया कि श्री वालेश्वरदयालजी और भूपेन्द्र जेल से वाहर जाकर आन्दोलन को वढाने की दिशा मे काम करें। जेल से वाहर जाने के लिए अधिकारी पहिले ही से भूपेन्द्र एव श्री वालेश्वर दयालजी से व्यक्तिगत वाउण्ड माँग रहे थे। ये दोनो वाउण्ड लिख कर वाहर आए। यह समय 1934-35 का था। कुछ समय तो यह झावुआ आन्दोलन से जुडे रहे फिर वम्वई-खण्डवा-इन्दौर आदि स्थानो पर चले गए मित्रो से सलाह माँगी, वकीलो से मिले। झावुआ आन्दोलन के समाप्त होने पर वम्वई रहने को चले गये।

देशी राज्य लोकपरिषद् के संपर्क में

उन दिनो वम्वई मे देशी राज्य लोकपरिषद् का दफ्तर 139, मिडोज स्ट्रीट फोर्ट मे था, जहाँ से जन्मभूमि नामक दैनिक पत्र निकलता था। वहाँ भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी, श्री जयनारायणजी व्यास, श्री अमृतलाल सेठ, श्री वलवतराय मेहता, श्री निरजन शर्मा 'अजित',

श्री कन्हैयालाल कलयन्त्री, श्री मणिशकरजी त्रिवेदी, श्री सामलदास गांधी, श्री रविशकर शुक्ल आदि महानुभावो के सम्पर्क में आए। देशी राज्य लोकपरिषद् बम्बई मे रहते हुए देशी राज्यो के जुल्म-दमन के विरुद्ध बड़ी--बडी लडाइयाँ लडने की व्यवस्था करती थी। जोधपुर, बीकानेर, रतलाम, झाबुआ आदि कई राज्यो मे लडाइयाँ लडी जा रही थी। श्री कन्हैया-लालजी वैद्य और श्री जयनारायणजी व्यास के निकट सम्पर्क में रहने के कारण श्री भूपेन्द्रनाथ मध्य भारत एव राजस्थान के राज्यो की राजनैतिक गतिविधियो से सम्पर्क रखकर कार्य मे सलग्न हो गए।

सग्राम साप्तहिक के सपादक

बम्बई में रहते हुए सन् 1937-'38 में भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी का सम्पर्क श्री जयशकर जी व्यास पालोदा वालो से हुआ और उनसे आर्थिक सहयोग मिलने पर एक प्रेस की स्थापना बम्बई मे की गई। सन् 1939 मे श्री भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी ने 'सग्राम' नामक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित करना आरम्भ किया। चूँकि पत्र मे मध्यभारत एव राजस्थान के राज्यो के ही समाचार प्रकाशित हुआ करते थे, रियासतो की पुलिस और गुप्तचर विभाग के लोग पत्र को घेरे रहते थे।

बंबई मे कांग्रेस के कार्य में

बम्बई मे रहते हुए 'सी' वार्ड कांग्रेस कमेटी से श्री भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी ने अपना राजनैतिक जीवन शुरू किया। सन् 1942 के अगस्त माह मे बम्बई के गोवालिया टैंक के मैदान मे कांग्रेस कमेटी का जल्सा करने के आयोजन से श्री भूपेन्द्रनाथ सम्बन्धित थे। वे स्वय सेवक के रूप मे पण्डाल मे मच के पास तैनात किए गए थे। नेताओ की बातचीत और वातावरण से भूपेन्द्र को ऐसा लगा कि 'भारत छोडो' प्रस्ताव के पास होने के बाद अग्रेजी हुकूमत देश पर जुल्म करेगी और नेताओ को सामूहिक रूप मे पकड लेगी। 8 अगस्त की रात्रि को भारत छोडो प्रस्ताव पास हुआ। नेताओ एव महात्मा गांधी के जोशीले भाषण हुए। जोश-खरोश को लेकर रात्रि के 1 बजे बाद जनता बिखरी।

गुरुतर उत्तरदायित्व

बम्बई में दमन प्रारम्भ हुआ। उसके साथ ही सारे देश मे जुल्म-ज्यादती का चक्र घूम गया। सारे देश मे गिरफ्तारियाँ हुई। करीब 10-12 दिन तक यह पता नही लग पाया कि कौन-कौन पकडा गया है? देश को नेतृत्व कौन देगा? जनता को क्या करना है? किसी नेतृत्व की प्रतीक्षा किये बिना जनता अग्रेजी हुकूमत से बुरी तरह भिड गई। हर जोर-जुल्म का मुकाबिला किया गया। कितने ही गोलियो से उडा दिये गये कितने ही अपग हो गये। आखिर तब 15 दिन बाद पता लग सका कि श्री राममनोहर लोहिया एव श्री जय प्रकाश नारायण नही पकडे गये और जनता को नेतृत्व की तैयारियाँ चल रही थी। काम करने वाले कार्यकर्ताओ को सावधान रहना था। ठीक 20 दिन के बाद सूचना मिली कि प्रकाशन वितरण का काम श्री भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी के जिम्मे है। दो कमरो की चाबियाँ उन्हे

सौंपी गई। एक कमरे मे प्रकाशन सामग्री वितरण के लिए पहुँचती थी और दूसरे मे विस्फोटक मामग्री। इन कमगे मे सामग्री कहाँ से आती थी और कौन रख जाया करता था इसे कोई नही जानता था। लेकिन इसे जहाँ पहुँचाने का होता था वहाँ का निर्देश अवश्य साथ ही मिल जाया करता था। करीब 8–9 माह तक वह अपने जिम्मे के काम को सावधानी से करते रहे।

बंबई की जेल में

आखिर श्री भूपेन्द्रनाथ की प्रवृत्तियो का किसी तरह पुलिस को पता लग गया और उन्हे पकडने के लिए उनके प्रेस पर निगरानी रखी जाने लगी। श्री भूपेन्द्रनाथ के प्रेस पर आने जाने का समय भी पुलिस ने जान लिया। एक दिन शाम के वक्त वह हमेशा के अनुमार प्रेस मे घुसे ही थे कि पुलिस दरवाजे पर आकर खडी हो गई। प्रेस की तलाशी ली गई तो कुछ ब्लॉक निकले जिन मे डॉ० राममनोहर लोहिया के दस्तखतो से हुण्डियाँ छपी थी कि आजाद होने पर भारत इस हुण्डी का पैसा चुकायेगा। दूसरा चीन की क्रान्ति पर एक अग्रेजी पुस्तक का फर्मा छापते हुए पकडा गया था। पुलिस ने प्रेस पर सील लगायी और भूपेन्द्र को गिरफ्तार का प्रिन्सेस स्ट्रीट, पुलिस स्टेशन ले गई। काफी देर तक पूछताछ होती रही वीपन रूम मे ले जाकर भयानक हथियारो से उन्हे डराया गया आखिर कोई नतीजा नही निकला तो उन्हे वरली जेल भेज दिया गया। जेल पहुँचने वालो मे उनका नवर 3718 था उन्हे 'वी' श्रेणी मे रखा गया और एक कमरा उन्हे रहने को दिया गया। पढने की सामग्री मगवायी गई और भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी आराम से जेल मे अपना समय काटने लगे।

प्रेस मटियामेट हो गया

श्री भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी 4 महीने जेल मे रहे। उन्हे जेल से मुक्त करने के साथ ही उनके प्रेस की सील तोडकर उन्हे सौप दिया गया लेकिन इस समय तक प्रेस का सामान चूहे खराव कर चुके थे कागज सील से सड गए थे प्रेस मटियामेट हो गया था उसे पुन. चलाने के लिए फिर वहुत वडी धनराशि की व्यवस्था करना आवश्यक था देश की तत्कालीन परिस्थितियो मे त्रिवेदी जी के लिए यह सभव नही था।

भूपेन्द्रनाथ ने स्वाधीनता के सघर्ष मे वम्बई मे अपनी पहली आहूति भेंट करके अपनी मातृभूमि वॉसवाडा जाने का निश्चय किया।

वांसवाड़ा की जनता के वीच

वांसवाडा मे पूर्ण निरकुश राजतत्र चल रहा था। उनकी खादी की वेशभूषा को देखकर लोग उनमे वात करने मे हिचकिचाते। हर कदम पर पुलिस का भय वना हुआ था उन्हे घूमने फिरने और लोगो से सम्पर्क करने पर मालूम हुआ कि लोग महगाई, कन्ट्रोल-अभाव एव जोर जुल्म से दुखी थे, लेकिन राज्य के विरुद्ध आवाज उठाने की हिम्मत किसी की नही होती। उन्होंने अनुभव किया कि जनता के वीच काम करने की वहुत आवश्यकता है। भूपेन्द्रनाथ ने इम तरह घूम फिर कर मारे राज्य की स्थिति का अध्ययन

करना आरम्भ किया । परस्पर के सम्पर्क से 8–10 व्यक्तियो ने मिलकर सगठन बनाना तय किया । प्रजामण्डल बनाने की हलचल आरम्भ हुई । श्री धूलजी भाई भावसार, श्री मणिशकरजी जानी, श्री सिद्धिशकरजी झा पहले ही से इस दिशा मे प्रयत्नशील थे ।

प्रजामडल स्थापित करने की पूर्व तैयारी

एक दिन रात के समय श्री मणिलाल सोनी के मकान की तीसरी मन्जिल पर एकत्रित होने का निश्चय हुआ । इस निर्णय के अनुसार श्री व्यानिलालजी डाक्टर, श्री मोतीलालजी जडिया, श्री मणिलालजी सोनी, श्री मणिशकरजी जानी, श्री वूलजीभाई भावसार एव श्री सिद्धिशकरजी झा आदि एकत्रित हुए । निश्चय किया गया कि जनता के दिलो पर राज्य का भय छाया हुआ है, उसे मिटाया जाय, महगाई-अभाव-कन्ट्रोल के खिलाफ आवाज उठाई जाय और इस तरह प्रजामण्डल के झण्डे के नीचे जिम्मेदार हुकूमत प्राप्त करने को जनता को सगठित किया जाए । सयोग से 23 जनवरी का दिन आया और सुभाष जयन्ती मनाने के लिए सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया स्कूल के बच्चो की सहायता से खूब प्रचार हुआ और मोची वाव पर सभा की गई ।

जिम्मेदार हुकूमत प्राप्त करने की घोषणा

सभा मे लोग आये, जोशीले भाषण सुनकर जनता उत्साहित हुई । दूसरे दिन जनता की अच्छी प्रतिक्रिया देखकर काम को बढाने का उत्साह मिला । इसके बाद 26 जनवरी को पुन सार्वजनिक सभा बुलाई गई और जिम्मेदार हुकूमत प्राप्त करने के लिए घोषणा की गई । इसी बीच वम्बई से निरन्तर बुलावे आने पर भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी पुन वम्बई चले गए ।

प्रजामडल की वागडोर

वम्बई आकर भूपेन्द्र अपने को काम मे लगाने के लिए यत्नशील हो ही रहे थे कि वासवाडा से तार चिट्ठियाँ आने लगी और आग्रह किया गया कि उन्हे वहाँ मे काम को देखने के लिए पहुचाया जाए । वे पुन वासवाडा पहुचे । वहाँ मे श्री धूलजीभाई भावसार, श्री मणिशकरजी जानी, श्री चिमनलालजी मालोत, श्री शकरदवे आर्य, श्री ध्यानीलालजी डाक्टर, श्री मोतीलालजी जडीया, श्री सिद्धिशकरजी आदि कार्यकर्ता मिले और उन्होने वहाँ के काम को आगे बढाने का आग्रह किया । अत भूपेन्द्रनाथ ने वाँसवाडा मे रहकर ही प्रजामडल के काम को हाथ मे लेने का निश्चय किया ।

प्रजामडल पर प्रतिबंध

जनता का कष्टो से मुक्ति लिए, प्रजामण्डल के झण्डे के नीचे एकत्रित होने के लिए आह्वान किया गया और जन समुदाय उत्तेजित होकर प्रजामण्डल की तरफ दौड-दौड कर आने लगा । दूसरी तरफ देहातो मे भी लोग प्रजामण्डल की तरफ आने लगे । श्री दालाभगतजी व श्री देवाभगत छोटी सरवण, श्री दीपाभगत थोडी तेजपुर, श्री सुरजी

भगत खडावरा, श्री हेमता भगत वाडगुन, श्री कुवला मछार पडोली आदि ग्रामीण मुखियाओ ने प्रजामण्डल का झण्डा उठा कर सर्वत्र चेतना फैलाने की जिम्मेदारी उठाई और जनता मे जोश उत्साह के साथ जुल्म से मुक्ति पाने की तीव्र आकाक्षा जागृत हो गई। जनता की वढती जागृति को देखकर राज्य ने प्रजामण्डल की प्रवृत्तियो को दवाने का निर्णय लिया। प्रजामण्डल की सभाओ पर शहर मे प्रतिवध लगा दिया गया और धारा 144 लगा दी गई।

संगठित जनबल की पहली विजय

प्रजामण्डल के सामने एक विकट समस्या आ गई आगे क्या करना इस प्रश्न पर विचार होने लगा आखिर उन्हे उत्साहित करने के लिए निर्णय किया कि शहर की हद के वाहर सार्वजनिक सभा वुलाकर जनता को आने के लिए आह्वान किया जाय। तदनुसार वोरेराव पर सभा वुलाई गई वहाँ जनता आई पुलिस भी दलवल सहित आई उस रोज एकतत्री हुकूमत को खूब आडे हाथो लिया गया और जनता को दूसरे दिन पुन शहर के वाहर दूसरे स्थान पर आने की प्रेरणा दी गई इसमे अत्याचारी जुल्म-दमन पर उतर आये और उन्होने रात मे ही भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी को पकड कर जेल मे वद करने का निर्णय कर लिया। सुवह जल्दी श्री धूलजीभाई भावसार को उनके मकान पर जाकर पकडा और भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी गिरफ्तार कर लिए गए। इन समाचारो से सारा शहर उत्तेजित हो गया। श्री चिमनदास मालोत शहर मे निकल पडे हडताल घोषित कराई उन्हे भी पकडा गया और जनता एव पुलिस के बीच काफी तनाव पैदा हो गगा और वातावरण उग्र हो गया। जनता मे वढते जोश के आगे पुलिस ने आगे गिरफ्तारी वद करदी। सारा शहर उग्र हो गया और उसने चीफ मिनिस्टर के वगले को घेर कर गिरफ्तार कार्यकर्ताओ की रिहाई की माँग की। जनता की उग्र वृत्ति के आगे सरकारी काम ठप्प हो गया आखिर तीन दिन के कडे विरोध, हडताल, जन-वल के आगे सरकार झुकी और तीसरे दिन शाम को गिरफ्तार लोगो को छोडने की आज्ञा दे दी। यह जनता की महान् विजय थी।

वम्बई में प्रेस और पत्र की बरवादी

इससे जनता का उत्साह खूव वढा और उसने प्रजामण्डल के सगठन को घर-घर गाँव-गाँव झोपडी-झोपडी पहुचा दिया। भूपेन्द्रनाथ ने सग्राम पत्र और प्रेस का हिन्दी साहित्य के विद्वान श्री पाडे वेचन शर्मा 'उग्र' को विना कुछ लिए दिये दे देने का निर्णय लिया। और प्रेस को भी 'उग्रजी' के आग्रह के अनुसार उनके एक मित्र श्री मनोदन त्रिपाठी को सौंपा। इस तरह प्रेस-पत्र दोनो नष्ट भ्रष्ट हो गये। त्रिवेदी जी वासवाडा आकर मित्रो की सलाह से पुनः प्रजामण्डल की प्रवृत्तिया आरम्भ की। उनके स्थाई रूप से प्रजमडल का कार्य सभालने पर मित्रो ने हर्ष व्यक्त किया। वातावरण एकदम जागृत हो गया। जनता आगे के कार्यक्रम की प्रतीक्षा करने लगी।

लेवी वसूली मे आदिवासियों की गिरफ्तारी

जनता को बेगार नही करने, अत्याचारियो का मुकाबला करने तथा मुफ्त खोरो को खिलाने-पिलाने से रोक दिया गया। इससे सारे राज्य की स्थिति मे चमत्कारी परिवर्त्तन आया, बेगार से ले जाने के बण्डल जहाँ के तहाँ महिनो पडे रहने लगे मुफ्तखोर भूखो मरने लगे और जुल्मगारो के हौसलें पस्त होने लगे। नतीजा यह हुआ कि राज्य मे शासन प्रबध जैसी कोई व्यवस्था ही शेष नही बची। ऐसे समय मे केला-मेला गाँव मे लेवी वसूली के सिलसिले मे एक आदिवासी किसान के साथ पुलिस ने सख्ती का वर्ताव करने की हिम्मत की। पुलिस के बर्ताव से गाँव वाले बुरी तरह बिगडे और उन्होने पुलिस वर्ताव के खिलाफ विद्रोह का बिगुल बजा दिया। जनता का क्रोध देखकर पुलिस वहाँ से भाग खडी हुई और इधर जनता ने सोचा की पुलिस के साथ की इस टक्कर से पुलिस कोई बदले की कार्यवाही करेगी इस आशका से उन्होंने केला-मेला पाल मे जाने वाले तमाम रास्तो को चारो तरफ से बद कर दिया। बडे-बडे वृक्ष काट कर बिछा दिये गये और क्षेत्र की तमाम जनता हर तरह के मुकाबले के लिए बात की बात मे हथियारो सहित एकत्रित हो गई। समाचार लेकर श्री दोलाभगत बासवाडा आया और उसने सारी स्थिति की जानकारी दी। उस वक्त रात के 10 बज चुके थे करीब 20 मील का रास्ता पैदल जाना था। कोई व्यवस्था सवारी की भी नही थी।

सरकार से समझौता और सेना की वापसी

ऐसी स्थिति मे भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी एक-दो साथियो के साथ पैदल ही घर से निकल पडे। मार्ग मे रास्तो को अवरुद्ध करने की स्थिति को देखकर भयकर स्थिति का अनुमान हो गया था। वहाँ जाकर सबके साथ बैठकर बात की उनके विद्रोह की तैयारी को भी जाना मूल्य आका और वही बैठ कर राज्य की स्थिति की जानकारी ली तो मालूम हुआ कि राज्य के गरनावट गाँव के ठाकुर श्री मदनसिंहजी एव रेवेन्यू मिनिस्टर श्री घनश्यामदास गुप्त फौज, पुलिस एव राज्य के समस्त बल सहित स्थिति से निपटने के लिए मु गडा गाँव मे जो कि 4–5 मील दूर है आकर डटे हुए हैं। वे माही नदी पार कर पाल मे धुसने का प्रयत्न कर रहे थे कि भील जनता ने उन्हे आगे बढने से रोकने के लिए तीर एव बदूक चलाये। सरकार की ओर से भी सामना करने के प्रयत्न किये गये। लेकिन दोनो पक्ष जहाँ के तहाँ रुके रहे सरकारी पक्ष ने आगे बढने का प्रयत्न नही किया। हालात को जानने के बाद भूपेन्द्रनाथ ने तत्काल श्री घनश्यामदास गुप्त रेवेन्यू मिनिस्टर को पत्र लिखा कि बातचीत से स्थिति सुलझ सकती है। मु गडा से बढना उचित नही है। फौज पुलिस को वापस बासवाडा भिजवा दीजिये। वे मान गये और उन्होंने गरनावट ठाकुर एव श्री बशीरमुहम्मद रेन्जर को बात चीत के लिए भेजा। नदी मे वे आ रहे थे कि भीलो को सन्देह हुआ कि उनके कपडो मे शस्त्र हो सकते हैं और वे पास आकर वार न करदें इसलिए इन्हे कपडे निकाल कर ही आगे बढने दिया जाय। इस पर उन्हे पहने हुए कपडे निकाल कर आगे बढने के लिए कहा गया। इस तरह वे लोग नदी पार करके सामने के किनारे

आये और समस्त जनता के साथ त्रिवेदीजी भी वहाँ पहुचे। आमने सामने बैठकर वात आरम्भ हुई जनता की ओर से पुलिस की ज्यादतियो का हाल सुनाया गया और कहा गया कि गुनाह पुलिस का है इस कारण जनता पर वदले की कोई कार्यवाही न की जाय। आयदा के लिए पुलिस जुल्मी रवैये को त्यागे। जिन लोगो ने इतने बड़े उपद्रव को जन्म दिया उन्हे सख्त नसीहत दी जाय। वातचीत मे यह भी तय हुआ कि आदिवासियो के 5 प्रतिनिधि वासवाडा जाकर श्री मोहनसिह मेहता चीफ मिनिस्टर से खुलासा बात करले और हमेशा के लिए झगडे को निपटाये। वाँसवाडा आने वाले प्रतिनिधियो को पुलिस गिरफ्तार न करे। सब तय होने के वाद फौज पुलिस वहां से हटाली गई और आदिवासी जनता भी वापस लौट गई।

प्रधानमंत्री द्वारा प्रजामंडल की सराहना

जैसा कि तय किया गया था 2 दिन वाद श्री भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी 5 आदिवासी प्रतिनिधियो को साथ लेकर वाँसवाडा गये। श्री मोहनसिह मेहता से मिले। उनसे वातचीत हुई। भीलो के साथ उनकी वातचीत एक सहृदय व्यक्ति की तरह हुई। वे प्रसन्न हुए और उन्होंने भूपेन्द्रनाथ की कार्यवाही की भूरि-भूरि प्रशसा की तथा प्रजामण्डल ने कर्त्तव्य पूरा किया ऐसा वतलाया।

आदिवासी महिला का शौर्य

इन्ही दिनो के कुछ दिन वाद एक और दुर्घटना जगल कर्मचारी एव आदिवासियो के बीच डेरी गाँव मे घटी। जगलातियो का एक दल गश्त करता हुआ डेरी गाँव मे एक कुँए के किनारे दोपहरी विता रहा था कि कुछ महिलाए वहाँ पानी भरने को पहुची। उनके साथ किसी जगलाती ने मजाक की। महिला को बुरा लगा उसे गुस्सा आया और वास का झाकरा लेकर उससे उसने उनको पीटना शुरू कर दिया कुछ लोगो को चोटें आई, खून निकला और वे भाग खडे हुए।

जगलात विभाग के साथ प्रतिदिन का संघर्ष

जगलातियो ने वासवाडा आकर पुलिस को रिपोर्ट दी मुकदमा दर्ज रजिस्टर किया गया और पुलिस का एक दस्ता उस गाँव के लोगो को पकडने के लिए डेरी गया तो वहाँ एक परिन्दा भी नही मिला। पूरे गाँव के लोगो को भागा देखकर पुलिस दस्ते ने घेरा डाला और मुकाम कर लिया। करीब 25 दिन व्यतीत हो गये। पुलिस किसी को भी नहीं पकड सकी। एक दिन भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी घूमते-फिरते चीफ मिनिस्टर महोदय से उनके निवास स्थान पर मिलने के लिए गए और वात की वात मे डेरी गाँव की चर्चा छेडते हुए कहा कि इस प्रकार घेरा डालने से कोई परिणाम नही आने वाला है अच्छा हो कि पुलिस का घेरा हटा लिया जाय और वे गाँव के लोगो से सम्पर्क कर आपसे मिला देंगे। भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी का सुझाव उन्हे पसन्द आया वे मान गये। पुलिस घेरा डेरी से हटा दो तीन दिन बाद वे डेरी गाँव मे गये। सव लोगो को एकत्रित कर वात की और जिस

महिला से झगडा हुआ था उसे लेकर भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी आए और चीफ मिनिस्टर महोदय से उनकी चर्चा हुई जगलातियो के वर्ताव पर उन्होने खेद प्रकट किया। और आगे कोई कार्यवाही नही करने का आश्वासन देकर उन्हे लौटा दिया।

अंतरिम सरकार बनाने की दिशा में

राज्य की हालत एव जुल्म, दमन, वेगार आदि विषयो पर साहित्य प्रकाशित हुआ, उसका खूब प्रचार हुआ इससे जनता मे जागृति आ गई। प्रजामण्डल के तत्वावधान मे अधिवेशन किया गया इस अधिवेशन मे सर्व श्री जयनारायणजी व्यास, हीरालालजी शास्त्री, भूरेलालजी बया आदि महानुभाव पधारे इस अधिवेशन से सगठन को अधिक बल मिला। इस अधिवेशन मे बाबा लक्ष्मणदास जैसे अनुभवी बुजुर्ग कार्यकर्ता मिले यह प्रजामण्डल को महान् लाभ हुआ। जागृत अवस्था को देखकर राज्य ने शासन सुधारो की घोषणा की परन्तु वे अपूर्ण थी। जिम्मेदार हुकूमत की माँग पूरी नही हो रही थी फिर भी प्रजामण्डल ने घोषित सुधारों के अनुसार जो राज्य की धारा सभा बनने जा रही थी उसके लिए होने वाले चुनाव लडने का फैसला किया और धारा सभा की 45 सीटो मे से 35 जीत ली। दूसरी तरफ पूर्ण उत्तरदायी शासन का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए राज्य को टैक्स नही देने का फैसला किया इसके बाद राज्य ने प्रजामण्डल के सामने प्रस्ताव रखा कि दो मन्त्री प्रजामण्डल की ओर से राज्य मन्त्रिमण्डल मे लेंगे। पेनल भेजा जाय। चार नाम भेजे गये उनमे से श्री मोहनलालजी त्रिवेदी बी ए एल एल एव श्री नटवरलाल भट्ट एम ए को राज्य ने चुन लिया।

उत्तरदायी शासन की ओर

अभी टैक्स नही देने का आन्दोलन चल ही रहा था और राज्य के समस्त कारोबार ठप्प होते जा रहे थे। इससे महारावल साहब की प्रेरणा से एक प्रस्ताव अन्तरिम सरकार बनाने का प्रजामण्डल के समक्ष आया कि तीन मन्त्री प्रजामण्डल के रहेगे। और जागीरदारो का एक प्रतिनिधि होगा इस प्रस्ताव पर कार्यकारिणी ने विचार कर 6 नामो का पेनल भेजा। महारावल ने विचार कर तीन नाम प्रजामण्डल के पैनल से स्वीकार किये और एक नाम जागीरदारो के प्रतिनिधि के रूप मे इस तरह चार सदस्यो का मन्त्रिमण्डल घोपित हुआ।

1 श्री भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी—चीफ मिनिस्टर.
2 श्री मोहनलाल त्रिवेदी—डेवलपमेन्ट मिनिस्टर
3 श्री नटवरलाल भट्ट—रेवेन्यू मिनिस्टर
4 श्री चतरसिंह—जागीरदारो के प्रतिनिधि

घोपित सरकार ने 18 अप्रेल 1948 को चार्ज लिया।

तत्काल विधान परिपद की बैठक बुलाई गई। जनता को अधिकार देने वाले कई कानून पास किये गये।

लोकप्रिय सरकार के लोक कल्याणकारी कार्य

चन्दसागर योजना पास कर बासवाडा शहर को पीने के पानी की व्यवस्था के साथ आठ लाख रुपए मजूर कर पाँच लाख रुपया नगद नगरपालिका को देना तय कर उक्त योजना को कार्यान्वित करने के अधिकार दिये और तालाब बनाने के लिए चार लाख की आवश्यक मशीनरी मँगवा कर नगरपालिका को तालाब का काम पूरा होने के बाद सौंपने की व्यवस्था की गई। शहर की सडको एव बाँसवाडा को देहातो से जोडने के लिए सडको की आज्ञाए जारी की गयी। कॉलेज भवन को योजना के अनुसार पूरा करने की मजूरी दी गई। किसानो को जगल कानून मे परिवर्तन कर मकान बनाने तथा खेती के उपयोग की हर प्रकार की लकडी मुफ्त देने की आज्ञायें जारी की गई। खेती के विकास की एक योजना स्वीकार कर विकास का नया महकमा आयुर्वेदिक औषधियाँ बनाने का महकमा खोला गया और उसके लिए बजट मे प्रावधान रखे गये।

संघ शासन में विलय की तैयारी

प्रजामण्डल की लोकप्रिय सरकार सब कार्य आरभ कर चुकी थी कि राजस्थान के निर्माण की प्रथम सीढी सामने आयी तद्नुसार 11 राज्यो का एक सयुक्त राजस्थान कोटा मे बना जिसके राज्य प्रमुख महाराजा कोटा थे और बाँसवाडा राज्य उसमे सम्मिलित एक राज्य था। एक विलीनीकरण कार्य को आरम्भ ही नही किया था कि उदयपुर के महाराणा इसमे शामिल हुए फलस्वरूप उदयपुर को शामिल कर दूसरा सयुक्त राजस्थान बना जिसके महाराज प्रमुख महाराणा उदयपुर थे और श्री माणिक्यलाल वर्मा चीफ मिनिस्टर। इस विलीनीकरण मे बासवाडा राज्य भी था। इस परिवर्तन की वेला मे महारावल बाँसवाडा ने लोकप्रिय सरकार को भग कर अपने हाथ मे राज्य सत्ता प्राप्त कर राज्य के धन को हडप करने का इरादा किया। महारावल की इस नीति का प्रजामण्डल ने विरोध किया और उन्हे सत्ता वापस सौंपने की बात को स्वीकार नहीं किया इस पर महारावल से ऐसे समय मे झडप हो गई जो कि सक्रामक थी। ऐसे नाजुक वक्त पर राज्य के कर्मचारी त्रिवेदीजी से मिलकर सत्ता को सौप देने के उपदेश देने लगे। मत्रिमडल ने सारी स्थिति पर गभीर विचार किया और ऐसे लोगो को जो कि राजा को पुनः सत्ता दिलाने की पैरवी कर रहे थे जनता के द्रोही करार देकर उन्हे राज्य सेवा से निकाल दिया।

बाँसवाड़ा का संयुक्त राजस्थान मे विलय

समय आया और सयुक्त राजस्थान के प्रतिनिधि श्री विष्णुदत्त शर्मा को राज्य सत्ता हस्तान्तरित कर प्रजामण्डल की सरकार ने फुरसत पा ली। इन्ही दिनो स्थानीय असफल अवसरवादी स्वार्थी लोगो ने प्रजामण्डल की सरकार के विरुद्ध उन्हें बदनाम करने का बीडा उठाया और उन्हे बदनाम करने के लिये नाना प्रकार के झूठे षडयत्र रचे। अवसरवादी राजनीतिज्ञो तथा परिवर्तन की वेला मे आगे की पक्ति मे बैठने के आकाक्षी नेताओ ने भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी और उनके सहयोगियो के विरुद्ध वातावरण बनाने मे अपनी सारी शक्ति लगा दी।

संयुक्त राजस्थान के साथ भी संघर्ष की स्थिति

सत्ता हस्तान्तरित करने के वाद श्री भूपेन्द्र व उनके सब साथी मिल कर मुख्यमत्री महोदय के पास सारी स्थिति की जानकारी देने गये। उनसे समय लेकर मिले और कहा कि लोकप्रिय सरकार द्वारा स्वीकृत एव चालू किये गये कामो को पूरा कराया जाय लोकप्रिय सरकार ने जिन लोगो को राज्य सेवा से निकाल दिया है उन्हें वापस न लिया जाय और हमारे विरुद्ध कोई शिकायत हो तो हमे रु-ब-रु बैठाकर स्पष्ट कर लिया जाय परन्तु श्री-माणिक्यलाल वर्मा ने उनकी इस प्रार्थना पर ध्यान नही दिया।

प्रजामडल और लोकप्रिय सरकार के निर्णयो की उपेक्षा

लोकप्रिय सरकार द्वारा शुरू किये गये लोक हित के कामो को रोक दिया गया और उन लोगो को पुनः राज्य की नौकरी मे स्थान दिया गया जिन्हे वासवाडा की लोकप्रिय सरकार ने निकाल दिया था। श्री माणिक्यलाल वर्मा का विपरीत रुख देख कर और परिवर्तन काल को समझ कर प्रजामडल के लोग निराश हो गए। इसके वाद आगे का मार्ग तय करने के प्रश्न पर वे सब साथी वासवाडा आकर पुन मिले और विचार के पश्चात् तय किया कि क्या करें। यह तय किया गया कि मुख्यमत्री वर्माजी को वासवाडा बुलाकर सारी स्थिति वतलाई जावे। इस बीच श्री भूरेलालजी बया जो कि मन्त्रिमण्डल मे एक मत्री थे वासवाडा पधारे। उनका स्वागत किया गया और एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया। पर इसका भी कोई नतीजा नही निकला।

बांसवाड़ा की बिगडती हुई स्थिति

मुख्यमत्री वर्माजी, के विपरीत रुख से वासवाडा की स्थिति और अधिक बिगडी। केन्द्रीय सरकार को भीलो के विद्रोह करने की झूठी रिपोर्ट दी गयी और सुरक्षा के नाम पर सी आर पी के 300 से 400 जवानो को धादोल क्षेत्र मे 2½ माह तक रखा गया और गरीब जनता पर अनेक प्रकार के जुल्म ढाये गये किसी का मकान उडा दिया गया किसी की सम्पत्ति छीनी गई किसी का मकान जलाया गया। इस प्रकार सी आर पी और सरकारी अमले ने मिल कर गरीबो को खूब कुचला। इस तरह करीब एक वर्ष तक जब तक वर्माजी सत्ता मे रहे जनता पर नाना प्रकार से अविस्मरणीय अकथनीय जुल्म ढाये जाते रहे उनके शासन की समाप्ति के वाद ही वर्मा सरकार के जुल्मो से जनता को मुक्ति मिली। जिन लोगो को लोकप्रिय सरकार ने निकाल दिया था उन्हें वर्माजी ने वहाल कर वासवाडा भेजा और उन लोगो से जी खोल कर वदला लिया।



श्री अमृतलाल पायक, प्रतापगढ़.



जन्म 15 जनवरी, 1903

जन्म, बाल्यकाल और शिक्षा

श्री अमृतलाल पायक का जन्म 15 जनवरी सन् 1903 मे हुआ । सन् तीन और चार के वर्षों को, वीसवी सदी की भयकर महामारी प्लेग का उपहार मिला । प्लेग मे श्री पायक के पूज्य पिताश्री का स्वर्गवास हो गया । सन् 1918 मे, जब आप पन्द्रह वर्ष के थे वडे भाई का देहान्त हो गया । प्रथम विश्वयुद्ध के समाप्ति काल मे भारत भर मे इन्फ्लूएजा का प्रकोप हुआ । आपके भाई इस रोग के शिकार हुए तो घर मे आपको छत्र छाया देने वाला कोई न रहा । शिक्षा प्राप्ति के मार्ग मे गभीर रुकावटें आकर खडी हो गई । सन् 1924 के जुलाई मास की 21वी तारीख के दिन, आपने अपनी यत्किंचित् शिक्षा के वल पर, मन मे प्रगति और उच्च शिक्षा की कामना रखते हुए, शिक्षा आरम्भ की । सन् 1928 मे लाहौर से प्रथम श्रेणी मे मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की । 'कमाओ और पढो' का मन्त्र अपना काम करता रहा सन् 1931 मे आपने ग्वालियर राज्य की, वकालत परीक्षा मे प्रथम स्थान प्राप्त किया । निरन्तर अध्ययन एव अध्यवसाय के साथ सन् 1938 मे आपने वाम्वे वार कौंसिल द्वारा आयोजित 'एक्जामिनेशन फार एडवोकेट, अग्रेजी माध्यम से पास करके, वकालत के लिए अपने आपको योग्य उपाधि धारी, अधिकृत वकील वनाया । और इन सवके वीच चलती रही 'गाँधी–आन्दोलन' की आँधियाँ ।

प्रेरणा के श्रोत

'लाल' 'वाल' और 'पाल' जैसे महाप्रभावान नक्षत्रो के मध्य, एक अत्यन्त तेजवन्त अमृत रसवर चन्द्रमा 'गाँधी' का उदय हुआ । देश को एक नई दिशा और एक नया अस्त्र मिला । ससार के राजनैतिक आन्दोलनो को इस व्यक्ति महात्मा गाँधी ने एक

सर्वथा नई, अछूनी और अकाट्य युद्ध प्रणाली दी 'अहिंसक असहयोग'। नवयुवक श्री पायक के सवेदनशील मन मस्तिष्क पर इन समस्त घटनाओ का प्रभाव पडा। 'राष्ट्रीय स्वतन्त्रता' 'स्वदेशी आन्दोलन' और 'असहयोग' जैसे गभीर विषयो पर विचारपूर्वक मनन करने का अवसर मिला। नीव मजबूत होती रही।

राजनैतिक चेतना का उदयकाल

कालान्तर मे सन 1931 मे प्रतापगढ रियासत मे मास्टर श्री रामलाल, श्री राधावल्लभ सोमानी और श्री रतनलाल ने अभूतपूर्व उत्साह के साथ, खादी और स्वदेशी आन्दोलन आरम्भ किया। इन कार्यकर्त्ताओ को तीन-तीन मास के लिए कारावास का दड मिला। 28 वर्षीय नवयुवक वकील श्री पायक के मन मानस मे इन घटनाओ ने उथल-पुथल मचा दी। मन की सचाई ने यही प्रेरणा दी 'तुम भी कूद पडो, राष्ट्रीय कार्य मे लग जाओ। गाँधी के मार्ग पर उनके पद चिन्हो पर चलो।'

ठक्कर बप्पा की प्रेरणा से हरिजन सेवक

श्री अमृतलाल पायक भी गाँधी चेतना के इस चमत्कार से प्रभावित हुए। और सन् 1936 मे जब प्रतापगढ क्षेत्र मे ठक्कर बप्पा (पूज्यवर श्री अमृतलाल वी ठक्कर) का पदार्पण हुआ तो श्री पायक के प्रयत्न से हरिजन बालको के लिए प्रथम पाठशाला खुली। हरिजनो की सेवा ने इन्हे एक नया सतोष और आत्मिक आनन्द दिया जो भौतिक ससार की बडी से बडी सफलता मे भी मिलना मुश्किल है। दो ही वर्ष पश्चात् सन् 1938 मे ठक्कर बप्पा और श्रीमती रामेश्वरी नेहरू प्रतापगढ पधारे इस समय वे अपनी अखिल भारतीय यात्रा के कार्यक्रम को सम्पन्न करने मे व्यस्त और तल्लीन थे, किन्तु प्रतापगढ मे हरिजन सेवा के काम से उन्हें सतोष और प्रसन्नता थी अत उन्होने समय दिया। इन दिनो श्री पायक उनके और भी निकट सम्पर्क मे आए और ठक्कर बप्पा का आशीर्वाद पाकर आप हरिजन सेवक समिति प्रतापगढ के मन्त्री बने।

खादी प्रचार और गीता प्रचार

तत्कालीन विकट सामाजिक परिस्थितियो मे हरिजनो के साथ उठना बैठना अत्यन्त हेय समझा जाता था परन्तु श्री पायक, सदा के अपने बागी स्वभाव के कारण, समाज के अवरोध और असहयोग की परवाह न कर, अकेले ही मैदान मे डट गए मानो कवि गुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर के 'एकला चालो' महामन्त्र को आपने अपना लिया। फिर तो आदिवासियो के लिए भी पाठशालाए खुली। 'खादी प्रचार-सभा' की स्थापना हुई। 'गीता-प्रचार-समिति' का सगठन किया गया, क्योकि उस समय की परिस्थितियो को देखते हुए आवश्यक था कि प्रत्येक प्रकार के सगठन या सस्थान के द्वारा राष्ट्रीय जन-जागरण का कार्य गतिशील बनाया जाए। सन् 1936 मे ही, रियासती शासन के आतक का अन्त करने के लिए

श्रौर स्वतन्त्रता सग्राम की सघर्षशील शक्तियो को वेग श्रौर गति देने के लिए श्रापने व्यायामशाला की स्थापना मे भरपूर योग दिया श्रौर उसके लिए साधन जुटाए ।

भारत छोड़ो श्रान्दोलन : करो या मरो

इन श्रनेक प्रवृत्तियो श्रौर लोकसेवी कार्यो मे व्यस्त रहते हुए भी श्रौर श्राजादी की माँग का बागी नारा लगाने के कारण सर पर लटकती रियासत की नगी तलवार की छाया मे भी, श्रापने विचार, चिन्तन श्रौर श्रध्ययन कार्य नही छोडा । श्रौर देश, काल, परिस्थिति श्रौर व्यवहार के लिए श्रावश्यक श्रपने ज्ञान प्रवाह को श्रधुनातन रखा । इसका मुफल यह हुश्रा कि जब मन् 1942 मे गाँधी ने 'करो या मरो' का युद्धघोष किया तो, श्री पायक के नेतृत्व मे प्रतापगढ क्षेत्र मे स्वतन्त्रता सग्राम के सम्बन्ध मे, पूर्ण प्रचार एव जागरण का कार्यक्रम मम्पन्न किया गया श्रौर पाम पडोस की देशी रियासतो की तुलना मे प्रतापगढ के काग्रेमी कार्यकर्त्ताश्रो का कार्य किसी दृष्टि से कम न रहा । जैसा कि हम श्रागे चलकर देखेंगे इस मुदृढ नीव के कारण ही श्राजादी के वाद के 25 वर्षो मे प्रतापगढ क्षेत्र मे हमेशा गाँधी का दल या काँग्रेस पार्टी ही चुनाव मे जीतती रही ।

राजपूताना मध्यभारत देशी राज्य लोक परिषद् से संपर्क

'गाँधी' श्रौर 'गीता' इन दो शब्दो ने श्री श्रमृतलाल पायक के जीवन को श्रत्यधिक प्रभावित किया । गाँधी ने "सत्य के लिए सघर्ष" करना सिखाया श्रौर श्रपने सिद्धान्त के लिए कभी न भुकने का चमत्कार दिखाया तो गीता ने इस सघर्ष कर्म के प्रवाह मे तटस्थ खडे रहने का शक्ति मत्र दिया । यही, एक गाँधीवादी सैनिक की शक्ति का रहस्य था, एक ऐमी शक्ति का भेद, जो न तो कभी श्रसफल होती है श्रौर न ही कभी हारती है । श्री श्रमृतलाल पायक के जीवन श्रौर निर्माण मे इस शक्ति ने पूर्ण सहयोग दिया है । श्राज हम, देश के राजनैतिक कार्यकर्त्ता मे श्राचरण की उज्जवलता का जो श्रभाव देखते है, वह प्रजामण्डल के सिपाही मे नही था । प्रजामडल के सैनिक मे कर्म श्रौर चरित्र दोनो का श्रपूर्व मिश्रण हुश्रा था । श्रत· सन् 1942 की क्रान्ति के समय प्रतापगढ क्षेत्र मे भी राष्ट्रीय प्रचार कार्य वडे श्रनुशासन मे श्रौर सुमम्बद्ध रूप से किया गया । सन् 1945 मे "राजपूताना श्रौर सैण्ट्रल इडिया स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेंस" के राजनैतिक कार्यकर्त्ताश्रो से श्री पायक ने सम्बन्ध स्थापित किया । श्री माणिक्यलालजी वर्मा, मास्टर बलवन्तसिह श्रौर श्री मोहनलालजी सुखाडिया से इन्हे पर्याप्त प्रेरणा प्राप्त हुई । उन्ही दिनो श्री हीरालाल शास्त्री, श्री जयनारायण व्याम श्रौर श्री गोकुलभाई भट्ट श्रौर श्रन्य श्रनेक साथियो से श्रापको सहयोग, समर्थन श्रौर स्नेह प्राप्त हुश्रा । इसके बाद सन् 1945 मे उदयपुर नगर मे 'श्रखिल भारतवर्षीय देशी राज्य प्रजापरिषद्, का श्रधिवेशन हुश्रा तो देश के श्रनेक नेताश्रो के सम्पर्क श्रौर विचार प्रवाह मे श्री पायक को पूर्ण प्रोत्साहन प्राप्त हुश्रा । उदयपुर से प्रतापगढ लौटने पर श्रापने, श्रपने श्रन्य साथियो के साथ, "प्रतापगढ राज्य प्रजामण्डल" की स्थापना की ।

जागरण की नई लहर

फिर तो सदियो से अन्धकार मे पडे हुए, इस अभागे क्षेत्र मे जागरण की नई लहर व्याप्त हो गई। गाँधी के दीवानो ने, गाँधी के प्रकाश की मशाल हाथ मे लेकर श्री पायक के नेतृत्व मे रियासत मे गाँव-गाँव के पैदल दौरे किए। तब कहाँ थी—आज की ये सुविधाए, हमारी सडकें, जीप गाडियाँ, ये इतने साथी। उस समय तो गाँव-गाँव डगर-डगर भूखे-प्यासे पैदल घूमना पडता था। गाँव-गाँव मे राजपूतसरदारो का आतक था, मजाल थी कि कोई गाँधी की जय बोले, वन्देमातरम्' गाए या तिरगा लहराए। या कोई 'हरिजन' होकर, जूता पहनकर 'रावले की हवेली' के सामने से गुजर जाए। यद्यपि उस समय, सामन्तवाद का स्वरूप एक पतनग्रस्त शक्ति (डिकेडेंट फोर्स) के रूप मे था, फिर भी अनाचार और जुल्म अपनी पराकाष्ठा पर था।

प्रजामंडल की लोकप्रियता

प्रजामडल का कार्य दिन-दूनी प्रगति करता रहा। राजस्थान प्रान्तीय सगठन मे प्रतापगढ क्षेत्र की ओर से श्री अमृतलाल पायक और श्री चुन्नीलाल प्रभाकर प्रतिनिधि नियुक्त हुए। जब प्रान्तीय कांग्रेस की कार्यकारिणी की रचना हुई तो श्री पायक को कार्यकारिणी का सदस्य बनाया गया। श्री गोकुलभाई भट्ट अध्यक्ष बने।

लोकप्रिय मंत्रिमंडल और उत्तरदायी शासन

15 अगस्त सन् 1947, और आजादी का अमर प्रभात, स्वतन्त्रता के सूर्योदय का प्रकाश, देशी रियासतो मे भी आया। राजस्थान प्रान्तीय सगठन की प्रेरणा से प्रतापगढ रियासत मे भी उत्तरदायी शासन प्रणाली कायम करने के लिए लोकप्रिय मन्त्रिमडल बना, इसमे जनता की ओर से सर्वमान्य जन प्रतिनिधि श्री अमृतलाल पायक तथा महाराजा की ओर से श्री माणकलाल शाह मन्त्री बने।

सामंती अभिमान के दुर्गम दुर्ग ढहने लगे

श्री शाह माणकलाल और श्री अमृतलाल पायक दोनो मार्च सन् 1948 मे उत्तरदायी शासन मे मन्त्री बने। यहाँ से इस क्षेत्र की राजनीतिक स्थिति अब बडे वेग मे गतिशील होती है। प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू के मन मे देश का नक्शा बदल डालने की बेहद बेचैनी थी। वे चाहते थे कि देशी रियासतें भी, अपने सामन्ती पिछडेपन से निकल कर देश के प्रगतिशील क्षेत्रो के साथ, कदम से कदम मिलाकर चलें। कांग्रेस की लगभग 60 वर्ष की अखड सेवाओ, आजादी के लिए प्रबल सघर्ष और उच्च चरित्रवान् नेतृत्व के कारण देश की जनता गाँधी-जवाहर के मार्ग पर आँख-मूँद कर चलने को तैयार थी। अत सरदार पटेल के प्रयत्न से रियासतो का नक्शा पलटा और वे निरन्तर एक बडे परिवार का अग बनती गई। सदियो की सीमा रेखाए मिट गई। और उनके साथ, सामन्ती अन्धविश्वासो और आचारहीन अभिमान के दुर्गम दुर्ग भी ढह गए। सन् 1948 के मई मास मे फॉर्मर

राजस्थान (उदयपुर) वना। प्रतापगढ के महाराजा ने अपने लोकप्रिय मन्त्रिमडल की सलाह मानकर सहयोग दिया और रियासत का तत्काल विलयन स्वीकार किया। फिर तो प्रगति के कदम बढते ही गए। 29 मार्च, 1949, को वृहत्तर राजस्थान की स्थापना हुई, राजधानी जयपुर मे सुशोभित हुई और रियासतें मिलकर एक सव सघ वन गया।

राजस्थान विधान सभा के लिए

सन् 1952 के आम चुनाव सामने आए। प्रतापगड क्षेत्र से दो प्रतिनिधि विवानसभा के लिए चुने गए जनरल सीट पर श्री वद्रीलाल शर्मा तथा रिजर्वड सीट पर श्री मन्ना मीणा (आदिवासी)। यह श्री पायक का अथक परिश्रम और रात दिन की दौड धूप का ही नतीजा था कि ये दोनो उम्मीदवार विजयी हुए और इन दोनो की विजय के उपरान्त राजस्थान मे कांग्रेस सत्तारुढ हुई। कांग्रेस के वरिष्ठ एव वयोवृद्ध नेताओ ने श्री पायक कीसेवाओ की सदैव सराहना की है। कांग्रेस ने सन् 1957 मे श्री पायक को विवानसभा का टिकट देकर अपने क्षेत्र से खडा किया। निर्वाचन औ विजय के उपरान्त, श्री पायक ने अपनी निस्पृह वृत्ति और प्रपचवादिता से परे रहने की प्रवृत्ति के कारण, उच्च पद लेना या मन्त्री वनना नही चाहा।

राजनीति मे आकांक्षाहीन निस्पृह व्यक्तित्व

श्री अमृतलाल पायक उन लोगो मे हैं, जो दिन रात पसीना बहा कर, मार्ग वनाते हैं और जब (पक्का) मार्ग वन जाता है, तव आप अपने लिए उस मार्ग का उपयोग नही करते, उसमे लाभ उठाने की कल्पना भी नही कर सकते। वगीचा लगाते हैं और फलो का मौसम आने पर तीर्थयात्रा पर चले जाते हैं। उनके मन के गुप्तकक्ष मे एक मत्र अकित है 'सज्जन वही है, जिसकी समस्त विभूतियाँ परोपकार के निमित्त हैं। वृक्ष अपने फल नही खाते, नदी अपना जल नही पीती, सागर अपने मोतियो से स्वय शृगार नही करता।'

प्रतापगढ-कांग्रेस का गढ़

अच्छे कार्यकर्त्ता साथियो के साथ, यह श्री अमृतलाल पायक के पक्की नीव डालने का ही परिणाम है कि प्रतापगढ से विगत 25 वर्षों से कांग्रेसी विधायक विजय प्राप्त करते रहे हैं। राजस्थान मे यह कहावत प्रचलित है कि 'प्रतापगढ-कांग्रेस का गढ है।' कांग्रेस के अलावा अन्य किसी दल ने उल्लेखनीय प्रगति नही की। विरोध, केवल विरोध करने के लिए ही वना और सेवा के अभाव मे, आगे नही वढ पाया।

आदिवासियो के जीवन मे रुपांतर

आज अनेक आदिवासी युवा और युवतियाँ पढ लिख कर जीवन पथ पर आगे वढ रही हैं। अनेक एम० ए०, वी० ए० आदि उपाधियाँ प्राप्त कर चुके हैं। श्री पायक जिस वक्त प्रतापगढ अथवा उसके वडे गाँवो की सडको पर हाट-वाजार, मेले के दिन हजारो

आदिवासियो स्त्रियो, पुरुषो, बच्चो और बूढो को स्वच्छ और रग बिरगे वस्त्रो से विभूषित देखते हैं, उनके शरीर पर चांदी के आभूषण देखते हैं, उनके प्रसन्न चेहरो पर आजादी की झलक सामन्ती शोषण से मुक्ति का प्रकाश देखते हैं तो आपकी आँखो मे खुशी के आँसू भर आते हैं और सिर उठाकर गर्व पूर्वक कहते है—'यह गाँधी ने किया है।' आदिवासियो की जो सेवा श्री पायक ने की, उसने आदिवासियो को उन्नति का एक स्थायी आधार प्रदान किया। इसी प्रकार हरिजनो की सेवा का इतिहास भी महत्त्वपूर्ण है। नगरपालिका के चेयरमेन रहकर आपने वर्षों हरिजनो के उद्धार मे अपूर्व योगदान दिया।

गांधी मार्ग पर दृढ़ कदमो से चलने का संकल्प

आपने अपनी प्रवृत्तियो का प्रारम्भ हरिजन-सेवा से किया श्री ठक्कर बप्पा के साथ। दूसरे हरिजन शब्द गांधीजी के अन्त करण मे रामनाम की तरह अकित था और पायक गाँधीजी के भक्त ठहरे। वे गांधी की खादी पहन कर ही प्रसन्न होने वालो मे नही है। गाँधी के शब्द-शब्द को हृदय मे अगीकार कर, गांधीमार्ग पर दृढ कदमो से चलने का सकल्प लेकर, गाँधी की तरह सत्य को आचरण मे लाने का निष्काम कर्म करते रहना, उनकी भावना का मूलस्वरूप है।

आत्म चिन्तन में लीन कर्मशील जीवन

इस समय 70 वर्ष की आयु होते हुए भी श्री अमृतलाल पायक मे नौजवानो जैसा ही ओज और उत्साह बना हुआ है। प्रकृति और आत्मा से भले ही वे भगवद् भक्ति और आत्मचिन्तन मे तल्लीन रहते हैं पर तन, मन से जन सेवा मे लगे हुए है और अपनी क्रिया-शीलता से तथा अपने आत्मविश्वास से मिलने वालो को सम्पूर्ण शक्ति से भर देते हैं। श्री पायक मे वृद्ध पुरुषो की निराशा और निष्क्रियता है ही नही। आज भी अपनी कर्मशीलता से, ये नौजवानो को कर्मनिष्ठना का पाठ पढा सकते हैं।

जीवन की दिनचर्या

श्री पायक की दिनचर्या अत्यन्त सात्विक है। सुबह शाम कई मील का पैदल भ्रमण। नियमित गीता पाठ। पहले चर्खा भी कातते थे। फिर जीवन प्रवाह की व्यस्तता। तीसरे प्रहर नियमित रूप से कई प्रकार के दैनिक पत्रो और विविध पत्र-पत्रिकाओ का अध्ययन। सायकाल मे भोजन के पश्चात् फिर भ्रमण। वर्ष मे एक दो बार तीर्थाटन और उत्तर मे प्रकृति की गोद मे विश्राम लेते हुए विचार और चिन्तन।

श्री पन्नालाल गौरीशंकर त्रिवेदी, कुशलगढ़.



जन्म · 5 अक्टूबर, 1907.

पता : त्रिवेदी रोड़, कुशलगढ़

जन्म, शिक्षा और संस्कार

श्री पन्नालाल गौरीशकर त्रिवेदी इस समय करीब 65 वर्ष के है। उनका जन्म कुशलगढ के एक सामान्य ब्राह्मण परिवार मे हुआ। उनकी प्रारभिक शिक्षा-दीक्षा कुशलगढ मे ही हुई। शिक्षा प्राप्त करने के वाद चू कि; उनके पिता स्वर्गीय गौरीशकर त्रिवेदी विद्या व्यसनी और राष्ट्रीय विचारो के व्यक्ति थे, घर का वातावरण पूर्णतया राष्ट्रीय था अत: बालक पन्नालाल पर भी घर के सस्कारो का प्रभाव पडा और उन्होंने भी अपने पिताजी का अनुकरण करते हुए स्वदेशी का व्रत ले लिया और परिणामस्वरूप सन् 1922 से ही निरन्तर खादी पहनने लग गए।

राजकीय सेवा से देश सेवा की ओर

खादी पहनना मात्र उन दिनो मे राजद्रोह की सज्ञा मे आता था। परन्तु युवक पन्नालाल की अन्य कोई राजद्रोहात्मक प्रवृत्तियें प्रत्यक्षत· प्रकाश मे नही आई थी और इसीलिए वे कुशलगढ रियासत की राजकीय सेवा मे भी ले लिए गए थे, लेकिन 1927 मे राजस्थान सेवा सघ के अध्यक्ष श्री विजयसिंह पथिक कुशलगढ दौरे मे गए। उनके सम्पर्क मे आने के वाद श्री पन्नालाल त्रिवेदी ने सरकारी नौकरी छोड कर अपने आपको पूर्णतया देश की सेवा मे लगा दिया। उन दिनो महात्मा गाँधी के कार्यक्रम के अनुसार वे विदेशी वस्त्रो के वहिष्कार और मद्य निषेध जैसी प्रवृत्तियो मे लग गए।

वारडोली सत्याग्रह में नजरबंदी

श्री पन्नालाल त्रिवेदी, यो तो मूलरूप से कुशलगढ़ के निवासी ही हैं, कुशलगढ मे प्रजामडल को सगठित करने मे उन्होने वहुत महत्वपूर्ण कार्य किया है परन्तु उनकी प्रारभिक

राजनैतिक प्रवृत्तियो का केन्द्र स्थान सौराष्ट्र, गुजरात और कलकत्ता ही रहे। उनके राजकीय सेवा से अवकाश लेने के समय 1928 मे बारडोली में सरदार पटेल ने किसान सत्याग्रह का बिगुल बजा दिया था कुशलगढ गुजरात के नजदीक पडता है अत युवक पन्नालाल त्रिवेदी अपने आपको नही रोक सके। वे सरदार पटेल की सेवा मे जा पहुँचे और बारडोली सत्याग्रह मे सम्मिलित हो गए बारडोली मे सत्याग्रह करते समय वे नजरबद कर लिए गए और 15 दिन के बाद उन्हे रिहा किया गया।

खाराघोड़ा नमक सत्याग्रह मे

बारडोली से श्री पन्नालाल त्रिवेदी भावनगर स्थित महान् शिक्षण सस्था दक्षिण मूर्त्ति विद्या भवन पहुच गए। उस समय तक महात्मा गाँधी का डाडी कूच हो चुका था सारे देश मे नमक कानून तोडने की प्रक्रिया शुरू हो गई थी। दक्षिण मूर्ति विद्या भवन बद हो गया था और उसके आचार्य नानाभाई भट्ट के नेतृत्व मे सौराष्ट्र की वीरमगाँव छावणी मे खाराघोडा स्थान पर नमक बनाने का सत्याग्रह चल रहा था। पन्नालाल त्रिवेदी इस नमक सत्याग्रह मे निरन्तर नानाभाई भट्ट के साथ रहे।

गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद मे

गाँधी-इरविन समझौते के बाद 1931 मे देश भर मे सभी राजनैतिक वदी छोड दिए गए थे। श्री पन्नालाल त्रिवेदी 1931 मे अहमदाबाद के गुजरात विद्यापीठ मे काका कालेलकर के पास पहुँच गए वहाँ उन्होने खादी दर्शन और खादी उत्पादन की व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त की। अहमदावाद के गुजरात विद्यापीठ मे कॉंग्रेस महासमिति की बैठक हुई और श्री पन्नालाल त्रिवेदी देश के बडे-बडे नेताओ के सम्पर्क मे आए।

खेड़ा जिले मे गिरफ्तारी

महात्मा गाँधी के गोलमेज से लौटकर आने के वाद देश मे पुन 1932 मे सत्याग्रह जोरो से शुरू हो गया और श्री पन्नालाल त्रिवेदी ने महात्मा गाँधी के आदेश के अनुसार काका कालेलकर से परिव्राजक की दीक्षा ली और खेडा जिले मे सत्याग्रह के लिए चले गए वहाँ वे सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार कर लिए गए और 10 फरवरी 32 को उन्हे 5 महीने की सजा दी गई। उन्हें विलासपुर जेल मे रखा गया।

विलासपुर जेल से मुक्त होने के वाद वे पुन गिरफ्तार कर लिए गए और 19 अगस्त, '33, से 8 फरवरी, '34, तक उन्हे अहमदावाद सैण्ट्रल जेल मे वद रखा गया।

कलकत्ते में 1939 से 1944 तक

1938 में श्री पन्नालाल त्रिवेदी हरिपुरा कांग्रेस मे कार्य करते रहे हरिपुरा मे कॉंग्रेस ने यह निर्णय लिया था कि देशी रियासतों के लोग अपने स्वतत्र सगठन बनाकर रियासतों मे कार्य करें और कॉंग्रेस का उनको समर्थन रहेगा। इससे प्रेरित होकर पन्नालाल

त्रिवेदी कुशलगढ आकर अपनी रियासत मे कार्य करना चाहते थे परन्तु उनके पिता श्री का देहान्त हो जाने के कारण उन्हें कलकत्ते नौकरी करने के लिए जाना पडा 1939 से '44 तक वे कलकत्ते मे रहे, नौकरी के साथ वे कलकत्ते के भयकर अकाल मे कॉंग्रेस द्वारा आयोजित राहत कार्यों मे लगे रहे। भारत-छोडो आन्दोलन के समय वे कलकत्ते मे गिरफ्तार हो गए और राजनैतिक प्रवृत्तियो मे भाग लेने के कारण उनकी कलकत्ता की नौकरी भी छूट गई तथा उन्हें असाधारण रूप से आर्थिक नुकसान हुआ।

पुनः कुशलगढ़ के प्रजामंडल के साथ

इस समय तक कुशलगढ के कुछ उत्साही व्यक्तियो ने कुशलगढ मे प्रजामडल की स्थापना करदी थी। श्री पन्नालाल त्रिवेदी कलकत्ते से कुशलगढ लौट आए यहाँ आते ही उन्हें प्रजामडल का सबसे पहला प्रधानमत्री बनाया गया। उन्होंने सामतवाद का मुकाबिला करने के लिए जनता को जागृत और सगठित करने का बीडा उठाया उन्होने गाँव-गाँव घूम कर भीलो को सगठित किया बेगार के विरोध मे वातावरण बनाया शिक्षा प्रचार के लिए लोक मत बनाया और उत्तरदायी शासन के लिए कुशलगढ़ की जनता को जागृत किया, श्री-पन्नालाल त्रिवेदी के नेतृत्व मे कुशलगढ राज्य प्रजामडल ने चतुर्मुखी प्रगति की उन्हे लोक-नायक जयनारायण व्यास एव श्री माणिक्यलाल वर्मा का आशीर्वाद और सहयोग प्राप्त था। वे कुशलगढ प्रजामडल के माध्यम से अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजापरिषद से सबद्ध थे। देशी राज्य प्रजापरिषद के आदेश और कार्यक्रम के अनुसार वे अपनी प्रवृत्तियो का सचालन करते रहे।

राजस्थान के निर्माण के बाद श्री पन्नालाल त्रिवेदी निरन्तर 10 वर्ष तक प्रदेश कॉंग्रेस के सदस्य रहे और अखिल भारतीय कॉंग्रेस कमेटी के डेलीगेट चुने जाते रहे। वे 1948 से 1961 तक लगातार कुशलगढ नगरपालिका के 13 वर्ष तक अध्यक्ष रहे उन्होने राजस्थान स्वायत्त शासन सघ से अपने आपको सबद्ध कर लिया।

गाँधी-आश्रम की स्थापना

1948 मे उन्होने कुशलगढ के लोक नेता श्री डाडमचद दोषी के सहयोग से कुशलगढ मे गाँधी-आश्रम की स्थापना की और इस आश्रम द्वारा डूँगरपुर सेवा सघ की तरह भील क्षेत्रो मे शिक्षा का प्रचार कार्य किया उनकी प्रेरणा से भीलो मे शिक्षा का बहुत प्रचार हुआ और पहाडो तथा जगलो मे रहने वाले भील भारत में तीव्रता से घटने वाली परिवर्त्तनकारी और ऐतिहासिक घटनाओ से परिचित होते गए। कुशलगढ में गाँधी आश्रम ने भील क्षेत्रो में उल्लेखनीय कार्य किया। उन्होने जगह-जगह भीलो के लिए स्कूल की तथा छात्रावासो की स्थापना का कार्य किया। उन्होने स्थान-स्थान पर सस्कार केन्द्र खोले और भीलो को नए जमाने के नए मूल्य और मान्यताओ से परिचित कराना शुरू किया।

श्री पन्नालाल त्रिवेदी 1927 से 1948 तक स्वतत्रता सग्राम में पूरी तरह लगे

रहे इस अवधि में महात्मा गाँधी, सरदार पटेल, मोरारजी देसाई, काका कालेलकर, उमाशंकर जोशी, डॉ० राजेन्द्रप्रसाद, सुभाचन्द्र वोस, जयनारायण व्यास और माणिक्यलाल वर्मा का आशीर्वाद एव निकटतम सम्पर्क मिला, और उनके साथ रह कर उन्होंने उनकी चारित्रिक विशेपताओ को कई अशो में ग्रहण किया। उन्होंने सावरमती आश्रम, गुजरात विद्यापीठ मे रहकर राजनीति के प्रत्यक्ष पाठ पढे हैं और नैतिक मूल्यो के प्रति जो आस्था उनमें आज दिखाई दे रही है वह इन्ही आश्रमो की सवसे वडी देन है।

स्वाभिमानी मिशनरी

श्री पन्नालाल त्रिवेदी ने स्वतत्रता सग्राम में भाग लेने के लिए प्रारम्भ मे राजकीय नौकरी छोड दी थी और दुबारा 1942 में राजनैतिक प्रवृत्तियो के कारण उन्हें कलकत्ते में नौकरी से अलग कर दिया गया। उनकी आर्थिक स्थिति दिन-दिन बिगडती गई परन्तु वे एक स्वाभिमानी मिशनरी की तरह अपने काम मे लगे रहे।

साथियो का सहयोग

श्री पन्नालाल त्रिवेदी को कुशलगढ मे कुशलगढ के सभी पुराने राष्ट्रीय कार्यकर्ताओ का पूरा-पूरा सहयोग मिला है तथा उनके नेतृत्व मे कई नए-नए कार्यकर्ता राष्ट्रीय क्षेत्र में आए हैं जिन्होने श्री पन्नालाल त्रिवेदी के कधे से कधा मिला कर राज्य में उत्तरदायी शासन की स्थापना के लिए कार्य किया श्री त्रिवेदी के नेतृत्व मे प्रजामडल ने कार्यकर्ताओ को राजनैतिक दृष्टि से प्रशिक्षित भी किया है। प्रजामडल के सक्रिय और कर्मठ व्यक्तियो में सर्व श्री वर्धमान गादिया, सरफ अली वोहरा, कन्हैयालाल जैन, भँवरलाल निगम, डाडमचद डोसी, भैरूलाल तालेमरा, वापूलाल लखावत, रामाजी सोनी, रामभाऊ अग्रवाल, विनोदचद कोठारी, पन्नालाल शाह, सुजानमल मोदी, कान्तिलाल शाह, कुरियाभाई, कमजी भाई, सेदभाइ, डुरियाभाई, नरसिंह भाई रसोडी और पीया भाई आदि मुख्य हैं।

आदिवासियो की सेवा मे

इस प्रकार श्री पन्नालाल त्रिवेदी सन् 1927 से 1948 तक निरन्तर स्वतत्रता सग्राम में भाग लेते रहे हैं। देश की स्वाधीनता के वाद उन्होंने अपनी सारी शक्ति आदिवासियो के सामाजिक, आर्थिक और सास्कृतिक उत्थान में लगा दी है। और आज तक इन्ही दलित वर्गों की सेवा साधना मे रत हैं।



श्री ज्वालाप्रसाद जिज्ञासु, धौलपुर.



जन्म . कार्तिक कृष्णा 5, सवत् 1951

पता वजाज खाना, धौलपुर

प्रजामंडल के संस्थापक

श्री ज्वालाप्रसाद जिज्ञासु को सार्वजनिक क्षेत्र मे कार्य करते हुए साठ से भी अधिक वर्ष व्यतीत हो गए हैं । इनका कार्यक्षेत्र मुख्य रूप से धौलपुर (भूतपूर्व रियासत) ही रहा है । उन्होने श्री जौहरीलाल इन्दु के सहयोग से धौलपुर मे 1938 मे प्रजा मडल की स्थापना की थी और उसके बाद निरतर उत्तरदायी शासन के लिये सघर्ष करते रहे । श्री जिज्ञासुजी को प्रजामडल के सत्याग्रह के समय राज्य से निर्वासित कर दिया गया था ।

आर्य समाज से प्रारंभिक प्रेरणा

श्री ज्वालाप्रसाद जिज्ञासु राजनैतिक प्रवृत्तियो को प्रारभ करने से पहले लवे समय तक आर्य समाज की प्रवृत्तियो के साथ सलग्न रहे और उसके साथ-साथ राज्य मे बनने वाली सभी गतिशील नई सस्थाओ के साथ कार्य करते रहे ।

जन्म और परिवार

उनका जन्म आगरा जिला के ग्राम महाव मे कार्तिक कृष्णा 5, सवत् 1951, को हुआ था । उनके पिता का नाम वोहरा उदयराज और माता का नाम मथुरादेवी था । वे दोनो वडे धर्मपरायण थे । उनके पिता की आगरा जिले मे जमीदारी थी । वे वाणिज्य-व्यापार भी करते थे ।

श्री जिज्ञासु के पिता सन् 1900 मे व्यापार के सिलसिले मे धौलपुर आकर वस गए थे । श्री जिज्ञासु जी की शिक्षा-दीक्षा धौलपुर मे ही हुई थी । 1910 मे धौलपुर मे स्वर्गीय श्री यमुनाप्रसाद वर्मा ने आचार-सुधारिणी सभा की स्थापना की थी । श्री जिज्ञासु

जी अपनी किशोरवय मे ही चरित्र-निर्माण का कार्य करने वाली इस सस्था की ओर आकर्षित हुए और धौलपुर के नौजवानो मे चारित्रिक उत्थान का सदेश फैलाने लगे। श्री यमुनाप्रसाद वर्मा जिज्ञासुजी की सच्चरित्रता और निःस्वार्थ समाज सेवा की भावना से अत्यन्त प्रभावित हुए और आगे जाकर उन्हे अपना दत्तक पुत्र बना लिया।

श्री यमुनाप्रसाद वर्मा ने 1911 मे धौलपुर मे आर्यसमाज की स्थापना की। आर्य समाज ने रूढ धार्मिक और सामाजिक मान्यताओ पर करारी चोटें करनी शुरू कर दी। रुढिवादी परपराएँ डगमगाने लग गई। आर्य समाज की सभाओ का और भाषणो का प्रभाव सामान्य जनता पर तीव्रता से पडता जा रहा था। श्री जिज्ञासु आर्य समाज की प्रवृत्तियो मे अग्रगण्य रूप से भाग लेने लगे। आर्य समाज के मच से सीधी राजनीति की बातें तो नही होती थी परन्तु स्वदेशी व्रत और राष्ट्रीयता का प्रचार तो होता ही था। आर्य समाज जागरण की एक लहर लेकर आया और सभी जातियो के लोग आर्य समाज की ओर आकर्षित हो गये।

आर्य समाज के बढते हुए प्रभाव को देखकर धौलपुर नरेश और अधिकारी वर्ग चिन्तित होने लगा। उन्हे भय था कि यदि आर्य समाज का प्रभाव इसी गति से बढता गया तो यह किसी दिन राजनैतिक रूप धारण कर लेगा (बाद मे हुआ भी यही)। इसलिये अधिकारियो ने आर्य समाज के प्रत्येक कार्य मे बाधा डालना शुरू कर दिया। उनकी कुचेष्टा यहाँ तक पहुँची कि उन्होने आर्यसमाज के भवन को कब्जे मे करना चाहा। आर्य समाजियो को गुण्डो से पिटवाया जाता था, विभिन्न प्रकार की धमकियाँ दी जाती थी, सामाजिक बहिष्कार कराये जाते थे। सन् 1914 मे जब अत्याचार अपनी पराकाष्ठा को पार कर गये तब शाहपुरा नरेश श्री उम्मेदसिंह जी, राव राजा तेजसिंह जोधपुर और देशभक्त कु० चाँदकरण शारदा जी ने हस्तक्षेप करके इस मामले को निपटाया। चूँकि अधिकारी-वर्ग फिर भी आर्य समाज को मिट्टी मे मिलाना चाहता था, अत आर्य समाज ने सत्याग्रह करने की योजना बनाई। और अत मे 1918 मे ज्वालाप्रसाद जिज्ञासु के नेतृत्व मे आर्य समाज को जनता के मौलिक अधिकारो के लिए सत्याग्रह करना पडा।

इस सत्याग्रह मे सत्याग्रहियो की सख्या एक हजार से ऊपर पहुँच गई थी। कई बार श्री जिज्ञासुजी एव उनके अन्य साथियो मे, स्व० श्री जौहरीलालजी 'इन्दु', स्व० श्रीकृष्णजी, स्व० पुरोहित छीतरसिंहजी, स्व० हकीम विष्णुस्वरूपजी वैद्य और श्रीरामदयालजी आदि की गिरफ्तारियाँ हुई। अन्त मे विजय आर्य समाज को प्राप्त हुई और आर्य समाज मन्दिर अधिकारियो को खाली करना पडा।

नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना

धौलपुर मे उन दिनो प० मोलीचद शर्मा दीवान थे। उन दिनो उनके सरक्षण मे अपने साथी जौहरीलाल इन्दु के सहयोग से श्री ज्वालाप्रसाद जिज्ञासु ने नागरी प्रचारिणी

सभा की स्थापना 1934 मे की और उस सस्था के द्वारा वाचनालय, पुस्तकालयो का प्रसार करके लोगो मे साहित्यिक और सास्कृतिक अभिरुचि जगाने के अभियान चलाए ।

हरिजनोद्धार के लिए आन्दोलन

1936 मे ज्वालाप्रसाद जिज्ञासु ने राज्य भर मे हरिजनोद्धार के आन्दोलन का सचालन किया । यह आन्दोलन भी स्वतत्रता सग्राम का ही अग था । उस सयय हरिजनो की कई विशेप समस्यायें थी, उनमे प्रमुख थी किसी सवारी, ताँगा या घोडे पर बैठना जुर्म था । छाता लगाना एव कुँए पर पानी भरना जुर्म था । घर मे जो धान वनता था उसे वाजार मे वेचने पर प्रतिवन्ध था । हरिजन स्त्रियाँ अपने पैरो मे विछुआ भी नही पहन मकती थी । सामाजिक रुढिवादिता के विरुद्ध जगह-जगह प्रदर्शन और सभाए हुई । लोकमत पूरी तरह जागृत हो गया । इस आन्दोलन के फलस्वरूप अधिकारियो को समस्त माँगे स्वीकार करनी पडी । उन्ही दिनो इस आन्दोलन के कारण अधिकारियो को हरिजन वर्ग के लिये स्कूल की व्यवस्था करनी पडी ताकि उनके वच्चे पढ सके । सन् 1937 मे अधिकारियो को सार्वजनिक स्कूलो मे हरिजनो के वच्चो को दाखिल कराने और उन्हे उचित सरक्षण देने की माँग स्वीकार करने को विवश होना पडा ।

धौलपुर में प्रजामंडल की स्थापना

हरिपुरा कॉंग्रेस के वाद धौलपुर मे श्री ज्वालाप्रसाद जिज्ञासु और जौहरीलाल इन्दु ने अपने अनेक साथियो के साथ प्रजामडल की स्थापना की । आगरे के नेता श्री श्री कृष्ण दत्त पालीवाल का उन्हे इस कार्य मे वहुत सहयोग मिला । प्रजामण्डल ने उत्तर-दायी शासन की माँग की जिससे शासक वर्ग घवडा गया और भीषण दमन शुरू कर दिया । जिसकी यादे अभी तक चोटो रूप मे ताजी हैं । जव आन्दोलन ने विकट रूप धारण किया तो अधिकारियो ने वडे पैमाने पर गिरफ्तारियाँ शुरू की जिनमे श्री जिज्ञासु के ज्येष्ठ पुत्र श्री ओमप्रकाश वर्मा, रामदयालजो, केदारनाथजी, श्रीकृष्णजी, गणेशीलालजी, मनोहरलालजी, वाँकेलालजी, रामप्रसादजी, केशवदेवजी सहित अनेक वडे पैमाने पर लोगो की गिरफ्तारियाँ की गई और विभिन्न आरोगो मे वे जेल भेज दिये गये । उस समय श्री जिज्ञासु जी अपने साथियो सहित परामर्श करने आगरा गये हुए थे । आप लोगो के नाम भी वारन्ट जारी कर दिये गये थे । शासन ने जेल मे आन्दोलनकरियो को यातनाए दी, प्रलोभन दिये किन्तु इन वीरो ने सव लालचो को ठुकरा दिया ।

आगरा मे रहकर श्री जिज्ञासु जी समय-समय पर स्व० श्री जयनारायणजी व्यास, प० हरिभाऊ उपाध्याय, श्री जमनाप्रसाद रावत, स्व० श्री कृष्णदत्त पालीवाल (आगरा) आदि से दिशा-निर्देशन पाते रहे और उसी के अनुसार धौलपुर के आन्दोलन का वाहर से सचालन करते रहे । भरतपुर के श्री वावू राजवहादुरजी, प०युगलकिशोर चतुर्वेदी, मा०आदित्येन्द्रजी, श्री गोकुलजी वर्मा श्री किशनलालजी जोशी आदि से भी उन्हे पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ ।

सन् 1939-40 मे महात्मा गाँधी, सरदार पटेल और प० श्री जवाहरलाल नेहरू से भी धौलपुर की समस्याओ के सम्बन्ध मे निर्देशन और आर्शीवाद मिलता रहा। सन् 1940 मे जब स्व० श्री जौहरीलाल इन्दु निर्वासन आदेश की अवहेलना कर धौलपुर आये तो गिरफ्तार कर लिये गये और सन् 1945 मे रिहा किये गये।

1942 और 1946 के आन्दोलन

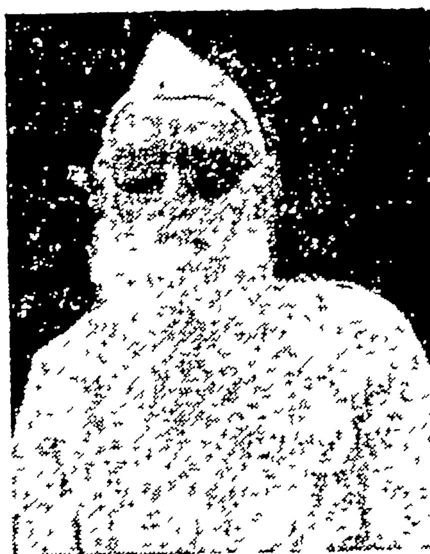
सन् 1942 का "अंग्रेजो भारत छोडो" आन्दोलन · इस आन्दोलन के साथ ही धौलपुर मे कॉंग्रेस की स्थापना हुई। जिज्ञासुजी शिरोमणि बन्धुओ आदि के साथ भूमिगत होकर कार्य करते रहे। सन् 1946 मे गाँव तखीमरे (धौलपुर) मे अधिकारियो ने कॉंग्रेस सभा पर बिना सूचना के गोली चलवा दी जिसमे दो कार्यकर्त्ता शहीद हुए।

पारिवारिक संपत्ति की हानि

इन राजनैतिक कारणो से राज्याधिकारियो ने जिज्ञासुजी के परिवार को असीम कष्ट देने शुरू कर दिये। सबसे अधिक आर्थिक हानि और कष्ट आपको तब उठाने पडे जब स्वतत्रता का सूर्य उदय हो चुका था। 10 नवम्बर सन् 1947 की रात्रि 9 बजे मेला शरद के दिन धौलपुर मे आपके ज्येष्ठ पुत्र श्री ओमप्रकाश वर्मा की दुकान को राज्याधिकारियो ने अपने सरक्षण मे लुटवा दिया, जिसमे उस समय 20,25 हजार रुपये की हानि हुई थी।



श्री क्रान्तिचन्द्र चौथाणी (पुरोहित), किशनगढ़.



जन्म : पौष, शुक्ला पूर्णिमा, सवत् 1960.

पता : मोदी मोहल्ला, किशनगढ़

किशनगढ़ के पुराने जनसेवक

श्री क्रान्तिचन्द्र चौथाणी किशनगढ की जनता के एक पुराने सेवक है। वे गांधीजी के असहयोग आन्दोलन से लगाकर 1942 की अगस्त क्रान्ति तक सक्रिय रूप से राजनैतिक प्रवृत्तियो मे लगे रहे हैं। देश की स्वाधीनता के बाद उन्होंने किसानो, मजदूरो और कर्मचारियो को सगठित करने और उनकी हित रक्षा के लिए कार्य करना शुरू कर दिया। आज 70 वर्ष की आयु मे भा वे निरन्तर क्रियाशील है और आज भी वे जनता की प्रेरणा के श्रोत बने हुए हैं।

उपकारक मंडल और सेवा समितियें

उन्होंने आज से करीब 45 वर्ष पहले किशनगढ मे उपकारक मडल की स्थापना की थी और सेवा ममितियें बनाकर अपाहिजो, असहायो, अकाल पीड़ितो व हड़ताली मजदूरो की सेवा की थी। उन्होंने लावारिस मुर्दों के जलाने का भी प्रबन्ध किया था। उनके इम तरह के प्रत्येक कार्य मे उनकी नि स्वार्थ सेवा भावना टपकती थी।

पीड़ित मानवता की सेवा

श्री क्रान्तिचन्द्र पुरोहित ने अपना जीवन एक राजनैतिक कार्यकर्त्ता के रूप मे शुरू नहीं किया। वे सबसे पहले पीडित मानवता की सेवा करने को आगे आए और आज भी उनके ममक्ष पीडित मानवता की सेवा का प्रश्न ही सबसे मुख्य है।

विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार

असहयोग आन्दोलन के ममय मे उन्होंने विदेशी वस्त्रो के बहिष्कार का आन्दोलन चलाया था। उन्हीं दिनो से उन्होंने स्वदेशी का व्रत लिया जिमे वे आज तक निवाह रहे हैं।

हरिजन सेवा के लिए

जब गांधीजी ने हरिजनो के उत्थान के लिए सारे देश की यात्रा की और हरिजनोद्धार के लिए लोकमत को जागृत किया तो श्री क्रान्तिचन्द्र पुरोहित भी पीछे नही रहे और उन्होने हरिजनो तथा पिछडी जातियो को सामाजिक न्याय दिलवाने के सम्बन्ध मे भरसक प्रयत्न किए। उन्होने हरिजनो और अनुसूचित जातियो के लिए पीने के पानी की व्यवस्था तथा उनके बच्चो के लिए शिक्षा की समुचित व्यवस्था करवाई।

विविध लोकसेवी प्रवृत्तियें

उन्होने नगर और ग्रामो की सफाई के लिए स्वय-सेवी युवको के सफाई दल गठित किए और रात को गश्त देने के लिए सुरक्षा-दल बनाए। उन्होने सक्रामक रोगो के प्रसार पर अपने जीवन की परवाह किए बिना रोगियो की दिन-रात सेवा-सुश्रूपा मे अपने को लगाए रखा, तो अग्नि, बाढ या सूखा पीडितो मे राहत की सामग्री लेकर भी पहुँचे गए। बिहार के भूकप के लिए उन्होने काम किया तो बगाल के अकाल के लिये भी पीडित मानवता के सेवा का एक भी अवसर उन्होने अपने जीवन मे नही छोडा।

पूरे परिवार पर राज्य के अत्याचार

ये सारी प्रवृत्तियें उन दिनो की है जब श्री क्रान्तिचन्द्र पुरोहित राजकीय सेवा मे थे। उनकी नि स्वार्थ सेवाओ के कारण समाज मे उनकी लोकप्रियता और उनका प्रभाव निरन्तर बढ रहा था। राज्य सरकार श्री क्रान्तिचन्द्र पुरोहित के इस बढते हुए प्रभाव को सहन नही कर सकी और उनके परिवार को आर्थिक रूप से पगु बना देने के लिए उन्हे तथा उनके बडे पुत्र को राजकीय सेवा से अलग कर दिया। उनके घर मे पहले चोरियें करवाई गई और फिर सारे घर मे आग लगवा दी गई। परन्तु श्री क्रान्तिचन्द्र पुरोहित की पत्नी श्रीमती गुलाब देवी ने परिवार की स्थिति को बहुत कुशलता से सभाला और टूटी हुई गृहस्थी मे वह हतोत्साहित नही हुई और अपने पति को कर्त्तव्य पथ पर नि स्वार्थ भाव से सेवा करने का बल देती रही।

क्रान्तिकारियो की सुरक्षा

इन्ही दिनो बगाल और मद्रास के कई भूमिगत क्रान्तिकारी अपने क्रान्तिकारी आन्दोलन का सचालन करने के लिए राजस्थान को सुरक्षित स्थान समझ कर इधर आते रहते थे। किशनगढ मे भी इन क्रान्तिकारियो का आना हुआ। स्वामी कुमारानद ने सुरक्षित स्थान समझ कर कई क्रान्तिकारियो को लबे समय चौथाणीजी के पास रखा। यद्यपि राज की पुलिस श्री क्रान्तिचन्द्र को चारो ओर से घेरे रहती थी परन्तु उसमे भी उन्होंने क्रान्तिकारियो को सदा सुरक्षित रखने की व्यवस्था की।

खादी भँडार की स्थापना

श्री क्रान्तिचन्द्र पुरोहित ही किशनगढ मे पहले व्यक्ति थे जिन्होने खादी भँडार की स्थापना करके लोगो मे खादी का प्रचार किया था। वे खादी के थान कधे पर डाल कर घर-घर जाते और लोगो को खादी पहनने की प्रेरणा देते।

प्रजामंडल की स्थापना

श्री जयनारायण व्यास और श्री .गोकुलभाई भट्ट की प्रेरणा और परामर्श से 1939 मे श्री क्रान्तिचन्द्र ने किशनगढ मे प्रजामडल की स्थापना की। उन दिनो राज्य के भय से कोई आदमी खुले रूप मे प्रजामडल मे शामिल होने को तैयार नही होते थे। उन्होने प्रारभ मे श्री जमालशाह और श्री महमूद को प्रजामडल का अध्यक्ष और मत्री वनाया और नए से नए लोगो को अपने प्रभाव से प्रजामडल के कामो मे शामिल करने के लिए प्रयत्न करते रहे।

जय-हिन्द : जेल चलो

1942 की अगस्त क्रान्ति के समय श्री क्रान्तिचन्द्र ने सभाओ और जुलूसो के द्वारा करो या मरो का सदेश सारे राज्य भर मे फैला दिया। उन्होंने लोगो के मन से जेल का भय निकालने के लिए 'उन्होने जय-हिंद . जेल चलो' का नया नारा दिया। यह नारा सारे राज्य मे वच्चे-वच्चे की जुवान पर आ गया परन्तु अगस्त क्रान्ति के समय राज्य मे कोई गिरफ्तारियें नही हुई। उन्होने प्रार्थना सभाओ के रूप मे मीटिंगे करके गाँधीजी के मिशन की सफलता के लिए सामूहिक प्रार्थनाए करवानी शुरू की। नागरिक अधिकारो के अभाव मे जन सभाए करने का उनका यह नया प्रयोग वहुत सफल रहा।

आन्दोलन और गिरफ्तारी

रियासत से जव अनाज की निकासी के आदेश हो गए तव क्रान्तिचन्द्र पुरोहित के नेतृत्व मे वरने दिए गए, आन्दोलन किया गया और मू ग निकासी के प्रश्न को लेकर क्रान्तिचन्द्र के नेतृत्व मे सत्याग्रह शुरू कर दिया गया। पुलिस ने श्री क्रान्तिचन्द्र को तथा उनके पुत्र को भारत रक्षा कानून की धारा 38 के अतर्गत गिरफ्तार कर लिया और उन पर मुकदमे चलाए। उन पर दो अभियोग लगाए गए थे जिनमे उन्हे डेढ वर्प की कैद और 400 रुपये जुर्माना हुए। लेकिन 6 मास जेल मे रहने के वाद वे रिहा कर दिए गए।

विधान सभा का गठन और प्रजामंडल का बहुमत

प्रजामडल की उत्तरदायी शासन की माँग को राज्यव्यापी समर्थन मिल रहा था। जनता की माँग से तया देश की वदलती हुई परिस्थितियो से विवश होकर राज्य मे उत्तरदायी शासन की दिशा मे कदम उठाते हुए विवानसभा की स्थापना की। सभी निहित् स्वार्थो के परस्पर गठवधन के वावजूद भी प्रजामडल को विवानसभा मे वहुमत मिला।

श्री क्रान्तिचद्र पुरोहित की पत्नी गुलाबदेवी विधान निमातृ सभा मे महिला प्रतिनिधि के रूप मे सम्मिलित की गई ।

इसी तरह से नगरपालिका भी जनता के हाथो मे आई । श्रीमती गुलाबदेवी उसमे भी महिला सदस्य थी ।

किशनगढ़ से व्यास जी का उप चुनाव

किशनगढ मे देशी राज्य लोक परिषद् की प्रातीय शाखा का अधिवेशन हुआ और देश के कई वडे-वडे नेताओ के भाषण किशनगढ मे हुए। 1952 मे स्वर्गीय श्री जयनारायण व्यास ने किशनगढ से ही उपचुनाव लडा । क्रान्तिचन्द्र पुरोहित अपने हजारो मजदूर साथियो को लेकर इस चुनाव अभियान मे व्यासजी को सफल बनाने मे लगे ।

रचनात्मक प्रवृत्तियो की ओर

श्री क्रान्तिचन्द्र पुरोहित ने राज्य की महिलाओ को जागृत और सगठित करने के लिए एक महिला-मडल की स्थापना की । उन्होने सुरसुरा ग्राम मे ग्रामोद्योग सेवाश्रम स्थापित किया और कुटीर उद्योगो को विकसित करने तथा ग्रामीणो को इन ग्राम उद्योगो का प्रशिक्षण देने का कार्य हाथ मे लिया । उन्होने कई गाँवो मे आयुर्वेदिक औषधालय और शिक्षा के लिए पाठशालाए स्थापित करवाई । वे लोगो के खाली समय के सदुपयोग के लिए गाँवो मे एक न एक नई योजना शुरू करवाते ही रहते थे ।

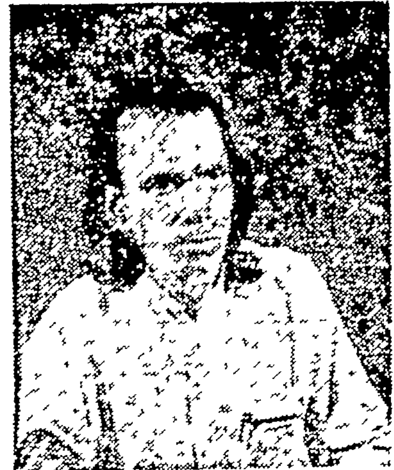
किसान, मजदूर एवं कर्मचारी कांग्रेस

श्री क्रन्तिचन्द्र पुरोहित ने किसान, मजदूर एव कर्मचारी कॉंग्रेस नाम का एक नया सगठन बनाकर उसके द्वारा ट्रेड युनियन का चतुर्मुखी काम शुरू किया । उन्होने अपने कार्यक्रम मे मजदूरो के साथ किसानो और कर्मचारियो को भी समान रूप से स्थान दिया । उनकी सस्था किसी भी तरह के शोषण के विरुद्ध आन्दोलन करने मे अग्रणी रही है ।

सत्तर वर्ष के नौजवान

इन सारी प्रवृत्तियो के सचालक और किशनगढ मे राजनैतिक चेतना जगाने वाले श्री क्रान्तिचन्द्र पुरोहित इस समय सत्तर वर्ष के है । परन्तु आज भी उनमे उत्साह और कार्यक्षमता नौजवानो के समान ही है और आज भी वे निर्भीक भाव से न्याय पक्ष का समर्थन करने के लिए वडी से वडी कुर्वानी करने को तैयार रहते हैं ।

रामचन्द्र नरहरि वापट, अजमेर.



जन्म : 5 सितम्वर, 1912

पता . एन 16/48 विनय का पत्रकार
कॉलोनी वाराणसी–1

क्रांतिकारी प्रवृत्तियों की कर्मस्थली

क्रान्तिकारी रामचन्द्र नरहरि वापट मूलरूप से महाराष्ट्र के निवासी है। लेकिन उनके पिता रेल्वे मे वर्षो तक आवू मे रहे और वाद मे अजमेर मे। रामचन्द्र वापट का जन्म भी आवू मे 5 मितम्वर, 1912, को हुआ था और उनकी शिक्षा-दीक्षा भी इसी तरह से अजमेर और आवू मे हुई और अत मे अजमेर ही उनकी क्रान्तिकारी प्रवृत्तियो की मुख्य कर्मस्थली भी रहा।

भारत मे क्रान्तिकारियो के संगठन

गाँवीजी का असहयोग आन्दोलन ठडा पडने के वाद क्रान्तिकारियो ने फिर से सगठित होने का प्रयत्न किया। 1923 ई० मे शचीन्द्र सान्याल ने उत्तर भारत मे हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोमियेशन (एच० एस० आर० ए०) की स्थापना की और क्रान्तिकारी भावना वाले नवयुवको को इस मगठन का सदस्य वनाया। वाद मे इस सगठन का नाम हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी (एच० एस० आर० ए०) रख दिया गया और चन्द्रशेखर आजाद इसमे शामिल हो गए। पजाव मे भगतसिंह, वटुकेश्वरदत्त और यतीन्द्रनाथ इसी सगठन के मदस्य थे। कुछ दिन वाद भगतसिंह ने पजाव मे नौजवान भारत सभा खडी की और उत्तरप्रदेश मे रामप्रसाद विस्मिल ने 'स्वाधीन भारत सभा' वनाई।

राजस्थान में क्रातिकारी प्रवृत्तियें

इससे पहले ही नौजवान भारत सभा के सुखदेव और एच० एस० आर० ए० के चन्द्रशेखर आजाद राजस्थान मे अपने सम्पर्क स्थापित कर चुके थे। अर्जुनलाल सेठी, विजयसिंह पथिक और केसरीसिंह वारहठ के मार्गदर्शन मे अजमेर, व्यावर, मेवाड, जयपुर, जोधपुर, कोटा, अलवर, भरतपुर आदि शहरो मे नवयुवको को क्रान्तिकारी सगठन मे लाने

के प्रयत्न किये गये । क्रान्तिकारियो का सबसे बडा केन्द्र या 'गुप्त अड्डा' अजमेर मे आना सागर के किनारे आतेड की पहाडियो के नीचे स्थापित किया गया । यह जगह ऐसी थी कि जरा भी खटका होने पर यहाँ जमा होने वाले क्रान्तिकारी फौरन इधर-उधर की पहाडियो मे बिखर जाते और अजमेर-मेरवाडा के ब्रिटिश इलाके की सीमा पार करके जयपुर या किशनगढ की रियासतो मे चले जाते । इस केन्द्र का सचालन मदनगोपाल यादव और उनके साथी रुद्रदत्त मिश्र, रामचन्द्र बापट, जगदीशदत्त शर्मा, प्रकाशदत्त भार्गव आदि करते थे । यह केन्द्र दूध की डेयरी के रूप मे काम करता था, जिसमे बहुत सी भैंसें रखी हुई थी । यहाँ क्रान्तिकारी युवको को बन्दूक, पिस्तौल और रिवाल्वर चलाने की ट्रेनिंग दी जाती थी । चन्द्रशेखर आजाद और उनके साथी गुप्त मत्रणा के लिए अक्सर यहाँ आया करते थे ।

एस० एच० आर० ए० के सक्रिय सदस्य

श्री रामचन्द्र नरहरि बापट हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी (H S R A) अर्थात् भारतीय समाजवादी जनतात्रिक सेना के सक्रिय सदस्य थे । यह क्रान्तिकारियो का वही प्रसिद्ध सगठन है जिसने सन् 1928 से सन् 1933-34 तक अपने क्रान्तिकारी कार्यों द्वारा भारत के स्वातन्त्र्य आन्दोलन के इतिहास मे अपने लिए तथा अपने प्रमुख सदस्यो के लिए स्थान बना लिया था । इसी एच० एस० आर० ए० के प्रधान सेनापति थे अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद, जो इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क मे पुलिस के साथ सघर्ष करते हुए 27 फरवरी सन् '31 को शहीद हुए थे ।

क्रांतिकारी राजनैतिक सक्रियता का पहला प्रयोग

इसी हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी का कार्यक्षेत्र मुख्यत उत्तरप्रदेश एव पजाब के साथ राजस्थान भी था । राजस्थान मे क्रान्तिकारी राजनैतिक सक्रियता का सन् '32 तक कोई परिचय नही दिया गया था । इस प्रकार की सक्रियता पहली बार दिखाई श्री रामचन्द्र नरहरि बापट ने अजमेर के अग्रेज कमिश्नर एव जेल के इन्सपेक्टर जनरल श्री गिब्सन पर सरे-आम दिन के 11 बजे अजमेर की अदालत मे गोली चलाकर ।

दिल्ली षड्यंत्र केस तथा अन्य मुकद्दमे

सन् 1930 मे पुलिस ने श्री रामचन्द्र बापट को दिल्ली षडयन्त्र केस मे सम्मिलित करके पहली बार गिरफ्तार कर लिया था लेकिन दिल्ली षडयन्त्र में सम्मिलित करने के लिए उनके विरुद्ध पुलिस के पास यथेष्ट प्रमाण न होने के कारण अजमेर से ही चोरी गई एक बन्दूक की चोरी का अभियोग उन पर लगाया गया । किन्तु जब पुलिस इसे भी प्रमाणित नही कर पाई तब उसने उन पर धारा 110 के अन्तर्गत उन्हे समाज के लिए खतरनाक बताकर मुकद्दमा कायम किया । सन् '31 की मार्च के उत्तरार्द्ध मे इस मामले मे वे जमानत पर रिहा किए गये । करीब पाँच महीने जेल मे रहकर बाहर आने के बाद श्री बापट ने स्थिति का सिहावलोकन किया । दिल्ली षडयन्त्र तथा द्वितीय

लाहौर षडयन्त्र केस मे और अन्य छिट-पुट केसो में उत्तर भारत के अधिकाश क्रान्तिकारी गिरफ्तार हो चुके थे। एच० एस० आर० ए० के प्रधान सेनापति 27 फरवरी 1931 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में पुलिस से सघर्ष करते हुए शहीद हो चुके थे। सुदूर वगाल में 18 अप्रेल 1930 को एच० एस० आर० ए० के सदस्यो द्वारा चटगाँव शस्त्रागार लूटे जाने के पश्चात् वगाल के क्रान्तिकारी आन्दोलन में नया उत्साह एव जोश अवश्य आया था किन्तु उत्तर भारत और विशेष कर राजस्थान के साथ वगाल का कोई सम्वन्ध नही रह गया था।

दल को पुनः संगठित करने का निश्चय

ऐमी स्थिति में श्री रामचन्द्र वापट के सामने प्रश्न था कि वे क्या करें। उन्होने अपने ढग से स्थानीय स्तर पर दल को पुन सगठित करने का निश्चय किया। सवसे वडी कठिनाई थी पीछा करने वाले सी० आई० डी० के होते हुए काम करने की। परिस्थितियाँ स्वय वहुत कुछ सिखाती रहती हैं। सी० आई० डी० वाधक नही हो सकती थी। सगठन को मजवूत किया गया। प्रमुख सहयोगी थे ज्वालाप्रसाद, रामसिह एव रामजी वन्धु। मगठन का कार्य प्रगति कर रहा था। शस्त्रास्त्र भी एकत्र किए जा रहे थे। प्रकट रूप मे कांग्रेस के प्रमुख नेता श्री विजयसिंह पथिक, वावा नरसिंहदास आदि के साथ भी सम्पर्क रखा जा रहा था। श्री अर्जुनलाल सेठी से पुराना सम्वन्ध था किन्तु अव प्रकट सम्पर्क जान वूझ कर टाला जा रहा था। कारण वे पुराने क्रान्तिकारी थे तथा अजमेर केन्द्र के साथ एच० एम० आर० ए० से सम्पर्क स्थापित कराने का श्रेय उनको ही था।

प्रकट राजनीति में कांग्रेस के मंच पर

उस समय प्रकट सार्वजनिक राजनीति मे भी श्री रामचन्द्र वापट सक्रिय हो गए थे। सन् '31 के अन्त मे राजस्थान कांग्रेस कमेटी के लिए वे चुनाव लडे और राजस्थान कांग्रेस कमेटी के वे मत्री भी वने। प्रकट रूप मे यह सव कुछ होते हुए भी गुप्त क्रान्तिकारी कार्य तो चल ही रहा था। धारा 11 ई के अन्तर्गत उन पर मुकद्दमा भी चल रहा था। मुकद्दमे के सम्वन्ध मे विलम्व नीति से काम लिया जा रहा था। सारा काम ठीक चल रहा था। इधर कराची कांग्रेस के पूर्व, सरदार भगतसिंह, राजगुरु एव सुखदेव को फाँसी दे दी गई। इस मवका भी प्रभाव पडा।

देवली मे वंगाल के नजरवंद क्रांतिकारियों पर अत्याचार

इस पर भी मगठन का काम शायद मद गति से चलता रहता, किन्तु इसी वीच पता लगा कि अजमेर से अस्सी मील दूर देवली मे वगाल के हिजली नजरवन्दी शिविर के नजरवन्द क्रान्तिकारियों को स्थानातरित कर वहाँ लाकर रखा गया है। इन पर अत्याचार होने लग गये थे। ऐसी स्थिति मे अजमेर के क्रान्तिकारी कैसे चुप रह सकते थे। प्रमुख क्रान्तिकारियो की वैठक हुई देवली की स्थिति का प्रत्यक्ष अध्ययन करने का निश्चय किया गया। यह कार्य स्वय वापट को ही सौंपा गया। पीछा करने वाली सी आई डी. को धोखा

देकर जयपुर-कोटा होते हुए देवली पहुँचे । दो दिन वहाँ रहकर वे नसीराबाद होते हुए अजमेर लौटे । उन्होने बताया कि देवली पहुँचना बाहर वालो के लिए किस प्रकार दुष्कर है । वहाँ किस प्रकार बाहर से आने वालो की खोजबीन होती रहती है । किस प्रकार देवली जेल के बाहर बिजली के खुले तारो का घेरा लगाया गया है आदि । बगाली नजरबन्दियो पर किस प्रकार लाठियाँ चलायी गयी आदि । कुछ बन्दियो के अनशन की भी खबरें उन्होने बतायी । सारी बातें बहुत उत्तेजक थी ।

गिब्सन पर कचहरी में गोली चलाई

गभीर मत्रणा की गयी और प्रतिकार करने का निश्चय किया गया । सुनिश्चित ढग से योजना बनी और श्री रामचन्द्र बापट 25 अप्रैल 1932 को अजमेर-मेरवाडा के इन्स्पेक्टर जनरल प्रिजन्स श्री गिब्सन पर गोली चलाने के लिए कचहरी पहुँचे जहाँ वे गिरफ्तार हो गये और उन पर भारतीय दड विधान की धारा 307 एव शस्त्र कानून के अन्तर्गत मुकदमा चला ।

राजस्थान में भी क्रांतिकारी आन्दोलन सजग

श्री बापट गिब्सन की हत्या तो नही कर सके किन्तु उन्होने सारे देश का ध्यान हिजली नजरबन्दी शिविर तथा वहाँ बगाल से लाकर रखे गये क्रान्तिकारी नजरबन्दी तथा उन पर जेल के अधिकारियो द्वारा किये गये अत्याचारो की ओर आकृष्ट किया । इस घटना ने यह भी पहली बार प्रमाणित कर दिया कि बगाल, उत्तरप्रदेश, पजाब आदि देश के अन्य भागो के साथ राजस्थान मे भी क्रान्तिकारी आन्दोलन सजग एव सक्रिय है । राजस्थान इस दिशा मे निश्चेष्ट एव निष्क्रिय है तब तक की यह सामान्य धारणा इस घटना से ध्वस्त हो गयी ।

गिब्सन पर गोली चलाने की घटना

घटना का स्वरूप इस प्रकार था कि अजमेर के कचहरी क्षेत्र मे जहां कि वहां की मुख्य अदालते थी, तथा पुलिस सुपरिण्टेण्डेंट आदि के कार्यालय थे वहा 25 अप्रैल '32 को जिला, मजिस्ट्रेट, कमिश्नर एव जेल के आई जी मिस्टर गिब्सन पुलिस सुपरिन्टेंडेंट मिस्टर लक के साथ उन्ही के कार्यालय के सामने दिन मे करीब 11 बजे बात कर रहे थे । श्री रामचद्र नरहरि बापट उनकी ओर आगे बढे और रिवाल्वर निकालकर उनकी ओर निशाना लेकर मुश्किल से आठ-दस फुट की दूरी से गोली चलाने की कोशिश की । सयोग की बात थी कि उनका रिवाल्वर ऐन मौके पर जाम हो गया । उन्होने तीन चार बार रिवाल्वर की लिबलिबी दबाई किन्तु गोली चली ही नही । दिन का ग्यारह बजे का समय और कचहरी का क्षेत्र, देखते देखते सैंकडो की भीड ने श्री बापट तथा पास मे ही खडे कोतवाल सैयद अहमद को, जो उन्हे पकडने के प्रयास मे गुत्थम-गुत्था हो रहे थे, घेर लिया । श्री गिब्सन एव श्री लक इस बीच भागकर कार्यालय मे छिप चुके थे । श्री बापट तत्काल गिरफ्तार कर लिये गये और उनकी तलाशी लेकर उन्हे थोडी देर बाद जेल भेज दिया गया । उनकी जेब मे एक वक्तव्य

था जिसमे उन्होने देवली नजरवन्दी शिविर मे वगाल से लाकर रखे गये नजरबन्दियो पर किये गये अत्याचारो के लिए श्री गिव्सन को जेल के आई जी होने के कारण जिम्मेदार वताते हुए कहा था कि इसी कारण प्रतिकार रूप उन्हे समाप्त करने का प्रयास किया गया ।

श्री वापट का वक्तव्य

वक्तव्य मे कहा गया था कि मैं जव घटना स्थल पर आया तव हर परिस्थिति का मुकावला करने के लिए तथा अपना जो कुछ भी हो उसके लिए पूर्णत तैयार होकर ही आया था । श्री वापट ने आगे अपनी योजना पर प्रकाश डालते हुए घटनास्थल एव समय के चुनाव का महत्व वताते हुए कहा कि कचहरी ही एक ऐसा स्थान है जहाँ अजमेर-मेरवाडा के मभी प्रमुख अधिकारी दो चार सौ गज के घेरे मे अपने-अपने कार्यालयो मे एकत्र होते हैं। पुलिम सुपरिन्टेडेंड, अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट तथा जिला मजिस्ट्रेट ही यहाँ मुख्य यूरोपीय अधिकारी हैं । इनमे से दो तो मेरे सामने थे ही । तीसरा भी थोडी ही दूरी पर अपने कार्यालय मे उपस्थित था । ग्यारह वजे सभी उपस्थित रहते है । कल्पना यही थी कि सभव होने पर एक स्थान पर खडे रहकर अथवा सौ दो सौ फुट के अन्दर चक्कर लगाकर जिले मे सभी मुख्य अधिकारियो का सफाया किया जा सकता है ।

प्रतिकार के लिए तैयारी

अजमेर मे क्रान्तिकारियो द्वारा कोई प्रदर्शनात्मक कार्य तव तक न किये जाने के कारण कोई सजग अथवा सतर्क नही था । ऐसी स्थिति, स्थान एव समय के चुनाव से कार्य मे आसानी होना स्वाभाविक समझा गया था । श्री वापट ने वकीलो के प्रतिनिधियो को यह स्पष्टीकरण भी दिया कि यदि कोई प्रतिकार करता तो मैं उमके लिए तैयार होकर आया था । इसलिए अपने साथ पचास कारतूस भी लाया था ताकि आवश्यकतानुसार दोनो और जमकर गोली चलती और अजमेर की यह घटना देश मे अपने ढग की अनोखी घटना होती।

10 वर्ष की सजा

अजमेर के अतिरिक्त जिला मजिट्रेट श्री डी० मा० फोर्म ने अदालत मे पेश किये गये प्रमाणो के आधार पर श्री रामचन्द्र वापट को गिव्सन पर गोली चलाने का प्रयत्न करने के अभियोग मे भारतीय दण्ड सहिता की धारा 307 के अन्तर्गत 7 वर्ष तथा शहर कोतवाल पर गोली चलाने के प्रयास के लिए 3 वर्ष का कठोर कारावास तथा विना लाइसेन्स का रिवाल्वर रखने के आरोप मे 3 वर्ष की और मजा सुनायी थी । पहली दो सजाए साथ-साथ चलने वाली थी । इम प्रकार कुल दस वर्ष की सजा 20 मई सन् 1932 के दिन श्री रामचन्द्र नरहरि वापट को मुनायी गयी ।

जन्म परिवार और शिक्षा

उस ममय श्री वापट की अवस्था वीस वर्ष साढे आठ महीने थी । उनका जन्म गुजरात की सीमा पर राजस्थान मे स्थित माउण्ट आवू के रेलवे स्टेशन आवू रोड के रेलवे

क्वार्टर्स मे हुआ था । आपके पिता श्री नरहरि आत्माराम बापट एव उनके पूर्वज महाराष्ट्र के बेलगाव जिले के थे । इसी जिले के लिए मैसूर राज्य एव महाराष्ट्र के बीच विवाद चल रहा है । आपकी माता धार नगरी की थी । श्री रामचद्र नरहरि बापट के जन्म के समय उनके पिता बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे मे काम कर रहे थे । प्रथम महायुद्ध समाप्त होते–होते उनका स्थानान्तरण अजमेर हुआ । अत बालक रामचद्र की शिक्षा अजमेर मे ही वहा के गवर्नमेट हाईस्कूल एव गवर्नमेन्ट कॉलेज मे हुई । वे इन्टर मे ही पढ रहे थे कि अपनी क्रान्तिकारी गतिविधि के कारण आपका अध्ययन समाप्त हो गया ।

जेलो में स्थानान्तरण का क्रम

दस वर्ष की सजा होने के पश्चात् सन् '33 के मार्च तक श्री रामचद्र बापट अजमेर सैण्ट्रल जेल मे ही रखे गये । फिर वहाँ से आप श्री केशवचद्र गुप्त के साथ 'बी' क्लास के बदी के रूप मे साबरमती सैण्ट्रल जेल स्थानान्तरित किये गये । कुछ ही महीनो के बाद आप 'बी' क्लास से 'सी' क्लास मे रख दिये गये । सन् '38 प्रारम्भ तक आप 'सी' क्लास मे रहे । सन् '38 मे बम्बई राज्य मे कॉंग्रेसी सरकार के गठन के पश्चात् श्री बापट को भुसावल बमकाण्ड के श्री भगवानदास माहौर तथा श्री सदाशिवराम मलकपुरकर (दोनो एच० एस० आर० ए० के सदस्य) के साथ 'बी' क्लास मे रखा गया । अजमेर मे कॉंग्रेसी सरकार न होने के कारण उन्हे देश के अन्य क्रान्तिकारियो के समान मुक्त नही किया गया । उनका 'बी' क्लास मे रखा जाना भी अस्वीकार कर दिया गया । अत. बम्बई सरकार ने उन्हे वापस अजमेर सैण्ट्रल जेल लौटा दिया । यहाँ उन्हें 'सी' क्लास मे ही रखा गया था ।

सन् 1940 में जेल से रिहाई

आखिर सन् '39 के उत्तरार्ध मे आपको कडे बन्दोबस्त मे अजमेर सैण्ट्रल जेल से आगरा सैण्ट्रल जेल भेज दिया गया । यहाँ आप अपनी लम्बी सजा काट कर सन् '40 के दिसम्बर को लगातार आठ वर्ष से भी अधिक लम्बी अवधि तक विभिन्न जेलो मे रहने के बाद मुक्त किए गए ।

18 वर्ष तक दैनिक पत्रो का सपादन और लेखन कार्य

सन् '45 मे बापटजी ने विवाह किया । वाराणसी से तब पण्डित बाबूराम विष्णु पराडकर के सम्पादकत्व मे प्रकाशित होने वाले दैनिक 'ससार' मे पत्रकार के रूप मे कार्य करना प्रारम्भ किया । उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री पडित कमलापति त्रिपाठी सन् '47 के उत्तरार्ध मे इसी 'ससार' के सम्पादक बने थे । इसी समय पराडकरजी ने 'ससार' से अवकाश ग्रहण किया तथा दो ही महीने बाद वे पुन 'आज' मे आये । सन् '50 से सन् '63 तक आपने 'आज' के अग्रलेख लेखक के रूप में काम किया । इस बीच भारतवर्ष भर मे पत्रकारिता का रूप बहुत कुछ बदल गया था । पत्रकारिता अब मिशन न रह उद्योग बन चुका था । पत्रकारिता के बदले हुए रूप मे बापटजी स्वय को ढाल न सके । फलस्वरूप सन् '63 के अप्रेल मे बापटजी को 'आज' से निलम्बित कर दिया गया ।

कलम के स्थान पर हाथों मे हथौड़ा थामा !

'ग्राज' का सम्पादकीय कार्य छोडने के लिए रामचन्द्र वापट विवश कर दिए गये थे। क्रान्तिकारी वापट ने कलम को वेचने के वजाय उसे विश्राम देना ही उचित समझा। कलम रखकर उन्होने ग्रौजार से काम करने का सकल्प किया। विगत नौ वर्ष से श्री वापट लेथ मशीन (खराद मशीन) ड्रिलिंग मशीन, मुख्यत. ग्रल्युनीनियम ग्रौर कुछ ताँवे पीतल की ढलाई ग्रादि का काम कर रहे हैं। सघर्पमय जीवन है। पूँजी नही है। प्राविधिक जानकारी नही। यह दूसरी वात है कि इस वीच उन्होने ग्रपने कार्यक्षेत्र सम्वन्धी पर्याप्त जानकारी प्राप्त कर ली है। किन्तु उससे क्या होता है। किसी का वरदहस्त नही। वर्त्तमान युग ने छोटे से छोटे तथा वडे से वडे उद्योगो को चलाने के लिए जिन विभिन्न हथकण्डो से काम लेना ग्रात्यावश्यक है उनकी पूरी जानकारी होते हुए भी श्री रामचन्द्र वापट उन्हे ग्रपनी प्रकृति के कारण काम में ला ही नही सकते।

साधना कभी व्यर्थ नही जाती, विषम परिस्थितियो के वावजूद श्री वापट ग्रपनी सत्यनिष्ठा एव तत्वनिष्ठा छोडने के लिए तैयार नही। उनका ग्रडिग विश्वास है कि साधना कभी व्यर्थ नही जाती। उनका लक्ष्य लौकिक सफलता कभी था भी नही। ग्रत. वह उन्हे यदि नही मिलती तो इसमें कौन सा ग्राश्चर्य है।



श्री ज्वाला प्रसाद शर्मा, अजमेर.

वर्त्तमान पता 25 भगवान दास रोड, जयपुर

नए युवको द्वारा नए क्रांतिकारी दल का संगठन

सन् 1930 मे श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा अजमेर के डी ए वी हाई स्कूल के विद्यार्थी थे। उनके हृदय मे क्रान्तिकारी कार्य करने की भावनाए जागृत हुई और उन्होने अपनी टोली बनाकर 'कुछ कर दिखाने' का निश्चय किया। उन्होने अपने सहपाठी राधेविहारी, धर्मेन्द्र शिवहरे, मूलचन्द, बालकिशन, हेमचन्द्र और फतहचन्द को क्रान्तिकारी सगठन मे शामिल होने के लिए तैयार किया। उन दिनो अजमेर के डाएगी विद्यालय मे जी आर. पडे विद्यार्थियो को लाठी चलाना और व्यायाम सिखाते थे। इनका क्रान्तिकारियो से सम्पर्क था। ज्वालाप्रसाद भी इनके सम्पर्क मे आये। फिर मदन गोपाल यादव ने ज्वालाप्रसाद और राधेबिहारी को एच एस आर ए के प्रमुख क्रान्तिकारी कैलाशपति से आतेड की वावडी के पास मुलाकात कराई और उन्होने इन्हे क्रान्तिकारी दल मे शामिल कर लिया। आर्य समाज के स्वामी कर्मानन्द भी इस सगठन मे योग देने लगे।

रेल्वे कारखाने का खजाना लूटने की योजना

1931 ई० मे मदन गोपाल के नेतृत्व मे रेलवे कारखाने का खजाना लूटने की योजना वनाई गई। इरादा यह था कि जव खजाने से तनख्वाहे बांटने का रुपया लिए हुये तांगा कचहरी रोड पर से गुजरे तव रामचन्द्र वापट और ज्वाला प्रसाद उसे लूट लें। लेकिन तांगे के आने मे कुछ देर हो गई इसलिये मदन गोपाल के इशारे पर वापट और ज्वाला प्रसाद वहाँ से भाग गए। ज्वाला प्रसाद को जो रिवल्वर दिया था, वह भागते वक्त मदार गेट के चौराहे पर गिर पडा, लेकिन सौभाग्य से वहाँ खडे सिपाही की निगाह उस पर नही पड़ी।

वन्दूक की चोरी

धर्मेन्द्र शिवहरे के पिता मथुराप्रसाद शिवहरे के पास वन्दूक थी। धर्मेन्द्र से

मिलकर फतहचद ने यह् वन्दूक चुराली और ज्वाला प्रसाद ने उसे एक गन्दी जगह मे छिपा दिया। वाद मे महावीर प्रसाद के हाथ यह् वन्दूक दिल्ली केन्द्र को भेज दी गई। इसी बीच दिल्ली केन्द्र से रुद्रदत्त को वुलावा आया और वह वहाँ चले गये।

मेयो कॉलेज का बम केस

इसमे पहले ज्वालाप्रसाद और उनके साथियो ने मेयो कॉलेज के जोवपुर हाउस मे विजली के मिस्त्री की कोठरी किराये पर ली और उसमे वम, हथियार, कारतूम वगैरा छिपा कर रखने लगे। वैद्य रामचन्द्र की मार्फत कारतूमो का एक डिव्बा खरीदा गया था। फतहचन्द ने उसे एक कागज मे लपेट कर इस कोठरी मे रख दिया। उस कागज पर फतहचन्द का नाम लिखा हुआ था। सयोग ऐसा हुआ कि जव मिस्त्री कही गया हुआ था, तव विजली का सामान निकालने के लिये मेयो कॉलेज के अधिकारियो ने वह कोठरी खोली और उसमे कारतूम का वह डिब्बा वरामद हुआ। पुलिस ने फतहचन्द को और मिस्त्री को गिरफ्तार कर लिया पर मुकदमा चलने पर दोनो छूट गये।

क्रान्तिकारी नवयुवको को फँसाने के लिए पुलिस ने मदार गेट के हिन्दू होटल मे वम वरामद कराया, लेकिन इसका कोई नतीजा नही निकला।

खजाने से रुपया उड़ाया

रामजीलाल अजमेर मे नाजिर के दफ्तर मे काम करते थे। ज्वालाप्रसाद ने इनसे सम्पर्क करके इन्हें अपने दल में मिलाया और नाजरात से रुपया उडाने की योजना वनाई। एक दिन जव रामजीलाल को नाजरात की 10 हजार रुपये की रकम खजाने मे जमा कराने को भेजा गया तो वह उम रुपये को लेकर फरार हो गए। यह रुपया जयपुर भेज दिया गया और पुलिस रामजीलाल को गिरफ्तार नही कर सकी।

ज्वालाप्रसाद के मार्गदर्शक और साथी

अर्जुनलाल सेठी और विजयसिह पथिक तो क्रान्तिकारियो के मार्ग-दर्शक थे। पर इनके अलावा सर्वश्री नृसिहदास (वावाजी), विद्याराम, गौरीशकर भार्गव, डॉ अम्वालाल और कपिल देव भी क्रान्तिकारियो से मिले हुए थे और समय-समय पर इनको सहायता देते रहते थे। वावाजी की प्रेरणा से माँगीलाल भी ज्वालाप्रसाद की महायता करने लगे (वाद मे माँगीलाल ने अपना नाम वदल कर रमेशचन्द्र व्यास रख लिया)। इन्ही दिनो शभुनारायण भी इनके दल मे शामिल हुआ।

वावाजी हटूडी के गाँधी आश्रम मे अपनी अलग कोठरी मे रहते थे। उनके पास वन्दूक भी थी। ज्वालाप्रसाद, मूलचन्द और हेमचन्द्र वहाँ जाकर वन्दूक चलाने का अभ्यास करते थे। वाद मे हेमचन्द्र ने अपना नाम वदल कर रामसिह रख लिया था।

शंभुनारायण द्वारा जेल मे आत्म-हत्या

गाजियावाद से एक रिवाल्वर मगवाया गया था, उसे लेने के लिए शभुनारायण

को अजमेर स्टेशन पर भेजा गया। दुर्भाग्य से प्राणनाथ डोगरा, जिसे खास तौर पर क्रान्तिकारियो को पकडने के लिए पजाव से अजमेर का डी एस पी वना कर भेजा गया था, उसी ट्रेन से उतरा। उसे शभुनारायण पर सन्देह हुआ और पुलिस ने शभुनारायण को गिरफ्तार कर लिया। कहते है कि शभुनारायण को जेल मे यत्रणाए दी गई, इससे उसने क्रान्तिकारियो के कुछ भेद खोल दिये। इस पर उसे इतना पश्चात्ताप हुआ कि उसने 5 जनवरी, 1935 ई को जेल मे फाँसी लगा कर आत्म-हत्या कर ली। दूसरे दिन जगदीश प्रसाद 'दीपक' के प्रयत्न से शभुनारायण के शव का जुलूस निकाला गया।

सरकारी भेदिये का सफाया

मध्यभारत से आये हुए एक सरकारी भेदिये ने ज्वालाप्रसाद को रिवाल्वर देकर उनका विश्वास प्राप्त किया और सीकर के एक महाजन के घर पर डाका डालने की योजना वताई। यह योजना क्रान्तिकारियो को जँच गई और ज्वालाप्रसाद को इसे पूरा करने का भार सौंपा गया। ज्वालाप्रसाद ने पहले तो उस भेदिये को सीकर रवाना किया और फिर स्वामी कर्मानन्द को मौका देखने के लिए भेजा। रास्ते मे रेल मे पुलिस के ही किसी राजपूत ने कर्मानन्द को बताया कि जिस काम के लिए वह जा रहे हैं उसमे खतरा है। कर्मानन्द सीकर न जाकर वापस आ गये और ज्वालाप्रसाद को सूचना दी। ज्वालाप्रसाद ने पथिक से सलाह करके, कर्मानन्द को जयपुर भेजा, जहाँ वह भेदिया टिका हुआ था। कर्मानन्द ने उसके सामने वहाना वनाया कि नीमच के केन्द्र से कुछ खवर आई है, इसलिए सीकर मे डाका डालने की योजना अभी स्थगित कर दी गई है। इस तरह चकमा देकर उस भेदिये को वह अजमेर बुला लाये। ज्वालाप्रसाद उसे श्रीनगर की तरफ की पहाडियो मे ले गये और जब उस पर रिवाल्वर ताना तो उसने अपना भेदिया होना कबूल कर लिया। इस पर ज्वालाप्रसाद ने रिवाल्वर से वही उसका काम तमाम कर दिया और उसका शव जमीन मे गाड दिया।

डोगरा पर वार

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, केन्द्र सरकार ने पजाव के पुलिस अफसर प्राणनाथ डोगरा को क्रान्तिकारियो पर निगाह रखने के लिए खास तौर पर अजमेर भेजा था। इसलिए क्रान्तिकारियो ने इसे मौत के घाट उतारना तय किया। यह काम ज्वालाप्रसाद और रामसिह को सौपा गया और इसके लिए 4 अप्रेल 1935 का दिन नियत किया गया। ज्वालाप्रसाद ने माँगीलाल (रमेशचन्द्र व्यास) से कहा कि डोगरा को सिनेमा दिखाने ले जाय ताकि शाम को लौटते वक्त उसे गोलियो का शिकार बनाया जाय। लौटते वक्त माँगीलाल तो घासीराम धर्मशाला मे रुक गये और डोगरा तथा उनके साथ पुलिस इन्स्पेक्टर खलीलुद्दीन गोरी साइकिलो पर आगे वढे। ज्वालाप्रसाद और रामसिह कचहरी रोड पर जनरल इन्शोरेन्स सोसाइटी के पास छिपे वैठे थे। नजदीक आते ही रामसिह ने डोगरा पर गोली चलाई जिससे वह जख्मी होकर साइकिल से गिर पडा और चिल्लाने लगा। गोरी

पर ज्वालाप्रसाद ने गोली चलाई और वह भी जख्मी होकर गिर पडा। ज्वालाप्रसाद और रामसिह दोनो तोपदडा की तरफ से वीचले की तरफ भाग गये। रामसिह को ओंकारदत्त चाडक के यहाँ छिपने का तय हुआ था, पर वे वहाँ नही पहुँचे। तव, ज्वालाप्रसाद ने उन्हें तलाश करके छिपाया और फिर उन्हे देवली कोटा होते हुए आगरा पहुचा दिया।

नजरबंदी गिरफ्तारियें और सजाएं

चूंकि माँगीलाल ही डोगरा को सिनेमा ले गये थे, इसलिए पुलिस ने उन्हे गिरफ्तार कर लिया। उधर रामसिह ने आगरा मे अपने कुछ दोस्तो के सामने डोगरा पर गोली चलाने की डीग मारी। इनमे सयुक्त प्रान्त (उत्तरप्रदेश) के डी एस पी. काशीनाथ का भतीजा भी था। उसने अपने चाचा को खवर दे दी और रामसिह को पुलिस ने पकड लिया। ज्वालाप्रसाद को भी अजमेर मे गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने रामसिह और माँगीलाल पर तो डोगरा को मारने की कोशिश का मुकदमा चलाया, पर ज्वाला-प्रसाद को पजाव क्रिमिनल अमेन्डमेन्ट एक्ट के तहत नजरवन्द कर दिया। मुकदमे मे माँगीलाल तो छूट गये पर रामसिह को 7 साल की कैद की सजा दी गई और उन्हे काला पानी (अन्डमान) भेज दिया गया। इस वीच मदनगोपाल को भी दिल्ली षडयत्र केस के सिलसिले मे गिरफ्तार करके पुलिस दिल्ली ले गयी। रुद्रदत्त वहाँ पहले ही गिरफ्तार हो चुके थे।

ज्वालाप्रसाद जेल से भागे

1942 ई के "भारत छोडो" आन्दोलन के समय ज्वालाप्रसाद जेल मे थे। कुछ दिन वाद उन्हे अन्य राजनैतिक नजरवन्दो के साथ ही रहने की अनुमति दे दी गई। यहाँ उन्होने दुर्गाप्रसाद चौधरी और चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय की सहायता से जेल से भागने की योजना वनाई। इससे पहले भी उन्होने एक वार जेल से भागने का प्रयत्न किया था, पर पकडे गये थे और उन्हे काल कोठरी मे वन्द कर दिया गया था। इस वार वह और रघुराजसिह जेल से भागने मे सफल हो गये और जब तक भारत स्वाधीन नहीं हो गया तव तक जयपुर, वम्वई, इन्दौर आदि मे छिपे रहे और पुलिस की पकडाई मे नही आये। इन्दौर मे वह प्रकाशचन्द्र सेठी के यहाँ रहे, जो आजकल मध्य प्रदेश के मुख्यमत्री है।

क्रांतिकारी संगठन खत्म हो गया

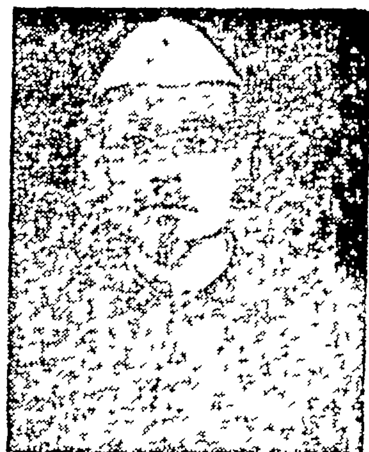
ज्वालाप्रसाद, मदनगोपाल और रुद्रदत्त की गिरफ्तारियो के वाद अजमेर मे क्रान्तिकारी सगठन खत्म हो गया और जेलो से छूटने के वाद ये लोग, तथा वाहर रहे अन्य क्रान्तिकारी नवयुवक अपने-अपने काम-धन्धो मे लग गये। ज्वालाप्रसाद कांग्रेस की राजनीति मे कूद पडे। पथिक अजमेर छोडकर आगरा चले गये। अर्जुनलाल सेठी का 1941 मे देहान्त हो गया।

राजस्थान में
स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी

स्वतंत्रता के संदेश वाहक
सत्याग्रही और
स्वातंत्र्य सैनिक

अजमेर

स्व० मौलाना अब्दुल शकूर, अजमेर.



जन्म : सन् 1912

मौलाना अब्दुल शकूर अजमेर मे राष्ट्रीय विचारधारा के अग्रगण्य मुस्लिम नेता थे। उनका जन्म एक सामान्य मुस्लिम परिवार मे अजमेर मे, सन् 1912 मे हुआ था। वे उर्दू, अरबी और हिन्दी भाषा के विद्वान थे।

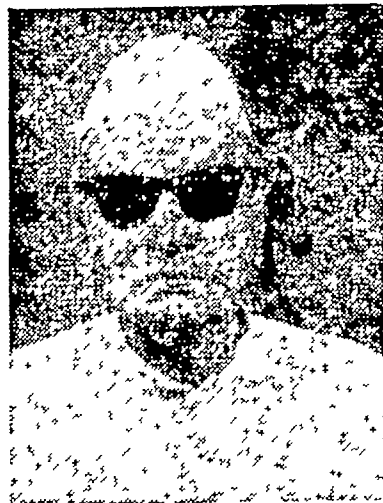
मौलाना अब्दुल शकूर पर महात्मा गाँधी की विचारधारा का बहुत गहरा प्रभाव था। उन्होने शुरू से ही स्वदेशी का व्रत ले रखा था। वे एक सच्चरित्र, ईमानदार और कर्त्तव्यनिष्ठ कार्यकर्त्ता थे और देश की स्वाधीनता के लिए चलाए गए हर राष्ट्रीय आन्दोलन मे उन्होने बहुत उत्साह से भाग लिया।

वे एक सुलझे हुए लेखक और अत्यन्त प्रभावशाली वक्ता थे। उन्होने प्रेस और प्लेटफॉर्म—दोनो से अंग्रेजी राज की समाप्ति के लिए जनमत को जगाने का बहुत बडा काम किया था। उन्होने वर्षो तक दिल्ली के उर्दू दैनिक 'असजयमात' नामक पत्र के सम्पादकीय विभाग मे कार्य किया था। राजपूताने की अनेको रियासतो मे आन्दोलन के समय और चुनाव के समय भाषण देने के लिए उन्हे विशेष रूप से अजमेर से बुलाया जाता था।

1942 की अगस्त क्रान्ति के भारत छोडो आन्दोलन मे उन्हे भारत रक्षा कानून की धारा 27 (1) (बी) के अन्तर्गत 9 अगस्त, '42 को 3 वर्ष की सजा दी गई थी जिसमे से 2 वर्ष 5 महीने की सजा भुगतकर वे 9 जनवरी, '45 को जेल से रिहा हुए थे।

वे अजमेर से राज्य सभा के लिए सदस्य चुने गए थे। पिछले वर्षो मे उनका अवसान हो गया। उनके पीछे उनकी पत्नी, तीन पुत्र और तीन पुत्रियें हैं।

डाक्टर अम्बालाल शर्मा, अजमेर.



जन्म . संवत् 1948

स्वतंत्रता संग्राम में विशिष्ठ योगदान

स्वतत्रता सग्राम मे प्रत्यक्ष रूप से डाक्टर अम्बालाल शर्मा ने बहुत कम भाग लिया है। लेकिन राजस्थान मे स्वतत्रता के लिए होने वाला ऐसा कोई आन्दोलन नही है जिसमे डाक्टर साहब का योगदान नही रहा हो अथवा प्रान्त का ऐसा कोई महान् देशभक्त नही था जिसको डाक्टर साहब ने उसका मिशन पूरा करने मे पूरा-पूरा सहयोग और सहायता नही दी हो। स्वाधीनता सग्राम मे डाक्टर अम्बालाल का योगदान एक विशिष्ठ महत्व रखता है।

क्रान्तिकारियो के सम्पर्क में

डाक्टर अम्बालाल का जन्म विक्रम सवत् 1948 (सन् 1891) मे उदयपुर मे हुआ। सन् 1910 मे डाक्टर अम्बालाल डाक्टरी शिक्षा प्राप्त करने इन्दौर पहुँचे। वही वे महान् देशभक्त अर्जुनलाल सेठी और क्रान्तिकारी केसरीसिंह बारहठ के सपर्क मे आए। सेठीजी के कारण डाक्टर अम्बालाल को कई भूमिगत क्रान्तिकारियो के सपर्क मे आने का अवसर मिला।

माइकेल ओडायर के लिए बम बनाने की तैयारी

अपनी डाक्टरी की पढाई के समय ही उन्होने अपने कुछ मित्रो के साथ बम और विस्फोटक बनाने शुरु कर दिए थे। उनका उद्देश्य था कि क्रान्तिकारियो के सबसे बडे शत्रु माइकेल ओडायर को मौत के घाट उतारा जाए। लेकिन यह योजना पार नही पड सकी। श्री केसरीसिंह बारहठ की कई योजनाओ को क्रियान्वित करने मे डाक्टर साहब अपने विश्वासी सहपाठियो के साथ वर्षों तक कार्यरत रहे थे।

उदयपुर से अजमेर

सन् 1914 मे डाक्टरी पास करके डाक्टर अम्बालाल शर्मा उदयपुर आ गए । यहाँ कुछ मित्रो से मिलकर उन्होने प्रताप-सभा की स्थापना की और उसके मच से राष्ट्रीयता का प्रचार करने लगे । डाक्टर साहब का सपर्क यहाँ सर्वश्री विजयसिंह पथिक और माणिक्यलाल वर्मा से हो चुका था । फरारी के दिनो मे स्व० माणिक्यलाल वर्मा दिन मे गाँवो मे प्रचार करते और रात को डाक्टर साहब के पास रात बिताते । उदयपुर के प्राइम मिनिस्टर सर सुखदेव ने उनके विरुद्ध सख्त कदम उठाने का निश्चय कर लिया था । वह मौके की ताक मे ही थे कि डाक्टर साहब ने राजकीय सेवा से त्यागपत्र दे दिया । वे अजमेर चले आए ।

राजस्थान सेवा संघ के साथ

अजमेर मे उनका सपर्क राजस्थान सेवा सघ से हो गया । स्व० विजयसिंह पथिक के वे अत्यन्त विश्वासी साथी बन गए । सघ ने समय-समय पर डाक्टर साहब को अन्य राज्यो मे जाँच करने अथवा रिपोर्ट तैयार करने के लिए भेजा । भीरी, धौलपुर, सिरोही आदि गोलीकाडो की जाँच और रिपोर्ट डाक्टर साहब ने ही तैयार की थी ।

क्रान्तिकारी कार्यों म सहयोग

वही वे महान् क्रान्तिकारी खरवा के राव गोपालसिंह और स्वामी कुमारानद के सपर्क मे आए और राजस्थान मे होने वाले सभी क्रान्तिकारी कार्यों मे अपनी बुद्धि, प्रतिभा और हृदय से साथ देने लगे ।

बिजोलियाँ के सामने उदयपुर राज्य का दमन जब असफल हो गया तब राजपूताने के तत्काल ए जी जी सर नार्ज ओगलवी ने राजपूताने की दूसरी रियासतो को आन्दोलन की आग से बचाने के लिए एक गोलमेज कॉन्फ्रेंस की । वह कॉन्फ्रेंस डाक्टर अम्बालाल शर्मा के औषधालय मे ही हुई । उसमे सघ की ओर से पथिकजी व चौधरीजी उदयपुर राज्य की ओर से रमाकात मालवीय और पोलिटिकल विभाग की ओर से गोविन्दप्रसाद कौशिक ने भी भाग लिया ।

देशभक्तों की तन-मन-धन से सहायता

स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान डाक्टर साहब ने देशभक्तो एवँ उनके परिवारो की तन-मन-धन से जितनी सेवा की, उतनी शायद ही किसी अन्य व्यक्ति ने की होगी ।

भारतीय संस्कृति के प्रबल समर्थक

डाक्टर का सम्पूर्ण जीवन एक प्रकार से देश सेवा मे ही व्यतीत हुआ । अध्ययन एव साधना मे आज भी 80 वर्ष की अवस्था में उनकी आश्चर्यजनक रुचि है । भारतीय संस्कृति और सस्कृत भाषा के प्रति उनके हृदय में बेहद अनुराग है ।

राजनीति, समाज-सेवा और चिकित्सा में समान यश

राजनीति में भाग लेते हुए भी डाक्टर साहब ने सामाजिक और चिकित्सा के क्षेत्र में जो यश अर्जित किया है वह बेमिसाल है ।





श्रीमती अंजना देवी चौधरी, अजमेर.

जन्म : सन् 1897

पता पाल बीचला, अजमेर

जन्म, शिक्षा और विवाह

श्रीमती अजनादेवी का जन्म श्री माधोपुर (राजस्थान) मे सन् 1897 मे एक मध्यमवर्गीय व्यवसायी अग्रवाल परिवार मे हुआ था। आपका विवाह राजस्थान के महान् लोकसेवक श्री रामनारायण चौधरी के साथ हो गया था। उनकी शिक्षा बचपन मे सामान्य स्तर की ही हो पाई थी।

पति के राजनैतिक मिशन की सहायक

उन्होने अपने पति की प्रेरणा से 20 वर्ष की आयु मे पर्दा छोड दिया और 23 वर्ष की आयु मे सभी आभूषणो का त्याग करके 1921 से कांग्रेस के कार्य मे लग गईं। वे आज तक अपने पति के साथ उनकी हर प्रवृत्ति मे बराबरी की साझेदार रही हैं और क्रान्तिकारी, रचनात्मक या हरिजन उद्धार जैसे किसी भी मिशन को उन्होने अपने पति के साथ अपनाकर उसे आगे ही बढाया है।

रियासतो में गिरफ्तार और निर्वासित होने वाली पहली महिला

श्रीमती अ जनादेवी देश की समस्त रियासती जनता मे गिरफ्तार होने वाली और राज्यो से निर्वासित होने वाली, पहली महिला थी। उन्होने 1921 से 1924 तक मेवाड व बूंदी राज्यो की स्त्रियो मे राष्ट्रीयता, समाज सुधार और सत्याग्रह का कार्य किया। इसी दौरान अमरगढ मे वे गिरफ्तार हुईं और बूंदी राज्य से उन्हे निर्वासित कर दिया गया।

महत्त्वपूर्ण कार्यो की संक्षिप्त रूपरेखा

उनके जीवन के महत्त्वपूर्ण कार्यो की सक्षिप्त रूपरेखा इस प्रकार है—

(1) ब्राह्मणो के खेडा (बिजोलियाँ) मे लगभग 500 स्त्रियो के सत्याग्रही जत्थे का नेतृत्व करके नाजायज हिरासत से किसानो को छुडवाया ।

(2) बूँदी राज्य मे महिलाओ पर क्रूर दमन होने पर जब प्रवेश निषेध की आज्ञा भग करके गई तब अनिश्चित काल के लिए निर्वासित कर दी गई ।

(3) बेगूँ (मेवाड) मे सत्याग्रही किसान स्त्रियो का मार्गदर्शन कई मास तक किया ।

(4) राजस्थान सेवा सघ के आतिथ्य एव भोजन विभाग का कई वर्ष तक प्रबन्ध किया ।

(5) 1932 से '35 तक राष्ट्रीय सत्याग्रह आन्दोलन मे दो बार जेल गई और छ महीने कारावास भुगता ।

(6) 1929 से 1930 मे लगभग छः मास साबरमती के सत्याग्रह आश्रम मे रही ।

(7) हरिजन सेवा के कार्य मे नारेली आश्रम मे रहकर 1934 से 1936 तक भाग लिया ।

(8) 1937 मे डूँगरपुर राज्य मे भील सेवा कार्य मे योग दिया ।

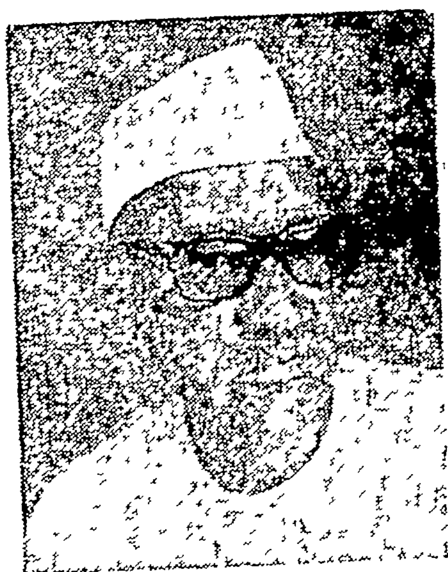
(9) 1939 से 1942 तक सेवाग्राम आश्रम में रह कर बापू के कार्यक्रमो मे योग दिया ।

(10) 1955 से 1960 तक दिल्ली मे भारत सेवक समाज के महिला सूचना विभाग का सचालन किया और अनेक राज्यो का दौरा किया ।

(11) 1960 से 1964 तक ग्राम सहयोग समाज की उपाध्यक्षा की हैसियत से पजाब व हरियाणा का दौरा किया और प्रशिक्षण शिविरो का महिला विभाग सम्भाला । अनेक बालवाडियाँ भी चलाई ।



श्री कन्हैयालाल आर्य, अजमेर.



जन्म . भाद्रपद कृष्णा 8, संवत् 1959

पता . प्रकाश सदन, आर्यनगर, अजमेर

राजकीय सेवा से अवकाश

श्री कन्हैयालाल आर्य का जन्म सन् 1902 मे अजमेर मे हुआ। आर्य समाज के सस्कारो वाले परिवार मे उनका लालन पालन हुआ। शिक्षा समाप्त करके वे पोस्ट ऑफिस की नौकरी मे लग गए लेकिन खद्दर पहनने के कारण और राष्ट्रीय विचारो का होने के कारण 1921 मे नौकरी से निलम्बित कर दिए गए।

कॉंग्रेस के आन्दोलनों में

नौकरी से पृथक किए जाने के बाद उन्हे पुलिस तग करने लगी। उन्होंने प्रकट रूप से कॉंग्रेस द्वारा चलाए गए आन्दोलनो तथा रचनात्मक कार्यों (विदेशी वस्त्र बहिष्कार, दुकानो पर पिकेटिंग, धरना देना, शराब की दुकानो पर पिकेटिंग आदि) मे भाग लेना शुरू कर दिया। पुलिस पकड के ले जाती, बन्द कर देती, धप-धोल लगाती तथा अजमेर से बाहर ले जाती, सात-आठ मील की दूरी पर जगलो मे छोड कर चली आती थी। इसी प्रकार जीवन अव्यस्थित रूप से चलता रहा।

अगस्त क्रान्ति में नजरबन्दी

सन् 1941–42 मे अजमेर मेरवाडा मध्य भारत प्रान्तीय कॉंग्रेस कमेटी तथा हरिजन सघ के मन्त्री का कार्य किया। 1942 के भारत छोडो आन्दोलन मे भाग लिया, गिरफ्तार किये गये, नजरबन्द-अन्डर ट्रायल रहे। सन् 1947 से 1957 तक अजमेर नगर कॉंग्रेस कमेटी के मन्त्री रहे।

—•—

श्री कपिलदेव गौतम, जयपुर.

जन्म : 3 सितम्बर, 1911

पता सूरखुडी, पुरानीवस्ती, जयपुर.



जन्म-बचपन व शिक्षा

श्री कपिलदेव गौतम का जन्म जयपुर मे 3 सितम्बर, 1911 को एक सामान्य ब्राह्मण परिवार मे हुआ। आपके पिता श्री गगासहायजी जयपुर के प्रसिद्ध आयुर्वेदिक वैद्य थे। अत आपको भी प्रारभ मे सस्कृत की और आयुर्वेद की शिक्षा दी गई। आप विशारद और भिषगाचार्य शिरोमणि है।

कांग्रेस कर्मी और क्रान्तिकारी कार्य

सन 1930 से 1942 तक श्री कपिलदेव गौतम का सम्बन्ध कांग्रेस से और उसके साथ-साथ क्रान्तिकारियो से भी समान रूप से रहा है। प्रत्यक्ष मे वे कांग्रेस के सदस्य रहे हैं और भीतर ही भीतर वे हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी का काम भी करते रहे हैं। कांग्रेस मे उनका सहयोग और समर्थन श्री अर्जुनलाल सेठी को ही रहा था और प्रान्त मे उग्र क्रान्तिकारी नेतृत्व के पक्षपाती थे।

सैनिक विद्रोह के अभियोग मे सजा

श्री कपिलदेव गौतम ने 1930 मे भारतीय सैनिको के नाम पडित नेहरू की अपील के पर्चे नसीराबाद की छावनी मे बाटकर सैनिको मे राष्ट्रीयता और विद्रोह जगाने का साहसपूर्ण कार्य किया था। अग्रेजी सिपाहियो ने उन्हे पेड पर उल्टा लटका दिया, उन्हें वहाँ बुरी तरह पीटा गया। गले की हड्डी टूट गई, नाक से खून आने लगा। बेहोशी की स्थिति मे उन्हें अजमेर की सडक पर लाकर डाल दिया गया। ठीक होने पर ब्यावर मे एक रात 4 बजे उन्हे गिरफ्तार किया और नसीराबाद कोर्ट मे उन पर केस चला। ब्रिटिश सेना मे विद्रोह फैलाने का उन पर अभियोग लगाया गया। उन्हे 1 वर्ष की सख्त स- दी गई।

कांग्रेस को गैर कानूनी घोषित कर दिए जाने के वाद 1932 मे श्री कपिलदेव गौतम काग्रेस पत्रिका और कांग्रेस का साहित्य वितरित करने के अपराध मे प्रेस एक्ट के अतर्गत गिरफ्तार कर लिए गये और उन्हे 4 महीने की सजा हुई।

रचनात्मक कार्य से राजनीति में

श्री कपिलदेव गौतम का जीवन रीगस के गांधी आश्रम मे खादी उत्पादन के कार्य के प्रशिक्षण से शुरु हुआ था। वहाँ से वे श्री लादूराम जोशी की प्रेरणा से वर्धा चले गए और वे वहा वर्धा आश्रम मे विनोवा भावे के पास 6 महीने तक रहे और उसके वाद गांवीजी के सान्निध्य मे एक महीने तक रहे। वर्धा से कपिलदेव गौतम सावली खादी आश्रम के महाराष्ट्र खादी उत्पादन केन्द्र मे शिक्षण देने के लिए 6 महीने तक रहे और नमक सत्याग्रह का प्रारभ होते-होते वे अजमेर आ गए। राजनीति ने उन्हे रचनात्मक कार्यों से खीच लिया।

काँग्रेस के प्रचारक

जेल से मुक्त होने के वाद प्रत्यक्ष रूप से वे काँग्रेस के प्रचार कार्य मे लग गए और गाँव-गाँव घूम कर अपनी कविताओ के द्वारा काँग्रेस के सदेश का प्रचार करने लगे। उन्होने उन दिनो किसानो, मजदूरो और नौजवानो के वीच भी काम किया।

डोगरा शूटिंग केस में गिरफ्तार

श्री कपिलदेव गौतम हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के सक्रिय सदस्य हो गए थे। डोगरा शूटिंग केस मे पुलिस ने उन्हे सन्देह मे गिरफ्तार कर लिया और तीन महीने तक हिरासत मे रखा।

प्रदेश काँग्रेस की कार्यकारिणी में

कपिलदेव गौतम '36 से '40 तक प्रदेश काँग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी के सदस्य रहे। 1942 मे श्री कपिलदेव ने वाहर रहकर कार्य किया। उस समय जेल से फरार होकर आने वाले ज्वालाप्रसाद, श्यामविहारी आदि इनके साथ ठहरे थे।

श्री कपिलदेव का व्यक्तित्व विराट है, वे अजेय पौरुष के धनी हैं। उनमे शारीरिक क्षमता, आत्मिक वल, खतरो का सामना करने का साहस और राजनैतिक सूझ-बूझ एक साथ सक्रिय रहते हैं। किसी भी सभा समारोह मे उनकी उपस्थिति मात्र से विरोधियो और असामाजिक तत्वो के हौसले पस्त होने लग जाते हैं।



श्रीकृष्ण गोपाल गर्ग, अजमेर.

जन्म सन् 1904

पता टोडरमल मार्ग, अजमेर.

जन्म-परिवार और शिक्षा

श्री कृष्णगोपाल गर्ग का जन्म अजमेर के एक परपरावादी व्यवसायी अग्रवाल परिवार मे 1904 ईस्वी को हुआ था। उनके माता पिता उन्हे उच्च शिक्षा दिलवाना चाहते थे। उन्हें छात्रावास मे रखा गया था। यही से उन्होने सार्वजनिक क्षेत्र मे प्रवेश करने के अपने मार्ग निकालने शुरू कर दिए थे।

15 वर्ष की उम्र में कांग्रेस के सदस्य

अजमेर मे 1919 मे पजाब के प्रसिद्ध नेता प० नेकीराम शर्मा ने एक सार्वजनिक सभा मे जलियावाला बाग की करुणाजनक कहानी सुनाई, जनता को कांग्रेस मे शामिल होने का आह्वान किया और गांधीजी के नेतृत्व और उनके सदेश की चर्चा की। उक्त भाषण से प्रभावित होकर कृष्णगोपाल गर्ग 15 वर्ष की उम्र मे ही कांग्रेस के सदस्य बन गए।

कांग्रेस अधिवेशन में प्रतिनिधि

1921 में कृष्णगोपाल गर्ग भी शराब की दुकानो पर धरना देने वाले सत्याग्रहियो मे शामिल होते रहे। कई बार पुलिस ने उनकी पिटाई की और कई बार पकडा और छोड दिया। इसी वर्ष 17 वर्ष की उम्र मे कृष्णगोपाल गर्ग अहमदाबाद कांग्रेस के लिए अजमेर से प्रतिनिधि चुन लिए गए।

नौकरी और गांधी के विचारों का प्रभाव

असहयोग आन्दोलन के साथ ही कृष्णगोपाल गर्ग की शिक्षा का सिलसिला समाप्त हो गया। 1923 मे उन्होंने रेल्वे के कारखाने मे नौकरी कर ली। गांधीजी का यग इडिया और नवजीवन को फिर भी उन्होंने पढना बराबर जारी रखा। उसके प्रभाव

से विधवा विवाह के पक्ष मे और वाल विवाह के विरोध मे उनके विचार परिपक्व होते गए। अस्पृश्यता निवारण की प्रेरणा भी उन्हे नवजीवन के लेखो से मिली। आर्य समाजी नेता जीयालालजी के साथ इसीलिए अछूतो के साथ होने वाले प्रीतिभोजो मे शामिल होने लगे।

जाति से बहिष्कृत कर दिए गए

अस्पृश्यता और वाल-विवाह विरोधी गतिविधियो के कारण अग्रवाल समाज ने कृष्णगोपाल गर्ग को जाति से वहिष्कृत कर दिया और घरवालो के विरोध के कारण घर से अलग रहने को विवश होना पडा।

सत्याग्रह, जेल, और हरिजन सेवा

1930 के नमक सत्याग्रह के समय कृष्णगोपाल गर्ग रेल्वे कारखाने की नौकरी छोडकर आन्दोलन मे कूद पडे। उन्हे दो वर्ष के कठोर कारावास की सजा मिली। गांधीजी ने जब हरिजन आन्दोलन चलाया तो कृष्णगोपाल ने हरिजन आन्दोलन मे बहुत उत्साह से भाग लिया। कई वर्षों तक हरिजन सेवक सघ के मत्री रहे। एक हरिजन को अपने घर काम करने के लिए भी रख लिया।

खादी प्रदर्शनी और झण्डे का मामला

1940 मे जब अजमेर मे खादी प्रदर्शनी हुई तो कृष्ण गोपाल गर्ग उसकी प्रवन्ध समिति के सयुक्त मत्री थे। उन्होने वहा एक बुर्ज पर तिरगा झडा फहरा दिया। जिलाधीश ने झडा उतारने का आदेश दिया। कृष्णगोपाल गर्ग ने जिलाधीश की आज्ञा मानने से इकार कर दिया। परिणामत जिलाधीश ने पुलिस वालो द्वारा झडा जवरदस्ती उतरवा लिया। यह मामला गाँधीजी तक गया। गाधीजी ने इस सम्वन्ध मे यग इडिया मे लिखा था कि अजमेर की घटनाए इतनी विस्फोटक है कि उनके विरोध स्वरूप सत्याग्रह शुरू किया जा सकता है। अजमेर सरकार ने कृष्ण गोपाल गर्ग पर मुकद्दमा दायर कर दिया। गाधीजी के मार्गदर्शन में मुकद्दमा लडा गया। कृष्णगोपाल गर्ग को 3 महीने की सजा हो गई।

हिन्दू-मुस्लिम दंगे

देश के विभाजन के कारण हिन्दू मुस्लिम दगे भडक गए थे। अजमेर में यह हवा आ रही थी। कृष्णगोपाल गर्ग ने बडे साहस से मुस्लिम वस्तियो मे मुसलमानो को साहस दिलाने और उनकी सुरक्षा करने का अथक प्रयास किया था। साप्रदायिक लोगो ने चिढकर उनके बूढे माता-पिता पर हमले कर दिए।

श्री कृष्णगोपाल गर्ग पिछले 50 वर्षों मे कांग्रेस के आदर्श और सिद्धान्तो का पालन कर रहे हैं और अजमेर के सार्वजनिक जीवन मे उनका अग्रगण्य स्थान है। वे अजमेर नगरपालिका के कई वर्षों तक अध्यक्ष भी रह चुके है।

श्री चंद्रगुप्त वार्ष्णेय, जयपुर.



जन्म 21, जुलाई, 1904

पता मोतीसिंह भौमियों का रास्ता, जयपुर.

श्री चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय हिन्दी के एक मजे हुए लेखक हैं। उन्होंने स्वाधीनता के सग्राम मे सक्रिय रूप से भाग लिया है, सत्याग्रही वनकर जेल गए हैं और सक्रिय राजनीति से तटस्थ रहकर स्वतत्र और निष्पक्ष पत्रकारिता भी की है। उन्होने जवाहरलाल नेहरू और महात्मा गाँधी की लिखी हुई पुस्तको का हिन्दी मे अनुवाद किया है तो कई स्वतत्र पुस्तकें भी लिखी हैं। उन्होने अजमेर के सार्वजनिक जीवन को साहित्यिक और सास्कृतिक नेतृत्व दिया है तो स्वाधीनता के वाद अजमेर राज्य की सेवा मे भी रहे हैं। उन्होने अजमेर नगरपालिका के चुनाव भी लडे हैं। निर्विरोध भी जीते हैं और अजमेर जेल मे भी कई वर्ष निकाले हैं।

श्री चद्रगुप्त वार्ष्णेय का जन्म 31 जुलाई, 1904 को हुआ। उनके पिता श्री प्यारसीलाल गुप्त क्रान्तिकारी विचारो के व्यक्ति थे। अमृत वाजार पत्रिका और प्रताप जैसे उग्र विचार वाले पत्र पढते थे। वग-भग के वाद उन्होने स्वदेशी का व्रत ले लिया था। ऐसे राष्ट्रीय वातावरण मे चद्रगुप्त वार्ष्णेय का विकास हुआ। परन्तु उनकी 15 वर्ष की अवस्था मे ही उनके पिताश्री का देहान्त हो गया।

श्री वार्ष्णेय 1928 तक डी० ए० वी० हाईस्कूल मे शिक्षक थे। उन दिनो वावा नरसिंहदास से उनका सपर्क हो चुका था। वावाजी की प्रेरणा से उन्होंने राजनीति मे गुप्त रूप से कार्य करना शुरू कर दिया था। उन्ही दिनो ववई यूथ लीग के सस्थापक श्री मेहरअली अजमेर आए और अजमेर मे भी यूथ लीग की शाखा खोली गई। वार्ष्णेय इसके मत्री चुने गए।

चद्रगुप्त वार्ष्णेय की राजनैतिक गतिविधियां देखकर राज्य ने स्कूल अधिकारियो को लिखा कि या तो वार्ष्णेय को स्कूल से बरखास्त करदें अन्यथा स्कूल की ग्राट बद कर दी जाएगी। अजमेर राज्य ने यह भी आदेश प्रसारित कर दिए कि चद्रगुप्त को किसी भी सरकारी या सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल मे नही रखा जाए।

राजस्थान के स्वतत्रता सग्राम को चद्रगुप्त वार्ष्णेय का सबसे बडा योग एक स्वतत्र, जागरुक और राष्ट्रीय पत्रकार के रूप मे रहा है। वह उन दिनो (1932 से '48 तक) हिन्दुस्तान टाइम्स ग्रुप के सभी पत्रो के सवाददाता थे और अपनी कलम से उन्होने राजपूताने की प्रत्येक रियासत के जन आन्दोलन को बल पहुँचाया। किसी राजा, जागीरदार या अजमेर की सरकार का कोई प्रलोभन उन्हे डिगा नही सका।

श्री चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय सेवाग्राम मे राष्ट्रपिता के सान्निध्य में भी बहुत रहे। मुख्य रूप से उन्हे हिन्दुस्तान तालीमी सघ मे श्री आर्यनायकम् और आशादेवी के साथ काम करना था परन्तु अपने पारिवारिक कारणो से वे स्थायी रूप से सेवाग्राम मे नही रह सके।

जयपुर के दैनिक पत्र राष्ट्रदूत के भी श्री वार्ष्णेय कुछ दिन सपादक रहे। फिर 1952 मे वे अजमेर राज्य के सार्वजनिक सपर्क विभाग के निदेशक नियुक्त किए गए। उनकी यह राजकीय सेवा बराबर 8 वर्ष चलती रही। 4 वर्ष वे जयपुर मे राजस्थान के वित्तमत्री श्री कौल के निजी सचिव भी रहे।

श्री नेहरू के विश्व इतिहास की झलक और लुई फिशर द्वारा लिखी हुई गाँधी की कहानी का अनुवाद चद्रगुप्त वार्ष्णेय ने किया है। यो सस्ता साहित्य मडल, दिल्ली की कई पुस्तको का अनुवाद और सपादन उन्होंने हरिभाऊ उपाध्याय के साथ-साथ भी किया है।

अगस्त क्रान्ति मे श्री वार्ष्णेय 2 वर्ष से ऊपर अजमेर जेल मे रहे। उनकी वार्त्ताएँ समय-समय पर आकाशवाणी से प्रसारित होती रहती हैं और उनके विभिन्न लेख पत्र-पत्रिकाओ मे निकलते रहते है। आजकल उनका निवास जयपुर ही है और वे सभवत: राजस्थान पत्रिका के साथ सबद्ध हैं।



कप्तान
श्री दुर्गाप्रसाद चौधरी
जयपुर

जन्म · पौष शुक्ला 2, संवत् 1963

पता : नवज्योति भवन, जोवनेर बाग,
स्टेशन रोड़, जयपुर.

कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी आज राजस्थान मे हिन्दी और अग्रेजी पत्रकारिता का एक छत्र नेतृत्व कर रहे हैं परतु कल स्वतत्रता सग्राम के युग मे एक सामान्य स्वय सेवक से लगाकर सर्वसत्ता सपन्न डिक्टेटर तक की जिम्मेवारियें उन्होंने पूरी शान के साथ निभाई हैं। वे 1930 मे कांग्रेस सेवा दल के कप्तान बन गए थे और तब से लगाकर देश की स्वाधीनता प्राप्ति की घडी तक पूरे सत्रह वर्ष तक अजमेर मे कांग्रेस की सेना के कप्तान बनकर क्रियाशील रहे।

कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी आज निश्चय ही राजस्थान के सपन्न और समर्थ पत्रकार हैं। उनके सचालन और सपादन मे अजमेर और जयपुर से दैनिक नवज्योति तथा अग्रेजी का नवज्योति हैराल्ड निकलता है। अजमेर और जयपुर मे दो बडे प्रेस भी हैं, रॉटरी मशीन भी लगी हुई है। लेकिन 1940 से 1960 तक कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी ने इस पत्र को जीवित रखने के लिए क्या-क्या मुसीबतें नही उठाई ? लेकिन अपनी लगन, निष्ठा और धैर्य को लेकर वे निरन्तर परिस्थितियो से जूझते रहे हैं। सामान्य परिवार और साधन विहीन स्थिति से आगे बढते-बढते आज की स्थिति मे पहुँचने के लिए कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी को सैकडो विघ्न बाधा और अवरोधो की घाटियें पार करनी पडी हैं।

कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी का जन्म पौष शुक्ला 2, 1963 को नीम का थाना (जयपुर) मे हुआ। उनके पिता श्री मुरलीधरजी सीकर ठिकाने के वकील थे। उनकी प्रारभिक शिक्षा अर्जुनलाल सेठी की वर्धमान पाठशाला मे, फिर साँभर मे तथा अत मे कानपुर के नेशनल स्कूल मे हुई। कानपुर का स्कूल श्रीमती एनीबेसेंट का स्कूल कहलाता

था। यहाँ पढ़ाई के साथ-साथ राष्ट्रीयता, देशप्रेम और देश-सेवा की शिक्षा और प्रेरणा दी जाती थी। कप्तान दुर्गाप्रसाद के 4 भाई और थे। एक भाई साँभर मे सरकारी नौकरी मे थे। अन्य दो भाई मध्यप्रदेश मे व्यापार करते थे। और आपसे बडे श्री रामनारायण चौधरी राजस्थान मे राजनैतिक चेतना का सूत्रपात कर रहे थे। कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी ने अपनी 24 वर्ष की आयु तक अर्जुनलाल सेठी की स्कूल मे शिक्षा ग्रहण की, साभर मे अपने बडे भाई के पास पढे, मध्यप्रदेश मे आढत की दुकानो पर काम किया, पिताजी के साथ वकालात सीखी, बडे भाई के साथ राजस्थान सेवा सघ के अतर्गत बिजोलियाँ मे कार्य किया और अत मे 1930 मे घरबार छोडकर आजादी की लडाई मे कूद पडे और 1930 से 1947 तक अग्रेजी हुकूमत से जमकर सघर्ष किया।

कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी वर्षों तक हटूंडी के गाँधी आश्रम मे रहे, वनस्थली, मेटपल्ली–हैदराबाद व वर्धा मे खादी उत्पादन का शिक्षण लिया, साबरमती और सेवाग्राम मे महीनो तक राष्ट्रपिता के सान्निध्य मे रहे। डूंगरपुर मे आदिवासी क्षेत्रो मे वर्षों तक कार्य किया और फिर सन् '30 से सन् '47 तक अजमेर नगर कांग्रेस कमेटी के मत्री की हैसियत से स्वाधीनता के सग्राम को आगे बढाया।

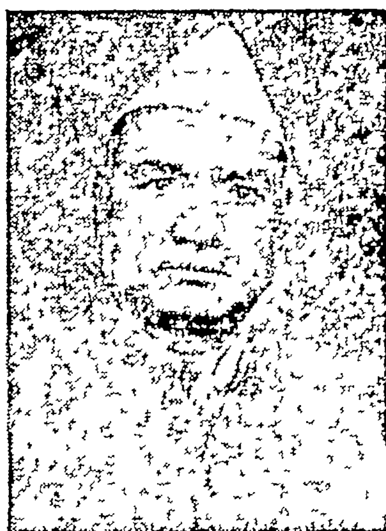
स्वतत्रता सग्राम के दौरान मे कप्तान दुर्गाप्रसाद को 6-6 महीने की-दो बार, 2 वर्ष की एक बार और 3 वर्ष की एक बार, जेल की सजाएँ हुई हैं। 1945 मे जब आजादी की लडाई के अनेको सेनानी रिहा किए जा रहे थे तब भी आपको, आपके बडे भाई रामनारायणजी चौधरी को व स्वामी कुमारानद को नही छोडा गया था—क्योकि ब्रिटिश सरकार अजमेर-मेरवाडा मे इन तीनो को सबसे अधिक खतरनाक समझती थी।

आपकी धर्मपत्नी श्रीमती विमलादेवी ने भी आजादी के सघर्ष मे आपके साथ भाग लिया था और उन्हें भी 3 महीने की सजा हुई थी।

देश की स्वाधीनता के बाद, अपनी कुर्बानियो के लबे इतिहास के साथ स्वातत्र्य समर के इस वीर कप्तान ने राजनीति को सलाम कर दिया। और अपने आपको सपूर्ण रूप से पत्रकारिता के भेंट कर दिया। उनके पुत्र देशबधु जब से उनके पत्रकारिता के मिशन मे उनका बोझा बटाने लगा है तब मे कप्तान को जीवन के सघर्षो से थोडी राहत मिली है।



श्री बालकृष्ण गर्ग, अजमेर.



सन 1930 से 1972

श्री बालकृष्ण गर्ग 1930 से राजनीति मे सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं। 1930 के नमक सत्याग्रह मे वे पहली बार सत्याग्रह करते हुए अजमेर मे जेल गए थे और फिर उसके बाद प्रत्येक राष्ट्रीय और राजनैतिक आन्दोलन मे वे अग्रिम पक्ति मे ही खडे रहे।

राजनैतिक कार्य

श्री बालकृष्ण गर्ग के राजनैतिक कार्यों का व्यौरा इस प्रकार है।

(1) सन् 1930 से अब तक पूरा समय कांग्रेस अथवा कांग्रेस द्वारा मान्य रचनात्मक कामो मे ही लगाया है।

(2) सन् 1930, 1932, 1940 और 1942 के सत्याग्रह आन्दोलनो मे सक्रिय भाग लिया और इन सभी आन्दोलनो मे जेल भी गये।

(3) अजमेर राज्य के समय प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तथा उस समय जब कि राजस्थान, मध्यभारत और अजमेर-मेरवाड की सम्मिलित एक प्रदेश कांग्रेस कमेटी थी उसके दो वर्ष तक उपाध्यक्ष तथा तीन वर्ष तक प्रधान मत्री भी रहे।

(4) 6 वर्ष तक अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य भी रहे।

(5) इस समय जिला कांग्रेस कमेटी, अजमेर के अध्यक्ष एव प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य है।

(6) कई मजदूर सगठनो से आपका सक्रिय सम्बन्ध रहा है।

(7) अजमेर-मेरवाडा के इश्तमुरारदारी इलाको मे बेगार प्रथा के विरुद्ध आंदोलन चलाने और उसमे सफलता प्राप्त करने मे आपका मुख्य भाग रहा है।

सामाजिक, आर्थिक एवं रचनात्मक कार्य

(1) सन् 1932 से अब तक बराबर जिला हरिजन सेवक सघ के अध्यक्ष हैं एव राजस्थान हरिजन सेवक सघ के भी चार वर्ष तक प्रधान मन्त्री रहे। हरिजन सेवक सघ के माध्यम से अजमेर जिले के खास कर अजमेर नगर के हरिजनो की सामाजिक एव आर्थिक स्थिति को उठाने एव अस्पृश्यता निवारण तथा मद्यनिषेध की दिशा मे काफी कार्य किया। इस सम्बन्ध मे तीन मर्तबा हरिजनो की हडतालो का भी सफल सचालन किया। देहाती क्षेत्रो मे हरिजनो को पीने के जल की सुविधा दिलाने हेतु कई नये कुँओ का निर्माण भी कराया। अस्पृश्यता निवारण आन्दोलन के कारण कई वर्षों तक सामाजिक एवं पारिवारिक सम्बन्धो से वहिष्कृत भी रहे हैं।

(2) राजस्थान प्रदेश एव जिला भारत सेवक समाज के भी कई सालो तक अध्यक्ष रहे है। इसके माध्यम से पाच साला योजनाओ को सफल बनाने मे श्रमदान द्वारा जो जन सहयोग प्राप्त हुआ है उसकी सराहना उस समय के केन्द्रीय भारत सेवक समाज के अध्यक्ष श्री गुलजारीलाल नदा ने की तथा अजमेर जिले मे हुए कार्य एव कार्य पद्धति की सराहना स्वय श्री नेहरू ने भी की।

(3) खादी एव ग्रामोद्योगो के माध्यम से लोगो को रोजगार दिलाने मे आपकी हमेशा रुचि रही है। अजमेर जिले मे सन् 1937 मे अजमेर-मेरवाड ग्राम सेवा मण्डल के नाम से एक सस्था स्थापित की, इसके माध्यम से गावो मे सर्वांगीण विकास की दिशा मे कार्य हो रहा है। राजस्थान खादी बोर्ड के भी करीब 6 वर्ष तक सदस्य रहे हैं और ग्राम उद्योग विभाग के इन्चार्ज के नाते राजस्थान मे ग्राम के उद्योगो के विकास का प्रयत्न किया। राजस्थान खादी बोर्ड की ओर से स्व० श्री माणिक्यलाल जी वर्मा के साथ पाकिस्तान से राजस्थान की सीमा की तीन मर्तबा यात्रा की और इस क्षेत्र मे खादी बोर्ड की ओर से खादी उत्पादन कार्य की व्यवस्था कराकर लोगो को काम दिलाने मे मदद की। राजस्थान चर्खा सघ की ओर से राजस्थान स्तर के खादी विद्यालय का भी सचालन किया। इस समय भी राजस्थान खादी ग्रामोद्योग बोर्ड मे अवैतनिक ग्रामोद्योग विशेषज्ञ एव अजमेर-मेरवाडा ग्राम सेवा मन्डल के मन्त्री हैं।

स्वायत्त शासन संस्थाओ में कार्य का अनुभव

दो वर्ष तक अजमेर नगर पालिका के सदस्य रहे और उप समितियो के सयोजक की हैसियत से कार्य भी किया।



बृजमोहन लाल शर्मा, ब्यावर.

जन्म कार्तिक शुक्ला 9, सवत् 1965

पता डिग्गी मोहल्ला, ब्यावर

जन्म, परिवार औरशिक्षा

श्री बृजमोहनलाल शर्मा के पिता प० जगन्नाथजी मनोहरपुर (शाहपुरा) के मूल निवासी थे। वे लगभग 110 वर्ष पूर्व मनोहरपुर से ब्यावर आकर निवास करने लगे। बृजमोहनलाल का जन्म कार्तिक सुदी 9 स० 1965 को हुआ। उन्होने वी ए की परीक्षा महाराजा कालेज, जयपुर तथा एल एल वी की परीक्षा 1938 मे आगरा से उत्तीर्ण की। ब्यावर मे आते ही उन्होने वकालत शुरू की और कांग्रेस मे सम्मिलित हो गये। 1940 के नगर परिषद के चुनाव मे कांग्रेस की ओर से सफल हुए।

व्यक्तिगत सत्याग्रही के रूप में जेल म

1940 मे महात्मा गाधी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह आरम्भ किया। श्री बृजमोहन लाल ने महात्माजी के निर्देश से युद्ध विरोधी नारे लगाने की सूचना डिप्टी कमिश्नर को दी। उन्हे गिरफ्तार करके 1 वर्ष का कठोर कारावास व 40रु जुर्माना किया गया। उन्हे उस समय अजमेर-मेरवाडा, राजस्थान व मध्य भारत की कांग्रेस ने दूसरा डिक्टेटर नियुक्त किया था। वह अन्य साथियो के साथ अजमेर के केन्द्रीय कारागार मे रहे।

कांग्रेस के कार्यक्षेत्र में

वहा से छूटने के वाद श्री शर्मा नगर कांग्रेस ब्यावर के प्रधानमन्त्री तथा हरिजन सेवक सघ के मन्त्री नियुक्त किए गए।

नजरवन्दी

1942 के 'भारत छोडो' आन्दोलन मे उन्हे 9 अगस्त, 1942 को अजमेर के केन्द्रीय कारागार मे नजर वन्द रखा गया। जिस समय श्री शर्मा को जेल मे वन्द किया गया था उस समय उनका वजन 186 पोंड था जेल मे उनका स्वास्थ्य कुछ महीनो के वाद

दिन-प्रतिदिन गिरता गया। उन्हे सग्रहणी आदि कई रोगो ने आ घेरा। जब उनका वजन 50 पौंड गिर गया और स्थिति मरणासन्न हो गई तो उन्हे 17 जून 1943 को बिना शर्त छोड दिया गया।

स्वास्थ्य लाभ के लिये

श्री शर्मा 3 वर्ष इन्दौर जोधपुर, जयपुर, गुजरात आदि स्थानो पर स्वास्थ्य लाभ के लिए घूमते रहे। 1945 मे ठीक हुए और सक्रिय राजनीति मे भाग लेना आरम्भ कर दिया।

उसी समय श्री बृजमोहनलाल ब्यावर नगर कांग्रेस के सभापति चुन लिए गए। उन्होने किसानो, मजदूरो, हरिजनो तथा पीडित वर्गो मे सक्रिय कार्य करना आरम्भ कर दिया। इस्तमरारदार जागीरदारो के अत्याचारो के विरुद्ध आन्दोलन किया और लाग-बाग को हटाने के लिए सभी प्रयत्न किए। हरिजनो पर सवर्णों के अत्याचारो के विरुद्ध मुकद्मे लडक उन्हे राहत दिलाई। मालिको के विरुद्ध मजदूरो की निःशुल्क पैरवी करके उन्हे आर्थिक लाभ समय-समय पर पहुँचाया। 1947 मे 1952 तक नगर कांग्रेस अध्यक्ष, प्रान्तीय कांग्रेस के सदस्य रहे। और अजमेर-मेरवाडा के प्रत्येक राजनैतिक कार्य मे सक्रिय रूप से भाग लेते रहे।

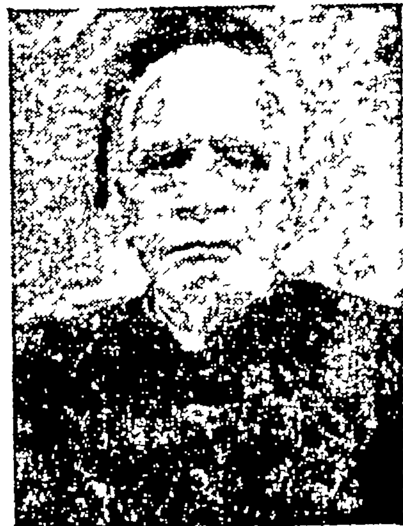
अजमेर राज्य के मन्त्रिमन्डल में

श्री बृजमोहनलाल शर्मा 1952 मे ब्यावर से विधानसभा के सदस्य चुने गए और अजमेर राज्य मे मत्री नियुक्त किए गए। उनके पास राजस्व, शिक्षा, श्रम, विधि, परिवहन, खान, स्वायत शासन आदि विभाग थे। मजदूरो की मूल पगार व महगाई कई व्यवसायो मे प्रयुक्त की जिसके कारण मालिक, विरोधी हो गये। इस्तमरारदारी और जागीरदारी उन्मूलन अधिनियम बनाकर काश्तकारो को भू-स्वामी बनाया। शिक्षा के क्षेत्र मे भारी प्रगति हुई।

राजस्थान विधानसभा में

1 नवम्बर, 1956 मे जब अजमेर का राजस्थान मे विलय हुआ तब राजस्थान मे श्रम मत्री नियुक्त हुए। 1957 से 1962 तक राजस्थान विधानसभा के सदस्य रहे। 1957 से 1962 तक राजस्थान मजदूर कांग्रेस के अध्यक्ष और उसके बाद 1965 मे 1967 तक अध्यक्ष रहे। श्री शर्मा इसके पश्चात् आज तक राजस्थान मजदूर कांग्रेस के उपाध्यक्ष तथा राजस्थान वर्क्स फैडरेशन के अध्यक्ष हैं।

श्री मुकुट बिहारीलाल भार्गव, अजमेर.



जन्म 30 जनवरी, 1903

पता : हाथीभाटा, अजमेर

श्री मुकुटविहारीलाल भार्गव ने अपने जीवन के 69 वर्षों मे से 42 वर्ष देश की आजादी और जनता की सेवा मे अर्पित किये हैं। उनका जन्म 30 जनवरी, 1903 को हुआ और केवल 27 वर्ष की आयु मे उन्होंने सन् 1930 मे कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण करली थी। आपने एम ए, एल एल बी पास की और वकालत का उज्जवल भविष्य आपके सामने था। आपने अपनी पत्नी तथा एकमात्र पुत्री का मोह त्याग दिया और देश की आजादी की लडाई मे कूद पडे। तब से आज तक देश की सेवा कर रहे हैं और जोरदार ढग से कर रहे हैं।

आप अनेक बार राजपूताना और मध्यभारत प्रदेश काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष (सन् 1941–45 और 1947–48) रहे। सन् 1952–57 तक आप अजमेर-मेरवाडा प्रदेश काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष और सन् 1954 मे अखिल भारतीय काग्रेस महासमिति के अजमेर अधिवेशन की स्वागत समिति के अध्यक्ष थे। सन् 1942 से 1960 तक और पुन सन् 1964 मे आप अ० भा० काग्रेस महासमिति के सदस्य रहे।

प्रदेश के प्रमुख वकील होने के नाते आप अजमेर बार एससियेशन तथा राजस्थान बार एसोसियेशन के वर्षों तक अध्यक्ष और राजस्थान बार कौसिल के सदस्य रहे हैं और आजकल राजस्थान बार कौसिल के चेयरमेन हैं।

सन 1945 मे आप इसी क्षेत्र से केन्द्रीय लेजिस्लेटिव असेम्बली, सन् 1950 मे अस्थायी लोकसभा, सन् 1947 में सविधान सभा और 1952, 57 और 62 मे लोकसभा के सदस्य निर्वाचित हुए और बिना किसी बाधा के आप 1945 से 1967 अर्थात 22 वर्ष

तक दिल्ली मे इस क्षेत्र का भारी बहुमत से निर्वाचित होकर प्रतिनिधित्व करते रहे। इससे पूर्व आप व्यावर नगरपालिका के अध्यक्ष और अजमेर-मेरवाडा के चीफ कमिश्नर की सलाहकार समिति के उपाध्यक्ष रह चुके हैं। सन् 1967 मे आपने भारी अनुरोध के वाद भी लोकसभा का चुनाव लडने से इन्कार कर दिया था।

लोकसभा मे रहकर आपने अजमेर की समस्याओ—विशेषकर अजमेर—कोटा वडी रेल्वे लाइन के प्रश्न को प्रभावशाली ढग से उठाया। सन् 1948 मे ससद मे टेनेन्सी बिल मे 1/3 वाटे को घटाकर 1/5 व 1/8 तक घटाने का प्रस्ताव रखा और सरकार से स्वीकार करवाया। कई प्रकार की लाग-नेग व वेगार को समाप्त करवाकर गैर कानूनी घोषित करवाया। इस कानून के वनने मे विलम्ब को देखते हुए अजमेर के चीफ कमिश्नर के विरोध के वावजूद अध्यादेश द्वारा लागू कराया और किसानो को राहत दिलाई। सन 1950 मे काश्तकारी कानून रखा और उसे कानून वनवाकर किसानो को जमीन पर मौरूसी हक दिलाया और 1942 के वाद की वेदखलिया ही रद्द नही करवाई, बल्कि किसानो को मुआवजा दिलवाया और इसके वाद आपने वन्दोवस्त का काम शुरू करवाकर अजमेर-मेरवाडा से इस्तमरारदारी समाप्त कराके किसानो का लगान 1/6 से 1/8 कराया। मालगुजारी के उलटे-सीधे इन्दराज के खिलाफ किसानो की मुफ्त पैरवी करके उन्हे राहत दिलाई। चीफ कमिश्नर के एकतन्त्रीय शासन को समाप्त करवाकर अजमेर को 'सी' श्रेणी का राज्य घोषित करवाकर प्रतिनिधि शासन की स्थापना करवाई। अजमेर का राजस्थान के साथ विलीनीकरण किये जाने के अवसर पर राजधानी व उच्च न्यायालय के लिए अजमेर के सर्वोत्तम स्थान होने के दावे को पुन जोरदार शब्दो मे रखा और उसके लिए यथाशक्ति प्रयन्न किया।

भारत स्वातन्त्र्य-आन्दोलन मे भी आप पीछे न रहे और सन् 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह और 1942 के भारत छोडो आन्दोलन मे जेल जाने वालो मे आप सबसे आगे थे। सन् 1942 के आन्दोलन के सिलसिले मे जब आप नजरवन्द थे तो आपकी धर्मपत्नी सख्त बीमार हो गई थी और मृत्यु शैया पर पहुँच गई थी किन्तु फिर भी आपने पेरोल पर रिहा होना स्वीकार न किया।

भारत की ससद की तरफ से जो शिष्टमण्डल 41 वें World Inter Parliamentary Union मे भाग लेने के लिए वर्न (स्विटजरलैंड) गये थे, उसमे एक सदस्य की हैसियत मे भारत का प्रतिनिधित्व किया। स्विटजरलैंड के कोनी नगर मे हुई विश्व मोराल रीयरमामेंट एसेम्बली और लन्दन मे आयोजित एक विश्व सरकार सम्मेलन मे भारत के प्रतिनिधि के रूप मे शामिल हुए। इसके बाद यूरोप के अनेक देशो का भ्रमण किया।

श्री मुकुट बिहारी वर्मा, अजमेर.

श्री मुकुटबिहारी वर्मा दिल्ली से प्रकाशित होने वाले 'हिन्दुस्तान' के सन् 36 से '66तक पूरे तीस वर्ष सम्पादक रहकर राजपूताने की प्रत्येक रियासत और रियासती आन्दोलनो के साथ सबंधित रहे हैं। लेकिन राजस्थान के साथ उनका सम्बन्ध इतना ही नही है।

उनका जन्म तो उत्तरप्रदेश के जिला बुलदशहर के एक कस्बे मे सन् 1904 को हुआ था परन्तु वे बहुत छोटी उम्र मे ही भरतपुर अपने ननिहाल आ गए थे। उनकी शिक्षा-दीक्षा भरतपुर मे ही हुई। भरतपुर मे उन्हें अपने मामा श्री शकरलाल वर्मा का सान्निध्य मिला था और उसी सपर्क से उनमे राष्ट्रीयता की भावनाए जागृत हुई और उनका ध्यान राजनीति एव समाचार-पत्रो की ओर आर्कषित हुआ।

उन्होने अपना सार्वजनिक जीवन एक पत्रकार के रूप मे शुरू किया। 1923 मे जब श्री विजयसिंह पथिक के सपादन मे 'राजस्थान केसरी' का प्रकाशन पहली बार वर्धा मे हुआ तो वे उसके सम्पादकीय विभाग मे काम करने पहुँच गए थे। 'राजस्थान केसरी' का प्रकाशन राजपूताने की देशी रियासतो का अभावग्रसित और शोषण से पीडित जनता की समस्याओ को प्रकाश मे लाने और उनका समाधान ढूँढने के लिए किया गया था। अत विजयसिंह पथिक के नियत्रण और निर्देशन मे काम करते हुए देशी रियासतो की समस्याओ को गहराई से समझने का उन्हे एक अच्छा अवसर मिला था। देशी रियासतो की जनता के किसी भी आन्दोलन को उन्होंने सदा बहुत महत्व दिया।

श्री मुकुटबिहारी वर्मा ने 'राजस्थान केसरी' के बाद नागपुर के 'प्रणवीर', जबलपुर के 'कर्मवीर', गोरखपुर के 'स्वदेश' और अत मे अजमेर के 'त्याग भूमि' मे कार्य किया था। उनके मामा श्री शकरलाल वर्मा उन दिनो अजमेर कांग्रेस के अग्रगण्य नेताओ मे थे और उनका स्थायी निवास अजमेर ही हो गया। अजमेर के सस्ता साहित्य मडल से भी उनका सबध था और वे अजमेर के सास्कृतिक, साहित्यक और राजनैतिक प्रवृत्तियो मे

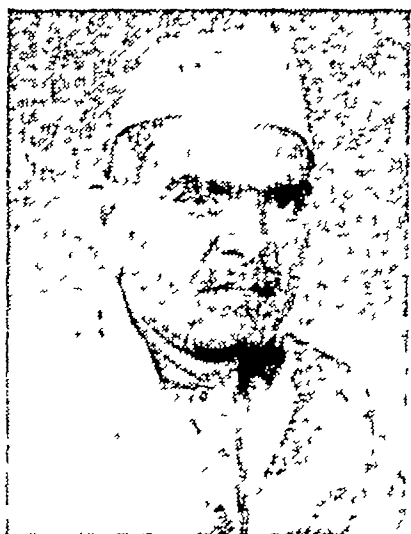
उत्साह से भाग लेने लगे थे। स्वाधीनता के लिए जो भी आन्दोलन अजमेर मे हुए उनके साथ मुकुटजी का निकट का सम्बन्ध रहा।

सन् 1936 मे मुकुटजी दिल्ली से प्रकाशित होने वाले 'हिन्दुस्तान' के सपादक हो गए और पूरे 30 वर्ष तक उस पद पर रहे। इस नाते उनका सबध राजपूताने की प्रत्येक रियासत, रियासती समस्याएँ और रियासतो के जन आन्दोलनो से रहा। उन्होंने अपनी लेखनी के द्वारा रियासतो के लोक सघर्षों को बहुत बल पहुचाया।

आजकल श्री मुकुटविहारी वर्मा 'हिन्दुस्तान' से अवकाश ले चुके हैं और अब दिल्ली मे वे स्थायी रूप से निवास कर रहे हैं।



श्री रामनिवास शर्मा, ब्यावर.



श्री रामनिवास शर्मा ब्यावर के निवासी हैं। वे एक सत्याग्रही रहे है और देश की स्वाधीनता के लिए लडे गए हर आन्दोलन मे वे अग्रिम पक्ति मे रहे हैं। लबी अवधि तक जेलो मे रहे हैं। परन्तु सत्याग्रही से बढकर उनमे एक सगठनकर्ता, व्यवस्थापक और सचालक की योग्यता अत्यन्त प्रबल है। अत ब्यावर मे अजमेर में अथवा आस पास के जोधपुर या किसी भी राज्य में आन्दोलन, सघर्ष या चुनाव के किसी भी अभियान की व्यवस्था और सचालन के समय सदा उन्हे याद किया जाता रहा है।

श्री रामनिवास शर्मा वर्षों तक ब्यावर कांग्रेस के मत्री रहे है। उन्होने ही सबसे पहले ब्यावर में खादी भडार और राजस्थान चर्खा-सघ की शाखा स्थापित की थी। उनके मत्रीत्वकाल में 1935 में कांग्रेस की स्वर्ण जयति का समारोह धूमधाम से मनाया गया। 1937 में श्री भूलाभाई देसाई की अध्यक्षता मे उन्होने राजपूताना-मध्यभारत कांग्रेस का राजनैतिक अधिवेशन ब्यावर में आयोजित किया था।

श्री रामनिवास शर्मा 1930 के नमक सत्याग्रह में पहली बार जेल गए थे। वे उस समय तक ब्यावर की श्री कृष्णा मिलस में काम करते थे। नमक सत्याग्रह मे भाग लेने के लिए उन्होने मिल की नौकरी छोड दी थी। सन् 1923 के आन्दोलन का भी उन्होने बहुत कुशलता से सचालन किया। अत में वे स्वय गिरफ्तार हो गए। 13 महीने तक दूसरी बार जेल में रहे। 1942 के अगस्त आन्दोलन में वे नजरबद कर लिए गए थे। उन्होने मजदूरो के आन्दोलनो में भी सक्रिय रूप से भाग लिया और ब्यावर की कपडा मिलो मे जब-जब हडताल की गई तब-तब श्री रामनिवास शर्मा की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रही।

श्री रामनिवास शर्मा लोकनायक जयनारायण व्यास के अत्यन्त विश्वास के साथियो में से थे और जोधपुर राज्य के विरुद्ध जब आन्दोलन छिडे गए तो जोधपुर का सत्याग्रह केन्द्र ब्यावर मे ही स्थापित किया गया और श्री रामनिवास शर्मा उस केन्द्र का पूरी तरह सचालन करते रहे।

श्री शर्मा ने मुकुट बिहारीलाल भार्गव के ससद के चुनावो मे तथा जैतारण, खरवा आदि कई स्थानो मे चुनावो का सचालन किया। वे अजमेर मे (मेयो कॉलेज मे) ए० आई० सी० सी० के अधिवेशन के समय 1954 मे कॉंग्रेस प्रदर्शिनी के सयोजक थे और और 1962 मे भारत सेवक समाज द्वारा आयोजित अखिल भारतीय प्रदर्शिनी के भी सयोजक थे।

ब्यावर म्युनिसिपेलैटी पर तिरगा झडा फहराने के अपराध मे जब ब्यावर के अग्रेज कमिश्नर ने 5 कॉंग्रेसी सदस्यो को अयोग्य घोषित करके सदस्यता से हटा दिया था। कमिश्नर को उत्तर देने के लिए श्री रामनिवास शर्मा ने कॉंग्रेस की ओर से एक महतर, एक भावी, एक रेगर, एक खटीक और एक चमार पाँचो अशिक्षित व्यक्ति खडे किए कि ब्यावर नगर के समस्त सवर्णों ने अनुसूचित जाति के पाँचो अशिक्षितो को भारी बहुमत से विजयी बनाकर अग्रेज कमिश्नर के मुँह पर करारा तमाचा लगाया।

श्री रामनिवास शर्मा की आयु सत्तर वर्ष के करीब पहुँच गई है। इन दिनो उनके आँखो की ज्योति कुछ कमजोर हो गई है। अत. वे इन दिनो राजनीति मे सक्रिय रूप से क्रियाशील नही है। लेकिन अपने समय मे श्री रामनिवास शर्मा अपने क्षेत्र मे कॉंग्रेस का पर्याय बन गए थे और इनके गाँवो के दौरो पर लोग यही कहते थे कि कॉंग्रेस आ गई है।



श्री शंकरलाल वर्मा,
मामाजी.

अवसान जनवरी 1962.

भरतपुर शासन का पहला प्रहार

श्री शकरलाल वर्मा मूलरूप से भरतपुर निवासी थे। अपने विद्यार्थी काल से ही उन्होने भरतपुर राज्य मे होने वाले अन्याय और अत्याचारो के समाचार कानपुर के 'प्रताप' मे छपाने शुरू कर दिए थे। वे अपने विद्यार्थी काल से ही राज्य शासन मे सुधारो के सबध मे पत्रो मे लेख लिखते रहते थे। भरतपुर शासन की शुरू से ही उन पर क्रूर दृष्टि रही। विद्यार्थी काल मे ही कई बार उनकी तलाशिये ली गई थी और पुलिस मे बुलाकर कई बार डराया धमकाया गया था। अत मे सरकार ने उन्हे राजकीय स्कूल मे निकाल दिया और भरतपुर मे रहकर आगे पढना उनके लिए असम्भव सा हो गया।

श्री शकरलाल वर्मा ने भरतपुर से निकाले जाते ही कानपुर पहुँच कर 'प्रताप' मे गणेश शकर विद्यार्थी के पास पत्रकारिता की व्यवहारिक शिक्षा ली। फिर तो उन्होने कर्मवीर, राजस्थान केसरी आदि कई पत्रो मे कार्य किया। उनका जीवन एक राजनैतिक पत्रकार का जीवन था वहाँ भी वे निश्चय की स्थिति नही थे। वे पत्रकार बाद मे थे—पहले वे एक देशभक्त और कट्टर कांग्रेसी थे। उनके विचारो मे लोकमान्य तिलक की उग्रता थी और सामाजिक दृष्टि से वे आर्यसमाज के सुधारवाद से ओतप्रोत थे। उनकी दृष्टि क्रान्तिकारी थी।

सैनिक विद्रोह की तैयारी में एक वर्ष की सजा

श्री शकरलाल वर्मा नमक सत्याग्रह के पहले अजमेर पहुँच गए थे। और, प्रान्त व्यापी स्तर पर सत्याग्रह को सगठित करने मे लगे हुए थे। वे उन दिनो अजमेर जिला कांग्रेस के महामन्त्री थे। उन दिनो प० जवाहरलाल नेहरू ने भारतीय सैनिको के नाम एक अपील निकाली थी। उसकी प्रतियें अजमेर कांग्रेस की ओर से छपवाकर शकरलाल वर्मा ने नसीराबाद की छावनी मे हलचल मचाने की शुरूआत करदी। वे भारतीय सैनिको मे विद्रोह जगाने की तैयारी मे थे। अजमेर के ही श्री कपिलदेव गौतम उनके सहयोगी थे।

नसीराबाद के फौजी कैम्प मे पं नेहरू की अपील के पर्चे बाटते हुए कपिलदेव गौतम गिरफ्तार कर लिए गए । शकरलाल वर्मा और गौतम पर नसीराबाद मे मुकद्दमा चला और 1 वर्ष के लिए वे जेल भेज दिए गए । 1942 मे श्री शकरलाल वर्मा तीन वर्ष के लिए नजरबन्द कर दिए गए ।

श्री शकरलाल वर्मा भी बाद मे दिल्ली के हिन्दुस्तान मे कार्य करने चले गए । 1942 मे तीन वर्ष की नजरबन्दी ने उनके स्वास्थ्य को तोड दिया । यो भी वे शरीर से अत्यन्त दुबले पतले ही थे । उनका स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन गिरता गया । परन्तु वे एक जन्मजात देशभक्त और कट्टर सिद्धांतवादी व्यक्ति थे । उनकी आर्थिक स्थिति कभी अच्छी नही रही परन्तु उन्होने देश सेवा के आगे न कभी अपने शरीर का खयाल किया और न कभी अपने परिवार का, न उन्होंने कभी अपने अभाव अभियोग की चर्चा ही की । वे निर्द्वन्द्वभाव से अपने कार्य मे जुटे रहे । वे एक मौन साधक थे । उनकी मौन साधना और उनके कर्मशील जीवन से कई नौजवानो ने प्रेरणा लेकर अपना भविष्य बनाया है ।

जनवरी 1962 मे दिल्ली मे उनका देहावसान हो गया ।

श्री शोभालाल गुप्त



पता—डी 31, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली–49

समर्थ गुरु के समर्थ शिष्य

श्री शोभालाल गुप्त मूल रूप से भूतपूर्व मेवाड रियासत के रहने वाले है। उनके पिता बिजोलियाँ मे ही रहते थे और उनका विद्याध्ययन भी वही बिजोलियाँ ग्राम मे ही हो रहा था। श्री शोभालाल गुप्त को देशभक्ति की दीक्षा बिजोलियाँ मे ही मिली। यह दीक्षा देने वाले थे श्री विजयसिंह पथिक, शोभालाल गुप्त एक शिष्य के रूप मे पथिकजी के सम्पर्क मे आए। देश के प्रति भी उनका कुछ कर्त्तव्य है और उसका निर्वाह करने के लिए उन्हे तैयार होना चाहिए—इस भावना ने बिजोलियाँ मे ही शोभालाल गुप्त के मानस मे जन्म ले लिया था। इस भावना ने आगे जाकर उन्हें समर्थ गुरु का समर्थ शिष्य सिद्ध किया और देश के लिए वे अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करने मे सफल हो सके।

असहयोग आन्दोलन मे शिक्षा की आहूति

श्री शोभालाल गुप्त आगे की पढाई के लिए बिजोलियाँ से अजमेर आ गए थे और दयानद हाईस्कूल मे सातवी कक्षा मे पढ रहे थे कि उन्ही दिनो गाँधीजी के असहयोग की आँधी अजमेर मे भी चली। उन दिनो अजमेर के नेता चादकरण शारदा थे। उन्होंने छात्रो से अपील की कि अंग्रेजी राज के नियन्त्रण मे चलने वाले स्कूल-कॉलिज गुलाम खाने हैं और छात्रो को उससे बाहर निकल आना चाहिए। श्री शोभालाल गुप्त पर भी उस अपील का बहुत गहरा प्रभाव पडा और वे अपने दो चार साथी विद्यार्थियो के साथ स्कूल छोडकर देश-सेवा मे कूद पडे।

राजस्थान सेवा संघ मे नए संकल्प से प्रवेश

उन दिनो विजयसिंह पथिक ने देशी रियासतो की प्रजा की मुक्ति के लिए

'राजस्थान सेवा सघ' नाम की एक सस्था सगठित की। उसका कार्यालय वर्धा मे था। वही से उन्होंने रियासती जनता के लिए 'राजस्थान केसरी' नाम का एक साप्ताहिक पत्र निकाला। उन्हे अनुभव हुआ कि वर्धा मे बैठकर राजपूताने की रियासतो के जन आन्दोलनो का सचालन असभव है। अत वे अपने साथियो सहित अजमेर चले आए। और राजस्थान सेवा सघ यहीं से काम करने लगा।

श्री शोभालाल गुप्त भी स्कूल से निकलने के बाद कार्य करने के लिए किसी उपयुक्त मच की तलाश मे थे। पथिकजी से उनकी पुरानी जान पहिचान थी। अत वे राजस्थान सेवा सघ के आजीवन सदस्य बन गए और यह सकल्प लिया कि अब उम्र भर राजस्थान की पीडित जनता की मुक्ति के लिए काम करेंगे।

तरुण राजस्थान का संपादन और एक वर्ष की सजा

राजस्थान सेवा सघ के मुख पत्र के रूप मे 'तरुण राजस्थान' साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन होता था। पत्र के सपादक, मुद्रक और प्रकाशक की जगह श्री शोभालाल गुप्त का ही नाम छपता था। 'तरुण राजस्थान' मे श्री रामनारायण चौधरी के दो लेखो को राजद्रोहात्मक मानकर सपादक की गिरफ्तारी का वारंट निकाल दिया गया। मुकद्दमा चला और शोभालाल गुप्त को 1924 मे राजद्रोह के अपराध मे एक वर्ष की सख्त कैद की सजा दी गई। देश सेवा का यह पहला पुरस्कार उन्हे 17 वर्ष की उम्र मे ही मिल गया।

महात्मा गाँधी के निकटतम संपर्क मे

पथिकजी पाँच वर्ष की सजा काट कर उदयपुर से अजमेर आ गए थे। परन्तु उस समय तक सेवा सघ मे परस्पर मतभेद उभर आये थे। वे इतने उग्र हुए कि सेवा सघ छिन्न-भिन्न हो गया। एक शक्तिशाली कर्मठ सस्था का यह दु खद अत था। ऐसी स्थिति मे शोभालाल गुप्त का पथिकजी से साथ छूट गया और उन्होने अपनी किश्ती रामनारायण चौधरी के साथ जोड दी। चौधरीजी के साथ-साथ शोभालाल गुप्त महात्मा गाँधी के पास साबरमती आश्रम पहुचे। करीब तीन महीने तक शोभालाल गुप्त को इस युग के सबसे बडे महापुरुष गाँधीजी के निकटतम सपर्क मे रहने का अवसर मिला। साबरमती आश्रम मे रहकर सार्वजनिक सेवा के लिए वे नए रूप मे दीक्षित हुए। साबरमती आश्रम मे रहकर उन्होंने जो कुछ सीखा वह कही भी अन्यत्र सीखा नही जा सकता था।

एक भाषण और एक वर्ष की सजा

नमक सत्याग्रह के डाँडी-कूच मे शोभालाल गुप्त गाँधीजी के दल में शामिल नही हुए। वे राजस्थान को अपना कार्यक्षेत्र मान चुके थे और अजमेर आकर ही नमक सत्याग्रह शुरू करना चाहते थे। अजमेर लौटने पर एक दिन एक सभा मे भाषण देने के अपराध मे गिरफ्तार कर लिए गए और न्यायाधीश के समक्ष उन्हे पेश किया गया। श्री शोभालाल गुप्त ने

न्यायाधीश के सम्मुख अपना विश्वास प्रकट किया कि ब्रिटिश साम्राज्य ताश के पत्तो की तरह लडखडा कर गिर पडेगा। यह निर्भीकता उन्हे गाँधीजी से ही मिली थी। न्यायाधीश ने उन्हे एक वर्ष की सजा दी लेकिन गाँधी-इर्विन समझौते के अन्तर्गत वे करीब नौ महीने बाद ही जेल से छूट गए।

राजस्थान सेवक मडल और आजीवन सेवा की प्रतिज्ञा

जेल से मुक्त होने के बाद रामनारायण चौधरी के साथ मिलकर शोभालाल गुप्त ने राजस्थान सेवक मडल नाम की एक नई सस्था बनाई। उसने यह मर्यादा स्थिर की गई कि जहाँ रियासतो की ओर से आपत्ति नही होगी वहाँ यह सस्था खादी प्रचार, नशा निषेध, अस्पृश्यता निवारण और एक्यता आदि गाँधीजी के बताए रचनात्मक कार्य करेगी। प्रजा की शिकायतो को विनयपूर्वक राजा के आगे रखेगी और राजा प्रजा मे सहयोग का वातावरण बनाएगी।

यह सस्था भी राजस्थान की आजीवन सेवा करने की प्रतिज्ञा लेने वाले सेवको की सस्था थी। और उसमे राजस्थान सेवा सघ के कई पुराने साथी शामिल हो गए थे। डूँगरपुर राज्य मे इस सस्था ने शिक्षा, खादी, सामाजिक सुधार का कार्य किया किन्तु कार्यकर्त्ताओ की कमी के कारण यह सस्था कुछ वर्ष चलने के बाद निष्क्रिय हो गई और उसके सदस्य स्वतत्र रूप से काम करने लग गए।

रियासतो मे स्वतत्र संगठन और काँग्रेस का समर्थन

रियासतो मे एक नई जागृति के लक्षण प्रकट हो रहे थे। हरिपुरा के अपने अधिवेशन मे काँग्रेस ने रियासती लोगो को परामर्श दिया था कि वे अपने स्वतत्र सगठन कायम करके नागरिक स्वतत्रता और उत्तरदायी शासन के लिए प्रयत्न कर सकते हैं। काँग्रेस उन्हे अपना नैतिक समर्थन देगी। लेकिन उन्हें अपने अधिकारो की लडाई खुद ही लडनी पडेगी। इसके बाद तो हर रियासत मे प्रजामडल, प्रजापरिषद और लोक परिषद आदि सस्थाए बनने लग गई और हर रियासत के लोग अपने अधिकारो की प्राप्ति के लिए सगठित होने लग गए।

राजनीति के उतार चढाव और राजनैतिक सस्थाओ की असफलता के बाद प्रतिकूलताओ से जूझते-जूझते, आजीवन राजस्थान की जनता की सेवा करने की प्रतिज्ञा लिए हुए शोभालाल गुप्त ने 1940 मे राजस्थान छोडने का निश्चय कर लिया। 1940 मे उन्होने अपने जीवन के अगीकृत क्षेत्र को लबे समय के लिए छोड दिया। राजस्थान छोडन के बाद उन्होने दिल्ली के हिन्दुस्तान मे सह सम्पादक का कार्य सभाला। इस पत्र मे रहकर अपनी लेखनी से राजस्थान की और देश की जो भी सेवा सभव हो सकी वह करते रहे।

अगस्त क्रान्ति के समय 1942 मे जब गाँधीजी ने आजादी की आखिरी लडाई

छेडी और 'अग्रेजो भारत छेडो' का नारा दिया तो देश भर मे प्रमुख कांग्रेसी नेताओ की वडाधड गिरफ्तारियें होने लगी। उस सिलसिले मे अग्रेज सरकार ने राष्ट्रीय कार्यकर्ताओ और देशभक्तो को सामूहिक रूप से नजरबद किया। शोभालाल गुप्त की गिनती भी इसी श्रेणी के लोगो मे की गई और उन्हे दो वर्ष के लिए अजमेर की जेल मे रख दिया गया।

करीब तीस वर्ष तक हिन्दुस्तान के सह सपादक का कार्य करने के बाद अब शोभालाल गुप्त ने हिन्दुस्तान की सेवाओ से अवकाश ले लिया है। वे स्वतत्र रूप से लेखन कार्य करते हैं। आज भी राजस्थान के कई पत्रो के वे सपादकीय लिखते हैं। उन्होने कई पुस्तको का अनुवाद भी किया है। राजस्थान के साथ आज भी उनका सबध उतना ही आत्मीय और निकटता का है। वे समय समय पर राजस्थान आते रहते है परन्तु अब उनका स्थाई निवास दिल्ली मे ही है।



श्री अमरसिंह आर्य



श्री अमरसिंह आर्य भजनोपदेशक का जन्म 7 फरवरी, 1890 मे सिंध के लरकाना जिले के रतोदरा ग्राम में हुआ। आपने सिंधी फाईनल और हिन्दी सिद्धान्त शास्त्री तक की शिक्षा प्राप्त की है। आप इनके अतिरिक्त अंग्रेजी, उर्दू, गुरुमुखी और गुजराती आदि भाषाए भी जानते है।

आपने 1921 मे असहयोग आन्दोलन मे भाग लिया था तब आपको 1 वर्ष के कठोर कारावास की सजा हुई थी।

विभाजन के बाद आप भारत मे आ गए और आर्य समाज की ओर से उपदेश का कार्य करते है। आपका पता है · आर्य समाज, नसीराबाद (राजस्थान)।

श्रीमती कोकिला देवी

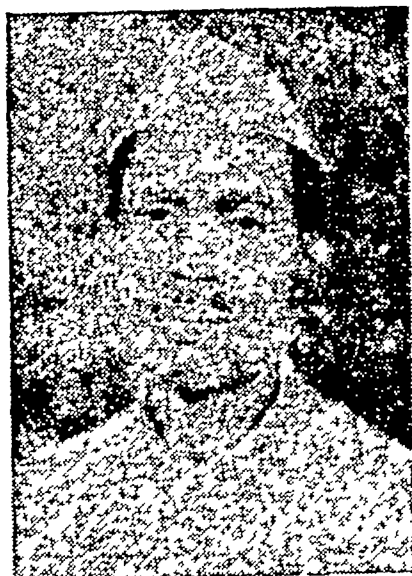


श्रीमती कोकिलादेवी मैथिल ब्राह्मण परिवार की एक विधवा महिला है। आपकी उम्र इस समय 65 वर्ष है। आपकी 15 वर्ष की एक अविवाहित पुत्री आपकी आश्रिता है।

1931 के नमक सत्याग्रह मे आपने अन्य महिलाओ के साथ अजमेर मे सत्याग्रह किया और 23 जनवरी 1931 को आपको गिरफ्तार करके 3 महीने की सजा दी गई। अजमेर की पुलिस आपकी सिलाई की मशीन उठा कर ले गई थी वह आज तक वापस नही लौटाई गई।

श्रीमती कोकिला देवी अपनी जीविका सिलाई के कार्य से चलाती है। आपका पता 378, जोन्सगज, अजमेर।

गंगासहाय आर्य

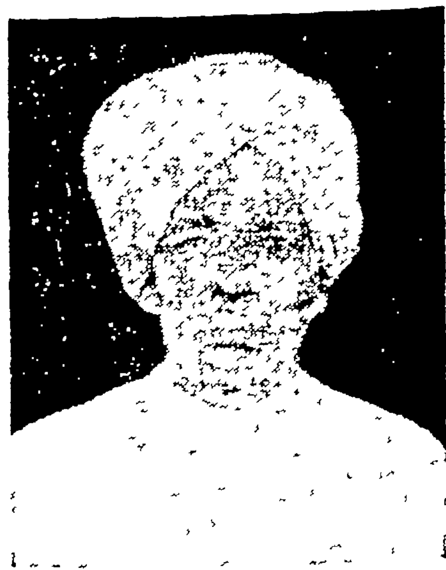


श्री गगासहाय आर्य का मुख्य कार्य मजदूरो मे ही रहा है। 1932 मे वे व्यावर की एडवर्ड मिल मे कपडा वुनाई का कार्य सीखने को भर्ती हुए। परन्तु 1933 मे मिलो की हडताल मे भाग लेने पर उन्हे मिल की नौकरी से अलग कर दिया गया।

सन् '34 मे गगासहाय आर्य पहली वार कांग्रेस के सदस्य वने। फिर तो 1940 के व्यक्तिगत सत्याग्रह मे दो वार जेल गए और भारत छोडो आन्दोलन मे तीसरी वार वे लवे समय तक व्यावर की नगर काँग्रेस कमेटी की कार्य समिति के सदस्य रहे।

श्री गगासहाय का जन्म सवत् 1969, चैत्र शुक्ला 11, को उत्तरप्रदेश के जिला अलीगढ के जरारा ग्राम मे हुआ था। हिन्दी मिडिल तक की शिक्षा प्राप्त कर वे व्यावर आ गए। सन् '36 मे उन्होंने किशनगढ मे अतर्जातीय विवाह किया। आजकल मदनगज किशनगढ जिला अजमेर मे रहते है।

श्री गोकुलपुरी गुसांई



श्री गोकुलपुरी गुसाई अजमेर राज्य के शिक्षा विभाग मे अध्यापक थे। 'भारत छोडो' आन्दोलन के समय उन्होने अजमेर के अग्रेज कमिश्नर गिव्सन को व्यक्तिगत हैसियत मे अल्टीमेटम देकर लिखा था कि वे अविलम्ब कांग्रेस को शासन सत्ता सौंपकर भारत से चले जाए। इस अल्टीमेटम के परिणाम स्वरूप उन्हे अविलव सरकारी नौकरी से अलग कर दिया गया।

श्री गोकुलपुरी का जन्म 9 सितम्बर, 1910, को अजमेर जिले के गाँव जेठाना मे हुआ था। उनकी शिक्षा हिन्दी मिडिल तक ही हो सकी थी। अध्यापकी करते हुए ही उन्होंने खादी पहनने का व्रत ले लिया था। खादी प्रचार, पिछडे लोगो की सेवा और देश की स्वाधीनता के प्रत्येक काम मे वरावर भाग लेते रहे। वे आजकल अपने गाँव जेठाना वाया मागलियावास, जिला अजमेर मे रहते हैं।

श्री जगदीशनारायण चौबे



स्वर्गीय श्री जगदीश नारायण चौबे का जन्म 19 अक्टूबर 1913 को हुआ था। 15 वर्ष की उम्र से ही वे राजनैतिक प्रवृत्तियो मे भाग लेने लग गए। वे 1928 मे साबरमती आश्रम मे कुछ दिन तक महात्मा गांधी के पास भी रहे थे। उसी वर्ष अहमदाबाद मे एक राजद्रोहात्मक भाषण के सिलसिले मे उन्हे पहली बार 6 माह की सख्त सजा हुई। फिर तो ब्यावर-अजमेर मे 1930 मे 6 महीने की, 1932 मे डेढ वर्ष की सजा हुई। क्रान्तिकारी दल के साथ गठबधन के सदेह मे एक बार उन्हें पूना में भी 6 मास की सजा दी गई।

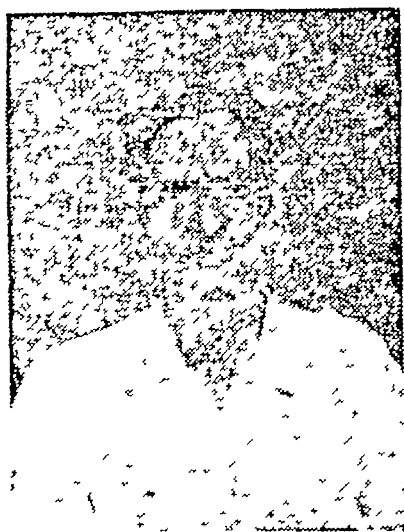
पुलिस की भयकर पिटाई से श्री चौबे दोनो कानो से बहरे हो गए थे। उनका बाया हाथ टूट गया। ब्यावर मे आपकी पान की दुकान पर 1932 मे पुलिस छापा मार कर, फर्नीचर, कैस बाक्स और साईकल उठा कर ले गई और रु० 200/– जुर्माना भी किया। 9 जनवरी 72 को आकाशवाणी से शेख मुजीब रहमान की रिहाई का समाचार सुनकर वे खुशी से झूम उठे और उसी खुशी मे अकस्मात उनकी हृदय गति रुक गई। उनका निवास 1/77, गोपालजी मोहल्ला, ब्यावर मे है।

श्री दाताराम शर्मा

श्री दाताराम शर्मा आजकल अजमेर मे श्रीनगर रोड पर रहते हैं लेकिन ये मूल निवासी आगरा (उत्तरप्रदेश) के हैं। श्री दाताराम शर्मा आयुर्वेद रत्न, आयुर्वेदाचार्य शास्त्री और कविराज हैं।

श्री दाताराम शर्मा ने आगरे मे ही स्वतन्त्रता सग्राम मे भाग लिया था। उन्होंने बाल भारत सभा के स्वयसेवक के रूप मे शराबबदी, विदेशी कपडो के बायकॉट और धरने देने के काम किए थे। आगरा मे व्यक्तिगत सत्याग्रह के समय 23 मई '41 को उन्हें भारत सुरक्षा कानून के अतर्गत 6 महीने की सजा दी गई थी और 8 सितम्बर '42 को उन्हे 3 सप्ताह की सजा हुई। उनकी रुचि रचनात्मक कार्य मे भी रही है।

श्री देवराज नँदचहल

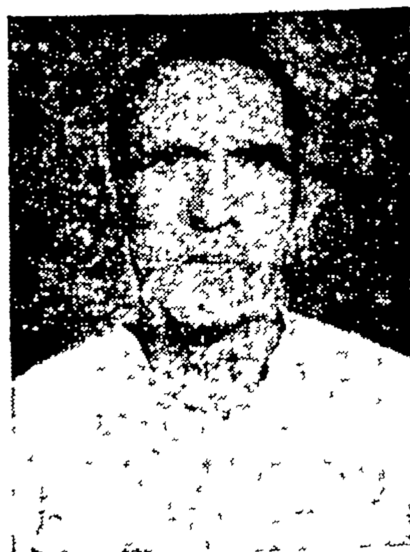


श्री देवराज नदचहल प्रेमसिह ब्रिल्डिग आर्यनगर, अजमेर मे रहते हैं। परन्तु, इनका जन्म 27 मार्च 1916 को मेरठ मे हुआ था। ये जाति से खत्री है। इनका परिवार आर्य समाजी है। अत राष्ट्रीयता के सस्कार घर के वातावरण से ही इन्हे प्राप्त होते गए। इनकी शिक्षा मेरठ मे हुई थी। मेरठ पडयत्र केस के वहादुर अभियुक्तो को पहली बार देखकर इन्हे देश के लिए कार्य करने की प्रेरणा मिली थी। 1930 मे श्री देवराज ने नमक सत्याग्रह मे एक विद्यार्थी स्वयसेवक के रूप मे कार्य किया था जिसके परिणामस्वरूप उन्हे स्कूल से निकाल दिया गया।

श्री देवराज नदचहल वोम्बे लाइफ इन्स्योरेंश कपनी के चीफ एजेट की तरह अजमेर मे कार्य कर रहे थे कि 'भारत छोडो' आन्दोलन शुरू हो गया। अजमेर मे जब सभी नेता जेलो मे रख दिए गए तव ये अगस्त क्रान्ति के आन्दोलन मे कूद पडे। इन्हे इसलिए वीमा कपनी की नौकरी छोडनी पडी। इन्हे 10 महीने अजमेर जेल मे नजरबद रखा गया।

श्री नेनूराम खंडेलवाल

श्री नेनूराम खडेलवाल मूल रूप से ग्राम देलवाडा के रहने वाले हैं परन्तु आजकल डिग्गी मोहल्ला, व्यावर मे रहते हैं। इनका जन्म 28 फरवरी 1914 को एक खडेलवाल वैश्य परिवार मे हुआ था।



इनका राजनैतिक कार्यक्षेत्र अजमेर मेरवाडा रहा है। पर सन् 39 मे जोधपुर के आन्दोलन मे एक वार 22 दिन के लिए हवालात मे रखे गए थे। व्यक्तिगत सत्याग्रह मे श्री नेनूराम को व्यावर न्यायालय मे 1 वर्ष की सजा और भारत छोडो आन्दोलन मे 6 महीने की सजा मिली थी।

श्री नेनूराम खंडेलवाल सन् '30 से राष्ट्रीय प्रवृतियो मे लगे हुए हैं। सन् '36 मे पहली वार कांग्रेस के सदस्य वने और पूरे 36 वर्ष से वे कांग्रेस के सेवा के आदर्श को निबाह रहे हैं।

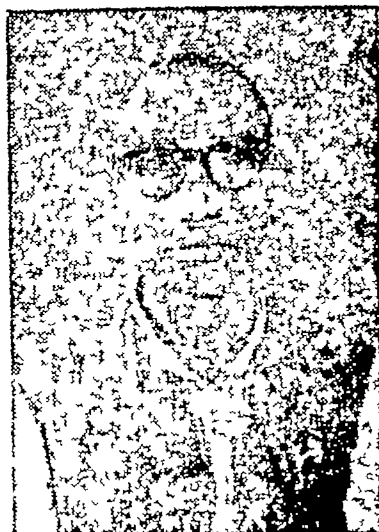
श्री धूलियाप्रसाद

श्री धूलियाप्रसाद मूलरूप से धौलपुर के हैं। परन्तु 1925 के करीब अजमेर आकर बस गए। ये जाति के पटवा हैं। इनका जन्म सन् 1902 को होली के दिन हुआ था।

श्री धूलियाप्रसाद, सैयद अब्बास अली की प्रेरणा से राष्ट्रीय आन्दोलन मे भाग लेने लगे थे। इन्होने अजमेर मे बिसातखाने की दुकान करली थी। 1930 के नमक सत्याग्रह मे वे गिरफ्तार हुए। इन्हे 9 महीने की सजा दी गई और इनके बिसातखाने की दुकान का 4-5 हजार रुपए का माल पुलिस उठा कर ले गई।

श्री धूलियाप्रसाद जेल से मुक्त होने के बाद स्वतत्र व्यापार करते रहे और राष्ट्रीय प्रवृत्तियो मे भाग लेते रहे है।

श्री राधावल्लभ, कचोरा.



श्री राधावल्लभ का जन्म उत्तरप्रदेश के आगरा जिले के ग्राम कचोर मे ब्राह्मण (असहमति के साथ) परिवार मे सन् 1911 मे हुआ। इनकी शिक्षा भी आगरा जिले मे ही हुई लेकिन, इनका राजनैतिक कार्यक्षेत्र महाराष्ट्र और अजमेर-मेरवाडा रहा।

श्री राधावल्लभ सन् '30 से ही कांग्रेस की प्रवृत्तियो मे सक्रिय हो गए थे। उन्हे जलगांव, भुसावल और अजमेर मे 4 बार अलग-अलग आन्दोलनो मे सजा हुई। उनकी भुगती हुई सजा की कुल अवधि 7 महीना 11 दिन की थी।

श्री राधावल्लभ का नाम क्रान्तिकारी आन्दोलन के साथ भी जोडा जाता रहा है। परन्तु इस सबध मे किए गए किसी भी कार्य की आज चर्चा करने को ये मात्र शेखी बघारने की सज्ञा देते हैं।

स्वर्गीय श्री नाथालाल

श्री नाथालाल मूलरूप से गुजरात के निवासी हैं। व्यापार के सिलसिले मे ये पश्चिमी पाकिस्तान चले गए थे लेकिन विभाजन के समय मे अपना भरा-पूरा घर छोड कर अजमेर आकर बस गए।

श्री नाथालाल का जन्म 2 फरवरी 1917 को हुआ था। 1932 के आन्दोलन मे शिकारपुर मे शराब की दुकानो पर पिकेटिंग करते गिरफ्तार हुए। इन्हे 6 महीने की सजा दी गई थी। श्री नाथालाल राष्ट्रीय आन्दोलनो मे निरन्तर भाग लेते रहे हैं। 30 जनवरी '65 को इनकी मृत्यु हो गई। इनकी विधवा पत्नी कस्तूरबाई को राज्य सरकार की ओर से रु० 75/- प्रति माह पेंशन मिलती है।

श्री बाबूराम ब्रह्मकवि



श्री बाबूराम ब्रह्मकवि का जन्म 18 जून 1913 को आगरा जिले के दिनौली नामक ग्राम मे हुआ था। 7 वर्ष की उम्र मे उन्होने रेल्वे लोको वर्कशोप मे काम करना शुरू कर दिया था। उनमे उम्र के साथ-साथ राष्ट्रीयता के सस्कार विकसित होते गए।

श्री बाबूराम ब्रह्मकवि 1928-29 मे श्री विजयसिंह पथिक से प्रेरित होकर कांग्रेस क प्रवृत्तियो मे भाग लेने लग गए थे। 20 जुलाई '30 को उन्होंने रेल्वे वर्कशोप मे तिरगा झडा फहराया था। उसी दिन से इन्हे नौकरी से अलग कर दिया गया।

अगस्त '30 मे अजमेर मे सत्याग्रह करते हुए ये श्री प्रकाश कविरत्न आदि साथियो के साथ गिरफ्तार कर लिए गए। इन्हे 3 महीने की सजा दी गई। श्री बाबूलाल राष्ट्रीय कविताएँ लिखते है और राष्ट्रीय प्रवृत्तियो मे भाग लेते रहे है। आजकल आर्य भजनोपदेशक का कार्य कर रहे हैं। इनका निवास रामगज, अजमेर मे है।

श्री सूर्यमल मौर्य



श्री सूर्यमल मौर्य राजपूताना दलित जाति सघ के अध्यक्ष है। 1952 मे आप अजमेर राज्य की विधान सभा के निर्वाचित सदस्य थे। आप अजमेर के चीफ कमिश्नर की एडवाइजरी कौंसिल के मेम्बर भी बनाए गए थे ।

श्री सूर्यमल मौर्य का जन्म अनुसूचित जाति के रैंगर समाज मे ब्यावर मे 15 अक्टूबर 1910 को हुआ। श्री मौर्य ने हाईस्कूल तक शिक्षा प्राप्त की है। 1942 के भारत छोडो आन्दोलन मे 6 मास के कठोर कारावास की सजा उन्हे हुई थी

श्री मौर्य वर्षों तक प्रदेश कांग्रेस के सदस्य रहे है और कर्मठ कांग्रेसी की तरह वे श्रमिको, हरिजनो और अनुसूचित जातियो के उद्धार के लिए निरतर कार्य करते रहे हैं। आजकल श्री मौर्य 28, हाथी वावू का वाग, जयपुर मे रहते हैं।

श्री सेवाराम लेखराज भाटिया

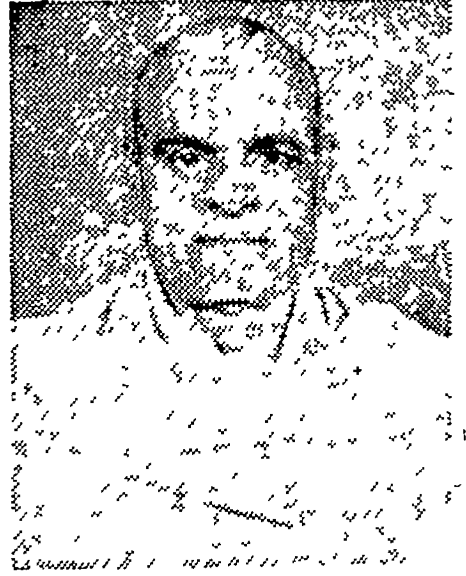


श्री सेवाराम भाटिया का जन्म हैदरावाद सिंघ नसरपुर कस्वे मे 27 मई 1907 को हुआ था। वे वी० ए० की शिक्षा समाप्त करके राजकीय स्कूल मे अध्यापक हो गए थे। 1930 के नमक सत्याग्रह मे अध्यापकी से त्यागपत्र देकर वे आन्दोलन मे कूद पडे। उन्हे पहली वार 4 महीने की सजा मिली।

श्री भाटिया को 1932 मे 1 वर्ष की सजा और 1933 मे 6 महीने की सजा भुगतनी पडी। 1942 के भारत छोडो आन्दोलन मे हैदरावाद सिंघ के सिटी मजिस्ट्रेट ने 1 वर्ष के कठोर कारावास की सजा दी।

श्री सेवाराम लेखराज भाटिया की राजनैतिक प्रवृत्तियो के केन्द्र सिंघ मे नसरपुर, मीरपुर, टडो और हैदरावाद रहे हैं। विभाजन के वाद वे अजमेर आ गए और शरणार्थियो के पुनर्वास के लिए कार्य किया। श्री भाटिया 16/33 पुरानी मडी, अजमेर मे रहते हैं।

स्वामी सोमानंद



स्वामी सोमानद आर्य सन्यासी है। सन्यास लेने के पहले आपका नाम शीतलचद्र शर्मा 'शीतल' था। आपका जन्म सवत् 1960 की आश्विन कृष्णा 1 को बृजमडल नरी सेंमरी के ब्राह्मण परिवार मे हुआ था। आपने वेदो का गहरा अध्ययन किया है। आप उत्तरप्रदेश से राजस्थान मे आ गए थे। अजमेर मे आपने आर्यसमाज मे नौकरी करली थी।

स्वामी सोमानद असहयोग आन्दोलन के समय से ही राष्ट्रीय प्रवृत्तियो मे लग गए थे। सन् '30 मे आपने सारे जगह-जगह घूमकर अग्रेजी सल्तनत के विरोध मे भाषण दिए और लोगो को सत्याग्रह के लिए उत्प्रेरित किया। नैनीताल मे आप एक आपत्तिजनक भाषण के कारण गिरफ्तार कर लिए गए। आपको 1 वर्ष की सजा हुई। उन्हे नैनीताल से डिस्ट्रिक्ट जेल बरेली मे भेज दिया गया था। आजकल आप जयपुर मे रहते है।

कविरत्न प्रकाशचंद्र

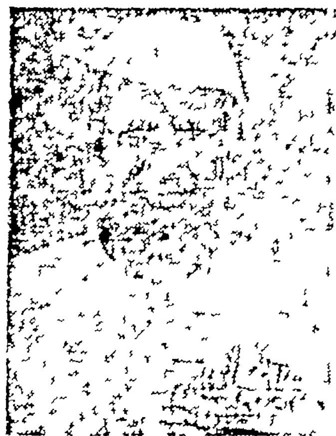


पडित प्रकाशचद्र कविरत्न का जन्म सवत् 1960 मे अजमेर मे हुआ। शिक्षा–दीक्षा भी अजमेर मे ही हुई।

पडित प्रकाशचद्र यो तो आर्य भजनोपदेश के रूप मे प्रख्यात है परन्तु उनमे देशभक्ति और राष्ट्रीयता के सस्कार भी अत्यन्त तीव्र थे। असहयोग आन्दोलन के समय से अपनी स्वरचित राष्ट्रीय कविताओ मे भारतीय जनता को देश सेवा की प्रेरणा देते रहे हैं। उनके कठ मे जादू है। ये जब कभी सकीर्त्तन करते, गाते या बोलते हैं तो इनकी वाणी नही इनका हृदय बोलता है, इनकी आत्मा बोलती है।

1931 के नमक सत्याग्रह मे प्रकाशजी अपनी इसी प्रभावशाली वक्तृत्व शक्ति के कारण गिरफ्तार कर लिए गए थे और 6 महीने जेल मे रहे थे। इनके अनेको काव्य ग्रथ प्रकाशित हुए है और बडी तादाद मे बिके हैं। पिछले कई वर्षों से वे गठिए से ग्रसित है और उनका चलना फिरना असभव सा हो गया है।

श्री हजारीलाल पंवार



श्री हजारीलाल पवार का जन्म ब्यावर में रैंगर जाति मे 5 अगस्त 1914 को हुआ। इनके जन्म के समय समाज मे दलित वर्ग की दशा अत्यन्त शोचनीय थी।

श्री हजारीलाल पवार ने सबसे पहले रैंगर जाति को बेगार से मुक्ति दिलाने का आन्दोलन किया।

भारत छोडो आन्दोलन मे श्री हजारीलाल पवार को एक आपत्तिजनक भाषण के अपराध मे गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हे छ महीने के कठोर कारावास की सजा दी गई।

श्री हजारीलाल पवार 1952 मे जेठाना निर्वाचन क्षेत्र से अजमेर विधानसभा के लिए निर्वाचित हुए थे। स्वाधीनता के बाद लबे समय तक ये दलित वर्ग सघ के अध्यक्ष रहे हैं। इनका पता है—सूरजपोल, रैंगरो का मोहल्ला, ब्यावर।

श्री हरिप्रसाद शर्मा

श्री हरिप्रसाद शर्मा मूलरूप से उत्तरप्रदेश के है। इनका जन्म 24 जून, 1912 को हुआ। इनकी राजनैतिक प्रवृत्तियो का कार्यक्षेत्र गुजरात और अजमेर रहा है। ये अपनी छोटी उम्र मे ही राष्ट्रीय आन्दोलनो मे भाग लेने लग गए थे। इसलिए इनकी शिक्षा मिडिल से आगे नही हो सकी।

1930 मे नमक सत्याग्रह मे श्री हरिप्रसाद शर्मा ने अजमेर मे भाग लिया। अजमेर मे इन्हे 1 वर्ष की सजा हुई। 1932 मे ये वर्ली बबई में सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार हुए और 6 महीने के लिए जेल भेज दिए गए। 1933 में श्री शर्मा को सत्याग्रह करने पर नासिक में 6 महीने की सजा हुई। ये 1 महीने तक धरासणा में नजरबन्द रहे।

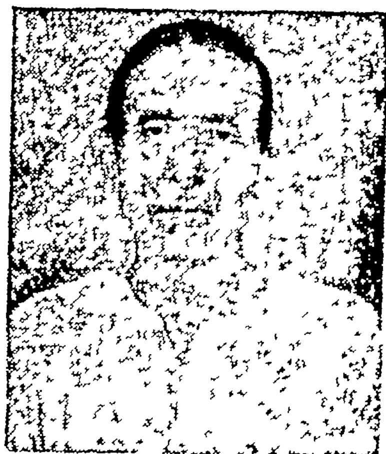
श्री शर्मा आन्दोलन के पहले खेती का धधा करते थे। जेल से मुक्त होने के बाद ये खादी उत्पादन और रचनात्मक कामो में लग गए। इस समय श्री शर्मा की उम्र 60 वर्ष की है। इन दिनो वे स्थायी रूप से अजमेर में रहते हैं।

राजस्थान में
स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी

- स्वतंत्रता के संदेश वाहक
- सत्याग्रही और
- स्वातंत्र्य सैनिक

अलवर

कबूलसिंह उर्फ महिपाल शास्त्री



श्री कबूलसिंह उर्फ महिपाल का जन्म 1907 के करीब हुआ था। उन्होंने पंजाब बोर्ड से शास्त्री की परीक्षा पास की थी। वे मूलरूप से उत्तरप्रदेश के मेरठ जिले मे ग्राम बस्सी के निवासी हैं परन्तु देश के बँटवारे के बाद वे मेरठ से अलवर आ गए थे।

वे 1929 से राजनैतिक प्रवृत्तियो मे सलग्न हो गए थे उन्होंने ग्राम्य कार्यकर्त्ता के रूप मे गाँधी आश्रमो मे प्रशिक्षण प्राप्त किया था। उनका कार्य क्षेत्र दिल्ली और मेरठ ही रहा है।

स्वतत्रता के सग्राम मे वे तीन बार जेल गए। पहली बार नमक सत्याग्रह के दौरान मेरठ मे शराब के गोदाम पर पिकेटिंग करते समय 27 फरवरी 31 को उन्हे 6 महीने की सजा दी गई थी। दूसरी बार दिल्ली मे विदेशी वस्त्रो के बहिष्कार के अपराध मे उन्होने 4 महीने 15 दिन की सजा भोगी और तीसरी बार दिल्ली मे धारा 144 तोडने पर 12-8-32 को 6 महीने की सजा हुई।

श्री कबूलसिंह ने अपना आगे का जीवन सामाजिक सेवा और अछूतोद्धार कार्य मे लगाया। उनका पता है—खपटा पाडी, अलवर।

श्री कृपादयाल माथुर

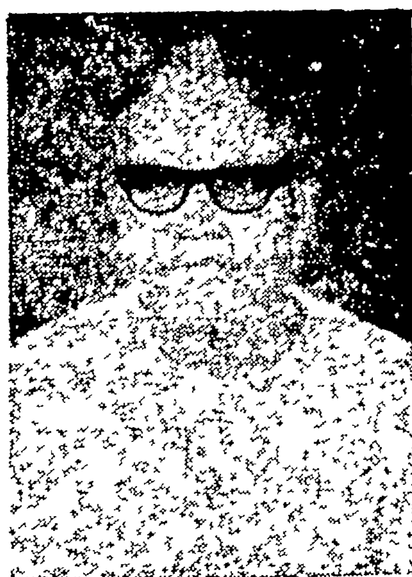
श्री कृपादयाल माथुर का जन्म 28 फरवरी 1916 को अलवर के एक कायस्थ परिवार मे हुआ। 1939 मे उन्होने आगरा कॉलेज से एल० एल० बी० परीक्षा पास की और सन् 1939 मे उन्होने अलवर मे वकालात शुरू कर दी। उसी वर्ष वे प्रजामडल के सदस्य बने और प्रजामडल के समर्थन से अलवर नगरपालिका के सदस्य बने।

भारत छोडो आन्दोलन मे गांधीजी के आह्वान पर उन्होंने श्री शोभाराम और श्री रामचन्द्र उपाध्याय के साथ वकालात छोड दी थी।

1945 मे श्री कृपादयाल तिजारा टाउन कमेटी के चेयरमेन निर्वाचित हुए। फरवरी '46 मे वे अलवर के प्रिवेन्टिव डिटेन्शन एक्ट के अतर्गत गिरफ्तार किए जाकर अलवर की सैंट्रल जेल भेज दिए गए। वे दुबारा गैर जिम्मेवार मिनिस्टरो ' कुर्सी छोडो आन्दोलन मे गिरफ्तार किए गए।

सन् 1939 से 47 तक श्री कृपादयाल माथुर प्रजामडल की कार्यकारिणी के तथा प्रदेश कॉंग्रेस के सदस्य रहे हैं।

लाला काशीराम गुप्ता



लाला काशीराम का जन्म अलवर रियासत की तहसील बहरोड के ग्राम धीलोट के एक सामान्य वैश्य परिवार मे 1 सितम्बर 1907 को हुआ था। उनके पिता ने 1914 से दिल्ली मे कपडे की आढत का व्यापार शुरू कर दिया था। अत आपका बचपन दिल्ली मे ही बीता। दिल्ली के हिन्दू कॉलेज मे पढे।

दिल्ली से लाला काशीराम जिला गुडगाव के कुण्ड नामक कस्बे मे स्वास्थ्य सुधार के लिए चले गए। 1936 तक वे कुण्ड मे ही रहे। नमक सत्याग्रह के समय उन्हें जेल गए लोगो के परिवारो की देखभाल का काम तथा आन्दोलन के लिए जनता से सपर्क रखने का कार्य सौंपा गया। 1945–46 के अकाल मे वे अकाल पीडितो की सेवा मे लगे रहे। इसी बीच उन्होंने अलवर के राजनैतिक कार्यकर्त्ताओ से सपर्क स्थापित किया। 1933 से 39 के बीच उन्होने अलवर मे कई शिक्षण सस्थाएँ वाचनालय, पुस्तकालय आदि खुलवाए। मित्रो के आग्रह पर सन् '40 मे वे स्थायी रूप से अलवर आ गए।

1942 मे राजा महेन्द्रप्रताप, पडित श्रीराम शर्मा और हरिहरलाल भार्गव जैसे भूमिगत क्रान्तिकारियो का केन्द्र स्थान कुड स्थित इनका स्लेट का कारखाना ही था।

1945 मे लाला काशीराम अलवर नगरपालिका के सर्वप्रथम निर्वाचित अध्यक्ष बनाए गए। सन् '46 मे खेडा मगलसिंह मे सभा करने के अपराध मे ये गिरफ्तार किए गए और 10 दिन बाद छोड दिए गए। अगस्त '46 मे गैर जिम्मेवार मिनिस्टरो ! कुर्सी छोडो आन्दोलनो मे लाला काशीराम दुबारा गिरफ्तार हुए और 10 दिन बाद समझौता हो जाने पर फिर जेल से मुक्त हो गए।

1948 मे जब केन्द्रीय सरकार ने शासन अपने हाथ मे लिया तब लाला काशीराम को एडमिनिस्ट्रेटर का एडवायजर बनाया गया। मत्स्य सरकार बनने पर इन्होने पुरुषार्थियो के पुनर्वास के काम मे अपने आपको लगा दिया।

1962 मे कांग्रेस छोडकर लाला काशीराम ने निर्दलीय के रूप मे ससद का चुनाव लडा और जीते। कांग्रेस विभाजन के बाद वे इन्दिरा गांधी के नेतृत्व को बल प्रदान करने की दृष्टि से पुन. कांग्रेस मे आ गए। 1962 से पूर्व लाला काशीराम वर्षों तक जिला कांग्रेस के अध्यक्ष तथा प्रदेश कांग्रेस एव अखिल भारतीय कांग्रेस के सदस्य रहे है।

लाला घासीराम गुप्ता



लाला घासीराम गुप्ता का जन्म तिजारा (अलवर) के एक वैश्य परिवार मे सन् 1912 मे हुआ। उनकी शिक्षा बनारस विश्वविद्यालय मे हुई। उनकी प्रवृत्तियो का केन्द्र तिजारा और समग्र अलवर राज्य रहा है।

उन्होंने 1943 मे चुंगी विरोधी आन्दोलन शुरू किया। उन पर 1 वर्ष तक इस सम्बन्ध मे मुकदमा चला और उन्हे 1½ महीने की सजा दी गई। वे सन् '46 मे खेडा मगलसिंह मे गिरफ्तार किए गए और 10 दिन बाद छोड दिए गए। इसी तरह से गैर जिम्मेवार मिनिस्टरो ! कुर्सी छोडो आन्दोलन मे भी उन्हे गिरफ्तार किया गया। परन्तु उस बार भी समझौता हो जाने के कारण वे 10 दिन बाद छोड दिए गए।

वे 46 मे नगरपालिका के सदस्य थे। 52 से 57 तक विधायक और अलवर जिला कांग्रेस की वर्किंग कमेटी के सदस्य रहे। वे अलवर के एक सेवाव्रती नेता हैं।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता

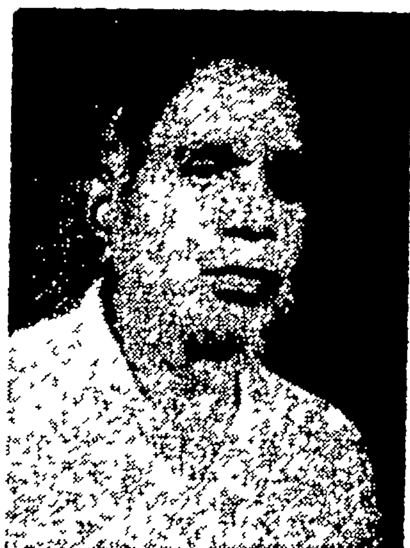


श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता अलवर जिले की बांसूर तहसील के रामपुर ग्राम के निवासी है। उनका जन्म 30 जनवरी 1912 को हुआ था। उन्होने बी० ए०, एल०एल० बी० तक शिक्षा प्राप्त की है। उनका व्यवसाय वकालात है।

अलवर प्रजामडल द्वारा 46 मे दो बार आन्दोलन चलाया गया। श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता दोनो आन्दोलनो मे जेल गए और 8–10 दिन तक प्रत्येक बार जेल मे रहे।

सन् 46–47 में नारायणपुर (अलवर) की एक सभा में भाषण देते समय उन पर कुछ प्रतिक्रियावादियो ने लाठी-फरसे से घातक आक्रमण किया। सन् '46–'47 में वे दो बार नजरबन्द रहे। 48 मे 53 तक अलवर नगरपालिका के अध्यक्ष रहे। 1952 मे 64 तक (62 से 64 के अलावा) वे विधानसभा के सदस्य रहे और राजस्थान राज्य में मंत्रीपद पर भी लंबे समय तक कार्य किया। उनका रहन सहन अत्यन्त सादा है और प्रकृति से अत्यन्त संवेदनशील और मिलनसार हैं उनका वर्तमान पता है- मोटर स्टैंड, अलवर।

पंडित भवानीसहाय शर्मा



जन्म · सन् 1908

पता : तहसील राजगढ़
जिला अलवर

भारत में आतंकवादियों के प्रमुख नेता

ब्रिटिश सल्तनत के डायरेक्टर ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टीगेशन मिस्टर बेमफोर्ड ने सन् 1931 के अंत मे पंडित भवानीसहाय शर्मा के संबंध मे अपनी गोपनीय सरकारी रिपोर्ट मे लिखा था कि चंद्रशेखर आजाद के बाद आतंकवादी हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के कमांडर-इन-चीफ के पद के लिए दो उम्मीदवार हैं, एक है यशपाल और दूसरे है भवानी सहाय। यशपाल इस समय तक गिरफ्तार किए जा चुके हैं। अब भारत के अधिकांश आतंकवादियो द्वारा भवानीसहाय को ही हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी का वास्तविक नेता माना जाएगा। मिस्टर बेमफोर्ड ने अपनी रिपोर्ट मे आगे लिखा कि यह एक माना हुआ सत्य है कि भवानी सहाय एच एस आर. ए का एक प्रमुख नेता है। वह आतंकवादी प्रवृत्तियो से कभी भी अलग नही हुआ है। यदि उसे इस समय मुक्त रहने दिया गया तो वह एच एस. आर ए को पुनर्जीवित और पुनर्संगठित करके देश मे चारो ओर आतंकवादी प्रवृत्तियो को फैला देगा

अनिश्चित काल की नजर बंदी की सिफारिश

मिस्टर बेमफोर्ड ने अपनी इसी रिपोर्ट मे आगे सिफारिश की कि देश मे आतंकवादी प्रवृत्तियो को समाप्त करने के लिए आवश्यक है कि भवानी सहाय को रेगुलेशन 3–1818 मे अनिश्चित काल के लिए नजरबंद कर दिया जाए। और इस सिफारिश के परिणामस्वरूप 21 अप्रेल 1932 के दिन ब्रिटिश सल्तनत ने पंडित भवानी सहाय शर्मा को राजबंदी (स्टेट प्रिजनर) बनाकर अनिश्चित काल के लिए नजरबन्द करके दिल्ली जेल मे भेज दिया। 24 जनवरी '33 को उन्हें नैनी सैण्ट्रल जेल मे भेज दिया गया जहाँ वे पंडित नेहरू के ठहरने के कमरो मे पंडित भवानी सहाय 4 वर्ष तक रहे। 1 फरवरी '38 को उन्हें फिर दिल्ली जेल मे भेज दिया गया।

28 दिन की भूख हड़ताल

1 फरवरी, 1938 को वह फिर दिल्ली जेल मे ले आये गये। यही दो और क्रान्तिकारी केसरगंज (अजमेर) के ज्वालाप्रसाद शर्मा और झाँसी के वी जी वैशम्पायन भी नजर बद थे। तीनो को नैनी से साथ-साथ दिल्ली जेल मे जहाँ भगतसिंह और बटुकेश्वरदत्त को एसेम्बली बमकाण्ड मे बद किया गया था, उसी स्थान पर रखा गया।

1939 मे इन तीनो क्रान्तिकारियो ने इस माँग को लेकर आमरण अनशन शुरू किया कि या तो उन्हें नजरबन्दी का कारण बताया जाए या रिहा किया जाए। यह अनशन 28 दिन तक चला।

गाँधीजी पर राजबंदियों को रिहा करवाने की जिम्मेदारी

इस समय सुभाषचन्द्र बोस कांग्रेस के चुनाव मे श्री पट्टाभि सीतारमैया को हराकर कांग्रेस के अध्यक्ष बने थे। उनकी अध्यक्षता मे अखिल भारतीय कांग्रेस समिति ने यह प्रस्ताव पास किया कि नजरबदो, राजकीय बदियो और राजनीतिक बदियो को रिहा किया जाय। प्रस्ताव मे रिहा करने का कार्य महात्मा गाँधी को सौंपा गया। तदनुसार महात्मा गाँधी वायसराय मे मिलने के बाद इन तीनो क्रान्तिकारियो के पास आये। गाँधीजी जब आये तो भवानी सहाय ने उनमे पूछा कि आप भगतसिंह को बचाने मे असफल क्यो रहे ? गाँधीजी ने उत्तर दिया कि मुझ को वाइसराय ने धोखा दिया।

जेल मे गाँधीजी से बातचीत

यह पूछने पर कि वायसराय फिर धोखा नही देंगे यह कैसे माना जाए, गाँधीजी ने बताया कि मैं वाइसराय की स्वीकृति लेकर बात करने आया हूँ। तीनो क्रान्तिकारियो ने उन्हे बताया कि हमको रिहा करने को तो सरकार तैयार है। लेकिन उसकी शर्त्त यह है कि रिहा होने के बाद हम अपने-अपने क्षेत्रो मे नही जाएगे। यह शर्त्त अपमानजनक है और हमे मान्य नही है।

गाँधीजी ने कहा कि मुझे यह पता नही था। उन्होंने दूसरे दिन वाइसराय से से मिलकर शर्त्त हटाने का वचन दिया। किन्तु भूख हडताल पहले खत्म करने को कहा।

अनशन की समाप्ति और रिहाई

गाँधीजी की बात मानकर तीनो ने अनशन समाप्त कर दिया। दूसरे दिन यानी 19 मार्च, 1939 को उन्हे 6 वर्ष 10 महीने 28 दिन के बाद सम्मानपूर्वक बिना शर्त्त रिहा कर दिया गया।

कांग्रेस में शामिल

जेल से बाहर निकलकर उन्होंने देखा कि उनका दल प्राय विच्छिन्न हो गया है।

इस समय सुभाषचन्द्र बोस कांग्रेस के अध्यक्ष थे। वे क्रान्तिकारी विचारो के व्यक्ति थे। उनके विश्वासपात्र साथी शकरलाल जो 1939 मे दिल्ली कॉंग्रेस के अध्यक्ष थे, प० भवानी सहाय के भी मित्र थे। उनकी प्रेरणा से प० भवानी सहाय कांग्रेस मे सम्मिलित हो गये। 20 मार्च, 1939 को विरला भवन मे गांधीजी से उनकी भेंट हुई और उनके आदेश से प० भवानी सहाय ने अलवर क्षेत्र मे कॉंग्रेस का कार्य आरम्भ कर दिया।

दिल्ली षड़यंत्र केस मे 8 महीने हिरासत में

इस लबी गिरफ्तारी के पहले पडित भवानी सहाय 28 अगस्त, 1931 को दिल्ली षडयत्र केस के सिलसिले मे गिरफ्तार कर लिया गया था। दिल्ली षडयत्र केस में गिरफ्तार क्रान्तिकारियो पर सरकार का तख्ता पलटने की कार्यवाहियाँ करने, गाडोदिया बैंक के स्टोर को लूटने, वायसराय पर बम फैंकने और एसेम्बली मे बम फैंकने आदि के अभियोग थे। पडित भवानी सहाय दिल्ली षडयत्र केस मे लगभग 8 महीने बंदी रहे। जनवरी '31 मे उन पर से दिल्ली षडयत्र केस मे शामिल होने का मुकदमा तो हटा लिया गया, किन्तु पुलिस के विरुद्ध ज्यादती का आरोप लगाने के मामले मे उन्हें हिरासत मे ही रखा गया।

10 हजार रुपए की जमानत

पडित भवानी सहाय पर दफा 110 लगाकर उनसे दस हजार रुपए की जमानत मांगी गई और आश्चर्य की बात थी कि किसी ने दस हजार रुपए की जमानत देकर उन्हे रिहा करवा दिया।

एमरजेंसी पावर आर्डिनेंश के अंतर्गत नजरबंदी

26 फरवरी '32 को एमरजेंसी पावर्स आर्डिनेन्स के अन्तर्गत उन्हे बिना कारण बताए दो महीने के लिए फिर नजरबद कर लिया गया और अ त मे अप्रैल '32 को उन्हे रेगुलेशन 1818 के मातहत अनिश्चित काल के लिए नजरबद कर दिया गया।

हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी की रीढ़ की हड्डी

पडित भवानी सहाय एच एस. आर. ए की रीढ की हड्डी माने जाते थे। दल की ओर से दिल्ली आने वाले दल के सदस्यो के रहने तथा उनकी सुरक्षा की व्यवस्था का काम प्रारम मे उन्हे सौंपा गया था। चन्द्रशेखर आजाद का पूर्ण विश्वास प्राप्त हो जाने के बाद उन्हें पार्टी के सबसे महत्वपूर्ण काम सौंपे गए। वे थे, पार्टी के लोगो की पिस्तौलो की मरम्मत, क्योकि पडित भवानी सहाय शर्मा सब तरह की पिस्तोलो की मरम्मत कर सकते थे। पिस्तोलों की मरम्मत करने में वे पार्टी मे सबसे होशियार थे। पार्टी की मोटर साइकिलो और मोटरो को व्यवस्थित रखना, उनकी मरम्मत करना, तथा मोटर और मोटर साईकल चलाना पार्टी के सदस्यों को सिखाना उनके जिम्मे था। वे निशानेबाजी का भी

प्रशिक्षण अपने सदस्यो को दिया करते थे। स्वय चद्रशेखर आजाद ने उन्हे गोली चलाने और निशाने बाजी मे निपुण बनाया था।

प्रारंभिक जीवन

प० भवानी सहाय का जन्म 21 मार्च, 1909 मे अलवर जिले के राजगढ गांव मे हुआ। उनके पिता प० रामचन्द्र बी बी एण्ड सी आई रेलवे (वर्तमान नार्दन रेलवे) मे गार्ड थे और बाँदीकुई मे तैनात थे। प० भवानी सहाय की प्रारम्भिक शिक्षा राजगढ मे हुई। उसके बाद वे बाँदीकुई आ गये और वहाँ से मिडिल पास किया। बाँदीकुई मे केवल मिडिल तक की शिक्षा की व्यवस्था थी। अत आगे की शिक्षा के लिए वे दिल्ली के रामजस कॉलेज में भर्ती हुए।रामजस कॉलेज उन दिनो आनन्द पर्वत पर था और वही छात्रावास मे रहने की भी व्यवस्था थी। उनकी माताजी जीवनी का निधन हो चुका था।

क्रान्तिकारियो से सम्पर्क

यह बात सन् 1926 की है। प० भवानी सहाय नवे दर्जे मे पढते। उन्हे समाचार पत्र एव ऐतिहासिक व राजनीतिक विषय की पुस्तकें पढने का बडा शौक था। बकिम बाबू के 'आनन्द मठ' उपन्यास ने उनके मन मे एक आग सी पैदा करदी थी और वे सोचा करते थे कि देश को स्वतत्र करने के लिए 'आनन्द मठ' के सगम-सम्प्रदाय जैसा कोई सगठन क्यो नही बन सकता। उन्हें चाँद का 'फाँसी अक' और 'भारत मे अग्रेजी राज' नामक अग्रेजो द्वारा जब्त पुस्तके पढने का भी अवसर मिला।

इन्हीं दिनो अखबारो मे काकोरी काण्ड के मुकदमे की कार्यवाही प्रकाशित हो रही थी। प० भवानी सहाय ने हिन्दूपच साप्ताहिक मे इन समाचारो को पढा। उन्होंने अपने छात्रावास मे ही विश्वस्त साथियो को लेकर एक दल की सरचना की। यह दल छात्रो तथा समाज के अन्य वर्गों की कठिनाइयों को दूर करने और सकट के समय सहायता करने का काम करता था। अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने की प्रवृत्ति उनमे बचपन से ही थी। एक सगठित शक्ति पाकर वह और प्रखर हो उठी।

उनकी सगठन पटुता और देश की आजादी के लिए कुछ कर गुजरने की तीव्र आकाक्षा को देखकर उनके एक सहपाठी के भाई ने उनका परिचय कैलाशपति नामक एक व्यक्ति से कराया। धीरे-धीरे उन्हे यह पता लगा कि कैलाशपति हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एशोसिएशन की दिल्ली शाखा के आर्गेनाइजर थे।

प० भवानी सहाय ने बताया कि कैलाशपति के दुबले पतले शरीर और सांवले मुख की प्रभा हीन आकृति को देखकर यह समझना बहुत कठिन था कि वह किसी क्रांतिकारी दल का प्रान्तीय आर्गेनाइजर तो क्या सदस्य भी हो सकता है। वह अपने सम्बन्ध में अथवा दल के अन्य सदस्यो के सम्बन्ध में कभी कुछ नहीं बताता था। बहुत बाद

मे उन्हे पता लगा कि कैलाशपति विहार प्रान्त का था । वह डाकखाने मे काम करता था और दल के आदेश पर डाकखाने का पाँच हजार रुपया लाया था । उसके नाम के वारंट जारी थे । अत वह विहार छोडकर दिल्ली मे रहता था और उसे दिल्ली शाखा का काम सौंपा गया था । वाद मे चलकर कैलाशपति मुखविर (एप्रुवर) बन गया था जिससे दल को वडी हानि उठानी पडी थी ।

कैलाशपति से छह महीने तक निरतर निर्धारित समय और स्थान पर मिलने तथा निर्दिष्ट पुस्तको को खरीदने की प्रक्रिया का रहस्य प० भवानी सहाय को वाद मे पता लगा । छह महीने की यह लम्बी प्रक्रिया दल की उस परीक्षा का अंग थी, जो किसी भी व्यक्ति को दल मे सम्मिलित करने से पूर्व ली जाती थी । इससे दल के लोग नए व्यक्ति की लगन और निष्ठा तथा त्याग करने की क्षमता का पता लगा लेते थे । वैसे तो क्रान्तिकारी के जीवन की हर घडी परीक्षा की घडी होती थीं, लेकिन दल मे सम्मिलित होने और किसी एक्शन मे भागीदार होने की पात्रता प्राप्त करने के लिए इस प्रारम्भिक परीक्षा मे सफल होना काफी जरूरी था ।

दिल्ली से पीछे अवलर में

राजगढ जिला अलवर के पडित भवानी सहाय जव सन् 1939 मे जेल से छूटे तव क्रान्तिकारी आन्दोलन को अग्रेजो ने विलकुल दवा दिया था । जेल से छूटकर वे काग्रेस मे सम्मिलित हो गए और तव से वरावर उस ही रीति-नीति से सार्वजनिक सेवा कर रहे हैं । वे अपने जन्म स्थान पर राजगढ (1) अलवर आ गए और अवलर मे चल रहे उत्तरदायी शासन आन्दोलन के अन्तर्गत दो वार जेल गए । एक वार 1945 मे खेडा मगलसिह जागीर के गाँव मे पकडे गए और दूसरी वार अगस्त 1946 मे राजगढ मे ।

राजगढ मे उनकी गिरफ्तारी के दूसरे ही दिन भारी भीड ने तहसील पर धावा वोल दिया और अलवर राज्य का झडा जलाकर तिरगा फहरा दिया । प० भवानी सहाय ने वडे गर्व से कहा कि राजगढ मे उस दिन के वाद अलवर राज्य का झडा न लग पाया ।

पण्डित भवानी सहाय अलवर-राज्य-प्रजामण्डल के वर्षों तक अध्यक्ष रहे है । मत्स्य सघ के निर्माण के समय वे ही वहाँ के प्रजामण्डल के अध्यक्ष थे । वे राजगढ मे राजस्थान विधानसभा के 5 वर्ष तक सदस्य भी रहे हैं । वे राजगढ नगरपालिका के अध्यक्ष रहे हैं और कई वर्षों तक प्रदेश काग्रेस कमेटी तथा अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी के सदस्य रहे हैं ।

पूरे 8 वर्ष जेलों मे निकाले

इस तरह भारत के स्वतन्त्रता सग्राम मे पण्डित भवानी सहाय 7 वर्ष नजरबन्द, दो महीने पुलिस हिरासत मे देहली मे रहे देहली षड्यन्त्र केस मे 8 महीने जेल मे हवालात

मे रहे। अलवर मे 1945 मे एक वार नजरवन्द रहे और 1946 मे उत्तरदायी शासन के आन्दोलन मे अलवर मे 1 महीना 20 दिन जेल मे रहे।

सब मिलकर उनकी जेल मे रहने की अवधि 8 वर्ष से अधिक होती है।

सन् 1928 से 49 तक संघर्षरत

भवानी सहाय 1928 से 1949 तक स्वतन्त्रता सग्राम मे लगे रहकर निरन्तर अंग्रेजी सल्तनत और देशी रियासती राजतन्त्रो से टक्कर लेते रहे हैं।

बलिवेदी पर चढ़ गये, वे ही सेनानी थे

"वलिवेदी पर चढ गये वही वास्तव मे धन्य है। सबसे वडे सेनानी तो वही थे। हम तो उनके सुकृत्यो के फलभोगी हैं।"

'15 अगस्त 1972 को जव प्रधानमन्त्री के हाथ से दिल्ली मे ताम्र पत्र स्वीकार करने गया, तो मुझे जीवन का सवसे वडा सकोच हुआ—यह कहते हुए पण्डित भवानी सहाय कुछ देर को मौन हो गये। फिर बोले "अपने को क्रान्तिकारी कहने वाला आदमी केवल इस वात अपना गौरव समझता था और इसी को अपने जीवन का सवसे बडा पुरस्कार मानता था कि उसका जीवन मातृभूमि की सेवा मे समर्पित हो जाय। सरफरोशी तमन्ना उसकी एकमात्र तमन्ना थी, मातृभूमि उसकी एकमात्र देवी थी और स्वतन्त्रता उसका एकमात्र लक्ष्य।



श्री रामचंद्र उपाध्याय

प्रजामंडल के सक्रिय और कर्मठ अगुआ

श्री रामचन्द्र उपाध्याय अलवर राज्य प्रजामडल के एक कर्मठ और सक्रिय अगुआ थे। वे एक वर्ष तक अलवर राज्य प्रजामडल के अध्यक्ष रहे। और वर्षों तक उसकी कार्यकारिणी के सदस्य रहे। देश मे सविधान सभा के बनने पर श्री रामचन्द्र उपाध्याय अलवर से सविधान सभा (1949–1952 तक) के सदस्य मनोनीत किए गए।

राजद्रोह के मुकद्दमे की पैरवी से वकालात प्रारम्भ

श्री रामचन्द्र उपाध्याय 1938 मे काशी विश्वविद्यालय से एल० एल० बी० की डिग्री लेकर अलवर लौटे थे। उसी वर्ष अलवर के 10 प्रमुख राष्ट्रीय कार्यकर्ताओ पर एक पुराने राजद्रोह कानून के अतर्गत मुकद्दमा चलाया गया। श्री उपाध्याय के पिता प शालिगराम भी राजद्रोह के मुकदमे मे अभियुक्त थे। श्री उपाध्याय ने अपनी वकालात की शुरुआत इन राजद्रोही व्यक्तियो के मामले की पैरवी से ही की। तब से जागीरी माफी के, किसानो के तथा कार्यकर्ताओ पर पुलिस के लगाए गए झूठे मुकदमो की वे अपने मित्र कृपादयाल माथुर के साथ लगातार नि शुल्क पैरवी करते रहे हैं।

जन्म–शिक्षा और राष्ट्रीय संस्कार

श्री रामचद्र उपाध्याय का जन्म 20 अक्टूबर 1912 को हुआ। उन्होने 1938 मे हिन्दू विश्वविद्यालय से बी० ए०, एल० एल० बी की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1929 से ही वे राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाए पढने की ओर आकर्षित हो गए थे। 1930 से उन्होंने खद्दर पहनना शुरु कर दिया था।

राष्ट्रीय दल के साथ नगरपालिका में

सन् 1939 मे उन्होंने प्रजामडल की ओर से राष्ट्रीय विचारो के लोगो को सगठित करके राष्ट्रीय दल बनाकर नगरपालिका के चुनाव लडे। राष्ट्रीय दल मे मुसलमान भी शामिल थे। यह दल 1939 से 1948 तक नगरपालिका मे सदा बहुमत मे रहा।

दो बार अलवर राज्य की जेल मे

श्री रामचद्र उपाध्याय अलवर राज्य द्वारा दो बार गिरफ्तार किए गए। सन् 46 मे जागीर माफी के किसानो का सम्मेलन सगठित करने के अपराध मे पुलिस ने उन्हे प्रजामडल के अन्य नेताओ के साथ गिरफ्तार किया और दूसरी बार सन् '47 मे उत्तरदायी शासन की प्राप्ति के लिए राजव्यापी आन्दोलन मे।

श्री मोतीलाल लखेरा, खेडलीगंज

श्री मोतीलाल लखेरा मूल रूप से भरतपुर के नदबई तहसील के अर्वेगढ ग्राम के निवासी हैं। लेकिन पिछले कई वर्षों से ये अलवर जिले की लक्ष्मणगढ तहसील के खैरली गज ग्राम मे निवास करते हैं। श्री मोतीलाल लखेरा के पिता प्यारेलाल लखेरा भी भरतपुर प्रजा परिपद के कर्मठ कार्यकर्ता थे और वे श्री गोकुलजी वर्मा और ठाकुर देशराज के साथ काम करते थे।

श्री मोतीलाल लखैरा ने भी भरतपुर प्रजापरिषद् के हर आन्दोलन मे भाग लिया। पुलिस ने उन्हे बीसियो वार पकडा, पीटा और जगलो मे छोडा। परन्तु हर वार ये दुगुने उत्साह से फिर उसी तरह काम मे लग जाते। 1942 के भारत छोडो आन्दोलन मे इन्होने नदबई तहसील के गाँव-गाँव मे घूमकर करो या मरो के सदेश का प्रचार किया। नदबई के पुलिस थाने पर तिरगा झडा फहराने के अपराध मे इन्हे 16 जनवरी '47 को गिरफ्तार किया गया। इन्हे 3 महीने की सजा और 200 रु० जुर्माने किए गए। जुर्माना नही देने के कारण इनकी दूकान का सारा सामान कुर्क कर लिया गया।

1948 से श्री मोतीलाल लखेरा भरतपुर के अपने ग्राम अर्खैगढ से अलवर के खेरलीगज आ गए हैं। उनका जन्म 1923 मे हुआ था। इस समय उनकी आयु 51 वर्ष की है।

श्री रामजीलाल अग्रवाल

बी. कॉम; एलएल. बी.

श्री रामजीलाल अग्रवाल अलवर जिले के निमूचाणा कस्बे के मूल निवासी हैं। उनके पिता का नाम लाला रामरिच्छपाल है। वे जाति से वैश्य हैं। उन्होंने बी. कॉम करने के बाद कानपुर (उत्तरप्रदेश) से एल एल० बी० की परीक्षा पास की।

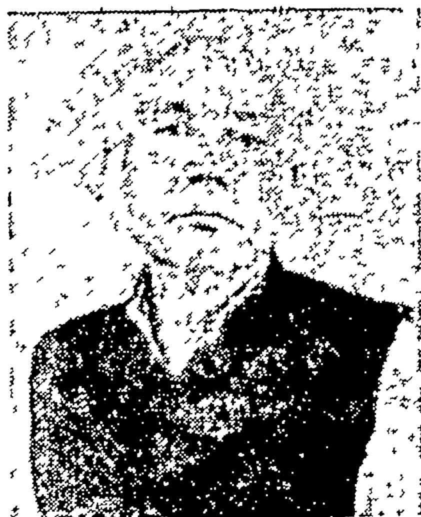
श्री रामजीलाल अग्रवाल का कार्यक्षेत्र 1938 से 42 तक कानपुर रहा। भारत छोडो आन्दोलन के समय 1942-43 तक उनका कार्यक्षेत्र इन्दौर था। 1943 के पश्चात् वे अलवर आ गए और प्रजामडल के कार्य मे पूरी शक्ति के साथ जुट गए।

श्री रामजीलाल अग्रवाल 1937 से राष्ट्रीय प्रवृत्तियो मे लग गए थे। 1941 से 43 तक विद्यार्थी और मजदूर आन्दोलनो मे वे चार वार गिरफ्तार किए गए। अलवर मे सन् 1946 के आन्दोलन मे वे दो वार गिरफ्तार हुए और जेल गए।

सन् 1956 मे श्री रामजीलाल अग्रवाल अलवर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष चुने गए। 1959 से 1963 तक वे अलवर जिला परिपद के प्रमुख थे।

अलवर मे उनका वर्तमान पता—चमेली वाग, अलवर है।

श्री लक्ष्मीनारायण खण्डेलवाल

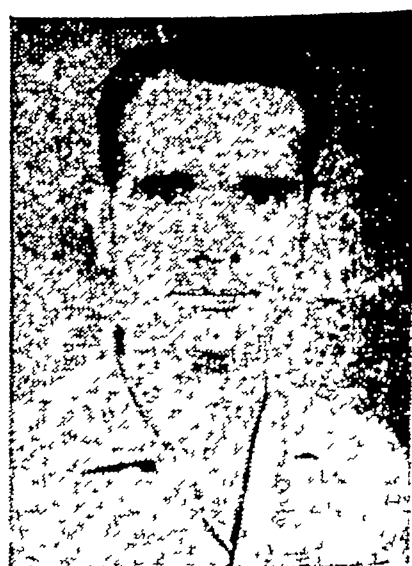


श्री लक्ष्मीनारायण खडेलवाल का सार्वजनिक जीवन तो 1926 मे ही शुरू हो गया था, जब उन्होने सेवा समिति का गठन करके मेलो, पर्वों और त्यौहारो पर सेवा कार्य शुरू किया था।

श्री लक्ष्मीनारायण खडेलवाल ने 1930-31 मे खादी पहनना शुरू कर दिया था। 1937 मे उनकी गिरफ्तारी का वारट निकल गया। उस समय उनका नाम लच्छीराम सर्राफ था। परन्तु भ्रमवश पुलिस लच्छीराम सुनार को पकड कर ले गई और उन्हे 1 वर्ष की सजा हो गई।

अलवर राज्य मे पहली बार 1946 मे खेड़ा मगलसिह मे प्रजामडल के अन्य नेताओ के साथ उनकी गिरफ्तारी हुई और दूसरी बार गैर जिम्मेवार मिनिस्टरो, कुर्सी छोडो आन्दोलन मे। दोनो बार वे अपने साथियो के साथ जेल मे रहे।

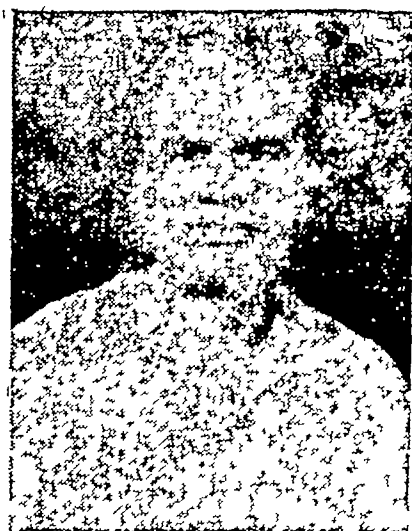
श्री विद्याधर शर्मा



श्री विद्याधर शर्मा अलवर मे राष्ट्रीय चेतना के जनक स्व० प० हरिनारायण शर्मा के सुपुत्र हैं। उनका जन्म 7 सितम्बर 1930 को अलवर मे हुआ। उनकी बाल्यावस्था अपने पिताजी की राष्ट्रीय प्रवृत्तियो मे साथ-साथ लगे रहने मे बीती। अत वे विधिवत उच्च शिक्षा प्राप्त नही कर सके।

श्री विद्याधर ने अपने विद्यार्थी काल मे राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने का बहुत कार्य किया था। अलवर मे कांग्रेस सेवा दल के गठन के बाद वे वर्षों तक उसके सचालन मे योग देते रहे।

आजकल श्री विद्याधर शर्मा राजस्थान सरकार की राजकीय सेवा मे हैं।



डाक्टर शान्तिस्वरूप डाटा

वर्तमान पता शान्ति निकेतन
रघु मार्ग, अलवर

डाक्टर शांति स्वरूप डाटा मूलरूप से रेवाडी (हरियाणा) के निवासी है। उनका कार्यक्षेत्र भी प्रारंभ मे देहली, गुडगाँव और पटौदी रियासत रहा है। वे रेवाडी के वैश्य परिवार मे महाशय भगवानदासजी के पुत्र है। उनका पूरा परिवार कांग्रेसी है और उनके घर का वातावरण प्रारंभ से ही स्वदेशी व्रत और राष्ट्रीयता की भावना से भरा हुआ था। उनके पिता 1917 से ही स्वतत्रता आन्दोलन मे सम्मिलित हो गए थे।

श्री शान्तिस्वरूप डाटा की शिक्षा गुरुकुल इद्रप्रस्थ दिल्ली मे हुई। वे वहाँ कई क्रान्तिकारियों के सपर्क मे आए। विद्यार्थी जीवन मे ही वे राष्ट्रीय प्रवृत्तियो से जुड गए थे। उन्होने सन् 34 से 37 तक श्री आसफअली और देशवधु गुप्ता के साथ कार्य किया।

1940 से 43 तक वे लाहौर, रावलपिडी, गुड़गाँव व देहली जेल मे रहे। इन जेल यात्राओ मे दो बार मुकदमा चलाकर 1-1 वर्ष की सजा दी गई। दो बार भारत सुरक्षा कानून मे गिरफ्तार हुए। उन्हे कुल मिलाकर करीब 3 वर्ष तक जेलो मे रहना पडा।

उन्होने पटौदी मे उत्तरदायी शासन के लिए आन्दोलन का सचालन किया और पटौदी नवाब को उत्तरदायी शासन स्थापित करने के लिए राजी किया।

अलवर मे आने के बाद यहाँ के लोक आन्दोलन मे श्री डाटा लग गए और 1946 मे खेडा मगलसिह मे अन्य साथियो के साथ गिरफ्तार कर लिए गए। 1947 मे उन्होने अलवर मे उत्तरदायी शासन आन्दोलन का सचालन किया और दूसरी बार गिरफ्तार हुए।

डाक्टर डाटा कांग्रेस सगठन, मजदूर सगठन, हरिजनोद्धार और सर्वोदय एव भूदान की प्रवृत्तियो मे निरन्तर सलग्न रहे हैं। आजकल अलवर मे खेती की मशीनें, ट्रेक्टर और पम्पिगसैट का व्यवसाय कर रहे हैं।

श्री सुखदेव वर्मा



श्री सुखदेवराम वर्मा अलवर जिले के ग्राम पोस्ट गडूरा के निवासी है। इनका जन्म जाट परिवार में हुआ। इनकी उम्र इस समय 55 वर्ष की है। श्री सुखदेवराम वर्मा अपनी युवावस्था में अंग्रेजो की फौज मे भर्ती हो गए थे।

दूसरे विश्व युद्ध के समय जब अंग्रेजी फौजे पूर्वी एशिया मे थी उस समय सुखदेवराम उसी फौज के साथ थे। सिंगापुर मे नेताजी सुभाष बोस के भाषणो से प्रभावित होकर वे अपने कई अन्य साथियों के साथ आजाद हिन्द फौज मे भर्ती हो गए और भारतीय स्वाधीनता के लिए अपने आपको युद्ध मे झोक दिया। आजाद हिन्द फौज के पतन के बाद वे गिरफ्तार कर लिए गए और कलकत्ते मे उन पर मुकद्दमा चला। उन्हे 6 महीने की सजा दी गई।

वे अपने गांव मे इन दिनो कृषि कार्य करते हैं।

स्वर्गीया सुशीला त्रिपाठी

अवसान 1952

श्रीमती सुशीला त्रिपाठी अलवर मे लोकजागरण के अग्रदूत श्री लक्ष्मणस्वरूप त्रिपाठी की पत्नी थी। उनका जन्म 1915 मे मेरठ मे हुआ था। उन्होने हिन्दी साहित्य का अच्छा अध्ययन किया था और स्वय भी कविताए एव कहानियाँ लिखा करती थी।

श्रीमती सुशीला त्रिपाठी ने अपने पति के साथ उनके दक्षिण भारत मे हिन्दी प्रचार के लिए जाने पर मद्रास मे कार्य किया था और उन्होने हिन्दुस्तानी सेवा दल की महिला शाखा का भी कार्य किया। उनके दिल्ली चले आने पर 1933 मे सुशीला त्रिपाठी ने दफा 144 तोडकर चाँदनी चौक मे सत्याग्रह किया था जहाँ उन्हे 6 महीने की सजा मिली, और उन्हें लाहौर महिला जेल मे रखा गया।

अलवर मे स्वाधीनता आन्दोलन का सूत्रपात होने पर जब उनके पति और अन्य नेता गिरफ्तार कर लिए गए थे तब उन्होंने तिरगे झंडे के गौरव की रक्षा की और आन्दोलन के सचालन के लिए उल्लेखनीय कार्य किया। 1952 मे लबी बीमारी से उनका स्वर्गवास हो गया।

राजस्थान में
स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी

स्वतंत्रता के संदेश वाहक
स त्या ग्र ही और
स्वा तं त्र्य सै नि क

उ द य पु र

श्री कनक मधुकर.

पता सम्पादक नवजीवन,
नवजीवन प्रेस,
नवजीवन भवन,
उदयपुर



श्री कनक मधुकर राजस्थान के वयोवृद्ध पत्रकार हैं। इस समय उनकी आयु 60 वर्ष से अधिक हो चुकी है लेकिन, उनकी कार्यक्षमता और क्रियाशीलता मे कोई अन्तर नही आया है। वे उदयपुर से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक 'नवजीवन' के सचालक और सपादक हैं। 'नवजीवन' का प्रकाशन प्रारम्भ में 1939 मे उन्होने अजमेर से किया था। अपने इस पत्र के द्वारा उन्होंने राजपूताने की देशी रियासतो के लोक आन्दोलनो को वहुत वल दिया था। अजमेर से प्रकाशित होने वाला 'नवजीवन' राजपूताने की रियासतो मे काफी लोकप्रिय हो गया था।

राष्ट्रीय स्वाघीनता की भावना के प्रसारक और रियासती जनता के इस हिमायती 'नवजीवन' पर ब्रिटिश सरकार का कोप अवश्यम्भावी था। 1942 मे भारत छोडो आन्दोलन मे श्री कनक मधुकर गिरफ्तार कर लिए गए। वे अजमेर सेण्ट्रल जेल मे 14 महीने रहे। उनके रिहा होने पर अजमेर कमिश्नर द्वारा यह पावदी लगादी गई कि, वे अजमेर की सीमा मे प्रवेश नही करें।

1944 मे श्री कनक मधुकर उदयपुर आ गए और वहाँ से उन्होंने साधनहीन अवस्था मे 'नवजीवन' को प्रकाशित करने का साहसिक कदम उठाया। 1944 से 'नवजीवन' का प्रकाशन आज तक नियमित हो रहा है। सन् 1969 मे उदयपुर मे नवजीवन की रजत जयन्ती भी मनाई गई थी।

श्री कनक मधुकर एक कवि, गद्य गीत लेखक और पत्रकार तो हैं ही लेकिन, वे एक कुशल व्यवसायी भी हैं। उन्होंने मिशनरी के रूप मे पत्रकारिता का प्रारम्भ किया था और व्यवसायी के रूप मे उसका विकास किया है। उन्होने अपने विस्तृत सम्पर्क परिचय, प्रभाव, सूझ-बूझ और दौडधूप से पत्र की आर्थिक स्थिति को सुदृढ बनाया। ऐसा, कम पत्रकार ही कर पाते हैं। उसी का परिणाम है कि श्री कनक मधुकर पत्रकार होते हुए आर्थिक रूप से सम्पन्न और सशक्त हैं।

श्री कनक मधुकर का व्यक्तित्व उदार है। वे समय-समय पर अपने साथी पत्रकारो और राष्ट्रीय कार्यकर्त्ताओ की उनकी आवश्यकता के समय गुप्त रूप से आर्थिक सहायता करते रहते हैं।

वे मूल रूप से भीलवाडा जिले के बनेडा के रहने वाले अग्रवाल वैश्य हैं। मैट्रिक की परीक्षा के बाद उन्होंने हिन्दी विशेषज्ञ और साहित्याचार्य की परीक्षाए पास की थी। 1937 मे उन्होने नवज्योति, राजस्थान, रियासती आदि के सम्पादकीय विभाग मे कार्य किया था। वे वर्षों तक उच्चकोटि के गद्य गीत लिखते रहे हैं।

1946 मे वे उदयपुर मे गिरफ्तार कर लिए गए थे और 15 दिन उदयपुर की जेल मे रहे। पत्रकारिता के अतिरिक्त हरिजन सेवा, खादी प्रचार और अन्य रचनात्मक कामो मे उनका विशेष योग रहता है।



श्री दयाशंकर श्रोत्रीय.



जन्म : संवत् 1960 की शरद् पूर्णिमा, सन् 1903

पता महिला मडल, उदयपुर

श्री दयाशकर श्रोत्रीय की आयु इस समय करीब 70 वर्ष की है। उन्होने 10 नवम्बर 1935 को उदयपुर मे महिला मडल की स्थापना की थी और सामती सस्कारो से ग्रस्त राजस्थान की नारी के सर्वतोमुखी विकास मे अपना जीवन लगा दिया। तब से आज तक उन्होने महिला जागरण के लिए और महिला स्वावलवन के लिए अपनी सस्था मे बीसियो योजनाए शुरू करके महिला मडल को राजस्थान की ही नही, अपितु देश की प्रथम श्रेणी की लोकसेवी सस्थाओ के समान ला खडा किया है। उदयपुर मे विविध प्रवृत्तियो वाली इस सस्था के अतिरिक्त श्री दयाशकर श्रोत्रीय ने मेवाड के देहाती क्षेत्रो मे ग्रामीण महिलाओ को सस्कार देने के लिए प्रशिक्षण शिविर चलाने की योजना भी क्रियान्वित की। लोक शिक्षा और स्त्री शिक्षा के क्षेत्र मे यह अत्यन्त आकर्षक और अभिनव प्रयोग था।

श्री दयाशकर श्रोत्रीय के इस महान कार्य मे सबसे बडा योग उनकी पत्नी श्रीमती कमला श्रोत्रीय का ही रहा है। आज किन्ही कारणो से वे महिला मडल के साथ नही है लेकिन मेवाड में महिला जागरण मे उन्होने जो भाग अदा किया और महिला मडल को एक आदर्श सस्था बनाने मे उन्होंने जो कुछ किया उसे भुलाया नही जा सकता। वे श्री दयाशकर श्रोत्रीय की सपूर्ण रूप से एक पूरक थी।

श्री दयाशकर श्रोत्रीय का परिवार एक संस्कार शील ब्राह्मण परिवार है। उनकी शिक्षा-दीक्षा सस्कृत कॉलेज मथुरा मे हुई लेकिन, देश में स्वाधीनता का संघर्ष छिड जाने पर वे लबे समय तक अपनी शिक्षा चालू नही रख सके। वे लबे समय तक महात्मा गाँधी, मदनमोहन मालवीय और जमनालाल बजाज के सान्निध्य में रहे और उनसे राष्ट्रीयता और सार्वजनिक सेवा की व्यावहारिक दीक्षा लेते रहे।

उन्होने उदयपुर में प्रजामंडल की ओर से चलाए गये आन्दोलनो में भाग लिया और उन्हे दो बार 6–6 महीने की सजाए हुई। वे प्रारम्भ में प्रजामडल के मत्री बनाए गए। बाद में वे उदयपुर कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे। श्री श्रोत्रीय ने 1930 में स्वदेशी का व्रत लिया था और तब से बराबर खद्दर पहनते हैं। उदयपुर में वे प्रजामडल के और कांग्रेस के प्रमुख और अग्रणी कार्यकर्त्ता रहे हैं।

श्री दयाशंकर श्रोत्रीय क्रान्तिकारियो की सदा गुप्त रूप से सहायता करते रहे हैं। उन्होंने मेवाड के गाँव-गाँव में जाकर राष्ट्रीय चेतना की मशाल जलाई और स्वदेशी भावना तथा खादी का प्रचार किया।

श्री श्रोत्रीय ने स्वतत्रता सग्राम में एक सैनिक की तरह भाग लेने के साथ-साथ महिला जागरण के क्षेत्र में महिला मडल द्वारा आदिवासी महिलाओ के लिए तथा ग्रामीण महिलाओं के लिये जो ठोस कार्य किया है वह आने वाली पीढियों के लिए सदा प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।



श्रीमती नारायणी देवी वर्मा

जन्म . सवत् 1959 भाद्रपद शुक्ला 11 (सन् 1902)

पता : भोपालपुरा, उदयपुर

श्रीमती नारायणी देवी राजस्थान के नेता स्वर्गीय माणिक्यलाल वर्मा की धर्मपत्नी हैं। उनका जन्म मध्यप्रदेश के ग्राम सिगोली मे श्री रामसहाय भटनागर के घर हुआ था। उनकी शिक्षा बचपन मे सामान्य ही हो सकी थी। विवाह के बाद उन्होने विविध ग्रन्थो के अध्ययन से तथा अपने पति के साथ राष्ट्रीय आन्दोलनो मे कार्य करते-करते अपनी बौद्धिक क्षमता का विकास किया था।

श्रीमती नारायणी देवी ने अपनी उम्र के बीसवें वर्ष मे वर्माजी के साथ सार्वजनिक जीवन प्रारम्भ कर दिया था। बिजोलियाँ मे शिक्षा और समाज-सुधार मे शुरू किया गया उनका सार्वजनिक जीवन किसान सत्याग्रह, प्रजामण्डल सत्याग्रह और भारत छोडो आन्दोलन मे निरन्तर गतिशील रहा और हर आन्दोलन मे उन्हे जेल की यातनाओ मे से गुजरना पडा। बिजोलियाँ आन्दोलन के समय तो उन्हे कुम्भलगढ के किले मे बन्द कर दिया गया था। जब वर्माजी को मेवाड से निर्वासित किया गया था तो मेवाड सरकार ने इनके गृहस्थी की सारी सम्पत्ति जब्त करली थी। निर्वासन काल मे उनके 15 वर्ष के पुत्र सत्येन्द्र का दवा के अभाव मे देहावसान हो गया था।

यो तो श्रीमती नारायणी देवी का सम्पूर्ण जीवन स्वर्गीय वर्माजी की प्रवृत्तियो के साथ गुँथा हुआ ही रहा परन्तु फिर भी उनकी अपनी चारित्रिक विशेषताओ के कारण स्वतन्त्र रूप से भी उनका अपना अलग व्यक्तित्व बना। नि.सन्देह उन्होने वर्माजी की हर प्रवृत्ति को आगे बढाने मे बहुत बडा योग दिया था। वे सच्चे अर्थों मे वर्माजी जैसे क्रान्ति पुत्र की पूरक थी। परन्तु 1944 के नवम्बर महीने मे उन्होने भीलवाडा मे महिला आश्रम नाम की एक सस्था स्थापित करके उस क्षेत्र की महिलाओ के सर्वांगीण विकास का कार्य अपने हाथ में लिया। यह सस्था अपने क्षेत्र मे महिलाओ के बीच शिक्षा और सस्कारो का प्रचार कर रही है।

श्रीमती नारायणी देवी ने पिछडी जातियो मे समाज सुधार, शिक्षण कार्य और आदिवासी छात्रावासो की स्थापना की दिशा में बहुत कार्य किया, जिनमे आदिम जाति उद्योग केन्द्र, आदिम जाति छात्रालय, सीमावर्ती छात्रालय, गाडिय लोहार पाठशाला व छात्रावास, और आदिवासी वन सहकारी समितियें मुख्य है।

श्रीमती नारायणी के भाई श्री गणपतलाल प्रजामण्डल के आन्दोलन मे जेल गए थे। उनके पुत्र श्री दीनबन्धु और उनकी चार पुत्रियें 1942 के भारत छोडो आन्दोलन मे उनके साथ जेल मे थी। उनका पूरा परिवार आज भी राष्ट्रीय कार्यों मे लगा हुआ है।

सन् 1970 के अप्रेल मे श्रीमती नारायणी देवी राजस्थान विधानसभा द्वार राज्यसभा के लिए निर्वाचित हुई थी। वे अभी भी समद सदस्या हैं।

श्री नरेन्द्रपाल चौधरी



जन्म 1912

पता शान्ति कुटी,
वार्ड नं० 10,
नाथद्वारा (जिला उदयपुर)

श्री नरेन्द्रपाल सिंह चौधरी राजस्थान के एक तपे हुए सत्यनिष्ठ स्वतन्त्रता सेनानी हैं। मेवाड प्रजामडल और अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजापरिषद के वे कर्मठ कार्यकर्त्ता रहे हैं और देश की स्वाधीनता के लिए तथा राजशाही की समाप्ति के लिए लडे गए हर सग्राम मे वे सदा अगली पक्ति मे खडे मिले हैं। उनका कार्यक्षेत्र बडौदा, अहमदाबाद, मेवाड और फिर पूरा राजस्थान बन गया। स्वतन्त्रता के पहले सन् '30, '32, '33, '38 और '41 मे उनको निरतर जेल की सजाएँ होती रही। मेवाड प्रजामडल के सत्याग्रह मे वे एक वर्ष जेल मे रहे और भारत छोडो आन्दोलन मे भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत वे करीब 3½ वर्ष तक नजरबन्द रहे। 1933 मे श्री नरेन्द्रपालसिंह चौधरी अजमेर से निर्वासित कर दिए गए थे।

श्री नरेन्द्रपाल सिंह चौधरी का जन्म सन् 1912 में नाथद्वारा के एक जाट परिवार मे हुआ था। आपके पिता का नाम श्री रामकृष्ण चौधरी था। श्री नरेन्द्रपाल की शिक्षा इटर तक ही हो सकी थी। उन्होने हिन्दी साहित्य सम्मेलन की विशारद परीक्षा भी पास कर ली थी। वे 1924 मे अपनी 12 वर्ष की उम्र से ही वानर सेना बनाकर राष्ट्रीय प्रवृत्तियो मे भाग लेने लग गए थे। वे अपनी वयस्कउम्र आने तक राष्ट्रीय आन्दोलनो मे स्वय सेवक और कार्यकर्त्ता के रूप मे कार्य करते रहे।

श्री नरेन्द्रपालसिंह को उनके उग्र विचारो के कारण हाई स्कूल मे स्कूल ने निष्कासित कर दिया गया था। सन् 1930 से '33 तक के समय मे श्री नरेन्द्रपाल सिंह चौधरी बडोदा और अहमदाबाद मे थे और वहाँ नमक सत्याग्रह मे भाग लेने के कारण उन्हे 3 महीने बडोदा की जेल मे और 1 महीना अहमदाबाद की जेल मे बिताने पडे। 1933 मे अजमेर आने पर वे अजमेर से निर्वासित कर दिए गए।

नाथद्वारा मे आकर श्री नरेन्द्रपाल सिंह ने नाथद्वारा ठिकाने मे नौकरी कर ली थी लेकिन प्रजामडल की प्रवृत्तियो मे भाग लेने के कारण उन्हे ठिकाने की नौकरी से भी हटा दिया गया। 1938 मे प्रजामडल के आन्दोलन का नाथद्वारा मे सचालन करने के कारण मेवाड सरकार ने उनका मकान जब्त कर लिया और उन्हे एक वर्ष की सजा दी गई। 1942 मे वे भारत छोडो आन्दोलन मे भारत सुरक्षा कानून के अतर्गत 3½ वर्ष जेल मे रहे।

देश की स्वाधीनता के बाद श्री नरेन्द्रपाल सिंह चौधरी समाजवादी पार्टी मे सम्मिलित हो गए। वे राजस्थान समाजवादी पार्टी के वर्षो तक महामत्री भी रहे। समाजवादी कार्यक्रमो के लिए 1949 से '70 तक अनेको बार भीलवाडा, चूरू और उदयपुर की अदालतो से उन्हे सजाए दी गईं और वे जेल भेजे गए।

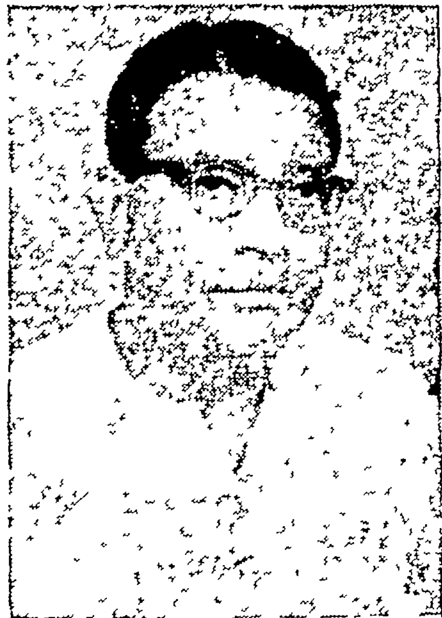
श्री नरेन्द्रपालसिंह चौधरी स्वतत्रता सग्राम के मैदान मे कई बार पुलिस द्वारा बुरी तरह पीटे गए थे। पुलिस की पिटाई मे उनका एक बार सर फूट गया था, एक बार अगुलियें टूट गई थी। उनके पैरो पर इतनी सख्त मार पडी कि आज तक उन्हें लगडा कर चलना पडता है।

श्री नरेन्द्रपाल सिंह चौधरी स्वतत्रता सग्राम मे पूरी तरह मे लग गए थे। उन्होने न किसी तरह का व्यवसाय किया और न कोई नौकरी ही। उनका जीवन उनके मित्रो के सहारे चलता रहा। कई वर्षो तक उन्होंने सवाददाता का कार्य करके जरूर पारिश्रमिक कमाया था।

वे आज भी शिक्षा प्रसार, हरिजनोद्धार और किसान-मजदूर सगठनो के कामो मे लगे हुए हैं।



प्रो० प्रेमनारायण माथुर.



जन्म 15 अक्टूबर 1912

पता वनस्थली विद्यापीठ.

जन्म और शिक्षा

प्रो० प्रेमनारायण माथुर का जन्म 15 अक्टूबर 1912 को तत्कालीन मेवाड राज्य के कुरावड ग्राम में हुआ। उनके पिता का नाम श्री चुन्नीलाल पचौली और उनकी माता का नाम श्रीमती गगाबाई था। प्रो० माथुर को अपनी पत्नी श्रीमती आशादेवी का अपने सम्पूर्ण जीवन मे पूरा समर्थन और सहयोग रहा है। प्रो० माथुर की प्रारम्भिक शिक्षा पहले अपने ग्राम कुरावड और ननिहाल सिरोज मे हुई। बाद मे प्रो० माथुर ने नीचे की सभी परीक्षाएँ उच्च श्रेणी मे पास करते हुए प्रथम श्रेणी मे बी कॉम की परीक्षा उत्तीर्ण की।

भावी जीवन के लिए तीन संकल्प

1930 के प्रारम्भ मे लाहौर कांग्रेस के बाद बरेली मे दौरे पर आये हुए प० जवाहरलाल नेहरू और मौलाना अबुल कलाम आजाद से वे मिले। तभी उन्होंने अपने आगामी जीवन के लिए तीन सकल्प निश्चित किये। (1) ब्रिटिश सरकार की या देशी राज्य की नौकरी नही करना (2) आजीवन खादी पहनना, और (3) जीवन मे राजनीति और शिक्षा इन दो क्षेत्रो मे ही काम करना।

राजकीय सेवा का प्रलोभन

बी कॉम होने के बाद उनके शिक्षको द्वारा इस बात का बडा दबाव रहा कि वे सरकारी नौकरी मे जाये और आई सी एस के लिए प्रतियोगिता मे बैठे। उधर मेवाड राज्य मे भी अच्छे पद पर उनकी नियुक्ति की जा रही थी पर उन्होने सनातन धर्म कॉलेज, ब्यावर मे साधारण शिक्षक होना ज्यादा पसन्द किया। वही से उन्होने एम ए अर्थशास्त्र द्वितीय श्रेणी मे किया। 3 वर्ष ब्यावर रहने के बाद वे एक वर्ष इलाहाबाद मे भी रहे। 1937 मे प्रो० माथुर अपने पुराने मित्र श्री ऋषिदत्त मेहता के साथ 'राजस्थान साप्ताहिक' मे काम करने लगे।

वनस्थली विद्यापीठ में

एक वर्ष बाद स्वर्गीय श्री शकरलाल वर्मा के द्वारा पण्डित हीरालाल शास्त्री से अजमेर मे प्रो० माथुर का परिचय हुआ और वे वनस्थली आ गये। आज वे वनस्थली में उपाध्यक्ष (शिक्षा) और अर्थशास्त्र विभाग के प्रोफेसर और अध्यक्ष हैं। वास्तव मे प्रो० माथुर का वनस्थली विद्यापीठ से आजीवन सम्बन्ध है। उनका कहना है कि वे जीवन मे सफलतापूर्वक निभ सके, इसका एकमात्र श्रेय वनस्थली विद्यापीठ को ही है। प्रो० माथुर, समाज मे वनस्थली विद्यापीठ जैसी सस्थाओ का बडा मूल्य मानते हैं जहाँ, व्यक्ति स्पष्टता और सच्चाई के साथ अपनी रुचि के अनुसार राष्ट्रीय कार्य कर सके। प्रो० माथुर व्यक्तिश अपने लिए इसे बडा वरदान समझते हैं कि वे वनस्थली विद्यापीठ जैसी राष्ट्रीय सस्था मे हैं।

राजनैतिक प्रवृत्तियें और मेवाड़ से निष्कासन

सन् 1938 मे जब मेवाड प्रजामण्डल की स्थापना हुई थी तभी से प्रो० माथुर का प्रजामण्डल से सम्बन्ध रहा। प्रजामण्डल की स्थापना के तुरन्त बाद उदयपुर जाते समय उदयपुर स्टेशन पर मेवाड सरकार ने उन्हें गिरफ्तार किया और बाद मे उनको मेवाड राज्य से निष्कासित कर दिया। प्रो० माथुर मेवाड प्रजामण्डल की कार्यसमिति के सदस्य रहे एव उसके द्वारा नियुक्त योजना समिति के अध्यक्ष रहे। देशी राज्य लोकपरिषद राजपूताना की कार्यसमिति के वे स्थायी निमन्त्रित थे। वे मेवाड राज्य के लिए प्रस्तावित विधान सभा के चुनाव मे खडे हुए थे, पर विधान सभा का चुनाव ही नही हुआ। प्रथम आम चुनाव मे प्रो० माथुर को राज्य की विधान सभा के लिए खडा करने का प्रस्ताव था पर उसको उन्होने अस्वीकार कर दिया। 1942 के भारत छोडो आन्दोलन के समय मे उन्होंने बाहर रह कर मेवाड प्रजामण्डल को यथाशक्य सहायता पहुँचाई। प्रो० माथुर 1948 मे मेवाड राज्य के मुख्यमत्री घोषित हुए। बाद मे छोटे राजस्थान के मन्त्रिमण्डल मे शिक्षा और वित्त मत्री रहे और उसके बाद बडे राजस्थान के मन्त्रिमण्डल मे शिक्षा और गृहमत्री रहे।

राजनीति और कार्यकर्त्ताओ के सम्बन्ध मे कुछ विचार

राजनीति और कार्यकर्त्ताओ के निर्वाह के सम्बन्ध मे प्रो० माथुर के अपने कुछ विचार हैं। एक तो यह कि महात्मा गाँधी ने जो कुछ किया और सिखाया उसके बावजूद भी यह सत्य अपनी जगह कायम है कि राजनीति सत्ता की नीति होती है। सत्ता के सघर्ष के लिए एक विशेष प्रकार की युक्ति और प्रकृति चाहिए और जिसमे वह न हो तो उन्हें राजनीति से दूर ही रहना चाहिए। दूसरे यह कि हर मनुष्य को सच्चे अर्थ मे सार्वजनिक कार्यकर्त्ता बनने के लिए दो शर्तों को यथाशक्य पूरी करनी चाहिए (1) कार्यकर्त्ता को कर्तव्य बुद्धि से सार्वजनिक कार्य को स्वीकार करना चाहिए और आवश्यकता की दृष्टि से अर्थ को स्वीकार करना चाहिए। पर आवश्यकता के इस पैमाने को सामान्य पैमाने से नीचा ही रखना चाहिए। और (2) हर सार्वजनिक कार्यकर्त्ता का आर्थिक पक्ष स्पष्ट होना चाहिए और सामान्यतया जाना हुआ होना चाहिए ताकि उसके बारे मे यह अटकल लगाने की नौबत ही न आए कि वह अमुक प्रकार के साधन कहाँ से जुटाता है।

श्री परसराम अग्रवाल.
(गोयल)

पता . रावजी का हाटा, उदयपुर



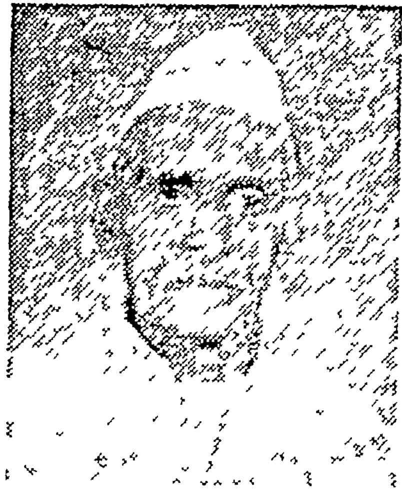
श्री परसराम गोयल का जन्म उदयपुर के अग्रवाल समाज मे हुआ था। इनका परिवार उदयपुर जिले के जावर ग्राम से उदयपुर मे आ बसा था। इनकी शिक्षा दसवी कक्षा तक ही हो पाई थी। इनका कार्यक्षेत्र खेरवाडा और उदयपुर रहा है। खेरवाडा मे इन्होंने आदिवासियो के बीच शिक्षा प्रसार और समाज सेवा का कार्य किया।

मेवाड प्रजामडल की स्थापना के लिए 1938 मे जो सत्याग्रह शुरू हुआ था उसमे श्री परसराम अग्रवाल भी शामिल हो गए थे। उदयपुर के सिटी मजिस्ट्रेट द्वारा दी गई सजा के परिणामस्वरूप उन्हे 9 महीने जेल मे रहना पडा।

1942 के भारत छोडो आन्दोलन मे श्री परसराम गोयल ने फिर भाग लिया था और वे भारत रक्षा कानून के अतर्गत 16 महीने उदयपुर जेल मे नजरबद रखे गए थे। देश की स्वाधीनता के बाद भी श्री परसराम ने आदिवासी क्षेत्र खेरवाडा को अपना कार्य क्षेत्र बनाया और आदिवासियो मे शिक्षा और सस्कार का प्रसार करने मे लगे रहे। उन्होने रूढिग्रस्त आदिवासियो मे समाज सेवा का कार्य भी बहुत जोरो से किया और उनके सेवा कार्य से आदिवासियो के जीवन मे तीव्रता से परिवर्तन आने लगे।

श्री परसराम गोयल उदयपुर के एक कर्त्तव्यनिष्ठ मौन साधक है। स्वाधीनता के बाद रचनात्मक कार्यों मे विशेषकर शिक्षा प्रसार मे इनकी शक्तियें लगी हैं। आदिवासी क्षेत्र मे अपनी सेवा के कारण वे बहुत लोकप्रिय हुए हैं।

श्री प्यारचंद विश्नोई.



जन्म सवत् 1964 कार्तिक शुक्ला 14
पता : भूपालपुरा, उदयपुर

श्री प्यारचद विश्नोई का जन्म सवत् 1964 की कार्तिक शुक्ला 14 को भीलवाडा जिले की पुर तहसील मे हुआ था। इनके पिता श्री नारायणजी विश्नोई ने इन्हें प्रारंभिक शिक्षा पुर मे दिलवाने के वाद भीलवाडा मे उन्हे मिडिल तक पढाया और आगे पढाई के लिए वे उदयपुर आए। ब्रह्मचर्याश्रम के छात्रावास मे रहकर पढने लगे परन्तु वे अंग्रेजी नवी कक्षा से आगे नही पढ सके।

श्री प्यारचद विश्नोई को व्यायाम का वडा शौक था। उन्होने लाठी, लेजम तथा कुश्ती की ट्रेनिंग बनारस जाकर ली। बनारस मे तैराकी प्रतियोगिताओं मे भी इन्होने भाग लिया जो 5 मील लम्बी गगा नदी मे आयोजित की गई थी। उन्होने चित्तोड गुरुकुल के सस्थापक व्रतानदजी के समक्ष 25 वर्ष तक पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत पालन करने की प्रतिज्ञा ली जिसे उन्होने पूरी तरह निबाहा। उन्होने स्काउट आश्रम मे जाकर स्काउट का कार्य किया। वे मेवाड राज्य के प्रथम रोवर क्रू थे।

1929 मे उनका श्री हरिभाऊ उपाध्याय मे सपर्क हुआ। श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने प्यारचद विश्नोई को राष्ट्रीय आन्दोलन मे भाग लेने की प्रेरणा दी। सन् '30 मे श्री प्यारचद विश्नोई अजमेर जाकर नमक सत्याग्रह मे कूद पडे। नमक सत्याग्रह के वाद श्री हरिभाऊ उपाध्याय की प्रेरणा से वे बिजोलियाँ के किसान सत्याग्रह मे काम करने चले गए। इनका काम किसानो की छीनी हुई भूमि पर पुन कब्जा करने के लिए प्रोत्साहन देना और उन्हे प्रेरित करना था। वे बिजोलियाँ मे गिरफ्तार कर लिए गए। पुलिस ने उनकी खूब पिटाई की। उन पर मुकदमा चलाया गया। उन्हे 4 महीने की सजा दी गई। बिजोलियाँ से रिहा होने के वाद वे अजमेर आकर रचनात्मक कार्यो मे लग गए।

अजमेर से उन्हे 1932 मे केकडी मे कार्य करने को भेजा गया और कुछ दिन के बाद उन्हे इडियन क्राइम एक्ट के अतर्गत गिरफ्तार करके 9 महीने की सजा मे अजमेर सेण्ट्रल जेल भेज दिया गया। अजमेर से रिहा होते ही व्यावर में शराव की दुकानो पर पिकेटिंग करते समय जुलाई '33 मे गिरफ्तार किया गया और 6 महीने की सजा उन्हे फिर अजमेर जेल मे काटनी पडी। फरवरी '34 मे अजमेर के केसरगज मे एक आपत्तिजनक भाषण के अपराध मे फिर 6 माह की सजा दी गई।

1934 से '36 के बीच श्री प्यारचद विश्नोई ने अजमेर के पास नारेली के हरिजन आश्रम में हरिजन सेवा कार्य का प्रशिक्षण प्राप्त किया। उनकी पत्नी श्रीमती भगवती देवी ने भी इसी आश्रम में सेवा कार्य का प्रशिक्षण प्राप्त किया था। हरिजन कार्य के लिए उन्हे प्रतापगढ भेजा गया। प्रतापगढ मे आने के वाद उन्होने हट्टूंडी आश्रम के ग्राम सेवामडल के माध्यम मे उन्होंने गांवो में ग्राम-सगठन और किसानो की उन्नति के लिए दो वर्ष तक कार्य किया।

1938 मे मेवाड राज्य प्रजामडल की स्थापना के वाद मेवाड मे जो सत्याग्रह शुरू हुआ उसमे वे रचनात्मक कार्य छोडकर शामिल हो गए। वे अजमेर से भीलवाडा सत्याग्रह करने गए। भीलवाडा स्टेशन से बाहर आते ही उन्हे मेवाड की पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया और 9 महीने के लिए उदयपुर जेल मे भेज दिया।

1940 में विश्नोईजी ने कुछ दिन हट्टूडी मे कार्य किया और फिर खादी की ट्रेनिंग लेने के लिए गोविन्दगढ (जयपुर) चले गए। वहाँ से प्रशिक्षण लेकर वे अजमेर मे खादी भडार का काम करने लगे लेकिन श्री भूरेलाल बया की प्रेरणा से उदयपुर खादी भडार की स्थापना की।

1942 की 15 अगस्त को श्री प्यारचद विश्नोई को खादी भडार मे काम करते हुए गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हे अन्य नेताओ के साथ इसवाम जेल मे रखा गया। 17 महीने की नजरबदी समाप्त होने के वाद वे जेल से मुक्त हुए।

देश की स्वाधीनता के वाद श्री प्यारचद विश्नोई रचनात्मक कामो मे लग गए। वे आजकल उदयपुर मे खादी भडार के सचालक हैं।



श्री बलवंतसिंह मेहता.



जन्म · 8 फरवरी सन् 1900

पता : रैन बसेरा,
अस्पताल रोड, उदयपुर.

श्री बलवतसिंह मेहता मेवाड के सबसे पुराने जनसेवक है। आपके जीवन इतिहास के साथ मेवाड की राजनैतिक चेतना का इतिहास जुडा हुआ है। मेवाड मे 1938 मे जब प्रजामडल बना तो आप ही उसके पहले अध्यक्ष बनाए गए थे। परन्तु आपकी राजनैतिक प्रवृत्तियें तो सन् 1924 से ही शुरु हो गई थी।

श्री बलवतसिंह मेहता राजस्थान सघ में और मौजूदा राजस्थान मे मत्री रह चुके हैं। वे ससद सदस्य भी रहे है। वे वर्षों तक भारत सेवक समाज के अध्यक्ष भी रहे हैं, उन्होंने किसान आन्दोलनो को भी सगठित किया है परन्तु आदिवासी क्षेत्र मे उनका किया हुआ कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय माना जाता है। उदयपुर मे मोती मगरी पर बनाया हुआ राणा प्रताप का स्मारक भी आपके ही अथक परिश्रम का फल है।

महाराणा भूपालसिंह का शासनकाल शुरु हो जाने के बाद राज्यभर मे नौकरशाही पूरी तरह निरकुश हो चुकी थी। श्री बलवतसिंह मेहता ने उन दिनो की जनता की अवस्था और राज्य के अत्याचारो के सबध मे पत्रो मे लेख लिखने शुरु किए। परिणामस्वरूप उनके घर पर कडा पहरा तैनात कर दिया गया और वे मेवाड राज्य की आँखो मे खटकने लग गए।

प्रजामडल की स्थापना के पहले मेवाड मे राजनैतिक जागृति फैलाने का काम प्रताप-सभा करती थी। इसकी स्थापना 1915 मे हो चुकी थी। प्रतापसभा ने हल्दीघाटी का मेला शुरु किया। प्रताप जयती और इस मेले के अवसर पर बाहर से राष्ट्रीय नेताओ को बुलाया जाता और उनके भाषण आदि होने से राजनैतिक चेतना का लोगो मे प्रसार होता। श्री बलवतसिंह मेहता वर्षो तक प्रताप सभा के सचालक थे। अत उन पर रियासत की कडी नजर रहने लगी।

श्री बलवतसिंह मेहता अजमेर मे होने वाली राजनैतिक गतिविधियो मे तो भाग लेते ही थे परन्तु 1929 मे वे लाहौर कॉंग्रेस मे उदयपुर से डेलीगेट बनकर गए थे और सन् 30 मे कराची कॉंग्रेस मे। इसके कारण सरकार श्री बलवतसिंह मेहता से सशकित थी और चौबीसो घटो वे पुलिस के गुप्तचर विभाग के लोगो मे घिरे रहते थे।

उन्हीं दिनो मेरठ षडयंत्र केस के कुछ क्रान्तिकारी उदयपुर आ गए थे। इसके अतिरिक्त भारत अनुशीलन समिति और नौजवान भारत सभा के कुछ युवको ने भी उदयपुर मे डेरा जमा रखा था। उनके मुखिया राधेश्याम उर्फ श्यामविहारी ने श्री वलवतसिंह मेहता के सहयोग से क्रान्तिकारियो के लिए उदयपुर से सैकडो की तादाद मे पिस्तौले खरीदी। पिस्तौलो की जाँच के सिलसिले मे राधेश्याम के साथ वलवतसिंह मेहता पहाडियो में जाया करते थे। हल्दीघाटी में उन्होने एक शिविर लगाया था जहाँ वम वनाने की प्रक्रिया सिखाई जाती थी।

सन् '32 के अप्रैल में व मई के महीने मे उदयपुर की जनता ने श्री वलवतसिंह मेहता के नेतृत्व मे रियासत द्वारा लगाए गए कुछ नए करो तथा शासनाधिकारियो की निरकुशता और अभद्र व्यवहार के विरोध मे एक विशाल प्रदर्शन किया। प्रदर्शन का यह जुलूस महाराणा के महल की चहारदिवारी में पहुच गया। पुलिस ने वहाँ भयकर लाठीचार्ज किया। जुलूस महल की चहारदिवारी में घेर लिया गया। वाहर निकलने के एक दरवाजे मे जो वाहर निकलता उसे वुरी तरह पीटा जाता। पुलिस ने लोगो को चुन चुन कर पीटा। श्री वलवतसिंह मेहता पर पुलिस की आँख शुरू से थी। उसने सव कसर इसी दिन निकाल ली। उनकी भयकर पिटाई हुई। उनके हाथ पाँव तोड दिए गए।

प्रदर्शन के परिणामस्वरूप शहर मे 7 दिन तक मुकम्मिल हडताल रही। अत में सरकार को झुकना पडा। सरकार ने जनता की माँगें स्वीकार कर ली।

24 अप्रैल 1938 को श्री वलवतसिंह मेहता के मकान पर प्रजामडल की स्थापना के पाँच-सात दिन वाद सरकार द्वारा प्रजामडल को गैर कानूनी घोषित कर दिया गया। श्री माणिक्यलाल वर्मा को उदयपुर रियासत से निर्वासित कर दिया गया। 4 अक्टूबर '38 को प्रजामडल आन्दोलन शुरू हो गया। श्री वलवतसिंह मेहता नवम्वर मे गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हे कुछ दिन उदयपुर की गिराई की जेल में रख कर फिर उन्हे सराडा भेज दिया गया जहाँ वे पूरे 1 वर्ष तक कैद रहे।

सन् 1942 के भारत छोडो आन्दोलन मे प्रजामडल ने महाराणा को जव अल्टीमेटम दिया तव उसी रात 21 अगस्त '42 को श्री वलवतसिंह मेहता को गिरफ्तार करके उदयपुर के सेंट्रल जेल में तथा इसवाल जेल में डेढ वर्ष तक नजरवन्द रखा।

श्री वलवतसिंह 1941 से ही मेवाड के आदिवासियो की सेवा की ओर अपनी अधिक से अधिक शक्ति लगाने लग गए थे। भोपट में श्री मोतीलाल तेजावत का प्रवेश निषिद्ध था और भील आन्दोलन के साथ ए० जी० जी० ओगस्वी का जो समझौता हुआ था उसका विल्कुल पालन नही हो रहा था। श्री मेहता की अध्यक्षता में भोपट में आदिवासियो का एक वृहद सम्मेलन हुआ और वैठ-वेगार उठाने की शर्ते न मानने पर सम्मेलन ने

आन्दोलन करने का निर्णय लिया । परिणामस्वरूप भोपट के जागीरदार ने प्रजामडल के द्वारा आदिवासियो की शर्ते स्वीकार कर ली । परन्तु सरकार ने कोटडा भोपट में प्रजामडल के किसी भी कार्यकर्त्ता का प्रवेश वर्जित कर दिया । श्री मेहता ने अध्यापको के रूप में कई कार्यकर्त्ताओ को आदिवासी क्षेत्र में बिठा दिया था । अन्य क्षेत्रो में भी पाठशालाए खोलने तथा सम्मेलन आदि करने का क्रम तेजी से बढता गया ।

1943 में श्री बलवतसिंह मेहता ने उदयपुर में वनवासी छात्रालय की स्थापना की । ठक्करबापा ने इस छात्रालय का शिलान्यास किया था । आदिवासियो में नवजागरण लाने के लिए पिछले 30 वर्षों से श्री बलवन्तसिंह मेहता निरतर प्रयत्न करते रहे है । उन्होने इस सम्बन्ध में आदिवासियो के बीसियो सम्मेलनो और सैकडो सभाओ द्वारा उनमें अन्य लोगो की तरह शोषणमुक्त होकर स्वाभिमान के साथ श्रेष्ठ नागरिको की तरह जीवन जीने के सस्कार जगाए । श्री मेहता के प्रयत्नो से आदिवासियो को सरकार द्वारा कृषि आदि भूमि के लिए अनेको सुविधाए प्राप्त होती रही हैं ।

श्री बलवतसिंह मेहता का विषय केवल राजनीति ही नही रहा है । जन सामान्य के समग्र लोकजीवन को सस्कारमय करने की दिशा में वे कार्य करते रहे हैं । मेवाड राज्य प्रजामडल के सस्थापक तो वे थे ही लेकिन इसके साथ-साथ वे भारतीय लोक-कला मडल के भी सस्थापको में से एक हैं । वे आज भी बीसियो लोकसेवी सस्थाओ के अध्यक्ष, सरक्षक या सलाहकार हैं और आज भी समाज की किसी न किसी लोक निर्माणकारी प्रवृत्ति मे हर समय व्यस्त रहते हैं । राजस्थान राज्य के मत्री पद के बाद उन्होंने सेवा के क्षेत्र मे ऊँचे से ऊँचा सम्मान प्राप्त किया है । अपनी सत्यनिष्ठा, अपनी असाधारण कर्म-शक्ति और अति सौम्य-व्यवहार के कारण ही वे लोगो मे अत्यन्त लोकप्रिय हो सके है । उन्होने भारतीय ससद मे रह कर कई महत्त्वपूर्ण कमेटियो और बोर्डों मे काम किया था । राजस्थान भारत सेवक समाज के भी वर्षो तक अध्यक्ष रहे थे ।

श्री मेहता का जन्म 8 फरवरी 1900 को उदयपुर के प्रसिद्ध नरवद मेहता, श्री चद मेहता, जलसी मेहता और मेहता विट्ठल के खानदान मे हुआ था । उनके पिता का नाम श्री जालिमसिंह मेहता था । वे जाति से ओसवाल वैष्णव हैं । उनकी प्रारम्भिक शिक्षा भीलवाडा और उदयपुर में हुई थी और उन्होने उच्च शिक्षा फरग्यूसन कॉलेज पूना मे प्राप्त की थी । श्री मेहता के परिवार को राज्य की ओर से जागीर दी हुई थी । उनका परिवार एक खानदानी सामत परिवार रहा है परन्तु, श्री बलवतसिंह मेहता अपने 15 वर्ष की उम्र मे ही एक विद्रोही के रूप मे विकसित हुए हैं और वश परम्परा और पारिवारिक सामती जीवन का सदा विरोध और बहिष्कार ही करते रहे हैं । उनका खानदान महाराणाओ का स्वामिभक्त परिवार है पर उन्होंने सामतवाद, राजशाही और महाराणाओ के विरुद्ध सत्याग्रहो का आगे होकर नेतृत्व किया है ।

श्री फतेहलालबापू.



जन्म सन् 1913

पता · धमीड़ बाजार, नाथद्वारा

श्री फतेहलाल बापू का जन्म सन् 1913 मे नाथद्वारा के गौड़ ब्राह्मण परिवार मे श्री वल्लभदासजी के यहाँ हुआ। उनकी शिक्षा नाथद्वारा मे ही हुई। बचपन से ही श्री फतहलाल बापू का झुकाव जन-सेवा और सार्वजनिक सेवा के कार्यों की ओर होने लग लगा था। अपनी छोटी उम्र मे ही उन्होने नाथद्वारा की नगरपालिका के अध्यक्ष पद पर और प्रधान के पद पर सफलता पूर्वक कार्य किया था।

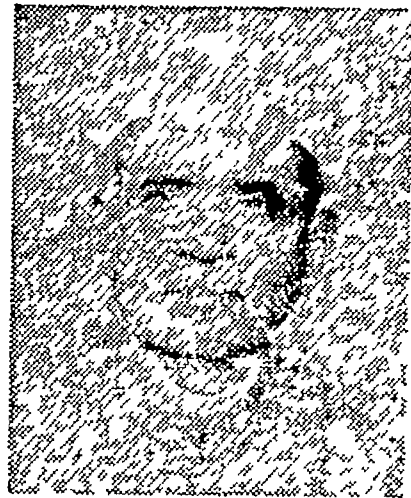
उदयपुर मे मेवाड राज्य प्रजामडल की स्थापना के साथ ही वे सक्रिय राजनीति की ओर आकर्षित हुए। उन्होने नाथद्वारे मे प्रजामण्डल की स्थापना की और, अधिक से अधिक लोगो को प्रजामण्डल के झडे के नीचे लाए। 1939 मे मेवाड मे सविनय युवा आन्दोलन शुरू हुआ और श्री फतहलाप बापू के प्रयत्नो से नाथद्वारा सत्याग्रह का केन्द्र बन गया। इस आन्दोलन मे श्री फतहलाल बापू को दो बार सजा हुई। एक बार 1½ महीने की जेल और दूसरी बार 3 महीने की नजरबन्दी।

भारत छोडो आन्दोलन मे भी श्री फतहलाल बापू ने नाथद्वारा के अपने कर्मठ साथियो की टोली के साथ भाग लिया। उन्हे इस आन्दोलन मे उदयपुर सेन्ट्रल जेल मे और इसवाल जेल मे भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत नजरबन्द रखा गया।

श्री फतहलाल बापू नाथद्वारा के एक तपे हुए लोक-सेवक हैं। वे वर्षों तक नाथद्वारा नगरपालिका के अध्यक्ष रह चुके हैं। नाथद्वारा की जनता का उनकी नि स्वार्थ भावना और सत्य निष्ठा पर पूरा विश्वास है। वे सामान्य रुप से अपनी जीविका के लिए स्वतन्त्र व्यापार करते हैं परन्तु उनका अधिक से अधिक समय जनता की अभाव अभियोगो को दूर करवाने और सार्वजनिक समस्याओ का समाधान करवाने मे ही जाता है।

उन्होंने शिक्षा प्रसार की दिशा मे बहुत कार्य किया है उन्होंने नाथद्वारा मे श्रमिको के सगठन बनाये और इसके साथ-साथ रचनात्मक कार्यों मे भी लगे रहे। वे आज भी कट्टर कांग्रेसी हैं।

श्री भूरेलाल बया.



जन्म · सवत् 1961 श्रावण शुक्ला 12
पता नव निर्माण सघ, उदयपुर

श्री भूरेलाल बया राजस्थान मे गाँधी विचारधारा और गांधी दर्शन का प्रचार करने वाले अग्रगण्य व्यक्तियो मे से है। खादी ग्रामोद्योग कमीशन के कार्य को राजस्थान मे काफी विस्तार देने के बाद श्री बया सर्वोदय और भूदान के कार्य मे लग गए और अपने ही द्वारा स्थापित नव निर्माण सघ के माध्यम से उन्होने गाँव-गाँव मे घूम कर गाँधीविचार को जन-जन तक पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। नव निर्माण सघ की गाँधी दर्शन समिति के द्वारा आपने बधुत्व का प्रसार करने के लिए 'एक विश्व मञ्च' का नया अभियान शुरू किया है। दिल्ली मे गाँधी-दर्शन के कई विशेपज्ञो को साथ लेकर 'एक विश्व मच' नाम की सस्था की विधिवत् स्थापना की गई है। श्री बया ही उसके अध्यक्ष हैं।

गाँधी विचार के प्रति इतनी अनुरक्ति का मुख्य कारण यह है कि श्री बया 1934 से 1938 तक राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के सान्निध्य मे सेवाग्राम में रहे थे और, गाँधीजी के अति निकट रहकर उन्होने गाँधीदर्शन के व्यावहारिक पक्ष को बहुत बारीकी से हृदयगम किया था। श्री बया की महात्मा गाँधी से मुलाकात यरवदा जेल मे हुई जब वे 1932 मे गिरफ्तार करके यरवदा जेल भेज दिए गए थे और वही गाँधीजी ने उन्हे वर्धा आने का निमत्रण दिया था।

व्यापार के क्षेत्र से सघर्ष के क्षेत्र मे

श्री भूरेलाल बया 1923 मे व्यापार करने की दृष्टि से बबई गए थे। 1927-'28 मे साइमन कमीशन के बहिष्कार के देश व्यापी आन्दोलन से प्रभावित होकर वे अपने व्यापार से अवकाश लेकर बबई प्रदेश कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्त्ता बन गए और खादी फेरी आदि प्रवृत्तियो से रचनात्मक राजनीति मे कार्य करने लगे। उन्होने उन दिनो 'सदेश' नामक मासिक हिन्दी पत्र का सपादन भी वहाँ से किया।

नमक सत्याग्रह से भारत छोड़ो आन्दोलन तक

नमक सत्याग्रह के समय उन्होंने बबई के गेट वे ऑफ इडिया पर नमक कानून तोडा और 1932 के आन्दोलन मे बंबाई की 18 वीं बार कौंसिल के सदस्य के नाते उन्होंने सत्याग्रह किया। श्री बया 1930 मे आर्थर रोड जेल मे रहे और 1932 में यरवदा जेल



श्री फतेहलालबापू.

जन्म सन् 1913

पता : धमीड़ बाजार, नाथद्वारा

श्री फतेहलाल बापू का जन्म सन् 1913 मे नाथद्वारा के गौड़ ब्राह्मण परिवार मे श्री वल्लभदासजी के यहाँ हुआ। उनकी शिक्षा नाथद्वारा मे ही हुई। बचपन से ही श्री फतहलाल बापू का झुकाव जन-सेवा और सार्वजनिक सेवा के कार्यों की ओर होने लग लगा था। अपनी छोटी उम्र मे ही उन्होने नाथद्वारा की नगरपालिका के अध्यक्ष पद पर और प्रधान के पद पर सफलता पूर्वक कार्य किया था।

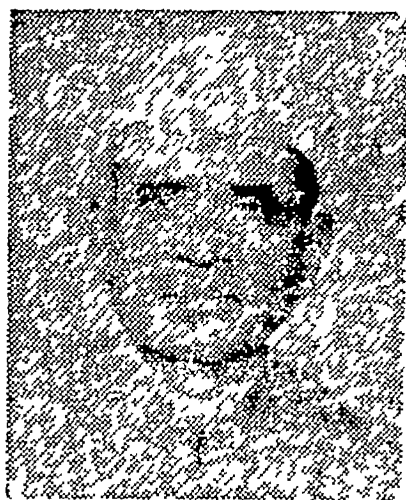
उदयपुर मे मेवाड राज्य प्रजामडल की स्थापना के साथ ही वे सक्रिय राजनीति की ओर आकर्षित हुए। उन्होने नाथद्वारे मे प्रजामण्डल की स्थापना की और, अधिक से अधिक लोगो को प्रजामण्डल के झडे के नीचे लाए। 1939 मे मेवाड मे सविनय युवा आन्दोलन शुरू हुआ और श्री फतहलाप बापू के प्रयत्नो से नाथद्वारा सत्याग्रह का केन्द्र बन गया। इस आन्दोलन मे श्री फतहलाल बापू को दो बार सजा हुई। एक बार 1½ महीने की जेल और दूसरी बार 3 महीने की नजरबन्दी।

भारत छोडो आन्दोलन मे भी श्री फतहलाल बापू ने नाथद्वारा के अपने कर्मठ साथियो की टोली के साथ भाग लिया। उन्हे इस आन्दोलन मे उदयपुर सेन्ट्रल जेल मे और इसवाल जेल मे भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत नजरबन्द रखा गया।

श्री फतहलाल बापू नाथद्वारा के एक तपे हुए लोक-सेवक है। वे वर्षों तक नाथद्वारा नगरपालिका के अध्यक्ष रह चुके हैं। नाथद्वारा की जनता का उनकी नि स्वार्थ भावना ओह सत्य निष्ठा पर पूरा विश्वास है। वे सामान्य रुप से अपनी जीविका के लिए स्वतन्त्र व्यापार करते हैं परन्तु उनका अधिक से अधिक समय जनता की अभाव अभियोगो को दूर करवाने और सार्वजनिक समस्याओ का समाधान करवाने मे ही जाता है।

उन्होने शिक्षा प्रसार की दिशा मे बहुत कार्य किया है उन्होंने नाथद्वारा मे श्रमिको के सगठन बनाये और इसके साथ-साथ रचनात्मक कार्यों मे भी लगे रहे। वे आज भी कट्टर कांग्रेसी हैं।

श्री भूरेलाल बया.



जन्म संवत् 1961 श्रावण शुक्ला 12
पता नव निर्माण संघ, उदयपुर

श्री भूरेलाल बया राजस्थान मे गाँधी विचारधारा और गाँधी दर्शन का प्रचार करने वाले अग्रगण्य व्यक्तियो मे से हैं। खादी ग्रामोद्योग कमीशन के कार्य को राजस्थान मे काफी विस्तार देने के बाद श्री बया सर्वोदय और भूदान के कार्य मे लग गए और अपने ही द्वारा स्थापित नव निर्माण सघ के माध्यम से उन्होने गाँव-गाँव मे घूम कर गाँधीविचार को जन-जन तक पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। नव निर्माण सघ की गाँधी दर्शन समिति के द्वारा आपने बधुत्व का प्रसार करने के लिए 'एक विश्व मञ्च' का नया अभियान शुरू किया है। दिल्ली मे गाँधी-दर्शन के कई विशेषज्ञो को साथ लेकर 'एक विश्व मच' नाम की सस्था की विधिवत् स्थापना की गई है। श्री बया ही उसके अध्यक्ष है।

गाँधी विचार के प्रति इतनी अनुरक्ति का मुख्य कारण यह है कि श्री बया 1934 से 1938 तक राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के सान्निध्य मे सेवाग्राम में रहे थे और, गाँधीजी के अति निकट रहकर उन्होने गाँधीदर्शन के व्यावहारिक पक्ष को बहुत बारीकी से हृदयगम किया था। श्री बया की महात्मा गाँधी से मुलाकात यरवदा जेल मे हुई जब वे 1932 मे गिरफ्तार करके यरवदा जेल भेज दिए गए थे और वही गाँधीजी ने उन्हें वर्धा आने का निमत्रण दिया था।

व्यापार के क्षेत्र से सघर्ष के क्षेत्र मे

श्री भूरेलाल बया 1923 मे व्यापार करने की दृष्टि से बबई गए थे। 1927-'28 मे साइमन कमीशन के बहिष्कार के देश व्यापी आन्दोलन से प्रभावित होकर वे अपने व्यापार से अवकाश लेकर बबई प्रदेश कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्त्ता बन गए और खादी फेरी आदि प्रवृत्तियो से रचनात्मक राजनीति मे कार्य करने लगे। उन्होने उन दिनो 'सदेश' नामक मासिक हिन्दी पत्र का सपादन भी वहाँ से किया।

नमक सत्याग्रह से भारत छोड़ो आन्दोलन तक

नमक सत्याग्रह के समय उन्होंने बबई के गेट वे ऑफ इडिया पर नमक कानून तोडा और 1932 के आन्दोलन मे बंबाई की 18 वीं वार कौंसिल के सदस्य के नाते उन्होंने सत्याग्रह किया। श्री बया 1930 मे आर्थर रोड़ जेल मे रहे और 1932 मे यरवदा जेल

मे, जहाँ उनकी गाँधीजी मे पहली भेट हुई। मेवाड मे आने के बाद 1938 के प्रजामडल आँदोलन मे और 1942 के भारत छोडो आँदोलन मे गिरफ्तार किए गए थे। वे कुल मिलाकर चार बार जेल गए।

मेवाड़ मे प्रजामंडल के कर्णधार के रूप मे

हरिपुरा कांग्रेस ने जब देशी रियासतो मे किए जाने वाले आँदोलनो का समर्थन करने का निश्चय किया तब श्री बया 1938 मे मेवाड आ गए। उस समय मेवाड मे प्रजामडल की स्थापना हो रही थी। श्री बया मेवाड राज्य प्रजामडल के उपाध्यक्ष बनाए गए। फिर तो अगले वर्षों मे वे प्रजामडल के अध्यक्ष और मत्री बनते ही रहे। अपने कार्यकाल मे श्री बया ने प्रजामडल को जागृत लोकशक्ति के रूप मे सगठित किया तथा सामतशाही मे मुकाबिला करने के लिए मेवाड की जनता को तैयार किया, थोडे ही समय मे मेवाड प्रजामण्डल के कर्णधार के रूप मे आपको लोक मान्यता मिलती गई।

पीड़ित मानवता की सेवा

मेवाड प्रजामडल की राजनैतिक गतिविधियो के साथ-साथ आपने पीडित मानवता की सेवा की ओर भी पूरा ध्यान दिया। 1939 मे अकाल पीडित क्षेत्रो मे तथा 1943 मे बाढ पीडित क्षेत्रो मे आपने दिन रात एक करके प्राकृतिक प्रकोप से पीडितो को राहत पहुँचाने का कार्य किया। इसी प्रकार मेवाड की जरामय पेशा जातियो और आदिवासियो के कल्याण कार्य में भी आगे होकर तेजी से कार्य किया।

खादी ग्रामोद्योग के कार्य में श्री भूरेलाल बया को प्रारम्भ से ही, गहरी रुचि रही है। मेवाड में तो खादी-ग्रामोद्योग की नींव भी श्री बया ने ही अपने अथक परिश्रम से लगाई है।

किसान सत्याग्रहो का संचालन

श्री भूरेलाल बया राजस्थान आदिवासी मडल के अध्यक्ष रह चुके हैं। उन्होंने मेवाड की अनेकों तहसीलो में किसानो का सगठन करके किसान सत्याग्रहो का सचालन किया। गिरवा, पाहोली, वल्लभनगर, भोपालसागर, उदयपुर और पदेसर आदि तहसीलो मे किसानो के बीच मे श्री बया द्वारा किया गया कार्य उस समय अत्यत साहसिक और महत्त्वपूर्ण था।

मन्त्रिमडल में

देश की स्वाधीनता के बाद जब श्री माणिक्यलाल वर्मा के नेतृत्व मे सयुक्त राजस्थान का मन्त्रिमडल बना तो श्री बया उसमे मत्री के रूप मे सम्मिलित किए गए थे और 1949 मे वृहद राजस्थान बन जाने के बाद वृहद राजस्थान के मुख्यमत्री श्री हीरालाल शास्त्री ने भी आपको अपने मन्त्रिमडल मे शामिल किया था। अपने मन्त्रित्वकाल मे भी उनका जनता से निरन्तर सपर्क बना रहा और वे शासक होकर भी सेवक की तरह ही कार्य करते रहे।

गाँधी दर्शन और रचनात्मक कार्यक्रमो की ओर

सन् 1950 मे बापू निर्माण पक्ष के अवसर पर सर्वोदय विचार को मूर्त्तरूप से प्रदर्शन करने के लिये उदयपुर मे खादी ग्रामोद्योग की एक विशाल प्रदर्शनी का आयोजन किया तथा 30 जनवरी से 12 फरवरी तक राजस्थान के सार्वजनिक कार्यकर्ताओ का शिविर, महिला, बाल–सम्मेलन, हरिजनो एव ग्राम निर्माण के कार्य मे गाँव के लोगो की, सोई हुई शक्ति जगाने के लिये, निर्माण कार्यों मे स्वय जुटकर जो सेवाएँ की, उसकी यादगार की नाहर मगरा के पास बनाई हुई लकडे और आमली के बाँध की नीव की खुदाई आज भी साक्षी दे रही है। उसके बाद गाँधी विचारधारा के प्रसार के उद्देश्य से "नवनिर्माण सघ" नामक सस्था की स्थापना की तथा, स्वय भी इस कार्य मे जुट गये और गाँव-गाँव घूमकर सर्वोदय की विचारधारा के साथ भूदान यज्ञ के आन्दोलन मे हजारो बीघा भूदान प्राप्त किया। आप नव निर्माण सघ के प्रथम अध्यक्ष चुने गये थे। सन् 1954 में आप खादी ग्रामोद्योग कमीशन के राजस्थान, मध्यभारत, भोपाल, अजमेर जोन के जोनल डाईरेक्टर के पद पर निर्वाचित हुए। इस पद पर आपने 5 वर्ष तक ही कार्य करने का विचार किया था और समय के पूर्व कमीशन को आगे की व्यवस्था की सूचना दे दी किन्तु नई व्यवस्था होने तक डेढ वर्ष तक और अधिक कार्य करना पडा। आपके द्वारा इस पद का कार्यभार सभालने के समय सारे जोन मे खादी की कुल उत्पत्ति 16 लाख रुपया तथा विक्री 5 लाख रुपये की थी और प्राँत भर मे केवल 5 ही सस्थाएँ प्रमाणित थी जबकि आप इस पद से निवृत हुए केवल राजस्थान मे ही खादी उत्पत्ति सवा करोड रुपये तथा विक्री 75 लाख रुपये और सस्थाओ की सख्या 50 तक पहुँच गई थी। श्री बया खादी ग्रामोद्योग के कार्य को गाँधी विचारधारा के आधार पर नया मोड देने और उसको भ्रष्टाचार से बचाने के लिये बडे-बडे लोगो की नाराजगी के खतरे मोल लेकर भी अडिग रहे।

विश्व नागरिक के रूप मे

आपने विश्व शान्ति के पक्ष मे लोकमत जागृत करने के निमित्त विश्व नागरिकता की भावना को अपना कर अपने निवास स्थान का नाम करण भी "विश्व नागरिक गृह" किया है एव अणुबम परीक्षणो की रोक एव शस्त्र विसर्जन के लिए निरतर प्रयत्नशील हैं।

एक विश्व मच (One world forum)

नव निर्माण सघ "गाँधी दर्शन" समिति जिसका कि उद्देश्य विश्वराज्य के लिए गाँधीजी के आदर्शो के अनुसार कार्य करने का रहा है; आप उसके अध्यक्ष चुने गये जिसके द्वारा देश के प्रमुख सामान्य महानुभावो से सम्पर्क स्थापित कर दिल्ली मे "एक विश्व मच" की स्थापना की गई उसके भी आप ही अध्यक्ष चुने गए हैं और आपने इस कार्य को अपने जीवन का मुख्य लक्ष्य बनाया है।

पं. भवानीशंकर शर्मा.



जन्म संवत् 1954 पौष कृष्णा अमावस्या
पता नीम कुंज, उदयपुर

राजनैतिक जीवन का प्रारंभ

प० भवानीशकर शर्मा ने अपना राजनैतिक जीवन अपनी 22 वर्ष की आयु मे मद्रास मे शुरू कर दिया था। उन दिनो सन् 1919 मे पडित भवानीशकर मद्राम मे वैद्यराज लक्ष्मीनारायण के शिष्यत्व में आयुर्वेद का अध्ययन कर रहे थे। परन्तु उनका सवध वावा नरसिंहदास और क्षेमानन्द राहत से था। ये सभी मित्र मिलकर मद्रास से 'भारत तिलक' नामक एक हिन्दी साप्ताहिक प्रकाशित कर रहे थे और पडित भवानी शकर शर्मा उसके सपादन मे क्षेमानन्द राहत के सहयोगी थे। उन्होंने राहत जी के साथ मद्रास मे हिन्दी प्रचार का कार्य भी किया था।

जन्म, परिवार और शिक्षा

पडित भवानीशकर शर्मा का जन्म मेवाड के गोगून्दा ग्राम मे अपने नाना के यहाँ सवत् 1954 को पौष कृष्णा अमावस्या को हुआ था। आपका पैतृक परिवार मेवाड के खमनोर तहसील के गुडसा ग्राम का है। पडित भवानीशकर का प्रारभिक अध्ययन काकरोली मे हुआ और वाद मे मद्रास और दिल्ली मे। उन्होने 1917 मे भिषगवर और 1919 मे आयुर्वेद-भूषण की परीक्षाएँ पास करली थी।

मद्रास से मेवाड़ प्रवेश

1923 मे पडित भवानीशकर शर्मा मद्रास से उदयपुर लौट आए। उन्होने 1925 मे अपने कुछ मित्रो के सहयोग से आयुर्वेद सेवाश्रम नाम की सस्था की स्थापना की। 17 वर्ष की अपनी सेवा के बाद 1942 मे प० भवानीशकर शर्मा सेवाश्रम से पृथक हो गए और 1945 मे उन्होंने नीमकुज नामक सस्था की स्थापना की।

समग्र लोकजीवन को संस्कारी बनाने की धुन

यो तो प्रत्यक्ष रूप मे पडित भवानीशकर शर्मा को लोगो ने आयुर्वेद शास्त्र के निष्णात विशेषज्ञ के रूप मे ही देखा परन्तु, वे सर्वतोमुखी प्रतिभा के व्यक्ति हैं। अपने जीवन के उषाकाल से ही वे राष्ट्रीयता और स्वदेशी के रग मे रग गए थे इसलिए वे मेवाड के प्रत्येक राष्ट्रीय आन्दोलन मे सबसे आगे रहे हैं। वे लोक जीवन के समग्र स्वरूप को उच्च सस्कारो से पवित्र कर देना चाहते थे इसलिए उनका सम्बन्ध समाज की प्रत्येक सस्था, प्रत्येक वर्ग से और प्रत्येक समूह से रहा है। उन्होंने अपने ससर्ग और सान्निध्य से लोकसेवी सस्थाओ को प्राणवान बनाया है और जनसमाज को प्रगतिशील विचारो से ओतप्रोत किया है। समग्र लोकजीवन और समाज को नये मूल्यो और नये सस्कारो से भर देने की उनकी धुन रही है। इसीलिए मेवाड और विशेषकर उदयपुर की प्रत्येक रचनात्मक और लोक कल्याणकारी प्रवृत्ति मे पडित भवानी शकर शर्मा का योग रहा है।

सत्याग्रह और जेल जीवन

मेवाड मे प्रजामण्डल की स्थापना के बाद, प्रजामण्डल की ओर से जो पहला सत्याग्रह हुआ उसमे पडित भवानीशकर शर्मा को गिरफ्तार करके 9 महीने तक सराडा की जेल मे रखा गया। जेल से मुक्त होने के बाद आपने पहला कार्य जेल यात्रा करने वाले सत्याग्रहियो के परिवारो को सभालने का किया था। यह सत्याग्रह का इतना महत्त्वपूर्ण कार्य था जिसे पडित भवानीशकर शर्मा जैसे निस्पृह व्यक्ति ही पूरा कर सकते थे।

क्रांतिकारियो को सहयोग और सहायता

भारत छोडो आन्दोलन के समय पडित भवानीशकर शर्मा उदयपुर के 'भूतमहल' नामक स्थान पर गुप्त रूप से कार्य कर रहे थे। उन्होने उस समय बावाजी श्री नरसिंहदासजी के जरिये देश के क्रांतिकारियो को सभी सभव तरीको से सहयोग और सहायता पहुँचाई थी।

अकाल और बाढ़ में सेवा कार्य

मेवाड मे 1939 मे जो अकाल पडा और 1943 मे जो बाढ आई उसमे प० भवानीशकर शर्मा ने दिन-रात एक करके सहायता कार्यों के द्वारा पीडित लोगो को राहत पहुँचाने का कार्य किया।

आरोग्य शिविर, जल शुद्धि और खलवाट आन्दोलन

महिला मडल को साथ लेकर पडित भवानीशकर शर्मा ने अनेको गाँव मे आरोग्य शिविर चलाए, स्वस्थ नागरिक जीवन के सस्कार दिए। उन्होंने गाँवो मे जल-शुद्धि का आन्दोलन चलाकर कुँओ और तालावो के पुनर्निर्माण के काम को आगे बढाया और खलवाट आन्दोलन के द्वारा ग्रामीण समाज मे जीवन के प्रति नए दृष्टिकोण को जगाने का प्रयत्न किया।

बहुमुखी प्रतिभा का लोकसेवी व्यक्तित्व

पडित भवानीशकर शर्मा ने जीवन के विविध क्षेत्रो मे समाज को अपनी वहुमूल्य सेवाएँ दी हैं। वे सदैव समाज की क्रियाशील गतिविधियो के केन्द्र रहे हैं। उदयपुर की एक भी ऐसी लोकसेवी सस्था नही जिसमे भवानीशंकर शर्मा का महत्त्वपूर्ण योगदान न रहा हो। राजनीति, समाज शिक्षा, सस्कृति, कला, संगीत, साहित्य, आध्यात्म और आयुर्वेद–उनकी प्रवृत्तियो को घेरे रखने वाले मुख्य विषय हैं। पचहत्तर वर्ष के वैद्यराज अपने प्रत्येक दायित्व को आज भी भी युवकोचित उत्साह और ओज के साथ पूरा करते हैं।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया.



जन्म 31 जुलाई 1916.

पता : राज्यपाल–मैसूर प्रदेश,
राज भवन, बेंगलोर.

15 अगस्त 1947 के पहले देश के सामने सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न था स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए निरतर सघर्ष, और 15 अगस्त 47 के बाद देश के सामने प्रश्न आया सुनियोजित अर्थ व्यवस्था के माध्यम से एक जनतान्त्रिक समाजवादी समाज के निर्माण का। स्वतन्त्रता प्राप्ति और अपने भाग्य पर स्वय नियन्त्रण के अधिकार प्राप्ति के साथ ही एक लक्ष्य की उपलब्धि हो गई परतु दूसरा प्रयास अभी चल रहा है। और वे देशभक्त अत्यन्त भाग्यशाली हैं जिन्होंने देश के स्वातन्त्र्य समर मे भी अपनी साहसिक और ऐतिहासिक भूमिका निभाई हो और अपने राज्य की जनता को समृद्धिशाली बनाने के पुनीत कार्य को भी सपन्न किया हो। श्री मोहनलाल सुखाडिया राजस्थान के एक ऐसे ही बेजोड व्यक्तित्व है। स्वतन्त्रता के समर मे उन्होने श्री माणिक्यलाल वर्मा के नेतृत्व मे अपनी शक्ति, क्षमता और सामर्थ्य का अर्घ्य भारत छोडो आन्दोलन मे चढाया था और पूरे 18 वर्ष तक राजस्थान राज्य की बागडोर सम्भाल कर उन्होने राजस्थान के नए रूप और आकार को गढने मे कोई कसर बाकी नही रखी। इतिहास मे श्री मोहनलाल सुखाडिया नए राजस्थान के निर्माता के रूप में सदैव याद किये जायेंगे।

1939 मे श्री मोहनलाल सुखाडिया बम्बई से इलेक्ट्रिकल इजीनियरिंग का डिप्लोमा लेकर राजस्थान लौटे थे। उस समय सारा देश उत्साह और जोश से अनुप्राणित हो रहा था। श्री सुखाडिया अपने हृदय की सारी शक्ति बटोर कर इस आन्दोलन मे कूद पडे। मेवाड में इस समय तक प्रजामडल की स्थापना हो चुकी थी। श्री माणिक्यलाल वर्मा

के नेतृत्व मे राष्ट्रीय भावनाग्रो से ग्रोत-प्रोत कार्यकर्त्ताग्रो का एक ऐसा घटक बन गया था जिसने रियासती शासन के ग्रत्याचारो के विरुद्ध सघर्ष किया तथा उत्तरदायी शासन के लिए ग्रावाज बुलद की । श्री सुखाडिया थोडे ही समय मे ग्रपनी निष्ठा, लगन ग्रौर उत्साह के कारण प्रजामडल के प्रमुख कार्यकर्त्ता बन गए । उन्होने प्रजामडल की ग्रोर से मेवाड की हर तहसील ग्रौर कस्बे मे जागरण का शख फूका ग्रौर लोकमत को प्रशिक्षित करने मे कोई कसर बाकी नही रखी ।

श्री सुखाडिया ने मेवाड प्रजा मडल मे ग्रपनी ग्रावश्यकता, उपयोगिता ग्रौर महत्ता स्थापित करदी थी । मेवाड के नौजवान सुखाडिया की ग्रोर खिचे हुए प्रजा मडल मे शामिल होने लग गए थे ।

प्रजा मडल की राजनैतिक प्रवृत्तियो मे ग्रग्रगण्य स्थिति बनाने के 3–4 वर्ष पहले श्री सुखाडिया ने श्रीमती इदुबाला सुखाडिया के साथ ग्रतर्जातीय विवाह करके जिस सामाजिक क्राति का सूत्रपात किया था उससे वे मेवाड के नौजवानो के ग्रादर ग्रौर श्रद्धा के पात्र तो बन ही चुके थे । उनका ग्रतर्जातीय विवाह मेवाड के सामाजिक जीवन मे क्राति का पहला चरण था ।

ग्रपने इस क्रांतिकारी कदम के सम्बन्ध मे श्री सुखाडियाजी ने ग्रपने सस्मरणो मे एक स्थान पर लिखा है कि 'एक वैश्य युवक जाति-पाँति के बधनो को तोडकर, वैष्णव धर्म की परम्पराग्रो को छिन्न-भिन्न कर, रूढिगत मान्यताग्रो से विमुक्त होकर जीवन की एक नई दिशा मे चल पडा था ग्रौर ब्यावर के शिक्षित समाज मे, विशिष्ठ व्यक्तियो के प्रगतिशील सहयोग से यह विवाह वैदिक रीति से सपन्न हुग्रा ग्रौर उसने नौजवानो के लिए एक मार्ग प्रशस्त किया । किन्तु नाथद्वारा मे माँ के पास जाकर उनका ग्राशीर्वाद पाना भी मेरा कर्त्तव्य था जो मुझे सबसे ग्रधिक भयपूर्ण ग्रौर मानसिक रूप से कष्टप्रद लग रहा था । लेकिन मुझ मे ग्राक्रोश भी बडा था । जो माँ मुझे बचपन मे स्नेह से पालती रही, हजारो कल्पनायें मेरे लिए सजोती रही, वही ग्राज मुझसे मिलने मे ग्रात्म-ग्लानि ग्रौर मुह देखने मे घृणा तथा मौत की सी ग्रनुभूति कर उठी है । मेरे लिए यह बडी ही विषम परिस्थिति थी । इसमे माँ का भी क्या दोष था ? वह ऐसे ही वातावरण मे पली थी । जीवन भर श्रीनाथजी की भक्ति एव साधना मे छूग्राछूत की पृष्ठभूमि मे सतत सलग्न रही । वह भला मेरे इस विवाह मे कैसे प्रसन्न होकर ग्राशीर्वाद दे सकती थी । ग्रौर उनके व्यवहार के प्रति मेरा भी क्रोध कैसे शात हो सकता था । दोनो ग्रोर ही मजबूरी थी । दोनो ग्रोर ही ग्रपनी-ग्रपनी मान्यताग्रो के प्रति कर्त्तव्य-बोध था । ग्राखिर एक ही विश्वास के बल पर मैं सतोष करके बैठ गया कि शायद माँ का ग्राज का ग्राक्रोश कल ग्राशीर्वाद बन उठे । इसी मानसिक विश्वास का सूत्र लेकर मैं उज्ज्वल भविष्य के ग्रच्छे दिनो के इंतजार में चुप हो गया । मित्रो की सहायता व ग्राग्रह से मैंने नाथद्वारा के समाज मे प्रवेश करने का निश्चय किया ।

क्योकि मैं सामाजिक क्राति का पालक वन चुका था पर राजनीति मे मैंने अभी तक प्रवेश नही किया था। मित्रो की मित्रता का परीक्षण भी इसी समय मेरे सामने होने को था जिसमे कुछ तो वास्तव मे मित्रता के नाम को सार्थक करते निकले और कुछ आपत्कालीन रूप पहचान कर अपने को अलग कर गए। मुझे पता लगा कि नाथद्वारा का वैष्णव ममाज पूरे सक्रिय रूप से मेरा विरोध करने वाला था। मित्रो ने इस वात की तनिक भी परवाह नही की। मुझे एक बग्घी मे वर के वेश मे और इन्दु को वधू के वेश मे विठा कर मेरे चारो ओर घेरा वनाकर एक जुलूस के रूप मे पूरे वाजार मे लेकर निकले। किसी भी ओर विना देखे-सुने पूरे उल्लास व आनद के साथ मोहन भैया जिदावाद' के तुमुल नाद के साथ शहर की परिक्रमा कराई गई। किसी भी विरोध से उनके पैर नही उखडे।

आज मैं सोचता हूँ कि शायद मुख्यमत्री के रूप में भी ऐसा भव्य और अपूर्व उत्साह पूर्ण जुलूस मेरा नही निकला जैसा कि वह स्वागत पूर्ण जोशीला और आक्रोश के वातावरण से मुक्त जुलूस, जो अपनी विलक्षणता मे अनोखा था और जो मुझे मेरे भावी जीवन के सघर्ष मे आगे वढने की प्रेरणा दे रहा था। मेरे इर्द-गिर्द सशक्त नौजवानो की अपूर्व भीड थी। ' ' मैं पुन नाथद्वारा को अपने व्यक्तित्व का ही एक अग मानने लग गया।'

श्री मोहनलाल सुखाडिया का जन्म 31 जुलाई 1916 को एक सभ्रान्त वैश्य परिवार में नाथद्वारा में हुआ था। आपके पिता श्री पुरुषोत्तम लाल क्रिकेट के यशस्वी खिलाडी थे। वे कई वर्षो मे नाथद्वारा में श्रीनाथजी के मदिर के गुसाईजी के प्रशिक्षक का कार्य कर रहे थे। वे प्रगतिशील विचारो के व्यक्ति थे और सुखाडियाजी को उनसे मदा आगे वढने का प्रोत्साहन मिलता रहा। श्री सुखाडियाजी की माताश्री कट्टर वैष्णव थी और वे वैष्णव सम्प्रदाय के हर विधि विधान को स्वीकार करके चलती थी। सुखाडिया जी की प्रारभिक शिक्षा नाथद्वारा में ही हुई।

इस क्रांतिकारी कदम से श्री सुखाडिया अपने जीवन के प्रारम्भ में ही लोकप्रियता के शिखर छूने लग गए थे। प्रजामडल के मच से 7–8 वर्ष तक निरतर किए गए उनके कार्यों ने उनकी कार्यकुशलता और उनकी राजनैतिक सामर्थ्य को पूरी तरह स्थापित कर दिया था और 1947 में जब मेवाड में पहली वार लोकप्रिय मन्त्रिमडल बना तब प्रजामडल की ओर से श्री सुखाडिया 32 वर्ष की आयु मे मत्री मनोनीत किए गए।

13 नवम्बर 1954 को अपनी 38 वर्ष की आयु में श्री सुखाडिया राजस्थान के मुख्यमत्री बन गए। उन्होने पूरे 17 वर्ष तक राजस्थान में एक-छत्र शासन किया। उन्होने राजस्थान के आर्थिक और सामाजिक जीवन मे सामती अवशेषो को सदा-सदा के लिए समाप्त करने का प्रयत्न किया और राजस्थान को शेष भारत के साथ प्रगति की दौड में आगे लाकर उसे एक सुव्यवस्थित प्रशासकीय इकाई के रूप में स्थापित किया। उन्होने

राजस्थान मे सामाजिक-आर्थिक क्राति की ऐसी नीव डाल दी जिस पर भविष्य मे प्रगतिशील राजस्थान का सुन्दर भवन खडा हो सका ।

सुखाडियाजी का व्यक्तित्व सौम्य, दृढ व्रती, सघर्षजयी, निर्णय-पटु, व्यवहार कुशल, श्रमशील और अनवरत कर्मरत् रहा है । राजस्थान की पूर्व से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक सुखाडियाजी ने सैकडो परिक्रमाए की है । राजस्थान के रेगिस्तान से लेकर अरावली की उपत्यकाओ और खारी के चप्पे चप्पे से उनकी आत्मीयता है । उन्होंने राजस्थान को जितना देखा और समझा है उतना शायद दूसरे किसी व्यक्ति ने राजस्थान को नही समझा ।

राजस्थान के देहातो में आने वाले परिवर्तन के सबध में उन्होने एक स्थान पर अपने सस्मरणो में लिखा था—

'राजस्थान के देहाती इलाको का दौरा करते समय मैंने सदैव इस बात पर गौर किया है कि हमारे किसान कैसे कपडे पहनते हैं, कैसे मकानो मे रहते हैं तथा उनके आसपास का वातावरण कैसा है ? किसानो के जीवन स्तर मे हुए सुधारो का अनुमान लगाने के लिए इससे अधिक विश्वसनीय मापदण्ड दूसरा नही है । मुझे किसानो के रहन-सहन मे किसी प्रकार के परिवर्त्तन का आभास मिलता है तो मेरा मन आल्हादित हो उठता है । मुझे उन दिनो का स्मरण हो आता है जबकि भील क्षेत्रो में प्रजामडल का काम करते समय भील युवक—युवतियो को अर्धनग्न, चिथडो में लिपटा देख कर हमें कितनी मानसिक वेदना होती थी । आज यह देख कर मन में एक प्रकार का सतोष होता है कि चाहे जितनी मात्रा में हुआ हो, ग्रामीणों के जीवन स्तर में कुछ परिवर्तन तो अवश्य हुआ है ।

सुखाडियाजी ने अपने शासनकाल में समाजवाद एव योजना बद्ध विकास के विचारो की अवतारणा की । उन्होने यत्न किया कि आयोजना के प्रति लोकतात्रिक पद्धति से लोगो को अग्रसर किया जाए । उनकी मान्यता थी कि लोकतात्रिक समाजवादी समाज की स्थापना केवल योजनाबद्ध विकास के माध्यम से ही हो सकती है ।

उन्होंने ग्राम्य जीवन को प्रभावित करने वाली पचायतो के माध्यम से गाँवो के पुनर्निर्माण के कार्य को क्रियान्वित करने के लिए 2 अक्टूबर '59 को देश मे सबसे पहले पचायती राज का समारभ किया । कोटा, खेतडी, डीडवाना और उदयपुर जैसे स्थानो के औद्योगिक हलचलो से आलोकित कर दिया । स्थानीय हस्तकला के कारीगरो मे नवोन्मेष जाग्रत किया । उन्होंने प्रगतिशील भूमि सुधारो से देहाती क्षेत्रो मे क्रातिकारी परिवर्त्तन किए । उन्होंने अनेक प्रकार के भूमि सम्बन्धी कानून लागू करके जागीरदारो और बिस्वेदारो जैसे बिचोलियो को समाप्त कर दिया । राजस्थान नहर के निर्माण का प्रारम्भ करके उन्होंने मरुस्थलीय प्रदेश को शस्य श्यामला भूमि मे परिवर्त्तित करने की नींव डाली है ।

उन्होंने राज्य मे भाखडा और चम्बल जैसी महत्वाकाक्षी और बहुद्देशीय योजनाओ से राजस्थान को पर्याप्त मात्रा मे जल और विद्युत उपलब्ध करवाने की व्यवस्था की।

श्री सुखाडिया 13 नवम्बर 1954 को राजस्थान के मुख्यमत्री बने थे और उसी पद मे उन्होने 7 जुलाई 1971 को स्वेच्छा से अपना त्याग पत्र दिया। उन्होने अपनी विदाई के समय आकाशवाणी से राजस्थान की जनता को अपना विदाई सदेश देते हुए कहा कि "मैं एक सामान्य कार्यकर्त्ता के रूप मे सार्वजनिक क्षेत्र मे आया था। आप लोगो के स्नेह और विश्वास के सहारे मे इस क्षेत्र मे आगे बढ़ सका। मैं आज फिर स्वेच्छा से एक सामान्य नागरिक बनकर आपके बीच आ रहा हूँ।

इस लबी अवधि मे मैं सदा राजस्थान के व्यापक हितो को सामने रख कर चला। मेरी हमेशा यही कोशिश रही कि मैं किसी को नुकसान नही पहुँचाऊ। लेकिन जाने अनजाने जो गल्तियाँ हुई हो उन्हे भूलने की कृपा करें।"

श्री सुखाडिया के पद त्याग के अवसर पर राजस्थान के राज्यपाल सरदार हुकुमसिंह ने कहा कि सुखाडियाजी सफलता के शिखर पर चढ कर उसे स्वेच्छा से छोड रहे हैं। सियासत की बुलदी पर होने तथा साथियो का इतना प्रबल विश्वास पाने के बावजूद भी पद त्याग करना सुखाडियाजी की ही महानता है।

विधान सभा के अध्यक्ष श्री निरजननाथ आचार्य ने कहा कि श्री सुखाडिया का उन सौभाग्यशाली राजनेताओ की पक्ति मे पहला स्थान होगा जो सीधे रास्ते से सत्ता मे प्रवेश करते है और उसी से वापस जाते हैं। प्रजातत्र मे राजनेता सत्ता मे प्रविष्ट तो प्रवेश द्वार से करते हैं परन्तु जाते है पीछे के मार्ग से। श्री सुखाडिया का प्रकरण सभवतः सारे देश मे इस मान्यता से अलग है क्योंकि वे सत्ता मे जिस मार्ग से प्रविष्ट हुए थे उसी मार्ग से जा रहे है।

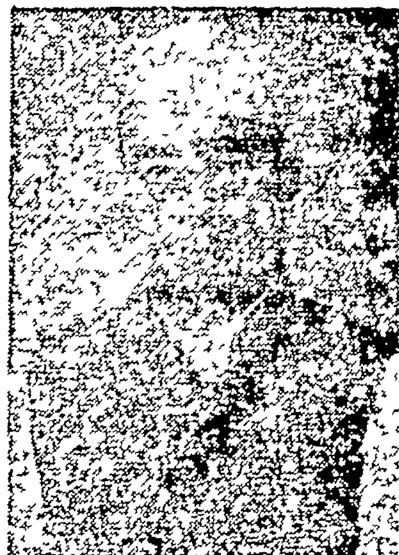
राजस्थान से विदा लेते हुए श्री सुखाडिया ने राजस्थान के लिए इन शब्दो मे अपनी कामना प्रकट की थी—"मै किसी भी स्थिति मे काम करू—राजस्थान का रेगिस्तान हरा भरा हो खेती की उन्नति हो, किसानो की खुशहाली बढे, उद्योगो का विकास हो, लाखो आदिवासी और हरिजनो का आर्थिक—सामाजिक जीवन स्तर जो अब भी काफी गिरा हुआ है—ऊचा उठे और राजस्थान साम्प्रदायिक एकता को अक्षुण्ण रखते हुए निरतर प्रगति की ओर बढे ऐसी कई सुखद आकाक्षाओ को सदा मन मे सजोए रहूँगा।"

उन्होने आगे कहा कि "विकास का प्रवाह समाज के जीवन मे कही रुकना नही चाहिए। इस प्रवाह मे एक मजिल के बाद दूसरी मजिल की ओर अबाध गति से बढना होता है। मुझे विश्वास है कि राजस्थान प्रगति के अभियान मे अग्रसर होता हुआ भारत मे एक गौरवशाली स्थान प्राप्त करेगा।"

श्री मोहनलाल तेजावत.

जन्म · 13 जुलाई, 1918

पता मालदास स्ट्रीट, उदयपुर.



श्री मोहनलाल तेजावत भील नेता स्व० मोतीलाल तेजावत के पुत्र हैं। इनका जन्म 13 जुलाई 1918 को हुआ था। जब ये 2 वर्ष के थे तब इनके पिता ने भीलो का एकी आन्दोलन शुरू कर दिया था अत. इनके पिता से मिलना 1936 मे 18 वर्ष की उम्र मे ही हो सका जब उनके पिता जेल से रिहा हुए। राजनैतिक आन्दोलन के कारण 18 वर्ष तक अपने पिता का सरक्षण प्राप्त नही कर सके अत इनकी समुचित शिक्षा-दीक्षा भी नही हो सकी।

श्री मोहनलाल तेजावत प्रारम्भ मे राजकीय सेवा मे लग गए थे लेकिन प्रजामडल की प्रवृत्तियो मे लगे रहने के कारण उन्हे राजकीय सेवा मे अलग कर दिया गया। 1942 के भारत छोडो आन्दोलन मे मोहनलाल तेजावत 22 अगस्त '42 को गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हे छ महीने की सजा हुई।

जेल से मुक्त होने के बाद उन्होंने राजस्थान चर्खा सघ मे रह कर उदयपुर के खादी भण्डार की व्यवस्था का कार्य सभाला। उन्होने तीन वर्ष डूगरपुर सेवा सघ द्वारा सचालित आदिवासी छात्रावास के गृहपति का भी कार्य किया। 1955 से उन्होंने नवनिर्माण सघ मे ग्रामोद्योग का कार्य अपने हाथ मे लिया तथा उदयपुर मे खादी विक्रय और खादी प्रचार का कार्य करते रहे। श्री मोहनलाल तेजावत आजकल उदयपुर खादी भडार के व्यवस्थापक हैं।

श्री रंगलाल मारवाड़ी

जन्म · 3 अप्रेल 1893
पता 74, भूपालपुरा, उदयपुर



श्री रगलाल मारवाडी की आयु इस समय 80 वर्ष की है। इन्होने अपना राजनैतिक जीवन 23 वर्ष की उम्र से शुरू कर दिया था। वे व्यापार करने बवई गए थे लेकिन वहाँ 1916 मे होम रुल लीग के सदस्य बन गए और लोकमान्य बाल गगाधर तिलक के नेतृत्व मे बम्बई मे काम करने लग गए। उसके बाद रोलेट एक्ट विरोध, असहयोग आन्दोलन और विदेशी वस्त्रो के बहिष्कार आन्दोलन मे काम करते रहे।

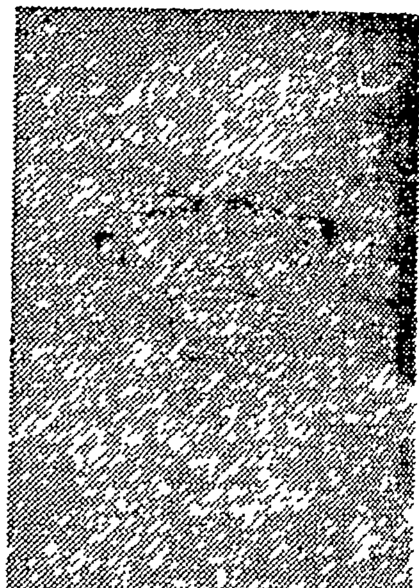
1930 मे उन्होने नमक सत्याग्रह मे सगठन का कार्य किया। 1932 मे बवई बार कोसिल के जनरल सेक्रेटरी की हैसियत से वे गिरफ्तार कर लिए और बम्बई सैंट्रल जेल मे 7 महीने तक रहे। भारत छोडो आँदोलन के क्रम मे 2 अक्टूबर को उदयपुर मे गाँधी जयती का समारम्भ करते ही गिरफ्तार कर लिए गए। वे आठ महीने तक उदयपुर सैण्ट्रल जेल मे नजरबद रहे।

प्रजामण्डल के गैर कानूनी घोषित होने पर बम्बई मे जिस मेवाड प्रजामण्डल की स्थापना की गई उसके रगलाल जी सस्थापक सदस्य थे। बम्बई मे रहकर राजपूताने की सभी देशी रियासतो के आन्दोलन को किसी न किसी प्रकार से वे सहयोग देते ही रहते थे।

उदयपुर मे श्री रगलाल मारवाडी ने राजनैतिक प्रवृत्तियो के अतिरिक्त सामाजिक क्षेत्र मे भी कार्य किया। श्री वर्माजी द्वारा कालवेलिया सघ की स्थापना के अवसर पर वे सघ के मन्त्री मनोनीत किए गए। वर्माजी द्वारा शुरू किए गये आदिवासी सेवा कार्य मे वे उनके सच्चे सहयोगी रहे है।

उदयपुर मे आदिवासियो के लिए बसाई गई कालवेलिया बस्ती, एकलव्य कॉलोनी, सबरी कॉलोनी और जवाहर नगर आदि के विकास मे श्री रगलाल मारवाडी ने बहुत परिश्रम किया है।

श्री रोशनलाल बोर्दिया.



जन्म सन् 1903.

पता · बोर्दियो की सेहरी, उदयपुर.

श्री रोशनलाल बोर्दिया की उम्र इन दिनो सत्तर वर्ष की है। वे जाति से जैन हैं। उदयपुर मे सूखे मेवे का व्यापार करते आए हैं। सार्वजनिक जीवन मे उनका प्रवेश 1932 मे उस समय हुआ जबकि उदयपुर के तत्कालीन शासन ने राजस्व सम्बन्धी नए कर लगाए थे और सारा उदयपुर उसके विरोध में उठ खडा हुआ था। उस समय 10 हजार लोगो का एक विशाल जुलूस महाराजा को ज्ञापन भेंट करने गया था लेकिन राजमहल की सीमा में जनता पर भयकर लाठीचार्ज किया गया। श्री बोर्दिया उस प्रदर्शन के सयोजको में से एक थे। उस अवसर पर श्री बोर्दिया सहित 64 व्यक्ति गिरफ्तार किए गए। और उन्हें पुलिस कोटडी मे नजरबद रखा गया।

मेवाड़ प्रजामण्डल की स्थापना के बाद 1938 मे नाथद्वारा में जो आंदोलन हुआ उसमे श्री बोर्दिया को 8 दिवस पुलिस की कस्टेडी मे रखा गया वे 1939 से 1954 तक प्रजामडल व कांग्रेस के कोषाध्यक्ष रहे।

भारत छोडो आदोलन मे श्री बोर्दिया को भी गिरफ्तार कर लिया गया उन्हे 1 वर्ष के लिए उदयपुर और इसवाल की जेल मे नजरबद रखा गया। इस 1 वर्ष की नजरबदी से उनका सूखे मेवे का स्टॉक बरबाद हो गया और उन्हें हजारो रुपए का नुकसान हुआ।

1948 मे अप्रेल की 5 तारीख को जब पुलिस की गोली से शाति और आनदी शहीद हो गए उस समय एक गोली श्री बोर्दिया के पांव के लगी जिसका निशान उनके पांव पर है।

श्री बोर्दिया उदयपुर की सभी प्रमुख लोकसेवी सस्थाओ के साथ सक्रिय सहयोग करते रहे हैं। महिला मडल, विद्यापीठ, कस्तूरबा मातृ मदिर, हरिजन सेवक संघ और आदिवासी सघ मे वे काम करते रहे हैं। आजकल वृद्धावस्था के कारण विश्राम करते है।

श्रीमती शान्ता त्रिवेदी.



जन्म : सन् 1927
पता . 93 भूपालपुरा, उदयपुर.

श्रीमती शांता त्रिवेदी राजस्थान मे महिला जागरण की दिशा मे कार्य करने वाली अग्रगण्य महिला हैं। उसका जन्म नागपुर (महाराष्ट्र) मे हुआ और उसकी प्रारभिक शिक्षा नागपुर मे ही हुई। उनका विवाह उदयपुर के प्रसिद्ध समाजसेवी श्री परसराम त्रिवेदी के साथ 1941 मे हुआ। विवाह के तत्काल वाद श्रीमती शांता त्रिवेदी सार्वजनिक जीवन और राजनैतिक प्रवृत्तियो मे सलग्न हो गई। उन्होने प्रजामण्डल के आन्दोलनो मे स्वय सेविका के रूप मे भाग लिया और विद्यार्थियो मे राष्ट्रीय चेतना का सचार किया। वह वर्षों तक विद्यार्थी कांग्रेस के जिम्मेवार पदो को सभाल कर कार्य करती रही।

उदयपुर मे सामतवाद के विरुद्ध छिडे अन्तिम सघर्ष मे 4 अप्रैल '48 को श्रीमती शान्ता त्रिवेदी चार लॉरियो मे बैठी हुई महिलाओ का नेतृत्व करते हुए जव रग निवास पहुँची तो सामत वादियो की ओर उन पर भयकर हमला किया गया। श्रीमती शांता त्रिवेदी उस सामती आक्रमण मे बुरी तरह घायल हो गई और उन्हे करीब दो महीने तक अस्पताल मे रह कर इलाज कराना पडा।

देश की स्वाधीनता के वाद श्रीमती शान्ता त्रिवेदी ने शरणार्थियो के पुनर्वास और शरणार्थी महिलाओ के लिए गृह उद्योगो द्वारा आर्थिक सहयोग दिलवाने का वहुत महत्त्वपूर्ण कार्य किया। श्रीमती शान्ता त्रिवेदी रिहेबिलेटेशन वोर्ड की सदस्या मनोनीत की गई।

श्रीमती शान्ता त्रिदेदी ने हरिजन और अनुसूचित जाति की महिलाओ मे भी जागरण की एक नई लहर पैदा कर दी थी। उन्होने जगदीश मदिर मे हरिजन प्रवेश के अभियान मे हरिजन महिलाओ का नेतृत्व किया।

श्रीमती शाँता त्रिवेदी ने साँप्रदायिक दगो के समय अत्यन्त साहस और निर्भीकता से कार्य किया था। उनने शाँति कमेटियो का गठन करके तथा स्वय सेविका दलो का नियोजन किया। अल्पसख्यक लोगो के मोहल्लो तथा घर-घर मे जाकर उनकी सुरक्षा की व्यवस्था मे योग दिया।

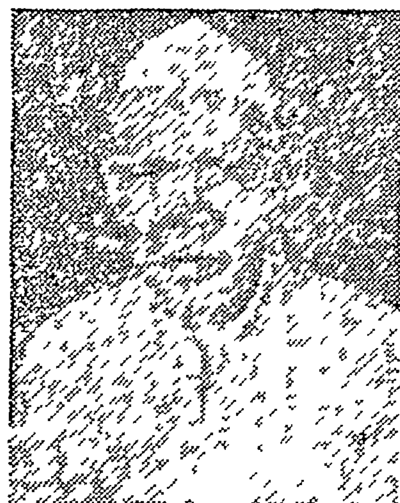
महिलाओ के सर्वांगीण विकास एव उत्थान के लिए सितम्बर 1947 मे श्रीमती शाँता त्रिवेदी ने उदयपुर मे राजस्थान महिला परिषद की स्थापना की। इस सस्था ने महिलाओ के उत्थान, विकास और कल्याण के लिए विभिन्न प्रवृत्तिएँ प्रारम्भ की और पिछडी हुई तथा आर्थिक रूप से विपन्न महिलाओ को स्वावलम्बी वनाने मे बहुत वडा योग दिया।

श्रीमती शान्ता त्रिवेदी उदयपुर नगर परिषद तथा उदयपुर नगर निगम की वर्षो तक निर्वाचित सदस्या रही हैं। वह राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के वोर्ड ऑफ कन्ट्रोल की भी वर्षों तक सदस्या रही हैं।

देश की स्वाधीनता के वाद सन् 1951 से 64 तक श्रीमती शान्ता त्रिवेदी समाजवादी आन्दोलन मे अग्रणी महिला के रूप मे कार्य करती रही परन्तु सन् '64 मे लोकताँत्रिक समाजवादी शक्तियो के एकीकरण के लिए प० नेहरू और अशोक मेहता के आव्हान पर वह पुन. काँग्रेस मे सम्मिलित हो गई। श्रीमती शान्ता त्रिवेदी इन दिनो उदयपुर जिला काँग्रेस की महिला विभाग की इचार्ज हैं।



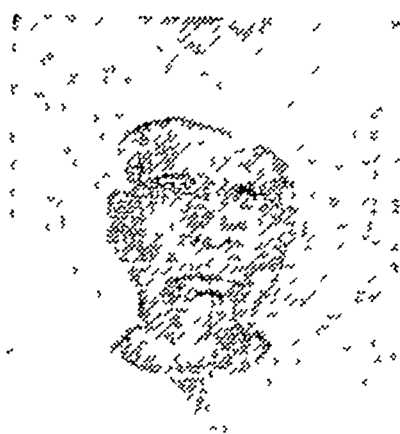
जोशी अम्बालाल केलवा



श्री जोशी अम्बालाल केलवा उदयपुर के पारीक ब्राह्मण हैं। विद्यार्थीकाल मे ही प्रजामडल के आन्दोलन मे सम्मिलित हो गए। 1938 के आन्दोलन मे उन्हे राजद्रोह के अपराध मे 1 वर्ष की सख्त सजा दी गई। उनका गाँव केलवा एक जागीरी गाँव था और जागीरदारी से उन्हे वर्षों तक सघर्ष करते रहना पडा। जागीरदार ने उनकी जमीन जब्त करली और उन्हे मार डालने के लिए कई षडयत्र किए गए। जागीरदार के साथ उनके मुकदमे कई वर्षो तक चलते रहे।

भारत छोडो आन्दोलन मे जोशी अम्बालाल को 7 महिने के लिए उदयपुर सेण्ट्रल जेल मे नजरवन्द रखा गया। लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण के बाद जोशी अम्बालाल 13 वर्ष तक न्यायपचायत के अध्यक्ष रहे हैं।

श्री विचित्र कवि अरोड़ा

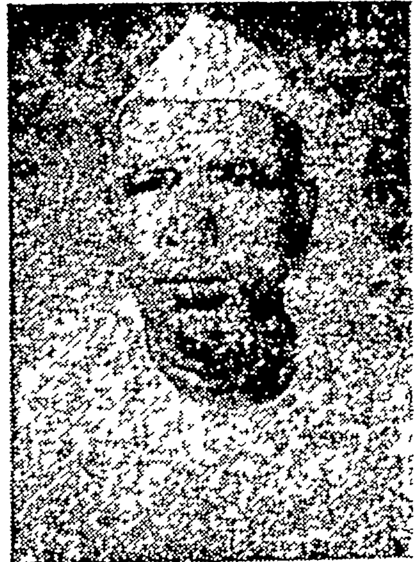


श्री विचित्र कवि का पूरा नाम ईश्वरलाल अरोडा विचित्र कवि है। वे मूल रूप से कांकरोली के रहने वाले हैं। लेकिन 1936 मे काकरोली से नाथद्वारा चले गए। उनकी शिक्षा तो सामान्य ही हुई है लेकिन, उनमे जन्म जात काव्य प्रतिभा है।

1938 मे जब प्रजामडल का आन्दोलन शुरु हुआ तो विचित्र कवि प्रोफेसर नारायणदास अरोडा और रघुनाथ पालीवाल की प्रेरणा से उसमे शामिल हो गए। उन्हें 3 महीने की सख्त सजा देकर कुम्भलगढ भेज दिया गया। लेकिन सजा समाप्त होने पर उन्हे 4½ महीने के लिए फिर गिरई जेल मे बदल दिया गया। विचित्र कवि कुल 7½ महीने तक जेल मे रहे।

जेल मे मुक्त होने के बाद विचित्र कवि हरिजन सेवा और अन्य रचनात्मक कामो के लग गए। आजकल नाथद्वारे मे उनकी मिठाई की दुकान है।

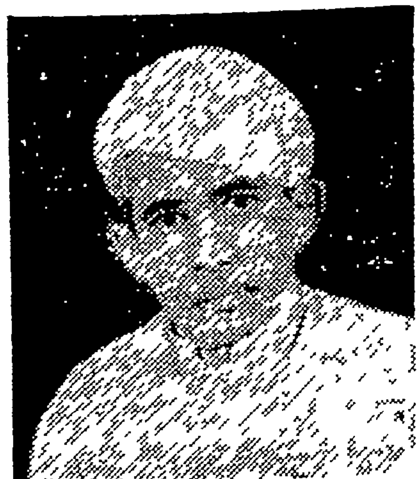
पं० श्री उदय जैन



श्री उदय जैन मूल रूप से एक राष्ट्रीय शिक्षक और समाज सुधारक हैं। उन्होने 1952 मे कानोड मे जवाहर विद्यापीठ नाम की शिक्षा सस्था की स्थापना की थी जो राजस्थान के दक्षिणी-पूर्वी आदिवासी क्षेत्र की प्रगतिशील शिक्षण सस्था है। 1940 मे श्री उदय जैन ने कानोड मे मेवाड प्रजामडल की शाखा स्थापित की थी उसी दिन से उनका कानोड के जागीरदारो से सघर्ष शुरू हो गया। ठिकाने ने उन पर कई फौजदारी मुकदमे लगा लगा कर उन्हे हैरान किया है।

भारत छोडो आन्दोलन मे श्री उदय जैन 6 महीने के लिए उदयपुर सेण्ट्रल जेल मे नजरवन्द रहे। वे 1940 तक इस क्षेत्र मे कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर रहे। श्री उदय जैन का जन्म 19 जुलाई को कानोड मे हुआ। उनकी शिक्षा गोदावत जैन गुरुकुल, छोटी सादड़ी मे हुई।

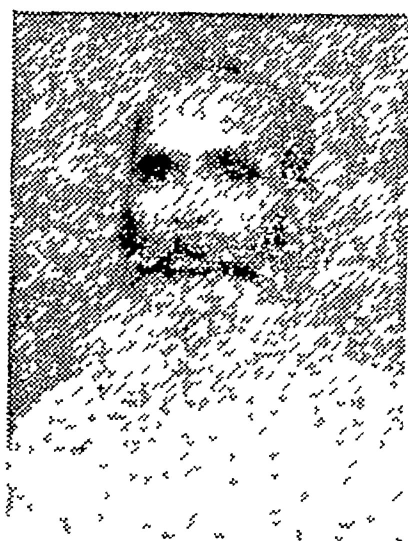
श्री चिमनलाल बोर्दिया



श्री चिमनलाल वोर्दिया एक निष्ठावान राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता और मूक सेवक है। वे समाज के पिछडे लोगो की सेवा मे जी जान से जुटे हुए हैं। श्री चिमनलाल वोर्दिया भारत छोडो आन्दोलन मे 23 अगस्त '42 को गिरफ्तार किए गए थे और 7 महीना 27 दिन तक वे नजरवद रखे गए।

श्री वोर्दिया 1930 मे नमक सत्याग्रह के समय गोधरा मे सत्याग्रह करते गिरफ्तार हुए और 24 दिन जेल मे रहे। 1932 मे वे प्रयागराज मे विदेशी वस्त्रो का वहिष्कार करते हुए गिरफ्तार हुए और 17 दिन नैनी जेल मे विताए। उन्होंने 1932 मे उदयपुर के व्यापारियो के विशाल सामूहिक प्रदर्शन मे भी भाग लिया था। श्री चिमनलाल वोर्दिया हरिजनों और आदिवासियो के उद्धार के लिए निरतर कार्य करते रहे हैं। मजदूरो को शोषण से वचाने के लिए सहकारी समितियो का गठन किया।

श्री जगन्नाथ टोडावत

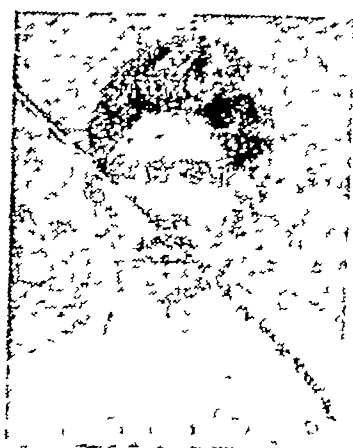


श्री जगन्नाथ टोडावत का जन्म उदयपुर के सूर्यवशी कुयरात तम्बोली समाज के मध्यवर्गीय परिवार मे हुआ था। उनके पिता का नाम जालमचदजी हैं। वे मेवाड महाराणा के यहाँ राज्य सेवा मे थे लेकिन, जगन्नाथ टोडावत के राजनीति मे आ जाने के कारण उन्हें राज्य सेवा से अलग कर दिया गया।

भारत छोडो आन्दोलन के पहले जगन्नाथ टोडावत की मीनाकारी की दुकान थी जहाँ से वह तिरगे झडे, झडियें और सफेद टोपियें लोगो मे बाँटा करते थे। उन्होने 1938 मे खद्दर पहनना शुरू कर दिया था। भारत छोडो आन्दोलन मे मेवाड डिफेन्स रुलस के अतर्गत 6 महीने के लिए उन्हे सेण्ट्रल जेल मे नजरबद कर दिया गया।

जेल जाने के कारण उनकी मीनाकारी की दुकान बद हो गई। उदयपुर के जगदीश चौक मे जे जे. एण्ड सन्स के नाम से उनकी पान की दुकान पिछले 15 वर्ष से चल रही है।

स्वर्गीय श्रीनारायण, कांकरोली



स्वर्गीय श्रीनारायण का जन्म काकरोली के एक समृद्ध सनाढ्य परिवार मे सवत् 1964 की ज्येष्ठ कृष्णा 1 को हुआ। प्रारम्भ मे वे मथुराधीश के मदिर मे भेटिया के पद पर कार्य करते थे। 1929 के अत मे वे भेंट उगाहने के लिए गुजरात गए थे। वहाँ नमक सत्याग्रह मे तीन बार गिरफ्तार किए गए।

1938 मे वे काकरोली आए और प्रजामडल के आन्दोलन मे कूद पडे। उन्होने मेवाड के गाँवो और कस्बो मे घूम-घूम कर प्रजामडल का सदेश दूर दूर तक फैलाया। सादडी मे आपत्तिजनक भाषण देने के अपराध मे आपको गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया। उन्हें उदयपुर जेल से गडरी जेल मे स्थानातरित कर दिया गया। जेल की यातनाओ से उनका मस्तिष्क विक्षिप्त हो गया। उनका निधन ई० 1942 के मई मास मे काँकरोली मे हो गया।

श्री पन्नालाल पीयूष



श्री पन्नालाल पीयूप का जन्म सलूम्बर मे 9 जनवरी 1912 को हुग्रा। इन्हे वचपन से ही सगीत की ग्रोर रुचि थी। इन्होने प्रारम्भ मे कई नाटक कपनियो मे कार्य किया। श्री पीयूष ने लवे समय तक मेवाड राज्य प्रजामंडल के प्रचार का कार्य किया। शहर मे भारत छोडो ग्रान्दोलन के ममय प्रजामडल की जन-सभाग्रो मे कविता पाठ करते हुए भारत सुरक्षा कानून के ग्रतर्गत ग्रनिश्चित काल के लिए नजरवद कर दिए गए। उन्होंने ग्रजमेर राज्य मे ग्रपने गीतो, भजनो ग्रौर प्रचार कार्यो से समाज सुवार, ग्रस्पृश्यता निवारण मादक वस्तु निषेव, विकास ग्रौर निर्माण के लिए लोकमत जागृत किया। 1957 मे पंजाव मे हिन्दी सत्याग्रह मे उन्हें 1 वर्ष की सजा हुई। वे ग्राजकल ग्रार्य भजनोपदेशक का कार्य करते हैं।

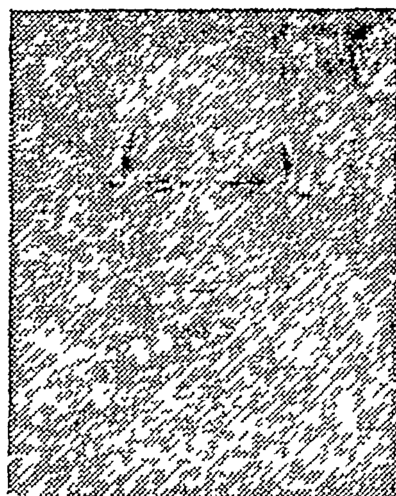
श्री परसराम त्रिवेदी



मेवाड में उत्तरदायी शासन के लिए लडे ग्रतिम ग्रान्दोलन में 5 ग्रप्रेल 1948 को घटाघर के नीचे गोलीकाण्ड के समय पुलिस की पहली गोली परसराम त्रिवेदी के पाँव में लगी। गोली लगने के पहिले लाठी चार्ज में उनके वाँयें हाथ की कलाई टूट गई थी। उस समय परसराम त्रिवेदी प्रजामडल के मत्री के नाते ग्रान्दोलन का नेतृत्व कर रहे थे।

देश की स्वाधीनता के वाद वे समाजवादी दल में शामिल हो गए ग्रौर सभी समाजवादी ग्रान्दोलनो मे भाग लेते रहे। उन्होंने मेवाड में भारत सेवक समाज का कार्य भी वहुत लगन ग्रौर तत्परता से किया। श्री त्रिवेदी का जन्म सवत् 1975 की चैत्र शुक्ला 14 को उदयपुर के एक श्रीमाली परिवार मे हुग्रा। उनका पता है 93, भूपालपुरा, उदयपुर।

पेंटर राव घनश्याम सलूम्बर



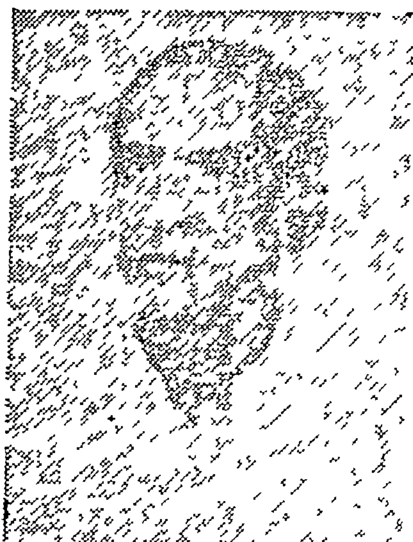
पेंटर राव घनश्याम का जन्म, सवत् 1969 की भाद्रपद कृष्णा 9 को हुआ। इनके पिता का नाम श्रीलालजी है। श्री घनश्याम कलाकार और कवि हैं। उन्होंने अपनी कविताओ, गीतो और लोक गीतो से मेवाड के दक्षिणी भाग मे वेगार विरोधी और जागीरी विरोधी वातावरण वनाने मे महत्त्वपूर्ण कार्य किया था।

पेंटर राव घनश्याम ने मगरे और ठिकाने सलूम्बर मे वेगार प्रथा को समाप्त करने के लिए आन्दोलन चलाया। उन्होने मेवाड सरकार की सूअर पालन की नीति के विरुद्ध भी आन्दोलन सगठित किया और किसानो को राहत दिलवाई।

पेंटर राव 1942 के भारत छोडो आन्दोलन का गाँवो मे प्रचार करते हुए गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हे उदयपुर सेण्ट्रल जेल मे नजरवद रखा गया।

पेंटर राव घनश्याम प्रजामडल की स्थापना के समय से आज तक प्रजामडल और कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्त्ता रहे हैं।

श्री पुरुषोत्तम हिटलर



श्री पुरुषोत्तम हिटलर का जन्म नाथद्वारा मे, श्री नारायणजी वृजवासी जाट के घर 10 जनवरी 1910 को हुआ। उन्होने मोटर चलाना सीखकर प्रारम्भ मे मोटर ड्राईवरी का लाइसेंस ले लिया था। 1930 के नमक सत्याग्रह के समय से ही उनमे राष्ट्रीय भावनाए जग गई थी। ये लोगो मे राष्ट्रीयता का प्रचार करने लग गए थे।

1938 मे प्रजामडल का आन्दोलन छिडने पर श्री पुरुषोत्तम हिटलर ने उसमे सक्रिय रूप से भाग लिया। वे भारत छोडो आन्दोलन मे 1942 मे गिरफ्तार कर लिए गए और 1 वर्ष तक ईसवाल जेल मे नजरवन्द रहे। उन्होंने कई वर्षों तक नाथद्वारा स्थित श्रीनाथजी की विशाल गोशाला के सचालक का कार्य किया था। उन्होंने 1942 मे, हिटलरी रसिया वनाया था जो आज भी ईसवाल जेल की दीवारो पर पाषाण लेखनी से लिखा हुआ है। वे आजकल उदयपुर मे रहते है।

श्रीमती भगवतीदेवी विश्नोई



श्रीमती भगवती विश्नोई प्रसिद्ध रचनात्मक कार्यकर्त्ता श्री प्यारचद विश्नोई की धर्मपत्नी हैं। इन्होने 1933-34 मे अजमेरी नरेली आश्रम मे रह कर हरिजन जातियो मे समाज-सुधार और शिक्षा प्रसार का कार्य किया था। ग्राम सेवा मडल की ओर से हट्टूडी, वनस्थली और वर्धा आश्रम मे प्रशिक्षण प्राप्त किया था।

1938 मे प्रजामण्डल के आन्दोलन मे वे एक बार भीलवाडा मे गिरफ्तार हुई और 10 दिन वाद छोड दी गईं। दूसरी वार उदयपुर की कोतवाली मे 8-10 दिन हिरासत मे रखने के वाद ट्रेन मे विठाकर अजमेर की सीमा मे छोड दी गई। 1942 के भारत छोडो आन्दोलन मे श्रीमती भगवतीदेवी 4 महीने के लिए उदयपुर सेण्ट्रल जेल मे नजरवन्द रही।

आज भी श्रीमती भगवतीदेवी महिलाओ मे शिक्षा प्रसार और समाज-सुधार का कार्य कर रही हैं।

श्री भैरवलाल वर्मा, ऋषभदेव.

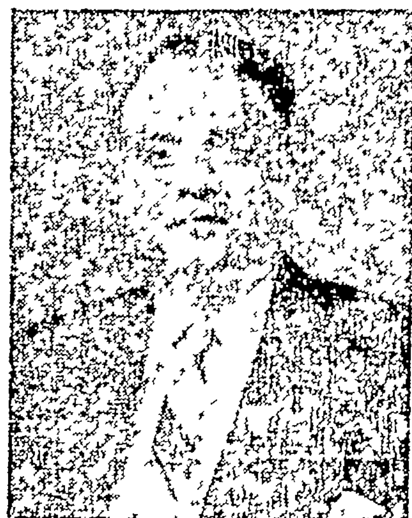


श्री भैरवलाल वर्मा उदयपुर जिले के मोही ग्राम के रहने वाले हैं। 1933-34 मे ये हरिजन सेवा का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए नारेली आश्रम मे भर्ती हुए थे। सन् '35 मे श्री माणिक्यलाल वर्मा के साथ भैरवलाल डूंगरपुर आदिवासी क्षेत्रो मे काम करने चले गए।

1938 मे मेवाड प्रजामडल का आन्दोलन शुरू होते ही वे सत्याग्रह करने उदयपुर आ गए। उन्हे 6 महीने की सजा हुई। भारत छोडो आन्दोलन के सिलसिले मे श्री भैरवलाल वर्मा ने डूंगरपुर मे काम लेकिन, वहाँ गिरफ्तारियें नही हुई लेकिन शिक्षा सवधी प्रवृत्तियो पर प्रतिबध लगा दिए।

1944 में वर्माजी ने ऋषभदेव में वनवासी सेवा सघ वना कर भैरवलाल शर्मा को सारा काम सौंप दिया और तव से वे आदिवासियो के शैक्षणिक आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए कार्य कर रहे हैं। भैरवलाल वर्मा ने वेगार वद करने के आन्दोलन में भी भाग लिया और कई दिन तक हवालात में रहे।

श्री हीरालाल कोठारी



श्री हीरालाल कोठारी का जन्म 18 अक्टूबर 1917 को उदयपुर के एक सम्पन्न ओसवाल परिवार मे हुआ था। उनके पिताजी का बचपन मे ही निधन हो गया था। 1935 से 42 तक श्री कोठारी इन्श्योरेन्स का कार्य करते थे। बंबई मे जब मेवाड प्रजामडल की स्थापना की गई तब श्री हीरालाल कोठारी प्रजामडल के एक उत्साही कार्यकर्त्ता थे।

भारत छोडो आन्दोलन के समय वे श्री माणिक्यलाल वर्मा के निमत्रण पर रगलाल मारवाडी के साथ उदयपुर गए और 2 अक्टूबर '42 को गांधी जयन्ती का समारोह मनाने के अपराध मे उन्हे 6 महीने के लिए नजरवद कर दिया गया। श्री कोठारी एक कुशल अर्थशास्त्री हैं। बैंको की सेवा मे वे कई बार इगलैड, अमरीका और योरुप के अन्य देशो की यात्राए कर चुके हैं इस समय वे स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर की जयपुर शाखा मे एक प्रमुख अधिकारी है।

श्रीमती गंगाबाई (कजोड़देवी)



श्रीमती गगाबाई (कजोडदेवी) नाथद्वारा के राष्ट्रसेवी श्री द्वारकादास पुरोहित की धर्मपत्नी हैं। इन्होंने भी प्रजामडल के आन्दोलन मे उत्साह से भाग लिया था। महिला वर्ग मे यह पहली महिला थी जो अपने परिवार की सीमाओ को लाघकर सार्वजनिक क्षेत्र मे काम करने आगे आई थी। जब नाथद्वारा मे सात दिन की हडताल हुई थी तब पुलिस इन्हे पकड कर ले गई थी। पुलिस ने उन्हे बहुत यातनाए दी। इन्हे कई दिन तक पुलिस की हिरासत मे रखा गया था। नगर की हडताल टूटने के बाद इन्हे रिहा किया गया। श्रीमती गगाबाई (कजोडदेवी) के साहसिक कार्यो को अभी तक आदर से याद किया जाता है।

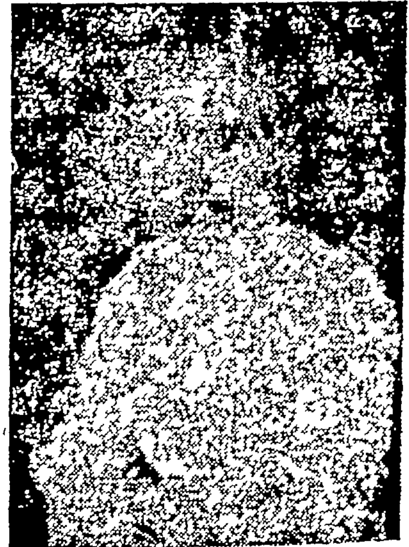


श्री गणेशसिंह राजपूत

श्री गणेशसिंह राजपूत श्री मोडसिंह के पुत्र हैं। उनकी शिक्षा सामान्य ही हुई है। वे प्रजामडल के आन्दोलनो व राष्ट्रीय प्रवृत्तियो मे बराबर भाग लेते रहे हैं।

भारत छोडो आन्दोलन मे सत्याग्रह करते समय उन्हे भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत 6 महीने के लिए उदयपुर सेण्ट्रल जेल मे नजरबद रखा गया था। राष्ट्रीय प्रवृत्तियो मे भाग लेने के कारण उन्हे पहले चौकीदारी की नौकरी से हटा दिया गया था। आज कल भी वे प्राइवेट फर्म में नौकरी करते हैं।

स्व० पं० गोवर्धन, मुनगढ़.



स्वर्गीय कथावाचक श्री गोवर्धन पडित का स्वर्गवास 62 वर्ष की आयु में हो गया। वे प्रजामडल के उत्साही कार्यकर्त्ता थे। 1938 के प्रजामडल के आन्दोलन मे वे पुलिस की मार से घायल हो गए थे। राजसमद के न्यायालय से उन्हे 1938 में 6 महीने की सजा दी गई थी। उनके परिवार मे उनकी विधवा पत्नि है।



श्री जमनालाल खंडेलवाल

श्री जमनालाल खडेलवाल का जन्म नाथद्वारा में श्री मिट्ठूलालजी के यहाँ 1920 में हुआ था। प्रजामडल के 1938 के आन्दोलन मे वे लाठीचार्ज के समय बुरी तरह पीटे गए थे। उस आन्दोलन मे राजसमद कोर्ट से उन्हे जेल की सजा हुई थी। वे आजकल नाथद्वारा में व्यापार करते हैं। परन्तु देश-सेवा के हर काम में उसी उत्साह मे भाग लेते है।

श्री वीरभद्र जोशी. एम. ए., बी. एड.



श्री वीरभद्र जोशी मूलत एक शिक्षक हैं, उन्होने एम ए की परीक्षा देने के बाद बी एड का डिप्लोमा ले लिया था। वे उदयपुर जिले के ग्राम कानोड के निवासी हैं। कानोड में पढते समय ही उनका समाचार पत्रो की ओर आकर्षण बढ गया था और देश में घटने वाली घटनाओ से वे परिचित होने लग गए थे।

मेवाड राज्य प्रजामडल पर से जब प्रतिबध हट गया तब वे उदयपुर में प्रजामडल का कार्य करने लग गए थे। विद्यापीठ उदयपुर में उन्होने उन दिनो हिन्दी साहित्य का अध्ययन किया था। 1942 में वे झाडोल (भोमट) चले गए थे और वहाँ उन्होंने एक प्राईवेट स्कूल मे काम शुरू कर दिया। लेकिन, भारत छोडो आन्दोलन के सदर्भ मे प्रजामडल ने महाराणा उदयपुर को अल्टीमेटम दिया उस समय वे स्कूल छोडकर उदयपुर सत्याग्रह करने के लिए चले गए। उन्होने उदयपुर के हाईकोर्ट पर 2 सितम्बर 1942 को तिरगा झडा फहराया। उन्हे भारत सुरक्षा कानून के अतर्गत गिरफ्तार करके उदयपुर की सेंट्रल जेल में 2 वर्ष तक नजरबद रखा गया।

जेल से रिहाई के बाद उन्होने रात्रि पाठशालाओ के द्वारा प्रौढ शिक्षा और साक्षरता का प्रसार कार्य कई दिन तक किया। फिर वे चित्तौड चले गए और चित्तौड जिला प्रजामडल के मत्री के रूप मे कार्य किया। उन्होने मेवाड प्रजामडल समाजवादी दल की स्थापना की। इस अवधि में उन्होने कई स्थानो पर किसान सम्मेलनो का आयोजन किया।

देश की स्वाधीनता के बाद वीरभद्र जोशी समाजवादी पार्टी में शामिल हो गए। कई दिन तक साप्ताहिक क्रांति का सपादन किया। कई दिन तक डूगरपुर सेवासघ के स्कूलो मे भी कार्य किया।

1951 में राजकीय सेवा में प्रवेश ले लिया। कई दिनो तक श्री वीरभद्र जोशी राजकीय पाठशालाओ में शिक्षक रहे। आजकल भींडर पत्रायत समिति में शिक्षा प्रसार अधिकारी हैं।

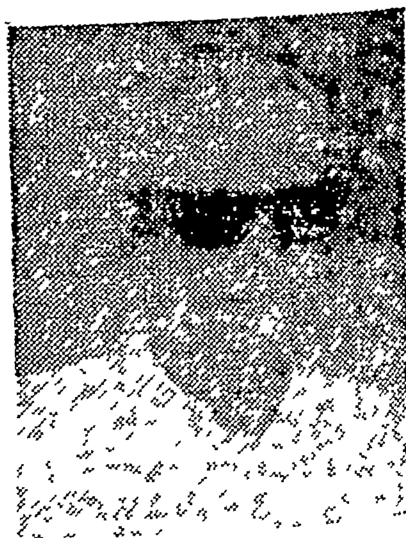
श्री मानूराम उर्फ मनरुप रैंगर



श्री मानूराम उर्फ मनरूप रैगर प्रजा मडल और कांग्रेस के एक पुराने कार्यकर्त्ता हैं। नमक सत्याग्रह के वाद मे इन्होने स्वदेशी का व्रत लेकर खादी पहनना शुरु कर दिया था और गाँधीजी का सदेश गाँव-गाँव मे फैलाने लग गए थे।

1938 मे प्रजामडल का आन्दोलन छिडने पर मनरुप जी ने भाग लिया और उन्हे 4½ महीने तक नजरवद रखा गया। वे आज भी अपने क्षेत्र में लोक-सेवा के काम मे लगे हुए हैं। खेती और मजदूरी उनकी जीविका का साधन है।

श्री श्यामलाल वर्मा, कांकरोली.

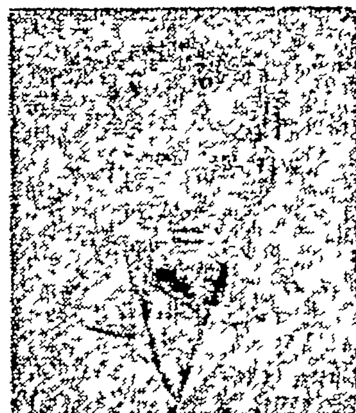


श्री श्यामलाल वर्मा का जन्म अगस्त 1914 को नाथद्वारा मे हुआ। वे जाति से गोरवा क्षत्रिय हैं। उन्होने राष्ट्रभाषा कोविद और मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की है।

1938 मे जव मेवाड प्रजामडल का आन्दोलन शुरू हुआ तव श्यामलाल वर्मा नाथद्वारा ठिकाने के मोटर गैरेज में कार्य करते थे। वहाँ से नौकरी छोडकर वे आन्दोलन में शरीक हुए। उन्हे 3 माह की सजा देकर कु भलगढ भेज दिया गया। वही सजा फिर वढा कर छ माह की कर दी गई। कु भलगढ से उन्हे गिराही जेल में स्थानातरित किया गया और दूसरे मुकदमे में उनकी सजा 9 माह की कर दी गई।

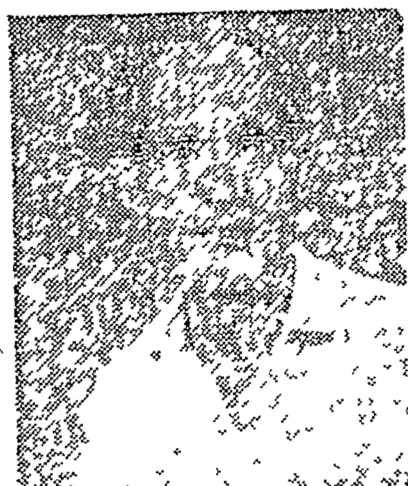
श्री श्यामलाल वर्मा 1948 मे जनता द्वारा सचालित मिडिल स्कूल में अध्यापक हो गए। 1951 में उस स्कूल को सरकार ने अपने अधिकार मे ले लिया। 3 वर्ष पहले वह राजकीय सेवा से मुक्त हो चुके है।

श्री नवनीत चौधरी



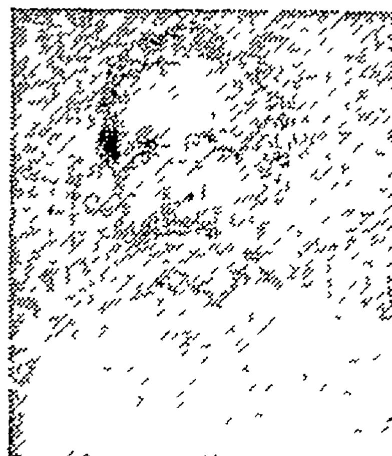
श्री नवनीत चौधरी की उम्र इस समय पचास वर्ष की है । ये श्री बिरदीचन्द जाट के पुत्र हैं । श्री नवनीत चौधरी ने भारत छोडो आन्दोलन मे 1942 मे भाग लिया था और भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत ये नजरबद कर लिए गए थे । श्री नवनीत चौधरी एक कुशल मैकेनिक और कुशल मोटर ड्राइवर हैं आजकल मोटर ड्राइवरी का ही काम करते हैं । इनका पता है—गुजौल मे उदेशा का छापर, नाथद्वारा ।

श्री नरोत्तम जाट (चौधरी)



श्री नरोत्तम चौधरी श्री नारायण लाल (चौधरी) के पुत्र हैं । 1938 मे प्रजामडल के आन्दोलन मे ये स्वय सेवक थे । भारत छोडो आन्दोलन मे इन्होंने नाथद्वारा से चलकर उदयपुर के गुलाब बाग स्थित विक्टोरिया का मुह तारकोल मे पोतक काला कर दिया था । पुलिस से बचने के लिए दो वर्ष तक फरार रहे । इन्हे 4 दिन हिरासत मे भी रहना पडा था । इनका पता है—नई हवेली (जाट पायसा) नाथद्वारा ।

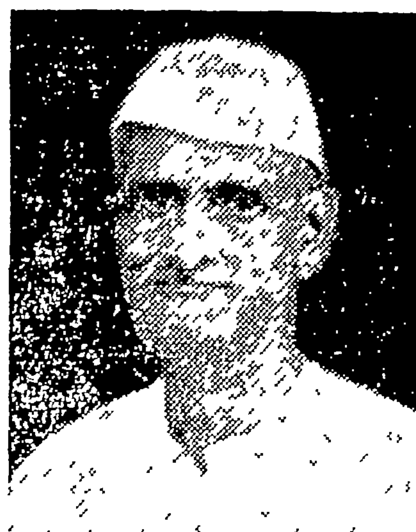
श्री नाथूलाल वैरागी



श्री नाथूलाल वैरागी की उम्र इस समय 63 वर्ष की है । प्रजामडल की स्थापना के समय इन्होने बडे उत्साह से काम किया था । 1938 के प्रजामडल के आन्दोलन में राजसमद कोर्ट से सजा हो गई और ये उदयपुर सैण्ट्रल जेल मे रखे गये थे ।

श्री नाथूलाल वैरागी सत्याग्रह के समय पुलिस के लाठीचार्ज में बुरी तरह आहत हो गए थे । आजकल वे मिहार्ड में रहते हैं ।

श्री नानालाल काबरा मोदी



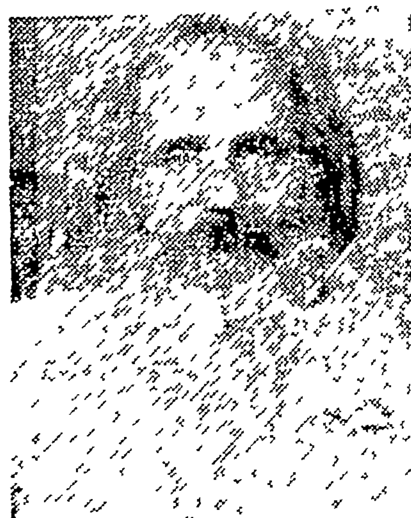
श्री नानालाल काबरा नाथद्वारा के माहेश्वरी परिवार मे से हैं। इन्होने भारत छोडो आन्दोलन में भाग लिया था और 6 महीने के लिए ये भारत सुरक्षा कानून के अतर्गत उदयपुर की सेट्रल जेल मे नजरबद रहे थे। देश की स्वाधीनता के वाद में श्री नानालाल प्रजामडल और कॉग्रेस सगठन के कामो में लगे रहे। आजकल श्री नानालाल नाथद्वारा मे व्यापार करते हैं।



श्री नंदलाल गोर्वा

श्री नदलाल गोर्वा श्री रघुनाथजी के पुत्र हैं। इनकी आयु इस समय 60 वर्ष की है। प्रजामण्डल के प्रारम्भिक दिनो में इन्होने बहुत उत्सह से कार्य किया था। 1938 के प्रजामडल के सत्याग्रह में राजसमद कोर्ट से इन्हे 3 महीने की सजा दी गई थी। वे स्वाधीनता के पहले मदिर की सेवा और देव-पूजा का कार्य करते थे और और आज भी उनका यही कार्य है।

श्री नँदलाल बागोरा



श्री नदलाल बागोरा पालीवाल ब्राह्मण हैं। उनके पिता श्री खेमराजजी पालीवाल थे। श्री नदलाल वागोरा इस ममय 62 वर्ष के हैं।

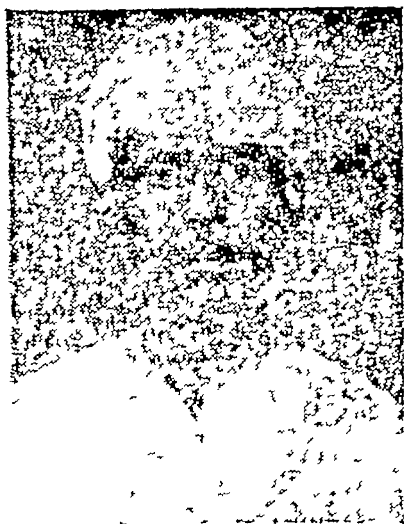
मेवाड प्रजामडल की स्थापना से ही श्री नदलाल उसमें उत्साह से कार्य करने लगे थे। 1938 के आन्दोलन मे उन्हे 6 माह की सजा उदयपुर कोर्ट से मिली। प्रजामडल के द्वारा उन्होने वर्षों तक राष्ट्रीय सेवा की है। स्वाधीनता के वाद एकलिंग महादेव की पूजा करते और भेंट सामग्री से अपना निर्वाह करते हैं।

श्री कज्जूलाल पोरवाल जैन



श्री कज्जूलाल पोरवाल जैन नाथद्वारा के निवासी हैं। इनके पिताजी का नाम हीरालालजी हैं। इन्होने दसवी कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की।

भारत छोडो आन्दोलन मे इन्होने नाथद्वारा मे भाग लिया था। इन्हे भारत रक्षा कानून मे 6 महीने नजरबद करके उदयपुर जेल मे रखा गया था। इस समय श्री कज्जूलाल नाथद्वारा मे व्यापार करते हैं।

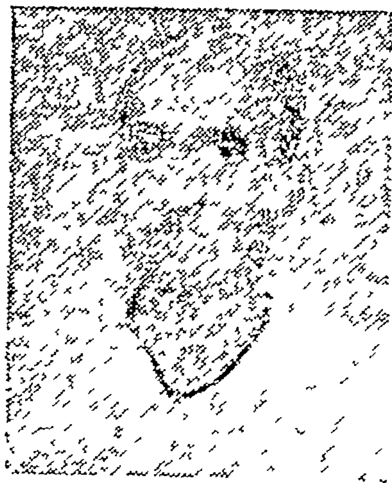


श्री कन्हैयालाल कुमावत

श्री कन्हैयालाल कुमावत 58 वर्ष के है। ये श्री परमानदजी के पुत्र हैं। इनका कार्यक्षेत्र नाथद्वारा ही रहा है।

प्रजामडल के आन्दोलन मे 1938 मे इन्होने भाग लिया था। पुलिस की लाठियो से बुरी तरह पीटे गए। राजसमद न्यायालय मे इनके विरुद्ध 2 वर्ष तक मुकदमा चला और अत में डेढ महीने की सजा हुई। ये श्रमिक हैं और अपने श्रम से परिवार का जीवन यापन करते है।

श्री किशनलाल गुर्जर



श्री किशनलाल गुर्जर की आयु इस समय 70 वर्ष की है। इनके पिता का नाम रावाकिशन है।

श्री किशनलाल गुर्जर ने तीन वार जेल-यात्रा की। 1938 में प्रजामण्डल आन्दोलन मे इन्हे 3 महीने की सजा दी गई। भारत छोडो आन्दोलन मे ये 1 वर्ष तक नजरबद रहे और एक स्थानीय आन्दोलन में 3 महीने जेल मे रहना पडा। ये उदयपुर की सैण्ट्रल जेल, कुंभलगढ और इनवाल की जेलो मे रह चुके हैं।

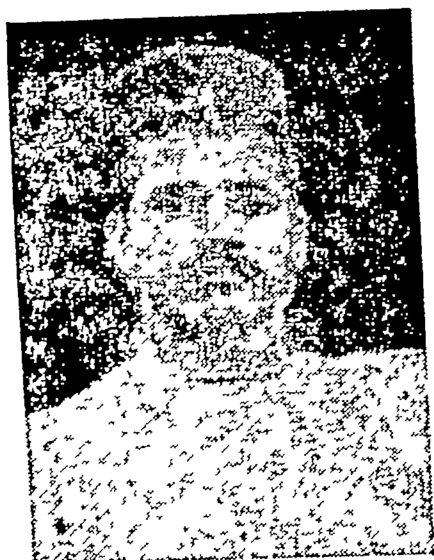
श्री द्वारकादास पुरोहित



श्री द्वारकाप्रसाद का जन्म सवत् 1964 मे पुरोहित परसराम जी गोर्धनजी प्रसादीया वडा भाणूजा वालो के यहाँ हुआ।

श्री द्वारका प्रसाद पुरोहित प्रजामडल के आन्दोलन मे 1938 मे गिरफ्तार हुए और कुम्भलगढ के किले मे छ महीने तक रखे गए। और नाथद्वारा से वम्बई जाने के वाद वहाँ भी वे मेवाड प्रजामण्डल का कार्य करते रहे थे। इनका पता—जाट खिडकी, नाथद्वारा।

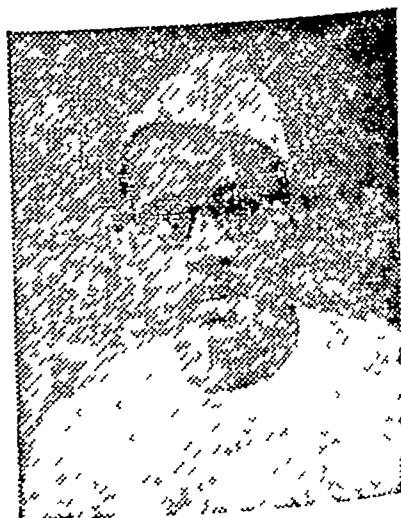
श्री देवीलाल पानेरी



श्री देवीलाल पानेरी श्री गिरधारी पालीवाल के पुत्र हैं। इन्होने 1938 मे प्रजामण्डल के आन्दोलन मे भाग लिया था और पुलिस के लाठी-चार्ज के समय इन पर वहुत गहरी चोटे लगी थी इन्होने आन्दोलनो के सचालन का काम वहुत वुद्धिमत्ता से किया था और जेल से वाहर रहकर आन्दोलन को आगे वढाने का काम करते रहे थे। इनका पता है—

लम्वी गली, मदिर पिछवाडा, नाथद्वारा।

श्री धूलचंद सेवक, बागोल.



श्री धूलचद सेवक का जन्म आज से 55 वर्ष पहले भँवरलाल जी सेवक के घर नाथद्वारा मे हुआ था। 1938 मे ये प्रजामडल के आन्दोलन मे गिरफ्तार किए गए थे। नाथद्वारा ज्युडिसियल कोर्ट से इन्हे 6 महीने की सजा हो गई थी जिमे इन्होने कुम्भलगढ की जेल मे पूरा किया। श्री धूलचंद प्रजामण्डल और कांग्रेस की प्रवृत्तियो मे सदा भाग लेते रहे।

इस समय नाथद्वारा मे इनका चाय का एक सामान्य होटल चलता है। इनका पता है—चौमकी दरवाजा, नाथद्वारा।

श्री फूलचन्द पोरवाल (जैन)



श्री फूलचन्द पोरवाल की आयु इन दिनो ६४ वर्ष की है। उनके पिता का नाम नाथूलाल जी है। श्री फूलचन्द प्रजामडल युग से ही राष्ट्रीय कामो मे भाग लेते रहे हैं। वे वर्षों तक नाथद्वारा की नगरपालिका मे रहे हैं। वे नगर काग्रेस के प्रेसिडेण्ट भी रह चुके है।

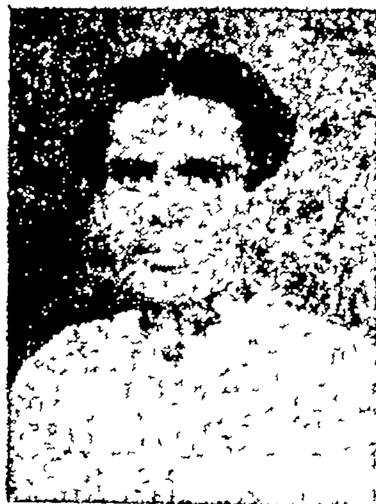
भारत छोडो आन्दोलन मे वे छह महीने के लिए नजरबन्द करके उदयपुर सैण्ट्रल जेल मे रखे गए थे। उनका पता है—धमीड बाजार,नाथद्वारा।

श्री भैरवलाल पालीवाल



श्री भैरवलाल पालीवाल श्री हीरालाल पालीवाल के पुत्र हैं। श्री भैरवलाल की आयु इस समय ६५ वर्ष है। १९३८ मे प्रजामडल के आन्दोलन मे उन्होंने उत्साह से भाग लिया था और नाथद्वारा कोर्ट द्वारा उन्हे ६ माह जेल की सजा दी गई थी। वे समय समय पर राष्ट्रीय कामो मे भाग लेते रहते हैं। उनका पता है नीमडीवाली चौकी पर, गुर्जरपुरा, नाथद्वारा।

श्री मदनमोहन सोमटिया



श्री मदनमोहन सोमटिया नाथद्वारा के रामकृष्णजी जाट के पुत्र है। वे बी०ए०, बी०एड्० हैं और आजकल राजकीय शिक्षा विभाग मे प्रधान अध्यापक हैं। विद्यार्थी काल से ही छात्रो का सगठन बनाकर प्रजामडल को सहयोग देते रहे थे।

१९४२ के भारत छोडो आन्दोलन मे भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत श्री सोमटिया गिरफ्तार कर नजरबन्द रखे गये। पता—शातिकुटी, नथाद्वारा।



श्री मन्नालाल बोहरा पालीवाल

श्री मन्नालाल पालीवाल ब्राह्मण हैं। इनके पिताजी का नाम ऊकारजी है। इनकी आयु इम ममय ६२ वर्ष की है।

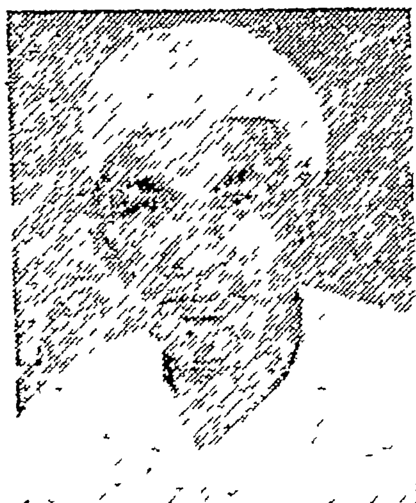
श्री मन्नालाल ने १६३८ मे मेवाड प्रजामडल के आन्दोलन मे भाग लिया था। इन्हें न्यायालय राजसमन्द मे जेल की मजा दी गई थी।

स्वाधीनता के वाद मन्नालाल प्रजामडल और काग्रेस का काम वर्षो तक करते रहे। इनका पता है—लवी गली, मन्दिर पिछवाडा जाट, खिडकी, नाथद्वारा।

श्री मन्नालाल पालीवाल शर्मा



श्री मन्नालाल पालीवाल शर्मा का जन्म १३ फरवरी, १६१८ को नाथद्वारा मे श्री ऊकारजी चगेठीवाला के यहा हुआ था। श्री मन्नालाल इम ममय ५४ वर्ष के है। उन्होंने १६३८ के प्रजामडल के आन्दोलन मे भाग लिया था, और धारा १४४ तोडकर तिरगे झडे का जुलूस निकाला था। वे गिरफ्तार कर लिए गए और उन्हें राजसमन्द कोर्ट मे ३ महीने के लिए जेल भेज दिया गया। भारत छोडो आन्दोलन मे श्री मन्नालाल शर्मा शिवाड (वम्वई) मे गिरफ्तार कर लिए गए थे। वे वहीं १० दिन तक जेल मे रहे। उनका पता है—लोधा घाटी, वामला, नाथद्वारा।



श्री मोतीलाल दर्जी

श्री मोतीलाल दर्जी श्री नाथूलाल जी दर्जी के पुत्र हैं। इनकी आयु इस समय ६२ वर्ष की हैं। इन्होंने १६३८ मे प्रजामडल के आन्दोलन मे भाग लिया था और राजसमन्द कोर्ट से इन्हें डेढ महीने की जेल की सजा दी गई थी।

स्वाधीनता के वाद ये प्रजामडल और काग्रेस की प्रवृतियो मे वरावर भाग लेते रहे हैं। इनका पता है—रिसाला चौक, छालन वाले अखाडे के पास, नाथद्वारा।

श्री रघुनाथ पालीवाल

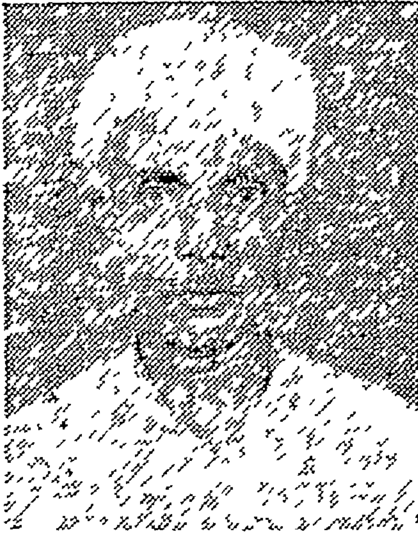


श्री रघुनाथ पालीवाल नाथद्वारा की जनता के एक पुराने सेवक हैं। उन्होंने नाथद्वारा मे प्रेम की स्थापना करके पत्र के प्रकाशन और प्रचार से प्रारम्भिक राजनैतिक चेतना फैलाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। वे प्रोफेसर नारायण प्रसाद आरोडा के सहयोगियो मे से थे। पालीवाल समाज मे राष्ट्रीयता के प्रति जितना आकर्षण और सम्मान दिखाई देता है, उसमे प्रो० आरोडा और रघुनाथ पालीवाल का बहुत बडा हाथ रहा है।

श्री रघुनाथ पालीवाल राष्ट्रीय प्रवृत्तियो मे १६२४ से ही भाग लेने लग गये थे। इन्ही वर्षों में उन्होंने खादी पहनने का व्रत ले लिया था। उदयपुर मे मेवाड राज्य प्रजामडल के सक्रिय सदस्य बन गये, और महाराजा के शासन के विरुद्ध जग मे कूद पडे।

१६३६ मे प्रजा मडल द्वारा चलाए गए सत्याग्रह मे उन्हे ६ महीने की सजा हुई जिसे उन्होने कुम्भलगढ, गिरई और उदयपुर सेण्ट्रल जेल मे पूरा किया। इसके अतिरिक्त भी श्री रघुनाथ पालीवाल कई बार नजरबन्द किए गये। अपने साले की शादी मे पैरोल पर उन्हें पुलिस के अधिकारी हथकडी और डडा बेडी पहना कर ही लाये।

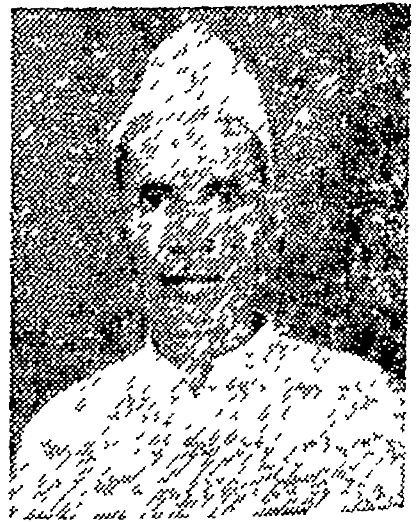
श्री रघुनाथ पालीवाल नाथद्वारा नगरपालिका के निर्वाचित अध्यक्ष थे। ये खामनोर पचायत समिति के सर्वप्रथम प्रधान चुने गए। सरकारी आदेश से प्रथम श्रेणी दण्ड नायक (अवैतनिक) मनोनीत किये गये। वे इन दिनो पचायत समिति खामनोर के प्रधान हैं। उनका अधिक से अधिक समय लोक सेवा और जन चेतन के प्रसार मे व्यतीत होता है। पिछले कई दिनो तक सरकार ने उन्हें अवैतनिक नगर दण्डनायक बनाया था। पचायत समिति के प्रधान के रूप में उन्होने नाथद्वारा के गावो मे विकास और निर्माण का बहुत व र्षो तक विस्तार किया था। उनका पता है—एकलिग भवन, खामनोर (नाथद्वारा)।



श्री रतनलाल कर्णावट (जैन)

श्री रतनलाल कर्णावट की इस समय आयु ६७ वर्ष की है। वे नाथद्वारा मे कई वर्षों तक नगर काग्रेस के प्रेसिडेण्ट रहे है। भारत छोडो आन्दोलन मे वे भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत १३ महीने के लिए उदयपुर जेल और इसवाल जेल मे नजरबद कर दिए गए थे। रचनात्मक तथा शिक्षा सबधी कामो मे विशेष रस और रुचि लेते हैं। उनका पता है—लाल बाजार, नाथद्वारा।

श्री राधाकृष्ण शर्मा कटारा



श्री राधाकृष्ण कटारा खामनोर के मूल निवासी है। उनके पिता का नाम श्री मोतीलाल पालीवाल है। उन्हे हिन्दी, गुजराती व सस्कृत की शिक्षा दी गई थी। १९३८ मे श्री कटारा ने प्रजा-मडल आन्दोलन मे भाग लिया था। उन्हे नाथद्वारा न्यायालय द्वारा ९ महीने की सजा दी गई थी। वे पहले उदयपुर सैन्ट्रल जेल मे, और बाद मे गिराई जेल मे रखे गए थे।

श्री कटारा की आयु इस समय ६१ वर्ष की है। उनका पता है—मोदियो की खिडक, पिछली गली, नाथद्वारा।



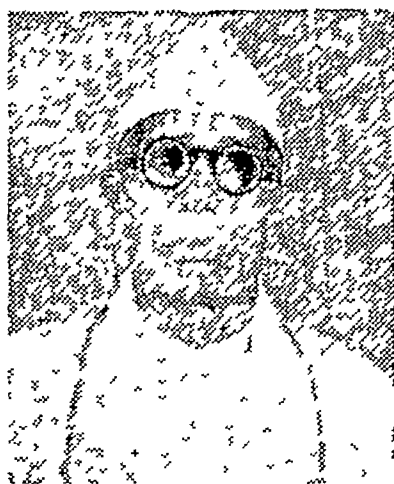
श्री रामबाबू

श्री रामबाबू सनाढ्य ब्राह्मण है। इनके पिताजी का नाम श्री गिरधारीजी है। इनकी आयु ५८ वर्ष की है। सन् ३८ के प्रजामडल के आन्दोलन के समय इन्होने अध्यापन छोडकर आन्दोलन मे भाग लिया था और राजसमन्द कोर्ट द्वारा इन्हे सजा हुई थी। स्वाधीनता के बाद कई वर्षों तक इन्होने अध्यापन का कार्य किया। आजकल ये नाथद्वारा मे साइकलो का धधा करते हैं। इनका पता है—काकरोली मदिर पिछवाड, नाथद्वारा।

श्री राजेन्द्रसिह चौधरी

श्री राजेन्द्रसिह चौधरी नाथद्वारा के श्री रामकृष्ण चौधरी के पुत्र है। इन्हाने बी० ए० पास करने के बाद एल० एल० बी० प्रिवियस तक की पढाई की, और बाद मे राजनीति मे कूद पडे। १९३७ से ही इन्होंने विद्यार्थी सगठनो मे काम करना शुरू कर दिया था। प्रजामडल के आन्दोलन मे वे १९३८ मे जेल गये थे। भारत छोडो आन्दोलन मे भारत सुरक्षा कानून के अतर्गत इन्हे नजरबन्द रखा गया था। इन आन्दोलनो मे इनकी गिरफ्तारी चार बार हुई, और ये चार बार जेलो मे गए।

सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना होने पर श्री राजेन्द्रसिह चौधरी उसमे शामिल होगय और उसके द्वारा चलाये हुए आन्दोलनो मे भाग लेते रहे, और उन्होने मजदूर सगठनो मे कार्य किया। साथियो एव कुटुम्बियो के सहयोग से उनकी जीविका चलती है। वे पूर्ण समय के लिए राजनीति मे सलग्न है और कोई स्वतन्त्र व्यवसाय या नौकरी नही करते। इनका पता हे—पचवटी, उदयपुर।



श्री श्रीकृष्ण सनाढ्य

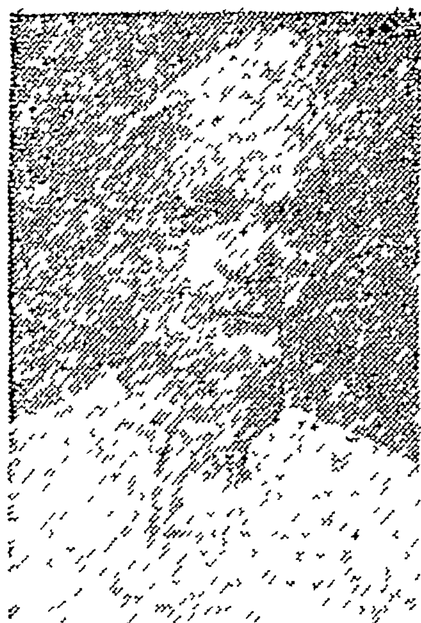
श्री श्रीकृष्ण सनाढ्य श्री मागीलाल सनाढ्य के पुत्र है। इनकी आयु ६२ वर्ष की है। इन्होने १९३८ मे प्रजामडल के आन्दोलन मे भाग लिया था और राजसमन्द कोर्ट से डेढ महीने की सजा हुई थी। ये प्रजामडल और काग्रेस के एक कमठ कार्यकर्ता रहे है।

श्री सरवन

श्री सरवन सनाढ्य ब्राह्मण हैं। इनके पिता का नाम विटठलजी है। इनकी आयु इस समय ७२ वर्ष की है। इन्होने अपने युवाकाल म पहलवानी की शिक्षा ली थी।

श्री सरवन १९३८ के प्रजामडल आन्दोलन मे शामिल हुए थे। सत्याग्रह करते हुए उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया। राजसमन्द न्यायालय से उन्हें सजा हुई थी। इनका पता है—लोधाघाटी चिवारा पावसा, नाथद्वारा।



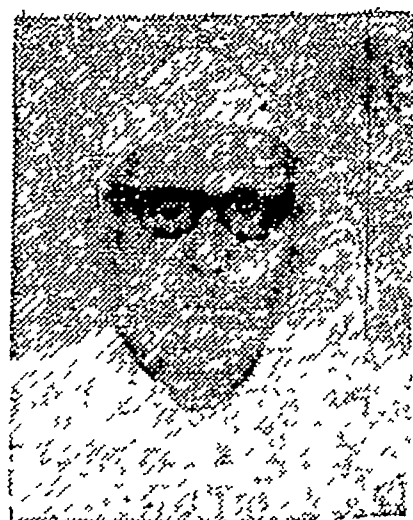


श्री श्यामसुन्दर जोशी

श्री श्यामसुन्दर जोशी पालीवाल ब्राह्मण हैं। इनके पिता का नाम श्री हीरालाल जोशी है। राष्ट्रीय प्रवृतियो में सन् ३६ से काम करने लग गए थे। १९३८ के प्रजामडल आन्दोलन में इन्होंने और इनकी पत्नी श्रीमती कमला जोशी ने भाग लिया। श्री श्यामसुन्दर को नाथद्वारा अदालत ने छह महीने की सजा दी। तीन महीने इन्हें कुंभलगढ में रखा गया, और तीन महीने गिराई जेल में।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भी ये कांग्रेस की प्रवृत्तियों में भाग लेते रहे हैं। इनका पता है– तम्बाकू गली, नाथद्वारा।

श्री हरिलाल चौधरी



श्री हरिलाल चौधरी की आयु ६४ वर्ष की है। ये श्री हीरालाल जाट के पुत्र हैं। भारत छोडो आन्दोलन में भाग लेने के लिए इन्हें अपनी नौकरी छोडनी पडी थी। इन्हें १९४२ में भारत सुरक्षा कानून के अतर्गत ६ महीने उदयपुर सेण्ट्रल जेल मे नजरबद रखा गया था।

इनका पता है–जाट मोहल्ला, नई हवेली, नाथद्वारा।

नाथद्वारा में

मेवाड़ प्रजामंडल के उत्साही कार्यकर्त्ता

जिन्होंने प्रजामंडल के आन्दोलनों में

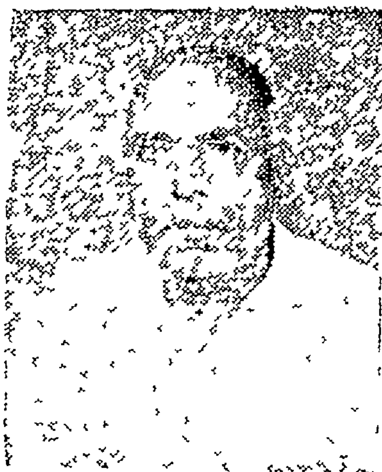
जेल-यातनाएं सहीं



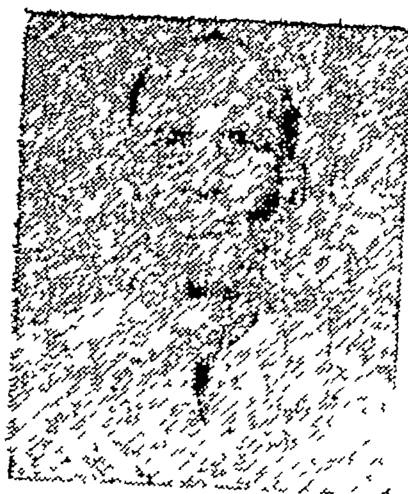
श्री श्रीकृष्णजी



श्री हरिदास खवास

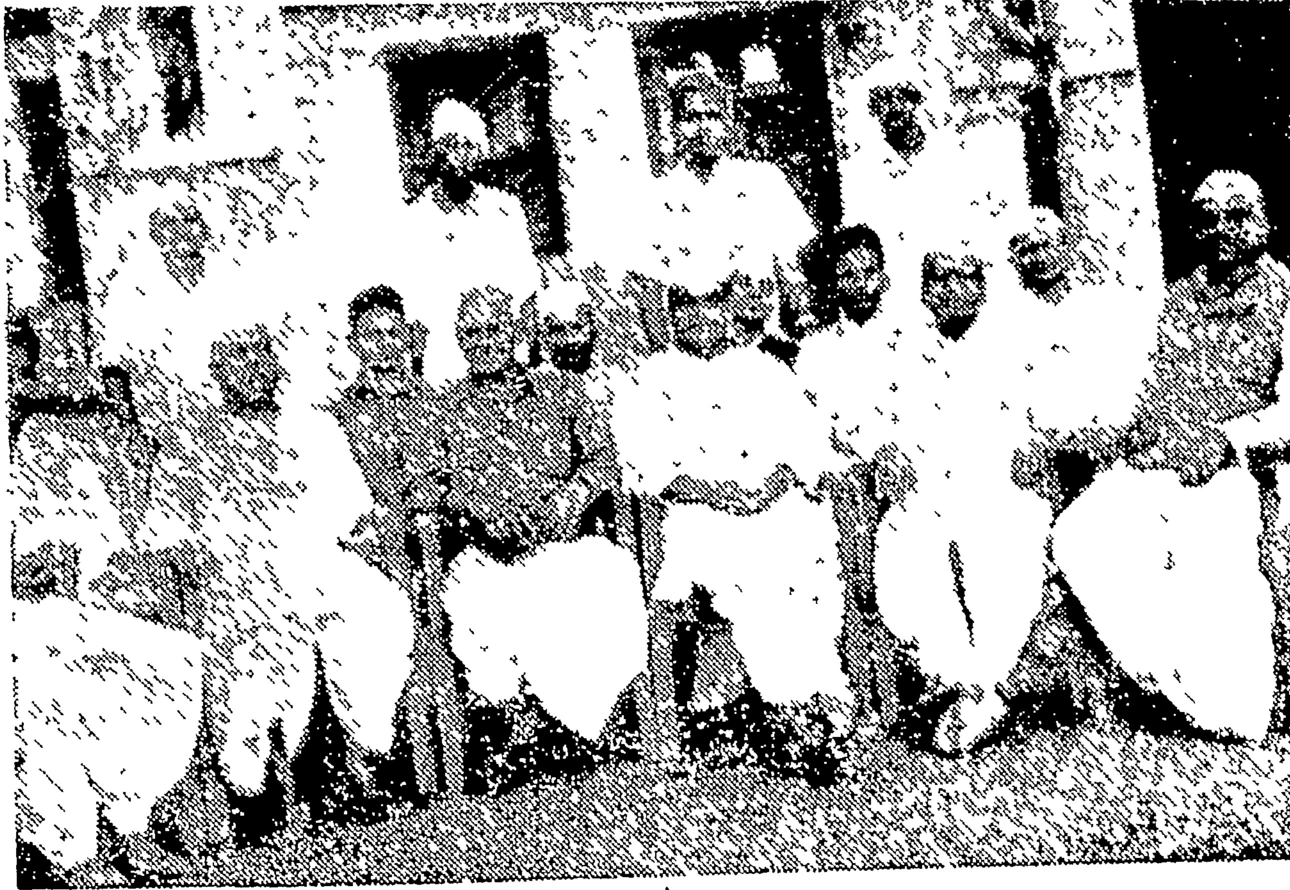


श्री अम्बालाल स्वर्णकार



श्री बिहारीलाल गोर्वा

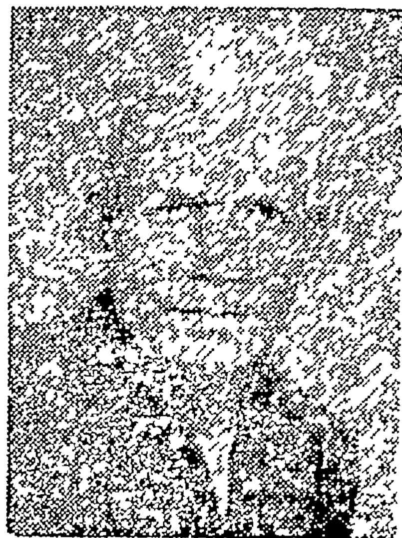
जिला चित्तौड़ में बड़ी सादड़ी के राजनैतिक कार्यकर्त्ता



श्री अमृतलाल यादव के साथ सर्वश्री गुलाबचन्द मेवाडी, पूनमचन्द नाहर और जयचन्द मोहिल तथा अन्य कार्यकर्ता बैठे दिखाई देते हैं।

चित्तौड़

श्री गोकुल लाल धाकड़



श्री गोकलजी धाकड मेवाड प्रजामडल और काग्रेस के एक कर्मठ कार्यकर्ता रहे हैं उन्होने प्रजामडल के सघर्ष के दिनो मे वहुत साहसिक कार्य किये थे। १९३८ के प्रजामडल के सत्याग्रह मे इन्हे १ वर्ष की सख्त सजा दी गई थी और भारत छोडो आन्दोलन मे इन्हे २ वर्ष तक उदयपुर सैंट्रल जेल मे नजरबद रखा गया था। गोकुलजी धाकड ने गावो मे प्रौढ पाठशालाओ द्वारा शिक्षा प्रचार का वहुत कार्य किया है। वे लोगो के अभाव अभियोगो को सुनने और उनका समाधान करवाने का सदा प्रयत्न करते रहते हैं। उनका जन्म १५ अगस्त १९०८ का हुआ था। उनका वर्तमान पता है–कल्याणपुरा, पोस्ट चेची, तहसील वेगू (जिला चित्तौड)।

श्री गुलाबचन्द मेवाड़ी

श्री गुलावचन्द मेवाडी का जन्म छोटी सादडी के श्री मूलचन्द्रजी ब्राह्मण के घर मे सवत् १९६९ की वेशाख शुक्ला ३ को हुआ। उन्होंने सस्कृत व्याकरण मध्यमा के ३ खड कर लिए थे। श्रीमेवाडी मेवाड प्रजामडल के अत्यन्त उत्साही कार्यकर्ता रहे हैं।

मेवाड प्रजामडल के आन्दोलन मे १९३८ मे उन्हे १ वर्ष की सख्त सजा दी गई, जिसे उन्होंने गिराई जेलमे पूरा किया, भारत छोडो आन्दोलन मे वे छोटी सादडी मे गिरफ्तार हुए, और उदयपुर सैंट्रल जेल मे ४ महीने ९ दिन तक नजरबन्द रहे।

आजकल वे एगेर पत्थर, की खोज परीक्षण और उसके व्यापार मे लगे हुए है। उनका पता है–हलवाइयो की गली, छोटी सादडी।

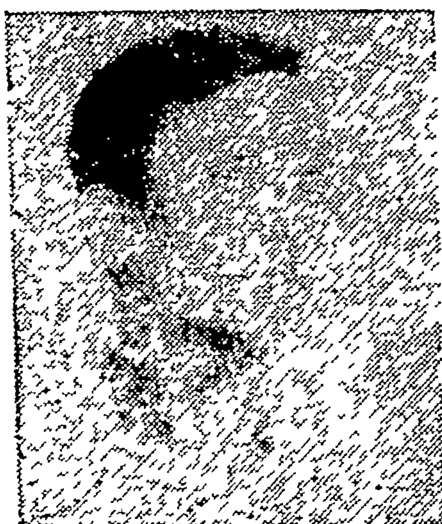
श्री घनश्याम लाल जोशी



श्री घनश्याम लाल जोशी का जन्म ३ जनवरी १९०१ को ग्वालियर रियासत के सिंगोली ग्राम मे हुआ था। ये १९१८ से राष्ट्रीय आन्दोलन मे लग गये थे। उन दिनो उन्होने साधु सीतारामदास और विजयसिह पथिक के साथ बिजोलिया और बूंदी के किसान आन्दोलनो मे भाग लिया था। १९२३ मे बेगू हत्याकाड के समय इनके पाव मे गोली लगी थी। घायल अवस्था मे ही इन्हे ५०० किसानो के साथ गिरफ्तार कर लिया गया था।

श्री घनश्याम जोशी पथिकजी के साथ १ वर्ष ६ महीना और १० दिन (१८–८–१९२३ से २८–२–१९२५) तक जेल मे रहे थे। सन् २३ मे गणेशपुरा ग्राम मे इनका कुआ और जमीन खालसे करली गई। इनका पता है—ग्राम खुलीमगरा, पो० बेगू, (जिला चित्तौड।)

श्री जयचन्द मोहिल



श्री जयचन्द मोहिल अनुसूचित जाति के कार्यकर्ता है। छोटी सादडी के क्षेत्र मे पुलिस इन्हे खुराफात की जड मानती रही है। १९३८ के प्रजामडल आन्दोलन मे पुलिस ने इनकी दोनो आखो मे गरम सलाखे दाग दी थी। ठक्कर बापा और रामेश्वरी नेहरू के बहुत इलाज कराने के बाद अब देख सकते है। परन्तु आखो मे पूरा काम नही होता।

१९३८ मे इन्हे ६ महीने की सख्त सजा दी गई, जिसे इन्होने गिराई और उदयपुर जेल मे पूरा किया। भारत छोडो आन्दोलन मे भी श्री मोहिल लम्बे समय तक उदयपुर सेंट्रल जेल मे नजरबन्द रहे।

इन्होने समय समय पर बेगार विरोधी आन्दोलन और हरिजन सुधार आन्दोलन चला कर जनमत को जागृत और प्रशिक्षित किया। इनका पता है—छोटी सादडी (जिला चित्तौड)।

श्री नन्दकुमार त्रिवेदी



श्री नन्दकुमार त्रिवेदी का जन्म मेवाड मे कानोड ठिकाने के गाव बडवई मे प० परमानदजी के घर मन् १९२१ मे हुआ। इनकी शिक्षा दीक्षा सैलाना (मध्यप्रदेश) मे हुई। भारत छोडो आन्दोलन मे उन्होने सैलाना मे ही कार्य किया, और पुलिस ने उनके साथ खूब पिटाई की। उन्होने अपनी मातृभूमि मेवाड मे आकर प्रजामडल के झडे के नीचे समाजवादी विचार के साथियो के साथ उत्तरदायी शासन के लिए कार्य शुरू कर दिया।

उत्तरदायी शासन के अतिम सघर्ष मे ४ अप्रैल ४८ के गोलीकाड मे श्री नन्दकुमार त्रिवेदी के दोनो पावो मे गोलिया लगी। उनका एक पाव तो अपग ही होगया। वे इन्दराजी के प्रधान मत्री बनने के बाद समाजवादी कार्यक्रम के प्रति आस्था होने के कारण काग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता बन गये। उनका पता है—लोकभारती, बडवई पोस्ट डूगना (जिला चित्तौड)।

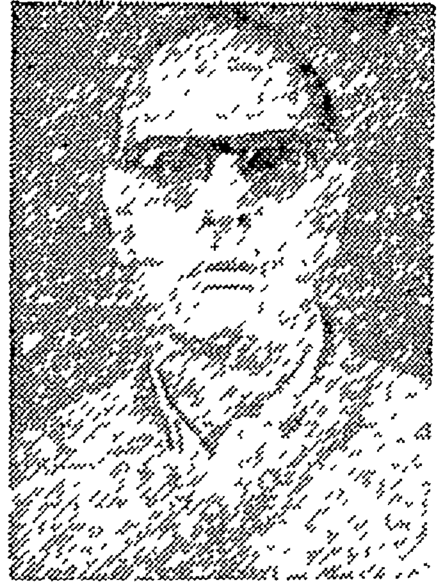
स्वर्गीय श्री नन्दलाल वैद्य

श्री नन्दलाल वैद्य विजयसिंह पथिक युग के कार्यकर्ता थे। वे एक विद्वान, ओजस्वी वक्ता, और लोकसेवी चिकित्सक थे। उन दिनो के जागीर–विरोधी अभियान मे वे सबसे आगे रहते थे।

१९१९ के नवम्बर मे चित्तौडगढ के मुरास ग्राम मे जागीरी अत्याचारो के विरोध मे भाषण करते समय जागीरदारो की ओर से उन पर घातक हमला किया गया। वही वे गिरफ्तार कर लिए गये, और उन्हें ७ महीने चित्तौड जेल मे बिताने पडे।

६ महीने तक उनकी माता अपने घर मे खाना बना कर प्रतिदिन ३० मील की यात्रा पैदल करके उन्हें खाना खिलाती थी। श्री नन्दलाल वैद्य जब तक जीवित रहे जागीरी अत्याचारो के विरुद्ध सघर्ष करते रहे।

श्री पुरुषोत्तम चौधरी



श्री पुरुषोत्तम चौधरी का जन्म २ अक्तूबर १९२० को नाथद्वारा के जीवनजी जाट के घर हुआ । उनकी शिक्षा भी नाथद्वारा मे ही हुई । १९३८ मे प्रजामडल के आन्दोलन मे उन्होंने भाग लिया और इसवाल महल मे इन्हे दो वर्ष तक कैद मेरहना पडा । इसी तरह मे भारत छोडो आन्दोलन मे भारत सुरक्षा कानून के अंतर्गत वे २ वर्ष तक इसवाल और उदयपुर जेल मे नजरवन्द रखे गये ।

श्री पुरुषोत्तम चौधरी ने मेवाड मे किसान और मजदूरो मे शिक्षा प्रचार का कार्य किया । वे वर्तमान समय मे चित्तौड नगर कांग्रेस के अध्यक्ष है । वे चित्तौड नगरपालिका, के भी अध्यक्ष है ।

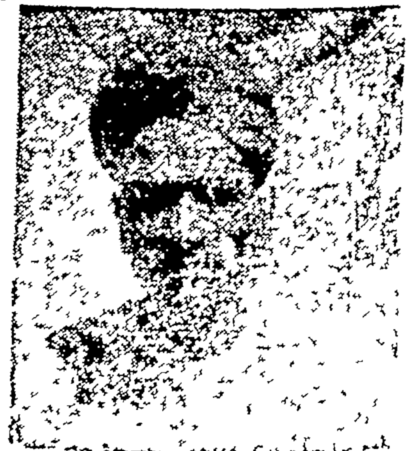
श्री पूनमचन्द नाहर



श्री पूनमचन्द नाहर का जन्म छोटी सादडी के एक जैन परिवार मे १० जनवरी १९११ को हुआ । इन्होंने १९३८ और १९४२ मे प्रजामडल द्वारा चलाये गये आन्दोलन मे भाग लिया, और ३ महीना ६ दिन के लिए जेल मे रहे । १९६० तक श्री नाहर कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता रहे । वे सदा जागीरी अत्याचारो का विरोध करते रहे ।

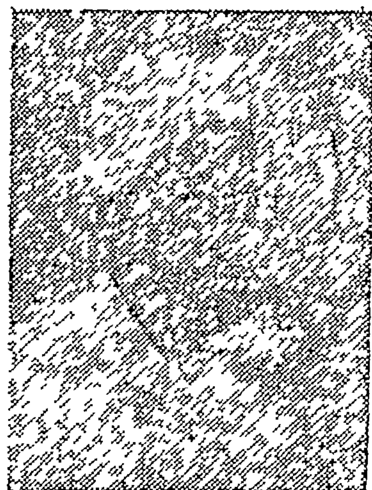
उनका पता है—जूना बाजार, छोटी सादडी ।

श्री फूलचन्द बया



श्री फूलचन्द बया इस समय ५७ वर्ष के है । इस समय छोटी सादडी मे इनकी परचून की दुकान है । १९२९ मे साबरमती आश्रम मे उन्होंने प्रशिक्षण लिया था । १९३८ में प्रजामडल के आन्दोलन के समय पुलिस ने तीन रोज तक उन्हें कम्बल मे लपेट कर बेंतो से पीटा था । १९४२ मे वे भारत सुरक्षा कानून के अंतर्गत ३ महीने नजरबन्द रहे । उनका पता है—फूलचन्द सागरमल बया—छोटी सादड

श्री बरदीचन्द धाकड़



श्री बरदीचन्द धाकड चित्तौड जिले के ग्राम गायता के रहने वाले हैं। बेगू, बिजोलिया, चित्तौड और उदयपुर इनका कार्यक्षेत्र रहा है। श्री बरदीचन्द ने १९२३ मे विजयसिंह पथिक के साथ जागीर विरोधी आन्दोलन मे काम करना शुरु किया, जिसके परिणाम स्वरूप इनकी जमीन जागीरदारो ने जब्त करली। दण्ड के रुपए भी वसूल किये। इन्हें राजद्रोह के मामले मे बेगू, बिजोलिया और चित्तौड की जेलो मे ४ वर्ष बिताने पडे। तीन वर्ष तक इन्हें इनके मकान मे ही नजरबन्द रखा गया।

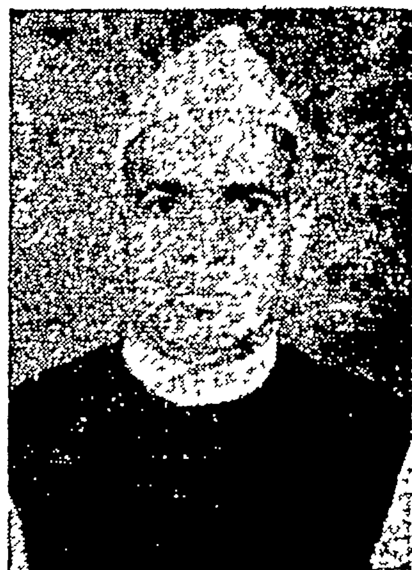
श्री मदनलाल अग्रवाल

श्री मदनलाल अग्रवाल मेवाड प्रजामडल के एक उत्साही कार्यकर्त्ता रहे हैं, और सभी राष्ट्रीय प्रवृत्तियो मे भाग लेते रहे हैं। हरिजन सेवा में इन्होंने विशेष कार्य किया। भारत छोडो आन्दोलन मे श्री मदनलाल अग्रवाल तीन महीने के लिये उदयपुर सैन्ट्रल जेल में नजरबन्द कर दिये गये थे। आन्दोलन के पहले ये सरकारी नौकरी मे थे। आजकल बजरंग ट्रेडिंग कम्पनी के नाम से इनकी छोटी सी दुकान छोटी सादडी मे है।

श्री शोभालाल सुनार

श्री शोभालाल सुनार ने प्रजामडल द्वारा सचालित भारत छोडो आन्दोलन मे भाग लिया था। उन्होंने अपने क्षेत्रमे घूम घूम कर गाधी जी के करो या मरो का सदेश लोगो तक पहुचाया। वे सितम्बर १९४२ मे छोटी सादडी मे तिरंगे झण्डे के साथ निकाले गए जलूस का नेतृत्व करते हुए गिरफ्तार हुए। उन्हे उदयपुर की सैंट्रल जेल मे नजरबन्द कर दिया गया। श्री शोभालाल सुनार का अधिक समय जागीरदारो के अत्याचारो का मुकाबला करने मे बीता।

श्री सूर्यभानु पोरवाल



श्री सूर्यभानु पोरवाल एक पत्रकार हैं, और पिछले २५ वर्षों से अपने क्षेत्र के अभाव अभियोगो की खबरें समाचार पत्रो मे प्रकाशित करवा कर जनता की सेवा करते हैं। श्री सूर्यभानु का जन्म २ सितम्बर १६२० को छोटी सादडी मे ही हुआ था। १६४२ के भारत छोडो आन्दोलन में श्री सूर्यभानु ३ महीने के लिए नजरबन्द कर दिए गये।

वे आज भी सगठन, प्रचार और सवाद प्रकाशन द्वारा अपने क्षेत्र की सेवा करते हैं। उनका पता है–छोटी सादडी (चित्तोड)।

श्री सूरजमल अग्रवाल

श्री सूरजमल अग्रवाल मेवाड प्रजामडल के एक उत्साही कार्यकर्ता रहे है। उन्होंने १६३८ के प्रजामडल आन्दोलन मे भाग लिया था, परन्तु, वे गिरफ्तार नही किये जा सके, भारत छोडो आन्दोलन मे वे भारत सुरक्षा कानूनके अन्तर्गत तीन माह के लिए नजरबन्द कर दिये गये थे।

श्री सूरजमल का जन्म सम्वत् १६७१ की श्रावण शुक्ला १३ को छोटी सादडी में हुआ था। आजकल वे छोटी सादडी में व्यवसाय करते हैं।

श्री हीरालाल शर्मा (मास्टर)

श्री हीरालाल शर्मा का जन्म सम्वत् १६७२ फाल्गुन सुदी १५ को एक सामान्य ब्राह्मण परिवार मे हुआ। उनकी शिक्षा छोटी सादडी मे ही हुई। प्रारम्भ मे उन्होने स्काउट के रूप मे सेवा कार्य को अपना लक्ष्य बनाया, और बाद मे हरिजनों मे शिक्षा का प्रचार कार्य अपने हाथ मे लिया। प्रजामडल की स्थापना मे ही वे उसके एक कर्मठ कार्य कर्त्ता के रूप में कार्य करने लग गये थे। भारत छोडो आन्दोलन मे उन्हे ३ महीने के लिए उदयपुर की सेण्ट्रल जेल में नजरबन्द रखा गया।

श्री हीरालाल शर्मा आज भी निस्वार्थ भाव से लोक सेवा के कार्य में सबसे आगे रहते है। उनका पता है–पोस्ट ऑफिस के पास, छोटी सादडी (चित्तौड)।

भीलवाड़ा

श्री उमरावसिंह ढाबरिया, बनेड़ा

श्री उमरावसिह ढाबरिया राजस्थान की राजनीति मे एक उग्र और कट्टर समाजवादी के रूप मे जाने जाते है। उनका जन्म बनेडा के जैन ओसवाल परिवार मे हुआ। उनकी शिक्षा बनेडा और उदयपुर मे हुई। उन्होने विद्यार्थी काल मे ही सार्वजनिक और राजनैतिक कार्य शुरू कर दिये थे, उन्होने पिछडी जातियो मे शिक्षा प्रसार का काम हाथ मे लिया, और फिर प्रजामडल के तत्वावधान मे किसानो और मजदूरो के सगठन का कार्य सम्भाला। वे प्रजामडल की बनेडा शाखा से लगा कर अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् की जनरल कौंसिल तक के सदस्य बनते गये।

श्री ढाबरिया ५ वर्ष तक अपने गाव की पचायत के सरपच, ४ वर्ष तक पचायत समिति के प्रधान, और १९६२ से ६७ तक राज्य विधान सभा के सदस्य रहे। १९४२ के भारत छोडो आन्दोलन मे श्री ढाबरिया भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत ६ महीने के लिए डसवाल और उदयपुर की जेल मे नजरबन्द रहे। देश की स्वाधीनता के बाद समाजवादी पार्टी मे शामिल होगये। दो वर्ष तक वे प्रान्तीय सोशलिस्ट पार्टी के महामत्री रहे। स्वाधीनता के बाद के समाजवादी आन्दोलनो मे १३ बार जेल गये। आज भी श्री ढाबरिया अपना पूरा समय देकर किसान मजदूर और युवको के सगठन का कार्य कर रहे है।

इनका पता है—बनेडा, (जिला भीलवाडा)।

श्री भवानी शंकर दुःखित, पुर

श्री भवानीशकर दुखित एक उग्र और क्रान्तिकारी कवि है। वे पुर के निवासी है। बचपन मे उन्होने सस्कृत का गहरा अध्ययन किया था। श्री दयाशकर श्रोत्रीय की प्रेरणा से वे १९३८ के प्रजामडल के आन्दोलन मे शामिल हुए। उस समय पुलिस ने उन्हे अत्यन्त बेरहमी से पीटा। उनका सीधा हाथ और पाव पूरी तरह जख्मी हो गये थे। इस आन्दोलन मे उन्हे ६ मास तक उदयपुर की सैण्ट्रल जेल मे रहना पडा। जेल से मुक्ति के बाद वे राज्य मे जागीरी प्रथा और जागीरी अत्याचारो के विरुद्ध जनमत बनाने के काम मे लग गये।

१९४२ मे उन्होने हाथ मे आया हुआ राजकीय सेवा का अवसर जानकर ठुकरा दिया। वे रतलाम चले गये। वहा से विद्यार्थी सगठनो मे काम करना चाहते थे कि एक क्रातिकारी षड्यन्त्र केस मे सहयोग देने के नाते हिरासत मे ले लिए गये।

स्वाधीनता के बाद श्री दुखित कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बन गये। इस पार्टी मे रह कर उन्होने किसानो का सगठन किया। इस समय वे एक शिक्षण सस्था का सचालन कर रहे है। आज भी इनकी कविता युगातरकार स्वर मे मुखरित होती है।



श्री भैरवलाल व्यास, पुर

श्री भैरवलाल व्यास का जन्म संवत् १९७२ की वैशाख शुक्ला १० को एक सामान्य ब्राह्मण परिवार में हुआ। उन्होंने संस्कृत प्रथमा तक शिक्षा प्राप्त की। १९३८ मे प्रजामंडल के आन्दोलन में इन्होने उदयपुर जाकर सत्याग्रह किया। श्री भैरव लाल व्यास सत्यग्रह के पहले जत्थे के सत्याग्रही थे। और इन्हें गिरफ्तार करके ६ महीने की सजा दी गई। गिरफ्तारी के समय उदयपुर की पुलिस कोतवाली मे नगारामी जूतो, व डडो से निर्दयता पूर्वक इनकी पिटाई की गई जिससे अब तक इनका दाहिना घुटना काम नही करता।

श्री भैरवलाल व्यास अपने क्षेत्र के एक निस्वार्थ जनसेवी व्यक्ति है, और सदा प्रजामंडल और कांग्रेस की प्रवृत्तियो मे सक्रिय रहे हैं। ये हर समय लोकसेवा के लिए कटिबद्ध रहते हैं। कर्मकांड उनकी जीविका का साधन था; लेकिन आजकल वह भी नही के बराबर ही है। वे शुद्ध श्रमजीवी लोकसेवक हैं। उनका पता है—मोटर स्टैंड, पुर।

श्री माणिक राम नुवाल, बनेड़ा



श्री माणिक राम नुवाल का जन्म बनेडा के एक माहेश्वरी परिवार मे २० नवम्बर १९१३ को हुआ। सामान्य शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे राजकीय स्कूल मे अध्यापक हो गए। प्रजामडल का आन्दोलन शुरू होने पर उन्होंने 'नेक सलाह' के नाम से महाराणा को एक पत्र लिखकर अनुरोध किया कि व प्रजामडल को गैर कानूनी घोषित न करे। इस पत्र पर श्री नुवाल गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हे नौकरी से अलग कर दिया गया। और राजद्रोह के अपराध मे उन्हे ६ महीने की सख्त सजा दी गई। उन्हें सामान्य कैदियो की तरह रखा गया। भारत छोडो आन्दोलन के समय उन्हे भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत नजरबन्द कर दिया गया और एक वर्ष छह माह तक उन्हे उदयपुर सेन्ट्रल जेल और डबवाल कैम्प मे रखा गया।

स्वाधीनता के बाद देश मे पहला महा निर्वाचन हो जाने पर १९५२ मे श्री नुवाल ने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया, और रचनात्मक कामो मे लग गए। तब से अब तक वे रचनात्मक कार्य करने वाली संस्थाओ के साथ संबद्ध हैं। श्री नुवाल इन दिनो किसी राजनैतिक पार्टी मे नहीं हैं। वे रचनात्मक कार्य करते है, और जनता के अभाव अभियोगो को दूर करवाने की कोशिश करते रहते हैं।

श्री मथुरा प्रसाद वैद्य, जहाजपुर ।



श्री मथुरा प्रसाद वैद्य मेवाड प्रजामडल के सबसे पुराने और तपे हुए कार्यकर्ता हैं। उनकी उम्र ७२ वर्ष की है। वे आयुर्वेद विशारद है और आखो के चश्मो का काम भी जानते हैं। देशी चिकित्सा उनका व्यवसाय है। वे १६२२ मे आर्य प्रचारिणी सभा से सम्वद्ध थे और आर्यसमाज के मंच से राष्ट्रीयता का प्रचार करते रहे थे। सन् २३ से २८ तक वे श्री विजयसिंह पथिक के साथ रहे। बिजोलिया में उन्हे ४ महीने की सख्त सजा दी गई थी। छत से उन्हे उल्टा लटकाया गया और खोडे मे पाव दिये गये।

सन् ३२–३३ मे श्री मथुराप्रसाद वैद्य कलकत्ते में पिकेटिग करते हुए गिरफ्तार हुए और तीन महीने दमदम जेल मे निकाले। १६३६ मे जब मेवाड मे प्रजामडल गैर कानूनी घोषित कर दिया गया तब वर्माजी ने अजमेर मे मेवाड प्रजामडल की स्थापना की, और वहीं से वे प्रजामडल का प्रेरक साहित्य मेवाड मे भेजते थे। श्री मथुरा प्रसाद वैद्य देवली कैम्प पर रखे गये,जहा मेवाडी कार्यकर्ता उनसे सम्पर्क करके कार्य करने का आदेश और मन्त्रणा प्राप्त करते। पुलिस को इसका पता लग गया। अत मेवाडकी पुलिस श्रीमथुराप्रसाद को देवली की सीमा से मेवाड की सीमा तक घसीट कर ले गई और उन्हे मेवाड की सीमा मे पहुचते ही, गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हे उस समय १८ महीने जेल मे रखा गया।

१६४२ के भारत छोडो आन्दोलन मे श्री मथुराप्रसाद वैद्य भारत सुरक्षा कानून के अतर्गत गिरफ्तार कर लिए गये। उन्हें सैंट्रल जेल उदयपुर और इसवाल डिटेन्सन कैम्प में १६ महीने तक नजरबन्द रखा गया। इस तरह से श्री मथुराप्रसाद वैद्य कुल मिलाकर ४१ महीने तक कैद मे रहे।

राजनीति मे उग्रता से भाग लेने के कारण वे अपने पुत्रों की समुचित शिक्षा की व्यवस्था नही कर सके, और उनका चिकित्सा का व्यवसाय भी राजनैतिक दौड भाग के कारण अस्त-व्यस्त हो गया।

श्री मथुराप्रसाद वैद्य एक तपोनिष्ठ और कर्त्तव्य परायण स्वतन्त्रता सेनानी हैं। भले ही आजकी राजनीति उन्हें अपने में समाहित नही कर सकी परन्तु उनके त्याग और कुर्बानियो का ऐतिहासिक महत्व कभी कम नहीं होगा। उनका। पता है–जहाजपुर, जिला भीलवाड़ा।

श्रीरामचन्द्र वैद्य, भीलवाड़ा



श्री रामचन्द्र वैद्य का जन्म सम्वत् १९५८ मे भीलवाडा से १२ मील दूर हमीरगढ ग्राम मे हुआ था। आपके पिता का नाम श्री नाथूराम व्यास था। श्री वैद्य जी के पिता श्री का स्वर्गवास बाल्यावस्था मे हो जाने से इनकी माता ने बड़े कठिन परिश्रम मे इनका पालन पोषण किया और सामान्य ज्ञान दिलाया।

श्री वैद्यजी बचपन से ही एक स्थानीय प्रतिष्ठित वैद्यजी के पास दवाइया (आयुर्वेद) आदि बनाने का कार्य तथा उन्ही से आयुर्वेदीय चिकित्सा का ज्ञान प्राप्त करते रहे। धीरे-धीरे श्री वैद्यजी स्वय एक कुशल चिकित्सक बनने मे सफल हुए। इन्होने अपना चिकित्सा कार्य शुरू कर दिया। इन्होने २० वर्ष की आयु से ही चिकित्सा का कार्य प्रारम्भ कर दिया था और पूरे २० वर्ष तक चिकित्सा व्यवसाय को निरन्तर चलाते रहे। हमीरगढ से भीलवाडा आये और वहा भी २० वर्ष तक वैद्य का कार्य करते रहे।

श्री रामचन्द्र वैद्य १९३८ मे श्री माणिक्यलाल जी वर्मा की देख रेख मे मेवाड प्रजामडल और काग्रेस मे कार्य करते हुए प्रजामडल आन्दोलन मे (उदयपुर सैंट्रल जेल) ६ माह के कठोर कारावास मे रहे और कठोर यातनाए सही। उसके बाद भीलवाडा आकर प्रजामडल और काग्रेस का कार्य करते रहे। १९४२ में अग्रेजो भारत छोडो आन्दोलन में जेल गये, एक वर्ष का कठोर कारावास और यातनाऐं सही और वापस भीलवाडा आ गये और काग्रेस सगठन मे कार्यकर्ता की हैसियत मे कार्य करते रहे।

देश आजाद होने के बाद से १९७२ तक वे जिले मे काग्रेस सगठन के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एव सदस्य प्रबन्ध समिति तथा चुनाव सयोजक और नगरपालिका उपाध्यक्ष, प्रधान, उपप्रमुख और कई सहकारी सस्थानो के डाइरेक्टर और अध्यक्ष पद पर सेवा कार्य करते रहे। आप का वर्तमान पता है—रामचन्द्र वैद्य, वार्ड न० १६, भूपालगज, भीलवाडा।

श्री रमेशचन्द्र ओझा, शाहपुरा

श्री रमेशचन्द्र ओझा राजस्थान के पुराने रचनात्मक कार्यकर्ता हैं। उन्होंने अपने जीवन को दरिद्रनारायण की उपासना में लगाया है। जब रियासती जनता राजा-महाराजाओ की निरकुश चक्की में पिस रही थी, तब उन्होंने विद्रोह का झडा बुलन्द किया। शाहपुरा राज्य प्रजामडल के वे जन्मदाताओ में से थे। जब देश स्वतन्त्र हुआ, तब उन्होंने अपने को

रचनात्मक जन सेवा मे लगा दिया । खारीतट सर्वोदय सघ की स्थापना की और चरखे व खादी का सदेश गाव गाव में फैलाया ।

उनकी पत्नी सौ० रमादेवी उनके सेवा कार्यों मे उनके साथ कधे से कधा भिडा कर खडी रही । जेल भी गई और महिला व बाल कल्याण की प्रवृत्तियो का श्री गणेश किया ।

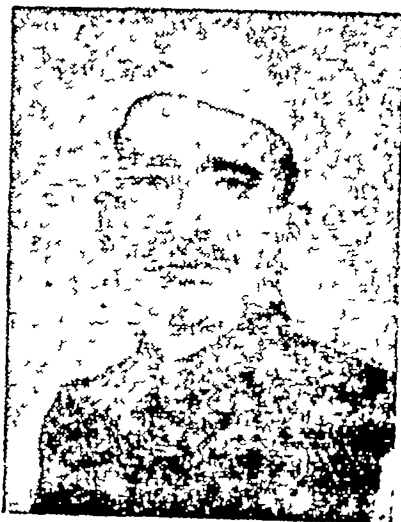
श्री रमेशजी ने हाल के वर्षों मे एक नई प्रवृत्ति का श्रीगणेश किया है । वह सामुदायिक जीवन और सहकारी खेती का एक प्रयोग है । शाहपुरा और केकडी के बीच खारी नदी के तट पर हरिधाम नामक एक ग्राम बसा रहे हैं ।

श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने इस परिवार के बारे मे कुछ वर्ष पूर्व लिखा था कि श्री रमेशचन्द्र ओझा शाहपुरा (राजस्थान) के उन साथियो मे से हैं जिनका सार्वजनिक जीवन मे बडा योग रहा है । जीवन भर इनका सारा परिवार राष्ट्रीय कार्यों मे लगा रहा । राजनैतिक व राष्ट्रीय आन्दोलनो मे इन्होंने तथा इनकी पत्नी श्रीमती रमादेवी ने जेल यातनायें की तथा देशी राज्यो मे होने वाली राजनैतिक पीडाओ को सहन किया । इनके राजनैतिक व राष्ट्रीय कार्यों मे भाग लेने के कारण तत्कालीन शाहपुरा राज्य ने इनके पिता को नौकरी से ही नही हटा दिया था प्रत्युत जो भी थोडी बहुत जमीन थी उससे भी वचित कर दिया ।

श्री ओझा के बेटी और दामाद भी सार्वजनिक कार्य मे जीवन लगा रहे हैं । दामाद विनोबा भावे के भूदान ग्रामदान मे वर्षों से लगे हैं और लडके शाहपुरा नगर मे अच्छी पाठशाला चला रहे हैं । इनका सुपुत्र दुष्यत ओझा कम्युनिष्ट पार्टी का अच्छा कार्यकर्ता है । जन सेवा के लिए कई बार जेल जा चुका है ।

श्री प्रभुदास वैरागी, हमीरगढ़

श्री प्रभुदास वैरागी मेवाड प्रजामण्डल के पुराने कार्यकर्ता है । उन्होने जागीरी क्षेत्रो मे बेगार विरोधी आन्दोलन मे खूब काम किया था । भारत छोडो आन्दोलन मे उन्हें ६ महिने के लिए उदयपुर सेन्ट्रल जेल मे नजरबन्द रखा गया । उनकी १० बीघा जमीन ७ गायें और तीन मकान राज्य ने जब्त कर लिए और मन्दिर के मडपिये के पद से उन्हे बेदखल कर दिया । वे जेल से मुक्त होने के बाद खादी कार्य और लोकसेवी प्रवृतियो मे लगे रहे हैं । वे अपना एक प्राइवेट स्कूल भी चलाते है । हमीरगढ मे समाचारपत्रो की एजेन्सी वर्षो से उनके पास है । वे पत्रो मे समाचार भेजने का काम भी करते है । उनका पता है – हमीरगढ



श्री फतहसिंह राजपूत (यादव) शाहपुरा



श्री फतहसिंह राजपूत का जन्म कोटा मे १ मई १९०८ को श्री उदयसिंह राजपूत के घर हुआ था। उन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से विशारद और साहित्यरत्न की परिक्षाए पास की। वे कोटा राज्य के नार्मल स्कूल मे अध्यापक हो गए थे और १९२७ से ३० तक सिरेमिक के प्रशिक्षण के लिए वृन्दावन रहे। १९३० मे उन्हे फिर क्ले मार्डलिग की ट्रेनिंग के लिए वृन्दावन भेजा गया। वहा वे नमक सत्याग्रह मे शामिल हो गए। उन्हे ७ सितम्बर ३० को गिरफ्तार करके ६ महिने के लिए मथुरा जेल भेज दिया गया। श्री फतेहसिह राजकीय सेवा से अलग कर दिये गए।

झालावाड मे श्री फतेसिंह की राज्य विरोधी प्रवृत्तियो के कारण झालावाड शासन ने १९३९ मे इकलहरा तहसील के खेरखेडा ग्राम मे उनकी परम्परागत जागीर की १०७ बीघा जमीन नीलाम करके दूसरे व्यक्ति को दे दी।

वे कुछ दिन तक नारेली हरिजन आश्रम मे भी रहे और अजमेर भगी बस्ती मे अध्यापन का कार्य किया और हरिजन सेवक सघ की कोटा झालावाड आदि की पाठशालाओ से भी सम्बन्धित रहे। उन्होंने चौमू मे कुछ दिन खादी कार्य भी किया। आजकल एक वकील के साथ लेखक का कार्य कर रहे हैं उनका पता है तहनाल गेट, शाहपुरा

श्री लादूराम व्यास, शाहपुरा

श्री लादूराम व्यास भूतपूर्व शाहपुरा रियासत मे प्रजामण्डल के सस्थापको मे से हैं। उनका जन्म १९०९ मे शाहपुरा मे हुआ। सस्कृत प्रथमा करने के बाद वे राजकीय स्कूल मे अध्यापक हो गए। परन्तु देहातो मे जनता पर राज्याधिकारियो और जागीरदारो के अत्याचार देखकर वे विरोध मे उठ खडे हुए। परिणाम स्वरूप उन्हे राजकीय सेवा से अलग कर दिया गया। उनकी ७५० बीघा जमीन जब्त कर ली गई। १९३७ मे उनका सम्पर्क श्री माणक्यलाल वर्मा मे हुआ और उन्होने श्री रमेशचन्द्र ओझा और श्री लक्ष्मीदत्त काटिया के साथ मिलकर शाहपुरा मे प्रजामण्डल की स्थापना की और उत्तरयायी शासन के लिए कार्य शुरू किये।

१९४२ के भारत छोडो आन्दोलन मे श्री लादूराम व्यास भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत नजरबन्द कर दिए गए। उन्हें शाहपुरा ढिकोलागढ और फिर अजमेर सेण्ट्रल जेल मे १ वर्ष ३ महिने तक रखा गया। श्री लादूराम व्यास ने शाहपुरा मे खादी का प्रचार प्रसार किया और समाचारपत्रो की एजेन्सी लेकर शाहपुरा की जनता म राजनैतिक चेतना फैलाई। उनका पता है शाहपुरा, जिला भिलवाडा।

श्री लक्ष्मीदत्त कांटिया, शाहपुरा

श्री लक्ष्मीदत्त काटिया का जन्म ७ दिसम्बर, १९१५ को शाहपुरा के राज्य-ज्योतिषी परिवार मे हुआ। शाहपुरा मे राजनैतिक चेतना लाने वाले वे भी एक प्रमुख व्यक्ति हैं। अपने मित्र श्री रमेशचन्द्र ओझा और श्री लादूराम व्यास के साथ मिलकर इन्होंने प्रजामण्डल की शाहपुरा मे स्थापना १९३८ मे की थी और राजनैतिक प्रवृत्तियो को आगे बढया था परन्तु श्री लक्ष्मीदत्त काटिया का महत्वपूर्ण कार्य एक पत्रकार के रूप मे रहा है। अजमेर मे प्रकाशित होने वाले नवज्योति, राजस्थान और जोधपुर से प्रकाशित होने वाले प्रजासेवक और रियासती और दिल्ली के हिन्दुस्थान मे उन्होने लगातार शाहपुरा राज्य के शासन की कडी आलोचनाए की और जनता के अभाव अभियोगो को प्रकाश मे लाए। उन्होंने राजस्थान के सभी नेताओ मे सम्पर्क करके शाहपुरा की स्थिति से परिचय कराया और शाहपुरा मे राजनैतिक चेतना का प्रसार करने की दिशा मे सब का लाभ लिया।

१९४२ के अगस्त मे श्री काटिया ने, प्रजामण्डल की ओर से महाराजा को अल्टीमेटम दिया जिसके परिणामस्वरूप वे गिरफ्तार कर लिए गए तथा ढिकोलागढ और अजमेर की जेल मे उन्हे १६ महीने नजरबन्द रहना पडा। श्री काटिया अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजापरिषद के सदस्य थे तथा राजस्थान प्रदेश और जिला कांग्रेस के वर्षों तक सदस्य रहे है।

श्री हेमराज धाकड़, थड़ोदा

श्री हेमराज धाकड का जन्म जून १९१३ मे थडोदा के एक धाकड परिवार मे हुआ। उन्होंने खादी उत्पादन का विधिवत प्रशिक्षण प्राप्त किया और मेवाड मे स्थान स्थान पर खादी उत्पादन केन्द्रो मे खादी का प्रशिक्षण लोगो को दिया। श्री हेमराज का कार्यक्षेत्र मेवाड, डूगरपुर और मध्यप्रदेश रहा है और इनकी मुख्य प्रवृति खादी और रचनात्मक कार्य ही रही है।

परन्तु श्री हेमराज धाकड प्रत्येक राजनैतिक आन्दोलन मे भाग लेते रहे हैं। उन्होंने १९३० मे नमक सत्याग्रह के समय भी काम किया था। राजनीति मे भाग लेने के कारण उन्हे स्कूल की अध्यापकी से अलग कर दिया गया। १९३८ मे प्रजामडल आन्दोलन मे भी धाकड पूर्ण सक्रिय थे। भारत छोडो आन्दोलन मे उन्हे ११ महिने नजरबन्द रखा गया था।

स्वाधीनता के बाद श्री धाकड खादी के काम मे लगे हैं।

स्वर्गीय तखतसिंह बाबेल, कानोड़

सन् १९४१ के जनवरी माह में प्रजामंडल-कानोड की स्थापना के समय सार्वजनिक क्षेत्र में आये और प्रजामंडल के अध्यक्ष बनाये गये। १९४२ के आन्दोलन में ८ माह २४ दिन जेल में रहे। जेल से छूटने के बाद राजनीति से वर्षों तक दूर रहने के पश्चात् ग्राम के सरपंच बने।

भंवरलाल डूंगरवाल, कानोड़

पं० श्री उदय जैन के लघु भ्राता श्री भवरलाल ने १९४२ के समय प्रजामंडल में प्रवेश किया। ४ माह ४ दिन तक जेल में रहे और व्यापार से वंचित रहे। जेल यात्रा के बाद से अब तक कांग्रेस का साथ देते रहे हैं।

माधवलाल नन्दावत, कानोड़

सन् १९४२ के आन्दोलन में भाग लेने के फलस्वरूप कुछ दिनों तक जेल में रहे। जेल से मुक्त होने के बाद वे राजनीति से अलग होगये। काफी वर्षों पूर्व आपका देहावसान हो चुका है।

अम्बालाल नन्दावत, कानोड़

श्री जवाहर विद्यापीठ (तत्कालीन प्राथमिक विद्यालय) की सेवा के समय से प्रजा-मंडल में प्रवेश। सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में वर्षों तक कार्य किया। सन् १९४२ के आन्दोलन में कुछ दिनों की जेल यात्रा की। इस मध्य वेतन से वंचित रहे। तब से अब तक कांग्रेस को सक्रिय सहयोग देते रहे हैं।

चांदमल भनावत, कानोड़

१९४२ के आन्दोलन से सार्वजनिक क्षेत्र में प्रवेश किया। कुछ दिनों की जेल यात्रा और एक वर्ष की वकालत की सनद जब्त। ठिकाना कानोड ने आय के अन्य साधनों में भी बाधाएं दी। जेल यात्रा के बाद श्री उदय जैन के अनन्य साथी की तरह बराबर सार्वजनिक व राजनैतिक प्रवृत्तियों में योग देते रहे। पार्टी के वकील व कोषाध्यक्ष बने रहे। जागीरी अधिग्रहण के पूर्व व पश्चात् आज तक बराबर गतिशील हैं और कांग्रेस के निष्ठावान सक्रिय कार्यकर्ता हैं। कानोड की ग्राम पंचायत के वर्षों तक सरपंच रहे। वर्तमान में वल्लभनगर ब्लाक कांग्रेस कमेटी के सदस्य हैं।

राजस्थान में

स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी

• स्वतंत्रता संदेश वाहक

• सत्याग्रही और

• स्वातंत्र्य-सैनिक

कुशलगढ़

श्री डाडमचन्द डोषी कुशलगढ़



जन्म १ दिसम्बर १६१२

वर्तमान पता ग्राम भगतपुरा
पचायत मूंदडी,
पोस्ट कुशलगढ
वाया उदयगढ ।

कुशलगढ मे राजनैतिक चेतना फैलाने और लोकजागरण लाने में श्री डाडमचन्द डोषी का प्रमुख स्थान रहा है। उन्होंने अपने मित्र सर्व श्री छब्बालाल कावडिया, भवरलाल निगम, उच्छवलाल मेहता और वर्द्धमान गादिया से मिलकर १९४४ मे प्रजामडल की स्थापना की थी और प्रजामडल की ओर से इन्होंने एक ओर जनता को नागरिक अधिकार और अनिवार्य सुविधाए देने के लिए आन्दोलन किया तो दूसरी ओर उन्होंने प्रौढ पाठशालाए और चलते फिरते दवाखाने, शुरू करवाए और सहकारी समितियों तथा नगरपालिकाओ को विकसित और सगठित करने का काम हाथ मे लिया।

श्री डाडमचन्द डोषी अपनी शिक्षा समाप्त करने के बाद झाबुआ राज्य की राजकीय सेवा मे लग गए थे। उनके विचार राष्ट्रीयता से भरे हुए थे। राजकीय सेवा में रहते हुए भी वे झाबुआ राज्य के विरोध मे जनता द्वारा होने वाले हर आन्दोलन मे भाग लेते रहते थे। जब झाबुआ राज्य से सर्व श्री कन्हैयालाल वैद्य, बालेश्वरदयाल मामाजी और भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी का निर्वासन हुआ तो डाडमचन्द डोषी ने उन्हें अपने यहा ठहरा लिया। इसी अपराध मे उन्हे राजकीय सेवा से अलग कर दिया गया।

१९३७ से डाडमचन्द डोषी व्यापार के सिलसिले मे गुजरात राज्य के झालोदा ग्राम मे रहने लग गए थे। भारत छोडो आन्दोलन के समय उन्होंने दोहद जिले के गाव गाव मे घूम घूम कर गाधीजी के करो या मरो का सदेश घर घर मे पहुचाया था। दोहद मे उन्होंने बडे साहस के साथ कडे पहरे मे कलेक्टरेट की तीसरी मझिल पर चढ कर तिरगा झडा फहरा दिया था। वे वही घटनास्थल पर गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हें छ महीने की सजा और १००/– रुपए जुर्माना का दण्ड दिया गया।
जुर्माना न देने पर २ महिने की सजा भोगनी पडी। श्री डाडमचन्द डोषी ने ये आठ महिने साबरमती जेल में निकाले। जेलमें इनका सपर्क सर्व श्री गुलजारीलाल नन्दा, अशोक मेहता और विष्णु भाई जैसे लोगों से हुआ।

श्री डाडमचन्द डोषी जेल से मुक्त होने के बाद ६ महिने तक राष्ट्रपिता महात्मा गाधी के सान्निध्य मे रहे और सार्वजनिक जीवन के प्रत्यक्ष पाठ लिए ।

सेवाग्राम से श्री डाडमचन्द डोषी स्थायी रूप से अपनी मातृभूमि की सेवा करने के इरादे से कुशलगढ आ गए । इन्होने आदिवासी क्षेत्रों मे जागृति लाने के लिए जलधर और खेरावारी ग्रामो मे दो स्कूल शुरु किए । शिक्षा के साथ साथ उन्होने अन्य रचनात्मक कार्य भी चालू कर दिए ।

सन् १९४४ मे प्रजामडल की विधिवत् स्थापना हो जाने के बाद उन्होने प्रजामडल की प्रवृतिये चारो ओर फैलानी शुरु करदी । १९४६ मे इन्होने हरिजन उद्धार का कार्य हाथ मे लिया और अस्पृश्यता निवारण की दिशा मे बहुत कार्य किया ।

१९४६ मे श्री पन्नालाल त्रिवेदी भी कलकत्ते से कुशलगढ आगये थे । उन्हे प्रजामडल का अध्यक्ष बनाया गया । १९४८ मे जब कुशलगढ मे लोकप्रिय मन्त्रिमडल बना तब सर्व श्री भवरलाल निगम और वर्द्धमान गादिया मिनिस्टर बनाए गए थे ।

श्री डोषी ने कुशलगढ मे गाधी आश्रम की स्थापना का विचार बनाया और मित्रो के सहयोग से गाधी आश्रम की स्थापना हो गई । दोहद के कर्मठ कार्यकर्ता सर्वश्री सुखदेव काका के हाथो से उसका शिलान्यास हुआ । श्री डोषी और श्री पन्नालाल त्रिवेदी उसकी व्यवस्था का सचालन करते आए है । गाधी आश्रम के साथ एक खादी केन्द्र भी आरम्भ कर दिया गया है ।

अपनी उम्र के ४३ वे वर्ष मे श्री डोषी ने जातिपाति के बन्धन तोड कर जमनाबाई नाम की एक आदिवासी महिला से विवाह किया । इन दिनो मे उनका समय खेती की ओर तो लगता ही है लेकिन वे जनता के हर कार्य मे सदा सर्वदा सबसे आगे खडे मिलते है । सामाजिक कार्यक्रमो मे और शैक्षणिक कार्यो मे वे उसी उत्साह और लगन से आज भी लगे रहते है ।

कुशलगढ़ मे
प्रजामण्डल के प्रमुख कार्यकर्ता

१. श्री झब्बालाल कावडिया	१० श्री रामपाल सोनी	१९ श्री शोभागमल डोषी
२. ,, उच्छवलाल मेहता	११ ,, कन्हैयालाल मेहता	२० ,, शकरदेव पजाबी
३ ,, भवरलाल निगम	१२ ,, बापूलाल लखावत	२१ ,, नाथाभाई भामर
४ ,, वर्द्धमान गादिया	१३ ,, कातिलाल शाह	२२ ,, धावर भाई सार
५ ,, डाडमचन्द डोषी	१४. ,, पन्नालाल शाह	२३ ,, हडियाभाई बडवास
६ ,, पन्नालाल त्रिवेदी	१५ ,, शातीलाल सेठ	२४ ,, बरसीगभाई रसोडी
७ ,, भैरूलाल तलसेरा	१६ ,, गुमानमल लखावत	२५ ,, बरसीगभाई मुनारिया
८. ,, खेमराज श्रीमार	१७ ,, सुजानमल शाह	२६. ,, नाथूकेहरी सबलपुरा
९ ,, कन्हैयालाल जैन	१८ ,, किशनलाल डोषी	२७ ,, कमजीभाई संदलाई

राजस्थान में

स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी

स्वतन्त्रता के संदेश वाहक

सत्याग्रही और

स्वातंत्र्य - सैनिक

करौली

श्री स्वर्गीय कल्याण प्रसाद गुप्ता, करौली

जन्म . १८ सितम्बर १९०५

निधन सितम्बर १९५८

करौली राज्य मे लोकजागरण और राजनैतिक चेतना लाने वाले कुवर मदनसिंह मु शी त्रिलोकचन्द और ठाकुर ओकारसिंह के साथ स्व० कल्याणप्रसाद गुप्ता का नाम भी समान महत्व वाले व्यक्ति की तरह जुडा हुआ है। उनका जन्म करौली के एक सामान्य अग्रवाल परिवार मे १८, सितम्बर, १९०५ को हुआ था। अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पूरी करके वे राजकीय सेवा मे लग गए लेकिन जब कुवर मदनसिंह ने करौली मे लोकजागरण की लहर पैदा की और प्रजामण्डल की स्थापना की गई तब कल्याणप्रसाद गुप्ता भी सरकारी नौकरी छोड कर सन् १९३५ से ही उनके साथ लग गए। उन्होंने १९३५ से ३८ तक वकालात की थी लेकिन उनकी राजनैतिक और राजद्रोही प्रवृत्तियो के कारण वकालात का लाइसेंस भी सरकार ने जब्त कर लिया।

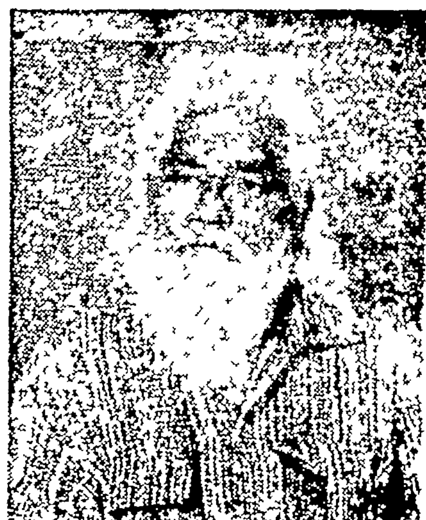
श्री कल्याणप्रसाद गुप्ता ने उत्तरदायी शासन, नगरपालिकाओ के विकास, बेगार बन्द और सूअर मारने तथा राज्यभाषा हिन्दी के लिए समय समय पर आन्दोलन किए और आन्दोलनो का नेतृत्व किया। १९३७ मे उन्हें राजद्रोह के अपराध मे गिरफ्तार किया गया। उन पर मुकदमा चलाया गया लेकिन २२ दिन बाद मुकदमा उठा लिया गया और उन्हें २२ दिन बाद जेल से मुक्त कर दिया गया। जेल से मुक्त होने पर कल्याणप्रसाद गुप्ता ने अजमेर के पत्रों मे, करौली शासन के काले कारनामें प्रकाशित करने शुरू किए। उनके लेखो से पहली बार लोगो को करौली की हालात का पता लगा।

१९४२ की अगस्त क्रांति के समय आपको भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत गिरफ्तार कर ३ महिने के लिए जेल भेज दिया गया।

स्वाधीनता के बाद श्री कल्याणप्रसाद गुप्ता विशुद्ध जन–सेवा मे लगे रहे। करौली पत्थर की खानो पर काम करने वाले मजदूरो का उन्होंने सगठन किया और उनकी स्थिति सुधारने मे अपने आपको अधिक से अधिक लगा दिया। उन्होंने पत्थर के ठेकेदारो के द्वारा प्रभोलन को ठुकरा कर मजदूरो के पक्ष का ही समर्थन किया।

श्री कल्याणप्रसाद गुप्ता वर्षो तक करौली प्रजामडल के मत्री तथा नगर काग्रेस और इलाका काग्रेस के भी मन्त्री रहे। वे प्रदेश कांग्रेस कमेटी मे भी करौली के प्रतिनिधि के रूप मे वर्षो तक सदस्य रहे। वे अपने जीवन के अतिम क्षण तक करौली की जनता के उत्थान और विकास के लिए कार्य करते रहे। सितम्बर १९५८ मे उनका देहावसान हो गया।

हकीम किशनप्रसाद भटनागर उर्फ नन्ने बाबू



श्री हकीम किशनप्रसाद भटनागर उर्फ नन्ने बाबू का जन्म सन् १९०५ मे हुआ । करौली मे १९३५ मे प्रजामण्डल की स्थापना के साथ ही नन्ने बाबू कुवर मदनसिह, मुशी त्रिलोकचन्द और श्री कल्याणप्रसाद गुप्ता के सम्पर्क मे आए और राजनैतिक कामो मे उत्साह से भाग लेने लग गये । प्रजामडल का यह कर्मठ कार्यकर्ता राज्य की आखो मे लम्बे समय से खटक रहा था । एक दिन पुलिस ने उन्हे चोरी के झूठे मुकदमे मे फसाकर अदालतो मे खडा कर दिया । नन्ने बाबू को आठ महीने का कठोर कारावास भुगतना पडा ।

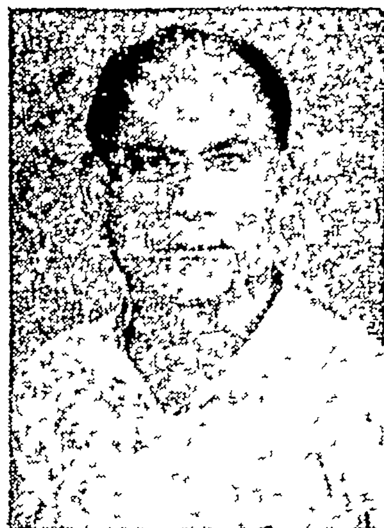
नन्ने बाबू को यूनानी चिकित्सा और आयुर्वेदिक चिकित्सा का ज्ञान है । उन्होने कई पेटेंट औषधियो का आविष्कार भी किया है । श्री नन्नेबाबू ने करौली मे अस्पृश्यता निवारण और पुस्तकालय प्रचार की दिशा मे बहुत ठोस कार्य किया था । वे आज भी दिन रात सेवा-कार्यों मे लगे रहते है । उनका पता है—अनाज मडी करौली ।

श्री भँवरलाल कवि

श्री भवरलाल कवि का जन्म ३ मार्च, १९०३ को हुआ था । उनके पिता करौली के राजकवि थे और उन्हे जागीर तथा राजकीय प्रतिष्ठा प्राप्त थी । कुवर मदनसिह जी के सम्पर्क में आते ही उनमे दबी हुई राष्ट्रीय भावनाए जाग्रत हो गई और उन्होंने स्वदेशी का व्रत लेकर खद्दर पहनना शुरू कर दिया । श्री भवरलाल कवि राज्य विरोधी और राजनैतिक कामो मे बहुत उत्साह से भाग लेते थे । महाराजा ने उन्हे बुलाकर समझाया । उनके न मानने पर उनके पिता का सारा राजसी सम्मान छीन लिया और जागीर जब्त करली । विवश होकर भवरलाल कवि १९२५ मे राजस्थान चर्खा सघ मे काम करने चले गए । उन्होने चर्खा सघ और हरिजन सेवा सघ मे ३५ वर्ष तक कार्य किया । जयपुर प्रजामडल के आन्दोलन के समय तोरावटी मे उनका सहयोग महत्वपूर्ण था ।

पिछले १२—१३ वर्षों से भवरलाल कवि करौली मे ही है । उनकी आखो की ज्योति बहुत कमजोर हो गई है ।

श्री चिरंजीलाल शर्मा, करौली।



जन्म . सन १९११

वर्तमान पता ग्राम सेवा मंडल करौली

श्री चिरंजीलाल शर्मा का जन्म सन् १९१२ में भूतपूर्व करौली राज्य के मर्पोटरा ग्राम में हुआ था। उन्हें संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी की शिक्षा दी गई थी। उनमें बचपन से ही राष्ट्रीय विचार और देशभक्ति की भावनाएं विकसित होने लग गई थी। १९३० से उन्होंने सार्वजनिक प्रवृत्तियों में भाग लेना शुरु कर दिया था। नमक सत्याग्रह में भाग लेने के लिए श्री चिरंजीलाल शर्मा अजमेर चले गए थे और १९३२ में उन्होंने सत्याग्रह में सक्रिय रूप से भाग लिया। उनकी पहली गिरफ्तारी अजमेर में हुई। उन्हें चार महीने की सजा दी गई।

अजमेर जेल से मुक्त होते ही वे अपने जन्म स्थान करौली पहुंचे। यहां उन्होंने राष्ट्रीय प्रवृतियें शुरु करनी चाही। उन्होंने राष्ट्रीय विचार के कार्यकर्ताओं को संगठित करके राजनैतिक संस्थाओं की नींव रखनी चाही परन्तु वे करौली राज्य द्वारा गिरफ्तार कर लिए गए और उन्हें ३ महीने करौली जेल में रहना पड़ा।

१९३६ में वे राजस्थान चर्खा संघ में काम करने जयपुर चले गए, और १० वर्ष तक चर्खा संघ का काम किया। १९४६ में उन्होंने करौली में प्रजामंडल की स्थापना की और उसके दो वर्ष तक अध्यक्ष रहे। १९४८ में श्री शर्मा मत्स्य संघ बनने पर मंत्री बना दिए गए। १९४२ में श्री शर्मा जयपुर में गिरफ्तार हो गए थे और १५ दिन के बाद छोड़ दिए गये। १९५७ में श्री शर्मा राजस्थान सरकार द्वारा राजस्थान खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के सचिव नियुक्त किए गए जहां उन्होंने १२ वर्ष तक कार्य किया।

श्री शर्मा ने १९४६ में करौली में ग्रामसेवा मंडल की स्थापना की और उसके अन्तर्गत खादी उत्पादन और ग्रामोद्योग के कार्यों की शुरुआत की। चर्खा संघ और खादी के काम में लग जाने के कारण उन्हें लम्बे समय तक करौली से बाहर ही रहना पड़ा है। १९६७ में खादी ग्रामोद्योग बोर्ड से अवकाश लेने के बाद करौली को उन्होंने फिर अपना कार्य क्षेत्र बनाया है और ग्राम सेवा मंडल के द्वारा खादी उत्पादन और ग्रामोद्योग की प्रवृतियें वहां चला रहे है।

श्री रामगोपाल करौली

श्री रामगोपाल की उम्र ६३ वर्ष की है। वे जाति से वैश्य हैं और स्व० कल्याण प्रसाद गुप्त के छोटे भाई हैं। अपने भाई के साथ इन्होंने भी १६३५ मे राजनैतिक कामों मे भाग लेना शुरु कर दिया था। १६३७ मे श्री रामगोपाल भी अपने भाई के साथ राजद्रोह के अपराध मे गिरफ्तार कर लिए गए थे और २२ दिन बाद मुकदमा वापस लेने पर उन्हें भी कल्याणप्रसाद गुप्ता के साथ रिहा कर दिया गया था। स्वाधीनता के बाद श्री रामगोपाल ने सहकारिता आन्दोलन मे कार्य किया। वे सवाई माधोपुर सहकारी बैंक के डाईरेक्टर रहे और जिला सहकारी संस्थान मे ६ वर्ष तक उपाध्यक्ष रहे। विगत १२ वर्षों से श्री रामगोपाल गुनेसरा ग्राम के सरपच हैं। उनका पता है बडा बाजार करौली।

श्री श्यामसुन्दर शर्मा



श्री श्यामसुन्दर शर्मा का जन्म अगस्त १६१३ मे करौली के सामान्य ब्राह्मण परिवार मे हुआ। इनके पिता श्री अमरनाथजी ने इन्हे सस्कृत और हिन्दी की शिक्षा दिलाई। वे १६३०-३२ मे नमक सत्याग्रह मे भाग लेने के लिए अजमेर पहुच गए और वहा जाकर सत्याग्रह में भाग लिया। उन्हे ६ महिने की सजा अजमेर केन्द्रीय कारागृह मे काटनी पडी।

जेल से मुक्त होने पर वे करौली आ गए। रियासतो मे रचनात्मक कार्य भी राजद्रोह और राज्य विरोधी काम समझा जाता था। किन्तु श्री श्यामसुन्दर शर्मा हरिजन बालको को पढाने व खादी का कार्य करने मे पूरा समय लगाने लगे। वे इनके साथ साथ राजनैतिक कामो मे भी बराबर भाग लेते रहे।

देश की स्वाधीनता के बाद श्री श्यामसुन्दर शर्मा ग्राम सेवा मण्डल करौली के साथ सम्बद्ध हो गए और खादी उत्पादन तथा ग्रामोद्योग की प्रवृतियो के विकास मे उन्होंने अपने आपको लगा दिया। उनकी आयु इस समय ६० वर्ष की है। पर आज भी वे ग्राम सेवा मडल करौली में उत्साह कार्य कर रहे हैं।

राजस्थान में

स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी

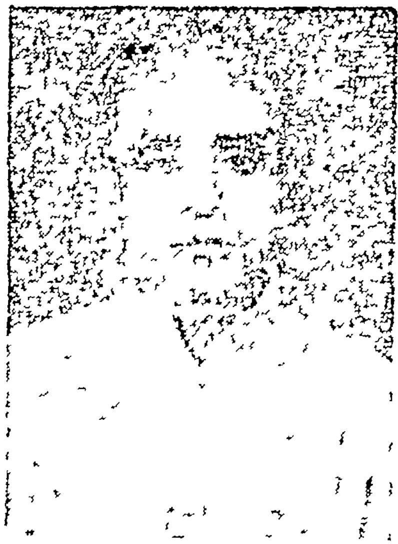
स्वतन्त्रता के संदेश वाहक

सत्याग्रही और

स्वातंत्र्य - सैनिक

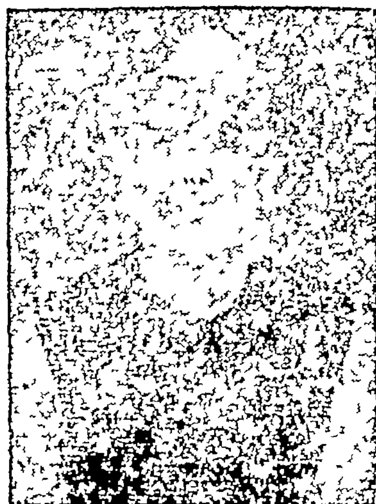
कोटा

श्री कंवरलाल जेलिया



श्री कवरलाल जेलिया का जन्म ८ नवम्बर १९२३ को कोटा के सागोद मे हुआ था। अपने गाव मे मिडिल तक शिक्षा प्राप्त करके व १९३९ मे गो-मेवा-चर्मालय नालवाढी वर्धा मे प्रशिक्षण के लिए चले गए। १९४१ मे वे वर्धा मे ही काग्रेस के सदस्य बन गए। १९४१ मे वे कोटा आ गए और अगस्त क्राति के कार्यों मे मित्रो को सहयोग दिया। ४३-४४ मे उन्होने मेवाड मे हरिजन शिक्षा और प्रजा-मडल का कार्य किया। ४५-४७ तक वे कोटा प्रजामडल के कार्यालय मत्री रहे। उन्होने १९४८ मे कोटा राज्य दलित वर्ग सघ की स्थापना की। वे राजस्थान दलित वर्ग सघ के प्रधानमत्री और अध्यक्ष भी रहे हैं। १९५२ मे श्री जेलिया कोटा काग्रेस के प्रधानमत्री रहे हैं। वे लाडपुरा सुरक्षित सीट से राजस्थान विधानसभा के सदस्य भी ५२ से ५७ तक रहे। उनका पता है विक्रम चौक, लाडपुरा कोटा।

श्री केदारनाथ शर्मा



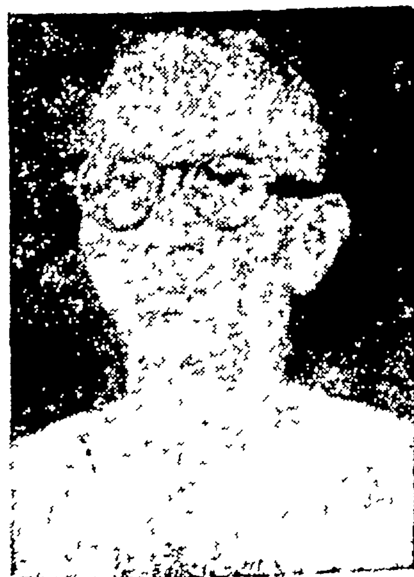
श्री केदारनाथ शर्मा मूलरुप से सवाई माधोपुर के रहने वाले हैं। वे जाति से सनाढ्य ब्राह्मण हैं और कथा वाचन तथा पडिताई का काय करते रहे हैं। उन्होने १९३५ से ही राष्ट्रीय प्रवृतियो मे भाग लेना शुरू कर दिया था। १९३९ मे जयपुर राज्य प्रजामडल के नागरिक अधिकार सत्याग्रह मे उन्होने भाग लिया। ४ अप्रैल १९३९ को वे गिरफ्तार कर लिए गये। श्री केदारनाथ २२ दिन तक झालाना कैंप मे अडर ट्रायल रहे और ४ महीने की उन्हे सजा दी गई। अपनी सजा उन्होंने मोहनपुरा जेल मे पूरी की।

श्री केदारनाथ सदा राष्ट्रीय प्रवृतियों मे लगे रहे हैं और प्रजामडल तथा काग्रेस का कार्य बराबर करते रहे हैं। आज भी उनकी जीविका कथावाचन और पाठ पूजा से ही चलती है। श्री केदारनाथ पिछले कई वर्षों से कोटा मे ही रहते हैं। उनका वर्तमान पता है—मेहरपाडा पाईं माटा, बहादुर बाजार, कोटा।

श्री छीतरसिंह

श्री छीतरसिंह अन्ता के रहने वाले हैं। उनका राजनैतिक जीवन १९२६ से ही शुरु हो गया था। प्रारंभ मे कोटा राज्य प्रजामडल के अतर्गत प० नयनूराम शर्मा, गोरीलाल बडीसाज और अभिन्न हरि के नेतृत्व मे उनके सहयोगी के रुप मे कार्य किया। उनकी प्रेरणा के श्रोत श्री विजयसिंह पथिक थे। सन १९३० मे ये मध्यभारत मे नरसिंहगढ चले गए और वहा इन्होंने मध्यभारत देशी राज्य लोकपरिषद की शाखा स्थापित की। सन् ३० से ४२ तक उन्होंने मध्यभारत देशी राज्य लोकपरिषद का कार्य किया। भारत छोडो आन्दोलन मे उन्होंने दिल्ली के कार्यकताओ को अपना योग दिया। देश की स्वाधीनता के वाद श्री छतरसिंह अपनी मातृभूमि अन्ता आ गए हैं। उनका पता है, जयभारत श्रमदान सदन, अन्ता (जिला कोटा)।

श्री प्रभुलाल विजय



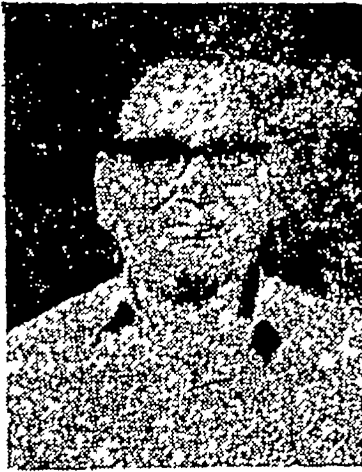
श्री प्रभुलाल विजय की उम्र इस समय ७० वर्ष की है। आज मे ४३ वर्ष पहले १९३० मे इन्होने राष्ट्रीय आन्दोलन मे भाग लेना शुरु कर दिया था। सन् ३० मे प० नयनूराम शर्मा के साथ इन्होने मित्र मडल की स्थापना करके राष्ट्रीय प्रवृतिये शुरुकी थी। १९३५ मे श्री विजय प्रजामण्डल के सदस्य बने और तव मे उत्तरदायी शासन के लिए बरावर कार्य करते रहे। १९४५ मे इन्होंने आजाद हिन्द दल की स्थापना की और उसके प्रधानमन्त्री चुने गए। १९४९ मे ये देशी राज्य लोक परिषद के सदस्य चुने गये और सन् ५२ तक लगातार सदस्य रहे।

श्री विजय ने भारत छोडो आन्दोलन मे, कोटा राज्य पुलिस एक्ट की धारा ३० के विरुद्ध आन्दोलन मे, इन्द्रगढ, पीपलदा, खातोली कोठरियात के जागीर विरोधी किसान आन्दोलनो मे, शाहवाद मे गल्ले की कमी के आन्दोलन मे, उत्तरदायी शासन आन्दोलन मे तथा गोआ सत्याग्रह आन्दोलन मे भाग लिया। इन्होने जागीरी जनता एव किसानो के सगठन बनाए, जगह जगह सम्मेलन बुलाए और प्रदर्शन किए।

सन् ४५ मे कोटा राज्य पुलिस एक्ट की धारा ३७ तोडने पर श्री विजय को ७ दिन की सजा हुई। आजकल श्री विजय सोशलिस्ट पार्टी मे हैं और १९५३ मे ट्रेड युनियन का कार्य कर रहे हैं। वे अपने छोटे भाइयो पर आश्रित हैं और लोकहित मे अपने आपको खपा रहे हैं। उनका पता है—सोशलिस्ट पार्टी, रामपुरा कोटा।

श्री नाथूलाल जैन

जन्म—29 दिसम्बर 1919



वर्तमान पता—सदस्य राजभाषा विधायी आयोग, विधि मन्त्रालय, भारत सरकार, भगवानदास रोड, नई दिल्ली–1

श्री नाथूलाल जैन का जन्म २९ दिसम्बर, १९१९ को कोटा मे श्री मूलचद जैन के यहा हुआ। उनका शिक्षण कोटा, बनारस और इन्दौर मे हुआ। श्री जैन अत्यत मेघावी छात्र थे और मैट्रिक मे एम० ए०, एल० एल० बी० तक उन्होने सदा प्रथम श्रेणी मे ही परीक्षाए उत्तीर्ण की। वे विद्यार्थी काल मे ही राष्ट्रीय आन्दोलन मे भाग लेने लग गए थे। १६ वर्ष की आयु मे उन्होंने १ अगस्त ३५ को तिलक दिवस पर कांग्रेस की सक्रिय सदस्यता ली। वे प० नयनूराम शर्मा और प० अभिन्न हरि के साथ अपने विद्यार्थी काल से ही प्रजामडल की प्रवृतियो मे सक्रिय भाग लेते रहे थे। कोटा राज्य ने उनकी राजनैतिक गतिविधियो के कारण उनको दिया जाने वाला सरकारी वजीफा वद कर दिया था। १९३८ मे मागरोल मे आयोजित प्रजामडल के पहले अधिवेशन मे श्री जैन १०० स्वय सेवको के दलपति के रुप मे सम्मिलित हुए।

भारत छोडो आन्दोलन के समय श्री नाथूलाल जैन इन्दौर के होलकर कॉलिज मे एम० ए०, एल० एल० बी की फाइनल परीक्षा की तैयारी कर रहे थे। ८ अगस्त ४२ को कांग्रेस महासमिति की बैठक मे उन्होने कोटा राज्य प्रजामडल के कार्यकर्त्ता के रुप मे भाग लिया। वहाँ से लौटने के बाद उन्हे होलकर कॉलिज से ही नहीं होल्कर राज्य भी से निष्कासित कर दिया गया।

इन्दौर से कोटा आने पर श्री नाथूलाल जैन ने देखा कि सर्व श्री अभिन्न हरि शभुदयाल सक्सेना, वेणी माधव शर्मा आदि गिरफ्तार हो चुके हैं। उन्होंने अगस्त आन्दोलन की बागडोर अपने हाथो मे ली और कोटा की युवा शक्ति को नेतृत्व दिया। सारे भारत मे कोटा ही एक ऐसा नगर था जिसमे जनता ने सेना एव पुलिस को निकाल बाहर कर दिया और नगर का शासन अपने हाथ मे ले लिया। लगभग १५ दिन तक कोटाकी कोतवाली पर तिरगा फहराता रहा।

सन् ४२–४३ मे कोटा अगस्त क्राति मे भूमिगत होने वाले लोगो का केन्द्र स्थल बन गया।। अजमेर जेल तोडकर भागने वाले ज्वालाप्रसाद तथा मध्यप्रदेश और दिल्ली के अनेक नेता श्री जैन की अतिथि रहे। अवैध पत्रिकाओ एव बुलेटिनो के प्रकाशन एव उनके प्रचार प्रसार का कार्य्य उन्हे ही सौपा गया।

श्री नाथूलाल जैन को फरवरी ४३ मे अजमेर की पुलिस ने गिरफ्तार किया बाद मे व पुन इसी वर्ष कोटा मे भारत सुरक्षा कानून के अतर्गत नजरबद रखे गए।

विद्यार्थी सगठन और प्रजामडल के अतर्गत भारत छोडो आन्दोलन के बाद श्री नाथूलाल जैन एक स्वतत्र और निर्भीक पत्रकार के रूप मे उभर कर सामने आए। प्रारम्भ मे उन्होंने श्री अभिन्न हरि के पत्र लोक सेवक मे सपादन का कार्य किया और बाद प दीनबन्धु के नाम से अपना स्वतत्र साप्ताहिक शुरू किया। दीनबन्धु ने राजपूताने के रियासती आन्दोलनों को बहुत बल पहुचाया। बीकानेर की जनता के अभाव अभियोगो को नकर जो अग्र लेख दीनबन्धु ने लिखे उससे बीकानेर की सरकार बौखला उठी। दीनबन्धु के बीकानेर प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिए गए और श्री नाथूलाल जैन को गिरफ्तार करने के बीकानेर के वारट कोटा भेजे गए। सरकार ने प्रेस एक्ट के अधीन दीनबन्धु से कई बार जमानतें ली और जब्त की। १९४५ मे श्री नाथूलाल जैन ने जयहिंद नाम से दूसरे पत्र का सपादन प्रकाशन किया। इस पत्र ने तत्कालीन जन-आन्दोलन मे बडी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की और साम्प्रदायिक शक्तियो मे भी जम कर लोहा लिया।

कोटा राज्य मे विधान बनाने के लिए एक विधान निमातृ परिषद का निर्माण हुआ जिसके अध्यक्ष प्रसिद्ध न्याय शास्त्री श्री पी० एन० सप्रू थे। नाथूलाल जैन इस मे प्रजामडल क प्रतिनिधि तथा सचिव सदस्य नियुक्त हुए। इस परिषद ने पूर्ण उत्तरदायी शासन का विधान तैयार किया था। परन्तु घटना चक्र तीव्रता से घूम रहा था। राजस्थान के एकीकरण का प्रथम चरण कोटा मे पूरा हुआ। बाद मे मेवाड भी इसी सघ मे सम्मिलित हो गया।

राजस्थान बनने के बाद प्रदेश मे पहली बार कांग्रेस का गठन हुआ और नाथूलाल जैन कोटा मे अध्यक्ष बनाए गए। श्री जैन १९४८ तक काग्रेस महासमिति के सदस्य रहे। उन्होंने महासमिति मे राजप्रमुखो का पद समाप्त करने के प्रस्ताव रखे। १९६१ मे प्रदेश काग्रेस के अधिवेशन मे उन्होंने राजाओ के प्रिवीपर्स समाप्त करने का प्रस्ताव रखा।

पिछले कुछ वर्षों से श्री जैन कोटा नगर न्यास के अध्यक्ष थे। आजकल वे भारत सरकार के विधि मत्रालय द्वारा गठित राजभाषा विधायी आयोग के सदस्य हैं और अधिकांश समय दिल्ली ही रहते है।

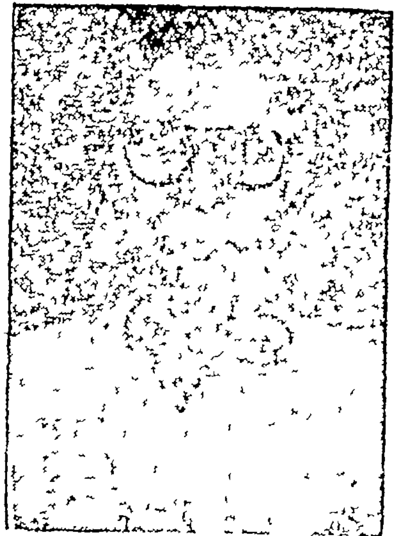


श्री बागमल बांठिया

श्री बागमल बाठिया अपने समय मे अत्यन्त उर्जाओ से भरे हुए गति शील नौजवान रहे हैं। उन्होने एम० काम०, एल० एल० बी० तक शिक्षा प्राप्त की है। जुलाई ४० मे इनकी शिक्षा समाप्त हुई। छात्र जीवन मे इन्होंने वर्धा, बम्बई, वणी, चान्दा, हिंगनघाट मे अपने छात्र साथियो के सहयोग से अगस्त क्रान्ति का कार्य भूमिगत रहकर किया। इसी दौरान मे कोटा के उत्तरदायी शासन आन्दोलन मे श्री बाठिया कोटा मे गिरफ्तार कर लिए गए और १ महीना १६ दिन जेल मे रहे। १९४६ मे श्री बाठिया भारत की क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बन गए। उन्होने ट्रेड युनियन सगठनो का भी काम किया।

सन् १९४७ से श्री बाठिया ने लखनऊ के विकली हिन्दुस्तान, दैनिक नवजीवन दिल्ली के हिन्दुस्तान और इडियन एक्सप्रेस मे १९६६ तक सम्पादकीय काय किया। इस बीच मशाल और चोइस नाम के अपने स्वय के पत्र भी निकाले और प्रेस लगाया। अब वे १९७२ से पुन कोटा आ गए हैं और प्रयत्न मे हैं कि यहां सक्रिय रुप से कुछ रचनात्मक कार्य करें। उनका पता है—३६८ रामपुरा कोटा

श्री बद्री प्रसाद शर्मा



श्री बद्री प्रसाद शर्मा मूलरुप से भरतपुर के कस्वा नगर के निवासी हैं। इनकी शिक्षा बबई मे हुई। मैट्रिक परीक्षा पास करते ही १९३० मे श्री बद्रीप्रसाद शर्मा बबई मे नमक सत्याग्रह मे शामिल हो गए। इन्हे साढे सात महीने की सजा दी गई और इन्हे यरवदा जेल भेज दिया गया। १९३५ मे ये बम्बई से अपनी मातृभूमि नगर भरतपुर आए। १९३९ मे प्रजा परिषद ने जब जिम्मेवार हुकूमत आन्दोलन शुरू किया तो श्री बद्रीप्रसाद शर्मा ने अछनेरा कैम्प से ८ सत्याग्रहियो सहित डीग आकर सत्याग्रह किया। इन्हे गिरफ्तार कर लिया गया। इन्हें १½ वर्ष की सजा दी गई। १९४२ मे श्री बद्री प्रसाद शर्मा को कामा मे गिरफ्तार करके ५ दिन हवालात मे रखा और फिर दो महीने के लिए नजरबन्द कर जेल भेज दिया गया।

१९५५ में कुछ सैद्धान्तिक मतभेद होने के कारण उन्होने कांग्रेस छोड दी और राजनीति से सन्यास ले लिया। वे भरतपुर से कोटा चले आए।

उनका पता है १/१/२३० विक्रम चौक, कोटा।

श्री भैरवलाल काला बादल



श्री भैरवलाल काला बादल का जन्म ४ सितम्बर, १६२० को कोटा के सारथल जागीर मे काकोडी खेडा ग्राम के वियावान जगल मे श्री कालूलाल मीना नाम के कृषक की झोपडी मे हुआ। इनके माता पिता का बचपन मे ही देहान्त हो गया और भैरवलाल अपने छोटे भाई के साथ अनाथो की तरह गाव से गाव भटकने लग गये। इन प्रतिकूल और निराश्रित परिस्थितियो मे काला बादल ने अचरावा, बडोरा, सकतपुर और खानपुरा मे मिडिल तक शिक्षा प्राप्त की। खानपुर मे अध्ययन करते समय काला बादल जिल्दसाजी करके स्वावलम्बी जीवन यापन करने लग गये थे।

इन्ही दिनो सन् १६३६ मे श्री तनमुखलाल मित्तल प्रजामडल के सदस्य बनाने खानपुर आये। काला बादल का उनसे सम्पर्क हुआ। वे प्रजामडल के सदस्य बन गये। उसी दिन से उनके जीवन की धारा ही बदल गई। वे तो प्रजामडल के कामो मे एक साथ डूबगये। उनका प० नयनूराम शर्मा से सम्पर्क हुआ और उनके साथ अलख जगाने मे हाडौती अचल की सेवा करने का सकल्प लेकर निकल पडे। काला बादल ने लोक गीतो की धुनो पर हाडौती बोली मे राष्ट्रीय-गीतो की रचना की और अपने गीतो द्वारा लोगो मे राजनैतिक चेतना का प्रसार करना शुरु किया। उनके गीतो का एक सग्रह आजादी की लहर श्री विजय सिह पथिक ने आगरा से छपा कर भेजा।

काला बादल खानपुर से रामगज मडी आगये। प० नयनूराम शर्मा के हाडौती शिक्षा मडल मे इन्हे ३००० पुस्तको का एक गश्ती पुस्तकालय सौंपा गया और इन्होंने उसके द्वारा गाव गाव मे राजनैतिक जागरण पैदा किया और कई कार्यकर्ता तैयार किये। प० नयनूराम शर्मा के साथ निरन्तर कार्य करने से काला बादल का बौद्धिक विकास भी तीव्रता से होता गया। उन्होंने कोटा राज्य की एक एक तहसील मे बीसीयो सम्मेलन आयोजित किये और लोगो को प्रजामडल के झडे के नीचे सगठित किया। सागोद, बारा, मालपुरा, कैथून और कोटा की रामतलाई के सम्मेलन एतिहासिक महत्व के थे।

सागोद के लोग काला बादल को अपने यहा ले गये। सागोद मे एक सप्ताह का कार्यक्रम रखा गया। पुलिस ने उन्हे वहा गिरफ्तारकर लिया। २६ दिन की सजा दी गई और उन्हें बारा जेल भेज दिया गया। जेल मे रहते हुए काला बादल ने रजवाडो की पोल, दुखी दुनिया नाम के नाटक लिखे। प० नयनूराम शर्मा की हत्या के बाद काला बादल वनस्थली के कार्यकर्ता शिविर मे प्रशिक्षण के लिए रहे और यह निश्चय किया कि राज्य द्वारा सताये

जा रहे भील, बणजारे व कजर लोगों मे काम किया जाए। मातासर कस्बे को अपना केन्द्र स्थान बना कर उन्होंने आस पास के गावो मे कार्य शुरु कर दिया।

१९४२ के भारत छोडो आन्दोलन मे कोटा की क्रान्ति मे अपना हिस्सा बटाने के लिए काला बादल कोटा मे व्यस्त रहे।

जब मीणो के उद्धार के लिए देशपाडेजी और श्री वशीधर शर्मा ने नीम के थाने मे एक बहुत बडी योजना की रूपरेखा तैयार की थी तब काला बादल नीम के थाने पहुच गये। मीणो का वृहद सम्मेलन हुआ। शिक्षा प्रचार का कार्य काला बादल को सौंपा गया। विद्यालय खोले गये और पुलिस की अडचनो और प्रतिकूलताओ के बावजूद भी काला बादल ने मीणा जाति मे शिक्षा प्रचार का काम अत्यन्त तीव्र गति से चलाया।

श्री काला बादल १९५२ से १९६७ तक पूरे १५ वर्ष के लिये राजस्थान विधानसभा के सदस्य रहे हैं। काला बादल इनका नाम नही है, उपनाम भी नहीं है, इनके एक क्रातिकारी गीत का शीर्षक काला बादल है और उस गीत की लोकप्रियता इतनी हुई कि गीतकार का नाम लोग भूल गये और उसे गीत के नाम से याद करने लग गये। काला बादल विधान सभा के काग्रेस सदस्य थे लेकिन लोकहित की दृष्टि से वे काग्रेस की आलोचना करने मे भी कभी नही चूकते।

काला बादल का जीवन सघर्ष का जीवन रहा है। जन्म से लगा कर आज की घडी तक सघर्ष का क्रम चल रहा है। शायद यह कभी नही रुकेगा। घोर आर्थिक अभाव और सामाजिक प्रतिकूलताओ से जूझते जूझते यह सर्वहारा कवि, गीतकार और लोकजागरण का उन्नायक आज भी समाज की पिछडी हुई जातियो के उद्धार के लिए अपने प्राण न्यौछावर किये बैठा है। कोटा मे गुमानपुरा स्थित उनका निवास स्थान जैसे अनुसूचित, पिछडी हुई और जन जातियो के लोगो के अभाव अभियोग सुनने का एक केन्द्र स्थल बन गया है। गाव गाव से लोग अपनी समस्याए लेकर काला बादल के पास भगे आते हैं और ये है कि अपना आपा भूलकर अपनो के काम मे दिन रात खोये रहता है। आजकल वह हाडौती आदिवासी छात्रावास के काम में लगे हुए हैं। उनका पता है—गुमानपुरा कोटा।

— ० —

श्री मोतीलाल जैन

जन्म—5 दिसम्बर 1908

वर्तमान पता—169 रामपुरा कोटा

श्री मोतीलाल जैन मूलरुप से जोधपुर के निवासी हैं लेकिन वर्षों मे वे मागरोल मे वस गए थे। उनका जन्म 5 दिसम्बर, 1908 को हुआ। हाईस्कूल के वाद उन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण की। श्री मोतीलाल 1935 मे विजयसिंह पथिक, ऋषिदत्त मेहता और अभिन्न हरि के सपर्क मे आए और राष्ट्रीय प्रवृतियो की ओर वढते गए। दिल्ली मे श्री अभिन्न हरि ने अग्रसर नाम का जो पत्र प्रकाशित किया था उसके सचालन मे श्री मोतीलाल जैन का वहुत वडा हाथ था।

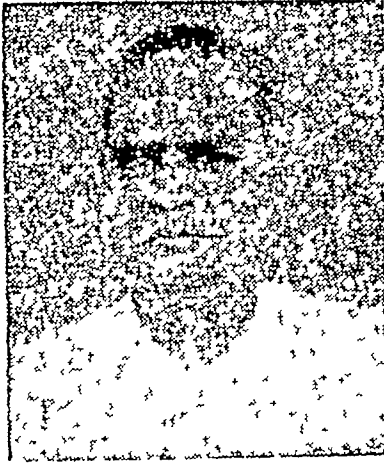
1938 मे प० नयनूराम शर्मा के सपर्क मे आने पर वे प्रजामडल के सदस्य वन गए। 1939 मे उन्होंने मागरोल मे प्रजामडल के विशाल अधिवेशन को सफल वनाया। वे कोटा राज्य प्रजामडल के प्रधानमत्री चुन लिए गए। राज्य के दीवान ने उन्हें राजनीति मे अलग होने के लिए प्रेम, प्रलोभन और भय सव दिखाए परन्तु श्री मोतीलाल जैन अविचलित रहे और प्रजामडल के सदेश को राज्य भर मे फैलाने मे दत्तचित होकर लग गए।

1939 मे उन्होंने देशपाडेजी और अग्रवालजी के सपर्क से प्रभावित होकर मागरोल मे साधु सीतारामदासजी की देखरेख मे खादी उत्पत्ति केन्द्र की स्थापना की। उन्होने जागीरदारो द्वारा कृषको पर होने वाले जुल्म तथा वेदखली के विरुद्ध आवाज उठाई और पुलिस एक्ट की धारा 37 के विरुद्ध आन्दोलन किया। उन्होने स्थान-स्थान पर किसानो के सम्मेलन किए, सामतवाद तथा वेगार के विरुद्ध लोगो मे चेतना जगाई, हरिजनो के उत्थान के कार्य किए।

1942 की अगस्त क्रान्ति के समय विध्वसात्मक कार्यो की तथा राज्यशासन को ठप्प करने की योजना के सदेह मे श्री मोतीलाल जैन 2 महीने 24 दिन तक नजरवद रखे गए। पुलिस एक्ट की धारा 37 के विरुद्ध आयोजित सभा की अध्यक्षता करने पर उन्हे 1945 मे कोटा स्टेशन पर गिरफ्तार करके पुलिस हवालात मे वद कर दिया और दूसरे दिन अजमेर मेजिस्ट्रेट के सम्मुख पेश करने पर वहा मे छूट सके।

फरवरी 42 मे श्री मोतीलाल जैन कोटा राज्य प्रजामडल के अध्यक्ष निर्वाचित हुए 17 अगस्त 42 को उन्होने प्रजामडल की ओर से महाराजा को अल्टीमेटम दिया और 24 अगस्त को एक सत्याग्रही जत्थे के साथ कानून भग करके गावो मे प्रचार करने चले गए। तहसीलो, थानो पर कब्जा करने व विध्वसात्मक योजना का भेद खुलने पर वे मागरोल मे गिरफ्तार कर लिए गए।

श्री मोतीलाल जैन एक संपन्न व्यक्ति है। उनका अपना व्यवसाय और उद्योग चलता है। वे आज भी पूरे उत्साह से राष्ट्रीय, सामाजिक और लोक कल्याणकारी कार्यो मे लगे हुए हैं।



श्री राजेन्द्रकुमार 'अजेय'

जन्म	14 फरवरी 1916
वर्तमान पता	हमारा वतन साप्ताहिक हवा महल, जयपुर

श्री राजेन्द्रकुमार अजेय मूलरूप से अलीगढ (उत्तरप्रदेश) के रहने वाले है। इनका जन्म 14 फरवरी, 1916 को एक सक्सेना कायस्थ परिवार मे हुआ। इनका बचपन मध्यप्रदेशमे व्यतीत हुआ लेकिन जीवनका अधिक भाग कोटा, अजमेर मेरवाडा, अलवर, भरतपुर, टोंक और जयपुर मे बीता है। 1934 मे श्री अजेय कोटामे पहले व्यक्ति थे जो काग्रेस के सदस्य बने। 1937 मे अपनी पढाई छोडकर केकडी (अजमेर) चले गये और वहा उन्होने केकडी उपसभाग के ठाकुरो और इस्तमुरारदारो के विरुद्ध स्व० हरिभाऊ उपाध्याय के नेतृत्व मे आन्दोलन शुरुकर दिया। श्री अजेय वहा छह बार गिरफ्तार किए गये। उन्हे साढे तीन वर्ष की सजा दी गई लेकिन अपील मे यह सजा 4 महीने और 1 वर्ष की रह गई।

1939—40 मे श्री राजेन्द्रकुमार अजेय ने श्री हरिभाऊ उपाध्याय की सलाह पर जयपुर आन्दोलन मे भाग लिया। भारत छोडो आन्दोलन मे श्री अजेय ने बम्बई मे भाग लिया और अरुणा आसफ अली तथा लोहिया ग्रुप के साथ कार्य किया। इसी प्रसग मे किसी राजनैतिक मिशन पर पूना जाते समय दादर रेल्वे स्टेशन पर वे गिरफ्तार कर लिये गये और उन्हे वर्ली जेल मे नजरबन्द रखा गया।

वर्ली जेल से मुक्त होने के बाद श्री अजेय कोटा आ गए। यहा उन्होने अपने कुछ मित्रो के साथ दीनबन्धु नाम के एक उग्र क्रान्तिकारी पत्र के साथ कार्य शुरू किया। इस पत्र ने राजपूताने के रियासती आन्दोलनो को बहुत बल पहुचाया। बीकानेर राज्य मे पत्र का प्रवेश निषिद्ध हो गया और कोटा सरकार ने भी पत्र पर बहुत ज्यादतिये की।

सरकार की सख्तियो के कारण जब दीनबन्धु बन्द हो गया तो श्री अजेय जयपुर आ गये। वे मीणा सुधार समिति के मन्त्री बना दिये गये। उन्होने मीणो को पूर्ण नागरिक अधिकार दिये जाने के लिए लोकमत बनाया। चौकीदार मीणो की पुलिस थानो मे हाजरी, अगुलियो के निशान लेने तथा दादरा सी एक्ट और क्रिमिनल ट्राइब एक्ट के विरुद्ध आन्दोलन खडा किया। जिसके परिणामस्वरुप मीणा जाति के लोगो को सामान्य नागरिक अधिकारो की सुविधा प्राप्त हुई। विधानसभा तथा ससद मे उनके स्थान सुरक्षित हुए।

श्री राजेन्द्र कुमार अजेय ने 40 वर्ष की उम्र मे फिर कालेज मे प्रवेश लेकर इण्टर और बी० ए० की परीक्षा पास की। श्री अजेय एक कट्टर काग्रेसी है। काग्रेस मे कई उतार चढाव आये है परन्तु काग्रेस के प्रति उनकी निष्ठा मे कभी कोई अन्तर नही आया। वे वर्तमान समय मे सत्ता काग्रेस की जयपुर जिला शाखा के कोटपुतली क्षेत्र से सदस्य है। श्री अजेय पिछले कई वर्षो से, जयपुर से हमारा वतन, साप्ताहिक पत्रका प्रकाशन सम्पादन कर रहे है।

श्री विमलकुमार कंजोलिया बी॰ ए॰

जन्म— सन् 1917
वर्तमान पता—कंजोलिया कुटीर, जैन मंदिर रोड़,
कोटा जंकशन—2

श्री विमलकुमार कजोलिया अपने उम्र के 25 वर्ष तक नाथूलाल के नाम से जाने जाते थे। 1942 के वाद उन्होंने अपना नाम नाथूलाल से विमलकुमार रख लिया। इनका बचपन झालावाड के डग कस्वे मे बीता और अपनी 13 वर्ष की उम्र से ही वे राष्ट्रीय प्रवृतियो की ओर आकर्षित हो गये। 1930 और 32 के वर्षो मे इन्होंने श्री मागीलाल भव्य के नेतृत्व मे नारे लगाने, प्रभातफेरी, जुलूस निकालने, सभाए करने और विदेशी कपडो की होली जलाने के कार्यक्रमो मे उत्साह से भाग लिया।

सन् 35 मे श्री विमलकुमार डग से अध्ययन के लिए कोटा आ गए। यहा कॉलेज मे इनका सम्पर्क सर्व श्री नाथूलाल जैन, इन्द्रदत्त स्वाधीन और राजेन्द्रकुमार अजेय से हुआ। इन्होंने अगस्त 37 को काग्रेस की चवन्नी सदस्यता स्वीकार की और कोटा मे काग्रेस के जनरल सेक्रेटरी चुने गए। काग्रेस की ओर से इन्होंने उन दिनो तिलक जयन्ती, गाधी जयन्ती, 26 जनवरी आदि अनेक पर्व सार्वजनिक रुप मे मनाए। 1938 मे इन्होंने कोटा राज्य प्रजामण्डल की सदस्यता ग्रहण की और मागरोल मे होने वाले प्रजामण्डल के अधिवेशन मे अपने दल वल सहित सम्मिलित हुए।

1938 के वाद श्री विमलकुमार कजोलिया मागरोल के खादी उत्पादन केन्द्र के व्यवस्थापक के रुप मे 8 महीने तक रहे। इस अवधि मे इन्होने प्रजामण्डल का सदेश गाव गाव तक पहुचाने का और स्वय सेवको के सगठन को व्यवस्थित करने का कार्य किया। 1940 मे प्रजामण्डल के कोटा अधिवेशन पर श्री विमलकुमार कजोलिया ने स्वय सेवक के रुप मे वहुत काम किया।

बी॰ ए॰ पास करने के वाद 1942 मे श्री विमलकुमार ने लम्वे अतर्द्वन्द्व के वाद यही निश्चय किया वह सरकारी नौकरी नही करेंगे और अपनी समस्त शक्तियें सार्वजनिक क्षेत्र मे ही लगायेंगे। उन्होंने मागरोल मे रेजी उत्पादन का कार्य प्रारम्भ कर दिया।

महात्मा गाधी द्वारा भारत छोडो आन्दोलनके शुरु होते ही नेताओ की गिरफ्तारियें शुरु हो गई। कोटा मे सभी वडे नेता गिरफ्तार हो गए थे। वहा 14 अगस्त को रामपुरा वाजार मे लाठीचार्ज और गोलीकाण्ड हो गया। जनता मे भारी जोश था। तीन दिन तक शहर मे जनता का कब्जा रहा। शहर कोतवाली पर जनता ने तिरगा फहराया। सेठ

मोतीलाल जैन और विमलकुमार कजोलिया कोटा आए और प्रजामण्डल ने सत्याग्रह का कार्यक्रम बना या। श्री मोतीलाल जैन पहला जत्था लेकर सत्याग्रह के लिए निकल पड़े।

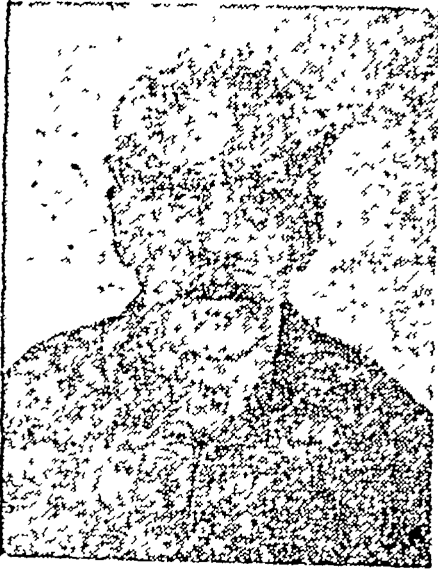
1943 मे श्री नाथूलाल जैन ने दीनबन्धु नामक एक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित किया। श्री कजोलिया उसमे सहयोगी की तरह काम करने लगे अजमेर जेल तोडकर भगने वाले श्री ज्वालाप्रसाद 6 महीने तक कजोलिया के साथ रहे, उन्होने बारा मे श्री रतन लाल गोठवाल के साथ सहकारी आन्दोलन मे कार्य करना शुरु किया। 1945 मे एक बार पुलिस के चौकीदार सिपाही ने विमलकुमार पर अकस्मात् हमला कर दिया और उन्हें बहुत चोटें लगी। इस पर सारे शहर मे दो दिन हडताल रही।

1945 मे श्री विमलकुमार प्रजामण्डल की कार्यकारिणी मे ले लिए गए। उन्हे हरिजन समिति का अध्यक्ष बनाया गया। उन्होने हरिजनो के साथ सहभोज का सार्वजनिक आयोजन रखा। भारत की स्वाधीनता के बाद रियासती मन्त्रालय के सचिव श्री मैनन तीन बार कोटा आगए और अन्य नेताओ के साथ श्री कजोलिया भी मैननसे मिले और उत्तरदायी शासन की स्थापना के लिए उनसे आग्रह किया। इस सम्बन्ध मे वे सरदार पटेल से भी मिले। सरदार पटेल से मिलने के बाद श्री विमलकुमार कजोलिया ने श्री अभिन्न हरि के नेतृत्व मे कोटा की प्रत्येक तहसील मे सम्मेलनो का ताता लगा दिया।

विशाल राजस्थान की स्थापना के बाद वे दो वर्ष तक जिला कांग्रेस के संयोजक रहे और बाद मे प्रदेश कांग्रेस के प्रतिनिधि चुने गए।

— • —

श्री शिवप्रताप श्रीवास्तव



जन्म–12 दिसम्बर 1907
वर्तमान पता–सपादक लोक निर्माण
पोस्ट बाक्स 29, कोटा–6

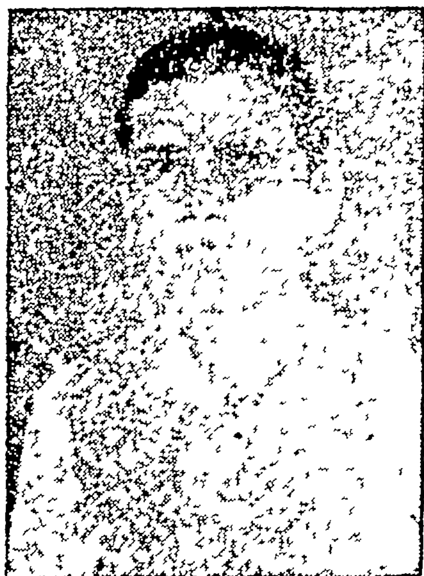
श्री शिवप्रताप श्रीवास्तव कोटा मे 1942 की अगस्त क्राति के नायक माने जाते हैं । 13 अगस्त को कोटा मे नेताग्रो की गिरफ्तारी के बाद निहत्थी जनता पर गोलिये दागी गई । समग्र जनता बगावत पर ग्रामाद हो गई । रियासत के विरूद्ध विद्रोह भडक उठा । सघर्ष का सचालन करने का दायित्व जनताने श्रीशिवप्रताप श्रीवास्तव को सौंपा । उनके नेतृत्व मे कोतवाली पर धावा बोला गया । पुलिसके एक२ सिपाही को नगरके बाहर खदेड दिया गया । कोतवाली पर तिरगा फहरा दिया और कोटा को रियासती शासन और अग्रेजो की गुलामी से मुक्त होने की घोषणा कर दी गई । पोलिटिकल विभाग द्वारा नियुक्त श्री हरीलाल घोषा लिया व सतसिंह आई०जी०पी०को गिरफ्तार करने के आदेश प्रसारित कर दिए गए । उन दोनो ने सैनिक शिविरो की शरण ली और मौका देखकर कोटा से भाग गए । श्री शिवप्रताप श्रीवास्तव ने प्रशासन की व्यवस्था को ठप्प करने की सारी कार्यवाहियें आनन फानन मे पूरी करवाली । सपूर्ण सचार व्यवस्था नष्ट कर दी गई । कोटा का बाहरी जगत से सबध समाप्त कर दिया गया । नगर की सुरक्षा के लिए कोटा के सभी प्रवेश द्वार बन्द करके उन पर पहरा लगवा दिया गया ।

सन् 42 की क्रान्ति तक श्री श्रीवास्तव सरकारी नौकरी मे थे । अगस्त क्रान्तिमे इस सफल विद्रोह का सचालन करने के लिए उन्हे सरकारी नौकरी मे निकाल दिया गया । उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और भारत सुरक्षा कानून के अतर्गत उन्हें कई मुकदमो मे फसाने की तैयारी होने लगी । आपके विरुद्ध दिल्ली से विस्फोटक रसायन मगाने सबधी आरोपो की जाँच करने उत्तरप्रदेश के खुफिया अधिकारी कोटा आए और सेण्ट्रल जेल में उनके बयान लेने गए तब आपको कोटा से 3 वर्ष के लिए निर्वासन दे दिया गया और 1945 तक श्री श्रीवास्तव ने अपने दिन दबई मे निकाले ।

श्री शिवप्रताप 1931 में ही क्रातिकारी दल के सदस्य बन गए थे । रसायनिक प्रक्रिया मे सिद्धहस्त होने के कारण आगरा के प्रोफेसर झा मे भयकर विस्फोटक द्रव्य टी० एन० टी बनाने की प्रक्रिया सीखी और अपने दल के लिए बम बनाए । 31 से 42 तक आपका सपर्क क्रातिकारी आन्दोलन से रहा । 32 मे आपको विद्यालयसे निष्कासित कर दिया गया । आपने महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश और राजस्थान की अनेको क्रान्तिकारी गतिविधियो मे भाग लिया ।

श्री शिवप्रताप श्रीवास्तव का जन्म 12 दिसम्बर, 1927 को कोटा के एक कायस्थ परिवार में हुआ । आजकल लोकनिर्माण नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन कोटा से कर रहे हैं ।

श्री हीरालाल जैन



जन्म—25 अगस्त 1916

वर्तमान पता—सोशलिस्ट पार्टी
रामपुरा बाजार, कोटा-6

श्री हीरालाल जैन का परिवार मूल रुप से जैसलमेर का है परन्तु इनका जन्म 25 अगस्त, 1916 को कोटा में ही हुआ। इनकी शिक्षा बगाल मे हुई। । 1937 मे अर्थशास्त्र और राजनीति मे इन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय मे बी०ए० आनर्स किया। श्री हीरालाल जैन ने गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगौर के शाति निकेतन (विश्वभारती) मे भी दो वर्ष तक अध्ययन किया।

कोटा आकर श्री हीरालाल जैन 1938 के प्रारम्भ मे कोटा रियासत के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट के कार्यालय मे अग्रेजी क्लर्क हो गए परन्तु स्वतन्त्रता सग्राम मे पूरी शक्ति से भाग लेने के सकल्प के कारण इन्होने दिसम्बर 38 मे अपनी राजकीय सेवा से त्यागपत्र देकर प्रजामडल की सदस्यता ग्रहण करली। श्री हीरालाल जैन तब से देश की स्वाधीनता, रियासतो मे उत्तरदायी शासन तथा राजस्थान प्रान्त के निर्माण के अलावा वर्ग सगठन एव समाजवादी व्यवस्था की स्थापना हेतु आज तक निरतर प्रत्यनशील है।

श्री हीरालाल जैन ने भारत छोडो आन्दोलन मे कोटा मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। उन्होने 1955 मे गोआ सत्याग्रह मे भाग लिया और सन् 68 मे कच्छ सत्याग्रह मे, रियासतो मे उत्तरदायी शासन आन्दोलन और राजाओ को हटाकर एक राजस्थान प्रात के निर्माण के आन्दोलत मे इनका कार्य अत्यत महत्वपूर्ण था।

अगस्त 42 म इन्होने विद्यार्थियो को सगठित किया जिसके कारण ही कोटा की अगस्त क्रान्ति मे इतनी तेजी आई कि कोटा की कोतवाली पर तीन दिन तक जनता का कब्जा रहा और गोली चलाने के जिम्मेदार प्राइमिनिस्टर घोपालिया और आई०जी०पी० मन्तसिह को अपने बिस्तर गोल करने पडे। इन्होंने विद्यार्थी काग्रेस, प्रेस मजदूर सघ और किसानसभा के अतर्गत विद्यार्थियो, किसानो और मजदूरो को सगठित किया।

श्री हीरालाल जैन ने अपने अन्य मित्रो के सहयोगसे 1946 मे प्रान्तीय स्तर पर कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की। सन् 46 मे इन्होने कुछ मित्र के सहयोग मे जयहिन्द नामक एक उग्र क्रान्तिकारी साप्ताहिक का सपादन किया जो सन् 55 तक चलता रहा।

1942 मे 16 सितम्बर को श्री जैन गिरफ्तार कर लिए गए थे। उन्हे 1 महीना 19 दिन के बाद रिहा किया गया। 1955 मे 30 घटे के लिए गोआ भूमि मे पुर्तगाल सरकार ने इन्हें हिरासत मे रखा। गोआ मे दाहिनी आँख पर जो पुर्तगाली सैनिको के हाथो चोट लगी थी उससे उनकी दाहिनी आँखपूर्ण रुपेण दृष्टि हीन हो गई है।

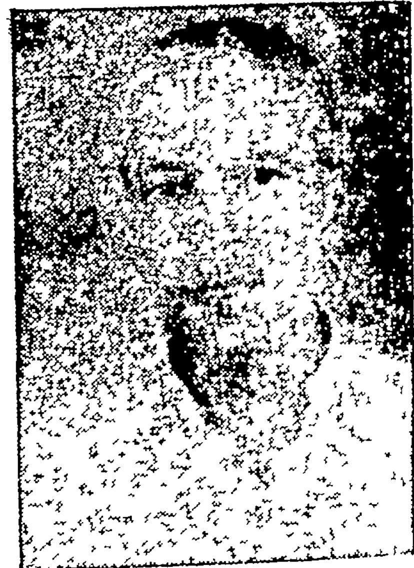
सन् 1946 से श्री हीरालाल जैन सोशलिस्ट पार्टी के माध्यम मे समाजवादी समाज की स्थापना के लिए सक्रिय रुप से प्रयत्नशील हैं। उन्होने 1939 मे जीवन बीमा का कार्य शुरु किया था लेकिन 1956 मे जीवन बीमा निगमने वहाँ से भी इन्हे अलगकर दिया। श्री हीरालाल जैन ने विवाह नही किया है और अपना सपूर्ण समय देश सेवा को समर्पित कर रखा है।

कोटा में राजनैतिक चेतना लाने वाले

चार अग्रगण्य व्यक्तित्व



श्री शम्भुदयाल सक्सेना

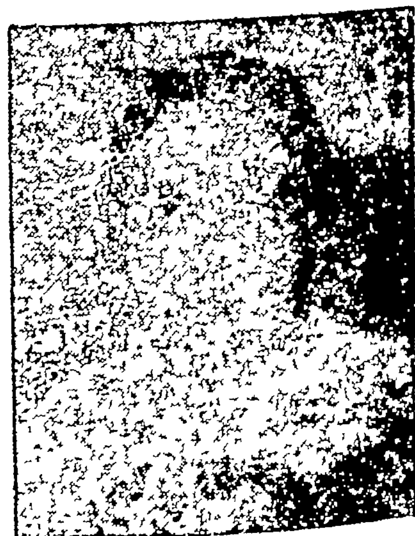


श्री इन्द्रदत्त स्वाधीन

आप चारो महानु-
भावो के राजनैतिक
जीवन का विस्तृत
परिचय समय पर
प्राप्त न हो सकने
के कारण इस ग्रन्थ
मे सम्मिलित नही
किया जा मका है ।



श्री वेणी माधव एडवोकेट



श्रीमती नगेन्द्रबाला एम.एल.ए

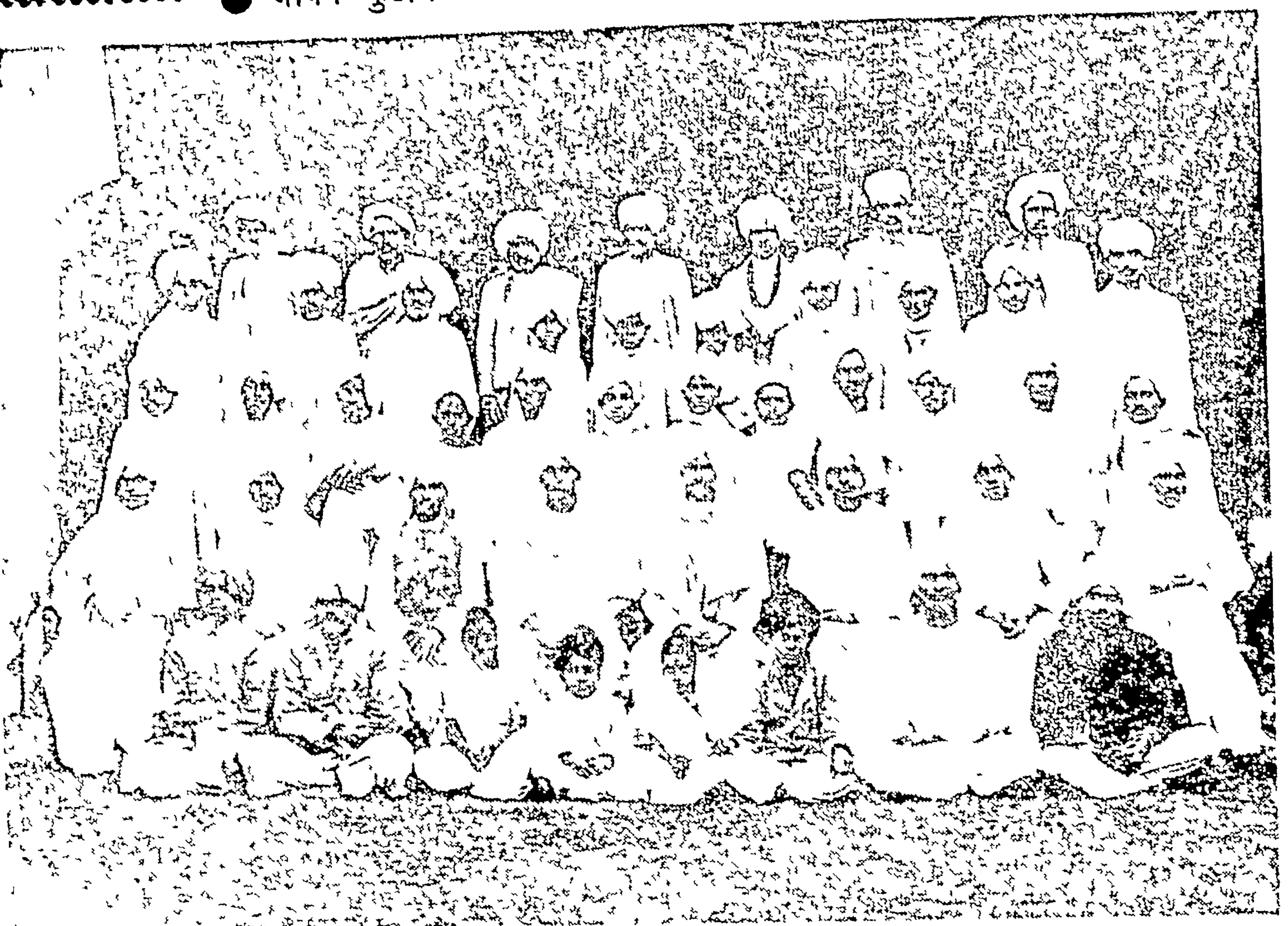
राजस्थान में

स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी

- स्वतंत्रता के सदेश वाहक
- सत्याग्रही और
- स्वातंत्र्य-सैनिक

जयपुर

● जीवन कुटीर के वनस्थी समर्पित कार्यकर्त्ताओ का समूह ●



जयपुर राज्य में जनजागृति के प्रथम चरण

राजपूताना के कई एक राज्यो का अपने अपने ढग का कुछ न कुछ ऐतिहासिक महत्व था। १९वी शताब्दी के प्रारम्भ मे प्रायः सभी राज्यो की अग्रेजो के साथ सन्धिया हुई। उक्त शताब्दी के भीतर किसी विरले राज्य मे ही नये जमाने के अनुसार शासन सुधार अथवा विशेष लोकोपयोगी कार्य किये गये होगे। जयपुर राज्य मे मुख्यतया महाराजा सवाई रामसिह ने राजधानी मे सडक, गैस वर्क्स, कॉलिज, हास्पीटल, सार्वजनिक पुस्तकालय, स्कूल ऑफ आर्ट्स, सस्कृत पाठशाला आदि का निर्माण किया। महाराजा सवाई माधोसिह के जमाने मे भले ही कोई नयी चीज न हुई हो परन्तु पुरानी चीजें कायम रखी गई। महाराजा अपने महल के भीतर कुछ भी करते रहे हो,पर बाहर प्रजा के साथ किसी प्रकार का क्रूर व्यवहार उन्होंने नही किया। अधिक से अधिक लोग राज्य की नौकरी मे थे। इन कारणो से राजभक्ति का भाव प्रजाजनो के दिल मे गहरा बैठा हुआ था।

जहा तक मालूम है सबसे पहले पण्डित अर्जुन लाल सेठी ने 1908 के आस-पास एक विद्यालय के रुप मे जन जागृति का काम शुरू किया। सेठीजी तेज तर्रार क्रान्तिकारी विचार रखते थे। साथ ही वे राज्य के बाहर की क्रान्तिकारी प्रवृत्तियो मे भी सम्बन्धित हो गये जिससे उनको खूब जेल यातनाए करनी पडी। बाद मे कभी सनातन-धर्म मण्डल के नाम से, कभी सेवा समिति के नाम से, कभी समाज सुधारक मण्डल के नाम से, कभी जयपुर हित-कारिणी सभा के नाम से कुछ न कुछ सार्वजनिक

सेवा के काम समय-समय पर होते रहे। उक्त प्रवृत्तको मे मुन्शी नानगराम जोहर, पण्डित सूरज नारायण शर्मा (एम० ए०), पण्डित सूर्यनारायण शर्मा (आचार्य), श्री नौरग राय खेतान, श्री शिवकिशोर तिवाडी, श्री श्याम सुन्दर शर्मा (पाण्डया) आदि सज्जन प्रमुख भाग लेने वाले थे। जयपुर हितकारिणी सभा की स्थापना पण्डित हीरालाल शास्त्री की प्रेरणा से हुई और उसके पण्डित बालचन्द्र शास्त्री अध्यक्ष और केसरलाल कटारिया मन्त्री थे। युवक कार्यकर्त्ताओ के निर्माण के लिए पण्डित हीरालाल शास्त्री ने राजस्थान छात्रालय, छात्र मडल, प्रयास–परिषद आदि सस्थाए चलायी।

1922 मे हिन्दी को राजभाषा बनाने के लिए जोरदार आन्दोलन हुआ जिसके मुख्य प्रवर्त्तक ठाकुर कल्याणसिंह खाचरियावास, श्री श्याम लाल वर्मा आदि थे। बाद मे अनाज की निकासी को लेकर जयपुर शहर मे जबर्दस्त हडताले हुई, जिनके फलस्वरुप राज्य को प्रजा की मागो को मजूर करना पडा। 1931 मे जयपुर राज्य प्रजा मण्डल की स्थापना हुई जिसमे श्री कपूरचन्द्र पाटणी आदि का प्रमुख रुप से हाथ था। पूरा समय दे सकने वाले कार्यकर्त्ताओ के अभाव मे प्रजा मण्डल जोर नही पकड सका। चर्खा सघ की ओर से खादी का काम जयपुर राज्य मे अच्छा हुआ। खादी के मुख्य कार्यकर्त्ता सर्व श्री व० सा० देशपाण्डे, कपूरचन्द्र पाटणी, केसरलाल कटारिया आदि थे। सीकर, तोरावटी, उदयपुरवाटी मे जाट–किसान सभा की ओर से किसानो को सगठित किया गया और झूझनू मे जाट बोर्डिग की स्थापना की गयी। किसान कार्यकर्त्ताओ मे श्री हरलाल सिंह, नेतराम सिंह, घासीराम, ताडकेश्वर शर्मा आदि मुख्य थे। एक से अधिक स्थानो पर गोलिया चलाई गयी। जिससे अनेको शहीद हुए।

मुख्य किमान कार्य–कर्त्ता गिरफ्तार किये जाकर जेल भेज दिये गये। इम प्रकार किमान सभा की ओर से ठिकानेदारो के जुल्मो का कडा मुकाविला किया गया। सीकर, शेखावटी के ठिकाने जकात वसूल करते थे, उसके विरुद्ध खामा आन्दोलन हुआ जिसके अग्रणी श्री देवी वक्स सराफ और श्री मातादीन भगेरिया आदि थे।

1936-37 मे जयपुर राज्य प्रजा मण्डलका पुन मगठन हुआ। तव सर्व श्री हरलालमिह और नेतराम सिंह प्रजामण्डल के कायकर्त्ता पण्डित हीरालाल शास्त्री आदि के मम्पर्क मे आये और अन्ततोगत्वा किसान सभा का प्रजामण्डल मे विलय हो गया। झूझुनू के जाट वोर्डिग का नाम वदल कर विद्यार्थी भवन कर दिया गया। पुन सगठित प्रजामण्डल के सभापति श्री चिरजीलाल मिश्र और प्रधान मन्त्री पण्डित हीरालाल शास्त्री नियुक्त हुए और कार्य-कारिणी मे श्री कपूरचन्द्र पाटणी, हरिश्चन्द्र शर्मा चिरजीलाल अग्रवाल,हस डी राय, जहीरहमन सौदागर आदि के अलावा कई एक दूमरे प्रतिष्ठित नागरिक भी शामिल किये गये। प्रजामण्डल के पुन सगठन के सिलसिले मे सेठ जमनालाल वजाज की प्रेरणा मे पण्डित हीरालाल शास्त्री को वनस्थली मे वुलाया गया। शास्त्रीजी राज की नौकरी छोड कर जीवन कुटीर वनस्थली मे रचनात्मक काम करते थे और उनके पास कई कार्यकर्त्ताओ की एक मण्डली तैयार हो गई थी। उक्त कार्तकर्त्ता मण्डली ने ही स्थानीय नागरिको के सहयोग से राज्य भर मे प्रजामण्डल के सगठन को प्राय साल भर मे ही मजबूत वना दिया।

जयपुर राज्य प्रजामण्डल

के अधिवेशनो के सभापति और प्रधान मन्त्रियो की नामावली

क्रम	अधिवेशन का स्थान	अधिवेशन का वर्ष	सभापति का नाम	प्रधान मन्त्री का नाम
1	जयपुर	1938	सेठ जमनालाल बजाज	पडित हीरालाल शास्त्री
2	जयपुर	1940	सेठ जमनालाल बजाज	पडित हीरालाल शास्त्री
3	झूझनू	1941	पण्डित हीरालाल शास्त्री	श्री कपूरचन्द्र पाटणी
4	श्रीमाधोपुर	1942	पण्डित हीरालाल शास्त्री	श्री कपूरचन्द्र पाटणी
5	हिण्डौन	1943	पण्डित देवीशकर तिवाडी	श्री कपूरचन्द्र पाटणी
6	जयपुर	1944	श्रीमती जानकी देवी बजाज	पडित हीरालाल शास्त्री
7	दौसा	1945	श्री लादूराम जोशी	श्री कपूरचन्द्र पाटणी
8	किशनगढ रैनवाल	1946	श्री लादूराम जोशी	श्री पूर्णचन्द्र जैन
9.	सवाई माधोपुर	1947	श्री टीकाराम पालीवाल	श्री पूर्णचन्द्र जैन
10	मालपुरा	1948	सरदार हरलाल सिंह	श्री पूर्णचन्द्र जैन

नोट —1939 मे जयपुर मे प्रजामण्डल की ओर से सत्याग्रह आन्दोलन छेड दिया गया था अत इस वर्ष प्रजामण्डल का अधिवेशन नही हुआ था ।

श्री ओमदत्त शास्त्री

जन्म— जनवरी 1901
वर्तमान पता— जौहरी बाजार, जयपुर



श्री ओमदत्त शास्त्री का जन्म बिजनौर के अफजलगढ कस्बे मे एक सामान्य ब्राह्मण परिवार मे जनवरी 1901 को हुआ था। उनका अध्ययन गुरुकुल ज्वालापुर महाविद्यालय और लाहौर के डी० ए० वी० कॉलेज मे हुआ। पजाव विश्वविद्यालय के सस्कृत विभाग वैदिक आश्रम से उन्होंने कई महत्व-पूर्ण परीक्षाए पास की।

लाहौर मे रहते समय श्री ओमदत्त शास्त्री लाला लाजपतराय के निकट सम्पर्क में आए। वे लालाजी के नेतृत्व मे काग्रेस का कार्य उत्साह से करने लगे। लाला लाजपत राय ने जो सर्वेंट ऑफ इण्डिया पिपुल सोसाइटी बनाई उसमे ओमदत्त शास्त्री को शामिल किया गया और खादी का कार्य सीखने के लिए उन्हे सावरमती भेजा गया। श्री ओमदत्त शास्त्री 9 महीने तक सावरमती रहे। वही उनका परिचय और घनिष्टता श्री हरिभाऊ उपाध्यायसे होगई जो उन दिनो 'हरिजन सेवक' का सम्पादन कर रहे थे।

सावरमती के वाद ओमदत्त शास्त्री भीलो मे काम करने की दृष्टि से अजमेर आए लेकिन श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने तथा देशपाण्डेजी ने उन्हे राजस्थान चर्खा–सघ के अन्तर्गत खादी कार्य और हरिजन सेवा के लिए प्रेरित किया और जयपुर भेज दिया। जयपुर के अमरसर मे उन्होंने खादी केन्द्र को सम्हाला, वुनकरो की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक दशा सुधारी और उत्पादन को वडे पैमाने पर चलाया।

1932 के सत्यग्रह के समय श्री ओमदत्त शास्त्री अजमेर पहुचे और सत्याग्रह का सचालन कार्य अपने हाथो मे सम्हाला। 1937 मे उन्होंने चर्खा–सघ से त्याग-पत्र देकर श्री हीरालाल शास्त्री के सुझाव पर राजपूताना हरिजन सेवक सघ का काम अपने हाथ मे लिया। उन्होंने ठक्कर वापा को तथा रामेश्वरी नेहरु को सभी रियासतो का दौरा कराकर हरिजनो की स्थिति से उन्हे अवगत कराया। 1939 मे श्री ओमदत्त शास्त्री जयपुर सत्याग्रह के समय जयपुर सत्याग्रह के आगरा ऑफिस के इन्चार्ज वनाए गए।

1942 मे श्री ओमदत्त शास्त्री अपने कुछ मित्रो के साथ प्रजामण्डल से अलग हो गए और आजाद मोर्चा वनाकर भारत छोडो आन्दोलन जयपुर मे चलाया। वे गिरफ्तार कर लिए गये और दो वर्ष जयपुर जेल मे नजरवन्द रहे। जेल से मुक्त होने के वाद उन्होंने खादी और औषध वितरण का काम शुरु कर दिया। उन्होने राजस्थान खादी विकास मण्डल गोविन्दगढ नामक सस्था वनाई जिसके वे अध्यक्ष है। इस सस्था को राज्य सरकार और खादी कमीशन से आर्थिक सहायता मिली थी। श्री ओमदत्त शास्त्री जयपुर भारत सेवक समाज के भी अध्यक्ष रहे हैं। दौसा मे उन्होंने ग्राम सेवा सदन नाम की सस्था वनाई और जयपुर मे हिन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी प्रा० लि० की स्थापना की।

श्री ओमदत्त शास्त्री को राजस्थान मे रचनात्मक कार्य करते हुए पचास वर्ष हो गए हैं। अव वे जडी वूटियो द्वारा वनी हुई औषधियो के वितरण मे जनता की सेवा करना चाहते है।

स्वर्गीय श्री कर्पूरचंद पाटनी

जन्म— 30 जनवरी 1901
निधन— सन् 1946

श्री कर्पूरचन्द पाटनी का जन्म जयपुर के एक प्रतिष्ठित जैन घराने मे 30 जनवरी, 1901 के दिन हुआ। पाटनीजी की प्रारम्भिक शिक्षा पण्डित अर्जुनलालजी सेठी के द्वारा स्थापित वर्धमान जैन विद्यालय मे हुई। वे सेठीजी के प्रिय शिष्य थे।

पाटनीजी को युवावस्था से ही सार्वजनिक सेवा करने की लगन लगी। उन दिनों जयपुर मे राजनैतिक कार्य करने की कोई खास गुंजाइश नही थी। राज की तरफ से किसी प्रकार का दमन नही था। अधिकतर लोग सरकारी नौकरियो मे लगे हुए थे।

श्री कर्पूरचन्द पाटनी स्वतत्र जीविकोपार्जन करते हुए सेवा कार्य मे लग गए। वे पद्मावती पुस्तकालय, वीर सेवक मण्डल, समाज सुधारक मण्डल, हिन्दू अनाथाश्रम, कन्या शिक्षा प्रचारिणी समिति आदि सस्थाओ के सस्थापक अथवा प्रेरक हुए।

1926 म गाधीजी से प्रेरणा पाकर सेठ जमनालाल बजाज की देखरेख मे पाटनीजी ने राजस्थान–मध्य भारत मे खादी का काम सभाला जिसे उन्होने लगन के साथ कई सालों तक सफलतापूर्वक किया। साथ मे वे हरिजन सेवा का काम भी करते रहे।

पाटनीजी का हिन्दी व अग्रेजी दोनो भाषाओ पर समान अधिकार था। जहा कही पाटनीजी उपस्थित होते वहा के प्रस्ताव आदि उनकी कलम से ही लिखे जाते। सुधारवादी पाटनीजी ने जैन जगत्, समाज सुधारक आदि पत्रो का सपादन भी किया।

1931 मे अनाज पर कर लगाने के विरोध मे जो जोरदार जन-आन्दोलन जयपुर मे हुआ उसमे पाटनीजी की प्रेरणा ने बहुत काम किया। उन्ही दिनो जयपुर राज्य प्रजामण्डल की स्थापना हुई और पाटनीजी का प्रत्यक्ष राजनैतिक क्षेत्र मे उदय हुआ।

1936 मे सेठ जमनालाल बजाज की अध्यक्षतामे जीवन कुटीर वनस्थली का वार्षिकोत्सव हुआ उसमे श्री कर्पूरचन्द पाटनी भी मौजूद थे। उसी समय जयपुर राज्य प्रजामण्डल को पुनर्गठित करना तथा उसके लिए पडित हीरालाल शास्त्री को जयपुर लाना तय हुआ।

पाटनीजी प्रजामण्डल के आजीवन वफादार सेवक रहे। उनको पद की, प्रसिद्धि की लालसा बिल्कुल नहीं थी। वे ठोस काम करने वाले व्यवहारिक राष्ट्रकर्मी थे। पाटनीजी मतभेदों को मिटाकर तथा विरोधियो को मिला कर एकता लाने के काम मे सिद्ध हस्त थे।

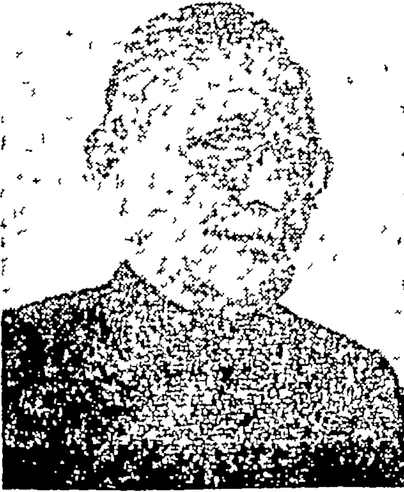
श्री कपूरचन्द पाटनी और पण्डित हीरालाल शास्त्री 1938 मे सीकर आन्दोलन के सिलसिले मे रावराजा कल्याणसिंह के पास गये और उन्हे समझा बुझा कर शान्ति स्थापना कराने और जयपुर राज्य और सीकर ठिकाने के बीच समझौता कराने मे सफल हुए।

पाटनीजी ने जयपुर सत्याग्रह मे आगे बढकर हिस्सा लिया और उन्हे 6 महिने की सजा हुई। बाद मे प्रजामण्डल और सरकार के बीच जो समझौता हुआ उसमे पाटनीजी सेठ जमनालाल बजाज के विश्वासपात्र साथी थे।

श्री कर्पूरचन्द पाटनी चाहते तो वे जयपुर राज्य प्रजामण्डल के अध्यक्ष हो जाते, जयपुर राज्य के प्रथम लोकप्रिय मत्री हो जाते। पण्डित हीरालाल शास्त्री बराबर कहते रहे है कि पाटनीजी जैसा निस्वार्थ और मूकभाव से काम करने वाला दूसरा कोई साथी नही था।

पाटनीजी मृदुभाषी एव व्यवहार कुशल थे और उनकी सगठन शक्ति अपूर्व थी। वे सही अर्थ मे जयपुर की जनजागृति के सूत्रधार थे। 45 वर्ष की आयु मे ही उनका देहान्त न हो गया होता तो राजस्थान के निर्माण और विकास मे उनका अनूठा योगदान होता।

श्री गुलाबचंद कासलीवाल



जन्म—16 जुलाई. 1909

वर्तमान पता—महावीर मार्ग,

अशोक नगर, जयपुर-1

श्री गुलाबचद कासलीवाल 1956 तक जयपुर की राजनीति के एक अत्यत सक्रिय और राजनीति की विविध प्रवृत्तियों मे लगे हुए एक अग्रगण्य व्यक्ति थे। 1956 मे जब राजस्थान ए श्रेणी का राज्य बन गया तब वे राज्य के एडवोकेट जनरल बनाए गए और इस पद पर 16 वर्ष तक कार्य करते रहे।

श्री गुलाबचन्द कासलीवाल ने एम० ए०, एल० एल० बी लखनऊ विश्वविद्यालय से किया। लखनऊ मे ही उन्होंने स्वय सेवक का प्रशिक्षण प्राप्त किया और विश्वविद्यालय स्वय सेवक दल के नेता बने। उन्होंने जयपुर मे 1932 मे वकालत प्रारभ कर दी थी। वकालत के साथ-साथ 1934 से 36 तक उन्होने हरिजन बस्तियो मे शिक्षा प्रचार और समाज सुधार का कार्य किया।

10 फरवरी 1939 की रात्रि को जब पडित हीरालाल शास्त्री के निवास स्थान पर जयपुर राज्य प्रजा मडल की कार्यकारिणी के समस्त सदस्यो को गिरफ्तार किया गया उस समय पुलिस के घेरे के बीच से प्रजामडल के तमाम गुप्त कागजात लेकर श्री गुलाबचद कासलीवाल बाहर निकल पडे। प्रजामडल की कार्यकारिणी ने सत्याग्रह सचालन की जिम्मेदारी श्री गुलाबचद कासलीवाल को सौपी। सत्याग्रह सचालन के सबध मे वे दो बार राष्ट्रपिता महात्मा गाधी से मिले। गाधीजी ने जयपुर राज्य प्रजामडल के सत्यग्रह सचालन की प्रशसा मे उन्हे एक पत्र लिख कर दिया। दूसरी बार मिलने पर गाधीजी ने सत्याग्रह बद करने की आज्ञा दी। जयपुर सत्याग्रह बद होने पर श्री कासलीवाल खादी उत्पादन के कार्य मे लग गए।

1942 मे जयपुर राज्य प्रजामडल ने ब्रिटिश विरोधी आन्दोलन के लिए जो नीति स्वीकार की थी उससे असतुष्ट होकर श्री गुलाबचद कासलीवाल ने प्रजामडल से त्यागपत्र दे दिया और अपने अन्य साथियो के साथ आजाद मोर्चे मे शामिल हो गए। आजाद मोर्चे का कार्यालय श्री गुलाबचन्द कासलीवाल के निवास पर ही था। आजाद मोर्चे ने भारत छोडो आन्दोलन के रूप मे स्वतत्रता सग्राम को जयपुर राज्य के कोने कोने मे फैलाया।

आन्दोलन मे काफी तेजी आगई थी । 9 सितम्वर 1942 को श्री गुलावचद कासलीवाल के मकान की 6 घण्टे तक तलाशी होती रही । अन्त मे वे गिरफ्तार कर लिए गए । वे 6 महीने तक जेल मे रहे जिसमे दो हफ्ते की कालकोठरी की भी सजा उन्हे दी गई ।

भारत छोडो आन्दोलन ममाप्त होने पर श्री कासलीवाल पुन प्रजामडलमे सम्मिलित हो गए । वे निरतर कई वर्षो तक जयपुर राज्य प्रजामडल के कोपाध्यक्ष रहे । उन्होने प्रजा मडल की राज्य व्यापी सभी प्रवृत्तियो मे उत्साह से भाग लिया । 1943–44 मे प्रजामडल ने श्री कासलीवाल को जयपुर नगर पालिका के लिए खडा किया और वे विजयी हुए । 1945 मे जयपुर मे लेजिसलेटिव कौंशिल और रिप्रिजेन्टेटिव एसेम्वली के चुनाव हुए । श्री गुलावचद कासलीवाल जयपुर से लेजिसलेटिव कौंशिल के प्रत्याशी थे । जयपुर शहर के चुनाव का श्रेय भी श्री कासलीवाल को ही था । जयपुर शहर मे प्रजामडल के सभी प्रत्याशी विजयी हुए । श्री कासलीवाल लेजिमलेटिव कौंशिल मे प्रजामडल के मुख्य मचेतक थे ।

श्री गुलावचद कासलीवाल 1946 मे नगरपालिका के अध्यक्ष चुने गए और इसके वाद निरतर चार वार वे नगर पालिका के अध्यक्ष निर्वाचित होते रहे । 1946 से 51 तक वे राजकीय, राजनैतिक, सामाजिक और सास्कृतिक सौ से अधिक सस्थाओ और समितियो के अध्यक्ष, सरक्षक, सलाहकार और सदस्य रहे । जयपुर के काग्रेस अधिवेशन मे उन्होने स्वागत समिति के एक सयोजक के रूप मे महत्वपूर्ण कार्य किया ।

अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद के उदयपुर अधिवेशन मे श्री कासलीवाल ने ही सवसे पहले राजपूताने की सभी रियासतो को मिलाकर एक राज्य वनाने का प्रस्ताव रखा जिसे सर्व सम्मति से स्वीकृत किया गया ।

श्री गुलावचद कासलीवाल 1952 मे जयपुर शहर मे राज्य विधान सभा के लिए कांग्रेस टिकट पर सदस्य चुने गए । एसेम्वली मे वे काग्रेस के मुख्य सचेतक रहे । इसके अतिरिक्त वे अरवन इम्प्रूवमेन्ट वोर्ड के अध्यक्ष वनाए गए और अन्त मे 1956 मे राजस्थान के एडवोकेट जनरल वने ।

श्री गुलावचद कासलीवाल का जन्म 16 जुलाई 1909 को श्री पूर्णचदजी कासलीवाल के यहा जयपुर मे ही हुआ था । उनका कार्य क्षेत्र मुख्य रूप से जयपुर शहर ही रहा है । उन्होने 25 वर्ष तक राजनीति मे सक्रिय होकर कार्य किया और 16 वर्ष एडवोकेट जनरल के पद पर राजकीय सेवा की । उनकी आयु इस समय 64 वर्ष की है परन्तु उनमे काम करने का वही वेग, वही निष्ठा और वही दक्षता है ।

श्री गोपालदत्त वैद्य

जन्म—23 मार्च, 1923

वर्तमान पता—रामदास का चौराहा, आकडो रास्ता, जयपुर



श्री गोपालदत्त वैद्य का जन्म 23 मार्च, 1923 को जयपुर मे हुआ। इनकी शिक्षा जयपुर मे ही हुई। महाराजा सस्कृत कॉलेज मे श्री गोपाल दत्त वैद्य ने आयुर्वेदोपाध्याय का तृतीय खण्ड किया था। उन्हे देशभक्ति के सस्कार अपने पिता स्वर्गीय मुशी रुपनारायण से मिले थे जिन्होने कलकत्ते मे राष्ट्रीय आन्दोलनो मे भाग लिया था।

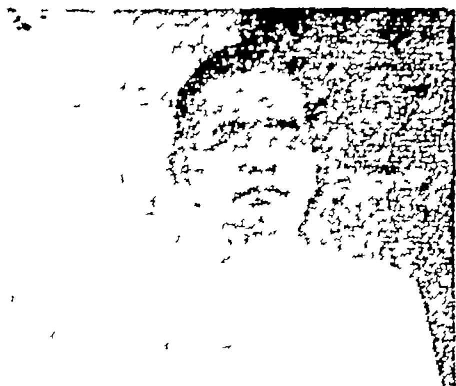
जयपुर मे प्रजामण्डल की स्थापना के साथ श्री गोपालदत्त वैद्य स्वय सेवक के रुप मे अपनी सेवाए प्रजामण्डलको देने लगे। उन्होने 1939-40 मे हरिजन पाठशालामे हरिजन बालको को पढाया। 1942 की अगस्त क्राति मे उन्होने जयपुर की स्कूलो कॉलेजो की हडताल करवाना, जुलूस व निकालने का कार्य किया। कुछ दिन इन्होने आजाद मोर्चे के प्रचार अभियान मे भाग लिया और अन्त मे वे तोड फोड के कामो मे लग गए।

उन्होने अपने कुछ मित्रो के साथ तोडफोड कार्य करने को एक गुप्त पार्टी बनाई। उन्होने नाहरगढ के नीचे सुरग मे बम बनाने का सामान इकट्ठा किया। लेकिन शराबियो की करतूत से पुलिस ने वहा छापा मार कर सभी सामान कब्जे कर लिया।

श्री गोपाल दत्त वैद्य अपनी पार्टी के लिए हथियार खरीदने ग्वालियर गए और वहा से सामान लेकर आगरा होते हुए जयपुर आना चाहते थे कि उन्हे सदह मे पुलिस ने आगरे मे गिरफ्तार कर लिया। उनके पास तलाशी मे एक टोमीरिंग और 45 कारतूस पकडे गए। उन पर 19 आर्म्स एक्ट के अन्तर्गत मुकदमा चला और उन्हे 1 वर्ष की कारावास की सजा दी गई। वैद्य के घर पर जयपुर मे तलाशी हुई और उनके मकान मे दो रिवाल्वर और दो छुरे बरामद हुए। पुलिस ने उनके पिता को गिरफ्तार कर लिया। वे दो दिन बाद जमानत पर छोड दिए गए। श्री वैद्य के आगरे से जयपुर आते ही उन पर 15 आर्म्स एक्ट के मातहत मुकदमा चला। उनके पिता बरी कर दिए गए और उन्हे 4 महीने की सजा और 20/- जुर्माना किया गया। उनके रिवाल्वर नही लौटाए गए।

श्री गोपालदत्त वैद्य ने जयपुर के यूनानी तिब्बी कॉलेज मे भिषगाचार्य और साहित्य सम्मेलन की विशारद परीक्षाए पास की है। श्री वैद्य अपने विद्यार्थीकाल म प्रजामण्डल, आजाद मोर्चा और फिर सोशलिस्ट पार्टी मे काम करते रहे है। अब वे काग्रेस के सक्रिय सदस्य है और जयपुर जिले की कुछ तहसीलो में अपने सेवा कार्य के लिए क्षेत्र बनाया है। उन्होने देहातो मे जागीर विरोधी, बेगार समाप्ति और हरिजन सेवा की दिशा मे भी कार्य किया है।

श्री गोवर्द्धन पंत



जण्म–मन् 1914

वर्तमान पता–मन्त्री अलवर जिला खादी ग्रामोद्योग सघ अलवर ।

श्री गोवर्द्धन पत का जन्म अल्मोडा जिले के खतोली ग्राम मे सन् 1914 मे हुआ । श्री गोवर्द्धन पतकी शिक्षा उसी क्षेत्र मे हुई । उनके वडे भाई को असहयोग आन्दोलन मे तीन वर्ष सजा हुई थी अत अग्रेजी राज के प्रति उनमे बचपन से ही नफरत थी । श्री जमनालाल बजाज की प्रेरणा मे गोवर्द्धन पत के वडे भाई कीर्तिवल्लभ पत राजस्थान मे उनके साथ खादी कार्य के लिए आगए । गोवर्द्धन पत अपने बडे भाई के पास गोविन्दगढ आ गए और वही खादी का काम सीख कर काम करने लग गए ।

श्री गोवर्द्धन पत ने 1930 और 1932 मे अजमेर जाकर नमक मत्याग्रह मे और सविनय अवज्ञा आन्दोलन मे भाग लिया । उन्ह पहली वार तीन महीने की और दूसरी वार 9 महीने की कठोर कारावास की सजा हुई । हरिजन आन्दोलन के शुरू होने पर उन्होने दौसा मे हरिजन सेवक सघ की स्थापना की और उसके मत्री का काम सभाला ।

चर्खा सघ ने श्री गोवर्द्धन पत को मध्यप्रदेश के सबलगढ और श्योपुर जैसे पिछड़े प्रदेश मे खादी कार्य को जमाने के लिए 2 वष के वास्ते भेजा । वहाँ से आने के बाद श्री गोवर्द्धन पत ने जयपुर के मनोहरपुर, आचरोल, बामा और चौमू के खादी कार्य को नए सिरे मे व्यवस्थित किया ।

सन् 1939 मे जयपुर प्रजामडल के आन्दोलन के समय उन्होंने चौमू मे सत्याग्रहियो का सगठन किया । भारत छोडो आन्दोलन के समय दौसा का खादी उत्पादन केन्द्र वद कर उन्होंने वे जयपुर के विभिन्न शहरो मे आन्दोलन किया । श्री गोवर्द्धन पत गिरफ्तार कर लिए गए और कुछ दिन जेल मे रखे जाने के बाद रिहा कर दिए गए ।

फरवरी 43 मे एक बार बाहर मे जयपुर आते समय उन्हे जयपुर स्टेशन पर ही गिरफ्तार कर देश निकाले के आदेश देकर उन्हे अलवर पहुचा दिया गया । 1 वर्ष के बाद यह निषेधाज्ञा हटा ली गई ।

चर्खा सघ के विकेन्द्रीकरण के बाद श्री गोवर्द्धन पत ने राजस्थान खादी सघ के कार्य को राजस्थान के विभिन्न जिलो मे फैलाने का कार्य किया। श्री गोवर्द्धन पत ने जयपुर, दौसा, बस्सी, लालसोट, सिकराय और बाँदीकुई मे घूम घूम कर भूदान मे भूमि प्राप्त की । इस समय अलवर जिला खादी ग्रामोद्योग के मत्री, क्षेत्रीय ग्रामोद्योग समिति दौसा, ग्राम स्वराज्य समिति सिकदरा, खादी समिति बस्सी के अध्यक्ष तथा टोंक जिला खादी समिति के उपाध्यक्ष है और भरतपुर जिला खादी ग्रामोद्योग समिति के सदस्य हैं ।

श्री चन्द्रशेखर पारासर



जन्म—31 दिसम्बर 1910

वर्तमान पता—खेजड़े का रास्ता, जयपुर

श्री चन्द्रशेखर पारासर राजस्थानके उग्र क्रान्तिकारी विचारो के व्यक्ति हैं। शासन और समाज के वर्तमान ढाचे मे वे क्रान्ति से परिवर्तन लाने के इच्छुक है। श्री चन्द्रशेखर पारासर का उन सबको अपने पूरा सहयोग का आश्वासन है कि जो देश मे क्रान्ति करके समाजवाद लाने के लिए कृत सकल्प हो।

श्री चन्द्रशेखर पारासर ने राज्य विरोधी प्रचार कार्य तो 1927 से ही प्रारम्भ कर दिया था जब वे पिलानी मे विद्यार्थी थे। 1929 मे उन्होंने खादी पहनने का व्रत लिया और सन् 30 मे नमक सत्याग्रह मे शामिल होने के लिए अजमेर चले गए। अजमेर मे उन्हे गिरफ्तार तो कर लिया गया परन्तु पुलिस अधिकारी का श्री पारासर के पिता से परिचय था इसलिए उन्हे रिहा करके जयपुर पहुँचा दिया गया।

1931 से 1939 तक श्री चन्द्रशेखर पारासर ने राजकीय सेवा मे कार्य किया। 1939 मे त्यागपत्र देकर उन्होंने जयपुर प्रजामडल के आन्दोलन मे भाग लिया। उन्हे 4 महीने की सजा हुई और उन्हे मोहनपुरा कैम्प मे रखा गया।

1942 के भारत छोडो आन्दोलन मे श्री चन्द्रशेखर पारासर क्रान्तिकारी कामो मे पूरी तरह सलग्न थे। जयपुर से बम बना कर अन्य स्थानो पर भेजे जाते और उन्हें निश्चित स्थानो पर पहुँचाने का कार्य चन्द्रशेखर पारासर के जिम्मे था। इसी प्रसग मे वे एक बार दिल्ली के चाँदनी चौक मे गिरफ्तार कर लिए गए और 7 दिन पुलिस की हिरासत मे उन्हें रहना पडा। ओक्टोबर,42 मे फौजमे भर्ती होने वालो को रोकने के अपराध मे उन्हे तीन केसो मे 2-2 वर्ष की सजा और 25-25 रुपये जुर्माने या 3 महीने की अतिरिक्त सजा दी गई। लेकिन हाईकोर्ट की अपील के कारण 10 महीने जेल मे रहने बाद वे मुक्त कर दिए गए।

सन् 47 तक श्री चन्द्रशेखर जनसमस्याओ के लिए करीब 7 बार जेल गए। सन् 47 तक वे जयपुर राज्य प्रजामडल के कार्यकर्त्ता थे लेकिन देश की स्वाधीनता के बाद उन्होंने कई मित्रों के सहयोग से राजस्थान समाजवादी पार्टी की स्थापना की। सन् 52 में उनका बागी मन समाजवादी पार्टी की नीतियो से सन्तुष्ट नहीं हुआ और वे कम्युनिस्ट पार्टी मे मे शामिल हो गए। 1967 से कम्युनिस्ट पार्टी मे दो भाग हो जाने पर वे सदस्य किसी पार्टी के नही है परन्तु उनका काम कम्युनिस्ट मार्क्सिस्ट पार्टी के साथ है।

उन्होने 1953 से 58 तक कॉलेज मे पुन प्रवेश लेकर बी०ए,एल० एल० बी किया। आजकल वे जयपुर मे वकालत करते हैं।

श्री चन्द्र शेखर भट्ट
बांसवाड़ा

जन्म— सन् 1914
वर्तमान पता— मोहन खादी कुटीर
बांसवाड़ा।

श्री चन्द्रशेखर भट्ट का जन्म सन् 1914 में बांसवाड़ा जिले के गढ़ी ग्राम मे पण्डित नन्दलाल भट्ट के यहाँ हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा अपने ग्राम में ही हुई। श्री भट्ट पंडित हीरालाल शास्त्री द्वारा जीवन कुटीर वनस्थली में जनसेवा की भावना से सन् 1931 में पहुँच गये। वहाँ उन्होंने जीवन कुटीर के तत्कालीन कार्यक्रम वस्त्र स्वावलम्बन, शिक्षा प्रचार आदि कार्यों को पूरे उत्साह से किया। साथ ही साथ आगे राजनैतिक कार्य करने की शिक्षा-दीक्षा भी वहाँ उनकी होती रही।

जयपुर राज्य मे राजनैतिक संगठन की आवश्यकता एक अर्से से अनुभव की जा रही थी। जीवन कुटीर के कार्यकर्त्ता भी इस कार्य के लिए उतावले थे। जब प्रजामण्डल का पुनर्गठन हुआ तो श्री चन्द्रशेखर भट्ट तत्कालीन जयपुर राज्य के हिण्डौन निजामत में प्रजा-मण्डल के निर्धारित कार्यक्रम के प्रचार प्रसार मे लग गये। इस काम को उन्होंने बड़ी लगन और तन्मयता से किया। आन्दोलन संचालन के प्रसंग में पुलिस द्वारा श्री भट्ट की बुरी तरह से पिटाई भी हुई। स्थानीय जनता को उनमे श्रद्धा हो गई और उनके प्रचार कार्य से सामन्तशाही से छुटकारा पाने और देश को आजाद कराने की तड़प पैदा हो गई। परिणाम-स्वरूप प्रजामण्डल के कार्य के पुनर्गठन के कुछ ही समय बाद नागरिक स्वतन्त्रता प्राप्ति के आन्दोलन मे हिण्डौन निजामत के काफी लोगों ने भाग लिया जिनमे से श्री टीकाराम पालीवाल, श्री लक्ष्मीनारायण सोमराम आदि प्रमुख थे। श्री चन्द्रशेखर तथा श्री टीकाराम पालीवाल को 3–3 मास की सजा हुई। जेल से छूटने के पश्चात् श्री भट्ट पूर्वापेक्षा अधिक जोश से प्रजामण्डल के काम में जुट गये और इनके प्रयास से हिण्डौन मे 1941 मे प्रजामण्डल का वार्षिक अधिवेशन बड़ी सफलता से सम्पन्न हुआ। उसके पश्चात् प्रजामण्डल की नीति के अनुसार 1942 के आन्दोलन मे और आन्दोलन के बाद भी वहाँ का काम करते रहे। प्रजामण्डल के कांग्रेस मे विलय के पश्चात् भी वे सक्रिय रूप से कांग्रेस का काम करते रहे।

अब श्री चन्द्रशेखर भट्ट 'मोहन खादी कुटीर' के माध्यम से बांसवाड़ा में खादी एवं जन सेवा का कार्य कर रहे हैं।

प्रजामण्डल का पहला सत्याग्रही जत्था



जिसमे श्री चिरन्जी लाल मिश्रा के साथ सर्व श्री वद्री नारायण शर्मा टेलर मास्टर और प्रकाश चन्द्र जैन दिखाई दे रहे है

श्री चिरंजीलाल मिश्रा

श्री चिरजीलाल मिश्रा का जन्म उत्तर प्रदेश के जिला फरुखाबाद के ग्राम फतेहगढ मे पण्डित शिवप्रसाद मिश्र के घर हुआ। आपके पिता फरुखावाद के माने हुए वकीलो मे मे एक थे। उनकी प्राथमिक शिक्षा मैट्रिक तक फतेहगढ मे हुई। वाद मे इलाहावाद के म्योर कालेज से बी० एस-सी० तथा वही से एल० एल० वी० किया। ये वहा के हिन्दू वोडिग हाऊस मे रहते थे जहा के विद्यार्थियो पर उनका अच्छा प्रभाव था। श्री मिश्रा वोर्डिग हाऊस की प्रवृत्तियो मे आगुआ रहते थे। 1916 मे पहली वार लखनऊ कांग्रेस मे वे कांग्रेस सदस्य वने और वहा के वालिन्टयर कोर के डेलीगेट कैम्प के इन्चार्ज रहे। उन्होने लखनऊ कांग्रेस मे हुई अव्यवस्था को वडे प्रभावशाली ढग से व्यवस्थित किया। दिल्ली कांग्रेस अधिवेशन के समय पण्डित मदन मोहन मालवीय ने वहा की व्यवस्था का कार्य विशेप रूप से श्री मिश्रा के सुपुर्द किया था।

श्री मिश्रा 1920 मे जयपुर आये। इससे पूर्व वे फतेहगढ मे वकालत करते थे। वे जयपुर के वकील समुदाय मे उच्चकोटि के वकीलो मे माने जाते थे। हालाकि इस व्यवसाय मे उनकी रुचि नही रही—किन्तु उनका ध्येय अपने व्यवसाय मे सफलता प्राप्त करना रहा। वे वर्षो वार ऐसोसियेशनके अध्यक्ष रहे। वे सदा नियमित रहते-अनियमितता उन्हे वर्दाश्त नही थी।

सन् 1937 मे जब जयपुर राज्य प्रजामण्डल का पुनर्गठन हुआ तो श्री मिश्रा को प्रजामण्डल का अध्यक्ष बनाया गया जिसे उन्होने योग्यता पूर्वक वहन किया। प्रजामण्डल की कार्यकारिणी के सदस्य तो वे बराबरा रहे। सन् 1939 मे प्रजामण्डल के सत्याग्रह के समय अन्य प्रमुख सदस्यो के साथ उन्हे गिरफ्तार कर पण्डित हीरालाल शास्त्री आदि के साथ लाम्बा कैम्प मे बन्दी बनाया गया।

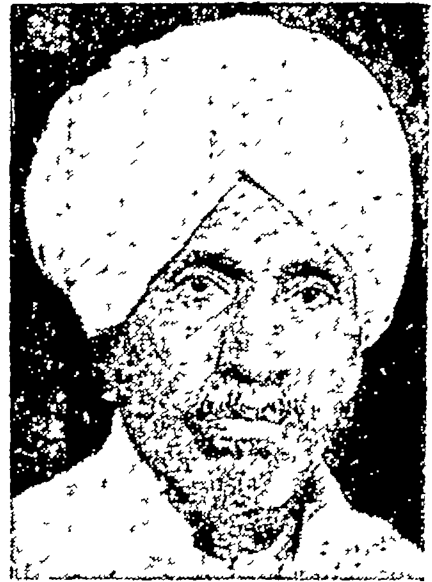
प्रजामण्डल का राज्य से समझौता होने पर जेल से छूटने के बाद भी बराबर प्रजा मण्डल की रीति नीति के अनुसार कार्य करते रहे।

1942 मे प्रजामण्डल की नीति से श्री मिश्रा का मेल नही खाया और उन्होंने आजाद मोर्चे की सदस्यता ग्रहण कर ली। भारत छोडो आन्दोलन के समय मोर्चे की नीति के अनुसार काम करते 3 फरवरी 1943 को अन्य साथियो के साथ श्री मिश्रा गिरफ्तार हुए और राज्य ने इन्हे डिटेन्शन मे रखा।

प्रजामण्डल का काग्रेस मे विलय होने के बाद श्री मिश्रा जयपुर से मद्रास चले गए और वही अपना व्यापारिक व्यवसाय किया। उन्होंने 1948 मे फिर जयपुर आकर फिर से वकालत का व्यवसाय किया।

1956 मे श्री मिश्रा का स्वर्गवास हो गया।

श्री जवाहर लाल माली चौमू



जन्म– सन् 1889

वर्तमान पता– मुकाम पोस्ट चौमू–जिला जयपुर ।

श्री जवाहरलाल माली का जन्म चौमू (जयपुर) के प्रतिष्ठित किसान श्रीकेशवराम माली के घर सन् 1889 मे हुआ था । उस समय एव स्थिति के अनुसार इनकी शिक्षा हिन्दी की अच्छी जानकारी तथा धार्मिक ग्रथो मे हुई । वयस्क होने पर वे वहा के ठिकाने मे नियुक्त हो गए । वर्षों तक वे ठिकाने मे तालुकेदारी के पद पर कार्य करते रहे । श्री बद्रीनारायण जी खुटेटा के विशेष सम्पर्क मे उन्होंने देश की गुलामी और दरिद्रता के विरुद्ध टक्कर लेने का निश्चय किया और ठिकाने का काम करते हुए भी वे किसानो मे चेतना पैदा करने के काम मे विशेष रुचि लेने लग गये । ठिकाने के उच्चाधिकारी उनके इस काम को कडी निगाह से देखने लग गये और उनको इस काम के लिए ठिकाने की नौकरी वफादारी से करने अथवा छोड देने की चेतावनी दी गई । श्री जवाहरलाल ने देश सेवा के मुकाबले नौकरी को तिलाजली दे दी ।

जयपुर राज्य प्रजामडल के पुनर्गठन के साथ ही वे सन् 1937 मे प्रजामण्डलके प्रचार मे सक्रिय रुप मे लग गये थे । मुख्यत किसानो मे इनके प्रचार कार्य से विशेष जागृति आयी । अनेक बार ठिकाने के अधिकारियो मे उनका सीधा मुकाबला भी हुआ । इसमे उन्हे अनेक बाधाये आयी और विपत्तियाँ भी सहनी पडी । राज्य सरकार की भी इन पर कडी निगाह थी । 1939 का प्रजामण्डल का सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ होने के साथ ही उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया और 6 मास की कारागार की सजा सुनाई गयी ।

प्रजामण्डल के विविध कार्यक्रमो मे भाग लेते हुए श्री जवाहरलाल चौमू नगरपालिका के सदस्य भी रहे और जन हित मे कई अच्छे काम किये ।

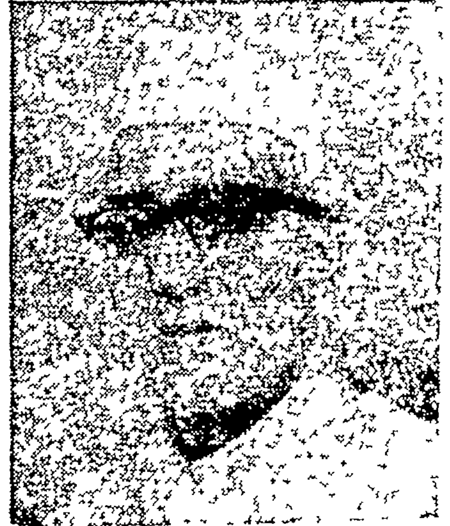
स्वतत्रता के पश्चात् उनका मुख्य कार्य समाज सुधार और शिक्षा प्रचार रहा इसमे वहाँ के किसानो मे शिक्षा के प्रति अभिरुचि जागृत हुई और परिणामस्वरुप अनेक किसान युवको ने उच्च शिक्षा प्राप्त की । इनके स्वय के परिवार मे इनके पुत्र तथा भतीजे पी० एच० डी०, पोस्ट ग्रेज्युएट, डाक्टरी आदि की शिक्षा मे विभूषित हैं ।

श्री जवाहरलाल अब 83 वर्ष की अवस्था मे नेत्रहीन किन्तु स्वस्थ है पर देश की गरीबी एव चरित्रहीनता से कुठित है ।

श्री टीकाराम पालीवाल

जन्म— सवत् 1964 चैत्र शुक्ला 12

वर्तमान पता— पालीवाल भवन डिग्गी हाऊस एरिया, जयपुर



श्री टीकाराम पालीवाल राजस्थान के अग्रगण्य राजनेताओ मे से एक है। वे जयपुर रियासत के लोकप्रिय मत्री,राजस्थान राज्य केमुख्यमत्री, उपमुख्य मत्री, राज्यसभा के सदस्य और ससद सदस्य रह चुके है। 1965 के भारत पाक युद्ध के बाद उन्होने सद्भावना मिशन के सदस्य के रूप मे बलगेरिया, रूमानिया, पौलेड, हगरी और इगलैड आदि देशो मे जाकर बहुत ही बुलदी से भारत की विदेश नीति की और भारत की स्थिति को स्पष्ट किया था। राजस्थान प्रदेश मे श्री टीकाराम पालीवाल एक भले और न्यायप्रिय व्यक्ति के रूप मे जनता मे मान्य है। वे छल-कपट की छिछली राजनीति से दूर रहकर सीधा सादा जीवन यापन करने वाले कार्यकर्ता और राजनेता रहे है। सार्वजनिक और व्यक्तिगत जीवन मे न्यायिक और नैतिक मूल्यो की स्थापना आज भी उनका मुख्य लक्ष्य है।

श्री टीकाराम पालीवाल का जन्म सवाई माधोपुर जिले के महुआ तहसील के मण्डावर ग्राम मे सवत् 1964 को पण्डित हुकुमचद पालीवाल के यहा एक मध्यवर्गीय ब्राह्मण परिवार मे हुआ। उनकी शिक्षा मण्डावर, अलवर की राजगढ तहसील और फिर दिल्ली तथा मेरठ मे हुई। दिल्ली के राष्ट्रीय कामर्शियल हाई स्कूल से मैट्रिक पास करने के बाद वही अध्यापक नियुक्त कर दिए गए। इनके प्रो० रघुनदनशरण एक उग्र क्रान्तिकारी विचारो के राष्ट्रीय व्यक्ति थे। उन्होने पालीवालजी को राजनीतिक साहित्य का अध्ययन करने की प्रेरणा दी और उनके लिए साहित्य जुटाने का कार्य भी अपने हाथ मे लिया।

1929 मे पालीवालजी ने दिल्ली मे स्टुडेन्ट एण्ड यूथ लीग नाम की सस्था स्थापित करके राष्ट्रीय युवको का सगठन खडा किया। इस सस्था ने सभा, जुलूसो और प्रदर्शनो मे दिल्ली मे चेतना की एक नई लहर पैदा कर दी। सन् 30 के नमक सत्याग्रह मे उन्होने जमना पार शहादरा के खादर मे जाकर नमक भी बनाया। मई 30 मे उन्होने स्कूल मे त्यागपत्र दे दिया और अपना पूरा समय राष्ट्रीय कार्य मे लगाने लग गए। दरियागज मे सत्याग्रहियो को ट्रेनिंग देने के लिए एक सत्याग्रह आश्रम था जहा 800 सत्याग्रही शिक्षा पाते थे। पालीवालजी को इस आश्रम के सचालन की जिम्मेवारी सौंपी गई।

1930 मे काग्रेस पत्रिका का उन्होंने सपादन किया और उन्ही दिनो वे पहली बार गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हे कुछ दिन दिल्ली मे रखने के बाद मुल्तान सेन्ट्रल जेल भेज दिया गया। 1932 मे पालीवालजी ने बी० ए० किया और वे मेरठ चले गए। वहा से उन्होंने एल० एल० बी० किया और 1934 मे वही वकालात करने लग गये। सन् 36 मे श्रीमती प्रकाशवती जी के साथ उनका विवाह मेरठ मे हो गया।

1938 मे श्री टीकाराम पालीवाल ने हिन्डौन मे आकर अपनी वकालात शुरु की। हिन्डौन मे प्रजामण्डल के कार्यकर्ता श्री चन्द्रशेखर भट्ट ने पालीवालजी से सपर्क किया और उन्हे प्रजामडल का सदस्य बनाया। 1939 मे जयपुर राज्य प्रजामण्डल का आन्दोलन छिडने पर वे हिन्डौन मे गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हे 4 महीने की सजा हुई। जेल से छूटने के बाद तो वे पूरी तरह प्रजामण्डल के काम मे लग गए। वे प्रजामण्डल की कार्यकारिणी के सदस्य हुए। फिर सयुक्त मत्री हुए, प्रधानमत्री हुए और आगे जाकर प्रजामण्डल के अध्यक्ष भी चुने गए।

1946 मे शेखावाटी के चनाणा गाव की एक सार्वजनिक सभा मे एक सामती सरदार ने उन पर घातक हमला करना चाहा परन्तु पालीवालजी को अविचल देखकर उसकी नगी तलवार उसके हाथ मे ही रह गई। यहा गोलिये भी चली। पालीवालजी ने सामतो द्वारा सर पर किए जाने वाले लाठी प्रहारो को निरन्तर अपने हाथो मे बचाया। सन् 47 मे पालीवालजी जयपुर राज्य प्रजामण्डल के सवाई–माधोपुर अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गए। इन वर्षों मे पालीवालजी के साथ सर्व श्री चन्द्रशेखर भट्ट, वीरेन्द्रसिंह चौहान, स्वामी रामभजन, कल्याणजी, नारायण चतुर्वेदी और भूदेव जैसे अनेको आये हुए कार्यकर्ताओ की घनिष्टता वढ गई थी। पालीवालजी श्री हीरालाल शास्त्री के बाद जयपुर रियासत के नेताओ मे अग्रणी हो गए थे।

1948 मे जयपुर मे लोकप्रिय सरकार का गठन हुआ। पडित हीरालाल शास्त्री मुख्यमत्री बने और पालीवालजी को मत्रिमडल मे राजस्वमत्री की जिम्मेवारिये सौपी गई। राजस्थान बनने के 21 महने बाद जब श्री जयनारायण व्यास राजस्थान के मुख्यमत्री बने तब श्री पालीवाल राजस्थान के राजस्वमत्री बनाए गए। 1952 मे श्री जयनारायण व्यास के चुनाव हारने के बाद श्री पालीवाल राजस्थान के मुख्यमत्री बने, स्वर्गीय जयनारायण व्यास के पुन किशनगढ से उपचुनाव जीतने पर वे मुख्यमत्री बने और श्री पालीवाल उप मुख्यमत्री।

1957 मे श्री पालीवाल ने विधानसभा का चुनाव जीता परन्तु वे विधानसभा मे नही रहकर 1958 मे राज्यसभा मे चले गए। 1962 मे उन्होने लोकसभा का चुनाव लडा और निर्वाचित हुए।

पालीवालजी इस समय 66 वर्ष के है। वे आज सगठन काग्रेस मे रहते हुए भी एकाकी रुप से अपने ढग से ही देश की समस्याओ पर चिंतन करते रहते है। वे इन्दरा गाधी के दृढ निश्चय, प्रगतिशील विचार तथा बगला देश की स्वतत्रता के लिए किए गए अभियान के प्रशसक है। वे अपने जीवन मे सौदेबाज राजनीतिज्ञ कभी नही रहे। उन्होने कठिन मे कठिन समय मे भी अपने सूझबूझ से काम लिया है और समस्याओ के निराकरण मे कभी किसी राजनेता का अनुचित दवाव स्वीकार नही किया है।

श्रीमती दुर्गादेवी शर्मा

जन्म— सन् 1906

वर्तमान पता—घीया भवन, बनी पार्क जयपुर

श्रीमती दुर्गादेवी का जन्म नायन—अमरसर (जयपुर) के पण्डित सीताराम ज्योतिषी के घर 1906 मे हुआ। उनका विवाह सामोद निवासी श्री चन्द्रभान शर्मा के साथ 1919 मे ही हो गया। श्री दुर्गादेवी का जो साधारण पढना लिखना हुआ सो विवाह के वाद मे ही हुआ।

श्री चन्द्रभान शर्मा ने जव असहयोग आन्दोलन के सिलसिले मे वम्वई कॉमर्स कॉलेज छोड दिया तो दुर्गादेवी कुछ चिन्तित तो हुई, पर साथ ही उन्होने महात्मा गाधी के विषय मे जानकारी करने मे अपने मन को लगा लिया।

श्रीमती दुर्गादेवी ने वम्वई पहुचते ही पर्दा, गहना, मिल का कपडा आदि सव कुछ छोड दिया और साधक आश्रम मे रहने लगी। नमक सत्याग्रह के दिनो मे दुर्गादेवी ने अपने विवाह तक के वढिया कपडो की चौमू मे होली कर दी और वे अजमेर व्यावर की महिलाओ के साथ प्रभातफेरी आदि के काम मे लग गयी।

1931–32 के सत्याग्रह के समय श्रीदुर्गादेवी दो वार जेल गई। उनको दोनो ही वार तीन–तीन महीनो की सजा हुई। श्रीमती अजना देवी चौधरी को और उनको जेल मे जव स्पेशल क्लास दिया गया तो दोनो देवियो ने नामजूर कर दिया और जव तक दूसरी महिलाओ जैसा साधारण व्यवहार उनके साथ नही किया गया तव तक के लिए उन्होंने अनशन करने की घोषणा कर दी। दूसरी वार की सजा काटने के लिए श्रीदुर्गादेवी को फतहगढ (उत्तरप्रदेश) भेजा गया था।

जेल मे दुर्गादेवी गभीर वीमारी लेकर आयी और कुछ ही समय वाद उनकी तीन साल की पुत्री (जो जेल मे साथ ही थी) का देहान्त हो गया। आज भी दुर्गादेवी अपने पति श्री चन्द्रभान शर्मा के हर सेवा कार्य मे प्रसन्नता से साथ दे रही हैं।

---

*नोट–इनका चित्र इसी ग्रन्थ के पृष्ठ 123 पर छपा है।

श्री देवीशंकर तिवारी

जन्म–28 अक्टूबर 1903

वर्तमान पता–म्युजियम मार्ग, जयपुर ।

श्री देवीशकर तिवारी का जन्म 28 अक्टूबर 1903 को लखनऊ मे हुआ । एम० ए० करने के पश्चात् उन्होने लखनऊ विश्वविद्यालय से विधि स्नातक की उपाधि प्राप्त की। 1930 मे उन्होने जयपुर आकर अपनी वकालत शुरू कर दी ।

1939 मे श्री देवीशकर तिवारी का प्रवेश राजनीति मे हुआ । तब से सर्वप्रथम जयपुर राज्य प्रजामडल के सदस्य बने। 1944 तक उन्होने प्रजामण्डल के मच से राज्य मे राज्यनैतिक चेतना लाने का कार्य किया। 1945 मे जयपुर राज्य प्रजामडल के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। उसी वर्ष वे जयपुर राज्य के मन्त्रिमडल मे ले लिए गए और 1949 तक वे जयपुर राज्य मे मन्त्री रहे। उन्ही के मन्त्रीत्वकाल मे राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर मेडिकल कॉलिज और महारानी कॉलिज जैसी सस्थाओ की नीव रखी गई ।

राजस्थान के निर्माण के बाद श्री देवीशकर तिवारी राजस्थान लोकसेवा आयोग के 51 से 58 तक अध्यक्ष रहे और फिर जयपुर नगर विकास न्यास के अध्यक्ष पद पर कार्य किया ।

श्री देवीशकर तिवारी दैनिक लोकवाणी के प्रथम सपादक थे। वे कई सामाजिक और सास्कृतिक सस्थाओ से सबद्ध रहे है। वर्षों तक वे राजस्थान विश्वविद्यालय की सिंडिकेट के सदस्य रहे हैं। जयपुर के लाल बहादुर शास्त्री कॉलिज के विकास के पीछे उनका ही सबसे बडा हाथ रहा है । वे राजस्थान प्रदेश भारत सेवक समाज, भारतीय सामाजिक कार्य परिषद, राजस्थान नागरिक सुरक्षा परिषद तथा राजस्थान योजना समिति जैसी सस्थाओ के सदस्य रहे है ।

श्री तिवारी जी ने समाज के विविध क्षेत्रो मे कार्य किया है और हर स्थान पर अपने पीछे मानवीय सेवा की एक गहरी छाप छोडी है। इनके मानवीय गुण, इनकी उदारवृत्ति और उनका धीर गम्भीर सौम्य स्वभाव उनकी चारित्रिक महत्ता को समझने के लिए बहुत बडे प्रमाण है ।

श्री दौलतमल भंडारी

जन्म— 16 दिसम्बर 1907
वर्तमान पता— म्युजियम मार्ग, जयपुर

श्री दौलतमल भण्डारी का जन्म 16 दिसम्बर सन् 1907 को जयपुर मे हुआ। प्रारभिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात इन्होने महाराजा कॉलेज जयपुर से बी० ए० की उपाधि प्राप्त की, ततपश्चात् आपने लखनऊ विश्वविद्यालय मे एम० ए० (गणित) तथा एल० एल० बी की डिग्री प्राप्त कर सन् 1930 मे जयपुर मे वकालत प्रारम्भ की।

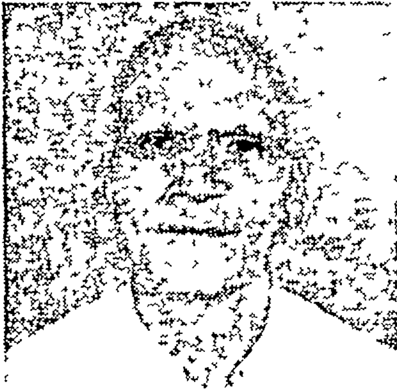
श्री भण्डारी ने डिग्री प्राप्त वकीलो को सगठित कर जयपुर मे प्रथम बार एसोसियेशन की स्थापना की और अपनी प्रखर बुद्धि के कारण वे प्रथम श्रेणी के वकीलो मे गिने जाने लगे। सन् 1939 मे पहली बार जयपुर मे मौलिक अधिकारो की प्राप्ति के लिए प्रजामण्डल का सघर्ष राज्य सरकार से हुआ। जब प्रजामण्डल के सभी नेता गिरफ्तार कर लिए गए और उसे सचालन करने वाला कोई व्यक्ति नही रहा ऐसे समय मे श्री भण्डारी ने प्रजामण्डल के आन्दोलन का सचालन कर उस सामन्तशाही युग के लोगो मे लोकतान्त्रिक भावना का विकास किया। श्री अपने प्रयत्नों से शिक्षित एव प्रबुद्ध वर्ग को आन्दोलन मे प्रेरित किया।

सन् 1942 मे ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध आन्दोलन मे मोर्चा लेने के लिए उन्होंने आजाद मोर्चे की स्थापना की। जयपुर राज्य मे ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध आन्दोलन की सफलता का श्रेय श्री भण्डारी को है जिन्होंने अत्यधिक सूझबूझ एव कुशलता से इस आन्दोलन का नेतृत्व किया। सरकार विरोधी कार्यवाही के कारण सन् 1942 मे इन्हे गिरफ्तार कर जेल मे रख दिया गया। सन् 1943 के आरम्भ मे वे रिहा हुए। जेल से मुक्त होने के बाद वे जयपुर राज्य मे प्रजातन्त्रात्मक सरकार की स्थापना के लिये प्रयत्नशील रहे।

सन् 1945 मे जयपुर मे तत्कालीन दीवान मिर्जा इस्माइल ने शासन मे सुधार कर विधानसभा की स्थापना की। श्री भण्डारी बहुमत से विधानसभा के लिए चुने गए और विधान सभा मे प्रजामडल दल का कुशलतापूर्वक नेतृत्व किया। सन् 1947 मे तत्कालीन जयपुर सरकार के मन्त्रिमण्डल के वे सदस्य बने तथा विकास एव रसद विभाग का कार्य सभाला।

30 मार्च सन् 1949 को सयुक्त राजस्थान के निर्माण के पश्चात् इन्होने पुन वकालत प्रारम्भ की और कुछ ही दिनो मे इनकी गणना हाईकोर्ट के प्रमुख वकीलो मे होने लगी। सन् 1952 के लोकसभा के चुनाव मे काग्रेस दल की ओर से श्री भण्डारी जयपुर निर्वाचन क्षेत्र मे भारी बहुमत मे चुने गये।

श्री भण्डारी की प्रखर बुद्धि एव कानून के गहन अध्ययन से तत्कालीन न्यायाधीशों ने अत्यधिक प्रभावित होकर इन्हे न्यायालय के जज बनने के लिए आमन्त्रित किया, जिसे इन्होंने कई बार अस्वीकार करने के पश्चात् अन्त मे विशेष स्थिति मे सन् 1955 मे स्वीकार किया। सन् 1968 मे राजस्थान के हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश नियुक्त हुए। एव सन् 1969 मे भारत सरकार द्वारा कृष्णा गोदावरी ट्रिब्युनल मे न्यायाधीश का कार्य कर रहे है। भूमि सुधार कानून मे सुधार करने के लिए राजस्थान सरकार ने इनकी अध्यक्षता मे समिति का गठन किया जिसमे इन्होंने अनेको महत्वपूर्ण एव क्रान्तिकारी सुझाव दिए है।



श्री धीरेन्द्रसिंह भदौरिया

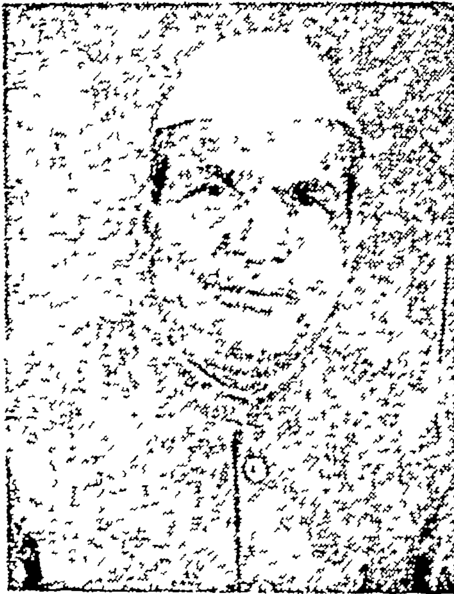
वर्तमान पता—भदौरिया निकेतन
सवाई माधोपुर

श्री धीरेन्द्रसिंह का जन्म उत्तरप्रदेश के जिला मैनपुरी के अन्तर्गत ग्राम कैथोली मे भदौरिया राजपूत परिवार मे हुआ । इनके पिता का नाम रतनसिंह था । इनकी शिक्षा मिडिल तक हुई थी । विद्यार्थी जीवन मे ही प्रभात फेरियो तथा शराव वन्दी और पिकेटिंग आदि कार्य मे हिस्सा लेना शुरू कर दिया था और पुलिस द्वारा पकडकर छोड देने तक, दण्ड प्राप्त होने लगा था । 1930 मे सावरमती आश्रम जाने को हुए तव गाव व घर छोड कर जयपुर पहुचने पर मालूम हुआ कि जीवन कुटीर वनस्थली मे वस्त्र—स्वावलम्वन आदि का रचनात्मक कार्य हो रहा है अत पण्डित हीरालाल शास्त्री से सम्पर्क स्थापित होने पर जीवन कुटीर मे ही वस्त्र स्वावलम्वन की पूरी शिक्षा प्राप्त की ।

आवश्यक प्रशिक्षण के वाद उसी क्षेत्रमे वस्त्र-स्वावलम्वन तथा शिक्षा एव समाज सुधार आदि का कार्य करते रहे । 1936 मे जयपुर राज्य प्रजामण्डल का पुनर्गठन होने पर जीवन कुटीर के सभी कार्यकर्ता प्रजामडल के सगठन मे लग गये । इन कार्यकर्ताओ मे श्री धीरेन्द्र सिंह भी थे जिन्होंने सवाई माधोपुर तथा मालपुरा की तत्कालीन निजामतो मे सगठन कार्य करते हुए निरकुश छोटे-छोटे जागीरदारो के अत्याचार सहे, यहा तक कि किसी-किसी ठिकाने वाले ने तो काठ मे पैर डालकर हफ्तो परेशान किया । सभी कठिनाइयो के वाद भी सवाई माधोपुर मे प्रजामण्डल का अच्छा सगठन इनके कार्य से वन गया और 1939 के जयपुर सत्याग्रहियो के साथ यह भी पकड लिये गये । इन्हे 4 मास की सजा हुई जिसे पूरा करके फिर उसी सगठन मे लगे रहे । 1942 मे भी यह ब्रिटिश विरोधी व युद्ध विरोधी कार्य करते रहे लेकिन जयपुर महाराजा और प्रजामण्डल के वीच समझौता होने के कारण गिरफ्तार नही किए गये । कई सालो तक प्रजामण्डल का काम करने के वाद श्री धीरेन्द्रसिंह खादी कार्य मे लग गये । तव ये इनके द्वारा सवाई माधोपुर क्षेत्र मे खादी कार्य किया जा रहा है ।

उनका पता है—भदौरिया निकेतन, सवाई माधोपुर ।

प्रोफेसर नेतिराम शर्मा एल० एल० एम०



जन्म— सवत् 1978 वैशाख पूर्णिमा

पता— जौहरी बाजार, जयपुर।

प्रोफसर नेतिराम शर्मा अलवर जिले के कतोवर ग्राम के निवासी है। जाति मे ब्राह्मण है। उन्होने प्रभाकर, भिषगाचार्य और बी ए, एल एल एम तक शिक्षा ग्रहण की है। 1956 मे वे राजस्थान विश्वविद्यालय मे लॉ कॉलेज मे प्राध्यापक का कार्य कर रहे है परन्तु उनके जीवन का महत्वपूर्ण समय राजकीय सेवामे लगे हुए कर्मचारियो की युनियने बनाकर ट्रेड यूनियन मूवमेटके द्वारा राज्य कर्मचारियो के हितो की रक्षा की लडाई लडने मे लागा है।

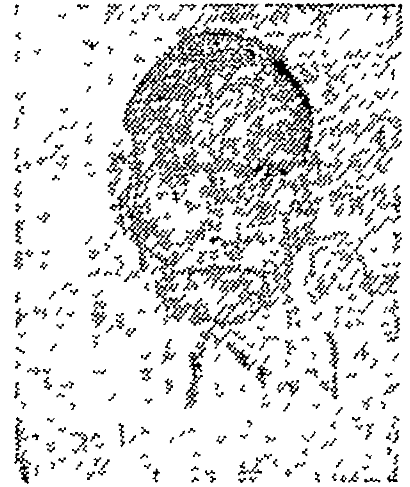
प्रोफेसर नेतिराम शर्मा का जीवन विविध रगो से रगा हुआ है। उन्होने 1934 मे अमरसर मे खादी उत्पादन और हरिजनोद्वार के कार्य मे अपना सार्वजनिक जीवन शुरू किया। 1935 से 38 तक वे काग्रेस के साथ–साथ आर्य समाज से प्रभावित रहे। 1938 मे उन्होंने पोस्ट आफिस मे सर्विस करली और पश्चिमी राजस्थान पोस्टल युनियन के कर्मठ कार्यकर्त्ता वन गए और ट्रेड यूनियन के क्षेत्र को अपने जीवन का लक्ष्य वनाया। 1942 मे श्री नेतिराम शर्मा नौकरी मे रहते हुए छुपे रूप मे सूचनाए देने का कार्य करते थे। 1938 मे 51 तक राजकीय सेवामे जहा जहा गए वही वही राजनैतिक नेताओ से उनका सम्पर्क वनता गया, 1953 मे राजस्थान मध्यभारत पोस्ट टेलीग्राम टेलीफोन और आर एम एस. की यूनियन के प्रधानमन्त्री चुने गये और इस लम्बी यात्रा मे सन् ५६ मे राजस्थान विश्वविद्यालय के ला कॉलिज मे प्रवक्ता वन गए।

सन् 1938 मे 47 तक उन्होंने डाक तार विभाग के कर्मचारियो को अपनी यूनियन के मच से राष्ट्रीयता और ब्रिटिश विरोधी विचारो मे भर दिया था। जोधपुर मे श्री जयनारायण व्यास, बीकानेर मे श्री रघुवरदयाल गोयल, गगानगर मे श्री रामचद्र चौधरी, श्री कुभाराम आर्य और सीकर मे श्री कपिलदेव अग्रवाल के साथ प्रो० नेतिराम ने समय-समय पर कार्य किया। सन् 57 मे राजस्थान भर की पोस्टल युनियन के अध्यक्ष वनाए गए। कुछ दिन राजस्थान खादी वोर्ड के उप सचिव का कार्य किया।

आजकल सर्वोदय, शराववदी और साम्प्रदायिकता विरोधी प्रवृत्तियो मे तथा हिन्दी प्रचार कार्य मे लगे हुए है।

आचार्य डाक्टर नंदलाल शर्मा, बस्सी

जन्म—सन 1909 वर्तमान पता—सुधीर भवन, बस्सी (जयपुर)



आचार्य श्री नदलाल शर्मा का खानदान मूलरूप से जयपुर जिले के बस्सी कस्बे का रहने वाला है परन्तु उनका जन्म 1909 मे खामगाँव महाराष्ट्र मे हुआ। अंग्रेजी और मराठी के माध्यम से उन्होने शिक्षा प्राप्त की उन्होने परसियन मे हकीमुलफीलसफा, फारसी मे मुन्शी फाजिल और सस्कृत मे व्याकरण मीमासा और उपनिषदो के साथ वेदाध्ययन किया। उन्होने कृषि विज्ञान मे कई महत्वपूर्ण अन्वेषण किए हैं।

1926 मे आचार्य नन्दलाल कांग्रेस के सदस्य बने और खामगांव तहसील कांग्रेस के सेक्रेटरी, तब से वे कांग्रेस की प्रवृत्तियो में पूर्ण रूप से सलग्न होते गए। 1927 मे उन्होने हिन्दुस्तानी सेवादल का गठन किया। 1928 मे बारडोली मे पहली बार गिरफ्तार हुए। 1930 मे नमक सत्याग्रह के समय बुलाढाणा जिला कांग्रेस युद्ध समिति के डिक्टेटर चुने गए। सिरला म 49 गांवो की स्वतत्र सरकार बनाकर उसके राष्ट्रपति चुने गए। वही जगल सत्याग्रह मे उन्हे गिरफ्तार कर लिया। उन्हे 6 महीने की सजा दी गई।

1931 मे आचार्य नदलाल शर्मा ने सिद्धेश्वर स्वराज्याश्रम की स्थापना करके सत्याग्रह के लिए स्वय सैनिको को प्रशिक्षण देने का काम हाथ मे लिया। आसलगांव मे शराब के पिकेटिग के समय लाठी चार्ज मे इनकी खोपडी फट गई। इन्हे खामगांव मे गिरफ्तार कर 9 महीने के लिए जेल भेज दिया गया। 1932-33 मे श्री नन्दलाल आचार्य ने प्रोफेसर अब्दुल मजीद के साथ लाहोर मे क्रान्तिकारी सगठन बनाया। उन्हे गिरफ्तार करके शुरू मे बोर्स्टल व सेंट्रल जेल लाहोर मे नजरबद रखने के बाद पजाब मे देश निकाला दे दिया गया।

1933 मे उन्होंने जयपुर मे क्रान्तिकारी सगठन बनाने का प्रयास किया, परिणामस्वरूप वे गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हे 1 वर्ष की सजा हुई। 1934 मे जयपुर रिजेंसी कौंसिल ने उनकी सारी चल अचल सपत्ति जब्त कर उन्हे जयपुर राज्य से निर्वासित कर दिया।

जयपुर से देश निकाले के बाद आचाय नदलाल शर्मा बिना परिपत्र के क्वेटा, के व्राहाट, हिरात मार्ग से शिराज व तेहरान पहुँचे। वे ईरान, तुर्किस्तान व रुस तुर्की और ग्रीक देशो मे घूम कर भारत आए और दक्षिण हैदराबाद की पहाडियो मे सैनिक सगठन बनाने मे जुट गए।

15 अगस्त 42 का श्री नन्दलाल आचाय भारत सुरक्षा कानून के अतगत गिरफ्तार कर लिए गए। वे बुलाढाणा, जबलपुर आकोला और नागपुर के केन्द्रीय कारागरो मे 3 वर्ष तक नजरबद रहे।

1946-47 मे उनके कृषि विज्ञान के अनुसधान कार्य के लिए महात्मा गाँधी ने उन्हे मालवीयजी के पास हिन्दू विश्वविद्यालय मे भेजा। वहाँ उन्होने रिसर्च फेलो व रिसर्च प्राध्यापक की तरह काय किया। भारत सरकार ने उन्हे कई सम्माननीय पद ऑफर किए। इसके बाद उनका सारा समय वैज्ञानिक अन्वेषण के लिए हिमालय और रेगिस्तानो के भ्रमण मे बीता है।

श्री परमेश्वर दयाल विद्यार्थी

जन्म— 15 मितम्बर 1915
निधन– 25 फरवरी 1957

श्री परमेश्वर दयाल विद्यार्थी का जन्म 15 सितम्बर 1915 को राजगढ जिले के पचोक ग्राम मे हुआ था। इनके पिता नरसिहगढ रियासत के राजस्व मन्त्री थे। इनका बचपन शाहीशान से बीता। नरसिहगढ से मैट्रिक करने के बाद आगे की पढाई के लिए वे जयपुर आ गए और जयपुर मे बी० ए० किया। उन्होंने लखनऊ से एल० एल० बी० किया। फिर नेशनल काल, वीर अर्जुन और हिन्दुस्तान जैसे पत्रो के सम्पादकीय विभाग मे काम करने लग गए। 16 जनवरी 1940 को उनका विवाह श्री राजेश्वरी विद्यार्थी से हुआ। विवाह के दो महीने बाद जयपुर प्रजामडल की पत्रिका जय प्रजा का सपादन करने जयपुर पहुँच गए और विवाह के ठीक 1 वर्ष बाद 16 जनवरी 1941 को जयपुर सरकार के विरुद्ध सपादकीय छापने के अभियोग मे गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हे 1½ वर्ष के लिए जेल भेज दिया गया। लेकिन प्रभावशाली पैरवी के कारण 6 जून 41 को उन्हे रिहा कर दिया गया। जयपुर जेल से मुक्त होने के बाद वे दिल्ली के हिन्दुस्तान के सम्पादकीय विभाग मे चले गए।

भारत छोडो आन्दोलन मे आपने भूमिगत रह कर लम्बे समय तक कार्य किया और अग्रेज सल्तनत की गतिविधियो को ठप्प करने की धुन मे तोड फोड के कामो मे रम गए। 1943 मे गिरफ्तार कर लिए गए और उन्हे फिरोजपुर जेल भेज दिया गया। 1945 मे आप जेल से रिहा हुए। जेल मे श्री विद्यार्थी ने योग की साधना शुरु करदी थी। उन्होने अरविंद साहित्य का गहरा अध्ययन किया था।

उनके सरल और विश्वासी स्वभाव के कारण कदम कदम पर उन्हे मित्रो का विश्वासघात मिलता रहा। व्यवसाय किया और उसमे हजारो का नुकसान हो गया। प्रेस खोला और वहा भी जम नही सके। 1945 मे उन्होने वकालात शुरु की पर मुवक्किलो से अपनी फीस के रुपये लेते हुए भी उन्हे सकोच होता था।

श्री विद्यार्थी ने नशाबंदी आन्दोलन मे भी भाग लिया। 26 जनवरी 1957 को श्री विद्यार्थी राजस्थान मे काग्रेसी उम्मीदवार के समर्थन के लिए श्रीमाधोपुर (सीकर) आए थे। उनकी पत्नि ने उन्हे इस चुनाव मे जाने से बहुत रोका था परन्तु वे नही माने। वे 25 फरवरी 57 को काग्रेसी उम्मीदवार के पोलिंग बूथ पर कार्यरत थे कि अकस्मात् उनकी हृदयगति रुक जाने से उनका वही पोलिंग बूथ पर ही देहावसान हो गया।

श्री बद्री नारायण 'खोराजी'

जन्म संवत् 1957 आश्विन शुक्ला 3 वर्तमान पता गाव खोरा बीसल जिला जयपुर

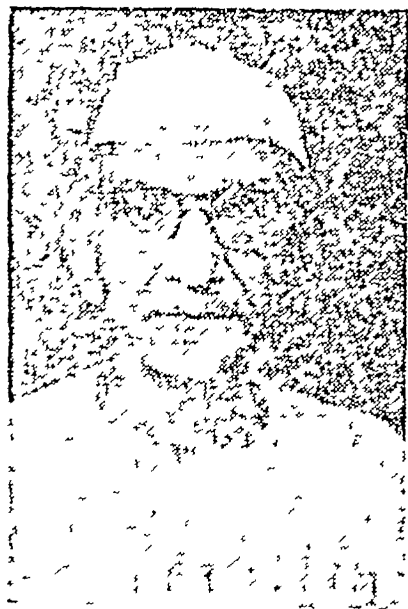
श्री बद्रीनारायण 'खोराजी' का जन्म आश्विन शुक्ला 3 सवत् 1957 विक्रमी को तत्कालीन जयपुर राज्य के अन्तर्गत ग्राम खोरा बीसल मे हुआ । उनके पिता का नाम पण्डित गिरधारीलाल शर्मा था जो अपने गाँव के लोकप्रिय और प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते थे । खोराजी की प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता के सान्निध्य मे अपने गाँव खोरा बीसल मे ही हुई और बाद मे उन्होंने मिडिल की परीक्षा पास करली । खोराजी किशोरावस्था मे ही अपने मौलिक विचार रखते थे और अपनी धुन के पक्के थे । जिस काम को करने की सोचते, निर्भीक भाव से उसे करने मे अपने ढग से दत्तचित हो जाते । उनका यह गुण उनमे आज भी विद्यमान है ।

शिक्षा समाप्ति के बाद वे अध्यापन के कार्य मे जुट गये । बाद मे गाधीजी के विचारो ने खोराजी के त्याग और सेवाभाव को प्रोत्साहित किया । वे पंडित अर्जुनलाल सेठी की गतिविधियो से प्रेरणा पाते रहते थे । उन्होंने हरिजनो मे साक्षारता प्रसार और जागीरदारी गावो मे बेगार आदि के विरोध का काम अपने हाथ मे लिया । स्वाभिमानी और निर्भीक तो वे शुरु से थे ही । अपने इन्ही गुणो के कारण वे जागीरदारो की बेगार आदि कुप्रथाओ का डट कर जोरदार विरोध करते रहे और जागीरदारी गावो के प्रजाजनो मे जो दोहरी गुलामी के शिकार थे, स्वाभिमान और निर्भीकता का पाठ पढाते रहे । एक दफा एक पुलिसमैन से खोराजी का विवाद हो गया तो उन्होने उसे पीट डाला ।

वनस्थली मे पण्डित हीरालाल शास्त्री ने अपनी रचनात्मक सस्था 'जीवनकुटीर' के माध्यम स ग्रामवासियो को अपने पावो पर खडा करने का प्रयोग शुरु कर दिया था । खोराजी वनस्थली पहुच कर जीवन कुटीर के रचनात्मक काम मे लग गये । जीवन कुटीर के कार्यकर्ताओ को जब राजतत्र को बदलने की जरुरत महसूस होने लगी तो वे जयपुर राज्य प्रजामन्डल के सगठन के काम मे लग गये और खोराजी ने भी अपने आपको प्राणपण मे इस काम मे झोक दिया । उन्होने मुख्यतया मामर निजामत मे जन जागृति और लोक शिक्षण का काम किया । खोराजी ने शेरो के उत्पात को लेकर राज्य का जोरदार विरोध किया । 1939 मे जब जयपुर राज्य प्रजामडल ने नागरिक अधिकारो के लिए सत्याग्रह आन्दोलन शुरु किया तो वे भूमि गत होकर सत्याग्रह सचालन मे अपना योग देते रहे ।

1942 के आन्दोलन मे जयपुर राज्य प्रजामण्डल द्वारा अपनायी गयी नीति के अनुसार आन्दोलन की पृष्ठ भूमि मे रह कर प्रजामण्डल के सन्देश वाहक का काम करते रहे । खोराजी की एक बडी विशेषता यह है कि वे समाजवादी विचारधारा की व्याख्या अपनी मौलिक और वैज्ञानिक रीति से बातचीत, भाषण, बुलेटिन और पत्रादि के द्वारा शुरु से इस समय तक करते रहे हैं ।

श्री बद्री नारायण खूंटेटा



जन्म— सन् 1909

वर्तमान पता— चौमू जिला जयपुर ।

तत्कालीन जयपुर राज्य के ठिकाना चौमू कस्बे मे श्री बद्री नारायण खूंटेटा का जन्म हुआ । उनके पिता श्रीलक्ष्मीनारायण खूंटेटा एक धर्मपरायण व्यक्ति थे । श्री खूंटेटा की शिक्षा चौमू, जयपुर और पिलानी मे हुई थी । अपने विद्यार्थीकाल मे ठिकाने की जुल्मज्यादती को देख पराधीनता के वातावरण मे उनका मन स्वतत्रता के लिए काम करने को छटपटाता रहता था । अत अपनी शिक्षा समाप्त करने के साथ ही श्री खूंटेटा ने ठिकाने के अनुचित कामो का विरोध करना शुरू कर दिया और वे राष्ट्रीय चेतना के साहित्य-प्रचार, पुस्तकालय, वाचनालय के सचालन, खादी प्रचार, हरिजनो की शिक्षा और उनके उत्थान-उत्कर्ष के रचनात्मक काम मे लग गये । पर इसमे उनको पूरा सतोष नही था । अत 1929 मे इन कामो को विस्तृत पैमाने पर आगे बढाने के खयाल से उन्होने जयपुर राज्य की निवाई तहसील को अपना कार्यक्षेत्र चुना । और निवाई को केन्द्र स्थान मान कर खादी उत्पादन के माध्यम से अपने सेवा कार्यों को कार्यान्वित करना शुरू कर दिया ।

1932 मे महात्मा गाधी ने हरिजनो के प्रश्न को लेकर जो अनशन व्रत लिया उसमे श्री खूंटेटा ने अपने आपको देश सेवा के किसी खास काम को करने का निश्चय किया । इसी बीच वे जीवन कुटीर वनस्थली के सचालक अपनी धुन के पक्के, फक्कड-पथी पण्डित हीरालाल शास्त्री के सम्पर्क मे आये । शास्त्रीजी की प्रेरणा से वे 1932 मे वनस्थली के जीवन कुटीर के फक्कड-पथ के अनुयायी हो गये । वही उन्होने श्री शास्त्रीजी के साथ अग्नि की साक्षी मे आजीवन देश सेवा का व्रत लिया । श्री खूंटेटा की धर्मपत्नी का 20 वर्ष की अवस्था मे देहान्त हो गया तब उन्होने अपनी पूरी शक्ति राष्ट्र सेवा के काम मे लगाने के खयाल से 24 वर्ष की स्वल्पावस्था मे भी पुन विवाह न करने का सकल्प कर लिया ।

श्री खूंटेटा जीवन कुटीर मे कार्यालय व्यवस्थापक का काम करते हुए रात्रिशाला सचालन वस्त्र स्वावलम्बन, सहकार-सभा-सगठन, समाज सुधार आदि कार्यों मे एक निष्ठा के साथ लीन हो गये । जब जीवन कुटीर के फक्कड पथियो ने राजतन्त्र को बदलने के लिए नया काम हाथ मे लेने की जरूरत अनुभव की, श्री शास्त्रीजी के साथ और उनके निर्देशन मे श्रीखूंटेटा ने जयपुर राज्य का राज्यव्यापी दौरा किया और वे राज्य मे सार्वजनिक कामो मे सम्बन्ध रखने वाले छोटे-बडे अनेको कार्यकर्ताओ के सम्पर्क मे आये ।

1937 मे जीवन कुटीर के कार्यकर्त्ताओ ने जयपुर राज्य प्रजामण्डल के पुनर्गठन का काम अपने हाथ मे लिया। प्रजामण्डल के पुनर्गठन के पश्चात् श्री खूटेटा उमके केन्द्रीय कार्यालय के चार्ज मे रहे। राज्य के अन्यान्य भागो मे प्रजामण्डल के सगठन को सुदृढ वनाने हेतु पण्डित हीरालालजी शास्त्री के साथ दौरा करके राज्य की प्रत्येक निजामत मे क्षेत्रीय कार्यालय स्थापित करके प्रथम वार कमेटियो के कायम करने मे अपना योग दिया।

पण्डित हीरालाल शास्त्री और श्री हरिभाऊ उपाध्याय द्वारा गठित और मचालित राजस्थान सघ के श्री खूटेटा गठन काल से ही सदस्य रहे।

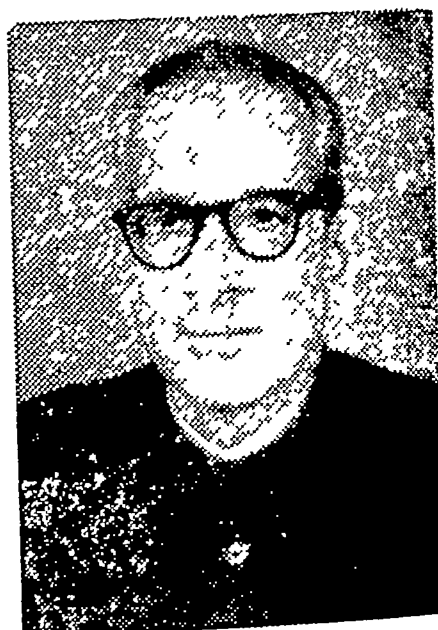
1939 मे जयपुर राज्य ने जव जयपुर-राज्य प्रजामण्डल की नागरिक अधिकारो की न्यूनतम माग को भी अस्वीकार कर दिया तो प्रजामण्डल ने अपने अधिकारो की प्राप्ति के लिए पू० गाधीजी के निर्देशन मे मत्याग्रह किया। तव श्री खूटेटा के लिए निश्चय किया गया कि वे जयपुर राज्य मे वाहर आगरा मे रह कर सत्याग्रह मचालन के काम मे योगदान दे। वाद मे प्रजामण्डल और राज्य मे ममझौता हो गया। उस समझौते के परिणामस्वरूप प्रजामण्डल की मागे स्वीकार करली गयी। राज्य से प्रजामण्डल का ममझौता हो जाने पर श्री खूटेटा आगरा मे जयपुर आ गये और जयपुर मे केन्द्रीय कार्यालय को मभालते रहे और कार्यकर्ताओ मे मम्पर्क साधते हुए प्रजामण्डल के काम को निरतर आगे वढाते रहे।

1942 मे भारत छोडो आन्दोलन के दौरान जयपुर राज्य प्रजामण्डल और जयपुर राज्य का जो समझौता हुआ उसके अनुमार श्री खूटेटा ने अपने आप भूमिगत कार्यकर्ताओ के कामो मे भरपूर मदद पहुचायी। भूमिगत कार्यकर्ताओ मे भाई रघुराजमिह राठौड द्वारा मचालित योजना की श्री खूटेटा व्यवस्था करते रहे।

स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् श्री खूटेटा ने काग्रेस की विभिन्न ममितियो, जिला वोर्ड, जल वोर्ड, नगरपालिका आदि अनेक सस्था सगठनो के सदस्य रह कर उनके कायो को ठीक तरह मे अजाम दिया। वर्तमान मे शैक्षणिक, सामाजिक, आध्यात्मिक सस्थाओ के माध्यम से लोकसेवा और लोकशिक्षण के काम को ही भगवद् पूजा और भगवद् भक्ति समझ कर करते हैं।

श्री बंशीलाल लुहाड़िया

वर्तमान पता— लुहाडिया भवन, अशोक मार्ग,
सी स्कीम, जयपुर।



श्री बंशीलाल लुहाडिया जयपुर से संसद के ५ वर्ष तक सदस्य रह चुके हैं। ये जयपुर जिला बोर्ड के निर्वाचित सदस्य रहे हैं। श्री लुहाडिया जयपुर राज्य प्रजामंडल और देशी राज्य प्रजा परिषद के सक्रिय सदस्य रहे हैं और जागीरदारी प्रथा के उन्मूलन के लिए किसानों को संगठित किया है। श्री लुहाडिया राजस्थान प्रांतीय कांग्रेस कमेटी और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के वर्षों तक सदस्य रहे हैं। जयपुरमे बार एसोसियेशन (अभिभाषक संघ) के अध्यक्ष के नाते जयपुर मे हाई कोर्ट बैंच की स्थापना के लिए ये निरंतर प्रयत्नशील और संघर्षरत रहे हैं।

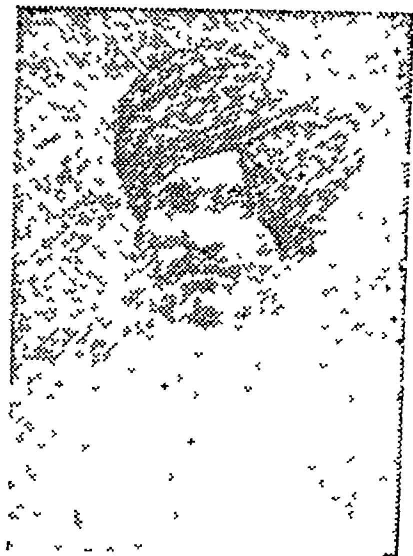
श्री बंशीलाल लुहाडिया विद्यार्थीकाल मे ही एक विचारशील लेखक थे स्वर्गीय श्री जमनालालजी बजाज की प्रेरणा से श्री लुहाडिया स्व० हरिभाऊ उपाध्याय के पास अजमेर चले गए और उन्होने त्यागभूमि के सह-संपादक के रुप मे कार्य किया। अपने अजमेर प्रवास काल मे उन्हें गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमो की पूरी जानकारी हुई और कई रचनात्मक प्रवृत्तियो में उन्होने कार्य किया।

नमक सत्याग्रह के समय 1930–31 मे श्री बंशीलाल लुहाडिया ने प्रांतीय कांग्रेस के डिक्टेटर के रूप मे सत्याग्रह मे भाग लिया। उन्हें अजमेर के केन्द्री कारागृह मे ४ चार महीने की सजा पूरी करनी पडी। जेल से मुक्त होने के बाद श्री लुहाडिया ने एम ए और एल एल बी की परीक्षाए पास की और स्वतंत्र रुप से वकालात करने लग गए।

श्री लुहाडिया अपने छात्र जीवन मे जयपुर मे विद्यार्थियो के लोकप्रिय नेता थे। १९२९ मे महाराजा कालेज में जयपुर के भूतपूर्व नरेश सवाई मानसिंह के आने पर सफेद टोपी पहन कर जाने के अपराध में इन्हें क्लास मे सस्पैंड कर दिया गया था। इसके विरोध मे कालेज मे कई दिन तक हडताल रही और श्री लुहाडिया को कालेज से निष्कासित कर दिया गया।

आजकल श्री बंशीलाल लुहाडिया सुप्रीम कोर्ट के वकील हैं और गंभीर विषयों पर विचार पूर्ण ग्रंथो के लेखन कार्य में लगे हुए हैं। इनका पता है लुहाडिया भवन, सी स्कीम, अशोक मार्ग, जयपुर।

स्वर्गीय श्री भंवरलाल आकड़



जन्म— सन् 1901

निधन— सन् 1944

श्री भवरलाल आकड का जन्म जयपुर के प्रतिष्ठित आकड परिवार मे श्री दामोदर आकड के घर मे 1901 मे हुआ। श्री आकड ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् आकड कम्पनी नाम से साईकलो का व्यवसाय बडी सच्चाई और ईमानदारी के साथ शुरु किया जिसकी साख जयपुर मे अब भी अच्छी मानी जाती है।

श्री आकड अपने व्यवसाय के साथ साथ सार्वजनिक कार्यों मे भी अभिरुचि रखते थे।

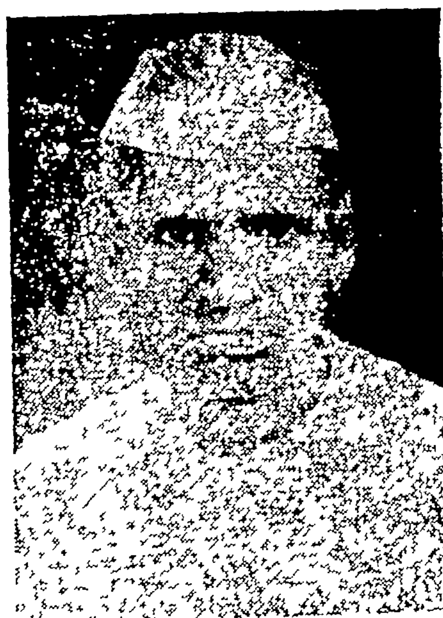
जयपुर राज्य प्रजामण्डल के पुनर्गठन के पश्चात् वे प्रजामडल के प्रचार कार्यो मे भी दिलचस्पी लेने लग गये। उनकी दुकान प्रजामण्डल के सदस्य वनाने का केन्द्र स्थल वनगई। इस दुकान पर राज्य सरकार की कडी निगाह रहती थी किन्तु वे इसमे विल्कुल भी भयभीत नही हुए।

1939 मे जब सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ हुआ उन दिनो राजस्थान मे कोई दैनिक पत्र तो निकलता ही नही था। साप्ताहिक भी एकाध ही था जिसका प्रचलन भी कम था। ऐसी स्थिति मे प्रजामण्डल द्वारा एक साइक्लोस्टाइल्ड दैनिक वुलेटिन निकालने का निश्चय किया गया ताकि आन्दोलन की गति की जानकारी समय पर जनता को दी जा सके। यह कार्य राज्य सरकार की निगाह से वचाकर गोपनीय रूप से करने को था। इस काम के लिए राज्य सरकार द्वारा मकान तक जप्त कर लिये जाने के डर मे उस समय मकान मिलने की वडी समस्या प्रजामण्डल के सामने खडी होगई। उस समय आकड ने स्वेच्छा पूर्वक इस काम को भली प्रकार सम्पन्न करने के लिए अपना खुद का वृहत मकान दे दिया तथा उसके वितरण आदि के कार्य मे अपना तथा अपने कर्मचारियो का पूर्ण सहयोग भी दिया। उनका यह मकान इस सम्वन्ध मे कार्य करने वालो का सुरक्षित निवास स्थान भी रहा। आन्दोलनकाल मे वे हर तरह से सत्याग्रह को सफल वनाने के लिए वडे उत्साही रहे।

सत्याग्रह आन्दोलन स्थागित होने के पश्चात् भी वे विना किसी दिखावे के प्रजामण्डल के कार्यों मे सहयोग देते रहे।

सन् 42 मे वे यक्ष्मा से ग्रसित होगये और सन् 1944 मे स्वतन्त्रता मे पूर्व ही चल बसे।

श्री मदन लाल खेतान



जन्म —संवत् 1953, पौष शुक्ला 8

वर्तमान पता—खेतान भवन, बजाजनगर जयपुर

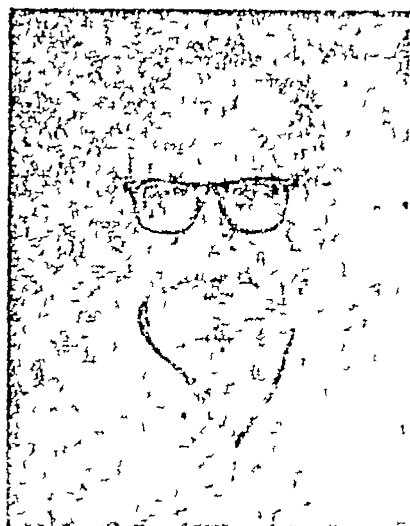
श्री मदनलाल खेतान का जन्म रामगढ शेखावाटी जिला सीकर मे संवत् 1953 की पौष शुक्ला 8 को हुआ। उनके पिता करीब 70 वर्ष पूर्व व्यापार के सिलसिले मे मुजफ्फरपुर, बिहार चले गए थे। श्री मदनलाल खेतान की शिक्षा वही मुजफ्फरपुर मे ही हुई और वही उन्होने एक कपडो की दुकान मे नौकरी करली थी। मुजफ्फर पुर मे नवयुवक सेवा समिति के तत्वावधान मे सेवा कार्य करने लगे। 1921 मे अपने मित्र प्रोफेसर मथुराप्रसाद दीक्षित की प्रेरणा से अपने कीमती विदेशी वस्त्रो को त्याग कर खद्दर पहनने का व्रत किया। 1922 मे उन्होंने नौकरी छोड दी और कांग्रेस का कार्य करने लगे। कांग्रेस मे उन्हे खादी विभाग संभलाया गया। खादी उत्पत्ति और बिक्री का काम उन्होने मुजफ्फरपुर मे शुरू किया जिसे आज तक चला रहे हैं।

1925 मे श्री खेतान का सम्पर्क कांग्रेस अधिवेशन के समय कानपुर मे बजाज जी से हुआ। श्री बजाजजी ने उन्हे प्रेरणा दी कि वे राजस्थान मे जाकर खादी का कार्य करे। 13 फरवरी, 26 को राजस्थान आकर राजस्थान चर्खा संघ के अन्तर्गत उन्होने अमरसर का खादी उत्पत्ति केन्द्र सम्हाला। अमरसर के अलावा दौसा, मनोहरपुरा, गोविन्दगढ मे उन्होने उत्पत्ति केन्द्र खोले।

1939 के प्रजामण्डल के आन्दोलन मे श्री मदनलाल खेतान की पत्नी श्रीमती सुमित्रा खेतान अपने 1½ वर्ष के बच्चे के साथ जेल गई थी। भारत छोडो आन्दोलन के समय श्री मदनलाल खेतान चर्खा संघ से त्यागपत्र देकर ब्रिटिश विरोधी आन्दोलन के लिए जयपुर आए। प्रजामण्डल के कुछ कार्यकर्ताओ ने आजाद मोर्चा स्थापित किया और उसके द्वारा शुरू किए गए आन्दोलन मे मदनलाल खेतान शामिल हो गए। माणक चौक चौपड पर एक प्रार्थना सभा करते समय वे गिरफ्तार कर लिए गए। 11 महीने तक वे जेल मे रहे।

सन् 44 मे श्री मदनलाल खेतान राजस्थान चर्खा संघ के मन्त्री हुए। 1949 मे राजस्थान खादी संघ के सहायक मन्त्री। 1954 मे उन्होने बीकानेर मे खादी ग्रामोद्योग प्रतिष्ठान की स्थापना की और संयुक्त मन्त्री का कार्य किया। 1957 मे राजस्थान खादी ग्रामोद्योग संस्था संघ के मन्त्री चुने गए। इसके बाद अमरसर के खादी ग्रामोद्योगमण्डल के अध्यक्ष का कार्य किया। इनके अतिरिक्त प्रान्त की अनेको रचनात्मक संस्थाओ मे किसी न किसी रूप मे सम्बद्ध हैं। आजकल जयपुर मे ही रहते हैं।

श्री मूलराज टंडन (लाहौर), जयपुर



जन्म — 11 दिसम्बर 1911

वर्तमान पता—पुरानी बस्ती, चान्दपोल बाजार जयपुर

सन् 1926 मे पजाब मे इडियन रिपब्लिकन आर्मी की स्थापना के समय ,श्री मूलराज टडन ने भी यह सकल्प लिया था कि मुझे हर मुमकिन तरीके से देश मे समाजवाद की स्थापना करनी है। ऐसे समाजवाद की, जिसमे एक आदमी दूसरे का शोषण नही करे। उस समाजवाद मे जनता के निर्वाचित प्रतिनिधि शासक नही, कस्टोडियन हो। श्री मूलराज टडन और उनके साथियो की दृष्टि उस समय आयरलैंड और रूस की तरह क्राति करके अग्रेजो को भारत से निकालने की थी। उनका यह मानना था कि अग्रेज बात के जोर से नही अपितु हाथ के जोर से ही भारत छोड सकते हैं। उस समय उनके सामने अमर शहीद करतारसिंह सराभा का ही आदर्श था जो युवावस्था मे फासी पर झूल गए थे। सरदार भगतसिह के नेतृत्व मे वे क्राति के मार्ग पर आगे बढ रहे थे।

इडियन रिपब्लिकन आर्मी मे पजाब के अधिकाशत सभी क्रातिकारी शामिल थे। भगतसिह की नौजवान भारत सभा भी इसी मे शामिल हो गई थी। सरदार भगतसिह और श्री मूलराज टडन के केवल राजनैतिक ही नही, पारिवारिक सम्बन्ध भी थे। उन्होने सरदार भगतसिह के साथ क्राति के मार्ग पर बहुत तेजी से कदम बढाए थे। सरदार भगतसिह का उन पर पूरा विश्वास था।

श्री मूलराज टडन क्रान्ति के मार्ग पर सघर्ष करते करते 10 वर्ष से अधिक समय तक जेलो मे रहे है। उनका जन्म 11 दिसम्बर 1911 को लाहोर के एक सम्पन्न और श्रीमत परिवार मे हुआ था। उन्हे क्राति की प्रेरणा श्री जगन्नाथ सहगल से मिली थी। उनका परिवार ब्रिटिश सरकार से सम्मानित परिवार था। उनकी शिक्षा भी अग्रेजी स्कूलो मे कोवनेन्ट मे अग्रेज बालको के साथ ही हुई थी। अग्रेजी स्कूलो मे ही उन्होंने सिनियर केम्ब्रिज की परीक्षा पास की थी। परन्तु उनकी ब्रिटिश विरोधी विचारधारा और क्रातिकारी प्रवृत्तियें देखकर उनके पिता ने उन्हे साफ कह दिया था कि या तो वह अपनी क्रान्तिकारी प्रवृत्तियें छोड दे अन्यथा वे उन्हे न अपनी सम्पत्ति मे से कुछ हक देंगे और न उनके साथ मकान मे रह सकेंगे। श्री मूलराज टडन ने एक क्षण मे फैसला कर लिया और

विशाल सपत्ति पर अपने अधिकार और सुख सुविधाओ से भरे हुए ऐश्वर्यशाली मकान को सदा के लिए एक क्षण मे त्याग दिया ।

लाला लाजपतराय की मृत्यु के बाद लाहौर के क्रातिकारियो ने तय किया कि कुछ करना चाहिए । स्काट की हत्या करने का फैसला हुआ लेकिन सयोग से सैंडर्स की हत्या हो गई । उसी प्रसग मे अन्य साथियो के साथ श्री मूलराज टडन भी गिरफ्तार कर लिए गए । उन्हे लाहौर के किले मे रखा गया । उनके पिता अपने प्रभाव से उन्हे जमानत पर छुडा लाए । और उसी वक्त 1928 मे 17 वर्ष की आयु मे सभी पैतृक सम्पत्ति छोड कर उन्हे गृह त्याग करना पडा ।

गृह त्याग के बाद श्री मूलराज टडन रूस से हथियार लाने की कोशिश मे लम्बे समय तक लगे रहे । उन्होने देश के सभी क्रातिकारियो से सम्पर्क करने के लिए रगून तक की यात्राऐ की । उनके नाम के वारट निकल चुके थे । वे भूमिगत रह कर कार्य करने लगे । परन्तु 1930 मे वे एक दिन पुलिस की गिरफ्त मे आ गए और लाहौर कासप्रेसी केस के साथ एक सप्लीमेंटरी केस बना कर उन्हे आर्म्स एक्ट मे 3 वर्ष के लिए जेल भेज दिया गया ।

1934 मे जेल से आने तक क्रातिकारी सभा समाप्त हो चुकी थी । उन्होने नोर्थ वेस्ट रेल्वे वर्कर्स यूनियन और प्रेस वर्कर्स यूनियने गठित की और इस ट्रेड यूनियन मूवमेंट मे राजद्रोहात्मक भाषण देने के अपराध मे उन्हे फिर 2 वर्ष के लिए जेल भेज दिया गया ।

1936 मे श्री मूलराज टडन मौलवी के वेष मे नोर्थ वेस्ट फ्रटियर की कुहाट छावनी मे सेना मे बगावत फैलाने के लिए निकल पडे । उन्होने रजपत की छावनी, बन्नू की छावनी और एटाबाद की छावनियो मे एक मौलवी के रूप मे अपनी प्रभावशाली माया फैलादी थी और सेना मे क्राति के बीज बिखरने लग गए थे । लेकिन एक दिन बन्नू की छावनी की बैरको के पास मिलिट्री ने उन्हे गिरफ्तार कर लिया और सिविल पुलिस को सौंप दिया जहा उन्हे 1 वर्ष की कैद की सजा दी गई और कुहाट की जेल मे उन्होंने यह सजा काटी ।

1938 मे उन्हे एमर जैंसी पोवर्स पब्लिक सेफटी रेगुलेशन मे गिरफ्तार करके 3 महीने लाहौर किले मे बन्द रखा गया । यह क्रम उनका सन् 1940 तक चलता रहा । 1940 के दिसम्बर मे उन्हे वार रेगुलेशन्स के अन्तर्गत गिरफ्तार कर लिया गया और 1944 तक वे जेल मे रखे गये ।

1948 मे उन्होंने दिल्ली से 'निडर' नामका एक उर्दू साप्ताहिक निकाला और 1951 तक उसे चलाया । पिछले कई वर्षो मे श्री मूलराज टडन जयपुर मे ही आबाद हो गए है ।

श्री मुक्ति लाल मोदी

वर्तमान पता- 2 म्युजियम मार्ग जयपुर



श्री मुक्तिलाल मोदी राजस्थान के प्रमुख सेवा-भावी, सामाजिक और राजनैतिक कार्यकर्त्ता हैं। इनका जन्म जयपुर जिले के अमरसर ग्राम मे हुआ था। श्री मोदी ने युवावस्था मे प्रवेश करते करते सेवा का व्रत ले लिया था। अपनी सेवा भावना के आगे इन्होने अपने आपको पारिवारिक और सामाजिक बधनो मे सदा मुक्त रखा है। उन्होने 1935 से आजीवन खादी पहनने का व्रत लिया था।

श्री मुक्तिलाल मोदी का सार्वजनिक जीवन अपने गाव अमरसर से ही शुरू हुआ। अमरसर मे उन्होने ग्राम सेवा समिति और नवयुवक मडल जैसी सस्थाए स्थापित करके ग्राम विकास और सामाजिक क्षेत्र मे कार्य करने के लिए युवको को सगठित किया। उन्होने अपने गाव मे हरिजन पाठशाला, कन्या पाठशाला, वाचनालय, पुस्तकालय आदि खुलवाए और मृत्यु भोज, पर्दा-प्रथा और अस्पृश्यता के विरोध मे जनमत को तैयार किया।

जयपुर राज्य प्रजामडल की स्थापना के साथ वे प्रजामडल के सदस्य बन गए और 1939 के आन्दोलन मे सत्याग्रह करते हुए जेल गए। 1942-43 मे आजाद मोर्चे के मच से भारत छोडो आन्दोलन को जयपुर राज्य मे फैलाया और गिरफ्तार होने पर लम्बे समय तक जेल मे रहे।

श्री मुक्तिलाल मोदी ने सेवा-ग्राम के शिविर मे भाग लेकर गाधी विचारधारा को समझा। रचनात्मक कार्यकर्ताओ के लिए वनस्थली विद्यापीठ मे भी उन्होने प्रशिक्षण लिया। 1952 से 62 तक श्री मुक्तिलाल मोदी राजस्थान विधान सभा के सदस्य रहे। 1956 मे विश्व शाति परिषद मे भाग लेने के लिए फिनलैंड, चैकोस्लोवाकिया और रूस की उन्होने यात्राए की।

श्री मुक्तिलाल मोदी ने अपने क्षेत्र के सपन्न लोगो द्वारा अपने क्षेत्र मे स्कूल, अस्पताल आदि बनवाने का बहुत बडा काम किया है। इन्होने अपने क्षेत्र के गाव गाव मे प्राथमिक पाठशालाए और उच्च कक्षाए तथा कालेज खुलवाए है। इनका जागीरदारो के साथ निरतर सघर्ष रहा है और बेगार बद करवाने के लिए इन्हे बहुत सघर्ष करने पडे हैं। श्री मुक्तिलाल मोदी सुबह 7 से रात के 11 बजे तक सार्वजनिक सेवा कार्य मे ही लगे रहते है।

श्रीमती रतन शास्त्री



जन्म 15 अक्टोबर 1912

वर्तमान पता वनस्थली विद्यापीठ
राजस्थान

'रतनजी' का जन्म खाचरोद (मध्यप्रदेश) म श्री रघुनाथ व्यास के घर 15 अक्टूबर 1912 को हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा रतलाम की स्थानीय कन्या पाठशाला मे हुई और बाद मे उन्होने जयपुर, कलकत्ता और वनस्थली मे अपनी शिक्षा के क्रम को जारी रखा।

जीवनकुटीर की स्थापना और रचना मे श्रीमती रतन शास्त्री ने पण्डित हीरालाल शास्त्री को अत्यन्त महत्वपूर्ण सहयोग दिया। जीवन कुटीर के कार्यकर्ताओ मे श्रीमती शास्त्री का शुरु मे आखिर तक प्रमुख स्थान रहा। वनस्थली विद्यापीठ की तो श्रीमती शास्त्री आत्मा ही है।

जयपुर राज्य प्रजामण्डल की ओर से जब सत्याग्रह शुरु हो गया और मुख्य कार्यकर्ता गिरफ्तार हो गये तब बाहर मे सत्याग्रह के सचालन व्यवस्था का काम मुख्यतया सर्व श्री ब० सा० देशपाण्डे, राधाकृष्ण बजाज, गुलाबचन्द कासलीवाल, श्रीमदत्त शास्त्री और श्रीमती रतन शास्त्री ने किया। उन दिनो श्रीमती शास्त्री का 8 साल का छोटा बच्चा दिवाकर उनका नारे लगाने वाला बाल-सहयोगी रहा जिसे किसी स्वयसेवक के कन्धे पर बैठ कर जोर जोर मे नारे लगाते हुए देखकर जनता के साथ साथ पुलिस वाले तक भी खुश हुआ करते थे। जब गाधीजी ने जयपुर सत्याग्रह को स्थगित करने का अचानक आदेश दे दिया तो श्री राधाकृष्ण बजाज और श्रीमती रतन शास्त्री ने दिल्ली पहुच कर गाधीजी को आन्दोलन का विवरण देते हुए बतलाया कि जनता भारी सख्या मे सत्याग्रह मे भाग लेने को आतुर है और आपके स्थगन आदेश से हम सब को बडी निराशा हुई है। यह सब कुछ सुनकर भी गाधीजी ने सत्याग्रह को स्थगित करना ही उचित बतलाया और सब के समाधान के लिए स्थगन आदेश लिखित रूप मे श्रीमती शास्त्री को दे दिया। सत्याग्रह के समय जेल यात्रियो को विदा करने और उनके जेल से छूटकर आने के समय स्वागत करने के लिए श्रीमती रतन शास्त्री अपनी वनस्थली की लडकियो के साथ प्रतिक्षण तय्यार रहती थी। और प्रजामण्डल के प्रत्येक वार्षिक अधिवेशन मे लडकियो के साथ पहुचकर तन्मयता मे सेवा कार्य करती थी।

अगस्त 1942 मे भारत छोडो आन्दोलन शुरू होने पर श्रीमती रतन शास्त्री आदि ने वनस्थली विद्यापीठ के कार्यकर्ताओ और छात्रो को दिल्ली, उत्तरप्रदेश आदि जाकर आन्दोलन मे भाग लेने की खुली छूट दे दी जिसके अनुसार कुछ व्यक्तियो ने बाहर जाकर बडा काम किया। बाहर भूमिगत रहते हुए आन्दोलन का सचालन करने वालो मे से डा० बी० केस्कर, श्री मोहनलाल गौतम, श्री द्वारकनाथ कचरू आदि और बिहार के श्री जगलाल चौधरी के परिवार के लिए वनस्थली विद्यापीठ श्रीमती शास्त्री की देख रेख मे जब तक जरूरत रही तब तक आश्रयस्थान बना रहा था।

इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षण, जागरण और आन्दोलन सभी मे रतनजी जीवन भर मूक, निरपेक्ष भाव से ठोस काम करती रही हैं और आज भी उनके दिल मे पण्डित हीरालाल शास्त्री के साथ साथ राष्ट्रहित के लिए वनस्थली विद्यापीठ के अलावा कुछ न कुछ विशेष कर गुजरने की तडप बनी हुई है।

डाक्टर रघुवर दयाल चतुर्वेदी



जन्म— सवत 1956 श्रावण कृष्णा 8 (अगस्त 1899)

वर्तमान पता — डी 64, बापू नगर, जयपुर

श्री रघुवरदयाल चतुर्वेदी का जन्म सवत् 1956 को श्रावण कृष्णा 8 (अगस्त 1899) को आगरा मे हुआ। उनके पिता के निधन के समय उनकी आयु केवल 6 वर्ष की थी। उनकी माता का निधन भी उनकी 19 वर्ष की अवस्था मे हो गया था। 1919 के अप्रेल मास मे महात्मा गाधी ने जो रौलट एक्ट विरोधी अभियान चलाया था उसमे श्री चतुर्वेदी शामिल होगए थे। 1920 मे उन्होने स्कूल की अध्यापकी की थी, कुछ दिन जोधपुर मे और फिर प्रेम महाविद्यालय मे रहे।

1923 मे श्री चतुर्वेदी नागपुर के अखिल भारतीय झडा सत्याग्रह मे भाग लेने के लिए सत्याग्रहियो की एक टोली वृन्दावन से लेकर नागपुर पहुचे। वहा उन्होने सत्याग्रह

किया और गिरफ्तार हुए। उन्हे $7\frac{1}{2}$ वर्ष की सजा दी गई लेकिन 3 महिने के बाद समझौता होने पर छोड दिये गए।

श्री रघुवरदयाल चतुर्वेदी ने 1925 मे होम्योपैथी का अध्ययन किया। आगे जाकर आगरे मे अपना चिकित्सालय स्थापित कर दिया। श्री चतुर्वेदी वृन्दावन मे 5 वर्ष तक काग्रेस कमेटी के मन्त्री और आगरा मे शहर काग्रेस के मन्त्री 1937 तक रहे। 1938 मे वे आगरा मे नगर काग्रेस के अध्यक्ष चुने गए।

1930 के नमक सत्याग्रह मे एक वार उन पर रु० 15 जुर्माना हुआ और दूसरी बार उन्हे 1 वर्ष का कारावास का दण्ड मिला। इस अवधि मे वे आगरा, प्रतापगढ, सीतापुर और लखनऊ की जेलो मे रहे। 1932 मे उन्हे आगरा, अलीगढ और शाहजहापुर की जेलो मे रहने का अवसर मिला।

1940 मे श्री चतुर्वेदी को सरकार ने एक खतरनाक व्यक्ति समझ कर 27 जून को जेल भेजा। उन्हे सात महिने की सजा दी गई। हाईकोर्ट की अपील से वह छूटकर आए ही थे कि दूसरे अपराध मे 18 मास का कठोर कारावास दे दिया गया। इस वार भी हाईकोर्ट से लडकर छूटकर आए ही थे कि भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत उन्हें नजरवन्द कर दिया गया और उन्हें 1945 के मार्च मे मुक्त किया गया। इस तरह से उन्हे करीब 5 वर्ष तक एक साथ निरन्तर जेल मे रहना पडा।

1946 मे श्री चतुर्वेदी ने काग्रेस से त्यागपत्र दे दिया। वे कम्युनिस्ट पार्टी मे शामिल हो गए। परन्तु 48—49 मे पार्टी की नीति से सहमत नही होने के कारण उससे भी पृथक हो गए। इन्दिरा गाधी के प्रभाव मे आने पर वे अपने आपको पुन काग्रेस के अत्यन्त समीप अनुभव करते हैं।

डाक्टर रघुवरदयाल चतुर्वेदी 1950 से राजस्थान मे हैं और काग्रेस की प्रवृत्तियो में सहयोग करते रहते हैं। इस समय काग्रेस की विचारधारा और उनकी विचारधारा मे उन्हें कोई अन्तर नही दिखाई देता।

———

श्री रामकरण जोशी



जन्म— 2 अक्टूबर 1912
वर्तमान पता— विनोवा मार्ग,
सी स्कीम, जयपुर

श्री रामकरण जोशी राजनीति के बहुचर्चित और व्यक्तित्व के वैविध्यपूर्ण रङ्गो वाले अग्रणी व्यक्ति है। वे श्री जयनारायण व्यास के मन्त्रिमडल मे मन्त्री थे और सुखाडिया मन्त्रिमण्डल मे भी उनके साथ मन्त्री रहे। लम्बे समय तक वे प्रदेश कांग्रेस के महामन्त्री रहे और जिला कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे तो उन्होने कांग्रेस छोडकर कांग्रेस के विरोध मे श्री कुम्भाराम आर्य के साथ जनता पार्टी वनाई और फिर भारतीय क्रांति दल के अध्यक्ष रहे। देश मे भारतीय क्रांतिदल के पराभव के बाद वे पुन सत्ता कांग्रेस मे शामिल हो गए।

उनका जन्म 2 अक्टूवर, 1912 को दौसा के एक मध्यमवर्गीय ब्राह्मण परिवार मे हुआ। 4 वर्ष की अवस्था मे उनके पिताजी का देहान्त हो गया। इनके वडे भाई श्री हर्ष शास्त्री की छाया मे इन्हें शिक्षा प्राप्त हुई। 1930 मे मेट्रिक की परीक्षा पास करके वे दौसा मे अध्यापक हो गए। वही उन्होंने इण्टर, टीचर्स ट्रेनिंग का कोर्स और हिन्दी साहित्य की विशारद एव साहित्यरत्न की परीक्षाए पास की।

जयपुर राज्य प्रजामण्डल का आन्दोलन 1939 मे शुरू हो गया था। पुलिस ने दौसा के छात्रो पर एक बार लाठी चार्ज किया, इसके विरोध मे श्री रामकरण जोशी ने 14 मार्च 39 को अपना त्याग-पत्र दे दिया। उसी दिन उन्हे पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। जेल से मुक्त होने के वाद उन्होने राजस्थान चर्खा सघ मे काम कर लिया।

1942 मे श्री रामकरण जोशी ने प्रजामण्डल की समझौता परस्त नीति के विरोध मे अपने कुछ साथियो के साथ जयपुर मे आजाद मोर्चे का गठन किया और राज्य भर मे अंग्रेज विरोधी वातावरण वनाने को अपनी टोली के साथ निकल पडे। अक्टूवर 42 को वे झुंझूनू स्टेशन पर एक सार्वजनिक सभा का आयोजन करते समय गिरफ्तार कर लिए गए। वे 1 वर्ष 7 महिने 9 दिन तक जेल मे रहे।

जेल से छूटने के वाद श्री रामकरण जोशी ने कुछ समय तक राजस्थान चर्खा सघ में खादी कार्य किया। मार्च 52 से नवम्वर 52 तक वे टीकाराम पालीवाल के मन्त्रिमण्डल मे मन्त्री रहे, नवम्बर 52 से नवम्बर 54 तक वे व्यास मन्त्रिमण्डल मे मन्त्री रहे और 56–57 मे सुखाडिया के मन्त्रीमण्डल मे। उन्होने मन्त्रिमण्डल से अलग होने के वाद सुराज्य नाम का एक साप्ताहिक पत्र भी निकाला। वे अधिकाश समय आजकल अपने फार्म पर ही रहते हैं। उनका फार्म दौसा मे करीब 3 मील दूर हैं।

श्री राधाकृष्ण बजाज

जन्म— संवत् 1962 आषाढ शुक्ल 10 [सन् 1905]

वर्तमान पता— एस० बी–93, बापू नगर, जयपुर

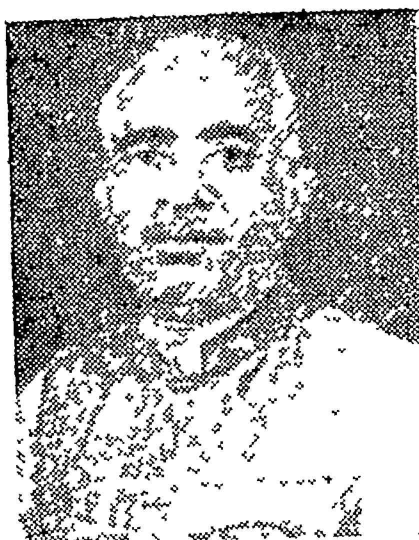
श्री राधाकृष्ण बजाज सेठ जमनालाल बजाज के भतीजे है। उनके पिता का निधन उनके 5–6 वर्ष की आयु मे हो गया था। तभी वे जमनालाल बजाज के पास वर्धा आश्रम मे दो तीन वर्ष तक रहे। सत्याग्रह आश्रम वर्धा मे उन्होने श्री श्रीकृष्णदास जाजू के पास पिंजाई, कताई और बुनाई तक की सभी प्रक्रियाए सीखी थी। सन् 28 से 32 तक श्री बजाज महाराष्ट्र चर्खा-सघ के उत्पत्ति व विक्री व्यवस्थापक रहे।

श्री राधाकृष्ण बजाज ने सन् 30 के जगल सत्याग्रह मे कार्य किया पर वे गिरफ्तार नहीं हुए। 1932 मे उन्हे 6 महीने की सजा हुई। 1934 मे विदेशी वहिष्कार आन्दोलन मे वे गिरफ्तार किए गए। उन्हे नागपुर जेल मे रखा गया। 1942 मे उन्हे गिरफ्तार करके बुलाढाणा जेल मे रखा गया। श्री राधाकृष्ण बजाज को पवनार कांग्रेसी केस मे फसाया गया। उन्हे बुलाढाणा जेल से गिरफ्तारी की हालत मे वर्धा लाया गया। उस केस मे सरकार उन्हे सजा नहीं दे सकी तो उन्हे डिटेन्यू कानून मे गिरफ्तार करके नागपुर जेल भेज दिया गया। तीन वर्ष तक वे नागपुर जेल मे रहे।

1934 मे श्री राधाकृष्ण बजाज ने विनोबाजी के नेतृत्व मे ग्राम सेवा-मडल के मत्री का कार्य किया फिर अध्यक्ष का। 1941 मे गौ सेवा सगठन के समय श्री जमनालाल बजाज उसके अध्यक्ष बनाए गए। उनके देहावसान मे गौ–सेवा–सगठन की जिम्मेवारी श्री राधाकृष्ण बजाज को सौंपी गई। 1964 मे श्री ढेबरभाई की प्रेरणा से श्री राधाकृष्ण बजाज राजस्थान आए और तब से राजस्थान में गौ-सेवा का कार्य देख रहे हैं। राजस्थान मे गौ–सेवा कार्य से उनका सम्बन्ध 1950 से रहा है। आजकल वे राजस्थान गौ–सेवा-सघ के अध्यक्ष हैं।

राजस्थान मे गौ–सेवा के अतिरिक्त श्री राधाकृष्ण बजाज का सम्बन्ध मुख्य रुप से राजस्थान-सस्था-सघ, समग्र सेवा सघ और शराबन्दी समिति से है। 1956 से सर्व सेवा सघ के प्रकाशन का कार्य राधाकृष्ण बजाज को सौंपा गया था। वे सर्व सेवा सघ वाराणासी के प्रकाशन विभाग के अध्यक्ष हैं। अत उन्हें महीने मे 5–7 दिन जयपुर और 5–7 दिन वाराणसी रहना पडता है।

श्री राधेश्याम शर्मा



जन्म— 7 नवम्बर 1917

पता— देवडीजी का मदिर,
जौहरी बाजार, जयपुर ।

श्री राधेश्याम शर्मा का जन्म 7 नवम्बर 1917 को प० राम सहायजी के घर जयपुर मे हुआ । इनकी शिक्षा जयपुर मे ही हुई ।

जयपुर मे प्रजामण्डल की स्थापना के साथ ही श्री राधेश्याम शर्मा ने प्रजा मण्डल मे स्वय सेवक दल का गठन किया । वे स्वय सेवक दल के दलपति वनाए गये । 1939 मे जब प्रजा मण्डल का नागरिक अधिकार आन्दोलन चल रहा था उसमे उस आन्दोलन की सफलता के लिए श्री राधेश्याम शर्मा के 350 स्वय सेवक कार्यरत थे । 1939 के आन्दोलन मे श्री राधेश्याम शर्मा गिरफ्तार किए गए और उन्हे 4 महीने की सजा हुई । उन्होने उस समय प्रतिज्ञा की थी कि जव तक देश आजाद नही होगा तब तक वे विवाह नही करेंगा ।

1940 मे जगलात आन्दोलन को सगठित करने मे श्री राधेश्याम शर्मा का बहुत हाथ था । 1942 मे उन्होने प्रजा-मण्डल की समझौता वादी नीति का खुला विरोध किया और प्रजा मण्डल से त्याग पत्र देकर आजाद मोर्चे मे शामिल हो गए । उन्होने जयपुर मे तोड-फोड के कार्यो को सगठित किया । उन्होने सरकारी दफ्तारो मे आग लगाने के कार्य-क्रम वनाए । महाराजा कॉलेज का रिकार्ड जला दिया गया । पुलिस ने इन क्रातिकारी प्रवृत्तियो के सदेह मे श्री राधेश्याम शर्मा को गिरफ्तार कर लिया लेकिन प्रमाण न मिलने पर उन्हे 1 वर्ष के लिए जयपुर सैंट्रल जेल मे नजरवन्द रखा गया ।

श्री राधेश्याम शर्मा 1945 मे आजाद मोर्चे के अपने अन्य सभी साथियो के साथ पडित नेहरु की प्रेरणा से प्रजा मण्डल मे सम्मिलित हो गए । श्री शर्मा एक सत्यनिष्ठ उग्र, कट्टर सिद्धान्तवादी और आदर्शवादी व्यक्ति हैं । प्रजामडल काल मे उन्होने अपनी पूरी निष्ठा के साथ प्रजा मडल के उद्देश्यो के लिए कार्य किया और वाद मे काग्रेस के लिए । वे वर्षो तक प्रदेश काग्रेस के सदस्य रहे हैं ।

श्री राधे श्याम टिक्कीवाल अपरिचित



श्री राधे श्याम टिक्कीवाल अपरिचित का जन्म 15 अक्टूबर 1919 को हुआ। इन्होने साहित्यरत्न और इन्टर तक की शिक्षा प्राप्त की। 1937 मे इन्होने राजस्थान चर्खा सघ गोविन्दगढ मे काम शुरु कर दिया और आगे इन्होने जयपुर, अजमेर, जोधपुर और अलवर के खादी भण्डारो के व्यवस्थापक का कार्य किया।

1938 मे उन्होने प्रजामण्डल के अधिवेशन मे स्वय सेवक का कार्य किया। 1939 मे उन्हे प्रजा मण्डल के सत्याग्रह सचालक श्री राधाकृष्ण बजाज ने सत्याग्रह से सम्बन्धी प्रचार साहित्य आगरा से जयपुर लेजाकर वितरण करने का महत्वपूर्ण कार्य सौपा। 1941 मे उन्होने एक राष्ट्रीय डायरी का प्रकाशन किया जिसे ब्रिटिश सरकार ने जब्त कर लिया था।

1942 मे श्री अपरिचित जोधपुर खादी भडार के व्यवस्थापक बनाकर जोधपुर भेजे गए। परन्तु अगस्त क्रान्ति और भारत छोडो आन्दोलन के जोर पकडते ही वे चर्खा सघ के कार्य से त्याग-पत्र देकर जयपुर आ गए।

जयपुर मे श्री राधेश्याम टिक्कीवाल ने अपने मित्र श्री रत्नाकर भारतीय के साथ मिल कर गुप्त रूप मे क्रातिकारी आन्दोलन की नीव रखी। इन दोनो ने भारत के अन्य क्राति-कारियो से सम्पर्क करके जयपुर मे बम और विस्फोटक तैयार किए। उन्हे इस कार्य मे प्रजा मडल के श्री बद्रीनारायण खूटेटा और चद्रशेखर भट्ट ने बहुत बडा योग दिया तथा श्री ओम दत्त शास्त्री ने इस क्रातिकारी कार्य मे आर्थिक सहायता दी। प्रत्येक महीने की 9 तारीख को 9 अगस्त की स्मृति मे इन्होंने जयपुर मे जगह जगह बम विस्फोट के कार्यक्रम बनाए। सारे शहर मे तहलका मच गया। पुलिस सतर्क हो गई। अपरिचित के मकान की सदेह मे कई बार तलाशी ली गई परन्तु उनकी पत्नि के बुद्धि-कौशल मे पुलिस के हाथ कुछ नही आया।

जयपुर के मान प्रकाश सिनेमा मे एक रविवार को अग्रेजी खेल चल रहा था। अधिकाश दर्शक अग्रेज ही थे। राधेश्याम टिक्कीवाल और रत्नाकर वहा बम लेकर पहुचे गए और अवसर देखकर वहा बम का विस्फोट करके बचकर निकल गए। रत्नाकर इस घटना के बाद बम्बई होते हुए लन्दन पहुच गए जहा वे बी० बी० सी० मे हिन्दी प्रोग्राम करते हैं। राधेश्याम टिक्कीवाल ने महा लेखापाल कार्यालय मे नौकरी करली। परन्तु पुलिस ने सदेह मे उन्हे गिरफ्तार कर लिया। नौकरी खत्म होगई। उन पर केस चला लेकिन जयपुर मे लोकप्रिय मन्त्री मण्डल के बाद उनका केस उठा लिया गया।

उनका पता है—टिक्कीवालो का रास्ता, किसनपोल बाजार, जयपुर।

श्री रूपचन्द सागोनी



जन्म— सन् 1911

वर्तमान पता— मारुजी का चौक मोतीसिंह भोमियो का रास्ता जौहरी बाजार जयपुर ।

श्री रूपचन्द सोगानी का जन्म सन् 1911 मे जयपुर केएक प्रसिद्ध जैन परिवार मे हुआ। आपके पिताजी का नाम श्री जौहरी लालजी सोगानी था। एल० एल० बी० की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद श्री रूपचन्द ने जयपुर मे ही वकालात शुरू करदी थी।

सन् 1930 से ही उन्होंने राजनीति और सार्वजनिक प्रवृत्तियो मे भाग लेना शुरू कर दिया था। उन्होंने जयपुर मे सबसे पहले अस्पृश्यता निवारण और हरिजन शिक्षा के काम मे अग्रसर होकर भाग लिया। 1937 मे उन्होने नागरिक सघ नामक सस्था स्थापित की। लम्बे समय तक इस सस्था के सचालक रहे और 1937 से 1951 तक जयपुर शहर प्रजमण्डल और तदुपरात जयपुर शहर काग्रेस के मन्त्री का काम करते रहे। 1948 मे अखिल भारतीय काग्रेस के जयपुर अधिवेशन मे उन्होने सयोजक मण्डल के सदस्य के रूप मे काम किया।

1939 मे जयपुर राज्य प्रजा मडल ने नागरिक अधिकारो के लिए जो आन्दोलन छेडा था उसमे श्री सोगानी 12 फरवरी 39 को एक सत्याग्रही जत्थे का नेतृत्व करते हुए गिरफ्तार कर लिए गये। उन्हे 6 मास के कारावास की सजा दी गई। कारावास काल मे वे लाम्वा हरिसिंह, मनोहरपुरा, सिकत्तरजी का वाग तथा वस्सी के डाक वगले मे रहे।

श्री सोगानी जयपुर राज्य की प्रतिनिधि सभा के लिए जयपुर शहर से निर्वाचित हुए और 1944 से 1949 तक वे प्रजामण्डल पार्टी के उपनेता और सचेतक रहे। उन्होने प्रतिनिधि सभा मे जयपुर के पहले बजट पर प्रजामण्डल (काग्रेस) के प्रमुख वक्ता होने के कारण पूरे सात घण्टे तक लगातार भाषण दिया। अपने इस ससदीय जीवन मे श्री सोगानी को सर वी टी कृष्णामाचारी और सर मिर्जा इस्माइल जैसे कुशल प्रशासको के साथ काम करने का अवसर मिला।

श्री सोगानी आजकल जयपुर मे वकालत करते हैं। उनका पता है—मारुजी का चौक, मोतिसिंह भौमिये का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर।

श्री विजय चन्द जैन



जन्म— सन् 1916
वर्तमान पता— जी (ए) अशोक मार्ग,
सी–स्कीम, जयपुर।

श्री विजयचन्द जैन का जन्म सन् 1916 मे जयपुर मे एक सपन्न जैन परिवार मे हुआ। आपके पिता का नाम श्री नाथूलाल जैन है। श्री विजयचद ने बी० ए०, एल० एल० बी० तक की शिक्षा प्राप्त की है।

सन् 1935 से ही श्री विजयचन्द राष्ट्रीय प्रवृत्तियो मे भाग लेने लग गए थे। प्रारभ मे श्री जैन प्रजामडल के स्वयसेवक बने और बाद मे स्वय सेवक दल के कमाडर। 1939 तक श्री विजयचन्द जयपुर रेल्वे की सरकारी सर्विस मे थे। प्रजामडल के आन्दोलन मे भाग लेने के लिए उन्होने राजकीय सेवा से त्याग–पत्र दे दिया। श्री विजयचद जैन प्रजामडला की सत्याग्रह सचालन समिति मे ले लिए गए और उन्होने बलवत सावलराम देशपाण्डे के साथ रह कर पूरी तरह सत्याग्रह का सचालन किया।

1942 मे भारत छोडो आन्दोलन के सबध मे प्रजामडल की नीति से कई कार्यकर्ताओ को असतोष हुआ और उन्होने आजद मोर्चे के नाम से एक नई सस्था बनाई। श्री विजयचन्द जैन आजाद मोर्चे की कार्यकारिणी के सदस्य थे। आजाद मोर्चे ने राज्य भर मे ब्रिटिश विरोधी आन्दोलन शुरु कर दिया। 9 दिसम्बर 42 को मोर्चे की कार्यकारिणी के सभी सदस्यो के साथ विजयचन्द जैन भी गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हे भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत 1 वर्ष की सजा हुई परतु हाई कोर्ट के निर्णय के अनुसार उन्हे 9 महीने बाद छोड दिया गया।

श्री विजयचन्द जैन 1955 तक काग्रेस के सदस्य रहे। वे जयपुर जिला काग्रेस की कार्यकारिणी के तथा प्रदेश काग्रेस कमेटी के सदस्य रहे। 1948 मे काग्रेस के जयपुर अधिवेशन मे उन्होने स्वागत समिति मे महत्वपूर्ण योग दिया।

1955 के बाद श्री विजयचन्द जैन ने राजस्थान वित्त निगम के सचिव पद पर 17 वर्ष तक कर्य किया। श्री विजयन्चद जैन परिष्कृत सस्कारो के एक मान्य समाज-सेवक हैं। उनका व्यवहार अत्यत सौम्य और बन्धुत्व से भरा होता है। किसी भी व्यक्ति के लिए अपना उपयोग और अपनी सेवा देकर उन्हे सतोष होता है।

वैद्य विजय शंकर शास्त्री

जन्म— सवत् 1966 कार्तिक शुक्ला 5

पता— काया कल्प फार्मेसी, किसनपोल बाजार जयपुर ।



वैद्य विजयशकर शास्त्री का जन्म सवत् 1966 कार्तिक शुक्ला 5 को प० रामनाथ शर्मा के यहा हुआ । उन्होने आयुर्वेद शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की । 1928 मे उन्होने सबसे पहले अपने कुछ मित्रो के साथ लाला लाजपतराय के शहीद होने पर जयपुर मे ब्रिटिश विरोधी जुलूस निकाला । 1929 मे जब महाराजा कालेज मे सफेद टोपी पर प्रतिबन्ध लगाया गया तब वैद्य विजयशकर ने इस प्रतिबन्ध के विरोध स्वरूप महाराजा कॉलेज मे तथा अन्य शिक्षण सस्थाओ मे हडताल करवाई तथा महाराजा कालेज मे एक बम विस्फोट किया गया । कालेज बम काडके कारण पुलिस वैद्य विजयशकर पर नजर रखने लगी । उन्हे दो तीन बार कोतवाली मे बुलाकर डराया धमकाया गया । उनके पिता पर दबाव डाला गया कि उन्हे जयपुर से बाहर भेज दे । अत वे बनारस भेज दिए गए जहा वैद्य विजयशकर कई वर्ष तक श्री मदन मोहन मालवीय की सेवा मे रहे ।

जयपुर राज्य प्रजा मडल की स्थापना होते ही वैद्य विजयशकर प्रजा मडल के सदस्य बन गए । जयपुर मै कुछ राजभक्तो ने प्रजा सघ नामकी सस्था बनाकर विरोध प्रचार शुरु किया था । वैद्य विजयशकर प्रजा सघ के लोगो मे मुकाबला करने लगे । जयपुर प्रजामडल के आन्दोलन के समय आगरे के सत्याग्रह शिविर से सत्याग्रह सम्बन्धी साहित्य जयपुर लाकर बाटना और सत्याग्रह की रिपोर्ट आगरा आश्रम मे पहुचाना उनका कार्य था ।

भारत छोडो आन्दोलन के समय सन् 42 मे एक प्रार्थना सभा मे श्री वैद्य को पुलिस गिरफ्तार करके ले गई और दो दिन पुलिस हिरासत मे रखा । शुल्क–वधुआ द्वारा बनाए हुए बम के खोलो को दिल्ली आगरा के क्रातिकारी केन्द्रो पर पहुचाने का जोखिम भरा काम उन्होने बहुत दिन किया । उन्होने जयपुर मे महिला–सेवा–सदन नाम की सस्था की स्थापना की । सन् 44 मे उन्होने राष्ट्रभाषा मासिक का सपादन प्रकाशन शुरु किया और 1952 मे दैनिक जन सदेश का 17 वर्ष के प्रकाशन के बाद राष्ट्रभाषा का प्रकाशन अर्थाभाव के कारण बद कर देना पडा । जन-सदेश भी थोडा ही चला ।

श्री वैद्य विजय शकर जयपुर के सामाजिक क्षेत्र मे आज भी सक्रिय है । उनका पता है—कायाकल्प फार्मेसी, कृष्ण पोल बाजार, जयपुर ।

श्री श्याम सुन्दर माथुर



श्री श्याम सुन्दर माथुर भू० पू० जयपुर रियासत के ठिकाना उणियारा के निवासी हैं। अपनी शिक्षा समाप्ति पर तहसील निवाई के वनस्थली ग्राम में सन् 1933 मे राजकीय सेवा मे रहते उनकी रुचि रचनात्मक काम की ओर रही। वनस्थली मे उस समय जीवन कुटीर द्वारा चलायी जाने वाली रचनात्मक प्रवृत्तियो मे पटवारी रहते हुए योग देते रहे। उस जमाने मे विशुद्ध समाज सेवा के कामो को राज्य विरोधी माना जाता था, ऐसी स्थिति मे श्री माथुर राज्याधिकारियो की निगाह मे शका की दृष्टि मे देखे जाने लगे। अन्ततोगत्वा राजनैतिक कार्य करने की इच्छा मे श्री माथुर ने अप्रेल 1936 मे अपनी राजकीय सेवा से त्याग-पत्र दे दिया।

राज्य सेवा से मुक्त होने पर सन् 1936 मे ही श्री माथुर वनस्थली मे जीवन कुटीर के सक्रिय सदस्य होगये और जीवन कुटीर की ओर से चलाई जाने वाली प्रवृत्तियो मे ग्रामीणो की आर्थिक व राजनैतिक स्थिति का अध्ययन करते हुए अगस्त, 1936 मे मीणा–चमारो के झगडे के समय श्री माथुर को लालसोठ तहसील के गाव वड का पाडा मे पुलिस द्वारा हिरासत मे ले लिया गया। श्री माथुर 15 दिन तक लालसोठ तथा दौसा के थानो मे पुलिस की हिरासत मे रहे जहा उन्हे अनेक प्रकार की यातनाए दी गयी।

सन् 1937 मे श्री माथुर जयपुर राज्य प्रजामण्डल के पुनर्गठन के कार्य मे लग गये और उनको जयपुर शहर में प्रजामण्डल के प्रधान कार्यालय की व्यवस्था का काम सभलाया गया। सन् 1938 मे उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र मालपुरा, टोडारायसिंह तथा ठिकाना उणियारा को वनाया और वे प्रजा मण्डल के उद्देश्य की पूर्ति के लिए जन जागरण के काम को आगे वढाते रहे। वे प्रजामण्डल की जनरल कमेटी के सदस्य की हैसियत से जनता के अभाव–अभियोग कमेटी के समक्ष प्रस्तुत करते रहते। जव पण्डित हीरालाल शास्त्री तथा श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने राजस्थान भर के कार्यकर्ताओ को सगठित करने की दृष्टिसे राजस्थान सघ की स्थापना की तो श्री माथुर जीवन कुटीर के अन्य साथियो के साथ सघ के सदस्य वने।

श्री माथुर ने सन् 1939 मे जयपुर राज्य प्रजा मण्डल के सत्याग्रह के समय गाव गाव में सत्यग्रहियो को प्रोत्साहित कर जेल भेजने के कार्य मे अपने आपको लगाये रखा और सत्याग्रह चरम सीमा पर पहुच रहा था कि अचानक गाधीजी के आदेश से सत्याग्रह बन्द कर दिया गया। इस कारण श्री माथुर तथा इनके कई साथी जेल जाने से वचित रह

गये इसके पश्चात् भी प्रजामण्डल की रीति नीति के अनुसार श्री माथुर राज्य के विविध क्षेत्रो मे उत्तरदायी शासन प्राप्त करने एव देश की आजादी के लिए निरन्तर ग्राम–ग्राम घूम कर प्रचार करते रहे । श्री माथुर 1942 के अ ग्रेजो भारत छोडो आन्दोलन के पूर्व से ही जीवन कुटीर के अन्य साथियो के साथ देश की आजादी के लिए बडी से बडी कुर्वानी के लिए सन्नद्ध थे । अ ग्रेजो भारत छोडो आन्दोलन प्रारम्भ हुआ, प्रजामण्डल की नीति प्रत्यक्ष रूप से जयपुर राज्य मे सीधी लडाई न लडने की रही–ऐसी स्थिति मे श्री माथुर ने अनुशासन पालक सैनिक की तरह उसी नीति का पालन करते हुए स्व० भाई रघुराज सिंहजी आदि के क्रान्तिकारी कार्यों मे सहयोग दिया और ब्रिटिश विरोधी एव युद्ध विरोधी कार्य को यथापूर्व चालू रखा ।

सन् 1945 मे पण्डित जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता मे उदयपुर मे हुए देशी राज्य लोक परिषद के अधिवेशन को सफल बनाने में स्व० श्री जयनारायण व्यास के साथ श्री माथुर ने अपनी पूरी शक्ति के साथ कार्य किया ।

बाद में श्री माथुर 1947 के जयपुर राज्य प्रजामण्डल के मालपुरा मे होने वाले अन्तिम अधिवेशन की स्वागत समिति कार्यालय के इन्चार्ज रहे ।

श्री माथुर जिला बोर्ड टोक तथा नगरपालिका उणियारा आदि अनेक सस्थाओ के लोकप्रिय सदस्य रहे । आजकल श्री माथुर वनस्थली विद्यापीठ के केन्द्रीय कार्यालय में कार्य कर रहे है ।

———

श्री सिद्धराज ढढ्ढा

जन्म— 12 फरवरी 1909
वर्तमान पता— समग्र सेवा-संघ, किशोर निवास,
त्रिपोलिया बाजार, जयपुर

श्री सिद्धराज ढढ्ढा राजस्थान निर्माण के बाद शास्त्री मन्त्रिमण्डल मे मन्त्री रहे थे। वे वर्षो तक राजस्थान देशी राज्य लोकपरिषद के मन्त्री रहे। वे अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद की कार्यकारिणी मे रहे। उन्होने जयपुर मे दैनिक लोकवाणी की स्थापना की और 3 वर्ष तक उसके सम्पादक भी रहे और भारत छोडो आन्दोलन मे वे वाराणसी मे 2 वर्ष तक नजरबन्द भी रहे। परन्तु राजनीति की एक भी प्रवृति इस विचारक को बाध नही सकी और 1951 मे उन्होने कांग्रेस मे त्याग पत्र देकर अपना सम्पूर्ण जीवन और अपना पूरा समय सर्वोदय आन्दोलन मे लगाने का सकल्प कर लिया।

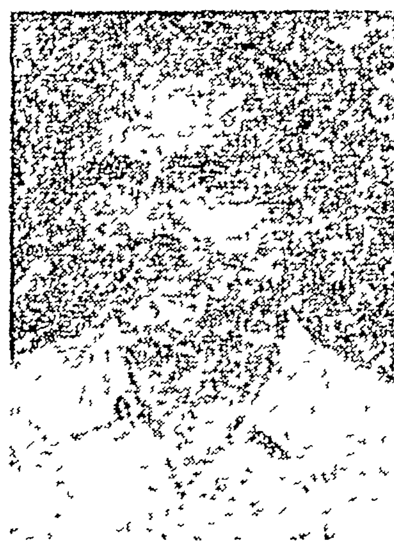
श्री सिद्धराज ढढ्ढा का जन्म 12 फरवरी 1909 को जयपुर मे हुआ। जयपुर महाराजा हाई स्कूल और महाराजा कॉलेज के बाद उन्होने बी०ए० लखनऊ विश्वविद्यालय मे किया और एम० ए० तथा एल०एल०बी० इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे। वे छात्र जीवन मे इलाहाबाद यूथलीग और युनिवरसिटी छात्र यूनियन के उपाध्यक्ष थे।

उन्होने 31 मे 33 तक मैसूर, बेगलोर और जयपुर मे वकालात भी की थी। 34 मे 42 तक वे कलकत्ते मे इण्डियन चैम्बर ऑफ कॉमर्स के सेक्रेटरी रहे थे। कलकत्ते के प्रवास मे हरिजन उत्थान समिति के मन्त्री और बगाल हरिजन बोर्ड के सदस्य थे। उन्ही दिनो मे उन्होने समाज-सेवक, ओसवाल और तरुण-जैन पत्रो का सम्पादन किया था। वे उन दिनो हिन्दुस्तान टाइम्स, अमृत बाजार पत्रिका, हिन्दुस्तान स्टैन्डर्ड, विशाल भारत, हस आदि पत्रो मे लेख लिखा करते थे।

भारत छोडो आन्दोलन के समय उन्होने चैम्बर ऑफ कॉमर्स का कार्य छोडकर सत्याग्रह मे भाग लिया और दो वर्ष तक वाराणसी मे जेल मे रहे। तभी उन्होने अपना शेष जीवन सार्वजनिक सेवा मे लगाने का निश्चय किया।

उन्होने खीमेल मे सर्वोदय केन्द्र की स्थापना की, अ० भा० चरखा सघ के वे ट्रस्टी नियुक्त हुए। 56 मे 60 तक वे सर्व-सेवा-सघ के मन्त्री रहे। 60-62 तक सर्व सेवा सघ प्रकाशन के अध्यक्ष रहे। वे हिन्दी-भूदान-यज्ञ और अग्रेजी-भूदान के सम्पादक है। राजस्थान सेवा सघ के वे मन्त्री और उपाध्यक्ष रहे। आजकल वे सर्व सेवा सघ के अध्यक्ष है। उन्होने जयपुर मे ग्रामीण अर्थशास्त्र का शोध तथा अध्ययन करने के लिए कुमारप्पा ग्राम स्वराज्य सस्थान की स्थापना की। वे श्री जयप्रकाश नारायण के साथ इगलैंड यूरोप, उत्तर पूर्व अफ्रिका, जापान और दक्षिण कोरिया घूम आए हैं।

डा० सोमदेव ग्रोवर



जन्म– 22 अोक्वोबर 1906

वर्तमान पता– अम्वात्राडी

झोटवाडा रोड, जयपुर

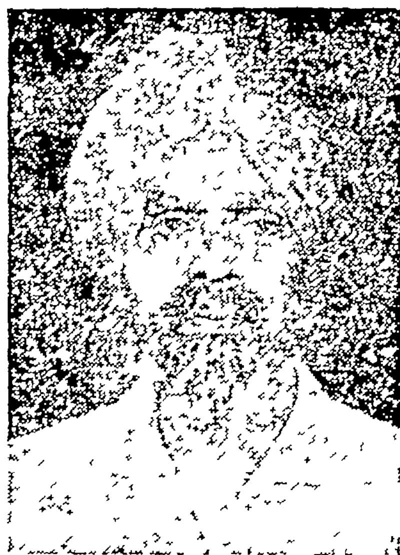
डा० सोमदेव ग्रोवर का जन्म 22 अक्टूबर, 1906 को अमृतसर-पंजाब के एक शिक्षित और धनी मानी परिवार मे हुआ। 14 वर्ष की उम्र मे उन्होने जलियावाला बाग मे धारा 144 तोड कर सबसे पहले सत्याग्रह किया। उन्होने अमृतसर के कौमी विद्यालय और लाहौर के नेशनल कॉलेज मे शिक्षा प्राप्त की। वही उनका सम्पर्क और मित्रता सरदार भगतसिंह और क्रातिकारियो मे हो गई थी। 1926 से 1929 तक डाक्टर ग्रोवर हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी की आतकवादी प्रवृत्तियो के साथ सबद्ध रहे।

1930 के बाद डाक्टर ग्रोवर पूर्ण रुप मे काग्रेस के कार्य मे लग गए और शान्ति एव अहिसा का मार्ग उन्होने स्वीकार कर लिया। वे अमृतसर मे नमक सत्याग्रह के सचालक बने और जनवरी 31 मे उनकी पहली गिरफ्तारी हुई जो गाधी ईर्विन पैक्ट तक रही। 1932 मे सत्याग्रह के डिक्टेटर के रुप मे उन्होने धारा 144 तोडी और उन्हे 1 वर्ष के कारावास की सजा दी गई जिसे मार्च 32 से मार्च 33 तक उन्होने लाहौर जेल मे पूरी की।

1936–37 मे डाक्टर ग्रोवर अमृतसर मे जिला काग्रेस के महा मन्त्री बनाए गए। 1942 मे उन्हे फरार क्रातिकारियो को आश्रय देने और उनके साथ राजद्रोहात्मक षडयन्त्र करने के अपराध म 1 वर्ष के लिए अमृतसर मे नजरबन्द रखा गया।

देश के बटवारे के समय डाक्टर ग्रोवर का सम्पन्न परिवार अपने कपडे और दवाइयो की फारमेसी का लाखो का व्यवसाय पाकिस्तान मे छोडकर भारत आ गया था। डाक्टर ग्रोवर 1956 से जयपुर मे ही निवास करते हैं। वे एक कट्टर काग्रेसी हैं और राष्ट्रीय प्रवृत्तियो मे आज भी उत्साह से भाग लेते हैं। वे होम्योपैथी के चिकित्सक हैं। उनका पता है—अम्बावाडी, झोटवाडा रोड, जयपुर।

सरदार सोहन सिंह तेजा बी० ए० (नेशनल)



सरदार सोहनसिंह तेजा का जन्म 25 दिसम्बर, 1905 को पंजाब मे हुआ। इन्होंने लाला लाजपतराय द्वारा स्थापित नेशनल कॉलेज मे बी० ए० किया। उसी कॉलेज मे सरदार भगतसिंह एवं अन्य क्रान्तिकारियो मे इनकी घनिष्ठता हुई और ये हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के सक्रिय सदस्य हो गए। इनके पिता फौज के बडे अधिकारी थे और उन्होंने सोहन सिंह को ऊंचे सरकारी ओहदे पर नियुक्त करवाने की कई कोशिशे की परन्तु सरदार सोहनसिंह या तो नौकरी पर जाकर छोड आता या पुलिस की रिपोर्ट मिलने पर उन्हे हटा दिया जाता। अन्त मे पिता के दबाव मे परेशान होकर ये घर छोडकर भाग गए और 5 वर्ष तक घर नही गए।

1929 मे श्री सोहन सिंह तेजा पार्टी के लिए सियालकोट के सिख रैंजिमेंट मे थ्रीनाट थ्री की राइफले लेने के लिए गए थ। रेजीमेंट के अग्रेज कैप्टिन को पता लगते ही उन्हें पहले तो फौजियो से बुरी तरह पिटवाया गया और फिर उन्हे सिविल पुलिस के हवाले कर दिया गया। उन पर मुकदमा चला और 1 वर्ष की सजा दी गई। 1930 मे श्री सोहनसिंह तेजा सरगोदा मे धारा 144 तोडने के अपराध मे गिरफ्तार किए गए। उन्हे 3 महीने की सजा दी गई। 1939 मे हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी ने इन्हे फ्रन्टियर के सियालकोट, गुजरावाला, सरगोदा और पेशावर मे आतंकवादियो को सगठित करने का काम सौंपा। इन्होंने काबुल से हथियार मगवा कर अपने साथियो मे बाटने शुरू किए। उसी प्रसग मे पेशावर से एक बार रिवाल्वर के बौरे पुलिस के हाथ आ गए। इस प्रसग मे उन्हे तीन महीने पुलिस की हिरासत मे परेशान होना पडा।

1942 के भारत छोडो आन्दोलन मे सरदार सोहनसिंह तेजा लाहौर मे गिरफ्तार कर लिए गए और उन्हे 6 महिने की सजा दी गई। उनके जीवन का अधिक समय भूमिगत रह कर कार्य करने मे बीता है। उन्होंने जम्मू कश्मीर, सियालकोट, दिल्ली गगानगर मे आरा, आटे की मशीन, खैराद और सुथारी आदि के कामो मे लगाकर अपने आपको पुलिस से बचाए रखा। वे 1948 मे जयपुर आ गए थे, तब से जयपुर ही इनका निवास हो गया है।

मौलाना अब्बुल फाकिर सिद्दिकी

जन्म— सन् 1898

वर्तमान पता— 1348 मोती डूगरी रोड, जयपुर-4



मौलाना अब्बुल फाकिर सिद्दिकी का जन्म सन् 1898 मे उत्तर प्रदेश के जिला मुजफ्फरनगर के ग्राम फुलत मे हुआ। ये आलिम फाजिल हैं। इनकी शिक्षा सहारनपुर जिले के दारुल उलूम देववद मे हुई। श्री सिद्दिकी अपने विद्यार्थी काल मे ही राष्ट्रीय आन्दोलन मे स्वय सेवक का कार्य करने लग गये थे। बीस वर्ष के होते होते श्री सिद्दिकी उत्तर प्रदेश, वगाल, वम्बई और पजाव मे हिन्दु मुस्लिम एक्यता और ब्रिटिश विरोधी भाषण देने और राष्ट्रीय कविताए पढने के लिए बुलाए जाने लग गए थे। 1918 मे 'तराना-ए-खिलाफत' नाम से इनका पहला काव्य सग्रह निकला। वह जब्त कर लिया गया। 1918 मे उन्हे दारुल उलूम देववद की ओर से भाषण देने रावलपिंडी भेजा गया। वहा इनके ब्रिटिश विरोधी भाषणो के कारण उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हे 1 वर्ष की सजा दी गई। महोवा मे धारा 144 तोड कर भाषण देने के लिए उन्हे 6 महीने की सजा दी गई। 1936 मे उनके उग्र भाषणो के कारण उन्हे हैदरावाद मे निर्वासित कर दिया गया। 1932 मे लाहौर मे इन्हे 1 वर्ष की सजा हुई थी।

1946 मे मौलाना सिद्दिकी ने मेरठ से उर्दू मे काग्रेस पत्रिका नामका एक दैनिक पत्र निकाला जिसमे उन्हे अपनी चल अचल सपत्ति का वहुत वडा भाग होम देना पडा। 1951 से अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी ने देश के अन्य भागो मे प्रचार कार्य के लिए उनकी सेवाओ का उपयोग किया। ए० आई० सी० सी के प्रतिनिधि के रुप मे उन्होने देश के अनेको प्रातो का दौरा किया और हिन्दु मुस्लिम एक्यता तथा काग्रेस की नीतियो के सम्वन्ध मे भाषण दिए। 1955 मे राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमत्री श्री मोहन लाल सुखाडिया के आग्रह पर उन्हे राजस्थान भेजा गया। राजस्थान से पडित नेहरु ने उन्हे पप्सू, पजाव और आध्र प्रदेशो मे चुनावो के प्रचार के लिए भेजा। अपना कार्य पूरा करके श्री मौलाना सिद्दिकी जयपुर आगए। 1955 के वाद जयपुर मे ही उनका स्थायी निवास हो गया है।

मौलान अब्बुल फाकिर सिद्दिकी भारत के एक कट्टर राष्ट्र वादी मुसलमान है जो पिछले 55 वर्षो से देश के मुसलमानो मे राष्ट्रीयता का प्रचार वडी वुलन्दी से कर रहे हैं। अग्रेजी सलतनत के साथ साथ उन्हे मुसलानो की फिरका परस्ती और सकीर्णता से भी सदा टक्कर लेनी पडी है। उन्हे अपने जीवन काल मे डाक्टर असारी, हकीम अजमल खा, जवाहरलाल नेहरु, रफी अहमद किदवई और गोविंद वल्लभ पत का वहुत ही स्नेह और आर्शीवाद मिला है। उनका पता है—1348, मोती डूगरी रोड, जयपुर—4, राजस्थान।

श्री हनुमान शर्मा (बागड़ा)

श्री हनुमान शर्मा का जन्म जयपुर जिले के खेजडोली ग्राम मे श्री चुन्नीलाल बागडा के यहा 1912 ई० मे हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् उनका आकर्षण सार्वजनिक कार्यो की तरफ हो गया और अपने उसी क्षेत्र मे रचनात्मक कामो मे लग गये। सन् 1932 मे नमक सत्याग्रह मे अजमेर मे इन्होने बहुत उत्साह से भाग लिया। परिणाम स्वरूप उन्हें 9 मास की जेल की सश्रम कारावास की सजा हुई। जेल यातना और कठिन परिश्रम से इनका स्वास्थ्य खराब हो गया और वहा उनको दौरे आना शुरू हो गया जिसका असर अब तक व्याप्त है। सजा पूरी करने के पश्चात् पू० बापू के आदेशानुसार रचनात्मक कार्य मे लगने के ख्याल से वे अपने ही क्षत्र मे हरिजनो को शिक्षा देने के काम मे जुट गये। इस बीच श्री बदरी नारायण खूटेटा के सम्पर्क मे रहे और उनके सम्पर्क से जीवन कुटीर वनस्थली के कायक्रम से प्रभावित होकर 1935 मे वे वनस्थली पहुच गये। वनस्थली मे जीवन कुटीर के कार्यक्रम मे अनुशासन मे रहकर निष्ठापूर्वक काम करते रहे।

जयपुर राज्य प्रजामण्डल के पुनर्गठन के साथ श्री शर्मा ने भी प्रत्यक्ष रूप से राजनीति मे काम करना ज्यादा पसन्द किया और अपना कार्यक्रम गगापुर निजामत को चुना। वहा श्री शर्मा ने घर घर और गाव गाव मे पहुच कर प्रजामण्डल का सदेश पहुचाया। इस प्रकार से उस क्षत्र की जनता मे विशेष जागृति आयी जो सरकार की आखो मे खटकने लगी। गगापुर निजामत के उदई ग्राम मे प्रचार करते समय पुलिस ने इनकी निर्दयता से पिटाई की जिससे ये अत्यन्त घायल हो गये। इस काण्ड से प्रजामण्डल और राज्य के बीच तनाव बढ गया।

कुछ समय बाद प्रजामण्डल और राज्य के बीच झगडा हो गया और प्रजामण्डल ने सत्याग्रह की घोषणा करदी। श्री शर्मा सत्याग्रह की तैयारी मे विशेष उत्साह के साथ जुट गये। सत्याग्रह के दौरान गगापुर शहर मे एक विशेष जुलूस मे श्री शर्मा, श्री राम सहाय श्री बद्रीनारायण खण्डेलवाल और श्री बुद्धाराम की पुलिस ने जूतो और डण्डो से विशेष रूप से पिटाई की। जूतो और डण्डो की मार से ये चारो ही व्यक्ति घायल हो गये। ये समाचार गाधीजी तक दिल्ली पहुचे। उक्त चारो सत्याग्रहियो की चोटो और घावो को देखने के लिए दिल्ली बुलाया गया। वहा श्री महादेव भाई देसाई ने इनकी मार्मिक चोटो को देखा और गाधीजी को पूरा विवरण दिया। इधर गगापुर की जनता मे बडा जोश फैल रहा था और जनता अपने नेताओ को देखने और आन्दोलन मे भाग लेने को अधीर थी—अत श्री शर्मा तथा उनके अन्य साथी दिल्ली से गगापुर तत्काल लौट आये और आन्दोलन करते हुए गिरफ्तार हो गये। श्री शर्मा को 6 मास का कारावास का दण्ड सुनाया गया जिसे भोगने के बाद वे जेल से मुक्त हुए।

सत्याग्रह समाप्ति के पश्चात् श्री हनुमान शर्मा पुन नये उत्साह के साथ प्रजामण्डल के कार्य मे जुट गये। प्रजामण्डल की रीति नीति के अनुसार प्रजामण्डल के कांग्रेस मे विलय काल तक और उसके पश्चात् श्री शर्मा कांग्रेस सगठन कार्य का प्रचार भली प्रकार करते रहे।

स्वर्गीय बाबा हरिश्चंद्र शास्त्री

जन्म— सवत 1950 वैशाख शुक्ला 13
(सन् 1893)
निधन— 25 मार्च 1957



वावा हरिश्चद्र शास्त्री जयपुर के अत्यन्त लोकप्रिय जन नेता थे । वे चाहे प्रजामडल मे रहे, चाहे उन्होने आजाद मोर्चा वनाया अथवा वे सोशलिस्ट पार्टी मे चले गए, वे सदा जनता के लिए जीए और जनता की ज्वलत समस्याओ के समाधान के लिए सदा सत्ता से निरतर सघर्ष करते रहे । उनकी देश भक्ति सन्देह से परे थी । उनका कोई व्यक्तिगत या निहित स्वार्थ नही था । वे कभी शासन या सत्ता मे नही जा सके । उन्होंने किसान और मजदूरो के सगठन वनाए और उनके हितो की रक्षा के लिए अतिम समय तक चारो ओर घिरी हुई प्रतिकूलताओ से जूझते रहे ।

वावा हरिश्चद्र का जन्म सवत् 1950 की वैशाख शुक्ला 13 को जयपुर के एक सभ्रात ब्राह्मण परिवार मे हुआ था । उनके पिता प० वालचद्रजी शास्त्री सस्कृत के विद्वान थे । उन्होंने प्रारम्भ से ही अपने इस पुत्र को भी सस्कृत और कर्मकाड के विधि विधान का अध्ययन करवाया । जयपुर से मैट्रिक पास कर लेने के वाद वावा हरिश्चन्द्र इलाहावाद विश्वविद्यालय मे पढने चले गए और वही से उन्होने 1919 मे वी० ए० और एल० एल० वी की परीक्षाए पास की । जयपुर आते ही वे जोधपुर राज्य के निम्वाज ठिकाने मे नावालिग शासक के शिक्षक नियुक्त हो गए जहा वे 1925 तक रहे ।

1925 मे वावा ने जयपुर मे वकालात शुरू कर दी । वकालात के साथ साथ वावा ने सामाजिक क्षेत्र मे कार्य शुरु किया । उन्होने वाल विवाह, वृद्ध विवाह, अनमेल विवाह और मृत्यु भोज आदि का जोरो से विरोध किया और महिला शिक्षा के लिए लोगो को प्रेरित किया ।

जव पडित हीरालाल शास्त्री ने जयपुर मे प्रजामडल को पुनर्गठित करने का काम हाथ मे लिया तो वावा हरिश्चन्द्र उनके सहयोगी थे । वे प्रजामडल की कार्यकारिणी के सदस्य चुने गए । 1939 मे जयपुर मे सत्याग्रह प्रारभ करने के पहले राष्ट्रपिता महात्मा गाधी के पास जयपुर के नेताओ का एक शिष्टमडल गया जिसमें वावा भी साथ थे । सत्याग्रह शुरु होने के पहले ही प्रजामडल की कार्यकारिणी की वैठक हो रही थी कि अन्य लोगो के साथ वावा हरिश्चन्द्र भी गिरफ्तार कर लिए गए । वावा हरिश्चन्द्र को अन्य नेताओ के साथ लावा कैम्प मे रखा गया । उन्हे 6 महीने की सजा दी गई । सजा पूरी होने पर वावा जेल से रिहा हुए ।

अगले वर्ष प्रजामडल के अध्यक्ष पद पर श्रीमती जानकीदेवी बजाज चुनी गई। बाबा हरिश्चन्द्र उपाध्यक्ष थे। श्री जानकीदेवी बजाज की अनुपस्थिति मे सारा कार्य बाबा द्वारा ही सचालित होता था। पडित हीरालाल शास्त्री उस समय प्रजामडल के मत्री थे।

1942 मे भारत छोडो आन्दोलन के समय बाबा हरिश्चन्द्र और उनके कुछ अन्य साथियो को प्रजामडल की नीति से सतोष नही हुआ और उन्होने प्रजामडल से त्यागपत्र देकर आजाद मोर्चा बनाया और ब्रिटिश विरोधी आन्दोलन जयपुर रियासत मे शुरु कर दिया। इस आन्दोलन मे बाबा गिरफ्तार कर लिए गए। अदालत मे उन पर 3 महीने तक मुकदमा चला और उन्हे 1 दिसम्बर 43 को 13 महिने की सजा दी गई और उन पर 200/- जुर्माना किया गया।

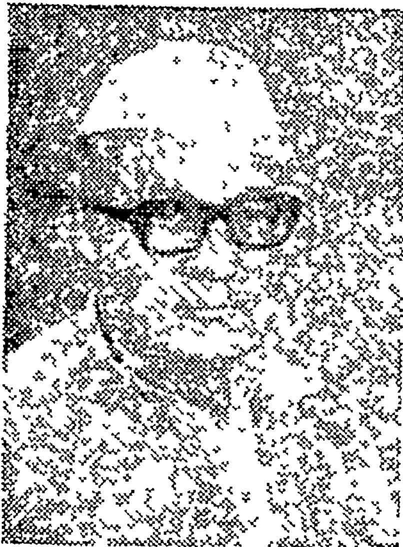
1945 मे जब पी०ई० एन काफ्रेस मे भाग लेने पडित जवाहरलाल नेहरू जयपुर आए तो बाबा ने आजाद मोर्चे की ओर से उनका स्वागत किया और उन्हे 26 हजार रुपये की थैली भेंट की। बाबा ने पडित नेहरु को एक चिट पर लिखा कि आजाद मोर्चा भी आपको भेंट है। पडित नेहरू की प्रेरणा से आजाद मोर्चे का विलय पुन प्रजामडल मे हो गया।

प्रजामडल की रीति नीति मे बाबा की उग्र विचारधारा का समन्वय नही हो सका और उन्होने जय प्रकाश नारायण, आचार्य नरेन्द्रदेव और डाक्टर राम मनोहर लोहिया से सम्पर्क करके जयपुर मे काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की। आचार्य नरेन्द्र देव ने ही इस पार्टी का उद्घाटन किया। इन्ही दिनो बाबा ने जयपुर मे राजस्थान कार्यकर्ता सम्मेलन बुलाया जिसमे राजपुताने की सभी रियासतो के कार्यकर्ता सम्मिलित हुए।

1949 मे अलग विधान और झडे वाली सोशलिस्ट पार्टी काग्रेस से अलग कर दी गई। बाबा ने इस पार्टी के मच से महगाई विरोधी आन्दोलन किया और जयपुर की जनता को कट्रोल भाव मे अनाज, कपडा, चीनी, राशन दिलवाने मे योग दिया। इसके लिए बाबा के प्रयत्नो से उपभोक्ता सहकारी समितियो का विस्तार जयपुर मे पहली बार हुआ। बाबा सोशलिस्ट पार्टी के झडे के नीचे किसानो, मजदूरो व गरीबो की समस्याओ के लिए लडते रहे। लगान, लाट, बाटा, लाग बाग, वैठ, बेगार और जागीरदारी उन्मूलन के लिए बाबा ने जगह-जगह सैकडो सम्मेलन किए।

1950 मे बाबा हरिश्चन्द्र शास्त्री समाजवादी पार्टी के कोटा अधिवेशन के लिए अध्यक्ष चुने गए। बाबा ने समाजवादी पार्टी की ओर से राजस्थान विधानसभा के लिए 1952 मे और 57 मे चुनाव लडे थे लेकिन काग्रेस की सगठित और सक्षम शक्ति के आगे वे दोनो बार पराजित हो गए।

बाबा के गले मे केंसर की तकलीफ हो गई थी। उन्होने लबे समय तक तो रोग की परवाह ही नही की और काम मे लगे रहे। अन्त मे डाक्टरो की सलाह पर पहले जयपुर मे और फिर बम्बई मे इलाज करवाया गया। राजस्थान सरकार ने भी चिकित्सा के लिए भरकस सहायता दी परन्तु अन्त मे इस प्राणघातक रोग से बाबा को कोई बचा नहीं सका और 25 मार्च, 1957 को प्रात 3 बजे 63 वर्ष की अवस्था मे बाबा की इहलीला समाप्त हो गई।



श्री हंस० डी० राय

वर्तमान पता—जमना डेरी, अजमेर रोड, जयपुर।

श्री हस० डी० राय जयपुर के वयोवृद्ध राष्ट्र सेवी और स्वतत्रता सग्राम के प्रमुख सेनानी है। जयपुर मे जब 1936 मे पडित हीरालाल शास्त्री ने प्रजामडल का पुनर्गठन किया था तब श्री हस० डी० राय ने उनके साथ कधे स कधा मिला कर कार्य किया और 1939 के प्रजामडल के आन्दोलन मे वे 6 महीने के लिए लावा हरीसिह जेल मे रहे थे।

1942 के भारत छोडो आन्दोलन के समय जयपुर प्रजामडल ने जब सरकार से समझौता करके ब्रिटिश विरोधी आन्दोलन शरु करने से इन्कार कर दिया था तब जिन लोगो ने प्रजामडल से त्यागपत्र देकर आजाद मोर्चे का गठन किया था उनमे श्री हस० डी० राय प्रमुख और अग्रणी व्यक्ति थ। उन्होने कई दिन तक राज्य मे सभाए और प्रदर्शन करके ब्रिटिश विरोधी वातावरण बनाया और जयपुर राज्य की जनता तक करो या मरो का सदेश पहुचाया। अन्त मे जयपुर सरकार ने उन्हे गिरफ्तार कर लिया और करीब 1½ वर्ष तक वे जयपुर की जेल मे रहे।

1945 मे पडित नेहरू के जयपुर आने पर आजाद मोर्चे की ओर से पडितजी का भव्य स्वागत किया गया और उन्हे छब्बीस हजार रुपये की थैली भेंट की गई। उस समय आजाद मोर्चे के सभी साथियो ने मिल कर आजाद मोर्चे को भी पडितजी को भेंट कर दिया और पडित जवाहरलाल नेहरू के प्रयत्न से आजाद मोर्चे का विलय प्रजामडल मे कर दिया गया और सभी साथी पुन प्रजामडल मे शामिल हो गए।

श्री हस०डी० राय वर्षों तक जयपुर राज्य प्रजामडल की कार्यकारिणी के सदस्य रहे। बाद मे वे वर्षों तक प्रदेश काग्रेस के व अखिल भारतीय काग्रेस के भी सदस्य चुने जाते रहे। सेठ श्री जमनालाल बजाज का उन पर विशेष अनुग्रह था। उन्होने अजमेर रोड पर जमना डेरी नाम से गोसवर्द्धन की एक सस्था भी शुरु की थी जो जयपुर की जनता की आज भी सेवा करती रही है।

श्री हस० डी० राय की आयु 65 वर्षों से ऊपर है फिर भी उनमे नौजवानो जैसा उत्साह है। उनके विचार आज भी क्रातिकारी हैं और वे शोषण मुक्त लोकतत्री समाजवाद की स्थापना के हर काम को आगे बढाने मे अपना योग देते रहते हैं।

श्री अरविन्द कुमार सोनी

श्री अरविन्द कुमार सोनी का जन्म 20 मई, 1920 को जयपुर के एक दिगम्बर जैन परिवार में हुआ। उनकी शिक्षा जयपुर में ही हुई। अपने बड़े भाई श्री मोतीलाल सोनी से उन्हें राजनैतिक कामों की प्रेरणा मिली। उन्होंने युवक परिषद जैसी संस्थाएं स्थापित करके सामाजिक और सांस्कृतिक जागरण का कार्य किया। 1939 में प्रजामण्डल के आन्दोलन में गिरफ्तार हुए और 6 महीने की सजा हुई। भारत छोड़ो आन्दोलन में जयपुर व दिल्ली में भूमिगत रहकर कार्य किया। वे देश की स्वाधीनता के बाद ग्रामोद्योग और रचनात्मक प्रवृत्तियों में लग गए।

श्री अल्ला बक्स चौहान

श्री अल्ला बक्स चौहान जयपुर जिले के गांव अचरोल के रहने वाले हैं। माध्यमिक शिक्षा पूर्ण करने के बाद वे श्री बलवन्त सावलराम देशपांडे के साथ चर्खा संघ गोविन्दगढ़ में काम करने लग गए। 1942 में अजमेर के पास हरमाड़ा के खादी विद्यालय में सत्याग्रहियों के प्रशिक्षण के लिए अल्ला बक्स चौहान गए हुए थे। 9 अगस्त की रात को पुलिस ने खादी विद्यालय सील कर दिया और सभी कार्यकर्त्ताओं को गिरफ्तार कर लिया। एक दिन अजमेर थाने में रखकर उन्हें जयपुर की सीमा में छोड़ दिया। जयपुर में श्री अल्ला बक्स चौहान ने आजाद मोर्चे के कार्यक्रमों को आगे बढ़ाना शुरु किया। 2 फरवरी, 43 को वे गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हें जयपुर जेल में 11 महीने नजरबन्द रहना पड़ा। जेल के समय श्री अल्लाबक्स चौहान के भाई और पिता को छ महीने तक थाना चांदपोल में घर से थाणे में ले जाकर पिटाई की जाती तथा उन्हें शारीरिक यातनाएं दी जाती। उनका पता है—रहीम मंजिल, परशुराम मार्ग, जयपुर।

मास्टर श्री आनन्दीलाल

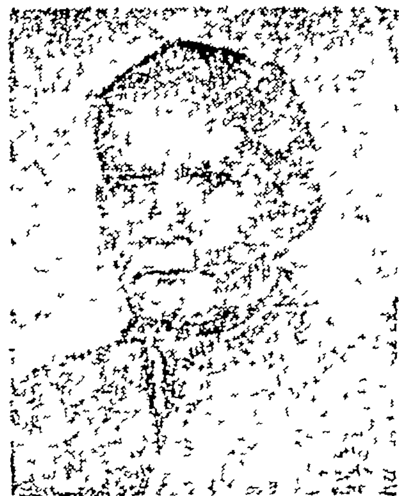
मास्टर श्री आनन्दीलाल शुरु से ही राष्ट्रीय विचारों के व्यक्ति हैं। उन्होंने उर्दू के माध्यम से मिडिल तक पढ़ाई की। उनका जन्म 4 नवम्बर, 1910 को जयपुर के एक नाई परिवार में हुआ। उन्हें राष्ट्रीय कामों की प्रेरणा अर्जुनलालजी सेठी से मिली। दिल्ली में शराब की पिकेटिंग के सिलसिले में उन्हें 1 मास की कारावास की सजा हुई। 1939 में प्रजामण्डल आन्दोलन में मास्टर आनन्दीलाल ने ओमदत्त शास्त्री के साथ काम किया। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में गिरफ्तार होकर 8 दिन बाद छोड़ दिए गए। 42 के आन्दोलन में पुलिस द्वारा उनकी खूब पिटाई की गई। श्री आनन्दीलाल प्रजामण्डल से लगाकर आज तक कांग्रेस के एक कर्मठ कार्यकर्त्ता रहे हैं।

श्री आनन्द माधव मिश्र



श्री आनन्द माधव मिश्र का जन्म 19 फरवरी, 1925 को उत्तर प्रदेश के इटावा जिले के निवाटी कला ग्राम मे हुआ। आगरा विश्वविद्यालय मे उन्होने बी० ए० की परीक्षा पास की। 1941 मे उन्हे अपने गाव मे पहली बार भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत गिरफ्तार किया गया लेकिन 11 दिन बाद छोड दिया गया। 1942 मे भारत छोडो आन्दोलन के समय उन्हे 14 अगस्त, 42 को भारत सुरक्षा कानून की अनेको धाराओ के अन्तर्गत कुल 44 वर्ष की सजा दी गई। ये कुल सजाए 7½ वर्ष के कठोर कारावास मे एक साथ चलने वाली थी। श्री आनन्द माधव मिश्र फरवरी 46 के करीब जेल से मुक्त हुए। देश की स्वाधीनता के बाद श्री आनन्द माधव मिश्र ने उत्तर प्रदेश के और मध्य प्रदेश के कई पत्रो के सम्पादन का कार्य किया। 1955 मे श्री आनन्द माधव मिश्रा जयपुर आ गए और सन् 55 मे 58 तक राष्ट्रदूत तथा 58 मे 65 तक दैनिक लोकवाणी के सम्पादन विभाग मे कार्य किया। सन् 1966 से आनन्द माधव मिश्र राजस्थान विश्वविद्यालय के प्रचार सहायक व अनुवादक के रूप मे कार्य कर रहे हैं।

श्री कल्याण नारायण शर्मा (मस्त)



श्री कल्याण नारायण शर्मा का जन्म जयपुर मे सन् 1919 के सितम्बर महीने मे हुआ। आपकी शिक्षा पारीक पाठशाला मे हुई। 1939 मे श्री मस्त ने प्रजामण्डल के सत्याग्रह मे भाग लिया। आपको 6 महीने की सजा हुई। पूरी सजा भुगत कर वे मोहनपुरा कैम्प से रिहा हुए। श्री कल्याण नारायण ने प्रजामण्डल के स्वय सेवक दल मे कार्य किया। कुछ दिन श्री मस्त बनारस मे रहे और वहा की कांग्रेस मे तथा वहा के नेताओ के साथ कार्य किया। 1961 से श्री कल्याण नारायण शर्मा जयपुर मे ही है और जनसेवा एव कांग्रेस के कार्य मे सक्रिय हैं।

श्री कल्याण शर्मा

श्री कल्याण शर्मा का जयपुर जिले के कालवाड नामक ग्राम के मिश्र परिवार मे सन् 1905 मे जन्म हुआ। प्रारम्भ से ही उनका जनसेवा का काम करने का सकल्प बन गया और वे 1930 मे पण्डित हीरालाल शास्त्री द्वारा सचालित जीवन कुटीर के कार्यकर्ता बन गये। वहा उन्होने पूरी निष्ठा के साथ ग्रामो मे रात्रिशालाओ द्वारा शिक्षा प्रचार तथा वस्त्र–स्वावलम्बन के कामो को पूरी लगन के साथ किया। साथ साथ रोगी सेवा तथा चिकित्सा कार्य मे योग दिया। इस प्रकार जीवन कुटीर के निर्धारित कार्यक्रमो के अनुसार वे पूरे समय लगे रहे।

जयपुर राज्य प्रजामण्डल के पुनर्गठन के बाद उन्होने अपना कार्य क्षेत्र जयपुर जिले की तहसीलो को बनाया और निरन्तर लगन के साथ प्रजामण्डल का सन्देश गाव गाव और घर घर जाकर पहुचाते रहे। उनके सरल स्वभाव व सौम्य प्रकृति मे ग्रामीण जनता मे उनके प्रति श्रद्धा व प्रेम खूब था। बाद मे श्री कल्याण शर्मा काग्रेस का सन्देश भी जनता तक पहुचाते रहे।

श्री कल्याण शर्मा शरीर मे दुर्बल थे और कठिन परिश्रम ने उनको रुग्ण कर दिया। वे अन्त मे अन्धे हो गये और आजकल सीकर के कल्याण आरोग्य सदन (टी० बी० सेनेटोरियम) मे अपना जीवन बिता रहे है।

गुरू श्री कमलाकर कमल

गुरु श्री कमलाकर कमल का जन्म आग्रा निवासी श्री बलवनराव तैलग कवीश्वर के घर सवत् 1971 की माघ शुक्ला 12 को हुआ। इनका विधिवत् अध्ययन तो अत्यन्त सामान्य ही हो सका परन्तु इनकी असाधारण प्रतिभा और जागृत प्रज्ञा के कारण इन्होने अपने स्वाध्याय से भारतीय वाङ्मय का ज्ञान बहुत छोटी उम्र मे प्राप्त कर लिया। दर्शन, साहित्य, सस्कृति, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, और इतिहास एव राजनीति का इनका अध्ययन अत्यन्त गहरा है। इनके विचार परिपक्व व सुलझे हुए है।

सक्रिय राजनीति मे इनका कार्यक्षेत्र प्रारम्भ मे दतिया और मथुरा और फिर जयपुर रहा। इन्होने नमक सत्याग्रह,सविनय अवज्ञा आन्दोलन और प्रजामण्डल के आन्दोलन मे भाग लिया। देश सेवा की धुन मे इन्होंने दतिया, बादा, चरखारी और पन्ना की, अपनी समस्त चल अचल सपत्ति का त्याग कर दिया।

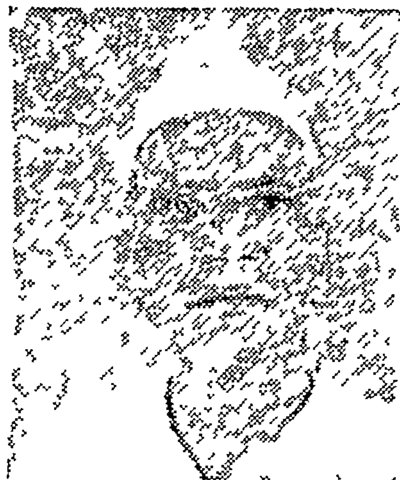
गुरु कमलाकर एक जन्मजात राष्ट्रीय शिक्षक हैं। इन्होने शिक्षण सस्थाओ की स्थापना करके छात्रो मे त्याग देशभक्ति और राष्ट्रीयता की भावनाए जागृत की है। उनका त्यागमय आदर्श जीवन छात्रों के लिए एक प्रत्यक्ष पाठ है। उनका समय साहित्य सृजन, अध्ययन, अध्यापन और उच्च विचारो के प्रसार मे बीतता है। उनका पता है—श्री कल्कीजी का मन्दिर, हवा महल बाजार, जयपुर।

श्री उमरावमल आजाद



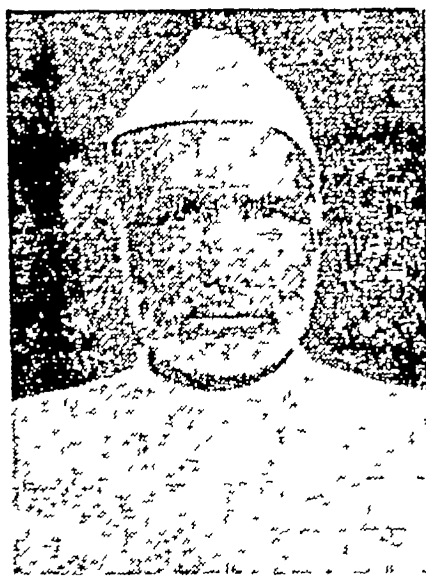
श्री उमरावमल आजाद का जन्म अगस्त 1928 को दिगम्बर जैन परिवार मे हुआ। 14 वर्ष की उम्र मे ही उमरावमल ने आजाद मोर्चे की प्रवृतियो मे तेजी से भाग लेना शुरू कर दिया। वे पर्चे बाटने, बुलेटिन घर घर पहुचाने, लोगो को इकट्टे करने, और नारे लगाने तथा प्रभात फेरी और जुलूस निकालने का काम करते थे। एक दिन पुलिस ने श्री आजाद को बुरी तरह पीटा। उनका सीधा हाथ और बाए पाव की हड्डी टूट गई। आज भी उनका सीधा हाथ पूरा काम नही करता। उमरावमल आजाद का नाम गप्पूलाल था। वह सुबोध स्कूल मे पढते थे। उन्हें इन्ही कारणो मे स्कूल से निकाल दिया गया और वे आगे की पढाई मे वचित रह गए। पिता पर पुलिम का दबाव पडने लगा अत उन्हे कई दिनो तक घर मे ही बाध कर रखा गया। उमरावमल घर मे निकल भागे। आगरा, इन्दौर, रतलाम, कोटा आदि स्थानो पर क्रान्तिकारियो मे सम्पर्क किया और उनके साथ काम किया। जयपुर मे इनका पता है चौकडी मोदीखाना, जैन धर्मशाला के पास जयपुर।

श्री कपूरचन्द छाबड़ा



श्री कपूरचन्द छाबडा एक जन्मजात देश भक्त है। उनकी शिक्षा सामान्य ही हुई हैं परन्तु उनमे दशभक्ति की भावना अत्यन्त गहरी है। 1932 मे सत्याग्रह करने वे अजमेर गए। उन्हे 9 महिने वहा जेल मे रहना पडा। जयपुर के 1939 के प्रजामण्डल आन्दोलन मे उन्होने भाग लिया। परन्तु वे गिरफ्तार नही किए जा सके। उन्हें पुलिस ने कई बार पकडा और जगलो मे ले जाकर छोड दिया। वे 1932 से आज तक अपने क्षेत्र मे एक कट्टर काग्रेसी हैं। वे खद्दर पहनते हैं और जनता की सेवा के लिए हर समय तैयार रहते हैं। उनकी उम्र 60 वर्ष के करीब है। उनका पता है मणीराम की कोठी के पास, छावडो की गली, जयपुर।

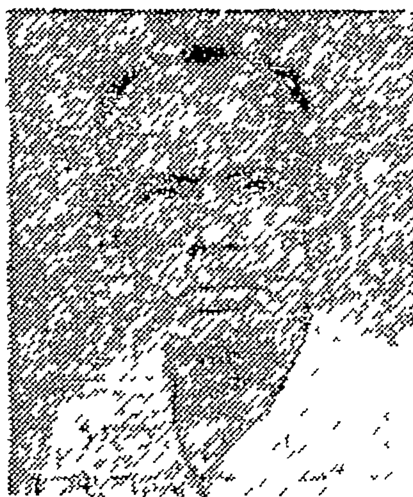
श्री गणेश नारायण द्विवेदी शास्त्री



श्री गणेशनारायण द्विवेदी पण्डित मागी लालजी मुखिया के पुत्र है। इनका जन्म 11 अप्रेल 1919 को हुआ। ये जाति से गौड ब्राह्मण हैं। इनकी शिक्षा–शास्त्री तक की है। उन्होने 1936 मे बम्बई मे खादी मूवमेंट मे भाग लिया। पुलिस ने उन्हे गिरफ्तार कर कोल्हापुर के जगलो मे छोड दिया। जयपुर प्रजामण्डल के आन्दोलन मे इन्हे सत्याग्रह करते समय गिरफ्तार कर लिया गया। इन्हे 6 मास मनोहरपुरा कारागृह मे रखा गया। भारत छोडो आन्दोलन मे इन्होने इन्दौर मे काम किया।

श्री गणेश नारायण द्विवेदी ने सन्त विनोवा के साथ भूदान आन्दोलन मे भी भाग लिया। इन्होंने 1956 मे 62 तक हरिजन बालको को पढाया। राजनीति के कारण इनका जवाहरात का व्यापार चौपट होगया। इन्होंने आर्य सत्याग्रह मे भी भाग लिया था।

श्री गुलाबचन्द वेदिया, मनोहरपुरा



श्री गुलाबचन्द वेदिया मनोहरपुरा के गौड ब्राह्मण है। इन्होने सन् 34 मे अजमेर के ग्राम नारेली के हरिजन आश्रम मे हरिजन सेवा का प्रशिक्षण प्राप्त किया था। सरकारी अध्यापकी छोडकर नीम के थाने मे हरिजन बालको को पढाने का कार्य शुरू किया। हरिजन–सेवा के कारण इनका परिवार मे और जाति से बहिष्कार हो गया। राजस्थान चर्खा सघ के अन्तर्गत इन्होंने हरिजन शिक्षा को आगे बढाया। 1939 के प्रजामण्डल आन्दोलन मे श्री वेदिया ने भाग लिया। कई बार पुलिस द्वारा जयपुर से बाहर छोडे गए। कुछ दिन मनोहरपुरा कैंप मे रहे। 1942 मे भी इन्होंने ब्रिटिश विरोधी आन्दोलन मे भाग लिया। बेगार का विरोध करने पर जागीरदारो द्वारा कई बार इनकी पिटाई हुई। 1949 मे राजस्थान के भूप्रबन्ध विभाग मे कार्य करते हैं। पता-मकान न 3809, दीनानाथजी की गली, पुरानी वस्ती जयपुर।

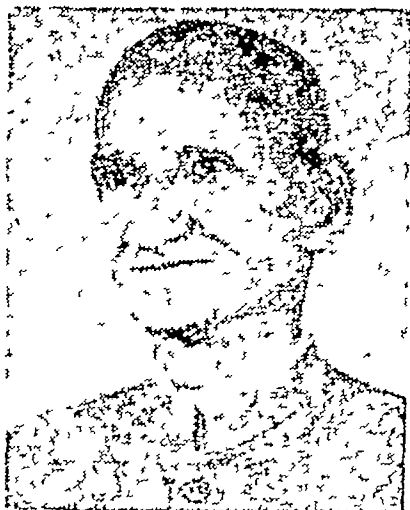
श्री गेंदालाल छाबड़ा, जयपुर



श्री गेन्दालाल छाबढा प्रजामण्डल से आज के कांग्रेस युग तक राष्ट्रीय क्षेत्र म पूर्ण सक्रिय हैं। इन्होंने 1930 मे राष्ट्र–सेवा मे जीवन भर कर्मठ रहने की प्रतिज्ञा की थी जिसे बराबर निबाह रहे है। श्री गेन्दालाल छाबडा ने सभी आन्दोलनो मे भाग लिया है। 1939 म वे श्री कपूरचन्द पाटनी के सहयोगी थे। उन्हे पुलिस न बीसीयो बार पकड पकड कर जगलो मे जाकर 50–60 मील दूरी पर छोडा परन्तु वे जेल एक बार भी नहीं जासके। पुलिस ने उनकी पिटाई भी अनेको बार की। उनका पता है प्लाट न० 45 ए कानोता बाग, तख्तशाही रोड, जयपुर।

श्री गोपीचन्द गोयल, सवाईमाधोपुर

श्री गोपीचन्द गोयल का जन्म सवत् 1972 की श्रावण शुक्ला 14 को सवाई माधोपुर मे हुआ। वे अग्रवाल वैश्य है। उनकी शिक्षा सवाई माधोपुर मे ही हुई। जयपुर राज्य प्रजामण्डल क आदोलन मे वे सवाई माधोपुर से सत्याग्रहियो का जत्था लेकर आए। गिरफ्तार होने के बाद वे मोहनपुरा कैंप मे रहे। इन पर 22 दिन तक झालाना कैंप मे मुकदमा चला। देश की स्वाधीनता के बाद उनका अधिक समय जन सेवा मे जाता है। सवाई माधोपुर मे उनकी कपडे की दुकान है। उनका पता है—सब्जीमण्डी, कटपीस मार्केट, सवाई माधोपुर।

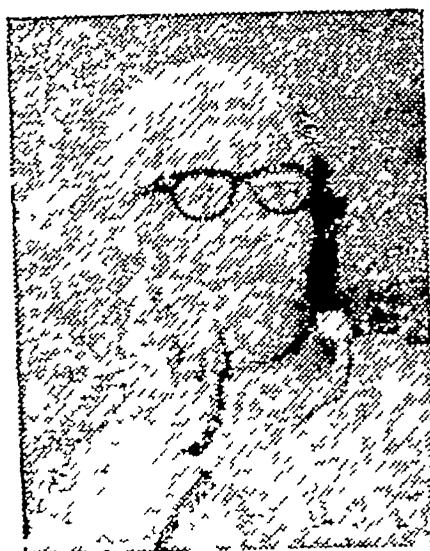


पं० गोविन्द नारायण शर्मा



पडित गोविन्द नारायण शर्मा का जन्म जयपुर के प० गगावक्मजी के यहा मन् 1914 मे हुआ। उनको हिन्दी, सम्कृत और अग्रेजी की शिक्षा जयपुर मे ही मिली। प्रारम्भ मे पडित गोविन्द नारायण आर्य समाज की ओर आकर्षित हुए। फिर प्रजामडल की स्थापना के वाद प्रजामडल की प्रवृत्तियो मे भाग लेने लगे। 1939 मे उन्होने प्रजामडल के मत्याग्रह मे भाग लिया और उन्हे 4 महिने के कारावास की मजा हुई। पुलिस ने पडित गोविन्दनारायण के पिता पर दवाव डाला कि वे अपने पुत्र को, राजनीति म हटाले अन्यथा उनकी सम्पत्ति जप्त करली जाएगी। पिता ने उन्हे राजनीति से हटाने का वडा प्रयत्न किया परन्तु वे नहीं माने। अत उन्हे घर मे निकाल दिया गया। पडित गोविन्दनारायण शर्मा कट्टर काग्रेमी है और मार्वजनिक प्रवृत्तियो मे भाग लेते रहत हैं। आजकल वे गठिया रोग से पीडित हैं।

श्री मूर्तिकार श्री गोपीचन्द मिश्र

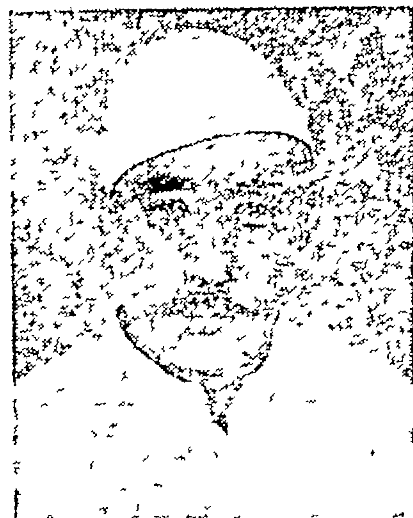


श्री गोपीचन्द मिश्र जयपुर के प्रसिद्ध मूर्तिकार है। वे जाति मे ब्राह्मण है। इनका जन्म श्री भैरोलालजी मिश्र के यहा मवत् 1964 की कार्तिक शुक्ला 8 को हुआ। श्री गोपीचन्द मे राष्ट्रीयता की भावना 1921 मे जगने लग गयी थी। उन्होने 1930 मे स्वदेशी का व्रत ले लिया था और वे खादी पहनने लग गए थे। उन्होने प्रजामडल के आन्दोलन मे अपना पूरा सहयोग दिया था। 1942 मे उन्होने आजाद मोर्चे की प्रवृत्तियो मे भाग लिया। पर न वे गिरफ्तार किए गए और न जेल जा मके। वे जयपुर मे मूर्ति वनाने का कार्य करते है। उनका पता है। सनातन धर्म मूर्ति आर्ट, भिन्डो का रास्ता, जयपुर।

श्री चांदनारायण तिवारी

श्री चादनारायण तिवारी का जन्म 19 जनवरी 1920 को जयपुर मे श्री भैरोलाल तिवारी के घर हुआ। ये मूर्तिकार है और इसी पारिवारिक व्यवसाय मे लगे हुए हैं। प्रजामडल के सत्याग्रह के समय इन्होंने स्वय सेवक क रूप मे काय किया था और प्रचार कार्य मे सदा आगे रहते थे। 1942 मे भी इन्होने अग्रेज विरोधी अभियान मे भाग लिया था लेकिन ये न गिरफ्तार हुए और न जेल जा सके। 1948 के काग्रेस अधिवेशन मे भी ये स्वयसेवक थे। 1962 मे इन्होंने होमगार्ड की ट्रेनिंग ली थी। ये सदा राष्ट्रीय कामो मे भाग लेते रहे है। इनका पता है--तिवारी सदन, टिक्कडमल का रास्ता, जयपुर--1।

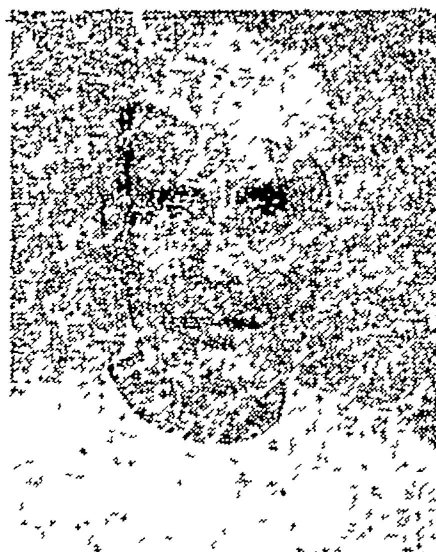
श्री छाजूलाल शर्मा, हरसोलिया



श्री छाजूलाल शर्मा फागी तहसील के हरसोलिया गाव के ब्राह्मण परिवार मे से है। इन्होने 1939 मे प्रजामडल के आन्दोलन मे भाग लिया था। इन्हे 4 महिने की सजा हुई और इन्हे मोहनपुरा कैप मे रखा गया।

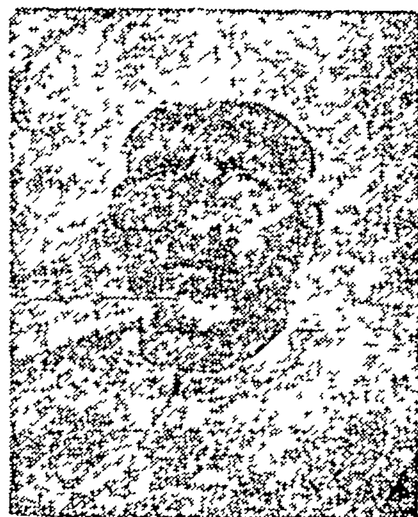
जेल मे मुक्त होने के वाद इन्होने हरिजन वस्ती मे शिक्षा प्रचार का कार्य अपने हाथ मे लिया और हरिजन वालको तथा प्रौढो को शिक्षा देते रहे। श्री छाजूलाल एक सेवा भावी व्यक्ति हैं और सदा पीडितो की सेवा मे तत्पर रहते हैं। आजकल ये अपने गाव मे ही रहते हैं। इनका पता है--मुकाम पोस्ट हरसोलिया (जिला जयपुर)

श्री जयनाराण शर्मा, जयपुर



श्री जयनारायण शर्मा का जन्म 3 सितम्बर 1917 को जयपुर के गौतम गुर्जर गौड विप्रवंश मे हुआ। इनका मूल निवास फागी है। श्री जयनारायण शर्मा के पिता ने सन्यास ले लिया था। श्री जयनारायण का लालन पालन इनके मामा ने किया। पारीक हाईस्कूल मे सातवी तक शिक्षा प्राप्त की। जयपुर राज्य प्रजामडल के सत्याग्रह मे इन्होंने जौहरी बाजार मे सत्याग्रह किया। इन्हें 19 मार्च 1939 को गिरफ्तार कर लिया गया और 4 महीने की सजा मे झालाना कैंप मे रखा गया। जेल से मुक्त होने के बाद उन्होंने साक्षारता प्रचार आन्दोलन मे काम किया। बाद मे श्री जयनारायण शर्मा ने राजकीय सेवा स्वीकार करली थी जिससे जब उन्हे अवकाश मिल चुका है। इनका पता है—बेरी का बास, कुंदीगरो का भैरु, जयपुर।

श्री जगदीश नारायण गुरावा जोशी, दौसा

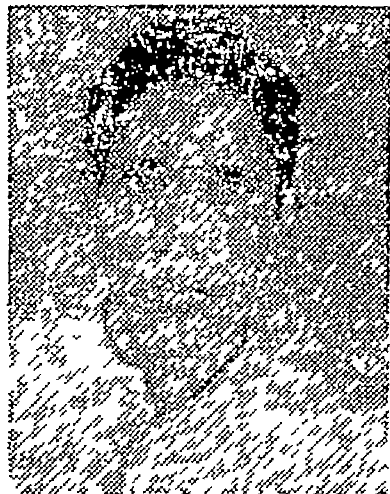


श्री जगदीश नारायण गुरावा जोशी का जन्म दौसा के कन्हैयालालजी के यहाँ संवत् 1908 भाद्रपद शुक्ला 8 को हुआ। इन्होंने पटना जाकर कोटेज इण्डस्ट्री इंस्टीट्यूट मे स्पिनिंग और वीविंग का डिप्लोमा प्राप्त किया। इन्होंने राजस्थान खर्दी संघ गोविन्दगढ, मलिकपुर मे तथा राजपूताना हरिजन सेवक संघ मे काम किया। श्री जगदीश नारायण ने प्रजामण्डल के आन्दोलन मे 1939 मे भाग लिया और 1942 के भारत छोडो आन्दोलन के अभियान मे काम किया। लेकिन ये गिरफ्तार नहीं हो सके। पुलिस के लाठी चार्ज मे इनके कई संगीन चोटें आई। आन्दोलन की प्रवृत्तियो मे भाग लेने के कारण इन्हें अपनी पढाई बीच में ही छोड देनी पडी। आजकल ये राजकीय सेवा में है।

श्री जगदीश चन्द्र शर्मा

श्री जगदीश चन्द्र 1930 से खादी और रचनात्मक कामो मे लगे हुए हैं। उन्होंने 1939 से 42 तक हर आन्दोलन मे सचालको के सहयोगी का कार्य किया है। स्वय सेवक के रुप मे उन्होने वे सभी कार्य किए जो आन्दोलन के ससय आवश्यक होते हैं, परन्तु वे कभी पुलिस की पकड मे नही आए। इसलिए न गिरफ्तार हुए और न जेल जासके। आन्दोलन मे भाग लेने के आकर्षण मे वे अपनी पढाई नही कर सके। आजकल वे खादी के कार्य मे लगे हुए हैं। उनका पता है मकान न० 589 चौकडी गगापोल रास्ता, मु शी रामजीदासजी जयपुर।

श्री दामोदर लोहकार



श्री दामोदर लोहकार का जन्म सन् 1915 में हुआ। इनके पिता श्री लच्छीरामजी पीतल के खिलौने बनाने तथा तलवार बनाने के कुशल कारीगर थे। श्री दामोदर ने बचपन मे उनसे ही कला और कारीगरी की दीक्षा ली। प्ररम्भ मे श्री दामोदर का आकर्षण आर्य समाज की ओर हुआ। यही से राष्ट्रीयता के बीज विकसित हुए। 1939 मे प्रजामण्डल आन्दोलन मे इन्होने भाग लिया। पोस्टर चेपना और दुकानो मे बुलेटिन पहुचाना खतरनाक काम थे लेकिन इन्होने बडी कुशलता से ये कार्य किए। प्रजामडल की प्रवृत्तियो के कारण वे अपना व्यवसाय भी नही सम्भाल पाते। पुलिस ने उन्हे कई बार पकडा, पीटा और छोड दिया। एक रात गिरफ्तार करके सागानेर थाने मे रखा और सुबह छोड दिया। वे अपने अन्य साथियो की तरह जेल यात्रा नही कर सके।

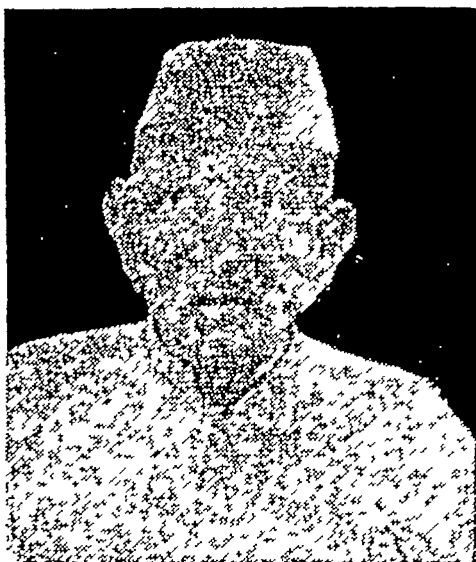
श्री दामोदर प्रजामडल काल से आज तक कट्टर कॉंग्रेसी हैं और कॉंग्रेस की हर प्रवृतियो मे आगे बढ कर उत्साह से भाग लेते हैं।

श्री दीपचन्द बक्षी जयपुर

श्री दीपचन्द बक्षी का जन्म 24 ओक्टोबर 1920 को श्री चिरजीलाल बक्षी के यहाँ जयपुर मे हुआ। इन्होने अग्रेजी हिन्दी की माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की। श्री दीपचन्द बक्षी राष्ट्रीय विचारो के नौजवान थे। इन्होने जयपुर राज्य प्रजामण्डल के आन्दोलन मे 1939 मे भाग लिया। उन्हे 4 महीने की सजा हुई और मोहनपुरा कैंप मे रखा गया। 1942 मे इन्होने आजाद मोर्चे में अग्रेज विरोधी अभियान मे भाग लिया था परन्तु गिरफ्तार नही हो सके। पुलिस ने उन्हे कई बार गिरफ्तार कर जगलो मे छोड दिया और कई बार थाने की हिरासत मे रखकर छोड दिया।

श्री दीपचन्द एक लोक सेवी व्यक्ति हैं और प्रत्येक राष्ट्रीय अथवा सेवा के कार्य मे आज भी उत्साह से भाग लेते है। इस समय जयपुर मे उनका खुद का रग का व्यापार है। उनका पता है—भाकडो का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर।

श्री देवी प्रसाद गोयल, गंगापुर



श्री देवीप्रसाद गोयल का जन्म सन् 1886 मे हुआ। वे 87 वर्ष तक जीवित रहे। उनका स्वर्गवास 20 मई 1972 को हो गया। कांग्रेस के मूल सिद्धान्तो मे उनकी पूर्ण आस्था थी। उन्होंने हर राष्ट्रीय आन्दोलन मे योग दिया। जयपुर राज्य प्रजामण्डल के 1939 के आन्दोलन मे वे सत्याग्रही बन कर जेल गए। 4 महीने की सजा उन्होने मोहनपुरा कैंप मे काटी। उन्होने अछूतोद्धार के लिए बहुत कार्य किया और सामाजिक क्रान्ति के लिए वे सदा सबसे आगे रहे।

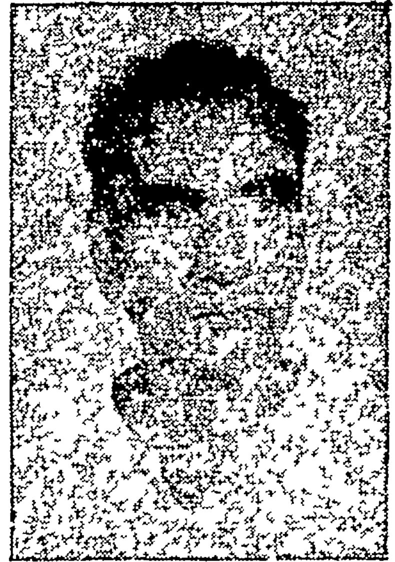
उनके सामाजिक विचारो पर आर्यसमाज की और राजनैतिक विचारो पर कांग्रेस की गहरी छाप थी। उन्होने दोनो संस्थाओ को अपना पूरा-पूरा सहयोग दिया। गंगापुर मे देवी स्टोर नाम की उनकी एक दुकान थी। अब उस दुकान का संचालन उनके पुत्र श्री लक्ष्मीचन्द करते है।

श्री नारायणलाल जैमिनी

श्री नारायणलाल जैमिनी राजस्थान के यशस्वी मूर्तिकार है। इनका जन्म 21 मार्च 1921 को जयपुर के एक ब्राह्मण परिवार मे हुआ। इनके विचार बचपन मे ही राष्ट्रीय थे। जयपुर के प्रत्येक राष्ट्रीय समारोह मे ये स्वयंसेवक के रूप मे भाग लेते थे। 1939 मे प्रजामडल के आन्दोलन के प्रचार और व्यवस्था सचालन मे बहुत योग दिया था। 1942 मे भी इन्होने अंग्रेज विरोधी अभियान मे काय किया परन्तु ये न गिरफ्तार किए गए और न ये जेल जा सके। इनका पता है—जैमिनी मूर्ति कलाकार, खजाने वालो का रास्ता, जयपुर।



श्री देवी नारायण शर्मा



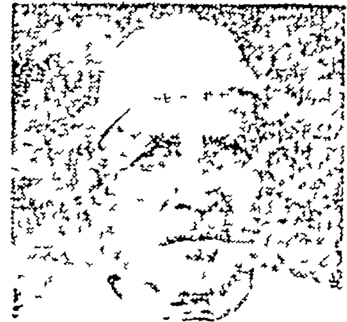
प० देवीनारायण शर्मा का जन्म 16 अक्टूबर 1909 को जयपुर के एक ब्राह्मण परिवार मे हुआ। इन्होने 1932 मे नमक सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा आन्दोलन मे अजमेर जाकर भाग लिया। उन्हे 21 जुलाई 1932 को अजमेर के नगर दड-नायक ने 3 महीने की सजा दी।

प० देवीनारायण शर्मा खादी भण्डारो मे कार्य करते है। ये खादी के कपडो की रगाई के विशेषज्ञ है। आजकल जयपुर मे ही रहते है। इनका पता है–2998, ललिता शास्त्री नगर, नाहरी का नाका, जयपुर।

श्री निहाल अहमद अलउसैनी

श्री निहाल अहमद अलउसैनी चौधरी बसीर अहमद साहब के पुत्र हैं। इनका जन्म 15 दिसम्बर 1910 को हुआ। ये जाती से पजाबी सौदागर है। इन्होने उर्दू, अग्रेजी, फारसी व अरबी भाषाओ का ज्ञान प्राप्त किया है। ये जयपुर के राष्ट्रवादी मुसलमान है। इन्होने जयपुर मे 1939 मे प्रजामडल के आन्दोलन मे और 1942 मे अग्रेज विरोधी अभियान मे भाग लिया था। इनकी निष्ठा प्रजामडल और काग्रेस के प्रति रही है और ये काग्रेस की प्रत्येक प्रवृत्ति मे उत्साह से भाग लेते रहे है। पुलिस के लाठीचार्ज में इन्होने अनेको बार चोटे खाई हैं। आन्दोलनो के पहले ये व्यापार करते थे। आजकल नौकरी करते हैं। पता मकान न० 2317 रास्ता रामलसलाजी का, जयपुर।

श्री दूनीचन्द जैन, जयपुर



श्री दूनीचन्द जैन का जन्म सवत् 1961 मे पाकिस्तान के बहावलपुर राज्य मे हुआ। देश के बटवारे के बाद ये जयपुर आ गए। श्री दूनीचन्द जैन कट्टर काग्रेसी है। इन्होने नशाबदी के लिए कार्य किया, भगतसिह के मुकदमे मे सहयोग दिया और मुलतान सेवा समिति के द्वारा समाज की सेवा की। हर राष्ट्रीय आदोलन मे इन्होने सक्रिय रूप से भाग लिया। राष्ट्रीय आन्दोलनो मे श्री दूनीचन्द को पुलिस ने कई बार गिरफ्तार किया और कई दिनो तक हिरासतो मे रखा। श्री दूनीचन्द का ध्येय समाज के लिए कार्य करने का है। वे आज भी काग्रेस के कार्य मे उत्साह से भाग लेते हैं।

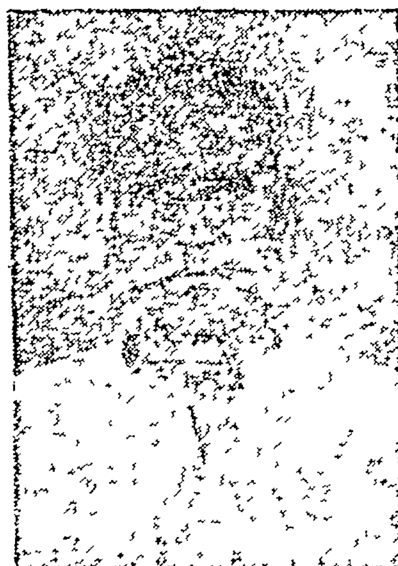
श्री नथमल लोढा

श्री नथमल लोढा का जन्म सवत् 1975 की भाद्रपद शुक्ला 14 को जयपुर के जैन ओसवाल परिवार मे हुआ था। जयपुर मे प्रजामडल के पुनर्गठन के बाद श्री लोढा भी प्रजामडल से सवद्ध हो गए। उन्होंने प्रजामडल की हर प्रवृत्ति मे उत्साह से भाग लिया।

1939 मे प्रजामडल के आन्दोलन मे वे शामिल हो गए। वे कई वार गिरफ्तार हुए और कई वार छोडे गए। उन्हे पुलिस की अमानुषिक क्रूरताओ का शिकार होने का अवसर कई वार मिला। वे कई वार गिरफ्तार करके कोतवाली तक ले जाए गए और छोड दिए गए। कोतवाली मे उन्हे कई वार कई घटो तक और कई वार 1-2 दिनो तक हिरासत मे रखा गया था।

देश की स्वाधीनता के वाद श्री लोढा जवाहरात के व्यवसाय मे लग गए हैं और आजकल रत्नो की कटिंग का काम करते हैं। उनका पता है—गोधा हाउस, मोतीसिंह भोमिये का रास्ता, चौथा चौराहा, जयपुर—3।

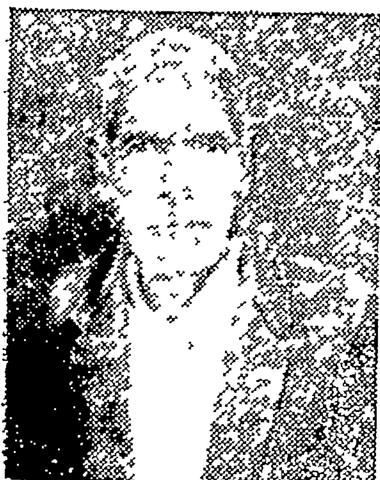
श्री मूलचन्द शर्मा सुरोठ (सवाईमाधोपुर)



श्री मूलचद शर्मा सुरोठ का जन्म सन् 1903 में हुआ। श्री मूलचद शर्मा जयपुर राज्य प्रजामडल के एक कर्मठ कार्यकर्ता थे। श्री मूलचद का सुरोठ के जागीरदारो से जीवन भर सघर्ष रहा। जागीरदारों ने इन पर कई झूठे मुकदमे लगा कर इन्हे तरह तरह से परेशान करने की कोशिशें की। भारत छोडो आन्दोलन के समय इन पर सैनिक भर्ती रोकने तथा युद्ध का चन्दा न देने के प्रचार पर भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत गिरफ्तार करके 2 वर्ष की सजा दी गई।

देश की स्वाधीनता के वाद श्री मूलचन्द सुरोठ निरतर राजनैतिक सेवा मे लगे रहे। निस्वार्थ जनसेवा ही उनके जीवन का उद्देश्य रहा है। इन्होने सदा जागीरदारो के शोषण और अत्याचारो का डट कर विरोध किया है। आजकल ये अपने गाव मे खेती करते हैं और अपना समय लोक सेवा में लगाते हैं। इनका पता है—मु० पोस्ट सुरोठ, जिला सवाई माधोपुर।

श्री बदरी नारायण शर्मा टेलर मास्टर

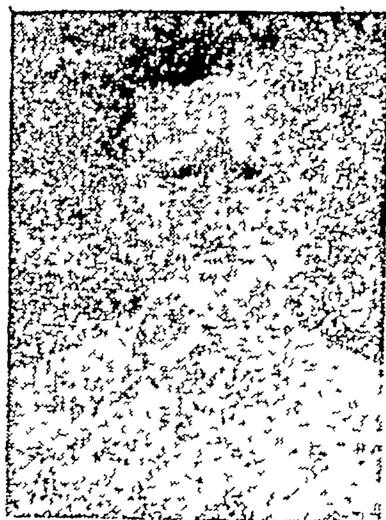


श्री बदरी नारायण शर्मा का जन्म 27 अगस्त 1912 को जयपुर के ब्राह्मण परिवार मे हुआ। शिक्षा समाप्त करने के वाद इन्होने सिलाई का व्यवसाय शुरू कर दिया था। 1938 मे वे प्रजा मण्डल मे सम्मिलित होगए थे। 1939 मे जव जयपुर राज्य प्रजामण्डल का आन्दोलन शुरू हुआ तो श्री बदरी नारायण शर्मा सत्याग्रह के पहले जत्थे मे सत्याग्रही बन कर सम्मिलित हुए। उनकी 12 फरवरी 39 को सर्व श्री रूपचन्द मोगानी, अरविन्द कुमार सोनी, प्रकाश जैन और सूआ लाल शर्मा के साथ सबसे पहले गिरफ्तारी हुई। उन्हे 6 मास की सजा दी गई। जेल जाने के कारण उनका स्वतन्त्र दुकान का व्यवसाय समाप्त होगया।

जब श्री बदरी नारायण शर्मा जेल मे थे तब उनका एक मात्र पुत्र बहुत बीमार होगया था। मित्रो ने उन्हे पैरोल पर रिहा होने का आग्रह किया परन्तु उन्होंने परोल पर घर जाना स्वीकार नही किया। पिता की अनुपस्थिति मे पुत्र का स्वर्गवास होगया। श्री शर्मा आज भी राष्ट्रीय प्रवृत्तियो मे पूरे उत्साह से भाग लेते है।

इनका पता—है जी 846, गाधीनगर, जयपुर—4

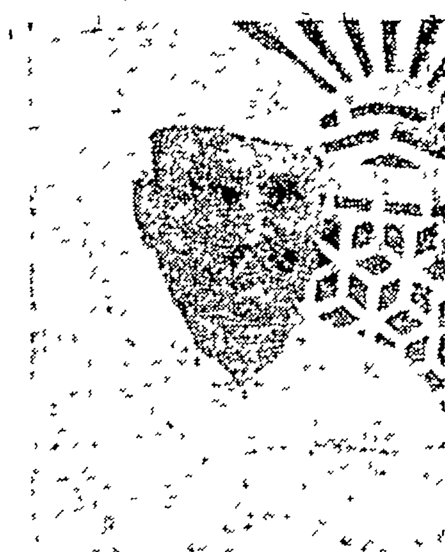
श्री बाला सहाय भारतीय बी ए



श्री बाला सहाय का जन्म मनोहरपुर के बलाई लादूरामजी के यहां 2 मई 1917 को हुआ। इन्होंने बी० ए० और विशारद तक शिक्षा प्राप्त की। इन्होने अजमेर जाकर नमक सत्याग्रह मे भाग लिया। इन्हे 3 महीने सख्त कारावास और 9 बैंतो की सजा दी गई। इनके घर का खेत ठिकाने वालो ने छीन लिया। बाद में श्री बाला सहाय भारतीय राजकीय स्कूल मे अध्यापक होगये और अब रिटायर हो चुके हैं। श्री बाला सहाय राष्ट्रीय कार्यों मे उत्साह से भाग लेते हैं। शिक्षा-प्रचार, अस्पृश्यता निवारण और खादी इनकी मुख्य प्रवृत्तियें है

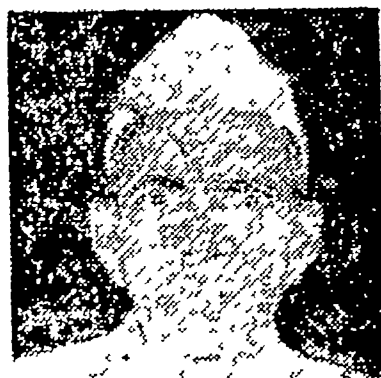
इनका पता है-मु० पो० मनोहरपुरा जयपुर।

श्री भंवर लाल बोथरा



श्री भंवरलाल बोथरा का जन्म 27 जुलाई 1923 को जयपुर के एक जैन परिवार मे हुआ। इनकी जयपुर और मद्रास मे शिक्षा हुई। प्रजामडल के 1939 के आन्दोलन मे इन्होंने स्वयं सेवक का कार्य किया। 1939 मे इन्होने खादी पहनने और 1941 मे चर्खा कातने का व्रत लिया। 1942 मे श्री बोथरा ने श्री रत्नाकर भारतीय को क्रांतिकारी कार्यो मे बहुत सहयोग दिया। इन्होंने पुलिस की सतर्कता के बावजूद साइक्लोस्टाइल पर बुलेटिन निकालने का क्रम जारी रखा। 1947 से वे श्री सिद्धराज ढड्ढा के चर्खा-परिषद के वर्षो तक सयोजक रहे। देश के बटवारे के बाद उन्होंने शरणार्थियो के पुर्नवास के लिए श्री गुलाबचन्द कासलीवाल के साथ कार्य किया। आजकल वे जयपुर मे 1857 गली पुरन्दरजी, रामलला जी का रास्ता, जयपुर मे रहते है।

श्री भंवरलाल गोयल



श्री भवरलाल गोयल की आयु इस समय 70 वर्ष से अधिक ही है। 1914 से 1930 तक होल्कर राज्य की महू छावनी मे इनके कपडे का व्यवसाय था। 1933 मे विदेशी कपडो के देश-व्यापी बहिष्कार के समय इनकी दुकान मे आग लगादी गई। इनको उस समय 8000 रुपये का नुकसान हुआ। ये जयपुर आगए। 1939 मे प्रजामडल के आन्दोलन मे इन्होंने भाग लिया और इन्हें 6 मास की सजा दी गई। श्री भवरलाल गोयल की पत्नि भी आन्दोलन मे गिरफ्तार हुई थी।

श्री भवरलाल गोयल एक पक्के कट्टर कांग्रेसी है और कांग्रेस के उसूलो पर चलते है। आज भी उनका अधिक समय निस्वार्थ लोक सेवा मे ही व्यतीत होता है।

इनका पता है—मोहनवाडी, गोवर्धन नाथ का मन्दिर, गलता रोड, जयपुर।

श्री भंवरलाल सामोदिया



श्री भवरलाल सामोदिया जयपुर के एक प्रसिद्ध राजनैतिक कार्यकर्ता है। इनकी उम्र 58 वर्ष की है। इन्होने 1939 मे प्रजामडल आन्दोलन मे भाग लिया था। उन्होने 4 महीने की सजा जालाना कैंप मे काटी थी। 1942 मे आजाद मोर्चे की ओर से उन्होंने ब्रिटिश विरोधी अभियान मे भाग लिए उन्हे तब भी 4 महीने की सजा दी गई। अगस्त क्राति मे श्री सामोदिया ने क्रातिकारियो के साथ मिलकर तोड—फोड के कामो की भी अगवाई की थी। वे निरन्तर 15 वर्ष तक जयपुर के नगर पाषद रहे। आज भी वे सत्ता काग्रेस की नीतियो के कटटर समर्थक है और सार्वजनिक जीवन मे अग्रगण्य रूप मे भाग लेते है।

उनका पता है—खेनडी रोड, चादपोल दरवाजे बाहर, जयपुर।

श्रीमती भारती देवी वाजपेयी



श्रीमती भारती देवी वाजपेयी राजस्थान के यशस्वी आयुर्वेदीय चिकित्सक श्री श्याम सुन्दर लाल वाजपेयी की पत्नी हैं। श्री भारतीदेवी स्वय वैद्या है और सीकर मे उनका दवाखाना चलता है। श्री भारतीदेवी के पीहर और ससुराल के सभी लोग राष्ट्रीय विचारधारा के थे अत राजनैतिक क्षेत्र मे प्रवेश करने मे इन्हे आसानी हुई। 1939 मे उन्होने जयपुर प्रजामण्डल के सत्याग्रह मे महिलाओ के जत्थे के साथ सत्याग्रह किया। वे गिरफ्तार हुई और उन्हे 3 महीने की सजा देकर जयपुर सैंट्रल मे रखा गया था। श्री भारती देवी कट्टर काग्रेसी हैं और काग्रेस के प्रत्येक कार्यक्रम मे उत्साह से भाग लेती हैं।

इनका पता है—भारती औषधालय, स्टेशन रोड, सीकर।

स्वर्गीय श्री मुराद अली, सामोद

श्री मुराद अली का जन्म हरियाणा राज्य के बावल ग्राम मे हुआ था। इन्होने गाव की पाठशाला में हिन्दी उर्दू और गणित की शिक्षा प्राप्त की थी। अपने मामा की देखरेख मे इन्होने कचहरी का काम सीखा और सामोद ठिकाने में इनकी नियुक्ति हो गई। प० हीरा लाल शास्त्री के सपर्क मे आने के वाद इनमे देश सेवा की भावना वलवती हो गई और ठिकाने ने इन्हें सेवा मुक्त कर दिया। श्री मुरादअली वस्त्र–स्वालवन के कार्य मे लग गए और खादी भडार की स्थापना की। 1939 के प्रजामण्डल के आन्दोलन में इन्होने सत्याग्रह मे भाग लिया और 25 फरवरी 1939 को इन्हें 6 महीने की सजा हुई। जेल से मुक्त होने के वाद श्री मुराद अली ने दलित वर्ग मे शिक्षा प्रचार का कार्य किया। 1951 मे अकस्मात हृदयगति रुक जाने से इनकी मृत्यु हो गई।

श्री मोहनलाल सन्यासी

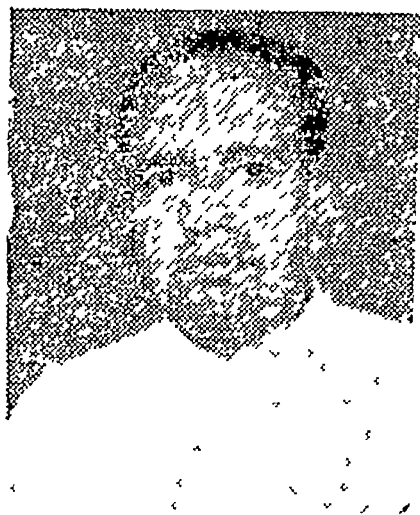
श्री मोहनलाल शर्मा मूल रूप से दिल्ली के निवासी हैं। उनकी आयु 62 वर्ष की है। उन्होने 1930-31 मे दिल्ली मे नमक सत्याग्रह में भाग लिया और जेल गए। 1942 मे क्रान्तिकारियो के साथ कार्य करने के अपराध में भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत इन्हें 2 वर्ष की दिल्ली मे सजा हुई। श्री मोहनलाल सन्यासी कुल मिलाकर 3 वार जेल में रहे। स्वाधीनता के वाद इन्होंने सन्यास ले लिया और पूर्ण रूप से अपने आपको जनता की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। श्री मोहनलाल सन्यासी कट्टर काग्रेसी हैं। आजकल ये जयपुर मे नाहरगढ रोड मे वारह भाईयो के चौराहे पर पुरानी वस्ती मे रहते हैं।

स्वर्गीय श्री मूलचन्द अग्रवाल

स्वर्गीय श्री मूलचन्द अग्रवाल का 28 फरवरी 63 को 79 वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। मूल रूप मे वे रहने वाले नीमच के थे परन्तु उनका कार्यक्षेत्र अजमेर और राजस्थान ही रहा है। वे एक सेवाभावी और निष्ठावान व्यक्ति थे। महात्मा गाधी की प्रेरणा से वे प्रारम्भ मे खादी उत्पादन और वस्त्र स्वावलम्बन के कार्य मे लग गए थे। बाद मे वे खादी ग्रामोद्योग की सर्विस मे ले लिए गए थे।

सन् 1930 मे नमक सत्याग्रह के समय उन्होंने अजमेर में सत्याग्रह किया और उन्हें 9 महीने की सजा हुई थी। अजमेर जेल से मुक्त होने के वाद लम्बे समय तक वे सावरमती आश्रम में महात्मा गाधी के पास रहे। उन्होने प्रत्येक राष्ट्रीय आन्दोलन मे भाग लिया था और जीवन पर्यन्त व समाज की सेवा मे लगे रहे।

श्री मोहनलाल आजाद

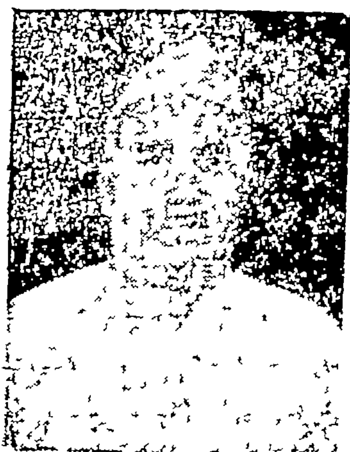


श्री मोहनलाल आजाद जयपुर के श्रीमाली ब्राह्मण हैं। आपका जन्म 1 दिसम्बर 1921 को प० जयशकरजी के यहा हुआ। आपने सस्कृत मे उपाध्याय तक शिक्षा प्राप्त की थी। जयपुर मे प्रजामडल के पुनर्गठन के साथ ही वे उसके कर्मठ कार्यकर्ता वन गए। 1939 के प्रजामडल के ग्रान्दोलन मे उन्होने भाग लिया। वे गिरफ्तार हुए और जेल गए। 1942 के भारत छोडो ग्रान्दोलन के समय उनके नेतृत्व मे महाराजा सस्कृत कालेज मे 1 महीने हडताल रही। परिणाम स्वरूप भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत वे गिरफ्तार कर अनिश्चित काल के लिए नजरवन्द कर दिए गए। इस जेल यात्रा के साथ ही उन्होने अपने नाम के साथ ग्राजाद लगाना शुरु कर दिया।

स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात आजाद ने हरिजनो मे सेवा कार्य को ग्रपना लक्ष्य बनाया और जीवन पर्यन्त हरिजनो की सेवा मे लगे रहे। श्री ग्राजाद नगर परिषद के सदस्य भी रहे थे। वे जयपुर हरिजन सेवक सघ के मृत्यु पर्यन्त मन्त्री का कार्य करते रहे। 5 फरवरी 64 को अकस्मात हृदयगति रुक जाने से उनकी मृत्यु हो गई। उनका पता है—आजाद भवन, चादपोल वाजार, जयपुर।

श्री मोहनलाल उर्फ मदन मोहन गौतम

श्री मोहनलाल उर्फ मदन मोहन गौतम जयपुर के गुर्जर गौड ब्राह्मण हैं। इन्होने ग्रग्रेजी के साथ ज्योतिष ग्रौर कर्मकाड का भी अध्ययन किया है। इन्होने कई वर्षो तक प्रौढ शाला एव हरिजन पाठशालाए चलाई और स्वय सेवक के रूप मे प्रजामडल मे कार्य किया। 1939 मे ये सत्याग्रही बनकर प्रजामण्डल के ग्रान्दोलन मे ग्रागे आए। इन्हे 15 फरवरी 39 को 6 महीने की सजा दी गई। 1942 मे इन्होने गुप्त रूप से भारत छोडो आन्दोलन मे योग दिया। आजकल ज्योतिष ग्रौर ब्राह्मणवृत्ति से अपना निर्वाह करते हैं।



श्री भूरालाल शर्मा (बागड़ा)

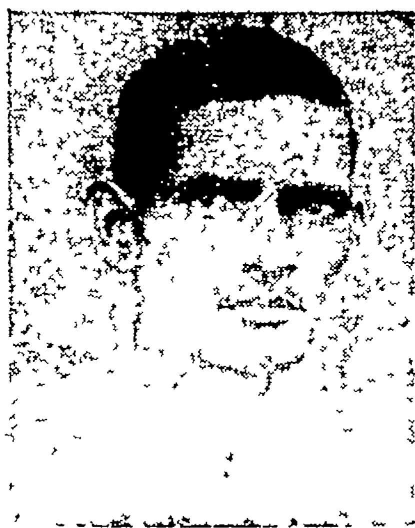


श्री भूरालाल शर्मा 60 वर्ष के वयोवृद्ध व्यक्ति है। ये जाति के वागडा ब्राह्मण है। इनका अधिक समय ब्यावर और अजमेरमे वीता है। स्वामी कुमारानन्द के साथ श्री भूरालाल मजदूर सगठनो मे लम्बे समय तक कार्य करते रहे है। व्यावर मे ही 1930 मे इन्होंने काग्रेस की सदस्यता ग्रहण की और स्वदेशी का व्रत लिया। नमक सत्याग्रह तथा अन्य सत्याग्रहो मे श्री भूरालाल शर्मा अत्यन्त सक्रिय रहे। भारत छोडो आन्दोलन मे इन्होंने अजमेर मे सत्याग्रह किया और इन्हे 4 महीने 2 दिन की सजा दी गई जिसे इन्होंने अजमेर जेल मे पूरा किया। श्री भूरालाल शर्मा आज 60 वर्ष की आयु मे भी उत्साह के साथ गाव गाव मे दौरा करते है और लोगो को समाजवाद और गरीवी हटाओ का सदेश सुनाते हैं। श्री भूरालाल शर्मा ने समाज सुधार के लिए भी वहुत कार्य किया है और लोगो को युग के अनुसार नई परम्पराए स्थापित करने के लिए प्रेरित किया है। पिछले कई वर्षों मे श्री भूरालाल शर्मा व्यावर मे ही रहने लग गए हैं। उनका पता है—ब्यावर आर्य समाज चौपड, चागगेट, व्यावर।

श्री मदन मोहन शर्मा

एम० ए०, एल० एल० वी०

श्री मदन मोहन शर्मा का जन्म जयपुर शहर के एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार मे हुआ। 1931 मे इन्होंने आगरे से एम०ए०, एल० एल० वी० की डिग्री प्राप्त की। 1926 मे आप खादी पहनने लग गए थे। 1938 मे जयपुर नगरपालिका के सदस्य वने। 1939 मे जयपुर राज्य प्रजामण्डल के आन्दोलन मे सत्याग्रही वने और आपको 5 महीने की सजा मिली। श्री शर्मा हटूडी के गाधी–आश्रम मे भी रह चुके थे। वे स्वतन्त्र विचारो के तथा धर्म व सस्कृति मे पूर्ण विश्वास रखने वाले एक सात्विक व्यक्ति हैं। 1948 तक श्री शर्मा जयपुर राज्य प्रजा मण्डल के कार्यकर्त्ता थे। आज कल सर्वोदय एव सर्व सेवा सघ के साथ सम्बद्ध हैं।



श्री मिश्रीलाल जैन

श्री मिश्रीलाल जैन अजमेर जिले के हरमाडा ग्राम के रहने वाले हैं। इनका जन्म 1917 मे हुआ। इन्होने रचनात्मक कार्य का प्रशिक्षण श्री हरिभाऊ उपाध्याय से लिया। श्री जैन ने कई दिन तक डिग्गी ठिकाने की जनता के बीच कार्य किया। भारत छोडो आन्दोलन के समय ये अजमेर मे सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हे 1 वर्ष की सजा दी गई। स्वाधीनता के वाद श्री मिश्रीलाल जैन खादी ग्रामोद्योग और हरिजन सेवा ग्रादि रचनात्मक प्रवृतियो मे लग गए। आजकल ये जयपुर के हथरोई मोहल्ले मे रहते है।

श्री मिलाप चन्द जैन

श्री मिलापचन्द जैन का जन्म सवत् 1975 की भाद्रपद शुक्ला 14 को जयपुर मे हुआ। अपनी शिक्षा समाप्त कर श्री जैन अखिल भारत चर्खा सघ मे काम करने लग गए। 1939 मे इन्होने प्रजामण्डल के ग्रान्दोनन मे गुप्त रूप से वहुत सहयोग दिया। 1942 मे भी इन्होने आजाद मोर्चे के परिपत्र विभाग का कार्य सम्भाला और क्रातिकारियो के साधन सुविधाओ की व्यवस्था का दायित्व इन्हे सौंपा गया। पुलिस ने 1942–43 मे इन्हे महीनो तक तग किया और रोज थाने मे वुलाकर भय, ग्रातक और धमकिये देदेकर क्रातिकारियो के सम्वन्ध मे जानना चाहा। परन्तु इनसे पुलिस को कुछ भी हाथ नही लगा। श्री जैन कट्टर काग्रेसी हैं। ग्राज कल खादी ग्रामद्योग कमिशन मे नौकरी करते हैं। उनका पता है 436 मॉडल टाउन पानीपत, (हरियाणा)।

श्री कन्हैया लाल शर्मा

श्री कन्हैयालाल शर्मा जयपुर के मूर्तिकार हैं। ये जाति से आदि गौड ब्राह्मण हैं। इनका जन्म जयपुर मे सम्वत् 1981 की कार्तिक शुक्ला 5 को हुआ। 15 वर्ष की आयु से ही खादी पहनने लग गए थे। प्रजामडल के आन्दोलन मे इन्होंने धारा 144 तोडी थी। लेकिन ये गिरफ्तार नही किये गये। 1942 की अगस्त क्रांति मे इन्होने वम्बई मे काय किया। ये कट्टर काग्रेसी है और हर समय काग्रेस के आदेश को पालन करने मे सवमे आगे तत्पर रहते हैं। इनका पता है—हिन्द मूर्ति कला, खजाने वालो का रास्ता, जयपुर।

श्री रत्नाकर भारतीय

श्री रत्नाकर भारतीय आजकल बी० बी० सी० लदन से हिन्दी कार्यक्रम प्रस्तुत करते है परन्तु इनका राजनैतिक जीवन जयपुर मे ही शुरु हुआ था। 1942 के भारत छोडो आन्दोलन मे श्री रत्नाकर भारतीय ने जयपुर मे ठाकुर रघुराजसिह (प्रो० रजन) से बम बनाना सीखा और शहर मे जगह-जगह बम विस्फोट किए। मानप्रकाश सिनेमा मे एक अग्रेजी खेल के दिन जब, कि अधिकाश युरोपियन लोग खेल देख रहे थे–रत्नाकर भारतीय ने मानप्रकाश हाल मे बम विस्फोट किया और वहा से पार हो गए। पुलिस आज तक उनका पता नही लगा सकी। वे बम्बई होते हुए लदन पहुच गए और आजकल बी० बी० सी० मे प्रोग्राम एक्सीक्युटिव है। उनका पता है—37, बी० बी० सी० ऑफिस, ओखमटन रोड, लन्दन एल डब्लू 7।

ठाकुर रघुराजसिंह (प्रो० रंजन)

ठाकुर रघुराजसिह जो बाद मे प्रोफेसर रन्जन के नाम से प्रसिद्ध हुए। विज्ञान के प्रोफेसर थे और रसायन शास्त्र का उनका बहुत गहरा अध्ययन था। वे वनस्थली विद्यापीठ मे प्राध्यापक थे। भारत छोडो आन्दोलन के समय वे वनस्थली से त्यागपत्र देकर अजमेर मे आन्दोलन मे शामिल हो गए थे। अजमेर के केन्द्रीय कारागृह मे वे और प्रसिद्ध क्रान्तिकारी ज्वालाप्रसाद साथ साथ ही थे और एक दिन दोनो मित्र मौका देख कर अजमेर की जेल तोडकर भाग निकले थे। वे अतिम दम तक पुलिस के हाथ नही आए। फरारी की अवस्था मे वे जयपुर आए। रत्नाकर भारतीय एव राधश्याम टिक्कीवाल और उनके मित्रो को बम बनाना सिखाया तथा जयपुर मे क्रातिकारी और आतकवादी प्रवृत्तियो का सगठन किया। चौमू के श्री बद्रीनारायण खूटेटा के द्वारा उन्हे श्री हीरालाल शास्त्री के यहा से क्रान्तिकारी कामो के लिए आर्थिक सहायता मिलती थी। श्री रघुराजसिह सन् 45 में गाधीजी के पास सेवाग्राम चले गए। अभी कुछ वर्ष पहले उनके देहावसान के समाचार मिले थे।

श्री विमलाकर तैलंग

श्री विमलाकर तैलग मूल रूप मे आध्र के है लेकिन कई वर्षों से अब जयपुर (राजस्थान) मे ही रहते है। उनकी आयु 53 वर्ष की है। राजनैतिक प्रवृत्तियो मे भाग लेने के कारण श्री विमलाकर दो बार विद्यालय से निकाले गए थे। जयपुर राज्य प्रजा-मडल के आन्दोलन मे उन्हे 4 महीने की सजा हुई थी। श्री विमलाकर एक सुलझे हुए लेखक हैं। देश की स्वाधीनता के बाद उन्होने राजकीय सेवा मे नियुक्ति लेली थी। वे आजकल भूप्रबन्ध विभाग मे कार्य करते है।

श्री राजरूप टाँक

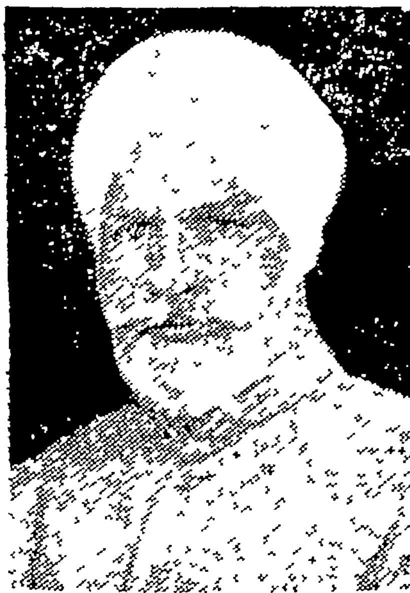


श्री राजरूप टाँक जयपुर के प्रसिद्ध समाज सेवक है। हरिजन सेवा, स्त्री शिक्षा, अनाथाश्रम सेवा, गो-सेवा आदि आपकी मुख्य प्रवृतिये है। आप जयपुर मे जवाहरात के बहुत बडे व्यापारी है और जयपुर के नौजवानो को जवाहरात का प्रशिक्षण देने की आपने व्यवस्था कर रखी हैं। आपके यहा से सैकडो नौजवान जवाहरात के व्यापार की दीक्षा लेकर निकल चुके हैं।

जयपुर मे प्रजामण्डल के पुनगठन के बाद आप उसकी प्रवृतियो के साथ बराबर सलग्न रहे है। आपकी क्षमता और योग्यताओ का उपयोग जेल मे बढ करके सत्याग्रह के सचालन मे तथा जेल जाने वालो के परिवारो की देख भाल मे हुआ है। प्रजामण्डल के अथवा काग्रेस के अधिवेशनो मे व्यवस्था का भार सदा श्री राजरूप टाँक पर ही रहा हैं। ये वर्षो तक प्रजामण्डल की कार्यकारिणी के सदस्य और कोषाध्यक्ष रहे है। 1939 मे पुलिस ने इनकी हिस्ट्रीशीट खोल रखा था जो वर्ष भर चलाता रहा।

श्री राजरूप टाँक की आयु 65 वर्ष की है। आप जाति से श्रीमाल जैन है। इसी वर्ष जयपुर की जनता ने आपका नागरिक अभिनन्दन करके एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेट किया है। आपका पता है—जौहरी बाजार, जयपुर।

सरदार रावेल सिंह मास्टर



सरदार रावेलसिंह की आयु 72 वर्ष की है। वे 1920–21 से राष्ट्रीय आन्दोलनो मे भाग लेने लग गए थे। 1920 से 1935 तक उन्होने तहसील जेहलम (पजाब) मे कार्य किया था और 1935 से 47 तक तथा उसके बाद जयपुर मे। उन्होने गाधीजी के रचनात्मक कामो मे अपना अधिक से अधिक समय लगाया। देश की स्वाधीनता के बाद उन्होने सुधार और सामाजिक कुरीतियो के विरुद्ध प्रचार करने का कार्य किया है। मास्टर रावेलसिंह, कई शिक्षण सस्थाओ तथा सामाजिक और धार्मिक सस्थाओ के साथ सम्बद्ध है। राष्ट्रीय आन्दोलनो के समय जेल से बाहर रहकर ही उन्होने कार्य किए। उनका पता है—308, शहीद भगतसिंह चौक, आदर्श नगर, जयपुर।

श्रीमती राम प्यारी देवी शर्मा



श्रीमती - रामप्यारी देवी खोरा विसल ग्राम की विदूषी महिला हैं। जयपुर के सामाजिक राजनैतिक क्षेत्र मे वे अग्रणी महिला रही हैं। 20 वर्ष की आयु मे विधवा होने पर जालधर मे शिक्षा प्राप्त करने चली गई थी। वही इन्हे राष्ट्रीयता के सस्कार मिले। महिला आश्रम वर्धा मे दो वर्ष तक इन्होने अध्यापन कार्य किया। उन्हीं दिनो गाधीजी के सम्पर्क मे आई। अपने गाव मे आकर सामाजिक विरोध के बावजूद इन्होने हरिजन शिक्षा का कार्य हाथ मे लिया और हरिजन स्कूलें चलाई। इसके बाद शेखावाटी के कई स्कूलो का सचालन किया 1939 मे प्रजामण्डल के आन्दोलन के समय अपना पद त्याग कर झुझुनू केन्द्र के सगठन को सम्हाला। राज्य की प्रतिनिधि सभा मे इन्हे महिला प्रतिनिधि के रूप मे मनोनीत किया गया।

श्रीमती रामप्यारी देवी प्रभावशाली वक्ता, कुशल सगठक तथा सुयोग्य शिक्षा सेवी हैं। इनका स्वभाव निर्भीक और प्रकृति स्पष्टवादी है।

श्री रामचरण वाजपेयी



श्री रामचरण वाजपेयी मूल रूप से गोला का वास 'अलवर' के रहने वाले हैं। इनका जन्म 15 अगस्त, 1922 को हुआ। जयपुर प्रजामण्डल आन्दोलन के समय इन्होंने स्वय सेवक के रूप में कार्य किया। ये कट्टर काग्रेसी हैं और कांग्रेस की हर प्रवृत्ति मे सदा से अपना योग देते रहे हैं। जयपुर में श्री रामचरण वाजपेयी मूर्तिये बनाने का कार्य करते हैं।

इनका पता है—भारतीय मूर्ति कला, खजाने वालो का रास्ता, जयपुर।

श्री रामेश्वर गुप्ता



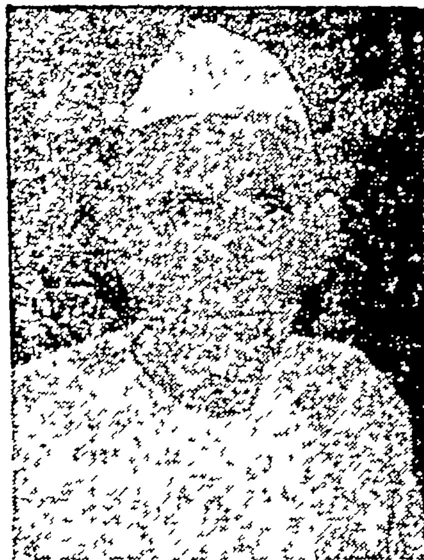
श्री रामेश्वर गुप्ता एक राष्ट्रीय कायकर्ता हैं। इनका जन्म सवत 1974 की फाल्गुन शुक्ला 14 को ब्यावर मे हुआ। बचपन मे ही ये वानर सेना बनाकर नमक सत्याग्रह मे भाग लेने लग गए थे। ये राष्ट्रीय आन्दोलनो मे कई बार पकडे गए और उसी दिन छोड दिए गए। कई बार पुलिस की लाठिये खाई। ब्यावर मे आप राष्ट्रीय प्रवृतियो के लिए सनातन धर्म स्कूल से निकाले गए। आजकल जयपुर मे रहते है और हर राष्ट्रीय कार्य मे भाग लेते है। पता—गुप्ता वाइडिंग वर्क्स, सघीजी का रास्ता, जयपुर।

श्री कॉमरेड राधा बल्लभ

श्री राधावल्लभ राजस्थान के एक प्रसिद्ध नेता हैं। वे राजनीति मे प्रबुद्ध बुद्धिवादी, समाज के एक क्रातिकारी विचारक और श्रमिक सगठनो के सलाहकार और मार्गदर्शक हैं। उन्होने अपना राजनैतिक जीवन जयपुर प्रजामण्डल मे ही शुरू किया था। अपने एक पत्र मे उन्होने लिखा है कि • • •• श्री बद्रीनारायण खूटेटा पहले व्यक्ति थे कि जिन्होंने मुझ से राजनीति के सबध मे बात की। उस समय मैं नवमी श्रेणी का विद्यार्थी था। मेरी जन्म भूमि चाकसू—जहा खादी के उत्पादन का एक केन्द्र था—मेरी खूटेटाजी से भेंट हुई। कुछ वर्षो बाद हम दोनो का साथ जयपुर राज्य प्रजामण्डल मे हो गया और एक लम्बी मजिल पर हम लोग हीरालाल शास्त्री की अगुवाई मे चले।
उस जमाने मे जो बेपनाह मुहब्बत राजनीतिक कार्यकर्ताओ को एक दूसरे से होती थी—47 वह के बाद स्वप्न की बात हो गई।

श्री राधावल्लभ ने एम० ए०, एल० एल० बी० करने के बाद जयपुर मे वकालात शुरू करदी थी। देश की स्वाधीनता के बाद वे कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हो गए। आज कल भी ये अपने मिशन मे सक्रिय है। इनका पता है—लीगल चैम्बर, सागानेरी दरवाजे बाहर, जयपुर।

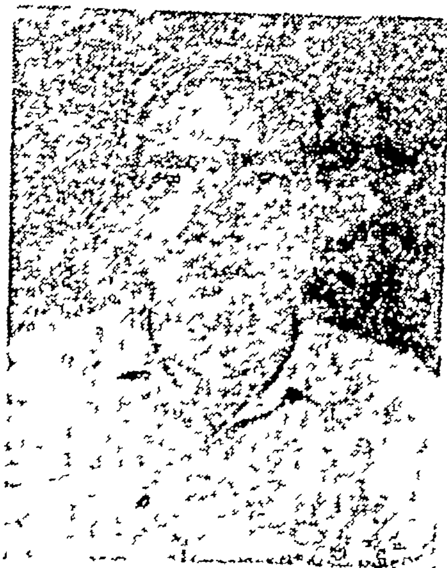
मास्टर श्री रामसहाय शर्मा, चौमू



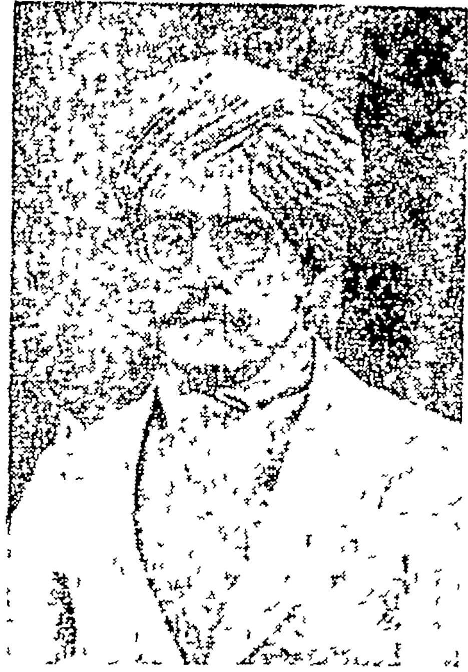
मास्टर श्री राम महाय शर्मा का जन्म संवत् 1955 के पौष माम मे चौमू मे हुआ। शिक्षा ममाप्त कर आप ठिकाने की स्कूल मे अध्यापक हो गए। आप पर स्वामी दयानन्द और महात्मा गाधी के विचारो का वडा प्रभाव पडा। आपने चौमू दयानन्द खादी भण्डार की स्थापना की। कालान्तर मे चौमू खादी उत्पादन का एक मुख्य केन्द्र वन गया। इसका श्रेय दयानन्द खादी भण्डार को ही है। नमक मत्याग्रह के समय मास्टर राममहाय ने अपने 6 महिने का वेतन मत्याग्रह कोष मे भेज दिया था। जयपुर राज्य प्रजामण्डल के आन्दोलन मे मास्टरजी ने अपनी अध्यापकी मे त्यागपत्र देकर भाग लिया। आपको 6 महिने के कारावाम की मजा दी गई। जयपुर राज्य की प्रतिनिधि सभा मे आप आमेर निजामत से सदस्य चुने गये। आजकल वृद्धावस्था के कारण राजनीति मे मन्याम ले लिया है और विशुद्ध रचनात्मक कामो मे अपना यथायोग्य महयोग दे रहे हैं।

श्री रामेश्वर शर्मा

श्री रामेश्वर शर्मा जमवारामगढ तहसील के लखेर ग्राम के निवामी हैं। इनका जन्म 3 नवम्बर, 1919 को हुआ। इन्होने नमक मत्याग्रह के ममय अजमेर मे जाकर मत्याग्रह मे भाग लिया। इन्हे 3 माम के कारावाम और 9 बैंतो की मजा दी गई। ये 3 महिने तक नजरवन्द रहे। ये जयपुर के राष्ट्रीय आन्दोलनो मे भी भाग लेते रहे हैं। आजकल पीतलियो के चौक, जौहरी वाजार मे इनकी पान की दुकान है।



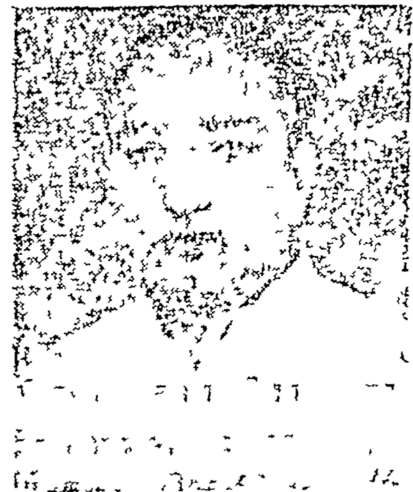
स्वर्गीय श्री राम प्रताप जोशी, दौसा



स्वर्गीय श्री रामप्रताप जोशी का जन्म दौसा मे सवत् 1954 मे हुआ था। उन्होने मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की थी। कुछ दिन उन्होने पुलिस विभाग मे कार्य किया था फिर अध्यापन, पडिताई और खेती उनके मुख्य व्यवसाय थे। 1930 मे वे सरिश्ते के वकील और मुखतियार आम के रूप मे काम करते रहे।

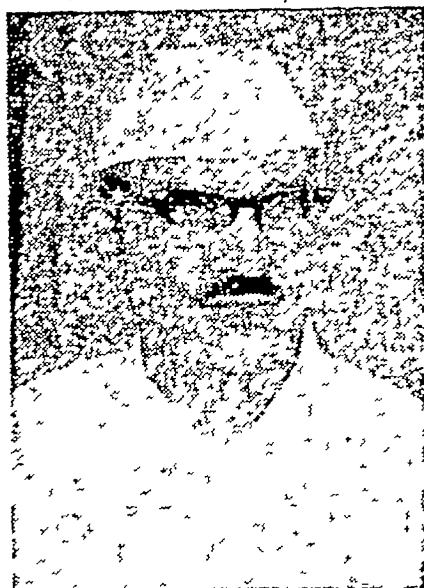
जयपुर मे प्रजामण्डल के पुनर्गठन के वाद उन्होने दौसा क्षेत्र मे प्रजामण्डल की स्थापना की और उसकी गतिविधियें सारे क्षेत्र मे फैलाई। श्री रामकरण जोशी के वे चाचा थे और इन्ही के प्रभाव से श्री रामकरण जोशी प्रजाभण्डल की राजनीति मे सक्रिय हुए थे। जयपुर प्रजामण्डल के आन्दोलन मे श्री रामप्रताप जोशी चौथे डिक्टेक्टर के रूप मे गिरफ्तार हुए और उन्हे 6 महीने की सजा दी गई। वे जयपुर राज्य प्रजामण्डल की कार्यकारिणी के वर्षो तक सदस्य रहे और अपने अन्तिम समय तक अपनी जिम्मेदारियो का पूरी तरह निर्वाह करते रहे। सन् 1949 मे उनका निधन हो गया।

श्री रामदास शर्मा 'उन्मत'

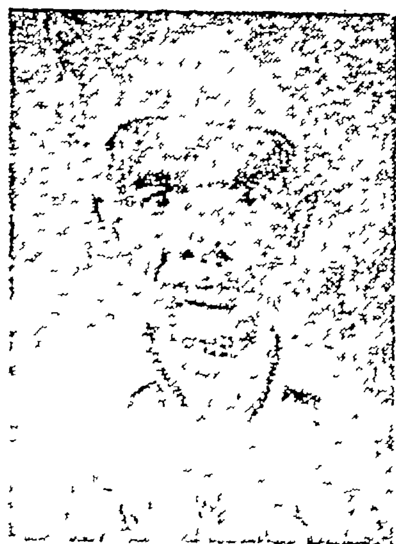


श्री रामदास शर्मा उन्मत जयपुर के निवासी हैं। जयपुर मे इनके वुजुर्गो की वहुत प्रतिष्ठा है और रहने की हवेली भी वहुत बडी है। 15 वर्ष की उम्र मे ही इनका सम्पर्क अजमेर के क्रान्तिकारियो से हो गया था। अक्सर क्रातिकारी लोग जयपुर में इनके मकान मे भूमिगत होकर कार्य करते थे। क्रान्तिकारियो ने अपने शस्त्रो का गोदाम श्री रामदाम के मकान मे वना रखा था। श्री रामदास शर्मा कवि, लेखक और कहानीकार भी रहे हैं। वे वाद मे राजकीय सेवा मे लग गए। उनका पता है—चौक खवास राम किशोर, चले। रास्ता कल्याणजी, जयपुर।

श्री रूढ़मल सोगण अमर सर



श्री रूढमल सोगण का जन्म श्री नारायण वलाई के यहा 10 नवम्बर, 1917 को हुआ। हिन्दी विशारद करने के वाद श्री सोगण खादी सस्थाओ मे काम करने लग गए। इन्होने 1939 मे प्रजामण्डल के आन्दोलन मे भाग लिया। इन्हे 25 फरवरी, 39 को 6 महीने की सजा हुई। इन्होंने खादी ग्रामोद्योग, शरावबन्दी, हरिजन सेवा, ग्राम-दान आदि रचनात्मक प्रवृतियो मे कार्य किया है। आजकल श्री सोगण अमरसर मे खादी कार्य कर रहे हैं। उनका पता है—खादी ग्रामोद्योग मडल, वापू वस्ती, पो० अमरसर (जिला जयपुर) राजस्थान।

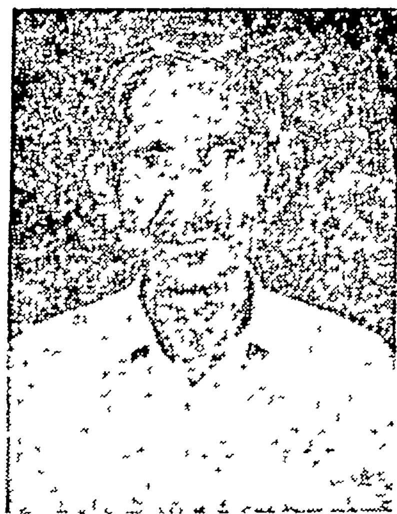


श्री लड्डूलाल अग्रवाल

जयपुर।

श्री लाड्डूलाल मूल रुप मे आमेर के रहने वाले हैं। इनके पिताजी का नाम सूरजमलजी है। इनकी उम्र 58 वर्ष की है। इनमे देशभक्ति की भावना वचपन से ही विकसित होने लग गई थी। जयपुर मे प्रजा मडल की स्थापना होते ही ये उसके सदस्य-वन गए और 1939 मे प्रजा मडल के सत्याग्रह मे भाग लिया। उन्हे 4 महीने के कारावास की सजा दी गई। श्री लाड्डूराम प्रजा मडल का सगठनात्मक और प्रचारात्मक कार्य लम्वे समय तक करते रहे हैं। इनका पता है—प्लाट नं० 22, म्युनिसीपल कॉलोनी, राजामल का तालाव, कवरनगर, जयपुर ।

श्री लाडलीदास गोयल, सवाई माधोपुर



श्री लाडलीदास गोयल का जन्म सवत् 1970 की भादवा कृष्ण 6 को श्री हरिवल्लभ जी अग्रवाल के यहा हुआ। इनकी शिक्षा सवाई माधोपुर मे ही हुई। इनका पारिवारिक धन्धा व्यापार दुकानदारी का है। प्रजा मण्डल की स्थापना के समय से ही श्री लाडलीदास प्रजामण्डल के सदस्य बन गए थे। 1939 मे जब प्रजामण्डल ने सत्याग्रह शुरु किया तो ये सवाई माधोपुर से सत्याग्रह करने जयपुर गए थे। जयपुर मे इन्होंने सत्याग्रह किया और इन्हे गिरफ्तार कर लिया गया। इन्हें 4¾ पोने पाच महीने के कारावास की सजा हुई।

जेल से मुक्त होने के बाद ये प्रजा मण्डल के कार्य मे लग गए। इनकी पारिवारिक दुकानदारी चलती थी। इसलिए ये स्वतन्त्र रुप से प्रजा मण्डल के कार्य मे लगे रहे। श्री लाडलीदास कट्टर काग्रेसी हैं और आज भी अपने व्यापार के साथ साथ सार्वजनिक कामो मे पूरा रस लेते हैं। इनका पता है—छनकी बाजार, सवाई माधोपुर।

श्री रतनचंद काण्टिया, जयपुर

श्री रतनचद काण्टिया का जन्म 12 दिसम्बर 1922 को जयपुर के एक जैन परिवार मे हुआ। जयपुर मे प्रजामडल के पुनर्गठन के बाद वे प्रजामडल मे शामिल हो गए। 1939 के प्रजामडल के आन्दोलन मे श्री हस० डी० राय के नेतृत्व में उन्होने स्वयसेवक के रूप में काम किया।

1942 मे भारत छोडो आन्दोलन मे आजाद मोर्चे की सभाओ मे भाषण देने के अपराध मे उनको पुलिस ने गिरफ्तार करके हिरासत मे 1-2 दिन रखा और फिर छोड दिया। वे आजाद मोर्चे के प्रचार और प्रकाशन के कार्य मे लगातार योग देते रहे। इन्होने जयपुर मे तोडफोड के कामो मे भी भाग लिया था और विस्फोटक बम बनाने के लिये महाराजा कालेज के विज्ञान प्रयोगशाला से कई रसायनो को पार किया था जो बाजार मे प्राप्त नही हो सकते थे।

काण्टिया को आजकल व्यापार और खेती मे विशेष रुचि है। उनका पता है—जमना डेरी, अजमेर रोड, चौथे माइल का पत्थर, जयपुर।

श्री लक्ष्मी नारायण वाजपेयी



श्री लक्ष्मी नारायण वाजपेयी का जन्म सन् 1908 मे हुआ । ये आदि गौड ब्राह्मण हैं और जयपुर मे परम्परा मे इनका परिवार मूर्ति बनाने का कार्य करता है । श्री वाजपेयी कट्टर कांग्रेसी है । इन्होंने जयपुर मे 1939 मे प्रजामण्डल आन्दोलन मे खूब काम किया था परन्तु ये गिरफ्तार नही हो सके । 1942 मे भारत छोडो आन्दोलन मे इन्होने मथुरा मे भाग लिया था । श्री लक्ष्मी नारायण खादी पहनते हैं और सार्वजनिक सेवा और काग्रेस के कार्य के लिए सदा तत्पर रहते हैं । इनका पता है—जयपुर मार्बल मूर्ति आर्ट, भिण्डो का रास्ता, जयपुर ।

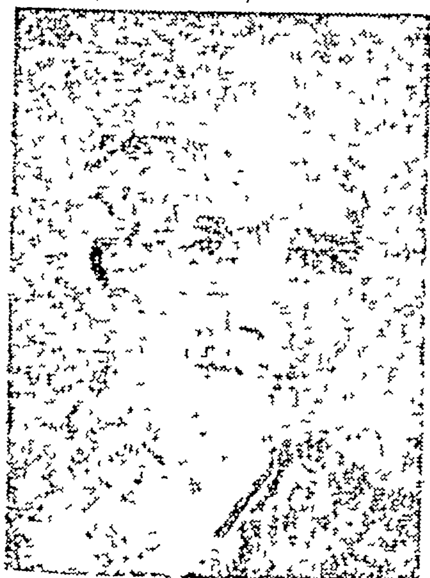
श्री लक्ष्मी नारायण झरवाल, जयपुर



श्री लक्ष्मी नारायण झरवाल जाति से मीणा है । इनका जन्म 1 नवम्बर 1914 को जयपुर मे हुआ था । ये आयुर्वेद शास्त्री है । यो तो ये कट्टर काग्रेसी हैं और प्रजामण्डल के समय से राजनीति मे सक्रिय है परन्तु मूल रूप मे आदिवासी, पिछडे वर्ग और जनजातियो के हितो की रक्षा के लिए इन्होंने कार्य किया है । श्री लक्ष्मी नारायण झरवाल ने जयपुर राज्य के जुरायम पेशा कानून का कडा विरोध किया था । इन्होंने इस कानून के विरोध मे राज्य भर मे हजारो मीणाओ का सगठन किया और जगह जगह प्रदर्शन किए ।

जयपुर प्रजा मण्डल के आन्दोलन के समय 19 मार्च 39 को श्री लक्ष्मी नारायण झरवाल गिरफ्तार किए गए थे । जुरायम पेशा कानून का विरोध करने के लिए गुढा मुख मे श्री बद्रीनारायण बोराजी की अध्यक्षता मे एक सम्मेलन किया गया जहा भारत सुरक्षा कानून की धारा 129 के अन्तर्गत श्री झारवाल 29 मई 45 को गिरफ्तार किए गए । उन्हें तीन महीने की सजा हुई । श्री लक्ष्मी नारायण झरवाल ने मीणा जाति मे समाज सुधार का भी बहुत कार्य किया है । इनका पता है—मिनर्वा टाकीज के पीछे जयपुर ।

श्री वसन्ती लाल बगीची वाला जयपुर



श्री वसन्तीलाल बगीचीवाला का जन्म 10 जनवरी 1920 को जयपुर के जैन परिवार मे हुआ। उन्होने 39 से 42 तक राजस्थान चर्खा सघ मे और 52 के बाद खादी सघ मे कार्य किया। श्री बगीचीवाला का आन्दोलनो मे मुख्य कार्य प्रचार और प्रकाशन का रहा है। उन्होने 1939 के प्रजामण्डल के आन्दोलन मे और भारत छोडो आन्दोलन मे भाग लिया था। उन्होने वाणी मन्दिर के माध्यम से गाधी-विनोबा-सर्वोदय साहित्य का खूब प्रचार किया है। उनका पता है–टिक्कावालो का रास्ता बज बगीची भवन, किशनपोल बाजार, जयपुर।

श्री वसन्तलाल मुकीम

श्री वसन्तलाल मुकीम का जन्म सवत् 1974 की भादवा सुदी 3 को जयपुर मे हुआ। उन्होंने इटर तक शिक्षा प्राप्त की। उन्होने जयपुर प्रजामण्डल के 1939 के आन्दोलन मे तथा भारत छोडो आन्दोलन मे अपना योग दिया था। श्री मुकीम वाणी मन्दिर के प्रारम्भिक सस्थापको मे से हैं। उन्होने वाणी मन्दिर के माध्यम से साहित्य और शिक्षा का प्रचार कार्य किया है। इस समय जवाहरात की दलाली उनकी जीविका का साधन है। उनका पता है–मुकीम भवन, दरीबा पान, जयपुर।

श्री ज्ञान प्रकाश काला

श्री ज्ञानप्रकाश काला जयपुर राज्य प्रजामण्डल के एक निष्ठावान कार्यकर्ता रहे हैं। इस समय इनकी उम्र 51 वर्ष की है। 16 वर्ष की उम्र मे ही ये प्रजामण्डल के उत्साही स्वयसेवक बन गए थे। बुलेटिन बाँटना, जुलूसो की सूचना देना और सभाओ तथा जुलूसो का इतजाम करना इनका मुख्य कार्य था। इनके पीछे भी तीन-तीन चार-चार सी० आई० डी० लगे रहते थे। प्रजामण्डल आन्दोलन के समय पुलिस की लाठियो से इनका सर फट गया था और ये घायल और बेहोश हो गए थे। प्रजामण्डल के बाद श्री काला काग्रेस के सक्रिय सदस्य हो गए। इनका पता–है कुशल प्रिंटस, गोधो का रास्ता, जयपुर।

श्री वीरेन्द्र सिंह चौहान

श्री वीरेन्द्र सिंह चौहान का जन्म उत्तर प्रदेश के जिला मैंनपुरी के ग्राम केथोली मे सन् 1915 मे हुआ। उनकी शिक्षा अपने गाव मे ही हुई। उनका विचार शुरु से ही राष्ट्र सेवा मे लगे रहने का वन गया था। राजस्थान पहुचने के तुरन्त बाद श्री वीरेन्द्र सिंह जीवन कुटीर वनस्थली मे चलने वाले क्रान्तिकारी रचनात्मक कार्य मे आजीवन सेवा करने का सकल्प करके लग गये।

सन् 1937 मे जब जयपुर राज्य प्रजामण्डल का पुनर्गठन हुआ तो श्री वीरेन्द्र सिंह भी जीवनकुटीर के अन्य साथियो के साथ प्रजामण्डल के सगठन मे लग गये। इनका कार्यक्षेत्र मुख्यत दौसा निजामत रहा। इन्होंने निजामत के गाँव गाँव मे पहुच कर प्रजामण्डल का सदेश ग्रामवासियो को दिया। सन् 1939 के जयपुर सत्याग्रह के समय वे अपने कई साथियो के साथ दौसा मे ही गिरफ्तार किये गये और उनको 4 मास की सजा हुई। उसके पश्चात् जेल से छूटने पर श्री विरेन्द्र सिंह कई सालो तक अपना पूरा समय देते हुए प्रजामण्डल एव काग्रेस का काम करते रहे।

अन्त मे सवाई माधोपुर को श्री वीरेन्द्र सिंह ने अपना कार्यक्षेत्र बना लिया। वहा पर उन्होने एक वाल मन्दिर की स्थापना भी की और पूरी लगन के साथ उसका सचालन करते रहे।

स्वतत्रता के पश्चात् 1952 के चुनाव मे काग्रेस टिकट पर श्री वीरेन्द्र सिंह राजस्थान विधान सभा के सदस्य चुने गये।

अपनी सुख सुविधा की परवाह किये बिना कठोर परिश्रम करने के कारण श्री वीरेन्द्र सिंह का स्वास्थ्य खराव हो गया और 2 अक्टूबर 1969 को सवाई माधोपुर मे उनका देहान्त हो गया।

श्री शिव बिहारी तिवारी

श्री शिव विहारी तिवारी जयपुर के अति लोकप्रिय व्यक्तियो मे से एक है। उनकी उम्र 74 वर्ष का है। वे पुलिस मे कई वर्ष तक उच्च अधिकारी रहे परन्तु 1927 के गोलीकाड के सदर्भ मे उन्हें नौकरी से अलग कर दिया गया। श्री तिवारी जी 1916 से काग्रेस के सदस्य हैं। 1937 मे वे प्रजा मण्डल सेवा दल के दलपति रहे। सन् 37 के 49 तक निरन्तर प्रजामण्डल की कार्यकरणी के सदस्य रहे। इनके राजनीति मे भाग लेने के कारण इनके भाई को राजकीय सेवा से मौत्तिल कर दिया गया। श्री तिवारी भाषण मे कम और कर्म मे अधिक विश्वास करते हैं। स्वाधीनता के वाद जयपुर के सार्वजनिक कार्यो मे श्री तिवारीजी उत्साह से भाग लेते रहे हैं। वाद मे उन्होने कुछ उद्योग शुरु किए थे वे सन् 42 मे वद कर दिए। उनका पता है—नाहरगढ की सडक, पुरानी वस्ती, जयपुर।

श्री शिव बिहारी माथुर

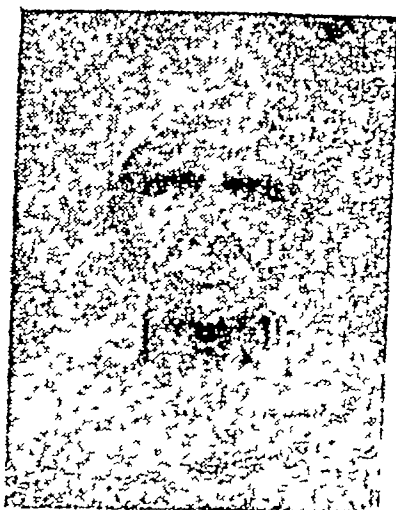


श्री शिव बिहारी माथुर का जन्म 14 मार्च 1918 को एक सामान्य कायस्थ परिवार मे हुआ। उन्होंने हाई स्कूल तक शिक्षा प्राप्त की। उनका राजनैतिक जीवन 1935 से 45 तक रहा है। वे सन् 37 मे प्रजामण्डल के सदस्य बने। 1939 मे उन्होंने आन्दोलन मे भाग लिया और 11 फरवरी 39 को जौहरी बाजार मे सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार हुए। उन्हें 6 महीने मोहनपुरा के कारागृह मे रहना पडा। सन् 46 से वे राजकीय सेवा मे लग गए और मार्च 73 मे रिटायर हो गए हैं। उनका पता–है वादरी का नासिक, मकान न० 352,जयपुर।

श्री सीताराम दीवान

श्री सीताराम दीवान 82 वर्ष के खण्डेलवाल वैश्य है। इनके विचारो मे राष्ट्रीयता की भावना शुरू से ही रही है। 1939 मे इन्होंने प्रजामण्डल आन्दोलन मे देश पाण्डेजी और ओमदत्तजी शास्त्री के साथ काम किया था। 1942 मे बुलेटिन आदि के प्रचार मे इनकी सेवाए ली जाती थी। श्री सीताराम दीयान हर राष्ट्रीय कार्य मे उत्साह से भाग लेते रहे हैं।

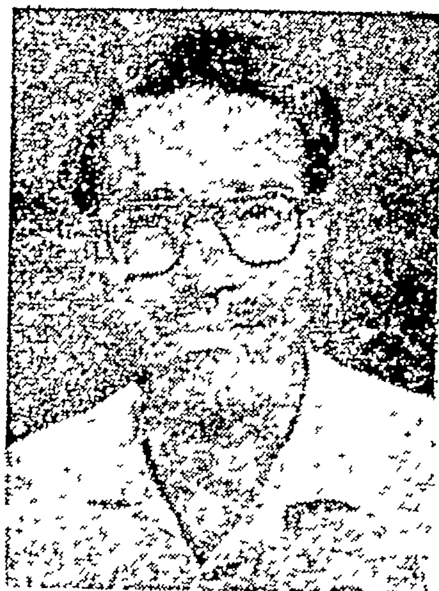
श्री सेडूराम अग्रवाल



श्री सेडूराम अग्रवाल का जन्म सन् 1905 मे श्री रामचन्द्र अग्रवाल के यहां हुआ। वे जयपुर मे प्रजामण्डल की स्थापना के साथ ही प्रजामण्डल के सदस्य वन गए। 1939 मे प्रजामण्डल के आन्दोलन मे उन्हे 4 चार महीने के कारावास की सजा हुई। जेल से छूटने के वाद वे वर्षो तक प्रजामण्डल का काम करते रहे। श्री सेडूराम मिठाई की दुकान पर श्रमिक का कार्य करते हैं।

उनका पता है–नोदड रावजी का रास्ता, नरसिंहजी के मदिर के पास चादपोल बाजार, जयपुर।

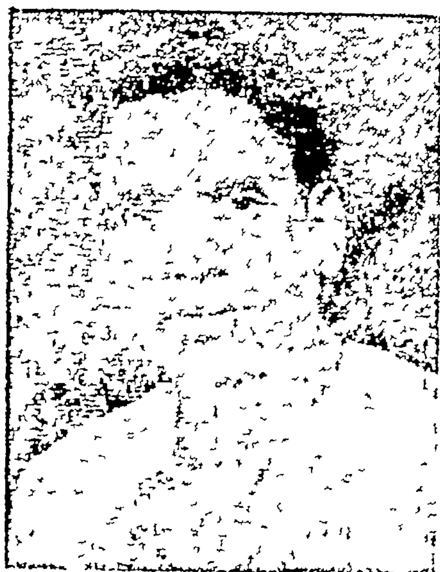
श्री सत्येन्द्र शर्मा, जयपुर



श्री सत्येन्द्र शर्मा का जन्म प० गौरी दयाल शर्मा के यहा 2 अप्रेल 1922 को हुआ। उन्होंने उत्तर प्रदेश से हिन्दी की विशेष योग्यता की परीक्षा उत्तीर्ण की। प्रजामण्डल के 1939 के आन्दोलन के समय देश-सेवा के उत्साह मे श्री सत्येन्द्र ने पढाई छोडकर 17 वर्ष की उम्र मे ही सत्याग्रह मे भाग लिया। इन्हें 25-2-39 से 6 माह के कारावास की सजा हुई। श्री सत्येन्द्र शर्मा के पिता श्री गौरी दयालजी राजकीय शिक्षा विभाग मे हैड क्लर्क थे और पुत्र की राजद्रोही प्रवृत्तियो के लिए पिता को राज्याधिकारियो द्वारा बहुत परेशान किया गया।

श्री सत्येन्द्र शर्मा ने कुछ दिन तक प्रेस का कार्य किया। आजकल खादी ग्रामोद्योग बोर्ड मे सहायक के पद पर कार्य कर रहे हैं। श्री सत्येन्द्र के पिता और परिवार 1922 मे स्वदेशी का व्रत लिए हुए हैं। उनका पता है—श्याम भण्डार, लक्ष्मी नगर, अजमेर रोड, जयपुर।

श्री सत्य नारायण व्यास आर्टिस्ट, जयपुर



श्री सत्यनारायण व्यास जयपुर के प्रसिद्ध मूर्तिकार हैं। इनकी आयु 54 वर्ष की है। शिक्षण बडौदा मे और जयपुर मे हुआ। नमक सत्याग्रह के समय बडौदा मे श्री सत्यनारायण व्यास वानर सेना बनाकर जुलूस और प्रभात फेरिया निकालते थे। उस समय पुलिस की पिटाई बहुत हुई। विदेशी वस्त्रो के बहिष्कार मे भी वानर सेना के रूप मे कार्य किया। 1942 के भारत छोडो आन्दोलन मे पुलिस ने पिटाई की, पकडा और अनेक बार दूर ले जाकर छोड दिया। श्री सत्यनारायण कट्टर काग्रेसी हैं और आज भी राष्ट्रीय प्रवृत्तियो में उत्साह से भाग लेते हैं।

स्वर्गीय सय्यद जहीर हसन सौदागर



शैयद जहीर हसन सौदागर जयपुर के एक प्रमुख राष्ट्रीय मुस्लिम थे। 90 वर्ष की आयु मे 23 मई 66 को उनका निधन हो गया। वे वर्षो तक जयपुर नगर परिषद के सदस्य रहे। 1947 मे जयपुर प्रतिनिधि सभा में वे सवाई माधोपुर से निर्वाचित हुए। उन्होने नमक सत्याग्रह, विदेशी माल का वहिष्कार और भारत छोडो आन्दोलनो में भाग किया था। ब्रिटिश विरोधी उग्र भाषण देने के अपराध में कुछ समय तक जेल में भी रहे थे। वे जीवन भर कट्टर काग्रेसी रहे और काग्रेस सगठन में अपना योग देते रहे। वे एक कुशल और प्रभावशाली वक्ता थे।

श्रीमती सरस्वती देवी पांडे

श्रीमती सरस्वती देवी पांडे का जन्म विलास मध्यपुर में हुआ और विवाह हुशगाबाद के केरल स्टेट के सम्पन्न एव प्रतिष्ठित परिवार में। उन्हे अपने भाई वैद्य श्री राम सुन्दर लाल और माता चम्पादेवी वाजपेयी से राष्ट्रीय-भक्ति के सस्कार मिले। उन्होने जयपुर आकर प्रजामण्डल की सदस्यता ग्रहण की और 1939 मे प्रजामण्डल के आन्दोलन मे 12 मार्च 1939 को गिरफ्तार हो गई। उन्हे 3 माह की साधारण कैद की सजा दी गई। स्वाधीनता के बाद वे वर्षो तक वनस्थली विद्यापीठ मे काम करती रही और वहा काम करते हुए राजनैतिक, सामाजिक और रचनात्मक कामो में बराबर भाग लेती रही। आजकल श्रीमती सरस्वती देवी पचवटी महिला महिला आश्रम ऋषिकेश मे महिलाओ की सुरक्षा सेवा और शिक्षा का कार्य अवैतनिक रुपमे कर रही हैं।

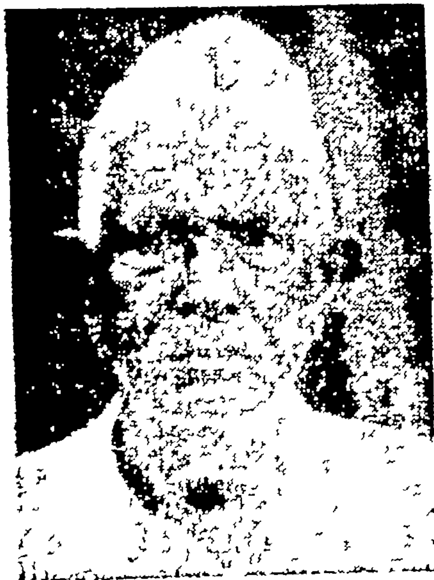
श्री सुआ लाल शर्मा

जयपुर



श्री सुआलाल शर्मा का जन्म 20 अक्टूबर 1920 को आमेर तहसील के गाव मदा में हुआ था। उनकी शिक्षा जयपुर मे ही हुई। 1936 मे श्री सुआलाल को उनकी राजनैतिक प्रवृतियो के कारण स्कूल मे निकाल दिया गया था। प्रजामण्डल के आन्दोलन मे 16 फरवरी 39 को उन्हे 6 महीने की सजा हो गई थी। फरवारी 49 मे श्री सुआलाल ने राजकीय सेवा स्वीकार करली। उनका पता है—गोपाल धाभाई के अखाडे के सामने नदी, पुरानी बस्ती जयपुर।

श्री सुआलाल स्वामी नींदड़



श्री सुआलाल स्वामी की उम्र 68 वर्ष की है। नमक सत्याग्रह मे सुआलाल स्वामी ने अजमेर जाकर भाग लिया था। उन्हे दो बार 3–3 महीने की सजा हुई। इस तरह से 1932 के वर्ष मे वे कुल 6 महीने जेल मे रहे। अजमेर मे उनका सपर्क क्रातिकारी पार्टी मे हो गया था। उनके साथ भी इन्होंने काम किया। जयपुर मे इनका सघर्ष जागीरदारो के साथ रहा है। श्री सुआलाल स्वामी ने किसानो मे, हरिजनो मे और पिछडी जातियो मे खूब काम किया है। इनका पता—मु० पो० नींदड़, वाया झोटवाडा, जिला जयपुर।

श्री सेवाराम वर्मा, जयपुर



श्री सेवाराम वर्मा जयपुर जिले मे जोवनेर के रहने वाले कूमावत है। उनकी उम्र 57 वर्ष की है। उन्होने 1939 मे जयपुर प्रजामण्डल आन्दोलन मे कार्य किया था। 1942 मे उन्होने जयपुर मे क्रान्तिकारी कार्यो मे भी योग दिया था। वे किसी आन्दोलन मे गिरफ्तार नही हुए। न उन्हे जेल की सजा हुई। काग्रेस वनने के बाद वे काग्रेस सगठन के लिए कार्य करते रहे है।

स्वामी हरीराम जैसा राम, जयपुर



श्री हरीराम जैसाराम मूल रूप मे शिकारपुर (सिंध) के रहने वाले हैं। देश के बटवारे के बाद जयपुर आ गए थे। 1921 से ये राष्ट्रीय आन्दोलन मे सलग्न है। नमक सत्याग्रह मे इन्हें 6 महीने की सजा हुई। 1932 मे श्री हरीराम एक जुलूस का नेतृत्व करते हुए गिरफ्तार कर लिए गए। तब उन्हे 2½ वर्ष का कारावास की सजा हुई जिसमे से 8 महिने काल कोठरी मे निकालने पडे। भारत छोडो आन्दोलन मे स्वामी हरीराम को भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत 1 वर्ष नजरवन्द रखा गया।

स्वामी हरीराम जैसाराम ने हरिजन सेवक संघ की स्कूलो द्वारा हरिजनो मे शिक्षा का प्रचार किया। जयपुर मे भी हरिजन वस्ती अमृतपुरी मे ही ये शिक्षा एव समाज सुधार के काम मे लगे है। इनका पता है—द्वारा जे० आर० शर्मा, मकान न० 5850, फूटा खुर्रा, रामगज बाजार, जयपुर।

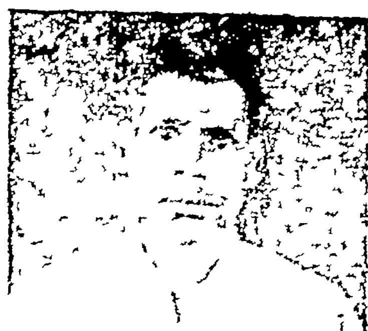
स्वर्गीय श्रीमती सुमित्रा खेतान

जयपुर।



श्रीमती सुमित्रादेवी खेतान राजस्थान चर्खा सघ के मत्री श्री मदनलाल खेतान की पत्नि थी। श्रीमती सुमित्रादेवी खेतान ने 1939 के प्रजामण्डल के आन्दोलन मे भाग लिया था। सत्याग्रह के समय उनके साथ 1½-2 वर्ष का उनका बच्चा था। वह बच्चे के साथ ही गिरफ्तार हुई थी और बच्चे के साथ ही जेल मे रही। गिरफ्तारी के दिन श्रीमती सुमित्रा खेतान ने केसरिया रग की साडी और हरे रग का ब्लाउज पहन रखा था। कंधे पर हरा थैला ले रखा था और हाथो मे तिरंगा झडा लहरा रहा था। श्री सुमित्रा खेतनी के अतिरिक्त सर्वश्री शारदा देवी, सुशीलादेवी गोयल, रमादेवी देशपाडे, विद्यादेवी, पद्मादेवी और स्वर्गीय इन्द्राजी ओमदत्त शास्त्री मुख्य थी।

श्री हरिनारायण माथुर जयपुर



श्री हरिनारायण माथुर मूल रुप से जयपुर जिले के गोविन्दगढ के रहने वाले है। उनका जन्म 1920 के करीब गोविन्दगढ के एक कायस्थ परिवार मे हुआ। उनकी शिक्षा गोविन्दगढ और जयपुर मे हुई। विद्यार्थीकाल से ही उनका झुकाव राष्ट्रीयता की ओर हो गया था। गोविन्दगढ खादी उत्पादन का एक प्रमुख केन्द्र रहा है और सभी बडे बडे नेताओ का गोविन्दगढ जाना होता रहा है। उनके सम्पर्क मे आने से श्री हरिनारायण माथुर राजनैतिक प्रवृतियो मे भाग लेने लगे। वे प्रजामण्डल के सदस्य बन गए। 1939 मे प्रजामण्डल ने नागरिक अधिकारो के लिए जो आन्दोलन शुरु किया उसमे श्री हरिनारायण माथुर ने सत्याग्रही के रुप मे भाग लिया। उन्हे 6 महीने की सजा दी गई। जेल मे मुक्त होने के बाद श्री माथुर प्रजामण्डल के सगठनात्मक काम मे लग गए। उन्होंने खादी उत्पादन का भी प्रशिक्षण लिया और खादी के काम में उनका अधिक समय लगने लगा। राजनीति से बढकर उन्होंने अपना ध्यान रचनात्मक कामो की ओर लगाया। श्री हरिनारायण माथुर जयपुर के एक परखे हुए खादी ग्रामोद्योग और रचनात्मक प्रवृतियो के कार्यकर्ता हैं।

जागीरी अत्याचारों की मुंह बोलती कहानी

१

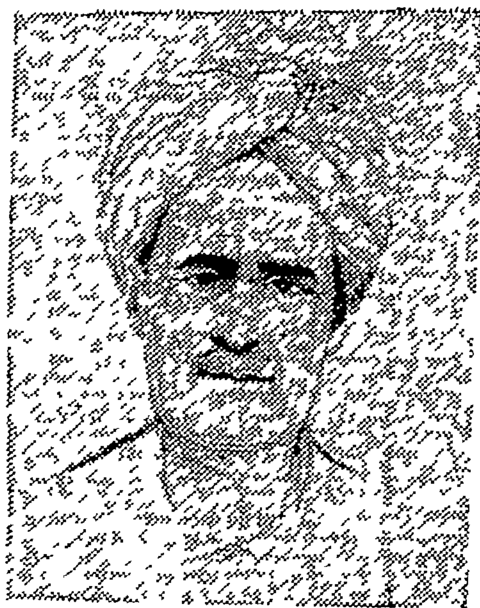


२



बिसाऊ और मण्डावा के जागीरदारो ने घरढाणा के किसान नेता श्री इन्द्रराजजी (1) और उनके भतीजे श्री रक्षपालसिंह के मकानो (2) की लूटपाट करके उन्हे जमीदोज कर दिया था और दोनो परिवारो को निराश्रित अवस्था मे गाव छोड देना पडा था।

श्री इन्द्रराज सिंह घरढ़ाणा



श्री इन्द्रराज मिह झुन्झुनू की खेतडी तहसील के घरढाणा ग्राम के निवासी थे । आपके पिता का नाम चौधरी किसनाराम था । आपकी शिक्षा सामान्य ही हुई थी । पिछने दिनो 73 वर्ष की आयु मे आपका देहावमान हो गया ।

जागीरी अत्याचारों के विरोध मे श्री इद्रराज मिह वहुत वहादुरी मे खडे हुए थे । उन्होंने किमानो की मोई शक्ति को जागृत और मगठित किया और अपना सव कुछ भी होमकर जागीरदारो की निरकुशता को ममाप्त करने के लिए उन्होने किसानो को तैयार किया । उनका ग्राम घरढाणा विमाऊ और मडावा दोनो जागीरदारो के हिस्से का गाव था । दोनो ने मिलकर श्री इन्द्रराजजी के मकानो को लूटा, मकानो को धराशायी करावा दिया और वहां पर ठिकाने के कर्मचारियो के रहने के मकान वनवा दिए । उनकी 250 वीघा जमीन मे मी उन्हे और उनके भाई वखतावरसिह को वेदखल करवा दिया । वर्षो तक मुकदमे लडते लडते 1958 मे वह भूमि वापिम उनके परिवार को मिली है ।

1935 के झुन्झुनू किमान आन्दोलन के श्री इदराजजी अग्रगण्य नेता थे । जागीरदारो ने उन पर वीसीयो झूठे मूकदमें वना लिए थे । वे सन् 1939–40 मे भारत सुरक्षा कानून के अतर्गत गिरफ्तार कर लिए गए थे और दो वर्ष तक जयपुर की सेंट्रल जेल मे रहे । पिछले वर्षो मे उनका 73 वर्ष की उम्र में देहवसान हो गया ।

श्री मातादीन भगेरिया



जन्म—9 अप्रेल, 1912

पता—सम्पादक सोशिलिस्ट भारत,
अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी,
नई दिल्ली।

9 अप्रेल, 1912 को तब की जयपुर रियासत के कस्बा चिडावा मे एक पुरानी परम्परा के सपन्न व्यापारी परिवार मे श्री मातादीन भगेरिया का जन्म हुआ। पाच वर्ष की अवस्था मे उनको सस्कृत, हिन्दी का अध्ययन शुरु कराया गया। सातवें वर्ष से स्थानीय अग्रेजी स्कूल मे पढना शुरू करके दसवें वर्ष असहयोग आन्दोलन के सदर्भ मे बालोचित उत्साहवश स्कूल छोडदी और बाल-सेवा-समिति स्थापित की जिसमे बहैसियन मन्त्री महात्मा गाधी की जय का जुलूस निकालने पर पाच बैंत की सजा भुगती। तब से ही खादी पहिनना शुरू हुआ जो अब तक कायम है।

स्कूल मे दुबारा पढना चालू करके 12 वर्ष की उम्र मे जयपुर की मिडिल परीक्षा मे प्रथम श्रेणी प्राप्त की। हाई स्कूल मे चिडावा हाई स्कूल का प्रथम हाई स्कूल उत्तीर्ण छात्र होने के नाते स्वर्णपदक प्राप्त किया तथा स्कूल मे वाद–विवाद प्रतियोगिता, नाटक आदि प्रवृतियो मे पदक प्राप्त किये तथा स्कूल के "विनोद" मासिक का सपादन किया। राजपूताना युवक मडल के महामन्त्री रहे।

दिल्ली मे परिवार का व्यवस्थित कपडा व्यापार होने के कारण वहा हिन्दू कॉलिज में लिटरेरी युनियन तथा अन्य साहित्यिक प्रवृतियो के सेक्रेटरी रहकर छात्र आन्दोलन की प्रवृतियो मे सक्रिय भाग लेते रहे। जनवरी 1930 मे विशाल छात्र जुलूस का तिरगा झडा हाथ मे लिए नेतृत्व करते हुए पुलिस के लाठी चार्ज से हाथ मे फ्रेक्चर हो जाने और जमीन पर गिर जाने के बावजूद झडा नही छोडा। वही दिल्ली कांग्रेस के बुलेटिन का कश्मीरी गेट में श्री नौरगलाल के मकान में बने तहखाने से नौ महिने तक लेखन और सम्पादन करते रहे।

नमक सत्याग्रह में एक महीने की जेल भुगती। पुलिस ने दिल्ली से 80 मील दूर ले जाकर छोड दिया। दो वर्ष तक राजस्थान से आतक वादियो को पिस्तोल और रिवाल्वर लाकर दिये। उसी सिलसिले मे सन् 1932 मे पुलिस हिरासत मे आए दिन रखे जाने और यातना देने के बाद प्रमाण के अभाव मे छोड दिये गये। एक वर्ष तक अपने घर मे नजरबन्दी की स्थिति में पुलिस मे हाजिरी देने की पाबन्दी के साथ रहना पडा।

1938 में श्री भगेरिया ने शेखावाटी में जकात आन्दोलन का सफल नेतृत्व किया ।

श्री भगेरिया पर 1940 में राजद्रोह का मुकदमा चला जिसमे वैरिस्टर आसफ अली ने वहस की, पर जयपुर चीफ कोर्ट ने एक वर्ष तीन महीने की सजा वहाल रखी और श्री भगेरिया को जयपुर सेंट्रल जेल मे रखा गया ।

1942 में श्री भगेरिया ने खेतडी के वागौरगढ पर बाधाओ के वावजूद तिरगा झडा फहराया ।

श्री भगेरिया ने जयपुर राज्य प्रजामण्डल के तहत राष्ट्रीय आन्दोलन में कई सालो तक भाग लिया और वे लगातार प्रजामण्डल की केन्द्रीय कार्य समिति के सदस्य तथा दो वर्ष तक सयुक्त मत्री रहे । साथ ही देशी राज्य लोक परिपद की समिति के भी वे सदस्य रहे ।

उन्होंने समय समय पर किसान सगठन, विद्यार्थी आन्दोलन, व्यापारी सगठन और मजदूर आन्दोलन में भी काम किया ।

श्री भगेरिया 1946 मे प्रजामण्डल के टिकट पर जयपुर लेजिस्लेटिव काउन्सिल के सदस्य अच्छे वहुमत से चुने गये ।

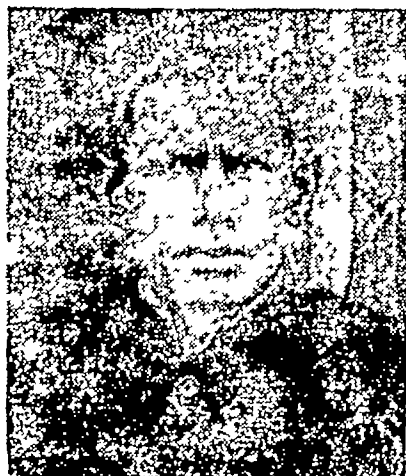
जोशीले राष्ट्रीय कार्यकर्ता होने के अलावा श्री भगेरिया अच्छे लेखक व पत्रकार भी हैं । उनके कई एक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं और उनकी दो एक पुस्तको के विदेशी भाषाओ में अनुवाद भी हुए हैं ।

इस वक्त श्री भगेरिया काग्रेस के सदस्य हैं और भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के मुखपत्र हिन्दी साप्ताहिक 'सोशलिस्ट भारत' के आवैतनिक सपादक हैं ।

स्वर्गीय श्री बूंटी राम किशोरपुरा

जन्म– सन् 1912

निधन– 30 जनवरी 72



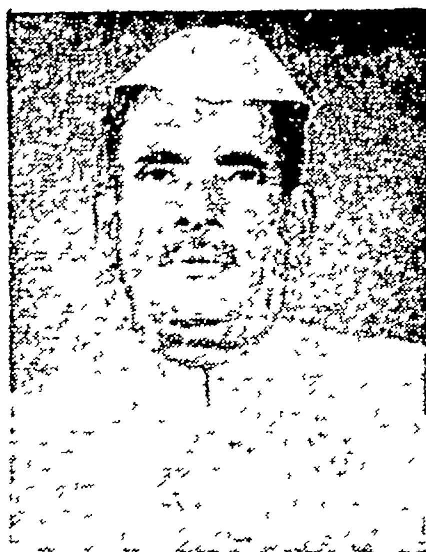
श्री बूंटीराम का जन्म झुंझुनू जिले के किशोरपुरा ग्राम मे सम्वत् 1969 को चौ० कुशला रामजी के घर मे एक साधारण किसान परिवार मे हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा सुलताना मे हुयी। राजनैतिक जीवन आर्य समाज की प्रेरणा मे शुरू हुआ। सामन्ती जुल्मो के खिलाफ किसानो के तत्कालीन सगठन किसान जाट पचायत मे सक्रिय भाग लिया। शेखावाटी के किसान आन्दोलन एव प्रजा मण्डल के आन्दोलन मे प्रमुख भाग लिया और जागीरदारो के जुल्मो के शिकार बने।

भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत लगानबन्दी आरोप में 3-4 महीने झुझुनू जेलमे रहे और वर्षों तक मुकदमा चला। किसान एव प्रजा मडल आन्दोलन के सिलसिले मे आपको निर्वासित भी रहना पडा। आप लगातार 20 वर्षो तक जिला काग्रेस कमेटी झुझुनू की कार्यकारिणी, राजस्थान प्रान्तीय काग्रेस कमेटी एव जिला बोर्ड झुझुनू के सदस्य और पचायत समिति चिड़ावा के प्रधान रहे। विद्यार्थी भवन झुझुनू के आप सस्थापक सदस्य रहे।

चनाणा (झुझुनू) राजनैतिक सम्मेलन मे जागीरदारो द्वारा किये गये गोलीकाड में आप पर उल्टे 302 का मुकदमा चलाया गया। स्वाधीनता के वाद आपने कृषि, समाज सेवा और रचनात्मक कार्यों पर विशेष बल दिया। जल बोर्ड के सहयोग से आपने गावो मे कुवो और तालाबो का निर्माण करवाया। काग्रेस में फैले भ्रष्टाचार से दुखी होकर आप काग्रेस छोड कर भारतीय क्रातिदल में शामिल होगये।

आप राजनीति में इमानदारी के समर्थक थे। आप जिले भर में इमानदारी, सादगी सज्जनता के लिए विख्यात थे। स्वय के लिए सरकारी सहायता की आपने कभी अपेक्षा और इच्छा नही की। पिछले वर्ष 30 जनवरी, 1972 (शहीद दिवस)को अचानक हृदयगति रुक जाने के कारण आपका देहान्त होगया। झुझुनू जिले ने अपना एक ईमानदार सेवक खो दिया।

श्री रक्षपाल सिंह घरढाणा



जन्म —सन 1914

वर्तमान पता —स्टेशन रोड, चिड़वा

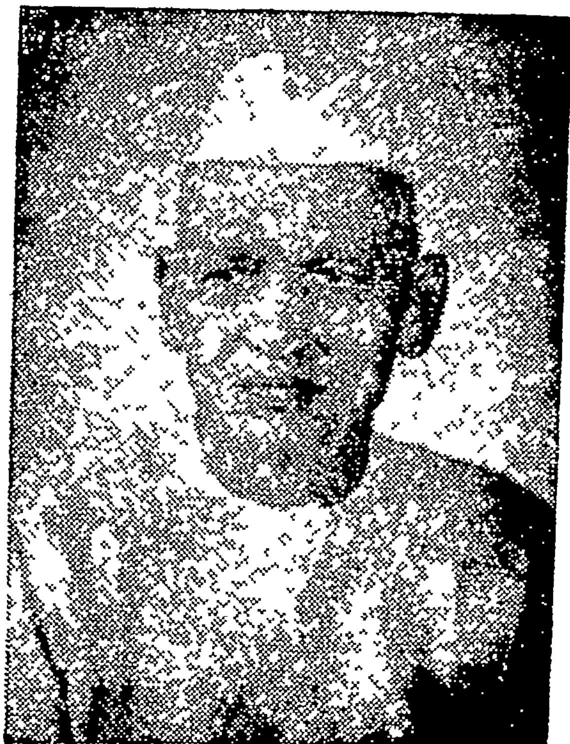
जिला झुन्झुनू

श्री रक्षपाल सिंह झुन्झुनू जिले के खेतडी तहसील के ग्राम घरढाणा के मूल निवासी है। ये जाति मे जाट है। इनकी उम्र 58 वर्ष की है। श्री रक्षपालसिंह पिछले 30 वर्षो से खादी पहनते है। वे जयपुर राज्य प्रजामण्डल के सक्रिय सदस्य थे और झुन्झुनू जिला काग्रेस कमेटी के सक्रिय सदस्य रहे है। इनका कार्यक्षेत्र शेखावाटी की किसान जनता रही है और इनका मुख्य कार्य जागीरदारो के अत्याचारो, निरकुशताओ और क्रूरताओ के विरोध में जनता को साहस के साथ मुकाबले के लिए तैयार करना रहा है। श्री रक्षपालसिह के ताऊ श्री इन्द्रराज सिंह इस क्षेत्र के प्रमुख किसान नेता थे और जागीरी विरोध की दिशा मे उनका कार्य ऐतिहासिक था। श्री रक्षपालसिंह ने भी उन्ही के चरणो पर चलकर लोक जागरण का अभियान आगे बढाया। बिसाऊ और मण्डावा के जागीरदारो ने इनका मकान लूट लिया और उस इमारत को जमीदोज कर दिया। उनकी 250 बीघा जमीन जागीरदारो ने जब्त कर ली। पूरे 18 वर्ष तक मुकदमा लडकर उन्होंने अपनी भूमि पर अपना अधिकार पुन प्राप्त किया है।

श्री रक्षपालसिह के जीवन का महत्वपूर्ण समय अदालतो मे, जेलो में और जागीरदारो से मुकदमे लडने मे ही बीता है। जागीरदारो ने उन पर झूठे मुकदमे लगाकर कई बार सजा करवाई। पहली बार 2 मास की सजा रु० 25 जुर्माना या 1 मास की सजा, दूसरी बार 3 माह की सजा रु० 50 जुर्माना या 2 मास की सजा और तीसरी बार 2 माह की सजा 50 रुपये जुर्माना या 2 मास सजा। ये सजाए श्री रक्षपाल सिंह के पिता व भाइयों को भी झेलनी पडी है।

आजकल श्री रक्षपालसिंह चिडावा मे रहते है। इनका पता है—स्टेशन रोड, चिड़ावा, जिला झुन्झुनू।

श्री सीताराम सेकसरिया



श्री सीताराम सेकसरिया राज-स्थान के व्यापारी समाज के एक मात्र सपूत हैं जिन्होने अपने बढते हुए सफल व्यापार-व्यवसाय के काम को युवावस्था मे ही त्याग करके अपने आपको समाज व देश की सेवा के लिए पूरे तौर पर समर्पित कर दिया।

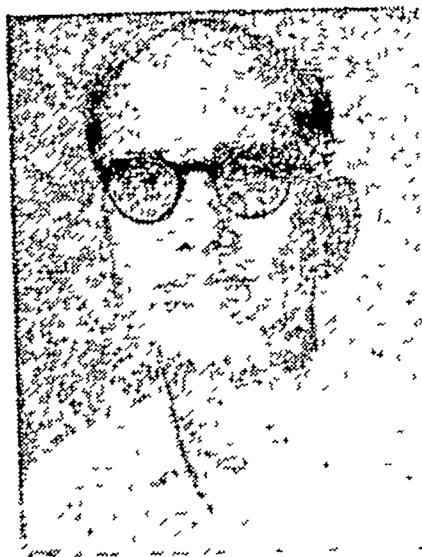
सेकसरियाजी का जन्म सन् 1892 मे नवलगढ (जयपुर राज्य) के एक मध्यवित्तीय अग्रवाल वैश्य परिवार मे हुआ। लडकपन से ही उनकी प्रवृति समाज सेवा की ओर हो गयी थी। माता पिता के सरक्षण से वचित होकर श्री सीताराम को छोटी उम्र मे ही रोजगार की खोज मे कलकत्ता जाना पडा। उनके दादा ऐसे पुरुषार्थी थे कि उन्होने उस पुराने जमाने मे तक की यात्रा की थी।

कलकत्ता मे कई सालो तक सीतारामजी साधारण नौकरी करते रहे। बाद मे उनको अपने स्वतन्त्र व्यवसाय मे अच्छी सफलता मिलने लगी थी। सेकसरियाजी 1929 के शुरु मे अपना धन्धा नही छोडते तो अपने कई एक मित्रो की तरह उनकी गिनती भी समाज के धनाढ्यो मे होती।

श्री सीताराम सेकसरिया हरिजन-उद्धार, हिन्दी-उन्नति, खादी-प्रचार, समाज सुधार, स्त्री-शिक्षा आदि सेवा कार्यों मे आज 80 साल पार करने तक निष्ठापूर्वक रत रहे हैं। 1930 से सेकसरिया जी स्वाधीनता के आन्दोलन मे सक्रिय हुए। तब से 1942 तक सेकसरियाजी ने पाच बार जेल यात्रा करके कई सालो तक जेल मे बिताये।

सेकसरियाजी 1939 के जयपुर सत्याग्रह के लिए कलकत्ते मे जो समिति बनी उसके मन्त्री थे। सत्याग्रह मे भाग लेने के लिए वे दिल्ली तक आ पहुचे थे। उसी समय महात्मा गाधी के आदेश से जयपुर सत्याग्रह स्थगित हो गया। बाद मे सेकसरियाजी जयपुर प्रजा मण्डल की कार्यकारिणी के सदस्य हुए। जीवन कुटीर, वनस्थली की स्थापना मे सीताराम जी का अत्यन्त महत्वपूर्ण योग था। सेकसरियाजी अनेक समाज-सेवी-संस्थाओ से सम्बन्धित हैं। कलकत्ता के प्रसिद्ध स्त्री-शिक्षा-सस्थान के सेकसरियाजी सस्थापक-सचालक हैं, वनस्थली विद्यापीठ के सस्थापक सदस्य और सरदार शहर के गाधी-विद्या-मन्दिर की कार्य समिति के सदस्य हैं।

श्री ईश्वरसिंह, हनुमानपुरा

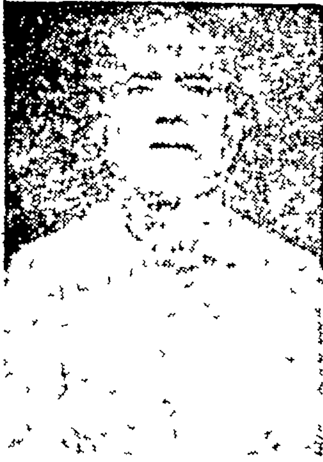


श्री ईश्वरसिंह का झुंझनू जिले के ग्राम जयसिंहपुरा मे श्री ताराचन्द जाट के यहा 13 9-17 को जन्म हुआ। इन्होने बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की है। इनकी किशोरावस्था मे डूंडलोद के ठाकुर ने इनके दादा श्री टीकूराम की लगान वन्दी के प्रश्न पर नृशसतापूर्वक हत्या करवादी थी। सन् 39 के प्रजा मण्डल के सत्याग्रह मे किसान दिवस पर जलूस का नेतृत्व करते समय मुकदगढ के ठाकुर के आदमियो ने इन्हे काफी पीटा था। उन्हे घोडो की पिछाडी से बाधकर घोडो की लीद पिशाब की जगह मे डाल दिया था। कुछ दिन बाद श्री ईश्वरसिंह ने फिर सत्याग्रह किया। उन्हे पुलिस पकड कर झुंझनू थाने मे ले गई और रात को घोर जगल मे छोड दिया। श्री ईश्वरसिंह 1937 से शिक्षण का कार्य कर रहे हैं और आजकल हनुमानपुरा मे विद्या-मन्दिर-माध्यमिक-विद्यालय के प्रधानाध्यापक हैं।

श्रीमती किशोरी देवी



श्रीमती किशोरी देवी किसान आन्दोलन के सचालक सरदार हरलाल सिंह की वीर सहधर्मिणी है। श्रीमती किशोरी देवी ने जागीर प्रथा के विरोध मे और अन्य राष्ट्रीय आन्दोलनो मे अपने पति के साथ कधे से कधा मिलाकर कार्य किया। श्रीमती किशोरी देवी को अनेको वार उज्जड सामती कर्मचारियो से और पुलिस के लोगो से मुकाविला करना पडा है इस वीर जाट महिला के कारण सामती क्षेत्रो मे भी आतक छाया रहता था। श्रीमती किशोरी देवी को पुलिस ने कई बार गिरफ्तार किया और जगलो मे छोडा। परन्तु उन्हे जेल जाने का अवसर नही मिला। श्रीमती किशोर देवी अपने जमाने मे झुंझनू मे महिला समाज की अग्रण्य नेता रही हैं।



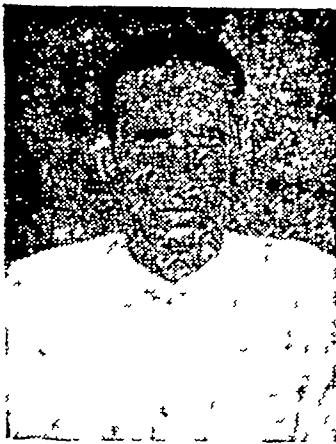
पण्डित केदार नाथ शर्मा

प० केदारनाथ शर्मा पचेरी वडी के पण्डित लेखराम शर्मा के पुत्र हैं। उन्होने साहित्य सम्मेलन की मध्यमा विशारद तक शिक्षा प्राप्त की है। श्री केदारनाथ शर्मा एक जन्मजात शिक्षक हैं। जीवन के प्रारम्भ मे ही इन्होने दलितवर्ग और अछूतो मे शिक्षा प्रचार का कार्य किया था। इन्होने कलकत्ते के छात्र आन्दोलन मे, अजमेर के नमक सत्याग्रह मे, सीकर के किसान आन्दोलन मे और प्रजा मण्डल के नागरिक अधिकार आन्दोलन मे भाग लिया था। अजमेर मे इन्हे 9 महीने की सख्त सजा दी गई थी। कलकत्ते मे श्री केदारनाथ शर्मा 25 दिन तक नजरबन्द रखे गये थे।

श्री केदारनाथ शर्मा ने जागीरदारी अत्याचारो के विरोध मे कई किताबें लिखी है और कई लेख समय समय पर पत्रो मे लिखे हैं। जागीरदारो ने इकके तथा इनके छोटे भाई प० ताडकेश्वर शर्मा की उग्र राजनैतिक प्रवृतियो के कारण इनके परिवार की 100 बीघा जमीन और मकान जब्त कर लिया था। अब तक आधा मकान मुश्किल से ही इनके परिवार के हाथ आ सका है।

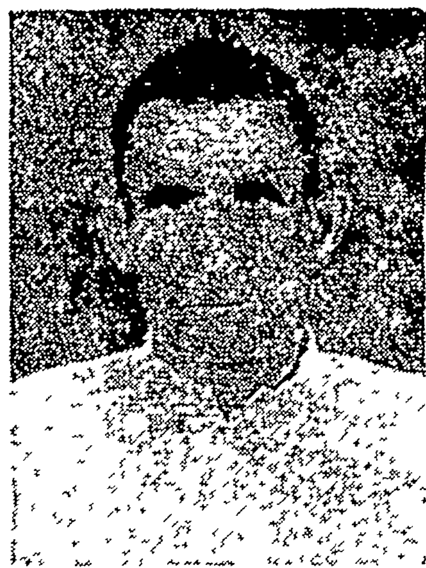
श्री केदारनाथ शर्मा एक राजनैतिक परिब्राजक हैं। सीकर और झुझनू जिलो के गाव गाव मे पद—यात्रा करके लोक प्रशिक्षण का मिशन आज भी पूरा कर रहे है। इनका पता है—ग्राम तेलीडा, पोस्ट धीगपुर वाया बाय, जिला सीकर।

श्री ख्यालीराम



श्री ख्यालीराम का जन्म झुझनू जिले के मध्यम किसान परिवार मे श्री रेखराम चौधरी के घर सवत् 1972 की माघ शुक्ला 13 को हुआ। इन्होंने अपनी 16 वर्ष की उम्र से ही जागीरी अत्याचारो का विरोध करना शुरु कर दिया था अत सन् 1931 से 1947 तक इन्हे निरतर जागीरदारो से सघर्षरत रहना पडा। जागीरदारो ने इन पर बीसीयो झूठे मुकदमे चलाकर फसा रखा था। डण्डा, लाठी मार—पीट आदि की तो कोई गिनती ही नही है। 1939 मे प्रजामण्डल के आन्दोलन मे इनकी पत्नि श्रीमती कस्तूरी अपनी 9 महीने की बच्ची को लेकर जेल गई थी। फरवरी 47 मे चनाणा गोली काड का भरतपुर में विरोध करते समय ये गिरफ्तार कर लिए गए थे। 1939 में प्रजा-मण्डल का सन्देश इन्होने गाव-गाव पहुचाया और सत्याग्रह के लिए लोगो को तैयार किया था। वे प्रजामण्डल और काग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता रहे है।

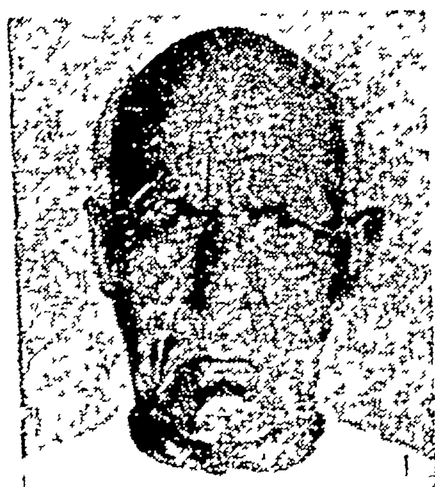
श्री खेमसिंह



श्री खेमसिह झुझनू जिले के हनुमानपुरा ग्राम के निवासी है। इनके विचार प्रारभ मे ही राष्ट्रीय है। इन्होने अपने क्षेत्र मे सदा बैठ, बेगार और जागीरी अत्याचारो का विरोध किया है।

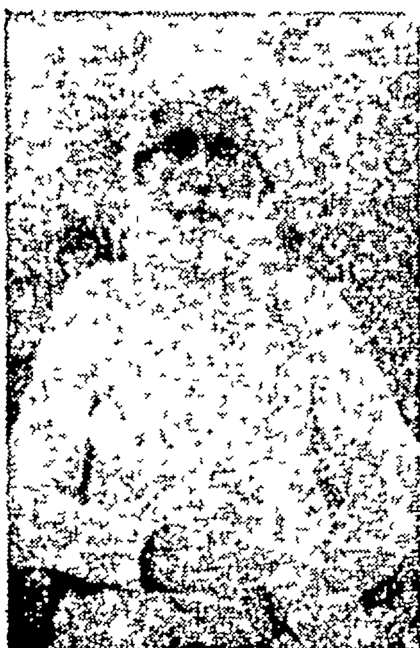
श्री खेमसिह ने जयपुर राज्य प्रजामण्डल के आन्दोलनमे जयपुर मे जाकर सत्याग्रह किया था और इन्हे 2 महिने की सजा दी गई थी। जेल मे मुक्त होने के बाद ये निरतर प्रजामण्डल और काग्रेस का कार्य करते रहे हैं।

हवलदार खेतराम



हवलदार खेतराम जिला झुझनू के ग्राम नरहड के रहने वाले किसान कार्यकर्त्ता है। इनका जन्म चौधरी रामदयालजी के यहा सवत् 1958 की मृगशीर्ष कृष्णा 8 को हुआ था। इनकी शिक्षा सामान्य है। हवलदार खेतराम सन् 1919 मे मिलिट्री मे भर्ती हो गए थे और 1922 मे हागकाग गए थे। श्री खेतराम मिलिट्री मे थे तभी आर्य समाज से प्रभावित हो चुके थे और उनमे देश सेवा की भावनाए जागृत हो गई थी।

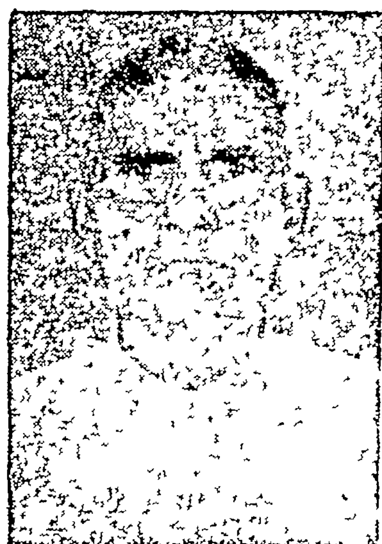
1925 मे उन्होने पुष्कर मे जाट महासभा के अधिवेशन मे भरतपुर के महाराजा कृष्णसिह का राष्ट्रीय भाषण सुना और देश सेवा की प्रतिज्ञा ली तथा खद्दर पहनना शुरु कर दिया। 1928 मे मिलट्री छोड दी और सरदार हरलाल सिह के साथ किसान आन्दोलन मे लग गए। हवलदार खेतराम सामतशाही के विरुद्ध सरदार हरलाल सिह के साथ प्रत्येक राजनैतिक और सामाजिक आन्दोलन मे सक्रिय रहे हैं तथा प्रजामण्डल और काग्रेसमे भी सक्रिय रुप मे कार्य करते रहे हैं। पता—मुकाम पोस्ट नरहड, वाया चिढावा-जिला, झुझनू।



ठाकुर श्री छत्तूसिंह टांई

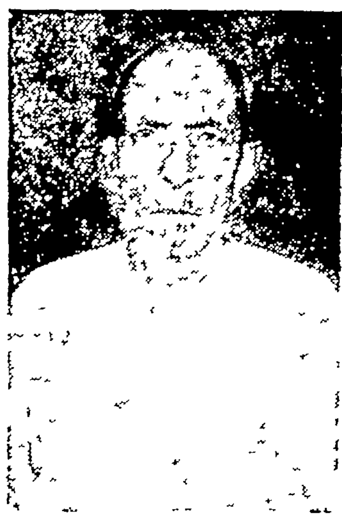
ठाकुर श्री छत्तूसिंह टांई स्वय एक छोटे जागीरदार थे परन्तु इनका रहन-सहन और व्यवहार एक सामान्य किसान की तरह ही था। ठाकुर छत्तूसिंह जागीरी प्रथा के कट्टर विरोधी थे और जागीरी दूषणो के बहुत कडे आलोचक थे। ठाकुर कट्टर आर्य समाजी थे। अपने यहा बैठ, बेगार, लाटा, बांटा बदकर दिया था। वे बडे हठीले सिद्धान्तवादी थे और किसानो के हर आन्दोलन में उनके साथ कधे से कधा मिलाकर खडे रहे और गाव-गाव मे जाकर जन–जागृति फैलायी।

श्री दलेल सिंह



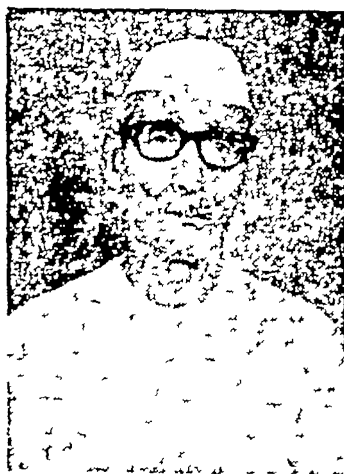
श्री दलेलसिंह झुझनू जिले के हनुमानपुरा ग्राम के रहने वाले एक कर्मठ कार्यकर्त्ता है। प्रजामण्डल के मच से इन्होने जागीरी अत्याचारो का खुल कर विरोध किया था। प्रजामडल आन्दो–लन मे इन्हे जयपुर मे गिरफ्तार करके सजा दी गई। सामती शासन मे इन्हे जागीरदारो के षडयन्त्र का शिकार बनाया गया और ये 1½ वर्ष तक जेल मे रहे। श्री दलेलसिंह निष्पक्ष, निर्लोभी और साहसी एव दबग किसान कार्यकर्ता है।

श्री दशरथ पाडा



श्री दशरथ शर्मा इन दिनो झुझुनू जिले के मलसीसर ग्राम मे रहते हैं। 1942 तक बलिया (उत्तर प्रदेश) मे इनके कपडे का व्यापार था । बिडला मिल और जयाजी राव काटन मिल की इनके पास एजेंसी थी। श्री दशरथ शर्मा के पिता श्री हरदयाल शर्मा सन् 1921 से बलिया मे काग्रेस के प्रभावशाली कार्यकर्ता थे और 1942 मे श्री दशरथ ने चीतू पाडे के साथ मिलकर पूरे बलिया पर अधिकार कर लिया था । उन्होने अगस्त क्रान्ति के समय पुलिस थानो पर कब्जे किए, सरकारी कार्यालय अधिकार मे लिए, सारे शहर का शासन-कार्य सभाला और जनता को पूरी सुख सुविधाए दी। सारी अग्रेज सत्ता एक बार बलिया मे जनद्रोह से काप उठी थी। उन्होने सभी राजनैतिक कैदियो को छुडाया। जेल खाली करवादी लेकिन अत मे ब्रिटिश शासन ने इसका भयकर प्रतिशोध लिया। श्री दशरथ शर्मा के व्यापार मे लगे 50-40हजार रुपए डूब गए। वे राजस्थान आगए। बलिया का यह वीर आजकल राजस्थान के मलसीसर गाव मे सकट के दिन पूरे कर रहा है ।

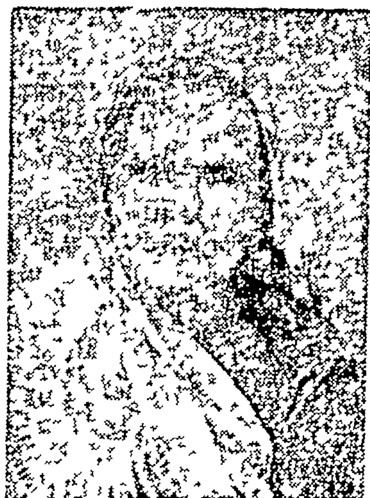
श्री दुर्गा दत्त कायां



श्री दुर्गादत्त काया का जन्म सवत् 1966 मे कलकत्ते मे हुआ 17 वर्ष की उम्रमे खादी पहनना शुरू कर दिया। राष्ट्र सेवा के सस्कार कलकत्ते से लेकर झुझुनू आए। श्री देवी बक्स सर्राफ के साथ आर्य समाज के प्रचार द्वारा जन शिक्षण का कार्य करने लगे। 1932 मे हरिजन सेवा समिति के मत्री बने और 37 मे प्रजामडल का कार्य हाथ मे लिया। 1939 के प्रजा मडल सत्याग्रह मे भाग लिया और 6 महीने की सजा मोहनपुरा कारावास मे पूरी की। 1944 मे भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत झुझुनू में आपत्तिजनक भाषण देने पर गिरफ्तारी हुई लेकिन 12 महीने के बाद केस समाप्त हो गया।

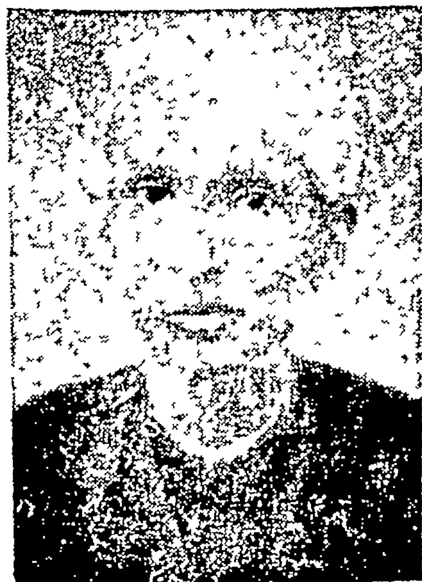
श्री दुर्गादत्त काया झुझुनू शहर की प्राय सभी सार्वजनिक सस्थाओ के सस्थापक और सचालक रहे है। झुझुनू में श्री काया का मकान एक राजनैतिक आश्रय स्थल रहा था। 1942 में श्री काया ने अलसीसर मलसीसर के किलो पर तिरगा फहराने का साहस भरा कार्य किया था। वे कट्टर काग्रेसी हैं।

श्रीमती दुर्गावती देवी



श्रीमती दुर्गावती देवी शेखावटी के किसान नेता पण्डित ताडकेश्वर शर्मा की सहधर्मिणी हैं। वे 1931 से बराबर खादी पहनती है। वे शिक्षित है और शेखावटी के किसान आन्दोलन मे उन्होने अपने पति के साथ पूरा हिस्सा बटाया था। 1939 मे वे जयपुर प्रजामडल आन्दोलन मे झुझुनू से महिलाओ का जत्था लेकर सत्याग्रह करने गई थी। उन्हे 4 महीने के कारावास की सजा हुई। उन्होने झुझुनू जिले की महिलाओ के जागरण के लिए बहुत कार्य किया है।

स्वर्गीय श्री देवा बक्स सर्राफ, मंडावा



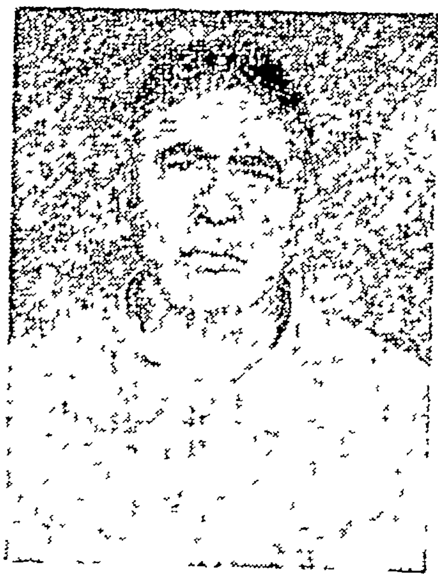
स्वर्गीय श्री देवीबक्स सर्राफ शेखावाटी मे जन जागृति के अग्रदूत हैं। इन्होने मडावा मे आर्य समाज की स्थापना की और आर्य समाज के मच से राष्ट्रीयता, स्वदेशी और अन्याय का विरोध करने का प्रचार करने लगे। इन्होंने बेगार का और जागीरदारो द्वारा लगाई जाने वाली कस्टम का विरोध किया, मुकदमे चलाए और जीते।

मडावा और दूसरे क्षेत्रो के जागीरदारो की आखो मे श्री देवीबक्स सर्राफ काटे की तरह खटकते थे। एक बार मडावाके जागीरदार ने गाव मे आतक फैलाने के लिए सरे बाजार श्री देवी बक्स सर्राफ के जूते लगवाए। श्री सर्राफ आर्य समाज के जलसे करते, मेले लगवाते उपदेशक रखकर गाव-गाव मे रूढियो और जागीरी अत्याचारो के विरुद्ध प्रचार करवाते। पूरी शेखावाटी इनका क्षेत्र था।

श्रीमती फूलां देवी

श्रीमती फूला देवी किसान नेता श्री हरलाल सिंह माडासी की माता थी 1939 मे प्रजामडल क आन्दोलन मे उन्होन सत्याग्रहमे भाग लिया था। वे देहाती पोशाक मे महिलाओ के जत्थे का नेतृत्व करते समय जयपुर मे गिरफ्तार की गई थी। कुछ महीने जेल मे ज्यादा बीमार रहने पर जेल से रिहा करदी गई थी। जेल से रिहा होने के बाद सेठ जमना लाल वजाज और श्री हीरालाल शास्त्री ने श्री फूला देवी को इलाज के लिए जयपुर ले जाना चाहा पर उन्होने अपना गाव छोडना नही चाहा। 50 वर्ष की उम्रमे उनका देहान्त हो गया।

मास्टर बिन्दूसिह एम० ए०



मास्टर विदुसिह का जन्म 28 मार्च 1929 कोअलीपुर (झुझनू) मे हुआ। वचपन मे ही इन्हे आर्य समाज के प्रभाव से सुधारवादी सस्कार मिलते गए। जाट-किसान पचायत की स्थापना पर ये उसके सदस्य वन गए। प्रजामण्डल के पुनर्गठन पर इन्होने प्रजामण्डल के मच से किसानो को राजस्व के अधिकार दिलवाने के लिए कार्य किया। ये वर्षो तक जिला प्रजामण्डल की कार्य कारिणी के सदस्य, मण्डल काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष और पचायत समिति चिडावा के उपाध्यक्ष तथा अलिपुर की ग्राम पचायत के सरपच रहे है। 20 वर्षो मे शिक्षक का कार्य कर रहे है।

पता–प्रधानाध्यापक, वी एल प्राथमिक विद्यालय, वगड (झुझनू)

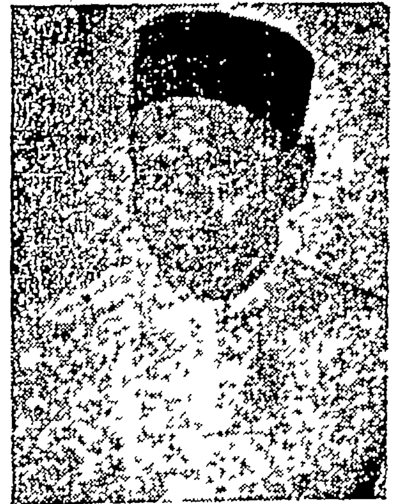
श्री भैरूसिह तोगड़ा



श्री भैरूसिह तोगडा मिलिट्री सेवा मे लगे हुए थे। लेकिन इनके विचार उग्र राष्ट्रवादी और ब्रिटिश विरोधी थे। अग्रेज कमाडिग आफिसर को इनके विचारो की जानकारी होगई। कमाडिग आफिसर से इनका झगडा होगया और इन्हे मिलिट्री की सेवा के अयोग्य करार देकर मिलिट्री से हटा दिया गया। मिलिट्री अधिकारियो ने इनके मामले मे जाच करके निर्णय दिया कि स्वतन्त्रता की वात करना अपराध नही है परन्तु इन्हे मिलिट्री मे नही रखा जाए। झुझनू आकर श्री भैरूसिह तोगडा ने सरदार हरलालसिंह के साथ किसान आन्दोलन मे काम किया। प्रजा मडल आन्दोलन मे इन्हें 6 महीने की सजा हुई। इनकी 94 वीघा जमीन जागीरदारो ने जब्त करली। सामतशाही से मुकाबिला करने में ये सदा अग्रगण्य रहे हैं।

श्री भागीरथ कानोड़िया,

मुकुन्दगढ

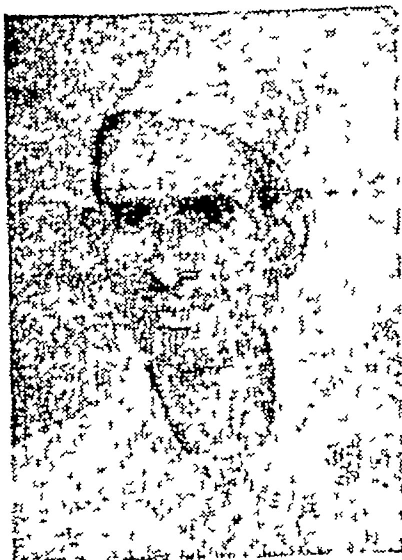


श्री भागीरथ कानोडिया मुकुदगढ के निवासी हैं। ये एक लोक-सेवी सम्पन्न-श्रीमन्त और उद्योगपति हैं। इनका व्यवसाय कलकत्ते मे है। किसनगढ मे इन्होने एक सूती मिल की स्थापना की है और जयपुर मे महिलाओ के लिए कानोडिया कॉलेज चला रहे है।

शेखावाटी मे शिक्षा और राष्ट्रीयता का प्रचार करने मे इनका बहुत बडा हाथ रहा है। इन्होन गाव गाव मे स्कूले खोलने की व्यवस्था करवाई। जिले के जिन गावो मे पानी नही था वहा पानी की व्यवस्था करवाई। जिले की राष्ट्रीय प्रवृत्तियो मे मुक्त हस्त से आर्थिक योग देते रहे और कार्यकर्ताओ को भी सम्हाले रखा।

श्री भागीरथ कानोडिया महात्मा गाधी के निकट सम्पर्क मे रहे हैं। विचारो से वे कट्टर गाधीवादी हैं। बगाल के अकाल मे और बिहार की बाढ के समय इन्होने गाव२ घूम कर राहत कार्यो का सचालन किया था। झुझनू जिले की उदयपुरवाटी तहसील के जागीरदारो ने इनके उग्र और जागीरी विरोधी विचारो के लिए एकबार पिटाई करवादी थी भारत छोडो आन्दोलन मे श्री कनोडिया 10 महीने के लिए कलकत्ते मे नजर बन्द रहे।

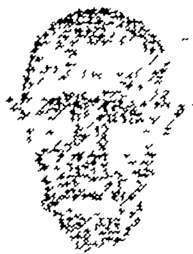
श्री महावीर प्रसाद खेताण-बामलासीया (झुंझनु)



श्री महावीर प्रसाद खेताण का जन्म झुझनु के अग्रवाल परिवार मे श्री भगवान दास खेताण बामलासीया के यहाँ सवत् 1977 की कार्तिक कृष्ण 2 को हुआ था। उन्होने सातवी कक्षा तक विधिवत शिक्षा प्राप्त की लेकिन बाद मे अपने स्वाध्याय मे निरतर अपनी ज्ञान वृद्धि करते रहे। श्री खेताण सपूर्ण रूपेण राष्ट्रीय विचारो के व्यक्ति हैं। बगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश और दिल्ली जहा जहा भी रहे वहा राष्ट्रीय प्रवृतियो मे नियमित भाग लेते रहे। जयपुर रियासत के सभी आन्दोलनो मे भाग लिया है। 1932-33 मे उन्होने शेखावाटी के किसान आन्दोलनो मे भाग लिया, 1936 मे शेखावटी के जकात आन्दोलन मे भाग लिया, 1939 मे उन्होने जयपुर प्रजामण्डल के आन्दोलन मे भाग लिया और 1942 के भारत छोडो आन्दोलन मे भाग लिया।

पुलिस और जागीरदारो द्वारा श्री महावीर खेताण की बीसीयो बार अमानुषिक और निर्दयतापूर्वक पिटाई की गई। परन्तु पुलिस ने उन्हे गिरफ्तार करके जेल नही भेजा। देश सेवा के लिए जेल जाने की और देश सेवा मे मरकर शहीद होने की उनकी तमन्ना पूरी नही हो सकी। स्वाधीनता के बाद श्री महावीर प्रसाद खेताण समाजवाद के लिए मजदूर सगठनो मे कार्य करने लग गए। इस समय उनके जीविका के साधन अस्त व्यस्त हैं और उनकी आर्थिक स्थिति असतोपजनक है।

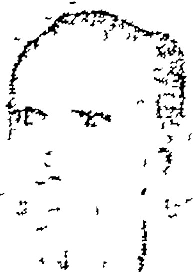
श्री यादराम आर्य



श्री यादराम आर्य चूरू जिले के राजगढ तहसील के गुडान ग्राम के निवासी हैं। इनका जन्म 1914 मे हुआ था। 26 मार्च 1939 को ये आर्य समाज के हैदराबाद सत्याग्रह मे शामिल हुए मार्च से अगस्त तक ये हैदराबाद मे गिरफ्तार होते गए और रिहा होते गए इन्हें 19 महीने की सजा दी गई पर पूरी नही भोग सके और 17 अगस्त 39 को समझौते मे अन्य सत्याग्रहियो के साथ रिहा हो गए।

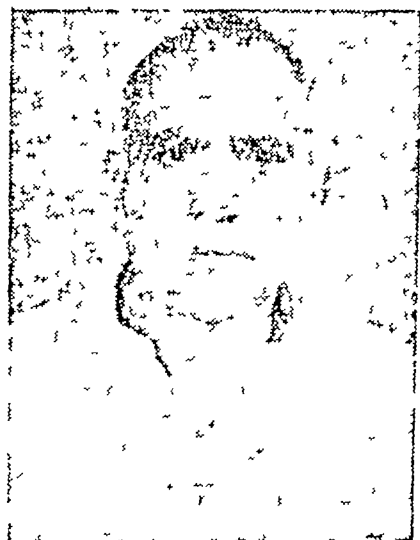
1945 मे ये अपनी तहसील राजगढ मे आ गए और बीकानेर राज्य प्रजा परिषद के आन्दोलन मे शामिल हो गए। 27 मार्च 47 को 300 आदमियो का जत्था लेकर जाते हुए हमीरवास थाने के पास इन्हे गिरफ्तार कर लिया गया। 31 मार्च 47को इन्हे 9 महीने की सजा सुनाई गई जो सेंट्रल जेल बीकानेर मे इन्होने पूरी की। श्री यादराम आर्य एक कुशल लेखक है। पता—गुडान, पोस्ट चादगाठी वाया पिलानी, तहसील राजगढ, जिला चूरू।

श्री रामेश्वर चौधरी बार



श्री रामेश्वर चौधरी किसान आन्दोलन के निष्ठावन कार्यकर्ता हैं। सामतशाही की बडी बडी चुनौतिया श्री रामेश्वर ने झेली हैं और सामती ज्यादतियो का डट कर मुकाबिला किया है। श्री रामेश्वर बाय के सारे घर वाले राष्ट्रीय विचारो के हैं। इनके माता-पिता भी कट्टर काग्रेसी हैं। श्री रामेश्वर बाय के परिवार का किसान आन्दोलन को पूरा सहयोग रहा है। परन्तु इन्हे जेल जाने का अवसर नही मिला।

श्री राम निवास शर्मा



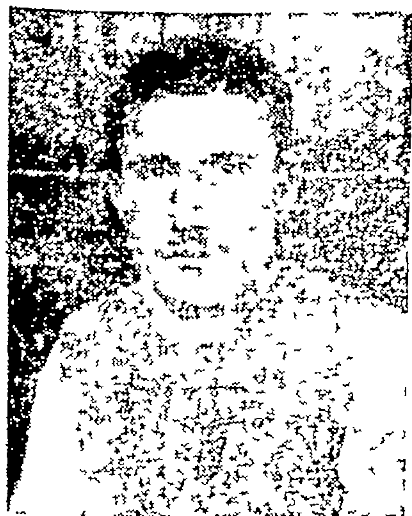
श्री राम निवास शर्मा शेखावाटी मे माडासी ग्राम के निवासी है। छोटी उम्र मे ही इनमे सामतवाद विरोधी भावनाए विकसित होने लग गई थी। 1939 मे उन्होने जयपुर प्रजामण्डल के आन्दोलन मे भाग लिया। उन्हे 4 महीने की सजा हुई 1942 की अगस्त क्रान्ति के समय वे पूना मे थे। वहा उन्हे भारत सुरक्षा कानून के अतर्गत 3 महीने के लिए नजरवद कर दिया गया। श्री रामनिवास शर्मा प्रजामण्डल और वाद मे काग्रेस के एक कर्मठ कार्यकर्ता रहे है। इनका पता है–ग्राम पोस्ट माडासी, वाया मुकन्दगढ, जिला झुझुनू।

श्रीमती राम कोरी देवी, मांडासी

श्रीमती रामकोरी देवी किसान नेता श्री हरलालसिह माडासी की पत्नि है। उनकी उम्र 67 वर्ष की है। 1930 से 1947 तक श्रीमती रामकोरी ने प्रत्येक आन्दोलन, सभा जुलूम और राजनैतिक समारोह मे भाग लिया था। 1930 मे इन्होने गहने और घूघट उतार था और खादी की माडी पहनने लग गई थी।

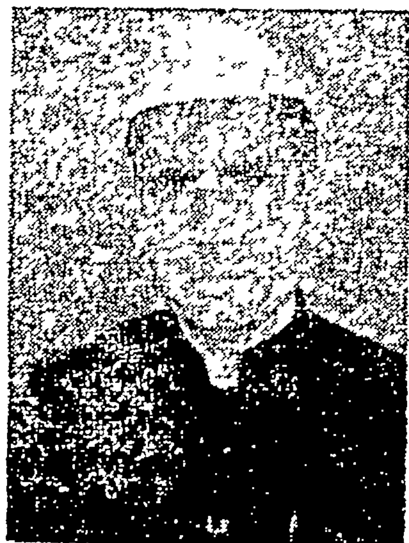
1939 मे प्रजा मण्डल के आन्दोलन मे श्री हरलाल सिह की मा फूला देवी महिलाओ का जत्था लेकर सत्याग्रह करने जयपुर आई थी और श्री राम कोरी भी उनके साथ उसी जत्थे मे थी। सास वहु दोनो गिरफ्तार हो गई थी। श्रीमती राम कोरी के साथ उनके 6 महीने का पुत्र श्री शुभ करण भी जेल मे रहा था। झुझुनू जिले मे महिला जागरण के लिए श्री राम कोरी का कार्य प्रारम्भिक दिनो मे वहुत महत्वपूर्ण था।

श्री रेखासिह, हनुमानपुरा



श्री रेखासिह किसान नेता सरदार हरलालसिह के छोटे भाई हैं। ये शेखावाटी के किसान आन्दोलनो और सामतशाही विरोधी अभियानो मे प्रमुख रूप से भाग लेते रहे है। 1939 मे प्रजामण्डल आन्दोलन के समय इनकी गर्दन पर वेसुमार लाठिये पडी थी। परिणाम स्वरूप उनकी गर्दन अभी भी हर वक्त हिलती रहती है। जागीरी अत्याचारो का इन्होने अपने क्षेत्र मे डट कर मुकाविला किया था। जयपुर राज्य की पुलिस और जागीरदारो की ज्यादतियो का इन्हे अनेको वार समय २ पर शिकार होना पडा है।

श्री विद्याधर कुलहरी, झुंझनू



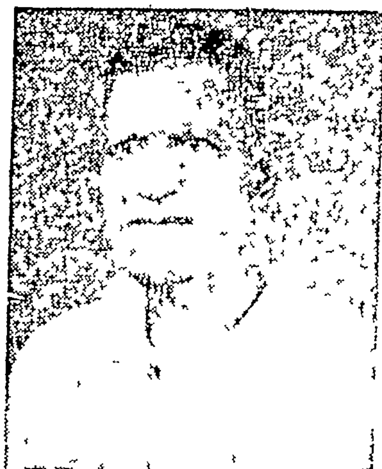
श्री विद्याधर कुलहरी का जन्म 12 नवम्बर 1913 को झुझनू जिले के सागासी ग्राम मे चौधरी चिमनारामजी के यहा हुआ। श्री विद्याधर कुलहरी ने पिलानी और फिर बनारस विश्वविद्यालय से 1930 मे एल०एल०बी० की परीक्षा पास की। श्री कुलहरी ने साम्यवादी साहित्य का गहरा अध्ययन किया है। उनके विचारो पर मार्क्स का बहुत प्रभाव है। वे बनारस से झुझनू आते ही जाट किसान पचायत के मन्त्री बना दिए गए और उन्होने भूमि का बन्दोबस्त, भूमि पर किसानो के अधिकार और लगानो की दरो के निश्चय के लिए नए अभियान को हाथ मे लिया। 1939 मे प्रजामण्डल आन्दोलन के लिए वकालात छोडकर वे सत्याग्रह के सगठन के लिए पुरी तरह लग गए। लेकिन इस आन्दोलन मे गिरफ्तार नही हो सके। 1946 मे जो लगान बन्दी आन्दोलन प्रजामण्डल की ओर से शुरु किया गया उसमे वे बीबासर ग्राम मे भाषण देते हुए गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हे 3 महिने जेल मे रखा गया।

श्री विद्याधर कुलहरी झुझनू जिला प्रजामण्डल के अध्यक्ष, मन्त्री तथा जिला काग्रेस कमेटी और प्रदेश काग्रेस कमेटी के सदस्य रहे हैं। वे जयपुर राज्य की प्रतिनिधि सभा क सदस्य भी चुने गए थे। वे नवलगढ पचायत समिति के 4 वर्ष तक प्रधान रहे है। उनकी वकालात व्यवसाय के बनिस्बत किसानो की सहायता देने का माध्यम बनी हुई है।

आचार्य विचित्र लाल वैद्य

आचार्य श्री विचित्र लाल वैद्य झुझनू जिले के ओजट (चिढावा) ग्राम के प० जयदेव वैद्य के पुत्र हैं। इनका जन्म सवत 1972 की कार्तिक शुक्ला 13 को हुआ। उन्होने आचार्य और शास्त्री तक शिक्षा प्राप्त की। 1935 से 1942 तक श्री विचित्रलाल का समय बिहार (सिंहभूम) मे बीता। वहा उन्होने सभी राष्ट्रीय आन्दोलनो मे भाग लिया। 1942 में उन्हे सिंहभूम मे अनेको बार गिरफ्तार में लिया गया और छोडा गया। 1943 के बाद वे राजस्थान में आगए और प्रजामण्डल की प्रवृत्तियो में उत्साह से भाग लेने लग गए। उन्होने जागीर। विरोधी, लगान-बन्दी और जिम्मेवार। हुकुमत के लिए किए गए प्रत्येक अभियान में उत्साह से भाग लिया। आप कट्टर काग्रेसी हैं। आपका पता है—माहेश्वरी आयुर्वेदिक दातव्य औषधालय मु० पोस्ट० इस्लामपुर (झुझनू)।

स्वर्गीय श्री सनत्कुमार शर्मा

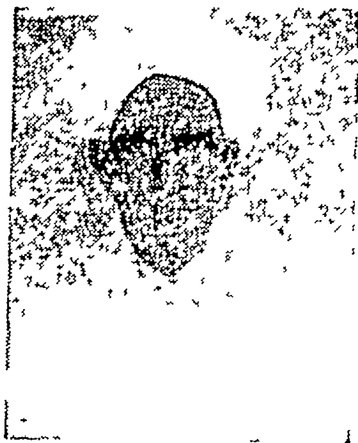


श्री सनत्कुमार शर्मा का जन्म झूझनू जिले के मडेला गाव मे श्री लादूरामजी चौमाल गौड विप्र के यहा सवत् 1967 की पौष कृष्णा 1 को हुआ। आपने अपना अध्ययन बनारस विश्वविद्यालय मे किया और 1934 में वही से एम०ए०, एल० एल० बी० की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1932 मे बनारस से सीधे अजमेर जाकर आपने नमक सत्याग्रह में भाग लिया, गिरफ्तार हुए, सजा काटी और फिर सीधे बनारस पढने के लिए चले गए।

श्री सन्तकुमार वर्षों तक झुझनू मे जिला प्रजामण्डल के अध्यक्ष रहे और जयपुर राज्य प्रजामण्डल की कार्यकारिणी के सदस्य भी रहे झुझनू जिले में श्री सनत्कुमार शर्मा ने ही सबसे पहले खादी के तथा अन्य रचनात्मक प्रवृत्तियो के कार्यक्रम शुरु किए। प्रजामण्डल सत्याग्रह, अकाल राहत कार्य आदि मे सचालन और व्यवस्था का सारा काम आपने ही सम्हाला। वे जयपुर राज्य की प्रतिनिधि सभा के निर्वाचित सदस्य थे।

श्री सनत्कुमार शर्मा किसान आन्दोलन–कारियो के मुकदमे निशुल्क लडने वाले अग्रगण्य वकील थे। कई मामलो मे तो महीनो तक आपको पचेरी बडी मे ही रहना पडा क्योकि विशेष अदालत वही लगाई गई थी। 26 जनवरी 1971 को जयपुर के सवाई मानसिंह अस्पताल मे उनकी मृत्यु हो गई।

श्री लादूराम रायपुर



चौधरी श्री लादूराम का जन्म श्री परसराम जाट के यहा झुझनू जिले के रायपुर ग्राम मे सवत् 1963 के आसोज शुक्ला 10 को हुआ। उनकी शिक्षा सामान्य ही है। झुझनू जिले के जागीरी सघर्ष मे श्री लादूराम ने प्रमुख रूप से भाग लिया है। आप किसान नेता पडित ताडकेश्वर शर्मा के सहयोगी रहे है। मण्डावा जागीरदार ने इनके रहने का मकान, नोहरा, चारे के ढेर आदि को जलवा दिया था जिसमे उन्हे करीब 5000 रुपये का नुकसान हुआ। फरवरी 40 मे वे भारत सुरक्षा कानुन के अतर्गत पचेरी बडी मे गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हे 1 वर्ष की सजा हुई। पुलिस ने आपको सिंघाणा और झुझुनू के थानो मे कई बार कई महिनो तक बन्द रखा। पुलिस की मार और क्रूरताओ से रीढ की हड्डी मे कमर का दर्द स्थायी हो गया है। लम्बे समय की फरारी के कारण परिवार की बराबर देखभाल कर सके और न बच्चो की शिक्षा का सामुदायिक प्रबन्ध।



श्री लक्ष्मण सिंह नाथासर

श्री लक्ष्मणसिंह का जन्म संवत 1961 की कार्तिक शुक्ला 1 को हुआ। प्रारम्भ मे आप आर्यसमाज की विचारधारा से बहुत प्रभावित रहे प्रजामंडल की स्थापना के साथ ही ये प्रजामण्डल के और बाद मे कांग्रेस के सक्रिय सदस्य होगए। शिक्षा प्रचार और समाज सुधार से चलते-चलते ये राजनीति के मैदान मे उतर आए और लगानवदी के प्रश्न पर जागीरदारो के साथ इन्हे निरंतर संघर्ष मे रहना पडा। इन्होने किसान आन्दोलन मे और स्वतन्त्रता संग्राम मे अपने आपको पूरी निष्ठा से झोक दिया और सरदार हरलाल सिंह के नेतृत्व मे जागीरो की समाप्ति तक सक्रिय रहे। इन्होंने अपने गाव मे मित्र मंडल नाम की संस्था स्थापित की है जो ग्राम सुधार के लिए क्रियाशील है।

श्री लक्ष्मीचन्द आर्य

श्री लक्ष्मीचंद आर्य झुंझुनू जिले मे नाथासर के रहने वाले है। उनका जन्म 14 जनवरी 1915 को हुआ। उन्होंने शेखावाटी के किसान आन्दोलनो मे उत्साह से भाग लिया और 1939 मे प्रजामण्डल आन्दोलन के लिए भी वे सक्रिय रहे। आन्दोलन के समय मे पुलिस ने उन्हे झुंझुनू मे गिरफ्तार करके 7-8 मील जंगल मे लेजाकर नंगा कर के बुरी तरह पीटा था। श्री लक्ष्मीचंद आर्य स्वाधीनता के बाद सामाजिक सेवा कार्यो मे अधिक लगे है। 1933 से 1939 तक वे राजनीति मे सक्रिय थे।

उनका पता—राजस्थान पुस्तक भंडार, झुंझुनू।

स्वर्गीय श्री लादूराम किसारी, झुंझनू

झुंझनू मे हनुमानपुरा के निकट ही किसारी नामका एक छोटा सा गाव है। वहा चौधरी हनूतरामजी के घर श्री लादूराम किसारी का जन्म हुआ। इनकी शिक्षा दीक्षा गाव मे ही हुई। सन 1925 मे ही श्री लादूराम किसारी ने शेखावटी के सार्वजनिक जीवन मे कार्य करना शुरू कर दिया था। शेखावटी मे जागीरदारो के विरुद्ध जन-बल को संगठित करने मे श्री लादूराम की बहुत बडी भूमिका रही है। शेखावटी की प्रत्येक प्रगतिशील प्रवृत्ति मे इन्होने अग्रण्यण रूप मे भाग लिया। 1932-33 मे शेखावटी के किसानो को संगठित करने मे इन्होने दिन रात एक कर दिया था। प्रजामण्डल के सत्याग्रह आन्दोलन मे उन्होने शेखावटी के प्रथम दलपति के रूप मे भाग लिया। वे गिरफ्तार कर लिए गए और 5 महीने जेल मे रहे। वही से आपका स्वास्थ्य बिगड गया और 1946 मे आपकी जीवन लीला समाप्त हो गई।

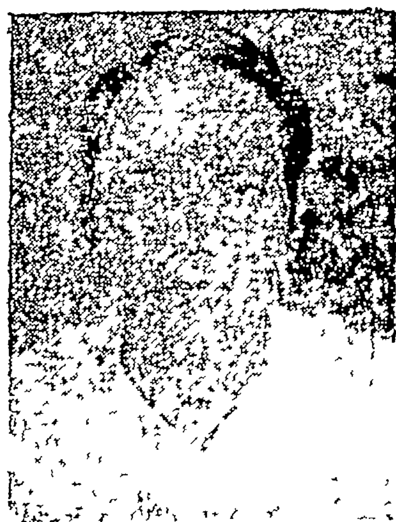
आपकी सुपुत्री श्रीमती सुमित्रा देवी इस समय राजस्थान विधान सभा की सदस्या है।

श्री सूरजमल साथी



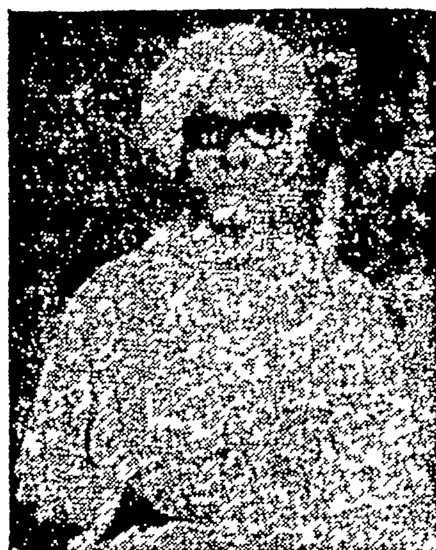
श्री सूरजमल साथी का जन्म झुंझनू जिले के गोठडा नूनिया ग्राम मे सवत् 1972 की आषाढ शुक्ला 7 को एक साधारण किसान परिवार मे हुआ। वे आर्य समाज की विचारधारा से प्रारम्भ मे प्रभावित हुए। सीकर के प्रजापति महायज्ञ और जाट किसान पचायत मे इन्होने सक्रिय रुप से कार्य किया। श्री सूरजमल साथी आर्य भजनोपदेशक होगए और आर्य समाज के साथ साथ किसान सगठन और जागीर विरोधी प्रचार भी करते गए। गुढा, टोडी, दुद्या, दगड आदि स्थानो मे सामतो द्वारा इनकी कई बार पिटाई की गई। इन्हे वर्षों तक निर्वासित जीवन बिताना पडा। ये तहसील कांग्रेस कमेटी चिढावा के अध्यक्ष भी रहे हैं। खादी सस्था और ग्राम सेवा मण्डल के अध्यक्ष रहे हैं। झुझनू जिले मे इनके प्रयत्नो मे करीब 100 गावो मे स्कूलें स्थापित करवाई गई है। इन्होने प्रत्येक कार्य निस्वार्थ भाव मे किया है। झुझनू जिले के आप अत्यन्त लोकप्रिय व्यक्ति हैं।

श्री हनुमान प्रसाद काजड़ा



श्री हनुमान प्रसाद झुंझनू जिले की चिढावा तहसील के काजडा ग्राम के मूल निवासी हैं। ये जाति से ब्राह्मण हैं। इनकी आयु 58 वर्ष की है। 1935 मे शेखावाटी के किसान आन्दोलन के समय जागीरदारो के शोषण के विरुद्ध बगावत का झण्डा लेकर खडे हुए थे। परिणामत इन्हें जागीरदार ने इनकी 100 बीघा जमीन से बेदखल कर दिया। इन्होने बेगार, बैठ, पानचराई आदि का खुल कर विरोध किया। जागीरदारो ने इन्हे मुकदमो मे फसाने की बडी चेष्टाए की लेकिन सफल नहीं हो सके। 1945 मे सीकर व झुझनू मे अकाल राहत के लिए अकाल सहायता समिति का सयोजन करके राहत का बहुत बड़ा कार्य किया। श्री हनुमान प्रसाद राजस्थानी हिन्दी के आशुकवि हैं और आज की राजनीति पर इनके तीखे व्यंग बहुत गहरी चोट करते हैं। वे आजकल अपने गाव में ही रहते हैं।

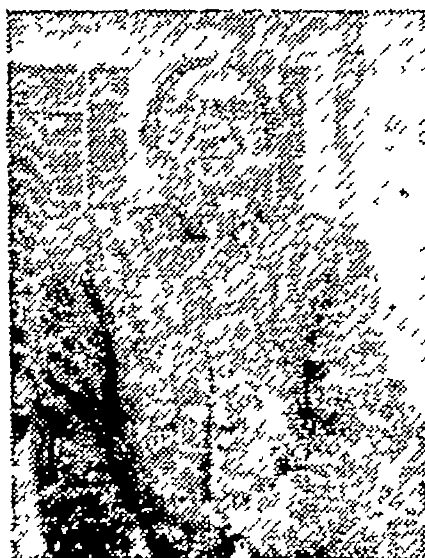
श्री सूआलाल उर्फ सुखदेव आर्य



श्री सुवालाल झुझनू जिले की पचेरी बडी के कलाल श्री भूरखा के पुत्र हैं। 1937 मे इन्होने अपने दो मित्र शैतानसिह और नारायण सिंह के साथ पचेरी के अत्याचारी जागीरदार को जान से मार दिया था। इसे मारकर तीनो अभियुक्तो ने जयपुर आकर राज्य के आगे अपना आत्म-समर्पण कर था दिया। इन्हे 32 वर्ष की सजा दी गई। जागीरदार को मारने के लिए 20 वर्ष की सजा, ऊट को मारने के लिए 2 वर्ष की सजा और मोहन दरोगा को मारने के प्रयास के लिए 10 वर्ष की सजा। 1948 मे प्रजामण्डल की लोकप्रिय सरकार बनने पर इनके मित्रो ने इनकी रिहाई की माग की। परिणामत 11 वर्ष बाद इनकी 1948 मे जेल से रिहाई हुई।

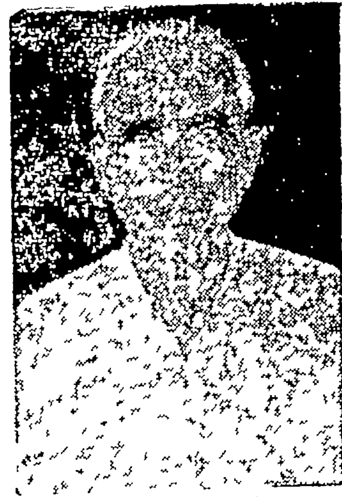
श्री सुआलाल ने जेल में ऋषि दयानन्द के वैदिक साहित्य का अध्ययन किया और जेल मे मुक्त होने पर टमकोर ग्राम के आर्य समाज मदिर मे इन्होने वैदिक धर्म की दीक्षा ले ली। ये आर्य सन्यासी बन गए। इन्होने अपना नाम शुकदेव आर्य रख लिया। जागीरदार के आतक से इनकी अनुपस्थिति में इनके परिवार वाले पाकिस्तान चले गए। आजकल ये पचेरी बडी मे प० ताडकेश्वर शर्मा के साथ अकेले रहते है और जिले मे जनसेवा के कार्य में लगे रहते हैं।

श्री हरदेवसिंह पातुसरी ✓



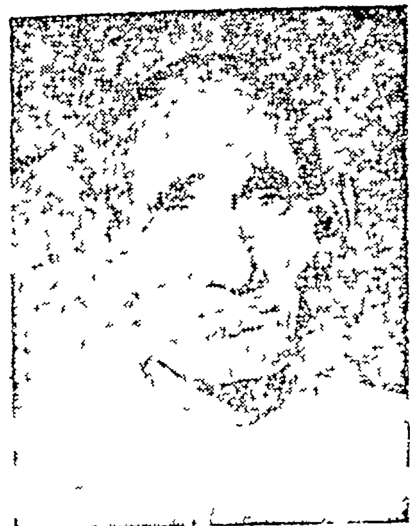
श्री हरदेव सिंह पातुसरी शेखावाटी के एक कर्मठ किसान नेता है। किसानो के हितो की रक्षा के लिए इनका सदा जागीरदारो से सघर्ष रहा है। भूमि का बन्दोबस्त, भूमि पर अधिकार और लगान की दरो को लेकर इन्होने किसानो के आन्दोलन को सगठित किया। मडावा जागीरदार ने इनके घरो को लूट लिया था। भयकर प्रतिकूल परिस्थितियो मे भी श्री हरदेव सिंह न कभी जागीरदारो के आगे झुके और न कोई समझौता किया। पातुसरी मे इनके साथी बालूराम और मुकद राम के भी घर लूट लिए गए थे। श्री हरदेव सिंह किसान सभा, प्रजामण्डल और काग्रेस के कर्मठ कार्यकर्त्ता रहे है।

श्री हर नन्द राम एडवोकेट



श्री हरनन्द राम झुझनू जिले की अजाडी-कला ग्राम के मूल निवासी हैं। जाति से जाट हैं। उम्र 60 वर्ष की है। डूडलोद के जागीरदार के कर्मचारियो ने प्रारभ मे यत्नपूर्वक इन्हे कई स्थानो की स्कूलो से निरतर निष्कापित करवाने के कुचक्र चलाए थे। अन्तमे आगरा जाकर इन्होने शिक्षा प्राप्त की और वही मे 1940 मे एम० ए०, एल० एल० वी० हुए। इन्होंने किसान आन्दोलन मे सवमे बडा काम यह किया है कि भूमि मे बेदखल किए जाने वाले किसानो की इन्होने निशुल्क पैरवी की। वह प्रजामण्डल के सक्रिय सदस्य थे और बाद मे जिला काग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी के सदस्य रहे। जागीरदारो ने भूमि छुडाने के जो मुकदमे किसानो पर किए उनमे भी श्री हरनन्दराम ने अपनी निशुल्क कानूनी सेवा से पीडित किसानो को बहुत बडा योग दिया। जेल जाने वाले आन्दोलन मे श्री हरनन्दराम को इसीलिए दूर रखा गया। कि न्यायालयो मे किसानो की बिना शुल्क पैरवी करने वाला दूसरा कोई व्यक्ति नही था। श्री हर नन्द राम आज भी उसी रूप मे किसानो की सेवा कर रहे है।

श्री हरलालसिंह मॉडासी



श्री हरलालसिंह माडासी शेखावाटी किसान आन्दोलन के एक तपे हुए नेता रहे है। जागीरदारो ने इस तेजस्वी किसान नेता को परेशान करने मे कोई कसर बाकी नही रक्खी। इन्हे खेती की जमीन और रहने के मकान से बेदखल किया गया। पचासो मुकदमे इन पर बनाए गए। लेकिन श्री हरलालसिंह निरतर न्याय की अदालत मे एक के बाद एक मुकदमे जीनते गए। 1938 मे श्री हरलाल सिंह गिरफ्तार किए गए और उनको दो मुकदमो मे 1 वर्ष की सजा दी गई। उनकी मा श्री फूलादेवी और उनकी पत्नि श्री रामकोरी भी प्रजामण्डल आन्दोलन मे गिरफ्तार हुई। उनका 6 महीने का पुत्र शुभकरण भी अपनी मा के साथ जेल मे रहा। सन् 46 मे मण्डावे के ठिकाने ने श्री हरलालसिंह पर योजनाबद्ध घातक आक्रमण करवाया और उसमे श्री नेगराज कत्ल कर दिए गए। हरलालसिंह के बडे भाई के सिर मे फर्से की चोटे आइ।

श्री हरलालसिंह किसान सभा, प्रजामण्डल और कांग्रेस के कमठ कार्यकर्ता रहे है और आज भी अपने क्षेत्र मे सामाजिक और सार्वजनिक सेवा कार्यो मे लगे हुए हैं।

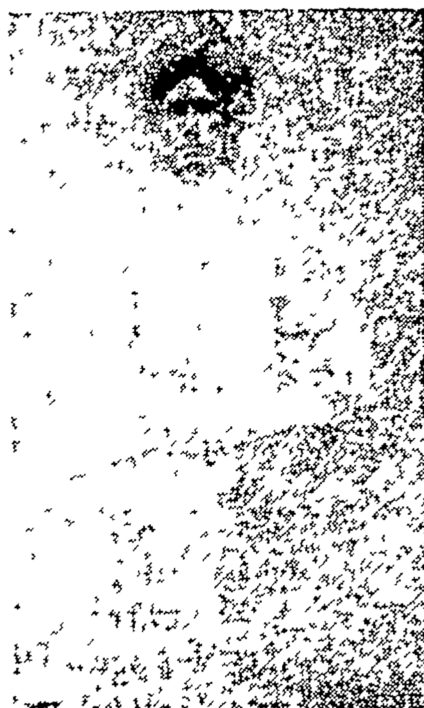
शेखावाटी के किसानों में सामाजिक चेतना लाने वाले दो अग्रगण्य व्यक्ति

साहसी निर्भीक और स्पष्टवादी योद्धा



कुरडाराम पहलवान

√किसान आन्दोलन के भामाशाह

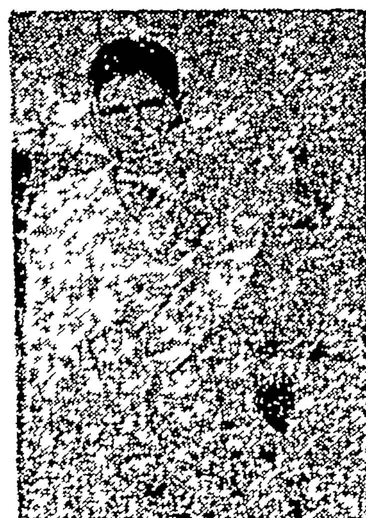


स्वर्गीय श्री भूरसिंह देवरोड

श्री भूरसिंह देवरोड के दो पुत्र जो प्रजामण्डल के सत्याग्रही बने



फतेसिंह देवरोड



हनुमानसिंह देवरोड

ये दोनों देवरोड बन्धु 1939 मे जयपुर प्रजामण्डल के सत्याग्रह मे सत्याग्रही बनकर जयपुर मे गिरफ्तार हुए और 3–3 महिने के लिए जेल में रहे

शेखावाटी में सामंती अत्याचारों का मुकाबिला करने वाले

वी र से ना नी

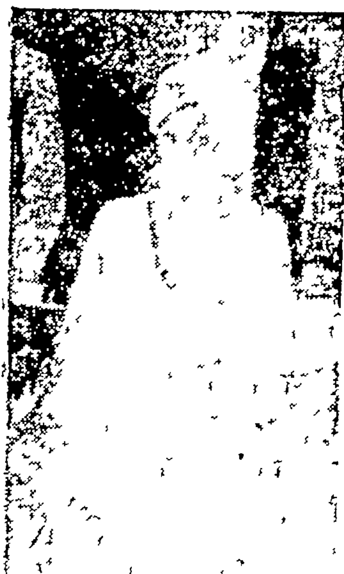
शेखावाटी के प्रमुख राजबन्दी



श्री ताराचन्द झारोडा

जिन्हे भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत 9 वर्ष की सजाए दी गई और 3½ वर्ष बाद जयपुर सेन्ट्रल जेल से जो रिहा हुए।

शेखावाटी मे किसान जागरण के जनक और मन्त्रदाता



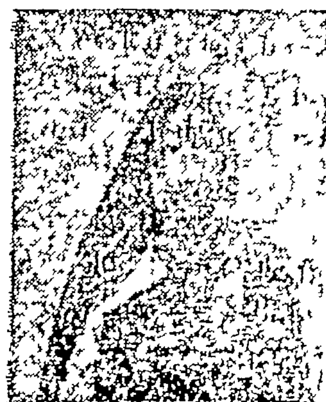
श्री पन्नेसिंह देवडरोड

किसान आन्दोलन के दूरदर्शी सलाहकार और समर्थक



श्री मुखराम उदयपुरिया

त्याग और बलिदान की जीवन्त प्रतीक



घरढाणा के किसान नेता इन्द्राजजी की वीर पात्र जैतो देवी

श्री कन्हैयालाल मास्टर



श्री कन्हैयालाल मास्टर का जन्म सन् 1912 मे फतेहपुर तहसील के सरूपसर गाव मे हुआ था। सीकर मे जाट किसान पचायत बनी और प्रजापति यज्ञ रचा गया उस समय तक वे अपनी शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। मार्च 1935 मे जो खूडीकाड हुआ उस समय वह मैट्रिक की परीक्षा देने जयपुर आए थे। अपनी परीक्षा के बाद श्री कन्हैयालाल मास्टर आन्दोलन मे शामिल हो गए।

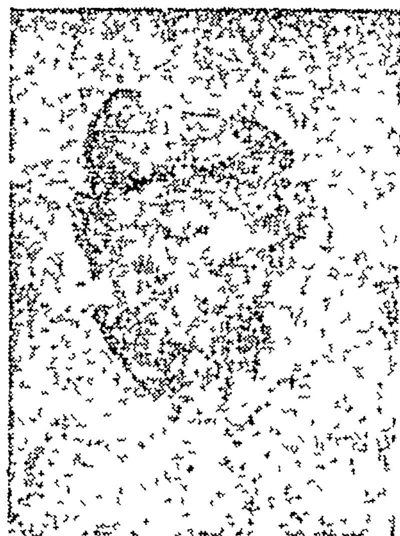
जब किसान पचायत ने लगान-बदी की घोषणा की उस समय मास्टर कन्हैयालाल ने एक उत्साही कार्यकर्ता की तरह गाव गाव जाकर किसान पचायत के लगान-बदी के निर्णय से लोगो को अवगत किया। वे किसान पचायत के मत्री चुने गये। प्रजामडल के आन्दोलन मे श्री कन्हैयालाल मास्टर श्री किसनसिह बाटड के साथ गिरफ्तार हुए। उन्हे 17 दिन मोहनपुरा मे रख कर बरी कर दिया गया। सरूपसर के बटाम के जागीरदारो ने कन्हैयालाल की 150 बीघा जमीन और 4 कच्चे मकानो वाली गुवाडी पर नाजायज कब्जा कर लिया। किसान पचायत की ओर से हर जागीरी इलाके मे सघर्ष समिति बनाई गई थी।

जागीरदारो के साथ सघर्ष का आधार था बाटा तुडने व पेमायश करा कर किसानो को खतौनी दिलवाना। इसके लिए मौलासी मे जो किसानो की सभा हुई उसमे हथियार बद भोमियो ने घातक आक्रमण किया और नेत्रराम कसवाली के पाव के आर पार गोली निकल गई। बटाट मे जागीरदारो ने आक्रमण मे दो किसानो को जान से मार दिया।

इस तरह से मास्टर कन्हैयालाल सीकर जिले के किसान आन्दोलन के साथ सबद्ध रहे और 1935 से 1954 तक निरतर जागीरदारो के साथ सघर्ष रत रहे। 1955 से 1972 तक वे हिरना ग्राम पचायत और फिर आठवास ग्राम पचायत के सरपच बनते आ रहे हैं।

1944-45 मे उन्होंने रेल्वे स्टेशन पर 7 बीघा जमीन लेकर एक किसान छात्रावास की स्थापना की है। अब श्री कन्हैयालाल मास्टर ग्राम पचायत और पचायत समिति के माध्यम से किसान और देहाती जनता की सेवा कर रहे हैं।

श्री किशनसिंह बाटड़

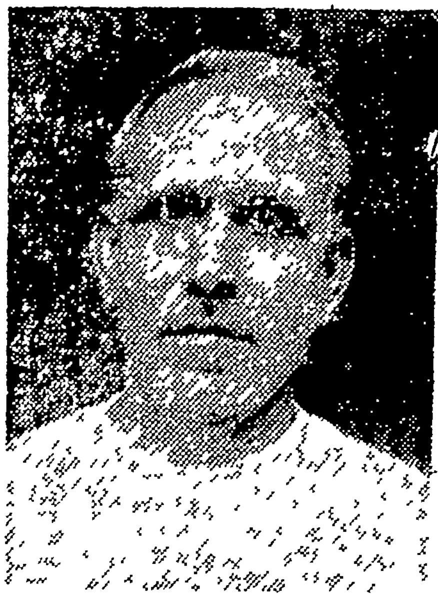


श्री किशनसिंह बाटड सीकर जिले की तहसील लक्ष्मणगढ के बाटडा नाऊ ग्राम के मूल निवासी हैं। वे 63 वर्ष की उम्र के है। वे शेखावाटी मे किसान जागरण के अग्रदूत और अग्रगण्य नेता है और उनका पूरा जीवन जागीरदारो से निरतर सघर्ष करते करते बीता है। जयपुर प्रजामण्डल के आन्दोलन मे उन्होने तीन महीने की सजा मोहनपुरा कैप मे पूरी की थी लेकिन किसनसिह बाटड को पुलिस किसानो के हर आन्दोलनमे गिरफ्तार करती रही है और 10-15 दिन इन पर आमानुषिक क्रूरताओ का प्रयोग करके छोडती रही है। जागीरदारो के साथ निरतर सघष करते रहने के कारण उनका 100 बीघा खेत बेदखल कर दिया गया था और उन्हे अपना मूल गाव छोडकर जगल मे अलग ढाणी बसा कर रहना पडा।

श्री किसनसिंह बाटड 1930-31 से किसान आन्दोलन का सीकर मे सचालन करने लग गए थे। उनकी मागे उस समय थी कि जमीन की चकबदी कराकर किसानो को उसके पर्चे दिए जाए, किसानो से बेगार नही ली जाए और गावो मे शिक्षा का प्रचार करने के लिए स्कूल खोले जाए। 1934 मे सीकर मे जाट प्रजापति महायज्ञ किया गया और इसके बाद उन्होने यह तय किया कि जागीरदारो को भूराजस्व नही दिया जाए। इसी प्रसग मे हजारो किसान कूदन ग्राम मे एकत्रित हुए थे। वहा सैकडो पुलिस वाले और ठिकाने के कर्मचारी पहुचे जहा लाठी चार्ज हुआ, गोलीये चली। 5 किसान गोलियो से भून दिए गए। फिर तो जयपुर से पुलिस के दस्ते सीकर मे उमड पडे। गाव-गाव मे लोगो को घरो मे जा जाकर पीटा गया, औरतो को बेइज्जत किया गया। पुलिस के और ठिकाने के अत्याचारो की हद हो गई। सैकडो किसान गिरफ्तार कर लिए गए। श्री किसनसिह बाटड कूदन गोलीकाड से नेताओ को अवगत कराने अजमेर गए थे। अजमेर से जयपुर आते ही वे गिरफ्तार कर लिए गए।

1936 मे दौसा मे मीणो के आन्दोलन मे भी श्री किशनसिंह बाटड गिरफ्तार कर लिए गए थे परन्तु 8-10 दिन के बाद उन्हें छोड दिया गया। जयपुर प्रजामण्डल आन्दोलन मे उन्हें गिरफ्तार करके मुकदमा चलाया गया। बरी हो जाने पर पुलिस ने उन्हे रिहा होते ही दूसरा मुकदमा लगा कर वही रख लिया। जब जयपुर के दीवान राजा ज्ञाननाथ सीकर के दौरे पर गए तो उन्हे गिरफ्तार करके सीकर जेल मे बिठा दिया। बटोट ठिकाने के किसानो के झगडे मे उन्हे फिर गिरफ्तार किया गए और 10-12 दिन बाद उन्हे छोड दिया गया। कुल मिलाकर श्री किसनसिंह बाटड लम्बे समय तक जेल मे रहे। पुलिस की लाठी, मार पिटाई का तो कोई हिसाब ही नही है। आजकल वे सीकर मे अपने पुत्र के साथ रहते है। उनका पता है—आनन्द नगर, सीकर।

श्री गोविन्द नारायण पुरोहित हिन्दुस्तानी



श्री गोविन्द नारायण पुरोहित हिन्दुस्तानी का जन्म 18 अक्टूबर 1913 को सीकर जिले के जागीर गाव पचार मे हुआ था। 1934 में उनके मन में गाधीजी से मिलने की आई और दिल्ली जाकर उन्होने गाधीजी के दर्शन किए। गाधीजी ने उन्हें उस समय कहा था कि दूसरो के दोष मत देखो, अपने आपको ठीक बनाओ।

1935 में पलथाणा में हरिजनो के लिए जब सवर्णों ने कुआ बन्द कर दिया तब राजपूताना हरिजन सेवक सघ की ओर से श्री हिन्दुस्तानी को जाच के लिए पलथाणा भेजा गया। श्री हिन्दुस्तानी ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर पलथाणा के सवर्णों का हृदय जीत लिया और हरिजनो के पानी की व्यवस्था करवाई। गाधीजी ने हरिजन मे लिखा था कि श्री गोविन्द नारायण शर्मा ने पलथाणा के सवर्णो को कोई उत्तेजना नही दिलाई और हरिजनो के जलकष्ट मे साथ देकर अपने सेवक धर्म का पालन किया।

1936 मे श्री गोविन्द नारायण हिन्दुस्तानी जन-सघ नाम की सस्था बनाई परन्तु जयपुर में प्रजामण्डल का गठन हो जाने के बाद उसी के साथ वे लग गए। 1939 के प्रजामण्डल के आन्दोलन मे उन्हे 6-6 महिने की दो सजाए दी गई जो साथ-साथ चली। वे 1939 की 21 फरवरी को गिरफ्तार हुए और 21 अगस्त को रिहा। 1938 से 40 तक अनेको बार उनके घर की तलाशियें मे होती रही और पुलिस उनके कई कागज उठा ले गई।

जेल मे रिहा होने के बाद प्रजामण्डल द्वारा जागीरी अत्याचार जाच कमेटी का कार्य उन्हें सौंपा गया। उन्होने अपने आपको खतरो मे डाल कर कई छोटे बडे ठिकानो के अत्याचारों की जाच की और अपनी सर्वेक्षण की रिपोर्ट प्रजामण्डल को पेश की। प्रजामण्डल के सगठन के लिए उन्होंने आमेर और मालपुरा की तहसीलो को चुना और दोनो तहसीलो के सभी कस्बों मे उन्होने प्रजामण्डल को सगठित किया। श्री दामोदरलाल व्यास (भूतपूर्व गृह मन्त्री) श्री हिन्दुस्तानी की प्रेरणा से ही राजनीति मे सक्रिय हुए। इसी प्रसग मे चौमू की एक जनसभा मे उन पर घातक हमला किया गया।

1942 मे श्री हिन्दुस्तानी की बुद्धिमता मे श्री रत्नाकर भारतीय के विस्फोटक पदार्थ पुलिस के हाथ आने मे बच गए। श्री रघुराजसिंह के अजमेर जेल से फरार होने पर श्री हिन्दुस्तानी ने उन्हें दक्षिण भारत पहुचाया और अपने वारण्ट से बचने के लिए वे उडीसा चले गए।

जागीरदारो ने उनकी 87 बीघा जमीन और तीन पक्के कुए उनके कब्जे से छीन लिए थे जो अभी तक उन्हे नहीं मिले। श्री हिन्दुस्तानी ने 1956 से 72 तक पूरे 16 वर्ष वनस्थली विद्यापीठ मे कार्य किया है।

श्री देवीदत्त निडर, रामगढ़ सेठों का (सीकर)



श्री देवीदत्त निडर राजस्थान का एक असाधारण व्यक्तित्व है। गाधी विचारधारा और सत विनोवा का सदेश लेकर तिरगा झडा हाथ मे लिए यह व्यक्ति निरन्तर वर्षों से नगे पाव पदयात्रा किए जा रहा है। गाव गाव मे ठहर कर देहात के लोगो को तथा स्कूल के छात्रो को गाधीजी की विचारधारा, विनोवा का भूदान और सर्वोदय आन्दोलन, इन्दिरा गाधी का गरीवी हटाओ का कार्यक्रम, और लोकतन्त्री समाजवाद के बुनियादी सिद्धाण्त समझा कर यह मिशनरी और राजनैतिक परिव्राजक एक गाव से दूसरे गाव चल देता है। अपने भाषणो के वाद श्री देवदत्त निडर 5–5, अथवा 10–10 पैसो की कीमत वाला साहित्य वेचते है। उनके जीवन निर्वाह का यही आधार है।

श्री देवीदत्त निडर का जन्म अपने समय के प्रसिद्ध शिल्पी श्री गोगराज जागिड के यहा 22 फरवरी 1921 को हुआ। सामान्य शिक्षा प्राप्त करने के वाद श्री देवीदत्त निडर ने झुन्झुनू मे जकात के महकमे मे राजकीय सेवा शुरू की थी। उनके पिता कट्टर आर्य समाजी और जागीरदारी प्रथा के कट्टर विरोधी थे। उन्होने सीकर ठिकाने की वेगार प्रथा के विरुद्ध विद्रोह खडा कर दिया था। श्री देवीदत्त निडर ने अपने गाव आकर पिता को सत्याग्रह करते देखा तो वे भी उन्हे सहयोग करने लगे परिणामत उन्हे राजकीय सेवा से अलग कर दिया गया।

तभी से श्री निडर हाथ मे तिरगा झडा लेकर स्वराज्य का प्रचार करने को निकल पडे। 1943 मे चुरू की पुलिस ने आपकी वुरी तरह वेरहमी से पिटाई की। रामगढ की पुलिस भी उन्हे सदा तग करती रही। अन्त मे स्वामी रामभजनदासजी के सहयोग से उन्होंने रीगस मे कुटिया बनाकर रहने का तय किया। उनकी कुटिया राजनैतिक प्रवृतियो का केन्द्र वन गई। परन्तु कुछ असामाजिक तत्वो ने उनकी कुटिया मे भी आग लगादी। खूड, खाचरियावास और दाता के जागीरदारो ने निडर का विरोध शुरू किया और लुणियावास मे जागीरदारो के लोगो ने उन पर प्राणघातक हमले किए।

श्री देवीदत्त निडर रचनात्मक कार्यों के लिए अपना जीवनदान दे चुके हैं। लेकिन वे राज्याश्रय से चलने वाले खादी सस्थानो और भूदान तथा सर्वोदय की सस्थाओ के साथ समन्वय नही कर पाते। उनका मनना है कि सर्वोदय की सस्थाओ मे भी नैतिकता का अभाव आ रहा है। वे किसी सस्था के वेतन भोगी कर्मचारी नही है। वे अपनी अन्तर आत्मा की प्रेरणा से कार्य करने वाले एक गाधीवादी मिशनरी हैं और गाव गाव मे सत्य का सदेश फैला रहे है।

श्री पन्नेसिंह

निधन—10 दिसम्बर 70

श्री पन्नेसिंह सीकर जिले की तहसील लक्ष्मणगढ के ग्राम बाटडा नाऊ के रहने वाले थे। 7 वर्ष की आयु मे उनके पिता का स्वर्गवास हो गया था। 16 वर्ष तक वे अपने ननिहाल मे रहे। जब अपने गाव मे आए तो मालूम पडा कि ठिकाने ने उनकी जमीन किसी और के नाम कर दी है। आपने 16 वर्ष की उम्र मे ही सीकर रावराजा से आबू मे मिलकर अपनी भूमि पर अधिकार प्राप्त करने के आदेश करवाए।

1925 मे पुष्कर मे जाट महासभा के अधिवेशन मे भरतपुर के महाराजा के भाषण से वे अत्यन्त प्रभावित हुए। वही से उन्होने सत्ता और हुकूमत के अन्याय का विरोध करने की प्रतिज्ञा ली और वही से समाज मे शिक्षा का प्रचार करने का उन्होने सकल्प लिया।

1925 के बाद उन्होने सीकर जिले के किसानो को जागृत और सगठित करने का प्रयत्न किया। उस समय सीकर के किसानो के पाच नेता माने जाते थे। वे थे सर्व श्री हरीसिह, ईश्वरसिह, गोरूसिह, पृथ्वीसिह और पन्नेसिह। सीकर के जागीरदारो की इन पाचो नेताओ पर कडी आख थी। 1933 तक उन्होने सीकर किसानो के हौसले बहुत बुलन्द कर दिये थे और भूमिसुधार के लिए किसान हर तरह की कुर्बानी करने को तैयार हो चुके थे। 1933 मे जाट प्रजापति महायज्ञ हुआ जिसमे लाखो किसान सम्मिलित हुए। सीकर रावराजा किसानो की उस जागृत शक्ति से आतकित हो गए और उन्होने इन पाचो नेताओ को आजमगढ किले मे बन्द कर दिया। उस समय सीकर ठिकाने की परम्परा यही थी कि उस गढ से कोई जिंदा नही लौटता, मरने पर उसकी लाश ही आती थी। परन्तु सात दिन बाद उन्हे सीकर सैंट्रल जेल पहुचा दिया गया और वहा से कुछ दिन बाद रिहा कर दिया। खूडी के सघर्ष के सिलसिले मे श्री पन्नेसिह को सीकर से दो वर्ष का निर्वासन भोगना पडा।

श्री पन्नेसिह ने जयपुर राज्य प्रजामण्डल के आन्दोलन मे सक्रिय रूप से भाग लिया। वे प्रजामण्डल के सक्रिय कार्यकर्ता थे। 1942 मे भी उनकी गिरफ्तारी के वारन्ट कट गए थे परन्तु वे भूमिगत होकर कार्य करते रहे। वे भूमि सुधारो के लिए और किसानो को भूमि पर अधिकार दिलाने के लिए 1948 तक निरन्तर सघर्ष करते रहे।

10 दिसम्बर 70 को अकस्मात् उनकी हृदय गति रुक जाने से मृत्यु हो गई।

श्री बंशीधर शर्मा, श्रीमाधोपुर

पता—श्रमजीवी सघ, श्रीमाधोपुर (जिला सीकर)

श्री वशीधर शर्मा राजस्थान के एक निस्पृह श्रौर तपोनिष्ठ लोक–सेवक है। उन्होने शोषण श्रौर शासन से मुक्त किसान जीवन जीने के श्रनेको सफल प्रयोग किए हैं। उन्होने एक उत्पादक श्रमिक के रूप मे राष्ट्र का सेवक बनकर अपने श्रम से उपार्जित साधनो के द्वारा राष्ट्र की सम्पति का उत्पादन और वृद्धि करने का निरन्तर यत्न किया है। वे स्वतन्त्र जीवन के विकास के लिए राज्याश्रय को आवश्यक नही मानते।

1929 मे जब पण्डित हीरालाल शास्त्री ने वनस्थली मे जीवन कुटीर की स्थापना की थी तो श्री वशीधर शर्मा जीवन कुटीर मे उनके पहले साथी थे जो पिलानी कालेज को छोड कर उनके साथ आ गए थे। पण्डित शास्त्री के साथ 1½ वर्ष की कठोर साधना के बाद श्री वन्शीधर शर्मा ने अपनी जन्म भूमि श्री माधोपुर मे श्रमजीवी सघ की स्थापना की और यही से सीकर जिले मे चेतना के नए सस्कार फैलने लगे।

श्रमजीवी सघ के माध्यम मे श्री वन्शीधर शर्मा ने वस्त्र-स्वावलम्बन का आधार लेकर समग्र ग्राम जीवन को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक स्वावलम्वन के मन्त्र से दीक्षित करने का यत्न किया है। श्रम जीवी सघ की दिन–चर्या और कर्म की प्रक्रिया शोषण-मुक्त और शासन-मुक्त समाज की नव रचना की दिशा मे एक क्राति मूलक प्रयोग है।

श्री वन्शीधर शर्मा 1939 मे प्रजामण्डल के आन्दोलन मे सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार हुए थे। उन्हें 4 महीने की सजा हुई थी। वे 1945–46 मे जयपुर राज्य की धारा सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे। उन्होने लोक आन्दोलन सगठित करके जुरायम पेशा जातियो के क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट को रद्द करवाने मे सफलता प्राप्त की थी। श्री शर्मा वर्षो तक राजस्थान प्रदेश काग्रेस कमेटी के सदस्य भी रहे हैं। वे 1945–46 मे राजस्थान मीणा सेवा सघ के अध्यक्ष थे। श्री शर्मा के पास श्रम जीवी सघ मे विदेशो से भी सार्वजनिक सेवा कार्य करने वाले लोकसेवक आते रहते हैं। 1960 मे खडेले के पास लेहरीपुरा ग्राम मे अन्तर्राष्ट्रीय शिविर लगाकर आस्ट्रीया के लोक सेवको के सुझाव पर वन सम्पदा वढाने के लिए वृक्षारोपण किया था। इसी तरह सर्विस शिविल इटरनेशनल के स्वयसेवको द्वारा उन्होने श्रीमाधोपुर मे और राजस्थान खादी ग्रामोद्योग सस्था सघ मे इटरनेशनल हॉल विश्व भवन के नाम से दो भवनो के निर्माण कार्य पूरा करवाकर विश्वबन्धुत्व की भावना श्रौर सास्कृतिक आदान प्रदान का एक आधार राजस्थान मे खडा कर दिया है।

श्री रामस्वरूप हिंदका रींगस

श्री राम स्वरूप हिंदका सीकर जिले के एक पुराने सामाजिक और राजनैतिक कार्यकर्ता हैं। इनका जन्म सवत् 1974 की आश्विन कृष्णा 9 को खंडेलवाल ब्राह्मण परिवार मे हुआ। इनकी शिक्षा मैट्रिक तक हुई है।

श्री हिंदका विद्यार्थी काल से ही राष्ट्रीय प्रवृतियो से सलग्न रहे। वे गावो मे जाकर ग्रामीणों व किसानो मे राजनैतिक जागृति के लिए काग्रेस और गाधीजी के कार्यक्रमो का प्रचार किया करते थे। 1930 मे इन्होने ग्राम सुधार सभा नाम की एक सस्था बनाई। 1933 तक सीकर खंडेला, श्री माधोपुर, रीगस के आस पास के क्षेत्रो मे इसकी शाखाए खुलगई और जागीरी जुल्मो से टक्कर लेने के लिए प्रचार, प्रसार, आन्दोलन सभा, समारोह और व्यक्तिगत सपर्कों से इस सस्था ने लोगो मे सामाधारण लोक चेतना जगा दी। इस सस्था ने स्थान स्थान पर हरिजन पाठशालाए, रात्रि पाठशालाए चलाई और जगह जगह वाचनालय व पुस्तकालय स्थापित किए। श्री हिंदका ने नाटक मडिलयें भी स्थापित की और इनके द्वारा राजनैतिक जागरण लाने की कोशिश की।

1936 मे जयपुर राज्य प्रजामण्डल का पुनर्गठन होने पर श्री हिंदका अपनी पूरी शक्ति के साथ प्रजामण्डल के कार्य मे लग गए और जिम्मेवार हुकुमत के लिए लोक मत बनाने लगे। 1938 मे सीकर राव राजा और जयपुर महाराजा के किसी निजी मामले को लेकर स्थिति तनावपूर्ण हो गई। उस तनावपूर्ण समय मे रीगस मे भी जनता सगठित हुई। आस पास के गावो के 5–6 हजार व्यक्ति हर समय तैयार रहते थे। श्री रामस्वरूप हिंदका रीगस के इस सगठन के प्रणीता थे।

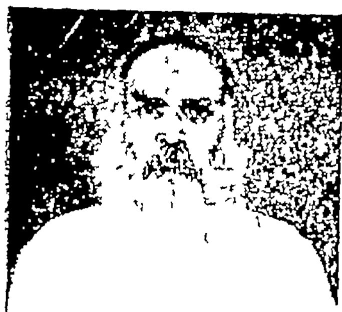
1939 मे जयपुर प्रजामण्डल के आन्दोलन मे श्री रामस्वरूप हिंदका ने सत्याग्रह मे भाग लिया और उन्हें 4 महीने की सजा हुई। राजनैतिक प्रवृतियो मे रुचि होने के कारण आगे पढाई नही कर सके। श्री हिंदका ने राजस्थान राज्य मीणा सुधार समिति के माध्यम से अपराध शील जातियो के अधिकारो की लडाई लडी और खादी एव ग्रामोद्योग सस्था सीकर के माध्यम से रीगस मे रचनात्मक कार्यों की नीव डाली और अब भी उसे चला रहे हैं। श्री हिंद का सर्वोदय कार्यक्रम मे भाग लेकर ग्रामदान, नशाबदी आदि कामो मे भी लगे रहे है। ये आजकल रीगस मे ही रहते हैं।

चौधरी लादूराम बिजयराणियाँ

चौधरी लादूराम विजराणिया ने सीकर जिले के किसानो मे जागृति लाने के लिए अथक कार्य किया था। इन्होने सीकर जिले के एक एक गाव का कई बार दौरा किया है। राष्ट्रीय प्रवृतिया मे श्री लादूराम सन् 30 से ही लग गए थे। स्वराज्य और स्वतत्रता का सदेश घर घर पहुचाने के लिए उन्होंने साहित्य का प्रकाशन और वितरण करवाया। सभी किसान आन्दोलनों मे इन्होंने अग्रगणय रूप से भाग लिया। भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत इन्हे कई बार हवालातो से बन्द किया गया और छोडा गया। जयपुर राज्य ने भी इन्हे भारत सुरक्षा कानून के मातहत कई दिन तक खाट पुलिस थाने मे बन्द रखा।

चौधरी लादूराम 10 वर्ष तक राजस्थान विधान सभा के सदस्य रहे हैं। इन्होंने अपने क्षेत्र मे सहकारी आन्दोलन को भी उत्साह से आगे बढाया।

श्री व्यंकटेश पारीक



जन्म— सवत 1968 ज्येष्ठा शुक्ला 1
पता— लक्ष्मण गढ (सीकर)

श्री व्यकटेश पारीक सीकर जिले के अत्यत लोकप्रिय जन–सेवक हैं। सीकर जिले मे प्रजा मण्डल की स्थापना और गांव गाव मे उसका प्रसार करने मे इन्होने प्रारम्भिक दिनो की प्रतिकूल परिस्थितियो मे अथक परिश्रम किया था।

श्री व्यकटेश पारीक का जन्म सवत् 1968 की ज्येष्ठ शुक्ला प्रतिपदा को प० जानकीलालजी पारीक के यहा हुआ। इनकी शिक्षा सस्कृत मे हुई। कलकत्ते की व्याकरण तीर्थ और जयपुर की शास्त्री परीक्षा इन्होंने पास की थी। श्री व्यकटेश जी का ज्योतिष का अध्ययन भी बहुत गहरा है।

श्री व्यकटेश पारीक विद्वान होने के साथ एक ओजस्वी और प्रभावशाली वक्ता भी है। उन्होने सीकर जिले के एक एक गाव मे अनेको बार घूम घूम कर जनता को जागीरी अत्याचारो के विरुद्ध उठ खडे होने की प्रेरणा दी है। इन्होने गाव गाव में गाधीजी, काग्रेस और स्वराज्य का सदेश सबसे पहले पहुचाया था। प्रजा मण्डल के गठन तक सीकर में जाट किसान पचायत कार्य करती थी। श्री पारीक को तब सीकर के गावो और कस्बो मे प्रजा मण्डल की नीव लगाने में बडा जोर पडा था।

श्री व्यकटेश पारीक ने बेगार के विरुद्ध आन्दोलन शुरु किया और फिर गोला प्रथा के विरुद्ध उन्होंने मोर्चा बदी शुरू की। उनके प्रयत्नो से जागीरदारो और राजपूतो के यहा पलनेवाली गुलामो की प्रथा और परम्परा पहले सीकर ठिकाने में समाप्त हुई और बाद मे अन्य ठिकानो में। श्री व्यकटेश पारीक के जीवन काल म सन् 1930 से 47 तक का समय राजनैतिक दृष्टि से अत्यत महत्वपूण था। इन वर्षो में सीकर के किसी नगर, कस्बे या गाव में कोई सामाजिक या राजनैतिक कार्य व्यकटेश पारीक के बिना अधूरा रहता।

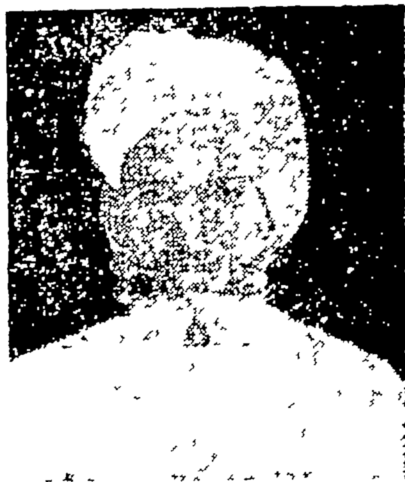
1939 में प्रजामण्डल के आन्दोलनमे श्री व्यकटेश पारीक ने अपने सीकर के साथियो के साथ सत्याग्रह मे भाग लिया और पूरे समय तक जेल मे रहे। भारत छोडो आन्दोलन में भी श्री पारीक जेल मे रहे। छोटी मोटी हवालात और सजाए तो उन्हे अनेको बार हुई है।

आजकल श्री व्यकटेश पारीक सन्यास आश्रम में हैं और विद्यार्थियो को सस्कृत का अध्ययन करवा रहे हैं कि जिससे वे आगे जाकर भारतीय सस्कृति का सम्यक प्रचार कर सकें।

श्री हरी सिंह पलथाणा

जन्म — संवत 1941 चैत्र शुक्ला 9

निधन —संवत् 2023 मार्गशीर्ष पूर्णिमा



श्री हरीसिंह पलथाणा का जन्म संवत् 1941 की चैत्र शुक्ला 9 को सीकर जिले के पलथाणा ग्राम के एक किसान (जाट) परिवार में हुआ था। उनकी शिक्षा तो सामान्य ही थी परन्तु बचपन से ही वे अत्यन्त साहसी, स्पष्टवादी, निर्भीक और अन्याय का विरोध करने वाले सत्यनिष्ठ व्यक्ति थे। उन्होंने सीकर रावराजा के अत्याचारों का मुकाबला करने का साहस किसानों में जगाया और 1933 में सामन्तशाही के विरुद्ध किसानों को व्यापक आन्दोलन के लिए प्रेरित किया। सीकर जिले के तमाम किसानों ने उन्हें अपना सरपंच (नेता) चुना।

श्री हरिसिंह ने 1934 में खूडी ग्राम में सामंती ताकतों के साथ जो किसान संघर्ष हुआ उसमें और 1935 में कूदन में किसानों के संघर्ष में समस्त किसानों का नेतृत्व किया। उन्होंने भूमि के बन्दोबस्त, भूमि के अधिकार, भूमि के पर्चे और लगान की दरें तय कराने के लिए जागीरदारों से संघर्ष किया था और जब जब इसमें उन्हें सफलता नहीं मिली तो उन्होंने लगान-बन्दी का नारा दे दिया जिसके परिणाम स्वरूप जयपुर राज्य की पुलिस की सहायता से खूडी और कूदन में अमानवीय हत्याकांड हुए।

सीकर ठिकाने ने उन्हें एक बार देवगढ़ के किले में कई महीनों के लिए बन्द कर दिया गया था। 14 महीने तक वे सीकर ठिकाने से निष्कासित रहे। अपने निर्वासन काल में उन्होंने अजमेर में सर्व श्री जयनारायण व्यास और हरिभाऊ उपाध्याय से सम्पर्क करके सीकर के किसानों की स्थिति को पत्रों में प्रकाशित करवाया।

पलथाणा गांव में जो स्कूल उन्होंने प्रारम्भ किया था उसे भी जागीरदार के लोगों ने तोड़ फोड़ कर जमींदोज कर दिया।

श्री हरिसिंह 1930 से 1947 तक निरन्तर सामंती शक्तियों से संघर्ष करते रहे। वे प्रजामण्डल के सीकर जिले में अग्रणी नेता थे। उन्हीं के प्रयत्नों से भूमि का बन्दोबस्त हुआ और किसानों को भूमि के पर्चे मिले तथा लगान की दरें तय हुई।

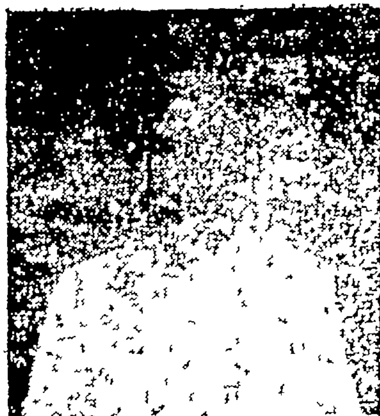
सन् 1966 में अर्थात् संवत् 2023 मार्ग शीर्ष शुक्ला पूर्णिमा को उनका स्वर्गवास हो गया।

श्री कुमार नारायण चौधरी



श्री कुमार नारायण का जन्म चौधरी जालूरामजी के घर पर सरूपसर मे सन् 1919 मे हुआ। 1943 मे उन्होने बी० ए०, एल० एल० बी० की परीक्षा पास की और सीकर मे वकालत करने लग गए। 1944 मे वे प्रजामण्डल के टिकिट पर जयपुर प्रतिनिधि सभा के सदस्य चुने गए। उन्होने प्रतिनिधि सभा मे जागीरी अत्याचार और किसानो की समस्याओ के समाधान के लिए आवाज बुलन्द की। उन्होने प्रजामण्डल द्वारा आयोजित किसान सम्मेलनो मे लगातार भाग लिया। 1946 मे सीकर जिला प्रजामण्डल के अध्यक्ष रहे। श्री कुमार नारायण आजकल सीकर मे वकालात करते है।

स्वामी गोविन्द राम वैद्य



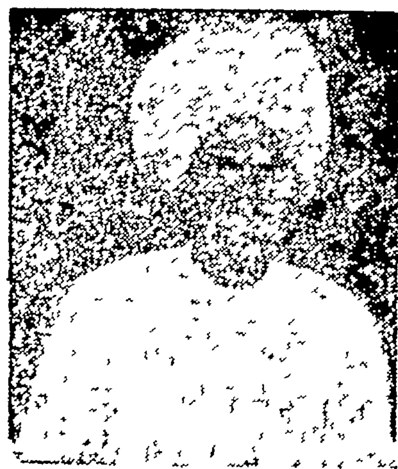
स्वामी गोविन्द राम वैद्य सीकर के निवासी है परन्तु आजकल पीपराली ग्राम के गाधी सार्वजनिक औषधालय मे चिकित्सा कार्य कर रहे है। उन्होने 1934 और 1935 मे सीकर मे जो जाट आन्दोलन हुआ था उसमे आन्दोलनकारियो को हर सभव सहयोग दिया था। जिसके कारण उन्हे पुलिस की अत्यन्त अमानुषिक मारपीट का कई बार शिकार होना पडा। इसी सिलसिले मे उन्हे 3 महीने के लिए हवालात मे भी रखा गया था। स्वामी गोविन्दराम एक सेवा-भावी देशभक्त है। आज भी वे उसी उत्साह से लोक निर्माण की प्रवृत्तियो मे सहयोग करते है। उनका जीवन पीडित मानवता की सेवा के लिए समर्पित जीवन है।

श्री चन्दर सिंह बीबीपुर बड़ा



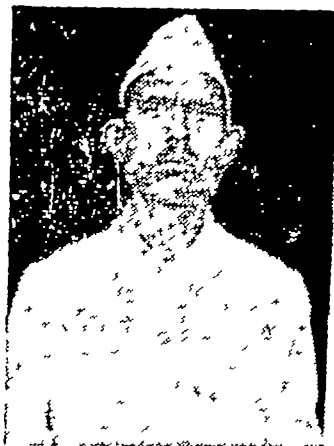
श्री चन्दरसिंह का जन्म बीबीपुर ग्राम मे ओक्टोबर 1910 को हुआ। उन्होने 1934-35 के जाट आन्दोलन मे अत्यन्त उत्साह से भाग लिया। किसानो को खतौनी दिलवाने और उनको जमीन पर मालिकाना अधिकार दिलवाने मे उन्होने निरन्तर जागीरदारो से सघर्ष किया। मौलासी हत्याकाण्ड के समय श्री चन्दरसिह मौलासी मे किसानो का सगठन करने वाले मुख्य व्यक्ति थे। इन्होने देहातो मे शिक्षा प्रचार और समाज सुधार के लिए वहुत कार्य किया है। सन् 64 मे वे ग्राम पचायत के सरपच की हैसियत से सेवा कर रहे है।

चौधरी भगवानाराम खींचड़



चौधरी भगवाना राम खीचड सीकर जिले के एक वयोवृद्ध किसान नेता है। इनकी आयु 65 वर्ष की है। इन्होने सीकर ठिकाने के अत्याचारो और अन्य जागीरदारो की ज्यादतियो के विरुद्ध निरन्तर सघर्ष किया है। सीकर में 1933 मे जाट प्रजापति यज्ञ को सफल वनाने वालो मे चौधरी भगवान राम मुख्य हैं। इन्होनें अधिक लगान, आधा वाटा, चारागाह किसानो मे वेगार और अन्य लाग वागो का विरोध किया। खूडी, कूदन वेरीग्राम, वटोट और मौलासी मे उन्होंने किसानों को सगठित किया, जगीरदारो ने हत्याकाड और गोलीकाड मचाए। वेरी ग्राम मे चौधरी भगवाना राम भी ठिकाने के लोगो की लाठी चार्ज मे घायल हो गये। प्रजामण्डल वन जाने के वाद वे प्रजा मण्डल के कर्मठ कार्यकर्ता वन गए। 1955 मे ग्राम पचायत के सरपच रहे। हरिजनो के लिए इन्होने पीने के पानी के लिए कुए वनवाए हैं और आज भी गावो की समस्याओ का समाधान करने मे लगे हुए हैं। इनका पता है—गाव खीचडों का वास पोस्ट गोकुलपुरा, जिला सीकर।

श्री मालीराम सैनी श्रीमाधोपुर



श्री मालीराम सैनी श्रीमाधोपुर तहसील के के ढाणी ड्योढा वाली के रहने वाले हैं। इनकी उम्र 55 वर्ष की है। ये जाति से माली हैं। श्री मालीराम पहले खादी भण्डार मे कार्य करते थे। 1939 मे प्रजामण्डल के आन्दोलन मे इन्होने सत्याग्रह मे भाग लिया। उन्हे 4 महिने की सजा झालाना कैंप मे पुरी करनी पडी। आजकल श्री मालीराम पचायत समिति मे कार्य करते है और पूरी निष्ठा से अपना काम करते हैं।

स्वर्गीय श्रीमती रमादेवी जोशी, सीकर

श्रीसती रमादेवी का जन्म जयपुर के गौड ब्राह्मण परिवार मे वैद्य गगा सहायजी के घर हुआ। उस समय की परम्परा के अनुसार उनका विवाह 7 वर्ष की आयु मे ही हो गया था और दैव दुर्योग से 11 वर्ष की अवस्था मे वे विधवा हो गई थी। उन्होंने अपने वैधव्य काल मे निरन्तर शिक्षा ग्रहण की। सदाचार कन्या पाठशाला मे उन्होने अपना अध्ययन किया था। श्रीमती रमादेवी अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद सीकर मे अध्यापिका हो गई थी।

सीकर मे उनका सम्पर्क गाधीवादी नेता श्री लादूराम जोशी के साथ हुआ। श्री जोशी खण्डेलवाल ब्राह्मण हैं। श्रीमती रमादेवी और श्री लादूराम का अन्तर्जातीय विवाह 1922 के करीब हो गया। विवाह के बाद उन्होंने खद्दर पहनना शुरू कर दिया और स्कूल का कार्य छोड कर वे अपने पति के साथ राजस्थान-सेवा-मघ के कार्य मे योग देने लग गई। वे बिजोलिया के किसान सत्याग्रह मे कार्य करने के लिए गई, जहा पुलिस ने उन्हें बहुत तग किया। 1930 और 1932 के सत्याग्रह मे और सविनय अवज्ञा आन्दोलन मे उन्होंने भाग लिया और दोनो बार उन्हे अजमेर की जेल मे रहना पडा। राजस्थान के महिला जागरण मे उनका महत्वपूर्ण योग रहा था। सन् 1954 मे उनका निधन हो गया।

स्वामी रामभजन दास

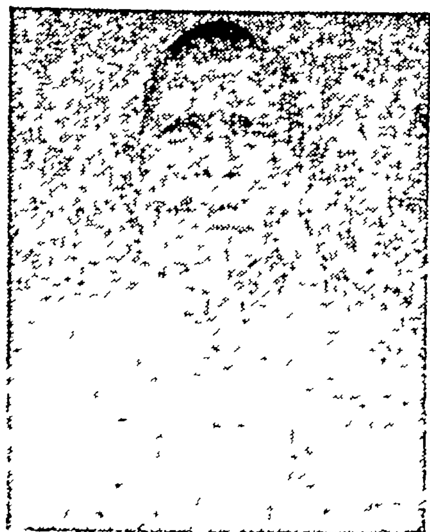
स्वामी रामभजन दास दादूपथी सम्प्रदाय के साधु थे। युवावस्था मे इनमे देश की गुलामी और सामन्तो की जुल्म ज्यादतियो का मुकावला करने का उत्साह जागृत हो गया। और उन्होने तत्कालीन स्थिति को समाप्त करने का दृढ सकल्प कर लिया। इन्होंने वनस्थली मे जीवन कुटीर के कार्य की प्रशसा सुनी और सन् 1934 मे और सन् 1939 मे पण्डित हीरालाल शास्त्री के पथ प्रदर्शन मे काम करने लगे।

सन् 1937 मे जयपुर राज्य प्रजामण्डल के पुनर्गठन के पश्चात् तत्कालीन तोरावाटी उनका कार्यक्षेत्र रहा। प्रजामण्डल के कार्यक्रम और रीति नीति के अनुसार वे निरतर कठोर श्रम के साथ प्रजामण्डल का सन्देश गाव-गाव और घर-घर पहुचाते रहे। इस कार्य मे उनका योगदान विशेष महत्वपूर्ण रहा। स्वामीजी का जीवन तपस्या मय और सेवामय था। प्रजामण्डल का काग्रेस मे विलय होने के वाद उन्होने काग्रेस का काम हाथ मे ले लिया।

आखिर मे अपनी उसी लगन के साथ रचनात्मक कामो मे जुट गये और श्री माधोपुर के पास एक विद्यालय और छात्रावास की स्थापना की जिसके सचालन के लिए दिन रात कठोर परिश्रम करते रहे। इस विद्यालय एव छात्रावास से ग्रामीण जनता मे शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय भावना का अच्छा प्रचार हुआ।

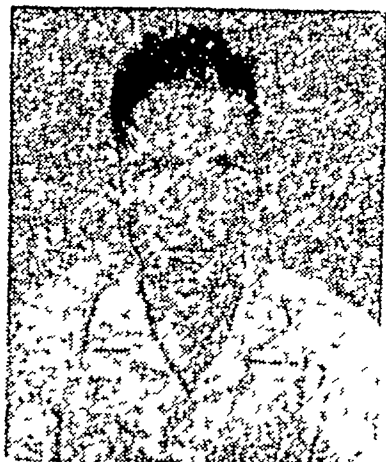
सावजनिक कामो मे निरतर लगे रहने और अपने आराम की परवाह न करने के कारण उनका स्वास्थ्य गिर गया और 55 वर्ष की आयु मे अपने कार्यक्षेत्र मे ही उनका देहान्त हो गया।

चौधरी रामलाल ढिमोली



चौधरी रामलाल 68 वर्ष की आयु के है। इन्होंने सीकर मे 1933-34 और 35 मे जो किसान सगठन और किसान आन्दोलन हुए उनमे भाग लिया था। मौलामी और वठोट के सघर्षो मे भी ये अग्रणी रूप से कार्य कर रहे थे। इन किसान आन्दोलनो के फलस्वरूप किसानो को खतौनी मिली, लाग वाग हटी और गावो मे स्कूल खुलने लगे तथा किसानो को समानता का अधिकार मिला। आन्दोलनो के वाद रामलाल चौधरी सीकर जिले के किसानो मे प्रथम श्रेणी के समाज सुधारक है। इन्होंने अपने परिवार से कई कुरीतियें समाप्त कर दी है।

श्री रामरतन गढवाल



श्री रामरतन गढवाल का जन्म 1 सितम्बर 24 को लक्ष्मणगढ तहसील के ग्राम माधोपुरा मे हुआ। 1939 मे प्रजामण्डल के आन्दोलन के समय इन्होने जोश मे आकर स्कूल छोड दिया था और जेल से बाहर रह कर आन्दोलन मे यथाशक्ति महयोग करते रहे थे। 12 दिसम्बर 55 मे 3 वर्ष तक लक्ष्मणगढकी पचायत के सरपच रहे। श्री गढवाल काग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता हैं और सीकर जिला काग्रेस की कार्यकारिणी के सदस्य रहे है। 1961 से लक्ष्मणगढ पचायत समिति के सदस्य बने और गावो के विकास और निर्माण के कामो को आगे बढाया।

श्री रूड़ाराम पालड़ी

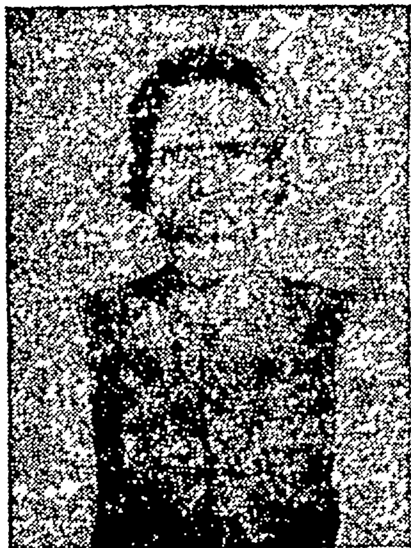
श्री रूडाराम जाट पालडी ग्राम के निवासी है। उनकी उम्र 67 वर्ष की है। उन्होने सीकर जिले के प्रत्येक किसान आन्दोलन मे उत्साह मे भाग लिया था। इन्होने लाग बागो के विरोध मे तथा भूमि के बन्दोबस्त और लगान की दरें निश्चित करने के सम्बन्ध मे सीकर जिले के जनमत को जागृत किया था। पुलिस ने इन्हे अनेको बार बुरी तरह से पीटा था। इनके दात भी पुलिस की मार मे टूट गए थे। ठिकाने की पुलिस ने इन्हे कई बार गिरफ्तार किया और छोडा। इनका समय किसानो की आर्थिक और सामाजिक स्थिति ठीक करने ही मे लगा रहता हैं।

श्री सुरजाराम



श्री सुरजाराम का जन्म सवत् 1972 को भूकराकावास मे हुआ। उन्होने किसान पचायत के सदस्य के रूप मे किसानो मे जागृति फैलाने का बहुत कार्य किया। वे 34-35 के किसान आन्दोलनो मे अत्यन्त सक्रिय थे। सीकर ठिकाने ने उन्हें दो बार गिरफ्तार किया। एक बार वे 4 महीने के लिए और दुसरी बार दो महीने के लिए सीकर की जेल म रहे। किसानो की समस्याओ के समाधान के बाद वे सामाजिक सुधार और शिक्षा प्रचार मे लगे हुए है।

श्री श्रीराम शर्मा सीकर

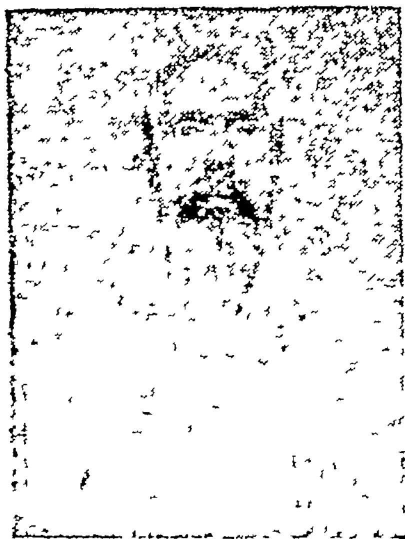


श्री श्रीराम शर्मा ने 1936 मे आयुर्वेद विशारद की परीक्षा पास करली थी। धन्वन्तरी औषधालय मे काम करने लग गए थे। 1939 मे प्रजामण्डल के आन्दोलन मे आपने जयपुर जा कर सत्याग्रह किया। आपको 4 महीने की सजा दी गई। श्रीराम शर्मा आजकल सीकर मे अपने भाई के साथ रहते हैं।

इनका जन्म 10 अगस्त 1917 को सीकर मे हुआ था।

श्री लेखराम कसवाली

श्री लेखराम कसवाली का देहान्त सन् 1952 मे होगया। ये सीकर जिले के एक अत्यन्त उत्साही, निर्भीक और सूझबूझ वाले किसान नेता थे। इनमे सगठन शक्ति और लोगो को प्रभावित करने की असाधारण क्षमता थी। जाट किसान पचायत मे श्री लेखराम 1933 मे ही पूरी तरह लग गए थे। 1934–35 के आन्दोलनो मे इन्होने पूरे उत्साह से भाग लिया था। किसान पचायत ने जव लगान। वन्दी की घोषणा की उस समय सभी जिले के किसान सौलासी ग्राम मे एकत्रित हुए थे। वही ठिकाने और राज्य की पुलिस ने किसानो पर हमला किया और गोलीकाड हुआ। श्री लेखराम चौधरी का एक पाव गोली से कट गया था। पाव कटने के सात वर्ष बाद उनका देहान्त हो गया।



स्व० हरि प्रसाद शर्मा

स्वर्गीय श्री हरिप्रसाद शर्मा का जन्म 20 जून 1915 को सीकर मे हुआ था। 1932 मे शास्त्री की परीक्षा पास करके ये सस्कृत के अध्यापक होगए थ। 1937 से ये प्रजामण्डल के कार्य मे लगे और 1939 के आन्दोलन मे श्री व्यंकटेश पारीक के साथ इन्हे भी 6 महीने तक जेल मे रहना पडा। इन्होने लम्वे समय तक वम्वई मे रह कर वहा काग्रेस का कार्य किया 1942 से इनका स्वास्थ्य खराव हो गया और 10 जून 1971 को हृदयगति रुक जाने से इनका देहान्त होगया।

राजस्थान में

स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी

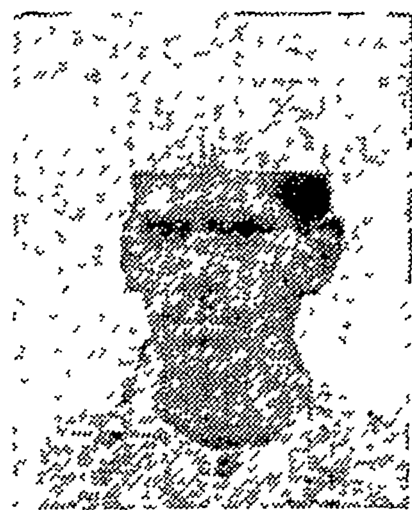
• स्वतन्त्रता के संदेश वाहक

• सत्याग्रही और

• स्वातंत्र्य - सैनिक

जोधपुर

श्री अचलेश्वर प्रसाद शर्मा



श्री अचलेश्वर प्रसाद शर्मा स्वतन्त्रता-सग्राम युग के एक तेजस्वी मिशनरी पत्रकार है। 1928 से उन्होने ब्यावर के तरुण राजस्थान के सपादकीय विभाग मे कार्य शुरू किया था। 1928 से 1937 तक वे तरुण राजस्थान के अतिरिक्त आगरे के उग्र पत्र सैनिक मे सयुक्त सपादक की तरह करीव 3 वर्ष तक रहे और वाद मे आकोला के नवराजस्थान के सपादक बने। श्री अचलेश्वर प्रसाद शर्मा ने अगस्त 35 मे भरतपुर के नेता श्री गोकुलजी वर्मा की सुपुत्री श्री कृष्णा देवी के साथ अन्तर्जातीय विवाह किया। उनका जन्म 1907 मे हुआ था।

श्री अचलेश्वर प्रसाद शर्मा के समक्ष पत्रकारिता कभी साध्य नही रही है। राष्ट्रीय चेतना के लिए जनमत को प्रशिक्षित करने और शोषित एव पीडित मानवता की आकाक्षाओ को स्वर और वाणी देने के लिए ही उन्होने विशुद्ध देश सेवा की भावना से पत्रकारिता के फर्ज का निर्वाह किया है। उन्हे 1928 से 1937 के इन 9 वर्षो मे 5 वर्ष जेलो मे विताने पडे है। उनका कुल जेल जीवन करीव 8 वर्ष का होता है। पहलीवार उनकी गिरफ्तारी नमक सत्याग्रह के समय 1930 मे हुई और उन्हे 1½ वर्ष की सजा दी गई। इस अवधि मे उनके बडे भाई का देहान्त हो गया था लेकिन वे विचलित नही हुए। दूसरी सजा उन्हे 1932 मे ब्यावर काग्रेस के डिक्टेटर के रूप मे हुई जिसमे उन्हे 1 वर्ष की सजा भुगतनी पडी। 1937 मे जब उन्होने जोधपुर राज्य प्रजामण्डल के अध्यक्ष के रूप मे अकाल की स्थिति का अध्ययन करने के बाद गिरदीकोट मे भाषण दिया तो उसके उपलक्ष मे उन्हें 2½ वर्ष की सजा दी गई।

1940 मे श्री अजलेश्वर प्रसाद शर्मा को दौलतपुर किले मे 1 वर्ष के लिए नजर-वन्द कर दिया गया था। जेल से मुक्त होने के बाद उन्होने प्रजा सेवक नाम का साप्ताहिक पत्र निकाला। प्रजासेवक राजपूताने की रियासतो का सबसे पहला और सवसे अधिक प्रभाव शाली पत्र है जिसने निरन्तर राजपूताने की रियासतो के जन आन्दोलनो को आगे वढाया है।

1942 मे लोक परिषद के जिम्मेवार हुकुमत आन्दोलन मे श्री अचलेश्वर प्रसाद शर्मा फिर गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हें पूरे दो वर्ष तक जेल मे रहना पडा।

प्रजा–सेवक के माध्यम से उन्होने राजपूताने की रियासती जनता को राजनैतिक रूप से प्रशिक्षित, जागृत, सगठित और सघर्षरत वनाया है। 1971 मे उनकी तीस वर्ष की सेवाओं के उपलक्ष मे एक नागरिक अभिनन्दन मे भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने उन्हें तीस हजार रुपये की थैली भेट की थी।

श्री अचलेश्वर प्रसाद शर्मा हरिजन सेवक सघ के अध्यक्ष रहे हैं और लोक परिषद तथा जोधपुर काग्रेस मे उनका सदा अग्रगण्य स्थान रहा है। वे वर्षो तक प्रदेश काग्रेस के और अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के सदस्य रहे हैं।

स्व० अभयमल जैन



श्री अभयमल जैन का जन्म सन् 1906 मे जोधपुर के ओसवाल परिवार मे हुआ था। अपनी शिक्षा समाप्त करने के बाद उन्होने जोधपुर रेलवे के कार्यालय मे नौकरी करली थी। लेकिन 1928 से ही वे खद्दर पहनने लग गए थे और हर छोटे मोटे राष्ट्रीय कार्यो मे भाग लेते रहते थे। 1932 मे जब सर्विनायक श्री जयनारायण व्यास ने पुष्कर मे मारवाड राजनैतिक सम्मेलन बुलाया था तो श्री अभयमल सरकारी सेवा मे होते हुए भी उसमे भाग लेने चले गए। परिणाम स्वरूप उनके जोधपुर आते ही उन पर राजद्रोहात्मक कार्यवाहियो मे भाग लेने का अपराध लगाकर राजकीय सेवा मे अलग कर दिया गया।

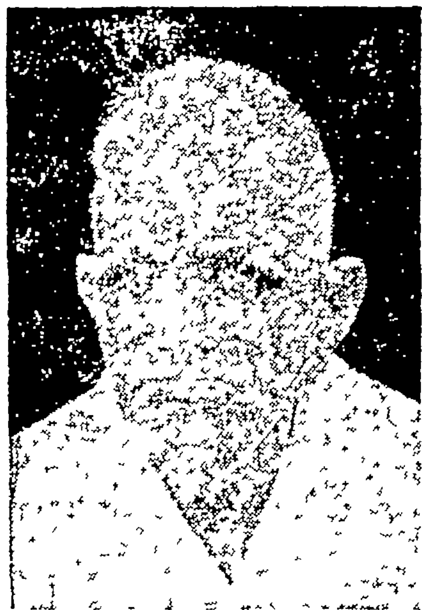
श्री अभयमल 1932 से स्वतन्त्र होगये थे और खुलकर सार्वजनिक सेवा कार्यो मे भाग लेने लग गये। वे एक सौम्य प्रकृति के व्यक्ति थे। हर शोषित और पीडित की हर सम्भव सहायता करन के लिए हर समय तैयार रहते थे। उन्होने कागज स्टेशनरी की एक दुकान भी लगाई थी लेकिन वह दुकान राजनैतिक प्रवृत्तियो का केन्द्र बन गई। 1936 मे श्री अभयमल जैन ने अपने सहयोगी श्री मानमल जैन और श्री छगन राज चौपासनी वाला के साथ छात्रो के फीस वृद्धि और बाईजी के तालाव के मसले को लेकर आन्दोलन छेड दिया और परिणाम स्वरुप सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और उन्हे एक वर्ष के लिए परवतसर के किले मे रहना पडा।

वे जोधपुर मे युथलीग, बालभारत सभा, सिविल लिबरटीज यूनियन और प्रजामडल सभी सस्थाओ की स्थापना मे श्री अभयमल जैन का पूरा पूरा हाथ एक सस्था के गैर कानूनी घोषित होने के बाद दूसरी सस्था खडी होती रहती थी। अत मे मारवड लोक परिषद की स्थापना मे भी उनका प्रमुख भाग था।

मारवाड लोक परिषद ने 1940 मे और 1942 मे जो आन्दोलन शुरू किए थ उनमे श्री अभयमल जैन ने बराबर हिस्सा लिया और जेल गए। 1942 मे वे दो वर्ष तक जेल मे रहे।

देश की स्वाधीनता के 1 वर्ष पहले जुलाई 47 मे केवल 41 वर्ष की अवस्था मे उनका निधन होगया।

श्री गणेश चन्द्र जोशी मन्वन्तर



श्री गणेश चन्द्र जोशी की श्रायु इस समय 76 वर्ष की है। वे स्वतत्रता सग्राम के एक यशस्वी सेनानी हैं, कवि हैं, लेखक हैं, सम्पादक हैं और पत्रकार हैं। इन सबसे बढकर वे क्रातिकारी विचारक हैं और समाज की यथास्थितियो को तोडने और उन्हे झकझोर देने मे अपनी समस्त चेतना, प्रज्ञा और प्रतिभा का उपभोग करते रहे हैं। पिछले वर्ष उनकी जनकजा पुस्तक राज्य सरकार द्वारा जब्त करली गई थी।

उनका जन्म जोधपुर के एक सामान्य पुष्करणा परिवार मे 29 नवम्बर 1897 को हुआ था। उनकी शिक्षा सामान्य ही हो सकी। वे काफी दिन तक तो मैट्रिक पास भी नही कर सके परन्तु उन्होने अग्रेजी साहित्य, राजनीति इतिहास, अर्थशास्त्र और दर्शन पर अग्रेजी मे हजारो पुस्तको का अध्ययन किया है। उनके चिंतन की प्रौढता परिपक्वता और उग्रता का यही आधार है।

श्री गणेशचन्द्र जोशी ने 1914 से ही काव्य सृजन शुरू कर दिया था। उन्होने कई जातीय पत्रो का सम्पादन भी किया था। 1940 तक श्री गणेशचन्द्र जोशी विभिन्न प्रवृत्तियो मे लगे रहे और अपनी प्रतिभा और बौद्धिक क्षमता को सार्थक करने मे अवसरो की खोज करते रहे। 1943 मे उनका सपर्क रेडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी से हुआ और वे श्री एम० एन० राय के विचारों से अत्यधिक प्रभावित हुए। उनके कई पुराने विश्वास चकना चूर हो गए और धार्मिकता मे भी वे वैज्ञानिक आधार पर अभिनव मानवता को स्थापित करने लगे।

इन्हीं विचारो को लेकर उन्होने 'कल की दुनिया, नाम के एक साप्ताहिक का प्रकाशन शुरू किया और समाज की यथास्थितियो पर करारी चोटें करनी शुरू की। 1942 मे मारवाड लोक परिषद के जिम्मेवार हुकुमत आन्दोलन मे वे गिरफ्तार कर लिए गए और पूरे दो वर्ष तक नजरबन्द रहे।'

श्री गणेशचन्द्र जोशी राजनैतिक कार्यकर्ता से पहले एक विचारक, लेखक कवि और साहित्यकार हैं। उनके 15 ग्रथ प्रकाशित हो चुके हैं और 69 ग्रथ अभी तक प्रकाशित हैं।

जीवन भर सघर्ष करने के बाद भी आज उनमे वही उत्साह है। उनके कलम की नोंक उम्र के साथ तीक्षण होती गई है। मानवीय वेद (विज्ञान) मे उनकी अस्था अटल है। विकासवाद के वे परम भक्त हैं और अखड मानवता ही उनका धर्म है। उनका पता है जे91, आदर्श नगर, जयपुर—4

श्री गणेशीलाल व्यास उस्ताद

जन्म—सवत् 1964 चैत्र शुक्ला 7
(सन् 1907)
निधन—21 अक्टूबर 1965



श्री गणेशीलाल व्यास उस्ताद राजपूताने के रियासती आन्दोलनो के यशस्वी लोक-गायक थे। लोक भाषा मे लिखे हुए और लोक धुनो पर गाए जाने वाले उनके विद्रोही गीतो की गूंज एक रियासत से दूसरी रियासत मे पहुचती गई और बलि-पथ पर बढने वाले सत्याग्रही उनके गीतो से जूझने की नई प्रेरणाए प्राप्त करते गए।

उस्ताद का जन्म जोधपुर के पुष्करणा ब्राह्मण परिवार मे सवत् 1964 की चैत्र शुक्ला 7 को हुआ था। विधिवत शिक्षा तो श्री गणेशीलाल व्यास को प्राप्त नही हो सकी थी लेकिन उन्होंने अपने स्वाध्याय से स्वय को अंग्रेजी साहित्य राजनीति-शास्त्र, अर्थशास्त्र और दर्शनशास्त्र मे निष्णात कर लिया था। जीवन के प्रारभ मे श्री गणेशीलाल व्यास जोधपुर के एक जागीरी ठिकाने मे कामदार हो गए थे। लेकिन कुछ ही दिनो मे नकौरी के बन्धन तोड कर स्वातन्त्र्य समर की पहली पक्ति मे खडे हो गए। 1930 के नमक सत्याग्रह मे वे अजमेर मे पहली बार गिरफ्तार हुए। अजमेर मे उनका सम्बन्ध क्रान्तिकारी पार्टी के लोगो के साथ हो गया और व सर्वश्री कपिलदेव गौतम, रामचन्द्र बापट, रुद्र दत्त मिश्र आदि के साथ क्रान्तिकारी योजनाओ मे सलग्न रहते।

उन्होंने जेल मे मुक्त होने के बाद कुछ दिन तक इन्दौर के मजदूरो के बीच कार्य किया और बाद मे तरुण राजस्थान, वीर अर्जुन, अखण्ड-भारत, सैनिक, रियासती आदि पत्रो के सम्पादकीय विभाग मे काम करते रहे। इन पत्रो मे काम करने के कारण 1939 मे लम्बे समय तक उन्हे जोधपुर से बाहर रहना पडा। श्री गणेशीलाल व्यास मारवाड लोक परिषद के प्रथम श्रेणी के कर्मठ कार्यकर्ता थे। 1940 मे लोक परिषद के पहले आन्दोलन मे उन्हे प्रमुख नेताओ के साथ गिरफ्तार करके किलो मे बन्द कर दिया गया था। 1942 के जिम्मेवार हुकूमत आन्दोलन मे उन्हे करीब 4 वर्ष की सजा दी गई। वे दो वर्ष के बाद लोक परिषद और सरकार का समझौता होने पर मई 44 मे छोडे गए। व जोधपुर की सैंट्रल जेल और जालोर किले मे रखे गए थे।

1948 मे श्री जयनारायण व्यास ने अपने मुख्य मन्त्री काल मे उन्हें राज्य के प्रचार और प्रकाशन विभाग के उप-सचालक के पद पर आग्रह के साथ नियुक्त कर दिया

था राजस्थान बन जाने के बाद इस पद पर उन्होंने 16 वर्ष तक कार्य किया। स्वतन्त्रता सग्राम के दिनो 'मे वेकसो की आवाज' और 'गरीबो की आवाज' के नाम से उनके राष्ट्रीय गीतो के सकलन प्रकाशित हुए। उन्हे सरकार ने जब्त कर लिए। 1944 मे उनके गीत इन्कलाबी तराने के नाम से छपा। हाल ही मे उस्ताद के गीतो कविताओ का एक सकलन राजस्थान भाषा प्रचार सभा जयपुर मे प्रकाशित हुआ है। 21 अोक्टोबर 1965 को उस्ताद का अकस्मात निधन हो गया।

श्री छगन राज चौपासनीवाला



श्री छगनराज चौपासनी वाला के जीवन क्रम के साथ मारवाड राज्य की राजनैतिक चेतना के विकास अौर लोक सघर्ष का पूरा इतिहास जुडा हुआ है। 1932 से 1939 तक श्री चौपासनी वाला जोधपुर की राजनीति के अग्रगणय सचालक, लोक जागरण के अग्रदूत अौर स्थानीय समस्याअो के लिए प्रमुख आन्दोलनकारी रहे है। सन 32 से 39 तक के समय मे लोकनायक श्री जयनारायण व्यास अजमेर, व्यावर, दिल्ली और बम्बई रहे थे अौर श्री अचलेश्वर प्रसाद शर्मा, व्यावर, आगरा अजमेर की जेलो, नागपुर और आकोला क पत्रो मे। उस समय अकेले ही श्री छगनराज चौपामनीवाला अपने बुजुर्ग साथी मानमल जैन अौर अमय मल जैन के साथ जोधपुर की निरकुश राजशाही का भडाफोड करके जनता के जीवन अधिकारो की रक्षा के लिए जोधपुर के राजतन्त्र को चुनौतिया देते रहे थे।

सन् 1932 से 39 की अवधि मे ही श्री रणछोडदाम गट्टानी और फिर श्री मथुरदास माथुर का राजनीति मे प्रवेश हुआ। 1939 मे लोक नायक जयनारायण व्यास के जोधपुर आने पर उन्होने समग्र नेतृत्व व्यासजी के हाथो मे मौप दिया। श्री छगन राज चौपासनी वाला श्री जयनारायण व्यास के अत्यत विश्वास प्राप्त व्यक्ति थे, इसका कारण था उनकी अनत सत्यनिष्ठा, स्वाभिमान और कर्त्तव्यबोध का दायित्व। जोधपुर मे श्री छौपासनीवाला 1932 से ही लोके प्रियता के शिखर छूने लग गए थे लेकिन अपनी इस लोक, प्रतिष्ठा का खयाल किए विना उन्होने अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए अपनी जीवीका के लिए तागे चलाए, घी वेचा और हद दर्जे के आर्थिक अभावो का सघपमय जीवन जीया परन्तु कभी किसी के आगे न याचना के लिए हाथ पसारा अौर न कभी राजनैतिक सिद्धान्तो पर किसी से समझौता करके अनुचित लाभ उठाया। तपोनिष्ठ छगन राज छौपासनी वाला आज के सपन्न कांग्रेस जनो के वीच मे ऐसे लगते हैं। जैसे कौओ के वीच मे कही से एक हस भूले भटके आ गया हो।

श्री छगन राज चौपासनीवाला राजस्थान की राजनीति मे आज भी सक्रिय हैं। उन्हें राजनीति मे कार्य करते हुए पूरे 40 वर्ष हो गए हैं परन्तु उनके उज्जवल चरित्र पर कही कोई अगुली नही उठा सकता। गाधी युग ने सार्वजनिक जीवन मे चरित्रवान देश-सेवक देने की जो परपरा प्रारभ की थी—श्री छगन राज चौपासनीवाला शायद उसकी अतिम कडी है।

जोधपुर–रियासत मे ज्यो ही कोई राजनैतिक सस्था स्थापित की जाती कि उसे कुछ समय बाद सरकार गैर कानूनी घोषित कर देती। मारवाड हितकारिणी सभा, यूथ लीग बाल भारत सभा सिविल लिबर्टीज युनियन, पीपुल्स एसोशियेशन, प्रजामण्डल और फिर लोक परिषद के रूप मे यह शृखला चलती ही गई। श्री छगन राज चौपासनीवाला के हाथो से ही इन सभी सस्थाओ का समारभ हुआ और लोक परिषद को छोडकर सभी सस्थाओ का समापन भी उनकी आखो के आगे ही हुआ।

1939 तक रियासतो की राजनीति स्पष्ट नही थी और लक्ष्य भी स्पष्ट नही था। अत जनता पर राज्य द्वारा होने वाले किसी भी अन्याय का विरोध करने के लिए राजनैतिक रगमच का उपयोग किया जाता। बाईजी का तालाब बद करने का प्रश्न, फीस वृद्धि का प्रश्न—या गनगौर के स्वागत मे खडे होने के ऐसे स्थानीय प्रश्न थे जिन्हे लेकर उन दिनो आन्दोलन चले और गिरफ्तारिया हुई।

26 जनवरी 1932 को श्री छगनराज चौपासनीवाला ने जोधपुर की जूनी धान मडी मे पहली बार तिरगा झडा फहराया। पुलिस की लाठियां उन पर चारो ओर से बरसने लगी। वे धराशायी हो गए लेकिन अतिम क्षण तक झडा हाथ से नही छोडा। इस अपराध मे उन्हें सबसे पहले 2 महीने की सजा हुई। उस समय उनकी आयु 20 वर्ष की थी। फरवरी 34 मे दिल्ली मे आयोजित देशीराज्य प्रजापरिषद के अधिवेशन मे उन्होंने जोधपुर राज्य की दुर्नितियो का पर्दाफाश किया जिसके परिणाम स्वरूप उनके जोधपुर आते ही उन्हे 6 महीने के लिए शेरगढ मे नजरबन्द कर दिया गया। अगस्त 1936 मे उन पर आरोप लगाया गया कि वे अपने आपत्तिजनक और उत्तेजक भाषणो मे जोधपुर महाराजा और राज्य के मिनिस्टरो के विरुद्ध नफरत और हिकारत के भाव पदा करते हैं। अत उन्हे 1 वर्ष के लिए बाली किले मे नजरबद कर दिया गया। 1938 मे हरिपुरा काग्रेस से लौट कर आने के बाद उन्हे दो महीने के लिए जेल मे भेज दिया गया। 1940 मे श्री छगनराल चौपासनीवाला करीब 7–8 महीने किले मे नजरबन्द रहे और 1942 के जिम्मेवार हुकुमत आन्दोलन मे पूरे दो वर्ष तक वे जोधपुर सैंट्रल जेल मे और फिर सिवाना किले मे रखे गए।

श्री छगनराज का जन्म जोधपुर के एक कट्टर वैष्णव सम्प्रदायी पुष्करणा ब्राह्मण परिवार मे 26 मई 1912 को हुआ। उनकी तीन वर्ष की अवस्था तक उनके माता पिता का देहावसान हो गया। उनकी वृद्धा नानी और उनके मामा श्री मशा रामजी ने उनका लालन पालन किया।

श्री छगनराज चौपासनीवाला ने अपने सभी धार्मिक और सामाजिक बंधनो को तोड़ कर हरिजन–उत्थान का कार्य हाथ मे लिया । उन्होंने हरिजनो मे हाथ मिलाया और उनके साथ सहभोज किया । उन्होने कई हरिजन पाठशाला भी स्थापित की और लंबे समय तक उनका संचालन किया ।

श्री छगन राज चौपासनीवाला ने अपने तांगा चलाने के युग के बाद कुछ वर्षो तक राजस्थान खादी ग्रामोद्योग बोर्ड की शाखाओ के कार्यों का संचालन किया । वे वर्षों तक अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद के अग्रगणय व्यक्ति रहे, मारवाड लोक परिषद मे वर्षोतक दायित्वपूर्ण पदो पर कार्य किया, वर्षो तक प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे और जोधपुर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष और मंत्री रहे । उन्होने कई वर्षों तक श्री जयनारायण व्यास के साप्ताहिक पत्र 'लोकराज' का संपादन भी किया था । श्री चौपासनीवाला राज्य की अनेको उच्च–स्तरीय संस्थाओ से संबद्ध रहे हैं और 61 वर्ष का आयु मे आज भी विशुद्ध गांधीवादी तरीको मे रोज उठकर अपने हाथ से कपडे धोते हैं और अपने हाथ मे धुले हुए कपडे ही पहन कर बाहर निकलते हैं । फर्क इतना जरूर हो गया है कि वह धोती के स्थान पर पेन्ट और बुशशर्ट पहनने लग गए हैं । यह परिवर्तन शायद उनकी शादी के बाद ही आया है । उनका पता है—कबूतरो का चौक, जोधपुर ।

श्री जोरावर मल बोड़ा, जोधपुर



श्री जोरावर मल बोडा जोधपुर मे भारत छोडो आन्दोलन के द्वितीय स्टेडियम बम केस के अभियुक्त थे । वे 13 अप्रेल 1943 को गिरफ्तार किए गए । सैंट्रल जेल मे लगाई गई विशेष अदालत मे न्यायाधीश श्री हंसराज सिंघवी ने उन्हें स्थापित सरकार के विरुद्ध लडाई का एलान करने के षड्यन्त्र के केस मे आठ वर्ष के कठोर कारावास की सजा और 400 रुपये जुर्माने व अदम अदायगी मे 3 महीने के कठोर कारावास की सजा दी । मई 45 मे बम केस के सभी अन्य कैदी रिहा कर दिए गए लेकिन श्री जोरावरमल बोडा के लिए यह कहा गया कि सरकार की निगाहो मे

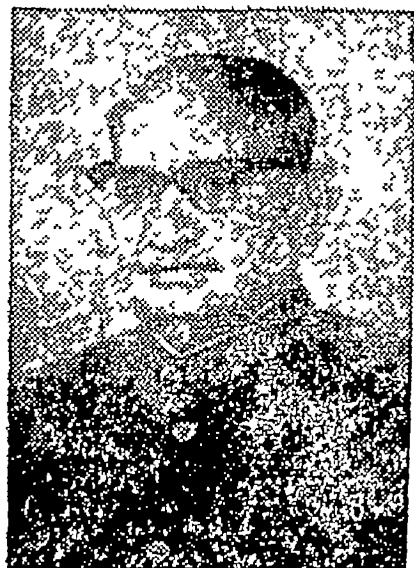
यह सख्त जुर्मी है इसलिए इन्हें नही छोडा जाय । 1946 में जब पडित जवाहरलाल नेहरू जोधपुर आए तब उनके और महाराजा जोधपुर की बातचीत के परिणाम स्वरूप श्री बोहा 3 वर्ष2 महिने के बाद 1 जून 46 को जेल से रिहा हुए । अगस्त 1944 मे श्री जोरावर मल के पिता का देहान्त हो गया था ।परन्तु सरकार ने उन्हे पैरोल पर भी छोडने से इन्कार कर दिया था ।

श्री जोरामल बोडा का जन्म 1923 मे जोधपुर के एक सामान्य पुष्करणा परिवार मे हुआ था । 1940 मे उन्होने विद्यार्थियो का एक आजाद सघ बनाया था और लोक परिषद आन्दोलन मे मदद करते रहे थे । युद्ध के विरुद्ध प्रचार करने के सिलसिले मे 1941 मे कई बार तलाशीया हुई थी । 1942 मे दूसरे बमका केस दल सगठित करते समय वे विज्ञान के दूसरे वर्ष के विद्यार्थी थे । उनके साथ इस दल मे सर्व श्री सूरजप्रकाश पापा, पारसमल खीवसरा, रामचन्द्र बोहा, सीताराम सोलकी, श्यामसुन्दर व्यास, किस्तूरचन्द, विजय-किशन और श्याम पाडे थे । उन्होने सरदार पुरा की रोड न० 11 पर एक मकान किराए पर लेकर वहा बम बनाने का कारखाना लगाया था । उन्होने जयपुर से टाईम बम, हथ गोले आदि मगाए और ओटोमेटिक बमो कानिर्माण करके रातानाडा, रेजिडैन्सी, स्टेडियम, नगरपालिका, खाडाफलसा, पुलिस स्टेशन और चर्च आदि मे बम फेंकने की कार्यवाही की ।

जल से रिहाई के बाद श्री बोडा ने 1 वष तक अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद के कार्यालय मे कार्य किया । 1947 मे जोधपुर नगर लोक परिषद के मत्री का कार्य किया । 1949 मे उन्होने समाजवादी दल की सदस्यता स्वीकार कर ली । वे राज-स्थान प्रजा समाजवादी दल के (1965-68) तक 3 वर्प अध्यक्ष रहे । 1969 से 71 तक राजस्थान प्रजा समाजवादी पार्टी के ससदीय दल के अध्यक्ष रहे । वे 1958 से 62 तक जोधपुर नगर पालिका के सदस्य रहे । अब इन्दिरा गाधी की प्रगतिशील नीतियो से सहमति होने के कारण नई काग्रेस मे शामिल हो गए हैं ।

समाजवादी कार्यक्रमों मे कई बार उनको थोडे-थोडे समय के लिए जेल की यात्राए करनी पडी । जेल से रिहा होने के बाद उन्होने इटर, बी० ए० और एल० एल० बी० किया । वे जोधपुर मे जसवत कालेज छात्र यूनियन के चार वर्ष तक अध्यक्ष रहे थे । आजकल जोधपूर में वकालात करते हैं । पता---जौहरी बाजार, भोली बाईयो का मन्दिर, जोधपुर ।

श्री द्वारकादास पुरोहित



श्री द्वारकादास पुरोहित का जन्म जोधपुर के एक सम्पन्न पुष्करणा परिवार मे 19 मार्च 1906 को हुआ। उन्होने जोधपुर से बी० ए० करने के बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे एल एल बी की डिग्री ली और 1932 से जोधपुर मे वकालात शुरु कर दी।

श्री द्वारकादाम पुरोहित ने 1930 मे इलाहाबाद मे नमक सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा आन्दोलन मे भाग लिया था। जोधपुर मे आते ही 1933 मे नगर पालिका के मदस्य होगए और 1944 तक प्रत्येक निर्वाचन मे निर्वाचित होते रहे। 1944 से 48 तक वे जोधपुर नगर पालिका के अध्यक्ष रहे।

1942 मे जब मारवाड लोक परिषद के जिम्मेवार हुकुमत आन्दोलन मे मभी नेता गिरफ्तार होगए तो आन्दोलन की बागडोर श्री द्वारका दाम पुरोहित ने मम्भाली। आन्दोलन की रिपोर्ट लेने के लिए आए हुए महात्मा गांधी के प्रतिनिधि श्री प्रकाशजी और पडित नेहरु के प्रतिनिधि श्री द्वारकानाथ काचरू श्री पुरोहित के माथ ही ठहरे थे। आन्दोलन मे सक्रिय रूप से भाग लेने के पहले श्री द्वारकादास पुरोहित ने बम्बई जाकर महात्मा गांधी व जवाहरलाल नेहरु से आन्दोलन के बारे में मार्गदर्शन लिया था। बम्बई से लौट कर आते ही श्री द्वारकादास पुरोहित भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत नजरबन्द कर लिए गए। उन्हे 2 वर्ष तक मोचिया फोर्ट, बिजोलाई पैलेस और जालोर फोर्ट मे रखा गया था।

जेल से रिहा होने के बाद श्री द्वारकादास पुरोहित ने जागीर–विरोधी और बेगार विरोधी आन्दोलन खडे किए और अपनी शक्ति किसानो को मगठित करने मे लगा दी। श्री द्वारकादास पुरोहित वर्षो तक और निरन्तर देशी राज्य प्रजा परिषद, प्रदेश कांग्रेस कमेटी, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे। वे मारवाड लोक परिषद और जोधपुर नगर जिला कांग्रेस कमेटी के भी वर्षो तक अध्यक्ष रहे। जागीरी दासता से किसानो के मुक्ति आन्दोलन मे डाबडा के किसान सम्मेलन मे असामाजिक तत्वो और सामन्ती तत्वों ने उन पर 13 मार्च 1947 को घातक आक्रमण किया।

1948 मे श्री द्वारकादास पुरोहित जोधपुर के लोक प्रिय मन्त्री मडलो मे लोक नायक जयनारायण व्यास के नेतृत्व मे वित्त, उद्योग और विधि मन्त्री बनाए गए। उन्होने अपने शासन काल में राज्य की अर्थ-व्यवस्था को सुधारने, आर्थिक नीतियें बनाने औद्योगिक विकास की योजनाए क्रियान्वित करवाने और न्याय को सस्ता और सर्वजन के लिए

सुलभ बनाने के लिए अथक प्रयत्न किए। आबू को राजस्थान मे मिलाने के लिए उनके प्रयास अन्यन्त महत्वपूर्ण थे। 1953 से 57 तक वे राजस्थान विधान सभा के सदस्य रहे जन लेखा समिति तथा कई महत्वपूर्ण समितियो के कार्य को सम्हाला।

सन् 1968 से श्री द्वारकादास पुरोहित राजस्थान हाउसिंग बोर्ड के अध्यक्ष हैं। उनका पद मत्री-मडल के सदस्यो के समकक्ष माना गया है। उनका पता है—डी० 167ए, कातिचन्द रोड, जयपुर 6।

स्वर्गीय श्री देव नारायण व्यास भाया

जन्म— सन् 1915
निधन— सन् 1969

श्री देवनारायण व्यास लोक नायक श्री जयनारायण व्यास के इकलौते पुत्र थे। राष्ट्रीयता और देशभक्ति के सस्कार उन्हे जन्म की घुट्टी के साथ ही प्राप्त हो गए थे। श्री देवनारायण ने जोधपुर मे शिक्षा प्राप्त की। विद्यार्थी काल मे ही सन् 1942 मे मारवाड लोक परिषद के जिम्मेवार हुकुमत आन्दोलन मे वे स्वतन्त्र रूप से सत्याग्रह करके गिरफ्तार हुए थे और जोधपुर की सेन्ट्रल जेल मे लगी हुई विशेष अदालत मे उन्हे 10 महीने की सजा दी गई थी जिसे उन्होंने सेंट्रल जेल मे ही पूरा किया।

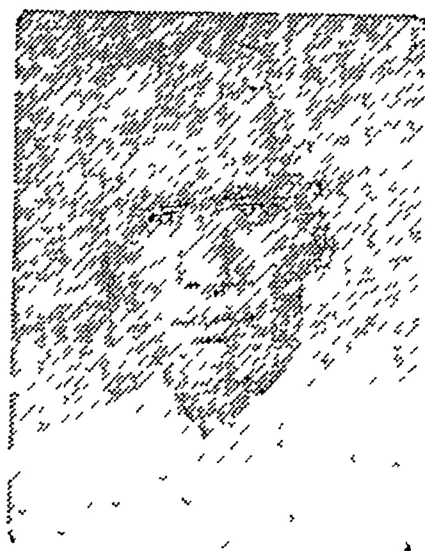
जेल से मुक्त होने के बाद श्री देव नारायण व्यास ने बी० ए० और एम०ए० तक शिक्षण जोधपुर से ही प्राप्त किया।। उन्होंने बम्बई मे जाकर टाइम्स आफ इण्डिया और नवभारत टाइम्स मे सपादन का कार्य सीखा। वर्षों बाद जोधपुर आकर उन्होने इन बडे पत्रो के सवाददाता का कार्य शुरु किया। उन्होने ने प्रेरणा प्रकाशन नामक एक सस्था की स्थापना की और प्रेरणा नाम का एक प्रगतिशील साप्ताहिक पत्र प्रकाशित किया।

जोधपुर लोक परिषद और बाद मे जोधपुर नगर काग्रेस के श्री देवनारायण व्यास कई वर्षो तक मत्री और अध्यक्ष रहे। वे मारवाड खादी सघ के भी मन्त्री थे और उन्होंने मारवाड मे खादी उत्पादन के कार्य को बहुत आगे बढाया था। जोधपुर के सार्वजनिक क्षेत्र मे उनका प्रमुख स्थान बन गया था।

पिछले 4 वर्षो मे श्री देवनारायण व्यास ने जोधपुर मे 'तरुण राजस्थान, नाम का एक दैनिक पत्र शुरु किया था। यह पत्र पश्चिमी राजस्थान की जनता की आकाक्षाओ की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बनता जा रहा था। श्री देवनारायण व्यास को पत्र की आर्थिक स्थिति सम्हालने में बहुत सघर्ष करना पडा। इसी मानसिक सघर्ष के दौरान मे 1969 को एक दिन जयपुर मे अकस्मात् उनकी हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया।

श्री देवनारायण व्यास एक होनहार, लेखक पत्रकार और जन प्रतिनिधि के रुप में उभर रहे थे। अपने उदय और विकास की देहली पर पहुंचते पहुचते ही वे स्वर्गस्थ होगए।

श्री फतहराज जोशी एम० ए०, एल० एल० बी०



1942 मे मारवाड लोकपरिषद द्वारा जिम्मेवार हुकूमत के लिए छेडे गए आन्दोलन मे 26 मई 42 को सबसे पहले श्री फतहराज जोशी गिरफ्तार किए गए। उन पर मारवाड सिडिसश एक्ट की धारा 124 और भारत सुरक्षा कानून की धारा 38 तथा अन्य कई विभिन्न धाराओ मे जोधपुर जेल के चौराहे मे मुकदमा चला। सजा सुनाने के बाद उन्हे सैंट्रल जेल से जालोर फोर्ट मे भेज दिया गया। जेल मे सजा समाप्त हो जाने पर उन्हे भारत सुरक्षा कानून के अतर्गत नजरबन्द कर दिया गया। जोधपुर के मोचिया किला और बिजोलाई पैलेश मे तथा जालोर फोर्ट मे उन्होने नजरबन्दी का काफी समय काटा था। इस प्रकार राजद्रोह और नजरबन्दी की सजाए उन्होने पूरे तीन वर्ष तक साथ-साथ काटी।

श्री फतहराज जोशी का जन्म जोधपुर के एक प्रतिष्ठित पुष्करणा परिवार मे हुआ था। उनके पिता श्री बच्छराज जोशी लोकनायक व्यासजी के अन्यतम मित्र और सहयोगी थे और इसी कारण श्री फतेहराज जोशी को अपने परिवार मे ही उन्हें राष्ट्रीय-चेतना, देश सेवा की प्रेरणा और त्याग एव उत्सर्ग के सस्कार प्राप्त हुए थे। श्री फतहराज के पिता और दादा प्रारभ से ही खादी पहनते थे अत 1930 से श्री फतहराज भी खादी पहनने लग गए। उन्होने जोधपुर से बी० ए० और लखनऊ से एम० ए०, एल०एल०बी० की डिग्रियें ग्रहण की थी।

खादी की पोशाक और सफेद टोपी के कारण उन्हे अपने स्कूली जीवन मे और कालेज मे अधिकारियो द्वारा बहुत अधिक प्रताडित होना पडा। उन्होने मारवाड विद्यार्थी सघ के नाम से विद्यार्थियो का एक सगठन बनाया और राजपूताना की सभी रियासतो के विद्यार्थियो का विशाल सम्मेलन आमन्त्रित किया। फतहराज जोशी मारवाड विद्यार्थी सघ के अध्यक्ष और राजपुताना सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष थे। श्रीमती विजयलक्ष्मी पडित अध्यक्षता करने को आने वाली थी परन्तु राज्य ने सम्मेलन पर प्रतिबध लगा दिया और शहर मे धारा 144 से वह सम्मेलन नही हो सका।

मारवाड लोक परिषद की स्थापना से ही श्री फतहराज जोशी उसके एक क्रियाशील और प्रभावशाली सदस्य रहे हैं। 1940 मे वे श्री मथुरादास माथुर के साथ मारवाड

लोक परिषद के सयुक्तमन्त्री और लोक परिषद की प्रतिनिधि सभा के सदस्य चुने गए। वे देशी राज्य लोक परिषद के लिए कई वार डेलीगेट चुने गए थे। मार्च 1940 मे लोक परिषद के पहले आन्दोलन के समय अपनी बी० ए० फाइनल की पढाई छोडकर श्री फतहराज जोशी आन्दोलन मे लग गए और सब मित्रो की राय से देश के महान नेताओ को जोधपुर राज्य के आन्दोलन की प्रगति से अवगत कराने तथा उनसे उचित मार्गदर्शन लेने के लिए उन्होंने शिष्टमण्डल लेकर दिल्ली, वम्बई और वर्धा की यात्राए की।

स्वाधीनता के वाद श्री फतेहराज जोशी काग्रेस के सक्रिय सदस्य रहेहै और काग्रेस की प्रवृत्तियो मे सक्रिय रूप मे भाग लेते रहते हैं। उनका पता है–247, फतेहपुरा,उदयपुर।

स्वर्गीय श्री पुरुषोत्तम प्रसाद नैयर



श्री पुरुपोत्तमप्रसाद नैयर जोधपुर के एक कट्टर सिद्धान्तवादी काग्रेस-मैन थे। वे राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार मुशी देवीप्रसादजी के खानदान मे से थे। उन्होने ही जोधपुर मे सबसे पहले काग्रेस की स्थापना की थी। श्री पुरुपोत्तम प्रसाद नैयर ने जोधपुर में यूथलीग, वाल भारत सभा, सिविल लिवरटीज यूनियन, पीपुल्स एशोसिएशन, प्रजामण्डल और लोक परिषद सबके गठन मे पूरे उत्साह से भाग लिया तथा विधिवत लोक परिपद का कार्य शुरु होने के पहले, सर्वश्री अचलेश्वर प्रसाद शर्मा, छगन राज चौपासनीवाला, मानमल जैन, अभयमल जैन, और रणछोडदास गट्टानी के साथ कधे से कधा मिला कर कार्य किया। 1931 मे श्री नैयर साहव ने अजमेर मे सत्याग्रह किया। 1940 मे उन्हें जोधपुर के सात नेताओ मे सबसे पहले गिरफ्तार करके परवतसर किले मे वन्द कर दिया गया था। वहा से छूटने के वाद श्री नैयर साहव व्यक्तिगत सत्याग्रह मे अजमेर जेल मे रहे। 1942 मे लोक परिषद के आन्दोलन मे भारत सुरक्षा कानून के अंतर्गत उन्हे 2 वर्ष के लिए मोचिया किला, विजोलाई पैलेस मे नजरवन्द कर दिया गया था। मई 1972 मे उनका देहावसान हो गया। उनके घर का पता है–सागर मोहल्ला, जोधपुर।

श्री बालकृष्ण व्यास 'लालजी'

श्री वालकृष्ण व्यास 'लालजी' प्रदेश कांग्रेस कार्यकर्ताओ के लिए एक अत्यन्त लोकप्रिय व्यक्ति हैं। प्रदेश कांग्रेस की सगठन शाखा को वर्षों से सम्हालकर इन्होने अपने कुशल व्यवहार से जो लोकप्रियता प्राप्त की है वह सामान्य तथा वडे वडे नेताओ को भी उपलब्ध नही हो पाती। कांग्रेस का कार्य जैसे इनके जीवन का मिशन वन गया है। प्रदेश कांग्रेस के कार्यालय मे कोई मिले या न मिले – लालजी वहा हर समय, हर व्यक्ति की, हर समस्या का समाधान लिए तैयार मिलते है। इनका जन्म 1922 मे फलौदी के एक पुष्करणा परिवार मे हुआ था। कई वर्षों तक इन्होने फलौदी की सम्भवनाथ जैन सगीत शाला मे सगीत शिक्षक का कार्य किया। लोक परिषद के तत्वावधान मे खेले गए कई नाटको मे इन्होने अभिनय भी किया है। फलौदी के मरुस्थल सास्कृतिक कला मडल के अध्यक्ष भी है।

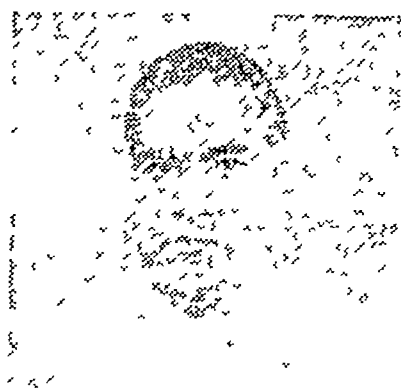
1939 मे फलौदी मे इन्होने लोक-परिषद की स्थापना की थी अपनी टोली के साथ 1940 के लोक परिषद के आन्दोलन मे इन्होने भाग लिया था। 1942 के आन्दोलन मे 9 जून 1942 को गिरफ्तार कर लिए गए और करीव दो वर्ष तक ये जेल मे नजरवन्द रहे।

श्री लालजी विचारक, लेखक और पत्रकार हैं। देश की स्वाधीनता के वाद ये प्रदेश कांग्रेस कमेटी मे कार्य कर रहे हैं और प्रदेश कांग्रेस कमेटी के एक अनिवार्य अग बन गए हैं।

श्री बालकृष्ण मोतीलाल थानवी 'लालजी'

जन्म —सन् 1926

वर्तमान पता —सम्पादक जनपथ, फलौदी



श्री वालकृष्ण मो० थानवी फलौदी के सार्वजनिक जीवन के रीढ की हड्डी हैं। वे फलौदी के सफल पत्रकार, लेखक, वक्ता, सर्वोदयी कार्यकर्ता, समाज-सेवक और राजनैतिक नेता हैं। उनका व्यक्तित्व एक सत्यनिष्ठ, अनुशासित, सिद्धान्तवादी का ठोस व्यक्तित्व है। वे निरन्तर कार्यरत रहते हैं और अपने जीवन का एक भी क्षण व्यर्थ नही जाने देते। फलौदी के लोक जीवन के अभाव

अभियोगो को दूर करवाने के लिए लालजी किसी भी तरह के संघर्ष के लिए हर समय कटिबद्ध और तत्पर रहते है ।

उनका जन्म फलोदी के एक सामान्य पुष्करणा परिवार मे सन् 1926 मे हुआ । फलौदी मे जब श्री रणछोडदास गट्टानी ने आकर लोक परिषद की स्थापना की तब लालजी प्रत्यक्ष रूप मे राजनीति के संपर्क मे आए । मारवाड लोक परिषद ने 1942 में जो उत्तरदायी शासन आन्दोलन शुरू किया इसमे लालजी भी शामिल हो गए । वे 26 अगस्त को फलौदी मे सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार हुए और करीब पौने दो वर्ष तक जोधपुर सैन्ट्रल जेल मे रहे । उन्हे जेल मे कई दिनो तक खडी हथकड़ी लगाकर काल कोठरी मे रखा गया था ।

स्वाधीनता के बाद उन्होने अपने कुछ मित्रो के साथ मिलकर जोधपुर सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की । सन् 1952 मे उन्होने समाजवादी पार्टी के मच से महात्मा गांधी अस्पताल के कम्पाउन्डरो और नर्सो की उचित मागो के समर्थन मे आन्दोलन किया और 1954 मे फलौदी से बाजरा-निर्यात-विरोधी-आन्दोलन किया । इन दोनो आन्दोलनो मे श्री लालजी को दोनो बार जेल की यात्राए करनी पडी । समाजवादी पार्टी के कार्यक्रम ने उन्होने राजनैतिक क्षेत्रो को निरन्तर प्रवृतियो मे भरा हुआ रखा ।

उन्होंने कुछ समय खीचन के मरुधर विकास मण्डल के मन्त्री पद पर कार्य किया । 1962 मे उन्होने मरुस्थल खादी ग्रामोद्योग समिति की स्थापना की और उसकी रचनात्मक प्रवृतियो को निरन्तर विस्तार देते गए । उन्होने भारत सेवक समाज की ओर से फलौदी के आस पास के कस्बो को सडको द्वारा फलौदी से जोड़ने का कार्य सफलतापूर्वक सपन्न करवाया । उन्होंने चीनी आक्रमण के समय 5000 पाच हजार रुपए और 100 तोला सोना इकट्ठा करके सरकार को भेट किया । श्री लालजी ने अपने क्षेत्र मे किसान आन्दोलन सगठित किए हैं और किसानो मे अत्याचारी शासन का मुकाबला करने का बल जगाया है और उन्होने दलित वर्ग और पिछडी जातियो की सेवा मे भी अपना बहुत समय लगाया है ।

1968 मे श्री लालजी शराबबन्दी सत्याग्रह मे सम्मिलित हुए थे और मण्डोर की डिस्टलरी पर सत्याग्रह किया था । अब पुन पुनः 1972 से समग्र राजस्थान मे शराबबन्दी लागू करवाने के लिए सत्याग्रह मे सम्मिलित हुए हैं ।

श्री बालकृष्ण मो० थानवी लालजी पिछले 3-4 वर्षो से जनपथ नामक साप्ताहिक पत्र का फलौदी मे प्रकाशन और सम्पादन कर रहे हैं । उनका जनपथ कार्यालय ही इन दिनो फलौदी मे राजनीति का सबसे बडा केन्द्र बन गया है ।

श्री मथुरा दास माथुर



जन्म—6 सितम्बर 1918
वर्तमान पता—सीटीजन्स सेंट्रल कौंशिल
राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली।

श्री माथुरादास माथुर राजस्थान मे व्यवहारिक राजनीति के कुशल खिलाडी माने जाते रहे हैं। देश की स्वाधीनता के वाद श्री माथुरदास माथुर 16 वर्ष तक राजस्थान विधान सभा के सदस्य रहे है। 4 वर्ष तक वे ससद के निर्वाचित सदस्य रहे और प्रदेश काग्रेस का अध्यक्ष पद सम्हालने के लिए उन्होने स्वेच्छा से ससद से त्यागपत्र दिया। वे 10 वर्ष तक राजस्थान के सुखाडिया–मन्त्री-मण्डल मे गृह, वित्त, और योजना जैसे महत्वपूर्ण विभागो के मन्त्री रहे। महा निर्वाचन के पहले 1 वर्ष तक वे व्यास–मन्त्रीमण्डल मे शिक्षा चिकित्सा के मन्त्री थे और राजस्थान वनने के पहले उन्होने जोधपुर राज्य के व्यास–मन्त्री मण्डल मे करीव 1 वर्ष तक शिक्षा मन्त्री का कार्य किया था। स्वतन्त्रता सग्राम मे भी श्री मथुरादास माथुर का योगदान इतना ही शानदार, महत्वपूर्ण और प्रेरक रहा है।

श्री मथुरादास माथुर का जन्म जोधपुर के एक सामान्य कायस्थ परिवार मे 6 सितम्वर 1918 को हुआ। उन्होने विज्ञान मे इन्टर तक की शिक्षा जोधपुर मे ली और आगे की पढाई के लिए लखनऊ चले गए। लखनऊ मे उन्होने वी० एस० सी० और एल० एल० वी० की परीक्षाए उत्तीर्ण की।

1936 मे उन्होने लखनऊ मे काग्रेस की सदस्यता ग्रहण करली थी। उन्होने छात्र सगठनो मे अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य किया। वे उत्तर प्रदेश छात्र सघ की कार्यकारिणी के सदस्य थे।

अपनी शिक्षा समाप्त करके लखनऊ से जोधपुर आते ही जून 1939 मे श्री मथुरादास माथुर मारवाड लोक परिषद मे सम्मिलित हो गए। जुलाई 39 मे उन्होने अपनी वकालात जोधपुर हाई कोर्ट मे शुरु करदी। दिसम्वर 39 मे वे नगरपालिका के सदस्य चुने गए।

1940 मे मारवाड लोक परिषद ने राज्य के विरुद्ध जो सत्याग्रह शुरु किया उसमे सत्याग्रह के डिक्टेटर की हैसियत से श्री माथुर 15 मार्च 40 को गिरफ्तार हुए। उन्हे करीव 8 महीने तक नागौर जिले के परवतसर किले मे नजर वन्द रखा गया। नजरवदी से मुक्त होने के वाद श्री माथुर 1941 मे मारवाड लोक परिषद के मन्त्री निर्वाचित हुए। 1942 की 25 मई को मारवाड लोक परिषद ने जिम्मेवार हुकुमत के लिए जो दूसरा आन्दोलन शुरु किया उसमे श्री माथुर 26 मार्च 42 को गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हे राजद्रोह और भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत 10 वर्ष के कठोर कारावास की सजा दीगई। वे तीन चार महीने जोधपुर सेंट्रल जेल मे रहे और वाद मे उन्हे जालौर किले मे भेज दिया गया जहा से वे 1945 के मई महीने मे रिहा हुए।

1946-47 मे उन्होने जोधपुर के 80 प्रतिशत जागीरी क्षेत्रो मे किसानो को सगठित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया जिसके परिणाम स्वरुप 13 मार्च 1947 को नागोर जिले के डावडा ग्राम मे एक किसान सम्मेलन का आयोजन करते समय जागीरदारो और सामती तत्वो ने उन पर तथा उनके अन्य साथियो पर घातक आक्रमण किए। शस्त्र सज्जित सैकडो जागीरदारो ने सारे गाव मे जैसे कत्ले आम ही मचा दिया था। उस हत्याकाण्ड मे मारवाड लोक परिषद के 5 कार्यकर्ता वही शहीद हो गए थे। दर्जनो आदमी घायल होगए थे। श्री माथुर के सर पर एक जागीरदार ने बरछे से घातक वार किया था। अस्पताल मे लम्बे समय तक रहने के बाद उन्हे गिरफ्तार कर लिया और उन पर ही उल्टा खू रेजी और हत्या का अपराध लगाया गया। उन्हे एक महीने जेल मे रखा गया और फिर उन्हे जमानतो पर छोड दिया गया। अन्त मे 1948 मे भारत सरकार के आदेश से उन पर से ये मुकदमे उठा लिए गए।

राजस्थान बन जाने के बाद श्री जयनारायण व्यास और द्वारकादास पुरोहित के साथ मथुरादास माथुर पर भी मुकदमे चले। अन्त मे 1950 मे भारत के गृह मत्री सरदार पटेल द्वारा वे मुकदमे उठा लिए गए।

प्रथम महा निर्वाचन मे जोधपुर डिवीजन से जो केवल 4 काग्रेसी व्यक्ति सामत-वादियो के मुकाबिले मे जीत कर राजस्थान की पहली विधान सभा मे आए थे उनमे मथुरादास माथुर भी एक थे। वे विधान सभा मे काग्रेस दल के मुख्य सचेतक बनाए गए। उन्होने विधान सभा की एस्टीमेट कमेटी के अध्यक्ष के रुप मे भी कार्य किया। श्री माथुर इस अवधि मे राजस्थान प्रदेश काग्रेस कमेटी के महामत्री भी रहे।

1957 मे माथुर नागोर निर्वाचन क्षेत्र मे भारतीय ससद के सदस्य चुने गए। 1952 मे वे भारत की एशियन सोलीडेटरी कमेटी के अध्यक्ष चुने गये और 1960 मे पश्चिमी अफ्रिका के कोनेकरी नगर मे एफ्रोएशियन कान्फ्रेन्स मे भारतीय शिष्ट मण्डल के उपनेता के रुप मे सम्मिलित हुए।

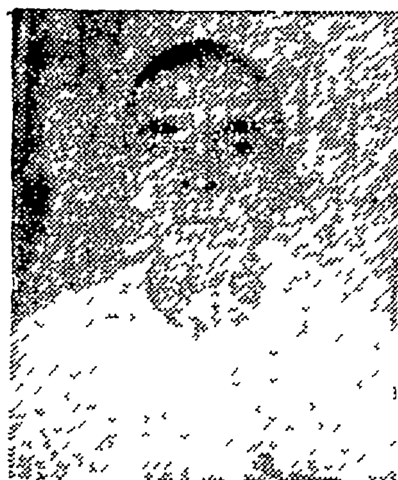
1963 मे श्री मथुरादास माथुर ने अमेरीका के फ्राइन्डस आफ इण्डिया सोसाइटी के निमत्रण पर विश्व भ्रमण के (राउन्ड दी वर्ल्ड ट्रिप) के लिए हागकाग, जापान, अमेरीका, पूर्वी जर्मनी और रूस आदि देशो की यात्रा की और उन्होने इन देशो मे स्थान-स्थान पर भारतीय सस्कृति और भारत के सास्कृतिक जीवन पर व्याख्यान दिए। 1970 मे चैक और युगोस्लाविया की सरकारो के निमत्रण पर श्री माथुर ने चैकोस्लोवाकिया, आस्ट्रिया और इगलैड की यात्राए की।

आजकल श्री मथुरादास माथुर 1971 के अक्टोबर से सीटीजन्स सैंट्रल कौशिल, राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली के महामन्त्री का कार्य कर रहे है। 1972 के महा निर्वाचन मे उन्होने अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के विशेष प्रतिनिधि के रुप मे मैसूर, त्रिपुरा और मिजोराम मे कार्य किया था।

श्री मांगीलाल त्रिवेदी 'आलीशान'

जन्म— सन् 1900

वर्तमान पता— नेहरू वाचनालय
सदर बाजार
चण्डावल नगर (जिला पाली)



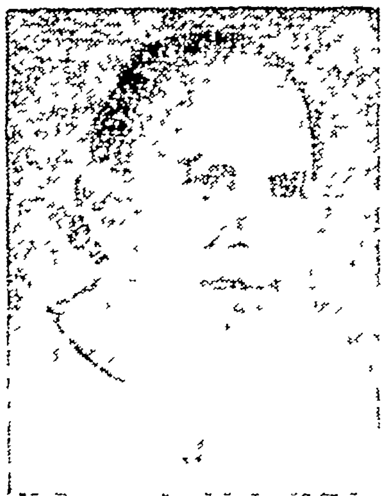
श्री मागीलाल त्रिवेदी आलीशान का जन्म सन् 1900 मे चण्डावल नगर के एक श्रीमाली ब्राह्मण परिवार मे हुआ। उन्होने 1920 मे स्वदेशी का व्रत लिया। 1921 मे उनकी माता, पत्नि और पुत्र का निधन हो गया। उन्होने दूसरा विवाह नही किया। 1924 मे पहलीबार काग्रेस के सदस्य बने और 1930 मे अपनी समस्त सपत्ति काग्रेस को भेट करके मातृभूमि के सिपाही बन गए।

श्री मागीलाल त्रिवेदी के विरुद्ध 1930 मे गांधी इर्विन पैकट तक गिरफ्तारी का वारन्ट घूमता रहा 1931 मे शराब की दुकानो पर धरना देते समय वे कई बार पकडे गए और छोडे गए। 1932 मे उन्हे सपरिश्रम कारावास के 9 महीने अमरावती की वटाली जेल मे निकालने पडे 7 फरवरी 33 को उन्हे पुन गिरफ्तार करके 1 वर्ष के समय के लिए जेल भेज दिया गया।

1934 मे श्री मागीलाल त्रिवेदी अपने गाव चडावलनगर आ गए और जागीरदारो के विरुद्ध मोर्चा बदी शुरू करदी। 1940 मे लोक परिषद के जागीरी विरोधी आन्दोलन मे श्री आलीशान को 3 महीने की सजा हुई। 1942 मे चडावल ठाकुर के जागीरी अत्याचारो के विरुद्ध श्री आलीशान ने आमरण अनशन शुरू कर दिया। लेकिन लोक परिषद की मध्यस्थता से 20 दिन बाद अनसन समाप्त किया। 28 मार्च 42 को जागीरी गुडो ने एक सभा करने के अवसर पर श्री आलिशान और अन्य कार्यकर्ताओ पर घातक आक्रमण किया।

1942 केजिम्मेवार हुकुमत आन्दोलन में श्री आलीशान को 6 महीने की सजा दी गई और जेल से मुक्त होते ही उन्हे पुन नजरबन्द कर दिया गया। वे आठ महीने नजरबन्द रहे। श्री मागीलाल त्रिवेदी ने चन्डावल मे नेहरू वाचनालय नामक एक सस्था चलाई है जो चडावल मे बौद्धिक विचारक्रांति का प्रमुख केन्द्र है। श्री मागीलाल त्रिवेदी की आयु 73 वर्ष की है परन्तु वे आज भी अपने क्षेत्र के विकास के लिए निरतर प्रयत्नशील है।

श्री बशीधर पुरोहित



श्री बशीधर पुरोहित का जन्म सन् 1919 मे जोधपुर के पुष्करणा ब्राह्मण परिवार मे हुआ। उन्होने इटर तक शिक्षा प्राप्त की। शिक्षा प्राप्ति के वाद वे जोधपुर की नगरपालिका मे कार्य करने लग गए थे लेकिन उनका आकर्षण मारवाड लोक परिषद की आन्दोलनकारी राष्ट्रीय प्रवृत्तियो की ओर था इसी कारण वे राजकीय सेवा से अलग कर दिए गए।

उन्होंने 1940 से मारवाड लोकपरिषद की सदस्यता स्वीकार की और थोडे ही समय मे वे लोक नायक जयनारायण व्यास के विश्वास-पात्र वन गए। उन्होने 1940 के आन्दोलन मे लोक परिषद की प्रवृत्तियो मे निरन्तर योग दिया। 1942 मे जब मारवाड लोक परिषद ने जिम्मेवार हुकुमत आन्दोलन शुरू किया तो श्री बशीधर पुरोहित भी गिरफ्तार कर लिए गए। वे 9 महिने तक जोधपुर की सैन्ट्रल जेल मे रहे।

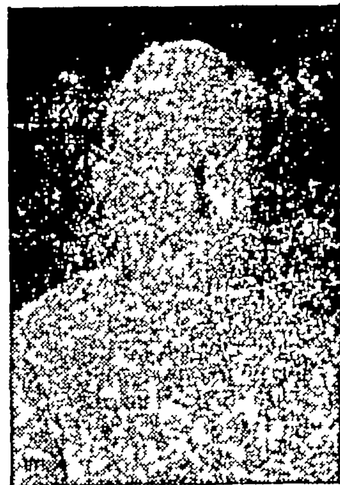
जेल मे मुक्त होने पर उन्होंने अपना पूरा समय मारवाड लोक परिषद की प्रवृत्तियो मे लगाना शुरू कर दिया। उन्होने राज्य के जागीरी क्षेत्रो मे किसानो को सगठित और जागृत करने के कार्य मे अपने आपको लगा दिया। मारवाड के कोने कोने मे होने वाले जागीर-विरोधी किसान सम्मेलनो मे उन्होंने भाग लिया। 13 मार्च 1947 को नागौर जिले के डावडा ग्राम मे किसान सम्मेलन के अवसर पर जागीरदारो द्वारा उन पर घातक और कातिलाना आक्रमण किया गया। वे वुरी तरह घायल हो गए। उनके सिर और हाथो की हड्डियो के अनेको फ्रेक्चर हो गए।

1948 49 से उन्होने पत्रकारिता के क्षेत्र मे तीव्र गति से कदम रखा। उनके पत्रो पर सरकार प्रतिवन्ध लगाती गई और वे एक के वाद दूसरा पत्र निकालते गए। आग, अगारे, आ आग और फिर ज्वाला उसी क्रम मे प्रकाशित हुए हैं।

स्वाधीनता के वाद के प्रारम्भिक दिनो मे ज्वाला को निरन्तर और नियमित करने के लिए उन्हे कठोर सघर्ष करना पडा है। 1954 तक वे काग्रेस सगठन के सक्रिय सदस्य रहे हैं। इस समय उनका पत्र ज्वाला जयपुर और जोधपुर से एक साथ प्रकाशित होता है। अपने इस पत्र के द्वारा उन्होने राजस्थान के लोकमानस को राजनैतिक प्रशिक्षण देने और जन आकाक्षाओ को अभिव्यक्त करने का वहुत वडा कार्य किया है।

उनका वर्तमान पता है—तिवाडी विल्डिग, मिर्जा इस्माइल रोड, जयपुर

श्री मानमल जैन



श्री मानमल जैन का जन्म सवत् 1964 की मार्गशीर्ष शुक्ला 14 को जोधपुर के एक सपन्न ओमवाल परिवार मे हुग्रा था । उनकी शिक्षा जोधपुर मे ही हुई । 23 वर्ष की अवस्था मे श्री मानमल जैन ने ग्रपनी पत्नि महित स्वदेशी का व्रत लिया ग्रौर खादी पहनने लगे । 1931 मे उन्होने ग्रपने अन्य मित्रो के साथ जोधपुर मे यूथ लीग की स्थापना की और उसके मत्री चुने गए । 1931 मे ही जोधपुर मे उन्होने नगर काग्रेस की स्थापना की । 1932 में उन्होने सविनय अवज्ञा आन्दोलन मे व्यावर के डिक्टेटर की हैसीयत से भाग लिया । उन्हें 1 वर्ष की सजा दी गई । इस जेल की अवधि मे उनकी पत्नि वर्ष भर मृत्यु शैया पर रही ।

1933 मे उन्होने ग्रपने मित्रो के सहयोग से जोधपुर मे हरिजन सघ की स्थापना की और हरिजन सुधार का अभियान तीव्रता से शुरु किया । राजपूताने के देशी राज्यो की जो कान्फ्रेन्स व्यावर मे हुई उसमे सक्रिय रूप मे भाग लिया । इसी वर्ष पाली मे महान क्रान्तिकारी श्री फतहराज पुरोहित के सहयोग से उद्योग मन्दिर की स्थापना की गई ।

1934 मे उन्होने जैन समाज मे पर्दा प्रथा के विरोध मे आन्दोलन किया । इसी वर्ष यूथ लीग के गैर कानूनी घोषित होने पर समान उद्देश्य और विधान वाली वाल भारत सभा की स्थापना की : 1935 मे जोधपुर मे प्रजामण्डल की स्थापना की गई और वे उसके मत्री चुने गए । विद्यार्थियो पर सरकार द्वारा लगाई गई फीस ग्रौर वाईजी का तालाव वुराने के विरोध मे आन्दोलन उठाया । 1935 मे उन्हें गणगौर काड मे गिरफ्तार करके शारीरिक यातनाए दी गई और राज्य ने उन पर मुकदमा चलाया । प्रजामण्डल के गैर कानूनी घोषित होने पर 1936 मे उन्होने अपने मित्रो के साथ सिविल लिवर्टीज युनियन की स्थापना की ।

सन् 1936 मे श्री मानमल जैन राजपुताना देशी राज्य प्रजा परिपद के मत्री बनाए गए । उनकी राजनैतिक प्रवृत्तियो के कारण जोधपुर राज्य ने उन्हें 1 वर्ष के लिए दौलतपुरा किले मे नजरवद कर दिया । सिविल लिवर्टीज युनियन को भी गैर कानूनी घोषित करने पर 1938 मे मारवाड लोक पषिद की स्थापना की गई । लोक परिपद ग्रौर देशी राज्य प्रजा परिषद की प्रवृत्तियो मे श्री मानमल जैन पूरे उत्साह से लग गए । 1940 के लोक परिपद के ग्रान्दोलन मे सक्रिय भाग लिया । 1942 के ग्रान्दोलन मे भयकर

बीमारी के कारण राजनैतिक जीवन मे अलग हो कर 1945 तक चिकित्सा करवाते रहे ।

1945 के वाद श्री मानमल जैन लोक परिपद और काग्रेम के सक्रिय सदस्य के रूप मे कार्य करते रहे हैं । वे जोधपुर काग्रेस के अध्यक्ष, मत्री और पदाधिकारी रहे हैं तथा वर्षो तक प्रदेश काग्रेस कमेटी के सदस्य रहे हैं । जोधपुर के प्रारम्भिक लोक जागरण मे उनका वहुत वडा हाथ रहा है । उनका पता है—महेन्द्र मैकेनिकल वर्क्स, चौपासनी रोड जोधपुर ।

श्री रणछोड़ दास गट्टानी



श्री रणछोड दास गट्टानी का जन्म जोधपुर के एक माहेश्वरी परिवार मे 14 अगस्त 1917 को हुआ । उनकी शिक्षा जोधपुर मे और फिर कानपुर मे हुई और कानपुर से एल० एल० वी० करने के वाद उन्होंने जोधपुर मे अपनी वकालात शुरु करदी । 1936 मे श्री गट्टानी ने जोधपुर मे सिविल लिवर्टीज युनियन की स्थापना की थी । तव से वे जोधपुर रियासत के सार्वजनिक और राजनैतिक जीवन मे तेजी से आगे वढते गए । सिविल लिवर्टीज युनियन के गैर कानूनी घोपित होने पर 1938 मे मारवाड लोक परिपद की स्थापना की गई । लोक परिपद की स्थापना मे श्री गट्टानी का प्रमुख योग था ।

श्री रणछोडदास गट्टानी ने अत्यन्त दृढतापूर्वक जागीरी अत्याचारो का विरोध शुरु किया और किसानो को सगठित होकर जागीरदारो के अत्याचारो का मुकावला करने के लिए प्रेरित किया । 1940 मे श्री गट्टानी गिरफ्तार कर लिए गए और उन्हें अन्य 6 साथियो की तरह अलग-अलग किलो मे वद कर दिया गया । 1942 मे मारवाड लोक परिपद ने जो जिम्मेवार हुकूमत आन्दोलन शुरु किया उसमे उन्हें भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत दो वर्षो की अवधि से भी अधिक समय तक नजर वन्द रखा गया ।

श्री रणछोड दास गट्टानी मारवाड लोक परिपद के अध्यक्ष निर्वाचित हुए थे और जागीरी प्रथा को समाप्त करने का नारा उन्होंने ही जागीरी क्षेत्रो में पहली वार दिया था । उन्होंने फलौदी में रहकर कुछ समय तक वहा वकालात की और अपने प्रयत्नो से उन्होंने

फलोदी की युवाशक्ति को लोक परिषद के झडे के नीचे एकत्रित और सगठित किया। फलोदी मे जो लोक जागरण और चेतना पैदा हुई थी उनका श्रेय श्री गट्टानी को भी बहुत अशो मे हैं। फलौदी की लोक परिषद राज्य भर की सबसे अधिक सगठित सस्था थी।

1945 के बाद श्री रणछोड दास गट्टानी ने जोधपुर मे 12 वप तक वकालात की। उनकी सत्यनिष्ठा, तेजस्विता और स्पष्टवादिता उन्हे हर क्षेत्र मे आगे बढाती गई। 14 दिसम्बर 1957 को उन्होने राजस्थान के एडिशनल सेशन जज का पद स्वीकार कर लिया। 9 दिसम्बर 68 को वे राजस्थान के सेशन जज बना दिए गए और 1970 मे श्री रणछोडदास गट्टानी राजस्थान हाई कोर्ट के जज नियुक्त हो गए। श्री गट्टानी आजकल राजस्थान हाई कोर्ट के एक प्रभावशाली जज हैं।

श्री राधाकृष्ण बोहरा तात साहेब

जन्म—2 सितम्बर, 1919

वर्तमान पता—जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर

श्री राधाकृष्ण बोहरा तात साहेब राजस्थान के एक अत्यत सुलझे हुए, प्रतिभाशाली और सत्यनिष्ठ राजनीतिज्ञ हैं। उन्होने लखनऊ से एम० ए०, एल० एल० बी किया था। उनका अध्ययन बहुत गहरा है और अपने आदर्श और उद्देश्य के प्रति उनका निस्वार्थ और निश्छल समपण रहा है। इसी कारण से वे राजनीति मे उन लोगो के साथ समन्वय नही कर सके हैं जो राजनीति को अपना व्यवसाय (प्रोफेशन) मान कर चलते रहे है।

उनका जन्म 2 सितम्बर 1919 को जोधपुर के एक सम्पन्न पुष्करणा ब्राह्मण परिवार मे हुआ। लखनऊ से वे 1940 मे शिक्षा समाप्त करके जोधपुर आगए और आते ही वे मारवाड लोक परिषद की प्रवृतियो मे अत्यत उत्साह से भाग लेने लग गए। उनके पिता के लिए यह सब असह्य था। उनके पिता जोधपुर रियासत की रेल्वे के एक उच्च अधिकारी थे और अपने पुत्र को वे किसी भी रूप मे राजद्रोह के मार्ग पर जाते हुए देखना पसद नही कर सकते थे।

1942 मे जब मारवाड लोक परिषद ने उत्तरदायी शासन के लिए आन्दोलन शुरू किया उस समय श्री राधाकृष्ण बोहरा भी गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हे 2½ वर्ष की सजा दी गई। वे कई दिन तक सेंट्रल जेल मे रहे और बाद मे जालोर किले मे भेज दिए गए। जेल से मुक्त होने के बाद उनके पिता ने उनको घर से अलग कर दिया और पारिवारिक सपत्ति प्राप्त करने के अधिकार से भी वचित कर दिया। जेल से मुक्त होने के बाद उन्होने नेहरू ब्रिगेड का गठन किया। नेहरू ब्रिगेड के 6000 सक्रिय सदस्य हो गए और वे हर राष्ट्रीय कार्यक्रम को क्रियान्वित करने मे सबसे आगे रहे।

1945–46 मे श्री राधाकृष्ण बोहरा भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बन गए और जोधपुर मे कम्युनिस्ट पार्टी की प्रवृतियो को चारो ओर फैलाया। लेकिन आगे जाकर उन्हे कम्युनिस्ट पार्टी से भी अलग होना पडा। उनके विरोधियो ने उन पर मानसिक असतुलन का दोष लगा कर उन्हे कई दिनो तक पागलखाने मे रहने को मजबूर किया।

श्री राधाकृष्ण बोहरा ने जोधपुर में ट्रेडयूनियन के अतर्गत मजदूरो और कर्मचारियो की कई यूनियनो का सगठन करवाया। उन्होने प्रत्येक क्षेत्र मे लोगो को काम करने की प्रेरणा दी है। उनकी कार्यक्षमता और प्रतिभा असाधारण है लेकिन राजनैतिक दलबदियो के कारण उनकी क्षमता और सामर्थ्य का उपयोग जनहित मे नही हो पा रहा है।

श्री राम चन्द्र बोड़ा एम०ए०

जन्म— सन 1925

वर्तमान पता— दाता हाउस चांदपोल के बाहर जयपुर ।



श्री रामचन्द्र वोडा राजस्थान के एक प्रतिभाशाली स्वतन्त्र विचारक है। उनके अध्ययन का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक रहा है। पाश्चात्य दर्शन और वहा का बौद्धिक विकास उनके स्वाध्याय के मुख्य विपय रहे हैं। वे एक मार्क्सवादी चितक हैं और उनके चिंतन पर मनीषी एम०एन० राय के मार्क्सवाद का गहरा प्रभाव है। उन्होने इमी विचारधारा को लेकर कई वर्षो तक जोधपुर से विवेक नाम के एक विचार प्रधान साप्ताहिक का सपादन किया था। वे एक मजे हुए लेखक हैं और अपनी तर्क प्रधान मौलिक शैली मे वे समाज की यथास्थितियो को समय-समय पर झकझोरते रहते हैं।

उनका जन्म जोधपुर के एक मध्यवर्गीय ब्रह्मण परिवार मे सन् 1925 मे हुआ। उनकी शिक्षा जोधपुर और दयालवाग आगरा मे हुई। आगरा विश्वविद्यालय से ही उन्होंने दर्शन शास्त्र मे एम० ए० किया। मारवाड लोक परिषद के सत्याग्रह मे उन्होंने भारत छोडो आन्दोलन के क्रम मे जोधपुर के कुछ मित्रो के साथ मिलकर क्रातिकारी और आतकवादी प्रवृत्तियो की शुरुआत की। जोधपुर के नौजवानो ने अग्रेजी सल्तनत के विरुद्ध अपना आक्रोश प्रकट करने के लिये वम विस्फोट के कार्यक्रम बनाये थे। इस तरह की आतकवादी प्रवृत्तियो मे नौजवानो का एक दल गिरफ्तार हो चुका था। उन्हे सरकार ने पहला वम षडयन्त्र केस-कहा था।

श्री रामचद्र वोडा दूसरे वम षडयन्त्र केस के अभियुक्त वनाये गये और अन्य साथियों के साथ उन पर जोधपुर सैंट्रल जेल मे मुकदमा चला। राजद्रोह और भारत सुरक्षा कानून के अतर्गत उन्हे 8 वर्ष की सजा दी गई लेकिन करीव 2½ वर्ष वाद मारवाड लोक परिषद और सरकार का समझौता होने पर वे छोड दिये गये।

श्री रामचद्र वोडा अग्रेजी हिन्दी के कई प्रमुख समाचार पत्रो के वर्षो तक सवाददाता रहे है। देश के सभी वडे वडे पत्रो मे उनके विचार पूर्ण लेख निरतर प्रकाशित होते रहते हैं। उन्होंने पिछले वर्षों मे कई मौलिक और चिंतन प्रधान ग्रथो की रचना की है। राजस्थान की समस्याओ पर भी उनके विचार समय-समय पर प्रकाश मे आते रहते हैं। पिछले कुछ वर्षो से श्री वोडा राजस्थान की राजकीय सेवा मे है और इन दिनो सार्वजनिक संपर्क निदेशालय के उप-सचालक के पद पर कार्य कर रहे हैं।

श्री लप्सा बेडवाल



जन्म—21 जनवरी 1923

पता—श्रीपुरोहितजी की हवेली
नायो का बढा, जोधपुर

श्री लप्सा वेडवाल मारवाड लोक परिषद् के 1942 के उत्तरदायी शासन आन्दोलन मे करीव साल भर जेल मे रहे। जेल मे उन्हे एक लम्बे समय तक कालकोठरी व खडी हथकडी की सजा दी गई। 1940 के आन्दोलन मे वे अनेक वार गिरफ्तार हुए, और छोडे गये। 1940 मे पुलिस ने उनकी अमानुषिक पिटाई की थी। उन्हे स्कूल से निकाल दिया गया था। वचपन से ही उनका झुकाव राष्ट्रीय आन्दोलनो, और आतकवाद की ओर होगया था।

वे राजस्थान के एक मजे हुए मिशनरी पत्रकार हैं। उन्होने 'राष्ट्रदूत' (जयपुर) के सम्पादकीय विभाग मे वर्षों तक काम किया। इसके अतिरिक्त भी उन्होने कई दैनिक व साप्ताहिक पत्रो का सम्पादन किया। जोधपुर से उन्होने अर्ध साप्ताहिक 'न्यूज वुलेटिन, प्रकाशित किया था। उनकी भाषा व शैली परिमार्जित है। उनके विचारो की प्रौढता, और परिपक्वता का कारण उनका इतिहास, राजनीति, दर्शन, मनोविज्ञान, और साहित्य का गहन अध्ययन है। उनका जागृत स्वाभिमान, सत्यनिष्ठा, और स्पष्टवादिता वर्तमान स्वार्थ-परक राजनीति से मेल नही खाते, और इसीलिए समाज व प्रशासन की गिरती हुई नैतिकता, और वढते हुए भ्रष्टाचार का वे हर कदम पर डट कर विरोध करते हैं।

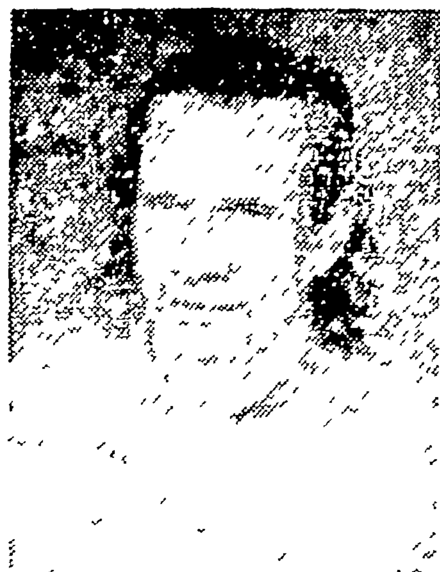
जेल से मुक्त होने के वाद वे रैडिकल डैमोक्रेटिक पार्टी मे शामिल हो गए थे और 1948 मे रैडिकल डैमोक्रेटिक पार्टी के भग होने के वाद वे किसी भी राजनैतिक दल मे सम्मिलित नही हुए। उनकी मान्यता है कि दलो के कारण ही राजनीति मे दलदल उत्पन्न होता है, और जन सामान्य के हितो का पता नही चलता। एतदर्थ, दलरहित समाज व दलरहित सरकार को ही वे सर्वोपरि मानते हैं। वे एक रैडिकल डैमोक्रेट है, और समाजवाद व साम्यवाद मे उनकी तनिक भी आस्था नही है। उनके विचारो व उनकी प्रक्रियाओ पर स्वर्गीय एम०एन० राय के दर्शन की गहरी छाप है। सही अर्थों मे वे एक मूर्ति भजक हैं।

उनका जन्म 21 जनवरी, 1923 को जोधपुर मे हुआ था। आजकल उनका सारा समय गहन अध्ययन व स्वतन्त्र लेखन मे व्यतीत होता है।

✓संत लाडाराम वैद्यराज

जन्म —सन् 1902

वर्तमान पता—राजस्थान ग्रामोत्थान केन्द्र, वागर जोधपुर।



सत लाडाराम वैद्यराज का जन्म जोधपुर मे सन् 1902 मे हुआ। इनका वचपन अपने नाना श्री दयाराम मेहरा के पास गुजरात से वीता जो जैन स्थापत्य के विशेषज्ञ थे। अहमदावाद मे निरतर रहने के कारण उनमे राष्ट्रीयता के सस्कार शुरु से ही विकसित होने लग गए थे। 1922 मे अहमदावाद के पास नामवरा मिलिट्री कैप मे वे गिरफ्तार हो गए थे और उन्हे 4 महिने की सजा दी गई। 1930 के नमक सत्याग्रह मे वे डाडी यात्रा मे महात्मा गाधी के साथ थे।

सत लाडाराम वैद्यराज ने सिद्ध रामनाथ महाराज जसनाथी का शिष्यत्व अगीकार कर लिया था। 1936 मे जोधपुर आकर उन्होने एक राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना की और हरिजन वालको को पढाना शुरु किया। 1942 मे मारवाड लोक परिषद के जिम्मेवार हुकूमत आन्दोलन मे सत लाडाराम ने सत्याग्रह किया। वे गिरफ्तार कर लिए गए और जोधपुर मे सैंट्रल जेल मे तथा दौलतपुरा किले मे उन्होने 2½ वर्ष की अपनी सजा पूरी की।

श्री सत लाडाराम ने अकाल और वाढ पीडितो की सेवा मे, तथा रामदेवरा मे आने वाले कुष्ट रोगियो की सेवा मे अपना वहुत समय लगाया। उन्होने विशेष रूप से किसानो को जागीरदारो से राहत दिलवाने के लिए ठोस कार्य किया। 1945 मे इसी प्रसग मे ओसिया तहसील के चिराई गाव मे किसानो को लाटो का धान प्राप्त करवाने मे जागीरी त्रास से मुक्त कराने मे वे जागीरी लोगो की नगी तलवारो मे घिर गए थे।

सत लाडाराम ने जोधपुर महाराजा द्वारा शिकार के लिए सुरक्षित सुअरो को न मारने के विरोध मे किसानो का आन्दोलन सगठित किया। शिकार के लिए सुरक्षित सुअर किसानो के खेत उजाड देते थे लेकिन उनकी कोई दाद फरियाद नही थी। सत लाडाराम के आन्दोलन मे जोधपुर महाराजा ने उन्हे वहुत वडा प्रलोभन देकर यह आन्दोलन वन्द कर देना चाहा परन्तु सत लाडाराम ने महाराजा के प्रलोभन को ठुकरा दिया और किसानो के फसलो की सुरक्षा की व्यवस्था करवाई। उन्होने पोकरण ठिकाने के मालियो का ठाकुर से समझौता करवाया और विमलपुर के जागीरदार द्वारा जमीन मे गाडे हुए जिंदा दयाराम की जान वचाने मे अपने प्राणो की वाजी लगा दी।

सत लाडाराम वर्षो तक मारवाड लोक परिषद, देशी राज्य प्रजा परिषद, प्रदेश काग्रेस और अखिल भारतीय काग्रेस के सदस्य रहे हैं। वे एक सेवा भावी व्यक्ति हैं। उन्होने जगह-जगह अनाथ वोर्डिंग हाउस और छात्रावास खुलवाए है। उनका जीवन पीडित मानवता की सेवा को समर्पित है। पिछडे वर्ग मे शिक्षा के प्रचार और सस्कारी जीवन के विकास के लिए वे निरतर प्रयत्नशील हैं।

श्री सीताराम सोलंकी



श्री सीताराम सोलकी का जन्म 15 मार्च 1918 को जोधपुर मे हुआ। इनकी स्कूली शिक्षा तो सामान्य ही हुई परन्तु इनका पारिवारिक व्यवसाय कपडो की सिलाई था जिसमे इन्होने निपुणता प्राप्त करली थी। इनकी सिलाई की दुकान खादी भण्डार के पास ही थी और खद्दर के कपडो की सिलाई करने की इनकी एक मात्र दुकान थी। 1939 मे श्री सीताराम सोलकी को युद्ध विरोधी साहित्य वितरण करने के अपराध मे पुलिस ने 4 दिन तक हिरासत मे रखा और क्रूरता पूर्वक मारपीट की। 1940 मे जब लोक परिषद का पहला आन्दोलन शुरु हुआ तब इन्होने वानर सेना बनाकर आन्दोलन मे सहयोग दिया था। 1940 मे कुछ मित्रो ने मिलकर आजाद सघ बनाया था।

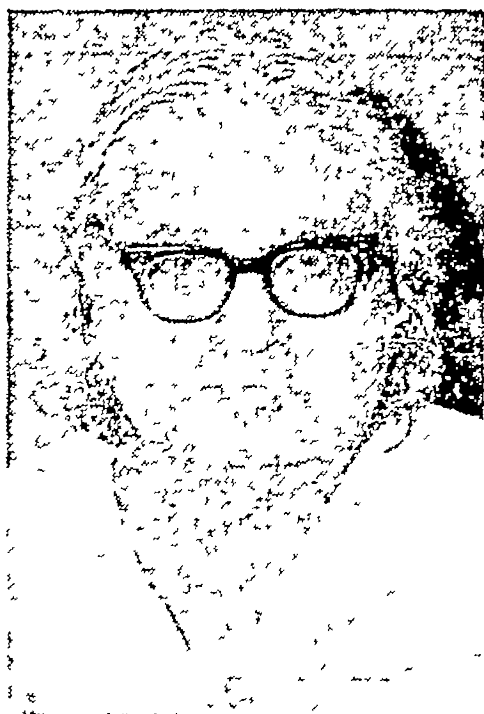
1942 मे मारवाड लोक परिषद के आन्दोलन के क्रम मे अगस्त 42 मे श्री सीताराम सोलकी ने अपने कुछ अन्य मित्रो के साथ मिल कर जोधपुर मे बम विस्फोट करने के कार्यक्रम बनाए। उसी क्रम मे जोधपुर मे दो बम काड हुए। सरदारपुरे मे श्री सीताराम सोलकी का मकान किसी तीसरे आदमी के नाम से किराए पर लेकर उसमे बम बनाए जाते थे। श्री सीताराम सोलकी दूसरे बम षडयन्त्र केस से सबद्ध थे। दूसरे बम षडयत्र केस मे स्टेडियम, म्युनिसिपल ऑफिस, रेजीडेन्सी और चर्च मे बम विस्फोट किए गए। श्री सीताराम सोलकी पर भारत सुरक्षा कानून की कई धाराए लगाई गई। उन्हे मई 43 मे गिरफ्तार किया गया। अप्रेल 44 मे उन्हे 4 वर्ष की सख्त कैद और 400 रुपये का जुर्माना किया गया। लेकिन दो वर्ष दो महीने वाद वे जेल से रिहा कर दिए गए। 15 अगस्त 1945 को जब श्री सीताराम सोलकी जेल मे थे तब उनके भाई का देहावसान हो गया था लेकिन उन्हें पैरोल पर भी रिहा नही किया गया।

1948 मे जिन लोगो ने जोधपुर मे समाजवादी काग्रेस की स्थापना की थी उसमें वे शामिल हो गए और फिर राज्य में समाजवादी कार्यक्रम के अनुसार आन्दोलन करते रहे। 1950 मे श्री सीताराम सोलकी के पिता ने इन्हे घर से अलग कर दिया और पारिवारिक सपत्ति से वचित कर दिया।

श्री सीताराम सोलकी ने वाचनालय और प्रौढ शिक्षा के प्रचार की दिशा मे कुछ कार्य किया तथा जागीरी विरोधी आन्दोलनो मे सहयोग करते रहे। उन्होने भ्रष्ट कर्मचारियो, भ्रष्ट काग्रेस जनो और भ्रष्टाचार फैलाने वाले लोगो के विरुद्ध आन्दोलन किए। उन्होने सर्वोदय की दिशा मे भी कार्य किया है और नशाबदी समिति के शराब बदी सत्याग्रह मे भी भाग लिया है।

श्री सीताराम सोलकी जोधपुर की अनेको लोक-सेवी सस्थाओ के सदस्य और पदाधिकारी हैं तथा जोधपुर स्वतन्त्रता सग्राम सैनिक समिति के सयोजक हैं। इनका पता है—नीमले कुए के पास जोधपुर।

श्री सुमनेश जोशी



जन्म — 3 सितम्बर 1916
वर्तमान पता — नारनोली भवन,
सांगानेरी गेट, जयपुर–3

राजपूताने मे सामतवाद और राजशाही के विरुद्ध लडे गए स्वातंत्र्य समर मे श्री सुमनेश जोशी की भूमिका एक तेजस्वी· सम्पादक और विद्रोह के उन्नायक क्रातिकारी कवि की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अपने ओजपूर्ण काव्य–पाठ से उन्होंने जहा रियासती जनता के लोक-मानस मे इन्कलाब की आग सुलगा दी थी वहा दूसरी ओर उन्होंने अपनी लोह-लेखनी से राजतत्रो के जन-विरोधी–षडयत्रो और कुचक्रो को बेनकाब करके रख दिया था।

श्री सुमनेश जोशी राजस्थान के वरिष्ठ साहित्यकार, सुलझे हुए विचारक और एक क्राति-दृष्टा कवि हैं। वे एक जन्मजात मिशनरी हैं और विगत 40 वर्षो से समाज की नवरचना के लिए वैचारिक–क्राति के अपने मिशन को लेकर आगे बढ रहे हैं। उन्होने अपनी लोह लेखनी से समाज की जडता को तोडने और समाज की यथास्थितियो को चुनौतियें देने का कार्य किया है। उन्होने सामाजिक-रूढता, राजनैतिक चक्रव्यूह और आर्थिक शिकजो के अनावृत रूप मे जिस सत्य का साक्षात्कार किया है उसे ही वे अपने साहित्य के माध्यम से जन जन तक पहुचा रहे हैं।

श्री सुमनेश जोशी का जन्म 3 सितम्बर 1916 को जोधपुर के एक सामान्य पुष्करणा ब्राह्मण परिवार मे हुआ था। 14 वर्ष की उम्र मे ही उनके पिता का देहान्त हो गया था और उन पर परिवार के सचालन का दायित्व आ पडा था। उन्होंने पारिवारिक दायित्व के साथ–साथ अपना अध्ययन भी जारी रखा और साहित्य के अतिरिक्त दर्शन, मनोविज्ञान, समाज-शास्त्र और इतिहास का उन्होंने गहरा अध्ययन किया। वे राजकीय सेवा मे लग गए और निरतर उत्कर्ष करते–करते थोडे ही समय मे वे राज्य के प्रचार अधिकारी के पद तक पहु च गए।

देश सेवा की प्रेरणा उन्हे लोक–नायक श्री जयनारायण व्यास से मिली और अपने विद्यार्थी काल से तथा अपने राजकीय सेवा काल से जोधपुर की राजनैतिक प्रवृतियो मे निरतर भाग लेते रहे। जोधपुर मे राजनैतिक सस्थाओ की स्थापना के साथ ही सरकार

उन सस्थाओ को गैर कानूनी घोषित कर देती थी। उसी क्रम मे एक के वाद एक कई सस्थाओ का निर्माण हुआ और श्री सुमनेश जोशी राजकीय सेवा मे रहते हुए भी यूथ लीग, वालभारत सभा, सिविल–लिवरटीज यूनियन, पीपुल्स एसोशियेशन, प्रजामण्डल और लोक परिषद आदि सभी–सभी सस्थाओ के निर्माण मे सवश्री छगन राज चौपामनीवाला, अचलेश्वर प्रसाद शर्मा, मानमल जैन, अभयमल जैन, गणेशीलाल व्यास और रणछोडदास गट्टानी के साथ समान रूप से सक्रिय रहे।

सन 1936 तक श्री सुमनेश जोशी उग्र और क्रातिकारी राष्ट्रीय कविके रूपमे राजपूताने भर मे प्रसिद्ध हो चुके थे। प्रचार अधिकारी के रूप मे उन्हें राज्य भर मे यात्रा करने की राज्कीय सुविधा थी और अपने दौरो मे हर स्थान पर राष्ट्रीय और क्रातिकारी कविताओ से उन्होने इन्कलाब का ऐसा माहौल खडाकर दिया था जो सरकार के लिए लम्बे समय तक सहन करना कठिन था। इतना ही नही राजपूताने की अन्य रियासतो के प्रजामण्डल अपने राजनैतिक समारोहो मे भी सुमनेश जोशी को विशिष्ठ रूप से आमत्रित करते और श्री जोशी अपने राजकीय पद की परवाह किए विना एक राष्ट्र-भक्त कवि के अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करते रहते। उन्हे राज्य की ओर से कई वार चेतावनियें दी गई और उनके कविता लिखने और उसके सार्वजनिक पाठ करने पर कई वार प्रतिवध लगाए गए। 1942 मे स्थिति उस समय अधिक विकट हो गई जव जोधपुर मे मारवाड लोकपरिषद ने जिम्मेवार हुकूमत आन्दोलन शुरू कर दिया था और श्री जोशी की कविताए आग मे घी का काम कर रही थी जोधपुर के अग्रेज प्रधान मत्री सर डोनाल्ड फील्ड ने उन्हें अपनी राजनैतिक प्रवृतियो को नियत्रित करने की अन्यथा राजकीय सेवा से त्याग–पत्र दे देने की सलाह दी। श्री सुमनेश जोशी ने अग्रेज प्रधान मत्री द्वारा विवश किए जाने पर राजकीय सेवा से 1 जुलाई 1942 को अपना त्याग पत्र दे दिया।

श्री सुमनेश जोशी ने राजकीय सेवा से मुक्त होते ही लोक परिषद के आन्दोलन की वागडोर अपने हाथो मे सम्हाली। 15 दिन तक उन्होने घूम-घूम कर राज्य की जनता के मनोवल को जागृत किया और जिम्मेवार हुकुमत के आन्दोलन मे नया वेग पैदा कर दिया। 14 जुलाई' 42 को श्री जोशी गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हे 4 वर्ष 7 महीने की सजा दी गई।

जेल से मुक्त होने के वाद श्री सुमनेश जोशी अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजापरिषद के प्रतिनिधि चुने गए और उन्होने मारवाड लोक परिषद के कार्यक्रम को लेकर राज्य भर मे सगठनात्मक प्रवृत्तियो को आगे वढाया।

उन्होने 1946 मे जोधपुर से 'रियासती' नाम के एक अत्यत सशक्त दैनिक-पत्र का सपादन और प्रकाशन किया। रियासती थोडे ही समय मे राजपूताने के साथ–साथ भारत भर के देशी रियासतो की जनता की आवाज के रूप मे देश मे छा गया।

स्वाधीनता के बाद राजपूताने के कुछ राजा अपनी रियासतो को पाकिस्तान मे विलय करने की तैयारी कर रहे थे, उस समय श्री सुमनेश जोशी ने अत्यत साहस के साथ खतरो मे कूद कर जिस तरह मे इन राजाओ के पाकिस्तान विलय के गुप्त दस्तावेजो को प्रकाशित किया और उनके राष्ट्रद्रोही षडयत्रो को बेनकाब किया उससे पत्रकार के रूप मे जहा उन्हे अखिल भारतीय ख्याति प्राप्त हुई वहां उन्हे तलाशी, जमानत, वारट देश-निकाले, फरारी और गिरफ्तारियो की कई विकट घाटियो मे से गुजरना पडा। अत मे सरदार पटेल और केन्द्रीय गृह-मत्रालय की लबी जाच के बाद उनके प्रकाशित अभिलेखो की पुष्टि होने पर उन्हें राज्य मे प्रवेश करने की अनुमति मिल सकी और जोधपुर तथा राजपूताने के अन्य कुछ राजाओ ने भारत मे विलय होना स्वीकार किया।

श्री सुमनेश जोशी लोक नायक जयनारायण व्यास के अत्यत विश्वास-पात्र साथी रहे हैं। राजनीति मे उनका कोई निहित स्वार्थ नही रहा है। उन्होने कभी पद और कुर्सी की चिता नही की। राजाओ और जागीरदारो के बडे-बडे प्रलोभनों को ठुकरा कर श्री सुमनेश जोशी ने समाज मे मिशनरी पत्रकारो के चारित्रिक नेतृत्व की स्थापना की है।

उन्होने अपनी पत्रकारिता के द्वारा जागीरी प्रथा और वश-परपरागत-राजतत्रो की समाप्ति और राजपूताने की रियासतो के एक सघ-राज्य बनाने के लिए बहुत प्रबल जन-मत बनाया था। उनके लेखो से लोगो को निरतर राजनैतिक प्रशिक्षण मिलता रहा है।

राजस्थान निर्माण के बाद श्री सुमनेश जोशी जयपुर आ गए और उन्होने 'राष्ट्रदूत' के सस्थापक सपादक का दायित्व सम्हाला। राष्ट्रदूत के प्रधान सपादक के रूप मे उन्होने पत्रकार जगत मे जो निर्भीक परपराए स्थापित की थी उससे स्वस्थ पत्रकारिता का प्रात मे विकास हुआ है। उन्होने राजस्थान मे पत्रकारो और सपादको के प्रशिक्षण का भी बहुत बडा कार्य किया। 1957 से 1962 तक उन्होने 'आयोजन' नामका एक शानदार सचित्र साप्ताहिक पत्र भी निकाला था जिसने स्वाधीनता के बाद लोगो को विकास और निर्माण की नई दिशाए दी हैं।

इस समय तक श्री सुमनेश जोशी के 38 से ऊपर ग्रथ प्रकाशित हो चुके है। उनके 60 ग्रथो के प्रकाशन की योजना प्रकाशनाधीन है। इन दिनो उनके दोनो पाव काम नहीं करते और वे चल फिर नही सकते हैं। उनका सारा समय अध्ययन और लेखन मे ही व्यतीत होता है।

स्वर्गीय श्री शिवदयाल दवे



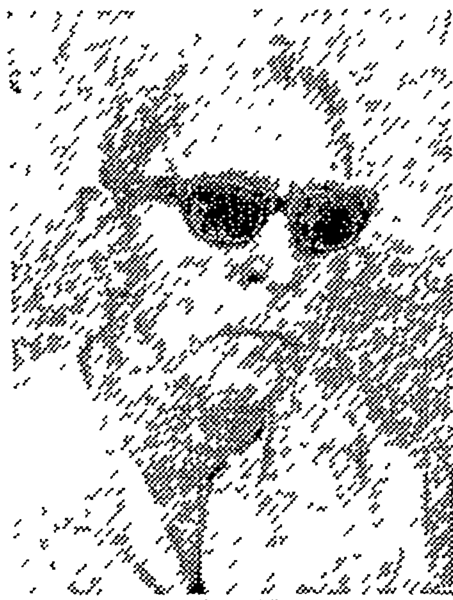
श्री शिवदयाल दवे का जन्म नागौर के श्रीमाली ब्राह्मण परिवार में सन् 1904 में हुआ। था। श्री दवे को संस्कृत, वेद और कर्मकाड की शिक्षा दी गई। परन्तु यह शिक्षा श्री दवे के जीवन में अनुपयोगी ही रही। 1924 में ही श्री दवे का लोकनायक जयनारायण व्यास से सम्बन्ध होगया था। वे व्यासजी के विश्वासपात्र बन गए और अंत तक उसी निष्ठ को बनाए रखा। उन्होने अपने क्षेत्र मे जागीरदारो और सरकारी अधिकारियो के अन्याय का कदम कदम पर डट कर मुकाबिला किया। लोहारु हत्याकाड और बीकानेर षडयन्त्र केस में इन्होने वेप बदलकर इन दोनो स्थानो पर जाकर वहा की रिपोर्ट्स व्यासजी को दी थी। उन्होने नागौर मे लोकपरिषद की स्थापना की और जागीरदारी की समाप्ति और उत्तरदायी शासन की स्थापना के लिए नागौर जिले मे जबरदस्त लोकमत बनाया। 1942 मे उत्तरदायी शासन आन्दोलन मे श्री दवे गिरफ्तार कर लिये गये और 2 वष तक भारत सुरक्षा कानून के अंतर्गत नजरबद रहे। जब आप जेल मे थे उस समय आपके एक मात्र पुत्र का देहान्त होगया था। उन्हे बीकानेर से देश-निकाला होगया था। वे कई वर्षों तक नागौर नगरपालिका के अध्यक्ष रहे।

श्री दवे एक तपे हुए और परखे हुए राष्ट्रसेवक थे। उन्होने अपने जीवन के प्रारम्भिक दिनो में नागौर मे आर्य समाज की स्थापना की थी और आर्य समाज के मच से राष्ट्रीयता और स्वदेशी का सदेश फैलाने लगे थे। श्री जयनारायण व्यास के सम्पक मे आने के बाद उन्होने अपने क्षेत्र मे राजनैतिक चेतना फैलाने का बहुत बडा कार्य किया। पुष्कर मे आयोजित मारवाड राजनैतिक सम्मेलन मे वे अपने जिले के सैकडो साथियो को लेकर पुष्कर सम्मेलन मे सम्मिलित हुए थे।

1944 मे जेल से मुक्त होने के बाद उन्होने जिले भर मे लोक परिषद की शाखाओ को सगठित किया और जगह जगह किसान सम्मेलन आयोजित करके जागीरी अत्याचारो के विरुद्ध किसानो को सगठित किया। उन्होने नागौर जिले मे नौजवानो की एक फौज सी तैयार कर दी थी।

श्री दवे की जेल से मुक्ति के बाद उनके पाव मे सूखे गेंगेरिन की बीमारी होगई थी और अंत में उन्हे एक पाव कटवाना पडा। देश की स्वाधीनता के बाद वे अधिक समय तक नही रह सके और पिछले वर्षो में अकस्मात् उनका देहावसान होगया।

डाक्टर श्री श्रीचन्द जैसलमेरिया



जन्म— 30 नवम्बर 1920

वर्तमान पता—458, जयनारायण व्यास, स्ट्रीट जोधपुर।

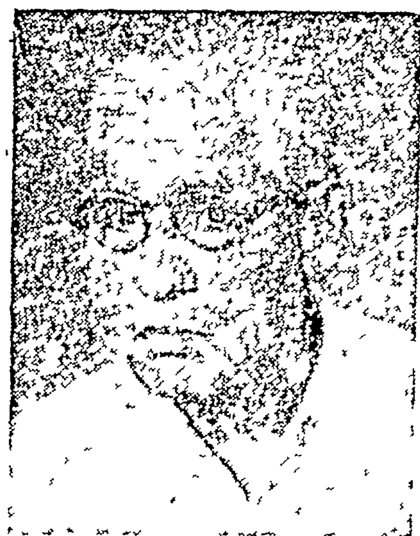
डाक्टर श्रीचद जैसलमेरिया का जन्म 30 नवम्बर 1920 को जोधपुर के एक प्रसिद्ध पुष्करणा ब्राह्मण परिवार मे हुआ था। डाक्टर जैसलमेरिया लोकनायक श्री जयनारायण व्यास के निकटतम सम्बन्धी है और इसलिये उनका प्रभाव शुरु से ही डाक्टर जैसलमेरिया पर था।

डाक्टर जैसलमेरिया आज तो जोधपुर के एक प्रसिद्ध समाजवादी नेता है और जोधपुर रियासत में तथा जोधपुर जिले में समाजवादी कार्यक्रमो को लेकर उन्होने अनेको आन्दोलन किए हैं। लेकिन राजनीति मे उनका प्रवेश मारवाड लोकपरिषद के माध्यम से ही हुआ था। 1939 मे लोकपरिषद की विधिवत् स्थापना और लोक नायक व्यास के जोधपुर आजाने पर डाक्टर जैसलमेरिया भी लोक परिषद की ओर आकर्षित हुए। उस समय तक वे रेल्वे मे नौकरी करते थे। नौकरी छोड कर वे 1940 मे मारवाड लोक परिषद के सगठन कार्य मे लग गये।

1942 मे मारवाड लोकपरिषद के उत्तरदायी शासन आन्दोलन मे उन्होने सत्याग्रही के रुप मे भाग लिया। वे भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत नजरबद कर लिये गये और करीब 15 महीनो तक उन्हें मोत्रिया किला और बिजोलाई पैलेस मे बद रखा गया। उन्होने राजस्थान के नर्सेज और कम्पाउन्डर्स के आन्दोलन को अपना तथा अपने साथियो का बहुत बडा योग दिया, उन्होने विद्यार्थियों के फीस विरोधी आन्दोलन को तथा जागीरी उन्मूलन को बहुत तत्परता से और हर सम्भव मोर्चे पर आगे बढाने मे योग दिया। उन्हे लोकहित और सार्वजनिक क्षेत्र मे किए गए कई आन्दोलनो मे सफलताए मिली। धान की निकासी के विरुद्ध आन्दोलन मे उन्हे कई दिनो तक जेल की यातनाए भी करनी पडी है। उन्होने किसानो का नुकसान करने वाले शिकार खाने से रक्षित सूअरो को मारने के आन्दोलन मे सत लाडाराम महाराज के साथ कधे से कधा मिलाकर कार्य किया था।

डाक्टर श्रीचद जैसलमेरिया देश की स्वाधीनता के बाद पूर्ण रुप मे समाजवादी पार्टी मे सम्मिलित होगए और पार्टी के कार्यक्रमो को राज्य के कोने कोने मे फैलाने मे पूरी शक्ति से लग गए। उन्होने जोधपुर जिले मे समाजवादी पार्टी का सदेश दूर दूर तक पहुचाने मे सफलता प्राप्त की है। इसी बीच उन्होंने अपने होम्योपैथी के गहरे अध्ययन के पश्चात् होम्योपैथ डाक्टर का डिप्लोमा प्राप्त कर लिया है और अपनी कुशल चिकित्सा से जनता की सेवा कर रहे है। उनका पता है—458 जयनारायण व्यास स्ट्रीट, जोधपुर, राजस्थान।

श्री हरीन्द्र कुमार चौधरी



श्री हरीन्द्र कुमार चौधरी राजस्थान के एक तपोनिष्ठ राष्ट्र-कर्मी और सुलझे हुए पत्रकार हैं। उन्होने 1941 में श्री ऋषिदत्त मेहता के पास कार्य करके मिशनरी पत्रकारिता की दीक्षा ली थी। उन्होने 11 वर्ष जोधपुर के प्रजा सेवक मे, 4 वर्ष जोधपुर के दैनिक रियासती मे तथा पिछले 12 वर्षो से जयपुर के ज्वाला और अमरज्योति साप्ताहिको के सम्पादकीय कार्यो को सम्हाला है। श्री हरीन्द्र कुमार चौधरी इसी अवधि मे 12 वर्ष तक साम्यवादी दल के सक्रिय कार्यकर्ता रहे है, जहा पत्रकार और कार्यकर्ता दोनो रूपो में उन्होने कार्य किया है।

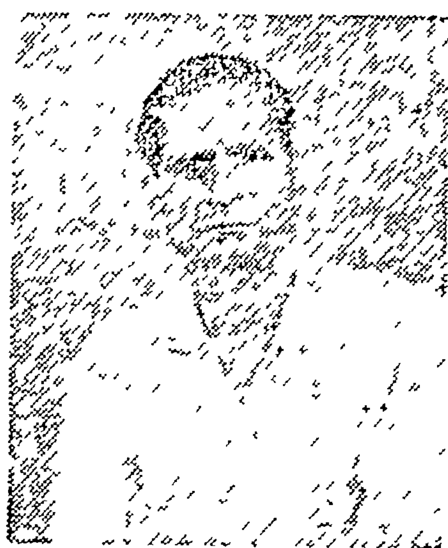
श्री हरीन्द्र कुमार चौधरी का जन्म नागोर जिले में डीडवाना नगर के पास दौलतपुरा ग्राम के समीप एक ढाणी मे किसान के घर हुआ। उनका जन्म कब, किस वर्ष, किस महीने में, किस दिन हुआ इसका कोई पता नही है। उनके माता पिता का बचपन म ही देहावसान हो गया। तब 5-6 वर्ष की अवस्था म इनके किसी दूर के चाचा ने इन्हे डीडवाना ने निरजनी सम्प्रदाय के साधुओ के प्रसिद्ध स्थान विरक्त-आश्रम के महतजी के चढा दिया। वहा उन्हे सत्यनिष्ठा, कर्त्तव्य-परायणता और आदर्शवादिता के सस्कार मिले। श्री हरीन्द्र कुमार चौधरी जी ने वहा महत हनुमानदासजी के निर्देशन मे सस्कृत की डिग्रीया प्राप्त की, हिन्दी साहित्य का अध्ययन किया और अग्रेजी की शिक्षा भी ग्रहण की।

अपने अध्ययन के प्रसग में जयपुर आने पर उनका सपर्क पडित हीरालाल शास्त्री से हुआ और वे अपना अध्ययन छोडकर प्रजामण्डल के सगठन के कार्य में लग गए। प्रजामण्डल के आन्दोलन के समय उन्होने आगरे में सत्याग्रह के सचालन शिविर मे श्री राधाकृष्ण बजाज के साथ कार्य किया। जयपुर सत्याग्रह की समाप्ति पर श्री हरीन्द्र कुमार चौधरी जोधपुर आ गए और लोकनायक जयनारायण व्यास के नेतृत्व मे सन् 1952 तक कार्य करते गए।

लोक परिषद के आन्दोलन मे 1940 मे श्री हरीन्द्र कुमार करीब 4 महीने तक जेल मे रहे थे और 1942 के आन्दोलन में भारत सुरक्षा कानून मे उन्हे करीब दो वर्ष तक तखतगढ (मोचिया) किले मे तथा बिजोलाई पैलेश मे नजरबद रखा गया। अपनी कम्युनिष्ट विचारधारा और प्रवृत्तियो के कारण 8 महीने उन्हे 1948 में भी नजरबद रहना पडा था। 1941 मे श्री हरीन्द्रकुमार ने साधुपना छोडकर श्रीमती पार्वती देवी से विवाह कर लिया।

जेल से रिहाई के बाद श्री हरीन्द्र कुमार लोक परिषद क नेतृत्व मे सामतवाद विरोधी चेतना के जागरण और किसान सगठन जैसे कामो मे लगे रहे। 13 मार्च 47 को डाबडा हत्याकाड मे श्री हरीन्द्र कुमार चौधरी पर भी जागीरी लोगो ने घातक आक्रमण किया था। महीनो तक उन्हें अस्पताल मे रहना पडा। अन्य नेताओ के साथ इन पर भी दफा 302 का मुकदमा चला था।

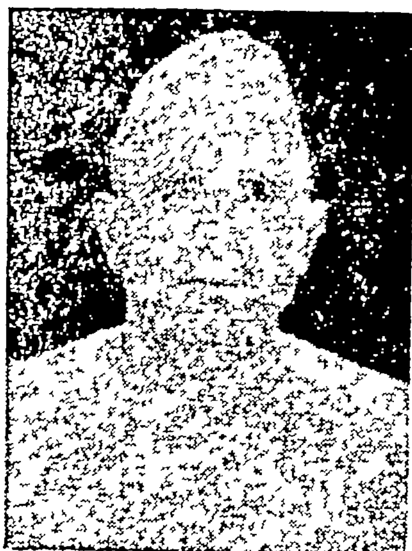
श्री अम्बालाल शर्मा फलोदी



श्री अम्बालाल शर्मा फलोदी के शाकद्वीपी ब्राह्मण हैं। इनकी शिक्षा गुरुकुल व्यावर मे हुई है इन्हे राष्ट्रीयता के सस्कार विद्यार्थी काल मे व्यावर मे ही मिल गए थे। फलोदी मे लोक परिषद की शाखा स्थापित होने पर श्री अम्बालाल उसके सदस्य बन गए और मई 1942 मे लोक परिषद ने जिम्मेवार हुकूमत आन्दोलन शुरु किया तो श्री अम्बालाल शर्मा उसमे कूद पडे। सत्याग्रह करते हुए वे गिरफ्तार कर लिए गए और उन्हे एक वर्ष की सजा और 25 रुपये का जुर्माना किया गया। सजा पूरी होने पर वे जेल से छूटे।

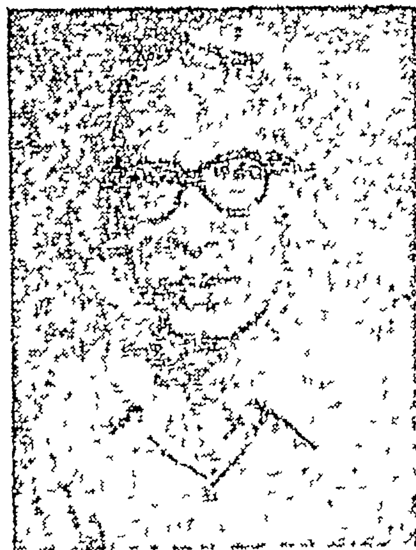
- देश की स्वाधीनता के बाद श्री अम्बालाल शर्मा ने भारत सेवक समाज, हरिजन सेवक सघ, खादी ग्रामोद्योग एव अन्य रचनात्मक प्रवृत्तियो मे अपने आपको लगाए रखा है। श्री अम्बालाल शर्मा पिछले दिनो नमक का स्वतन्त्र व्यवसाय करने के लिए प्रयत्नशील थे। वे फलोदी लोक परिषद के और काग्रेस के एक कर्मठ कार्यकर्ता हैं।

√श्री उमाराम चौधरी रोड़ू



श्री उमाराम चौधरी का जन्म सन् 1892 मे नागौर जिले के रोड़ू ग्राम मे एक जाट परिवार मे हुआ था। सामान्य शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे बगाल और आसाम चले गए थे। 1932 मे पीछे वे अपने गाव में आए और गाव मे स्कूल शुरु किया। गाव के जागीरदार यह सहन नहीं कर सके। चौधरी उमाराम ने बैठ, बेगार, लाग-बाग और जागीरी अत्याचारो का विरोध शुरु किया और अपने क्षेत्र के किसानो को सगठित करना शुरु किया। इन्होंने अपने गाव मे मारवाड लोक परिषद की शाखा स्थापित की और 1940 मे लोक परिषद के जागीरी विरोधी आन्दोलन मे जेल गए। तब जागीरदार ने इनका घर जलवा दिया। इनकी खेती की फसल बरबाद करवादी। जागीरदार ने इनकी कई बार पिटाई करवाई और कई झूठे मुकदमे इन पर बनाए। श्री उमाराम 1933 से 1948 तक निरतर जागीरदारो से सघर्ष करते रहे। 1949 मे अकस्मात इनकी मृत्यु हो गई। पता-गाव पोस्ट रोड़ू वाया जसवतगढ, जिला नागौर।

श्री उगमराज मोहनोत एम० ए०, एल० एल० बी०



श्री उगमराज मोहनोत का जन्म 25 जुलाई 1925 को जोधपुर के एक ओसवाल परिवार मे हुआ। श्री मोहनोत 1940 मे लोक परिषद के आन्दोलन मे वानर सेना के स्वय सेवक का कार्य कर रहे थे। भारत छोडो आन्दोलन मे उन्होने अपने साथियो के साथ मिलकर पुलिस लाइन्स का रेकर्ड रूम और रोजनामचा आदि मे आग लगाने की योजनाए क्रियान्वित की। अक्टूबर 42 मे जोधपुर की यह पहली बम्ब पार्टी गिरफ्तार करली गई। 17 वर्ष के श्री मोहनोत उस समय मग्दार स्कूल मे दसवी कक्षा के छात्र थे। उन्हें वहाँ स्कूल से गिरफ्तार किया गया और भारत सुरक्षा कानून के अतर्गत 1½ वर्ष की सजा दी गई। पुलिस की हिरासत मे उन्हे वहुत अमानुषिकता से पीटा गया था। तलाशी मे पुलिस बहुत सा सामान ले गई। जेल मे छूटने के बाद स्कूलो मे उनके प्रवेश पर प्रतिवन्ध लगा दिए गए। फिर श्री मोहनोत ने एम० ए०, एल० एल० बी० की परीक्षाए उत्तीर्ण की। इनके पिता श्री मूलराज मोहनोत पुलिस विभाग मे कार्य करते थे लेकिन पुत्र की राजद्रोही प्रवृत्तियो के कारण उनकी तरक्की रोक दी गई। श्री मोहनोत 1960 मे राजकीय सेवा मे सहायक जन सपर्क अधिकारी का कार्य कर रहे हैं।

श्री कस्तूर चन्द पुरोहित



श्री कस्तूरचंद पुरोहित जोधपुर मे भारत छोडो आन्दोलन में दूसरे बम केस मे सम्मिलित थे। क्रान्तिकारी कार्यों के लिए विस्फोटक पदार्थ एकत्रित करने के लिए इन्होने जानवरो के अस्पताल में नौकरी की। उद्देश्य पूरा होने पर 3 महीने बाद 1 मार्च 43 को नौकरी छोड दी।

श्री कस्तूरचद पुरोहित 17 अप्रेल 43 को गिरफ्तार कर लिए गए। उन पर भारत सुरक्षा कानून और मारवाड सिडिसश एक्ट की कई धाराए लगाई गई। उन्हे दो वर्ष 6 महीने की सजा हुई। ये जेल में दो वर्ष चार महीने तीन दिन रहे।

श्री कस्तूरचद पुरोहित बी० ए० फाइनल की अन्तिम परीक्षा नही दे सके। जेल से मुक्त होने के बाद लोक नायक जयनारायण व्यास के नेतृत्व मे उन्होने मारवाड लोक परिषद में कार्य किया। आजकल नर्दन रेलवे में कर्मचारी हैं। वे पुष्करणा ब्राह्मण हैं। उनकी उम्र 48 वर्ष की है। उनका पता—आसोप की हवेली, जोधपुर।

केवल चन्द मोदी



श्री केवलचन्द मोदी का जन्म श्री लालचद जी मोदी (माहेश्वरी) के घर जोधपुर मे 1 जनवरी 1927 को हुआ। उनकी शिक्षा बी० ए० तक हुई।

1942 मे मारवाड लोक परिषद के जिम्मेवार हुकुमत आन्दोलन मे जब सब प्रमुख नेता गिरफ्तार हो गए थे उस समय श्री केवल चद मोदी और उनके साथियो ने आन्दोलन की मशाल को जलाए रखा। उन्हे स्कूल मे निष्कासित कर दिया गया। उन्होंने प्रचार के सभी साधनो को काम मे लेकर जनमत को जागृत रखा और राज्य विरोधी वातावरण को शिथिल नही होने दिया।

श्री केवलचद गिरफ्तार कर लिए गए और साढे आठ महीने जोधपुर जेल मे रहे। जल मे मुक्त होने के बाद मे उन्होने आगे की पढाई की। वे आजकल उद्योग व्यवसाय में लगे हुए हैं परन्तु प्रत्येक राष्ट्रीय कार्य में सबमे आगे होकर अपना सहयोग देते है।

उनका पता– हिन्दुस्तान रेडियेटर्स कम्पनी, स्टेशन रोड, जोधपुर।

किसन लाल शाह, नॉवा

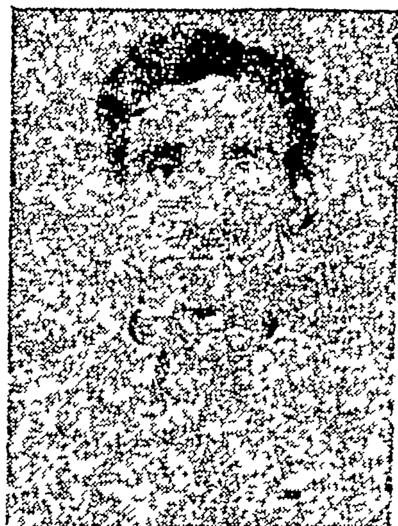


श्री किसनलाल शाह अपनी जागीर-विरोधी प्रवृत्तियो के कारण 14 मार्च 1947 के डाबडा हत्याकाड में सामती तत्वो द्वारा बुरी तरह घायल कर दिए गए थे। परन्तु सामतशाही शासन ने आपको ही अभियुक्त बनाकर आप पर खून और कत्ल के अभियोग मे गिरफ्तार करके मुकदमे चलाए थे।

श्री शाह ने कानपुर मे अपने विद्यार्थी काल से ही राष्ट्रीय आन्दोलनो मे भाग लिया था और सजाए भुगती थी। एम० ए०, एल० एल० बी० करने के बाद आप मारवाड लोक परिषद के सक्रिय सदस्य हो गए और आगे जाकर उसके महामन्त्री बनाए गए। श्री शाह नागौर जिला काग्रेस कमेटी के भी वर्षों तक अध्यक्ष और मन्त्री रहे है। श्री शाह ने सामन्तशाही एव जागीरदारी प्रथा को समाप्त करने के लिए किसान आन्दोलनो का सगठन किया और नागौर जिले मे जागीरदारो का मुकाबला किया।

श्री शाह 52 से 62 तक काग्रेस पार्टी से और 67 मे 72 तक स्वतन्त्र पार्टी के टिकट पर राजस्थान विधान सभा के सदस्य रहे हैं। पता–गाव नाँवा, कुचामनरोड, जिला नागोर।

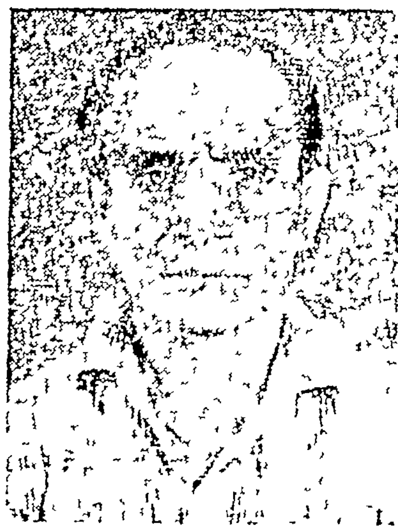
कवि श्री कृष्णदत्त शर्मा, पीपाड़



कवि श्री कृष्णदत्त शर्मा का जन्म जोधपुर जिले के पीपाड ग्राम के श्रीमाली ब्राह्मण परिवार मे प० दुर्गाशकर शर्मा के यहा 30 नवम्वर 1929 को हुआ। कवि कृष्णदत्त ने प्रयाग से वैद्य विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण की। कवि कृष्णदत्त अत्यन्त भावनाशील, सेवाभावी, सत्यनिष्ठ और सवेदनशील व्यक्ति हैं। अपने गाव पीपाड मे इन्होने जागीरदारो के अत्याचारो को प्रत्यक्षत अनुभव किया और जागीरदारी प्रथा के विरोध मे उठ खडे हुए।

श्री जयनारायण व्यास के नेतृत्व में इन्होने जिम्मेवार हुकुमत आन्दोलन मे भाग लिया और इन्हे 11 महीन जोधपुर जेल मे रहना पडा। जेल मे इनका साथ सर्वश्री जयनारायण व्यास, मथुरादास माथुर और सुमनेश जोशी जैसे व्यक्तियो से था। जेल मे कवि कृष्णदत्त ने अध्ययन और परिचर्चाओ मे अपना बौद्धिक विकास खूव किया। इसके पहले निजाम हैदरावाद के विरुद्ध आर्य समाज के सत्याग्रह मे भी कवि गिरफ्तार हो गए थे और इन्हे 2 वर्ष की सजा दी गई थी। जोधपुर राज्य मे सामती तत्वो ने कवि कृष्णदत्त पर कई वार घातक आक्रमण किये थे। आजकल कवि राजकीय सेवा मे उपवैद्य का कार्य कर रहे हैं। उनका पता—राजकीय आयुर्वेदिक औषधालय, भोपालगढ, जिला जोधपुर।

श्री गोपाल मराठा



श्री गोपाल मराठा मूलत कल्याण (वम्बई) के रहने वाले है। उनका जन्म सन् 1918 मे हुआ है। उन्हे वाद्य तथा तवले आदि का विशेष ज्ञान है। उनके जीवन के ललित पक्ष से प्रभावित होकर जोधपुर के एक उच्च अधिकारी उन्हे वम्वई से अपने साथ ले आए थे। परन्तु जोधपुर मे आते ही 1942 मे लोकपरिषद का सत्याग्रह शुरु हो गया और श्री गोपाल मराठा उस सत्याग्रह मे कूद पडे। प्रमुख नेताओ के साथ उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया गया। श्री गोपाल मराठा करीव दो वर्ष तक जोधपुर की सैन्ट्रल जेल मे रहे।

श्री गोपाल मराठा एक कट्टर गाधीवादी, सत्यनिष्ठ, सेवाभावी और लोकसेवी व्यक्ति हैं। एक क्षण के लिए भी वह निष्क्रिय नही वैठते और बड़े से वडे जिम्मेवारी के काम को भी हसते-हसते पूरा करते हैं। श्री गोपाल मराठा का सम्पूर्ण जीवन सेवा और त्याग की एक ज्वलत कहानी है।

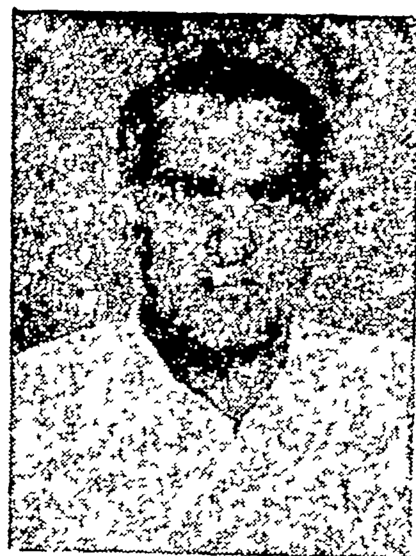
श्रीमती गोरजादेवी जोशी 'बा'



श्रीमती गोरजादेवी जोशी बा 75 वर्ष की है। जोधपुर की यह पहली महिला है जिसने 1942 के जिम्मेवार हुकूमत आन्दोलन प अपनी परम्परागत पोशाक को छोडकर खादी की साडी धारण की हाथ और मे तिरंगा झण्डा लेकर जोधपुर की सडको पर सत्याग्रह किया। श्रीमती गोरजा देवी के इस साहसपूर्ण कार्य मे प्रेरित होकर कई अन्य महिलाए भी सत्याग्रह करने को आग आ गई थी। बा आम लोगो म छोटी बाई क नाम मे जानी जाती है।

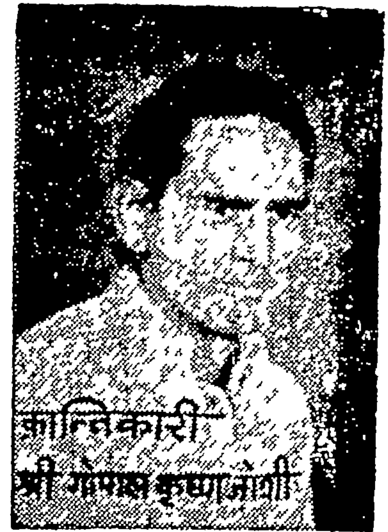
श्री बा के तीन पुत्र सर्व श्री सुमनेश जोशी, लश्मा वेडवाल और चम्पालाल जोशी भी इसी जिम्मेवार हुकूमत आन्दोलन मे वर्षो और महीनो तक जोधपुर सैन्ट्रल जेल मे और अन्य किलो मे बन्द रहे थे। बा को यह गौरव प्राप्त है कि उसने अपने पूरे परिवार के साथ स्वतन्त्र्य समर प अपना सर्वस्व और अपनी आहूति चढाई थी। बा को गिरफ्तार करने के बाद 9 महिने से कुछ अधिक समय तक जेल मे रखा गया। जेल मे मुक्त होने के बाद बा ने जीवन पर्यन्त महिला जागरण के लिए निरन्तर कार्य किया। आजकल वह अपने बडे पुत्र सुमनेश जोशी के साथ जयपुर मे निवास करती हैं।

श्री गंगा विष्णु चांडा, फलोदी



श्री गगा विष्णु चाडा का जन्म 5 नवम्बर 1919 को फलोदी के पुष्करणा परिवार मे श्री साधूराम चाडा के यहा हुआ था। श्री चाडा का शारीरिक गठन और आकार प्रकार भीमकाय है और वह बचपन मे ही सार्वजनिक क्षेत्र मे पीडित लोगो की सहायता करने को अग्रगण्य रूप मे भाग लेते थे। गगाविष्णु को किसी का समथन करते देखकर कोई दूसरा उसका विरोध नही करता। लोक परिपद की स्थापना के साथ ही श्री चाडा उसके सक्रिय सदस्य बन गए। अगस्त 42 मे उन्होने गाव गांव मे घूम कर भारत छोडो आन्दोलन के लिए लोगो तक गाधीजी का करो या मरो का सन्देश पहुचाया। 29 अगस्त 42 को वे गिरफ्तार कर लिए गए। 3 महीने उन्हे विजोलाई पैलेस मे नजरबन्द रखा गया। 6 महीने अन्डर ट्रायल रहे और फिर बाद मे 1 वर्ष की सजा ,जेल मे पूरी की। आजकल उनका पता है—बालाजी बकट लाल बिल्डिंग, 5।3।541 उस्मानगज, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)।

श्री गोपाल कृष्ण जोशी



श्री गोपाल कृष्ण जोशी का जन्म 19 मार्च 1920 को जैसलमेर के एक पुष्करणा परिवार मे हुआ। इनका बचपन बम्बई मे बीता। बम्बई की राष्ट्रीय प्रवृतियो मे श्री गोपाल कृष्ण बचपन मे ही भाग लेने लग गए थे। बचपन मे उन्हे बम्बई, पूना और नासिक आदि जेलो मे 10 दिन से महीने भर के लिए सजाए काटनी पडी है। वे कुछ दिन 1940 मे अजमेर जेल मे भी रहे थे।

1942 मे मारवाड लोक परिषद के जिम्मेवार हुकुमत आन्दोलन मे श्री गोपाल कृष्ण जोशी ने उत्साह से भाग लिया था। एक जुलूस का नेतृत्व करते हुए उन्हें गिरफ्तार किया गया था। उन्हें दो वर्ष कारावास की सजा दी गई। सजा की अवधि पूरी होने पर वे जेल मे रिहा हुए।

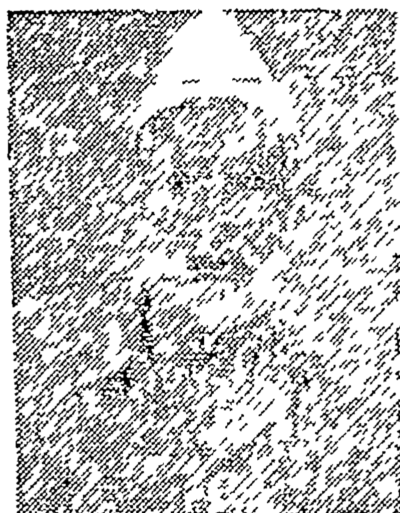
कुछ दिन तक टम टम नामका पत्र निकल के बाद श्री गोपाल कृष्ण जोशी सोशलिस्ट पार्टी मे शामिल होगए। समाजवादी पार्टी के कार्यक्रमो को पूरा करते हुए वे कई बार गिरफ्तार हुए और जेल गए। उन्होने ट्रेड यूनियनो को भी सगठित किया। उनका पता हैं—हाकमो की पोल, बनिया बाडा, जोधपुर।

श्री गणेश राम चौधरी, लाडनूं ✓



श्री गणेशराम चोधरी 75 वर्ष की आयु के है। जाट परिवार मे इनका जन्म नागौर जिले के खामुर ग्राम मे सन् 1896 को हुआ था। प्रारम्भ मे श्री गणेशराम सेना मे भर्ती हो गए थे लेकिन 1919 मे सेना से मुक्त हो गए। पासाम किसी प्रसग मे पहुच गए और वहा गोहाटी और नौगाव मे असहयोग आन्दोलन मे गिरफ्तार होकर जेल गए। 1942 मे जोधपुर मे जिम्मेवार हुकूमत का आन्दोलन शुरू होने पर ये लाडनू मे सत्याग्रहियो का जत्था लेकर आए और गिरफ्तार हुए। श्री गणेशराम करीब पौने दो वर्ष तक जेल मे रहे। इसी बीच जागीरदारो ने इनका घर जला दिया तथा इनकी पत्नी और बच्चियो को गायब कर दिया। श्री गणेशराम पैरोल पर जेल से बाहर आए और बडी मुश्किल से अपने असहाय परिवार का पता लगाया। इन दिनो श्री गणेशराम अपनी वृद्धा पत्नी के साथ अपने जीवन के अन्तिम दिन सकटपूर्ण स्थिति मे बिता रहे हैं। पता—द्वारा ग्रामोदय केन्द्र, खीचीवाला, जिला नागौर।

श्री गुलाम रसूल तेली फलोदी



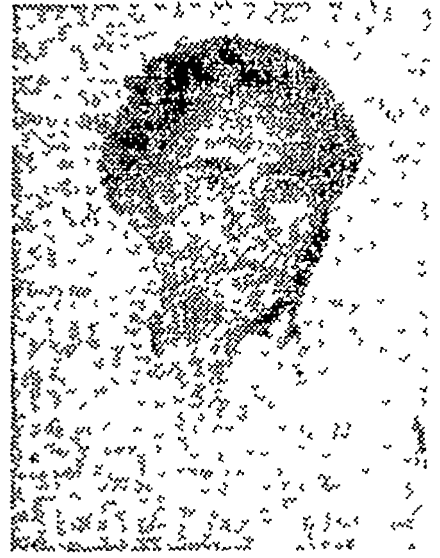
श्री गुलाम रसूल तेली का जन्म 1920 मे फलोदी के श्री कादर वकस तेली के यहा हुआ । वचपन मे ही आप तेल घाणी पर काम करने लग गए थे । फलोदी मे श्री रणछोडदास गट्टानी ने लोक परिषद को जव सगठित किया तो गुलाम रसूल भी एक उत्साही कार्यकर्ता के रूप मे आगे आए । मारवाड लोक परिषद ने जव मई 1942 मे जिम्मेवार हकूमत आन्दोलन शुरू किया तव श्री गुलाम रसूल एक सत्याग्रही के रूप मे आन्दोलन मे कूद पडे । लम्वे समय तक गाँवो मे प्रचार करते हुए ये अपने जत्थे के साथ जोधपुर पहुचे और 18 अगस्त 42 को एक जुलूस का नेतृत्व करते हुए गिरफ्तार हो गए । जेल मे इन्होने अक्षर ज्ञान प्राप्त किया । कई महिनो तक मुकदमा चलने के वाद उन्हें दो महीने की सजा हुई । गिरफ्तारी के करीव 8 महिने वाद ये जेल से रिहा हुए । इनकी जाति ने इनके परिवार का 6 महिने तक वहिष्कार कर दिया । इनके पिता को जाति को जुर्माने के 101 रु० देने पडे । श्री गुलाम रसूल प्रत्येक राष्ट्रीय आन्दोलन मे उत्साह से भाग लेते रहे हैं । आजकल शरावबन्दी सत्याग्रह मे शराव के गोदामो पर धरना दे रहे हैं ।

श्री गोपाल पुरोहित, फलोदी



श्री गोपाल पुरोहित का जन्म 1927 मे फलोदी के एक मध्यवर्गीय पुष्करणा परिवार मे हुआ । गोपाल पुरोहित की शिक्षा सामान्य ही हो सकी । प्रकृति से निर्भीक, साहसी और स्पष्टवादी श्री गोपाल पुरोहित सदा अन्याय का विरोध करने के लिए अपने को खतरे मे डालता रहा है । 1942 मे गोपाल पुरोहित मारवाड़ लोक परिषद के सदस्य वने और जिम्मेवार हुकुमत आन्दोलन मे फलोदी के जत्थे मे जोधपुर पहुचे । पुलिस ने कई वार गिरफ्तार किया और छोडा । 8 अगस्त 42 के वाद मारवाड लोक परिषद का आन्दोलन भारत छोडो आन्दोलन मे वदल दिया गया । गोपाल ने जोधपुर रेल्वे के रनिंग शेड मे आग लगाने और डिब्वे जलाने के कार्यों को सफलतापूर्वक सपन्न किया था । 18 अगस्त 42 को वे गिरफ्तार कर लिए गए । 17 महीने तक श्रीगोपाल विजोलाई, मोचिया, और जोधपुर सेंट्रल जेल मे विताने के वाद रिहा किए गए । मुक्त होने के वाद कई वर्षों तक उन्होंने भारत सेवक समाज का कार्य किया । आज भी हर राष्ट्रीय कार्य मे उत्साह से भाग लेते हैं ।

श्री चम्पालाल जोशी



श्री चम्पालाल जोशी का जन्म जोधपुर मे 13 सितम्बर, 1928 को हुआ था। लोक परिषद के आन्दोलन के समय ये 14 वर्ष के थे और दरबार स्कूल मे विद्यार्थी नेता थे। इन्होने विद्यार्थियो को सगठित करके आन्दोलन मे योग देना शुरु किया। उनकी माता गौरजा जोशी बा और उनके बडे भाई मुमनेश जोशी और लप्सा वेडवाल आन्दोलन मे गिरफ्तार हो चुके थे। श्री चम्पालाल जोशी ने छात्र शक्ति को सफल नेतृत्व देकर जोधपुर शहर मे आन्दोलन और सत्याग्रह की गति को बहुत तेज कर दिया। उन्होने नुक्कड सभाए करके प्रतिदिन गली गली मे सैंकडो भाषण दिये और जोधपुर मे चेतना की लहर पैदा करदी। 30 जून, 1943 को वे गिरफ्तार कर लिये गये। उन्हे 1 महीने की सजा दी गई। उन्हे स्कूल से निकाल दिया गया। पिलानी मे वे पढने गए लेकिन उनकी आन्दोलनकारी प्रवृत्तियो के कारण वहा मे भी उन्हे अलग कर दिया गया। उनकी शिक्षा समाप्त होगई। उन्होने कई दिनो तक भारतीय वायु सेना मे प्रशिक्षण प्राप्त किया और वाद मे रियासती और राष्ट्रदूत के सम्पादकीय विभाग मे कार्य किया। श्री चम्पालाल जोशी एक अत्यन्त प्रभावशाली वक्ता हैं और काग्रेस के भ्रष्ट नेताओ के विरुद्ध उन्होने जनता के कई मोर्चे सगठित किए है।

स्वर्गीय श्री चम्पालाल फूलफगर



श्री चम्पालाल फूलफगर का जन्म 21 दिसम्बर 1905 को लाडनू के एक ओसवाल परिवार मे हुआ था। उनकी शिक्षा सामान्य ही हुई थी। श्री फूलफगर बचपन मे ही सार्वजनिक कामो मे भाग लेने लग गए थे। लाडनू मे निर्वाचित नगरपालिका की स्थापना करवाने मे उन्होने अथक परिश्रम किया था। वे लाडनू नगरपालिका के जन्मदाता ही थे। मारवाड लोकपरिषद की स्थापना के बाद वे लोक परिषद के सदस्य बन गए और उसकी सगठनात्मक प्रवृत्तियो मे उत्साह से भाग लेने लगे। लोकपरिषद के नेताओ से उनका घनिष्ठता का सम्बन्ध था और परिषद के कई जिम्मेवारी के कार्य उन्हें सौंपे जाते थे। वे लोक परिषद के आन्दोलन मे भाग लेने की तैयारी कर चुके थे कि अकस्मात् 21 अक्टूबर 42 को उनका देहावसान 37 वर्ष की आयु मे ही हो गया। लाडनू के प्रथम मार्ग का नाम आज उन्ही के नाम पर चम्पालाल फूलफगर मार्ग रखा गया है।

श्री छगन लाल पुरोहित



श्री छगनलाल पुरोहित का जन्म जोधपुर मे सन् 1905 मे हुआ। वे सन् 22-23 से ही खादी पहनने लग गए थे। प्रारम्भ मे उन्होंने सन् 24 से 32 तक रेल्वे की नौकरी की और फिर स्टेट के गवर्नमेंट प्रेस मे। खादी पहनने के कारण प्रेस की नौकरी से इन्हे अलग कर दिया गया।

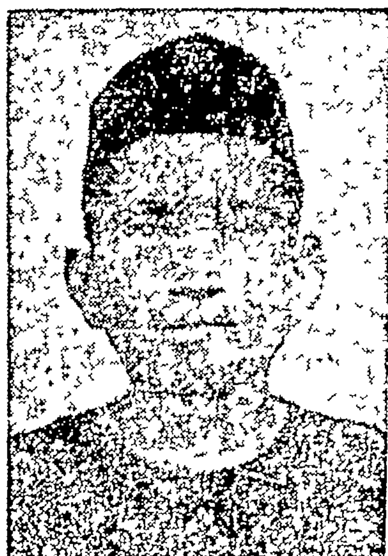
इन्होंने स्वास्तिक की एजेन्सी ले रखी थी और उसी के प्रचार के बहाने 1942 मे लोक परिषद के आन्दोलन के सदेश को गाव–गाव तक पहुचाया। भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत इनके वारन्ट की सूचना मिलते ही ये भूमिगत होगए और व्यावर मे आन्दोलन के सचालन कार्यालय कुछ दिन रह कर वे श्री कन्हैयालाल वैद्य और श्री द्वारका नाथ काचरु के साथ गाधीजी के पास शिष्टमडल लेकर गए। सर्व श्री वैद्य और काचरु जोधपुर से निर्वासित कर दिए गए थे। गाधीजी ने 9 अगस्त के बाद जोधपुर के मामले को हाथ मे लेने को कहा लेकिन तब तक वे गिरफ्तार हो चुके थे। श्री छगनलाल पुरोहित जोधपुर आ गए और कई सार्वजनिक सभाओ मे भाषण दिये। वे भारत सुरक्षा कानून के अतर्गत गिरफ्तार कर लिए गये और 1० महीने तक जेल म रहे। वे वर्षो तक प्रदेश काग्रेस के सदस्य भी रहे। उन्होंने देश की स्वाधीनता के बाद कुछ वष राजकीय सेवा मे निकाले और कुछ वष खादी और रचनात्मक कार्यो मे। आपका पता है—गाधी चौक, जोधपुर।

श्री जयनारायण गज्जा

श्री जयनारायण गज्जा का जन्म सवत् 1962 की भाद्रपद शुक्ला 5 को जोधपुर के एक सामान्य पुष्करणा ब्राह्मण परिवार मे हुआ। श्री गज्जा जोधपुर राज्य के पुराने लोकसेवक है। उन्होंने मारवाड हितकारणी सभा के प्रारम्भिक आन्दोलनो मे भाग लिया था और बाद मे मारवाड लोक परिषद द्वारा चलाए गए जिम्मेवार हुकुमत आन्दोलन मे भी भाग लिया था। जोधपुर मे खादी का प्रचार करने मे श्री गज्जा का प्रमुख हाथ रहा है। पुलिस इनकी खादी की दुकान से एक बार रुपये और कपडे उठा कर ले गई थी। श्री जय नारायण गज्जा पर पुलिस ने कई झूठ मुकदमे बनाकर इन्हे फसाने की कोशिश की थी। राजद्रोह के मामले मे इन्हे एक बार तीन महीने सजा हुई थी। 67 वर्ष की आयु में आज भी श्री जयनारायण गज्जा सेवा के कार्यो मे उत्साह स भाग लेते है।

उनका पता है—पूरा मोहल्ला, जोधपुर।

स्वर्गीय श्री तुलसीदास राठी



श्री तुलसीदास राठी का जन्म जोधपुर के माहेश्वरी परिवार मे हुआ था। उनका बाल्यकाल मध्य प्रदेश और बरार मे बीता था। राष्ट्रीयता और देश सेवा के संस्कार श्री राठी वही से लेकर आए थे। जोधपुर आते ही इन्होंने मारवाड लोक परिषद को अपने सेवाए प्रदान की। ये वर्षो तक मारवाड लोक परिषद की कार्यकारिणी के सदस्य और कोषाध्यक्ष रहे। 1942 मे करीब 2 वर्ष तक श्री राठी भारत सुरक्षा कानून के अंतर्गत नजरबद कर दिये गये और इन्हे केन्द्रीय कारागृह के अतिरिक्त मोचिया, बिजोलाई आदि कई किलो मे रखा गया।

श्री राठी एक अत्यन्त विनम्र और सत्यनिष्ठ–गाधीवादी व्यक्ति थे। उनका विशेष ध्यान रचनात्मक प्रवृत्तियो की ओर रहता था। राजनीति के क्षेत्र मे भी उन्होने सदा नैतिक मूल्यो की स्थापना, नैतिकता और कार्यकर्ताओ की चारित्रिक दृढता पर जोर दिया था। उनका जीवन एक आदर्श तपोनिष्ठ का जीवन था। वे व्यवसायी थे और अपने व्यवसायिक जीवन भी मे उन्होने जीवन के उच्च आदर्शों की रक्षा की थी। पिछले वर्षो मे उनका अकस्मात देहावसान-होगया। पता—डागा बाजार, पूगलपाडा, जोधपुर।

श्री दयाल छंगाणी

श्री दयाल छगाणी मारवाड लोक परिषद के एक मौन-साधक और मौन–सेवक रहे हैं। वे न भाषण देते हैं और न राजनैतिक विषयो पर चर्चाए करते है। वे ठोस कार्य करने वाले व्यक्ति है। सामान्य रुप से उन्होने लोक परिषद की प्रत्येक प्रवृत्ति मे और प्रत्येक आन्दोलन मे भाग लिया है परन्तु दुर्भाग्य से उन्हे साथियो के साथ जेल जाने का सौभाग्य नही मिला।

1942 मे भूमिगत रह कर उन्होने लोकपरिषद के सदेश को गांव-गाव मे पहुचाया। कृषि-विकास, कुओ की बोरिंग करना और खेती के नित नए प्रयोग करना उनका मुख्य कार्य रहा है और इसी माध्यम से उन्होने किसानो मे चेतना जगाई है। भारत छोडो आन्दोलन के समय उन्होने तोड फोड के कई कार्य किए थे और विस्फोटक पदार्थो से बम बनाये थे। उस समय जालोर, सिवाना और सुमेरपुर उनका कार्यक्षेत्र था। पुलिस ने उन्हे गिरफ्तार भी किया परन्तु वे प्रमाण के अभाव मे छोड दिये गये। 1942 मे उनका भूमिगत रह कर किया गया कार्य अत्यत महत्वपूर्ण था। उस समय की दौड–भाग मे उन्हे अपने कारखाने मे लगाए हुए अपने हजारो रुपए के औजारो से हाथ धोना पडा था।

श्री देवकृष्ण थानवी, देवजी दादा फलोदी,



श्री देवकृष्ण थानवी देवजी दादा का जन्म 1905 मे फलोदी के एक पुष्करणा परिवार मे हुआ। उनके पिताजी का व्यवसाय बम्बई मे था अत इनका बचपन बम्बई मे बीता। वे 1926 मे भोलेश्वर कांग्रेस समिति के सदस्य बने और 1930 के नमक सत्याग्रह मे भाग लिया। 1935 मे आपने बम्बई में गणगौर डिफैंस कमेटी बना कर अपने गिरफ्तार साथियो के लिए प्रबल लोक-मत जागृत किया। 1939 मे पोकरण के किसान-सघर्ष की उन्होने रिपोर्ट लोक परिषद को दी। 1940 के लोक परिषद आन्दोलन मे बाहर रह कर बहुत बडा सहयोग दिया। 1942 मे आपने बम्बई मे प्रवासी सघ के द्वारा जोधपुर के हालात गाधीजी और नेहरुजी को बताए। 9 जून 1942 को आप फलोदी मे गिरफ्तार कर लिए गए। वे लबे समय तक सैंट्रल जेल, मोचिया किला व विजोलाई पैलेस मे नजरबद रखे गये। 1952 मे कांग्रेस शासन मे फैले भ्रष्टाचार के विरुद्ध आमरण अनशन किया। 1952 मे फलोदी मे नमक के पट्टो की अदायगी के खिलाफ आन्दोलन किया। फलोदी के विकास के लिए भी उन्हे कई बार अनसन करने पडे हैं। वे 1968 की तरह 1972 मे भी शराबबदी आदोलन का नेतृत्व कर रहे हैं।

श्री पुखराज उर्फ पुष्पेन्द्र कुमार

श्री पुखराज उर्फ पुष्पेन्द्र कुमार का जन्म बिलाडा के एक ओसवाल परिवार में सवत् 1969 की आसोज कृष्णा 11 को हुआ। आपकी शिक्षा बिलाडा, आगरा व ब्यावर मे हुई। नमक सत्याग्रह के समय 1930 मे अपने विद्यार्थी काल मे उन्होंने राष्ट्रीय प्रवृतियो मे भाग लेना शुरु कर दिया था। 1931 मे पालीताना मे और 1932 मे मगलदास मार्केट बम्बई मे उन्होंने विदेशी कपडो के बहिष्कार आन्दोलन मे भाग लिया था। 7 मार्च 32 को बम्बई मे उन्हें 6 महीने की सजा दी गई। 1938 मे उन्होंने बिलाडा मे लोक परिषद की स्थापना की। 1942 मे जिम्मेवार हुकुमत आन्दोलन मे उन्हे 4 महीने 18 दिन जेल मे रहना पडा।

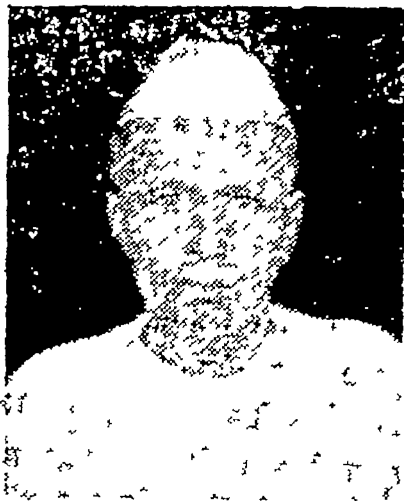
श्री पुखराज उर्फ पुष्पेन्द्रजी कट्टर कांग्रेसी हैं और कांग्रेस की प्रत्येक लोक–कल्याणकारी प्रवृत्ति मे उत्साह से भाग लेते रहे हैं। स्वाधीनता के बाद कई दिनो तक उन्होंने राजकीय सेवा भी की है। इनका पता है—कटारिया का वास, बिलाडा, जिला जोधपुर।

श्री डाक्टर पुष्पेन्द्र झाला

डा०पुष्पेन्द्र झाला का जन्म 12 नवम्बर को पाली जिले के देवली कला गाव मे हुआ। चण्डावल मे इन्होने वर्षों तक स्कूल मे अध्यापक का कार्य किया। चण्डावल के जागीरदार के अत्याचारो का आपने विरोध करना शुरु कर दिया था। अत परिणाम स्वरुप कई वार आर्थिक हानी उठानी पडी। कई वार गाव मे निष्कामित हुए और अतमे स्कूल की अध्यापकी आपसे छीन ली गई।

1938 के वाद श्री पुष्पेन्द्र झाला मारवाड लोक परिषद के सदस्य वन गए और उसकी सामत विरोधी प्रवृत्तियो मे भाग लेने लगे। जागीरदारो के साथ होने वाले प्रत्येक संघर्ष मे श्री पुष्पेन्द्र झाला ने भाग लिया। वे इस चितुराई से कार्य करते कि कानून और पुलिस की पकड मे कभी नही आये। अत न वे एक वार भी गिरफ्तार हुए और न उन्हे जेल जाने का सौभाग्य मिला। उन्होने अपने क्षेत्र मे भूदान के लिए पदयात्राए भी की। वे अपने क्षेत्र के समाचार अखवारो मे प्रकाशनार्थ भजते रहे हैं। डाक्टर पुष्पेन्द्र झाला कवि भी हैं। इन्होने कई एक राष्ट्रीय लोकगीत लिखे हैं जो उस क्षेत्र मे काफी लोकप्रिय हुए हैं।

श्री बच्छराज जोशी



गणगौर काण्ड के अभियुक्त श्री वच्छराज जोशी का जन्म सन् 1900 मे फलोदी के पुष्करणा परिवार मे श्री शिवदत्त जोशी के यहा हुआ। वचपन मे पढते हुए आप खेती का काम भी करते थे। सदा की भाति फलोदी मे गणगौर का मेला नदी के किनारे भरने जा रहा था कि तत्कालीन हाकिम श्री सम्पतमल भण्डारी ने विज्ञप्ति निकाल कर जवरदस्ती रानीसर तालाव पर लाने के लिए सशस्त्र पुलिस भेज दी। नगर मे भयकर विद्रोह फैल गया और यह जन–आन्दोलन उग्र वन गया। इस आन्दोलन मे श्री वच्छराज जोशी भी सक्रिय कार्यकर्ता थे। इन्हे भी जेल मे डाल दिया गया। गणगौर काण्ड के लिए जनमत इतना प्रवल रुप से जागृत हुआ कि सरकार को विवश होकर सभी अभियुक्तो को रिहा करना पडा।

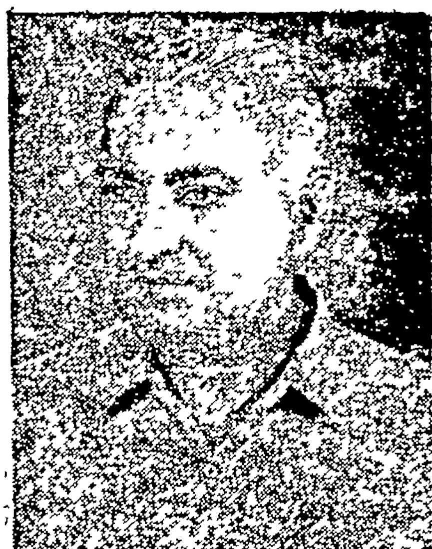
1942 मे मारवाड लोक परिषद ने जो जिम्मेवार हकुमत आन्दोलन शुरु किया उसमे भी इन्होने सत्याग्रह किया और 9 महीने तक जोधपुर सैंट्रल जेल मे रहे।

श्री बालकृष्ण जोशी



श्री बालकृष्ण जोशी का जन्म फलोदी के एक पुष्करणा परिवार मे सन् 1906 मे हुआ। सामान्य शिक्षा प्राप्त करके आप बम्बई चले गए। 1935 मे बम्बई कांग्रेस के सदस्य बने। 1942 मे जब मारवाड लोक परिषद ने जिम्मेवार हुकुमत आन्दोलन शुरु किया तो आपने जोधपुर मे सत्याग्रह किया और अगस्त 42 को गिरफ्तार कर लिए गए। करीब पौने दो वर्ष तक श्री बालकृष्ण जोशी जेल मे रहे। वे आज भी सभी राष्ट्रीय और सार्वजनिक कार्यों मे बराबर उत्साह से भाग लेते रहे है। इन दिनो राज्य में पूर्ण शराब बंदी लागू करवाने के लिए सत्याग्रह कर रहे हैं।

श्री मूलराज पुरोहित घेरवाणी



श्री मूलराज पुरोहित का जन्म जोधपुर के वैद्यराज श्री अम्बादास पुरोहित के घर में सन् 1924 मे हुआ था। उन्होने इन्टर तक शिक्षा प्राप्त की। आकोला और अमरावती मे रह कर उन्होंने राष्ट्रीय सस्कार प्राप्त किए और बम्बई मे रह कर नाट्यकला और अभिनय में कुशलता। 1940 मे मारवाड लोक परिषद के जागीर विरोधी आन्दोलन मे भाग लेने पर श्री घेरवाणी को 6 महिने की सजा दी गई। जेल से मुक्त होने पर उन्होने राजकीय सेवा स्वीकार कर ली लेकिन 1942 के जिम्मेवार हुकुमत आन्दोलन में भारत सुरक्षा कानून के अंतर्गत श्री घेरवाणी 2 वर्ष तक नजरबन्द रखे गए। श्री घेरवाणी राजस्थान की लोक कलाओ, लोक नृत्यो और लोक गीतो के रगमचीय कला सगम के अध्यक्ष हैं। आजकल श्री घेरवाणी राजकीय सेवा मे सलग्न है

श्री मनसुख लाल

श्री मनसुख लाल का जन्म फलोदी मे श्री कस्तुरचन्द जी दर्जी के यहा 1920 मे हुआ। बचपन मे उनके शिक्षा और पढाई की कोई पारिवारिक व्यवस्था नही हो सकी। फिर भी उनकी बुद्धि का विकास निरतर होता गया। उनका झुकाव राष्ट्रीय आन्दोलन की ओर होने लगा। 16 वर्ष की अवस्था मे श्री मनसुख लाल ने पोकरण जागीरदार के विरुद्ध आन्दोलन मे भाग लिया। 1942 मे मारवाड लोक परिषद के जिम्मेवार हुकुमत आन्दोलन मे भी श्री मनसुख लाल ने जोधपुर आकर सत्याग्रह किया। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हे 13 महीने की सजा दी गई। श्री मनसुख लाल शुरु से ही कांग्रेस के सक्रिय सदस्य रहे हैं और कांग्रेस की प्रत्येक प्रवृत्ति मे उत्साह से भाग लेते रहे है। वे आज कल जोधपुर मे सिलाई का कार्य करते हैं। पता—रतन लाल भवन, नाजरजी की बावडी, जालोरी गेट की बारीट के अन्दर, जोधपुर।

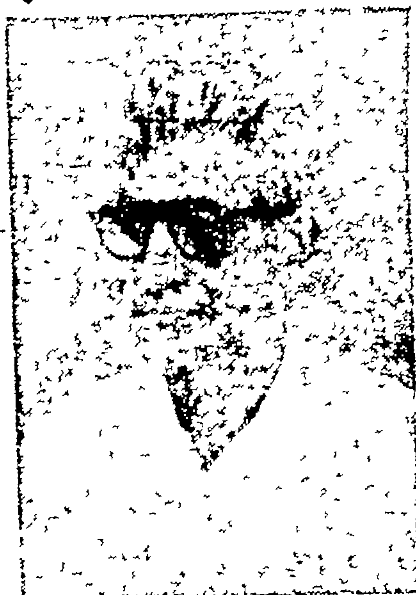
श्री माधोलाल सुथार, नीबाज

अपने क्षेत्र मे क्रान्तिकारी के नाम से पहिचाने जाने वाले श्री माधोलाल सुथार जोधपुर के एक प्रसिद्ध जागीरी क्षेत्र नीबाज के रहने वाले हैं। इन्होने निरतर पूरी निष्ठा और सच्चाई के साथ जागीरी अत्याचारो का डट कर विरोध किया है और जागीरदारो के साथ उस समय तक निरतर सघर्ष मे रहे हैं जब तक कि राज्य से जागीरी प्रथा समाप्त नही कर दी।

श्री माधोलाल सुथार की शिक्षा का स्तर अत्यन्त सामान्य है लेकिन लोक-नीति उनकी सहज बुद्धी मे पूरी तरह समाई हुई है और वे अपने लोक-धर्म को बहुत अच्छी तरह पहचानते हैं। अत निस्वार्थ भाव से, बिना किसी अपने निहीत स्वार्थ के, उन्हे यह सघर्ष करना पड़ा है। परिणाम स्वरूप उन्हे आर्थिक तगी, अभाव और विपन्नता का जीवन ही हाथ लगा है।

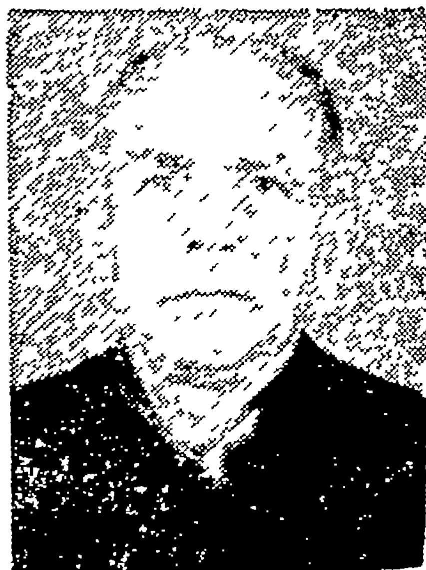
मारवाड लोक परिषद की स्थापना के बाद वे लोक परिषद के साथ एक हो गए। 1940 और 1942 के दोनो आन्दोलनो मे उन्होने भाग लिया और दोनो बार क्रमश 1 महीने और 2½ महीने की सजाए हुई। श्री माधोलाल सुथार अपने क्षेत्र के विकास के लिए आज भी निरतर प्रयत्नशील हैं।

श्री युगराज बोड़ा



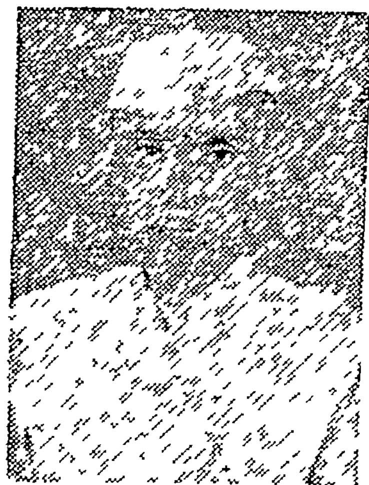
श्री युगराज बोडा का जन्म 19 मई 1923 को जोधपुर मे हुआ। इन्होंने बी० ए०, एल० एल० बी तक शिक्षा प्राप्त की। 1942 मे श्री बोडा ने मारवाड लोक परिषद द्वारा शुरु किए गए जिम्मेवार हुकुमत आन्दोलन मे भाग लिया था। इन्हे $18\frac{1}{2}$ महीने तक जेल में तथा दौलतपुरा किले मे रहना पडा था। विद्यार्थी जीवन से ही राजनीति मे इनकी सक्रिय रुचि थी। श्री सुभाषचद्र बोस के जोधपुर आगमन पर विद्यार्थी परिषद द्वारा उन्हे दिए गए मानपत्रों के कारण इन्हे स्कूल से निकाल दिया गया था। राजनैतिक प्रवृत्तियो मे लगे रहने के कारण इन्हें जोधपुर के जसवत कालेज मे प्रवेश नही दिया गया। इनकी शिक्षा इसी कारण बीकानेर और पिलानी मे हुई। श्री युगराज बोडा आजकल राजस्थान सरकार के जन सपर्क निदेशालय मे सहायक निदेशक का कार्य कर रहे हैं।

श्री रामप्रताप शर्मा



श्री रामप्रताप शर्मा पाली जिले के गुदोज गांव के निवासी हैं। पाली जिले मे मारवाड लोक परिषद की प्रवृत्तियो को फैलाने मे तथा उत्तरदायी शासन के लिए लोकमत बनाने मे इन्होंने बहुत कार्य किया। सन् 39 से 49 तक इन्होने पाली जिले के सभी बडे बडे कस्बो मे सैकडो किसान सम्मेलन आयोजित किए और जागीरी अत्याचारो का मुकाबला करने के लिए किसानो को सगठित किया। अनेको बार जागीरदारो के लठैतो ने इन पर घातक आक्रमण किए। इन्होंने 1948 मे काग्रेस के जयपुर अधिवेशन मे स्वयसेवक दलके प्रथम नायक के पद पर कार्य किया था। लोक परिषद के आन्दोलन मे पुलिस ने इन्हे कई बार गिरफ्तार किया, हिरासत मे रखा और छोडा। जागीरदारो ने इन पर कई झूठे मुकदमे लगा कर इन्हे फसाए रखा। श्री राम प्रताप पाली जिला काग्रेस के अध्यक्ष भी रहे है। सन् 56 से 71 तक इन्होंने ग्राम पचायत, न्याय पचायत और सेवा सहकारी समितियों मे कार्य किया है। ये आजकल गुदोज मे रहते हैं। आयु 56 वर्ष की है। खेती करते हैं।

श्री राधा कृष्ण पुरोहित

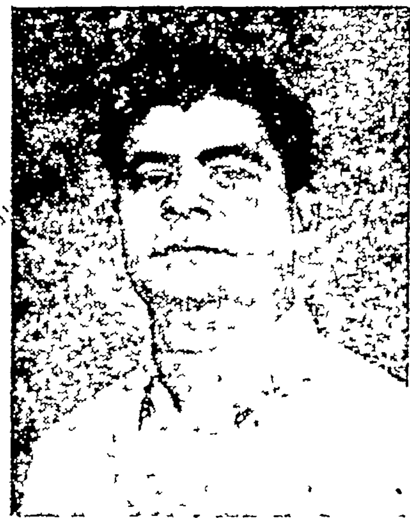


श्री राधाकृष्ण पुरोहित का जन्म सन् 1918 मे लोंडियो ग्राम मे हुआ। इनका बचपन अपने पिता गवरीदत्तजी के पास बम्बई मे बीता। बवई मे 1936 मे भोलेश्वर काग्रेस कमेटी के ये सदस्य बन गए और बम्बई में कांग्रेस-प्रवृत्तियो मे क्रियाशील हो गए। उन्होने बम्बई मे काग्रेस के स्वय-सेवक दल मे कई रेलियो, सभाग्रो और अधिवेशनो मे अनुशासित स्वयसेवक की तरह कार्य किया था।

1942 मे मारवाड लोक परिषद के उत्तरदायी शासन के आन्दोलन मे भाग लेने के लिए वे बम्बई मे जोधपुर आए और सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार हो गए। उन्हे सेंट्रल जेल मे लम्बे समय तक अन्डर ट्रायल के रूप मे रखा गया। परन्तु उन पर लगाया गया राजद्रोह का अभियोग प्रमाणित नही हो सका। अत अन्डर ट्रायल की अवधि मे ही जेल से मुक्त हुए। उन्होने फलोदी मे और अपने गाव लोंडियो मे रह कर लोक परिषद के उद्देश्य और कार्यक्रम से लोगो को परिचित कराया। बम्बई जाने पर वे पुन बम्बई काग्रेस मे कार्य करने लग गए।

श्री राधाकृष्ण पुरोहित कट्टर काग्रेसी हैं। पिछले 36 वर्षों से शुद्ध खादी पहनते हैं। पिछले दो तीन वर्ष से उनकी शारीरिक स्थिति बहुत कमजोर हो गई है।

श्री वासुदेव भटनागर



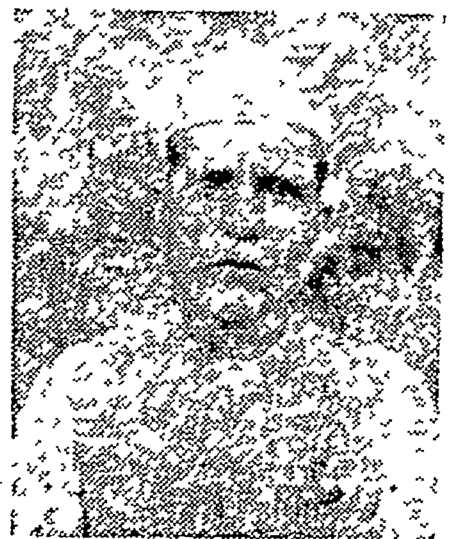
श्री वासुदेव भटनागर का सोजत सिटी के कट्टर आर्य समाजी कायस्थ परिवार मे सन् 1925 मे जन्म हुआ था। 15 वर्ष की उम्र मे ही श्री वासुदेव ने लोक परिषद के 1940 के आन्दोलन मे भाग लिया था और 7 दिन उन्हे सोजत जेल मे रहना पडा। 1942 मे मारवाड लोक परिषद आन्दोलन मे भाग लेने के कारण श्री वासुदेव 9 महीने तक जोधपुर सेंट्रल जेल मे रहे। हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह मे भी श्री वासुदेव अजमेर के जत्थे के साथ सत्याग्रह करने गए थे। राजनैतिक प्रवृत्तियो के कारण वे अपनी पढाई नियमित नही कर सके। जेल से मुक्त होने के बाद श्री वासुदेव भारतीय वायुसेना मे भर्ती हो गये थे और कई वर्षों तक मलाया, बर्मा और सिंगापुर रहे। श्री वासुदेव भटनागर ने वायुसेना छोडने के बाद उत्तर प्रदेश के बहजोई की इश्वरदास टेकनीकल इन्स्टीटयूट मे फाउन्ड्री ट्रेनिंग का प्रशिक्षण प्राप्त किया और भारत सरकार के चितरजन लोकोमोटिव मे कार्य करने लग गए। आजकल उसी प्रतिष्ठान मे वे फोरमेन हैं। उनका पता है-स. 31 D रीवर रोड, फतहपुर, पोस्ट चितरजन (जिला बर्दवान) बगाल।



श्री श्याम पांडे

श्री श्याम पाडे जोधपुर के एक शाकद्वीपी ब्राह्मण हैं। अत्यन्त उत्साही और खतरो को न्योत कर उसका मुकाबिला करने वाला व्यक्ति। 19-20 वर्ष की आयु मे वे लोक परिषद के पहले आन्दोलन मे कुछ दिन जेल मे रहे। 31 मई 1942 को वह लोक परिषद के जिम्मेवार हुकुमत आन्दोलन मे गिरफ्तार हो गए। इस वार करीव 10 महीने उन्हें जेल मे रहना पडा। जेल मे मुक्त होने पर मार्च 43 मे अग्रेज रेजिडेट के वगले पर वम फेंकने के अपराध मे श्री श्याम पाडे 20 मार्च 43 को गिरफ्तार कर लिए गए। 15 दिसम्बर 43 को वे जोधपुर जेल मे अत्यन्त सूझ वूझ और साहस के साथ फरार हो गये और 1½ वर्ष वाद जयपुर मे गिरफ्तार हुए। जयपुर मे 3 महिने जेल मे रहने के वाद उन्हे जोधपुर जेल भेज दिया गया। जेल से फरार होने के अपराध मे इन्हे 6 महिने और वम फेंकने के अपराध मे 4 वर्ष की सजा दी गई। अन्त मे श्री श्याम पाडे 14 नवम्वर 46 को रिहा हुए। उनके इस राजनैतिक जीवन की उथल पुथल मे सारी पारिवारिक संपत्ति समाप्त हो गई। घर का मकान हाथ से निकल गया। वाद मे श्री श्याम पाडे जयपुर आ गए और जयपुर के सार्वजनिक जीवन मे कार्य करने लगे। उनमे आज भी राष्ट्रीय कार्यों के लिए वही उत्साह, लग्न, सच्चाई और देश के लिए मर मिटने की हौंस है।

श्री शिवकरण थानवी



श्री शिवकरण थानवी का जन्म 1906 को फलोदी के कुलीन पुष्करणा परिवार मे हुआ था। साधारण शिक्षा प्राप्त करने के वाद आपने मोटर मैकेनिक का कार्य सीखा। सन् 1921 से ही शिवकरण थानवी सार्वजनिक क्षेत्र मे कार्य करने लग गए थे। 1930 मे ये भोलेश्वर (वम्वई) मे कांग्रेस के सदस्य वने। 1930 मे फलौदी गनगौर काट के अभियुक्तो के वचाव के लिए वनाई गई कमेटी के वम्वई मे सदस्य के नाते खूब कार्य किया। लोक परिषद के सन् 40 के आन्दोलन मे इन्होंने वम्वई मे रहकर महत्वपूर्ण भाग अदा किया था। अगस्त 1942 मे वम्वई से फलौदी जाते ही राजद्रोह के अपराध मे गिरफ्तार कर लिए गए। करीव 1¾ वर्ष तक वे जेल मे रहे। फलौदी के विकास के 15 सूत्री आन्दोलन में आप प्रथम सत्याग्रही थे। आजकल राज्य भर मे शराव वन्दी लागू करवाने के लिए चल रहे सत्याग्रह मे आप सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं।

श्री शंकरलाल स्वर्णकार



श्री शकरलाल सोनी मूलत फलोदी तहसील के गटीयाली ग्राम के निवासी हैं परन्तु जागीरदारो से झगडा हो जाने के कारण उनके दादा फलोदी मे आकर बस गये थे। श्री शकरलाल का जन्म सवत् 1979 की फाल्गुन कृष्णा 1 को मध्य प्रदेश के सावर ग्राम मे हुआ था। फलोदी मे लोक परिषद की स्थापना होते ही श्री शकरलाल लोक परिषद मे सम्मिलित हो गए और वर्षो तक फलोदी के गाव गांव मे जाकर जागीर विरोधी और उत्तरदायी शासन के लिए विचार फैलाते रहे। 1942 के लोक परिषद के आन्दोलन मे गिरफ्तार होने के पहले दो महीनो तक इन्होने मारवाड के सभी कस्बो मे आन्दोलन का सदेश पहुचाया। 21 अगस्त 42 को वे जोधपुर मे गिरफ्तार हुए और 29 अगस्त 44 को रिहा किए गए। पूरे दो वर्ष जेल मे बिताने के बाद इन्होंने कम्युनिष्ट पार्टी की सदस्यता ग्रहण करली और किसान सभाओ का सगठन शरू कर दिया। 1955 तक श्री शकरलाल राजनीति मे सक्रिय रहे। 1956 से इन्होंने बाडमेर को अपना कार्य-क्षेत्र बना लिया है। इनका पता है— कल्याणपुरा मार्ग न० 1, बाडमेर।

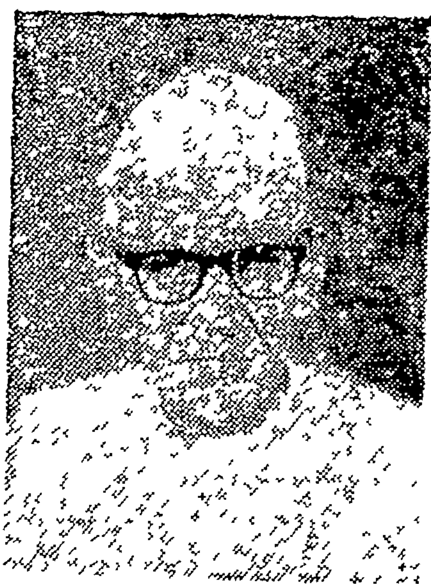
श्री सूरज प्रकाश पापा



श्री सूरज प्रकाश पापा का जन्म जोधपुर के पुष्करणा ब्राह्मण परिवार मे 20 अक्टोबर 1921 को हुआ। उन्होंने विज्ञान लेकर इटर तक शिक्षा प्राप्त की और राजनैतिक प्रवृत्तियो के कारण आगे नही पढ सके। 1942 मे राजकीय सेवा मे थे लेकिन उनके राजनैतिक सम्पर्क के कारण राज्य सेवा से अलग कर दिए गए। इन्होने 1940 मे लोक परिषद के आन्दोलन मे भाग लिया था। 1942 के भारत छोडो आन्दोलन के द्वितीय बम केस मे इन्हे गिरफ्तार करके 81

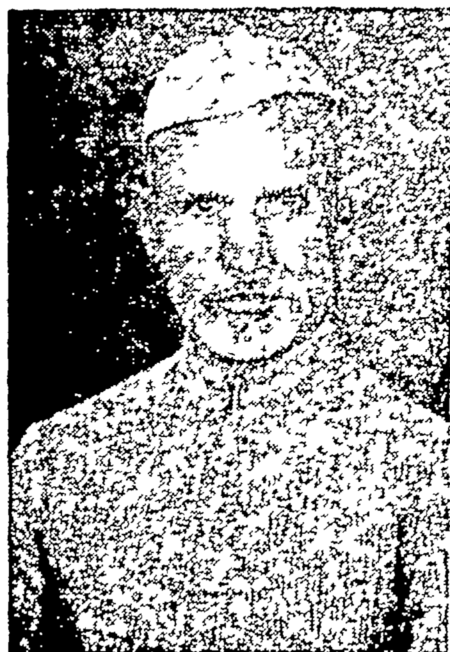
वर्ष की सजा दी गई लेकिन 2½ वर्ष जेल मे रहने के बाद वे रिहा कर दिए गए। 1942 मे पुलिस ने अत्यन्त निर्ममता से उनकी पिटाई की। उसके परिणाम स्वरूप महीनो तक उन्हे अस्पताल मे रहना पडा। जेल मे मुक्त होने के बाद श्री सूरज प्रकाश लोक-नायक जयनारायण व्यास के साथ अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद के कार्यालय मन्त्री बनाए गये। उन्होने 1946 तक इस पद पर कार्य किया। 1947 मे उन्होने कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्यता ग्रहण करली। 1948 मे उन्होने रोशनी नामक एक क्रान्तिकारी पत्र निकाला। 1951 से 54 तक वे कम्युनिस्ट पार्टी के मुख पत्र नया राजस्थान जयपुर के सपादक-प्रकाशक रहे। आजकल वे जयपुर से वज्ञानिक बालक नाम के पत्र का सपादन कर रहे हैं। उन्होंने इन दिनो जयपुर मे पुस्तको के प्रकाशन और सम्पादन का कार्य सम्हाल रखा है। उनका पता है—बृजनिधीजी का मन्दिर, आतिश मार्केट के पीछे, जयपुर।

श्री सम्पत लाल लूंकड़



श्री सम्पत लाल लू कड का जन्म फलौदी के एक ओसवाल परिवार मे सवत् 1957 की आश्विन कृष्णा 7 को हुआ था। बचपन म ही अन्याय का विरोध करने और शोषित पीडितो की सहायता करने के लिए वे विख्यात हो चुके थे। उनका समय सार्वजनिक कार्यों मे ही अधिक बीतता था। 1939 मे फलौदी मे लोक परिषद की शाखा स्थापित होने पर वे उसमे शामिल हो गए। वर्षो तक वे फलौदी, लोक परिषद के अध्यक्ष रहे। 1939 मे जो अकाल पडा था उसमे उन्होने अपने साथियो के साथ बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किए थे। श्री सम्पत लाल लू कड का जागीरी क्षेत्रो मे जागीरदारो से निरन्तर सघर्ष रहा है। उन्होने मारवाड लोक परिषद के प्रत्येक आन्दोलन और अभियान मे भाग लिया है। मारवाड लोक परिषद के जिम्मेवार हुकुमत आन्दोलन मे श्री लू कड 26 अगस्त 42 को गिरफ्तार कर लिए गए थे। भारत सुरक्षा कानून मे उन्हे 16 महीनो तक जोधपुर सैंट्रल जेल, माचिये किले और विजोलाई पैलेस मे नजर बद रखा गया। फलौदी के जन-जीवन को आगे बढाने वाले हर कार्य मे आप आज भी उत्साह से भाग लेते है। आप कट्टर कांग्रेसी है परन्तु शराबबन्दी आन्दोलन मे भी अग्रणी रूप से भाग ले रहे हैं।

श्री शाह शमशुदीन आरगुनी



शाह शमसुदीन राजस्थान के एक तपे हुए राष्ट्रीय मुसलमान हैं। इनका जन्म सन् 1905 मे नागौर जिले के नावा कस्बे मे साई वहादुरशाह आरगुनी के यहा हुआ। 1921 मे सोलह वर्ष की अवस्था मे असहयोग आन्दोलन से सम्बन्धित साहित्य रखने के अपराध मे उन्हें 6 महिने की सजा दी गई। 1931 मे नावा मे नमक सत्याग्रह के सम्बन्ध मे हरिभाऊ उपाध्याय की मीटिंग मे सक्रिय रूप से भाग लेने के कारण इन्हें राजकीय स्कूल की अध्यापकी से अलग कर दिया गया। 1931 मे इन्होने अजमेर जाकर सत्याग्रह किया और 6 महीने की सजा हुई। भारत छोडो आन्दोलन मे 9 अगस्त 42 को वम्बई मे गिरफ्तार हुए और 3 महीने के लिए डूगरी जेल मे रखे गए।

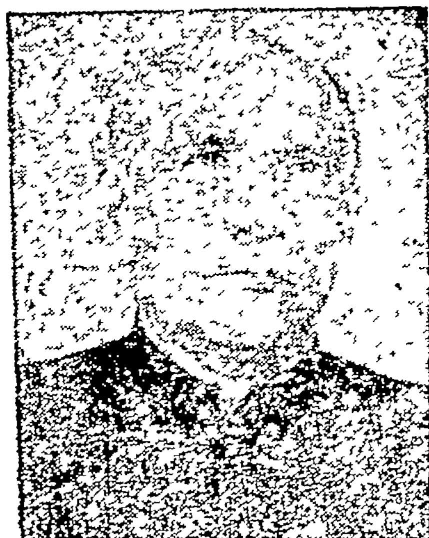
देश के वटवारे के वाद श्री शाह शमशुद्दीन ने पाकिस्तान का विरोध किया परिणाम यह हुआ कि उस क्षेत्र के मुसलमानो ने इन्हें जाति से वहिष्कृत कर दिया और इनका कुए पर पानी तक भरना वन्द कर दिया। इनके लडके के देहान्त पर मुसलमान व्यापारियो ने इन्हें कफन तक देने से इकार कर दिया। श्री शमसुद्दीन लोक परिषद और काग्रेस की प्रवृत्तियो मे सदा उत्साह से भाग लेते रहे हैं।

श्रीमती सावित्री देवी भाटी, जोधपुर



श्रीमती सावित्री देवी भाटी जोधपुर के मूक लोक-सेवी श्री नन्थूजी की धर्मपत्नी है। 1942 मे जव मारवाड लोक परिषद ने जिम्मेवार हुकुमत आन्दोलन शुरू किया था तव श्रीमती सावित्री देवी भी पहली वार सार्वजनिक क्षेत्र मे आगे आई थी। 18 अगस्त 42 को श्रीमती सावित्री देवी गिरफ्तार हो गई और उन पर अलग अलग तीन मुकदमो मे 6 महीने, तीन महीने और 3 महीने की सजाए दी गई। वह जेल में कुल 10 महिने 16 दिन रही। श्रीमती सावित्री देवी जेल से मुक्त होने के वाद दूने उत्साह से लोक सेवा के कार्य में लग गई। उन्होने घूम घूम कर चारो महिलाओं को लोक परिषद की ओर आकर्षित किया। वह महिलाओ मे सस्कार परिवर्तन लाने और उन्हे जागृत होकर पुरुषो के वरावर काम करने को तैयार करती रही। श्रीमती सावित्री भाटी ने जोधपुर में शिक्षा प्रचार और समाज सुधार के लिए वहुत कार्य किया है। उनका पता है—भिस्तियो का वास, जोधपुर।

श्री श्याम सुन्दर व्यास, जोधपुर



श्री श्याम सुन्दर व्यास का जन्म 21 दिसम्बर 1921 को श्री ग्रासकरणजी व्यास के यहां जोधपुर में हुआ। उन्होने एम० ए०, एल० एल० बी० तक शिक्षा ग्रहण की। जोधपुर मे प्रजामण्डल और लोक परिषद के कार्यालय उनके मकान के पास ही थे अत. जोधपुर मे राजनैतिक गति-विधिया के प्रारम्भ के साथ ही श्री श्याम सुन्दर व्यास का निकटता का सम्वन्ध प्रमुख नेताग्रो मे होने लव गया। 1939 में उन्होंने लोक परिषद के नेताओ के साथ ग्रकाल ग्रसित क्षेत्रो का दौरा किया। 1940 में उन्होंने जेल से वाहर रह कर आन्दोलन के व्यावर कार्यालय में योग दिया। 1942 में लोक परिषद के ग्रान्दोलन के प्रचार का कार्य हाथ में लिया। उन्होने वम फैंकने सम्वन्धी गुप्त वैठको के ग्रायोजन किए और राज्य भर में तोड फोड और वम फैंकने की योजना वनाई। 1943 के अप्रेल में वे नागौर में दूसरे वम केस में गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हें 2½ वर्ष जेल में निकालने पडे।

श्री श्याम सुन्दर ने जेल से मुक्त होने के वाद पुन: उच्च शिक्षा प्राप्त करने का क्रम शुरू किया। वे छात्र नेता के रूप में उभर कर सामाने ग्राए। 14 जुलाई 48 से उन्होंने लोक-जीवन नामक एक स्वतन्त्र साप्ताहिक का प्रकाशन किया। कुछ समय तक लोक जीवन जयपुर से दैनिक के रूप में भी प्रकाशित हुआ था। वे रेडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी में सम्मिलित हो गए। श्री श्याम सुन्दर सीमान्त पत्रकार सघ के अध्यक्ष तथा राज्य स्तरीय कई कमेटियों के सदस्य हैं। पता—140 अ, सरदार पुरा, जोधपुर।

राजस्थान में

स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी

- स्वतन्त्रता के संदेश वाहक
- स त्या ग्र ही और
- स्वा तं त्र्य - सै नि क

जैसलमेर

श्री मीठालाल व्यास

स्वर्गीय श्री मीठालाल व्यास जैसलमेर के पुष्करणा समाज के बडे प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। उनका सम्बन्ध झामी के श्री गोपाल दासजी बोडा की बहिन से हुआ था। वे प्रारम्भ से ही उच्च कोटि के समाजसेवक रहे थे। पुष्करणा ब्रह्म-सभा के वक्त से समाज की सेवा करते थे। वे अपनी पिछली उम्र मे जोधपुर स्थित वनिता-आश्रम के व्यवस्थापक का कार्य करते थे। वहा पर उनका सम्बन्ध लोक नायक श्री व्यासजी से निकटता का होगया था। सन् 42 की क्राति के बाद जब सारे नेता जेलो मे छूट गये तब उन्होंने जैसलमेर की जेल मे सड रहे सागरमलजी गोपा की रिहाई के लिए व्यासजी आदि लोक नेताओ से मदद की माग की और जोधपुर मे पण्डित नेहरू से भी वे इस सम्बन्ध मे मिले। नेहरूजी के आग्रह पर वही उन्होंने जैसलमेर राज्य प्रजागण्डल की स्थापना की और उसके माध्यम मे गोपाजी की रिहाई का आन्दोलन प्रारम्भ किया। कुछ दिनो बाद जोधपुर मे ही प्रजा मण्डल का कार्यालय रखा और जैसलमेर मे उसे सगठित किया। अन्त मे सागरमलजी 4 अप्रेल 1946 को जेल मे ही शहीद होगये। तब सर्व प्रथम श्री अचलेश्वर प्रसाद शर्मा को जैसलमेर लेजाकर शोक सभा करवाई और बाद मे जोधपुर से एक बस भर कर लोक नायक व्यास जी के नेतृत्व मे कार्य कर्ताओ की एक बडी टोली ले गये। जैसलमेर मे उस दिन से क्राति की नई लहर आई और उनके प्रयत्नो से जैसलमेर की तत्कालीन सरकार ने गोपा-हत्याकाड की जाच करवाने का निर्णय किया। जैसलमेर प्रजामण्डल ने एक तेज गति पकडी और 15 अगस्त 47 के दिन उन्होंने प्रजा मण्डल की ओर से वहा जलसा मनाया और उसके तुरन्त बाद 2 अक्टूबर 47 को पूज्य महात्मा गाधी की जन्म तिथि पर बडे जुलूस का नेतृत्व किया। दरबार ने जुलूस वालो पर लाठी चार्ज करवाया और श्री मीठा लालजी बीमारी की हालत मे भी उसका नेतृत्व कर रहे थे। उसके चार दिनो बाद 8 अक्टूबर 47 को उनका 74 वर्ष की आयु मे देहान्त होगया। उन्होंने प्रजामण्डल का कार्य करते हुए ग्वालियर व उदयपुर मे हुई देशी राज्य लोक परिषद की सभाओ मे प्रतिनिधित्व किया था।

———

श्री आईदान श्रीपत

श्री आईदान श्रीपत जैसलमेर के पुष्करणा ब्राह्मणो के मुखिया थे। उनके परिवार को महारावल की ढाल तलवार सभालने का कुरब प्राप्त था। मगर उन्हें नागपुर मे रहने से आजादी की हवा लगी हुई थी। इसलिए उन्होंने सागर मल जी गोपा व श्री रघुनाथ सिंह मेहता के साथ सबसे पहले जवाहर दिवस मनाकर 1930 मे जैसलमेर की जेल यात्रा की। वे युवको मे शिक्षा का प्रचार करने के इच्छुक थे। वे रावलशाही शासन के कट्टर विरोधी थे।

श्री रघुनाथ सिंह मेहता

श्री मेहता जैसलमेर के उस मेहता परिवार मे से है जो पीढियो तक जैसलमेर के शासन पर छाया हुआ था। सालिमसिंह मेहता जैसे शक्तिशाली दीवान के प्रपौत्र श्री रघुनाथ सिंह बचपन से अखबार पढने आदि के शौकीन थे और उनके पिता उम्मेदसिंह जैसलमेर के एक अच्छे कवि थे। श्री रघुनाथ सिंह ने सर्व प्रथम माहेश्वरी युवक मण्डल की स्थापना की और उसके अध्यक्ष बने। इस पर रावलजी ने मण्डल को गैर कानूनी घोषित करके उन्हे गिरफ्तार कर लिया। बाद मे वे मद्रास चले गए। बाद मे वे जैसलमेर राज्य प्रजा मण्डल के अध्यक्ष बने और रियासत के आन्दोलन को बडी चालना दी। वे एक साहसी व्यक्ति हैं और अभी भी वे मद्रास मे रहकर कई सार्वजनिक सस्थाओ से सम्बन्ध रखते है।

श्री जीतमल जगाणी

श्री जीतमल जगाणी जैसलमेर के पुष्करणा ब्राह्मण थे। इनके पिताजी श्री बुद्धलालजी तत्कालीन महारानीजी के बडे कमदार थे। मगर श्री जीतमलजी को कराची मे रहने से आजादी की हवा लग गई थी इसलिए उन्होने जैसलमेर मे रहकर लोक परिषद के गठन मे श्री शिवशकर को साथ दिया। महारावल ने उनका बदला उनके पिताजी से लिया और उन्हे नौकरी से अलग कर दिया। श्री जीतमल का परिवार वहा से बीकानेर चला गया। बीकानेर मे रहकर श्री जीतमल ने जैसलमेर प्रजामण्डल की मदद की और वर्षों तक उसके कोषाध्यक्ष रहे। बीकानेर स्थित गोपाल प्रिंटिंग प्रेस को उन्होने सभाला।

श्री शिवशंकर गोपा

श्री शिवशकर गोपा जैसलमेर दरबार के गुरु-परिवार मे से थे। वे जैसलमेर मे सर्व हितकारी वाचनालय व देशी राज्य लोक परिषद का कार्य जैसलमेर मे करते थे। उनका सामाजिक बहिष्कार करवाने की नीयत से दरबार ने उनकी शादी तक नही होने दी और उनकी दुकान पर पुलिस का पहरा लगा दिया। पुलिस वाले उनकी दुकान पर आने वालो को डराते थे इसलिए विरला ही ग्राहक वहां जा पाता। अत मे उन्हे अपने पिता का देहान्त होने के बाद जैसलमेर से नागपुर जाना पडा। वहा से बीच बीच मे वे जैसलमेर आते और प्रजामण्डल की गतिविधियो को बल देते थे। सागरमल गोपा की रिहाई के बाद शहादत की जाच के आन्दोलन मे उन्होंने बडा योग दिया था। उनका देहान्त 1963 मे मानसिक विकृति के कारण हो गया। उनके पीछे चार पुत्रिया, एक पत्नि व एक लडका है, जो गोपाजी के भाई के पास रहते हैं।

श्री मदनलाल पुरोहित

श्री मदनलाल पुरोहित 1937 मे श्री शिवशंकर गोपा के साथ लोक परिषद के कार्यकर्ता बने। उस मण्डली मे रहकर पत्र–कारिता का काम करके इन्होने जैसलमेर शासन की पोलें अखवारो मे काफी खोली थी। स्व० विजयसिंह पथिक के साप्ताहिक नव सदेश के पन्ने उठाकर देखे जाए तो जैसलमेर की खवरे श्री मदनलाल की लिखी हुई ही मिलेंगी। श्री मदनलाल के विवाह होने मे भी दरवार ने वडी वाधाए डाली और इनसे भी इनके पिता को नौकरी मे निकाल कर वदला लिया। श्री मदनलाल भी कुछ समय तक वीकानेर मे अपने वहनोई स्व० कन्हैयालाल व्यास के साथ गोपाल प्रेस मे कार्य करते रहे। श्री कन्हैयालाल अजमेर मे नवज्योति मे काम कर चुके थे। वे भी खादी पहनते और पत्रकारिता का क म करते थे। श्री मदनलाल 1937 से निरतर आजादी के आन्दोलन मे भाग लेते रहे। वे आज जैसलमेर की एक खादी सस्था मे कार्य करके मुश्किल से अपना जीवन निर्वाह कर पाते हैं।

श्री लालचन्द जोशी

श्री जोशी 1938 में रावलजी की नौकरी मे थे। करीव 20 वर्षों की आयु मे उन्होने नौकरी छोडकर श्री शिवशकर गोपा के साथ कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। उन्हें दरवार ने 1939 मे जेल में डाल दिया और शिवशकर का साथ न देने के लिए दवाव डाला। मगर इन्होने दरवार की वात नही मानी। अत मे उनके पावो मे वेड़िया डालकर छ माह से ऊपर जेल में रखने के वाद दरवार को इन्हें छोडना पडा। जेल से छूटने के वाद वे कृषि व गोपालन का कार्य करने लगे और प्रजा मण्डल की गतिविधियो मे निरंतर साथ देते रहे।

श्री जीवन लाल कोठारी

श्री जीवनलाल कोठारी प्रारम्भ मे जैसलमेर की हाई स्कूल में अध्यापक थे। 1938 से वे शुद्ध खादी पहिनते थे और विद्यार्थियो मे जागृति के वीज वोया करते थे। दरवार इनसे नाराज होगये और इन्हें नौकरी से अलग करवा दिया। वाद में इन्होने वीमे का कार्य प्रारम्भ किया परन्तु किसी तरह फसा कर दरवार ने इन्हें जेल मे ठूस दिया। करीव एक साल तक इन्होने जैसलमेर की जेल भोगी। जेल से छूटने के वाद इन्होने अपना स्वतत्र व्यवसाव किया। वे जोधपुर में इन्द्रा एण्ड कम्पनी के सचालक हैं। इन्होंने आर्थिक दृष्टि से प्रजा मण्डल को व उसके कार्यकर्ताओ को समय समय पर मदद दी और इसके अतिरिक्त जैसलमेर व जोधपुर की रचनात्मक सस्थाओ को भी वे आज भी अपना योग देते रहते हैं।

श्री गिरधारी लाल जगाणी

श्री गिरधारी लाल जगाणी जैसलमेर के पुराने कार्यकर्ता हैं। ये श्री शिवशकर के साथियो मे से हैं। ये भी उस समय पत्रकार का काम करते थे और अत मे इन्हें जैसलमेर छोडने के लिए बाध्य होना पडा था। ये बाहर गाव मे निजी अध्यापन का कार्य करते थे तथा बाद मे पोकरण क्षेत्र के भैरूडा ग्राम मे बस गये। अब भी ये पोकरण मे अखबार का व्यवसाय करते हैं। इनकी आयु इस समय 64 वर्ष की हैं।

श्री मोहनलाल जगाणी

श्री मोहनलाल जगाणी 38—39 मे जैसलमेर लोक परिषद के सदस्य बने थे तथा श्री शिवशकर की मडली के सक्रिय होने मे नाते दरबार के कोप भाजन बने। इन्हे भी अपने भाई के साथ जैसलमेर छोड कर ब्यावर जाना पडा और लोक नायक व्यासजी के कहने पर गड्डा स्थित चर्खा सघ मे काम किया। 1947 तक निजी पाठशाला चलाकर जैसलमेर मे गुजारा किया और बाद मे बीकानेर की रेल्वे मे नौकरी करली। आज भी वहा रह कर ये एक अच्छे लेखक व साहित्यकार बने हुए हैं। आप राजस्थानी भाषा के अच्छे ज्ञाता हैं। इनके लेख व पुस्तके भी प्रकाशित होती रहती हैं।

श्री भंवरलाल आचार्य

श्री आचार्य मूल रूप से जैसलमेर के निवासी हैं। जैसलमेर मे इनका मकान है और इनके शादी विवाह के सम्बन्ध जैसलमेर से ही हैं। इनका प्रारम्भिक कार्य क्षेत्र मेवाड व राजनगर रहा है। बिजौलिया के श्री पथिकजी व स्व० माणिक्य लाल वर्मा के नेतृत्व मे इन्होने मेवाड राज्य प्रजामण्डल की स्थापना की और उसमे कार्य करते रहे। वे मेवाड की जेल मे भी रहे। इन्हें राजाशाही व जागीरी जुल्मो के प्रति बडा रोष है। वे आज भी जिदा शहीद की तरह गरीबो के लिए जूझते रहते हैं। 1946 मे गोपाजी के शहीद होने पर वे जैसलमेर पहुचे और वहा आकर इन्होंने अपना जीवन जैसलमेर के लिए अपण कर दिया। वे 46 से 56 तक प्रजामण्डल व कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप मे कार्य करते रहे और रावलशाही के विरुद्ध जनता को सगठित करके जैसलमेर मे उत्तरदायी शासन का आदोलन चलाया। दरबार ने इन्हें कई प्रकार के प्रलोभन व बाद मे धमकिया दी मगर वे बिल्कुल दृढता से उनका विरोध करते रहे। जब वे पहले जैसलमेर आये तब लोग इनसे बात करने मे घबराते थे मगर इनके अक्खड जीवन ने जैसलमेर के लोगो को प्रेरणा दी और काग्रेस के इतिहास मे इनका नाम जैसलमेर मे सदैव स्मरण किया जायगा। ये पिछले 15 वर्षों से हरिजन सेवा का सक्रिय कार्य कर रहे हैं। अभी इनका कार्य क्षेत्र नाथद्वारा है।

सर्वश्री ताराचन्द जगाणी व सत्यदेव व्यास

सर्वश्री ताराचन्द जगाणी एव सत्यदेव व्यास विद्यार्थी जीवन मे ही श्री शिवशकर गोपा व उनके साथियोके सम्पर्क मे आये थे। श्री गोपा ने इन्हे अखबार पढने एव गाधी नेहरू के बारे मे पुस्तकें पढने को दी। उन दिनो की जैसलमेर की खबरो से इनका भी हौसला बढने लगा। बचपन मे इन्होने खादी धारण की जिससे इनके स्कूल अध्यापक नाराज रहते। श्री जीवनलाल कोठारी से स्कूल मे इन्हे आजादी की लडाई का काफी ज्ञान होने लगा। राष्ट्रीय-गीत इन्हें सिखाए गए। जब नागपुर मे गोपाजी की रिहाई की माग ने जोर पकडा तब जैसलमेर मे ही सेवा-सघ के सक्रिय कार्यकर्ता के रूप मे श्री ताराचन्द ने कई लेख लिखे और महारावल के पास माग पत्र भेजें। प्रजा मण्डल की स्थापना व प्रचार मे श्री मीठालालजी व्यास के नेतृत्व मे काम किया और गोपाजी की शहादत पर इन दोनो युवको ने गोपाजी की रहस्यमय मृत्यु की लोक नायक व्यासजी आदि बडे नेताओ को सर्व प्रथम सूचना दी और गोपाजी की अत्येष्टी पर सामतवाद विरोधी नारे लगाये। वह 4 अप्रेल 1946 का दिन जैसलमेर की राजनितिक क्राति को नया मोड देने वाला साबित हुआ। श्री सत्यदेव व्यास को उस दिन सरकारी हाई स्कूल का अध्यापन कार्य छोडना पडा। ये दोनो युवक आगे जाकर प्रजा मण्डल के मुख्य स्तम्भ बन गए और राजस्थान विलयन के बाद मे आज तक निरतर सक्रिय राजनीति मे भाग ले रहे है। वे आजकल खादी ग्रामोद्योग और सर्वोदय का कार्य भी करते हैं।

श्री भगवान दास माहेश्वरी

पूज्य महात्मा गाधी के निधन के बाद उनके लिए प्रथम शोक सभा मे श्री भगवान दास माहेश्वरी ने सर्व प्रथम जैसलमेर के सावजनिक जीवन मे प्रवेश किया और प्रजा मण्डल के सदस्य बने। उन दिनो वे श्री चानणमल आसेरा व जीवनलाल जी कोठारी के सहयोग से शरणार्थी सेवा में लगे हुए थे। वे एक सम्पन्न माहेश्वरी परिवार के व्यक्ति हैं। जो वहा के रावलशही शासन के निकट सपर्क में था। श्री भगवान दास की यह साहसिकता रही कि वे रावलजी के कोप-भाजन बन कर भी प्रजामण्डल के साथ हो गए। श्री भवरलाल आचार्य के नेतृत्व में इन्होने प्रजामण्डल व काग्रेस का कार्य मत्री बन कर किया और राजस्थान निर्माण के बाद इन्होंने अपने जीवन को खादी आदि रचनात्मक प्रवृतियो की ओर मोड दिया। वे आज राजस्थान के एक प्रमुख सर्वोदयी कार्यकर्ता हैं। वे जैसलमेर की जिला खादी परिषद् के सफल मन्त्री हैं।

राजस्थान में

स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी

- स्वतन्त्रता के संदेश वाहक
- सत्याग्रही और
- स्वातंत्र्य - सैनिक

झालावाड़

श्री छोगालाल पोद्दार, भवानी मण्डी



श्री छोगालाल पोद्दार ने 1939 मे भवानी मण्डी मे प्रेमहितकारिणी सभा की स्थापना करके जन जागृति और संगठन की शुरूआत की थी। 1944 तक उनकी यह संस्था चलती रही। इसी वर्ष पुलिस उनके सब कागज उठाकर ले गई और सस्था बन्द कर देनी पडी। 1944 मे आनन्द काटन मिल्स के मैनेजर श्री मदनलाल शाह के सहयोग से उन्होने युवक सघ का गठन किया, लेकिन, पुलिस ने यह सस्था भी नहीं चलने दी।

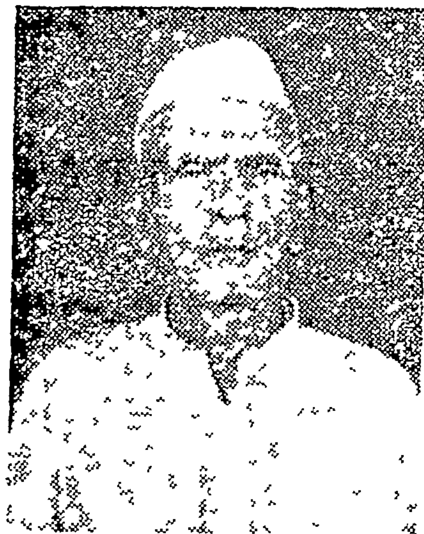
श्री मदनलाल शाह ने भवानी मण्डी में जयपुरिया आयल मिल के उद्घाटन के अवसर पर तिरगा झडा फहराया। झालावाड में इस एक घटना मे चेतना की नई लहर पैदा होगई। 1946 मे झालावाड राज्य प्रजा मडल की स्थापना हुई और श्री छोगालाल पोद्दार भवानी मण्डी मे प्रजामडल के मत्री बने। उत्तरदायी शासन के लिए आन्दोलन शुरू हुआ। सभा, जुलूस और प्रदर्शनो का तांता लग गया। झालावाड रियासत मे भवानी मण्डी जागरण और राजनैतिक प्रवृत्तियो का केन्द्र बन गया। झालावाड मे भी लोकप्रिय सरकार बनी और श्री मांगीलाल भव्य मन्त्री बनाए गये। बाद मे झालावाड का भी सयुक्त राजस्थान सघ मे विलय होगया।

श्री छोगालाल पोद्दार स्वाधीनता के बाद कांग्रेस के सक्रिय सदस्य बन गए। उन्होने काला बाजार और चोर बाजारी करने वाले लोगों को गिरफ्तार करवाया। 1954 से 64 तक श्री छोगालाल पोद्दार ने भवानी मण्डी मे कांग्रेस के अध्यक्ष का कार्य किया। 1965 के अगस्त मे भवानी मडी मे गल्ले के वितरण की अव्यवस्था के विरुद्ध गल्ला गोदाम पर 45 व्यक्तियो के साथ धरना देने पहुचे। परन्तु लोगो ने गल्ला लूट लिया जिसके परिणाम स्वरुप श्री छोगालाल पोद्दार अन्य लोगो के साथ गिरफ्तार कर लिए गये और उन पर मुकदमे चले लेकिन बाद मे राज्य सरकार ने मुकदमे उठा लिये।

श्री छोगालाल पोद्दार लम्बे समय तक भवानी मडी में मजदूर संघ (इटक) के अध्यक्ष रहे और मिल मालिको से मजदूरो के हित मे निरन्तर सघर्ष करते रहे हैं।

श्री छोगालाल पोद्दार आज भी भवानी मण्डी के सार्वजनिक जीवन मे सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

श्री तनसुख लाल मित्तल



श्री तनसुखलाल मित्तल हाडौती क्षेत्र के एक पुराने और तपे हुए कार्यकर्ता हैं। हाडौती आचल मे राष्ट्रीय जागरण और राजनैतिक चेतना लाने वाले अग्रगण्य व्यक्तियो मे उनकी गणना है। उनकी उम्र करीब 65 वर्ष की है और विगत 43 वर्षों से वे राजनैतिक क्षेत्र मे सक्रिय रुप मे कार्य कर रहे हैं। वे कोटा के रहने वाले है परन्तु उनका बचपन बम्बई मे बीता और वहा उन्होने मारवाडी विद्यालय मे शिक्षा प्राप्त की।

श्री तनसुखलाल मित्तल ने अपनी 22 वर्ष की आयु मे, 1929-30 मे बम्बई के आजाद मैदान मे मैजिस्ट्रेट की आज्ञा का उल्लघन करके तिरगा झण्डा फहराने वाली टोली का साथ दिया और नारे लगाए जिसके परिणाम स्वरुप उन्हे गिरफ्तार करके 10½ साढे दस महीने की सजा दी गई और वे थरोदा, बीसापुर और पूना जेलो मे रखे गए। 1930 के नमक सत्याग्रह मे उन्होने बडाला पर नमक कानून भग किया और उन्हे दूसरी बार गिरफ्तार करके 3½ साढे तीन महीने की सजा दी गई। उन्हे यरवदा जेल भेज दिया गया।

1931 के जून मे श्री तनसुखलाल मित्तल कोटा आगए और वहा पडित नयनूराम शर्मा के साथ मिलकर उन्होने 21 सितम्बर 1931 को हाडौती प्रजामडल की स्थापना की। इसके बाद प्रजामडल के तत्वावधान मे राष्ट्रीय और राजनैतिक प्रवृतियो को हाडौती अचल मे फैलाने मे लग गए। उन्होंने 1932 मे हरिजनो के मदिर प्रवेश आन्दोलन का नेतृत्व किया और हरिजनो मे शिक्षा प्रचार का अभियान शुरु किया। सन् 34 मे कुछ दिन के लिए श्री तनसुखलाल मित्तल ने ब्यावर से प्रकाशित होने वाले राजस्थान पत्र के व्यवस्थापक का कार्य भी किया।

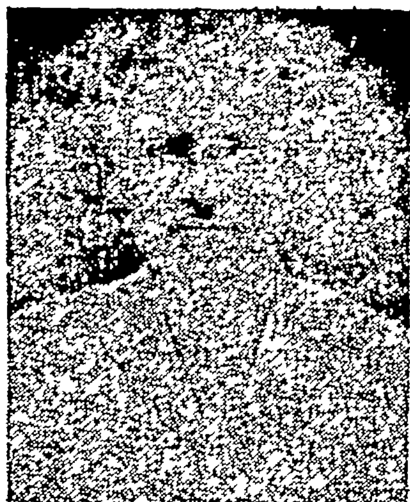
श्री तनसुखलाल मित्तल ने कोटा, बूदी और झालावाड के कस्बो मे घूम घूम कर प्रजामडल के सदस्य बनाने तथा प्रजामडल के सगठनात्मक पक्ष को शक्तिशाली बनाने का बुनियादी कार्य किया था। उन्होने राजनैतिक जागरण के प्रारम्भिक दिनो मे एक एक कस्बे मे भारतीय स्वाधीनता और रियासतो मे जिम्मेवार हुकुमत स्थापित करने का सदेश लोगो तक पहुचाया था। जिन दिनो मे काग्रेस, गाधी, तिरगा झण्डा और प्रजामडल का नाम लेना भी राजद्रोह माना जाता था उस समय श्री तनसुखलाल मित्तल ने अत्यत साहस और निर्भीकता के साथ लोगो का मनोबल जागृत किया था।

श्री तनसुखलाल अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजापरिषद के साथ संबद्ध रहे हैं और राजपूताने की अन्य रियासतो मे जहा कहीं भी आन्दोलन हुए है—वहा अपनी सेवाए देने को वे बराबर पहुंचते रहे हैं।

सन् 46 मे कोटा मे पुलिस एक्ट की धारा 37 के विरुद्ध जो आन्दोलन हुआ उसमें उन्हे भी गिरफ्तार किया गया और कुछ दिन बाद छोड दिया गया। 1942 मे भारत छोडो आन्दोलन मे अपनी लम्बी बीमारी के कारण वे भाग नहीं ले सके।

1967 से श्री तनसुखलाल मित्तल झालावाडा आगए हैं और झालावाडा जिला कांग्रेस कमेटी का कार्य सम्हाले हुए हैं। वे आज भी राजनीति मे सक्रिय हैं और अपनी शक्ति सामर्थ्य के अनुसार राष्ट्र की सेवा में अपना अर्घ्य अर्पित कर रहे हैं।

श्री मांगीलाल भव्य



जन्म— मई 1911

वर्तमान पता— डा० छैल बिहारीलाल बिल्डिग, मकान नं० 167, लाडपुरा, कोटा।

श्री मागीलाल भव्य मूलरूप से झालावाड के रहने वाले है। इन्होने बी०ए०, साहित्य रत्न तक की शिक्षा प्राप्त की हैं। इसके अतिरिक्त इन्हे बगला, मराठी और गुजराती भाषा का अच्छा ज्ञान है। इन्होंने 1926 से ही खादी के वस्त्र तथा गाधी टोपी पहनना शुरू कर दिया था। 1931 मे झालावाड राज्य मे अध्यापक होगए थे। इन्होने स्कूल की इमारत तथा अपने रहने के मकान पर तिरगे झण्डे और नेताओ के चित्र लगा रखे थे। यहीं से वे राज्य की पुलिस की आखो मे खटकने लग गए थे।

श्री मागीलाल भव्य ने झालावाड जैसे पिछडे राज्य मे जन चेतना फैलाने और राज्य मे प्रजामण्डल की स्थापना करके गाव गाव मे अन्याय का विरोध करने के लिए जनता को जागृत और सगठित करने का बहुत बडा कार्य किया था। राज्य ने उन्हे दस नम्बरीया घोषित किया, उन पर कई झूठे इल्जाम लगाए, उनको झूठे मुकदमो मे फसाने की कोशिश की और अत मे उन्हे जान से मार डालने के षडयत्र किए गए। परन्तु इन सब प्रतिकूलताओ के बावजूद भी श्री मागीलाल भव्य अपने मार्ग पर अविच्छिन्न गति से बढते गए।

राजकीय सेवा मे रहते हुए भी श्री मागीलाल भव्य ने पडत-ईखराज-आन्दोलन की शुरू-आत की और किसानो को पडत जमीन की झूठी और जबरन वसूली से बचाने की कोशिश की। उन्होने खडवा के कर्मवीर मे झालावाड राज्य के अत्याचारो के सबध मे लेख लिखने शुरु किए। श्री मागीलाल भव्य का स्थानातरण झालावाड करके ये

आदेश प्रसारित कर दिए गए कि उन्हे झालावाड शहर से देहात मे किसी भी काम पर नही भेजा जाए। यह एक तरह की नजरबन्दी ही थी। उन्होने 1932 मे झालावाड शहर मे आकर अस्पृश्यता निवारण आन्दोलन का कार्य शुरू किया और इसमे उन्हे सतोषजनक सफलता मिली।

श्री मागीलाल भव्य ने खादी प्रचार और गाधी केप आन्दोलन, पडत इखराज आन्दोलन, नमक-कानून-भग आन्दोलन, कर्मचारी–सघ–आन्दोलन, अस्पृश्यता–निवारण आन्दोलन, बेगार-प्रथा-विरोधी-आन्दोलन, जागीरदारी समाप्ति आन्दोलन, सभा प्रतिबन्ध तोड आन्दोलन, और टैक्सेज विरोधी आन्दोलनो को शुरू किया और इन सबका नेतृत्व करके जनता मे आत्मा विश्वास और निर्भयता के सस्कार जगाए। इन आन्दोलनो की सफलता के लिए उन्हे राज्य भर मे सभाए, जुलूस, समारोह और सम्मेलन करने पड और पर्चों, पैम्पलेटो और बुलेटिनो से गाव गाव मे आन्दोलनो का सदेश पहुचाना पडा। इन आन्दोलनो मे श्री मांगीनलाल भव्य एव उनके साथी हर कदम पर खतरो के बीच रहा करते थे और जिस तरह की प्रतिकूलताओ के बीच उन्हे जनता के बीच कार्य करना पडा उसकी कल्पना मात्र से आज रोगटे खडे होजाते है। श्री मांगीलाल भव्य से राज्य के दीवान ने वायदा करवाने की चेष्टा की कि वह राजनैतिक प्रवृत्तियो मे भाग नही लेगा। इस तरह का वायदा करने के स्थान पर श्री मांगीलाल भव्य ने राजकीय सेवा से त्यागपत्र दे दिया और अपना सपूर्ण समय लोक सेवा मे लगाने लग गए।

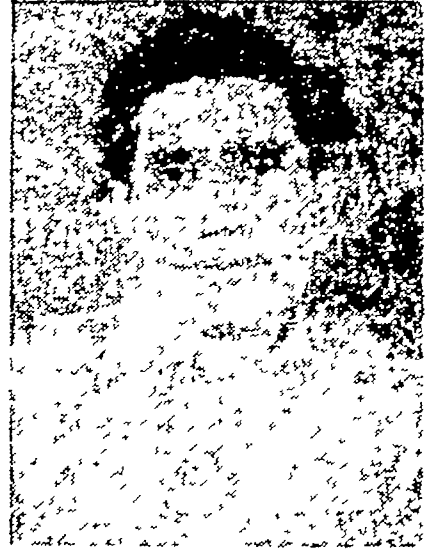
महाराजा ने अपनी स्वामीभक्त प्रजा के द्वारा प्रजामडल विरोधी दल बनवाए जिनका काम प्रजामडल की मीटिंगो मे हुल्लड करना तथा प्रजामण्डली गुडो को मारपीट करके दुरस्त करना था। हर गाव मे उन्हे पत्थरो की वर्षा का सामना करना पडता। प्रजामडल के लोगो की पैरवी करने को कोई वकील तैयार नही होता।

1946 में प्रजामण्डल ने पूर्ण उत्तरदायी शासन की माग की। इसके लिए 100 व्यक्ति राज्य मे सत्याग्रह करने को तैयार हुए। जून 1947 मे महाराजा को अल्टीमेटम दिया गया। इसी क्रम मे नवम्बर 47 मे प्रजामण्डल के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल मित्तल को राज्य के लोकप्रिय मन्त्रीमण्डल मे लिया गया और बाद मे प्रजामण्डल के महामत्री मांगीलाल भव्य को भी मिनिस्टर बनाया गया। अप्रेल 48 मे झालावाड रियासत का विलय सयुक्त राजस्थान सघ मे हो गया।

मिनिस्ट्री समाप्त होने के बाद कुछ राज्य भक्त लोगो ने मागीलाल भव्य के विरुद्ध राज्य भर मे प्रचार किया कि इसने राजा को गद्दी से हटवाया और उनकी गद्दी छिनवादी है। उनके मकान पर निरतर पत्थरो की वर्षा होती रही और छुरे का वार करने के लिए गुडे लोग उनके मकान पर तैनात करवा दिए गए। एक बार तो छुरे के वार से मागीलाल भव्य कुदरती तौर से बाल बाल बच गए।

देश की स्वाधीनता के बाद और राजस्थान का निर्माण हो जाने पर श्री मागीलाल भव्य ने राज्य के पचायत विभाग के डिप्टी रजिस्ट्रार के पद पर वर्षों तक कार्य किया। आजकल वे कोई विशेष कार्य नही कर रहे है। उनका स्थायी निवास अब झालावाड से कोटा आगया है।

श्री विट्ठल प्रसाद शर्मा



जन्म —सन् 1926

वर्तमान पता —पोस्ट अकलेरा (झालावाड)

श्री विट्ठल प्रसाद शर्मा कोटा के दक्षिणी पूर्वी क्षेत्र मनोहर थाना के मूल निवासी है और इस क्षेत्र मे मनोहर थाना, अकलेरा, असनावर, खानपुर, बकानी और छीपाबडोद मे प्रजामण्डल को सगठित करने और उत्तरदायी शासन का सदेश गाव२ मे पहुचाने मे इन्होने प्रारम्भिक दिनो में वहुत कार्य किया था। वे वर्षो तक कोटा राज्य प्रजामण्डल की कार्य समिति के सदस्य रहे हैं।

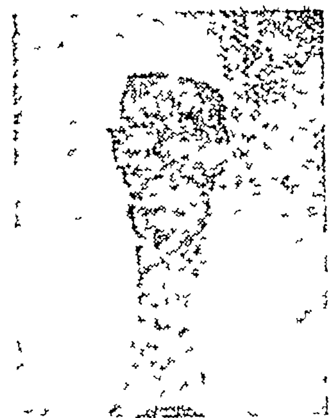
कोटा राज्य प्रजामण्डल द्वारा पुलिस एक्ट की धारा 37 के विरुद्ध चलाए गए आन्दोलन, जागीरो मे बेगार विरोधी आन्दोलन, लगान बन्दी, लेवी बन्दी और उत्तरदायी शासन के लिए चलाए गए प्रत्येक आन्दोलन मे श्री विट्ठल प्रसाद शर्मा ने उत्साह से भाग लिया है। 1942 मे श्री विट्ठल प्रसाद ने कोटा राज्य प्रजामन्डल द्वारा सचालित भारत छोडो आन्दोलन मे भाग लेने के लिए नवमी श्रेणी मे स्कूल छोड दिया था और फिर आगे स्कूल मे पढाई नही कर सके। उन्होने मैट्रिक की परीक्षा प्राइवेट ही पास की।

श्री विट्ठल प्रसाद शर्मा अपनी राजनैतिक प्रवृत्तियो और राजद्रोह के अपराध मे कोटा, अकलेरा और मनोहर थाना मे कई बार पुलिस हिरासत मे लिए गए। विधिवत गिरफ्तार होकर जेल भी भेजे गए, उन पर मुकदमे भी चले परन्तु महाराजा के विशेष आदेश से मुकदमे वापिस ले लिए गए और थोडे दिन बाद वे जेल से रिहा कर दिए गए। पुलिस की हिरासत मे उन्हे कई बार अमानुषिक क्रूर पिटाई का शिकार होना पडा और जागीरी क्षेत्र मे, पिटाई से भी अधिक त्रासदायक यातनाए उन्हे सहनी पडी।

देश की स्वाधीनता के बाद श्री विट्ठल प्रसाद लोकतान्त्रिक-विकेन्द्रीकरण के कार्य क्रम मे लग गए। उन्होने मनोहर थाना पचायत के पच, उप सरपच, पचायत समिति के उप प्रधान और प्रधान की जिम्मेवारिये सम्हाली और अपने क्षेत्र मे विकास और निर्माण के कार्यक्रमो को क्रियान्वित किया। उन्होने अपने क्षेत्र मे सहकारी आन्दोलन को आगे बढाया और आदिवासी–कल्याण तथा दलित जाति कल्याण के लिए कार्य किया। सन् 67 से सन् 72 तक श्री विट्ठल प्रसाद अपने क्षेत्र मे राजस्थान विधान सभा के सदस्य रहे।

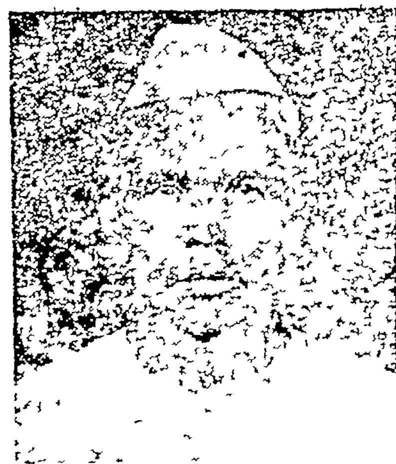
आन्दोलनो मे भाग लेने और सारा समय राजनीति मे लगाने से श्री शर्मा की पैतृक सपत्ति का निरतर क्षय होता गया। इन दिनो उन्हे आर्थिक मोर्चे पर भी निरतर सघर्ष करना पड रहा है।

श्री निरंतर हरि चौरसिया



श्री निरतर हरि चौरसिया झालावाड जिले की झालरापाटम तहसील मे ग्राम ऊखली के रहने वाले हैं। उनका जन्म सवत् 1956 की ज्येष्ठ शुक्ला 3 को हुआ था। इस समय उनकी उम्र करीब 73 वर्ष की है। उनका कार्यक्षेत्र अजमेर और कोटा राज्य रहा है। वे अपने प्रारम्भिक वर्षो मे ग्रामीण स्कूल मे अध्यापक थे लेकिन नमक सत्याग्रह शुरु होते ही अजमेर चले गए और वहा जाकर नमक सत्याग्रह मे भाग लिया तथा विदेशी वस्त्र वहिष्कार आन्दोलन मे हिस्सा बटाया। उन्हे अजमेर मे गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हे सात महीने की सजा हुई जिससे अजमेर के केन्द्रीय कारागृह मे उन्हे रखा गया। जेल से मुक्त होने के बाद उन्होने कोटा मे आकर हाडौती प्रजामण्डल की सदस्यता ग्रहण की और अपने क्षेत्र मे प्रजामण्डल का कार्य करते रहे। उन्हे कई बार सभा जुलूसो मे पुलिस की लाठियो का शिकार बनना पड़ा है। श्री निरतर हरि स्वाधीनता के बाद भी निरन्तर प्रजामण्डल और काग्रेस का कार्य करते रहे हैं।

श्री रतन लाल हिन्दुस्तानी



श्री रतनलाल हिन्दुस्तानी का जन्म झालावाड के एक सनाढ्य ब्राह्मण परिवार मे 9 जुलाई 1916 को हुआ। उन्होने 1935 मे इलाहाबाद बोर्ड से हिन्दी मिडिल की परीक्षा पास की। श्री रतनलाल हिन्दुस्तानी अपने विद्यार्थी काल मे मेलो मे तिरगा झडा लेकर लोगो को पानी पिलाने की सेवा करते थे। 1939 मे वे झालावाडमे हरिजन अध्यापक वन गए। 1942 के भारत छोडो आन्दोलन मे श्री हिन्दुस्तानी मे 5 साथियो की एक कमेटी बनाकर गाव-गाव मे प्रचार कार्य करना शुरु किया। राज्य की पुलिस जगह-जगह हैरान

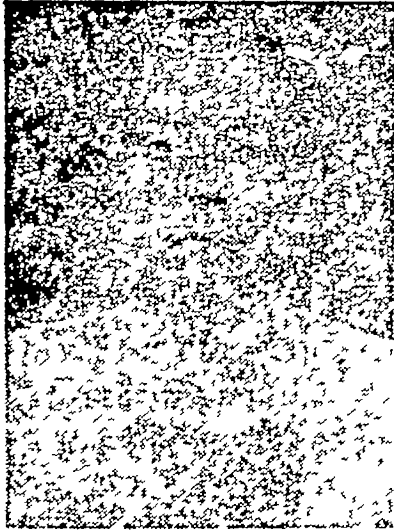
करती रही। झालावाड के महाराजा राजेन्द्रसिंह ने बुलाकर श्री रतनलाल हिन्दुस्तानी को डाटा और हरिजन अध्यापकी से छुट्टी हो गई। इसके बाद श्री हिन्दुस्तानी ने मथुरा, उज्जैन इकतासा और दिल्ली मे कई काम किए। 45 में वे फौज मे भर्ती हो गए और 69 दिन बाद फौज से डिस्चार्ज हो गए। सन् 46 में ये कोटा के आजाद हिन्द दल के सदस्य बने। इसी वर्ष झालावाड मे प्रजामण्डल की स्थापना हुई और श्री मागीलाल भव्य के साथ इन्होने प्रजामण्डल का कार्य शुरु किया। वे प्रजामण्डल की कार्यकारिणी के सदस्य बनाए गए। उन्हे पुलिस की सख्तियो के कारण भवानी-मण्डी जाना पडा। श्री हिन्दुस्तानी काग्रेस के मन्त्री, अध्यक्ष, हरिजन–अध्यापक, भूदान-कार्यकर्ता नगर–पालिका सदस्य, शराब बन्दी के सत्याग्रही और मजदूर सगठनो के नेता रहे हैं और 1962 से राजस्थान हरिजन-सेवक-सघ के अतर्गत हरिजनोद्धार का कार्य कर रहे हैं।

श्री राम स्वरूप संधावा



श्री रामस्वरूप सधावा का जन्म 7 जुलाई 1926 को झालावाड के एक सेन परिवार मे हुआ। उनकी शिक्षा झालावाड मे ही हुई। 1942 मे भारत छोडो आन्दोलन मे जो सभा, जुलूस और प्रदर्शन होते उसमे श्री रामस्वरूप उत्साह से भाग लेते। इन प्रदर्शनो मे वे कई बार पुलिस की लाठियो के शिकार हुए। 1943 मे राज्य में जो अन्न आन्दोलन शुरु हुआ उसमे भी श्री रामस्वरूप ने भाग लिया था। वे भी हिरासत मे लिए गए, महल मे ले जाए गए और छोड दिए गए। प्रजामण्डल की स्थापना के बाद श्री रामस्वरूप ने उत्तरदायी शासन के लिए श्री मागीलाल भव्य के साथ उत्साह से कार्य किया और जिम्मेवार हुकुमत के लिए जनमत जागृत किया। 1945 से 1948 तक श्री रामस्वरूप प्रजामण्डल की कार्यकारिणी के सदस्य रहे हैं। देश की स्वाधीनता के बाद श्री रामस्वरूप राजकीय सेवा मे लग गए। लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण के बाद वे पचायत प्रसार अधिकारी का कार्य कर है। वे आजकल बाडमेर मे कार्यरत हैं।

श्री रामनारायण टेलर



श्री रामनारायण की उम्र ७४ वर्ष की है। उनका युवा काल गुजरात मे बीता। वे १९२१ मे अहमदाबाद के आर्य समाज के सक्रिय कार्य कर्त्ता थे और प्रतिदिन साबरमती आश्रम मे गाधीजी का प्रवचन सुनने जाया करते थे। जब श्री रामनारायण राष्ट्र सेवा के सस्कार लेकर झालावाड आये, उस समय झालावाड मे मित्र मडल नाम की एक सस्था सास्कृतिक पुनरुत्थान के लिये कार्य करती थी। श्री रामनारायण उन दिनो मित्र मडल मे शामिल हो गये।

१९४२ मे भारत छोडो आन्दोलन के समय झालावाड और झालरापाटन मे प्रतिदिन जनता का जुलूस पोलिटिकल एजेण्ट के बगले पर जाकर विरोध प्रकट करता। श्रीराम नारायण इस तरह के जुलूसो के सयोजक होते। १९४२ मे खाद्यान्न का कट्रोल अव्यवस्थित होने के कारण श्रीरामनारायण ने राज्य मे अन्न बढाओ आन्दोलन शुरू किया। राज्य ने जनता पर घोडे दौडाए, फायर किए, गिरफ्तारिया की।

श्री मांगीलाल भव्य के साथ मिलकर श्री रामनारायण टेलर ने झालावाड मे प्रजा मडल की स्थापना की। वे प्रजामण्डल की कार्यकारिणी के सदस्य थे। उनकी दुकान प्रजा मण्डल का मुख्य प्रचार केन्द्र था। पुलिस ने इसी कारण उनकी दुकान पर कई बार धावे बोले।

श्री रामनारायण ने किसान आन्दोलनो का भी सगठन किया था और किसान फण्ड की रकम किसानो को दिलवाने की व्यवस्था की थी। हाडौती सघ और राजस्थान सघ बन आने के बाद श्री रामनारायण के जीवन मे सघर्ष का युग समाप्त हुआ। वे आज भी राष्ट्रीय कार्यों मे उसी उत्साह से भाग लेते हैं।

श्री रामचन्द्र टेलर

श्री रामचन्द्र टेलर जाति मे मेववाल है। उनकी उम्र ५० वर्ष की है। झालावाड़ मे इन्होने बालमित्र-मडल और छात्र-मडल बनाकर विद्यार्थी काल मे सार्वजनिक सेवा कार्य प्रारम्भ किया था। झालावाड मे आजाद हिन्द दल सगठित होने पर श्री रामचन्द्र इस दल के सक्रिय सदस्य बने और प्रजा मडल की स्थापना होने पर वे प्रजा मडल के पहली पक्ति के कार्य कर्त्ता बने। प्रजामडल के सदेश को लेकर वे गाव-गाव मे घूमने लगे और हर स्थान पर पुलिस ने उन्हे बुरी तरह तग करना शुरू किया। पुलिस द्वारा मार पीट, हिरासत मे रखना तथा डराना धमकाना आए दिन की घटनाए होगई थी। १९४६ से १९४८ तक श्री रमचन्द्र निरतर पुलिस से घिरे रहते और उनके हर काम की रिपोर्ट दर्ज की जाती।

झालावाड मे लोकप्रिय मत्री मडल बनने के बाद उन्हे पुलिस की इन ज्यादतियो से मुक्ति मिली। श्री रामचद्र टेलर रजपूताना रीजनल कौंशिल मे झालावाड के प्रतिनिधि सदस्य थे। कोटा सघ और उदयपुर वाला सयुक्त राजस्थान सघ बनाने के आन्दोलन मे उन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया। श्री रमचद्र आज तक देश सेवा की प्रवृत्तियो में सक्रिय रूप मे भाग लेते रहे हैं।

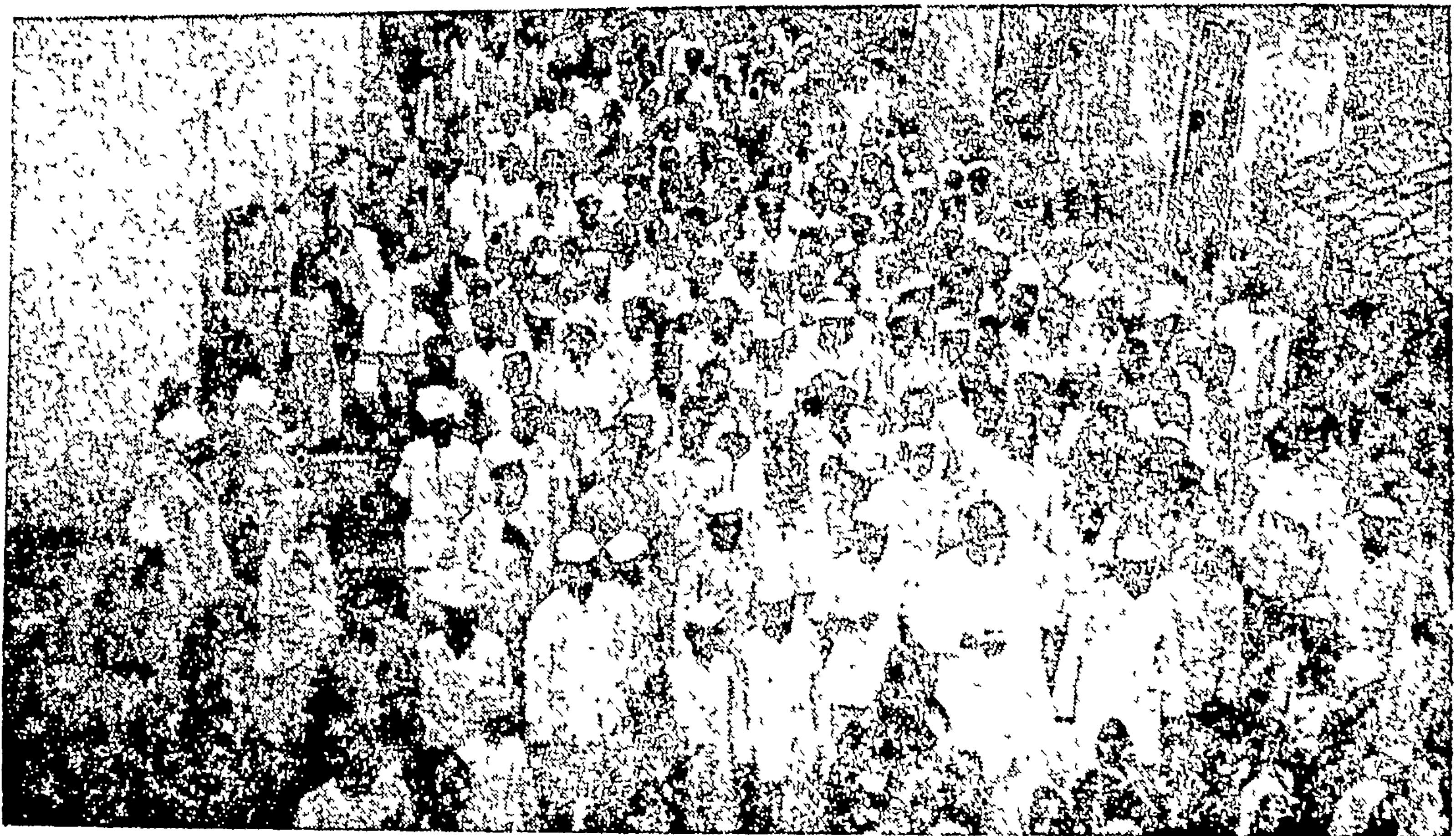
राजस्थान में

स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी

- स्वतन्त्रता के संदेश वाहक
- सत्याग्रही और
- स्वातंत्र्य - सैनिक

डूंगरपुर और बांसवाड़ा

डूंगरपुर में लोक-विजय का महा पर्व

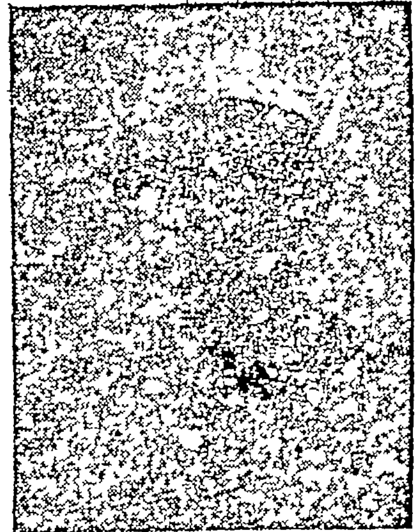


डूंगरपुर मे नेताओ की जेल से मुक्ति के अवसर पर विशाल जुलूस-पण्डित हीरालाल शास्त्री और श्री गोकुल भाई भट्ट जुलूस के आगे दिखाई दे रहे हैं

श्री गौरीशंकर उपाध्याय, डूंगरपुर

जन्म— 3 मई 1910

निधन— 9 नवम्बर, 1965



श्री गौरीशकर उपाध्याय का जन्म डूगरपुर के एक ब्राह्मण परिवार मे 3 मई 1910 को हुआ था। उनकी शिक्षा डूगरपुर मे हुई थी। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से उन्होंने साहित्य-आयुर्वेद-विशारद की परीक्षाए पास की थी। उनमे साहित्यक प्रतिभा जन्म जात थी। वे एक दक्ष लेखक और बहुश्रुत एव वहु-पठित विज्ञ व्यक्ति थे।

श्री गौरीशकर उपाध्याय ने 1929 से खादी पहनना शुरू कर दिया था। उन्होने अपने क्षेत्र मे विचार क्रांति फैलाने के लिए सबसे पहले वचनालयो की स्थापना की। खादी के प्रसार द्वारा देश सेवा करने की दृष्टि से उन्होने सेवा–आश्रम नाम की सस्था स्थापित की और 'सेवक' नाम का एक हस्तलिखित पत्र भी निकाला। राष्ट्रीय आन्दोलन और रचानत्मक कार्य-क्रमों का प्रशिक्षण लेने के लिए वे महात्मा गाधी के पास लम्बे समय तक साबरमती आश्रम मे रह और वहा से आने के बाद उन्होने अजमेर के पास नारेली हरिजन आश्रम मे हरिजन सेवा का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

1934 की ठीक निर्जला एकादशी को श्री गौरीशकर उपाध्याय नारेली आश्रम से सागवाडा पहुचे और तबसे बराबर डूगरपुर जिले को ही अपना कार्यक्षेत्र बनाया। श्री उपाध्याय ने सबसे पहले सागवाडा मे हरिजन आश्रम की स्थापना की और जिले मे हरिजन पाठशालाए स्थापित करने का क्रम शुरू हुआ। उन दिनो सागवाडा मे वागड नव युवक मडल भी कार्य कर रहा था और इन दोनो सस्थाओ के कार्य-कर्ताओ ने मिल कर महात्मा गांधी के 15 सूत्री रचनात्मक कार्य-क्रम के आधार पर लोक-शिक्षा और राजनैतिक चेतना फैलाने का काम शुरू कर दिया।

1935 मे श्री गौरीशकर उपाध्याय का डूगरपुर के नेता श्री भोगीलाल पांड्या से मिलना हुआ। इस मिलन ने श्री गौरीशकर उपाध्याय के समक्ष कार्य का विस्तृत क्षेत्र और सेवा की व्यापक सम्भावनाए उजागर करदी।

इन दोनो नेताओ ने मिलकर वागड सेवा मन्दिर की स्थापना की। डूगरपुर मे शिक्षा का कार्य करने वाले सभी कार्यकर्ता इसमे शामिल हो गए। इस सस्था ने डूगरपुर

के आदिवासी, हरिजन और पिछडी जातिया के मर्वाङ्गीण विकास एवं उत्थान के काम किए। लेकिन इस सस्था की बढती हुई लोक-प्रियता और प्रभाव को देखकर सरकार आसंकित हो उठी। डू गरपुर के महारावल को यह भय होने लगा कि यह सस्था एक न एक दिन रियासत को राजनैतिक चुनौती देगी। अत वागड-सेवा-मन्दिर को सरकार ने गैर कानूनी घोषित कर दिया। तब श्री गौरीशकर उपाध्याय और श्री भोगीलाल पड्या ने सेवा सघ डू गरपुर की स्थापना की और वागड सेवा मन्दिर की सारी प्रवृत्तिया सघ के नाम से चलने लगी।

1939 मे डू गरपुर राज्य ने रोक व इतजाम बेगार एक्ट बनाया और समाज की प्रत्येक जाति पर बेगार अनिवार्य रूप से लागू कर दी गई। परिणाम स्वरूप लोगो मे राजनैतिक चेतना विकसित होने लगी और श्री गौरीशकर उपाध्याय पहले व्यक्ति थे जिन्होने डू गरपुर मे खुलकर राजनैतिक मच से महारावल की ज्यादतियो का विरोध करने का सकल्प प्रकट किया। इस पृष्ठभूमि मे 1939 मे ही राजनैतिक कार्यकर्ताओ का गुप्त सगठन तो जन्म ले ही चुका था परन्तु खुले रूप मे वह 1944 मे प्रकाश मे आया।

1942 के भारत छोडो आन्दोलन के समय डू गरपुर मे श्री भोगीलाल पड्या और गौरीशकर उपाध्याय ने यह निश्चय किया कि अब खुलकर राजनैतिक कार्य किया जाए। उन्होने गाधीजी के करो या मरो के सदेश को गाव गाव तक पहुचाना शुरू किया। सभा, जुलूसो और प्रदर्शनो की बाढ आगई। सरकार ने भी यह प्रतिबन्ध लगा दिया कि शिक्षण सस्थाए चलाने वाला कोई व्यक्ति यदि राजनीति मे भाग लेगा तो सभी रचनात्मक प्रवृतियें सरकार द्वारा बन्द कर दी जाएगी। श्री गौरीशकर उपाध्याय ने ऐसी स्थिति मे प्रयाण सभाओ का आयोजन किया तथा लोक-मानस को तैयार करने के लिए राष्ट्रीय टोलियो का निर्माण करके कार्यकर्ताओ को प्रशिक्षित और सक्षम बनाने का काम अपने हाथ मे लिया।

1944 की 26 जनवरी को डू गरपुर मे प्रजा मण्डल का विधिवत् गठन किया गया। अप्रेल 46 में प्रजा-मण्डल का शानदार अधिवेशन हुआ जिसे सफल बनाने का श्रेय श्री गौरी शकर उपाध्याय को था। प्रजामण्डल ने 1945 मे उत्तरदायी शासन की माग की। जनता पर प्रजामण्डल का बढता हुआ प्रभाव देखकर सरकार भीषण दमन पर उतर आई जहा कही सार्वजनिक सभा होती वहा राज्य के गुण्डो द्वारा कार्यकर्त्ताओ की खूब पिटाई होती। ऐसे ही प्रसग मे श्री गौरीशकर उपाध्याय को गलियाकोट से आगे नोरा नाले पर साथियो सहित खूब पीटा गया। यहा तक कि वे मरणासन्न हो गए। श्री गौरीशकर उपाध्याय को देश निकाला दिया गया। उन्हें जून की कडकडाती धूप मे खुले बदन बासवाडा राज्य की सीमा मे छोड दिया तथा उनके बाल बच्चो को भी राज्य से निकालने की तजवीज होने लगी।

सरकारी नीति के अनुसार राज्याधिकारियो द्वारा पूनावाडा में सघ द्वारा सचालित स्कूल के अध्यापक शिवराम को बुरी तरह मारकर उसके लहुलुहान होने के बाद उसे कुआ नामक किसी गाव मे छुपा दिया गया। सर्व श्री भोगीलाल पडया और गौरी शकर उपाध्याय पूनावाड होते हुए कुआ पहुचे। उन पर गोलियों की बोछार शुरू कर दी गई। भोगीलाल पडया और गौरी शकर उपाध्याय ने भी मोर्चा बन्दी कर ली थी।

गोलियो के सामने एक एक आदमी क्रम से जाए। पहले पड्या फिर उपाध्याय आदि। कुआं से पुन पूनावाडा आते समय श्री भोगीलाल पडया और गौरीशकर उपाध्याय को गिरफ्तार करके धम्बोला पुलिस थाने मे पहुचा दिया गया और वहा इनको बन्दूक के कून्दो से बुरी तरह पीटा गया। उन पर कस्टम का नाका लूटने, शराब छीन कर पीने और व्यभिचार करने आदि बेसिर पैर के आरोप लगाकर उन पर धम्बोला की पाठशाला मे मुकदमा चलाया गया और उन्हें मजिस्ट्रेट के सामने हाथ मे हथकडी और गले मे व भुजाओ पर रस्सा बाध कर खडा किया जाता और मजिस्ट्रेट के सामने ही जूतो से और डडो मे पीटा जाता। वही उन्हे जेल मे रहना पडा।

देश की स्वाधीनता के बाद जब रियासतो मे लोकप्रिय सरकारे बनने का क्रम शुरू हुआ तब श्री गौरीशकर उपाध्याय डूगरपुर मन्त्री मण्डल मे शामिल किए गए। 1948 मे वे डूगरपुर राज्य के मुख्य मन्त्री बनाए गए और अन्त मे सयुक्त राजस्थान मे डूगरपुर का विलय हुआ।

राज्य मे लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण के अवसर पर श्री गौरीशकर उपाध्याय डूगरपुर की जिला परिषद् के प्रमुख बनाए गए। वे दो बार निर्विरोध रूप से डूगरपुर के जिला प्रमुख चुने गए।

श्री गौरीशकर उपाध्याय प्रतिभावान लेखक और प्रभावशाली वक्ता थे। वे डूगरपुर मे वागड-साहित्य-परिषद के अध्यक्ष, जिला वैद्य सभा के अग्रगण्य नेता और भारत सेवक समाज तथा भूदान अभियान के सयोजक थे। वे वर्षो तक जिला काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे अपने जीवन के अतिम दिनो मे भी वे जिला काग्रेस के अध्यक्ष ही थे। जिला प्रमुख के रूप मे डूगरपुर की पाचो पचायतो मे उन्होने विकास के जो काम कराए हैं वे डूगरपुर के इतिहास मे चिरस्मरणीय हैं।

उनका व्यक्तित्व साहित्य और सगीत से भरा हुआ था। राजनीति ने उनके व्यक्तित्व मे नया ओज भर दिया था। 9 नवम्बर 1965 को वागड के इस सपूत का अचानक देहावसान हो गया। उनके निधन पर श्री भोगीलाल पडया ने कहा था कि मेरी दाहिनी बाह टूट गई।

श्री गौरीशकर उपाध्याय ने बागड की मूक जनता को बोलने की शक्ति ही नही अपितु दमन का मुकाबिला करने का सामर्थ्य भी दिया था। स्वतन्त्रता सग्राम के वे अग्रणी सेनानी थे। उनके हृदय मे व्याप्त पीडा जब दर्द भरे गीतों के रूप मे बाहर निकलती तो उससे श्रोताओ की सुसुप्त चेतनाए झकृत हो जाती थी।

श्री शिवलाल कोटड़िया, डूंगरपुर

श्री शिवलाल कोटडिया का जन्म 1920 मे डूगरपुर मे हुआ । उनकी शिक्षा डूगरपुर में ही हुई । युवावस्था मे आते आते श्री कोटडिया डूगरपुर के नेता श्री भोगीलाल पाडया के सम्पर्क मे आए और उनके नेतृत्व मे और उनके सान्निध्य मे काम करना शुरू कर दिया । श्री कोटडिया ने पहले वागड सेवा मन्दिर और फिर सेवा सघ डूगरपुर के तत्वावधान मे आदिवासी क्षेत्रो मे शिक्षा प्रचार का ठोस कार्य किया ।

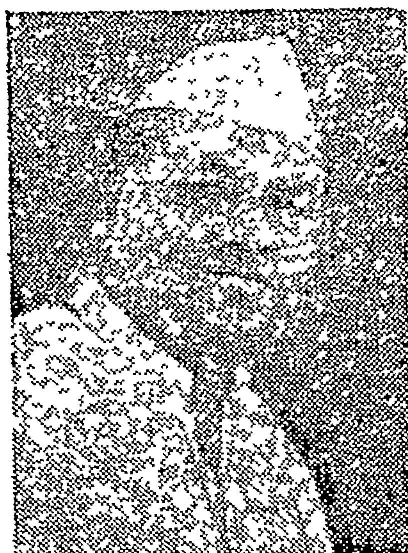
श्री कोठड़िया की रुचि विशेष रूप से राजनैतिक कार्य करने की थी और 1942 से 1947 तक जितने भी आन्दोलन डूगरपुर मे हुए उनमे श्री कोटडिया ने उत्साह से भाग लिया । श्री कोटडिया डूगरपुर राज्य प्रजामण्डल के एक उत्साही कार्यकता थे और उत्तरदायी शासन के लिए प्रजामण्डल के सदेश को आदिवासी जनता तक पहुचाने का वहुत वडा कार्य किया था ।

डूगरपुर में प्रजामण्डल की प्रवृत्तियो का विस्तार होने पर राज्य ने दमन का चक्र भी तेजी से चलाया । श्री कोटडिया 1945–46 मे लगभग तीन सप्ताह के लिए जेल मे रहे और 46–47 मे भी 3 सप्ताह के लिए उन्हें जेल मे रखा गया । जेल के वाहर राज्य की पुलिस द्वारा पिटाई किए जाने का तो कोई हिसाव ही नही है । कही भी किसी गाव मे सभा करने या जुलूस निकालने का अवसर आता कि पुलिस प्रमुख कार्यकर्ताओ पर वार करने से नही चूकती । श्री शिवलाल कोटडिया की गिनती तो पहली पक्ति में ही आती इसलिए पुलिस की मारपीट भी उन्हें उसी अनुपात मे मिलती । इसके अतिरिक्त सामन्ती लोग हर अवसर पर उन्हें जान से मार देने की निरन्तर धमकियें दिया करते थे । सामन्ती तत्वो द्वारा किसी न किसी वहाने से मारपीट तो करवा ही दी जाती थी ।

श्री शिवलाल कोटडिया को राज-नीति मे सक्रिय रूप से भाग लेने के कारण व्यवसायिक और आर्थिक दृष्टि से क्षय और क्षतियें ही उठानी पडी । उन पर कई झूठे मुकदमे लगाकर जुर्माने की वडी वडी रकमे वसूल की गई और उनका व्यापार और उनका धधा छुडवा दिया गया ।

वे प्रजामण्डल-युग से लगाकर आजतक काग्रेस-युग मे निस्वार्थ भाव से सेवा कार्य में लगे हुए हैं और आज भी काग्रेस की प्रवृत्तियो मे उत्साह से भाग लेते हैं ।

श्री हरिदेव जोशी, डूंगरपुर



जन्म— 17 दिसम्बर 1921

वर्तमान पता — स्वास्थ्य मन्त्री
राजस्थान राज्य,
जयपुर।

श्री हरिदेव जोशी का जन्म 17, दिसम्बर, 1921 को बासवाडा के एक विद्वान ब्राह्मण परिवार मे हुआ। उनका प्रारम्भिक जीवन डूगरपुर में श्री भोगीलाल पाडया के सान्निध्य मे सेवा सघ डूगरपुर मे आदिवासियो की सेवा करते करते बीता। डूगरपुर मे राजनीति का उदय सेवा सघ द्वारा सचालित शिक्षण सस्थाओ के माध्यम से हुआ। श्री गोरी शकर उपाध्याय की प्रेरणा से ब्राह्मण परिवार के हरिदेव जोशी आदिवासी, हरिजन और पिछडी जातियो मे शिक्षा का प्रचार करने को निकल पडे। अध-नगे आदिवासियो को उनकी दशा का भान कराने के लिए पहाडिया की टेकरियो पर इन्होंने पाठशालाए स्थापित की और शोषित आदिवासियो को शोषणमुक्त समाज की नव रचना का पाठ पढ़ाने लगे।

श्री हरिदेव जोशी बासवाडा और डूगरपुर से अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद मे वर्षों तक प्रतिनिधि रहे। वे देशी राज्य प्रजा परिषद की रीजनल कौंशिल के भी सदस्य रहे। डूगरपुर मे 1942 से 47 तक जितने भी राजनैतिक आन्दोलन हुए उन सब मे श्री हरिदेव जोशी का प्रमुख हाथ था। परन्तु सर्व श्री भोगीलाल पडया और श्री गौरी शकर उपाध्याय का सदा यही यत्न रहता कि हरिदेव जोशी आन्दोलनो को गतिशील रखने के लिए जेल से बाहर रखे जाए। इतनी सतर्कता बरतने पर भी एक बार श्री हरिदेव जोशी को डूगरपुर से देश निकाला तो दे ही दिया गया था और उनकी धर्मपत्नि श्रीमती सुभद्रा देवी जोशी को अन्य महिलाओ के साथ जेल जाना पडा था।

श्री हरिदेव जोशी 1949 मे राजस्थान प्रदेश काग्रेस कमेटी और काग्रेस महासमिति के सदस्य चुने गए। 1952 से 60 तक वे प्रदेश काग्रेस के महा-मन्त्री रहे और 1962 में प्रदेश काग्रेस के अध्यक्ष। श्री हरिदेव जोशी 1952 से राजस्थान विधान सभा के सदस्य हैं। वे विधान सभा में काग्रेस दल के मुख्य सचेतक और जन लेखा समिति के अध्यक्ष

रह चुके हैं। वे पिछले 7 वर्ष 10 महीनों से राजस्थान मन्त्री मण्डल में एक शक्तिशाली कर्मठ मन्त्री के रूप में कार्य कर रहे हैं। उन्होंने 2 जून 1965 में मुखाडिया मन्त्री मण्डल में 6 वर्ष 1 महिना उद्योग मन्त्री के रूप में कार्य किया। अब पिछले पौने दो वर्ष में वे बरकत-मन्त्री-मण्डल में उप-मुख्य-मन्त्री और स्वास्थ्य मन्त्री की तरह कार्य कर रहे हैं।

निश्चय ही श्री हरिदेव जोशी राज्य में एक कुशल प्रशासक के रूप में स्थापित हो चुके हैं। वे राजनीति के साथ एक रस हो चुके हैं परन्तु आदीवासी जातियो, जन जातियो, और समाज के पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिए उनके भीतर एक तीव्र छटपटाहट है और अपने क्षेत्र में इन लोगो के बीच में पहुचकर श्री हरिदेव जोशी पूर्णतया उनमें ही खो जाते हैं।

श्रीमती शकुन्तला देवी त्रिवेदी, बांसवाड़ा



वर्तमान पता—धनुंधर कार्यालय, बांसवाड़ा

जोधपुर राज्य के मेडता सीटी में श्रीचदन मल शर्मा के घर श्रीमती शकुन्तला देवी त्रिवेदी का जन्म हुआ। बाल्यकाल में ही पिता का निधन हो जाने से भाई-भाई अलग हुए और वे अपने भाई के साथ रतलाम आकर स्थाई रुप से निवास करने लगी। इन दिनो रतलाम में राजाशाही जोरों पर थी और शिवा हजूरी का बोल बाला था। महाराजा रतलाम के खिलाफ जोरदार आन्दोलन चल रहा था। यहा पर स्वाधीनता आन्दोलन की एक कर्मठ महिला कार्यकर्ता श्रीमती प्रभावती देवी के घनिष्ट सम्पर्क में आने से ही पुलिस की नजरो में चढ गई और उनके पकड़े जाने की चर्चा चल पडी। तब शकुन्तला देवी को भूमिगत होने की सलाह दी गई। इस पर सम्भवत जनवरी, 1940 में वे मामा बालेश्वर दयाल के पास भील आश्रम बामनिया पहुची। यह एक समस्या थी कि 19 वर्षीय युवा लड़की भूमिगत कहा—कैसे रहेगी? इस पर मामाजी ने उन्हे विवाह कर लेने की सलाह दी।

इन्हीं दिनों झाबुआ राज्य के कस्टम विभाग ने रुई की तस्करी करने वाले भीलो पर गोलिया चलाई। परिणाम स्वरुप कई लोग घायल हुए। इस घटना की जाच के लिए देशी राज्य लोक परिषद की ओर से श्री भूपेन्द्र नाथ त्रिवेदी बामनिया आये। श्री त्रिवेदीजी

की प्रथम पत्नि का देहान्त हो चुका था। मामा वालेश्वर दयाल ने शकुन्तला देवी व श्री त्रिवेदी की शादी की चर्चा चलाई। प्रस्ताव पर विचार कर वाद मे श्री भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी ने रावटी के आर्य समाज मे शकुन्तला देवी से विवाह कर लिया और वे बम्वई मे गृहस्थ जीवन व्यतीत करने लगी। वहा पर वे 'गुजराती महिला समाज' तथा सी–वार्ड काग्रेस कमेटी के माध्यम से जन सेवा के लिए आगे आई। धीरे-धीरे वे बम्वई प्रदेश काग्रेस की महिला शाखा मे जाने लगी और उनका कार्य क्षेत्र वढ़ गया। दो वर्ष मे वे बम्बई के सार्वजनिक जीवन से सुपरिचित हो गई। वे अपने पति के साथ प्रत्येक आन्दोलनो, सभाओ व जलसो मे भाग लेने लगी। 1942 के भारत छोडो आन्दोलन के सिलसिले मे शकुन्तला देवी ने पहली वार जोरदार आश्रु गैस का सामना किया।

श्रीमती शकुन्तला देवी भारत छोडो आन्दोलन मे अपने को उलझाने की तैयारी कर ही रही थी कि मारवाड मे लोक नायक स्व० जयनारायणजी व्यास ने विद्रोह का शख बजाया। शकुन्तला देवी जन्म भूमि मे कार्य करने के मोह को नही रोक सकी और बम्बई से मारवाड जाने वाले सत्याग्रहियो मे अपना नाम लिखा दिया। मारवाड पहुचने पर मालूम हुआ कि जेल श्री जयनारायण व्यास के नेतृत्व मे सैकडो सत्याग्रहियो से भरा पडा है। जोधपुर मे आन्दोलनो मे वे पकडी गई व मुकदमा चलने के वाद उन्हे तीन महीने की सजा दी गई। वे कुल मिलाकर जेल मे करीव सात महीने रही।

इधर बम्वई मे श्री भूपेन्द्र नाथ त्रिवेदी भूमिगत हो, आन्दोलन के कार्य मे लगे हुए थे। वाहरी काम का नुकसान हो रहा था। इस कारण शकुन्तला देवी सूचना मिलने पर बम्बई आ गई व अपने पति के कार्य मे हाथ वटाने लगी।

इस बीच बम्वई पुलिस ने श्री भूपेन्द्र नाथ त्रिवेदी को गिरफ्तार कर लिया तथा उनके प्रेस पर सील लगा दी गई।

12 वर्षीय पुत्र स्वाधीनता आन्दोलन को भेंट

दोनो पति-पत्नि के गिरफ्तार हो जाने के वाद घर पर ताला लग गया। उनका 12 वर्षीय वडा लडका यतीन्द्र नाथ त्रिवेदी इस गडवडी मे कही गुम हो गया–जिसका आज दिन तक कही पता नही चला। श्री त्रिवेदी को तीन माह वाद जेल से रिहा किया गया। शकुन्तला देवी को पुत्र के गुम हो जाने का बहुत ही वडा सदमा लगा—जिसे वे आज तक नही भूल पाई।

बासवाडा आकर शकुन्तला देवी ने प्रजामण्डल के आन्दोलन मे अपने पति के साथ पूरा हिस्सा लिया। यहा उन्हे महिला सगठन तथा स्वय सेवक दल का काम सौंपा गया जिसे उन्होने सफलता से पूरा किया।

देश के स्वाधीनता सघर्ष में अपने को खपाने वाले श्री भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी व साथियो के साथ स्वाधीनता के वाद सत्ता द्वारा जो व्यवहार किया गया उससे शकुन्तला देवी को गहरा सदमा लगा और वे वीमार रहने लगी।

सन् 1949–50 मे वे यक्ष्मा की भयानक वीमारी की मरीज हो गई और गत 20 वर्षों से वे वीमार ही चली आ रही हैं।

आज की स्वार्थपरक राजनीति का उन पर ऐसा वुरा प्रभाव पडा है कि राजनीति की चर्चा करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को वे शकालु दृष्टि से ही देखपाती हैं।

श्री विनोद चन्द कोठारी, बांसवाड़ा

श्री विनोद चन्द कोठारी इन दिनो बासवाडा जिले के सज्जनगढ ग्राम मे काग्रेस के प्रमुख कार्यकर्ता हैं। 1942 मे उन्होने अपना शिक्षण कार्य छोड कर भारत छोडो आन्दोलन में भाग लिया था। उन्होंने झालोद मे ब्रिटिश विरोधी प्रवृत्तियें शुरु की थी। उन्हे दो तीन बार गिरफ्तार किया गया और छोडा गया। 7 अक्टूबर 42 को झालोद मे एक राजद्रोहात्मक भाषण देने के अपराध मे उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। 3 महीने 7 दिन की जेल के बाद श्री कोठारी छोडे गए।

देश की स्वाधीनता के बाद श्री विनोद चन्द झालोद से सज्जनगढ आ गए और आदिवासियो की सेवा मे अपने आपको लगा दिया। वे प्रदेश काग्रेस के सदस्य भी रहे हैं और अपने क्षेत्र मे काग्रेस के सेवाभावी कार्यकर्ता हैं।

श्री गोविंद लाल याज्ञिक, बांसवाड़ा

श्री गोविन्द लाल याज्ञिक का जन्म 3 जून 1927 को बासवाडा मे हुआ। इन्होंने बी० ए० बम्बई से किया और एल० एल० बी० इन्दौर से। विद्यार्थीकाल से ही इनमें राष्ट्रीयता के सस्कार विकसित होने लग गए थे। 1940 से इन्होंने खादी पहनना शुरु कर दिया था। जब गाधीजी ने बम्बई मे भारत छोडो आन्दोलन शुरु किया तो आपके पिता ने आपको इन्दौर भेज दिया। इन्दौर मे विद्यार्थियो के एक जुलूस का नेतृत्व करते हुए श्री गोविन्द लाल अन्य 30 विद्यार्थियो के साथ गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हें पुलिस ने 24 घण्टे के लिए हिरासत मे रख कर इन्दौर से 30 मील दूर जगलो मे छोड दिया।

1944 मे श्री याज्ञिक ने बांसवाडा आकर विद्यार्थियो का सगठन किया और विद्यार्थी काग्रस की स्थापना की। वे विद्यार्थी काग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। बासवाडा मे प्रजामण्डल की स्थापना के बाद श्री याज्ञिक विद्यार्थी काग्रेस की ओर से निरतर प्रजामण्डल की प्रवृत्तियों मे योग देते रहे। 26 जनवरी 46 को उन्होंने किंग जार्ज पचम हाई स्कूल पर पहली बार तिरगा झडा फहराया।

श्री गोविन्द लाल याज्ञिक प्रजामण्डल के बाद से प्रतिवर्ष कांग्रेस के सक्रिय सदस्य बनते रहे हैं। वे पिछले 5 वर्षों से प्रदेश काग्रेस के सदस्य और जिला काग्रेस के महामन्त्री का कार्य कर रहे हैं। श्री याज्ञिक बासवाड़ा नगर पालिका के अध्यक्ष भी रहे है।

राजस्थान में

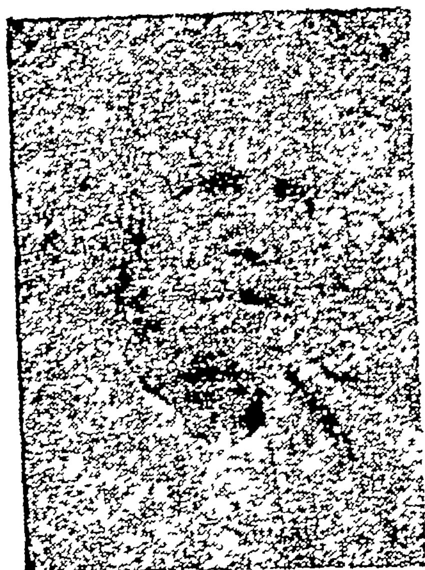
स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी

- स्वतन्त्रता के संदेश वाहक
- सत्याग्रही और
- स्वातंत्र्य - सैनिक

बीकानेर

श्री किसन गोपाल गुट्टड़ महाराज

वर्तमान पता— कन्दोई बाजार,
पोस्ट आफिस की गली,
बीकानेर



श्री किसन गोपाल गुट्टड महाराज बीकानेर के एक पुराने तपे हुए राष्ट्र-सेवक और स्वतन्त्रता सग्राम के सेनानी हैं। इनका राजनैतिक जीवन 1921 मे शुरु हो गया था जब उन्होंने बम्बई के भोईवाडा मे शराब की दुकानो पर पिकेटिग करना शुरु किया था। उन्हें उस समय बम्बई सरकार ने गिरफ्तार करके 15 दिन जेल मे रखा था। इस समाचार से श्री गुट्टड महाराज के पिता अत्यत कूपित हुए और उन्हे खाने पीने का खर्चा देना बन्द कर दिया, तब उन्होंने बम्बई मे राष्ट्रीय नेताओं के चित्र बेच-बेच कर अपने स्वतन्त्र निर्वाह का मार्ग निकाल लिया था।

बम्बई से बीकानेर आते ही श्री गुट्टड महाराज गिरफ्तार कर लिए गए और जमानत एव मुचलको के बाद इन्हे छोडा गया। बीकानेर मे श्री गुट्टड महाराज ने बीकानेर के तत्कालीन नेता श्री मुक्ता प्रसाद वकील के साथ कार्य करना शुरु किया और प्रजामण्डल का कार्य करने लगे। श्री किसन गोपाल गुट्टड महाराज बीकानेर-राज्य-प्रजा-परिषद के सस्थापको मे से एक है। उन्होंने 1942 के बाद श्री रघुवर दयाल गोयल के नेतृत्व के कार्य करना शुरु किया। 1942 के दिसम्बर माह मे झडा सत्याग्रह मे श्री गुट्टड महाराज बीकानेर में गिरफ्तार किए गए और उन्हे 9 महीने की सजा दी गई। राजबंदियों के साथ अपमान जनक व्यवहार के उपलक्ष मे उन्होंने अनिश्चित काल के लिए जेल मे भूख हडताल शुरु करदी। उन्हे काल कोठरी मे बन्द कर दिया गया। काल कोठरी मे वे 34 दिन तक भूख हडताल पर रहे तब सरकार ने उनकी शर्ते स्वीकार की।

श्री किसन गोपाल गुट्टड महाराज ने हरिजन बिल के पास करने के उपलक्ष में लक्ष्मीनाथ जी के मदिर के आगे भूख हडताल की थी। 19 दिन के बाद सत विनोबा और गोकुल-भाई भट्ट के आग्रह अनुरोध पर यह भूख हड़ताल तोड़ दी। अस्पृश्यता निवारण के लिए श्री किसन गोपाल गुट्टड महाराज ने अपनी ब्राह्मण जाति और सवर्णों के विरोध का लोहा लेते हुए हरिजनों के मन्दिर प्रवेश और हरिजन मोहल्लो की सफाई तथा हरिजन बस्ती मे झाडू लगाने का कार्य किया।

बीकानेर के खादी मन्दिर मे श्री गुट्टड महाराज शुरु से ही सचालक मण्डल के सदस्य है और बिना किसी पारिश्रमिक के खादी उत्पादन और खादी प्रचार का कार्य निरन्तर निस्वार्थ भाव से करते आए हैं। बीकानेर प्रजा परिषद की प्रत्येक प्रवृत्ति मे श्री गुट्टड महाराज ने उत्साह से भाग लिया है और जब जहा जैसी कुर्बानी की उनसे मांग की गई वैसी कुर्बानी उन्होने दी है। पुलिस ने बीसीयो बार श्री गुट्टड महाराज को किसी न किसी बहाने से पकड कर पिटाई करते मे कोई कसर नही रखी। दूधवाखारा के आन्दोलन के समय उन्हें गिरफ्तार करके गगा शहर थाने मे उनकी अत्यन्त बेरहमी से पिटाई की गई थी।

श्री गुट्टड महाराज ने अपने सार्वजनिक प्रभाव और अपने राजनैतिक कार्यों से कभी भी व्यक्तिगत लाभ उठाने की चेष्टा नही की। उन्होने न कभी इस सम्बन्ध मे सरकार से कोई याचना की और न किसी सेठ साहूकार से व्यक्तिगत लाभ की पूर्ति की। वे बहुत ज्यादा पढे लिखे नही है परन्तु व्यवहार मे वे अत्यन्त सत्यनिष्ठ, सिद्धान्तवादी और विशुद्ध लोक सेवा की भावना से काम करने वाले देश भक्त है। देश की स्वाधीनता के बाद 1951 मे उन्होंने काग्रेस से त्यागपत्र दे दिया था लेकिन सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र मे आज भी वे उसी उत्साह से हर समय सबसे आगे तैयार रहते है।

श्री गंगादास कौशिक



जन्म — सन् 1910

वर्तमान पता— **उस्तों की बारी के पास, बीकानेर।**

श्री गगादास कौशिक बीकानेर की राजनीति के उन अग्रणी व्यक्तियो मे से है जिनके जीवन के साथ बीकानेर मे राजनैतिक चेतना के विकास क्रम की कहानी जुडी हुई है। उनका जन्म बीकानेर के शाक द्वीपीय ब्राह्मण परिवार मे सन् 1910 मे हुआ था। उनकी शिक्षा भी सामान्य स्तर तक की ही हो सकी थी, लेकिन निरतर समाचार पत्रो के वाचन से उनकी राजनैतिक चेतना और सूझबूझ निरतर विकसित होती गई तथा उनमे राष्ट्रीयता के सस्कार तीव्रता मे विकसित होने लग गए थे :

सन् १९३२ मे जब बीकानेर के महाराजा सर गंगासिंह ने बीकानेर राज्य के ७ प्रमुख व्यक्तियो पर बीकानेर षडयन्त्र के नाम से राजद्रोह का अभियोग लगाकर मुकद्दमे चलाए थे तब उनकी पैरवी करने के लिए राज्य भय से शंकित कोई भी वकील उनकी पैरवी करने को तैयार नही हुआ। उस समय बाबू मुक्ता प्रसाद और श्री रघुवर दयाल गोयल ने साहस के साथ राजद्रोह के उन अभियुक्तो की पैरवी करने का काम हाथ मे लिया। श्री गगादास कौशिक ने श्री रघुवर दयाल गोयल के मुंशी की तरह षडयन्त्र केसकी अदालत मे जाना शुरू किया और मुकद्दमे के कार्यवाही की रिपोर्ट समाचार पत्रो को भेजने का काम उन्होंने बहुत चतुराई से पूरा किया। राजनीति मे उनका प्रवेश यही से हुआ था। श्री गगादास कौशिक के समाचारो के निरतर प्रवाह से बीकानेर षडयन्त्र केस के लिए देश मे अत्यत प्रबल लोकमत तैयार हो गया और बीकानेर महाराजा की तथाकथित प्रगतिशीलता पूरी तरह बे-नकाब हो गई।

बीकानेर षडयन्त्र केस की समाप्ति के बाद श्रीगगादास कौशिक ने समाचार पत्रों के साथ बने हुए अपने सपर्क को कायम रखा और राज्य तथा जागीरदारो के अत्याचारो का भडा फोड वे अपने सवादो से करते रहे। उन्होंने लोगो मे चेतना फैलाने के लिए कई राष्ट्रीय समाचार-पत्रो की एजेंसियें भी ली और घर-घर जाकर लोगो को अखबार पढने के लिये प्रेरित करते गये। उन दिनो बीकानेर मे पत्रकारिता का यह जोखम भरा कार्य करने वाला श्रीगगादास कौशिक ही अकेला व्यक्ति था। १९३६ मे इन्ही कारणो से उनके मकान की कई बार तलाशिया हुई। १९३९ से उन्होंने गांधीजी का हरिजन–सेवक भी लोगो तक पहुचाना शुरू कर दिया था।

१९४० मे श्री गगादास कौशिक ने नागोर मे अपने बीकानेर के कुछ साथियो के साथ लोक नायक जयनारायण व्यास से सम्पर्क किया और बीकानेर की स्थिति से उन्हें अवगत कराया। १९४२ मे श्री कौशिक वनस्थली विद्यापीठ मे पडित हीरालाल शास्त्री द्वारा आयोजित राजनैतिक कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर मे प्रशिक्षण लेकर बीकानेर आगए।

२२ जूलाई ४२ को श्री रघुवर दयाल गोयल के साथ श्री गगादास कौशिक ने बीकानेर राज्य प्रजा परिषद की स्थापना की और बीकानेर राज्य में जिम्मेवार हुकुमत की स्थापना के लिए आन्दोलन की शुरुआत की। ९ अगस्त, ४२ को पुलिस ने श्री गगादास कौशिक को गिरफ्तार किया, उनके मकान की तलाशियां ली गई। उन पर कई प्रतिबन्ध और पाबन्दियां लगा कर उन्हें अपने घर मे ही नजरबन्द कर दिया। उन्हें दिन मे ३ बार पुलिस में हाजरी देने जाना पडता। २५ सितम्बर, ४२ को बीकानेर सेफ्टी एक्ट में गिरफ्तार करके अदालत में उन्हें ६ महीने की सजा और ५०० रुपये जुर्माना का दण्ड दिया गया। १६ फरवरी ४३ को वे जेल से रिहा हुए।

२६ अगस्त ४४ को उन्हें पुन बीकानेर सेफ्टी एक्ट मे गिरफ्तार करके अनिश्चित काल के लिए अनूपगढ़ किले मे नजरबन्द कर दिया गया जहा से पूरे १ वर्ष के बाद उन्हें मुक्ति मिली।

सन् ४६ मे जब श्री रघुवर दयाल गोयल को बीकानेर और जयपुर से निर्वासित कर दिया गया था तब उन्होने अलवर मे जाकर बीकानेर राज्य प्रजा परिषद का कार्यालय स्थापित किया। श्री गगादास कौशिक अलवर रहकर प्रजा परिषद का कार्य करने लगे। इसी वर्ष जब श्री गोयल ने निषेधाज्ञा तोडकर बीकानेर प्रवेश किया तब श्री गगादास कौशिक भी बीकानेर आ गए। श्री गोयलजी गिरफ्तार कर लिए गए। लेकिन उनके साथ राज्य की समझौता वार्ता चली और प्रजा परिषद को राज्य द्वारा मान्यता दे दी गई और प्रजा परिषद ने उत्तरदायी शासन के लिए खुल्लम-खुल्ला कार्य करना शुरू किया।

श्रीगगादास कौशिक १९४२ से १९४७ तक बीकानेर राज्य प्रजा परिषद के महा-मन्त्री की तरह कार्य करते रहे। १९५१ मे उन्होने काग्रेस (प्रजा परिषद) से त्याग पत्र दे दिया। बीकानेर मे जो खादी मदिर १९४३ मे स्थापित किया गया था उसमे श्री कौशिक बराबर सहयोग देते रहे थे। १९५७ से १९६३ तक उन्होने खादी मदिर के मन्त्री का कार्य किया।

श्री गगादास कौशिक ने शराब बन्दी आन्दोलन के लिए प्रान्तीय स्तर पर आयोजित शराब बन्दी सत्याग्रह मे भी भाग लिया था। आजकल उनकी मुख्य प्रवृत्ति खादी कार्य ही है।

वैद्य गंगादत्त रंगा



जन्म— सवत् 1976 पोष कृष्णा 11 (सन् 1919)

वर्तमान पता— रगा आयुर्वेदिक फार्मेसी, नोखामडी, बीकानेर

वैद्यराज श्री गगादत्त रगा का जन्म बीकानेर के पुष्करण ब्राह्मण परिवार मे श्री रुपचन्दजी के यहा सवत् 1976 की पोष कृष्ण 11 को हुआ। 12 वर्ष की उम्र मे (सन् 1931 मे) श्री गगादत्त रगा अपने मामा के साथ कलकत्ते चले गए। उनकी शिक्षा कलकत्ते मे ही हुई। 31–32 मे उन्होंने कलकत्ते की सडको पर सत्याग्रह करते हुए

लोगो को देखा और अग्रेज सारजेंटो द्वारा उन पर होती हुई मारपीट और गिरफ्तारियो को भी देखा। कलकत्ते के वातावरण मे उन्हे राष्ट्रीयता और देश सेवा के संस्कार मिलते गये। 1937 मे कलकत्ते मे जब लक्ष्मी देवी आचार्य की अध्यक्षता मे बीकानेर प्रजामण्डल का गठन हुआ तो वैद्य गगादत्त रगा ने प्रजामण्डल की कलकत्ता की प्रवृतियो मे भाग लेना शुरु किया। 1938 मे श्री गगादत्ता रगा बीकानेर आगये और 1942 मे उन्होंने राजकीय सेवा स्वीकार कर ली।

श्री गगादत्त रगा राजकीय सेवा मे होते हुए भी प्रजा परिषद की प्रवृत्तियो मे रुचि लेते गए। सरकार के ध्यान मे यह बात आ चुकी थी। उन्हे तरक्की, ग्रेड और प्रमोशन के कई प्रलोभन दिए गए कि किसी तरह वह रघुवर दयाल गोयल से अपना सबध विच्छेद करने की घोषणा करदे। उनके नही मानने पर उन्हे फसाने का अलग जाल बिछाया जाने लगा। श्री रगा ने अत मे 1946 मे राज्य सेवा से त्यागपत्र दे दिया। राजकीय सेवा से मुक्त होकर श्री रगा पूरी शक्ति के साथ प्रजा परिषद के कार्य मे लग गए और बीकानेर के जागीरी क्षेत्रो मे जागीरदारो के अत्याचारो मे प्रताडित किसानो मे चेतना का सदेश फैलाने लगे।

इन्ही दिनो रतनगढ तहसील के कागड ग्राम मे जागीरदार ने गाव के किसानो को लगान बढाने का आदेश दिया। किसानो ने लगान बढाने मे अपनी विवशता बताई जिसके परिणाम स्वरूप किसानो के घर लूट लिए गए औरतो और आदमियो की मुश्के बाधकर गढ मे एक तरफ डाल दिया गया। नवयुवतियो के साथ बलात्कार किए गए। इस दर्दनाक और दुर्भाग्य पूर्ण दास्तान को लेकर कागड के कुछ किसान बीकानेर राज्य प्रजा परिषद मे पहुचे और प्रजा परिषद के स्वामी श्री सच्चिदानन्द के नेतृत्व मे सात कार्यकर्ताओ का एक एक दल इस मामले की जाच करने कागड भेजा गया। इस दल मे श्री गगादत्त रगा भी थे। सात कार्यकर्ता कागड पहुचे और जाच का कार्य पूरा करके रवाना होने को ही थे कि जागीरदार के आदमियो ने उन्हे घेर लिया और गढ मे लेजा कर उन सबको नगा करके उनकी बुरी तरह से पीटाई की गई तथा उनके मल द्वार मे पिसी हुई लाल मिर्चो से भरे हुए डडे घुसेडे गए। सातो कार्यकर्ताओ के शरीर पर गहरी चोटे लगी थी। श्री गगादत्त रगा के घुटने पर लकडियो की इतनी चोटे पडी थी कि आज 27 वष बाद भी उनका घुटना ठीक तरह से काम नही करता।

श्री गगादत्त रगा ने बाद मे गाधी जयन्ती के अवसर पर हरिजन सेवा का कार्य किया और हरिजन मोहल्लो की सफाई की जिसके परिणाम स्वरुप उन्हे जाति से बहिष्कृत कर दिया गया। स्थिति यहा तक हो गई कि रगा को सार्वजनिक नलो पर पानी भरना कठिन हो गया।

1946 मे प्रजा परिषद ने बीकानेर के रतनगढ, चुरु, राजगढ, गोगामडी, गगानगर आदि मे राजनैतिक सम्मेलनो का ताता लगा दिया था। श्री गगादत्त रगा ने इन सम्मेलनो को सफल बनाने मे अथक श्रम किया था।

बीकानेर मे जब अतरिम मत्री मडल की स्थिति आई तो प्रजा परिषद के कुछ सदस्यो ने प्रजा परिषद की अनुमति के बिना महाराजा से गुप्त समझौता करके मत्री मडल का गठन कर लिया था। प्रजा परिषद ने इस मत्री मडल का विरोध किया और श्री गगादत्त रगा उस समय मत्री मडल और गुप्त समझौते का विरोध करने वाले मुख्य व्यक्ति थे।

1947 की अगस्त की मध्य रात्रि को श्री गगादत्त रगा ने पुष्करणा चौक मे श्री गोकल भाई भट्ट के हाथो मे तिरगा झण्डा फहरवाया।

श्री गगादत्त रगा ने राजकीय सेवा की, व्यापार किया और आजकल चिकित्सा का कार्य कर रहे हैं। 1944 से 1951 तक राजनीति मे सक्रिय रहकर श्री रगा ने प्रथम महानिर्वाचन के अवसर पर काग्रेस से त्यागपत्र दे दिया था। वे बीकानेर नगर परिषद और बीकानेर नगर काग्रेस के मत्री रहे थे। 1967 मे श्री रगा पुन काग्रेस मे सम्मिलित होगए थे और नोखा तहसील मे उन्होने काग्रेस के कार्यक्रमो को आगे बढ़ाया है परन्तु उनका मानना है कि आजकल सच्चे और ईमानदार कार्यकर्ताओ की काग्रेस को आवश्यकता नही है।

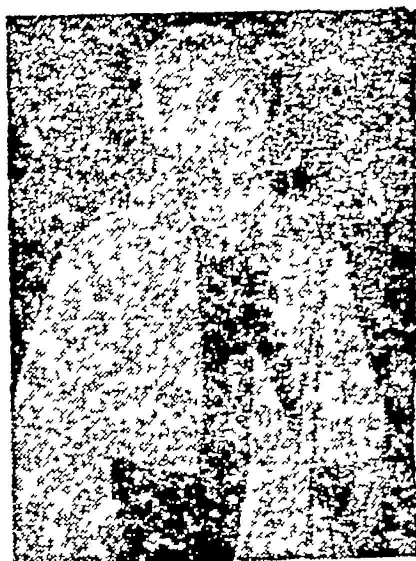
श्री चेतनदास मूंधड़ा

श्री चेतनदास मूंधडा का जन्म 16 दिसम्बर 1909 को बीकानेर के एक माहेश्वरी परिवार मे हुआ था। 1925 के हिन्दु–मुस्लिम दगो मे उनके पिता बीकानेर मे कत्ल कर दिए गए थे। श्री मूंधडा का लालन पालन उनके नाना ने किया था। 1931 मे श्री चेतनदास मूधडा ने एल० एल० बी० की परीक्षा उत्तीर्ण करके बीकानेर मे वकालत शुरु कर दी थी।

श्री मूंधडा 1939 मे खादी पहनने लगे थे। 1946 मे वे पहलीबार बीकानेर राज्य प्रजा परिषद के सक्रिय सदस्य बने और उत्तरदायी शासन की स्थापना के लिए काम करना शुरु किया। प्रजा परिषद की सदस्यता स्वीकार करने पर बीकानेर राज्य ने उन्हे कई तरह के प्रलोभन देकर प्रजा परिषद से हटाने का यत्न किया लेकिन उन्हे सफलता नही मिली। श्री मूंधडा राजपूताना रीजनल कौंशिल और प्रदेश काग्रेस कमेटी के भी सदस्य चुने गए थे।

जब बीकानेर मे प्रजा परिषद की स्वीकृति और अनुमति के बिना प्रजा परिषद के कुछ सदस्य अतरिम मत्री मडल मे चले गए तब श्री मूंधडा ने उनका खुलकर विरोध किया और अत मे प्रदेश काग्रेस के आदेश से वह मत्रीमण्डल भग किया गया। श्री मूंधडा ने 1951 मे काग्रेस से त्यागपत्र दे दिया था। आजकल श्री मूंधडा राजस्थान हाई कोर्ट मे वकालात करते है।

श्री जयदेव प्रसाद इन्दौरिया



श्री जयदेव प्रसाद इदौरिया का जन्म 14 जुलाई 1921 को रतनगढ मे हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम और रघुनाथ विद्यालय मे हुई। शिक्षा समाप्ति के बाद कुछ दिन तक बम्बई रहे और वहां सार्वजनिक क्षेत्र मे तथा सामाजिक क्षेत्र मे कार्य किया।

1941 मे बम्बई से बिकानेर आकर इन्होने रियासत के राजस्व विभाग की राजकीय सेवा मे प्रवेश किया लेकिन 1942 के भारत छोडो आन्दोलन शुरु के होते ही इन्होंने राजकीय सेवा से त्याग पत्र दे दिया। यही से इनका राजनैतिक जीवन शुरु हुआ है। श्री इन्दौरिया ने गावो मे शिक्षा प्रचार और सामूहिक कल्याण के सार्वजनिक कामो को हाथ मे लेना शुरु किया। राज्य की पुलिस ने इनकी प्रवृत्तियो को भी खतरनाक माना और उनके पीछे सी०आई०डी० का दस्ता लगा दिया गया।

बीकानेर मे प्रजा परिषद की स्थापना के बाद श्री इन्दौरिया ने रतनगढ मे प्रजा परिषद की शाखा स्थापित की और जिम्मेवार हुकुमत की स्थापना के लिए इन्होने जनमत को जागृत और प्रशिक्षित करना शुरु किया। इन्होने जागीरी क्षेत्रो मे जागीरी अत्याचारो और बैठ बेगार एव लाग बागो के विरुद्ध आवाज उठाई और किसानो को जागीरी अत्याचारो का मुकाबिला करने के लिए सगठित होने की प्रेरणा दी। अपनी इन उग्र राजनैतिक प्रवृत्तियो के कारण एक तरफ श्री इन्दौरिया पुलिस से घिरे रहते और दूसरी ओर जागीरदारो से। पुलिस ने इन पर एक २ कर 33 मुकदमे लगा दिए थे और किसी न किसी मुकदमे मे उन्हें समय-समय पर गिरफ्तार करती रहती थी।

बीकानेर राज्य प्रजा परिषद के माध्यम से इन्होंने रतनगढ तहसील के 100 से अधिक गावो मे पहुच कर जागीरदारो की नगी तलवारो की साया मे निर्भीकता के साथ सभाए की और जागीरी प्रथा को समाप्त करने के लिए तथा जागीरी जुल्मो के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए किसानो को तैयार किया। इसी प्रसग मे कई काड हुए और लोहा ग्राम मे एकत्रित दस हजार सशस्त्र सामतो के बीच निर्भीकता से अत्याचारो का प्रतिरोध किया।

रियासती एकीकरण के बाद श्री जयदेव प्रसाद इन्दौरिया चूरू जिला कांग्रेस के मत्री और अध्यक्ष रहे है। इस समय भी चूरू जिला कांग्रेस के महामत्री हैं। वे दो बार रतनगढ नगरपालिका के अध्यक्ष रह चुके हैं और लोक-तान्त्रिक समाजवाद की स्थापना के लिए प्राण प्रण से प्रयत्नशील हैं।

स्वर्गीय श्री नेमीचन्द आंचलिया

श्री नेमीचन्द आचलिया बीकानेर रियासत मे सरदार शहर के एक प्रतिष्ठित नागरिक थे। वे जाति से ओसवाल जैन थे, परन्तु उनका कार्य क्षेत्र व्यापक था। जनता के अभाव अभियोगो को लेकर उन्हे अनेको बार राज्य सत्ता और राज्याधिकारियो का कोप भाजन बनना पड़ा। 1939 तक वे अपने निस्वार्थ सेवा कार्यों से सरदार शहर की समग्र जनता का स्नेह और विश्वास प्राप्त कर चुके थे।

श्री आचलिया जनता के बीच पूर्ण निर्भीकता के साथ बीकानेर महाराजा की निरकुशता और शासनाधिकारियो के अत्याचारो की कटु आलोचना किया करते थे। उन्होने बीकानेर महाराजा की स्वेच्छाचारिता के विरुद्ध जन-मत को जागृत और सगठित करने का साहस भरा कार्य किया था। बीकानेर महाराजा गगासिह श्री आचलिया की इस निर्भीकता से अत्यन्त सशकित थे और उन्हें उचित सबक सिखाने का अवसर ढूढ रहे थे।

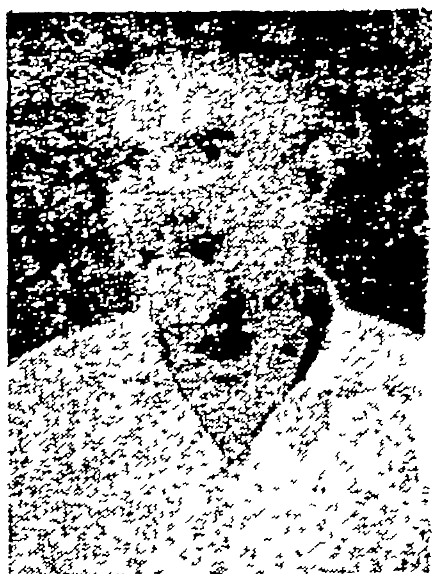
इसी बीच सन् 1942 की अगस्त क्रांति के समय अजमेर से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक राजस्थान मे बीकानेर शासन की अधेर-गर्दी को बेनकाब करने वाला एक तथ्य पूर्ण लेख प्रकाशित हुआ। बीकानेर महाराजा ने उस राजद्रोहात्मक लेख के लिए श्री नेमीचन्द आंचलिया को अपराधी ठहराया और राजद्रोह के अपराध मे उन्हें गिरफ्तार करके 7 वर्ष के कठोर कारावास की सजा दी। सारे सरदार शहर मे और बीकानेर में आतक पैदा करने के लिए श्री आचलिया के हाथो मे हथकडी लगाकर सरदार शहर और बीकानेर मे उनका प्रदर्शन किया गया।

श्री नेमीचन्द आचलिया को जेल मे खूनी, हत्यारे और डकैतो के साथ रखा गया और उनसे कठोर से कठोर शरीर श्रम करवाया गया। उन्होने राजनैतिक कैदियो जैसे व्यवहार की जेल के अधिकारियो से माग की। परन्तु उनकी माग पर कोई ध्यान नही दिया गया। उन पर जेल अधिकारियो की सख्तियें और अधिक बढ़ने लगी। उनके पैरो मे बेड़िया डाल दी गई और उन्हें चौबीसो घटे काल कोठरी मे बन्द रखा जाने लगा।

2 फरवरी 43 को बीकानेर के महाराजा गगासिह का निधन हो गया था और नए महाराजा शार्दूलसिह ने गद्दी पर बैठते ही राजनैतिक वातावरण को सुधारने की दृष्टि से राजनैतिक बदियों की रिहाई का आदेश दिया जिसके परिणाम स्वरूप सर्व श्री रघुवरदयाल गोयल, गगादास कौशिक और दाऊदयाल आचार्य तो जेल से रिहा कर दिए गए परन्तु श्री नेमीचन्द आचलिया को रिहा नही किया गया। श्री आचलिया ने जेल मे भूख हडताल शुरू कर दी।

अन्त में बीकानेर राज्य प्रजा परिषद के प्रयत्नो से श्री नेमीचन्द आंचलिया जेल से रिहा हो सके। जेल से मुक्त होने के बाद श्री आचलिया अधिक नही जी सके।

श्री राम नारायण शर्मा



जन्म—15 अक्टूबर 1926

पता—जस्सूसर गेट, बीकानेर

श्री राम नारायण शर्मा बीकानेर के तपस्वी नेता स्वर्गीय श्री मघाराम वैद्य के पुत्र हैं। 1936 मे श्री मघाराम जी को 6 वर्ष के लिए देश निकाला हुआ था तो 10 वर्ष का राम नारायण भी अपने पिता के साथ खानाबदोशी मे साथ था।

अपने निर्वासन के समय श्री मघाराम वैद्य कलकत्ते मे अखिल भारतीय यूथ लीग (फोरवर्ड ब्लाक) के मंत्री चुन लिए गए थे और दिन रात बंगाल की राष्ट्रीय प्रवृत्तियो मे रचे रमे रहते थे। वे ही संस्कार बालक राम नारायण को मिलते गए। कलकत्ते मे रह कर श्री राम नारायण ने ब्लेक हाल के आन्दोलन में भाग लिया था तथा ढाका-नारायण गंज के साम्प्रदायिक दंगो मे पीडित लोगो की सेवा में अपने पिता के साथ कार्य किया था।

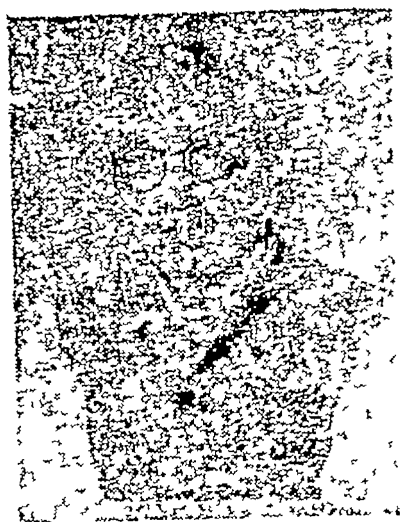
1942 की 9 दिसम्बर को श्री राम नारायण ने बीकानेर मे सबसे पहले राज्य के सभी प्रतिबन्धो को तोड कर तिरंगा झण्डा फहराया था और बीकानेर के मुख्य मार्गों पर इन्कलाब जिंदाबाद के नारो के साथ निकल पडा था। हजारो की भीड उनके साथ होगई। उत्साह मे झूमता हुआ यह जुलूस जब दाऊजी रोड पर मार्च कर रहा था उस समय पुलिस ने श्री राम नारायण को गिरफ्तार कर लिया। उन्हे सात दिन तक अमानुषिक यातनाए देकर छोड दिया गया लेकिन पुलिस तब से श्री राम नारायण के पीछे छाया की तरह लग गई।

सन् 44 मे 26 जनवरी का उत्सव मनाने के अपराध मे राज्य की पुलिस ने श्री राम नारायण को ने अचानक गिरफ्तार कर लिया और उन्हें सैंट्रल जेल मे नजरबंद कर दिया। बीकानेर के महाराजा गंगासिंह की मृत्यु के बाद ही वे रिहा किए जा सके। बीकानेर की पुलिस ने श्री राम नारायण शर्मा पर डकैती के झूठे मुकदमे लगाने की बहुत कोशिश की लेकिन बीकानेर मे एक भी आदमी उनके खिलाफ झूठी गवाही देने को तैयार नहीं हुआ।

4 जुलाई 1945 को जब श्री राम नारायण दुधवाखारा किसान आन्दोलन के सिलसिले मे किसानो के विशाल जुलूस का नेतृत्व कर रहे थे तब जस्सूसर गेट के पास गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हे 15 दिन तक पुलिस हिरासत मे अमानुषिक यातनाए दी गई और 21 जुलाई को जेल मे भेजा गया। 4 महीने मुकदमा चलने के बाद श्री राम नारायण को 9–9 महीने की सश्रम कारावास की सजा दी गई जिसमे 4 महीने उन्हे काल कोठरी मे निकालने पडे। जेल के दुर्व्यवहार के विरोध मे श्री राम नारायण को 35 दिन तक अनशन करना पडा तब कही जाकर उनके साथ जेल मे राजनैतिक कैदियो जैसा व्यवहार होने लगा।

श्री रामनारायण शर्मा ने जेल से मुक्त होने के बाद क्रांति–सदेश नाम के एक पाक्षिक पत्र का प्रकाशन और सपादन शुरु किया है। वे बीकानेर पालिका के एक अत्यत लोकप्रिय, प्रभावशाली और कर्मठ पार्षद है। उनकी निस्वार्थ सेवा भावना, और उद्देश्यो के प्रति उनकी निष्ठा के कारण बीकानेर की जनता का स्नेह और विश्वास उन्हे आज भी प्राप्त है।

श्री लक्ष्मणदास स्वामी

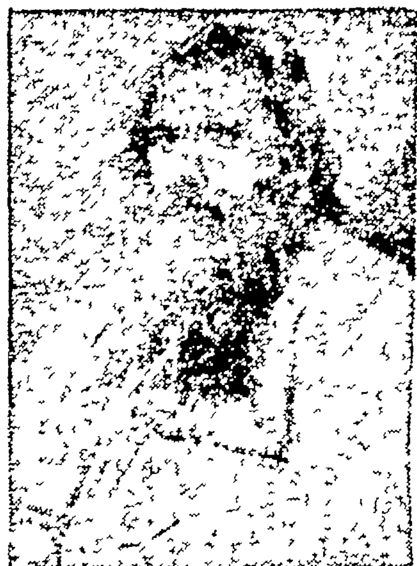


श्री लक्ष्मणदास स्वामी बीकानेर के उन अग्रज स्वतत्रता सेनानियो मे से है जिन्होने दमन, उत्पीडन एव अत्याचारो के मध्य ही जीना सीखा है। उन्होने अपने सक्रिय जीवन का प्रारम्भ सन् 1936 से किया। वे बीकानेर प्रजा मंडल के प्रथम मत्री मनोनीत किए गए थे। मत्री के रुप मे उन्होने अपने कर्त्तव्यो एव दायित्यो का अच्छी तरह से पालन किया। ऊदासर के किसानो की करुण पुकार एव फौनिया हत्याकांड के जघन्य अपराध के खिलाफ जब उन्होने आवाज उठाई तो उन्हे गिरफ्तार करके अनेक यातनाए दी गई। टायरो की मार और बिजली के करेंट से शरीर सुन्न करना उनमे सम्मिलित था। 16 मार्च 1936 को उन्हे बीकानेर राज्य से निर्वासित कर दिया गया। दिल्ली मे उन्होने राष्ट्रीय नेताओ को बीकानेर की आतरिक दशा से अवगत किया। फिर वे हिसार के ग्राम सेवा संघ मे कार्य करने लगे। कलकत्ते मे उन्होने वैद्य जी से मिलकर बीकानेर प्रजामडल की शाखा की स्थापना की। वे इस शाखा के भी मत्री निर्वाचित हुए। रेजगी काण्ड मे जब श्री मघाराम वैद्य को गिरफ्तार किया गया तो स्वामीजी कोतवाली तक साथ गए थे।

स्वर्गीय श्री मघाराम वैद्य

जन्म— (सन् 1891), सवत् 1948, फाल्गुन कृष्णा 2

निधन— 22 मार्च 1969



स्वर्गीय श्री मघाराम वैद्य बीकानेर मे राजनैतिक चेतना का प्रसार करने वाले अग्रगण्य व्यक्ति थे। उन्होने बीकानर के महाराजा श्री गगासिंह की निरकुशता को चुनौतिया देने के लिए 1936 मे बीकानेर राज्य प्रजामण्डल की स्थापना की थी। 1945 मे वे बीकानेर राज्य प्रजा परिषद के अध्यक्ष बनाए गए। उन्होने 1946 मे दूधवाखारा के प्रसिद्ध किसान आन्दोलन का नेतृत्व किया और राज्य मे जगह-जगह सम्मेलन, सभा, समारोह और प्रदर्शन करके बीकानेर की दबी हुई और त्रसित जनता मे एक आत्म-विश्वास जगाया। बीकानेर मे राजशाही के विरुद्ध सघर्प करने मे उनका पुत्र श्री राम नारायण और उनकी बहादुर बहन खेतूबाई ने भी बराबर उनका साथ दिया। उनके राजनैतिक जीवन का अधिक से अधिक समय सघर्ष, देश निकाला और जेलो मे ही बीता था।

श्री मघाराम वैद्य का जन्म सन् 1891 मे अर्थात् सवत् 1948 की फाल्गुन कृष्णा 2 को बीकानेर के एक सामान्य ब्राह्मण परिवार मे हुआ था। उनकी शिक्षा बनारस मे हुई। 1921 मे जब वे बनारस मे आयुर्वेद के अध्ययन मे लगे हुए थे तब उन्होंने महात्मा गाधी का पहली बार भाषण सुना और तभी आपने अपना समग्र जीवन देश सेवा मे लगाने का सकल्प कर लिया। 1921 में ही वे कांग्रेस के सदस्य बन गए और बीकानेर को ही अपना कार्यक्षेत्र बनाकर वे बीकानेर आ गए।

1932 मे जब बीकानेर षडयन्त्र केस मे राज्य के कई प्रमुख व्यक्तियो पर राजद्रोह के सगीन आरोप लगा कर मुकदमे चलाये जा रहे थे। उस समय वैद्य मघाराम ने सारे देश का ध्यान इस मुकदमे की ओर खीचा और देश मे इन देश भक्तो के लिए एक प्रबल लोकमत तैयार किया। 1936 की 4 अक्टूबर को श्री मघाराम वैद्य ने बीकानेर मे बीकानेर प्रजामण्डल की स्थापना की। सरकार प्रजामण्डल के अस्तित्व को सहने के लिए तैयार नही थी। अत उसी वर्ष श्री मघाराम वैद्य को 6 वर्ष के लिए देश निकाले की सजा दे दी गई। इस अवधि मे श्री मघाराम वैद्य कलकत्ते मे रहे और वहा बीकानेर प्रजामण्डल की स्थापना करके बीकानेर की जनता को उत्साहित और प्रेरित करते रहे। वे

उन दिनो कलकत्ता यूथ लीग के सेक्रेट्री चुने गए थे और कलकत्ते के नौजवानो पर उनका असाधारण प्रभाव था।

1942 मे अपने देश निकाले की अवधि पूरी करके श्री मघाराम वैद्य जब तक बीकानेर आए तब तक यहा बीकानर राज्य प्रजा परिषद की स्थापना हो चुकी थी। वे प्रजा परिषद मे सम्मिलित हो गए और उत्तरदायी शासन के लिए कार्य करने लग गए।

दिसम्बर 1942 मे उन्होने झडा सत्याग्रह प्रारभ किया। उनका पुत्र श्री रामनारायण तिरगा झडा लेकर और इन्कलाब जिन्दाबाद के नारे लगाता हुआ सारे शहर मे घूमा। हजारो लोगो के निर्भीक जलूस ने सारे शहर का वायु मण्डल बदल दिया।

1945 के दूधवाखारा किसान आन्दोलन के नेतृत्व को उन्होने सम्हाला और बीकानेर राज्य ने उन्हें जून 45 मे गिरफ्तार कर लिया। करीब एक वर्ष तक उन्हे जेल मे रहना पडा। जेल मे राज्य के दुर्व्यवहार के विरोध मे उन्होने 36 दिन तक भूख हडताल की थी। वे जुलाई 46 मे जेल से मुक्त हुए। 1946 मे वे प्रजा परिषद के अध्यक्ष बनाए गए और उन्होने सारे राज्य का दौरा करके युगो से दबी हुई बीकानेर की जनता मे चेतना,आत्म विश्वास और स्वाभिमान के सस्कारो को झकझोर कर जगा दिया।

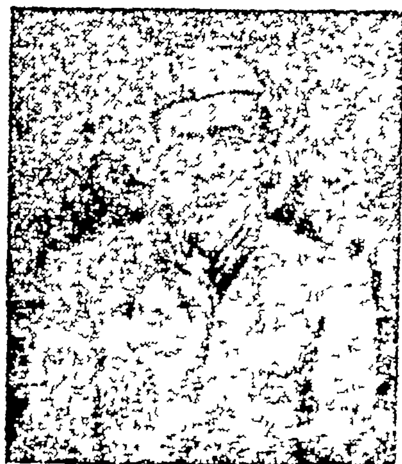
1944 मे बीकानेर से अनाज निकासी के प्रश्न को लेकर जो आन्दोलन छिडा उसमे भी मघाराम वैद्य गिरफ्तार कर लिए गए। वे इस प्रसग मे भी लम्बे समय तक जेल मे रहे।

1960 के बाद वैद्य मघाराम ने एक आश्रमवासी जैसा अपना जीवन बना लिया था और घर परिवार से दूर एक अलग मकान मे वे रहते थे। वही उनके पास राज्य के अभाव ग्रस्त लोगो की सदा भीड लगी रहती थी और दिन रात वे लोगो की समस्याओ के समाधान ढूढने मे लगे रहते थे। 22 मार्च 1969 को इस महान त्यागी और साहसी नेता का बीकानर मे निधन हो गया।

श्री मालचंद हिसारिया

जन्म— सन् 1915

पता— नोहर, जिला गगानगर



श्री मालचन्द हिसारिया का जन्म गगानगर जिले के नोहर कस्बे के एक अग्रवाल परिवार मे स० 1972 के भाद्रपद मास मे हुआ था। उनकी शिक्षा कलकत्त मे हुई। 1932 मे जब सारे देश मे नमक सत्याग्रह और विदेशी वस्त्रो के बहिष्कार का आन्दोलन चल रहा था तब श्री हिसारिया ने कलकत्ते के बडा बाजार मे विदेशी वस्त्रो के बहिस्कार आन्दोलन मे भाग लिया। अग्रेज सारजेंट ने इन्हे गिरफ्तार करके क्रूरता से खूब पिटाई की

और उन्हे छोड दिया। स्वस्थ होते ही श्री हिसारिया ने दूसरी बार इसी आन्दोलन मे दूने उत्साह से भाग लिया। दूसरी बार उन्हे गिरफ्तार करके 6 महीने की सजा दी गई।

1935 मे कलकत्ता काग्रेस मे श्री हिसारिया ने अत्यन्त उत्साह से भाग लिया। वे दिन रात देश के स्वातत्र्य समर से सम्बन्धित किसी न किसी प्रवृत्ति के साथ लगे ही रहते थे। परिवार के लोगो ने उन्हें राष्ट्रीय प्रवृत्तियो से दूर रखने की दृष्टि से सदा के लिए कलकत्ते से बीकानेर भेज दिया।

1938-39 मे जब बीकानेर राज्य अकाल से पूरी तरह ग्रसित था उस समय उन्होने खादी उत्पादन और गौ—रक्षा के काम हाथ मे लेकर अकाल पीडित लोगो को बहुत राहत पहुचाई।

1942 मे बीकानेर मे बीकानेर–प्रजा–परिषद की स्थापना के बाद वे प्रजा परिषद के कामो मे लग गए और श्री रघुवर दयाल गोयल के साथ कधे से कधा मिलाकर कार्य करने लगे। अगस्त 1942 मे जब काग्रेस महा समिति की बैठक मे भारत छोडो आन्दोलन मे करो या मरो का सदेश लेकर बीकानेर आए तब राज्य के गृह मन्त्री ने उन्हे बुलाकर बहुत डराया धमकाया और प्रजा परिषद से त्याग पत्र दे देने का आदेश दिया जिसे श्री हिसारिया ने मानने से इन्कार कर दिया।

पुलिस ने श्री हिसारिया को नाजायज चने का स्टाक रखने का झूठा मुकदमा बना कर गिरफ्तार कर लिया। 50 दिन तक भादरा के पुलिस थाने मे हिरासत के रखा। उन पर दबाव डाला गया कि वे माफी माँग लें और राजनैतिक प्रवृत्तियो मे भाग लेने से इकार कर दे। श्री हिसारिया ने पुलिस की इन सलाहो को ठुकरा दिया। हाई कोर्ट मे रिट करने पर वे बाईज्जत बरी कर दिए गए।

सितम्बर सन् 1946 मे गोगामण्डी के मेले मे बीकानेर राज्य प्रजा परिषद की सभा करने के अपराध मे श्री हिसारिया को पुन गिरफ्तार कर लिया गया और दिसम्बर 46 तक उन पर जेल मे मुकदमा चलाया गया।

श्री हिसारिया ने नौहर मे जन कल्याण की दृष्टि से बहुत ठोस कार्य किए हैं। उन्होने अपने प्रयत्न से शहर मे पानी के पाईप और सार्वजनिक नल लगाने की व्यवस्था की, गोशाला का भवन बनवाया तथा शहर मे पशु चिकित्सालय की स्थापना करवाई। बीकानेर की एक मात्र रचनात्मक सस्था खादी मदिर के वे शुरु से ट्रस्टी हैं और आज भी उसके सचालक मण्डल के सदस्य हैं।

नौहर की जनता का अटूट विश्वास और स्नेह श्री हिसारिया को प्राप्त है। पिछले कई दिनो से श्री हिसारिया अस्वस्थ हैं और नौहर मे अपने घर पर ही रहते हैं।

श्री दाऊदयाल आचार्य

जन्म—25 नवम्बर, 1919

वर्तमान पता—सुराणा मोहल्ला, बीकानेर

बीकानेर के प्रजा परिषद युग मे श्री दाऊदयाल आचार्य का भी एक विशिष्ठ स्थान रहा है। सस्थाओ के निर्माण और नागरिक जीवन के सामान्य अधिकारो के लिए, बिना आन्दोलन चलाए भी, जो दमन का निरतर शिकार होते रहे उनमे सर्व श्री रघुवर दयाल गोयल और गगादास कौशिक के साथ दाऊदयाल आचार्य तीसरे व्यक्ति हैं।

श्री दाऊदयाल आचार्य का जन्म 25 नवम्बर 1919 को बीकानेर के मध्य वित्तीय पुष्करणा ब्राह्मण परिवार मे हुआ था। श्री आचार्य के पिता सिकन्दराबाद में कार्य करते थे अत आपका बचपन सिकन्दराबाद–हैदराबाद (दक्षिण) मे ही बीता। परन्तु एल०एल० बी० की शिक्षा श्री दऊदयाल आचार्य ने बीकानेर मे ही प्राप्त की।

श्री दऊदयाल आचार्य सन् 35 मे बीकानेर आए थे। उन्होने अपनी शिक्षा का क्रम जारी रखा। एल०एल०बी० की डिग्री लेने के पहले श्री आचार्य बीकानेर के एडवोकेट श्री रघुवरदयाल गोयल के मु शी का वर्षो तक काम करते रहे। श्री रघुवरदयाल गोयल के निकट सपर्क से ही आपमे राष्ट्रीय भावनाए विकसित होने लगी और श्री आचार्य मे देश सेवा के सस्कार सक्रिय होते गए। श्री आचार्य ने 1942 मे वनस्थली विद्यापीठ मे पडित हीरालाल शास्त्री द्वारा आयोजित राजनैतिक कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिवर मे भाग लिया और वहा से आने बाद 22 जुलाई 42 को श्री रघुवरदयाल गोयल की अध्यक्षतामे बीकानेर राज्य प्रजा प्ररिषद की स्थापना हुई। श्री आचार्य प्रजा परिषद का कार्य करने लग गए।

29 जुलाई 42 को बीकानेर सरकार ने गोयलजी को निर्वासित कर दिया था। व जयपुर चले गए। गोयलजी के मु शी का कार्य करने वाले श्री दाऊदयाल किसी मामले मुकदमे मे गोयलजी से जयपुर मे सलाह करके बीकानेर लौट रहे थे कि उन्हें रास्ते मे ही पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया और अनिश्चित काल के लिए उन्हें बीकानेर सेफ्टी–एक्ट के अतर्गत नजरबद कर जेल भेज दिया। वे फरवरी 43 मे रिहा हो सके।

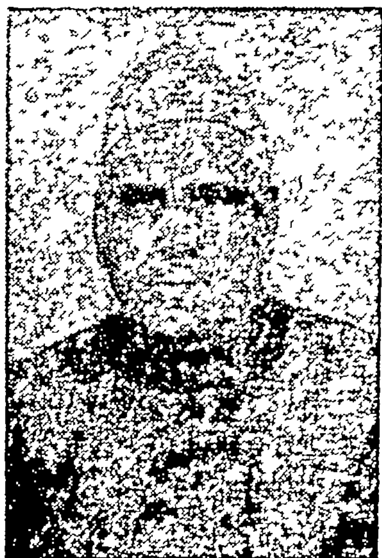
26 अगस्त 1944 को लालगढ महल मे जब बीकानेर प्रजा परिषद के अध्यक्ष और महाराजा के बीच चलने वाली वार्ता असफल हो गई तब उसी दिन सर्व श्री गोयल और गगादास कौशिक के साथ श्री दाऊदयाल आचार्य भी गिरफ्तार कर लिए गए और उन्हे अनूपगढ के किले मे अनिश्चित काल के लिए नजरबन्द कर दिया गया। पूरे 1 वर्ष के बाद वे नजरबन्दी से मुक्त हो सके थे।

श्री दाऊदयाल आचार्य ने एल०एल०बी० की परीक्षा पास करने के बाद बीकानेर मे राजस्व सबधी मामलो की स्वतत्र वकालात का कार्य शुरु कर दिया था। 1951 मे उन्होने काग्रेस मे त्याग पत्र दे दिया था। परन्तु कई मित्रो के आग्रह करने पर वे 53 मे युवा काग्रेस मे शामिल हो गए थे। वे प्रदेश काग्रेस के सदस्य भी निर्वाचित हुए लेकिन काग्रेस मे तेजी से बढने वाली अवसरवादिता के साथ वे अपना मेल नही बिठा सके और पुन काग्रेस से अलग हो गए।

श्री दाऊदयाल आचार्य एक मित-भाषी, गभीर और नियत्रित सवेगो वाले आदर्श-वादी व्यक्ति हैं। वे सदा अखबारी प्रचार और आत्म-विज्ञापन से दूर रहना चाहते है। अपना कर्त्तव्य समझकर देश के लिए उन्होंने जो कुछ किया उसको न तो वे जुबान पर लाना चाहते है और न उससे किसी तरह के प्रतिदान की वे आकाक्षा करते है। वे व्यवहार मे अति स्पष्टवादी, सकोचशील और विनम्र हैं और अपने व्यवसाय के साथ साथ लोक सेवा के लिए सदा तत्पर रहते हैं। परन्तु वर्तमान समय की स्वार्थपरक और स्व-केन्द्रित राजनीति से उनके सिद्धान्तों का किसी तरह से समन्वय नही हो पाता है। अत वे आज सक्रिय राजनीति से विराम लिए हुए से हैं।

——

श्री नत्थूराम योगी, गंगानगर



'जन्म— सवत् 1972 आषाढ शुक्ला 3
वर्तमान पता— श्री गोशाला,
श्री गंगानगर ।

श्री नत्थूराम योगी का जन्म हिसार के एक छोटे से गाव कोहली मे सवत् 1972 की आषाढ शुक्ला 3 को हुआ था। इनकी शिक्षा अपने गाव और हिसार मे हुई थी। देश मे 1930 तक जो राष्ट्रीय चेतना फैल चुकी थी उससे श्री नत्थूराम योगी भी पूर्णत प्रभावित हो चुके थे। परिणाम स्वरूप वे अपनी स्कूली शिक्षा को तिलान्जली देकर नमक सत्याग्रह मे सम्मिलित हो गए। महात्मा गाधी के डाडी कूच के वाद गिरफ्तार कर लिए गए और गाधी इरविन पैक्ट के साथ 10 महीने वाद रिहा हुए। 1932 मे श्री नत्थूराम दूसरी बार फिर सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार किए गए और अगस्त 32 मे 6 महिने वाद जेल से मुक्त हो सके।

जेल से मुक्त होने के वाद उनमे राष्ट्र सेवा के सस्कार वहुत अधिक प्रवल हो गए। उन्होने अपने क्षेत्र मे राष्ट्रीयता के प्रचार प्रसार के लिए निरन्तर एक के वाद एक अनेको प्रवृतियो को शुरू किया था।

बीकानेर की राजनीति मे श्री नत्थुराम योगी ने प्रत्यक्ष रूप से 1943 के प्रारम्भ मे भाग लेना शुरु किया। वे बीकानेर प्रजा परिषद मे शामिल हुए और गगानगर जिले मे बीकानेर राज्य प्रजा परिषद को सगठित करने मे अपने आपको लगा दिया। जव रार्यसिह नगर मे बीकानेर प्रजापरिषद का अधिवेशन हो रहा था और बीरबलसिह की शहादत हो चुकी थी उसी प्रसग मे बीकानेर सरकार ने श्री नत्थूराम योगी पर रोजद्रोह के अपराध मे तीन मुकदमे लगाकर उन्हे 23 अगस्त 46 को गिरफ्तार कर लिया और उन्हें 4½ वर्ष की सश्रम सजा देकर जेल भेज दिया। बीकानेर मे लोकप्रिय मन्त्री मण्डल बनने के वाद आपको जेल से मुक्त किया गया।

श्री नत्थूराम योगी प्रजा परिषद युग से आज के कांग्रेस युग तक एक निस्वार्थ और निष्ठावान काग्रेस मैन की तरह अपनी सेवाए अपने क्षेत्र को दे रहे हैं। वे गगानगर मे नगर परिषद के वर्षो तक अध्यक्ष रहे हैं और काग्रेस के कई महत्वपूर्ण पदो पर कार्य किया है। वे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी और प्रदेस काग्रेस कमेटी के सदस्य हैं और प्रदेश मे गगानगर जिले का प्रतिनिधित्व करते हैं।

श्री नत्थूराम योगी गगानगर के सम्पन्न क्षेत्र मे नैतिक मूल्यो की स्थापना के लिए लोगो को प्रोत्साहित और प्रशिक्षित करते आ रहे हैं।

स्वर्गीय श्री भिक्षालाल बोहरा

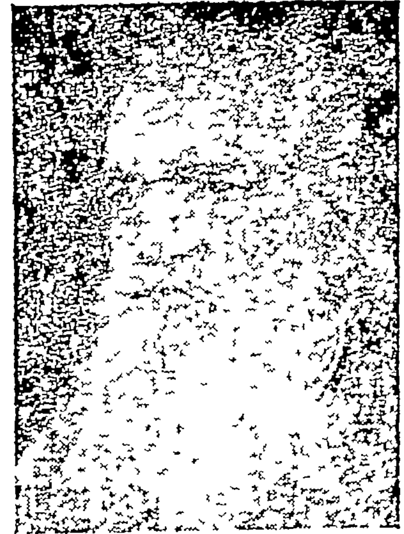
बीकानेर निवासी श्री भिक्षालाल बोहरा ने वर्षों तक मध्य प्रदेश के अमरावती नगर मे रह कर वही की राष्ट्रीय व्यायामशाला मे नौजवानो को लाठी चलाने का प्रशिक्षण दिया था। बीकानेर मे आकर नवीन जीवन शाला नामक सस्था की स्थापना करके उन्होने बीकानेर के नौजवानो को शारीरिक शिक्षा के माध्यम से सगठित करने और उनमे राष्ट्रीयता के नए सस्कार जगाने का प्रयत्न किया था। श्री भिक्षालाल बोहरा स्वय शुद्ध खादी का उपयोग करते और नियमित चर्खा चलाते थे।

बीकानेर षडयन्त्र केस के अभियुक्तो की रिहाई के बाद 1936 मे जो बीकानेर राज्य प्रजा मण्डल गठित किया गया उसमे श्री भिक्षालाल बोहरा अपनी पूरी शक्ति के साथ सम्मिलित हो गए थे। आगे जाकर वे प्रजा मण्डल के अध्यक्ष भी बनाए गए। प्रजामण्डल की राज्य विरोधी प्रवृत्तियो के कारण पुलिस भिक्षालाल बोहरा को कदम कदम पर अपमानित लाछित और उत्पीडित करने मे कोई कसर नही रखती थी। श्री भिक्षालाल बोहरा ने बढते हुए प्रभाव को देखकर उन्हें राज्य से निर्वासित कर दिया गया जिससे प्रजामण्डल की बढती हुई क्रियाशीलता एक दम निस्क्रय हो गई।

22 जुलाई 1942 को जब बीकानेर मे [बीकानेर–प्रजा–परिषद की स्थापना की गई उस समय श्री भिक्षालाल बोहरा भी प्रजा परिषद के सस्थापको मे से एक थे। बीकानेर राज्य प्रजा परिषद के अध्यक्ष श्री रघुवर दयाल गोयल और गगादास कौशिक तथा दाऊ दयाल आचार्य जब जेल मे थे तब 26 जनवरी 43 को लक्ष्मीनाथ के बाग मे झडारोहण के बाद तिरगे झडे के साथ जो जुलूस निकाला गया उसमे कई अन्य कार्यकर्ताओ के साथ श्री भिक्षालाल बोहरा भी गिरफ्तार कर लिए गए। मार्च 43 को श्री बोहरा जेल से मुक्त किए गए।

देश की स्वाधीनता तक श्री भिक्षालाल बोहरा बीकानेर राज्य प्रजा परिषद के झण्डे के नीचे राजतन्त्र और सामन्तवाद से निरन्तर सघर्ष करते रहे। राज्य की पुलिस ने उन्हें जिस अमानुषिक तरीके से परेशान किया था उसके स्मरण मात्र से ही रोमाच हो आता है। बीकानेर की जनता मे राजशाही के विरुद्ध खडे होने का मनोबल जगाने मे श्री भिक्षालाल बोहरा का योगदान एतिहासिक महत्व रखता है।

श्री हनुमान सिंह दूधवाखारा



दूधवाखारा के किसान नेता चोधरी हनुमान सिंह का जीवन वृत कुर्बानियो और कष्ट सहिष्णुताओ की एक जीवत कथा है। जागीरी अत्याचारो का उत्पीडन और राजशाही की निरकुशता उनके जीवन के पृष्ठो मे उभर उभर कर सामने आते है। सामती कुचक्रो ने श्री हनुमान सिंह को ऐसा घेर लिया था कि उन्हें अपनी सम्पन्न और आबाद गृहस्थी को अपनी आखो के आगे विपन्न और वीरान होते हुए देखना पडा और अन्त मे जगल मे निराश्रित होकर वृक्षो के तले जीवन बसर करने की स्थिति मे पहुचना पडा। बीकानेर के महाराजा का बडे से बडा प्रलोभन श्री हनुमान सिंह को अपने निश्चय से नही डिगा सका। उनकी साहसिकता, निर्भीकता और स्पष्टवादित ही निरन्तर उनके दुर्भाग्य का कारण बनती गई परन्तु आन के इस धनी ने हर कदम पर बरबादियो को न्योतकर भी अपनी टेक को नही छोडा।

श्री हनुमान सिंह का जन्म सन 1900 मे भूतपूर्व बीकानेर रियासत के चूरु जिले के दूधवाखारा ग्राम मे हुआ था। उन दिनो बीकानेर राज्य मे जाटो के पढने की राजकीय अनुमति नही थी अत श्री हनुमान सिंह को पजाब मे बालमसुन्द और लाहोर मे जाकर शिक्षा प्राप्त करनी पडी थी। शिक्षा समाप्त करने के बाद श्री हनुमान सिंह बीकानेर के पुलिस थानेदार के पद पर पहुच गए। पुलिस की नोकरी मे उन्हें लम्बे समय तक बीकानेर के कूटनीतिज्ञ महाराजा गगासिंह की सेवा मे रहना पडा था।

राजकीय सेवा मे रहते हुए भी श्री हनुमान सिंह के मन मे देश सेवा करने वाले देश भक्तो के प्रति श्रद्धा और आदर की भावना रहती थी। 1932 मे बीकानेर कासप्रेसी केस के समय श्री हनुमान सिंह ने सर्व श्री सत्य नारायण सर्राफ, स्वामी गोपालदास और पडित चन्दनमल बहड जैसे राजद्रोह के अपराधियो के प्रति पूरी श्रद्धा दिखाते हुए हर तरह से उनकी अधिक से अधिक सेवा करने और उनकी सुविधाओ के लिए अपना उपयोग देने मे कभी कमी नही की थी। यह तथ्य भी बीकानेर महाराजा के कानो तक पहुचे थे और महाराजा को हनुमान सिंह मे भी देश भक्ति के सक्रामक किटाणु फैलते हुए दिखाई दिए थे, जिसके लिये उन्हे कई चेतावनिये समय समय पर मिलती रहती थी।

1942 मे श्री हनुमान सिंह ने अपनी लम्बी राजकीय सेवा से अवकाश ले लिया। बीकानेर मे उन दिनो श्री रघुवरदयाल गोयल की अध्यक्षतामे बीकानेर राज्य प्रजा परिषद की

स्थापना हो चुकी थी। श्री हनुमान सिंह प्रजा परिषद मे शामिल हो गए। प्रजा परिषद उन दिनो कस्तूरबा फण्ड इकट्ठा करने मे लगी हुई थी। हनुमान सिंह ने भी गाव गाव मे प्रजा परिषद का सदेश पहुचाने, प्रजा परिषद के सदस्य बनाने और कस्तूरबा फण्ड इकट्ठा करने का कार्यक्रम हाथ मे लिया। दूधवाखारा मे भी यह कार्यक्रम शुरु होने ही वाला था।

दूधवाखारा के जागीरदार सूरजपाल सिंह को उन दिनो मेजर का रैंक दिया हुआ था। वे राज्य के जनरल सेक्रेटरी थे। उन्होने अपने गाव मे प्रजा परिषद की स्थापना और कस्तूरबा फड के सग्रह को स्वय अपना अपमान माना और वे रियासत के आई० जी०, डि० आई० जी०, नाजिम, तहसीलदार और पाच सौ पुलिस के सिपाहियो को लेकर गाव मे आए और लगान की झूठी बकाया की वसूली के नाम पर आदेश दिया कि एक एक आदमी को उनके घरो से और खेतो से बेदखल कर दिया जाए और वह सपत्ति जो दूसरा व्यक्ति लेना चाहे उसे देदी जाए। देखते ही देखते गाव वासियो की सपत्ति बेदखल होने लगी, सभी लोगो के रहने के घर छीन लिए गए और खतो पर अधिकार कर लिया गया। खेतो पर बने हुए दस हजार की लागत के पानी के कुड अपने परिवार के लोगो को दे दिए गए। देखते ही देखते सपन्न परिवार बेघरबार होगए और बहुत बडी जमीन का काश्तकार भूमिहीन बना डाला गया। जागीरदार के आदेश से दूधवाखारा के मह्लो वाले खानाबदोश होगए और भूमिधारी भूमिहीन बना दिए गए। जागीरदार ने हर किसान मे बकाया लगान की लम्बी लम्बी झूठी रकमे निकाल दी और बकाया की वसूली के नाम पर नाटक खेला गया। बकाया के नाम पर रास्ते चलते हुए किसान को सिपाही पकड कर लूटने लग गए।

इस लूटपाट और इन अन्याय पूर्ण बेदखलियो के समाचार पत्रो मे छपते ही राज्य शासन आग-बबूला हो उठा और गाव मे शाति रक्षा के नाम पर पचास सिपाहियो का एक पुलिस जत्था श्री हनुमानसिंह के घर के बाहर स्थापित कर दिया गया। ऐसे जत्थो को ताजीरी चौकी कहा जाता था। सिपाही तो सरकार भेजती लेकिन जिसमे गाव मे शाति भग होने का खतरा होता उसे उस चौकी का खर्च देना पडता। इन पचास सिपाहियो का सारा खर्च श्री हनुमान सिंह पर डाला गया। ये सिपाही किसानो के घर मे घुस कर छीना झपटी करते और जवान लडकियो का तथा औरतो का घर से बाहर निकलना दुश्वार हो गया था। घर से बाहर निकलते ही इज्जत जाते देर नही लगती।

श्री हनुमान सिंह ने निश्चय किया कि अन्याय को सहना भी नैतिक अपराध है। अत उन्होंने केसरिया करने की तरह पीले कपडे पहन लिए और प्रतिज्ञा की कि जागीरदारो के इन अत्याचारो को जब तक समाप्त नही करुगा तब तक गृहस्थ आश्रम मे नही लौटू गा। 'करुगा या मरु गा।' इसी सकल्प के साथ श्री हनुमान सिंह न्याय की खोज मे अपने पीछे पीडित और त्रसित किसान परिवारो का काफिला लेकर निकल पडा।

श्री हनुमान सिंह बीकानेर के राजमहल मे पहुचे, महारानी ने उन्हे होम मिनिस्टर के पास भेज दिया। होम मिनिस्टर ने कहा कि तुमने महलो मे शोर क्यो मचाया ? उन्होंने न्याय की पुकार करने वालो को गाली गलोज किया और डराया धमकाया। होम मिनिस्टर

के आदेश से उसी समय उन पचासो किसान स्त्री पुरुषो को गिरफ्तार करके पुलिस लाइन पहुचा दिया गया। रात को 2 बजे पुलिस के सिपाही श्री हनुमान सिंह को होम मिनिस्टर के पास ले गए। उन्होंने कहा कि तू माफी माग ले और अपने घर चला जा नही तो हम तेरा नामोनिशान मिटा देंगे। तेरी नई दुलहन जिसे तू हाल ही मे शादी करके लाया है उसे सिपाही उठा ले जायेंगे। श्री हनुमान सिंह ने माफी मागने मे इन्कार कर दिया। उन्हें रात भर कोठरियो मे रख कर छोड दिया।

श्री हनुमान सिंह बीकानेर महाराजा के पास न्याय पाने की आशा मे आबू पर्वत पर अपना काफिला लेकर गए। लेकिन वहा भी महाराजा के हाथो मे बैंतें खाकर उन्हें उल्टे मु ह लौटना पडा। निराश होकर हनुमान सिंह का यह काफिला दूधवाखारा लौट आया। उनके दूधवाखारा पहुचते ही दुसरे दिन हनुमान सिंह के पास पुलिस का बुलावा पहु चा कि तुम्हे महाराजा ने बुलाया है। हनुमान सिंह बीकानेर के लिए रवाना हुए। बीकानेर पहु चने पर उन्हे बताया गया कि वे गिरफ्तार कर लिए गए हैं। हनुमानसिंह ने जेल मे कुछ भी खाने पीने से इकार कर दिया। उन पर राजद्रोह का मुकदमा चला। 50 दिन से वे लगातार अनशन पर थे। उन्हे 5 वर्ष की सजा सुनादी गई। परिवार के सभी लोग जेल मे डाल दिए गए। अनशन के 50 वे दिन हनुमानसिंह को महाराजा ने स्ट्रेचर पर महल मे बुलाया और कहा कि तुम नेहरूजी और गाधीजी को तार करदो कि राजा अच्छा और दयालु है—तो तुम्हे अभी छोड देता हू। हनुमान सिंह ने ऐसा करने से इकार कर दिया। अत मे महाराजा को लगा कि यदि यह जेल मे मर जायगा तो नया तूफान खडा होगा, अत उसे जेल से मुक्त करके मेडीकल आफिसर को इसकी प्राण रक्षा के लिए सौंप दिया गया।

महाराजा बीकानेर ने हनुमानसिंह से कहा था कि तुम्हे गगानगर मे 100 नहरी मुरब्बे देता हू, तू गगानगर मे जाकर बस जा पर हनुमान सिंह ने दूधवाखारा मे ही स्वाभिमान के साथ रहने की इच्छा प्रकट की और महाराजा द्वारा दी जाने वाली 2½ करोड की उस सम्पत्ति को ठुकरा दिया। महाराजा बीकानेर यही बात एक बार फिर हनुमानसिंह को समझाने के लिए श्री हरिभाऊ उपाध्याय को साथ लेकर दूधवाखारा गए परन्तु उन्होने महाराजा की यह भेंट स्वीकार नही की।

इन्ही दिनो उदयपुर मे देशी राज्य प्रजा परिषद का अधिवेशन पडित नेहरू की अध्यक्षता मे हो रहा था। हनुमान सिंह अपने पूरे किसान परिवारो के काफिले के साथ उदयपुर पहु चा। नेहरुजी हनुमान सिंह से मिलने उसके कमरे मे गए, उसे छाती से लगाया और कहा कि महाराजा के 100 मुरब्बे जमीन मत लेना नही तो आने वाली पीढियें बुजदिल कहेंगी।

दूधवाखारा लौटने पर महाराजा ने हनुमानसिंह को फिर बुलाया। हनुमान सिंह ने महाराजा को तार द्वारा सूचित कर दिया था कि उसे आप द्वारा गगानगर मे दिए जाने वाले 100 मूरब्बे जमीन लेना स्वीकार नही है।

जून 46 की बात है। महाराजा हनुमान सिह के उत्तर से बौखला गए और उन्होने सेना के 500 हथियार वन्द जवान और सेनाधिकारियो को दूधवाखारा भेजा। उन्होने घर मे सोते हुए हनुमान सिह को गिरफ्तार कर लिया। मकानो की छतो पर मशीनगनें लगादी गई। घर पर फौजी पहरा लगा था। स्त्री बच्चो को घर से निकाल दिया गया। चल अचल सम्पत्ति जब्त करके नीलाम कर दी गई। तमाम दूधारु पशु भूख से मर गए। सैकडो मण वाजरा, मोठ, जवार आदि अनाज सरकार ने नीलाम करके पैसे वसूल कर लिए। उनकी 90 वर्षीय वृद्धा माता, 4 भाइयो और 4 भाभियो को दो-दो वर्ष की सख्त सजा दे दी गई। उनकी दोनो पत्नियो को देश निकाला देकर बीकानेर राज्य से बाहर निकाल दिया गया।

श्री हनुमान सिह को गिरफ्तार करके अनूपगढ किले मे पहु चा दिया गया। उनके घूमने के लिए प्रार्थना करने पर रात को 2 से 3 बजे तक किले मे घूमने की अनुमती दी गई। श्री हनुमानसिह ने जेल मे अन्न ग्रहण नही किया। थोडा सा दूध उन्हे एक समय मिलता था। उनके कमरे मे सिपाही साप डाल जाते थे। अत मे श्री हनुमान सिह ने अनूपगढ किले मे दसवे महीने मे 65 दिन की भूख हडताल की। 7 दिन तक पानी तक ग्रहण नही किया। 10 घटे वेहोश रहे। ऐसी स्थिति मे उन्हे बीकानेर जेल मे लाकर मुक्त किया गया।

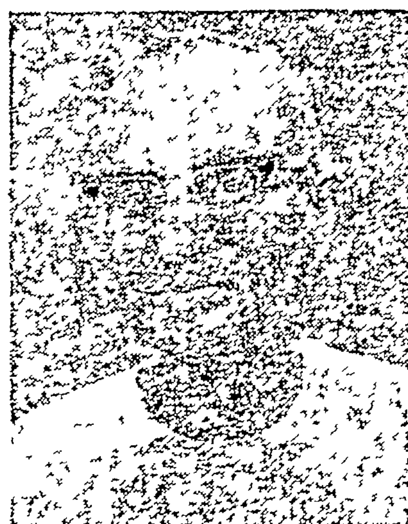
1947 मे जब दूधवाखारा का किसान आन्दोलन पूरे वेग पर था और जब आठ हजार किसानो को गिरफ्तार करके, तथा उन्हे मोटरो मे भर कर पजाब के जगलो मे छोड दिया गया था उस वक्त जब नरवाली गाँव मे एक रात हनुमान सिह विश्राम कर रहे थे तब 500 फौजी सैनिको ने उन्हे फिर गिरफ्तार कर लिया और उन्हे रामगढ जेल मे डाल दिया। उन्हे 1 वर्ष की सख्त सजा दी गई और उन्हे काल कोठरी मे रखा गया जहा उन्होने फिर 65 दिन की भूख हडताल की। 15 अगस्त 1947 की आधी रात को उन्हे तथा उनकी पत्नियो को जेल से रिहा कर दिया गया।

श्री हनुमान सिह आज भी वेघरवार है। किसी दिन का यह सपन्न किसान आज भूमिहीन है। इनके 14 बच्चे है जो पढते हैं और सब वेरोजगार हैं।

दूधवाखारा का किसान आन्दोलन राजस्थान मे जागीरो की समाप्ति के लिए किया गया आखिरी आन्दोलन था। इसमे हजारो किसान गिरफ्तार किए गए, सैकडो घायल हुए, बीसीयो मरणासन्न स्थिति मे पहुच और उन्हे मरणासन्न अवस्था मे भी जेल मे भेजा गया। किसान महिलाओ ने जो साहस इस आन्दोलन मे दिखाया वह अपना ऐतिहासिक महत्व रखता है। आज दूधवाखारा लोक जागरण की दृष्टि से किसानो का तीर्थ माना जाता है।

———

श्री हंसराज आर्य, भादरा



जन्म— सम्वत् 1967, भाद्रपद कृष्ण 8
सन् 1912

वर्तमान पता— आर्य भवन, भादरा
जिला गगानगर।

यह सही है कि श्री हसराज आर्य स्वतन्त्रता सग्राम मे जेल नही नही गये परन्तु जागीरदारो के हाथो से उन्हें जिस क्रूरता और अमानुषिकता के साथ शारीरिक यातनाए दी गई है वे किसी भी जेल जीवन से अधिक कष्ट कर और रोमाचक हैं। श्री हसराज आर्य ने सन् 1944 से 1951 तक वीकानेर रियासतके जागीरदारो के अन्यायो का वहुत ही वहादुरी से मुकावला किया था और सैंतीस हजार मील की पद यात्रा करके उन्होने वीकानेर राज्य के 2714 गावो मे और एक-एक घर मे आजादी की लडाई का सन्देश जन-जन तक पहुचाया था।

श्री हसराज आर्य का जन्म सवत् 1967 की भाद्रपद कृष्णा 8 (सन् 1912) को भादरा तहसील के घोटडा छोटा नामक गाव मे चौधरी श्री मोतीराम के घर हुआ था। उनकी शिक्षा ग्राम कलाना और फिर सगरिया मे हुई। शिक्षा समाप्त करके श्री हसराज भू-प्रवन्ध विभाग मे 1929 मे पटवारी हो गये और 1943 तक पूरे चौदह वर्ष उन्होने पटवारी का कार्य किया। इन चौदह वर्षों मे श्री हसराज आर्य ने वहुत ही निकटता से और खुली आखो मे वीकानेर महाराजा के और जागीरदारो के अत्याचारो को देखा था। उन्होने किसानो की दयनीय स्थिति को भी हृदयगम किया था और शासन एव जागीरदारो के शोषण को भी वारीकी मे समझा था और इतना सव देखकर उन्होने सकल्प किया कि चाहे प्राण रहे या न रहे—इन अत्याचारो का मुकावला करना चाहिए और किसान जनता को सगठित करके अत्याचारो और निरकुशता के मुकावले मे साहस के साथ खडे होने को तैयार करना चाहिये।

सन् 43 के अत मे श्री हसराज आर्य ने अपनी नौकरी छोडदी और अपने सैंकडो साथियो के साथ वीकानेर प्रजा परिषद मे शामिल होगए। उन्होने वीकानेर राज्य के 2714 गावो का एक से अधिक वार घूम-घूम कर दौरा किया और लोगो को अन्याय का प्रतिकार करने के लिये प्रेरित किया। जागीरी गावो मे वीसियो वार, इन पर लाठियें वरसाई गई, जूते मारे गए और पत्थरो से इनके सिर फोड दिए गये परन्तु श्री हसराज आर्य का काफिला लोक-जागरण के मिशन पर विना रुके वढता ही चला गया।

31 ओक्टूवर 46 को वीकानेर राज्य प्रजा परिषद के प्रतिनिधियो की वैठक हो रही थी कि उनके समक्ष रतनगढ़ तहसील के कागड गाव के 38 किसानो ने आकर वताया कि

गाव के जागीरदार द्वारा लगान वढाने का विरोध करने पर उसने 3-4 हजार राजपूतो ग्रौर कैयमखानियो को इकट्ठा करके हम पर हमला करवा दिया है, हमारे घर लूट लिए हैं, घी दूध ऊटो को पिला दिया है । लोगो को पकड कर रात भर वैंतो मे पीटा है, औरतो और मर्दों की मुश्के वाध कर गढ मे पटक रखा है, स्त्रियो के साथ वलात्कार किए गए हैं ।

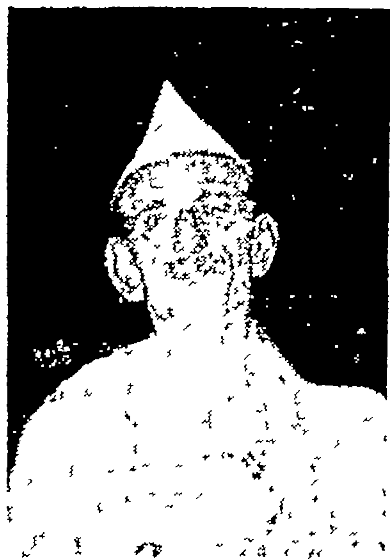
प्रजा परिषद की वैठक मे यह तय किया गया कि सात व्यक्ति कागड की स्थिति की जाच करने जाए । श्री हसराज ग्रार्य के नेतृत्व मे सात व्यक्तियो का दल रतनगढ होता हुआ कागड पहुचा, गाव वीरान पडा था, घर ऊजड हुये थे । जो लोग मिले उनसे जाच की, वयान लिए और इस दर्दनाक काण्ड की दिल दहला देने वाली रिपोर्ट तैयार की । श्री हसराज ग्रार्य के नेतृत्व मे यह दल जाच करके रतनगढ की ओर रवाना हो गया था कि जागीरदार के किसी प्रमुख व्यक्तिने उन्हें देखा और जागीरदार को खवर की कि काग्रेस वाले जाच करने आए थे और जाच करके जा रहे है । जागीरदार ने उसी समय 50 घोडो और 50 ऊटो की फौज उन्हे घेर लाने के लिए भेज दी । देखते ही देखते सातो व्यक्तियो को जागीरी सवारो ने घेर लिया और उन्हे पकड कर गढ मे ले आए । गढ मे जागीरदार ने उनके नाम गात्र पूछे,तलाशाली । कमरे मे वन्दकर दिया ग्रौर फिर एक-एक आदमी को ग्रलग कमरे मे वुला कर उसकी चोटी उखेडी, कपडे फाडे, जनेऊ तोडी, धोती फैंक वाई, उल्टा लिटवा कर दस-दस आदमी एक-एक को चारो ग्रौर से दवा कर वैठ गए और उसकी गुदा मे पिसी हुई लाल मिर्चों से भरी हुई लाठिया ठू सी गई । यह क्रम श्रीहसराज ग्रार्य के साथ हुआ और फिर सवके साथ हुआ । यह सजा उन्हे दिनमे 5 वार दी गई फिर उन्हें नगा करके हजार राजपूतो के घेरे मे गाव मे घुमाया गया और लोगो मे कहा गया कि ये लोग आजादी लेने ग्राये हैं ! रास्ते मे कही औरते मिल जाती । तो उन्हे रोक कर इन नगो की ग्रोर इशारा करके कहते कि देखो राडो ! ये कहते है कि आजादी मिलेगी । इनको इस प्रकार ग्राजादी मिल रही है । जो स्त्री उनकी ग्रोर नही देखती तो उसको भी वही पिटाई शुरू हो जाती । इस तरह से ग्रपमानित करके तथा उनके सारे कपडे और सामान तथा रिपोर्ट छीन कर उन्हे नगा ही गाव से विदा कर दिया ।

श्री हसराज आर्य ग्रौर उनके 4 साथियो को श्री कुम्भाराम ग्रार्य सरदार पटेल के पास लेकर गये ग्रौर उन्हे सव स्थिति वताई । सरदार पटेल ने कहा कि अगर तुम्हे आजादी चाहिये तो इससे ग्रौर अधिक कष्ट उठाने को तैयार रहना चाहिये । यह अन्याय तो साधारण सा है, तुमको तो फासी, शूली और काले पानी के लिये तैयार रहना चाहिए ।

4 महीने की ग्रनवरत चिकित्सा और सुश्रुषा के वाद श्री हसराज चलने फिरने की स्थिति मे ग्राये । उन्होंने 1946 मे राजगढ के आन्दोलन मे भी पूरा हिस्सा लिया । राजगढ़ मे उनके कई साथी गिरफ्तार हुये ।

श्री हसराज ग्रार्य ने जागीरी ग्रत्याचारो के विरोध का मिशन उस समय तक पूरे जोर शोर से बीकानेर राज्य मे चालू रक्खा जव तक कि कानून से जागीरदारी प्रथा समाप्त नही हो गई । श्री ग्रार्य वर्षों तक राजस्थान विधान सभा के सदस्य रह चुके है । वे गगानगर जिला काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष ग्रौर मन्त्री भी रहे हैं और आज भी अपनी समस्त शक्ति लोकतान्त्रिक समाजवाद की स्थापना मे लगा रहे हैं ।

स्वर्गीय श्री .अखाराम



स्वर्गीय श्री अखाराम का जन्म डूगरगढ निवासी शाकद्वीपीय ब्राह्मण पडित खेताराम के यहा सवत् 1961 मे सन् 1904 मे हुआ था। आपकी शिक्षा डूगरगढ मे ही हुई। बीकानेर राज्य प्रजा परिषद की स्थापना होने पर उन्होने डूगरगढ मे प्रजा परिषद की शाखा स्थापित की और लोगो को लोकतन्त्री शासन की स्थापना की दिशा मे प्रेरित करने लगे। प्रजा परिषद की प्रवृत्तियो शुरु करते ही पुलिस उनके पीछे पड जाती और उन्हें पुलिस द्वारा दी हुई कई तरह की शारीरिक यातनाए सहनी पडती। उन्हें पुलिस ने अनेको बार गिरफ्तार किया और 2-2, 3-3 दिन तक हिरासत मे रख कर छोड दिया 1950 मे खाद्यान्न के अभाव के समय आपने ग्रामीण जनता को सस्ता और पूरा अनाज दिलवाने के लिए बहुत साहस से और सूझ बूझ मे कार्य किया। श्री अखाराम डूगरगढ नगरपालिका के निरतर 12 वर्ष तक निर्वाचित सदस्य रहे। आपने श्री रघुवरदयाल गोयल की उपस्थिति मे बीकानेर आर्य समाज मे सुजानगढ की विधवा अध्यापिका श्रीमती मोहनी देवी के साथ अतर्जातीय विवाह किया था। 21 दिसम्बर 1967 को आपका देहावसान हो गया।

श्री काशीराम स्वामी

श्री काशीराम स्वामी प्रजा परिषद के सक्रिय कार्यकर्त्ता एव कुछ समय तक कार्यालय मत्री रहे थे। वे प्रधान रूप से फील्ड वर्कर थे। अत राज-बन्दियो से जेलो मे सपर्क साधकर उनके समाचार देश के नेताओ एव समाचार पत्रो तक पहुचाने का कार्य वे अत्यन्त सफलता पूर्वक किया करते थे। उन्हें इस प्रसग मे छद्म नाम से कार्य करना पडता था। 1943 के राष्ट्रीय पर्व पर राष्ट्र ध्वज लहराने वाले साहसी वीरो मे श्री स्वामी भी एक थे। उन्होने जोधपुर मे हुए अधिवेशन मे भाग लिया था। वे श्री गोयल एव श्री मघाराम के निकट सम्पर्क मे रहे थे।

श्रीमती खेतूबाई

श्रीमती खेतूबाई अपने भाई श्री मघाराम वैद्य के प्रभाव एव प्रेरणा से स्वतन्त्रता आन्दोलन मे सम्मिलित हुई थी। वे दुधवाखारा की महिला आन्दोलनकारियो की प्रमुख नेता थी। महिलाओ मे राष्ट्रीय भावनाओ का प्रसार करके अत्याचारो का मुकाबला करने को प्रेरित करना उनका प्रमुख लक्ष्य रहा था। वे पी० सी० मी० की सदस्या भी रही थी। उन्होंने जीवन पर्यन्त खादी धारण करने का व्रत ले रखा था। उसे वे बराबर निष्ठापूर्वक निभाती रही हैं।

श्रीचम्पालाल उपाध्याय

श्री चम्पालाल उपाध्याय का जन्म सवत् 1978 को आषाढ कृष्णा 14 को बीकानेर के एक पुष्करणा ब्राह्मण परिवार मे हुआ। अपनी शिक्षा समाप्त कर ये आसाम मे नौकरी करने चले गए थ। 1942 मे बीकानेर मे प्रजा परिषद की स्थापना के साथ ही प्रजा परिषद मे शामिल हो गए और उसके प्रचार कार्य मे लग गए। 1945 के दूधवाखारा किसान आन्दोलन मे श्री चम्पालाल उपाध्याय अन्य किसानो के साथ गिरफ्तार हो गए और दूधवाखारा आन्दोलन तक जेल मे रहे। तब से लगातार प्रजा परिषद, और कांग्रेस की प्रवृत्तियो मे सक्रिय रूप से भाग लेते रहे हैं।

काग्रेस विभाजन के समय श्री चम्पालाल उपाध्याय सगठन कांग्रेस मे शामिल हो गए थे। इन दिनो सगठन काग्रेस के कार्यकर्ता हैं। इनका पता है–सोनगिरी का कुआ, बीकानेर।

श्री चिरंजीलाल सुनार

श्री चिरजीलाल सुनार बीकानेर के रहने वाले एक कर्त्तव्य परायण कार्यकर्ता हैं। बीकानेर प्रजा परिषद के गठन के बाद श्री चिरजीलाल उसके सक्रिय सदस्य हो गए। 15 मई 1946 को तिरगा झडा लेकर तांगे मे एक सभा का ऐलान करते समय बीकानेर की कोतवाली के बाहर 5-7 सिपाहियो ने उनसे झडा छीनने की कोशिश की। झडा नहीं छोडने पर सिपाही उन्हें जबरदस्ती घसीट कर कोतवाली मे ले गए और उन्हे पुलिस हिरासत मे ले लिया। बाहर से आए हुए नेताओ के हस्तक्षेप से श्री चिरजीलाल को पुलिस ने मुक्त किया। श्री चिरजीलाल पिछले 30 वर्षों से खादी पहनते हैं। हरिजनोद्धार के क्षेत्र मे उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किया है। उनके सामाजिक विचारो पर आर्य समाज का प्रभाव रहा है। देश की स्वाधीनता के बाद 1951 मे उन्होने काग्रेस से त्यागपत्र देकर सभी राजनैतिक पार्टियो से अपना सम्बन्ध तोड लिया है।

श्री पोकर राम, सरदारगढ़िया



श्री पोकरराम का जन्म 29 जनवरी 1919 को गगानगर जिले के सरदारगढिया ग्राम मे उदयराम नामक हरिजन के घर हुआ था। बीकानेर मे सन् 44 से 48 तक के बीच जितने भी राजनैतिक आन्दोलन हुए उन सब मे श्री पोकर राम ने उत्साह से भाग लिया है। उन्होने हाथ मे तिरगा भण्डा लेकर गांव गाव मे लोक जागरण की शिखा जलाई है। श्री पोकर राम बीकानेर प्रजा परिषद के एक उत्साही कार्यकर्ता रहे हैं।

24 मार्च 1946 को उन्हें सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हे 6 मास की सजा दी गई। श्री पोकरराम आज भी गगानगर जिले की भादरा तहसील काग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता है और काग्रेस की प्रवृत्तियो मे उत्साह से भाग लेते हैं।

श्री बिसनसिंह मनहास

श्री विसनसिंह सिख राजपूत मनहास गगानगर जिले की करणपुर तहसील मे 22 एच के रहने वाले है। इन्होने लम्बे समय तक मिलिट्री मे काम किया है। जब जलियान वाला बाग मे गोली चली उस समय ये इराक बसरा के मिलिट्री डीपो मे तैनात थे। वहा से इन्होंने स्वराज्य फण्ड के लिए आठ हजार रुपए इकट्ठे करके भारत मे भेजे थे। इस पर उन्हे कोर्ट मार्शल की सजा दी गई। उन्हे भारत भेज दिया गया। जब मिलिट्री ने 1924 मे सत्याग्रहियो पर गोली चलाई तो श्री विसनसिह ने विरोध स्वरूप फौजी नौकरी से छुट्टी ले ली और सत्याग्रहियो मे शामिल हो गए। उन्हे 20 महीने नापा जेल मे निकालने पडे। वहा से रिहा होने पर राजस्थान मे अपने चक 22 एच मे आकर स्थानीय राजनीति मे काम करने लगे।

रायसिह नगर गोलीकाड होने के बाद श्री विसनसिह ने आर० डब्लू० 200 का जत्था लेकर फाईरिंग के बाद स्टेज को सम्हाला था। बीकानेर गवर्नमेन्ट ने उन पर इसी कारण झूठा केस लगाकर 3 महिने की सजा और 150 रुपये जुर्माना कर दिया था। श्री बिसनसिंह के पिता श्री तेजसिंह को भी बबर अकालियो को आश्रय देने के अपराध मे 1 वर्ष की सजा जालधर की सैंट्रल जेल मे काटनी पडी है। श्री विसनसिंह कट्टर काग्रेसी हैं और काग्रेस की प्रवृत्तियो को आगे बढाने मे आज भी सक्रिय है।

श्री जगन्नाथ व्यास उर्फ पुरजी महाराज



श्री जगन्नाथ व्यास उर्फ पुरजी महाराज का जन्म 5 मार्च 1914 को बीकानेर के एक पुष्करणा ब्राह्मण परिवार मे हुआ। बीकानेर प्रजा परिषद की स्थापना होने पर वे उसके सदस्य बने और सामतवाद से टक्कर लेने वालो की अग्रिम पंक्ति मे आ खडे हुए। पुलिस ने पुरजी महाराज को कई झूठे मुकदमो मे फसाने की कई चेष्टाए की। पुलिस ने इन्हे अनेको अमानुषिक यातनाए दी। सन् 1946 मे पुलिस ने एक बार श्री पुरजी महाराज को गिरफ्तार भी किया लेकिन प्रमाण के अभाव मे वे न्यायाधीश द्वारा मुक्त कर दिए गए।

अस्पृश्यता निवारण मे श्री पुरजी महाराज ने बीकानेर मे बहुत उत्साह से कार्य किया। उनकी जाति के लोगो ने उनकी इन प्रवृत्तियो के कारण उन्हे जाति से बहिष्कृत भी कर दिया था। श्री पुरजी महाराज भाषण कम देते परन्तु वे जुलूस समारोहो मे नारे लगाने मे पारगत माने जाते थे।

श्री पुरजी महाराज श्री रघुवरदयाल गोयल के नेतृत्व मे निरन्तर ठोस रचनात्मक कार्य करने मे ही सतोष का अनुभव करते हैं।

स्वर्गीय जीतमलजी पुरोहित

बीकानेर मे गोपाल प्रेस के सस्थापक स्वर्गीय जीतमल पुरोहित 'जीता भा' जो सन् 1939 मे जैसलमेर मे पहली बार बीकानेर आये और बाद मे स्व० जयनारायणजी व्यास के साथ। जब आपने प्रजा परिषद की स्थापना कर तिरगा लहराया तो इन्हे जैसलमेर से निर्वासित होना पडा। तब मे मृत्युपर्यन्त आप बीकानेर ही मे रहे। 'जीता भा' आजादी का एक अलमस्त फक्कड जोगी था जो जहा कही भी गया वहा इसने अलख जगाई।

बीकानेर काग्रेस व बाबू रघुवरदयाल मे आपका घनिष्ट सम्बन्ध रहा है। कठोर तानाशाही आतक के कारण नगर मे तब एकमात्र गोपाल प्रेस ही था जो राज्य विरोधी साहित्य छापने का साहस करता था। निर्भीक 'जीता भा' अपने हाथो से गुप्त रूप से सरकार विरोधी सामग्री बाटा करते थे। पुरोहित जी सैद्धातिक रूप से गाधीवादी थे।

स्वर्गीय श्री मुलतान चन्द दर्जी

बीकानेर मे राजनैतिक चेतना फैलाने वालो मे स्वर्गीय श्री मुलतानचन्द दर्जी का नाम आदर से लिया जाता है। इनकी मिलाई की दुकान थी और वे अपनी दुकान पर दैनिक और साप्ताहिक पत्र मगा कर दिन भर राष्ट्रीय समाचारो की चर्चा करते रहते थे। कपडे सिलाने के बहाने राजनैतिक चर्चाओ मे भाग लेने के लिए इनकी दुकान पर निरन्तर नौजवान इकट्ठे होते रहते थे। ये स्वय खादी पहनते थे और अपनी दुकान पर बैठ कर चर्खा चलाते थे। यह भी लोगो के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ था। इनकी दुकान के इर्द-गिर्द सी० आई० डी० के लोगो की वर्षों तक ड्यूटी लगी रही थी।

दूधवाखारा के किसान आन्दोलन मे मुलतान जी दर्जी ने सक्रिय रूप से भाग लिया था। पुलिस के अत्याचारो और अनाचारो के विरोध मे निकाले गए एक जुलूम का नेतृत्व करते समय पुलिस ने इन्हे गिरफ्तार कर लिया था और उनकी अमानुषिक पिटाई की गई। बीकानेर रियासत मे किसी भी तरह की राजनैतिक हलचल होने पर पुलिस सबसे पहले श्री मुलतानचन्द दर्जी को हिरासत मे लेकर उनकी क्रूरता पूर्वक पिटाई करती। उनकी कमर पर पुलिस की इतनी चोटें पडी कि वे उसे सीधी करके नही चल सकते थे।

श्री मुलतानचन्द दर्जी अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक प्रजा परिषद के सक्रिय और निष्ठावान कार्य कर्त्ता रहे और राज्य मे जिम्मेवार हकूमत की स्थापना के लिए अन्त तक पूरे उत्साह से कार्य करते रहे।

श्री मूलचन्द पारीक

श्री मूलचन्द पारीक प्रजा परिषद के सक्रिय कार्यकर्त्ता एव श्री रघुवरदयाल गोयल के विश्वासपात्र सहायक रहे हैं। स्वतन्त्रता-आन्दोलन में उन्होने सगठन कार्य करने के साथ ही साथ सन्देशो के आदान-प्रदान एव प्रसारण का महत्वपूर्ण कार्य किया था। वे कारावासो मे वन्दी नेताओ तक समाचार पहुचाने एव उनके सन्देश प्राप्त करके देश के नेताओ एव समाचार पत्रो तक पहुचाने के दायित्व का निर्वाह करते थे। यह कार्य अत्यन्त कठिन था तथा गुप्तचरो का दल सदैव आपकी गतिविधियो की जानकारी रखने हेतु पीछे लगा रहता था। श्री पारीक छद्म नाम से समाचार प्राप्त करके उसी नाम से आगे भेज देते थे। लूणकरणसर मे नजरबन्द श्री रघुवर दयाल गोयल एव अनूपगढ मे नजरबन्द सर्व श्री कौशिक एव दाऊदयाल आचार्य से सम्पर्क साधने का साहसपूर्ण कार्य उन्होंने ही किया था। वे कुछ समय तक प्रजा परिषद के मन्त्री भी रहे थे।

श्री महावीर प्रसाद बहड़ चूरू

जन्म— 25 दिसम्बर 1923



श्री महावीर प्रसाद बहड बीकानेर काग्रेसी केस के ख्यातिप्राप्त देशभक्त श्री चन्दनमल बहड के सुपुत्र है। इनका जन्म 25 दिसम्बर 1923 को हुआ था। देश भक्ति तो जैसे इन्हे जन्म घुट्टी के साथ ही मिली थी। इनकी शिक्षा चुरू मे हुई। अपने पिता के जेल से मुक्त होने के बाद श्री महावीर अपनी 17 वर्ष की आयु मे कलकत्ते चले गये थे। प्रारम्भ मे उन्होने कलकत्ते मे बीकानेर प्रजामण्डल का और 1942 के बाद बीकानेर राज्य प्रजा परिषद का कलकत्ते मे कार्य किया। वे कलकत्ते मे प्रजापरिषद के प्रतिनिधि के रूप मे बीकानेर के राजनैतिक समारोहो मे सम्मिलित होते थे। 1942 मे श्री महावीर अपने बगाली मित्रो के साथ तोड फोड की प्रवृत्तियो मे लग गये थे और भारत छोडो आन्दोलन को सफल बनाने मे अपनी शक्ति लगा रहे थे। 1946 मे समाजवादी पार्टी की स्थापना के साथ इन्होने भी बीकानेर मे जे बगरहट्टा, श्री सत्य नारायण पारीक, श्री कोचर, श्री केदार शर्मा, और श्री कुशलसिंह के साथ समाजवादी पार्टी की स्थापना की। श्री महावीर बहड सयुक्त मन्त्री बनाये गये। राजस्थान निर्माण के बाद श्री महावीर ने चुरू जिले मे समाजवादी पार्टी की स्थापना की और लम्बे समय तक उसके मन्त्री रहे।

1955 मे श्री महावीर बहड ने सर्वोदय आन्दोलन मे अपना जीवन दान दे दिया। श्री महावीर बहड 1952 मे 62 तक चूरू मे सर्वहित कारिणी सभा के मन्त्री रहे। आजकल श्री महावीर जयपुर मे आर्थिक और सामाजिक कार्यक्रमो को लेकर व्यस्त हैं।

श्री मूलचन्द सेवक



श्री मूलचन्द सेवक मूल रूप से वीकानेर के शाकद्वीपीय ब्राह्मण हैं परन्तु इनका कार्यक्षेत्र मध्यभारत और कलकत्ता रहा है। इनका जन्म 24 दिसम्बर 1916 को हुआ था 1920 से 35 तक श्री सेवक नागपुर मे अपने मामा के पास रहे और वही इन्होने 1930–32 मे विदेशी वस्त्र वहिष्कार और शराब की दुकानो पर धरनो मे भाग लिया। पुलिस ने कई वार गिरफ्तार किया और छोडा परन्तु उनके वार वार सत्याग्रहमे भाग लेने पर एक वार वैतो की सजा दी गई। सन् 1938 मे 61 तक श्री मूलचन्द सेवक कलकत्तामे रहे और वही भारत छोडो आन्दोलनके समय इन्होने गिरेन्द्र मजुमदार,वटुक पाल,मेघराज काका और धावले के साथ मिल कर डू और डाई नामका गुप्त पत्र प्रतिदिन प्रकाशित करना शुरू किया। महानगर कलकत्ते के कोने कोने मे इस पत्र को पहुचाने की जिम्मेवारी श्री मूलचन्द सेवक की थी। एक वार उसी पत्र का तारा सुन्दरी पार्क मे वितरण करते पुलिस द्वारा रगे हाथो गिरफ्तार कर लिए गये। सात दिन तक पुलिस ने इस समाचार पत्र का अतापता जानने के लिए आपको नारकीय यातनाए परन्तु आप टस मे मस नही हुए। अन्त मे पुलिस ने इन्हे छोड दिया।

सन् 44 के बाद श्री मूलचन्द सेवक समाज सुधार के कामो मे लग गये और पर्दा उठवाने और बाल विवाह, वृद्ध विवाह आदि रुकवाने मे अपना समय लगाने लगे। उन्होने मारवाडी रिलीफ सोसाइटी के तत्वावधान मे भी वहुत कार्य किया। वे पिछले कई वर्षो से जयपुर मे हैं और यहा काग्रेस समाजवादी मच के लिए कार्य कर रहे हैं। उनका पता है 1572, परवाल भवन, जडियो का रास्ता, जयपुर।

श्री मोती राम विश्नोई

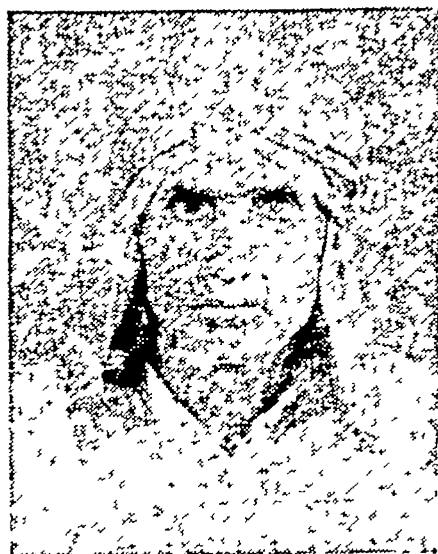


श्री मोतीराम विश्नोई का जन्म 12 अगस्त 1917 को गगानगर जिले के सरदारगढिया ग्राम मे हुआ था। श्री मोतीराम की शिक्षा कुछ भी नही हो सकी परन्तु राजशाही और राज्याधिकारियो के अत्याचारो का उन्होने अपने क्षेत्र मे खुलकर विरोध किया था। श्री मोतीराम विश्नोई वीकानेर प्रजा परिषद के एक कर्मठ किसान कार्यकर्ता रहे हैं।

उनकी प्रवृत्तियो को पुलिस ने राजद्रोहात्मक मान कर उन्हे गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने उन्हें कई तरह की यातनाए दी। अन्त मे उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया और राजगढ के एस डी एम. के कोर्ट से उन्हे 6 महीने की सजा देकर जेल भेज दिया गया।

श्री मोतीराम विश्नोई आज भी गगानगर की भादरा तहसील मे उत्साह से काग्रेस का कार्य करते हैं।

श्री रामलाल बेनीवाल



श्री रामलाल बेनीवाल भादरा तहसील के सरदार गढिया ग्राम के निवासी हैं। इनका जन्म 6 अगस्त 1917 को हुआ। बीकानेर राज्य मे प्रजा परिषद की स्थापना के समय से ही रामलाल प्रजापरिषद के सक्रिय कार्यकर्ता बन गए। श्री बेनीवाल बीकानेर राज्य प्रजापरिषद की कार्यकारिणी के वर्षों तक सदस्य रहे। इन्होने जिला परिषद और तहसील मे प्रजापरिषद का सगठन किया। बीकानेर रियासत के राजगढ क्षेत्र के जागीरदारो द्वारा किसानो के शोषण का इन्होने सर्वेक्षण किया। इन्होने प्रजापरिषद के सभी आन्दोलनो मे भाग लिया। 1945 मे श्री रामलाल बेनीवाल को बीकानेर से निर्वासित कर दिया गया। तब इन्होने खोडी, लोहारु और अलवर मे बैठकर प्रजापरिषद की प्रवृत्तिया चलाई। 1946 मे निषेधाज्ञा तोडकर जब ये बीकानेर मे प्रविष्ठ हुए तब उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया। इन्हे 3 वर्ष की सजा दी गई लेकिन ये 1½ वर्ष तक जेल मे रहे।

स्वाधीनता के बाद श्री बेनीवाल का समय लोक-शिक्षा के प्रसार का कार्य रहा है तथा गाधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमो मे इन्होने अपने को लगा दिया है। इनका पता है—ग्राम सरदारगढिया, पोस्ट मरवाना, तहसील भादरा, जिला गगानगर।

स्वर्गीय श्री लक्ष्मीनारायण हर्ष

स्वर्गीय श्री लक्ष्मीनारायण हर्ष का जन्म बीकानेर के एक प्रतिष्ठित पुष्करणा परिवार मे 10 अप्रेल 1908 को हुआ था। उन्होने आयुर्वेद-शास्त्र की उच्चतम शिक्षा प्राप्त की थी। वे बीकानेर के एक प्रतिष्ठित वैद्य थे।

1943 के प्रारम्भ मे श्री लक्ष्मी नारायण हर्ष बीकानेर राज्य प्रजा परिषद मे शामिल हुए। उन्होंने परिषद के सगठन पक्ष को बहुत तेजी से चारो ओर फैलाना शुरू कर दिया। राज्य सरकार की श्री लक्ष्मीनारायण हर्ष पर क्रूर दृष्टि रहने लगी। उनकी आजीविका और व्यवसाय पर भी इसका बहुत उल्टा प्रभाव पडा। परन्तु श्री हर्ष के कदम सार्वजनिक क्षेत्र मे निरन्तर आगे ही बढते गए। श्री लक्ष्मी नारायण हर्ष 1946 तक प्रजा परिषद के उपाध्यक्ष रहे।

सन् 1947 मे प्रजापरिषद ने अस्पृश्यता निवारण का आन्दोलन शुरू किया। इसमे श्री लक्ष्मी नारायण हर्ष ने बहुत उत्साह से भाग लिया। परिणाम स्वरूप वे अपनी जाति मे बहिष्कृत कर दिए गए।

प्रजा परिषद के नेतृत्व मे उन्होने जागीरदारी प्रथा के विरोध मे लोकमत बनाने का कार्य भी अत्यन्त साहस के साथ किया। 1 मई 57 को उनका निधन हो गया।

स्वर्गीय श्रीमती लक्ष्मी देवी आचार्य



श्रीमती लक्ष्मी देवी आचार्य बीकानेर के श्री श्रीराम आचार्य की पत्नि थी। उनके जीवन का अधिक भाग कलकत्ता (बगाल) मे ही बीता था। 1930–31 मे उन्होने कलकत्ते मे विदेशी वस्त्रो के वहिष्कार आन्दोलन मे भाग लिया था और 1932 मे सविनय अवज्ञा आन्दोलन मे। दोनो वार उन्हे गिरफ्तार होने पर कलकत्ते की जेलो मे 6–6 महीने की अवधि तक रहना पडा था।

कलकत्ते मे भारतीय–नारी–उत्थान–मण्डल नामकी एक सस्था कार्य करती थी और जेल से मुक्त होने के वाद श्रीमती लक्ष्मी देवी आचार्य उस वगाली सस्था की अध्यक्षा निर्वाचित हुई।

1936 मे वैद्य मघाराम और लक्ष्मी दास स्वामी को जव वीकानेर से निष्कासित कर दिया गया था तव वे कलकत्ते मे श्रीमती लक्ष्मी देवी आचार्य से मिले। कलकत्ते मे वीकानेर प्रजामण्डल की स्थापना की गई और लक्ष्मी दवी को उसका अध्यक्ष वनाया गया। श्री लक्ष्मी देवी ने वीकानेर के जन-आन्दोलन के लिए कलकत्ते के मारवाडी समाज मे लोकमत जागृत किया।

श्रीमती लक्ष्मी देवी का वगाली समाज मे वहुत सम्मान था। वह हरिपुरा कांग्रेस के लिए वगाल से डेलीगेट चुनी गई थी। डाक्टर हार्डिकर ने जव वम्बई मे राजनैतिक प्रशिक्षण शिविर लगाया तव भी श्री लक्ष्मी देवी ही वगाल से प्रशिक्षण के लिए भेजी गई थी।

श्रीमती लक्ष्मी देवी आचार्य 1940 के वाद व्यक्तिगत सत्याग्रह मे कलकत्ते मे गिरफ्तार हुई और जेल से मुक्त होने के वाद भारत छोडो आन्दोलन के पहले उनका स्वर्गवास हो गया था।

श्री शेराराम

वैद्य श्री मघारामजी के भाई श्री शेराराम स्वतन्त्रता आन्दोलन के निर्भीक कार्यकर्ता रहे थ। किसान आन्दोलन की व्यवस्था करना तथा आन्दोलनकारी किसानो को सुविधाए पहुचाना और प्रदर्शन का प्रवन्ध करना उनका प्रमुख काम था। दुधवाखारा काण्ड के प्रधान नेता श्री मघाराम की गिरफ्तारी के वाद उनके घर वालो पर भी अमानुषिक अत्याचार किये गये। भाई शेराराम को अकारण गिरफ्तार करके पुलिस लाइन ले जाकर निर्ममता से पीटा गया। इस पिटाई के कारण वे चार महीने तक वीमार रहे। वे मार्गदर्शन के लिए लोकनायक व्यासजी के पास राजनैतिक मिशन पर भेजे जाते।

श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा

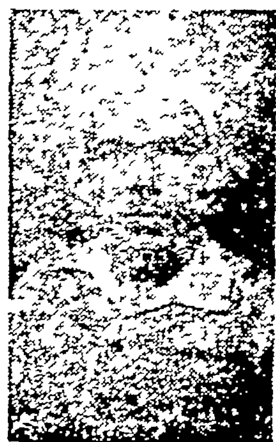
श्री सुरेन्द्रकुमार शर्मा ने रियासती आन्दोलन के अग्रिम सेनानी लोकनायक व्यासजी की प्रेरणा से राष्ट्रीय आन्दोलन मे अपने को सम्मिलित किया था। श्री शर्मा ने बम्बई मे जब व्यासजी से भेंट की तो उन्होने रियासती आन्दोलन को योग देने की सलाह दी।

श्री शर्मा जी बीकानेर आए और आपने सन् 1936 मे श्री लक्ष्मणदास "अथक" के मन्त्रीकाल मे प्रजामण्डल की सदस्यता ग्रहण की। कुछ समय तक स्थानीय कार्य-कर्त्ताओ के साथ कार्य करने के पश्चात् आप बम्बई चले गए थे।

सन् 37 मे आप पुन बीकानेर आए। यहा आपने हित-वर्द्धक सेवा-सदन-सस्था का गठन किया, जिसके आप मन्त्री चुने गए।

सन् 38 मे तत्कालीन नरेश गगासिंह की जुबली मे लार्ड लिनलिथगो भाग लेने बीकानेर आए थे। बीकानेर के जागरूक लोगो ने निरकुश शासन द्वारा जनता पर किए जा रहे अत्याचारो का विरोध लाट साहबके समक्ष करने का निर्णय लिया। किन्तु इस योजना की सरकार को पूर्व ही सूचना मिल जाने पर श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा को अनेको साथियो सहित गिरफ्तार कर लिया गया। इस गिरफ्तारी मे शर्मा पर बम्ब फैंकने का झूठा आरोप लगाया गया और उन्हे साथियो सहित 20 दिन तक पुलिस की क्रूर यातनाओ से प्रताड़ित होना पडा। 20 दिन की दर्दनाक यातनाओ के बाद आपको बीकानेर से निर्वासित कर दिया गया। श्री शर्मा आज भी राजनैतिक कार्य्यो मे साहस से जुटे हुए हैं।

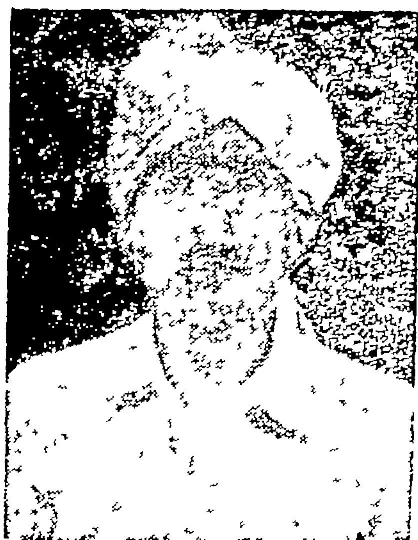
श्री श्रीराम आचार्य



श्री श्रीराम आचार्य का जन्म बीकानेर के पुष्करणा ब्राह्मण परिवार मे सन् 1900 मे हुआ था। इनके पिताजी का व्यापार कलकत्ते मे था अत आपका बचपन भी कलकत्ते मे ही बीता। 1936 मे श्री आचार्य कलकत्ते मे बीकानेर प्रजा परिषद के सदस्य बने और लगातार प्रजापरिषद के लिये कार्य करने लगे। आपकी पत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी आचार्य कलकत्ते की प्रसिद्ध राष्ट्र-सेविका थी। कलकत्ते की पुलिस ने आपको चमन मोती हत्याकाण्ड मे फसाने का षडयन्त्र किया था लेकिन सबूत के अभाव मे इन्हें 5–4 दिन पुलिस हिरासत मे रख कर छोड दिया गया।

कलकत्ते से बीकानेर आने पर श्रीराम आचार्य बीकानेर प्रजापरिषद के तीसरे अध्यक्ष बनाये गये। पुलिस ने उन्हें कई झूठे मुकद्दमो मे फसाने की कोशिश की लेकिन अदालतो मे जाकर मामले खारिज होते गए। श्री श्रीराम आचार्य ने जिम्मेवार हुकुमत के लिए प्रजापरिषद मे रह कर निष्ठापूर्वक कार्य किया था।

श्री सुरजाराम कुम्हार

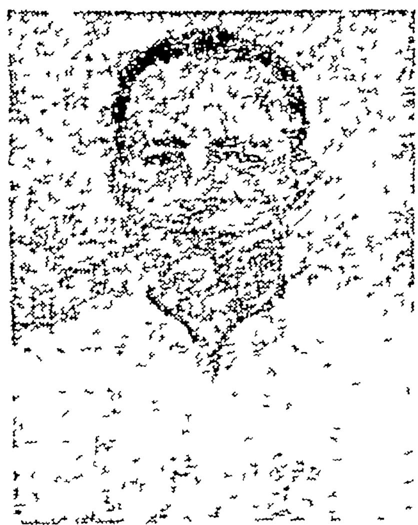


श्री सुरजाराम कुम्हार का जन्म 10 मई 1925 को भादरा तहसील के श्री हरलाल कुम्हार के घर हुआ। उन्होने प्राथमिक शिक्षा अपने गाव मे ही प्राप्त की। गगानगर जिले मे वीकानेर राज्य प्रजा-प्ररिपद का गठन होने के वाद श्री सुरजाराम उसमे उत्साह से कार्य करने लग गए। उन्होने अपनी तहसील भादरा के गाव गाव मे तिरगा झण्डा लेकर पद यात्रा करनी शुरू की। उन्होने लोगो तक प्रजा परिपद का सदेश पहुचाया और राजा तथा शासक वर्ग के अत्याचारो के विरोध मे निर्भीकता से उठ खडे होने की प्रेरणा दी।

भादरा तहसील के कई पुलिस थाणो पर उनकी पिटाई की गई। अन्त मे उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया और राजद्रोह के अपराध मे राजगढ के कोर्ट से उन्हे 6 महिने की सजा दी गई।

श्री सुरजाराम भादरा तहसील मे आज भी काग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता है।

स्वर्गीय चौधरी श्री हरदत्तसिह



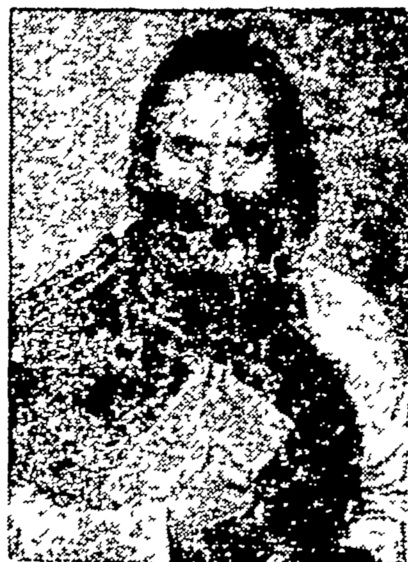
चौधरी हरदत्तसिह का जन्म 26 जनवरी 1915 को भादरा तहसील के ग्राम गाधी मे हुआ था। इन्होने बी० ए०, एल० एल० बी तक शिक्षा प्राप्त की थी। शिक्षा प्राप्त करने के वाद चौधरी हरदत्तसिह वीकानेर रियासत मे प्रथम श्रेणी के मु सिफ मैजिस्ट्रेट हो गए थे लेकिन वाद मे वे 1945 के करीव राजकीय सेवा से त्यागपत्र देकर वीकानेर प्रजा परिषद मे शामिल हो गए और जिम्मेवार हुकुमत के लिए आन्दोलन करने लगे। वीकानेर राज्य प्रजा परिपद को सगठित करने के प्रयत्नो मे तथा जन-आन्दोलनो का प्रतिनिधित्व करने मे इन्हे गिरफ्तार कर लिया गया। ये 1 महीने तक जेल मे रहे। इन्होंने दूधवाखारा किसान आन्दोलन मे बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी।

देश की स्वाधीनता के वाद जव वीकानेर मे अन्तरीम मन्त्री मण्डल वना तव उसमे चौधरी हरदत्तसिह वीकानेर के उप मुख्यमन्त्री वनाए गए थे। सन् 66-67 मे इनका देहावसान हो गया।

श्री श्रीगोपाल दम्माणी

श्री श्रीगोपाल दम्माणी प्रजा परिषद के लोकप्रिय कार्यकर्ता रहे थे। सन् 1943 मे प्रजा परिषद की स्थापना के कुछ समय बाद उनके घर पर कई बार पुलिस का पहरा विठाया गया था। रेजगी काड मे पूछताछ के सिलसिले मे इन्हे गिरफ्तार कर लिया गया तथा भिन्न भिन्न प्रकार से परेशान किया गया। उन्होने प्रजा परिषद की समस्त गतिविधियो मे सक्रियता से भाग लिया तथा अत्याचारो के सामने कभी भी घुटने नही टेके।

श्री हुक्मा राम गौड़



श्री हुक्माराम गौड बीकानेर मे लुनकरनसर तहसील के कुमाना ग्राम के रहने वाले गौड ब्राह्मण हैं। इनका जन्म सन् 1922 मे हुआ था। इनका कार्यक्षेत्र बंगाल, कूच विहार, उडीसा और फिर बीकानेर रहा है। बगाल के प्रसिद्ध क्रातिकारी अनन्तसिंह से राजनीति की दीक्षा ली थी। क्रातिकारी कार्यों मे भाग लेने के कारण ये रगपुर (बगाल) मे 6 अगस्त 38 को गिरफ्तार हुए थे और 1 वर्ष दो महीना 6 दिन के बाद रिहा किए गए। भारत छोडो आन्दोलन मे इन्होने अनन्तसिह के विश्वासपात्र सहयोगी के रुप मे क्रान्तिकारियो के बीच गुप्त सदेशो के आदान-प्रदान का कार्य किया था। कूच विहार के बाहारामपुर ग्राम मे इनकी 600 बीघा जमीन और आवासीय मकान और दुकान को वहा के शासको ने फर्जी बेचान कर इन्हे बेदखल कर दिया था। बटवारे के समय जो देश मे मारकाट मची उस समय श्री हुक्माराम गौड गाधीजी की नोआखली यात्रा की प्रेरणा से जगह जगह शाति स्थापित करवाने के प्रयत्न मे लग गए थे। 1947 मे उडीसा के कोयला खानो के मजदूरो का सगठन करने लगे थे। 1942 मे बीकानेर आकर प्रजा परिषद मे कार्य करना शुरु किया था। 1954 मे श्री हुक्मा राम गौड कम्युनिस्ट पार्टी मे चले गये। और 1968 मे कम्युनिस्ट पार्टी से भी अलग होगए। 1971 के अक्टूबर मे वे सत्ता काग्रेस मे शामिल हो गए हैं और गरीबी हटाओ कार्यक्रम की क्रियान्विती मे लगे हुए हैं। इनका पता है— लुणकरणसर, जिला, बीकानेर।

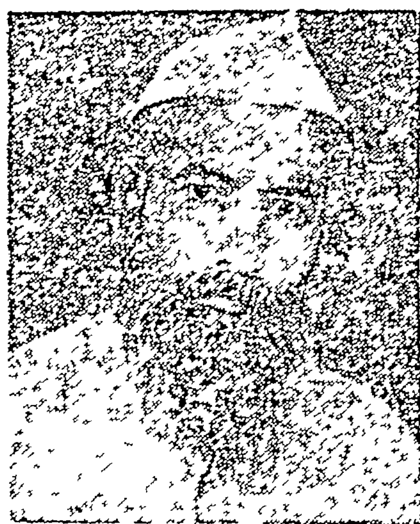
राजस्थान के

स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी

- स्वतन्त्रता के संदेश वाहक
- सत्याग्रही और
- स्वातंत्र्य - सैनिक

धौलपुर-भरतपुर

श्री ओम प्रकाश वर्मा, धौलपुर



जन्म —20 अगस्त 1920

वर्तमान पता—कोठी बजाज खाना,
धौलपुर ।

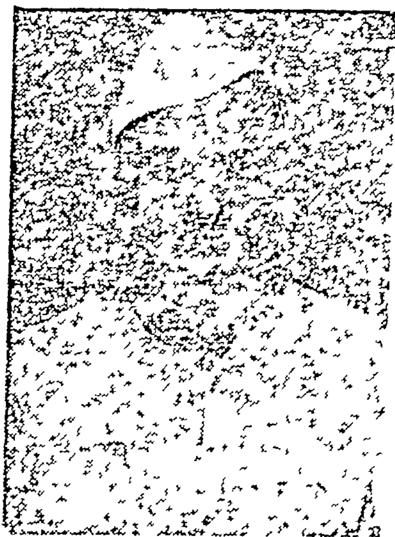
श्री ओमप्रकाश वर्मा का जन्म धौलपुर के देशभक्त परिवार मे 20 अगस्त 1920 को धौलपुर के लोक नेता श्री ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु के यहा हुआ । 1936 मे जब उनके पिता ने धौलपुर मे हरिजन आन्दोलन शुरु किया तो श्री ओमप्रकाश वर्मा अपनी शिक्षा का क्रम छोडकर हरिजन सेवा के कार्य मे लग गए । 1938 मे जब धौलपुर मे प्रोफेशनल टैक्सेज के विरुद्ध राज्य व्यापी आन्दोलन शुरु हुआ तो श्री ओमप्रकाश वर्मा उस आन्दोलन मे कूद पडे और अपने 18 वर्ष की उम्र मे वे गिरफ्तार कर लिए गए तथा करीब 7 महीने के बाद वे जेल मे रिहा हुए । उनके पिता को उस समय तक धौलपुर से निर्वासित हो चुका था और वे आगरे मे रह कर धौलपुर के आन्दोलन का सचालन कर रहे थे ।

श्री ओमप्रकाश वर्मा ने धौलपुर मे चर्खा सघ द्वारा प्रमाणित खादी भण्डार की सबसे पहले स्थापना की और खादी भण्डार पर तिरगा झण्डा लगा दिया । उन्हे इससे सरकारी अधिकारियो का निरतर कोप भाजन बनना पडा और हर समय वे इन्हे किसी न किसी बहाने मे परेशान करने लगे ।

10 नवम्बर 1941 को धौलपुर के शरद मेले मे राज्याधिकारियो ने अपनी मौजूदगी मे गुण्डो द्वारा उनकी दुकान लुटवादी जिसमे उन्हे पच्चीस हजार का नुकसान हुआ । इस चोट से उनके जीवन का आर्थिक ढाचा चरमरा गया । 1942 मे उन्होने आगरे के शिरोमणि बधुओ के नियन्त्रण मे तोडफोड के आतक वादी कार्य भूमिगत रह कर किए थे ।

राज्य मे प्रजा मडल की स्थापना होने पर श्री ओमप्रकाश वर्मा उसके सदस्य बन गए और प्रजा मण्डल के उद्देश्यो का प्रचार करने लगे । 1947 मे डाक्टर राम मनोहर लोहिया की अध्यक्षता मे उन्होंने अपने प्रयत्नो से विशाल राजनैतिक सम्मेलन का आयोजन किया था । वे प्रजामण्डल के बाद काग्रेस के सक्रिय सदस्य बन गए और दलितोद्धार और हिन्दु मुस्लिम एकता के लिए कार्य करने लगे । 1963 मे वे धौलपुर नगर पालिका के सदस्य निर्वाचित हुए और फिर नगर पालिका के अध्यक्ष चुने गए । उन्होंने जनता की सुविधा के लिए रेल्वे स्टेशन पर कई सुविधाओ का प्रबध करवाया । वे आज भी सक्रिय रूप से लोक सेवा मे लगे हुए हैं ।

श्री किशन लाल जोशी



श्री किशनलाल जोशी भरतपुर के उन तेजस्वी, निष्ठावान और अग्रगण्य व्यक्तियो मे से है जिनके प्रयत्नो मे राज्य प्रजा मडल की विधिवत् स्थापना हुई और राजनैतिक आन्दोलनो को सही उद्देश्य और सही दिशा प्राप्त हुई। श्री किशन लाल जोशी अपनी उम्र के 14वें वर्ष मे ही राज-नीति मे सक्रिय हो चुके थे और देश की स्वाधीनता के समय तक उन्हें 9 बार जेल की सजाए भोगनी पडी हैं।

श्री किशनलाल जोशी का जन्म 2 जनवरी 1914 को तहसील डीग के खेडा ब्राह्मण ग्राम मे हुआ था। अपने विद्यार्थी काल मे राज्य के अग्रेज रेवेन्यु मिनिस्टर की निरकुशता के विरुद्व 1931 मे उन्होने अपने नाम मे पर्चे निकाल कर गावो मे बटवाए। उन्हे राजद्रोह के अपराध मे गिरफ्तार करने का वारट निकला तब तक वे अछनेरा जा चुके थे। उनके पिता श्री कालूराम पटवारी को इसी अपराध मे गिरफ्तार करके 3 महीने की सजा दी गई।

श्री जोशी अजमेर सत्याग्रह मे अपने अन्य 3 मित्रो के साथ पहुचे। वही विदेशी वस्त्र और शराब की दुकानो पर पिकेटिंग मे उन्होने भाग लिया। हफ्तो तक रोज गिरफ्तार होते और छोडे जाते। अत मे 25 फरवरी 1932 को कमिश्नरी पर तिरगा फहराने के अपराध मे श्री जोशी को 9-9 बैतो की सजा दी गई। 2 मार्च 32 को प्रभातफेरी निकालते हुए श्री जोशी गिरफ्तार हुए और उन्हे 4 महीने की सजा दी गई। अजमेर जेल से रिहा होकर श्री किशनलाल जोशी ने आगरा जाकर जिला कांग्रेस और शहर कांग्रेस का कार्या-लय सभाला। उन्ही दिनो अजमेर मे डोगरा सूटिंग केस हुआ था और पुलिस इस केस मे सबधित रामसिंह की तलाश मे थी। उन्ही दिनो शेखावाटी मे किसान आन्दोलन बडी तेजी पर था और जब श्री किशन लाल जोशी बाबा नरसिंह दासजी के साथ शेखावटी जाने के लिए जयपुर के एडवर्ड मेमोरियल मे रुके कि उन्हे पुलिस ने वही गिरफ्तार कर लिया। बाबाजी को 2½ वर्ष और किशनलाल जोशी को राजद्रोह के अपराध मे 13 महीने की सजा दी, जिसे उन्होने जयपुर जेल मे पूरा किया।

जयपुर जेल से मुक्त होकर श्री जोशी फिर आगरा चले गए। वही काग्रेस का कार्य करते हुए उनका सभी बडे बडे नेताओ मे सपर्क हुआ। उन्होने राजपूताने की रियासतो के कार्यकर्ताओ मे भी अपना सपर्क बनाए रखा। वही सरदार पटेल और हरिभाऊ उपाध्याय की प्रेरणा से उन्होने भरतपुर प्रजामण्डल स्थापित करने का निश्चय किया जिसके लिए रेवाडी जाकर स्वर्गीय गोपीलाल यादव, मास्टर आदित्येंद्र और जुगल किशोर चतुर्वेदी का सहयोग लिया। भरतपुर शहर मे प्रजामडल की स्थापना मे सर्व श्री गोकुल जी वर्मा,

जगन्नाथ कक्कड, गोरीशंकर मित्तल, मास्टर फकीरचद, हुकुमसिंह शर्मा, सावल प्रसाद चतुर्वेदी, कमल सिंह गुप्त, वावा दूधाहारी और ठाकुर देशराज का उन्हें पूर्ण सहयोग मिला। भरतपुर राज्य प्रजा मडल का अध्यक्ष श्री गोपीलाल यादव को बनाया गया और प्रधानमंत्री का भार श्री किशन लाल जोशी ने सम्हाला। 6 महीने के वाद ठाकुर देशराज को प्रजा मडल का अध्यक्ष बनाया गया।

1938 मे फतहपुर सीकरी मे श्री जोशी ने पूर्वी राजस्थान स्टेट्स पीपुल्स राजनैतिक सम्मेलन बुलाया। मनीषी विचारक एम० एन० राय ने सम्मेलन की अध्यक्षता की। इस सम्मेलन से सभी राज्यो मे प्रजामडल के गठन को एक दिशा मिली। 1939 मे प्रजा मडल के रजिस्ट्रेशन की अनुमति के लिए दीवान को 1 महीने का अल्टीमेटम दिया गया कि या तो प्रजा मडल के गठन को मान्यता दें अन्यथा सत्याग्रह प्रारम्भ किया जाएगा।

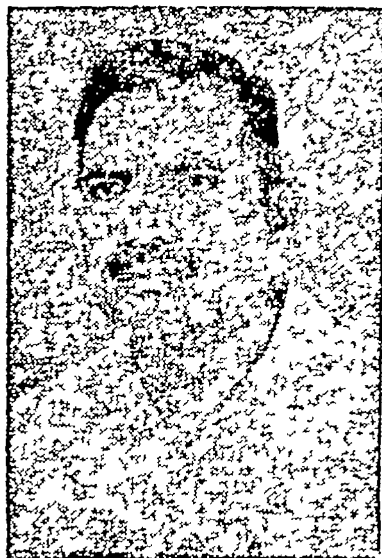
अन्त मे सत्याग्रह करना पडा। सभी पावदियो को तोडते हुए प्रजामण्डल के प्रथम श्रेणी के र्यकत्तकार्ताओ ने भरतपुर, डीग, नगर, पहाडी और कामा मे जन सभाए की और प्रजामण्डल द्वारा सत्गग्रह का जयघोप प्रारम्भ हुआ। यह सत्याग्रह 6 महीने तक चला। इसमे 32 महिलाए और 600 सत्याग्रही गिरफ्तार हुए। कुछ प्रतिष्ठि व्यक्तियो ने वीच मे पड कर प्रजा मडल और राज्य का समझौता करवाया। इस समझौते से प्रजा मण्डल के स्थान पर प्रजा परिषद का जन्म हुआ। कुछ नेताओ के नर्म रुख से प्रजामडल के खेमे मे फूट पड गई और कुछ कार्यकर्ता निराश होकर अलग अलग बट गए।

इसी अर्से मे दूसरा महायुद्ध शुरु हुआ और युद्ध के विरोध मे आन्दोलन शुरु हुआ। धीरे धीरे इस आन्दोलन ने व्यक्तिगत सत्याग्रह का रूप ले लिया। इमी बीच आगरा के अंग्रेज कलेक्टर पर वम फैंकने की घटना हुई। कई लोग गिरफ्तार हुए। श्री किशन लाल जोशी को उनके गाव मे ही गिरफ्तार कर लिया गया। 4 महीने भरतपुर राज्य के काराग्रह मे रहने के वाद जमानत पर छोडा कि आगरा सिटी मजिस्ट्रेट के वारट पर भारत सुरक्षा कानून के अतर्गत श्री जोशी को गिरफ्तार कर लिया गया और 3 महीने विचाराधीन रहने के वाद उन्हे 6 महीने की सजा दी गई। आगरा जेल मे यह सजा भुगतकर श्री जोशी अगस्त 42 मे मुक्त हुए। इसी वीच श्री किशनलाल जोशी ने किसान नामक एक साप्ताहीक पत्र का सपादन किया और रियासती जनता के आन्दोलनो को आगे वढाया।

1947 मे सभी पार्टियो ने मिलकर बेगार विरोधी आन्दोलन शुरु किया। 17 दिन नगर मे हडताल रही। किले के दरवाजो पर पिकेटिंग शुरु हुआ। लाठी चार्ज हुआ। श्री किशनलाल जोशी के सगीग चोटें लगी। गिरफ्तारी का वारट निकला। श्री जोशी आन्दोलन का संचालन करने लिए भूमिगत होगए। इस सिलसिले मे वू दी मे गिरफ्तार हुए। वहा वे दो मास तक विचाराधीन कैदी रहे और 1 जून 47 से 18 जनवरी 48 तक भरतपुर जेल मे रहे। 1949 मे रेल्वे माजदूरो के आन्दोलन के सम्वन्ध मे नजरवद किए गए और 2 माह भरतपुर जेल मे रहने के वाद हाई कोर्ट से हैवियस कार्पस प्रार्थना पर मत्स्य सरकार द्वारा मुक्त किए गए।

श्री किशनलाल जोशी आज भी काग्रेस के लोकतान्त्रिक समाजवाद और गरीवी हटाओ कार्यक्रम को पूरा करने मे अपनी पूरी शक्ति के साथ जुटे हुए हैं।

श्री गिरधारी सिंह पैंथना



जन्म— 30 जून, 1928

वर्तमान पता— मु० पो० पैंथना,
जिला भरतपुर ।

श्री गिरधारी सिंह भरतपुर नरेश के भाई बन्धुओ मे से है। भरतपुर महाराजा ने उन्हे अनेको बार अपने महलो मे बुलाकर अनेको प्रकार के प्रलोभन दिए और कहा कि तुम्हे राज्य मे अच्छी से अच्छी नौकरी, भूमि तथा अन्य पुरस्कार दिला दूगा। तुम काग्रेस छोड दो। इतने विश्वास और आश्वासनो के बाद भी श्री गिरधारी सिंह अपना देशभक्ति के प्रति पूर्ण निष्ठावान रहे और उन्हे किसी प्रकार का लालच व प्रलोभन अपने उद्देश्य से पीछे नही हटा सका।

श्री गिरधारी सिंह का जन्म 30 जून 1928 को भरतपुर जिले के पैंथना ग्राम मे हुआ था। उनके पिता सूबेदार ठाकुर जुगलसिंह अपने पुत्र को उच्च शिक्षा दिलाना चाहते थे अत गाव से उन्हें पढने भरतपुर भेजा गया। उन्होने बी० ए० भरतपुर से किया और एल० एल० बी० जयपुर से। जब वह आठवी कक्षा मे पढ रहे थे उन दिनो मथुरा मे काग्रेस का अधिवेशन हुआ था। गिरधारी सिंह ने नेहरुजी और अन्य नेताओ को पहली बार वही देखा था। वही उन्हे राष्ट्रीय चेतना का बोध हुआ। फिर तो गिरधारी सिंह राष्ट्रीय गतिविधियो मे सक्रिय नेताओ के सपर्क मे बराबर आते गए।

जिस समय वह हाई स्कूल मे पढ रहे थे तब दूसरा महायुद्ध शुरु हो गया था। उनके पिताजी के मित्रो ने श्री गिरधारीसिंह को सेना मे कमिशन पद दिलवाने का आश्वासन दिया परन्तु उस समय 'काग्रेस ने नारा दिया था 'न एक सिपाही न एक पाई'। अत उन्होने सेना मे भर्ती होने से इकार कर दिया। श्री गिरधारी सिंह जब इटरमिडियेट मे पढ रहे थे तब उनका सम्पर्क सुभाष बाबू के फारवड ब्लाक के लोगो से हुआ। वे फारवड ब्लाक के एक अधिवेशन मे मथुरा गए जहा यह तय हुआ कि सुभाषचद्र बोस जिन्होंने भारत के बाहर जाकर फौज बनाली है और जो शस्त्रो के बल पर भारत को आजादी दिलाने को कटिबद्ध हैं वे जब भारत आवें तो उनका साथ दिया जाए। तय हुआ कि फौज मे भर्ती हुआ जाए और उचित मौको पर फौज मे विद्रोह कर दिया जाय। इस निर्णय के अनुसार गिरधारी सिंह भी कालेज छोडकर फौज मे भर्ती हो गए। फौज मे भर्ती हुए डेढ माह ही हुआ कि भारत छोडो आन्दोलन शुरु हो गया और उधर बाहर से सुभाष की फौजो के

कोई समाचार नही आए। अत. वह पन्द्रह दिन की छुट्टी लेकर भरतपुर चले आए। वहा अपने पुराने मित्र श्री रोशनलाल आर्य तथा अपने अन्य साथियो से मिले और भरतपुर सरकार तथा ब्रिटिश सरकार को नुकसान पहुचाने और उनके प्रशासन को ठप्प करने के लिए योजनाए बनायी जाने लगी। उन्होने और रोशनलालने बयाना स्टेशन लूटने तथा रेल की पटरी और टेलीफोन के तार आदि काटने का प्रोग्राम बनाया। उन्होने इन्ही कार्यो के लिए शहर मे पोस्टर लगाए। जिस समय पोस्टर आदि लगाने का काम चल रहा था तब पुलिस को पता चल गया और वह इनके पीछे लग गई।

श्री रोशनलाल आर्य को उनके होस्टल के कमरे मे गिरफ्तार कर लिया गया। परन्तु गिरधारी सिंह को दाल, बाजार मे पुलिस ने पकडा। उस समय तो गिरधारी सिंह पुलिस के एस पी थानेदार और सिपाहियो को धक्का देकर बच कर निकल गए। लेकिन वे रोशनलाल का पता लगाने उनके होस्टल के कमरे मे गए। वहा मालूम हुआ कि रोशनलाल गिरफ्तार हो चुके हैं और उनका कमरा शील कर दिया गया है। गिरधारी सिंह वहा से निकल ही रहे थे कि उन्हे पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। 14 दिन हवालात मे रखने के बाद 30 सितम्बर 42 को उन्हें सेवर जेल भेज दिया गया। गिरधारी सिंह पर भारत सुरक्षा कानून के अंतर्गत मुकदमा चला और दो-दो वर्ष की सजा तथा 200-200 रुपये जुर्माना और जुर्माना न देने पर 6-6 महीने की सजा दी गई। अपील मे दोनो सजाए साथ साथ काटने के तथा जुर्माना न देने के आदेश हुए। पूरी सजा काटने पर 23 जून 44 को 1 वर्ष 9 महीने के बाद गिरधारी सिंह जेल से मुक्त हुए।

जब प्रजामण्डल और भरतपुर सरकार मे समझौता हुआ तो सरकार रोशनलाल और गिरधारी सिंह को छोडने को तैयार नही थी। सरकार का कहना था कि ये दोनो हिंसात्मक और ध्वसात्मक कामो मे विश्वास करते है। बाद मे रोशनलाल तो छोड दिए गए परन्तु गिरधारी सिंह को पूरी सजा काट कर ही जेल से बाहर आना पडा।

जेल से छूटने के बाद गिरधारी सिंह फिर पढने मे लग गए। वे विद्यार्थियो के नेता बन गए। विद्यार्थियो ने कुछ मागें लेकर हडताल की। गिरधारी सिंह को एक सप्ताह कोतवाली की हिरासत मे रहना पडा। जब लार्ड वेवेल शिकार खेलने भरतपुर आए उस समय पुलिस ने गिरधारी सिंह को उनके कमरे मे सोते हुए जाकर गिरफ्तार कर लिया और 15 दिन जेल मे रख कर छोड दिया। उन्ही के प्रयत्नो से बेगार आन्दोलन मे किसानो के जत्थे के जत्थे सत्याग्रह करने के लिए आने लग गए थे।

कुछ दिन तक गिरधारी सिंह पचायतो के जिला निरीक्षक के सरकारी पद पर रहे। 3 वर्ष के बाद उन्होने त्याग पत्र दे दिया और वे सहकारी आन्दोलन मे लग गए। सात वर्ष तक वे भरतपुर केन्द्रीय सहकारी बैंक के अध्यक्ष रहे, और दो वर्ष तक भूमि बैंक के उपाध्यक्ष। इन्होने कृषि के नए तरीके अपना कर अपने गाव मे ही खेती की ओर ध्यान दिया है। आजकल वे अधिकाश अपने गाव मे ही रहते हैं और किसानो को उत्पादन बढाने के लिए कृषि के नए नए प्रयोग करने की ओर प्रवृत्त करते रहते हैं।

श्री गोरी शंकर मित्तल



श्री गौरीशकर मित्तल का जन्म 8 सितम्बर 1907 को भरतपुर मे हुग्रा । इनकी शिक्षा मामान्य ही हो सकी थी । 13 वर्ष की उम्र मे इन्होने ग्रपने पिता के कपडे की दुकान मम्हाल ली थी । उमी वर्ष कपडा वेचने मथुरा गए थे । तव इन्होंने गाधीजी द्वारा प्रज्वलित क्राति की मशाल के दर्शन किए ग्रौर उनके मन ने देश सेवा का मकल्प लिया । भरतपुर मे श्री गौरीशकर मित्तल ने प्रारम्भ मे कपडे की वुनाई का कार्य सीखने मे समय लगाया । फिर जनगणना विभाग मे कार्य करने लगे । 1922 मे स्थानीय कपडे वुनने के कारखाने मे काम किया । फिर अहमदावाद चले गए और किसी वर्फ के कारखाने मे नौकरी करली । वहा से आने वाद राज्य के एकाउन्टेन्ट जनरल के विभाग मे नौकरी करली । 1928 मे नगरपालिका के नए अध्यक्ष ने उन्हे नौकरी मे अलग कर दिया ।

1930 मे कुछ दिन श्री गौरीशकर मित्तल श्री गणेश शकर विद्यार्थी के मान्निध्य मे कानपुर मे रहे ग्रौर वही से उन्हें राजनैतिक चेतना प्राप्त हुई ग्रौर वही से वे भरतपुर मे राजनैतिक कार्य करने का सकल्प लेकर आए । श्री मित्तल ने भरतपुर मे समाचार पत्रो की एजेंसी का व्यवसाय शुरु किया और इस व्यवसाय के प्रसार से उन्होंने लोगो मे राजनैतिक चेतना लाने का कार्य शुरु किया । उन दिनो श्री मित्तल ने हिन्दी साहित्य समिति के पुस्तकालय के द्वारा स्वाध्याय करके अपनी ज्ञान वृद्धि की ।

भरतपुर मे उन दिनो आर्य समाज ग्रौर हिन्दी साहित्य समिति दो ही मस्थाए सक्रिय थी । श्री मित्तल इन दोनो सस्थाओ के साथ सबद्ध थे । वे इन सस्थाओ की गोष्ठियो और चर्चाओ मे भाग लेते । 1924 मे भरतपुर मे वाढ आई उसमे श्री मित्तल ने सेवा समिति की ओर से खूब काम किया 1932 मे सरकार ने गोकुलचन्द दीक्षित ग्रौर मदन मोहन लाल पोद्दार को गिरफ्तार किया । इसी प्रसग मे पुलिस ने श्री मित्तल को दिन निकलते ही थाने मे वुलाया और दिन भर भूखा प्यासा वही वैठा कर शाम को घर जाने दिया । यह क्रम कई दिन तक चलता गया । परन्तु अन्त मे उन्हें इस आश्वासन पर नित्य कोतवाली जाने मे मुक्ति मिली कि वे दीक्षित और पोद्दार के विरुद्ध पुलिस के पक्ष मे गवाही देगे । परन्तु जव ग्रदालत मे गवाह देने का अवसर आया तो उन्होने अभियुक्तो के पक्ष मे गवाही दे दी । पुलिस ने खीझकर इन्हें विद्रोही गवाह घोषित कर दिया ।

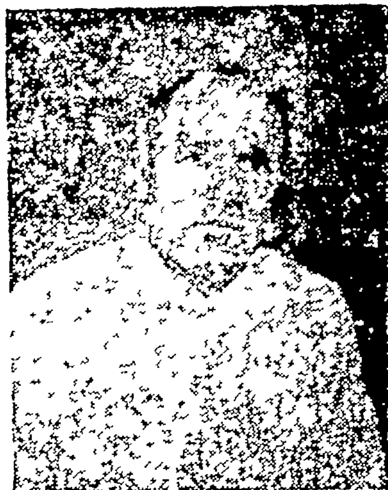
1935 मे श्री मित्तल ने समाचार पत्रो के साथ पुस्तको की दुकान खोलली। यह दुकान राष्ट्रीय विचारो के आदान प्रदान का प्रमुख केन्द्र वन गई। श्री मित्तल की दुकान काग्रेस की कोतवाली के नाम से प्रसिद्ध हो गई थी। 1937 मे भरतपुर राज्य के 1½ लाख जाटव (चमार) इसाई होने को तैयार हो गए थे। भरतपुर के मुख्य प्रशासक हैनकॉक ने उन्हें हर तरह का दवाव और प्रलोभन देकर इसाई बनाने को राजी कर लिया था तथा 4 फरवरी 37 को जवलपुर से बडे लाट पादरी वपितसमा देने आ गए थे। यह समाचार मिलते ही मास्टर आदित्येन्द्र, मास्टर फकीरचन्द और श्री मित्तल नदवई पहुचे। मास्टर फकीरचद ने लाट पादरी से ऐसे ऐसे सवाल किए कि वह वहा से भागकर भरतपुर चला गया। गाव वालो ने खुशी मे ताली वजाकर कहा कि गाधी वावा के आदमियो ने पादरी को हराकर भगा दिया। उन्होने कहा कि अव हम इसाई नही वनेगे और गाधी वावा की हरिजन सेवक समिति मे रह कर अपनी उन्नति करेंगे। श्री मित्तल 6 महीने तक उन जाटवो के बीच मे रहे और उनके पीने के पानी के कुओ, स्कूलो तथा अन्य सुविधाओ की व्यवस्था की।

राज्य के प्रशासक हैनकॉक श्री मित्तल पर आग वबूला हो उठा। उसने इन्हें सच्चे या झूठे किसी केस मे फमाने की पुलिस को हिदायत की। अत मे लाहौर की एक वीमा कम्पनी को फुसलाकर एक झूठा केस वनाया गया और श्री मित्तल को उसमे अभियुक्त वनाकर फास लिया और सात महीने तक जेल मे रखा। हैनकॉक का जव भरतपुर से स्थानातर हुआ तव ही श्री मित्तल जेल से छुट सके। 1937 मे जब नेहरुजी ट्रेन से इलाहावाद जाते समय भरतपुर स्टेशन से निकले तो श्री गोकुलजी वर्मा और श्री जगन्नाथ कक्कड के साथ श्री मित्तल नेहरुजी से मिले और उन्हे भरतपुर की स्थिति से अवगत कराया। नेहरुजी ने श्री कृष्ण दत्त पालीवाल के नाम उन्हे एक पत्र दे दिया। वे आगरा जाकर काग्रेस के सदस्यता की कापियें लाये और काग्रेस के सदस्य वनाने शुरु किए। श्री निशनलाल जोशी के प्रयत्नो से जो प्रजा मडल का सगठन बना था उसमे श्री मित्तल भी शामिल होगए और प्रजा मडल की मान्यता के लिए जो सत्याग्रह हुआ उसके पहले जत्थे मे ही श्री गौरीशकर मित्तल गिरफ्तार हो गए थे। उन्हें 1½ वर्ष की सख्त सजा दी गई। सजा होने के 4 दिन वाद श्री मित्तल को सन् 37 वाले केस मे भी 1 वर्ष की सजा और 500 रुपये जुर्माना किया गया। पुलिस श्री मित्तल की दुकान से हजारो रुपये का सामान उठा कर ले गई।

भारत छोडो आन्दोलन मे श्री मित्तल को 26 अगस्त की रात को 3 वजे गिरफ्तार कर लिया गया और भारत सुरक्षा कानून मे वे 2 महीने तक नजरवद रहे और प्रजापरिषद का सरकार से समझौता हो जाने पर 26 अक्टूबर को छोड दिये गये। सन् 47 मे वेगार विरोधी आन्दोलन मे श्री गौरीशकर मित्तल 22 जनवरी 47 को गिरफ्तार कर लिये गये जहा वे 17 अप्रेल 47 को जमानत पर रिहा हुए।

श्री गौरीशकर मित्तल इस तरह से भरतपुर के एक पुराने कार्यकर्ता रहे हैं। वे आज काग्रेस के या किसी दल के सदस्य नहीं हैं। गाधीजी के सत्य और अहिसा मे उनका पूरा विश्वास है। उनकी मान्यता है कि गाधीजी के सिद्धान्तो से ही भारत सुख, शाति और समृद्धि प्राप्त कर सकता है।

श्री घनश्याम शर्मा, नदबई



श्री घनश्याम शर्मा का जन्म भरतपुर जिले के पिंगोरा ग्राम मे प० भोदूराम शर्मा के घर सन् 1921 मे हुआ। उनकी प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा उज्जैन मे हुई। 14 वर्ष की अवस्था मे उन्होने अपनी स्कूल छोड दी और स्वतन्त्रता सग्राम मे कूद पडे। वे उज्जैन से भरतपुर आ गये और विद्यार्थी-काल मे देश सेवा के जो सस्कार उन्होने प्राप्त किए थे उसी अनुसार कार्य करने लग गये। 1933 मे विशेष इटेलिजेन्स फोर्स की रिपोर्ट के आधार पर एक विशेष अदालत मे श्री घनश्याम शर्मा पर 124 ए राजद्रोह का अभियोग लगाकर मुकद्दमा चलाया गया। भरतपुर के सगठित जनमत ने जब इस मुकद्दमे का जोर शोर से विरोध किया तो सरकार ने वह मुकद्दमा तो वापस ले लिया लेकिन श्री घनश्याम की बढती हुई लोकप्रियता और उनके बढते हुए प्रभाव को देखकर सरकार ने उन्हे अक्टोबर 1939 मे गिरफ्तार करके जेल भेज दिया। फिर तो उनके जीवन मे स्वतन्त्रता सग्राम मे जेल जाने का सिलसिला चलता ही गया।

भारत छोडो आन्दोलन के समय उन्होने क्रातिकारी युवक परिषद नाम की एक गुप्त सस्था को जन्म दिया और उसके माध्यम से उन्होने भारत छोडो आन्दोलन मे तोड-फोड और सरकारी मशीनरी को ठप्प करने की प्रवृत्तियो को लम्बे समय तक चलाया परन्तु अन्त मे श्री घनश्याम शर्मा भी गिरफ्तार हो गए और उन्हे जेल भेज दिया गया। उसके बाद 1945, 1946 और 1947 मे भरतपुर प्रजा परिषद के आन्दोलन मे श्री घनश्याम शर्मा को बराबर जेल की यातनाए भुगतनी पडी हैं।

श्री घनश्याम शर्मा 1945 मे गठित बृज जया समिति के सदस्य निर्वाचित हुए थे और जब तक यह प्रतिनिधि सभा रही तब तक वे उसके सदस्य रहे। भरतपुर राज्य प्रजा परिषद की कार्यकारिणी मे श्री घनश्याम शर्मा स्वाधीनता प्राप्ति तक बराबर सदस्य रहे। बाद मे वे जिला काग्रेस और प्रदेश काग्रेस कमेटी के सदस्य रहे।

1960 से उनकी अभिरुचि कृषक हितकारी सहकारी आन्दोलन की ओर प्रेरित हुई कि जिससे वे कृषक वर्ग की सेवा कर सकें। सहकारी आन्दोलन मे सक्रिय योग दान देते हुए वे नदबई क्रय विक्रय सहकारी समिति लि० के अध्यक्ष चुने गए एव केन्द्रीय सहकारी बैंक तथा अन्य सहकारी सस्थाओ के सचालक मण्डल मे काफी समय से सदस्य चले आ रहे हैं। नदबई मे कृषि उपज मण्डी समिति के वे जन्म से ही सदस्य हैं।

उनका पता है—नदबई क्रय-विक्रय सहकारी समिति, नदबई, जिला भरतपुर।

श्री जगन्नाथ प्रसाद कक्कड़



जन्म—2 अप्रेल, 1911

वर्तमान पता—मोहल्ला अटलवन्द, भरतपुर

श्री जगन्नाथ कक्कड भरतपुर के एक पुराने, निष्ठावान और सिद्धान्तवादी लोक सेवक हैं। वे भरतपुर मे भरतपुर राज्य प्रजा मण्डल के संस्थापकों मे से एक रहे है। वे समझौते की राजनीति मे विश्वास नही करते। भरतपुर राज्य और प्रजा मण्डल के नेताओ के बीच जो समझौता हुआ था और जिसके द्वारा प्रजा मण्डल को गैर कानूनी घोषित करके प्रजा परिषद को सरकार ने मान्यता दी थी, उस समझौते का सबसे कडा विरोध श्री जगन्नाथ कक्कड ने किया था और उसी दिन से भरतपुर की राजनीति मे दलवन्दियें वनने लग गई थी। प्रजा परिषद की समझौतावादी नीति के कारण श्री कक्कड ने भरतपुर मे किसान सभा की स्थापना की थी जो आगे जाकर लाल झण्डे की किसान सभा के नाम से प्रसिद्ध हुई। भरतपुर मे कांग्रेस का तिरगा झण्डा सबसे पहले श्री जगन्नाथ कक्कड ने ही फहराया था और आगे जाकर कम्युनिस्ट पार्टी का लाल झण्डा भी भरतपुर मे उन्ही के हाथो से फहराया गया।

श्री जगन्नाथ कक्कड का जन्म अप्रेल 1911 मे अजमेर के खटोला पोल मोहले मे हुआ था। उनका ननिहाल भरतपुर मे था। वे वचपन मे ही अपने नाना श्री मुरलीधरजी के पास भरतपुर मे रहे थे। श्री जगन्नाथ कक्कड के नाना आर्य समाजी थे और वे नित्य ही आर्य समाज मन्दिर जाया करते थे। आर्य समाज मन्दिर मे घुड चढा रिसाले के स्वर्गीय सांवलसिंह और पुलिस के सब इसपेक्टर श्री गया प्रसाद चतुर्वेदी के साथ उनके नाना की चर्चाए होती रहती थी। ये दोनो व्यक्ति कट्टर राष्ट्रवादी थे। श्री जगन्नाथ कक्कड पर इन व्यक्तियो का गहरा प्रभाव पडा। श्री निरजन शर्मा अजीत, श्री चक्खनलाल (सत्यभक्त) और वैद्य दयालचन्द के विचारो मे भी वालक जगन्नाथ ने सदा कार्य करने की प्रेरणाए ली थी।

श्री जगन्नाथ दास अधिकारी की प्रेरणा से दफेदार सावलसिंह और श्री गयाप्रसाद चतुर्वेदी ने एक स्वयसेवक दल वनाया था जो सेवा कार्यो का सचालन करता था। श्री कक्कड

अपनी 13–14 वर्ष की आयु मे इस दल मे सम्मिलित हो गये और 1924 मे बाढ पीडितो की सेवा मे काम किया।

श्री जगन्नाथ कक्कड की सार्वजनिक प्रवृत्तियो के कारण शिक्षा अधिकारी उन्हे स्कूल से निकालने का कोई उपाय ढूढ रहे थे। उन्हे बताया गया कि उन्हे सक्रामक रोग है अत वे 4 महीने की छुट्टी ले लें। चार महीने का उन्होने अवकाश ले लिया और चिकित्सा करवाई। छुट्टी पूरी होने पर वे स्कूल गये लेकिन उन्हे किसी भी स्कूल मे प्रवेश नही दिया गया। उनकी शिक्षा बीच मे ही रुक गई।

सन् 1930–31 मे जब देश मे नमक सत्याग्रह चल रह रहा था उस समय श्री जगन्नाथ कक्कड ने राष्ट्रीय युवक दल की अपने निवास पर स्थापना की। कार्यालय पर तिरगा झडा लगा दिया और कार्यालय मे राष्ट्रीय नेताओ के चित्र फ्रेममे मडाकर टाग दिये। राष्ट्रीय पुस्तको का सग्रह करके युवको मे उनका प्रचार प्रसार शुरू कर दिया तथा नित्य की बैठको मे देश के समाचारो की चर्चा और सत्याग्रह मे भाग लेने की योजना पर विचार विनिमय होने लगा। भरतपुर के नौजवान इस दल की ओर तेजी से आकर्षित हो रहे थे। एक दिन कौंशिल के सीनियर मिनिस्टर राव राजा रघुनाथसिंह जगन्नाथ कक्कड के राष्ट्रीय युवक दल मे दलबल सहित जा पहुचे और कर्नल गिरधारीसिंह के द्वारा वहा की तलाशी लिवा कर तथा सारा सामान उठा कर अपनी गाडी मे रखवा दिया और जगन्नाथ कक्कड को भी साथ ही गाडी मे ले गये तथा उन्हे कोतवाली मे बिठा दिया गया। राष्ट्रीय युवक दल के अन्य प्रमुख सदस्यो को भी पकड कर कोतवाली लाया गया और रात को २ बजे जमानत पर उन्हे घर जाने दिया गया।

1931 के अन्तिम दिनो मे श्री जगन्नाथ कक्कड दिल्ली चले गये थे। वहा उनका क्रातिकारियो से सम्बन्ध हो गया। उन्होने भरतपुर मे तोडेदार बन्दूकें लाने का प्रस्ताव उनके आगे रखा। वे भरतपुर मे ताडेदार बन्दूकें गुप्त तरीके से दिल्ली पहुचाने लग गए। जनवरी 32 के अतिम सप्ताह मे श्री जगन्नाथ इसी काम के लिए भरतपुर आए हुए थे। 29 जनवरी को उन्हे गिरफ्तार करके कोतवाली मे बन्द कर दिया गया और रात के दो बजे उन्हे अमानवीय क्रूरता से तरह-तरह की शारीरिक यातनाए देकर पुलिस ने जानना चाहा कि वे बन्दूकें दिल्ली मे किसे देते हैं ? सी आ डी आफिस मे उन्ही दिनो फाइलो की चोरी हो गई थी और श्री कक्कड को पूछा गया कि उन्हे इस सम्बन्ध मे क्या जानकारी है ? तीन दिन की यातनाओ के बाद भी जब पुलिस को कोई सुराख न मिला तो श्री कक्कड को जेल भेज दिया गया। इस बार श्री कक्कड को 6 महीने फासी वाली कोठरी मे रखा गया। पौने सात महीने बाद उन्हे पैरोल पर रिहा किया गया। इसी प्रकार 1933–34 मे जाप्ता फौजदारी की धारा 107–108 मे उन्हे गिरफ्तार करके जेल भेज दिया और 1 महीने बाद मकदमा चला'

1937 मे श्री जगन्नाथ कक्कट ने श्री गोकुल जी वर्मा के साथ आगरा जिला कांग्रेस के अंतर्गत भरतपुर काग्रेस मण्डल की स्थापना की और कांग्रेस की सदस्यता का अभियान तेजी मे चलाया। 3 नवम्बर 37 को उन पर झूठा मुकद्मा बना कर गिरफ्तार कर लिया गया।

1938 मे हरिपुरा काग्रेस के बाद आगरा की शुद्धि सभा मे भरतपुर प्रजा मण्डलकी स्थापना के लिए श्री किसनलाल जोशी ने एक बैठक बुलाई। भरतपुर से श्री जगन्नाथ कक्कड, बाबा दूधाहारी, ठा० देशराज प० हुकुमचन्द आदि उपस्थित थे। इस बैठक मे भरतपुर राज्य प्रजा मण्डल की स्थापना की गई और उसकी रूपरेखा तैयार की गई। भरतपुर सरकार ने प्रजा मण्डल को मान्यता देने से इकार कर दिया। परिणाम था सत्याग्रह। इस सत्याग्रह मे श्री जगन्नाथ कक्कड 11 मई 1939 को गिरफ्तार हुए। उन्हे 18 महीने की सजा दी गई। अन्त मे राज्य और प्रजा मण्डल के नेताओ मे समझौता हुआ। प्रजा मण्डल के स्थान पर समझौते मे प्रजा परिषद नाम स्वीकार किया गया। श्री कक्कड ने इस समझौते का विरोध किया और कहा कि मुझे जेल मे रहना मजूर है परन्तु मैं अपनी सस्था का नाम बदलना पसद नही करूगा। श्री कक्कड ने कहा कि जब तक मेरा एक भी साथी जेल के अन्दर रहेगा मै समझौते को स्वीकार नही करता। समझौते वादियो से श्री कक्कड का यही से विरोध शुरू हो गया। यही से भरतपुर मे राजनैतिक कार्यकर्त्ता दो भागो मे अलग-अलग बटने लग गए।

1944 मे जब श्री किसनलाल जोशी ने किसान नाम का एक साप्ताहिक पत्र भरतपुर से शुरु किया तो श्री जगन्नाथ कक्कड उस पत्र के सहायक सपादक बनाए गए। पत्र ने बीकानेर के दूधवाखारा किसान आन्दोलन का जोरो से समर्थन किया। इसी तरह बूदी के लोक आन्दोलन को भी बहुत बल पहुचाया। फलत दोनो राज्यो मे पत्र का प्रवेश निषिद्ध हो गया।

श्री जगन्नाथ कक्कड ने 1945 मे अपने मकान पर हंसिये हथोडे वाला लाल झडा फहराना शुरु कर दिया और उनकी किसान सभा लाल झडे वाली किसान सभा कहलाने लगी।

1947 मे घना केवल देह मे जल मुर्गियो के शिकार के लिए वायसराय लार्ड वेवेल और बीकानेर के महाराजा आने वाले थे। मुर्गाबियों के शिकार मे जाटव लोगो को बेगार मे पकड़ा जा रहा था। इस अवसर पर सभी पार्टियों ने बेगार का विरोध करने का निश्चय किया। बीकानेर महाराजा के भरतपुर स्टेशन पर उतरते ही उन्हे कई लोगो ने काले झडे दिखाए और जगन्नाथ कक्कड़ ने नारे लगाए 'सादूल सिह गो बैक।' पुलिस ने भयंकर लाठी चार्ज किया। कई लोगो के संगीन चोटें आई और श्री जगन्नाथ कक्कड़ भी लाठी चार्ज मे जख्मी हो गये।

इस घटना के बाद सभी सस्थाओ ने किले के दरवाजे पर घेराव डाल दिया जिससे सभी सरकारी काम काज ठप्प हो गया। लेकिन जब स्थिति अधिक बिगड़ने लगी

तब एक दिन राजा बच्चूसिंह ने घेराव डालने वाली जनता पर घोड़े दौड़ाए। सैंकड़ो लोग घायल हो गए। घायलो को अस्पताल मे ही गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया। शहर मे धारा 144 लगादी गई। श्री जगन्नाथ कक्कड़ गिरफ्तार करके छोड दिए गए। लेकिन उन्हें बाद मे धारा 188 के अतर्गत गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया। वहां से श्री कक्कड जमानत पर बाहर आए और समाचार पत्रो को भरतपुर के समाचारो से भर दिया। कम्युनिस्ट पार्टी के जन युग ने भरतपुर के मामले को बहुत ही जोरो से उठाया था। इसी बीच श्री कक्कड पुन गिरफ्तार कर लिए गए।

30 जनवरी 48 को गाधीजी की हत्या हो गई। भरतपुर मे भारत सरकार ने प्रशासक नियुक्त कर दिया। केन्द्रीय गृह मत्रालय ने प्रशासक के साथ राज्य मे पुलिस के नए महा निरीक्षक को केन्द्र से भेजा। श्री जगन्नाथ कक्कड की सूचनाओ के आधार पर राज्य की पुलिस के पहले वाले महा निरीक्षक और उनके ड्राइवर गिरफ्तार किए गए और उनकी ही सूचनाओ के आधार पर महाराजा द्वारा सग्रहित घना केवला के जलाशय मे तथा अन्य स्थानो मे गोला बारुद वगैरा बरामद किए गए।

इस तरह से श्री जगन्नाथ कक्कड का सपूर्ण जीवन अथक सघर्ष की कहानी है, जिसमे कही समझौता नही है, विराम नही है, रुकावट नही है। आज भी यह वृद्ध युवा सत्ता और काग्रेस से सघर्ष मे सलग्न है।

श्री जुगलकिशोर चतुर्वेदी



जन्म —8 जून 1904

वर्तमान पता—प्रियवदा सदन

सी स्कीम, जयपुर

श्री जुगल किशोर चतुर्वेदी का जन्म 8 नवम्बर 1904 को मथुरा जिले के गोंव ग्राम मे हुआ था । उनकी शिक्षा मथुरा, भरतपुर और जयपुर मे हुई है। जयपुर के महाराजा कालेज से उन्होने इटरमिडियेट को परीक्षा पास करके मथुरा मे माथुर चतुर्वेदी विद्यालय मे प्रधान अध्यापक का कार्य कर लिया था। 1926 से 31 तक मथुरा मे अध्यापक थे । कुछ दिन चतुर्वेदीजी ने रेल्वे मे नौकरी की थी लेकिन वहा से जल्दी ही छटनी मे आ गए थे । मथुरा मे उन्होंने नमक सत्याग्रह मे भाग लिया था लेकिन गिरफ्तार नही हो सके। 1931 से 1939 तक उन्होने रेवाडी मे ट्यूशनें करने मे अपना अधिक से अधिक समय लगाया। बाद मे वे अहीर स्कूल रेवाडी मे हिन्दी और धर्म के शिक्षक हो गए थे तब उन्हे ट्यूसनें कम करनी पडती थी ।

1938 मे हरिपुरा कांग्रेस के बाद डीग के श्री किशन लाल जोशी ने आगरा की शुद्धि सभा मे भरतपुर राज्य प्रजा मण्डल की स्थापना करने का निश्चय किया था। श्री किशनलाल जोशी ने रेवाडी पहुच कर श्री गोपीलाल यादव, मास्टर आदित्येन्द्र और जुगल किशोर चतुर्वेदी को प्रजामण्डल की अपनी योजना बताई और उन्हे शामिल होने के लिए प्रेरित किया। ठाकुर देशराज, प० रेवती शरण और किशनलाल जोशी की प्रेरणा से रेवाडी के उक्त अध्यापक वर्ग ने साथ मिलकर प्रजामण्डल की स्थापना की । इस समय तक श्री जुगल किशोर चतुर्वेदी प्रत्यक्ष रूप से सक्रिय राजनीति मे नही आए थे । 1939 मे जब प्रजामण्ल की मान्यता के लिए भरतपुर मे सत्याग्रह छेडा गया तब उन्हे रेवाडी की अहीर स्कूल को अध्यापकी से अपना त्याग पत्र देना पडा ।

श्री जुगल किशोर 1939 के प्रजामण्डल की मान्यता के सत्याग्रह का सचालन करने मे लगे हुए थे। जिस दिन उन्हे डिक्टेटर बन कर सत्याग्रह करना था उसी दिन नेताओ और सरकार के बीच समझौता हो गया और वे जेल नही जा सके। समझौते मे प्रजामण्डल के स्थान पर प्रजापरिषद को मान्यता दी गई थी ।

1 जनवरी 1940 को भरतपुर मे प्रजा परिषद के कार्यालय की स्थापना हुई। दिसम्बर 40 के अंतिम सप्ताह मे राज्य का पहला राजनैतिक सम्मेलन लोक नायक जयनारायण व्यास की अध्यक्षता मे हुआ और भरतपुर मे प्रजा परिषद का सदेश गाव-गाव मे पहुचने लगा। श्री जुगल किशोर चतुर्वेदी 1940 मे भरतपुर नगर पालिका के सदस्य चुने गए लेकिन 1½ वष बाद भारत छोडो आन्दोलन शुरु हो गया और चतुर्वेदीजी ने नगर पालिका को त्यागपत्र देकर अपने आपको अगस्त क्रान्ति के आन्दोलन मे लगाया।

10 अगस्त 1942 को श्री जुगल किशोर चतुर्वेदी भररपुर मे गिरफ्तार कर लिए गए। उसके बाद सर्वश्री जगपति सिंह ठाकुर, जीवाराम, प० रेवती शरण, मास्टर आदित्येन्द्र और रमेश स्वामी भी गिरफ्तार कर लिए गए थे। भारत छोडो आन्दोलन तेजी मे चल रहा था। लेकिन आन्दोलन कारियो को गिरफ्तार करके उन्हे ले जाकर जगल मे छोड दिया जाता था। उन्हे जेल नही भेजा गया।

श्री जुगल किशोर चतुर्वेदी 2½ महीने बाद जेल से छोड दिए गए। भरतपुर राज्य मे बाढ आ गई थी और उन्होने जेल से आन्दोलन को स्थगित करके कार्यकर्ताओं को बाढ पीडितो की सहायता करने के लिए आह्वान किया था।

1943 मे भरतपुर मे व्रज जया प्रतिनिधि सभा की स्थापना की घोषणा कर दी गई। श्री जुगल किशोर चतुर्वेदी निर्वाचित होकर व्रज जया प्रतिनिधि सभा में आ गए। वे अपने दल के नेता थे। इस समिति के द्वारा प्रजा परिषद का कुछ समय तक राज्य के साथ सम्बन्ध ठीक रहा परन्तु प्रजा परिषद ने जनता के अभाव अभियोगो के निवारण करने की ओर शासनमे अधिकाधिक अधिकार देने की माग की। कि शासन ने उनकी उतनी ही उपेक्षा करनी शुरु करदी। प्रजा परिषद ने व्रज जया परिषद के बहिष्कार का निर्णय लिया और राज्य मे फिर दमन का चक्र शुरु हो गया। श्री जुगल किशोर चतुर्वेदी कामा से डीग आते हुए मार्ग मे गिरफ्तार कर लिए गए और हथकडी पहना कर तागे मे उन्हे भरतपुर लाकर जेल मे डाल दिया गया। न्याय का नाटक करने को अदालत मे मुकदमा चला और श्री चतुर्वेदी को 1 वर्ष की सजा और 200 रुपये जुर्माना किया गया परन्तु कुछ ही दिन बाद महाराजा से समझौता हो गया और वे जेल से मुक्त हो गए।

भरतपुर मे 1939, 42, 45, 46 में जो आन्दोलनो का सिलसिला शुरु हुआ उसकी समाप्ति 47 के बेगार विरोधी भीषणतम आन्दोलन के साथ हुई। लार्ड वेवेल और बीकानेर महाराजा मुर्गाबियो का शिकार खेलने आए थे। इसके लिए जाटवो को जबरन बेगार में लाया जा रहा था। उसके विरोध में यह आन्दोलन भयकर जोर पकडता गया। प्रजा परिषद ने समस्त सरकारी काम काज ठप्प करने के इरादे मे शहर के बीचो बीच स्थित किले के दरवाजे के सामने धरना देना आरम्भ कर दिया ताकि किले के अन्दर स्थित न्यायालयो मे और कार्यालयो मे न अधिकारी जा सकें और [न जनता। राजा बच्चूसिह ने अश्वारोही सेना को भीड पर दौडाया और लोगो पर बल्लम बछियो से आक्रमण किए। किले के सामने खून की होली खेली गई। आन्दोलन के सिलसिले मे रमेश स्वामी की हत्या की गई थी।

श्री जुगल किशोर चतुर्वेदी इस नृशसता पूर्ण दमन की सूचना, काग्रेस, उच्च सत्ता और अतरीम केन्द्रीय सरकार को देने गए थे। श्री जुगल किशोर चतुर्वेदी यह बेगार विरोधी आन्दोलन भरतपुर के बाहर रह कर चलाते गए। उनका वारट था पर वे भरतपुर ही नही गए। देश की स्वाधीनता के बाद सितम्बर 47 मे उनका वारट रद्द हुआ तब वे भरतपुर आए।

16 मार्च 48 को मत्स्य सघ की स्थापना की गई जिसमे अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली राज्य शामिल किए गए। श्री जुगल किशोर चतुर्वेदी मत्स्य संघ के उप प्रधान मत्री बनाए गए। 14 महीने तक मत्स्य सघ का कार्य करने के बाद मत्स्य सघ का भी विशाल राजस्थान सघ मे विलय हो गया। विशाल राजस्थान बन जाने के बाद श्री जुगल किशोर चतुर्वेदी प्रदेश काग्रेस के महामन्त्री बनाए गए।

25 अप्रेल 51 को जब लोक नायक जय नारायण व्यास के नेतृत्व मे राजस्थान का मत्री मण्डल बना तब श्री जुगल किशोर चतुर्वेदी सार्वजनिक निर्माण और पुर्नवास मन्त्री बनाए गए।

उसके बाद श्री जुगल किशोर चतुर्वेदी प्रदेश कांग्रेश के 3 वर्ष तक प्रधानमत्री रहे। उन्होने उन्ही दिनो राष्ट्रदूत के सम्पादक का कार्य भी किया। 1961 मे उन्होने काग्रेस से त्याग पत्र दे दिया। काग्रेस से पृथक होकर श्री जुगल किशोर चतुर्वेदी ने लोकराज्य परिषद की स्थापना की और उसे सारे प्रात मे फैलाना चाहा परन्तु कुछ समय के बाद जब समाजवादी और प्रजा समाजवादी दलो का एकीकरण होकर सयुक्त समाजवादी दल बना तब समान विचार और कार्यक्रमो की दृष्टि से लोकराज्य परिषद का भी उसी मे विलय कर दिया गया परन्तु श्री चतुर्वेदी समाजवादी पार्टी मे नही गए।

जब काग्रेस का विभाजन हुआ तब श्री जुगल किशोर चतुर्वेदी राजस्थान सगठन काग्रेस मे सम्मिलित हुए और उसके प्रधान मत्री भी बने परन्तु उस सस्था के साथ भी उनका समन्वय नही हो सका। उस सस्था की रीति नीति और कार्यकर्ताओ के व्यवहार से असतुष्ट होकर उससे भी पृथक हो गए।

सभी राजनैतिक दलो से सम्बन्ध तोडने के अनन्तर अपने विचारो के प्रचार के लिये 13 अप्रेल 71 से श्री जुगल किशोर चतुर्वेदी ने लोक-शिक्षक नामका एक पाक्षिक पत्र निकालना शुरु किया है जिसमे प्राय गाधी विचारधारा के लेख व रचनाए प्रकाशित होती है। वे इसके अतिरिक्त नशाबन्दी और हिन्दी प्रचार प्रसार के कार्य मे भी सक्रिय रुप से भाग ले रहे हैं।

श्री मास्टर फकीरचन्द



श्री मास्टर फकीरचन्द का जन्म 1907 मे भुसावर मे हुआ था। उनके पिता वैदिक धर्म के अनुयायी थे और समाज सुधार के कामो मे लगे रहते थे। स्वभावत पिता के विचारो का प्रभाव पुत्र पर पडा। जब वे हाईस्कूल के छात्र थे, तभी भरतपुर के समाज सुधारको के सम्पर्क में आये। स्व० श्री जगन्नाथदास अधिकारी के निर्देशन मे दलितोद्धार का अभियान गतिमान था। इस अभियान मे अछूतो को मन्दिर प्रवेश तथा कुओ पर अपने हाथ से पानी भरने पर जोर दिया जा रहा था। मास्टर फकीर चन्द ने अपने को इस अभियान मे समर्पित कर दिया था। इन्ही दिनो मिस सैण्डर्स नामक एक अमरीकी इसाई महिला मिशनरी गाव-गाव मे घूम कर ईसाई पन का प्रचार कर रही थी।

इसी सन्दर्भ मे नदबई तहसील मे वहा के डेढ लाख चमारो को सामूहिक रूप से ईसाई धर्म की दीक्षा देने की व्यवस्था की गयी। इसके लिए जबलपुर से लाट पादरी को बुलाया गया। ज्योही यह समाचार भरतपुर के समाज सुधारको को मिला—मास्टर फकीर चन्द को स्थिति का जायजा लेने हेतु वहा भेजा गया। मास्टर फकीरचन्द तत्परता से वहा पहु चे, और लाट पादरी से शास्त्रार्थ करने लगे। नतीजा यह हुआ कि लाट पादरी निरुत्तर होकर वहा से चला गया, और डेढ लाख चमारो (जाटवो) ने ईसाई बनने से इन्कार कर दिया। इस स्थिति से छुटकारा पाकर मास्टरजी ने अजमेर के श्री राम नारायण चौधरी से सम्पर्क किया और उनके निदेशानुसार भरतपुर मे हरिजन सेवक समिति की स्थापना की,जिसमे श्री गोकुलजी वर्मा, तथा श्री आदित्येन्द्र जी आदि ने उल्लेखनीय योग दिया।

1930 मे गाधीजी द्वारा नमक आन्दोलन शुरु करने पर मास्टर फकीरचन्द का झुकाव राजनीति की ओर हुआ। 1937 मे आगरा जिला काग्रेस के अन्तर्गत भरतपुर मे भरतपुर काग्रेस मण्डल की स्थापना हुई। मास्टर फकीरचन्द ने अपने को इसमे पूरी तरह से खपा दिया था। इन्ही दिनो उन्होंने दर्जी का काम शुरु किया तथा विद्यार्थियो को पढाने लगे। अग्रेज दिवान रिचर्ड टाटनहम को उनकी प्रवृत्तिया सहन नही हुई। मास्टर फकीरचन्द आगरा चले गए।

1939 के आन्दोलन मे मास्टर फकीरचन्द ने दूसरे जत्थे का नेतृत्व किया और गिरफ्तार हुए। वे जेल के नियमो का पूर्णतया पालन करते और जेल अधिकारियो पर उनकी सत्यनिष्ठा का प्रभाव था। 1939 के अंतिम दिनो मे सभी सत्याग्रही रिहा कर दिए गए। किन्तु जिस समझौते के अन्तर्गत रिहाई हुई—उसमे वे अत्यन्त ही खिन्न व उदविग्न हो गए थे, और उन्होंने अपने को बिल्कुल तटस्थ बना लिया था। 1947 के बेगार विरोधी आन्दोलन मे भी उन्हें गिरफ्तार किया गया। 1949 मे उनका निधन हो गया।

श्री मदन मोहन लाल पोद्दार

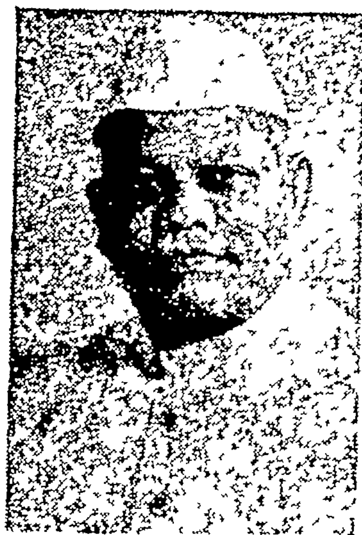


श्री मदन मोहन लाल पोद्दार का जन्म भरतपुर के प्रतिष्ठित अग्रवाल वैश्य परिवार मे 1913 मे हुआ था। उनके पिता श्री हजारी लाल पोद्दार आनरेरी मजिस्ट्रेट व म्युनिसिपल कमिश्नर थे और महाराजा किशन सिंह के बहुत समीप थे। 1928 के बाद मास्टर श्री आदित्येन्द्र के सम्पर्क मे आकर श्री मदन मोहन लाल पोद्दार का झुकाव राजनीति की ओर हुआ। 1932 मे मास्टरजी व पोद्दारजी के घरो की एक साथ तलाशिया हुई। उसी रात उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया। उस समय उनकी आयु उन्नीस वर्ष की थी। छह महीने तक सत्र न्यायालय मे मुकदमा चला, और उन्हे जेल मे तन्हाई मे रखा गया। इस्तगासे मे कहा गया कि अभियुक्त ब्रिटिश भारत मे राजनैतिक प्रवृत्तियो मे भाग लेता है और नेताओ से उसका सम्बन्ध है, अभियुक्त ने नौजवान भारत सभा की स्थापना की जिसे नवयुवक दल की सज्ञा दी गयी है। अभियुक्त ने नागरिक अवज्ञा आन्दोलन मे एक जत्था अजमेर भेजा है। लेकिन, क्योकि अभियुक्त छह महीने तक जेल मे रह चुका है, अत उसे अदालत उठने तक की सजा व पाच सौ रुपया जुर्माना किया जाता है—अदम अदायगी छह महीने की सजा। 1934 मे उन्हे पुन गिरफ्तार किया गया।

श्री मदन मोहन लाल पोद्दार प्रजामण्डल, प्रजापरिषद व काग्रेस मे लगातार काम करते रहे हैं। 1934 की गिरफ्तारी के बाद भी वे कई बार जेल गये। भरतपुर के डकैती सम्बन्धी वारन्ट के आधार पर आगरा मे पण्डित रेवती शरण के साथ उन्हे भी गिरफ्तार किया गया। इससे आगरा काग्रेस मे खलबली मच गई। अन्तत दस-बारह दिन बाद स्वर्गीय गोविन्द वल्लभ पन्त के आदेश से भरतपुर के वारन्ट पर अमल नही होने दिया गया, और उन्हें रिहा कर दिया गया। 1947 के आन्दोलन मे उन्हे एक माह तक भरतपुर जेल मे रखा गया।

स्वाधीनता प्राप्ति के उपरान्त भी वे लम्बे वक्त तक काग्रेस मे काम करते रहे। 1948 मे जब भरतपुर नगरपालिका मे प्रशासक नियुक्त किया गया तो पोद्दारजी उसके सलाहकार बनाये गये। इस पद पर वे आठ वर्ष बने रहे। इसके अतिरिक्त भी श्री मदन मोहन लाल पोद्दार अनेक सार्वजनिक व जनहितकारी सस्थाओ से सम्बद्ध हैं। आप प्रमुख हिन्दी सेवी सस्था के उपाध्यक्ष हैं और अग्रवाल विद्या मन्दिर व अग्रवाल सिलाई केन्द्र के अध्यक्ष हैं। स्वतन्त्रता से पूर्व उनके परिवार का व्यवसाय सरकारी ठेकेदारी था, जो स्वाधीनता सग्राम के दौरान मे सर्वथा ही समाप्त हो गया।

श्री मदन मोहन लाल पोद्दार एक सत्यनिष्ठ, सेवाभावी और आदर्शवादी व्यक्ति हैं। उन्होने हमेशा अन्याय व अत्याचार के विरुद्ध सघर्ष किया है। स्वाधीनता सग्राम मे उन्होने अपने परिवार की भी चिन्ता नही की।



श्री राज बहादुर

जन्म— सन् 1912

वर्तमान पता— 19 अकबर रोड,

नयी दिल्ली

यह 1920-21 की बात है। अ ग्रेजो की जर्मनी पर विजय के उपलक्ष्य मे स्कूल मे तमगे बाटे गए थे। बच्चो ने तमगे ले तो लिए पर छुट्टी होने पर वे उन्हे अपने जूतो मे बाधकर भरतपुर शहर के बाजार मे जुलूस बनाकर निकले। बालको के मनमे विदेशी शासको के खिलाफ जो गहरी कसक थी, यह प्रदर्शन उसकी सार्वजनिक अभिव्यक्ति था। उन्ही बालको मे से एक राजबहादुर थे। उस समय इनकी उम्र 8-9 वर्ष की थी। इनके मनमे अ ग्रेजो के प्रति शैशवकाल मे ही विद्रोह की चिनगारी सुलग रही थी। घर मे लगे सुन्दर कलेण्डर को इन्होने इसलिए फाड दिया था कि उसमे जार्ज-पचम और मलिका की तस्वीरें थी।

कुछ वर्ष बाद भारत भर मे आजादी की माग प्रबल हो उठी थी। सन् 1929 मे रावी के किनारे काग्रेस ने देश को पूर्ण स्वराज्य दिलाने की प्रतिज्ञा ली थी और युवको मे क्रातिकारी उपायो से देश को स्वाधीन कराने का आन्दोलन जोर पकड रहा था। तब तक श्री राजबहादुर भरतपुर से जयपुर चले गए जहा इनके पिता श्री सुन्दर लाल जी भरतपुर मे नौकरी छूट जाने के बाद रहने लगे थे। वही डा० कैलाश (जो 1971 से ससद सदस्य हैं) ने इन्हे हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी का सदस्य बनाया। उस दल की परम्परा के अनुसार इन्होंने अपना अ गूठा चीर कर रक्तसे सदस्यता का फार्म भरा। पर नए सदस्यो मे से एक के भेदिया निकल जाने पर दल भग कर दिया गया। इसी प्रकार की एक घटना कुछ वर्ष बाद हुई जब कि ये आगरा मे बी० एस० सी० के छात्र थे। करीब 2 वर्ष बाद इन्हें और इनके कुछ मित्रो को सशस्त्र सगठन बनाने की धुन सवार हुई इन्हीं के शब्दों मे—

"योजना यह थी कि शस्त्र लूट कर भगतसिह को छुडाने के लिए जाया जाए। भरतपुर शहर मे सब किया गया और पता चला कि गूजरो की हवेली मे काफी हथियार

है। चौकीदार पर काबू पाने के लिए क्लोरोफॉर्म बनाने का निश्चय किया गया। रात मे सदर स्कूल की प्रयोगशाला मे से चोरी की गई। क्लोरोफार्म बना लिया गया, पर एन वक्त पर वह कही धोखा न दे जाए इसलिए मैं आगरे गया। एक कैमिस्ट मे मैंने प्रार्थना की कि मुझे देश-हित के किसी काम के लिए क्लोरोफॉर्म चाहिए। कैमिस्ट नेविना कुछ पूछ ताछ के क्लोरोफॉर्म की दो शीशिया दे दी पर हथियार लूटने की हमारी योजना सफल नही हुई क्योकि हममे से ही एक साथी यह कहने लगा कि मार काट व लूट-पाट का रास्ता ठीक नही है। हमने उस दल को भी तुरन्त भग कर दिया।"

अध्ययन (एम० ए०, बी० एस० सी०, एल० एल० बी०) पूरा कर लेने के बाद 1 नवम्बर, 1935 से इन्होने भरतपुर मे वकालत आरम्भ की। अगले साल 1936 मे नागपुरके प्रमुख डाक्टर नर्मदा प्रसादजी श्रीवास्तव की सुपुत्री सुश्री विद्यावती श्रीवास्तव से इनका विवाह हुआ। उन्ही वर्षो से अन्य देशी रजवाडो की तरह भरतपुर मे भी नागरिक आन्दोलन छिडा। इसमे इन्होने गहरी रुचि ली। बाद मे प्रजामण्डल ने भी यही आन्दोलन शुरू कर दिया। 1939 मे ही ये प्रजा मण्डल के सदस्य बने और नागरिक आन्दोलन मे सक्रिय रूप से भाग लेने लगे। श्री राजबहादुर तात्कालीन सवाद एजेंसी यू० पी० आई के सवाददाता रहे और नागरिक अधिकार आन्दोलन के समाचार बाहर भेजते रहे। उसी वर्ष महाराजा की ओर से राज्य की सलाहकार परिषद मे इन्हे और श्री गोकुलजी वर्मा (अब स्वर्गीय) को मनोनीत किया गया। समिति मे भी इन्होने खुलकर नागरिक अधिकारो की माग का समर्थन किया। उसी साल ये नगरपालिका के सदस्य चुने गए।

श्री राजबहादुर ने गाधीजी के प्रथम दर्शन यद्यपि वर्धा मे किये थे जहा इनके श्वसुर श्री नर्मदा प्रसाद गाधीजी के चिकित्सक थे पर गाधीजी के असली दर्शन इन्हे एक अनोखी परिस्थिति मे हुए। इन्ही के शब्दो मे--

"गाधीजी बम्बई मे जेल से छूट गये थे और फ्रन्टियर मेल से दिल्ली जा रहे थे। बयाना मे फ्रन्टियर रुका था, वहा दर्शनार्थियो की अपार भीड थी। भरतपुर के गाधीवादी प्रमुख नेता प० रेवती शरणजी ने मुझे भरतपुर की राजनैतिक स्थिति के बारे मे एक सदेश गाधीजी को देने के लिये दिया था। इससे पहले कि वह सदेश देने मे गाधीजी के डिब्बे तक पहुच पाता, फ्रन्टियर मेल चल पडा। मैंने लपक कर डिब्बे के दरवाजे का हत्था पकड लिया और पायदान पर खडा हो गया पर दरवाजा नही खुला। आउटर सिगनल के निकल जाने पर दरवाजा खुला और मैंने गाधीजी को वह सदेश दिया। उसी के आधार पर भरतपुर की राजनैतिक स्थिति के बारे मे अखबारो मे अगले दिन बयान छपा। गाधीजी का निकट से दर्शनो का मेरे लिये वही सबसे उत्तम अवसर था।"

1942 मे गाधीजी ने 'अग्रेजो-भारत छोडो' का नारा दिया। भरतपुर भी इससे अछूता कैसे रह सकता था? श्री राजबहादुर ने भूमिगत रह कर आन्दोलन का सचालन किया। इसी

सिलसिले मे भरतपुर की सलाहकार समिति और नगर पालिका मे इस्तीफा दे दिया। उस समय भरतपुर रियासत के दीवान श्री के० पी० एस० मेनन थे । उन्होने अपनी सूझबूझ से इस आन्दोलन को अधिक चलने नही दिया। श्री राजबहादुर की गिरफ्तारी के वारंट निकले थे पर वे उन पर तामील नही हुए थे। अन्य जो नेता गिरफ्तारी किये गये थे वे भी जल्दी ही छोड दिये गये।

अगले वर्ष (1943) के अन्त तक भरतपुर रियासत मे जन–प्रतिनिधियो को लेने के लिए ब्रजजया प्रतिनिधि सभा का गठन किया गया। इसके लिए कुछ स्थानो के वास्ते चुनाव हुए। श्री राजबहादुर राजाशाही तत्वो के कडे मुकाबले के बावजूद डीग से निर्वाचित हुए। सदन मे प्रजा परिषद पार्टी के नेता मास्टर आदित्येन्द्र और महा सचिव श्री राजबहादुर चुने गए। प्रतिनिधि सभा बनने के बाद भी जन आन्दोलन चलता रहा क्योंकि सभा को विशेष अधिकार प्राप्त नही थे। 1945 मे अनाज के भाव बहुत चढ गये। श्री राजबहादुर इसमे सक्रिय रुप से भाग लेने लगे। उसी वर्ष रियासत के तत्कालीन दीवान रामनाथन ने इन्हें बुलाया। इन्ही के शब्दो मे "दीवान श्री रामनाथन ने मुझे प्रलोभन दिया था कि अगर मै आन्दोलन से हट जाऊ तो मुझे फुरत भरतपुर का एडवोकेट जनरल बना दिया जायगा और कुछ समय बाद हाई कोर्ट का जज। पर मैंने उन्हे स्पष्ट बता दिया कि मैं किसी भी कीमत पर प्रजा परिषद से अलग नही हो सकता।"

आन्दोलन बराबर चलता रहा। अक्टूबर, 1945 मे श्री राजबहादुर को राजद्रोह तथा भारतीय दड सहिता की धारा 124 अ के अन्तर्गत गिरफ्तार कर लिया गया और सेवर जेल की कोठरी मे अकेले रखा गया। वही भरतपुर सरकार की ओर से इन्हे प्रस्ताव भेजा गया कि अगर राजबहादुर भरतपुर की सीमा छोडकर चले जाने की और फिर लौट कर न आने का वचन दे तो उन्हें तुरन्त रिहा कर दिया जा सकता है। पर प्रस्ताव नामजूर कर दिया गया। उधर इनके बडे भाई मुरारीलालजी और कई मित्रो तक को भरतपुर रियासत की नौकरी से बर्खास्तकर दिया गया। आखिरकार 17 मार्च, 1946 को इनकी रिहाई हुई। उस दिन भरतपुर मे अपार खुशी मनाई गई और एक विशाल जुलूस निकाला गया।

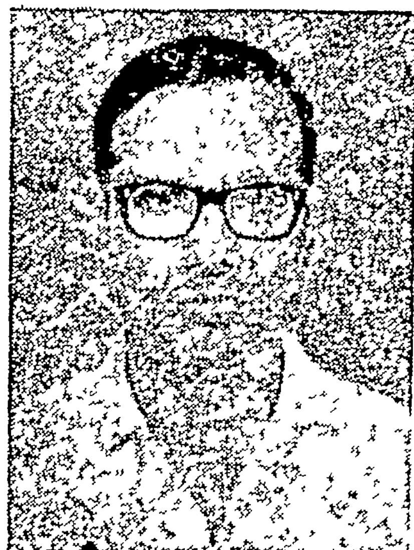
पर वह जमाना रिहा होकर चैन से बैठने का कहा था? बाद मे श्री राजबहादुर ने उत्तरदायी शासन की स्थापना की माग को लेकर चल रहे आन्दोलन का सचालन किया। बेगार विरोधी आन्दोलन के भी अगुआ बने। जनवरी, 1947 मे जब वायसराय लार्ड वेवल और बीकानेर के महाराजा शार्दूल सिंह भरतपुर के पक्षी विहार 'घाना' मे मुर्गाबियो के शिकार के लिए आए तो भरतपुर मे जबरदस्त प्रदर्शन और हडताल हुई। 5 जनवरी 1947 को लार्ड वेवल के आने पर काले झण्डे लेकर एक विशाल जुलूस हवाई अड्डे की ओर बढा। "लार्ड वेवल वापस जाओ" के गगन भेदी नारे गूज रहे थे। भीड के बराबर बढते जाने पर और जुलूस रोकने के लिये तत्कालीन डी० एस० पी० गिर्राजसिंह ने गोली चलाने के लिए पिस्तौल तान ली तो श्री राजबहादुर सीना तानकर डी०एस०पी० के सामने खडे हो गये और बोले "निर्दोष जनता को अपनी गोली का निशाना बनाने के

पहले अपनी गोली मुझ पर चलाइये ।" पिस्तौल झुक गई और भीड केवल विरोधी नारे लगाती हुई आगे बढ गई । इस प्रकार श्री राजबहादुर भरतपुर मे जन-जागृति के साहसिक प्रयत्नो के सूत्रधार बने रहे ।

5 जनवरी, 1947 मे भरतपुर किले के सामने प्रजा मण्डल के स्वय सेवको ने धरना देना शुरु कर दिया था । किले के भीतर सरकारी दफ्तर थे अत स्वय सेवक शान्तिपूर्ण आग्रह से कर्मचारियो को दफ्तरो मे जाने वाले तथा अन्य लोगो को रोकना चाहते थे । इस सत्याग्रह का चरमोत्कर्ष 15 जनवरी 47 को हुआ । उस रात को भरतपुर रियासत की घुडसवार पुलिस काफी सख्या मे किले मे पहुच गई थी । 15 जनवरी को बहुत से सत्याग्रही जिनमे स्त्री–पुरुष सभी शामिल थे किले के अन्दर जाने वाले रास्ते पे एक दूसरे से सट कर इस तरह लेट गए कि कोई भी व्यक्ति स्त्री–पुरुषो को रौंदे बिना अन्दर नही जा सकता था । कुछ ही देर मे किले का दरवाजा खुला और बरछी व लाठियो से लेस घुड सवार पुलिस लेटे हुए सत्याग्रहियो पर चढ़ गए। सत्याग्रही लोहु–लुहान हो गये । श्री राजबहादुर और श्री सावल प्रसाद चतुर्वेदी पर विशेष वार किये गये । इन दोनो को सगीन चोटें लगी । श्री राजबहादुर को अस्पताल मे मरहमपट्टी के बाद उनके बासन दरवाजे स्थित मकान पर पहुचाया गया । चोटो की पीडा के कारण इन्हे करीब 104 बुखार हो गया था पर रात को ही पुलिस ने इनका मकान घेर लिया । सारी मर्यादा तोडकर जब पुलिस अधिकारी मकान के भीतरी भाग मे घुस आए तो श्रीमती राजबहादुर से जो कि आम तौर पर बाहर वालो से बहुत कम बात करती है, न रहा गया । उन्होने पुलिस अधिकारी को डपटते हुए कहा आप लोग बैठक मे बैठिये, यहा कोई चोर–लुटेरे नही है । जो भाग जाएगे । आपको गिरफ्तार करना हैं तो कर लीजिए । ये अभी कपडे पहन कर स्वय बैठक मे आ जाएगे । श्री राजबहादुर ने कपडे पहने और गिरफ्तार हो गए । पुलिस ने इनकी हालत को अनदेखी करते हुए, जेल मे बद कर दिया । पर फिर भी जन आन्दोलन कहा रुकने वाला था । केन्द्र में राष्ट्रीय अतरिम सरकार बनने के बाद सरदार पटेल के हस्तक्षेप पर 5 अगस्त को इन्हें रिहा किया गया ।

फिर आया 15 अगस्त, 47 आजादी का दिन, सदियो पुरानी बेडिया टूटने का दिन पर भरतपुर मे इस पुनीत दिनको भी गुलामी का अधेरा था । सारे शहरमे दफा 144 लगी हुई थी । स्वाधीन देश का तिरगा झण्डा शहर मे केवल तीन स्थानो पर लहराया गया— डाक-घर, रेजीडेंसी और रेलवे स्टेशन । तीनो स्थानो पर झण्डा लहराने का काम साथियो ने आग्रह पूर्वक श्री राजबहादुर से करवाया । उस दिन हवा मे लहराते हुए तिरगे झडे मे वे एक नए भारत का सपना देख रहे थे जिसके लिए सयोगवश कुछ ही समय बाद उन्हे भी जुट जाना पडा ।

√श्री रोशनलाल आर्य



जन्म —14 अगस्त 1926

वर्तमान पता — ए112, जनता कालोनी,
घाटगेट, जयपुर

श्री रोशनलाल आर्य भरतपुर मे भारत छोडो आन्दोलन के प्रमुख बन्दी थे। श्री गिरधारी सिंह और रोशनलाल आर्य ने मिलकर तोड फोड और ध्वसात्मक कामो से सरकारी काम-काज को ठप्प कर देने की योजना बनाई थी। भरतपुर की पुलिस ने उन्हें अपनी योजनाए पूरी तरह क्रियान्वित करने का अवसर नही दिया। वे पहले ही गिरफ्तार कर लिए गए। गिरफ्तारी के समय श्री रोशनलाल भरतपुर कालेज मे इटर मे पढ रहे थे और उन्हे पुलिस ने होस्टल के कमरे से ही जाकर गिरफ्तार किया था। जब प्रजा परिषद और सरकार का समझौता हुआ तो भारत छोडो आन्दोलन के सभी बन्दी छोड दिए गए थे लेकिन श्री गिरधारी सिंह और रोशनलाल आर्य को छोडने से इकार कर दिया गया। सरकार का कहना था कि वे हिंसात्मक तरीको मे और आतकवाद मे विश्वास करते हैं। कुछ दिन के बाद श्री रोशनलाल आर्य की अल्पायु को देखकर उन्हें छोडा गया परन्तु श्री गिरधारी सिंह अपनी दो वर्ष तक की सजा पूरी करके ही रिहा हुए।

श्री रोशनलाल आर्य का जन्म 14 अगस्त 1926 को भरतपुर जिले की तहसील कामा के पट्टेही नामक एक छोटे से गांव मे श्री सोहनलाल के घर हुआ था। इनकी शिक्षा भरतपुर और जयपुर मे हुई। इन्होने बी० ए० जयपुर से किया।

भरतपुर राज्य मे प्रजा मण्डल की स्थापना के साथ ही श्री रोशनलाल आर्य प्रजा मण्डल की प्रवृत्तियों मे भाग लेने लग गए थे। 1939 मे प्रजा मण्डल की मान्यता के आन्दोलन मे भी उन्होने हिस्सा लिया था। श्री रोशनलाल आर्य भरतपुर स्टेट मे अपने समय मे छात्रो के एक प्रभावशाली नेता थे। छात्र आन्दोलन और कालेज की हडताल को लेकर श्री आर्य को कई बार पुलिस हिरासत मे दिनो तक रखा गया और कई बार छुटपुट जेल यात्राए भी करनी पडी।

भरतपुर मे 1947 के जनवरी महीने मे बेगार विरोधी आन्दोलन शुरू हो गया था। इस आन्दोलन ने अपना अति उग्र रूप धारण कर लिया था। शहर के बीच किले तथा सरकारी कार्यालयो का जनता ने घेराव कर दिया था। किले से जनता पर अश्वारोही दौडाए गए थे। किले के बाहर खून की होली खेली गई। श्री रोशनलाल आर्य इस आन्दोलन मे गिरफ्तार हो गए थे और दो महीने तक भरतपुर की सैंट्रल जेल मे रहे थे।

1947 मे मिलिट्री ने उनके गांव मे उनके घर का सारा समान लूट लिया था और उनके घर मे आग लगादी गई थी। उस लूट पाट मे श्री आर्य का उस समय के मूल्य के अनुसार कम से कम पच्चीस हजार रूपए का नुकशान हुआ था। भरतपुर सरकार की मिलिट्री ने रोशनलाल आर्य तथा उनके पिता को पेडो मे बाध दिया था और गोली का निशाना बनाना ही चाहते थे लेकिन गाव वालो के अनुनय और आग्रह पर उन्हें गोली नही मारी गई।

श्री रोशनलाल आर्य दो बार भरतपुर की जेल मे रहे, पहली बार 29 सितम्बर 42 से 23–2–43 तक और दूसरी बार 1947 मे 3 अगस्त 47 से 28 सितम्बर 47 तक।

महात्मा गाधी ने सन् 45 मे भारत के 7 लाख गावो के लिए 7 लाख कार्यकर्ता तैयार करने के लिए सेवा ग्राम मे एक समग्र–ग्राम–सेवा–विद्यालय की स्थापना की थी जिसका उद्देश्य भारत के ग्रामीणो का सर्वाङ्गीण विकास करना था। श्री रोशनलाल आर्य ने उस विद्यालय मे 45 से 47 तक प्रशिक्षण लिया था।

आज कल श्री रोशनलाल राजस्थान सरकार की पचायत राज योजना मे महुआ की पचायत समिति के विकास अधिकारी हैं।

स्वर्गीय पण्डित हुकुमचन्द



1938 मे आगरा मे जब श्री किशनलाल जोशी व ठाकुर देशराज ने भरतपुर राज्य प्रजामण्डल की नीव डाली तो पण्डित हुकुमचन्द अग्रिम पक्ति मे थे। 1939 मे हुए सत्याग्रह आन्दोलन मे वे पहले जत्थे मे गिरफ्तार किये गये। जेल जाते ही उन्होने माग की कि सत्याग्रहियो को राजबन्दी माना जाय। उनकी माग स्वीकार हुई। जेल अधिकारियो के दुर्व्यवहार के प्रतिकार स्वरूप उन्होने बारह दिन तक भूख हडताल की। उनका अनशन जबरदस्ती तुडवाया गया। इसमे पण्डित हुकुमचन्द बहुत ही सक्षुब्ध व विरक्त हो गये। सत्याग्रह चलता रहा—गिरफ्तारिया होती रही। अब जो नये सत्याग्रही आने लगे, उन्हे पुरानी जेल मे रखा जाने लगा, और उनके साथ भी सामान्य कैदियो जैसा व्यवहार होता—पण्डित हुकुमचन्द, सर्वश्री जगन्नाथ कक्कड, बाबा किशनदास और ठाकुर पूरनसिंह आदि को साथ लेकर पुरानी जेल मे आने वाले नये सत्याग्रहियो के साथ रहने लगे। स्पेशल क्लास त्याग दी गयी।

सरकार के साथ समझौता होने पर सबके साथ उन्हे भी रिहा कर दिया गया। जेल से बाहर आकर उन्होने देखा कि प्रजापरिषद के नेताओ ने अग्रेज दीवान के दबाव मे आकर राष्ट्रीय झण्डा उतार दिया है। इससे पण्डितजी का क्षोभ पराकाष्ठा पर पहुच गया। वे बीमार रहने लगे, और उचित उपचार के अभाव मे उनका निधन हो गया। वे अविवाहित थे। पण्डित हुकुमचन्द के बडे भाई श्री फतहचन्द बिजलीघर मे नौकर थे और समाज सेवा के कार्यों मे लगे रहते थे। 1932 मे उन्हे सीकरी काण्ड मे गिरफ्तार किया गया था। इसके कुछ ही दिनो बाद उनका भी निधन हो गया था। इससे भाई का परिवार भी पण्डितजी पर ही आश्रित हो गया था।

पण्डितजी बहुत ही उग्र स्वभाव के व्यक्ति थे और इसीलिए जेल अधिकारियो के साथ उनकी कभी नही पटी। जेल मे कालकोठरी, खडी हथकडी, उल्टी हथकडी, डण्डाबेडी व बैंतो की मार—जितनी सजाए होती हैं, वे सब पण्डित हुकुमचन्द ने हसते-हसते सहन की। वे विद्यार्थी काल से ही अपने बडे भाई स्वर्गीय श्री फतहचन्द के साथ समाज सेवा के कार्यों मे रुचि लेने लग गये थे।

उनका जन्म सम्वत् 1968 मे हुआ था। उनके पिता पुलिस हैड कास्टेबल थे। उन्हे अपने पुत्र की राजनैतिक प्रवृत्तिया ना पसद थी, रोज कलह होती रहती। इस स्थिति से बचने के लिए उन्होने भरतपुर छोड दिया और अजमेर व शेखावाटी मे अपनी राष्ट्रीय प्रवृत्तिया शुरू की। वे उत्तर प्रदेश मे भी रहे, तथा काग्रेस के विभिन्न आन्दोलनो मे जेल जाते रहे। उनके पिता श्री महेश कृपाल को अपने पुत्र की राजनैतिक प्रवृत्तियो के कारण नौकरी मे हाथ धोना पडा। 1942 मे उन्हें भी नजरबन्द कर दिया गया था।

श्री अमरसिंह चतुर्वेदी



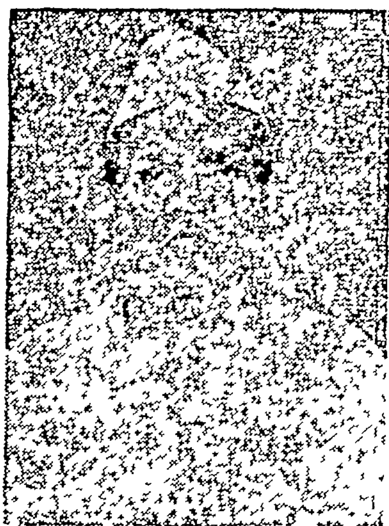
श्री अमरसिंह चतुर्वेदी मूलरूप से लेखक हैं और कांग्रेस सरकार तथा जनता की समस्यायें उनको सताती रही है। इसीलिए वे निरन्तर दिमागी उलझन लिखने मे वर्षो से सलग्न हैं। उनका जन्म 1916 मे हुआ। उन्होने आगरे से बी ए, एल एल बी किया था और 1941 मे भरतपुर मे वकालात शुरू कर दी थी। 1942 मे वे भरतपुर नगरपालिका के सदस्य निर्वाचित हुएथे। 1942 मे वे भरतपुर राज्य के डैट कमीलीयेशन बोर्ड के सदस्य हो गये थे और 1946 मे सार्वजनिक जीवन बिताने के लिए बोर्ड की सदस्यता से त्याग पत्र देकर पत्रकारिता शुरू करदी थी। वे वर्षो तक हिन्दुस्तान टाइम्स के सहकारी सम्पादक और सवाददाता रहे। मत्स्य सघ बनने के बाद वे कई वर्षो तक भरतपुर प्रजा परिषद और बाद मे कांग्रेस के प्रधान मन्त्री रहे। भरतपुर मे राजनैतिक दलबन्दी बढने पर वे जयपुर चले आये और हाई कोर्ट मे वकालात शुरू करदी। 1958 मे वे कांग्रेस से निष्कासित कर दिये गये। भारतीय क्रांति दल की स्थापना के समय वे चौधरी कुम्भाराम आर्य के साथ कार्य कर रहे थे। वे 1969 मे विश्व शाति परिषद मे भाग लेने रूस तथा जर्मनी गए थे। और वहा कई स्थानो पर भाषण दिए। वे समाज और शासन के मौजूदा ढाचे मे आमूल चूल परिवर्तन चाहते हैं। उनका पता है दुर्गा मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर।

श्री कालूराम पटवारी

श्री कालूराम पटवारी भरतपुर मे डीग तहसील के खेडा ब्राह्मण ग्राम के निवासी थे। उनकी शिक्षा तो सामान्य ही थी परन्तु उनमे राष्ट्रीयता कूट-कूट कर भरी थी। वे भरतपुर राज्य मे पटवारी हो गये थे परन्तु वे लोकमान्य तिलक द्वारा सम्पादित केसरी मगा कर पढते थे। उनके विचारो पर लोकमान्य तिलक की गहरी छाप थी। जब भरतपुर के महाराजा ने राज्य मे भूमि का नया बन्दोबस्त कराने की योजना शुरू की तो श्री कालूराम पटवारी ने निर्भीकता के साथ बन्दोबस्त अधिकारी से कहा था कि यह बन्दोबस्त किसानो के लिए हितकर नही हो सकता। सरकारी दृष्टि मे वे तभी से सदिग्ध माने जाने लग गए थे।

1930-31 मे भरतपुर के युवको ने बन्दोबस्त के विरुद्ध किसानो से अपील नाम का एक पर्चा निकाला और उसे बाटने का भार श्री कालूराम पटवारी के पुत्र श्री किशनलाल जोशी को सौंपा गया। श्री किशनलाल जोशी के नाम 124 ए के अन्तर्गत गिरफ्तारी का वारट निकला, लेकिन वह तो पर्चे बाटकर अजमेर चला गया था। लेकिन पुलिस ने भरतपुर मे उनके मकान की तलाशी ली और उनके गाव मे भी तलाशी ली गई। श्री कालूराम पटवारी की जेब से वे पर्चे बरामद हो गये और उन्हे गिरफ्तार करके उन पर भरतपुर मे मुकद्दमा चलाया और उन्हे 8 महीने की सजा दी गई। उसके बाद वर्षो तक श्री कालूराम पटवारी ने भरतपुर के राजनैतिक क्षेत्र मे काम किया। आगे चल कर उनका निधन हो गया।

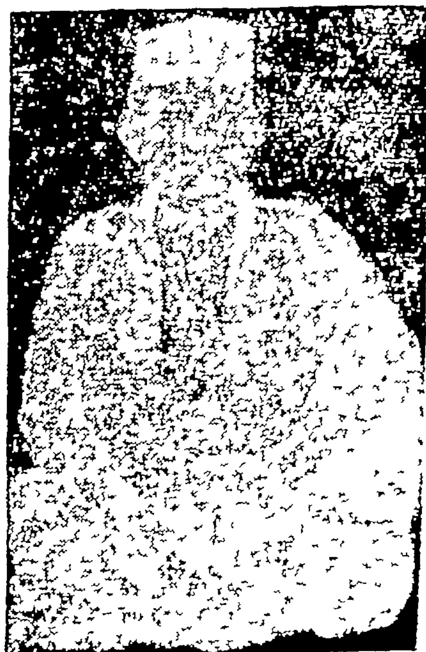
श्री कलुआ राम वैश्य



श्री कलुआ राम वैश्य भरतपुर के बहुत पुराने निष्ठावान कार्यकर्त्ता हैं। उन्हे राजनीति मे लाने का श्रेय श्री जगन्नाथ कक्कड को है। श्री जगन्नाथ ने 1930 मे राष्ट्रीय युवक दल नाम की जो सस्था बनाई थी उसी मे श्री कलुआ राम का राजनीति मे विकास हुआ। श्री कलुआ राम वैश्य 1932 मे भी गिरफ्तार हुए थे।

1938 मे श्री कलुराम प्रजा मडल की स्थापना के साथ ही उसके सदस्य बन गए। 1939 मे प्रजा मडल की रजिस्ट्री कराने के लिए जो सत्याग्रह हुआ उसमे श्री कलुआराम वैश्य 23 जून 1939 को गिरफ्तार होगए। उन्हे 15 महीने की सजा दी गई परन्तु सरकार मे समझौता हो जाने पर पूरे 6 महीने और 1 दिन के बाद छोड दिये गये। श्री कलुआराम ने 1942 के भारत छोडो आन्दोलन और सन् 1947 के बेगार आन्दोलन मे भी कार्य किया था। वह आज भी कांग्रेस की राष्ट्रीय प्रवृत्तियो के लिए सदा तत्पर और कटिबद्ध रहते है।

स्वर्गीय श्री गोपाल लाल माहेश्वरी

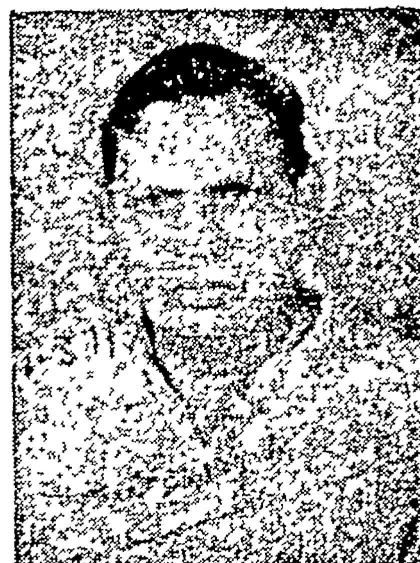


श्री गोपाल लाल माहेश्वरी भरतपुर के उग्र और तेजस्वी राष्ट्रीय कवि थे। उनका जन्म, सन् 1916 मे हुआ था। उन्होने हिन्दी कोविद हिन्दी भूषण और हिन्दी प्रभाकर की परीक्षाए उत्तीण करली थी।

1929–30 मे श्री गोपाल लाल माहेश्वरी राष्ट्रीय युवक दल मे उन्होने शामिल होगए थे। राष्ट्रीय चेतना का प्रसार करने वाली जो कविताए लिखी थी उससे भरतपुर के नौजवानो को बहुत बडी प्रेरणा मिली।

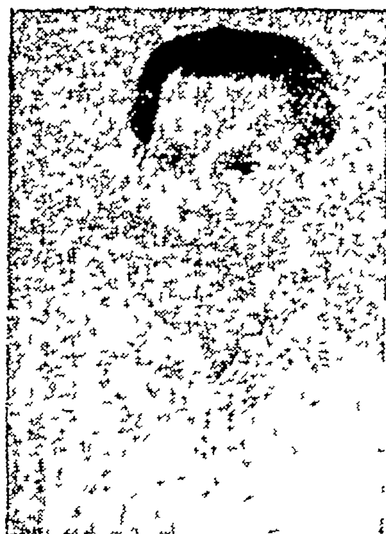
उनके मुक्ति चन्द्रोदय की राष्ट्रीय कविताओ के कारण उनकी गिरफ्तारी का वारन्ट जारी हो गया था उनके मित्रो ने उन्हे भूमिगत रहने के लिए और गिरफ्तारी से बचने की सलाह दी। भूमिगत स्थिति मे ही 1936 मे उनका 20 वर्ष की आयु मे निधन होगया।

श्री गोपाल लाल पोद्दार



श्री गोपाललाल पोद्दार का जन्म भरतपुर के एक अग्रवाल परिवार मे 23 सितम्वर 1928 को हुआ। गोपाललाल के वडे भाई मदन मोहन लाल पोद्दार राजनीति मे सक्रिय रूप मे भाग ले रहे थे और श्री गोपाल पोद्दार भी उसी रास्ते पर चल पडे। भरतपुर के नेता मास्टर आदित्येन्द्र के आह्वान पर उन्होने अपनी स्कूल छोड दी और प्रजा परिषद मे स्वय सेवक का कार्य करने लगे। 4 जनवरी 47 को जव वीकानेर महाराजा जल मुर्गियो का शिकार करने कैवल देव धाना मे आए थे उस समय काग्रेस ने उन्हे काले झण्डे दिखाने का कार्यक्रम वनाया था। श्री गोपाल पोद्दार ने पुलिस की आखो मे धूल झौक कर वीकानेर महाराजा को काले झण्डे दिखाकर विरोध प्रकट किया। पुलिस ने उन्हे गिरफ्तार कर लिया और उनकी निर्मम पिटाई की गई। इन्होंने इसी वेगार विरोधी सत्याग्रह मे पुन भाग लिया और 16 जनवरी 47 को उन्हे गिरफ्तार करके साढे छ महीने जेल मे रखा गया। श्री गोपाललाल 5 अगस्त 47 को रिहा हुए। जेल से छूटने के वाद श्री गोपाल पोद्दार ने अपना पूरा समय प्रजा परिषद मे लगाना शुरू कर दिया। श्री गोपाललाल पोद्दार आजकल भरतपुर की खादी समिति मे कार्य करते है।

श्री प्रभु दयाल माथुर



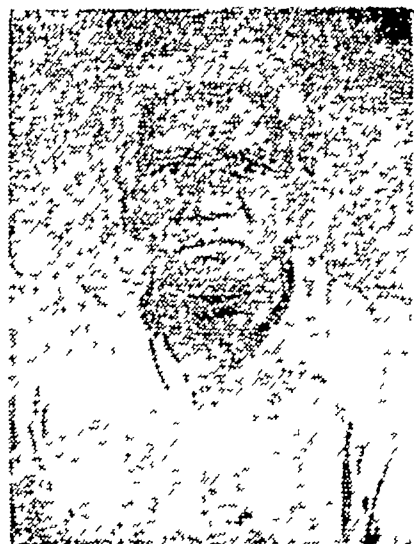
श्री प्रभुदयाल माथुर भरतपुर के स्वातन्त्र्य समर के एक अत्यन्त निष्ठावान, ईमानदार और उत्साही कार्य कर्त्ता रहे हैं। भरतपुर प्रजापरिषद की राजनैतिक-प्रवृत्तियो मे श्री प्रभुदयाल अपने विद्यार्थी काल से ही कूद पडे थे। राजशाही से मुक्ति के युद्ध मे भरतपुर के नौजवानो मे श्री प्रभु-दयाल माथुर सदा अग्रिम पक्ति मे खडे दिखाई दिए हैं। जन-आकाक्षाओ की पूर्ति के लिए श्री माथुर ने हसते-हसते बडी से बडी कुर्बानिया की है और राजनैतिक आन्दोलन के समय सरकार द्वारा दी जाने वाली समस्त कष्ट पूर्ण यातनाओ को प्रसन्नता से स्वीकार किया है।

श्री प्रभुदयाल माथुर 1939 और 1947 मे दो बार गिरफ्तार किए गए थे और उनके हाथो पावो मे भारी से भारी वजन की हथकडी और बेडिया पहनाई गई थी। उन्हे जेल मे लम्बे समय तक खडी हथकडी दी गई थी और उनके हथकडियो से बधे हुए हाथ कमर के पीछे बाध दिए जाते थे। उनको राजद्रोह की विभिन्न धाराओ मे अलग-अलग सजाए दी गई थी और उन पर जुर्माना किया गया था तथा जुर्माने की वसूली के लिए उनके माता पिता के घर गृहस्थी का सामान कोडियो मे नीलाम करके जुर्माना वसूल किया गया था।

स्वाधीनता के बाद श्री प्रभुदयाल माथुर ने अपनी कुर्बानियो का कोई पुरस्कार या मुआवजा नही चाहा है। प्रभुदयाल माथुर एक मूक सेवक और आत्म-बलिदान की भावना वाले स्वाभिमानी युवक हैं। न तो सरकार ने उसके माता पिता का सामान नीलाम करके वसूल किए गए जुर्माने की रकम लौटाई है और न प्रभुदयाल माथुर ने उसकी माग की है।

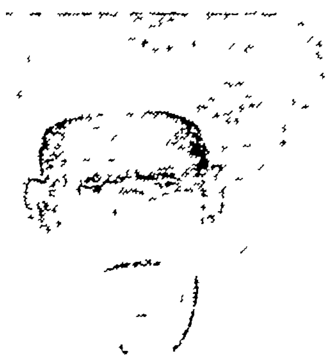
श्री प्रभुदयाल माथुर आज भी उसी उत्साह से राष्ट्रीय सेवा मे लगे हुए है। उन्होने भरतपुर के स्वतन्त्रता सेनानियो को सगठित करके उनके सामूहिक हितो की रक्षा के लिए निरन्तर प्रयत्न किए हैं। उनका पता है—वासन गेट, भरतपुर।

श्री चुन्नी लाल शर्मा



श्री चुन्नीलाल शर्मा का जन्म 7 जुलाई 1923 को इन्दौर मे हुआ और इनकी शिक्षा कठियावाड गुजरात मे हुई। राजकोट सत्याग्रह के सदर्भ मे इन्हें अपने स्कूल से निकाल दिया गया। स्कूल से निकल कर श्री चुन्नीलाल सत्याग्रही जत्थे के अन्दर शामिल होगये। पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर एक हफ्ते तक हिरासत मे रखा और फिर छोड दिया। 1939 मे श्री चुन्नी लाल अपने पिता के साथ भरतपुर आगए। भरतपुर मे उन दिनो प्रजा मण्डल का आन्दोलन शुरू हो गया था। श्री चुन्नीलाल उसमे भी सक्रिय होगए और पुलिस ने उन्हें कई बार निर्ममता से पीटा 1945 मे उन्होने महाराजा के किशोर निवास महल पर से रियासत का झण्डा उतार कर तिरगा झण्डा फहरा दिया। पुलिस ने उनकी गिरफ्तारी की, पिटाई की और दो दिन बाद छोड दिया। 16 जनवरी 47 को सत्याग्रह करते समय श्री चुन्नी लाल शर्मा गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हें 6½ महीने की सजा जेल मे पूरी करनी पडी। सरकार ने उन पर डकैती का और पुलिसको मारपीट करने का झूठा मुकदमा भी चलाया था।

श्री बालूराम, श्रीनगर



श्री बालूराम फूलमाली का जन्म सन् 1917 मे सेवर तहसील के ग्राम श्रीनगर मे हुआ था। श्री बालूराम के पिता का नाम धूडी राम था। भरतपुर के नेता श्री जगन्नाथ कक्कड की प्रेरणा और प्रभाव मे श्रीनगर का यह परिवार राजनीति मे सक्रिय हुआ। 1938 मे श्री कक्कड द्वारा प्रजा मडल के सदस्य बनाए जाने के बाद श्री बालूराम ने तहसील के गाव गाव मे घूम कर प्रजा मण्डल के सदस्य बनाए और प्रजामण्डल के लिए देहातो मे धन इक्ट्टा करके मथुरा के सत्याग्रह शिविर मे भेजा। श्री जगन्नाथ कक्कड के आदेशानुसार श्रीनगर मे एक जत्था 1943 मे दिल्ली मे सत्याग्रह करने के लिए गया। श्री बालूराम के पिता स्वर्गीय धूडी राम उस जत्थे के नेता थे। उन्हें दिल्ली मे सत्याग्रह करते समय 25-2-43 को गिरफ्तार करके 6 महीने की सजा दी गई और उन्हें फिरोजपुर जेल भेज दिया गया। श्री धूडीराम का देहान्त 1967 मे होगया। श्री बालूराम ने 1947 के बगार आन्दोलन मे भी खूब काम किया था और आज भी वह अपने क्षेत्र मे सेवा कार्य के लिए सक्रिय है।

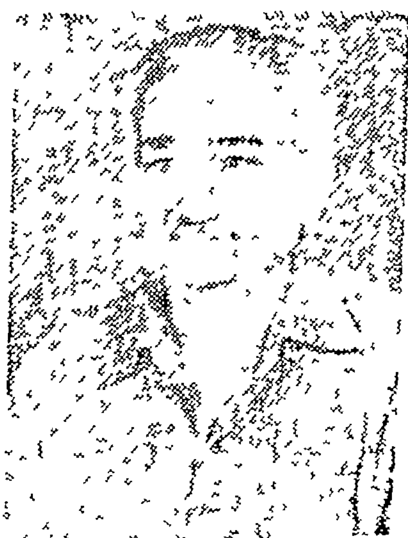
श्री थानसिंह श्रीनगर



श्री थानसिंह फूलमाली का जन्म सन् 1920 मे सेवर तहसील के श्रीनगर ग्राम मे हुआ था। श्री थानसिंह का भी राजनीति मे प्रवेश श्री जगन्नाथ कक्कड की प्रेरणा से ही हुआ था। 1937 मे श्री कक्कड ने इन्हे काग्रेस का चवन्नी सदस्य बनाया था। प्रजा मण्डल की स्थापना के बाद प्रजा मण्डल का सदस्य बनाया। प्रजा मण्डल का आन्दोलन शुरू होने पर श्री थानसिंह ने गाव गाव मे प्रजा मण्डल का प्रचार काय किया और सत्याग्रहियो के लिए घर घर से अनाज व चन्दा इकट्ठा करके सत्याग्रह शिविर मे पहुचाया।

1943 मे श्री जगन्नाथ कक्कड की प्रेरणा से दिल्ली मे लगी हुई धारा 144 तोडने के लिए सत्याग्रहियो का जो जत्था श्रीनगर स रवाना हुआ उसमे श्री थानसिह भी शामिल थे। वे दिल्ली मे 25 फरवरी 43 को गिरफ्तार कर लिए गए और उन्हे 6 महिने की सजा दी गई। 1947 मे श्री थानसिंह लाल झण्डा किसान सभा मे सम्मिलित हो गए और बेगार विरोधी आन्दोलन छिडने पर उसमे काम किया। आजकल श्री थानसिंह राजस्थान राज्य की राजकीय सेवा मे कार्य कर रहे है। उनका पता है—द्वारा राम किशन परचूनिया, मण्डी अटलबन्द, भरतपुर।

श्री दौलतराम शर्मा



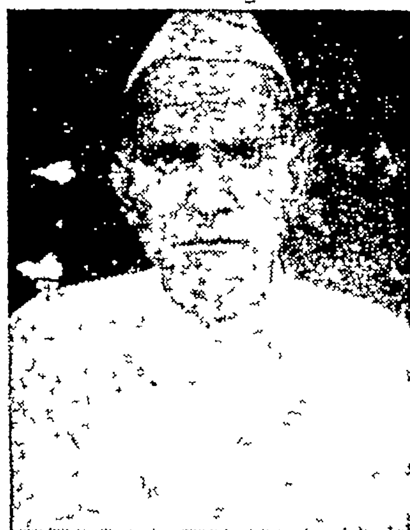
श्री दौलतराम शर्मा कुम्हेर तहसील के ग्राम पैंघोर के रहने वाले हैं। इनका जन्म सन् 1918 मे हुआ। इनकी शिक्षा स्वामी सच्चिदानन्द महाराज की देख रेख मे हुई। 1930 मे भरतपुर आर्य समाज के उत्सव मे नरेन्द्र केसरी नामक पुस्तक का वितरण करने के अपराध मे इन्हे राजद्रोह के अभियोग मे गिरफ्तार करके 2 महिने हवालात मे रखकर छोड दिया गया। स्कूल मे गाधी टोपी पहनने के कारण इन्हे स्कूल से निकाल दिया गया था। उन्होने अपनी शिक्षा रेवाडी मे जाकर पूरी की।

मई 1939 मे श्री दौलतराम के नाम वारन्ट गिरफ्तारी निकला और गिरफ्तारी के लिए रु० 500) का इनाम घोषित किया गया परन्तु ये पुलिस की पकड मे नही आए और गाव गाव मे जाकर सघर्ष समितियें बनाई और सत्याग्रही जत्थे भरतपुर भेजे । 30 जुलाई 39 को श्री दौलतराम अपने 250 साथियो के साथ जामा मस्जिद पर भाषण देने पहुचे । उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया । उन्हे 6 महिने की सजा और 25 रुपए जुर्माना या 3 महिने की सजा दी गई । जेलमे आपने 11 दिन तक अपनी मागो को लेकर भूख हड़ताल की । राज्य के अधिकारियो ने इन्हे प्रजा परिषद से अलग होने के लिए बडे-बडे प्रलोभन दिए परन्तु उन्होने सभी प्रलोभन ठुकरा दिए । आपका एक होटल भरतपुर मे चलता था, उसकी सारी सम्पत्ति सरकार ने जब्त कर ली । आजकल श्री दौलत राम शर्मा ग्वालियर मे रहते हैं ।

श्री रामशरण स्वर्णकार

श्री रामशरण स्वर्णकार का जन्म सन् 1910 मे महा पौर क्षत्रिय घराने मे भरतपुर मे हुआ था । श्री रामशरण सबसे पहले घुडचढा रिसालेदार सावर्लसिह के स्वय सेवक दल मे शामिल हुए । 1930 मे जब श्री जगन्नाथ कक्कड ने भरतपुर मे राष्ट्रीय युवक दल बनाया तब रामशरण स्वर्णकार उसमे शामिल होगए और लोगो मे गाधी टोपी पहनने का अभियान चलाया । 1938 मे जब भरतपुर मे प्रजा मण्डल की स्थापना हुई तब श्री रामशरण प्रजा मण्डल मे शामिल होगए और गाव गाव घूम कर प्रजा मण्डल का प्रचार करने तथा सत्याग्रहियो के लिए घर घर मे आटा इक्ट्ठा करने लगे । सत्याग्रहियो की व्यवस्था और देख भाल का कार्य श्री राम शरण को सौंपा गया था । गिरफ्तार होने वाली स्त्रियो के बच्चो को छीन कर जब सरकार ने अनाथाश्रम मे भेजना शुरू किया तब श्री रामशरण और उनकी पत्नि को उन सत्याग्रहिणे के बच्चो को सम्हालने का कार्य सौंपा गया । वे जेल नही जा सके लेकिन बाहर रह कर सत्याग्रह के सचालन और व्यवस्था का जो कार्य किया था वह सत्याग्रह की सफलता के लिए जेल जाने से कई गुणा अधिक महत्वपूर्ण था । श्री राम शरण तब से अब तक सेवा कार्य मे सक्रिय हैं और देश सेवा के किसी काम मे पीछे नही रहते ।

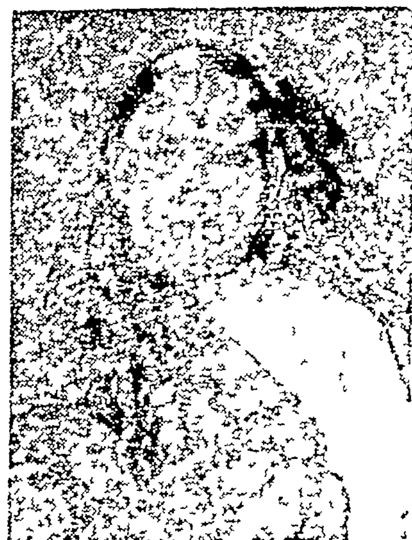
श्री रघुनाथ प्रसाद लखेरा, अखैगढ़



श्री रघुनाथ प्रसाद लखेरा भरतपुर के पुराने राष्ट्र सेवक हैं। 1929 मे श्री रेवती शरण की प्रेरणा से वे कांग्रेस के सदस्य बने थे। 1931 32 मे वे बम्बई मे सत्याग्रह करने अखैगढ भरतपुर से ३ व्यक्तियो का जत्था लेकर सत्याग्रह करने गए। बम्बई मे उन्हे 6 महीने अखेगढ मे आजाद फौज नाम का एक सगठन बनाया और खून के हस्ताक्षरो से देश सेवा की प्रतिज्ञा ली। उन्होने अपने गाव मे विस्फोटक पदार्थों का इकट्ठा करके तोड फोड के कार्य शुरु करने की योजना बनाई, परन्तु विस्फोटक पदार्थ गलती से उनकी दुकान मे फट गए और उनका भाई बुरी तरह घायल होगया और सन् 36 मे उनका देहावसान होगया। भरतपुर मे प्रजा मडल की स्थापना होने पर श्री लखेरा प्रजा मण्डल के सदस्य बने और उसके प्रचार कार्य मे लग गए। उन्होने अपने क्षेत्र मे कई किसान सम्मेलन करवाए। पुलिस ने उन पर कई झूठे मुकदमे बना कर उन्हे फसाने की कोशिशें की।

1947 मे प्रजा परिषद ने जो बेगार विरोधी आन्दोलन शुरू किया उसमे श्री रघुनाथ प्रसाद 19 जनवरी 47 को गिरफ्तार हुए और वे करीब ३ महीने तक जेल मे रहे। श्री रघुनाथ प्रसाद लम्बे समय तक प्रजा परिषद और कांग्रेस का कार्य उत्साह से करते रहे। आजकल वे अलवर जिले के खेडलीगज गाव मे रहते हैं।

श्रीमती सत्यवती शर्मा



श्रीमती सत्यवती शर्मा भरतपुर के राष्ट्रीय सेवक श्री केशवदेव शर्मा की पत्नि हैं। 1939 मे श्री केशवदेव शर्मा मथुरा मे भरतपुर सत्याग्रह शिविर का कार्य कर रहे थे। जब महिला सत्याग्रहियो का जत्था जेल मे भेजने का प्रश्न आया तब सबसे पहले श्रीमती सत्यवती शर्मा इसके लिए तैयार हुई और इनके नेतृत्व मे महिलाओ का जत्था मथुरा से भरतपुर सत्याग्रह करने पहुचा। आपके साथ आपकी दो छोटी बच्चियें भी थी। भरतपुर मे जनता ने आपका स्वागत किया। उनका जुलूस शहर मे जा रहा था कि पुलिस ने इन्हें गिरफ्तार कर लिया और बच्चियो को छीन कर अनाथाश्रम मे भिजवा दिया। जेल मे श्रीतमी सत्यवती ने भूख हडताल की और 6 दिन बाद उनकी बच्चियो को इनके पास पहुचाया गया। श्रीमती सत्यवती 1939 से 47 तक प्रजा परिषदके हर आन्दोलन और प्रवृत्तिमे उत्साह से भाग लेती रही है। श्रीमती सत्यवती के परिवार के सात सदस्य प्रजा परिषद के आन्दोलन मे जेल गए थे।

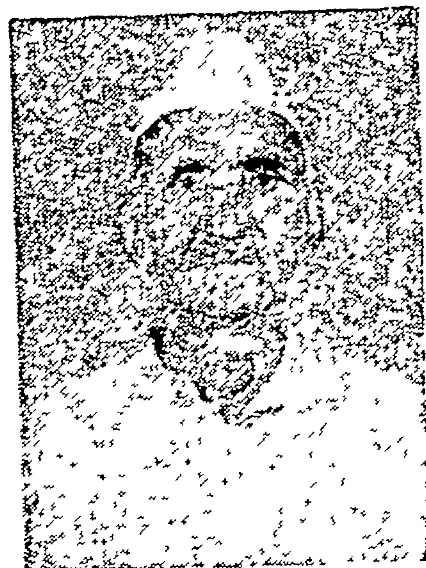
भरतपुर की राजनीति के चार विशिष्ठ व्यक्तित्व

प्रजा मण्डल के पहले अध्यक्ष



स्व० श्री गोपीलाल यादव

मैंकेंजी को चुनौती देने वाले



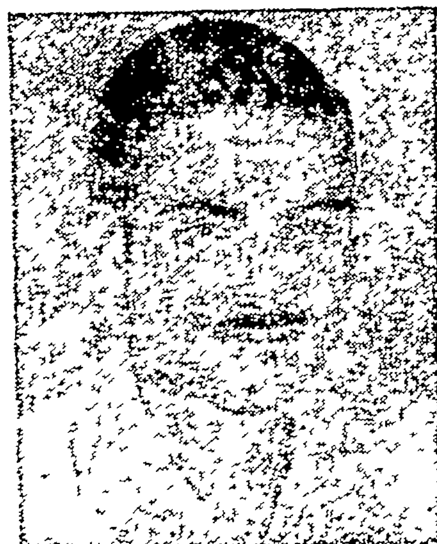
श्री हरिचन्द्र शर्मा

लोक संघर्ष के अडिग सत्याग्रही



श्री कमल सिंह बंसल

श्रमिक नेता और शहीद पत्रकार



स्व०श्री सूर्यभान

राजस्थान में

स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी

- स्वतन्त्रता के संदेश वाहक
- सत्याग्रही और
- स्वातंत्र्य - सैनिक

सिरोही

सिरोही रियासत
में
स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी

1	श्री गोकुलभाई दौ० भट्ट	हाथल
2	श्री देवीचन्द सागरमल	शिवगंज
3.	श्री धनराज तातेड एडवोकेट	सिरोही
4	श्री पुखराज सिंघी एडवोकेट	सिरोही
5	श्री रूपराज सिंघी	सिरोही
6	श्री रामेश्वर दयाल अग्रवाल	आबू रोड
7	श्री घीसालाल चौधरी	आबू रोड
8	स्वर्गीय श्री शोभाराम सिंघी	आबू रोड
9.	श्री भीमाशंकर	पण्डीव
10	श्री मोहन लाल पन्ना लाल	मारजा
11	श्री धर्मचन्द सुराणा . ..	सिरोही
12.	स्वर्गीय श्री दूलीचन्द सिंघी	सिरोही
13	श्री जगन्नाथ जाजी	रोहिरा
14.	स्वर्गीय श्री शान्तिलाल टी शाह	आबू रोड
15	स्वर्गीय श्री हुक्मीचन्द	सिरोही
16	स्वर्गीय श्री जवानमल मल्लाजी.	शिवगंज
17	स्वर्गीय श्री भगाजी हरनाथजी .. .	शिवगंज
18.	स्वर्गीय श्री लादूराम गांधी	शिवगंज
19.	श्री वरदीशंकर	सिरोही
20.	श्री चुन्नीलाल हेमाजी	कालन्द्री
21	श्री भबूतमल हेमाजी	कालन्द्री
22	श्री हजारी मल जैन	वरलूट
23	स्वर्गीय श्रीमती भगवती बाई	शिवगंज
24.	श्री वेलराज पूनमचन्द	शिवगंज
25	श्री हरकचन्द दलीपचन्दजी	शिवगंज
26	श्री चुन्नीलाल लखवाजी . ..	शिवगंज
27.	श्री मिश्रीमल थानमल	शिवगंज
28	श्री भीकचन्द दलीचन्द	शिवगंज

श्री घीसालाल चौधरी

श्री घीसालाल चौधरी 1925 से 28 तक क्रान्तिकारी कार्य्यों से सम्बद्ध रहे। 1928 के बाद वे स्वर्गीय श्री जयनारायण व्यास के निकट सम्पर्क मे आये। 1930-31 मे वे भिक्षुराज मणिलाल कोठारी द्वारा रेल्वे मजदूर यूनियन का गठन करने पर उनके साथ काम करने लगे। 1935–36 से 1939 तक वे गुप्त रूप से सिरोही राज्य प्रजा मण्डल के काम मे लगे रहे। 1939 मे खुले रूप मे प्रजा मण्डल की स्थापना होने पर वे उसकी प्रवत्तियो मे लग गये। 1942 की अगस्त क्रान्ति के वक्त नगरपालिका की सदस्यता त्याग कर स्वामी रामतीर्थ व श्री भगवानदास शर्मा के साथ तोड फोड के कामो मे लग गये, चौधरीजी हमेशा पुलिस से बचते रहे।

आबूरोड तहसील को बम्बई राज्य मे सम्मिलित कर दिये जाने पर 1951 मे उन्होने आमरण अनशन किया। उसी दिन उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। एक महिने तक उन्हे जेल मे रख कर रिहा कर दिया गया। उनका जन्म 1908 मे आबूरोड मे हुआ था।

श्री धर्मचंद सुराणा

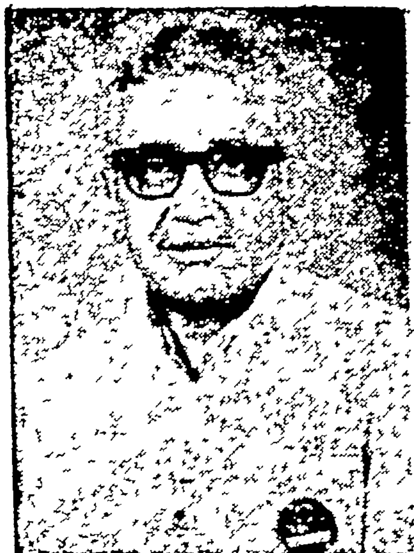


प्रजा मण्डल की स्थापना (1939) से ही श्री धर्मचन्द सुराणा उसके कार्यकर्ता बन गये। 1939 मे किसानो से सातवा हिस्सा हासिल लेने सम्बन्धी आन्दोलन मे सुराणाजी ने उल्लेखनीय कार्य किया। इसी वर्ष प्रजामण्डल को अवैध घोषित किया गया। परिणाम स्वरूप जन आन्दोलन हुआ। 1942 मे 'भारत छोडो' आन्दोलन मे भी वे सक्रिय रहे। उन्होने सरकार को टैक्स नही देने के लिए प्रेरित किया। सरकार द्वारा श्री धर्मचन्द सुराणा की वकालात की सनद हमेशा के लिए रद्द करदी गयी।

1939 मे उन्हें सभाए आयोजित करने के अपराध मे गिरफ्तार किया गया और पांच दिन बाद वे रिहा कर दिये गये। 1940 मे वे पुन गिरफ्तार किये गये और उन्हे छह महीने की सजा व एक सौ रूपये अर्थदण्ड मिला। प्रजामण्डल का सदस्य होने के कारण उन्हे तीन महीने की अतिरिक्त सजा हुई। 1967 मे वे स्वतन्त्र पार्टी मे सम्मिलित होगये। वे मूलत सिरोही के निवासी है, और पालिकाध्यक्ष भी रहे है।

श्री कान्ति भाई उपाध्याय

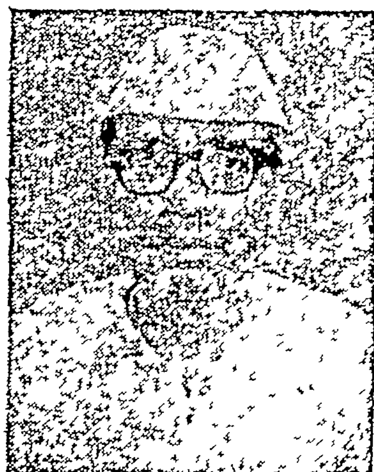
श्रीमती धीरूबेन उपाध्याय





श्री कान्तिभाई उपाध्याय व उनकी पत्नि श्रीमती धीरूबेन उपाध्याय को 1942 को अगस्त क्रान्ति के दौरान भारत सुरक्षा नियम की धारा 126 के अन्तर्गत गिरफ्तार किया गया था। आठ मास से कुछ अधिक समय तक उपर्युक्त दम्पत्ति को अहमदाबाद साबरमती केन्द्रीय जेल में रखा गया। विगत आठ वर्षों से श्री कान्तिभाई उपाध्याय व श्रीमती धीरूबेन उपाध्याय माउण्ट आबू में निवास करते हैं। विगत दस वर्षों से श्रीमती धीरूबेन रुग्ण हैं। श्री कान्तिभाई बीमा एजेण्ट हैं। चार वर्ष तक उन्होंने गुरुदेव टैगोर के शान्ति निकेतन में अध्ययन किया था। वे कांग्रेस के सक्रिय सदस्य हैं। वे सामाजिक कार्यकर्त्ता भी हैं। उनकी आयु छप्पन वर्ष तथा श्रीमती धीरूबेन की आयु तिरेपन वर्ष है।

श्री चुन्नीलाल हेमाजी



श्री चुन्नीलाल हेमाजी ने 1942 के 'भारत छोडो' आन्दोलन को गति देने हेतु सिरोही, तथा आस-पास के इलाको मे जन-जागृति उत्पन्न की थी। जागीरदार द्वारा उन्हे आहत कर दिया गया था। उनके घरका सारा सामान जब्त कर लिया गया था। जागीरदार के महल मे अवैध प्रवेश के आरोप मे उन्हे छ महीने की सजा मिली। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद वे शैक्षणिक प्रवृत्तियो मे लग गये। उनकी आजीविका का स्रोत उनका निजी व्यापार है। श्री चुन्नीलाल हेमाजी का जन्म सम्वत् 1971 मे हुआ था। मूलत वे कालन्द्री (जिला सिरोही) के निवासी है। आज कल उनका व्यापार पनवेल (महाराष्ट्र) मे है।

श्री ध्रुवकुमार पण्ड्या



श्री ध्रुवकुमार पण्ड्या 1942 के भारत छोडो आन्दोलन मे गिरफ्तार हुए। सूरत उप जेल मे उन पर मामला चला, और उन्हे एक वर्ष कठोर कारावास का दण्ड मिला। करीब दस महीने की उन्होने अतिरिक्त सजा भी भुगती। श्री ध्रुव कुमार पण्ड्या का जन्म 1923 मे हुआ था। वे विवाहित है। वे गुजरात विश्वविद्यालय मे विज्ञान व कानून के स्नातक है। वे माउन्ट आबू स्थित पर्वतारोहण सस्थान के अवैतनिक निदेशक हैं। उनकी रुचि पर्वतारोहण, तथा पदयात्रा (हाइकिंग) आदि मे हैं।

श्री दूलचंद सिंघी

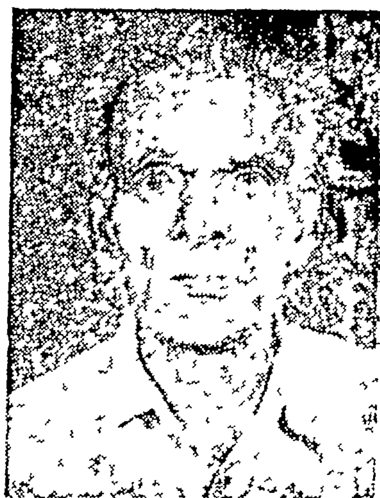
श्री दूलीचन्द सिंघी ने 1942 के 'भारत छोडो' आन्दोलन मे भाग लेने हेतु नौकरी छोडदी—वे बम्बई मे पोद्दार फर्म मे काम करते थे। उन्हें दो वर्ष की सजा हुई और वे सिरोही जेल मे रखे गये। उनके पिता राय साहब श्री पूनमचन्द सिंघी सिरोही रियासत के राजस्व मन्त्री थे। श्री दूलीचन्द सिंघी पूना विश्वविद्यालय के कृषि स्नातक थे। वे गुजराती, मराठी, हिन्दी, अंग्रेजी व उर्दू के जानकार थे। उन्होने हिन्दी व अंग्रेजी मे कई पुस्तकें लिखी श्री दूलीचन्द सिंघी ने ईसा की जीवनी का अंग्रेजी अनुवाद किया। उन्होंने जैन-दर्शन के अतिरिक्त अरविन्द-दर्शन का गहन अध्ययन किया था, और स्वय पाण्डीचेरी स्थित अरविन्द, आश्रम मे करीब चार वर्ष तक रहे।

उन्होने 1938 मे सिरोही रियासत के लोकप्रिय मन्त्रिमण्डल मे सम्मिलित होने मे इन्कार कर दिया। उनका स्वभाव अत्यन्त ही सयत था और नियमितता की दृष्टि से वे अनुकरणीय कार्यकर्ता थे। तिरेपन वर्ष की आयु मे 1964 मे उनका निधन होगया।

श्री रामेश्वर दयाल अग्रवाल

1939 मे श्री रामेश्वर दयाल अग्रवाल को प्रजा मण्डल आन्दोलन मे भारतीय दण्ड संहिता की धारा 124 (अ) के अन्तर्गत राजद्रोह के अपराध मे आठ महिने तक जेल में रखा गया। उन्होंने 1942 की अगस्त क्रान्ति मे भी काम किया। आबू को राजस्थान मे मिलाने सम्बन्धी आन्दोलन मे भी श्री रामेश्वर दयाल अग्रवाल लगे रहे। 1951 मे उन्हे एक महीने तक जेल मे रखा गया। बाद मे वे छह महीने तक आबू क्षेत्र से निर्वासित रहे। आबू-आन्दोलन के बाद वे सर्वोदय की प्रवृत्तियो मे सलग्न हो गये। आन्दोलन से पूर्व वे व्यापार करते थे। अब उनकी जीविका का कोई साधन नही है। श्री अग्रवाल आबू रोड के निवासी है। उनका जन्म 1909 मे हुआ था। उनका पता है—द्वारा, एडवोकेट श्री श्यामलाल मित्तल, सदर बाजार, आबू रोड (राजस्थान)

श्री रूपराज सिमरथराज सिंघी



श्री रूपराज सिमरथराज सिंघी ने 1938 से 1942 तक के राष्ट्रीय आन्दोलनो मे भाग लिया है। वकालत की उनकी सनद का नवीनीकरण नही किया गया। राष्ट्रीय आन्दोलनो मे लगे रहने के कारण ही उन्हे हदमारी का नोटिस मिला, जिसका उल्लघन करने पर उन्हे शिवगज की एक सभा मे गिरफ्तार किया गया, तथा उन पर पाच मुकद्दमे दायर किये गए। दो मुकद्दमो मे उन्हे सात महीने से अधिक सजाए हुई। फिर उन पर मान-हानि का मामला चला कर तीन महीने की सजा व एक हजार रुपया अर्थ दण्ड दिया गया और उनके पिता को नौकरी से निकाल दिया गया। श्री रूपराज को जेल मे अनेक यातनाए दी गयी। उन्होने लब्ध प्रतिष्ठ सर्वोदयी नेता श्री गोकुलभाई भट्ट के नेतृत्व मे सार्वजनिक कार्य किया। इस समय उनकी आयु पैंसठ वर्ष की है और इस वृद्धावस्था मे वे पुरानी किताबें किराये पर देकर, तथा बेच कर अपना जीवन निर्वाह करते है। वे मूलत सिरोही के निवासी हैं। उनका पता है–ज्ञान मन्दिर, बस स्टैंड, सिरोही।

श्री वेलराज पूनमचन्द

श्री वेलराज पूनमचन्द 1935 से राजनीति मे सक्रिय भाग लेते आ रहे हैं। 1939 मे उन्होने प्रजा मण्डल आन्दोलन को सगठित किया था। शिवगज मे 110 बीघा, तथा 85 बीघा जमीन, और दो पक्के कुए—जिन पर पचास हजार रुपये लगे थे—सरकार ने जब्त कर लिये थे। वे तीन बार जिला प्रजामण्डल व जिला काग्रेस के अध्यक्ष रहे। स्वाधीनता के उपरान्त वे सगठनात्मक कामो मे जुट गये। राजनैतिक कारणो से उन पर कत्ल का झूठा मुकद्दमा चलाया गया, जिसमे वे सत्र–न्यायालय, तथा उच्च न्यायालय से बरी हुए। अहमदाबाद से दिल्ली जाने वाली गाडी मे आबू के यात्रियो को विशेष सुविधा दिलाने की दृष्टि से एक नयी गाडी शुरू करवाने का आन्दोलन उनके नेतृत्व मे चला, जिसके परिणाम स्वरूप जनता एक्सप्रेस शुरू हुई। उनका जन्म शिवगज मे सम्वत् 1966 मे हुआ था। आन्दोलनो से पूर्व उनकी जीविका का साधन व्यापार था, और आज भी व्यापार ही है।

राजस्थान में

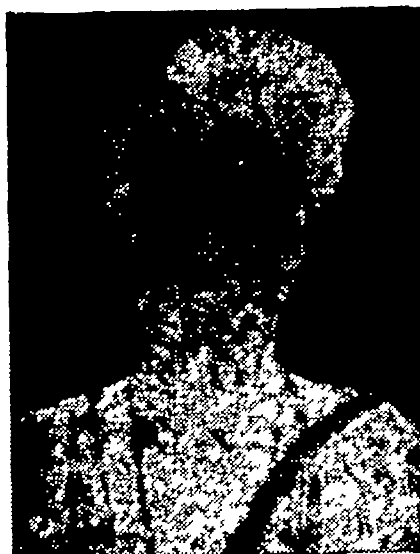
स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी

१. राव गोपाल सिंह खरवा
२. डाक्टर कमल सिंह
३. पण्डित अभिन्न हरि
४. श्री शोभाराम
५. ,, फूलचन्द बाफना
६. ,, भालचन्द्र शर्मा
७. ,, माणिक्य लाल आचार्य
८. ,, मानमल जैन
९. ,, कन्हैयालाल व्यास बजरंगवली
१०. ,, कन्हैयालाल मूर्तिकार

परिशिष्ठ

राजस्थान मे स्वतन्त्रता संग्राम के जनक

राव गोपाल सिंह खरवा



बीसवी शताब्दी के प्रारम्भ मे विप्लवी महा नायक श्री रास बिहारी बोस और सचीन्द्रनाथ सान्याल से प्रेरित होकर राजपूताने मे वीर भारत सभा के नाम से जो गुप्त सैनिक सगठन बनाया गया था उसके सस्थापको और सचालको मे ठाकुर केसरीसिह बारहठ के साथ खरवा (अजमेर) के राव गोपाल सिंह मुख्य व्यक्ति थे। श्री केसरी सिह बारहठ और राव गोपाल सिंह ने राजपूताने के राजपूतो तथा दूसरे अधिकार प्राप्त शासको और सैनिक वर्ग को अपने पूर्व गौरव का स्मरण दिला कर बडे पैमाने पर वीर भारत सभा मे सम्मिलित करने का यत्न किया था। राव गोपाल सिंह खरवा की पहुच राजपूताने के राजघरानो और राज दरबारो मे थी अत उन्होने राजपूताने के राजाओ मे देश की आजादी प्राप्त करने मे क्रातिकारियो का साथ देकर भारत मे फिर से अपना राज्य कायम करने की महत्वाकाक्षाए जगादी थी।

उन्ही दिनो 1909-10 मे रास बिहारी बोस ने भोपसिंह नामक युवक को (जो बाद मे विजयसिंह पथिक के नाम से प्रसिद्ध हुआ) अजमेर भेजा। वह अजमेर और राजपूताने के राजाओ से पुरानी तोडेदार हेंडी मार्टिन बदूके और कारतूस खरीदने के लिए यहा भेजा गया था। युवक भोपसिंह ने यहा आकर स्थिति का अध्ययन किया और वह राव गोपाल सिंह के साथ मिलकर क्रातिकारियो के लिए हथियार खरीदने लगा। वह राव गोपाल सिंह का निजी सचिव बन गया और उनके माध्यम से वह राजपूताने के राजघरानो मे पहुचने लगा। श्री भोपसिंह ने कारतूसो की कमी को पूरा करने के लिए, पुराने कारतूसो को फिर भरने तथा नए कारतूस बनाने एव पुरानी टूटी बन्दूको की मरम्मत करने का काम सीखने के लिए अजमेर के रेल्वे कारखाने मे काम करना शुरु किया। उसकी सहायता से क्रातिकारियो ने उन कारतूसो के बनाने, भरने और बन्दूको की मरम्मत करने के कई गुप्त कारखाने राजपूताने मे स्थापित किए।

क्रातिकारियो को, जनता एव सेना आदि मे प्रचार और देश विदेश मे शस्त्रास्त्र सग्रह के लिए चल रही इस प्रकार की अपनी अनेको योजनाओ के लिए धन की बडी आवश्यकता थी। राजपूताने की रियासतो के राजाओ से भी उन्हे उसके लिए निरन्तर सहायता मिलती थी। जोधपुर ईडर के शासक कर्नल सर प्रताप, बीकानेर के राजा गगासिंह उनकी वीर भारत समिति के सदस्य बन गए थे। उदयपुर के महाराणा फतहसिंह

और कोटा के राव उम्मेदसिंह आदि की भी उनके साथ छिपी सहानुभूति थी। फिर भी वह सहायता पर्याप्त नही थी। क्रातिकारी जहा स्वराज्य प्राप्ति के बाद देश मे सब लोगो का एक जनसत्तापरक राष्ट्रीय राज्य स्थापित करना चाहते थे वहा राजा लोग अधिकाश मे अपने मध्यकालीन सामती आदर्शों से ऊपर नही उठ पाए थे और फिर अपने निजी विशेष अधिकारो का दायरा बढाने के लिए ही अग्रेजो के नियन्त्रण से मुक्त होना चाहते थे। अच्छे शस्त्रास्त्रो और साधनो पर वे अपना कब्जा रखने और उन्हे क्रातिकारियो के हाथो मे नही पडने देना चाहते थे। जोधपुर, बीकानेर के राठौड राजा आपस मे प्राय चर्चा करते कि यदि क्राति सफल हो गई-जिसके सफल होने की उस समय चारो तरफ चल रही गुप्त तैयारियो को देखते हुए बहुत कुछ आशा थी, तो क्रातिकारियो मे अधिकाश तो उनमे खप चुके होगे और बाकी रहेंगे उन्हें वे अपने वरिष्ठ शस्त्रास्त्रो और साधनो की बदौलत आसानी से अपने वश मे कर अधिकार हथिया लेने मे शीघ्र ही सफल होगे।

राव गोपालसिंह खरवा और भोपसिंह राजाओ की इस मनोवृत्ति को भाप चुके थे। राव गोपालसिंह की तरफ से भोपसिंह उन राजाओ मे खूब हिलते मिलते थे और उनकी मनोवृत्तियो की सूचना रास बिहारी बोस तक पहुचा चुके थे।

राव गोपाल सिंह उन दिनो मे देश के क्रातिकारियो और रियासतो के राजाओ के बीच मुख्य कडी का काम करते थे। सन् 1914 के दिसम्बर मास मे बनारस मे भारत के समस्त क्राति दलो के नेताओ का एक सम्मेलन हुआ और देश मे क्राति की एक पूरी योजना बनाली गई। क्रातिकारियो के कारिन्दे बन्नू पेशावर से सिंगापुर तक सब अग्रेजी छावनियो मे पहुच कर तथा भीतर घुसपैठ करके उनकी सैनिक स्थिति का पूरा तखमीना लगा चुके थे। उस समय कुल 15 हजार गोरी फौज भारत की सब छावनियो मे मिलाकर मौजूद थी। अधिकाश हिन्दुस्तानी फौजे आह्वान होने पर देश की आजादी के लिए शस्त्र उठाने के लिए तैयार थी। क्रातिकारियो की योजना थी कि पहले लाहौर, रावलपिण्डी और फिरोजपुर की छावनियो की सेनाए विद्रोह करके कुछ क्रातिकारियो और पडोस की जनता के सहयोग मे वहा शस्त्रागारो पर हिन्दुस्तानी पहरेदारो की मदद से कब्जा कर लेंगे।

अजमेर आदि मे राव गोपालसिंह ने अग्रेजो के खानसामो और चपरासियो को अपनी ओर मिलाकर यह तय कर लिया था कि निश्चित तिथि को सकेत पाते ही वे उन्हें सोते मे पकड कर चुपचाप क्रातिकारियो के हवाले कर देंगे।

21 फरवरी 1915 को क्राति प्रारम्भ करने की निश्चित तिथि थी। उस दिन करतारसिंह अपने दल के साथ फिरोजपुर मे भारतवर्ष के सबसे बड़े शस्त्रागार पर अधिकार करने वाला था। राजपूताने मे राव गोपालसिंह और दामोदर दास राठी को ब्यावर और भोपसिंह को अजमेर, नसीराबाद पर कब्जा करने का काम सौपा गया था। जनवरी के अन्त तक शचीन्द्र सान्याल यह सारी व्यवस्था करके बनारस लौट गए थे।

राजपूताने मे राव गोपाल सिंह और भोपसिंह आदि क्रातिकारी 21 फरवरी 1915 को खरवा के स्टेशन के निकट जगल मे अपने दो हजार सशस्त्र सैनिको का दल लिए सन्नद्ध होकर सकेत पाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। रात को दस बजे अजमेर से अहमदाबाद जाने वाली जो रेलगाडी वहा से गुजरती है उससे खरवा स्टेशन के निकट जगल मे एक बम का धमाका कार्यारभ का सकेत था। पर वह धमाका हुआ नही। रात को गाडी निकल गई।

अगले दिन सदेशवाहक ने आकर लाहौर मे घटी घटनाओ की सूचना उन्हे दी। किसी भेदिये ने सारा भेद अग्रेज पुलिस को बता दिया था अत अग्रेजो ने इसी बीच आत्मरक्षा की पूरी तैयारी करली थी। शस्त्रागारो के हिन्दुस्तानी पहरेदारो को तत्काल बदल कर उन पर गोरो को तैनात कर दिया गया था। छावनियो की हिन्दुस्तानी फौजो को एकाएक इधर से उधर स्थानातरित करके उनके परस्पर के तथा क्रातिकारियो के बीच के सब सपर्क विच्छिन्न कर दिए थे। 19 फरवरी को सुबह ही पुलिस ने एकाएक छापे मार कर लाहौर और अमृतसर मे क्रातिकारियो के अनेक छिपे अड्डे पकड लिए थे और वहा उस दिन के कार्यक्रम को पूरा करने के लिए एकत्रित कार्यकर्ताओ को गिरफ्तार कर तिरगे राष्ट्रीय झण्डे और एलाने जग आदि गुप्त कागजात बरामद कर लिए थे। अनेको क्रातिकारी देश-भक्त शस्त्रागारो पर हमला करने के व्यर्थ प्रयास मे गोलियो के शिकार बना दिए गए थे।

इस प्रकार देश व्यापी क्राति विफल हो गई। क्राति के विफल होने की सूचना मिलते ही राव गोपाल सिह ने 30 हजार पुरानी हैड्री मार्टिन बन्दूके और बहुत सा गोला बारूद—सब तुरन्त ठिकाने कर दिया और दो हजार सशस्त्र सैनिको का दल चारो ओर जगल मे बिखर गया।

सात आठ दिन बाद अजमेर की पुलिस ने खरवा पर छापा मार कर राव गोपाल सिह और भोपसिंह आदि को गिरफ्तार करने की तैयारी की जिसकी खबर क्रातिकारी भेदियो द्वारा उन्हे मिल गई। राव गोपालसिह के कहने पर चुप चाप आत्म समर्पण कर अग्रेजो की जेल मे अनिश्चित काल तक सडने या साधारण चोर डाकुओ और खूनियो की तरह फासी पर लटकाए जाने की अपेक्षा उन सबने लडकर मरने का निश्चय किया।

इसके बाद ठाकुर (राव) गोपालसिह, उनके चाचा मोडसिह, भोपसिह, रलिया राम और सवाईसिंह नामक पाच साथी बहुत से शस्त्रास्त्र और खाने पीने का 8–10 दिन के लायक काफी सामान लेकर खरवा के गढ से रातो रात निकल पडे और पास के जगल मे बनी एक ओहदी (शिकारी बुर्ज) में मोर्चा बदी करके जा डटे। अगले रोज अजमेर का अग्रेज कमिश्नर खुद 500 सैनिकों की टुकडी लेकर उन्हें खोजता हुआ वहा पहुंचा और उन्हें चारो ओर से घेर कर आत्म समर्पण के लिए विवश करने लगा। किन्तु राव गोपाल सिह और उनके साथियो को मरने मारने के लिए तैयार देखकर उसे भय हुआ कि कही

सचमुच ही उन्हे दो चार दिन उनसे लडना पडा तो चारो तरफ की जनता उसके खिलाफ उलट न पडे। फिर साथ की हिन्दुस्तानी टुकडी पर भी उमे भरोसा नही था। ऐसी दशा मे यदि मुकाबिला जम जाता तो सारे राजपूताने मे आग का भडक उठना असभव नही था। अत जहा तक हो सके गोली चलने देने की नौवत न आने देने के आदेश उसे ऊपर से भी थे।

अजमेर के अग्रेज कमिश्नर ने राव गोपालसिंह को कहलाया कि अभी तो उन पर कोई अभियोग या दोषारोपाण नही है, सिर्फ जाब्ते के लिए सदेह मे ही उनकी गिरफ्तारी की जा रही है। यह भी सभव है कि उन पर कोई अपराध साबित ही न हो। ऐसी दशा मे सरकार से ख्वामख्वाह मुकाबला कर अपने पर अपराध ओढने मे कोई बुद्धिमानी नही होगी। बहुत वहस मुबाहसे के बाद यह समझौता हुआ कि उन्हे किसी हवालात या जेल मे बद न कर किसी ऐसी जगह नजरबद किया जाएगा जहा आस पास जगल मे शिकार की पुरी सुविधा हो क्योकि वे सभी रोज शिकार करके ही मास खाने के आदि हैं। शिकार के लिए बन्दूक तलवार आदि शस्त्र और सवारी के लिए घोडे उन्हे सदा मिले रहेंगे और उनके आस पास जहा तक दृष्टि पडे, कोई फौज पुलिस आदि का पहरा उस रूप मे न रखा जाएगा जिससे उन्हें कैदी होने का भान हो।

तदनुसार उन्हें मेवाड और मारवाड की सीमा पर स्थित टाडगढ के किले मे नजरबद किया गया जहा आस पास तीन तीन मील तक जगल मे उन्हे शिकार आदि के लिए जाने की खुली छूट थी। किन्तु इसके 15 दिन बाद सोमदत्त नामक एक व्यक्ति के मुखबिर हो जाने मे लाहौर षडयत्र के मामले की जाच मे भोपसिंह का नाम भी लिया गया, जिससे उसे गिरफ्तार कर तुरन्त लाहौर भेजने का हुकम टाडगढ पहुचा। भोपसिंह तब टाडगढ से भाग खडा हुआ और मेवाड के अनेक सरदारो और जनता के सहयोग और मदद के कारण दुबारा पकडा नही जा सका।

इसी प्रसग मे केसरीसिंह बारहठ के यहा जो तलाशियें हुई थी उनमे वीर भारत समिति के सदस्यो की सूचियें अग्रेजो के हाथ लग गई थी। तलाशी के कागजो से यह स्पष्ट पता लग गया था कि राव गोपाल सिंह का क्रातिकारियो से स्पष्ट सबध था। इस कारण राजपूताने की रियासतो के राजाओ की गर्दन अदर ही अन्दर ऐसी दबी कि वे अब क्रातिकारियो की ओर देखने का साहस भी नहीं कर सके। अग्रेजो ने राजाओ के उन तमाम सैनिक अधिकारियो को चुन चुन कर उत्तरी अफ्रिका की लडाई मे भिजवा दिया जिनका कि क्रातिकारियो के साथ थोडा भी सबध होने का उन्हे सदेह हुआ, या उन्हे अपदस्थ कर उन पर कडी नजर रखना प्रारम्भ कर दिया। उन्होने गोरी सेनाओ की सख्या एक दम बढादी और भारतीय फौजो को युद्ध के मोरचे पर बाहर भेज दिया।

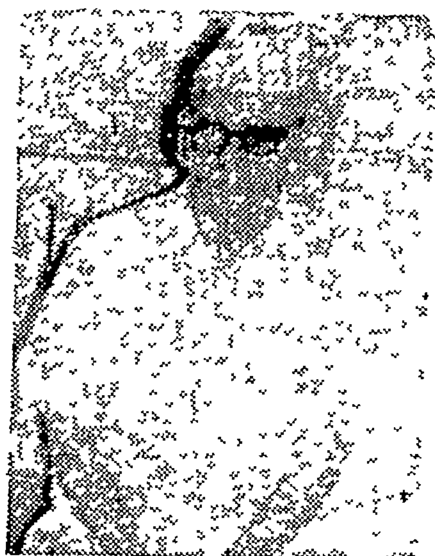
ऐसी दशा मे विदेशो से जाकर शस्त्रास्त्र भेजने का नये सिरे से प्रबन्ध करने के सिवाय भारत के क्रातिकारियो के लिए अब कोई चारा नही बचा। अप्रेल 1915 मे स्वयं रास बिहारी बोस को भी भारत से बाहर चला जाना पड़ा।

इसी बीच अवसर देखकर राव गोपालसिंह और मोडसिंह भी टाडगढ किले से फरार होगए। वे इधर उधर कई महीनो तक भटकते रहे। एक दिन वें किसनगड के पास सलीमाबाद के एक मदिर मे डेरा डाले हुए थे कि वे पहचान लिए गए और अग्रेज पुलिस द्वारा घेर लिए गए। उन दिनो भोपसिंह जो विजयसिंह पथिक के नाम से प्रसिद्ध हो चुके थे काकरोली मे क्रातिकारी दलो का सगठन और मार्ग निर्देशन कर रहे थे। राव गोपाल सिंह के सलेमाबाद मे घिर जाने के समाचार काकरोली पहुचते ही पथिक अपनी टोली के साथ ऊटो पर सवार होकर रात भर मे लम्बा रास्ता पार करके सलेमाबाद पहुचे। पर उनके वहा पहुचने के पहले ही गोपालसिंह ने कुछ शर्तों पर अग्रेजी सेना और अधिकारियो को आत्म-समर्पण कर दिया था। 1920 तक राव गोपालसिंह खरवा नजरबदी मे रहे और 1920 के बाद वे नजरबदी से मुक्त हुए।

डाक्टर कमलसिंह

जन्म— 11 अगस्त 1901

वर्तमान पता— बहादर गंज
उज्जैन



डाक्टर कमलसिंह का जन्म उज्जैन जिलान्तर्गत सौनकच्छ कस्बे मे ग्यारह अगस्त 1901 को एक कर्मणा-द्विज परिवार मे हुआ था। सोलह वर्ष की आयु मे वह सौनचच्छ से प्रयाग व इलाहाबाद पहुचे जहा श्री शचीन्द्रनाथ सन्याल और उनके यग मैन्स एसोसियेशन मे सम्बन्द्ध हो गये। उन्हे बनारस षडयन्त्र केस 1916, काकोरी षडयन्त्र 1925, देवघर षडयन्त्र 1927, बनारस के डी० एस० पी० बनर्जी की हत्या (1928), दिल्ली षडयन्त्र (1929) का अभियुक्त करार दिया गया था। वे मेरठ षडयन्त्र केस, गाडोदिया डकैती काण्ड, मैनपुरी षडयन्त्र, और मद्रास मे ऐरिश हत्याकाण्ड से भी सम्बन्धित थे। इन्ही केसो के कारण उन पर खून, डकैती, विस्फोटक पदार्थ रखने, जहर बनाने और शस्त्र एकत्र करने के आरोप लगाये गये थे। वे कभी केमिस्ट बनते, कभी दवाफरोश, कभी वैद्य, और कभी साधू बनते—मगर 1931 से पूर्व वे पुलिस की पकड मे नही आये।

डाक्टर कमलसिंह 1926 मे 1931 तक अजमेर मेरवाडा, राजपूताना, मध्यप्रदेश, बम्बई, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश मे गुप्त रूप से काम करते रहे। 1927 मे वे हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसियेसन (आर्मी) के सक्रिय सदस्य बन गये थे। 1930 मे उन्होंने सौनकच्छ की कुमारी विमला त्रिवेदी के साथ अजमेर मे विवाह किया और भूमिगत होकर डाक्टर अम्बालाल शर्मा क औषधालय मे कम्पाउन्डर हो गये। वे अजमेर मेरवाडा प्रान्तीय काग्रेस के सदस्य बने। वे स्वर्गीय हरिभाऊ उपाध्याय, विजयसिंह पथिक, लादूराम जोशी, बाबा नरसिंह दास आदि के साथ प्रगाढ सम्बन्धो मे काग्रेस की प्रवृतियो को आगे बढाते रहे। 1930 में उन्होंने अजमेर मे शराब की दुकानो पर पिकेटिंग किया, और तीस दिन तक जेल मे रहे।

मार्च 1931 मे उन्हे अजमेर रेल्वे बमकाण्ड मे गिरफ्तार कर लिया गया और सितम्बर 31 मे वे जेल से मुक्त हुए। दिल्ली षडयन्त्र केस की सरगर्मी तेजी पर थी इसलिए 1934 मे डा० कमलसिंह अजमेर मे प्रच्छन्न रूप से कांग्रेस मे काम करते रहे। अजमेर मे 7 वर्षों तक आपका कांग्रेस को सक्रिय योग दान रहा।

यद्यपि वह इन्दौर – उज्जैन चले गये – किन्तु उनका सक्रिय सम्बन्ध अजमेर-मेरवाडा प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी से ही रहा। 1937 मे वे अजमेर से कराची कांग्रेस के लिए प्रतिनिधि चुने गये। 1938 से वे कांग्रेसी रहते हुए भी क्रान्तिकारी कामो मे द्रुतगति से लगे रहे। उज्जैन मे उन्होने कई प्रसिद्ध क्रान्तिकारियो को अपने पास छिपा कर रखा। श्री ज्वाला प्रसाद शर्मा को भी आपने लम्बे समय तक छिपा के रखखा। जीवन-यापन हेतु उन्होने होम्योपैथी का दवाखाना खोला। नौ अगस्त बयालीस को वे बम्बई मे गिरफ्तार कर लिये गये और जनवरी पैंतालीस मे उन्हे मुक्ति मिली।

जेल से मुक्त होकर वे पुन अजमेर आये। सितम्बर 1946 मे भारत मे अन्तरिम सरकार बनने के बाद 1916 से 1945 तक के उनके अनेक वारण्ट केंसल हुए और सभी मामले रद्द कर दिये गये। डा० कमलसिंह 3 वर्ष 3 माह से ज्यादा देश को स्वतन्त्र कराने के उद्देश्य से अग्रेज सरकार द्वारा जेलो मे रखे गये। वे शचीन्द्रनाथ सान्याल, आचार्य नरेन्द्रदेव राम प्रसाद विस्मिल, चन्द्र शेखर 'आजाद' और भगतसिंह के निकट सहयोगी व साथी रहे हैं।

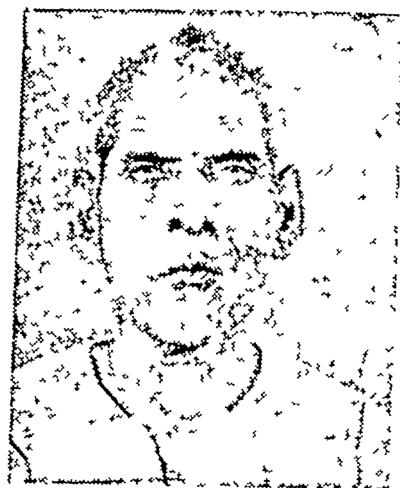
वे आयुर्वेद और होम्योपैथी के निष्णात चिकित्सक तथा कुशल लेखक है आप वामपथी विचार धारा मे विश्वास रखते हुये सेवा के अतिरिक्त कभी भी सत्ता मे आने के इच्छुक नही रहे।

राजस्थान मे स्वतत्रता संग्राम के सूत्रधार

पंडित अभिन्न हरि कोटा

जन्म— 27 सितम्बर 1905

वर्तमान पता— स्टेशन के सामने, अटरू
जिला कोटा



पंडित अभिन्न हरि कोटा मे स्वतन्त्रता सग्राम के सूत्रधार रहे है। पडित नयनूराय शर्मा के निधन के बाद सपूर्ण हाडौती आचल का नेतृत्व लम्बे समय तक पडित अभिन्न हरि ने सम्हाला है। वे कोटा मे प्रजामण्डल के सस्थापको मे से अग्रणी व्यक्ति रहे हैं। वे कोटा राज्य प्रजा मण्डल के अध्यक्ष रहे थे और कोटा मे जिम्मेवार हुकुमत की स्थापना के लिए उन्होने कोटा राज्य की लोक शक्तियो को सगठित और जागृत किया था। वे कोटा मे दो बार गिरफ्तार हुए और लम्बे समय तक जेल मे रहे। उदयपुर मे सयुक्त राजस्थान की स्थापना के समय श्री अभिन्न हरि ने उस नए राज्य मे एक वर्ष तक सूचना मन्त्री का कार्य किया था।

पडित अभिन्न हरि का जन्म 27 सितम्बर 1905 को मागरोल के पास सिंधानिया ग्राम मे हुआ था। मागरोल मे उनका ननिहाल था और वे लम्बे समय तक ननिहाल के गाव मागरोल मे ही रहे थे। उन्होने मैट्रिक पास करने के बाद, नारमल ट्रेनिंग, हिन्दी की विशेष परीक्षा, साहित्य—रत्न और सपादन कला की परीक्षाए उत्तीर्ण की थी। उन्होने स्वतन्त्र रूप से अंग्रेजी और सस्कृत का भी गहरा अध्ययन किया था।

पडित अभिन्न हरि 1921 से 1927 तक कोटा राज्य के माध्यमिक स्कूल मे प्रधानाध्यापक रहे थे। 1927 से 30 तक उन्होने उज्जेन के कल्प वृक्ष मे सम्पादन का कार्य किया था और मानसिक चिकित्सा की विशेष योग्यता प्राप्त की थी। इसी बीच उन्होंने श्री माखन लाल चतुर्वेदी के साथ खण्डवा के कर्मवीर मे भी सपादन का कार्य किया था।

1930 मे नमक सत्याग्रह प्रारम्भ होने पर श्री अभिन्न हरि कोटा से सत्याग्रहियो का जत्था लेकर अजमेर सत्याग्रह करने चले गए थे। वहा उन्हे श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने रणभेरी के नाम से सत्याग्रह का दैनिक साइक्लोस्टाइल्ड बुलेटिन निकालने का कार्य सौंपा। श्री अभिन्न हरि ने गुप्त रीति से इस जिम्मेवारी को बहुत ही शान से निभाया। सत्याग्रह की रणभेरी प्रति दिन लोगो के हाथो मे पहुच जाती परन्तु पुलिस आखिरी समय तक उसके लेखक, सपादक और प्रकाशन स्थान का पता नही लगा सकी। 1931 मे श्री अभिन्न हरि सत्याग्रह के सम्बन्ध मे 2-3 बार गिरफ्तार किए गए और छोड़ दिए गए।

1931 मे उन्होने श्री विजय सिंह पथिक के राजस्थान सदेश मे सपादन का कार्य किया था। 1932 मे श्री रामचन्द्र बापट द्वारा गिब्सन पर गोली चलाने के सम्बन्ध मे पुलिस ने उन्हे भी फसाने की कोशिश की थी परन्तु वे तब तक मध्य प्रदेश चले गए।

1934 मे पडित नयनूराम के साथ उन्होने विजय दशमी के दिन हाडौती प्रजामण्डल की स्थापना की थी। उस समय पडित नयनूराम, अभिन्न हरि और श्री तनसुखलाल मित्तल ही सबसे पहले प्रजामण्डल के सदस्य बने थे। दो वर्ष तक उन्होंने पडित नयनूराम शर्मा के साथ हाडौती प्रजामण्डल का कार्य किया। 1936 से 38 तक श्री अभिन्न हरि ने दिल्ली से प्रकाशित होने वाले हिन्दुस्तान के सहकारी सपादक का कार्य किया। 1938 मे उन्होने दिल्ली से अग्रसर नामका एक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित किया। इस पत्र मे मोहन सिंह सेंगर और अवनिन्द्रकुमार विद्यालकार उनके सहयोगी थे। दिल्ली मे उन्होने उत्तर भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद की स्थापना की थी और उत्तर भारत के रियासती जन आन्दोलन को सगठित करते रहे थे।

1939 मे श्री अभिन्न हरि दिल्ली से कोटा आ गए और उन्होने राज्य मे उत्तरदायी शासन की स्थापना के लिए प्रजा मण्डल के झण्डे के नीचे कार्य करना शुरु किया। उन्होने कोटा राज्य के एक-एक कस्बे का दौरा किया और जगह-जगह सम्मेलन आयोजित करके प्रजा मण्डल के आदर्श और उद्देश्यो से जनता को परिचित किया। 1939 मे मागरोल मे कोटा राज्य प्रजामण्डल का पहला अधिवेशन पडित नयनूराम शर्मा की अध्यक्षता मे हुआ और यहीं से राज्य भर मे जिम्मेवार हुकुमत के लिए जन आन्दोलन सगठित होने लगे। 1941 मे श्री अभिन्न हरि कोटा राज्य प्रजा मण्डल के अध्यक्ष बनाए गए। उनकी अध्यक्षता मे कोटा मे प्रजा मण्डल का दूसरा अधिवेशन सम्पन्न हुआ।

1942 के अगस्त महीने मे काग्रेस की महासमिति की बैठक से लौटकर कोटा आते ही श्री अभिन्न हरि 13 अगस्त को गिरफ्तार कर लिए गए। 14 अगस्त को पुलिस ने भीड पर गोली चलाई। फिर तो जनता ने पुलिस को शहर से बाहर खदेड़ कर कोटा की कोतवाली पर तिरगा झडा फहरा दिया था। दो महीने बाद सरकार से समझौता होने पर श्री अभिन्न हरि जेल से मुक्त हो सके। इसी प्रकार पुलिस एक्ट की धारा 37 का विरोध करने वाले आन्दोलन मे भी उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया था।

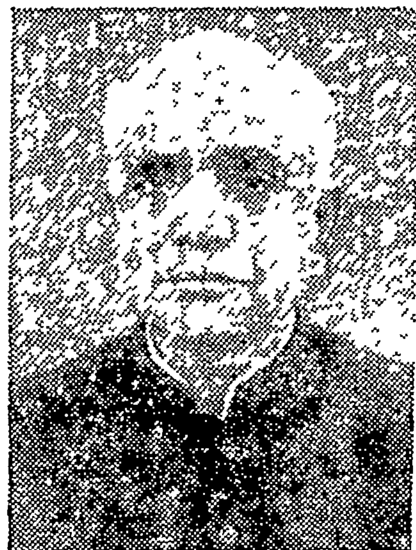
श्री अभिन्न हरि ने 1942 मे लोक सेवक नाम से एक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन कोटा से शुरु किया था। वह पत्र 1951 तक चलता रहा। उन्होने इसके साथ साथ फ्री वर्ल्ड नाम का एक अग्रेजी साप्ताहिक भी चलाया था।

उन्होंने कोटा मे हरिजनोद्धार के लिए हरिजनो के साथ सहभोज किया और अस्पृश्यता निवारण के लिए बहुत प्रयत्न किए। उन्होंने हरिजनो मे शिक्षा प्रचार का कार्य हाथ मे लिया और सवर्णों के समकक्ष उन्हे समान सामाजिक न्याय दिलवाने का आन्दोलन लम्बे समय तक चलाया।

अप्रेल 1948 मे उदयपुर मे सयुक्त राजस्थान बनजाने के बाद श्री अभिन्न हरि नए सघ राज्य के सूचना मन्त्री बनाए गए और अप्रेल 1949 तक उन्होने इस कार्य भार को सभाला।

स्वाधीनता के बाद श्री अभिन्न हरि निरतर काग्रेस की प्रगतिशील नीतियो के क्रियान्वन के लिए क्रियाशील रहे हैं। आज भी वे काग्रेस के आर्थिक कार्यक्रम को आगे बढाने में पूरी शक्ति से जुटे हुए हैं। आजकल उनका स्वास्थ्य ठीक नही रहता।

श्री शोभाराम एम० ए०, ए०एल०एल० बी०



श्री शोभाराम अलवर के रहने वाले हैं। उन्होने लखनऊ से एम. ए, एल एल बी किया था और अलवर मे वकालत करना शुरू कर दिया था। लेकिन 1942 मे भारत छोडो आन्दोलन के समय उन्होने श्री रामचन्द्र उपाध्याय और श्री कृपा दयाल माथुर को साथ लेकर वकालत छोड दी थी। 1942 से उन्होने आजतक पीछी वकालत नही की।

महात्मा गाधी ने जब 1942 मे आमरण अनशन किया था तब उनके समर्थन मे श्री शोभाराम ने भी 13 दिन तक उपवास किया था। अलवर मे 1942 के बाद जितने भी आन्दोलन प्रजामण्डल ने शुरू किए उनमे सबमे श्री शोभाराम ने अग्रगण्य रूप से भाग लिया था। खेडा मगलसिंह में वे गिरफ्तार किए गए थे और गैर जिम्मेवार मिनिस्टरो कुर्सी छोडो आन्दोलन मे भी वे गिरफ्तार किए गए थे। परन्तु अलवर मे राजा और राजनैतिक नेताओ के बीच समझौते जल्दी-जल्दी होते गए अत उनके जेल जीवन की अवधि 1 महीने से अधिक लम्बी नही रह सकी।

16 मार्च 1948 को मत्स्य सघ बनने के बाद श्री शोभाराम उस सघ राज्य के प्रधान मत्री मनोनीत किए गए और और अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली राज्य से बने राजस्थान के इस पहले सघ मे 1 वर्ष 16 दिन तक प्रधान मत्री रहे। उसके बाद मत्स्यसघ का विलय विशाल राजस्थान सघ मे होगया और जब पडित हीरालाल शास्त्री ने राजस्थान का पहला मत्रीमण्डल बनाया तब श्री शोभाराम उसमे राजस्व मत्री बनाए गए और दो वर्ष तक उन्होने शास्त्री मत्री मण्डल मे राजस्व मन्त्री का कार्य किया।

श्री शोभाराम ने बादमे ससद के चुनाव लडे और वे पूरे 10 वर्ष तक भारतीय ससद के सदस्य रहे। 9 जुलाई 69 में राजस्थान मे मुख्यमन्त्री के परिवर्तन के बाद जब श्री बरकतुल्ला खा मुख्यमन्त्री बने तब श्री शोभाराम उनके पहले मत्रीमडल मे राजस्व मत्री के रूपमे सम्मिलित किए गए।

श्री शोभाराम अलवर नगर विकास न्यास के लम्बे समय तक अध्यक्ष रहे थे। 1967 से राजस्थान विधान सभा के सदस्य हैं। वे कांग्रेस की प्रगतिशील नीतियो के क्रियान्वन के लिए बनाए गए राजस्थान समाजवादी मच के पिछले वर्षो मे लगातार अध्यक्ष रहे है। उनका पता है—मनुमार्ग अलवर।

एक तपोनिष्ठ गांधीवादी लोक—सेवक

श्री फूलचन्द बाफना

श्री फूलचन्द बाफना पाली जिले के सादडी कस्बे के मूल निवासी हैं। उनका जन्म सादडी के एक ओसवाल परिवार मे सन् 1915 मे हुआ था। उनकी शिक्षा सादडी और जोधपुर मे हुई। अपने विद्यार्थी काल से ही श्री फूलचन्द बाफना खादी पहनने लग गए थे तथा सामाजिक सेवा कार्यो मे भाग लेने लग गये थे।

जोधपुर मे मारवाड लोक परिषद की स्थापना होने पर वे लोक परिषद के सदस्य बन गये और उन्होने देसूरी, सादडी, घानेराव, सुमेरपुर, फालना, और बाली क्षेत्रो मे लोक परिषद के शाखाओ की स्थापना की और बडी तादाद मे लोगो को लोक परिषद के झडे के नीचे कार्य करने के लिये सगठित किया। श्री फूलचन्द बाफना अपने क्षेत्र मे युवको की प्रेरणा के स्रोत थ और उनसे प्रेरित होकर हर स्थान पर नौजवान लोक परिषद मे सम्मिलित होने लग गये थे।

1940 मे मारवाड लोक परिषद के पहले सत्याग्रह मे श्री फूलचन्द बाफना ने सक्रिय रूप से भाग लिया था। 1942 मे जब लोक परिषद ने जिम्मेवार हुकूमत आन्दोलन शुरू किया तब श्री फूलचन्द बाफना जुलाई 42 मे गिरफ्तार कर लिये गये और करीब दो वर्ष तक जेल मे रहे।

1944 मे जेल से मुक्त होने के बाद उन्हने अपना सम्पर्ण समय लोक परिषद को देना शुरू कर दिया। वे मारवाड लोक परिषद के प्रधान मत्री निर्वाचित हुए और उन्होंने अपने मत्रीत्व काल मे राज्य भर मे लोक परिषद के सगठन पक्ष और आन्दोलन पक्ष को पूर्णरूपेण व्यवस्थित और गतिशील बनाया।

विशाल राजस्थान के निर्माण के समय वे मारवाड लोक परिषद के प्रधान मत्री थे और राजस्थान निर्माण के बाद पडित हीरालाल शास्त्री के नेतृत्व मे जो राजस्थान का पहला मत्री मडल बना उसमे वे मत्री के रूप में सम्मिलित किए गए। उन्होने 2 वर्ष तक राजस्थान मे स्वायत्त शासन मत्री का कार्य कुशलतापूर्वक किया।

1951 के बाद श्री फूलचद बाफना का झुकाव भूदान और सर्वोदय की ओर होने लगा। श्री सिद्धराज ढ्ढा के नेतृत्व मे उन्होने खीमेल मे सर्वोदय केन्द्र की स्थापना की और सर्वोदय का सदेश गाव-गाव मे पहुचाने लगे। उन्होने 1951 में काग्रेस से त्याग-पत्र दे दिया। पिछले बीस बाईस वर्षो से श्री फूलचन्द्र बाफना ने भूदान, सर्वोदय, समाज कल्याण, समाज शिक्षा और रचनात्मक कार्यो मे अपने आपको लगाए रक्खा है। वे इन्ही प्रवृत्तियों के माध्यम से अपने क्षेत्र मे सर्व के उदय और उत्कर्ष के लिए निरतर यत्नशील रहे हैं।

1967 मे श्री फूलचन्द बाफना ने स्वतन्त्र पार्टी के सहयोग से राजस्थान विधान सभा का चुनाव लडा था। वे पाच वर्ष तक राजस्थान विधान सभा के सदस्य रहे थे और उन्होने अपनी निष्पक्ष दृष्टि और परिपक्व चितन से विधान सभा मे एक विशिष्ठ स्थान बना लिया था।

श्री फूलचन्द बाफना एक अत्यन्त सादे, आडम्बरहीन, अकृत्रिम, निश्छल और कट्टर सिद्धान्तवादी व्यक्ति है। वे जैसे भीतर हैं वैसे ही बाहर है। उनकी कथनी और करनी मे भेद नही मिलता। वे नपा तुला बोलते हैं परन्तु जो बोलते है उसका वजन होता है। वे नैतिक मूल्यो की स्थापना के सबसे बडे हिमायती हैं। राष्ट्रीय चरित्र मे निरन्तर बढते हुए ह्रास से उनका आदर्शवादी मन अत्यन्त खिन्न होता है। देश सेवा उनके लिए प्रोफेसन व्यवसाय नही--उनके जीवन का मिशन है। उनका सम्पूर्ण जीवन लोकसेवा के लिए समर्पित जीवन है। उनका पता है। सादडी, जिला पाली।

श्री भालचन्द्र शर्मा

जन्म– सन् 1909

वर्तमान पता –मु० पो० सवाई माधोपुर

श्री भालचन्द्र शर्मा कलकत्ते मे एक प्रगतिशील समाज सुधारक, कट्टर गाधीवादी और पीडित मानवता की सेवा करने वाले निश्छल लोक सेवक के रूप मे जाने जाते है। उन्होने कलकत्ते मे रह कर सभी राष्ट्रीय आन्दोलनो मे भाग लिया है। 1930–31 मे उन्होने अपनी पत्नि श्रीमती सूरजदेवी के साथ कालिकापुर मे नमक कानून तोडा और 1942 के भारत छोडो आन्दोलन मे उन्होने दैनिक 'डू और डाई' नामक गुप्त अग्रेजी पत्र का हिन्दी रूपान्तर प्रकाशित किया। उनके पत्र की प्रतिया कई बार पुलिस ने जब्त की परन्तु वे पुलिस के हाथ नही आए। वे 1942 मे कलकत्ते मे प्रतिदिन अपने आवास का स्थान बदलते रहे। एक मकान मे एक रात से अधिक वे नही टिके।

श्री भालचन्द्र शर्मा मूल रूप मे सवाई माधोपुर (जयपुर रियासत) के रहने वाले है। उनका जन्म सन् 1909 मे सवाई माधोपुर के कुलीन ब्राह्मण परिवार मे हुआ था। उनके पिता का व्यवसाय कलकत्ते मे था और इसी कारण श्री भालचन्द्र का बचपन कलकत्ते मे ही बीता। उनकी शिक्षा भी कलकत्ते मे ही हुई। जयपुर मे प्रजामण्डल के पुनर्गठन के बाद वे इसकी कार्यकारिणी समिति के सदस्य चुने गये थे। 1939 मे प्रजामण्डल के आन्दोलन के लिये वे कलकत्ते से 5 सत्याग्रहियो का जत्था लेकर सवाई माधोपुर आए। नागरिकता का हनन करने वाले जयपुर सेफ्टी एक्ट (काला कानून) के विरुद्ध सवाईमाधोपुर मे भाषण दिया और राज्य की निषधाज्ञाओ का उल्लघन किया। परिणाम स्वरूप श्री भालचन्द्र शर्मा अपने पाचो साथियो के साथ गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हे छ. महीने की सजा दी गई जिसे उन्होने मोहनपुरा कैम्प मे पूरा किया।

श्री भालचन्द्र शर्मा बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी के वर्षों तक सदस्य रहे है। वे पूर्वी भारत (बगाल, बिहार, आसाम) की देशी रियासतो की प्रजा परिषद के 10 वर्ष तक अध्यक्ष रहे है। वे कलकत्ते की प्रसिद्ध राष्ट्रीय रग मचीय सस्था हिन्दी नाट्य परिषद के 14 वर्ष तक अध्यक्ष रहे है। वे कलकत्ते की मारवाडी रिलीफ सोसाइटी के एक अत्यन्त क्रियाशील सदस्य थे और बाढ, भूकम्प और अकाल के समय देश के किसी भी कोने मे उन्होने अपने अथक सेवा कार्यों मे पीडित लोगो को बहुत राहत पहुचाई थी।

सन् 1961–62 से श्री भालचन्द्र शर्मा राजस्थान मे आ गए है और सवाई माधोपुर मे उन्होने काग्रेस सगठन की बागडोर अपने हाथो मे सम्भाली है। वे राजस्थान प्रदेश काग्रेस कमेटी के सदस्य है और लोकतात्रिक समाजवाद की स्थापना के लिए निरतर प्रयत्नशील है।

मारवाड लोक परिषद के दो कर्मठ व्यक्तित्व

श्री माणिक लाल आचार्य, फलौदी



श्री माणकलाल आचार्य का जन्म जैसलमेर मे सम्वत् 1967 मे हुआ था। चौदह वर्ष की आयु मे वे ब्लोचिस्तान चले गये। वहा से वे ईरान की सीमाओ व कलात का भ्रमण करके खामगाव पहुचे, और वहा किराने का व्यवसाय करने लगे। उन्होने 1922 मे स्वदेशी का व्रत धारण किया। 1930 के आन्दोलन मे आपको सत्याग्रहियो की भर्ती व प्रचार का काम सौपा गया। पुलिस ने उनकी दूकान पर बार-बार छापे मारे। खामगाव से फलोदी आकर आपने कपडे का व्यवसाय शुरू कर दिया। उन्होने फलोदी मे आर्य समाज का पुनगठन किया। 1942 मे मारवाड लोक परिषद के उत्तरदायी शासन आन्दोलन मे सयोगवशात् आपकी गिरफ्तारी नही हुई। 1947 मे वे लोक परिषद् की फलोदी शाखा के प्रधान चुने गये। उन्होने हरिजनो की उन्नति हेतु कई उल्लेखनीय काम किये।

श्री माणकलाल आचाय ने जैसलमेर जेल मे बन्द श्री सागरमल गोपा की रिहाई के लिए आन्दोलन किया, स्वयम् महारावल से भी मिले, पर कोई नतीजा नही निकला। उन्होने जैसलमेर मे स्वर्गीय श्री मीठालाल व्यास के साथ मिलकर प्रजा मण्डल की स्थापना की थी।

श्री मानमल जैन, लाडनूं



श्री मानमल जैन लाडनू मारवाड लोक परिषद् के एक कर्मठ कार्यकर्त्ता रहे हैं। लोक परिषद द्वारा जागीरदारी प्रथा को समाप्त करने के आन्दोलन मे उन्होने बडे उत्साह मे भाग लिया था। वे 1940 मे लोक परिषद के आन्दोलन मे अत्यन्त सक्रिय थे। 1942 मे मारवाड लोक परिषद के जिम्मेवार हुकूमत आन्दोलन मे वे लाडनूं से सत्याग्रहियों का जत्था लेकर जोधपुर आए और उन्होंने राज की निषेधाज्ञाओ का उल्लघन करके सत्याग्रह किया। वे 12 अगस्त 1942 को गिरफ्तार कर लिए गए। वे जेल में 1 वर्ष 3 महीने रहे और 11 नवम्बर 43 को जेल से मुक्त कर दिए गए।

श्री मानमल जैन का जन्म सन् 1912 मे लाडनू के सम्पन्न ओसवाल परिवार मे हुआ था। उनके परिवार के लोग कलकत्ते मे प्रमुख व्यवसायी हैं। लेकिन श्री मानमल जैन का ध्यान सदा देश सेवा और राजनैतिक प्रवृत्तियो की ओर ही रहा है। वे 61 वर्ष के करीब हो चुके हैं लेकिन आज भी वे कांग्रेस की प्रवृत्तियो मे पूरे उत्साह से भाग लेते हैं।

एक समर्पित और कर्त्तव्य परायण स्वयं सेवक

श्री कन्हैयालाल व्यास (बजरंग बली)



बजरंग बली के नाम से पहिचाने जाने वाले जयपुर के लोकप्रिय जनसेवक का वास्तविक नाम कन्हैयालाल व्यास है। उनका जन्म सम्वत् 1973 को सवाई माधोपुर जिले की सपोटरा तहसील के ग्राम हाडोती मे हुआ था। वे अपनी शिक्षा समाप्त करके जयपुर आ गए थे।

जयपुर मे प्रारम्भ से ही उन्होने कांग्रेस स्वयं सेवक दल मे अपने आपको पूर्ण रूप मे समर्पित कर दिया था। कांग्रेस के पहले प्रजा मण्डल के जमाने मे भी उन्होने एक उत्साही स्वयं सेवक के रूप मे कार्य किया था।

1942 मे भारत छोडो आन्दोलन के समय वे क्रांतिकारियो और आतंकवादियो के पूर्ण विश्वासपात्र बन गए थे। उनके गुप्त सन्देश लाने ले जाने और गुप्त साहित्य के वितरण का सारा कार्य बजरंग बली के जिम्मे था। उन्होने रेल की पटरियें उखाडने और रेल की पटरियों पर बम रखने के कार्य किए थे। ऐसे ही एक प्रसंग में वे पुलिस की एक गोली से घायल हो गए थे। तब श्री श्रीदास गोयल की देखरेख मे उनकी चिकित्सा करवाई गई थी।

श्री बजरंग बली मे काम करने की असाधारण क्षमता है। निस्वार्थ भाव से और पूर्ण मनोयोग से वे उन्हे सौंपी गई सभी जिम्वारियें पूरी करते हैं। 56 वर्ष पार करने के बाद भी उनके उत्साह, सेवा भावना और कर्त्तव्य परायणता मे कोई कमी नही आई हैं।

श्री कन्हैया लाल मूर्तिकार



श्री कन्हैयालाल शर्मा का परिचय इसी ग्रंथ के पृष्ठ 619 पर दिया गया है परन्तु भूल से उनके परिचय के साथ उनका चित्र नही जा सका। उनका चित्र यहा दिया जा रहा है।